









PRESENTATION

শ্রীশ্রী চৈতন্যচরিতামৃত ।।

অক্ষয়লীলা ।

(শ্রীকৃষ্ণদাস কনিষ্ঠাঙ্ক গোস্বামি-বিরচিত ।

সিদ্ধান্তবাচস্পতি

শ্রীশ্যামলাল গোস্বামি কর্তৃক সংশোধিত ।

শ্রীমদ্বিত্যনন্দবংশোদ্ভব-

শ্রীবিনোদবিহারীগোস্বামিভাগবতরত্ন কর্তৃক

সম্পাদিত ও প্রকাশিত ।

(১৫৪ নং আহারীটোলা ষ্ট্রিট, কলিকাতা ।)

ASIANIC SOCIETY  
CALCUTTA.

12 JAN 1971

বাণীপ্রেস ।

৬৩ নং নিমতলাঘাট ষ্ট্রিট, কলিকাতা ।

শ্রীযোগেন্দ্রনাথ দে দ্বারা মুদ্রিত ।

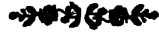
চৈতন্যচরিতামৃত ৪২৩।

অক্ষয়লীলা ।। চরিতামৃত ।।

[মূল্য ২৪০ আন টাকা ।

Row  
294'5510  
K9004  
V.2

# ଅଧ୍ୟାୟୀନା ।



## ସୂଚୀ ପତ୍ର ।

| ପରିଚ୍ଛେଦ | ବିଷୟ  | କଳମ | ପୃଷ୍ଠା | ପୃଷ୍ଠା |
|----------|---|-----|--------|--------|
| ୧ମ       | ଘଣ୍ଟ କାରେର ସଙ୍ଗଳାଚରଣ  | ୧   | ୧      | ୧      |
| "        | ମହା ପ୍ରଭୁର ମଧ୍ୟାଳୀନାର ମୁଖ୍ୟରୁ ସୂତ୍ରବର୍ଣ୍ଣନା                 | ୨   | ୧୦     | ୧      |
| "        | ଶ୍ରୀରୂପକୃତ ଖୋକେର ଅର୍ଥ କଥନ                                   | ୧   | ୭      | ୧      |
| "        | ଶ୍ରୀରୂପ ସନାତନେର ମହାପ୍ରଭୁ ନିକଟ ଗମନରୂପ ସୂତ୍ରକଥନ               | ୧   | ୧୨     | ୨      |
| ୨ୟ       | ମହା ପ୍ରଭୁର ଅଷ୍ଟାଳୀନାର ପ୍ରେୟୋନ୍ମାଦ ଶ୍ରୀରୂପବର୍ଣ୍ଣନେର ସୂତ୍ରକଥନ | ୨   | ୭      | ୧୩     |
| "        | ଓଁପଦ୍ମ ପ୍ରେୟୋନ୍ମାଦେର ଦ୍ରୁତ ବର୍ଣ୍ଣନା                         | ୧   | ୨୧     | ୧୪     |
| "        | ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣେର ରୂପାଦି ସେବନ ବ୍ୟାପୀତ ସକଳହି ବୃଥା ବର୍ଣ୍ଣନା         | ୧   | ୧୮     | ୧୧     |
| "        | ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଦର୍ଶନବାଧକ ଶକ୍ରଦ୍ଵୟବର୍ଣ୍ଣନା                         | ୧   | ୭      | ୧୬     |
| "        | ଅଟ୍ଟକତବ ପ୍ରେୟୋବର୍ଣ୍ଣନା                                      | ୨   | ୧୩     | ୧୬     |
| "        | ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣେର ପ୍ରୀତି କପଟପ୍ରେୟୋର ଅଭାବ ବର୍ଣ୍ଣନା                 | ୧   | ୮      | ୧୭     |
| "        | ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ-ଅଦର୍ଶନେ ମୁହୂର୍ତ୍ତାଦିର କଟ୍ଟକରତ୍ଵ ବର୍ଣ୍ଣନା          | ୧   | ୨୨     | ୧୮     |
| "        | ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଦର୍ଶନେର ଓପାୟ ଜିଜ୍ଞାସା କଥନ                          | ୨   | ୨୦     | ୧୮     |
| "        | ବିରହେ ପ୍ରେୟୋପାପର୍ଣ୍ଣନା କଥନ                                  | ୧   | ୨୧     | ୧୯     |
| "        | ବିରହେ କୃଷ୍ଣରୂପନିର୍ଣ୍ଣୟରୂପ ପ୍ରଶ୍ନ କଥନ                        | ୧   | ୮      | ୨୦     |
| "        | ଶ୍ରୀଚୈତନ୍ୟଲୀଳାର ଶ୍ରେଷ୍ଠତ୍ଵ କଥନ                              | ୧   | ୧      | ୨୧     |
| "        | ମଧ୍ୟାଳୀନାର ଅଷ୍ଟାଳୀନା ସୂତ୍ରକଥନେ ହେତୁ କଥନ                     | ୧   | ୨୩     | ୨୧     |
| ୩ୟ       | ମହା ପ୍ରଭୁର ମଧ୍ୟାଳୀନା ଆରମ୍ଭ କଥନ                              | ୧   | ୧୨     | ୨୨     |
| "        | ଅଦୈତ୍ୟଗୃହେ ମହା ପ୍ରଭୁର ଗମନ                                   | ୧   | ୧      | ୨୩     |
| "        | ଅଦୈତ୍ୟଗୃହେ ଭୋଜନବିଳାସ ବର୍ଣ୍ଣନା                               | ୧   | ୧      | ୨୪     |
| "        | ଅଦୈତ୍ୟଗୃହେ ଶ୍ରୀନିତ୍ୟାନନ୍ଦେର ଭୋଜନବିଳାସ ବର୍ଣ୍ଣନା              | ୧   | ୧୭     | ୨୧     |
| "        | ଅଦୈତ୍ୟଗୃହେ କୌର୍ତ୍ତନବିଳାସ ବର୍ଣ୍ଣନା                           | ୧   | ୧୭     | ୨୬     |
| "        | ଶାନ୍ତିପୁରେ ଶତୀମାତାର ଆଗମନ                                    | ୧   | ୭      | ୨୭     |
| ୪ର୍ଥ     | ରେମୁଖ୍ୟ ମହା ପ୍ରଭୁର ଗମନ                                      | ୨   | ୨      | ୩୦     |
| "        | ଶ୍ରୀମାଧବେନ୍ଦ୍ରପୁରୀର ଚରିତ୍ର ଆନ୍ଵାନନ କଥନ                      | ୨   | ୨୪     | ୩୦     |
| "        | ଶ୍ରୀମାଧବେନ୍ଦ୍ର କର୍ତ୍ତୃକ ଗୋପାଳ ସ୍ଥାପନ ବର୍ଣ୍ଣନା               | ୨   | ୨୭     | ୩୧     |
| "        | ଶ୍ରୀମାଧବେନ୍ଦ୍ର ନିକଟ ଅଦୈତ୍ୟେର ମନ୍ତ୍ରଗ୍ରହଣ କଥନ                | ୨   | ୧୭     | ୩୩     |
| "        | ଗୋପୀନାଥେର କୌରବୃତ୍ତିର ହେତୁ କଥନ                               | ୧   | ୪      | ୩୫     |

| পরিচ্ছেদ | বিষয়   | কণম | পৃষ্ঠা | পৃষ্ঠা |
|----------|---|-----|--------|--------|
| ৪র্থ     | শ্রীমাধবেন্দ্র কর্তৃক গোপীনাথের অঙ্গে চন্দনলেপন কথন                             | ১   | ১৭     | ৩৫     |
| "        | শ্রীমাধবেন্দ্রের সিদ্ধিপ্রাপ্তিকালের শ্লোক কথন                                  | ২   | ১      | ৩৬     |
| ৫ম       | মহাপ্রভুর কটক আগমন ও স্যাক্গোপাল দর্শন এবং<br>তাহার বিবরণ কথন                   | ১   | ১      | ৩৮     |
| "        | গোপালের কটকে আগমনের তেতু কথন  | ২   | ৭      | ৪১     |
| "        | শ্রীনিত্যানন্দ কর্তৃক মহাপ্রভুর দণ্ডভঙ্গ কথন                                    | ১   | ১২     | ৪২     |
| ৬ষ্ঠ     | জগন্নাথমন্দিরে সার্কীভৌমসহ মহাপ্রভুর মিলন কথন                                   | ১   | ১৫     | ১৩     |
| "        | শ্রীনিত্যানন্দাদির সার্কীভৌমগৃহে গমন কথন  | ১   | ১৩     | ৪৪     |
| "        | গোপীনাথ কর্তৃক মহাপ্রভুর পরিচয় কথন   | ২   | ২৫     | ৪৪     |
| "        | মহাপ্রভুর বাসস্থান নির্ণয় কথন  | ১   | ২১     | ৪৫     |
| "        | মহাপ্রভুর ভগবত্তা সহজে সার্কীভৌম ও তাঁহার শিষ্যগণের সহিত<br>গোপীনাথের বিচার কথন | ২   | ১৫     | ৪৫     |
| "        | মহাপ্রভুর বেদান্তশ্রবণ  | ২   | ১৯     | ৪৭     |
| "        | মহাপ্রভু কর্তৃক বেদান্তগ্যাংথানের পূর্ব-আভাষ কথন                                | ১   | ৭      | ৫৮     |
| "        | নির্কীর্শেষ ও সবিশেষ শ্রুতির সমন্বয় কথন  | ২   | ১      | ৪৮     |
| "        | বেদান্ত বিচার ও ব্রহ্মের শক্তি নিরূপণ   | ২   | ১৬     | ৪৮     |
| "        | ব্রহ্মের সবিশেষ স্থাপন ও করচরণাদি নিরূপণ  | ১   | ২      | ৫৯     |
| "        | ব্রহ্মের সচ্চিদানন্দময়ত্ব ও সৃষ্টিকর্তৃক নিরূপণ                                | ২   | ১৭     | ৪৯     |
| "        | ব্রহ্মের অচিন্ত্যশক্তিস্থাপন ও পরিণাম কথন                                       | ১   | ২      | ৫০     |
| "        | জগতের সত্যপ্রতিপাদন ও মহাবাক্যের নিরূপণ   | ১   | ১৫     | ৫০     |
| "        | সার্কীভৌমের প্রতি মহাপ্রভুর কৃপা কথন  | ২   | ৭      | ৫১     |
| "        | সার্কীভৌমের ভক্তি পরীক্ষা   | ১   | ৭      | ৫২     |
| "        | সার্কীভৌম কর্তৃক শ্রীভাগবতের পাঠ পরিবর্তন কথন                                   | ২   | ১০     | ৫৪     |
| ৭ম       | মহাপ্রভুর সন্ন্যাসের দিন ও ফাস্তানাতিমাসের কার্য<br>নির্ণয় কথন                 | ১   | ১৬     | ৫৬     |
| "        | মহাপ্রভুর দক্ষিণদেশে গমন কথন  | ২   | ২৮     | ৫৭     |
| "        | কূর্ম্মবিপ্রগৃহে মহাপ্রভুর গমন কথন  | ১   | ১৯     | ৬০     |
| "        | কুষ্ঠাধিত বাসুদেবের মোচন কথন  | ২   | ১৭     | ৬০     |
| ৮ম       | নৃসিংহক্ষেত্রে মহাপ্রভুর গমন  | ১   | ৭      | ৬২     |
| "        | গোদাবরীতীরে রায় সহ মহাপ্রভুর মিলন কথন  | ২   | ৯      | ৬২     |
| "        | রায় কর্তৃক সাধানির্ণয়   | ১   | ১৬     | ৬৪     |
| "        | মহাপ্রভু কর্তৃক রস, প্রেমতত্ত্ব ও রাধাকৃষ্ণের স্বরূপনির্ণয়<br>প্রশ্ন কথন       | ২   | ১      | ৭০     |

| ପରିଚ୍ଛେଦ | ବିଷୟ   | କଳମ | ପୃଷ୍ଠା | ପୃଷ୍ଠା |
|----------|--|-----|--------|--------|
| ୮ମ       | ରାମ କର୍ତ୍ତୃକ କୃଷ୍ଣସ୍ୱରୂପ ବା ରମତତ୍ତ୍ୱ ନିର୍ଣ୍ଣୟ              | ୨   | ୨      | ୧୧     |
| "        | ରାଧାସ୍ୱରୂପ ବା ପ୍ରେମତତ୍ତ୍ୱନିର୍ଣ୍ଣୟ                          | ୨   | ୩୦     | ୧୨     |
| "        | ରାଧାକୃଷ୍ଣେର ବିଳାସମହତ୍ତ୍ୱ କଥନ                               | ୨   | ୪      | ୧୪     |
| "        | ରାମ କର୍ତ୍ତୃକ ସାଧ୍ୟେର ସାମନ ନିର୍ଣ୍ଣୟ କଥନ                     | ୨   | ୧୬     | ୧୫     |
| "        | ମହାପ୍ରଭୁ ଓ ରାୟେବ ଅମ୍ଳୋକ୍ତର କଥନ                             | ୨   | ୨୭     | ୧୮     |
| "        | ରାୟେର ସଂସ୍ମରଣ କଥନ  | ୨   | ୩      | ୮୧     |
| "        | ରାୟେର ସଂସ୍ମରଣରୁମନ କଥନ                                      | ୨   | ୨୫     | ୮୨     |
| ୯ମ       | ଦକ୍ଷିଣଦେଶେ ମହାପ୍ରଭୁର ତୀର୍ଥପର୍ଯ୍ୟଟନ                         | ୨   | ୧୪     | ୮୩     |
| "        | ତଦ୍ଦେଶତ୍ର ଡାକିକାମିନିଗଣକେ ବୈଷ୍ଣବକରଣ                         | ୨   | ୧୭     | ୮୫     |
| "        | ବେଙ୍କଟ ଭଞ୍ଜେର ଗନ୍ଧ ଚୂର୍ଣ୍ଣ                                 | ୨   | ୧୧     | ୮୬     |
| "        | ରାମତତ୍ତ୍ୱ ବିପ୍ରେର ଛତ୍ତ୍ୱ କଥନ                               | ୨   | ୧୭     | ୯୦     |
| "        | କୃଷ୍ଣଦାସ ବ୍ରାହ୍ମଣେବ ଉଦ୍ଧାର                                 | ୨   | ୨୨     | ୯୧     |
| "        | ତତ୍ତ୍ୱବାଦିର ସହିତ ମହାପ୍ରଭୁର ବିଚାର                           | ୨   | ୧୨     | ୯୨     |
| ୧୦ମ      | ପ୍ରାଥମିକରାଜାର ସହିତ ସାର୍ବଭୌମେର କଥୋପକଥନ                      | ୨   | ୭      | ୯୪     |
| "        | ତ୍ରୀକେନ୍ଦ୍ରେ ମହାପ୍ରଭୁର ଆଗମନ                                | ୨   | ୧୨     | ୯୪     |
| "        | ପୁରୁଷୋତ୍ତମବାସୀବ ପରିଚୟ କଥନ                                  | ୨   | ୧୭     | ୯୬     |
| "        | ମହାପ୍ରଭୁର ନିକଟ ସ୍ୱରୂପଦାମୋଦୟେର ଆଗମନ କଥନ                     | ୨   | ୧୭     | ୧୦୧    |
| "        | ଗୋବିନ୍ଦେର ଆଗମନ କଥନ   | ୨   | ୧      | ୧୦୨    |
| "        | ବ୍ରହ୍ମାନନ୍ଦ ଭାରତୀୟ ମତ ମହାପ୍ରଭୁର ମିଳନକଥନ                    | ୨   | ୧      | ୧୦୩    |
| ୧୧ମ      | ମହାପ୍ରଭୁର ସମକ୍ଷେ ସାର୍ବଭୌମ କର୍ତ୍ତୃକ ପ୍ରାଥମିକରାଜାର ଇଚ୍ଛା କଥନ | ୨   | ୧୬     | ୧୦୫    |
| "        | ତ୍ରୀକେନ୍ଦ୍ରେ ମହାପ୍ରଭୁର ନିକଟ ରାୟେର ଆଗମନ କଥନ                 | ୨   | ୪      | ୧୦୬    |
| "        | ସାର୍ବଭୌମେର ନିକଟ ବାଜାର ଆକ୍ଷେପ କଥନ                           | ୨   | ୧୧     | ୧୦୭    |
| "        | ସାର୍ବଭୌମ କର୍ତ୍ତୃକ ତନ୍ତ୍ରାକ୍ରମା ପାଞ୍ଚର ଉପାୟ କଥନ             | ୨   | ୧୬     | ୧୦୮    |
| "        | ଗୋପୀନାଥ କର୍ତ୍ତୃକ ଗୋଢ଼ୀୟତକ୍ତେର ପରିଚୟ କଥନ                    | ୨   | ୨୨     | ୧୦୯    |
| "        | ସାର୍ବଭୌମସହ ରାଜାର ପ୍ରାମୋକ୍ତର କଥନ                            | ୨   | ୨୨     | ୧୧୦    |
| "        | ଅଦୈତ୍ୟାଦିମତ୍ତ୍ୱ ମହାପ୍ରଭୁର ମିଳନ କଥନ                         | ୨   | ୭      | ୧୧୧    |
| "        | ଭକ୍ତଗଣସହ ମହାପ୍ରଭୁର ଷେଢ଼ାକୀର୍ତ୍ତନ ବର୍ଣ୍ଣନା                  | ୨   | ୨୨     | ୧୧୩    |
| ୧୨ମ      | ସାର୍ବଭୌମେର ନିକଟ ରାଜାର ପତ୍ନୀପରମବିବରଣ କଥନ                    | ୨   | ୧୮     | ୧୧୫    |
| "        | ମହାପ୍ରଭୁର ନିକଟ ରାଜପୁତ୍ରେର ଆଗମନ                             | ୨   | ୪      | ୧୧୬    |
| "        | ଭକ୍ତଗଣସହ ମହାପ୍ରଭୁର ଶୁଣ୍ଠାମନ୍ଦିର ସାର୍ଜନ ଯାତ୍ରା କଥନ          | ୨   | ୧୮     | ୧୧୬    |
| "        | ଶୁଣ୍ଠାମନ୍ଦିରେ ଭକ୍ତଗଣସହ ମହାପ୍ରଭୁର କୀର୍ତ୍ତନ ବର୍ଣ୍ଣନା         | ୨   | ୨      | ୧୧୯    |
| "        | ଉଦ୍ୟାନେ ଭକ୍ତଗଣସହ ମହାପ୍ରଭୁର ଭୋଜନ ବର୍ଣ୍ଣନା                   | ୨   | ୭      | ୧୨୦    |
| "        | ଶ୍ରୀନିତ୍ୟାନନ୍ଦ ଓ ଅଦୈତ୍ୟେର କ୍ରୀଡ଼ାକଳହ ବର୍ଣ୍ଣନା              | ୨   | ୧୦     | ୧୨୧    |
| "        | ଜଗନ୍ନାଥେର ନେତ୍ରୋତ୍ସବ ଦର୍ଶନ                                 | ୨   | ୨      | ୧୨୨    |
| ୧୩ମ      | ପାଶୁବଞ୍ଜୟ ଦର୍ଶନ କଥନ  | ୨   | ୫      | ୧୨୨    |
| "        | ସଂସାରେ ଭକ୍ତଗଣସହ ମହାପ୍ରଭୁର କୀର୍ତ୍ତନାଦି ବର୍ଣ୍ଣନା             | ୨   | ୫      | ୧୨୩    |
| "        | ମହାପ୍ରଭୁର ଭାବାବେଶ ବର୍ଣ୍ଣନା                                 | ୨   | ୪      | ୧୨୬    |
| ୧୪ମ      | ମହାପ୍ରଭୁର ନିକଟ ବୈଷ୍ଣବବେଶେ ରାଜାର ଗମନ କଥନ                    | ୨   | ୮      | ୧୨୭    |
| "        | ବଳଗାଞ୍ଜି ଭୋଗ ବର୍ଣ୍ଣନା                                      | ୨   | ୭      | ୧୨୮    |
| "        | ଈକ୍ରହାସ୍ତ୍ର ସମ୍ପର୍କରେ ଭକ୍ତଗଣସହ ମହାପ୍ରଭୁର ଜଳକେଳି ବର୍ଣ୍ଣନା   | ୨   | ୮      | ୧୨୮    |

| পরিচ্ছেদ | বিষয়  | কলাম | পৃষ্ঠা | পৃষ্ঠা |
|----------|--|------|--------|--------|
| ১৪       | হেরাপঞ্চমী উৎসববর্ণন   | ২    | ৫      | ১৩৫    |
| "        | হেরাপঞ্চমী দর্শনে মহাপ্রভুভূক্ত প্রার্থের স্বরূপ কর্তৃক উত্তর প্রদান কথন | ১    | ৫      | ১৩৬    |
| ১৫শ      | মহাপ্রভু কর্তৃক জন্মাহমী প্রভৃতির উৎসব বিবরণ কথন                         | ২    | ১      | ১৪৪    |
| "        | মহাপ্রভু কর্তৃক গোড়ীয় ভক্তগণের বিদায় কথন                              | ১    | ১৯     | ১৪৫    |
| "        | সার্কভৌমগৃহে মহাপ্রভুব ভোজন বিলাস বর্ণন                                  | ২    | ১      | ১৫১    |
| "        | সার্কভৌমের খেদ বর্ণন   | ১    | ২৩     | ১৫৩    |
| "        | অমোঘ প্রতি মহাপ্রভুর রূপা বর্ণন  | ১    | ২৬     | ১৫৪    |
| ১৬শ      | মহাপ্রভুর বৃন্দাবনগমনেচ্ছা বর্ণন   | ২    | ৩      | ১৫৫    |
| "        | মহাপ্রভুর নিকট যবনরাজের আগমন   | ২    | ১      | ১৬১    |
| "        | শ্রীক্ষেত্রে মহাপ্রভুর পুনরাগমন  | ১    | ২০     | ১৬৪    |
| ১৭শ      | বলভদ্রসহ বনপথে মহাপ্রভুর বৃন্দাবন গমন                                    | ২    | ১২     | ১৬৬    |
| "        | বনপথে ব্যাঘ্রদির প্রেমোন্মত্ততা বর্ণন                                    | ২    | ১৪     | ১৬৭    |
| "        | কানীতে মহাপ্রভুর গমন বৃত্তান্ত কথন                                       | ২    | ১০     | ১৬৯    |
| "        | সনৌড়িয়া বিপ্রসহ মহাপ্রভুর মিলন   | ২    | ১৯     | ১৭২    |
| "        | মথুরায় মহাপ্রভুর গমন বৃত্তান্ত কথন                                      | ২    | ২১     | ১৭৩    |
| ১৮শ      | বৃন্দাবনে মহাপ্রভুর গমন বৃত্তান্ত কথন                                    | ২    | ১      | ১৭৬    |
| "        | স্নেহে ফকির সহ মহাপ্রভুর বিচার কথন                                       | ১    | ১      | ১৮৩    |
| ১৯শ      | শ্রীকৃষ্ণের গৃহত্যাগ বৃত্তান্ত কথন                                       | ১    | ১      | ১৮৬    |
| "        | মহাপ্রভুর নিকট কৃষ্ণের আগমন বৃত্তান্ত কথন                                | ১    | ২২     | ১৮৭    |
| "        | শ্রীকৃষ্ণের প্রতি মহাপ্রভুর শক্তি সঞ্চারণ বৃত্তান্ত কথন                  | ১    | ১২     | ১৯১    |
| "        | শ্রীকৃষ্ণ শিক্ষা   | ২    | ২০     | ১৯২    |
| ২০শ      | সনাতনের গৃহত্যাগ বৃত্তান্ত কথন   | ১    | ১০     | ২০১    |
| "        | মহাপ্রভুর নিকট সনাতনের আগমন বৃত্তান্ত কথন                                | ২    | ৯      | ২০২    |
| "        | সনাতনের প্রশ্ন কথন   | ১    | ১      | ২০৫    |
| "        | মহাপ্রভু কর্তৃক উত্তর প্রদান   | ১    | ১৩     | ২০৫    |
| "        | মহাপ্রভু কর্তৃক শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপ বিচার                                 | ২    | ২২     | ২০৮    |
| ২১শ      | মহাপ্রভু কর্তৃক সম্বন্ধতত্ত্ব বিচার কথন                                  | ১    | ১৫     | ২২৩    |
| ২২শ      | মহাপ্রভু কর্তৃক অভিধেয় সাধন ভক্তি বিচার কথন                             | ২    | ৫      | ২৩৩    |
| ২৩শ      | মহাপ্রভু কর্তৃক প্রেমভক্তি কথন   | ১    | ১৬     | ২৫২    |
| ২৪শ      | মহাপ্রভু কর্তৃক আশ্বারাম শ্লোকের একমণ্ডি প্রকার অর্থবর্ণন                | ২    | ৯      | ২৬৪    |
| "        | বৈষ্ণবস্মৃতি করণে মহাপ্রভু কর্তৃক সৃষ্টি নির্ণয় কথন                     | ১    | ১৮     | ২৮৫    |
| ২৫শ      | মহাপ্রভু কর্তৃক কানীবাগিকে বৈষ্ণবকরণ বৃত্তান্ত কথন                       | ১    | ১২     | ২৮৭    |
| "        | প্রকাশানন্দের ভক্তি  | ২    | ২১     | ২৯০    |
| "        | মহাপ্রভু কর্তৃক প্রণব ও গায়ত্রীর অর্থ করণ কথন                           | ২    | ৩১     | ২৯১    |
| "        | স্ববুদ্ধিরায়ের বৃত্তান্ত কথন  | ২    | ১৫     | ২৯৭    |
| "        | নীলাচলে মহাপ্রভুর পুনরাগমন কথন   | ২    | ১৯     | ২৯৮    |
| "        | মধ্যলীলার অঙ্গুবাচ বর্ণন   | ১    | ২৭     | ২৯৯    |

ইতি মধ্যলীলার সূচীপত্র সমাপ্ত ।

# শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতামৃত ।

মধ্যলীলা ।

(1194)

প্রথম পরিচ্ছেদ ।

যস্য প্রসাদেনাঘরবোধিনীং হি বিতনোতি ।

স শ্রীচৈতন্যদেবো মে ভগবান্ সম্প্রদীদতু ॥ ১ ॥

যস্য প্রসাদেনাঘরবোধিনীং হি বিতনোতি ।

স শ্যামলালো গুরু মে ভগবান্ সংকুপয়তু ॥

যস্য প্রসাদাৎ অজ্ঞঃ অপি সদাঃ ( ঝটিতি )  
সর্বজ্ঞতাং ব্রজেৎ । স ভগবান্ ( সঠৈ রথ্যা-মাধুর্যা-  
পূর্ণাঃ ) শ্রীচৈতন্যদেবঃ মে ( মাং ) সম্প্রদীদতু ॥ ১ ॥

বাঁহার রূপায় অজ্ঞ ব্যক্তিও সদ্য  
সর্বজ্ঞতা লাভ করে, সেই ভগবান চৈতন্য-  
দেব আমার প্রতি প্রসন্ন হউন ॥ ১ ॥

আদিলীলায়াং প্রথমপরিচ্ছেদে গ্রন্থকারকৃত  
দ্বিতীয় শ্লোকঃ—

বন্দে শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যনিত্যানন্দৌ সহোদিতৌ ।

গোড়োদয়ে পুষ্পবস্ত্রৌ চিত্রৌ শনৌ তমোমুদৌ ॥ ২ ॥

তত্রৈব পঞ্চদশ শ্লোকঃ—

জয়তাং সুরভৌ পদোৎসর্গম মন্দমত্তেগভী ।

মৎসর্বস্বপদাস্তোজৌ রাখামদনমোহনৌ ॥ ৩ ॥

তত্রৈব সোড়শ শ্লোকঃ—

দীপ্যন্ত্কারণ্য-কল্পক্রমাধঃ

শ্রীমদ্রঙ্গাগারসিংহাসনহৌ ।

শ্রীমদ্রাধা শ্রীগোবিন্দদেবৌ

প্রেষ্ঠালীভিঃ সেব্যমানৌ স্মরামি ॥ ৪ ॥

তত্রৈব সপ্তদশ শ্লোকঃ—

শ্রীমান্-বাসরসারভী বংশীবটতটস্থিতঃ ।

কর্ষন্ বেণুশনৈর্গোপৌর্গোপীনাথঃ শ্রিয়েহস্তনঃ ॥ ৫ ॥

জয় জয় গৌরচন্দ্র জয় রূপানিঙ্গু ।

জয় জয় শচীসুত জয় দীনবন্ধু ॥

জয় জয় নিত্যানন্দ জয়াঈতচন্দ্র ।

জয় শ্রীবাগাদি জয় গৌরভক্তরূন্দ ॥

পূর্বে কহিল আদিলীলার সূত্রগণ ।

যাহা বিস্তারিয়াছেন দাস রুন্দাবন ॥

অতএব তার, আগি সূত্র মাত্র কৈল ।

যে কিছু বিশেষ সূত্রমধ্যেই কহিল ॥

এবে কহি শেষলীলার মুখ্য সূত্রগণ ।

প্রভুর অশেষ লীলা না যায় বর্ণন ॥

তার মধ্যে যেই ভাগ দাস রুন্দাবন ।

চৈতন্যমঙ্গলে বিস্তারি করিলা বর্ণন ॥ ১ ॥



সেই ভাগের ইহা, সূত্র মাত্র যে লিখিব ।  
 ইহা যে বিশেষ কিছু তাহা বিস্তারিব ॥  
 চৈতন্যলীলার ব্যাঘ, দাস বৃন্দাবন ।  
 তাঁর আজ্ঞায় করি তাঁর উচ্ছিন্ন চরণ ॥  
 ভক্তি করি শিরে ধরি তাঁহার চরণ ।  
 শেষলীলার সূত্রগণ করিয়ে বর্ণন ॥  
 চন্দ্রিশ বৎসর প্রভুর গৃহে অবস্থান ।  
 তাহা যেই করিল লীলা আদিলীলা নাম ॥  
 চন্দ্রিশবৎসর শেষে যেই মাঘ মাস ।  
 তার সুরূপক্ষে প্রভু করিলা সন্ন্যাস ॥  
 সন্ন্যাস করিয়া চন্দ্রিশ বৎসর অবস্থান ।  
 তাহা যেই লীলা তার শেষলীলা নাম ॥  
 শেষলীলার মধ্য অস্ত্য দুই নাম হয় ।  
 লীলাভেদে বৈষ্ণবগণ নাম ভেদ কয় ॥২॥  
 তার মধ্যে ছয় বৎসর গমনাগমন ।  
 নীলাচল, গৌড়, মেতুবন্ধ, বৃন্দাবন ॥  
 তাঁহা যেই লীলা তার মধ্যলীলা নাম ।  
 তার পাছে লীলা অন্ত্যলীলা অভিধান ॥  
 আদিলীলা মধ্যলীলা অন্ত্যলীলা আর ।  
 এনে মধ্যলীলার কিছু করিয়ে বিস্তার ॥  
 অষ্টাদশ বর্ষ কৈল নীলাচলে স্থিতি ।  
 আপনে আচরি জীবে শিখাইল ভক্তি ॥  
 তার মধ্যে ছয় বৎসর ভক্তগণ সঙ্গে ।  
 প্রেমভক্তি প্রবর্তাইল নৃত্যগীত রঙ্গে ॥  
 নিত্যানন্দ প্রভুরে পাঠাইল গৌড়দেশে ।  
 তিহঁা গৌড়দেশ ভাগাইল প্রেমরসে ॥৩॥  
 সহজেই নিত্যানন্দ কৃষ্ণপ্রেমোদ্দাম ।  
 প্রভু-আজ্ঞায় কৈল যাহা তাহা প্রেম দান ॥  
 তাঁহার চরণে মোর কোটি নমস্কার ।  
 চৈতন্যের ভক্তিখঁহো লওয়াইলা সংসার ॥  
 চৈতন্যগোস্বামি ঝাঁরে বলে বড় ভাই ।  
 তঁহো কহে মোর প্রভু চৈতন্যগোস্বামি ॥

যদ্যপি আপনে হইয়েন প্রভু বলরাস ।  
 তথাপি চৈতন্যের করে দাস অভিমান ॥  
 চৈতন্য সেব চৈতন্য গাও লহ চৈতন্য নাম  
 চৈতন্যে যে ভক্তি করে সেই মোর প্রাণ ॥  
 এইমত লোকে চৈতন্যভক্তি লওয়াইল ।  
 দীনহীন-নিন্দকাদি সব নিস্তারিল ॥  
 তবে প্রভু ব্রজে পাঠাইল রূপসনাতন ।  
 প্রভু-আজ্ঞায় দুইভাই আইলা বৃন্দাবন ॥৪॥  
 ভক্তি প্রচারিয়া সর্বত্রীর্ষ প্রকাশিল ।  
 মদনগোপাল গোবিন্দের সেবা প্রচারিল ॥  
 নানাশাস্ত্র আনি কৈল ভক্তিগ্রন্থসার ।  
 মূঢ়াধম জনের যে করিল নিস্তার ॥  
 প্রভু-আজ্ঞায় কৈল সব শাস্ত্রের বিচার ।  
 ব্রজের নিগূঢ় রস করিলা প্রচার ॥  
 হরিভক্তিবিলাস আর ভাগবতামৃত ।  
 দশমটিপ্লনী আর দশমচরিত ॥  
 এই সব গ্রন্থ কৈল গোস্বামি সনাতন ।  
 রূপগোস্বামি কৈল যত তার কেকরে গণন  
 প্রধান প্রধান কিছু করিয়ে গণন ।  
 লক্ষ গ্রন্থ কৈল ব্রজবিলাস বর্ণন ॥  
 রসায়নসিদ্ধি আর বিদম্বমাধব ।  
 উজ্জ্বলনীলমণি আর ললিতমাধব ॥  
 দানকৈলকৌমুদী আর বল্লভবাবলী ।  
 অষ্টাদশ লীলাছন্দ আর পদ্যাবলী ॥ ৫ ॥  
 গোবিন্দ বিরুদাবলি তাহার লক্ষণ ।  
 সখুরামাহাস্ম্য আর নাটকলক্ষণ ॥  
 লঘুভাগবতামৃতাদি কে করে গণন ।  
 সর্গত্র করিল ব্রজবিলাস বর্ণন ॥  
 তাঁর জাতপুঞ্জ নাম শ্রীজীবগোস্বামি ।  
 যত ভক্তিগ্রন্থ কৈল তার অন্ত নাঞি ॥  
 শ্রীভাগবতসন্দর্ভ নাম গ্রন্থ বিস্তার ।  
 ভক্তিসিদ্ধান্তের তাতে দেখাইল সার ॥

গোপালচম্পু নাম তার গ্রন্থ মহাশূর ।  
 নিত্যলীলা স্থাপন যাহে ব্রজরসপুর ॥  
 এইমত নানা গ্রন্থ করিয়া প্রকাশ ।  
 গোষ্ঠী সহিতে কৈল বৃন্দাবনে বাস ॥  
 প্রথম বৎসরে অদৈতাদি-ভক্তগণ ।  
 প্রভুরে দেখিতে কৈল নীলাজি গমন ॥  
 রথযাত্রা দেখি তাঁহা রহিলা চারিগাম ।  
 প্রভু সঙ্গে নৃত্যগীত পরম উল্লাস ॥ ৬ ॥  
 বিদায় সময়ে প্রভু কহিলা সবারে ।  
 প্রত্যক আসিবে সবে গুণ্ডিচা দেখিবারে ॥  
 প্রভু-আজ্ঞায় ভক্তগণ প্রত্যক আসিয়া ।  
 গোসাঞি মিলিয়া যায় গুণ্ডিচা দেখিয়া ॥  
 দ্বাদশবৎসর ঐছে করে গতাপতি ।  
 অন্তোন্তে দৌহার দৌহ বিনা নাহি স্থিতি  
 শেষ আর সেই রহে দ্বাদশবৎসর ।  
 ক্রমের বিরহস্কুর্তি প্রভুর অন্তর ॥  
 নিরন্তর রাত্রিদিনে বিরহ উন্মাদে ।  
 হাঁসে কান্দে নাচে গায় পড়েন বিসাদে ॥  
 যে কালে করেন জগন্নাথ দরশন ।  
 মনে ভাবে কুরুক্ষেত্রে হইল গিলন ॥  
 রথযাত্রা আগে যবে করেন নর্ভন ।  
 তাহা এই পদমাত্র করয়ে গায়ন ॥ ৭ ॥  
 তথাহি পদং ॥

সেই ! সেইত পরাগনাথ পাইলু ।  
 বাহা লাগি মদন দহনে বুঝি গেলু ॥ ৫ ॥  
 এই ধূয়া গানে নাচেন দ্বিতীয় প্রহর ।  
 কৃষ্ণ লইয়া ব্রজে যাই এ ভাব অন্তর ॥  
 এই ভাবে নৃত্য মধ্যে পড়ে এক শ্লোক ।  
 সে শ্লোকের অর্থ কেহ নাহি বুঝে লোক ॥ ৮

তথাহি কাব্যপ্রকাশে প্রথমোক্তাসে চতুর্থাঙ্ক-  
 যতঃ শ্লোকঃ—

যঃ কৌমারহরঃ স এব হি বরস্তা এব চৈত্রকপা-

স্তে চোন্নীলিতমালতীসুরভয়ঃ শ্রোতাঃ কদম্বানীলাঃ ।  
 সা চৈবাম্মি তথাপি তত্র সুরতব্যাপারলীলাবিধৌ-  
 রেবাবোধনি বেতসীতরুতলে চেতঃ সমুৎকণ্ঠতে ॥৬৭

( হে সখি ) যঃ ( নায়কঃ ) কৌমারহরঃ  
 ( কৌমারং হরতি বিবাহেন অপনয়তি, যদ্বা তদ-  
 বস্থায়ং পরমরসিকত্বেন সন্তোগেচ্ছোৎপাদমতয়া  
 মন্মানসং হৃতবান্, কেচিত্তু জার ইতি বদন্তি, তৎ  
 শিষ্টজর্নৈঃ নাদৃতঃ রসাতাসপ্রসঙ্গাৎ ) স এব হি  
 ( নিশ্চিতং ) বরঃ ( নাত্যঃ ) তাঃ ( যান্ত তত্র  
 ক্রীড়িতং তৎ সঙ্গাতীয়াঃ ) এব চৈত্রকপাঃ ( চৈত্র-  
 মাসস্ত জ্যোৎস্নাবত্যাঃ রাত্রয়ঃ, তথা ) তে চ উন্নী-  
 লিতমালতীসুরভয়ঃ ( উন্নীলিতাঃ বিকশিতাঃ যাঃ  
 মালতাঃ তাত্তিঃ সুরভয়ঃ শোভনগন্ধাঃ পূর্ববৎ  
 বহস্তি ) শ্রোতাঃ ( পরমসুখদাঃ ) কদম্বানীলাঃ  
 ( কদম্বপুষ্পমধুক্লেদো বাসবঃ বহস্তি, পুনঃ ) সা  
 ( শ্রীরাধা ) চ ( অহম্ এব ) অম্মি ( তদবস্থেব  
 বর্ধতে ) তথাপি ( যদ্যেবং পাত্রকালনৈশিষ্ট্যমস্তি  
 তথা সতি দেশনৈশিষ্ট্যাভাবেন তাদৃশ সুখোদয়া-  
 ভাবাৎ ) তত্র রেবারোধনি বেতসীতরুতলে সুরত-  
 ব্যাপারলীলাবিধৌ ( শৃঙ্গার-কৌশল-ক্রীড়াবিষয়ে,  
 মম ) চেতঃ ( মনঃ ) সমুৎকণ্ঠতে ( তত্রৈব ) বিহর্ষম্  
 ইচ্ছতি ॥ ৬ ॥

ব্রজ ব্যতীত শ্রীকৃষ্ণসঙ্গমে তাদৃশসুখের  
 অভাব সূচনা পূর্বক শ্রীকৃষ্ণের ব্রজা-  
 গমন প্রার্থনা কবিয়া নিজাভিপ্রায়-সাধক  
 অন্ত-কথিত-পদ্য শ্রীকৃষ্ণাগ্রে নিজসখীর  
 প্রতি কহিতেছেন, হে সখি ! যিনি  
 আমার কৌমার কাল হরণ করিয়া-  
 ছিলেন, সম্প্রতি তিনিই আমার বর ।  
 সেই সকল চৈত্রমাসের জ্যোৎস্নাবতী  
 রাত্রি, সেই বিকশিত মালতীর সুগন্ধ,  
 সেই পরমসুখদায়ক মন্দ মন্দ প্রবাহিত  
 কদম্ববন-বায়ু এবং অম্মিও সেই আছি,  
 তথাপি রেবানদীতটে অশোক তরুতলে

যে সুরত ব্যাপার হইয়াছিল, তাহাতেই  
আমার চিত্ত উৎকণ্ঠিত হইতেছে ॥ ৬ ॥  
এই শ্লোকের অর্থ জানে একলে স্বরূপ ।  
দৈবে সে বৎসর তাঁহা গিয়াছেন রূপ ॥  
প্রভু মুখে শ্লোক শুনি শ্রীরূপগোসাঞি ।  
সেই শ্লোকের অর্থশ্লোক করিল তথাই ॥  
শ্লোক করি এক তালপত্রেতে লিখিয়া ।  
আপনার বাসাচালে রাখিল গুঁজিয়া ॥  
শ্লোক রাখি গেলা সমুদ্র স্থান করিতে ।  
হেনকালে আইলা প্রভু তাহারে মিলিতে ॥  
হরিদাস ঠাকুর আর শ্রীরূপ সনাতন ।  
জগন্নাথমন্দিরে নাহি যায় এই তিনজন ॥৯৫॥  
প্রভু জগন্নাথের উপলভোগ দেখিয়া ।  
নিজগৃহে যান প্রভু এ তিনেরে মিলিয়া ॥  
এই তিন মধ্যে যবে থাকে যেইজন ।  
তারে আসি আপনে মিলে প্রভুর নিয়ম ॥  
দৈবে প্রভু আসি যবে উর্দ্ধেতে চাহিয়া ।  
চালেগোঁজা তালপত্রে সেইশ্লোক পাইলা ॥  
শ্লোক পড়ি প্রভু আছেন আনিষ্ট হইয়া ।  
রূপগোসাঞি আসি পড়ে দণ্ডবৎ হঞা ॥  
উষ্টি মহাপ্রভু তাঁরে চাপড় মারিয়া ।  
কহিতে লাগিলা কিছু কোলেতে করিয়া ॥  
মোরশ্লোকেব অভিপ্রায়কেহোনাহি জানে ।  
মোর মনের কথা তুই জানিলি কেমনে ॥১০॥  
এত বলি তারে বহু প্রসাদ করিয়া ।  
স্বরূপগোসাঞিরে শ্লোক দেখাইল লৈয়া ॥  
স্বরূপে গুছেন প্রভু হইয়া বিস্মিতে ।  
মোর মন কথা রূপ জানিল কেমনে ॥  
স্বরূপ কহিল যাতে জানিল তোমার মন ।  
তাহা জানি হয় হোমার রূপার ভাজন ॥  
প্রভু কহে তাবে আসি সমুষ্ঠ হইয়া ।  
আলিঙ্গন কৈল সর্স শক্তি মথারিয়া ॥

যোগ্যপাত্র হয় গৃঢ়রস বিবেচনে ।  
তুমি কহিও তারে গৃঢ়-রসাখ্যানেন ॥  
এই সব কথা কহিব আগে বিস্তারিয়া ।  
সংক্ষেপে উদ্দেশ্য কহি প্রস্তাব পাইয়া ॥১১

তথাহি শ্রীরূপগোস্বামীবাক্যম্—

প্রিয়ঃ সোহয়ং কৃষ্ণঃ সহচরি কুরুক্ষেত্রমিলিত-  
স্তথাহং সা রাধা ভদ্রিদমুভয়োঃ সঙ্গমসুখম্ ।  
তথাপ্যন্তঃ-খেলনমধুর-মুরলীপঞ্চমজুযে  
মনো মে কালিন্দীপুলিনবিপিনায় স্পৃহয়তি ॥ ৭ ॥

( কুরুক্ষেত্রধাত্রায়াং লক্ষকৃষ্ণসঙ্গা শ্রীরাধা সখিঃ  
প্রতি আহ ) সহচরি! সঃ ( বৃন্দাবনবিহারী )  
অয়ং ( কিশোরঃ ) প্রিয়ঃ কৃষ্ণঃ কুরুক্ষেত্রমিলিতঃ  
( কুরুক্ষেত্রে প্রাপ্তঃ ) তথা সা রাধা অহম্ উভয়োঃ  
তৎ ইদং সঙ্গমসুখং ( সঙ্গমেন পরস্পরমিলনেন যৎ  
সুখং জাতং তৎ যত্নপোষং ) তথাপি অন্তঃ-  
খেলনমধুরমুরলীপঞ্চমজুযে ( অন্তঃ বিপিনস্ত মধ্যে  
ক্রীড়ন্ মধুরো যো মুরল্যাঃ পঞ্চমঃ রাগবিশেষঃ তৎ  
ছোষতি সেবতে তস্মৈ, এতেন তাদৃশ মুরলীগানস্ত  
অস্তর অসম্ভবস্ত সূচনাৎ তদনসোৎকর্ষো ধ্বনিতঃ )  
কালিন্দীপুলিনবিপিনায় ( যমুনাতীরস্থ কাননায় )  
মে ( মম ) মনঃ স্পৃহয়তি ( তত্র গমনায় সমুৎসুকং  
ভবতি ॥ ৭ ॥

কুরুক্ষেত্রে শ্রীরাধা শ্রীকৃষ্ণ-সঙ্গতি  
লাভ করতঃ সহচরিকে বলিতেছেন, হে  
সখি! আমার সহিত বৃন্দাবনবিহারী  
সেই এই শ্রীকৃষ্ণ কুরুক্ষেত্রে মিলিত হইয়া-  
ছেন এবং আমিও সেই নবযৌবনসম্পন্ন  
রাধা, তাঁহার সহিত মিলিত হইয়াছি ;  
পরস্পরের মিলনে সুখও হইতেছে ।  
তথাপি সেই মধুর মুরলীর মৃদুপঞ্চম-  
স্বরের সেবনকারী যমুনার তীরস্থ নিকুঞ্জ-  
কাননে যাইতে আমার মন উৎকণ্ঠিত

হইতেছে অর্থাৎ শ্রীরন্দাবনে শ্রীকৃষ্ণসঙ্গ-  
সুখভোগেচ্ছা হইতেছে ॥ ৭ ॥

এই শ্লোকের সংক্ষেপার্থ শুন ভক্তগণ ।  
জগন্নাথ দেখিয়া যৈছে প্রভুর ভাবন ॥  
শ্রীরাধিকা কুরুক্ষেত্রে কৃষ্ণের দর্শন ।  
যদ্যপি পায়েন তত্ব ভাবেন ঐছন ॥  
রাজবেশ হাতী ঘোড়া মনুষ্য গহন ।  
কাঁহা গোপবেশ কাঁহা নির্জন রন্দাবন ॥  
সেই ভাব সেই কৃষ্ণ সেই রন্দাবন ।  
যবে পাই তবে হয় বাঞ্ছিত পূরণ ॥ ১২ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে দ্বাদশিতমো-  
ধ্যায়ৈ পঞ্চত্রিংশ শ্লোকে শ্রীকৃষ্ণং প্রতি শ্রীগোপী-  
ধাক্যম্—

আহুচ তে নলিননাভ পদাবিন্দং  
যোগেশ্বরৈর্হৃদি বিচিন্ত্যমগাধবোধৈঃ ।  
সংসারকুপপতিতোত্তরণাবলম্বং  
গেহং জুবামপি মনশ্চাদিয়াং সদা নঃ ॥ ৮ ॥

( গোপ্যঃ ) আহুঃ চ ( হে ) নলিননাভ !  
অগাধবোধৈঃ ( গভীরবুদ্ধিভিঃ, বদ্য সাক্ষাত্তদর্শনে-  
হপ্যক্ষুভিতবুদ্ধিরিব তদর্শনেচ্ছয়া মুহূর্মোহেন  
ক্ষুভিতবুদ্ধিভিঃ ) যোগেশ্বরৈঃ ( যোগঃ ভক্তিব্যোগঃ  
তদীশ্বরৈঃ বশীকৃতঃ ভক্তিব্যোগৈঃ ) হৃদি বিচিন্ত্যং  
সংসারকুপপতিতোত্তরণাবলম্বং ( সংসার এব কুপঃ  
তস্মিন্ পতিতানাম্ উত্তরণায় উদ্ধারায় অবলম্ব্যত  
ইতি অবলম্ব্যম্ আশ্রয়রূপং ন তু অস্মাকং বিরহ-  
সিকুনিমগ্নানাম্ উদ্ধর্তুং সমর্থমিতিভাবঃ ) তে ( তব )  
গদারবিলম্বং সদা মনসি জুবাং ( জ্বরূপয়া ত্বং  
সেবমানানাং ) নঃ ( অস্মাকং ) গেহং ( বন্দাবনং  
প্রতি ) উদিয়াং ॥ ৮ ॥

কুরুক্ষেত্রে গোপীগণ কহিলেন, হে  
পদ্মনাভ ! তোমার যে চরণকমলকে  
ভক্তেরা হৃদয়ে সর্বোৎকৃষ্টরূপে চিন্তা

করেন, জ্ঞানিরা বাঁহাকে পরমপুরুষার্থ-  
রূপে ভজনা করেন এবং বাঁহাকে আশ্রয়  
করতঃ বিষয়ানন্ত ব্যক্তিগণ সংসারকুপ  
হইতে উদ্ধার হইয়েন । তোমার সেই  
পাদপদ্ম কি বিরহমুদ্রে পতিত আমা-  
দিগকে উদ্ধার করিতে সমর্থ হইবে ?  
তোমার রূপায় তোমার চরণ সেবা-  
কারিণী আমাদের গৃহের প্রতি অর্থাৎ  
শ্রীরন্দাবনে রূপা করিয়া তুমি উদয় হও,  
তাহা হইলেই আমাদের বিরহানল দূরী-  
ভূত হইবে, নচেৎ তোমার স্মরণে সম্ভা-  
পের উপশম হইবে না ; যে হেতু আমরা  
অবলা বিধায়ে যোগেশ্বরগণের ন্যায় ও  
জ্ঞানিগণের ন্যায় তোমাকে মনে ধারণা  
করিতে অপারক ॥ ৮ ॥

তোমার চরণ মোর ব্রজপুত্র ঘরে ।  
উদয় করয়ে যবে তবে বাঞ্ছা পূরে ॥  
ভাগবত শ্লোকার্থ বিশদ করিয়া ।  
রূপগোপাশ্রিতশ্লোককৈললোকবুঝাই ॥ ১৩

তথাহি দ্বাদশিতমাধবে দশমস্কন্ধে ষট্‌ত্রিংশশ্লোকঃ—

যা তে লীলারসপরিমলোদগারিবত্য়াপন্নীতা  
ধন্যা ক্ষৌণী বিলসতি বৃত্তা মাধুরী মাধুরীভিঃ ।  
তত্রাস্মাভি-চট্টলপশুপীতামুগ্ধাশুরাভিঃ  
সংবীতস্বং কলয় বদনোন্মাসিবেগুর্বিহারম্ ॥৯॥

যা ( ক্ষৌণী ) তে ( তব ) লীলারসপরিমলোদ-  
গারিবত্য়াপন্নীতা ( লীলারসপরিমলোদগারিণী বা  
বন্যা বনসমূহঃ তয়া পরীতা ব্যাপ্তা ) মাধুরীভিঃ  
বৃত্তা ( আবৃত্তা ) মাধুরী ধন্যা ক্ষৌণী ( ব্রজভূতঃ )  
বিলসতি তত্র ( ব্রজভূমৌ ) চট্টলপশুপীতামুগ্ধা-  
শুরাভিঃ ( চট্টলাঃ চঞ্চলাঃ পশুপীতাঃ - গোপী-  
ভাবেন মোহিতাস্তঃকরণং যাসাং ত্যাভঃ, যথা  
হে চট্টল, অন্যৎসমানং ) অস্মাভিঃ ( গোপীভিঃ )

সংবীতঃ ( বেষ্টিতঃ ) বদনোন্মাসিবেণুঃ ( বদনেন  
উন্মাসিতুঃ নীলমসোতি বদনোন্মাসী বেণুঃ যস্য  
তথাভূতশ্চ সন্ ) ষং বিহারং কলয় ( কুরু ) ॥৯॥

শ্রীকৃষ্ণ শ্রীরাধাকে অভীষ্ট বর প্রার্থনা  
করিতে কহিলে, শ্রীরাধা কহিলেন, হে  
সুন্দর ! যে মাধুর্যময়ী পথরূপা ব্রজপূরী  
তোমার মীলাস্থান সকলের গৌরভ  
প্রকাশকারি বনসমূহে পরিব্রতা হইয়া  
শোভা পাইতেছে ; সেই স্থানে গোপী-  
ভাবে মোহিতান্তঃকরণ মাদৃশ জনের  
সহিত মিলিত হইয়া মূলীরঞ্জিত স্মিত-  
বদনে বংশীধ্বনি করতঃ রামাদিলীলার  
অনুষ্ঠান কর ; ইহাই প্রার্থনা ॥ ৯ ॥

এই মতে মহাপ্রভু দেখি জগন্নাথে ।  
সুভদ্রা সহিত দেখে বংশী নাহি হাতে ॥  
ত্রিভঙ্গ সুন্দর ব্রজে ব্রজেশ্বরনন্দন ।  
কাঁহা পাব এই বাঞ্ছা বাঢ়ে অনুক্ষণ ॥  
শ্রীরাধিকার উন্মাদ যৈছে উদ্ধব দর্শনে ।  
উদ্গর্গা প্রলাপিত হৈছে প্রভুরহয়রাত্রিদিনে ॥১৪  
দ্বাদশবৎসর শেষ ঐছে গোঙাইল ।  
এইমতে শেষলীলা ত্রিবিধানে কৈল ॥  
সম্মাস করি চক্ষিণ বৎসর কৈল যে কস্ম ।  
অনন্ত অপার তার কে জানিবে মস্ম ॥  
উদ্দেশ করিতে করি দিগ্‌দরশন ।  
মুখ্য মুখ্য লীলার করি সূত্রগণন ॥  
প্রথমসূত্র প্রভুর সম্মাসকরণ ।  
তবেত চলিলা প্রভু শ্রীসুন্দারবন ॥  
প্রেমোতে নিস্কল বাহু নাহিক স্মরণ ।  
তিন দিন কৈল রাঢ়দেশেতে জমণ ॥  
নিত্যানন্দ প্রভু মহাপ্রভু ভুলাইয়া ।  
গঙ্গাতীর গইয়া আইলা যমুনা বলিয়া ॥

শাস্তিপুরে আচার্যের গৃহেতে গমন ।  
প্রথমভিক্ষা কৈল তাহা রাত্রে সঙ্কীর্তন ॥১৫  
মাতা ভক্তগণে তাহা করিল মিলন ।  
সর্ব সমাধান করি কৈল নীলাদ্রিগমন ॥  
পথে নানালীলা সব দেব দরশন ।  
মাধবপুরীর কথা গোপাল-স্থাপন ॥  
ক্ষীরচূরি কথা মাঞ্চিগোপাল বিবরণ ।  
নিত্যানন্দ কৈল প্রভুর দণ্ডভঙ্গন ॥  
কৃষ্ণ হইয়া একা গেলা জগন্নাথ দেখিতে ।  
দেখিয়া মুচ্ছিত হঞা পড়িল ভূমিতে ॥  
সার্কভৌম লৈয়া আইলা আপন ভবন ।  
তৃতীয়প্রহরে হৈল প্রভুর চেতন ॥  
নিত্যানন্দ জগদানন্দ দামোদর মুকুন্দ ।  
পাছে আসি মিলি সবে পাইলা আনন্দ ॥  
তবে সার্কভৌমে প্রভু প্রসাদ করিল ।  
আপন ঈশ্বর মূর্তি তাবে দেখাইল ॥১৬ ॥  
তবেত করিল প্রভু দক্ষিণ গমন ।  
কুম্বক্ষেত্রে কৈল বাসুদেব নিমোচন ॥  
জীয়ড়-গুনিংহে কৈল নুসিংহস্তবন ।  
পথে পথে গ্রামে গ্রামে নাম প্রবর্তন ॥  
গোদাবরী তীর-বনে বৃন্দাবন ভ্রম ।  
রামানন্দরায় সহ তাহাই মিলন ॥  
ত্রিমল্ল ত্রিপদী স্থান কৈল দরশন ।  
সর্বত্র করিল কৃষ্ণ নাম প্রবর্তন ॥  
তবেত পামণ্ডিগণের করিল দমন ।  
অহোবল নুসিংহাদি করিল দর্শন ॥  
শ্রীরঙ্গক্ষেত্র আইলা কাবেরীর তীর ।  
শ্রীরঙ্গ দেখিয়া প্রেমে হইলা অস্থির ॥  
ত্রিমল্লভট্টের গৃহে কৈল প্রভু বাস ।  
তাহাই রহিলা প্রভু বর্ষা চারিমাংস ॥ ১৭ ॥  
শ্রীবৈষ্ণব ত্রিমল্লভট্ট পরম পণ্ডিত ।  
গোমাঞ্চির পাণ্ডিত্য প্রেমে হইলা বিস্মিত

চাতুর্মাস্য তাঁহা প্রভু শ্রীবৈষ্ণব সনে ।  
 গোড়াইলা নৃত্যগীত কৃষ্ণনঙ্গীর্ষনে ॥  
 চাতুর্মাস্য অন্তে পুনঃ দক্ষিণ গমন ।  
 পরমানন্দপুরী সনে তাঁহাই মিলন ॥  
 তবে ভট্টমারি হৈতে কৃষ্ণদাসের উদ্ধার ।  
 রামজপী বিশ্রামুখে কৃষ্ণনাম প্রচার ॥  
 শ্রীরঙ্গপুরীর সঙ্গে হৈল মিলন ।  
 রামদান বিপ্রের কৈল দুঃখ বিমোচন ॥  
 তত্ত্ববাদী সনে কৈল তত্ত্বের বিচার ।  
 আপনাকে গীনবুদ্ধি হৈল তা সবার ॥  
 অনন্ত পুরুষোত্তম জীজনানন্দন ।  
 পদ্মনাভ বাসুদেব কৈল দরশন ॥  
 তবে প্রভু কৈল সপ্ততাল বিমোচন ।  
 সেতুবন্ধে স্নান রামেশ্বর দরশন ॥  
 তাহাই করিল কুর্ঙ্গপুরাণ শ্রবণ ।  
 মায়ামীতা হরিলরাবণ তাহাতেলিখন ॥১৮  
 শুনিঞা প্রভুর হৈল আনন্দিত মন ।  
 রামদাস বিপ্রের কথা হইল স্মরণ ॥  
 সেই পুরাতন পত্র আশ্রয় করি নিল ।  
 রামদাস বিপ্রে দেখাইয়া দুঃখ খণ্ডাইল ॥  
 ব্রহ্মসংহিতা কৃষ্ণকর্ণামৃতদুইপুস্তকলিখিঞা  
 দুই পুস্তক লঞা আইলা উত্তম জানিঞা ॥  
 পুনরপি নীলাচলে প্রভু গমন করিল ।  
 ভক্তগণে মিলি স্নানযাত্রা দেখিল ॥  
 অনবসরে জগন্নাথের না পাঞা দর্শন ।  
 বিরহে আলালনাথ করিলা গমন ॥  
 ভক্তগণ সঙ্গে দিনকত তাঁহাই রহিল ।  
 গোড়ের ভক্ত আইসে সমাচার পাইল ॥  
 নিত্যানন্দ ও সার্কভৌম আশ্রয় করিয়া ।  
 নীলাচলে আইলা মহাপ্রভুকে লইয়া ॥  
 বিরহে বিহ্বল প্রভু না জানে রাত্রিদিনে ॥  
 হেনকালে গোড় হৈতে আইলা ভক্তগণে ॥

সবে মিলি যুক্তিকরি, তবে কীর্তন আরম্ভিল ।  
 কীর্তনাবেশে প্রভুর মন স্থির হৈল ॥১৯॥  
 পূর্বে যবে প্রভু রামানন্দে মিলিলা ।  
 নীলাচলে আদিবারে তারে আজ্ঞা দিলা ॥  
 রাজআজ্ঞালৈয়া তিঁহো আইলা কথোদিনে  
 রাত্রিদিনে কৃষ্ণকথা রামানন্দ সনে ॥  
 কাশীমিশ্রে কৃপা প্রদ্যাম্মিশ্রাদি মিলন ।  
 পরমানন্দপুরী গোবিন্দ কাশীশ্বরগমন ॥  
 দামোদর স্বরূপ মিলন পরমানন্দ ।  
 শিখিমাহিতী মিলন রায় ভবানন্দ ॥  
 গোড়দেশ হৈতে সব বৈষ্ণবাগমন ।  
 কুলীনগ্রাম-বাগী সঙ্গে প্রথমমিলন ॥  
 নরহরি-মুকুন্দাদি বত খণ্ডবাগী ।  
 শিবানন্দসেন সঙ্গে মিলিলা সবে আসি ॥  
 স্নানযাত্রা দেখি প্রভুর সঙ্গে ভক্তগণ ।  
 সবা লঞা কৈলা প্রভু গুণ্ডিচা মাজ্জন ॥  
 সবা সঙ্গে তবে রথযাত্রা কৈল দরশন ।  
 রথ আগে নৃত্য করি উত্তান গমন ॥  
 প্রতাপরুদ্ভের কৃপা কৈল সেই স্থানে ।  
 গোড়িয়াভক্তেরে আজ্ঞাদিগবিদায়েরদিনে ॥  
 প্রত্যক আদিবে রথযাত্রা দরশনে ।  
 এই ছলে চাহে ভক্তগণের মিলনে ॥ ২০ ॥  
 সার্কভৌম-গৃহে প্রভুর ভিক্ষা পরিপাটি ।  
 মাঠের মাতা কহে ষাতে রাণী হউক মাঠ  
 বর্ধাস্তরে অদ্বৈতাদি-ভক্ত আগমন ।  
 প্রভুরে দেখিতে সবে করিলা গমন ॥  
 আনন্দে সবারে নিঞা দেন বাসাস্থান ।  
 শিবানন্দ সেন করে সবার পালন ॥  
 শিবানন্দে সঙ্গে আইলা কুকুর ভাগ্যবান ।  
 প্রভুর চরণ দেখি হৈলা অন্তর্দান ॥  
 পথে সার্কভৌম সহ সবার মিলন ।  
 সার্কভৌম ভট্টাচার্যের কাশীতে গমন ॥

প্রভুরে মিলিলা সর্ব বৈষ্ণব আসিঞা ।  
 জলক্রীড়া কৈল প্রভু সবাকৈ লইঞা ॥  
 সব লঞা কৈল প্রভু গুণ্ডিচা মাঙ্জন ।  
 রথযাত্রা দরশনে প্রভুর নর্জন ॥  
 উপবনে কৈল প্রভু বিবিধবিলাস ।  
 প্রভুর অভিষেক কৈল বিপ্র কৃষ্ণদাস ॥  
 গুণ্ডিচাতে নৃত্য অস্ত্রে কৈল জলকেলি ।  
 হোরাপঞ্চমীতে দেখেলক্ষ্মীদেবীরকেলি ॥২১  
 কৃষ্ণজন্মযাত্রাতে প্রভু গোপবেশ হৈলা ।  
 দধিভার বহি তবে লগুড় ফিরাইলা ॥  
 গোড়ের ভক্তগণে তবে করিল বিদায় ।  
 সঙ্গের ভক্ত লঞা করেন কীর্তন সদায় ॥  
 রুদ্দাবন যাইতে গোড়ে করিল গমন ।  
 প্রতাপরুদ্ৰ কৈল পথে বিবিধ সেবন ॥  
 পুরীগোসাঞি সঙ্গ বস্ত্রপ্রদান প্রসঙ্গ ।  
 রামানন্দরায় আইলা ভদ্রক পর্য্যন্ত ॥  
 আসি বিদ্যাবাচস্পতি গৃহেতে রহিলা ।  
 গোসাঞি দেখিতে লোক সংঘট হইলা ॥  
 পঞ্চদিন দেখে লোক নাহিক বিশ্রাম ।  
 লোকভয়ে রাত্রিতে আইলা কুলীয়া গ্রাম ॥  
 কুলিয়া গ্রামেতে প্রভুর শুনি আগমন ।  
 কোটি কোটি লোক আসি কৈলা দরশন ॥  
 কুলিয়া গ্রামে কৈল দেবানন্দের প্রসাদ ।  
 গোপালবিষ্ণেরক্ষমাইলাশ্রীবাসাপরাধ ॥২২  
 পাষণ্ডী নিশ্চুক আসি পড়িল চরণে ।  
 অপরাধ ক্ষমি তারে দিল কৃষ্ণপ্রেমে ॥  
 রুদ্দাবন যাবেন প্রভু শুনি নৃনিংহানন্দ ।  
 পথ সাজাইল মনে করিয়া আনন্দ ॥  
 কুলিয়ানগর হৈতে পথ রত্নে রাখাইল ।  
 নিরন্তপুস্পের শয্যা উপরে পাতিল ॥  
 পথ দুই দিকে পুষ্প বকুলের শ্রেণী ।  
 মধ্যে মধ্যে ছুই পাশে ছুই পুষ্করিণী ॥

রত্নবান্ধা ঘাট তাতে প্রফুল্ল কমল ।  
 নানা পক্ষি কোলাহল সুধাসম জল ॥  
 শীতল সমীর বহে নানা গন্ধ লঞা ।  
 কানাইর নাটশালা পর্য্যন্ত গৈল বান্ধিয়া ॥  
 আগে মন নাহি চলে না পারে বান্ধিতে ।  
 পথ বান্ধা না যায় নৃনিংহ হইলা বিস্মিতে ॥  
 নিশ্চয় করিয়া কহি শুন সর্কজন ।  
 এবারে না যাবেন প্রভু শ্রীরুদ্দাবন ॥  
 কানাইরনাটশালা হৈতে আসিব ফিরিয়া ।  
 জানিবে পশ্চাৎ কহিলু নিশ্চয় করিয়া ॥২৩  
 গোসাঞি কুলিয়া হৈতে চলিলা রুদ্দাবন ।  
 সঙ্গ সহশ্রেক লোক যত ভক্তগণ ॥  
 বাঁহা বাঁহা যায় তাঁহা কোটি সংখ্য লোক ।  
 দেখিতে আইসে, দেখি খণ্ডে দুঃখ শোক ॥  
 বাঁহা বাঁহা প্রভুর চরণ পড়য়ে চলিতে ।  
 সেই মুক্তিকা লয় লোক, গর্ত হয় পথে ॥  
 এঁছে চলি আইলা প্রভু রামকেলি গ্রাম ।  
 গোড়ের নিকটে গ্রাম অতি অনুপম ॥  
 তাহা নৃত্য করে প্রভু প্রেমে অচেতন ।  
 কোটি কোটি লোক আইসে দেখিতে চরণ ॥  
 গোড়ের যবন রাজা প্রভাব শুনিঞা ।  
 কহিতে লাগিলা কিছু বিস্মিত হইয়া ॥  
 বিনা দানে এত লোক যার পাছে ধায় ।  
 সেইত গোসাঞি ইহা জানিহ নিশ্চয় ॥  
 কাজি যবন কেহো ঙ্গহার না কর হিংসন ।  
 আপন ইচ্ছার বুলুন যাহা ইঁহার মন ॥  
 কেশবছত্রিরে রাজা বার্তা যে পুছিল ।  
 প্রভুর মহিমা ছত্রী উড়াইয়া দিল ॥ ২৪ ॥  
 ভিক্ষারি সন্ন্যাসি করে তীর্থপর্যটন ।  
 তারে দেখিবারে আইসে দুই চারিজন ॥  
 যবনে তোমার ঠাঁই করয়ে লাগানি ।  
 তার হিংসায় লাভ নাহি হয়, মাত্র হানি ॥

রাজারে প্রাবোধি ছত্রী ব্রাহ্মণ পাঠাইয়া ।  
 চলিবার তরে, প্রভুরে পাঠাইল কহিয়া ॥  
 দবীরখাসের রাজা পুছিল নিভূতে ।  
 গোমাত্রিরমহিমা তঁহো লাগিলাকহিতে ॥  
 যেতোমারেরাজাদিল যেতোমারগোমাঞা ।  
 তোমারভাগ্যেতোমারদেশেজন্মিলআসিয়া ।  
 তোমার মঙ্গল বাঞ্ছে বাক্য সিদ্ধ হয় ।  
 ইহঁার আশীর্বাদে তোমাব সর্বত্রৈতে জয় ॥  
 মোরে কেনে পুছ, তুমি পুছ আপন মন ।  
 তুমি নরাদিপ হও, বিষ্ণু অংশ সম ॥  
 তোমারচিত্তে চৈতন্যে কৈছেহয় জ্ঞান ।  
 তোমার চিত্তে যেই লয়ে সেইর্ত প্রমাণ ॥  
 রাজা কহে, শুন মোর চিত্তে যেই লয় ।  
 মাক্ষাৎ ঈশ্বর ইহঁো নাহিক সংশয় ॥ ২৫ ॥  
 এত কহি রাজা গেলা নিজ অভ্যন্তরে ।  
 দবীরখাস আইলা তবে আপনার ঘরে ॥  
 ঘরে আসি দুই ভাই বুকতি করিয়া ।  
 প্রভু দেখিবারে চলে বেশ লুকাইয়া ॥  
 অর্ধরাত্রে দুই ভাই আইলা প্রভু স্থানে ।  
 প্রথমে মিলিলা হরিদাস নিত্যানন্দ সনে ॥  
 তাঁরা দুই জন তবে জানাইল প্রভুরে ।  
 রূপনাকরমল্লিকআইলাতোমাদেখিবারে ॥  
 দুই গুচ্ছ তুণ দৌহে দশনে পরিয়া ।  
 গলে বস্ত্র বান্ধি পড়ে দণ্ডবৎ হঞা ॥  
 দৈন্য রোদন করে আনন্দে বিহ্বল ।  
 প্রভু কহে উঠ উঠ হইল মঙ্গল ॥  
 উঠি দুই ভাই তবে দশে তুণ ধরি ।  
 দৈন্য করি স্তুতি করে যোড়হাত করি ।  
 জয় জয় শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য দয়াময় ।  
 পতিতপাবন জয় জয় মহাশয় ॥  
 নীচজ্ঞপতি নীচসঙ্গী করি নীচকাজ ।  
 তোমার অঙ্গেতে প্রভুকহিতে বাসিলাজ ॥ ২৬ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ পূর্ব্ববিশাগে সাধন-  
 ভক্তিরহর্গ্যাং পঞ্চদশাঙ্করত পদপূরণবচনম্—

মত্তুল্যো নাস্তি পাপাঘ্না নাপরাধী চ কশ্চন ।  
 পরীহারেহপি লজ্জা মে কিং ক্রবে পুংবোত্তম ॥ ১০ ॥

( হে ) পুংবোত্তম, মত্তুল্যঃ পাপাঘ্না নাস্তি  
 কশ্চন অপরাধী ন । পরিহারে ( অপরাধমার্জন-  
 নিবেদনে ) অপি মে ( মম ) লজ্জা ( অতএব )  
 অহং কিং ক্রবে ( কথয়ামি ) ॥ ১০ ॥

হে পুংবোত্তম ! আমার ন্যায়  
 পাপাঘ্না ও অপরাধী জগতে আর কেহই  
 নাই । বলিতে কি, পাপবিনাশের জন্ত  
 আপনার নিকট দীনতা প্রকাশ করিতেও  
 আমার লজ্জা হইতেছে ॥ ১০ ॥

পতিত তারিতে প্রভু তোমার অবতার ।  
 আমা বহি জগতে পতিত নাহি আর ॥  
 জগাই মাধাই দুই করিলে উদ্ধার ।  
 তাহা উদ্ধারিতে শ্রম নহিল তোমার ॥  
 ব্রাহ্মণ জাতি তারা নবদ্বীপে ঘর ।  
 নীচসেবা না করে নহে নীচের কুর্পাব ॥  
 তবে এক দোষ তার হয় পাপাচাব ।  
 পাপরাশি দহে নামাভাসেতে তোমাব ॥  
 তোমার নাম লঞা তোমার নিন্দন ।  
 সেই নাম হৈল তার মুক্তির কারণ ॥  
 জগাই মাধাই হৈতে কোটি কোটি গুণে ।  
 অধম পতিত পাপী আগরা দুই জনে ॥ ২৭ ॥  
 স্নেহজাতি স্নেহসেবী করি স্নেহকর্ম ।  
 গোব্রাহ্মণদ্রোহি সঙ্গে আমার মঙ্গম ॥  
 মোর কর্ম মোর হাতে গলায়ে বান্ধিয়া ।  
 কুবিসয় বিষ্ঠাগর্ভে দিয়াছে ফেলিয়া ॥  
 আমা উদ্ধারিতে বলী নাহি ত্রিভুবনে ।  
 পতিতপাবন তুমি, তবে তোমা বিনে ॥



আমা উদ্ধারিলা যদি দেখাও নিজ বল ।  
পতিতপাবন নাম তবে সে সকল ॥  
সত্য এক বাত কহঁই, শুন দয়াময় ।  
মো বিনু দয়ার পাত্র জগতে না হয় ॥  
মোরে দয়া করি কর স্বদয়া সফল ।  
অখিলব্রহ্মাণ্ড দেখুক তোমার দয়াবল ॥২৮

তথাহি গোস্বামিপাদোক্তবচনম্—

ন মুখ্য পরমার্থেষু মে শূণু বিজ্ঞাপনমেকমগ্রতঃ ।  
যদি মে ন দয়িষ্যসে তদা দয়নীয়স্তব নাথ দুর্লভঃ ॥১১॥  
( হে ) নাথ ! অগ্রতঃ ( প্রথমতঃ ) মে ( সম )  
পরমার্থঃ ( বাস্তবম্ ) একং বিজ্ঞাপনং ( নিবেদনং )  
শূণু, ন মুখ্য ( মিথ্যা ) যদি মে ন দয়িষ্যসে ( দয়াং  
করিষ্যসি ) তদা তব দয়নীয়ঃ ( দয়াযোগ্যপাত্রঃ )  
দুর্লভঃ ॥ ১১ ॥

হে নাথ ! আমার একটি নিবেদন  
শ্রবণ করুন, উহা মিথ্যা নহে, যথার্থই ।  
আমার প্রতি যদি তোমার দয়া না হয়,  
তবে জগতে তোমার দয়ার পাত্র দুর্লভ  
অর্থাৎ আমি অতি নীচ, আমার প্রতি  
তোমার দয়ালুতা সফল কর ॥ ১১ ॥  
আপন অযোগ্য দেখি মনে পাই ক্ষোভ ।  
তথাপি তোমার গুণে-উপজয়ে লোভ ॥  
বামন যৈছে চাঁদ ধরিতে চাহে করে ।  
তৈছে সোর এইবাঙ্গা উঠয়ে অন্তরে ॥২৯॥

তথাহি গোস্বামিপাদোক্তবচনম্—

তবস্তমেবানুচরনীরস্তরঃ  
প্রশান্তনিশেষমনোরথাস্তরঃ ।  
কদাহমৈকান্তিকনিত্যকিঙ্করঃ  
প্রহর্ষরিষ্যামি স নাথ জীবিতম্ ॥ ১২ ॥  
( হে ) নাথ ! প্রশান্তনিশেষমনোরথাস্তরঃ  
( প্রশান্তঃ নিঃশেষং মনোরথানাম্ অন্তরং তন্তিন্নং  
বিষয়বাসনা বস্ত সঃ ) একান্তিকনিত্যকিঙ্করঃ ( ভূত্বা )  
সঃ অহং ( নীচঃ ) তবস্তম্ এষ নিরস্তরঃ অনুচরন

( পরিচর্যাকুর্ত্বন ) কদা জীবিতঃ ( যথাস্থাপ্তথা )  
প্রহর্ষরিষ্যামি ॥ ১২ ॥

হে নাথ ! সর্ব প্রকারে বিবিধ বিষয়-  
বাসনা পরিত্যাগ পূর্বক আপনার একা-  
ন্তিক নিত্যদাস হইয়া, কবে আমি আপ-  
নার আদেশানুবর্তী হওতঃ নিরস্তর  
শ্রীপাদপদ্ম সেবা করিয়া নিজ জীবনকে  
আনন্দিত করিব ॥ ১২ ॥

শুনি মহাপ্রভু কহেন শুন রূপ-দবীরখাস ।  
তুমি ছুই ভাই মোর পুরাতন দাস ॥  
আজি হৈতে দৌহার নাম রূপসনাতন ।  
দৈন্ত ছাড় তোমারদৈন্তেফাটে মোর মন ॥  
দৈন্তপত্রীলিখি মোরে পাঠাইলে বারবার ॥  
মেইপত্রীতে জানিঞাছি তোমারব্যবহার ।  
তোমার হৃদয় ইচ্ছা জানি পত্রী দ্বারে ।  
শিখাইতেশ্লোকলিখিপাঠাইলতোমারে ॥৩০

তথাহি শিক্ষালোকঃ—

পরব্যসিনী নারী ব্যগ্রাপি গৃহকর্ষম্ ।  
তদেবাস্বাদয়ত্যন্তনবসঙ্গরসায়ণম্ ॥ ১৩ ॥  
পরব্যসিনী ( পরপুরুষসঙ্গিনী ) নারী ( কুল-  
বধূঃ ) গৃহকর্ষম্ ব্যগ্রা অপি অস্থঃ ( মনসি ) নব-  
সঙ্গরসায়ণম্ ( নবকিশোর উপপতিসঙ্গমস্থণম্ )  
আস্বাদয়তি ( এবং গৃহকর্ষম্ আসক্তাঃ ভক্তাঃ  
মনসি শ্রীকৃষ্ণলীলারসম্ আস্বাদয়তি ) ॥ ১৩ ॥

পরপুরুষাসক্তা কুলরমণী গৃহকর্ষে  
নিযুক্তা থাকিলেও মনোমধ্যে নিরস্তর  
নবসহবাস-রসের যেমন আস্বাদন করিয়া  
থাকে ; এরূপ গৃহাসক্ত বৈষ্ণবগণও  
মনোমধ্যে কৃষ্ণলীলামৃতরস আস্বাদন  
করিবেন ॥ ১৩ ॥

গৌড়নিকটেআসিতেআমারনাহিঞায়োজন  
তোমা-দৌহা দেখিতে মোরইহা আগমন ॥

এই ঘোর মন কথা কেহো নাহি জানে ।  
 সবে কহে কেন আইলা রামকেশীগ্রামে ॥  
 ভাল হৈল দুই ভাই আইলা ঘোর স্থানে ।  
 যবে যাহ, ভয় কিছু না করিহ গনে ॥  
 জন্মে জন্মে তুমি দুই কিঙ্কর আমার ।  
 অচিরাতে কৃষ্ণ তোমার করিব উদ্ধার ॥  
 এত বলি দুঁ হার শিরে ধরি নিজ হাতে ।  
 দুই ভাই ধরি প্রভুর পদ নিল মাথে ॥  
 দৌহা আলিঙ্গিয়া প্রভু কহিল ভক্তগণে ।  
 মবে রূপা করি উদ্ধারহ দুইজনে ॥  
 দুইজনে প্রভুর রূপা দেখি ভক্তগণে ।  
 হরি হরি বোলে সবে আনন্দিত মনে ॥  
 নিতানন্দ, হরিদাস, শ্রীবাস, গদাধর ।  
 মুকুন্দ, জগদানন্দ, মুরারি বক্রেশ্বর ॥ ৩১ ॥  
 সবার চরণ ধরি পড়ে দুই ভাই ।  
 সবে কহে ধন্য তুমি পাইলে গোমাঞি ॥  
 সব পাশ আজ্ঞা লঞা চলন সময় ।  
 প্রভু-পদে কহে কিছু করিয়া বিনয় ॥  
 এহা হৈতে চল প্রভু এহা নাহি কাজ ।  
 যদ্যপি তোমাংরে ভক্তি করে গোড়রাজ ॥  
 তথাপি যবন জাতি না করি প্রতীত ।  
 তীর্থযাত্রায় এত সংঘট ভাল নহে রীত ॥  
 যার সঙ্গে চলে এই লোক লক্ষ কোটি ।  
 বন্দাবন যাবার এই নহে পরিপাটী ॥  
 যদ্যপি বস্তুতঃ প্রভুর কিছু নাহি ভয় ।  
 তথাপি লৌকিক-লীলা লোক চেষ্টায় ॥  
 এত কহি চরণ বন্দি গেলা দুই জন ।  
 প্রভুর সে গ্রাম হৈতে চলিতে হৈল মন ॥  
 প্রাতে চলি আইলা প্রভুকানাইর নাটশালা ।  
 দেখিল সকল তাহা কৃষ্ণচরিত-লীলা ॥ ৩২ ॥  
 সেই রাত্রি তাহা প্রভু চিন্তে মনে মন ।  
 সঙ্গে সংঘট ভাল নহে বলিল সনাতন ॥

মথুরা যাইব আমি এত লোক সঙ্গে ।  
 কিছু স্মৃথ না পাইব হবে রসভঞ্জে ॥  
 একাকী যাইব কিবা সঙ্গে একজন ।  
 তবে সে শোভয়ে বৃন্দাবনের গমন ॥  
 এত চিন্তি প্রাতঃকালে গঙ্গমান করি ।  
 নীলাচল যাব বলি চলিল গৌরহরি ॥  
 এইমত প্রভু চলি আইলা শান্তিপুরে ।  
 দিন পাঁচ সাত রহিলা আচার্য্যের ঘরে ॥  
 শচী দেবী আনি তাঁরে কৈল নমস্কার ।  
 সাত দিন তাঁর ঠাঞি ভিক্ষা ব্যবহার ॥  
 তাঁর আজ্ঞা লঞা পুনঃ করিলা গমনে ।  
 বিনয় করিয়া বিদায় দিল ভক্তগণে ॥  
 জন দুই সঙ্গে আমি যাব নীলাচলে ।  
 আমামিলিতে আসিহ সবে রথযাত্রাকালে ॥  
 বলভদ্র ভট্টাচার্য্য পণ্ডিত দামোদর ।  
 দুই জন সঙ্গে প্রভু আইলা নীলাচলে ॥  
 দিন কথো তাহা রহি চলিলা বৃন্দাবন ।  
 লুকাইয়া চলিলা যাত্রে না জানে কোন লন ॥  
 বলভদ্র ভট্টাচার্য্য রহে মাত্র সঙ্গে ।  
 ঝারিখণ্ড পথে কাশী আইলা নানারঙ্গে ॥  
 দিন চারি কাশীতে রহি গেলা বৃন্দাবন ।  
 মথুরা দেখিয়া দেখে দ্বাদশ কানন ॥  
 লীলাস্থল দেখি প্রেমে হইলা অস্থির ।  
 বলভদ্র কৈল তাঁরে মথুরা বাহির ॥  
 গঙ্গাতীর পথে লঞা প্রয়াগে আইলা ।  
 শ্রীরূপ আমি প্রভুকে তাঁহাই মিলিলা ॥  
 দণ্ডবৎ করি রূপ ভূমিতে পড়িলা ।  
 পরম আনন্দে প্রভু আলিঙ্গন দিলা ॥  
 শ্রীরূপকে শিক্ষা দিয়া পাঠাইলা বৃন্দাবন ।  
 আপনে করিলা বারণসী আগমন ॥  
 কাশীতে প্রভুকে আমি মিলিলা সনাতন ।  
 দুই মাস রহি তাঁরে করাইল শ্রীস্বয়ং ॥

মথুরা পাঠাইল তাঁরে দিয়া ভক্তি-বল ।  
 সন্ন্যাসিরে রূপা করি গেলা নীলাচল ॥৩৪॥  
 ছয় বর্ষ এঁছে প্রভু করিলা বিলাস ।  
 কভু ইতিউতি গতি কভু ক্ষেত্রে বাস ॥  
 আনন্দে ভক্ত সঙ্গে সদা কীর্তনবিলাস ।  
 জগন্নাথ দরশন প্রেমের বিলাস ॥  
 মধ্যলীলার করিল এই সূত্র গণন ।  
 অন্ত্যলীলার সূত্র এবে শুন ভক্তগণ ॥  
 বৃন্দাবন হৈতে যদি নীলাচল আইলা ।  
 আঠারবর্ষ তাঁহা বাসকাঁহো নাহি গেলা ॥  
 প্রতিবর্ষ আইমেন গৌড়ের ভক্তগণ ।  
 চারিমাস রহে প্রভুর সঙ্গে সন্মিলন ॥  
 নিরন্তর নৃত্য গীত কীর্তনবিলাস ।  
 আচণ্ডালে প্রেমভক্তি করিলা প্রকাশ ॥  
 পণ্ডিত গোসাঞির কৈল নীলাচলে বাস ।  
 বক্রেশ্বর, দামোদর, শঙ্কর, হরিদাস ॥  
 জগদানন্দ, ভবানন্দ, গোবিন্দ, কাশীশ্বর ।  
 পরমানন্দপুরী আর স্বরূপদামোদর ॥  
 ক্ষেত্রবাসী, রমানন্দরায় প্রভৃতি ।  
 প্রভু সঙ্গে এই সব কৈল নিত্যস্থিতি ॥৩৫॥  
 শ্রীঅদ্বৈত, নিত্যানন্দ, মুকুন্দ, শ্রীবাস ।  
 বিদ্যানিধি, বাসুদেব, মুরারি যত দাস ॥  
 প্রতিবর্ষ আইসে সঙ্গে রহে চারি মাস ।  
 তাহা মথা লঞা প্রভুর বিবিধ বিলাস ॥  
 হরিদাসের সিদ্ধি প্রাপ্তি অদ্ভুত সে সব ।  
 আপনে মহাপ্রভু তাঁর কৈল মহোৎসব ॥  
 তবে রূপগোসাঞির পুনরাগমন ।  
 তাঁর হৃদয়ে কৈল প্রভু শক্তি সঞ্চারণ ॥  
 তবে ছোট হরিদাসে প্রভু কৈল দণ্ড ।  
 দামোদর পণ্ডিত কৈল প্রভুকে বাক্যদণ্ড ॥  
 তবে সনাতন গোসাঞির পুনরাগমন ।  
 জ্যৈষ্ঠমাঙ্গে প্রভু তারে কৈল পরীক্ষণ ॥

তুষ্ট হঞা পুনঃ তারে পাঠাইল বৃন্দাবন ।  
 অদ্বৈতের হাতে প্রভুর অদ্ভুত ভোজন ॥  
 নিত্যানন্দ সঙ্গে যুক্তি করিয়া নিভূতে ।  
 তাহারেপাঠাইল গৌড়ে প্রেমপ্রচারিতে ॥  
 তবেত বল্লভভট্ট প্রভুরে মিলিলা ।  
 কৃষ্ণ নামের অর্থ প্রভু তাহারে কহিলা ॥৩৬॥  
 প্রহ্লাদমিশ্রেরে প্রভু রামানন্দ স্থানে ।  
 কৃষ্ণকথা শুনাইল কহি তার গুণে ॥  
 গোপীনাথ পট্টনায়ক রামানন্দ ভ্রাতা ।  
 রাজা মারিতেছিল প্রভু হৈল ভ্রাতা ॥  
 রামচন্দ্রপুরী ভয়ে ভিক্ষা ঘাটাইলা ।  
 বৈষ্ণবের চুঃখ দেখি অর্ধেক রাখিলা ॥  
 ব্রহ্মাণ্ড ভিতরে হয় চৌদ্দভুবন ।  
 চতুর্দশভুবনে বৈসে যত জীবগণ ॥  
 মনুষ্যের বেশ ধরি যাত্রিকের ছলে ।  
 মহাপ্রভু দর্শন করে আসি নীলাচলে ॥  
 একদিন শ্রীবাসাদি যত ভক্তগণ ।  
 মহাপ্রভুর গুণ গাঞা করেন কীর্তন ॥  
 নিজ ভক্তগুণে প্রভু কহে নকোপ বচন ।  
 কৃষ্ণনাম-গুণ ছাড়ি কি কর কীর্তন ॥  
 গুণত্যা করিতে জানি হৈল সবার মন ।  
 স্বতন্ত্র হইয়া তবে নাশালে ভুবন ॥ ৩৭ ॥  
 দশদিকে কোটি কোটি লোক হেনকালে ।  
 জয় কৃষ্ণচৈতন্য বলি করে কোলাহলে ॥  
 জয় জয় মহাপ্রভু ব্রজেন্দ্রকুমার ।  
 জগৎ তারিতে প্রভু তোমার অবতার ॥  
 বহুদূর হৈতে আইলাম হঞা বড় আশু ।  
 দরশন দিয়া প্রভু করহ কৃতার্থ ॥  
 শুনিয়া লোকের দৈন্য দ্রবিল হৃদয় ।  
 বাহিরে আসি দরশন দিলা দয়াময় ॥  
 বাহু তুলি বলে প্রভু বোল হরিহরি ।  
 উঠিল শ্রীহরিকান চতুর্দিক ভরি ॥

প্রভু দেখি প্রোগে লোকের আনন্দিত মন ।  
 প্রভুকে ঈশ্বর বলি করয়ে স্তবন ॥  
 স্তব শুনি প্রভুকে করয়ে শ্রীনিবাস ।  
 মরে গুণ্ড হও, কেনে বাহিরে প্রকাশ ॥  
 কে শিখাইল এ লোকে কহে কোনবাত ।  
 ইহা সবার মুখ ঢাক দিয়া নিজহাত ॥৩৮॥  
 সূর্য যৈছে উদয় করি চাহে লুকাইতে ।  
 বৃষ্টিতে না পারি তৈছে তোমার চরিতে ॥  
 প্রভু কহেন শ্রীবাস ছাড় নিড়ম্বনা ।  
 সব মেলি কর মোর কতেক লাঞ্ছনা ॥  
 এত বলি লোকে করি শুভদৃষ্টি দান ।  
 অভ্যস্তর গেলা, লোকের পূর্ হৈল কাম ॥

রঘুনাথ দাস নিত্যানন্দ পাশ গেলা ।  
 চিড়া দধি যছোৎসব তাঁহাই করিলা ॥  
 তাঁর আজ্ঞা লঞা গেলা প্রভুর চরণে ।  
 প্রভু তারে সমর্পিল স্বরূপের স্থানে ॥  
 ব্রহ্মানন্দ ভারতীর পুটাইল চর্ম্মাশ্বর ।  
 এইমত লীলা কৈল ছয় বৎসর ॥  
 আদি দ্বাদশ বৎসরের এই সূত্রগণ ।  
 শেষ দ্বাদশ বৎসরের শুন বিস্তার বর্ণন ॥  
 শ্রীরূপ রঘুনাথ পদে যার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৩৯ ॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যলীলাসূত্র-  
 বর্ণনং নাম প্রথমপরিচ্ছেদ ॥ ১ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপ শ্রীশ্যামলাল-পদারবিন্দসেবিত  
 বিনোদবিহারিণেঃ শ্যামি কৃত্যবগবোদিনী ও সুরবোদিনী সমর্পিত  
 মধ্যলীলাসূত্রবর্ণনং নাম প্রথমপরিচ্ছেদ ॥ ১ ॥

## দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ ।

বিচ্ছেদেহ'স্মনু প্রভোর স্থাপীলা-স্থ বাহনপাথে ।  
 গোরস্য কৃষ্ণবিচ্ছেদ-প্রলাপাদ্যবর্ণনতে ॥ ১ ॥

প্রভোঃ ( শ্রীচৈতন্যস্য ) অভ্যলীলাস্বরূপবর্ণনে  
 আস্মনু ( মধ্যলীলায়াং ) বিচ্ছেদে ( দ্বিতীয়পরি-  
 ছেদে ) গোরস্য কৃষ্ণবিচ্ছেদ-প্রলাপাদিঃ অপ্রবর্ণ্যতে  
 ( ময়া কীর্ত্যতে ) ॥ ১ ॥

এই মধ্যখণ্ডের দ্বিতীয় পরিচ্ছেদে  
 অভ্যলীলাসূত্রবর্ণনে শ্রীচৈতন্যপ্রভুর  
 শ্রীকৃষ্ণবিচ্ছেদজনিত প্রলাপাদি অপ্র-  
 বর্ণিত হইতেছে ॥ ১ ॥

জয় জয় গোরচন্দ্র জয় নিত্যানন্দ ।  
 জয়াদৈ হচন্দ্র জয় গোরভক্ত রন্দ ॥  
 শেষ যে রহিল প্রভুর দ্বাদশবৎসর ।  
 কৃষ্ণের বিরহ স্কৃতি হয় নিবস্তর ॥  
 শ্রীরাপিকার চেষ্টা যৈছে উদ্ধব দর্শনে ।  
 সেইমত দশা প্রভুর হয় রাত্রি দিনে ॥  
 নিবস্তর হয় প্রভুর বিরহ-উন্মাদ ।  
 জমময় চেষ্টা সদা প্রলাপময় বাদ ॥  
 রোমকূপে রক্তোন্মাদ দস্ত সব হালে ।  
 ক্ষণে অঙ্গ ফণি হয় ক্ষণে অঙ্গ ফুলে ॥ ১ ॥

গম্ভীর্য ভিতরে রাঞ্জে নাহি নিজা লব ।  
 ভিত্তে মুখ শির স্ববে ক্ষত হয় সব ॥  
 ত্বিন হারে কপাট প্রভু যামেন বাহিরে ।  
 কভু সিংহধারে পড়ে কভু সিন্ধুনীরে ॥  
 চটকপর্শত দেখি গোবর্জন জন্মে ।  
 ধাইয়া চলে আর্জনাতে করিয়া কন্দনে ॥২॥  
 উপবনোদ্যান দেখি রুন্দাবন জ্ঞান ।  
 কাঁহা বাই নাচে গায় ক্ষণে মুর্ছা যান ॥  
 কাঁহা নাহি শুনি, যেই ভাবের বিকার ।  
 সে সে ভাব হয় প্রভুর শরীরে প্রচার ॥  
 হস্ত পাদ সন্ধি যত বিতস্তি প্রমাণে ।  
 সন্ধি ছাড়ি ত্বিন্ন হয় চর্ম্ম রহে স্থানে ॥  
 হস্তপাদ শির সব শরীর ভিতরে ।  
 প্রবিষ্ট হয়, কুর্মরূপ দেখিয়ে প্রভুরে ॥ ৩ ॥  
 এইমত অদ্ভুতভাব শরীরে প্রকাশ ।  
 মনেতে শূন্যতা, বাক্যে হা হা ছতাশ ॥  
 কাঁহা করো কাঁহা পাণ্ড ব্রজেন্দ্রনন্দন ।  
 কাঁহা মোর প্রাণনাথ মুরলীবদন ॥  
 কাহারে কহিব কথা কেবা জানে দুঃখ ।  
 ব্রজেন্দ্রনন্দন বিনু ফাটে মোর বুক ।  
 এই মত বিলাপ করি বিহ্বল অন্তর ।  
 রায়ের নাটকলোক পড়ে নিরন্তর ॥ ৪ ॥

তথাহি শ্রীজগন্নাথবল্লভনাটকে তৃতীয়াকাঙ্কে নবম-  
 স্লোকে মদনিকাং প্রতি শ্রীরাধিকাবাক্যম্—  
 প্রেমচ্ছেদকজোহবগচ্ছতি হরিনায়ং ন চ প্রেম বা  
 স্থানাস্থানবৈতিনাপি মদনো জানাতি নো দুর্জলাঃ ।  
 অছোবেদ ন চান্দ্রদুঃখমখিলং নো জীবনং বা শ্রবং  
 দ্বিতীয়াবদিনানিগৌবনমিদং হাহা বিধেঃ কা গতিঃ ॥২

অয়ং হরিঃ ( শ্রীকৃষ্ণঃ, অস্মান্ ) প্রেমচ্ছেদ-  
 কজঃ ( প্রেমচ্ছেদেন প্রেমাসুরস্য ভঞ্জন যাঃ কজঃ  
 তাঃ ) ন অবগচ্ছতি ( জানাতি ) চ প্রেম বা  
 স্থানাস্থানং ( পাত্রাপাত্রং ) ন অবৈতি ( জানাতি )

মদনঃ অপি নঃ ( অস্মান্ ) দুর্জলাঃ ( অবলাঃ, ন )  
 জানাতি । অন্ডঃ ( জনঃ ) অন্ডদুঃখম্ অখিলং  
 ( পীড়াসমূহং ) ন বেদ, নঃ ( অস্মাকং ) জীবনম্  
 ( অপি ন ) আশ্রবং ( বিশ্বসনীয়ং ভবতি ) ইদং  
 যৌবনং ( ধনং ) দ্বিতীপি এব দিনানি, হাহা বিধেঃ  
 ( বিধাতুঃ ) কা গতিঃ ( কীদৃশী সৃষ্টিঃ ) ॥ ২ ॥

হে গম্ভী ! শ্রীকৃষ্ণ আমাদের প্রেম-  
 বিচ্ছেদজনিত দুঃখ অবগত নহেন । প্রেমও  
 স্থানাস্থান বিচার রহিত । কন্দর্পও আমা-  
 দিগকে অবলা বলিয়া জানে না । অন্যেও  
 অন্যের দুঃখ জ্ঞাত নহে । জীবনও বিশ্বাস-  
 নীয় নহে এবং যৌবনও অল্পকাল স্থায়ী ।  
 হায় ! বিধাতার এ কিরূপ সৃষ্টি ॥ ২ ॥

উপজিলে প্রেমাকুর, ভাঙ্গিলে যে দুঃখপুর,  
 কৃষ্ণ তাহা নাহি করে পান ।  
 বাহিরে নাগররাজ, ভিতরে শঠের কাজ,  
 পরনারী বধে মাঝধান ॥  
 গম্ভী হে, না বুঝিয়ে বিধির বিধান ।  
 সুখ লাগি কৈল প্রীতি, হৈল বিপরীত গতি  
 এবে যায় না রহে পরাণ ॥ ৫ ॥  
 কুটিল প্রেমা অগেয়ান, নাহি জানে স্থানাস্থান  
 ভালমন্দ নারে বিচারিতে ।

কুরশঠের গুণডোরে, হাতেগলে বাক্সিগোরে  
 রাখিয়াছে নারি উকাশিতে ॥ ৬ ॥  
 যে মদন তনুহীন, পরজোহে পরবীণ,  
 পাঁচ বাণ সন্ধে অনুক্ষণ ।  
 অবলার শরীরে, বিদ্ধি করে জরজরে,  
 দুঃখ দেয় না লয় জীবন ॥ ৭ ॥  
 অন্যের যে দুঃখমনে, অস্ত্রে তাহা নাহি জানে  
 নত্য এই শাস্ত্রের বিচার ।  
 গম্ভজন কাঁহা লিখি, নাহি জানে প্রাণসুখী,  
 যাতে কহে ধৈর্য্য করিবার ॥ ৮ ॥

কৃষ্ণরূপা পারাবার কভু করিবে অঙ্গীকার

সখি তোর ব্যর্থ এ বচন ।

জীবের জীবন চঞ্চল, যেন পদ্মপত্রের জল,

ততদিন জীবে কোনজন ॥ ৯ ॥

শতবৎসর পর্য্যন্ত, জীবের জীবন অন্ত,

এই বাক্য কহ না বিচারি ।

নারীর যৌবনধন, যারে কৃষ্ণ করে মন,

সে যৌবন দিন দুই চারি ॥ ১০ ॥

অগ্নি যেন নিজ ধাগ, দেখাইয়া অস্তিরাগ,

পতঙ্গেরে আকর্ষিয়া মারে ।

কৃষ্ণ আছে নিজ গুণ, দেখাইয়া হরে মন,

পাছে দুঃখ-সমুদ্রেতে ডারৈ ॥ ১১ ॥

এতেক বিলাপ করি, বিষাদে শ্রীগৌরহরি,

উষাড়িঞা দুঃখের কপাট ।

তাবের তরঙ্গ বলে, নানারূপে মন চলে,

আর এক শ্লোক কৈল পাঠ ॥ ১২ ॥

তথাহি গোপালিপাদোক্ত শ্লোকঃ—

শ্রীকৃষ্ণরূপাদিনিবেশনং বিনা

বার্থানি মেহহান্তথিলেক্সিয়াতুলম্ ।

পাষণশুক্কেশ্বন-ভারকাণাহো

বিতর্শি বা তানি কথং হতভ্রপঃ ॥ ৩ ॥

শ্রীকৃষ্ণরূপাদিনিবেশনং ( শ্রীকৃষ্ণস্য রূপাদিনাং

রূপরসগন্ধস্পর্শানাং নিবেশনং দর্শনাদিকং ) বিনা

মে ( মম ) অহানি ( দিনানি, তদগত জীবনানি )

অখিলেক্সিয়ানি অলম্ ( অত্যর্থং চ ) বার্থানি

( ভবন্তি । অতএব ) অহো পাষণশুক্কেশ্বনভারকাণি

( পাষণশুক্কাকাষ্ঠসদৃশ ভারো যেষাং তাদি ) তানি

( ইক্সিয়ানি দিনানি চ ) কথং ( কেন প্রকারেণ )

হতভ্রপঃ ( নির্ভঙ্জঃ সন্ অহং/বিতর্শি ( ধারমামি ) ॥ ৩ ॥

শ্রীকৃষ্ণ-রূপাদির দর্শনাদিরূপ সেবা

ব্যতীত আমার ইক্সিয়সমূহ ও জীবনো-

চিত কাল সকল ব্যর্থ হইতেছে । অহো !

আমি নির্ভঙ্জ হইয়া পাষণ ও শুককাষ্ঠ

তুল্য মহাভার এই ইক্সিয়বর্ণ ও জীবনকে

কেন রূথা ধারণ করিতেছি ॥ ৩ ॥

বংশীগাণামৃতধাম, লাবণ্যামৃত জন্মস্থান,

যে না দেখে সে চান্দবদন ।

সে নয়নে কিবা কাজ, পড়ু তার মাখে বাজ

সে ময়ন রহে কি কারণ ॥

সখি হে ! শুন সোর হত বিধি বল ।

মোর বপু চিত্ত মন, সকল ইক্সিয় গণ,

কৃষ্ণ বিপু সকল বিফল ॥ ১৩ ॥

কৃষ্ণের মধুর বাণী, অমৃতের তরঙ্গিনী,

তার প্রবেশ নাহি যে শ্রবণে ।

কাণাকড়ি ছিড্রময়, জানিহ সেই শ্রবণ,

তার জন্ম হৈল অকারণে ॥

মৃগসদ নীলোৎপল, সিলনে যে পরিমল,

খেই হরে তার গর্ভ ময়ন ।

হেন কৃষ্ণ অঙ্গ গন্ধ, যার নাহি সে সখঙ্ক,

সেই নাসা তন্ত্রার সমান ॥ ১৫ ॥

কৃষ্ণের অধরামৃত, কৃষ্ণগুণ সুচরিত,

সুধামার স্বাদু বিনিন্দন ।

তার স্বাদু যেনাজানে, জন্মি এগানামৈল কেনে,

সে রসনা তে কজিহ্বা সম ॥ ১৪ ॥

কৃষ্ণকর পদতল, কোটিচন্দ্র সুশীতল,

তার স্পর্শ যেন স্পর্শমণি ।

তার স্পর্শনাহি যার, বাউক সেই ছারখার,

সেই বপু লোহ সগ জারি ॥ ১৭ ॥

করি এত বিলপন, প্রভু শ্রীশচীনন্দন,

উষাড়িঞা হৃদয়ের শোক ।

দৈন্য নির্বেদ বিষাদে, হৃদয়ের অবসাদে,

পুনরপি পড়ে এক শ্লোক ॥ ১৮ ॥

তথাহি শ্রীজগন্নাথবল্লভনাটকে তৃতীয়াক্ষে  
একাদশশ্লোকে শ্রীরাধিকাবাক্যম্--

যদা যাতো দৈবানুধুরিপুরসৌ লোচনপথং  
তদান্মাকং চেতো মদনহতকেনাহতমভুং ॥  
পুনঃশ্লিষ্যেধ ক্ষণমপি দৃশোরিত পদবীঃ  
বিধাস্যাম-স্তম্ভিন্নখিলঘটিকা রত্নখচিতাঃ ॥ ৩ ॥

যদা (যস্মিন্কালে বা স্বপ্নে) দৈবাৎ (সৌভাগ্য-  
বশাৎ) অসৌ মধুরিপুং ( শ্রীকৃষ্ণঃ ) লোচনপথং  
( নয়নগোচরং ) যাতঃ ( প্রাপ্তঃ ) তদা মদনহত-  
কেন ( মদন এব হত বৈরিঃ যস্য তেন, যদা মদ-  
য়তি হর্ষয়তি ইতি মদনঃ এতেন আনন্দ ব্যঞ্জিতঃ  
অতএব স এব বৈরিঃ যস্য তেন ) অশ্মাকং চেতঃ  
( মনঃ ) আহতম্ ( আচ্ছিন্দ্য চোরিতম্ ) অভুং ।  
পুনঃ যস্মিন্ ( ক্ষণে ) এষঃ ( কৃষ্ণঃ ) দৃশোঃ ( নয়-  
নয়োঃ ) পদবীঃ ( মার্গম্ ) এতি ( আগমিষ্যতি )  
তস্মিন্ ( ক্ষণে ) অখিলঘটিকাঃ ( সমগ্রঘটিকাঃ )  
রত্নখচিতাঃ বিধাস্যামঃ ( বিধানং করবাম ) ॥ ৪ ॥

সৌভাগ্যবশতঃ যখন শ্রীকৃষ্ণ আমাদের  
নয়নগোচর হইয়াছিলেন, সেই সময় শক্র  
মদন বা আনন্দ আমাদের মনকে হরণ  
করিয়াছিল অর্থাৎ কন্দর্প বা আনন্দে  
বিভোর হওয়াতে আমি তাঁহাকে ভাল-  
রূপ দর্শন করিতে পারি নাই । পুনরায়  
যখন ক্ষণকালের জন্যও শ্রীকৃষ্ণ-দর্শন  
পাইব, তখন সে সময়ের দণ্ডাদি-সকলকে  
আমি রত্নালঙ্কারে বিভূষিত করিব ॥ ৪ ॥

যেকালে বা স্বপ্নে, দেখিল বংশীবদনে,  
সেই কালে আইলা দুই বৈরী ।

আনন্দ আর মদন, হরি নিল মোর মন,  
দেখিতে না পাইলু নেত্র ভরি ॥ ১৯ ॥

পুনঃ যদি কোন ক্ষণ, করায় কৃষ্ণ দর্শন,  
তবে সে ঘটি ক্ষণ পল ।

দিয়া মালা চন্দন, নানা রত্ন আভরণ,  
অলঙ্কৃত করিব সকল ॥ ২০ ॥

ক্ষণে বাছ হৈল মন, আগে দেখে দুইজন,  
তারে পুছে আমি না চৈতন্য ।

স্বপ্নপ্রায়কি দেখিনু, কিবা আমিপ্রলাপিনু,  
তোমরা কিছু শুনিয়াছ দৈন্য ॥ ২১ ॥

শুন, মোর প্রাণের বান্ধব ।  
নাহি কৃষ্ণপ্রেম ধন, দরিদ্র মোর জীবন,  
দেহেইদ্রিয় রূপা মোর সব ॥ ২২ ॥

পুনঃ কহে হায় হায়, শুন স্বরূপ রামরায়, ১  
এই মোর হৃদয় নিশ্চয় ।

শুনি করহ বিচার, হয় নয় কহ যার,  
এত কহি শ্লোক উচ্চারয় ॥ ২৩ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে একত্রিংশা-  
ধ্যায়ে প্রথমশ্লোকস্য ব্যাখ্যায়াং যতোস্তায়ঃ—  
কইঅবরহিঅং পেঅং নহি হোই মান্বেলোত্র ।  
জই হোই কস্প বিরহো বিরহে হোস্তক্ষি কো  
জীঅই ॥ ৫ ॥

কইঅবরহিঅং ( কৈতবরহিতং ) পেঅং  
( প্রেম ) মান্বেলোএ ( লোকে ) নহি ( ন )  
হোই ( ভবতি ) জই ( যদি ) কস্প ( কস্য )  
বিরহঃ ( প্রেম অন্তর্ধানং ) হোই ( ভবতি )  
বিরহে হোস্তক্ষি ( সতি ) কো ( কঃ ) জীঅই  
( জীবতি ) ॥ ৫ ॥

অকৈতব প্রেম অনুম্যালোকে হয় না ।  
যদি ভাগ্যবশতঃ তাদৃশ প্রেম হয়, তাহা  
হইলে কাহারও বিরহ হয় না । বিরহ  
হইলে জীবিত থাকে না ॥ ৫ ॥

অকৈতব কৃষ্ণপ্রেম, যেন জ্ঞানুদ হেম,  
সেই প্রেম নুলোকে না হয় ।

যদি হয় তার যোগ, না হয় তার বিরোগ,  
বিরহ হৈলে কেহো না জীয় ॥ ২৪ ॥

এত কহি শচীসুত, শ্লোক পড়ে অদভুত,  
শুনে দৌড়ে এক ঘন হঞা ।

আপম হৃদয় কাজ, কহিতে বাসিয়ে লাজ,  
ততু কহি লাজ বীজ খাঞা ॥ ২৫ ॥

তথাহি মহাপ্রভুপাদোক্ত শ্লোকঃ—

ম প্রেমগদ্যোহস্তি দরপি মে হরৌ  
ক্রন্দামি সৌভাগ্যভরং প্রকাশিতুম্ ।

বংশীবিনাস্যাননলোকনং বিনা

বিতর্শি যৎ প্রাপপতঙ্গকান্ বৃথা ॥ ৬ ॥

হরৌ ( শ্রীকৃষ্ণে ) মে ( মম ) দরপি ( ক্লেষদপি )  
প্রেমগদ্যঃ ( প্রেমভাসঃ ) ন অস্তি ( তথাপি )  
সৌভাগ্যভরম্ ( অহং প্রেমবান্ ইতি সৌভা-  
গ্যাতিশয়ং ) প্রকাশিতুম্ ক্রন্দামি । বংশীবিনাস্যা-  
মনলোকনং বিনা যৎ প্রাপপতঙ্গকান্ বিতর্শি  
( তৎ ) বৃথা ॥ ৬ ॥

শ্রীকৃষ্ণে আমার কিঞ্চিন্মাত্রও শুদ্ধ-  
প্রেমের গন্ধ নাই, তথাপি “আমি বড়  
প্রেমিক” এরূপ সৌভাগ্য খ্যাপন কবি-  
বার জন্য ক্রন্দন করিয়া থাকি । প্রেম  
থাকিলে কি বংশীবিনাসি শ্রীকৃষ্ণবদনের  
অদর্শনে বৃথা প্ৰাপতঙ্গকে ধারণ করি-  
তেছি ॥ ৬ ॥

অস্বার্থঃ—

দূরে শুদ্ধপ্রেম বন্ধ, কপট প্রেমের গন্ধ,

মেহ সোর নাই রুক্ষ পায় ॥

তবে যে করি ক্রন্দন, স্বসৌভাগ্যপ্রখ্যাপন,

কহি ইহা জানিহ নিশ্চয় ॥ ২৬ ॥

যাতে বংশীধ্বনিসুখ, না দেখি সে চান্দমুখ,

যদ্যপি নাহিক আলস্বন ।

নিজ দেহে করি প্রীতি, কেবল কামের রীতি,

প্রাণকীটেরে করিয়ে ধারণ ॥ ২৭ ॥

রুক্ষপ্রেম সুনির্মল, যেন শুদ্ধ গজাজল,

মেই প্রেমা অমৃতের নিষ্কু ।

নির্মল সে অনুরাগে, না লুকায় অন্যদাগে,

শুদ্ধবস্ত্রে যৈছে মণিবিন্দু ॥ ২৮ ॥

শুদ্ধপ্রেম সুখনিষ্কু, পাই তার এক বিন্দু,

মেই বিন্দু জগত ডুবায় ।

কহিবার যোগ্যনহে, তথাপি বাউলে কহে,

কহিলে বা কেবা পাতিয়ায় ॥ ২৯ ॥

এই গত দিনে দিনে, স্বরূপ রামানন্দ সনে

নিজভাব করেন বিদিত ।

বাহিরে বিষম্বালা হয়, ভিতরে আনন্দময়

রুক্ষপ্রেমার অভূত চরিত ॥ ৩০ ॥

এই প্রেম আশ্বাদন, তপ্ত ইক্ষু চর্ষণ,

মুখ স্থলে না যায় ত্যজন ।

মেই প্রেমা যারমনে, তার বিক্রমমেইজ্ঞানে

বিষামুতে একত্র মিলন ॥ ৩১ ॥

তথাহি বিদগ্ধমাধবে দ্বিতীয়কে অষ্টাদশশ্লোকে

নন্দীমুখীং প্রতি গোণমাঙ্গীসাক্যম্—

পীড়াভি-নবকালকূট-কটুতাগর্কস্য নির্কাসনো

নিঃস্যান্দেন মুদাঃ সুধামধুরিমাহঙ্কার-সঙ্ঘোচনঃ ।

প্রেমা সুন্দরি নন্দনন্দনপরো জাগতি যদ্যাস্তরে

জায়ন্তে ক্ষুটস্য বক্রমধুরা-স্তেনৈঃ বিক্রান্তয়ঃ ॥ ৭ ॥

( হে ) সুন্দরি ! পীড়াভিঃ ( ব্যথাভিঃ ) নব-

কালকূটকটুতাগর্কস্য ( নবকালকূটস্য যঃ কটুতা-

গর্কঃ তস্য ) নির্কাসনঃ ( উৎসরণশীলঃ ) মুদাঃ

নিঃস্যান্দেন ( ক্ষরণেন ) সুধামধুরিমাহঙ্কারসঙ্ঘো-

চনঃ ( সুধায়াঃ অনৃতস্য যঃ মধুরিমা মাধুর্যঃ

তেম যঃ অহঙ্কারঃ তৎ সঙ্ঘোচরতি ত্বর্কী কবোতি

যঃ ) নন্দনন্দনপরঃ ( শ্রীকৃষ্ণবিষয়কঃ ) প্রেমা যস্য

অস্তরে জাগতি, অস্য ( প্রেরঃ ) বক্রমধুরা বিক্রান্তয়ঃ

( প্রভাবাঃ ) তেম ( জনৈঃ ) এব ক্ষুটং ( নিশ্চিত্য)

জায়ন্তে ( কেবলম্ অমৃত্যুয়ন্তে ন তু বক্রং শব্দ্যতে

তথাচকশব্দাতাবৎ ) ॥ ৭ ॥



ব্যথা দ্বারা সূতীক্ষ্ণ বিষের কটুতাগর্ভ-  
বিনাশক ও প্রীতিপ্রবাহ দ্বারা মাদুর্ধ্য-  
ক্ষণিত গর্ভের খর্ষককারক সেই নন্দনন্দন  
বিষয়ক প্রেম যাহার হৃদয়ে প্রকাশিত  
হইয়াছে, সেই ব্যক্তি ঐ প্রেমের বক্র ও  
সম্পূর্ণ অর্থাৎ সুখ-দুঃখ পরাক্রম জানিতে  
পারে ॥ ৭ ॥

যেকালে দেখে জগন্নাথ, শ্রীরাম স্নুভদ্রা সাঁথ  
তবে জানি আইলাগ কুরুক্ষেত্র ।

সফল হৈল জীবন, দেখি নু পদ্মলোচন,  
যুড়াইল তনু মন নেত্র ॥ ৩২ ॥

গরুড়ের সম্মিধানে, রহি করে দরশনে,  
সে আনন্দের কি কহিব বলে ।

গরুড়স্তম্ভের তলে, আছে এক নিম্নখালে,  
সেই খাল ভরে অক্ষজলে ॥ ৩৩ ॥

ঠাঁহা হৈতে ধরে আসি, মাটির উপরে বসি  
নখে করে পৃথিবী লিখন ।

হা হা কাঁহা ব্রহ্মাবন, কাঁহা গোপেন্দ্রনন্দন  
কাঁহা সেই বংশীবদন ॥ ৩৪ ॥

কাঁহা মে ত্রিভঙ্গঠাম, কাঁহা সেই বংশীগান  
কাঁহা সেই যমুনাপুলীন ।

কাঁহা রাসবিলাস, কাঁহা নৃত্যগীত হাস,  
কাঁহা সেই মদনসোহন ॥ ৩৫ ॥

উঠিল নানা ভাবাবেগ, মনে হৈল উদ্বেগ,  
ক্ষণমাত্র নারে গোঙাইতে ।

প্রবল বিরহানলে, ধৈর্য্য হৈল টলমলে,  
নানালোক লাগিলা পড়িতে ॥ ৩৬ ॥

তথাহি কৃষ্ণকর্ণামৃত্তে একচরিতঃশ্লোকঃ—

অমৃত্তখন্যানি দিনান্তরাপি হরে স্বদালোকনমন্তরেণ ।

অনাথবন্ধোকল্পণৈকসিদ্ধোহাহস্ত হাহস্ত কথংনয়ামিাচ

হা হা ( ধ্রুপে ) হস্ত হস্ত ( বিষাদে ) অনাথ-

বন্ধো (অনাথানাং ত্যক্তপতীনাং বল্লবীনাং বন্ধুঃ যঃ  
সঃ) করুণৈকসিদ্ধো হরে ( চিত্তেন্দ্রিয়হারিন্ ) স্বদা-  
লোকনং ( তদর্শনম্ ) অন্তরেণ ( বিনা ) অখন্যানি  
অমুনি দিনানি কথং ( কেন প্রকারেণ ) নয়ামি  
( অভিবাহ্যামি ) ॥ ৮ ॥

হে অনাথবন্ধো, হে করুণৈকসিদ্ধো,  
হে হরে ! তোমার দর্শন ব্যতীত অপন্থ  
এই দিনান্তর্গত ক্ষণমুহুর্ত্তাদি কাল কিরূপে  
অতিবাহিত করিব ॥ ৮ ॥

অস্তার্থঃ—

তোমার দর্শন বিনে, অপন্থ এই রাত্রি দিনে  
এই কাল না যায় কাটন ।

তুমি অনাথের বন্ধু, অপার করুণাসিদ্ধু,  
রূপা করি দেহ দরশন ॥ ৩২ ॥

উঠিল ভাব চাপল, মন হৈল চঞ্চল,  
ভাবের গতি বুঝন না যায় ।

অদর্শনে পোড়ে মন, কেমনে পাব দরশন,  
কৃষ্ণ ঠাঁঞি পুছেন উপায় । ৩৮ ॥

তথাহি কৃষ্ণকর্ণামৃত্তে দ্বাত্রিংশশ্লোকঃ—

তচ্ছৈশবং ত্রিভুবনাস্তু তমিত্যবেহি

মচ্চাপলঞ্চ তব বা মম বাধিগম্যম্ ।

তৎ কিং করোমি বিরলং মুরলীবিলাসি-

মুগ্ধং মুখাষ্জমুদীকিত্তুমীক্ষণাত্যাম্ ॥ ৯ ॥

তৎ ( তব ) শৈশবং মৎ ( মম ) চাপলং চ

ত্রিভুবনাস্তুতং ( ত্রিভুবনে অস্তুতম্ ) ইতি অবেহি

( এতদ্বয়ং ) তব বা মম বা অধিগম্যম্ । বিরলং

( কুলবধূনাং তস্য গোচরাদিনাং হুল্লভদর্শনং ) মুরলী-

বিলাসিমুগ্ধং মুখাষ্জম্ ঈক্ষণাত্যাম্ ( নয়নাভ্যাম্ )

উদীকিত্তুং কিং করোমি ॥ ৯ ॥

হে কৃষ্ণ ! তোমার কৈশোর ও  
আমার চঞ্চলতা ত্রিভুবনে পরমাস্তুত ;

ইহা তোমার ও আমার জানিবার যোগ্য ।

অতএব সমতারহিত কুলবধূগণের দুর্লভ  
তোমার মূললীযুক্ত মনোহর মুখপদ্মকে  
উত্তমরূপে নেত্রগোচর করিবার জন্য কি  
উপায় অবলম্বন করিব? অর্থাৎ যে  
উপায়ে তোমার দর্শন পাই, তাহার  
উপায় তুমিই বল ॥ ৯ ॥

অস্বার্থঃ—

তোমার মাধুরী বল, তাতে মোর চাপল,  
এই দুই তুমি আমি জানি ।  
কাঁহাকরোকাঁহা যাও, কাঁহাগেলে তোমাপাও  
তাহা মোরে কহত আপনি ॥ ৩৯ ॥  
নানা ভাবের প্রাবল্য, হৈল সন্ধি শাবল্য,  
ভাবে ভাবে হৈল মহারণ ।  
শুৎসুক্য চাপল্যদৈন্য, রোষামর্ঘ আদি সৈন্য়  
প্রোমোন্নাদ সবার কারণ ॥ ৪০ ॥  
মত্তগজ ভাবগণ, প্রভুর দেহ ইক্ষুবণ,  
গজযুদ্ধে বনের দলন ।  
প্রভুব হৈল দিব্যোন্নাদ, তনু মনে অবসাদ  
ভাবাবেশে করে সম্বোধন ॥ ৪১ ॥  
তথাহি কৃষ্ণকর্ণামৃতে চত্বারিংশশ্লোকঃ—  
হে দেব হে দয়িত হে ভুবনৈকবন্ধো  
হে কৃষ্ণ হে চপল হে করুণৈকসিদ্ধো ।  
হে নাথ হে রমণ হে নয়নাভিরাম  
হা হা কদাম্বভবিতাসি পদং দৃশো মে ॥ ১০ ॥  
হে দেব ( অন্যাভিঃ সহ দিব্যসীতি ) হে  
দয়িত হে ভুবনৈকবন্ধো ( বেগুনাদাকৃষ্টানাং ভুব-  
নানাং তদগতঙ্গীণাম্ অপি বয়ঃ ইতি ) হে কৃষ্ণ  
( চিত্তাকর্ষক ) হে চপল ( বল্লবীবৃন্দভূজঙ্গ ) হে  
করুণৈকসিদ্ধো হে রমণ ( সদা মাং রময়সীতি )  
হে নয়নাভিরাম ( নম্ফানন্দ ) হা হা মে ( মম )  
দৃশোঃ পদং ( গোচরঃ ) কদা হু ভবিতাসি ॥ ১০ ॥  
হে পররমণী-বিলাসিন্! হে প্রাণ-

প্রিয়! হে ভুবনগত-যুবতীরন্দবন্ধো!  
চিত্তাকর্ষক! হে পরনারীচৌর! হে  
করুণৈকসিদ্ধো! হে নাথ! হে রমণ!  
হে নয়নানন্দ! হায়! কখন তুমি আমার  
নয়নগোচর হইবে ॥ ১০ ॥

উন্নাদের লক্ষণ, করায় কৃষ্ণস্মরণ,  
ভাবাবেশে উঠে প্রণয় মান ।  
মোক্ষার্থ বচন রীতি, মদ গর্ভ ব্যাক্ত স্ততি,  
কভু নিন্দা কভু বা সম্মান ॥ ৪২ ॥  
তুমি দেব ক্রীড়ারত, ভুবনের নারী যত,  
তাহে কর অভীষ্ট ক্রীড়ন ।  
তুমি আমারদয়িত, মোতেবৈসেতোমার চিত,  
মোর ভাগ্যে কৈলে আগমন ॥ ৪৩ ॥  
ভুবনের নারীগণ, সবা কর আকর্ষণ,  
তাহা কর সব সম্বোধন ।  
তুমি কৃষ্ণ চিত্তহর, এছে কোন পামর,  
তোমারে বা কেবা করে মান ॥ ৪৪ ॥  
তোমার চপল গতি, না হয় একত্র স্থিতি,  
তাতে তোমার নাহি কিছু দোষ ।  
তুমিত করুণাসিদ্ধ, আমার প্রাণের বন্ধ,  
তোমায় মোর নাহি কভু দোষ ॥ ৪৫ ॥  
তুমি নাথ ব্রজপ্রাণ, ব্রজের কর পরিত্রাণ,  
বল্লকার্যে নাহি অবকাশ ।  
তুমি আমার রমণ, সুখ দিতে আগমন,  
এ তোমার বৈদম্ব্যবিলাস ॥ ৪৬ ॥  
মোরবাক্যানিন্দামানি, কৃষ্ণছাড়িগেলাজানি  
শুন মোর এ স্ততি বচন ।  
নয়নের আভিরাম, তুমি মোর ধনপ্রাণ,  
হা হা পুনঃ দেহ দরশন ॥ ৪৭ ॥  
সুস্ত কল্প প্রস্বেদ, বৈবর্ণ্যাশ্র স্ববভেদ,  
দেহ হৈল পুলকে ব্যাপিত ।

হাসে কান্দে নাচেগায়, উঠিইতিউতি ধায়,  
ক্ষণে ভূমে পড়িএগা মূর্ছিত ॥ ৪৮ ॥  
মূর্ছায়হৈলসাক্ষাৎকার, উঠিকরেছজ্ঞকার,  
কহে এই আইলা মহাশয় ।

ক্লেশের মাধুরী গুণে, নানা ভ্রম হয় মনে,  
শ্লোক পড়ি করয়ে নিশ্চয় ॥ ৪৯ ॥  
তথাহি কৃষ্ণকর্ণামৃতে অষ্টষষ্টিতমশ্লোকঃ—  
মারঃ স্বয়ং হু মধুরদ্যুতিমণ্ডলং হু  
মাধুর্যাসেব হু মনো নয়নামৃতং হু ।  
বেণীমূলে হু মম জীবিতবল্লভো হু  
ক্লেশোহয়মভ্যুদয়তে মম লোচনায় ॥ ১১ ॥

( বিরহবিক্রবাৎ আহ ) হু ( কিং ) মারঃ ( বঃ  
তাবৎ অদৃশ্য এব জগদ্ধারয়তি সঃ কন্দর্পঃ ) স্বয়ম্  
( আগতঃ ) হু ( বিতর্কে, মাধুর্যম্ অমৃত্যুঃ  
মাচর্য্যমাহ ) মধুরদ্যুতিমণ্ডলং হু ( বিৎ । ন তৎ  
এতৎ ) মাধুর্যম্ এব হু মনোনয়নামৃতং হু ( কিং,  
অবয়বম্ অমৃত্যুঃ সগদ্রম্ আহ ) বেণীমূলঃ ( প্রেম্যা-  
গতঃ কাত্তঃ ) হু ( কিং । সমাক্ আপোক্য মানন্দ-  
মাহ, ভোঃ ) জীবিতবল্লভঃ কৃষ্ণঃ মম লোচনায়  
( তদানন্দয়িতুম্ ) অভ্যুদয়তে ( প্রকাশয়তি ) ॥ ১১ ॥

বিরহকাতরা শ্রীরাধা শ্রীকৃষ্ণাগমন  
দর্শন করতঃ বলিতেছেন, হে মথি ! ইনি  
কি সাক্ষাৎ কন্দর্প ? কিম্বা মাধুর্য্য ?  
অথবা আমার মনো ও নয়নের অমৃত ?  
কিম্বা আমার রেণী উন্মোচনকারী দূর-  
দেশাগত পতি ? অহো ! এ যে আমার  
জীবিতবল্লভ নবকিশোর শ্রীকৃষ্ণ, আমার  
নয়নের আনন্দ সম্পাদনার্থ উদিত  
হইলেন ॥ ১১ ॥

অস্ত্যর্থঃ—

কিবাএই সাক্ষাৎকাগ, কিবাছ্যুতিমূর্ত্তিমানু,  
কি মাধুর্য্য স্বয়ং মূর্ত্তিমন্ত ।

কিবামনোনেত্রোৎসব, কিবাপ্রাণেরবল্লভ  
মন্ত্য কৃষ্ণ আইলা নেত্রানন্দ ॥ ৫০ ॥  
গুরু নানা ভাবগণ, শিষ্য প্রভুর তনু মন,  
নানা রীতে মতত্ত নাচাম ।  
নির্কেদ বিষাদ দৈন্য, চাপল্যহর্ষধৈর্য্যমনু  
এই মৃত্যে প্রভুর কাল যায় ॥ ৫১ ॥  
চণ্ডিদাস বিদ্যাপতি, রায়ের নাটকগীতি,  
কর্ণামৃত শ্রীগীতগোবিন্দ ।  
স্বরূপ রামানন্দ মনে, মহাপ্রভুরাত্রিদিনে,  
গায় শুনে পরম আনন্দ ॥ ৫২ ॥  
পুরীর বাৎসল্য মুখ্য, রামানন্দেরশুদ্ধমখ্য  
গোবিন্দাদ্যের শুদ্ধ দাস্যরম ।  
গদাধর জগদানন্দ, স্বরূপের মুখ্য রামানন্দ,  
এই চারিভাবে প্রভু বর্শ ॥ ৫৩ ॥  
লীলাশুক মর্ত্ত্যাজন, তার হয় ভাবোকাগ,  
ঈশ্বরে সে কি ইহা বিস্ময় ।  
তাতে মুখ্য রমাশ্রয়, হইয়াছেন মহাশয়,  
তাতে হয় সর্কী ভাবোদয় ॥ ৫৪ ॥  
পূর্বে ব্রজবিলাসে, যেই তিন অভিলাসে,  
যত্নেহো আশ্বাদ না হইল ।  
শ্রীরাধারভাবসার, আপনেকরিঅঙ্গীকার,  
সেই তিন বস্তু আশ্বাদিল ॥ ৫৫ ॥  
আপনে করিআশ্বাদনে, শিখাইলভক্তগণে,  
প্রেমচিন্তামণির প্রভু ধনী ।  
নাহিজ্ঞানেস্থানাস্থান, যারেতারেকৈলদান,  
মহাপ্রভু দাতাশিরোগণি ॥ ৫৬ ॥  
এই গুণ্ডভাবসিন্ধু, ব্রহ্মা না পায় যারবিন্দু,  
হেন ধন বিলাইল সংসারে ।  
হেন দয়ালু অবতার, এছেদাতানাহিআর,  
গুণ কেহো নায়ে বর্ণিবারে ॥ ৫৭ ॥  
কহিবার কথানহে, কহিলেকেহোনাবুঝয়ে,  
হেন চিত্র চৈতন্যের রঙ্গ ।

সেইসেবুঝিতেপারে, চৈতন্যেররূপাধারে,  
 হই তার দাসদাসের সঙ্গ ॥ ৫৮ ॥  
 চৈতন্যলীলা রত্নসার, স্বরূপের ভাণ্ডার,  
 তিঁহো খুইলা রঘুনাথের কণ্ঠে ।  
 তাহা কিছুবে শুনিল, তাহা এই বিবরিল,  
 ভক্তগণে দিল এই ভেটে ॥  
 যদি কেহ হেন কটহ, গ্রন্থ কৈললোকময়ে,  
 ইতর জন নারিবে বুঝিতে ।  
 প্রভুর সেই আচরণ, সেই করি বর্ণন,  
 সৰ্ব্ব চিত্ত নারি আরাধিতে ॥ ৫৯ ॥  
 নাহিকারোষনিরোধ, নাহিকারোঅনুরোধ,  
 সহজ বস্তু করি বিবরণ ।  
 যদি হয় রাগ-দ্বন্দ্ব, তাহা হয় আবেশ,  
 সহজ বস্তু না যায় লিখন ॥  
 ঘেবানাহিবুঝেঁকেহো, শুনিতেশুনিতেসেহো,  
 কি অদ্ভুত চৈতন্যচরিত ।  
 কৃষ্ণে উপজিবেপ্রীতি, জানিবেরনেররীতি,  
 শুনিলেই বড় হয় হিত ॥ ৬০ ॥  
 ভাগবত শ্লোকময়, গীতা তার সংস্কৃত হয়,  
 তবু কৈছে বুঝে ত্রিভুবন ।  
 ইহা শ্লোকতুই চারি, তারব্যাক্য্যভাষাকরি,  
 কেন না বুঝিবে সৰ্ব্বজন ॥  
 শেষলীলার সূত্রগণ, কৈল কিছু বিবরণ,  
 ইহা বিস্তারিতে চিত্ত হয় ।  
 থাকে যদি আয়ু শেষ, বিস্তারিবদীলাশেষ,  
 যদি মহাপ্রভুর কৃপা হয় ॥

আমি বৃদ্ধ জরাতুর, লিখিতে কাঁপয়ে কর  
 মনে কিছু স্মরণ না হয় ।  
 না দেখিয়ে নয়নে, না শুনিয়ে শ্রবণে,  
 তবু লিখি এ বড় বিস্ময় ॥ ৬১ ॥  
 এই অন্ত্যলীলা সার, সূত্র মধ্যে বিস্তার,  
 করি কিছু করিল বর্ণন ।  
 ইহা মধ্যে মরি যবে, বর্ণিতে নারিব তবে,  
 এই মীলা ভক্তগণ ধন ॥  
 সঙ্ক্ষেপে এইসূত্রকৈল, যেই ইহানালেখিল,  
 আগে তাহা করিব বিস্তার ।  
 যদি ততদিন জীয়ে, মহাপ্রভুর কৃপা হয়ে,  
 ইচ্ছা তারি করিব বিচার ॥  
 ছোট বড় ভক্তগণ, বন্দো সবার শ্রীচরণ,  
 সবে মোর করহ সন্তোষ ।  
 স্বরূপগোপাঞ্জিরমত, রূপরঘুনাথজানেষত,  
 তাহা লিখি নাহি মোর দোষ ॥ ৬২ ॥  
 শ্রীচৈতন্য-নিত্যানন্দ, অদ্বৈতাদি ভক্তবৃন্দ,  
 শিরে ধরি সবার চরণ ।  
 স্বরূপ রূপ সনাতন, রঘুনাথের শ্রীচরণ,  
 পূজি করি মস্তক-ভূষণ ॥  
 পাঞা বার আঙ্ক্য ধন, ব্রজের বৈষ্ণবগণ,  
 বন্দো তাঁর মুখ্য হরিদাস ।  
 চৈতন্যবিলাসগিন্ধু, কল্লোলের এক বিস্ম,  
 তার কণা কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৬৩ ॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃত মধ্যখণ্ডে অন্ত্যলীলা-  
 সূত্রবর্ণনে প্রেমোন্মাদপ্রলাপবর্ণনং নাম  
 দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ ॥ ২ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃত মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপ শ্রীশ্যামলাল-পদারবিন্দসেবি  
 বিনোদবিহারীগোশ্বামি কৃতাঙ্করবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত অন্ত্যলীলা-  
 সূত্রবর্ণনে প্রেমোন্মাদপ্রলাপবর্ণনং নাম দ্বিতীয়পরিচ্ছেদ ॥ ২ ॥

## তৃতীয় পরিচ্ছেদ ।

ন্যাসং বিধায়োৎপ্রণয়োহথ গৌরো  
 বৃন্দাবনং গন্তমশা ভ্রমাদ্ যঃ ।  
 রাঢ়ে ভ্রমন্ শান্তিপূরীমস্থিতা  
 ললাস ভট্টকৈরিহ তং নতোহস্থি ॥ ১ ॥

যঃ গৌরঃ ন্যাসং ( সন্ন্যাসাশ্রমং ) বিধায়  
 ( গৃহীত্বা ) উৎপ্রণয়ঃ ( সন্ ) বৃন্দাবনং গন্তমনা  
 ভ্রমাৎ ( প্রেমবৈকুণ্ঠবাৎ ) রাঢ়ে ( রাঢ়দেশে ) ভ্রমন্  
 ( পশ্চাৎ ) শান্তিপূরীম্ অস্থিতা ( গত্বা ) ইহ ( শান্তি-  
 পুৰ্ণাং ) ভট্টকৈঃ ( সহ ) ললাস ( শোভিতবান্ )  
 তং ( গৌরং ) নতোহস্থি ॥ ১ ॥

যিনি সন্ন্যাস গ্রহণ করতঃ প্রেমাভিষ্ট  
 হইয়া বৃন্দাবন গমনে অভিলাষী হওতঃ  
 প্রেমাবেশে রাঢ়দেশে ভ্রমণ করিতে  
 করিতে শ্রীঅদ্বৈতগৃহে আগমন করিয়া  
 ভক্তগণের সহিত শোভিত হইয়াছিলেন,  
 আমি সেই গৌরাঙ্গকে প্রণাম করি ॥ ১ ॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
 জয়াদৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তবৃন্দ ॥  
 চক্ৰিশ বৎসর শেষ যেই মাঘমাস ।  
 তার শুক্লপক্ষে প্রভু করিলা সন্ন্যাস ॥  
 সন্ন্যাস করি প্রেমাবেশে চলিলা বৃন্দাবন ।  
 রাঢ়দেশে তিন দিন করিলা ভ্রমণ ॥  
 এই শ্লোক পড়ি প্রভু ভাবের আবেশে ।  
 ভ্রমিতে পবিত্র কৈল সব রাঢ়দেশে ॥ ১ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে অমোঘিংশা-  
 ধ্যায়ে ত্রিপঞ্চাশচ্ছাঃ—  
 এতাং ন আস্থায় পরাঅনিষ্ঠা-  
 মধ্যাসিতাঃ-পূৰ্ব্বতমৈম্ হর্ষিভিঃ ।

অহং তরিষ্যামি ছুরন্তপারং  
 তমো মুকুন্দাজিযু নিষেবংয়েব ॥ ২ ॥

সঃ ( অহং ) পূৰ্ব্বতমৈঃ ( প্রাচীনৈঃ ) মহর্ষিভিঃ  
 অধ্যাসিতাম্ ( উপাসিতাম্ ) এতাং পরাঅনিষ্ঠাং  
 ( পরঃ শুক্ঃ যঃ আস্থা জীবঃ তস্য নিষ্ঠাং বিচারিত-  
 লক্ষণং স্বরূপং কেবলম্ ) আস্থায় মুকুন্দাজিযু-  
 নিষেবয়া এব ছুরন্তপারং ( সংসারখ্যং ) তমঃ  
 তরিষ্যামি ॥ ২ ॥

মোহজালাচ্ছন্ন আমি এক্ষণে প্রাচীন  
 মহর্ষিগণ কর্তৃক সংসেবিত শুদ্ধ জীবাত্মার  
 প্রকৃত স্বভাব অবলম্বন পূৰ্ব্বক শ্রীভগবান  
 মুকুন্দের চরণসেবা দ্বারা ছুরন্তপার তমঃ  
 স্বরূপ সংসার হইতে উত্তীর্ণ হইব ॥ ২ ॥

প্রভু কহে সাধু এই ভিক্ষুক-বচন ।  
 মুকুন্দসেবন-ত্রত কৈল নির্ধারণ ॥  
 পরাঅনিষ্ঠামাত্র বেশ ধারণ ।  
 মুকুন্দসেবায় হয় সংসারতারণ ॥  
 সেই বেশ কৈল এবে বৃন্দাবন গিঞা ।  
 কৃষ্ণনিষেবণ করি নিভূতে বসিঞা ॥  
 এত বলি চলে প্রভু প্রেমোন্মাদের চিহ্ন ।  
 দিগ্ বিদিগ্ জ্ঞান নাহি কিবা রাত্রি দিন ॥  
 নিত্যানন্দ আচার্য্যরত্ন মুকুন্দ তিন জন ।  
 প্রভু পাছে পাছে তিনে করেন গমন ॥  
 যেই যেই প্রভু দেখে সেই সেই লোক ।  
 প্রেমাবেশে হরি বলে খণ্ডে দুঃখ শোক ॥  
 গোপবালক সব প্রভুকে দেখিয়া ।  
 হরি হরি বলি উঠে উচ্চ করিয়া ॥

শুনি তা সবার মিকট গেলা গৌরহরি ।  
 বোল বোল বলে সবার শিরে হস্ত ধরি ॥  
 তা সবারে স্তুতি করে,তোমরাভাগ্যবান্ ।  
 কুতার্থ করিলে মোরে শুনাঞাহরিনাম ॥২॥  
 গুণ্ডে তা সবারে আনি ঠাকুর নিত্যানন্দ ।  
 শিখাইল সবাকারে করিয়া প্রবন্ধ ॥  
 রুদ্দাবনপথ প্রভু পুছেন তোমারে ।  
 গঙ্গাতীরপথ তবে দেখাইহ তাঁরে ॥  
 তবে প্রভু পুছিলেন শুন শিশুগণ ।  
 কহ দেখি কোন্ পথে যাব রুদ্দাবন ॥  
 শিশু সব গঙ্গাতীর পথ দেখাইল ।  
 গেই পথে আবেশে প্রভু গমন করিল ॥  
 আচার্য্যরদ্বেরে কহে নিত্যানন্দ-গোসাঞিঃ  
 শীঘ্র যাহ তুমি অদ্বৈত-আচার্য্যের ঠাঞি ॥  
 প্রভু লৈয়া যাব আমি তাহার মন্দিরে ।  
 সাবধানে রাহে যেন নৌকা লঞা তীরে ॥  
 তবে নবদ্বীপে তুমি করিহ গমন ।  
 শচী সহ লঞা আইস সব ভক্তগণ ॥ ৩ ॥  
 তাহে পাঠাইয়া নিত্যানন্দ মহাশয় ।  
 মহাপ্রভুর আগে আমি দিলা পরিচয় ॥  
 প্রভুকহে ত্রীপাদ তোমার কোথাকে গমন  
 ত্রীপাদ কহে তোমা মনে যাব রুদ্দাবন ॥  
 প্রভু কহে কত দূরে আছে রুদ্দাবন ।  
 তেঁহো কহেন কর এই যমুনা দর্শন ॥  
 এত বলি তাঁরে নিল গঙ্গা সন্নিধানে ।  
 আবেশে প্রভুর হৈল গঙ্গায় যমুনা জ্ঞানে ॥  
 আহো ভাগ্য যমুনার পাইল দরশন ।  
 এত বলি যমুনারে করেন স্তবন ॥ ৪ ॥  
 তথাহি শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয়নামকৈ পঞ্চমাঙ্কে  
 ত্রয়োদশশ্লোকঃ—

চিদানন্দভানোঃ সদানন্দহনোঃ  
 পরপ্রেমপাত্রী ব্রবব্রহ্মগাত্রী ।

অঘানাং লবিত্রী জগৎক্ষেমধাত্রী  
 পবিত্রী ক্রিয়ামৌ বপুর্দ্বিত্রপুত্রী ॥ ৩ ॥  
 চিদানন্দভানোঃ ( চিদানন্দপ্রকাশকস্য ) নন্দ-  
 হনোঃ ( ত্রীকৃষ্ণস্য ) সদা পরপ্রেমপাত্রী ব্রব-  
 ব্রহ্মগাত্রী ( চিৎপ্রয়জ্ঞলক্ষণা ) অঘানাম্ ( অপরাধানাং )  
 লবিত্রী ( ছেত্রী ) জগৎক্ষেমধাত্রী ( জগতানাং  
 মঙ্গলবিধাত্রী ) মিত্রপুত্রী ( স্বর্গ্যকন্যা যমুনা ) নঃ  
 ( অস্বাকং ) বপুঃ পবিত্রী ক্রিয়াং ॥ ৩ ॥

চিদানন্দের প্রকাশক ত্রীকৃষ্ণের পরম  
 প্রেমপাত্রী, চিৎপ্রয়জ্ঞলক্ষণা, অপরাধ-  
 নাশিনী ও জগতের মঙ্গলদায়িনী স্বর্গ্যপুত্রী  
 যমুনা আমাদের দেহ পবিত্র করুন ॥ ৩ ॥

এত বলি ঈশঙ্করি কৈল গঙ্গাহান ।  
 এক কৌপীন নাহি দ্বিতীয় পরিধান ॥  
 হেন কালে আচার্য্য নৌকাতে চড়িঞা ।  
 আইলা নুতন কৌপীন বহির্দাস লঞা ॥  
 আগে আমি রহিলা আচার্য্য নমস্কারকরি ॥  
 আচার্য্য দেখি বলে প্রভু মনে সংশয় করি ॥  
 তুমিতঅদ্বৈতগোসাঞিঃহেথাকেনেআইলা ।  
 আমি রুদ্দাবনে তুমি কেমনে জানিলা ॥৫॥  
 আচার্য্য কহে তুমি যাহা তাঁহা রুদ্দাবন ।  
 মোর ভাগ্যে গঙ্গাতীরে তোমারআগমন ॥  
 প্রভু কহে নিত্যানন্দ আগারে বঞ্চিলা ।  
 গঙ্গাতীরে আনি মোরে যমুনা কহিলা ॥  
 আচার্য্য কহে মিথ্যা নহে ত্রীপাদ বচন ।  
 যমুনাতে স্থান তুমি করিলা এখন ॥  
 গঙ্গায় যমুনা বহে হইয়া এক ধার ।  
 পশ্চিমের যমুনা বহে পূর্বের গঙ্গাধার ॥ ৬ ॥  
 পশ্চিমধারে যমুনা বহে তাহা কৈলেস্থান ।  
 আর্জ্জ কৌপীন ছাড়, কর শুষ্ক পরিধান ॥  
 প্রেমাবেশে তিন দিন আছ উপবাস ।  
 আজি মোর ঘরে ভিক্ষা চল মোর বাস ॥

এক মুষ্টি অন্ন মুঞি করাইয়াছি পাক ।  
 সুখ রুখ ব্যঞ্জন এক সূপ আর শাক ॥  
 এত বলি মৌকায় চটাই মিল নিজ ঘর ।  
 পাদপ্রক্ষালন কৈল আনন্দ অন্তর ॥ ৭ ॥  
 প্রথমেই পাক করিয়াছেন আচার্য্যানী ।  
 বিষ্ণু সমর্পণ কৈল আচার্য্য আপনি ॥  
 তিন ঠাঁই ভোগ বাঢ়াইল সম করি ।  
 কৃষ্ণের ভোগ বাঢ়াইল ধাতু পাত্রে ধরি ॥  
 বস্তিষা আঠিয়া কলার আঙ্গটিয়া পাতে ।  
 দুই ঠাঁই ভোগ বাঢ়াইল ভাল মতে ॥ ৮ ॥  
 মধ্যে পীত স্নাত সিন্ধু শাল্যন্ন সূপ ।  
 চারিদিকে ব্যঞ্জন ডোঙ্গা আর মুক্কা'সূপ ॥  
 গাজক'বাস্কুক শাক বিবিধ প্রকার ।  
 পটোল কুম্ভাও বড়ি মানকচু আর ॥  
 রাইমরীচ সুক্কা দিএগ সব ফল মূলে ।  
 অমৃত নিম্বক পঞ্চবিধ তিক্ত ঝালে ॥ ৯ ॥  
 কোমল নিম্বপত্র সহ ভাজা বার্ভাকী ।  
 পটোল ফুলবড়ি ভাজা কুম্ভাও মানচাকী ॥  
 মারিকেল শস্য ছেনা শর্করা মধুর ।  
 মোচাঘন্ট দুক্ক কুম্ভাও সকল প্রচুর ॥  
 মধুরান্ন বড়ান্নাদি অল্প পাঁচ ছয় ।  
 সকল ব্যঞ্জন কৈল লোকে ষত হয় ॥ ১০ ॥  
 মুক্কাবড়া মাষবড়া কলাবড়া মিষ্ট ।  
 ক্ষীরপুলী নারিকেল ষত পিষ্ট ইষ্ট ॥  
 বস্তিষা আঠিয়া কলার ডোঙ্গা বড় বড় ।  
 চলে হালে নাহি ডোঙ্গা অতি বড় দঢ় ॥  
 পঞ্চাশ পঞ্চাশ ডোঙ্গা ব্যঞ্জন ভরিএগ ।  
 তিন ভোগের আশে পাশেরাখিলধরিয়া ॥  
 সযত পায়স সব মুৎ-কুণ্ডিকা ভরি ।  
 তিনপাত্র ঘনাবর্ত দুক্ক দিলা ধরি ॥ ১১ ॥  
 দুক্কচিড়া কলা আর দুক্ক লকুলকী ।  
 ষতক করিল তাহা কহিতে না শকি ॥

দুই পাশে ধরিল সব মুৎকুণ্ডিকা ভরি ।  
 চাঁপাকলা দধি সন্দেশ কহিতে না পারি ॥  
 অন্নব্যঞ্জন উপরে দিল তুলসীমঞ্জরী ।  
 তিন জলপাত্রে সুবাসিত জল ভরি ॥  
 তিন শুভ পীঠ তার উপরে বসন ।  
 এইরূপে সাক্ষাৎ কৃষ্ণে করাইল ভোজন ॥  
 আরতির কালে দুই প্রভু বোলাইল ।  
 প্রভু সঙ্গে সবেআসি আরতি দেখিল ॥১২॥  
 আরতি করিয়া কৃষ্ণে করাইল শয়ন ।  
 আচার্য্য আদি তবে প্রভুরে কৈল নিবেদন  
 গৃহের ভিতর প্রভু করুন গমন ।  
 দুই ভাই আইলা তবে করিতে ভোজন ॥  
 মুকুন্দ হরিদাস দুই প্রভু বোলাইলা ।  
 বোড়হাতে দুই জন কহিতে লাগিলা ॥  
 মুকুন্দ কহে গোর কিছু কৃত্য নাহি মরে ।  
 পাছে মুঞি প্রসাদপাব তুমি যাহ ঘরে ॥১৩॥  
 হরিদাস কহে মুঞি পাপিষ্ঠ অধম ।  
 বাহিরে এক মুষ্টি পাছে করিব ভোজন ॥  
 দুই প্রভু লএগ আচার্য্য গেলা ভিতর ঘর ।  
 প্রসাদ দেখিএগ প্রভুর আনন্দ অন্তর ॥  
 এছে অন্ন যে কৃষ্ণেরে করায় ভোজন ।  
 জন্মে জন্মে শিরে ধরি তাহার চরণ ॥  
 প্রভু জানে তিন ভোগ কৃষ্ণের নৈবেদ্য ।  
 আচার্য্যের মন কথা নহে প্রভুর বেদ্য ॥১৪॥  
 প্রভু কহে বৈস তিনে করিয়ে ভোজন ।  
 আচার্য্য কহে আমি করিব পরিবেশন ॥  
 কোন্ স্থানে বসিব আর আন দুই পাত ।  
 অল্প করি আনি তাহা দেহ ব্যঞ্জন ভাত ॥  
 আচার্য্য কহে বৈস ছুঁহে পিড়ির উপরে ।  
 এত বলি হাতে ধরি বসাইলদোহারে ॥১৫॥  
 প্রভু কহে সন্ন্যাসির ভক্ষ্য নহে উপকরণ ।  
 ইহা খাইলে কৈছে হয় ইন্দ্রিয় বারণ ॥

আচার্য্য কহে ছাড় তুমি আপনার চুরি ।  
 আমি জানি তোমার সন্ন্যাসের ভারিভুরি  
 ভোজন করহ ছাড় বচন চাতুরী ।  
 প্রভু কহে এত অন্ন খাইতে না পারি ॥  
 আচার্য্য কহে অরুপটে করহ আহার ।  
 যদি খাইতে নার পাতে রহিবেক আর ॥  
 প্রভু কহে এত অন্ন খাইতে নারিব ।  
 সন্ন্যাসির ধর্ম নহে উচ্ছিন্ন রাখিব ॥ ১৮ ॥  
 আচার্য্য কহে নীলাচলে খাও চৌয়ামবার ।  
 এক এক বারে অন্ন শত শত ভার ॥  
 তিন জনের ভক্ষ্যপিণ্ড তোমার একগ্রাস ।  
 তার লেখে এই অন্ন নহে পর গ্রাস ॥  
 মোর ভাগ্যে মোর গৃহে তোমার আশ্রম ।  
 ছাড়হ চাতুরী প্রভু করহ ভোজন ॥ ১৯ ॥  
 এত বলি জল দিল ছুই গোমাত্মির হাতে ।  
 হাসিএগ লাগিলাদোহেভোজন করিতে ॥  
 নিত্যানন্দ কহে কৈল তিন উপবাস ।  
 আজি পারণা করিতে মনে ছিল বড় আশ ॥  
 আজিহ উপবাস হৈল আচার্য্য নিমন্ত্রণে ।  
 অর্দ্ধপেট না ভরিবেক এইগ্রাসেক অঙ্গে ॥ ২০ ॥  
 আচার্য্য কহে হও তুমি তৈরিক সন্ন্যাসী ।  
 কতু ফল মূল খাও কতু উপবাসী ॥  
 দরিদ্র ব্রাহ্মণ যবে যে পাইলেমুষ্ঠ্যেক অন্ন ।  
 ইহাতে সন্তোষ হও, ছাড় লোভ মন ॥  
 নিত্যানন্দ কহে যবে কৈলে নিমন্ত্রণ ।  
 তত দিতে চাহ, যত করিয়ে ভোজন ॥ ২১ ॥  
 শুনি নিত্যানন্দ-কথা ঠাকুর অদ্বৈত ।  
 কহেন তাহারে কিছু পাইয়া পিরিত ॥  
 ভ্রষ্ট অবধৃত তুমি উদর পুরিতে ।  
 সন্ন্যাস লইয়াছ বুঝি ব্রাহ্মণ দণ্ডিতে ॥  
 তুমি খাইতে পার দশ বিশ মানের অন্ন ।  
 আমি তাঁহা কাঁহা পাব দরিদ্র ব্রাহ্মণ ॥

যে পাণ্ডাছ মুষ্ঠ্যেক অন্ন তাহা খাঞা উঠা  
 পাগলাই না করিহ না ছড়াইহ বুঠা ॥ ২২ ॥  
 এইমত হাস্যরসে করেন ভোজন ।  
 অর্দ্ধ অর্দ্ধ খাঞা প্রভু ছাড়েন ব্যঞ্জন ॥  
 সেই ব্যঞ্জনে আচার্য্য পুনঃ করেন পূরণ ।  
 দোনা ব্যঞ্জনে ভরি করে প্রভুকে প্রার্থন ॥  
 আচার্য্য কহে যে দিয়াছিতাহানাছাড়িবা ।  
 এখনে যে দিয়ে তার অর্দ্ধেক খাইবা ॥  
 নানায়ত্রে দৈন্যেপ্রভুরেকরাইলা ভোজন ।  
 আচার্য্যের ইচ্ছা প্রভু করিল পূরণ ॥ ২৩ ॥  
 নিত্যানন্দ কহে মোর পেট না ভরিস ।  
 লঞা যাহ তোর অন্ন কিছু না খাইল ॥  
 এত বলি একগ্রাস ভাত হাতে লঞা ।  
 উঝালি ফেলিল আগে যেন জুন্ধ হঞা ॥  
 ভাত ছুই চারি লাগিল আচার্য্যের অঙ্গে ।  
 ভাত অঙ্গে লঞা আচার্য্যনাচেবড়রঙ্গে ॥ ২৪ ॥  
 অবপ্তের বুঠা লাগিল মোর অঙ্গে ॥  
 পরম পবিত্র মোরে কৈল এই চঙ্গে ॥  
 তোরে নিমন্ত্রণ কৈল পাইল তার ফল ।  
 তোর জাঁতি কুল নাহি সহজে পাগল ॥  
 আপন সমান মোবে করিবার তরে ।  
 বুঠা দিলে বিপ্র বলি ভয় না করিলে ॥ ২৫ ॥  
 নিত্যানন্দ কহে এই কৃষ্ণের প্রসাদ ।  
 ইহাকে বুঠা কহিলে তুমি কৈলে অপরাধ ॥  
 শতেক সন্ন্যাসী যদি করাহ ভোজন ।  
 তবে এই অপরাধ হইবে খণ্ডন ॥ ২৬ ॥  
 আচার্য্য কহে কভুনা করিব সন্ন্যাসী নিমন্ত্রণ  
 সন্ন্যাসী নাশিলে মোর সব স্মৃতিধর্ম ॥  
 এত বলি ছুই জনে করাইল আচমন ।  
 উত্তম শয্যাতে লঞা করাইল শয়ন ॥  
 লবঙ্গ এলাচ বীজ উত্তম রসবাস ।  
 তুলসীগঞ্জরী সহ দিল মুখবাস ॥



সুগন্ধি চন্দনে লিগু কৈল কলেবরে ।  
 সুগন্ধি পুষ্পমালা দিল হৃদয় উপরে ॥২৭॥  
 আচার্য্য করিতে চাহে পাদসম্বাহন ।  
 সঙ্কোচিত হঞা প্রভু কহেম বচন ॥  
 বহুত নাচাইলে আমায় ছাড় নাচায়ন ।  
 মুকুন্দ হরিদান লঞা করহ ভোজন ॥  
 তবেত আচার্য্য সঙ্গে লঞা দুই জনে ।  
 করিল ইচ্ছায় ভোজন যে আছিল মনে ॥২৮॥  
 শাস্তিপূরের লোক শুনি প্রভুর আগমন ।  
 দেখিতে আইলা লোক প্রভুর চরণ ॥  
 হরি হরি বোলে লোক আনন্দিত হঞা ।  
 চমৎকার হৈল প্রভুর সৌন্দর্য্য দেখিয়া ॥২৯॥  
 গৌরদেহ-কান্তি, সূর্য্য জিনিয়া উজ্জ্বল ।  
 অরুণ-বস্ত্র-কান্তি তাতে করে ঝলমল ॥  
 আইসে যায় লোক সব নাহি সমাধান ।  
 লোকের সংঘটে দিন হৈল অবসান ॥  
 সঙ্ঘাতে আচার্য্য আরম্ভিল লংকীর্তন ।  
 আচার্য্য নাচেন প্রভু করেন দর্শন ॥  
 নিত্যানন্দ প্রভু বলে আচার্য্য ধরিঞা ।  
 হরিদাস পাছে নাচে হরষিত হঞা ॥৩০॥

ধানশ্রী রাগ ॥

কি কহব রে গণি আজুক আনন্দ গুর ।  
 চিরদিনে মাধব মন্দিরে মোর ॥ ১ ॥  
 এই পদ গাই, হর্ষে করেন নর্ত্তন ।  
 শ্বেদ কম্প অশ্রু পুলক লঙ্কার গর্জন ॥  
 গিরি কিরি কভু প্রভুর ধরেন চরণ ।  
 চরণে পায় প্রভুরে বলেন বচন ॥  
 অনেকে দিন ভূমি মোরে বেড়াইলে ভাণ্ডিয়া  
 ঘরে পাইয়াছি এবে রাখিব বাঙ্কিয়া ॥৩১॥  
 এত বলি আচার্য্য আনন্দে করেন নর্ত্তন ।  
 প্রহরেক রাত্রি আচার্য্য কৈল সঙ্কীর্তন ॥

প্রেমের উৎকণ্ঠা প্রভুর নাহি কৃষ্ণসঙ্গ ।  
 বিরহে বাড়িল প্রেম আলার তরঙ্গ ॥  
 ব্যাকুল হইয়া প্রভু ভূমিতে পড়িলা ।  
 গোসাক্ষি দেখিয়া আচার্য্য নৃত্যসম্বরিল ॥৩২॥  
 প্রভুর অন্তর মুকুন্দ জানে ভাল মতে ।  
 ভাবের সদৃশ পদ লাগিলা গাইতে ॥  
 আচার্য্য উঠাইলা প্রভুকে করিতে নর্ত্তন ।  
 পদ শুনি প্রভুর অঙ্গ না যার ধরণ ॥  
 অশ্রু কম্প পুলক শ্বেদ গদগদ বচন ।  
 ক্ষণে উঠে ক্ষণে পড়ে ক্ষণেকে রোদন ॥৩৩॥

তথাহি পদং ॥

হা হা প্রাণ প্রিয়সখি কি না হৈল মোরে ।  
 কানু-প্রোমবিশেষে মোর তনু মন জারে ॥ ১ ॥  
 রাত্রি দিনে পোড়ে মন মোয়াখনা পাণ্ড ।  
 বাহা গেলে কানু পাণ্ড তাহা উড়ি যাণ্ড ॥  
 এই পদ গায় মুকুন্দ স্মরণে করে ।  
 শুনিঞা প্রভুর চিত্ত অন্তর বিদরে ॥ ৩৪ ॥  
 মিনের্দ বিবাদামর্ম চাপল্য গর্ক দৈন্য ।  
 প্রভুর শরীরে যুদ্ধ করে ভাবগৈন্য ॥  
 জর্জর হইলা প্রভু ভাবের প্রহারে ।  
 ভূমিতে পড়িলা শ্বাস নাহিক শরীরে ॥  
 দেখিয়া চিন্তিত হৈলা সব ভক্তগণ ।  
 আচম্বিতে উঠে প্রভু করিয়া গর্জন ॥  
 বোল বোল বলি লগে আনন্দে বিহ্বল ।  
 বুকন না যায় ভাব-তরঙ্গ প্রবল ॥  
 নিত্যানন্দ সঙ্গে বলে প্রভুকে ধরিয়া ।  
 আচার্য্য হরিদাস বলে পাছেত নাচিয়া ।  
 এই মত প্রহরেক নাচে প্রভু রঙ্গে ।  
 কভু হর্ষ কভু বিবাদ ভাবের তরঙ্গে ॥৩৫॥  
 তিনদিন উপবাসে করিয়া ভোজন ।  
 উদ্ভঙ নৃত্যে প্রভুর হৈল পরিশ্রম ॥

তবুত না জানে শ্রম প্রেমে ভাবাবিষ্ট হয়।  
 নিত্যানন্দ মহাপ্রভুকে রাখিল ধরিয়া ॥  
 আচার্য্য গোসাঞি তবে রাখিল কীর্তন ।  
 নানা সেবা করি প্রভুকে করাইল শয়ন ॥  
 এইমত দশ দিন ভোজন কীর্তন ।  
 একরূপে করি কৈল প্রভুর সেবন ॥ ৩৬ ॥  
 প্রভাতে আচার্য্যরত্ন দোলায় চড়াইয়া ।  
 ভক্তগণ সঙ্গে আইলা শচীমাতা লৈয়া ॥  
 নদীয়া নগরের লোক স্ত্রী বালক বৃদ্ধ ।  
 সব লোক আইলা হৈল সংঘট সমুদ্র ॥  
 প্রাতঃকৃত্য করি করে নাম সঙ্কীৰ্তন ।  
 শচী মাতা লয়া আইলা অদ্বৈত-ভবন ॥ ৩৭ ॥  
 শচী আগে পড়িলা প্রভু দণ্ডবৎ হয়।  
 কান্দিতে লাগিলা শচী কোলেতে করিয়া।  
 দৌহার দর্শনে দৌহে হইলা বিহ্বল ।  
 কেশ না দেখিয়া শচী হইলা বিকল ॥  
 অঙ্গ মোছে মুখ চুসে করে নিরীক্ষণ ।  
 দেখিতে না পায়, অক্ষ ভরিল নয়ন ॥ ৩৮ ॥  
 কান্দিয়া কহেন শচী, বাছারে নিমাই ।  
 বিশ্বরূপ সম না করিহ নিঠুরাই ॥  
 সন্ন্যাসী হইঞা পুন না দিল দর্শন ।  
 তুমি তৈছে কৈলে মোর হইব মরণ ॥  
 প্রভুতঃকান্দিয়া কহে শুন মোর আই ।  
 তোমার শরীর এই মোর কিছু নাই ॥  
 তোমার পালিত দেহ জন্ম তোমা হৈতে ।  
 কোটিজন্মে তোমার স্পর্শ না পারি শোদিতে  
 জ্ঞানি বা না জানি কৈল যদ্যপি সন্ন্যাস ।  
 তথাপি তোমাকে কভু নহিব উদাস ॥ ৩৯ ॥  
 তুমি যাঁহা কহ মুঞি তাঁহাই রহিমু ।  
 তুমি যেই আজ্ঞা দেহ সেইত করিমু ॥  
 এত বলি পুনঃ পুনঃ করে নমস্কার ।  
 তুষ্ট হইঞা আই কোলে করে বার বার ॥

তবে আই লঞা, আচার্য্য গেলা অভ্যন্তর ।  
 ভক্তগণ মিলিতে প্রভু হইলা সত্তর ॥ ৪০ ॥  
 একে একে মিলিলা প্রভু সব ভক্তগণ ।  
 সবার মুখ দেখি করে দৃঢ় আলিঙ্গন ॥  
 কেশ না দেখিয়া ভক্ত যদ্যপি পায় দুঃখ ।  
 সৌন্দর্য্য দেখিতে ততু পায় মহাসুখ ॥  
 শ্রীবাস রামাই বিদ্যানিধি গদাধর ।  
 গঙ্গাদাস বজ্রেশ্বর মুরারি শুক্লাধর ॥  
 বুদ্ধিমন্তুখান নন্দন শ্রীধর বিজয় ।  
 বাসুদেব দামোদর মুকুন্দ সঞ্জয় ॥  
 কত নাম লব যত নবদীপবাসী ।  
 সবারে মিলিলা প্রভু রূপা বৃষ্টে হাসি ॥  
 আনন্দে নাচয়ে সবে বলি হরি হরি ।  
 আচার্য্য মন্দির হৈল শ্রীবৈকুণ্ঠপুরী ॥ ৪১ ॥  
 যত লোক আইল মহাপ্রভুকে দেখিতে ।  
 নানা গ্রাম হৈতে আর নবদীপ হৈতে ॥  
 সবারে বাঁসা দিল ভক্ষ্য অন্ন পান ।  
 বহুদিন আচার্য্য সবার কৈল সমাধান ॥  
 আচার্য্য গোসাঞির ভাণ্ডার অক্ষয় অব্যয়া  
 যত দ্রব্য ব্যয় করে পুনঃ তৈছে হয় ॥  
 সেই দিন হৈতে শচী করেন রক্ষণ ।  
 ভক্তগণ লঞা প্রভু করেন ভোজন ॥ ৪২ ॥  
 দিনে আচার্য্যের শ্রীতি প্রভুর দর্শন ।  
 রাত্রে লোক দেখে প্রভুর নর্তন কীর্তন ॥  
 কীর্তন করিতে প্রভুর হয় ভাবোদয় ।  
 স্তম্ভ কম্প পুলকান্ত গঙ্গাদ প্রায় ॥  
 ঘন ঘন পড়ে প্রভু আছাড় খাইয়া ।  
 দেখি শচীমাতা কহে রোদন করিয়া ॥  
 চূর্ণ হৈল হেন বাসো নিমাই কলেবর ।  
 হা হা করি বিষ্ণু পাশ মাগে এই বর ॥  
 বাল্যকাল হৈতে তোমার যে কৈনু সেবনা  
 তার এই ফল মোরে দেহ নীরারণ ॥

যে কালে নিমাই পড়ে ধরণী উপরে ।  
 ব্যথা যেন নাহি লাগে নিমাই শরীরে ॥৪৩॥  
 এই মত শচীদেবী বাৎসল্যে বিহ্বল ।  
 হর্ম ভয় দৈন্য ভাবে হইলা বিকল ॥  
 শ্রীনিবাস আদি যত বিপ্র ভক্তগণ ।  
 প্রভুকে ভিক্ষা দিতে হৈল সবাকার মন ॥  
 শুনি শচী সবাকারে কবেন মিনতি ।  
 মুঞি নিমাইর দর্শন আর পাব কতি ॥  
 তোমা সবা সমে হবে অন্যত্র মিলন ।  
 মুঞি অভাগিনীর এই মাত্র দরশন ॥  
 যাবৎ আচার্য্য-গৃহে নিমাইর অবস্থান ।  
 মুঞি ভিক্ষা দিব সবারে এইমাগোদান ॥৪৪॥  
 শুনি ভক্তগণ কহে করি নমস্কার ।  
 মাতার যে ইচ্ছা সেই সম্মত সবার ॥  
 মাতার বৈয়ত্র্য দেখি প্রভুর ব্যগ্র মন ।  
 ভক্তগণ একত্র করি বলিল বচন ॥  
 তোমা সবার আজ্ঞাবিনেচলিলাঙুলদাবন  
 যাইতে নারিল বিদ্ব কৈল নিবর্তন ॥  
 বদ্যপি সহসা আমি করিয়াছি সন্ন্যাস ।  
 তথাপি তোমা সবাইতে নহিব উদাসন ॥  
 তোমা সবা না ছাড়িব যাবৎ আমি জীবন  
 মাতারে তাবৎ আমি ছাড়িতে নারিব ॥  
 সন্ন্যাসির ধর্ম নহে সন্ন্যাস করিয়া ।  
 নিজ জন্মস্থানে রহে কুটুম্ব লইয়া ॥  
 কেহ যেন এই বোলে না করে নিন্দন ।  
 সেই যুক্তি কহ, যাতে রহে দুই ধর্ম ॥৪৫॥  
 শুনিঞা প্রভুর এই মধুর বচন ।  
 শচী পাশ আচার্য্যাদি করিলা গমন ॥  
 প্রভুর নিবেদন তারে সকল কহিল ।  
 শুনি শচী দগম্নাত্মা কহিতে লাগিল ॥  
 তেঁহো যদি ইহা রহে তবে মোর সুখ ।  
 তার নিন্দা হয় যদি সেহো মোর দুঃখ ॥

তাতে এই যুক্তি ভাল মোর মনে লয় ।  
 নীলাচলে রহে যবে দুই কার্য্য হয় ॥  
 নীলাচলে নবদ্বীপে যৈছে দুই ঘর ।  
 লোক গতাগতি বার্তা পাব নিরন্তর ॥৪৬॥  
 তুমি সব করিতে পার গমনাগমন ।  
 গঙ্গাহ্রানে কভু হবে তার আগমন ॥  
 আপনার দুঃখ সুখ তাহা নাহি গণি ।  
 তার সেই সুখ, সেই নিজ করি মানি ॥  
 শুনি ভক্তগণ তাঁর করেন স্তবন ।  
 বেদ আজ্ঞা যৈছে মাতা তোমার বচন ॥  
 ভক্তগণ প্রভু আগে আসিয়া কহিল ।  
 শুনিয়া প্রভুর মনে আনন্দ হইল ॥  
 নবদ্বীপবাগী আদি যত লোকগণ ।  
 সবারে সম্মান করি বলিল বচন ॥  
 তুমি সব লোক মোর পরম বান্ধব ।  
 এক ভিক্ষা মাগি মোরে দেহ তুমি সব ॥৪৭॥  
 ঘর যাঞা কর সদা কৃষ্ণসঙ্কীর্ণন ।  
 কৃষ্ণমাগ কৃষ্ণকথা কৃষ্ণ-আরাধন ॥  
 'প্রাজ্ঞা দেহ নীলাচল করিয়ে গমন ।  
 মধ্যে মধ্যে আমি তোমা সবারদিবদরশন ॥  
 এত বলি সবাকারে ঈশং হাঁসিয়া ।  
 বিদায় করিল প্রভু সম্মান করিয়া ॥  
 সব বিদায় করি প্রভু চলিতে কৈল মন ।  
 হরিদাস কান্দি কহে করুণ বচন ॥  
 নীলাচল চলিলা তুমি মোর কোন গতি ।  
 নীলাচল যাইতে মোর নাহিক শক্তি ॥  
 মুঞি অধম তোমার না পাব দরশন ।  
 কেমতে ধরিমু এই পাপিষ্ঠ জীবন ॥ ৪৮ ॥  
 প্রভু কহে কর তুমি দৈন্য সম্বরণ ।  
 তোমার দৈন্যে আমার ব্যাকুল হয় মন ॥  
 তোমার লাগি জগন্নাথে করিব নিবেদন ।  
 তোমাকে নিয়াব আমি শ্রীপুরুষোত্তম ॥

তবেত আচার্য্য কহে বিনীত করিয়া ।  
 দিন দুই চারি রহ ক্লপাত করিয়া ॥  
 আচার্য্য-বচন প্রভু না করে লজন ।  
 রহিলা অদ্বৈত-গৃহে না কৈলা গমন ॥  
 আনন্দিত হৈলা আচার্য্য, শচী, ভক্তগণ ।  
 প্রতিদিন করে আচার্য্য মহামহোৎসব ॥  
 দিনে কৃষ্ণকথা-রস ভক্তগণ সঙ্গে ॥  
 রাত্রে মহামহোৎসব সঙ্কীর্্তন-রঙ্গে ॥ ৪৯ ॥  
 আনন্দিত হয় শচী করেন রঞ্জন ।  
 স্নুখে ভোজন করে প্রভু লয়া ভক্তগণ ॥  
 আচার্য্যের শ্রদ্ধা ডক্তি গৃহ সম্পদ ধনে ।  
 সকল সফল হৈল প্রভু আগমর্মে ॥  
 শচীর আনন্দ বাঢ়ে দেখি পুলমুখ ।  
 ভোজন করাএা কৈল পূর্ণ নিজ সুখ ॥  
 এইমত অদ্বৈত-গৃহে ভক্তগণ মেলে ।  
 বঞ্চিল কথোকদিন নানা কুতূহলে ॥  
 আর দিন প্রভু কহে সব ভক্তগণে ।  
 নিজ নিজ গৃহে সবে করহ গমনে ॥  
 ঘরে গিয়া কর সবে কৃষ্ণ-সঙ্কীর্্তন ॥  
 পুনরপি আমা সঙ্গে হইব মিলন ॥  
 কভু বা করিবে তোমরা নীলাঙ্গি গমন ।  
 কভু বা আসিব আমি করিতে গঙ্গাস্নান ॥ ৫০ ॥  
 নিত্যানন্দ-গোমাত্রিঃ পণ্ডিত জগদানন্দ ।  
 দামোদর পণ্ডিত আর দত্ত মুকুন্দ ॥

এই চারি জন আচার্য্য দিল প্রভু সনে ।  
 জননী প্রবোধ করি বন্দিল চরণে ॥  
 তাঁরে প্রদক্ষিণ করি করিল গমন ।  
 এথা আচার্য্যের ঘরে উঠিল ক্রন্দন ॥  
 নিরপেক্ষ হইয়া প্রভু শীঘ্র যে চলিলা ।  
 কান্দিতেকান্দিতে আচার্য্যপশ্চাতে চলিলা  
 কথোদূর যাই প্রভু করি যোড়হাত ।  
 আচার্য্য প্রবোধি কহে কিছু মিষ্ট বাত ॥ ৫১ ॥  
 জননী প্রবোধ কর ভক্ত সমাধান ।  
 তুমি ব্যগ্র হৈলে কারো না রহিবে প্রাণ ॥  
 এত বলি প্রভু তাঁরে করি আলিঙ্গন ।  
 নিবৃত্ত করিয়া কৈল স্বচ্ছন্দ গমন ॥  
 গঙ্গাতীরে গেলা প্রভু চারি জন সাথে ।  
 নীলাঙ্গি চলিলা প্রভু ছত্রভোগ পথে ॥  
 চৈতন্যমঙ্গলে প্রভুর নীলাঙ্গি গমন ।  
 বিস্তারি বর্ণিয়াছেন দাস বৃন্দাবন ॥  
 অদ্বৈত-গৃহ-বিলাস প্রভুর শুনে যেই জন ।  
 অচিরাতে মিলে তারে কৃষ্ণপ্রেমধন ॥  
 শ্রীকৃষ্ণ রথনাথ পদে যার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৫২ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
 সন্ন্যাসকরণা দ্বৈতগৃহে ভোজনবিলাসবর্ণনং  
 নাম তৃতীয়পরিচ্ছেদঃ ॥ ৩ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপ শ্রীশ্যামলাল-পদারবিন্দগোবিন্দ  
 বিনোদবিহারীগোস্বামি কৃতাষ্ময়বোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত সন্ন্যাস-  
 করণাদ্বৈতগৃহে ভোজনবিলাস বর্ণনং নাম তৃতীয়পরিচ্ছেদঃ ॥ ৩ ॥

## চতুর্থ পরিচ্ছেদ ।



যঁই দাঁড়ুং চোরয়ন্ ক্ষীরভাণ্ডঃ  
গোপীনাথঃ ক্ষীরচোরাভিধোহভুং ।  
শ্রীগোপালঃ প্রাহুরাসীদশঃ সন্  
যৎ প্রেমা তং মাধবেন্দ্রং নতোহস্মি ॥ ১ ॥

যঁই দাঁড়ুং ক্ষীরভাণ্ডঃ চোরয়ন্ গোপীনাথঃ  
( স্বনামখ্যাতঃ বিগ্রহঃ ) ক্ষীরচোরাভিধঃ অভুং  
যৎ ( যস্য ) প্রেমা বশঃ ( বশীভূতঃ ) সন্ শ্রীগো-  
পালঃ প্রাহুরাসীৎ তং মাধবেন্দ্রং নতোহস্মি ॥ ১ ॥

ধাঁহাকে প্রদান করিতে ক্ষীরপাত্র  
চুরি করতঃ রেমুণা গ্রামস্থ শ্রীগোপীনাথ  
'ক্ষীরচোরা' নাম প্রাপ্ত হইয়াছেন এবং  
শ্রীগোপাল ঝাঁহার প্রেমে বশীভূত হওতঃ  
প্রকট হইয়াছেন, আমি সেই মাধবেন্দ্র-  
পুরীকে প্রণাম করি ॥ ১ ॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
জয়দ্বৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্ত বৃন্দ ॥  
নীলাঙ্গি-গমন জগন্নাথ-দরশন ।  
নার্কভৌম-ভট্টাচার্য্য প্রভুর গিলন ॥  
এই সব লীলা প্রভুর দাস বৃন্দাবন ।  
বিস্তারিয়া করিয়াছেন উত্তম বর্ণন ॥  
সহজে চরিত্র মধুর চৈতন্যবিহার ।  
বৃন্দাবন দাস মুখে অমৃতের ধার ॥ ১ ॥  
অতএব তাহা বর্ণিলে হয় পুনরুক্তি ।  
দস্ত করি বর্ণি যদি তৈছে নাহি শক্তি ॥  
চৈতন্যমঙ্গলে তেঁহো করিলা বর্ণন ।  
সুত্ররূপে সেই লীলা করিয়ে স্মচন ॥

তার সূত্রে আছে তেঁহো না কৈল বর্ণন ।  
যথা কথঞ্চিৎ করি সে লীলা কথন ॥  
অতএব তাঁর পায়ে করি নমস্কার ।  
তাঁর পায়ে অপরাধ নছক আমার ॥  
এই মত মহাপ্রভু চলিলা নীলাচলে ।  
চারিভক্ত সঙ্গে কৃষ্ণকীর্তন কুতুহলে ॥  
ভিক্ষা লাগি এক দিন একত্রায়ে গিয়া ।  
আপনে বহুত অন্ন আনিল মাগিয়া ॥ ২ ॥  
পথে বড় বড় দানী বিদ্ব নাহি করে ।  
তা মবারে রূপা করি আইলা রেমুণারে ॥  
রেমুণাতে গোপীনাথ পরম মোহন ।  
ভক্তি করি কৈল প্রভু তার দবশন ॥  
তাঁর পাদপদ্ম নিকট প্রণাম করিতে ।  
তাঁর পুষ্পচূড়া পড়িল প্রভুর মাথাতে ॥  
চূড়া পাঞা প্রভু মনে আনন্দিত হৈঞা ।  
এছ মৃত্যুগীত কৈলা ভক্তগণ লঞা ॥  
প্রভুর প্রভাব দেখি প্রেম রূপ গুণ ।  
বিস্মিত হইলা গোপীনাথের দাসগণ ॥ ৩ ॥  
নানারূপে প্রীতি কৈল প্রভুর সেবন ।  
সেই রাত্রি তাহা প্রভু করিলা বঞ্চন ॥  
মহাপ্রসাদ ক্ষীর লোভে রহিলা প্রভু তথা ।  
পূর্বে ঈশ্বরপুরী তাঁরে কহিয়াছেন কথা ॥  
ক্ষীরচোরা গোপীনাথ প্রসিদ্ধ তাঁর নাম ।  
ভক্তগণে কহে প্রভু সেইত আখ্যান ॥  
পূর্বে মাধবপুরী লাগি ক্ষীর কৈল চুরি ।  
অতএব নাম হৈল ক্ষীরচোরা করি ॥ ৪ ॥  
পূর্বে শ্রীমাধবপুরী আইলা বৃন্দাবন ।  
ভ্রমিতে ভ্রমিতে গেলা গিরি খোবর্জন ॥

প্রেমে মত্ত নাহি তাঁর দিবা রাত্রি জ্ঞান ।  
 ক্ষণে উঠে ক্ষণে পড়ে নাহি স্থানাস্থান ॥  
 শৈল পরিক্রমা করি গোবিন্দকূটু আসি ।  
 স্নান করি রুদ্ধতলে আছে সঙ্কায় বসি ।  
 গোপাল বালক এক দুষ্ক ভাণ্ড লঞা ।  
 আসি আগে ধরি কিছু বোলেন হাঁসিয়া ॥  
 পুরী এই দুষ্ক লয়া কর তুমি পান ।  
 মাগি কেনে নাহি খাণ্ড কিবা কর ধ্যান ॥  
 বালকের মৌন্দর্য্যে পুরীর হইল সন্তোষ ।  
 তাঁহার মধুর বাক্যে গেল ভোক শোষ ॥  
 পুরী কহে কে তুমি কাঁহা তোমার বাস ।  
 কেমতে জানিলে আমি করি উপবাস ॥৩৥  
 বালক কহে গোপ আমি এই গ্রামে বসি ।  
 আমার গ্রামেতে কেহো না রহে উপবাসী  
 কেহো মাগি খায় অন্ন কেহো দুষ্কাহার ।  
 অঘাচক জনে আমি দিয়েত আহার ॥  
 জল লৈতে স্ত্রীগণ তোমারে দেখি গেলা ।  
 স্ত্রী সব দুষ্ক দিয়া আমারে পাঠাইলা ॥  
 গোদোহন করিতে চাহি শীঘ্র আমি যাব ।  
 আরবার আমি এই ভাণ্ডটা লইব ॥ ৭ ॥  
 এত বলি বালক গেলা না দেখিয়ে আর ।  
 মাধবপুরীর চিন্তে হৈল চমৎকার ॥  
 দুষ্ক পান করি ভাণ্ড ধুইয়া রাখিল ।  
 বাট দেখে সেই বালক পুনঃ না আইল ॥  
 বসি নাম লয় পুরী নিজা নাহি হয় ।  
 শেষ রাত্রে তন্দ্রা হৈল বাহ্য রুত্তি লয় ॥  
 স্বপ্নে দেখে সেই বালক সম্মুখে আসিয়া ।  
 এক কুঞ্জে লয়া গেলা হাতেতে ধরিয়া ॥৮॥  
 কুঞ্জ দেখাইয়া কহে আমি এই কুঞ্জে রই ।  
 শীত রুষ্টি দাবাগ্নিতে ছুঃখ বড় পাই ॥  
 গ্রামের লোক আনি আমা কাঢ় কুঞ্জহৈতে  
 পর্কত উপরে লয়া রাখ ভাল মতে ॥

এক মঠ করি ভাঁহা করহ স্থাপন ।  
 বহু শীতল জলে আমা করাই রূপন ॥  
 বহু দিন তোমার পথ করি নিরীক্ষণ ।  
 কবে আমি মাধব আমা করিবে সেবন ॥  
 তোমার প্রেমবশে করি সেবা অঙ্গীকার ।  
 দর্শন দিয়া নিস্তারিব সকল সংসার ॥ ৯ ॥  
 স্ত্রীগোপাল নাম মোর গোবর্দ্ধনধারী ।  
 বজ্রের স্থাপিত আমি ইহা অধিকারী ॥  
 শৈল উপর হৈতে আমা কুঞ্জে লুকাইয়া ।  
 স্নেহু ভয়ে সেবক আমার, গেল পলাইয়া ।  
 সেই হৈতে রহি আমি এই কুঞ্জ স্থানে ।  
 ভাল হৈল আইলা আমা কাঢ় সাবধানে ॥  
 এত বলি সে বালক অন্তর্দান কৈল ।  
 জাগিয়া মাধবপুরী বিচার করিল ॥ ১০ ॥  
 কৃষ্ণকে দেখিলু মুঞি নারিলু চিনিতে ।  
 এত বলি প্রেমাবেশে পড়িলা স্তম্ভিতে ॥  
 ক্ষণেক রোদন করি মনঃ কৈল ধীর ।  
 আজ্ঞার পালন লাগি হইলা সুস্থির ॥  
 প্রাতঃস্নান করি পুরী গ্রাম মধ্যে গেলা ।  
 সব লোকে একত্র করি কহিতে লাগিলা ॥  
 গ্রামের ঈশ্বর তোমার গোবর্দ্ধনধারী ।  
 কুঞ্জে আছেন তাঁরে চল বাহির সে করি ১১  
 অত্যন্ত নিবিড় কুঞ্জ নারি প্রবেশিতে ।  
 কুঠারি কোদালি লহ দ্বার যে করিতে ॥  
 শুনি তার সঙ্গে লোক চলিলা হরিসে ।  
 কুঞ্জ কাটি দ্বার করি করিল প্রবেশে ॥  
 ঠাকুর দেখিল মাটি ভূণে আছাদিত ।  
 দেখি সব লোক হৈল আনন্দে বিস্মিত ॥  
 আবরণ দূর করি করিল বিদিতে ।  
 মহাভারি ঠাকুর কেহো নারে চালাইতে ১২  
 মহা মহা বলিষ্ঠ লোক একত্র হইয়া ।  
 পর্কত উপর গেলা ঠাকুর লইয়া ॥

পাথর সিংহাসন উপর ঠাকুর বসাইল ।  
 বড় এক পাথর পুষ্ঠে অবলম্ব দিল ॥  
 গ্রামের ব্রাহ্মণ সব নব ঘট লয়া ।  
 গোবিন্দকুণ্ডের জল আনিল ছানিয়া ॥  
 নব শত ঘট জল কৈল উপনীত ।  
 মানা বাদ্য ভেরী বাজে শ্রীগণে গায় গীত  
 কেহো গায় কেহো নাচে মহোৎসব হৈল ॥  
 অনেক সামগ্রী, বস্ত্র করি আনাইল ॥  
 দধি দুগ্ধ ঘৃত আইল যত গ্রাম হৈতে ।  
 ভোগ সামগ্রী আইলা সন্দেশাদি কতে ॥  
 তুলস্যাদি পুষ্প বস্ত্র আইল অনেক ।  
 আপনে মাধবপুরী করে অভিষেক ॥  
 অঙ্গমলা দূর করি করাইল স্নপন ।  
 বহু তৈল দিয়া কৈল শ্রীঅঙ্গ চিক্ৰণ ॥  
 পঞ্চগব্য পঞ্চামৃতে স্নান করাইয়া ।  
 মহাস্নান করাইল শত ঘট দিয়া ॥  
 পুনঃ তৈল দিয়া কৈল শ্রীঅঙ্গ চিক্ৰণ ।  
 শঙ্খ গজোদকে কৈল স্নান সমাপন ॥ ১৬ ॥  
 শ্রীঅঙ্গ সার্জন করি বস্ত্র পরাইল ।  
 চন্দন তুলসী পুষ্পমালা শ্রীঅঙ্গে দিল ॥  
 সুপ দীপ করি নানা ভোগ লাগাইল ॥  
 দধি দুগ্ধ সন্দেশাদি যত কিছু ছিল ॥  
 সুবাসিত জল নব্যপাত্রে সমর্পিল ।  
 আচমন দিয়া পুনঃ তাধূল অর্পিল ॥  
 আরতি করিয়া কৈল অনেক স্তবন ।  
 দণ্ডবৎ করি কৈল আজ্ঞাসমর্পণ ॥  
 গ্রামের যত তণ্ডুল দালি গোধূমাদি চূর্ণ ।  
 সকল আনিঞা দিল পর্ত্ত হৈল পূর্ণ ॥ ১৭ ॥  
 কুম্ভকারের ঘরেছিল যত মুন্ডালন ।  
 সব আইল প্রাতে হৈতে চড়িল রঞ্জন ॥  
 দশবিপ্র অন্ন রাঙ্কি করে এক স্তুপ ।  
 জন চারি পাঁচ রাঙ্কি নানাবিধ স্তুপ ॥

বস্তু শাক ফল মূলে বিবিধ বঞ্জন ।  
 কেহো বড়া বড়ি কড়ি করে বিপ্রগণ ॥  
 জন পাঁচ সাত রুটি করে রাশি রাশি ।  
 অন্ন ব্যঞ্জন রুটি সব রহে ঘুতে ভাসি ॥  
 নব বস্ত্র পাতি তাতে পলাশের পাত ।  
 রাঙ্কি রাঙ্কি তার উপর রাশি কৈল ভাত ॥  
 তার পাশে রুটি রাশি উপ পর্ত্ত হৈল ।  
 সুপ ব্যঞ্জন ভাণ্ড সব চৌদিকে ধরিল ॥  
 তার পাশে দধি দুগ্ধ মাঠা শিখরিণী ।  
 পায়স মথনি সর পাশে ধরি আনি ॥  
 হেনমতে অন্নকূট করিল সাজন ।  
 পুনীগোসাঞি গোপালেরে কৈল সমর্পণ ॥  
 অনেক ঘট ভরি দিল সুশীতল জল ।  
 বহু দিনের ক্ষুধায় গোপাল খাইলসকল ॥  
 যদ্যপি গোপাল সব অন্ন ব্যঞ্জন খাইল ।  
 তার হস্ত স্পর্শে অন্ন পুনঃ তৈছে হৈল ॥  
 ইহা অস্তুভব কৈল মাধব গোসাঞি ।  
 তার ঠাঞি গোপালের লুকা কিছু নাঞি ॥  
 এক দিনের উদ্বেগে ঐছে মহোৎসব হৈল  
 গোপাল প্রভাবে হৈল অন্যে না জানিল ॥  
 অচমন দিয়া দিল বিড়ার সঞ্চয় ।  
 আরতি করিল লোকে করে জয়-জয় ॥  
 শয্যা করাইল নূতন খাট আনাইয়া ।  
 নব বস্ত্র আনি তার উপরে পাতিয়া ॥  
 তুণটাটা দিয়া চারি দিক্ আবরিলা ॥  
 উপরেহ এক টাটা দিয়া আচ্ছাদিল ॥ ২০ ॥  
 পুরী গোসাঞি আজ্ঞাদিল যতেক ব্রাহ্মণে  
 আবালবৃদ্ধ গ্রামের লোক করাহ ভোজনে ॥  
 সব লোক বসি ক্রমে ভোজন করিল ।  
 ব্রাহ্মণ ব্রাহ্মণীগণে আগে খাওয়াইল ॥  
 অন্য গ্রামের লোক যেই দেখিতে আইল ।  
 গোপাল দেখিয়া সবে প্রসাদ খাইল ॥

পুরীর প্রভাব দেখি লোকে চমৎকার ।  
 পূর্ক অন্নকূট যেন হৈল সাক্ষাৎকার ॥২১॥  
 সকল ব্রাহ্মণ পুরী বৈষ্ণব করিল ।  
 সেই সেই সেবা মধ্যে সব নিয়োজিল ॥  
 পুনঃ দিনশেষে প্রভু করাইল উপান ।  
 কিছু ভোগ লাগাই করাইল জলপান ॥  
 গোপাল প্রকট হৈল দেশে শব্দ হৈল ।  
 আশপাশ গ্রামের লোক দেখিতে আইল ২২  
 একেক দিন একএক গ্রামে লইল সাক্ষিয়া  
 অন্নকূট করে তবে হরণিত হয় ॥  
 রাত্রিকালে ঠাকুরের করাইয়া শয়ন ।  
 পুরি গোমাঞি কৈল কিছু গধ্য ভোজন ॥  
 প্রাতঃকালে পুনঃ তৈছে করিল সেবন ।  
 অন্ন লয়া এক গ্রামের আইল লোকগণ ॥  
 অন্ন দ্বন্দ্ব দধি দুগ্ধ গ্রামে যত ছিল ।  
 গোপালের আগে লোক আনিয়াধরিল ২৩  
 পূর্কদিন প্রায় বিপ্র করিল রক্ষন ।  
 তৈছে অন্নকূট গোপাল করিল ভোজন ॥  
 ব্রজবানী লোকের ক্রোধে সহজ পিরিত্তি ।  
 গোপালের সহজ প্রীতি ব্রজবানী প্রতি ॥  
 মহাপ্রসাদাম যত খাইল সব লোক ।  
 গোপাল দর্শনে খণ্ডে সবার দুঃখশোক ২৪  
 আশপাশ ব্রজভূমের যত গ্রাম সব ।  
 এক এক দিন আসি করে মহোৎসব ॥  
 গোপাল প্রকট শুনি নানা দেশ হৈতে ।  
 নানা দ্রব্য লয়া লোকে লাগিলা আসিতে ॥  
 মথুরার লোক সব বড় বড় ধনী ।  
 ভক্তি করি নানা দ্রব্য ভেট ধরে আনি ॥  
 স্বর্ণ রৌপ্য বস্ত্র গন্ধ ভক্ষ্য উপহার ।  
 অসংখ্য আইসে নিত্য বাঢ়িল ভাণ্ডার ॥  
 এক মহাধনী ক্ষত্রিয় করাইল মন্দির ।  
 কেহোপাকভাণ্ডার কৈল কেহোতপ্রাচীর ২৫

এক এক ব্রজবাসী একেক গাভী দিল ।  
 সহস্র সহস্র গাভী গোপালের হৈল ॥  
 গোড় হৈতে আইল দুই বৈরাগী ব্রাহ্মণ ।  
 পুরিগোমাঞি রাখিল তারে করিয়া যতন  
 সেই দুই শিষ্য করি সেবা সমর্পিল ।  
 রাজসেবা হৈল পুরীর আনন্দ বাড়িল ॥  
 প্রভুত বৎসর দুই কবেন সেবন ।  
 এক দিন পুরীগোমাঞি দেখিলা স্বপন ॥  
 গোপাল কহে পুরী আমার ত্যাপ নাহিয়ায়  
 মলয়জ চন্দন লেপ তবে সে জুড়ায় ॥ ২৬ ॥  
 মলয়জ আন যাঞা নীলাচল হৈতে ।  
 অস্ত্র হৈতে নহে তুমি চল তুরিতে ॥  
 স্বপ্ন দেখি পুরীগোমাঞি হৈলা প্রেমাবেশ  
 প্রভু আজ্ঞা পালিবারে চলিলা পূর্কদেশ ॥  
 সেবার নির্কঙ্ক লোক করিল স্থাপন ।  
 আজ্ঞা মাগি গোড়দেশ করিলা গমন ॥২৭  
 শান্তিপুর আইলা জীলঅধৈতের ঘরে ।  
 পুরীর প্রেম দেখি আচাৰ্য আনন্দ অন্তরে ॥  
 তার ঠাই মন্ত্র লৈল যতন করিয়া ।  
 চলিলা দক্ষিণে পুরী তাঁরে দীক্ষা দিয়া ॥  
 রেমুণাতে কৈল গোপীনাথ দরশন ।  
 তাঁর রূপ দেখি প্রেমাবেশ হৈল মন ॥২৮॥  
 নৃত্য গীত করি জগমোহনে বসিলা ।  
 কাঁহা কাঁহা ভোগ লাগে ব্রাহ্মণে পুছিল ॥  
 সেবার মৌষ্ঠব দেখি আনন্দিত মনে ।  
 উত্তম ভোগ লাগে এখা বুরি অনুমানে ॥  
 যৈছে ইহা ভোগ লাগে সকলি শুনিব ।  
 তৈছে ভিয়ানে ভোগ গোপালে লাগাব ॥  
 এই লাগি পুছিলেন ব্রাহ্মণের স্থানে ।  
 ব্রাহ্মণ কহিল সব ভোগ বিবরণে ॥ ২৯ ॥  
 শয্যাভোগে ক্ষীর লাগে অমৃতকৈলি নাম  
 ছাদশ-মুৎপাত্র ভরি অমৃত সন্ধান ॥



গোপীনাথের ক্ষীর করি প্রসিদ্ধ নাম যার  
 পৃথিবীতে ঐছে ভোগ কাঁহো নাঞি আর  
 হেনকালে সেই ভোগ ঠাকুরে লাগিল ।  
 শুনি পুরী গোমাঞি কিছুমনেবিচারিল ৩০  
 অযাচিত ক্ষীরপ্রসাদ যদি অল্প পাই ।  
 স্বাদ জানি তৈছে ক্ষীর গোপালে লাগাই  
 এই ইচ্ছায় লজ্জা পায় বিষ্ণুস্মরণ কৈল ।  
 হেনকালে ভোগ সরি আরতি বাঞ্জিল ॥  
 আরতি দেখিয়া পুরী করি নমস্কার ।  
 বাহির হৈলা কারে কিছু না বলিলা আর  
 অযাচিত রুতি পুরী বিরক্ত উদাস ।  
 অযাচিত পাইলে খান নহে উপবাস ॥৩১॥  
 প্রেমামৃত্তে তুণ্ড ক্ষুধা তৃষ্ণা নাহি বাধে ।  
 ক্ষীর ইচ্ছা হৈল তাহে মানে অপরাধে ॥  
 গ্রামের শূন্য হাটে বসি করেন কীর্তন ।  
 এথা পূজারি করাইলা ঠাকুরে শয়ন ॥  
 নিজ রুত্ব্য করি পূজারী করিল শয়ন ।  
 স্বপনে ঠাকুর আসি বলেন বচন ॥  
 উঠহ পূজারি দ্বার করহ মোচন ।  
 ক্ষীর এক রাখিয়াছি সন্ন্যাসী কারণ ॥  
 ধড়ার অঞ্চলে ঢাকা এক ক্ষীর হয় ।  
 তোমরা না জান তাহা আমার মায়ায় ৩২  
 মাধবপুরী সন্ন্যাসী আছে হাটেত বসিয়া ।  
 তাহাকে ত এই ক্ষীর শীঘ্র দেহ লয়া ॥  
 স্বপ্ন দেখি উঠি পূজারী করিল বিচার ।  
 স্নান করি কপাট খুলি মুক্ত কৈল দ্বার ॥  
 ধড়ার অঁচল তলে পাইল সেই ক্ষীর ।  
 স্নান লেপি ক্ষীর লৈয়া হইলা বাহির ॥  
 ধাব দিয়া গ্রামে গেলা সেই ক্ষীর লয়া ।  
 হাটে হাটে বোলে মাধবপুরীচোহিয়া ৩৩  
 ক্ষীর লও এই, যার নাম মাধবপুরী ।  
 তোমার নাগি গোপীনাথ ক্ষীর কৈলচুরি ॥

ক্ষীর লয়া সুখে তুমি করহ ভক্ষণে ।  
 তোমা সম ভাগ্যবান্ নাহি ত্রিভুবনে ॥  
 এত শুনি পুরীগোমাঞি পরিচয় দিল ।  
 ক্ষীর দিয়া পূজারি তারে দণ্ডবৎ কৈল ॥  
 ক্ষীরের রুত্তান্ত তারে কহিল পূজারী ।  
 শুনি প্রেমাবিষ্ট হৈলা শ্রীমাধবপুরী ॥ ৩৪ ॥  
 প্রেম দেখি সেবক কহে হইয়া বিস্মিত ।  
 কৃষ্ণ যে ইহার বশ হয় যথোচিত ॥  
 এত বলি নমস্কারি গেলা সে ব্রাহ্মণ ।  
 আবেশে করিলা পুরী সে ক্ষীর ভক্ষণ ॥  
 পাত্র প্রক্ষালন করি খণ্ড খণ্ড কৈল ।  
 বহির্ন্যাসে থাকি সেই ঠিকরি রাখিল ॥  
 প্রতিদিন একটুক করেন ভক্ষণ ।  
 খাইলে প্রেমাবেশ হয় অমৃত্ত কখন ॥  
 ঠাকুর মোরে ক্ষীর দিলা সর্ব লোক শুনি  
 দিনে লোক শিড়হবেমোরপ্রতিষ্ঠাজানি ৩৫  
 এত ভাবি রাত্রিশেষে চলিলা শ্রীপুরী ।  
 সেই স্থানে গোপীনাথে দণ্ডবৎ করি ॥  
 চলি চলি আইলা ক্রমে শ্রীনীলাচল ।  
 জগন্নাথ দেখি প্রেমে হইলা বিহ্বল ॥  
 প্রেমাবেশে উঠে পড়ে হাসে নাচে গায় ॥  
 জগন্নাথ দরশনে মহাসুখ পায় ॥  
 মাধবপুরীশ্রীপাদআইলালোকে হৈলখ্যাতি  
 সব লোক আসি তারে করে ভক্তিস্তুতি ॥  
 প্রতিষ্ঠার স্বভাব এই জগতে বিদিত ।  
 যে না বাঞ্ছে তার হয় বিধাতা নির্মিত ৩৬  
 প্রতিষ্ঠার ভয়ে পুরী গেলা পলাইয়া ।  
 কৃষ্ণপ্রেম প্রতিষ্ঠা সঙ্গে চলে গড়াইয়া ॥  
 যদ্যপি উদ্বিগ্ন হৈল পলাইতে মন ।  
 ঠাকুরের চন্দন সাধন হইল বন্ধন ॥  
 জগন্নাথের সেবক যত যতেক মহান্ত ।  
 সবাকে কহিল পুরী গোপাল রুত্তান্ত ॥৩৭॥

গোপাল চন্দন মাগে শুনি ভক্তগণ ।  
 আনন্দে চন্দন লাগি করিলা যতন ॥  
 রাজপাত্র সনে যার আছে পরিচয় ।  
 তাহা মাগি কপূর চন্দন করিল সঞ্চয় ॥  
 এক বিপ্র এক সেবক চন্দন বহিতে ।  
 পুরী গোমাঞির সঙ্গে দিল সঙ্গল সহিতে ॥  
 ঘাটে দান ছাড়াইতে রাজপাত্র দ্বারে ।  
 রাজলিখা করি দিল পুরী গোমাঞির করে ৩৮  
 চলিলা মাধবপুরী চন্দন লইয়া ।  
 কথো দিনে রেমুণায় উত্তরিল আনিয়া ॥  
 গোপীনাথের চরণে কৈলা বহু নগস্কার ।  
 প্রেমাবেশে নৃত্যগীত করিলা অপার ॥  
 পুরী দেখি সেবক সব সম্মান করিল ।  
 ক্ষীর মহাপ্রসাদ দিয়া ভিক্ষা কবাইল ॥  
 সেই রাত্রি দেবালয়ে করাইল শয়ন ।  
 শেষরাত্রি হৈল পুরী দেখিল স্বপন ॥ ৩৯ ॥  
 গোপাল আসিয়া কহে শুন হে মাধব ।  
 কপূর চন্দন আমি পাইলাম সব ॥  
 কপূর সহিত ঘষি এ সব চন্দন ।  
 গোপীনাথের অঙ্গে নিত্য করহ লেপন ॥  
 গোপীনাথে আর আমার এক অঙ্গ হয় ।  
 ইহা চন্দন দিলে হবে আমার তাপ ক্ষয় ॥  
 না কর আগ্রহ ছুঃখ না ভাবিছ মনে ।  
 বিশ্বাসে চন্দন দেহ আমার বচনে ॥  
 এত বলি গোপাল গেলা গোমাঞিরাগিয়া  
 গোপীনাথের সেবকগণে আনিল ডাকিয়া ৪০  
 প্রভুর আজ্ঞা হৈল এই কপূর চন্দন ।  
 গোপীনাথের অঙ্গে নিত্য করহ লেপন ॥  
 ইহা চন্দন দিলে গোপাল হইব শীতল ।  
 স্বতন্ত্র ঈশ্বর তাঁর আজ্ঞা সে প্রবল ॥  
 গ্রীষ্মকালে গোপীনাথ পরিবে চন্দন ।  
 শুনি আনন্দিত হৈল সেবকের জন ॥

পুরী কহে এই দুই ঘষিবে চন্দন ।  
 আর জনা দুই দেহ দিব যে বেতন ॥  
 এই মত প্রত্যহ দেয় চন্দন ঘষিয়া ।  
 পরায় সেবক সব আনন্দ করিয়া ॥  
 প্রত্যহ চন্দন পরায় যাবৎ হৈল অন্ত ।  
 তথাই রহিলা পুরী তাবৎ পর্য্যন্ত ॥ ৪১ ॥  
 গ্রীষ্মকাল অস্তে পুনঃ নীলাচল গেলা ।  
 নীলাচলে চাতুর্মাস্য আনন্দে রহিলা ॥  
 ক্রীমুখে মাধবপুরীর অমৃত চরিত ।  
 ভক্তগণে শুনাঞা প্রভু করে আশ্বাদিত ॥  
 প্রভু কহে নিত্যানন্দ করহ বিচার ।  
 পুরী সম ভাগ্যবান্ জগতে নাহি আর ॥  
 দুঃসদানছলে ক্রুঞ্চ যারে দেখা দিল ।  
 তিনবার স্বপ্নে আসি যাবে রূপা কৈল ॥  
 যার প্রেমে বশ হঞা প্রকট হইলা ।  
 সেবা অঙ্গীকার করি জগন্ত তারিলা ॥ ৪২ ॥  
 যার লাগি গোপীনাথ ক্ষীর কৈল চুরি ।  
 অতএব নাম হৈল ক্ষীরচোর হরি ॥  
 কপূর চন্দন যার অঙ্গে চড়াইল ।  
 আনন্দে পুরী গোমাঞির প্রেম উথলিল ॥  
 স্নেহদেশ কপূর চন্দন আনিতে জঞ্জাল ।  
 পুরী ছুঃখ পাবে ইহা জানিয়া গোপাল ॥  
 মহা দয়াগয় প্রভু ভকতবৎসল ।  
 চন্দন পরি ভক্তশ্রম করিল সফল ॥  
 পুরীর প্রেম পরাকাষ্ঠা করহ বিচার ।  
 অলৌকিক প্রেম চিত্তে লাগে চমৎকার ॥  
 পরম বিরক্ত মৌনী সর্গত্র উদাসীন ।  
 গ্রাম্যবার্তা ভয়ে দ্বিতীয় জন সঙ্গহীন ॥ ৪৩ ॥  
 হেন জন গোপালের আজ্ঞামৃত পায় ।  
 সহস্র ক্রোশ আসি বলে চন্দন মাগিয়া ॥  
 ভোকে রহে তত্ব ভিক্ষা মাগি নাছি থায় ।  
 হেন জন চন্দনের ভার বহি যায় ॥

মণেক চন্দন তোলা বিশেক কপূর ।  
 গোপালে পরাব এই আনন্দ প্রচুর ॥  
 উৎকলের দানী রাখে চন্দন দেখিয়া ।  
 তাহা এড়াইলা রাজপত্র দেখাইয়া ॥  
 শ্লেচ্ছদেশ দূর পথ জগাতি অপার ।  
 কেমনে চন্দন নিব নাহি এ বিচার ॥ ৪৪ ॥  
 সঙ্গে এক বট নাহি ঘাটি দান দিতে ।  
 তথাপি উৎসাহ মনে চন্দন না লইতে ॥  
 প্রগাঢ় প্রেমের এই স্বভাব আচার ।  
 নিজ দুঃখ বিষাদিক না করে বিচার ॥  
 এই তার গাঢ় প্রেম লোকে দেখাতে ।  
 গোপাল তারে আজ্ঞা দিল চন্দন আনিতে  
 বল পরিশ্রমে চন্দন রেমুণা আনিব ।  
 আনন্দ বাঢ়য়ে মনে দুঃখ না গণিব ॥  
 পরীক্ষা করিতে গোপাল কৈল আজ্ঞা দান  
 পরীক্ষা করিয়া শেষে হৈল দয়াবান্ ॥  
 এই ভক্ত ভক্তপ্রিয় কৃষ্ণ ব্যবহার ।  
 বুঝিতেহো আমা সবার নাহি অধিকার ॥ ৪৫ ॥  
 এত কহি পড়ে প্রভু তার কৃত শ্লোক ।  
 যেই শ্লোকচন্দ্রে জগৎ করিয়াছে আলোক  
 ঘষিতে ঘষিতে যৈছে মলয়জ সার ।  
 গন্ধ বাঢ়ে তৈছে এই শ্লোকের বিচার ॥ ৪৬ ॥  
 রত্নগণ মধ্যে যৈছে হয় কৌস্তভমণি ।  
 রসকাব্য মধ্যে তৈছে এই শ্লোক গণি ॥  
 এই শ্লোক কহিয়াছেন রাধা ঠাকুরাণী ।  
 তার রূপায়ৈ ক্ষুরিয়াছে মাধমেন্দ্রবাণী ॥  
 কিবা গৌরচন্দ্রে ইহা করে আশ্বাদন ।  
 ইহা আশ্বাদিতে অধিকারী আর নাহি চৌঠজন  
 শেষকালে এই শ্লোক পড়িতে পড়িতে ।  
 সিদ্ধিপ্রাপ্তি হৈল পুরীর শ্লোকের সহিতে ৪৭  
 তথাহি পদ্যাবল্যাং চতুঃশ্লোকিক ত্রিংশতাক্ষ  
 গুত মাধবেন্দ্রপুরীদ্বাকাম্—

অগ্নি দীনদয়ার্জ নাথ হে  
 মথুরানাথ কদাবলোক্যসে ।  
 হৃদয়ং ত্বলোক কাতরং দয়িত  
 ভ্রাম্যতি কিং করোম্যহম্ ॥ ২ ॥

অগ্নি ( কোমল সোধোদনং ) দীনদয়ার্জ ( দীনানাং  
 ভববিরহ দুঃখিতানাং জনানাং সঙ্কে সরসহৃদয় )  
 হে মথুরানাথ ( মথুরানগরীপ্রিয় ) দয়িত, নাথ  
 ( সন্তোগপতে ) কদা ( যদা তদ ) অবলোক্যসে  
 ত্বলোক কাতরং ( তব অবলোকনাস্ত নিমিত্তায়  
 কাতরং ব্যাকুলং ) হৃদয়ং ভ্রাম্যতি কিং করোমি ॥ ২ ॥

হে দীনজন সরসহৃদয় ! হে মথুরা-  
 নগরীপ্রিয় ! হে প্রিয় ! হে সন্তোগপতে !  
 তোমাকে কবে দেখিব । তোমার অদ-  
 র্শনে কাতর হইয়া আমার মন অস্থির  
 হইয়াছে, এখন কি করি ॥ ২ ॥

এই শ্লোক পড়িতে প্রভু মুচ্ছিত হইলা ।  
 প্রেমেতে বিবশ হয় ভূমিতে পড়িলা ॥  
 অস্তে ব্যস্তে কোলে করি নিল নিত্যানন্দ ।  
 জন্মন করিয়া তবে উঠে গৌরচন্দ্র ॥  
 প্রেমোন্মাদ হৈল উঠি ইতিউত্তি ধায় ।  
 হৃদ্যার করয়েকভূহাসেকান্দেনাচেগায় ॥ ৪৮ ॥  
 অগ্নি দীন অগ্নি দীন প্রভু বোলে বার বার  
 কণ্ঠে না নিঃসরে বাণী নেত্রবহে অশ্রুধার  
 কম্প স্বৈদ পুলকান্ত স্তম্ভ বৈবৰ্ণ্য ।  
 নির্বেদ বিবাদ জাড্য গর্ভ হর্ষ দৈন্য ॥  
 এই শ্লোক উঘারিল প্রেমের কপাট ।  
 গোপীনাথ সেবক দেখে প্রভুর প্রেমনাট ৪৯  
 লোকের সংঘট দেখি প্রভুর বাহু হৈল ।  
 ঠাকুরের ভোগ সনি আরতি বাজিল ॥  
 ঠাকুর শয়ন করাইয়া পূজারি হইলা বাহির  
 প্রভু আগে আনি দিল প্রসাদ বার ক্ষীর

ক্ষীর দেখি মহাপ্রভুর আনন্দ বাড়িল ।  
 ভক্তগণ খাওয়াইতে পঞ্চ ক্ষীর লৈল ॥  
 সাত ক্ষীর পূজারীকে বাহুড়িয়া দিল ।  
 পঞ্চ ক্ষীর পঞ্চ জনে বাঁটিয়া খাইল ॥৫০॥  
 গোপীনাথরূপে যদি করিয়াছেন ভোজন ।  
 ভক্তি দেখাইতে কৈল প্রসাদ ভক্ষণ ॥  
 নাগসংস্কীর্ণনে সেই রাত্রি গোঙাইয়া ।  
 প্রভাতে চলিলা মঙ্গল আরতি দেখিয়া ॥৫১॥  
 শ্রীগোপালপোপীনাথপুরীগোসাঞিরগুণগণ  
 ভক্তসঙ্গে শ্রীমুখে প্রভু করে আশ্বাদন ॥

এইত আখ্যানে কহি ছুঁহার মহিমা ।  
 প্রভুর ভক্তবাৎসল্য আরভক্তেরপ্রেমসীমা ॥  
 শ্রদ্ধায়ুক্ত হৈয়া ইহা শুনে যেই জন ।  
 শ্রীকৃষ্ণচরণে সেই পায় প্রেমধন ॥  
 শ্রীরূপনৃনাথ পদে যার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৫২ ॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
 শ্রীমাধবেন্দ্রপুরীচরিতামৃতাস্বাদন  
 নাম চতুর্থ পরিচ্ছেদ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপ শ্রীশ্যামলাল-পদারবিন্দসেবি-  
 বিনোদবিহারীগোস্বামি কৃতাধ্বয়বোধিনী ও স্তবোধিনী সমন্বিত শ্রীমাধবেন্দ্র-  
 পুরীচরিতামৃতাস্বাদনঃ নাম চতুর্থঃ পরিচ্ছেদঃ । ৩ ॥

## পঞ্চম পরিচ্ছেদ ।



পদ্ম্যাং চলন্থ যঃ প্রতিমাশ্বরূপো  
 ব্রহ্মণ্যদেবো হি শতাহগম্যাম্ ।  
 দেশং যযৌ বিপ্রকৃতেহভুতেহং  
 তং সাক্ষিগোপালমহং নতোহস্মি ॥ ১ ॥

প্রতিমাশ্বরূপঃ ব্রহ্মণ্যদেবঃ যঃ হি পদ্ম্যাং  
 চলন্থ বিপ্রকৃতে ( ব্রাহ্মণ-উপকারায় ) শতাহগম্যঃ  
 ( শতদিবসেন প্রাপ্তং ) দেশং ( বিষ্ণানগরং )  
 যযৌ তম্ অভুতেহং সাক্ষিগোপালম্ অহং  
 নতোহস্মি ॥ ১ ॥

যে ব্রহ্মণ্যদেব প্রতিমাশ্বরূপ হইয়াও

ব্রাহ্মণের উপকারের জন্য শতদিবসগম্য  
 বিদ্যানগরে পদব্রজে গমন করিয়া-  
 ছিলেন, আমি সেই অভুত চেষ্টাশালী  
 সাক্ষিগোপালকে প্রণাম করি ॥ ১ ॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
 জয়াধৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তরন্দ ॥  
 চলিতে চলিতে আইলা যাজপুর গ্রামে ।  
 বরাহ ঠাকুর দেখি করিল প্রণামে ॥  
 নৃত্য গীত কৈল প্রেমে অনেক স্তবন ।  
 সেই রাত্রি তাঁহা রহি করিলা গমন ॥ ১ ॥

কটক আইলা সাক্ষীগোপাল দেখিতে ।  
 গোপাল-সৌন্দর্য দেখি হৈলা আনন্দিতে ॥  
 প্রেমাবেশে নৃত্য গীত করি কথোক্ষণ ।  
 আবিস্ট হইয়া কৈল গোপালে স্তবন ॥  
 সেই রাত্রি তাঁহা রহি ভক্তগণ সঙ্গে ।  
 গোপালের পূর্বকথা শুনে বহু রঙ্গে ॥  
 নিত্যানন্দ-গোসাঞি যবে তীর্থ ভ্রমিলা ।  
 সাক্ষীগোপাল দেখিবারে কটক আইলা ॥  
 সাক্ষীগোপালের কথা যেশুনিললোকমুখে  
 সেই কথা প্রভু আগে কহে নিজমুখে ॥  
 পূর্বে বিদ্যানগরের ছুইত ব্রাহ্মণ ।  
 তীর্থ করিবারে দোঁহা করিলা গমন ॥ ২ ॥  
 গয়া বারাণসী-আদি প্রযাগ করিয়া ।  
 মথুরা আইলা দোঁহে আনন্দিত হয় ॥  
 বনযাত্রায় বন দেখি দেখে গৌবর্ধন ।  
 দ্বাদশবন দেখি শেষে গেলা বৃন্দাবন ॥  
 বৃন্দাবনে গোবিন্দ স্থানে মহাদেবালয় ।  
 সে মন্দিরে গোপালের মহাসেবা হয় ॥  
 কেশিতীর্থে কালি হ্রদাদিতে করি স্নান ।  
 শ্রীগোপাল দেখি তাঁহা করিল বিশ্রাম ॥  
 গোপাল সৌন্দর্য দোঁহার নিল মন হরি ।  
 সুখ পাঞা রহে তাহা দিন দুই চারি ॥ ৩ ॥  
 দুই বিপ্র মধ্যে এক বিপ্র বৃদ্ধপ্রায় ।  
 আর বিপ্র যুবা তার করেন সহায় ॥  
 ছোট বিপ্র করে সদা তাহার সেবন ।  
 তাহার সেবার বিপ্লোর তুষ্ট হৈল মন ॥  
 বিপ্র কহে তুমি আমার বহু সেবা কৈলা ।  
 সহায় হইয়া মোরে তীর্থ করাইলা ॥  
 পুজ্ঞে হো পিতার ঐছে না করে সেবন ।  
 তোমার প্রসাদে আমি না পাইল শ্রম ॥  
 কৃতজ্ঞতা হয় তোমার না কৈলে সন্মান ।  
 অতএব তোমাৰে আমি দিব কন্যাধান ॥ ৪ ॥

ছোট বিপ্র কহে শুন বিপ্র মহাশয় ।  
 অসম্ভব কহ কেনে যেই নাহি হয় ॥  
 মহাকুলীন তুমি বিদ্যাধনাদি প্রবীণ ।  
 আমি অকুলীন বিদ্যাধনাদি বিহীন ॥ ৫ ॥  
 কন্যাধান পাত্র আমি না হই তোমার ।  
 কৃষ্ণশ্রীতে করি তোমার সেবা ব্যবহার ॥  
 ব্রাহ্মণসেবাতে কৃষ্ণের শ্রীতি বড় হয় ।  
 তাহার সন্তোষে ভক্তি সম্পদ বাঢ়য় ॥  
 বড় বিপ্র কহে তুমি না কর সংশয় ।  
 তোমাকে কন্যা দিব আমি করিল নিশ্চয় ॥  
 ছোট বিপ্র কহে তোমারআছে শ্রীপুত্র সব  
 বহু জ্ঞাতি গোষ্ঠী তোমার বহুত বাঙ্কব ॥  
 তা সবার সম্মতি বিনে নহে কন্যাধান ।  
 রুক্মিণীর পিতা ভীষ্মক তাহাতে প্রমাণ ॥  
 ভীষ্মকের ইচ্ছা কৃষ্ণে কন্যা সমর্পিতে ।  
 পুত্রের বিরোধে কন্যা নারিলেন দিতে ॥ ৬ ॥  
 বড় বিপ্র কহে কন্যা মোর নিজধন ।  
 নিজধন দিতে নিষেধিবে কোন্ জন ॥  
 তোমারে কন্যা দিব সবাকৈ করিতিরঙ্কার  
 সংশয় না কর তুমি কর অঙ্গীকার ॥  
 ছোট বিপ্র কহে যদি কন্যা দিতে হয় মন  
 গোপালের আগে কহ এ সত্য বচন ॥  
 গোপালের আগে বিপ্র কহিতে লাগিল ।  
 তুমি জান নিজকন্যা ইহারে আনি দিল ॥ ৭ ॥  
 ছোট বিপ্র কহে ঠাকুর তুমি মোর সাক্ষী ।  
 তোমা সাক্ষী বোলাব যদি অন্যমত দেখি  
 এত কহি দুইজন চলিলা দেশেরে ।  
 গুরু বুদ্ধে ছোট বিপ্র বহু সেবা করে ॥  
 দেশে আসি দোঁহে গেলা নিজ নিজ ঘর ।  
 কথোদিনে বড় বিপ্র চিন্তিত অন্তর ॥  
 তীর্থে বিপ্রে বাক্য দিল কেমনে সত্য হয় ।  
 শ্রীপুত্র জ্ঞাতি বন্ধুর জ্ঞানিব নিশ্চয় ॥ ৮ ॥

এক দিন নিজ লোক একত্র করিল ।  
 তা সবার আগে সব বৃত্তান্ত কহিল ॥  
 শুনি সব গোপী তবে করে হাহাকার ।  
 এছে বাত মুখে তুমি না আনিছ আর ॥  
 নৌচে কন্যা দিলে কুল যাইবেক নাশ ।  
 শুনি সব লোক তবে করিবে উপহাস ॥  
 বিপ্র কহে তীর্থবাক্য কেমনে করি আন ।  
 যে ইউ সে ইউ আমি দিব কন্যাদান ॥  
 জ্ঞাতিলোক কহে মোরা তোমায়েছাড়িব ।  
 স্ত্রীপুত্র কহে বিষ খাইয়া মরিব ॥ ৯ ॥  
 বিপ্রকহে সাক্ষী বোলাইয়া করিবেক ন্যায়  
 জিতি কন্যা লবেক, লাভে ধর্ম যায় ॥  
 পুত্র কহে প্রতিমা সাক্ষী সেহো দূরদেশে  
 কে তোমার সাক্ষী দিবে চিন্তা কর কিসে  
 নাহি কহি না কহিও এ মিথ্যা বচন ।  
 তবে কহিও কিছু মোর না হয় স্মরণ ॥ ১০ ॥  
 তুমি যদি কহ আমি কিছু নাহি জানি ।  
 তবে আমি ন্যায় করি ব্রাহ্মণেরে জিনি ॥  
 এত শুনি বিপ্রের চিন্তিত হৈল মন ।  
 একান্তভাবে চিন্তে বিপ্র গোপালচরণ ।  
 মোর ধর্ম রক্ষা পায়, না মরে নিজজন ।  
 দুই রক্ষা কর গোপাল লইবু শরণ ॥  
 এইমত চিন্তে বিপ্র চিন্তিতে লাগিলা ।  
 আর দিন লঘু বিপ্র তার ঘর আইলা ॥ ১১ ॥  
 আসিয়া পরমভক্তে নমস্কার করি ।  
 বিনয় করিয়া কহে দুই কর মুড়ি ॥  
 তুমি মোরে কন্যা দিতেকরিয়াছ অঙ্গীকার  
 এবে কিছু নাহি কহ কি তোমার ব্যবহার  
 এত শুনি সেই বিপ্র মৌন ধরিল ।  
 তার পুত্র ঠেকা হাতে মারিতে আইল ॥  
 আরে অধম মোর ভগিনী চাহ বিবাহিতে  
 বামন হয় চাহে যেন চাঁদ ধরিতে ॥ ১২ ॥

ঠেকা দেখি সেই বিপ্র পলাইয়া গেল ।  
 আর দিন প্রাণের লোক সভা ত করিল ॥  
 সব লোক বড় বিপ্রে বোলাইয়া লইল ।  
 তবে সেই লঘু বিপ্র কহিতে লাগিল ॥  
 এহো মোরে কন্যাদিতেকরিয়াছে অঙ্গীকার  
 এবে কন্যা নাহি দেন পুত্রুন ইহার ব্যবহার  
 তবে সেই বিপ্রেরে পুছিল সর্দজন ।  
 কন্যা কেনে না দেহ যদি দিয়াছ বচন ॥ ১৩ ॥  
 বিপ্র কহে শুম লোক মোর নিবেদন ।  
 কবে কি বলিয়াছি কিছু না হয় স্মরণ ॥  
 এত শুনি তার পুত্র বাক্ছল পায় ।  
 প্রগল্ভ হইয়া কহে সম্মুখে আসিয়া ॥  
 তীর্থযাত্রায় পিতা সঙ্গে ছিল বজ্রধন ।  
 ধন দেখি এই দুষ্টের লইতে হৈল মন ॥  
 আর কেহো সঙ্গে নাঞি তবে এই একল ।  
 ধুতুরা খাওয়াইয়া বাপে করিলা পাগল ॥ ১৪ ॥  
 সব ধন লয়া কহে চোর লৈল ধন ।  
 কন্যা দিতে কহিয়াছে উঠাইল বচন ॥  
 তোমরা সকল লোক করহ বিচারে ।  
 মোর পিতা কন্যা দিতে যোগ্য কি ইহারে  
 এত শুনি লোকের মনে হইল সংশয় ।  
 সম্ভবে ধনলোভে লোক ছাড়ে ধর্মভয় ॥  
 তবে ছোট বিপ্র কহে শুন মহাজন,  
 ন্যায় জিনিতে কহে এই অনন্ত বচন ॥ ১৫ ॥  
 এই বিপ্র মোর দেবায় সম্ভ্র হইলা ।  
 তোরে আমি কন্যা দিব আপনেকহিলা ॥  
 তবে আমি নিবেধিল শুন দ্বিজবর ।  
 তোমার কন্যার যোগ্য নহো মুঞ্জি বর ॥  
 কাঁহা তুমি পণ্ডিত ধনী পরমকুলীন ।  
 কাঁহা মুঞ্জি দরিদ্র মূর্খ নীচ কুলহীন ॥  
 তত্ব এই বিপ্র মোরে কহে বারবার ।  
 তোরে কন্যা দিল তুমি কর অঙ্গীকার ॥ ১৬ ॥

তবে মুঞি কহিল শুন দ্বিজ মহাসতি ।  
 তোমার শ্রীপুঞ্জ-জ্ঞাতির মহিষ সম্মতি ॥  
 কন্যা দিতে নারিবে হবে অমত্য বচন ।  
 পুনরপি কহে বিপ্র করিয়া যতন ॥  
 কন্যা তোম্মে দিল দ্বিধা না করিহ চিত্তে ।  
 আজ্ঞকন্যা দিব কেবা পারে নিষেধিতে ॥  
 তবে আমি কহিল এই তোমার দৃঢ়মন ।  
 গোপালের আগে কহ এ সত্য বচন ॥  
 তবে ইহঁো গোপাল আগে যাইয়া কহিল  
 তুমি জ্ঞান এই বিপ্রে কন্যা আমি দিল ॥১৭  
 তবে আমি গোপালেরে সাক্ষী করিয়া ।  
 কহিল তাহার পদে বিনতি করিয়া ॥  
 যদি মোম্মে এই বিপ্র না করে কন্যা দান  
 সাক্ষী বোলাইব তোমা হৈও মা'বধান ॥  
 এই বাতে সাক্ষী মোর আছে মহাজন ।  
 যার বাক্য সত্য করি মানে ত্রিভুবন ॥  
 তবে বড় বিপ্র কহে এই সত্যকথা ।  
 গোপাল যদি সাক্ষি'দেন আপনে আমিএথা ॥  
 তবে কন্যা দিব এই জানিহু নিশ্চয় ।  
 তার পুঞ্জ কহে ভাল এই বাত হয় ॥১৮॥  
 বড়বিপ্রের মনে কৃষ্ণ সহজে দয়াবানু ।  
 অবশ্য মোর বাক্য তিঁহো করিব প্রমাণ ॥  
 পুঞ্জের মনে প্রতিমানা আনিবেসাক্ষীদিতে  
 ছুই বুজ্যে ছুই জনা হইলা সম্মতে ॥  
 ছোটবিপ্র কহে পত্র করহ লিখন ।  
 পুন যেন নাহি চলে এ সব বচন ॥  
 তবে সব লোক এক পত্র ত লিখিল ।  
 দৌহার সম্মতি লয়া মধ্যস্থ রাখিল ॥১৯॥  
 তবে ছোট বিপ্র কহে শুন সভাজন ।  
 এই বিপ্র সত্যবাক্য ধর্মপরায়ণ ॥  
 স্ববাক্য ছাড়িতে ইহার নাহি কভু মন ।  
 স্বজন-মৃত্যু ভয়ে কহে লটপটি বচন ॥

ইহার পুণ্যে কৃষ্ণ আনি সাক্ষী বোলাইমু ।  
 তবে এই বিপ্রের সত্য প্রতিজ্ঞা রাখিমু ॥  
 এত শুনি নাস্তিক লোক উপহাস করে ।  
 কেহো কহে দেখর দয়ালু আগিতেহোপারে  
 তবে সেই ছোট বিপ্র গেলা বৃন্দাবন ।  
 দণ্ডবৎ করি কহে সব বিবরণ ॥ ২০ ॥  
 ব্রহ্মণ্যদেব তুমি বড় দয়াময় ।  
 দুই বিপ্রের ধর্ম রাখ হইয়া সদয় ॥  
 কন্যা পাব মনে মোর নাহি এই সুখ ।  
 বিপ্রের প্রতিজ্ঞা যায় এই মোর দুখ ॥  
 এত জানি সাক্ষী দেহ তুমি দয়াময় ।  
 জানি সাক্ষী না দেয় যেই তার পাপ হয় ॥  
 কৃষ্ণ কহে যাহ বিপ্র আপন ভবন ।  
 সভা করি আমা তুমি করিহ স্মরণ ॥  
 আবিভূর্ত হয় আমি তাঁহা সাক্ষী দিব ।  
 প্রতিমা স্বরূপে তাঁহা যাইতে নারিব ॥২১॥  
 বিপ্র কহে হও যদি চতুর্ভূজ মূর্তি ।  
 তত্বতোমারবাক্যে কারোনাহিবেপ্রতীতি ॥  
 এই মূর্তিতে যাইয়া এই শ্রীবচনে ।  
 সাক্ষী দেহ যদি তবে সর্ব লোক মানে ॥  
 কৃষ্ণ কহে প্রতিমা চলে কাঁহাও না শূনি ।  
 বিপ্র কহে প্রতিমা হয় কহ কেনে বাণী ॥  
 প্রতিমা না হও তুমি সাক্ষাপুঞ্জেশ্বরনন্দন ।  
 বিপ্র লাগি কর তুমি অকার্য সাধন ॥  
 হানিয়া গোপাল কহে শুনহ ব্রাহ্মণ ।  
 তোমার পাছে পাছে আমি করিব গমন ॥  
 উলটি আমারে তুমি না করিহ দর্শনে ।  
 আমাকে দেখিলেআমিরহিবেসেই স্থানে২২  
 নূপুরের ধনি মাত্র আমার শূনিবে ।  
 সেই শব্দে আমার গমন প্রতীত করিবে ॥  
 একগের অঙ্গ রাঙ্কি করিবে সমর্পণ ।  
 তাহা খায়া তোমার সঙ্গে করিব গমন ॥

আর দিন আজ্ঞা মাগি চলিলা ব্রাহ্মণ ॥  
 তার পাছে পাছে গোপাল করিলা গমন ॥  
 নুপুরের ধ্বনি শুনি আনন্দিত মন ।  
 উত্তম অন্ন পাক করি করায় ভোজন ॥২৩॥  
 এইমত চলি বিপ্র নিজদেশ আইল ।  
 গ্রামের নিকট আসি মনেতে চিন্তিল ॥  
 ইবে মুঞি গ্রামে আইলু যাইলু ভবন ।  
 লোকেরে কহিমু গিয়া সাক্ষীর আগমন ॥  
 সাক্ষাৎ না দেখিলে মনে প্রতীত না হয় ।  
 ইহাঁ যদি রহে তবে কিছু নাহি ভয় ॥  
 এত চিন্তি সেই বিপ্র ফিরিয়া চাহিল ।  
 হাসিয়া গোপালদেব তাহাঞি রহিল ॥২৪॥  
 ব্রাহ্মণে কহিল তুমি যাহ মিঞ ঘর ।  
 ইহাঞি রহিব আমি না যাব অঁতঃপর ॥  
 তবে সেই বিপ্র যাই নগরে কহিল ।  
 শুনি সব লোক চিত্তে চমৎকার হৈল ॥  
 আইল সকললোক সাক্ষী দেখিবারে ।  
 গোপাল দেখিয়া হর্ষে দণ্ডবৎ করে ॥  
 গোপালের সৌন্দর্য্য দেখি লোকআনন্দিত  
 প্রাতিমা চলি আইলা শুনিহইলা বিস্মিত ॥২৫॥  
 তবে সেই বড় বিপ্র আনন্দিত হয় ।  
 গোপালের আগে পড়ে দণ্ডবৎ হয় ॥  
 সকল লোকের আগে গোপাল সাক্ষীদিল  
 বড় বিপ্র ছোট বিপ্রে কন্যা দান কৈল ॥  
 তবে সেই দুই বিপ্রে কহিলা ঈশ্বর ।  
 তুমি দুই জন্মে জন্মে আমার কিঙ্কর ॥  
 দৌহার সত্যে ভুষ্ট হৈলাও, দৌহে মাগ বর  
 দুই বিপ্র বর মাগে আনন্দ অন্তর ॥ ২৬ ॥  
 যদি বর দিবে তবে রহ এই স্থানে ।  
 কিঙ্করেরে দয়া তবে সর্কলোক জানে ॥  
 গোপাল রহিলা দৌহে করেন মেবন ।  
 দেখিতে আইসে তবে দেশের সর্কজন ॥

সে দেশের রাজা আইলা আশ্চর্য্য শুনিয়া  
 পরম সন্তোষ পাইল গোপাল দেখিয়া ॥  
 মন্দির করিয়া রাজা সেবা চালাইল ।  
 সাক্ষিগোপাল বুলি নাম খ্যাতি হৈল ॥২৭॥  
 এইমতে বিদ্যানগরে সাক্ষিগোপাল ।  
 সেবা অঙ্গীকার করি আছে চিরকাল ॥  
 উৎকলের রাজা পুরুষোত্তমদেব নাম ।  
 সেই দেশ জিনিলেন করিয়া সংগ্রাম ॥  
 সেই রাজা জিনি লৈল তার সিংহাসন ।  
 মাণিক্য সিংহাসন নাম অনেক রতন ॥২৮॥  
 পুরুষোত্তমদেব সেই বড় ভক্ত আর্ধ্য ।  
 গোপালচরণে মাগে চল মোর রাজ্য ॥  
 তার ভক্তিরসে গোপাল তারে আজ্ঞাদিল  
 গোপাল লইয়া রাজা কটক আইল ॥  
 জগন্নাথে আনি দিল রত্ন সিংহাসন ।  
 কটকে গোপালসেবা করিল স্থাপন ॥  
 তাঁহার মহিষী আইলা গোপাল দর্শনে ।  
 ভক্তে বহু অলঙ্কার কৈল সমর্পণে ॥২৯॥  
 তাহার নাগাতে বহুমূল্য মুক্তা হয় ।  
 তাহা দিতে ইচ্ছা হৈল মনেতে চিন্তয় ॥  
 ঠাকুরের নাগিকাতে যদি ছিদ্র থাকিত ।  
 তবে এই দাসী মুক্তা নাগাতে পরাইত ॥  
 এত চিন্তি নগঙ্করি গেলা স্বভবনে ।  
 রাত্রিশেষে গোপাল তারে কহেন স্বপনে ৩০  
 বালককালে মাতা মোর নাগা ছিদ্র করি  
 মুক্তা পরাইয়াছিল বহু যত্ন করি ॥  
 সেই ছিদ্র অদ্যাপি আছে আমার নাগাতে  
 সেই মুক্তা পরাহ যাহা চাহিয়াছ দিতে ॥  
 স্বপ্ন দেখি সেই রাণী রাজারে কহিল ।  
 রাজা সঙ্গে মুক্তা লয়া মন্দিরে আইল ।  
 পরাইল নাগায় মুক্তা ছিদ্র দেখিয়া ।  
 মহামহোৎসব কৈল আনন্দিত হয় ॥৩১॥

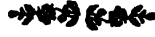


সেই হৈতে গোপালের কটকেতে স্থিতি ।  
 এই লাগি সাক্ষিগোপাল নাম হৈল খ্যাতি  
 নিত্যানন্দ গোসাঞির মুখে গোপালচরিত  
 শুনি তুষ্ট হৈলা প্রভু স্বভক্ত সহিত ॥  
 গোপালের আগে যবে প্রভুর হয় স্থিতি ।  
 ভক্তগণ দেখে বেন দৌহে একমূর্ত্তি ॥ ৩২ ॥  
 দৌহে এক বর্ণ দৌহে প্রকাণ্ড শরীর ।  
 দৌহে রক্ষাধর দৌহার স্বভাব গঙ্গীর ॥  
 মহাতেজোময় দৌহে কমলনয়ন ।  
 দৌহার ভাবাবিষ্টমন চন্দ্রবদন ॥  
 দৌহা দেখি নিত্যানন্দপ্রভু মহারঞ্জে ।  
 ঠাঠাঠাঠা করি হাসে ভক্তগণ সঙ্গে ॥ ৩৩ ॥  
 এইমত নামারঞ্জে সে রাজি বক্ষিয়া ।  
 প্রভাতে চলিলা মঙ্গল আরতি দেখিয়া ॥  
 ভূগনেশ্বর পথে যৈছে করিল গমন ।  
 বিস্তারি কহিল তাহা দাস রুদ্দাবন ॥  
 কমলপুর আসি ভাগীন্দী স্নান কৈল ।  
 নিত্যানন্দ হাতে প্রভু দণ্ড বে ধরিল ॥ ৩৪ ॥  
 কপোতেধর দেখিতে গেলা ভক্তগণ সঙ্গে  
 হেথা নিত্যানন্দ প্রভু কৈল দণ্ডভঙ্গে ॥  
 তিন খণ্ড করি দণ্ড দিল ভাগাইয়া ।  
 ভক্তসঙ্গে আইলা প্রভু মহেশ দেখিয়া ৩৫  
 জগন্নাথের দেউল দেখি আবিষ্ট হইলা ।  
 দণ্ডবৎ করি প্রেমে নাচিতে লাগিলা ॥  
 ভক্তগণ আবিষ্ট হৈলা সবে নাচে গায় ।  
 প্রেমাবিষ্ট প্রভুগঙ্গে রাজমার্গে যায় ॥  
 হাসে নাচে কান্দে প্রভু ছকার গঙ্গীন ।  
 তিনক্রোশ পথ হৈল সহস্রযোজন ॥  
 চলিতে চলিতে প্রভু আইলা আঠারনাল  
 ঠাঁহা আসি প্রভু কিছু বাছ প্রকাশিলা ৩৬

নিত্যানন্দে প্রভু কহে দেহ মোর দণ্ড ।  
 নিত্যানন্দ বলে দণ্ড হৈল তিন খণ্ড ॥  
 প্রেমাবেশে পড়িলে তুমি তোমাতে ধরিসু  
 তোমা সহ সেই দণ্ড উপরে পড়িসু ॥  
 দুই জনার ভরে দণ্ড খণ্ড খণ্ড হৈল ।  
 সেই খণ্ড কাঁহা পড়িল তাহা না জানিল ॥  
 মোর অপরাধে তোমার দণ্ড হৈল খণ্ড ।  
 যেই যুক্ত হয় তার কর মোর দণ্ড ॥ ৩৭ ॥  
 শুনি প্রভু মনে কিছু দুঃখ প্রকাশিলা ।  
 ক্রমৎ কোপ ব্যক্তি কিছু সবারে কহিলা ॥  
 নীলাচলে আনি আমা সবে হিত কৈলা ।  
 সবে দণ্ড ধন ছিল তাহা না রাখিলা ॥  
 তুমি সব আগে বাহ ঈশ্বর দেখিতে ।  
 কিবা আমি আগে যাই না যাব সহিতে ৩৮  
 মুকুন্দদত্ত কহে প্রভু তুমি চল আগে ।  
 আমি সব পাছে যাব না যাব তোমা সঙ্গে  
 এত শুনি প্রভু আগে চলিলা শীঘ্রগতি ।  
 বৃক্ষিতে না পারে কেহো দুই প্রভুর মতি ॥  
 এহো কেনেদণ্ডভাঙ্গে, তেঁহোকেনে ভাঙ্গায়  
 ভাঙ্গাইয়া কেনে ক্রুদ্ধ এহঁত দোষায় ॥  
 দণ্ডভঙ্গ লীলা এই পরম গভীর ।  
 সেই বুঝে দৌহার পদে, যার ভক্তিদীর ৩৯  
 ব্রহ্মণ্যদেব গোপালের মহিমা এই ধন্য ।  
 নিত্যানন্দ বক্তা যার জ্যোতা শ্রীচৈতন্য ॥  
 শ্রদ্ধাযুক্ত হয় শুন সর্ব ভক্তগণ ।  
 অচিরাতে পাবে কৃষ্ণচৈতন্য-চরণ ॥  
 শ্রীরূপরঘুনাথ পদে যার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃতে কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৪০ ॥  
 ইতি সাক্ষিগোপালচরিত বর্ণন নাম  
 পঞ্চম পরিচ্ছেদ ॥ ৫ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপ শ্রীশ্যামলাল-পদারবিন্দসেশিবিনোদবিহারীগোপাল  
 কৃতাধরবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত সাক্ষিগোপাল চরিতবর্ণনং নাম পঞ্চমঃ পরিচ্ছেদঃ ॥ ৫ ॥

## ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ ।



এহকারস্য—

নৌমি তং গৌরচন্দ্রং যঃ কুতর্ককর্কশাশয়ম্ ।  
সার্কভৌমং সর্কভূমা ভক্তিভূমানমাচরৎ ॥ ১ ॥

সর্কভূমা ( সর্কভাঃ পুরুষাদিত্যাঃ ভূমা মহৎ  
যস্য সঃ ) যঃ ( গৌরচন্দ্রঃ ) কুতর্ক কর্কশাশয়ং  
( কুতর্কেন কর্কশঃ কঠিনঃ আশয়ঃ যস্য তং )  
সার্কভৌমং ভক্তিভূমানং ( ভক্ত্যান্বাদ্যচত্বরম্ )  
আচরৎ ( অকরোৎ ) তং গৌরচন্দ্রং নৌমি ॥ ১ ॥

কুতর্কজালে কঠিনচিত্ত সার্কভৌমকে  
যিনি ভক্তিরসিক করিয়াছিলেন, আমি  
সেই মহাপুরুষ গৌরচন্দ্রকে স্তুতি  
করি ॥ ১ ॥

জয় জয় গৌরচন্দ্র জয় নিত্যানন্দ ।  
জয়াঈতচন্দ্র জয় গৌর ভক্তরন্দ ॥  
আবেশে চলিলা প্রভু জগন্নাথমন্দিরে ।  
জগন্নাথ দেখি প্রেমে হইলা অস্থিরে ॥  
জগন্নাথ আলিঙ্গিতে চলিলা ধাইয়া ।  
মন্দিরে পড়িলা প্রেমে আবিষ্ট হৈয়া ॥ ১ ॥  
দৈবে সার্কভৌম তাহা করেন দর্শন ।  
পড়িছা মারিতে তেঁহো কৈল নিবারণ ॥  
প্রভুর সৌন্দর্য আর প্রেমের বিকার ।  
দেখি সার্কভৌম হৈলা বিস্মিত অপার ২  
বহুক্ষণ চেতন নহে ভোগের কাল হৈল ।  
সার্কভৌম মনে ভবে উপায় চিন্তিল ॥  
শিখ্য পড়িছা স্বানে প্রভু নিল বহাইয়া ।  
ঘরে আনি পবিত্রস্থানে রাখিলশোয়াইয়া ৩

শ্বাস-প্রশ্বাস নাহি উদরস্পন্দন ।  
দেখিয়া চিন্তিত হৈল ভটাচার্যের মন ॥  
সুশ্ল তুলা আনি নামা অগ্রেতে ধরিল ।  
ঈষৎ চলয়ে তুলা দেখি ধৈর্য্য হৈল ॥  
বসি ভটাচার্য মনে করেন বিচার ।  
এই কৃষ্ণমহাপ্রেমের সাত্ত্বিক-বিকার ॥ ৪ ॥  
সুদীপ্ত-সাত্ত্বিক এই নাম যে প্রলয় ।  
নিত্যসিদ্ধ ভক্তে সে সুদীপ্তভাব হয় ॥  
অধিরূঢ় ভাব যার তার এ বিকার ।  
মনুষ্যের দেহে দেখি বড় চমৎকার ॥ ৫ ॥  
এত চিন্তি ভটাচার্য আছেন বসিয়া ।  
নিত্যানন্দাদি সিংহদ্বারে উত্তরিল গিয়া ॥  
তাহা শুনে লোক কহে অন্যোন্য়ে বাত ।  
এক সন্ন্যাসী আসি দেখি জগন্নাথ ॥  
মূর্ছিত হইলা চেতন না হয় শরীরে ।  
সার্কভৌম তৈছে তাঁর লয়া গেলা ঘরে ॥  
শুনি সবে জ্ঞানিল এই মহাপ্রভুর কার্য্য ।  
হেনকালে আইলা তথা গোপীনাথচার্য্য ৬  
নদীয়া নিবাসী বিশ্বাসদের জামাতা ।  
মহাপ্রভুর ভক্ত তেঁহো প্রভু-তৎক্ষাতা ॥  
মুকুন্দ সহিত পূর্কে আছে পরিচয় ।  
মুকুন্দ দেখিয়া তাঁর হইল বিস্ময় ॥  
মুকুন্দ তাঁহারে দেখি কৈলা নমস্কার ।  
তেঁহো আলিঙ্গিয়া পুছে প্রভুর সমাচার ৭  
মুকুন্দ কহে প্রভুর ইহা হৈল আগমনে ।  
আমি সব আশিয়াছি মহাপ্রভুর সনে ॥  
নিত্যানন্দগোসাঞিরে আচার্য্যকৈলনমস্কার  
সবে মেলি পুছে প্রভুর বাণী আনবারা ৮ ॥

মুকুন্দ কহে মহাপ্রভু সন্ন্যাস করিয়া ।  
 নীলাচল আইলা সঙ্গে আমা সব লৈয়া ॥  
 আমা সব ছাড়ি আগে গেলা দরশনে ।  
 আমি সব পাছে আইলাও তাঁর অন্তরেণে  
 অন্যোহন্য লোকের মুখে যে কথা শুনিল  
 সার্কভৌম যবে প্রভু অনুমান কৈল ॥  
 ঈশ্বর দর্শনে প্রভু প্রেমে অচেতন ।  
 সার্কভৌম লয়া গেলা আপন ভবন ॥ ৯ ॥  
 তোমার মিলনে মোর যবে হৈল মন ।  
 দৈবে সেই ক্ষণে পাইল তোমার দর্শন ॥  
 চল যবে যাই সার্কভৌমের ভবন ।  
 প্রভু দেখি পাছে করিব ঈশ্বর দর্শন ॥ -  
 এত শুনি গোপীনাথ সবাকৈ লইয়া ।  
 সার্কভৌম-গৃহে গেলা হরষিত হয় ॥ ১০ ॥  
 সার্কভৌম স্থানে গিয়া প্রভুরে দেখিল ।  
 প্রভু দেখি আচার্য্যের তুঃখ হর্ষ হৈল ॥  
 সার্কভৌমে জানায়া সব নিল অভ্যস্তরে  
 নিত্যানন্দগোসাঞিরেওঁহোকৈল নমস্কারে  
 সব সহিত যথাযোগ্য করিল মিলন ।  
 প্রভু দেখি সবার হৈল তুঃখ হর্ষ মন ॥ ১১ ॥  
 সার্কভৌম পাঠাইল সবাকৈ দর্শন করিতে  
 চন্দনেশ্বর নিজ পুত্র দিল সবার মাথে ॥  
 জগন্নাথ দেখি সবার হৈল আনন্দ ।  
 ভাবেতে অবশ হৈলা প্রভু নিত্যানন্দ ॥  
 সবে মেলি ধরি তাঁরে সুস্থির করিল ।  
 ঈশ্বর-সেবক মালা প্রসাদ আনি দিল ॥ ১২ ॥  
 প্রসাদ পাইয়া সবে আনন্দিত মনে ।  
 পুনরপি শীত্র আইলা মহাপ্রভুর স্থানে ॥  
 উচ্চ করি করে সবে নামগংকীর্তন ।  
 তৃতীয় প্রহরে প্রভুর হইল চেতন ॥  
 ভক্ত্যর করিয়া উঠে হরি হরি বলি ।  
 আনন্দে সার্কভৌম লৈল প্রভুর পদধূলি ॥ ১৩ ॥

সার্কভৌম কহে শীত্র করহ মধ্যাহ্ন ।  
 মুঞি দিব আজি ভিক্ষা মহাপ্রসাদান ॥  
 সমুদ্রস্নান করি মহাপ্রভু শীত্র আইলা ।  
 চরণ পাখালি প্রভু আননে বসিলা ॥  
 বহুত প্রসাদ সার্কভৌম আনাইলা ।  
 তবে মহাপ্রভু সুখে ভোজন করিলা ॥ ১৪ ॥  
 সুবর্ণ থালির অন্ন উত্তম ব্যঞ্জন ।  
 ভক্তগণ সঙ্গে প্রভু করেন ভোজন ॥  
 সার্কভৌম পরিবেশন করেন আপনে ।  
 প্রভু কহে সোবে দেহ লাফরা ব্যঞ্জনে ॥  
 পিঠা পানা দেহ তুমি ইহা সবাকারে ।  
 তবে ভট্টাচার্য্য কহে, যুড়ি দুই করে ॥ ১৫ ॥  
 জগন্নাথ কৈছে করিয়াছেন ভোজন ।  
 আজি সব মহাপ্রসাদ কর আশ্বাদন ॥  
 এত বলি পিঠা পানা সব খাওয়াইল ।  
 ভিক্ষা করাইয়া আচমন করাইল ॥  
 আজ্ঞা মাগি গেলা গোপীনাথচার্য্য লয়া ।  
 প্রভুর নিকট আইলা ভোজন করিয়া ॥ ১৬ ॥  
 নমো নারায়ণ বলি নমস্কার কৈল ।  
 কৃষ্ণ মতিরঞ্জ বলি গোসাঞি কহিল ॥  
 শুনি সার্কভৌম মনে বিচার করিল ।  
 বৈষ্ণব সন্ন্যাসী এহঁ বচনে জানিল ॥  
 গোপীনাথ-আচার্য্যকে কহে সার্কভৌম ।  
 গোসাঞিরজানিতেচাহি কাঁহাপূর্নাশ্রম ১৭  
 গোপীনাথ-আচার্য্য কহে নবধীপে যর ।  
 জগন্নাথ নাম পদনী মিশ্র পুরন্দর ॥  
 বিশ্বস্তর নাম ইহঁর তাঁর ইহঁ পুত্র ।  
 নীলাশ্বর চক্রবর্ত্তির হয়েন দৌহিত্র ॥ ১৮ ॥  
 সার্কভৌম কহে নীলাশ্বর চক্রবর্ত্তী ।  
 বিশারদের সমাধ্যায়ী এই তাঁর খ্যাতি ॥  
 মিশ্রপুরন্দর তাঁর মান্য হেন জানি ।  
 পিতার সঙ্গকে দৌহাকে পূজ্য করি মানি

নদীয়া সম্বন্ধে সার্কভৌম তুষ্টি হৈলা ।  
 প্রীতি হঞা গোমাঞিরেকহিতেলাগিলা ১৯  
 সহজেই পূজ্য তুমি আর ত সন্ন্যাস ।  
 অতএব জানিহ তুমি আমি তোমার দাস ॥  
 শুনি মহাপ্রভু কৈল শ্রীবিষ্ণুস্মরণ ।  
 ভট্টাচার্য্যে কহে কিছু বিনয় বচন ॥  
 তুমি জগদ্গুরু সৰ্কলোক হিতকর্ত্তা ।  
 বেদান্ত পড়াও শুনাও সন্ন্যাসীর উপকর্ত্তা ॥  
 আমি বালক সন্ন্যাসী, ভাল মন্দমাহিঞ্জানি  
 তোমার আশ্রয় লৈল গুরু করি মানি ॥ ২০ ॥  
 তোমার সঙ্গ লাগি মোর এথা আগমন ।  
 সৰ্কপ্রকারে করিবে তুমি আমার পালন ॥  
 আজি আমার হৈয়াছিল বড়ই বিপত্তি ।  
 তাহা হৈতে কৈলে তুমি আমার অন্যাহতি  
 ভট্টাচার্য্য কহে একলে তুমি নায়াইহদর্শনে  
 আমা সঙ্গে যাইহ কিবা আমারলোকসনে  
 প্রভু কহে মন্দির ভিতর কভু না সাইব ।  
 গরুড়ের পাছে রহি দর্শন করিব ॥ ২১ ॥  
 গোপীনাথ-আচার্য্যেরে কহে সার্কভৌম ।  
 তুমি গোমাঞিরে লয়া করাইহ দর্শন ॥  
 আমার মাতৃশ্রমা গৃহ নির্জন স্থান ।  
 তাহা বাসা দেহ কর সৰ্ক সমাধান ॥  
 গোপীনাথ প্রভু লয়া তাঁহা বাসা দিল ।  
 জল, জলপাত্রাদিক সৰ্ক সমাধান কৈল ॥  
 আর দিন গোপীনাথ প্রভু স্থানে গিয়া ।  
 শয্যাখান দরশন করাইল লয়া ॥  
 মুকুন্দদত্ত লয়া আইলা সার্কভৌম স্থানে ।  
 সার্কভৌম তাঁরে কিছু বলিল বচনে ॥ ২২ ॥  
 প্রকৃতি বিনীত সন্ন্যাসী দেখিতে সুন্দর ।  
 আমার বহু প্রীতি হয় ইহঁার উপর ॥  
 কোন সম্প্রদায় সন্ন্যাস করিয়াছেন গ্রহণ ।  
 কিবা নাম ইহঁার শুনিতে হয় মন ॥ ২৩ ॥

গোপীনাথ কহে ইহঁার নাম শ্রীকৃষ্ণকৈতন্য  
 গুরু ইহঁার কেশব ভারতী মহাধন্য ॥  
 সার্কভৌম কহে এই নাম সৰ্কৌত্তম ।  
 ভারতী সম্প্রদায় এহঁে হয়েন মধ্যম ॥ ২৪ ॥  
 গোপীনাথ কহে ইহঁার নাহি বাছাপেক্ষা ।  
 অতএব বড় সম্প্রদায় করিল উপেক্ষা ॥  
 ভট্টাচার্য্য কহে ইহঁার প্রৌঢ় যৌবন ।  
 কেমনে সন্ন্যাসধর্ম্ম হইব রক্ষণ ॥  
 নিরন্তর ইহঁারে আমি বেদান্ত শুনাইব ।  
 বৈরাগ্য অদ্বৈতমার্গে প্রবেশ করাইব ॥ ২৫ ॥  
 কহেন যদি পুনরপি যোগপটু দিয়া ।  
 সংস্কার করিয়ে উত্তম সম্প্রদা আনিয়া ২৬  
 শুনি গোপীনাথ মুকুন্দ দৌহে দুঃখী হৈলা  
 গোপীনাথচার্য্য কিছু কহিতে লাগিলা ॥  
 ভট্টাচার্য্য তুমি ইহঁার না জান মহিমা ।  
 ভগবত্তা লক্ষণের ইহঁাতেই সীমা ॥  
 তাহাতে বিখ্যাত ইহঁে পরম ঈশ্বর ।  
 অজ্ঞ স্থানে কিছু নহে বিজ্ঞের গোচর ২৭  
 শিষ্যগণ কহে ঈশ্বর কহ কোন্ প্রমাণে ।  
 আচার্য্য কহে বিদ্বদনুভব ঈশ্বর লক্ষণে ॥  
 শিষ্যগণ কহে ঈশ্বরতত্ত্ব সাধি অনুমানে ।  
 আচার্য্য কহে অনুমানে নহে ঈশ্বর জানে  
 ঈশ্বরের রূপা লেশ হয়েত বাহারে ।  
 সেইত ঈশ্বর তত্ত্ব জানিবারে পারে ॥ ২৮ ॥

তথাহি শ্রীমদ্বাগবতে দশমস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে  
 অষ্টবিংশত্মোকে শ্রীকৃষ্ণং প্রাতি ব্রহ্মবাক্যম্—

অথাপি তে দেব পদাভ্যুজয়-

প্রসাদলেশামুগৃহীত এব হি ।

জানতি তত্ত্বং ভগবদ্ভাষিতো

ন চান্য একোহপি চিয়ং বিচিন্ত্ ॥ ২ ॥

( হে ) দেব ( সৰ্কপ্রকাশক ), অথাপি তে

( ভব ) পদাঙ্কস্বর প্রসাদলেশাঙ্গুহীতঃ এন হি  
( জনঃ ) ভগবদ্ব্যহিঃ ( ভগবতঃ ভব মহিঃ )  
তৎক্ জ্ঞানান্তি । অঙঃ ( তৎপ্রসাদহীনঃ ) একঃ  
( কশ্চিৎ ) অপি চিরং বিচিবন্ ( বিচারয়ন্ )  
অপি ন চ ( জানান্তি ) ॥ ২ ॥

হে ভগবন্! যদিপি তোমার অপরি-  
চ্ছিন্ন মাহাত্ম্য প্রকাশ আছে, তথাপি  
তোমার চরণ-কমলের রূপা লেশমাত্র  
দ্বারা অনুগৃহীত ব্যক্তিই তোমার মহিমার  
তত্ত্ব বিদিত হইতে পারেন, অপর কেহই  
চিরকাল বিচার করিয়াও বিদিত হইতে  
পারেন না ॥ ২ ॥

যদ্যপি জগদ্ধাক্ষু তুমি শাস্ত্র জ্ঞানবান্ ।  
পৃথিবীতে নাহি পণ্ডিত তোমার সমান ॥  
ঈশ্বরের রূপা লেশ নাহিক তোমাতে ।  
অতএব ঈশ্বরতত্ত্ব না পার জ্ঞানিতে ॥  
তোমার নাহিক দোষ শাস্ত্রে এই কহে ।  
পাণ্ডিত্যাদ্যে ঈশ্বরতত্ত্ব কড়ুজ্ঞাতনহে ॥২৯  
সার্কভৌম কহে আচার্য্য কহ সাবধানে ।  
তোমাতে ঈশ্বর রূপা ইথে কি প্রমাণে ॥  
আচার্য্য কহে, বস্তুবিষয় হয় বস্তুজ্ঞান ।  
বস্তুতত্ত্ব জ্ঞান হয় রূপাতে প্রমাণ ॥ ৩০ ॥  
ইহার শরীরে সব ঈশ্বর-লক্ষণ ।  
মহাপ্রেমাবেশ তুমি পাইয়াছ দর্শন ॥  
তভূত ঈশ্বর জ্ঞান না হয় তোমার ।  
ঈশ্বর-মায়ার করে এই ব্যবহার ॥  
দেখিলে না দেখে তারে বহিমুখ জন ।  
শুনি হাসি সার্কভৌম কহিল বচন ॥  
ইষ্টগোষ্ঠী বিচার করি না করিছ স্নোষ ।  
শাস্ত্রদৃষ্টে কহি আমি নাহি কিছু দোষ ॥৩১  
মহাভাগবত হয় চৈতন্যগোসাঞি ।  
এই কলিকালে বিষ্ণুর অবতার মাঞি ॥

অতএব ত্রিযুগ করি কহি বিষ্ণু নাম ।  
কলিযুগে অবতার নাহি শাস্ত্রজ্ঞান ॥ ৩২ ॥  
শুনিয়া আচার্য্য কহে দুঃখী হৈরা মনে ॥  
শাস্ত্রজ্ঞ করিয়া তুমি কর অভিমানে ॥  
ভাগবত ভারত দুই শাস্ত্রের প্রধান ।  
সেই দুই গ্রন্থবাক্যে নাহি অবধান ॥ ৩৩ ॥  
সেই দুই কহে কলিতে সাক্ষাৎ অবতার ।  
তুমি কহ কলিতে নাহি বিষ্ণুর প্রচার ॥  
কলিকালে লীলাবতার না করে ভগবান্ ।  
অতএব ত্রিযুগ করি কহি বিষ্ণু নাম ॥  
প্রতিযুগে করে কৃষ্ণ যুগ-অবতার ।  
তর্কনিষ্ঠ হৃদয় তোমার নাহিক বিচার ॥ ৩৪

তথাহি আদিলীলায়াং তৃতীয়ে সপ্তমশ্লোকধৃত  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

আসন্ বর্ণান্ত্রমোহস্ত গৃহতোহম্ময়ুগং তনুঃ ।  
তুল্লা রক্তস্তথা পীত ইদানীং কৃষ্ণতাং গতঃ ॥৩৫

তথাহি তত্রৈব দশমশ্লোকধৃত শ্রীমদ্ভাগবত-  
বচনম্—

কৃষ্ণবর্ণং ত্রিবারুষ্ণং সাকোপালান্ত্রপার্বদম্ ।  
যত্রৈঃ সর্কীর্জনপ্রায়ৈ যজন্তি হি স্মমেধসঃ ॥ ৩৬ ॥

তথাহি তত্রৈব নবমশ্লোকধৃত মহাভারত-  
বচনম্—

সুবর্ণবর্ণো হেমাঙ্কো বরাজদশ্চন্দনাকরী ।  
সন্ন্যাসকৃচ্ছমঃ শাস্ত্রো নিষ্ঠাশান্তিপরায়ণঃ ॥ ৩৭ ॥

তোমার আগে এ কথাই নাহি প্রয়োজন  
উপর স্মৃতিতে যেন বীজের রোপণ ॥  
তোমার উপরে যবে রূপা তাঁর হবে ।  
এ সব সিদ্ধান্ত তবে তুমিহ কহিবে ॥  
তোমার বে শিষ্য কহে কুতর্ক মানা বাদ ।  
ইহার কি দোষ এই মায়ার প্রসাদ ॥ ৩৫ ॥

তথাহি শ্রীমত্তাগবতে ষষ্ঠস্কন্ধে চতুর্থাধ্যায়ে  
ষড়বিংশশ্লোকঃ—

যচ্ছঙ্করোবদতাং বাদিনাং বৈ  
বিবাদসংবাদ-ভুবো বদন্তি ।  
কুর্কন্তি চৈবাং মুহুরান্মোহঃ  
তন্মৈ নমোহনন্তগুণার ভূমে ॥ ৬ ॥

যচ্ছঙ্করঃ ( বস্য মায়াবিদ্যাঃ শঙ্করঃ ) বদতাং  
( সমাদধতাং ) বাদিনাং বিবাদসংবাদভুবঃ ( বিবাদস্ত  
কচিং সবাদস্য চ ভুব উৎপত্তিহেতবঃ ) ভবন্তি ।  
এবাং ( বাদিনাং ) মুহুঃ আন্মোহঃ কুর্কন্তি তন্মৈ  
অনন্তগুণার ভূমে নমঃ ॥ ৬ ॥

যাঁহার মায়াক্রমের বৃত্তি সকল বাদী  
ও প্রতিবাদীর বিবাদ ও সংবাদের কারণ  
হয় এবং আত্মজিজ্ঞাসুরও আত্মবিষয়ক  
মোহ উৎপাদন করে, আমি সেই অনন্ত-  
গুণাকর ভূমা পুরুষকে নমস্কার করি ॥ ৬ ॥

তথাহি তত্রৈব একাদশস্কন্ধে ষাণ্ঠিশাধ্যায়ে  
তৃতীয় শ্লোকে উক্তবং প্রতি শ্রীকৃষ্ণবাক্যম্—

মুক্তক সন্তি সর্কত্র তারস্তে ব্রাহ্মণা যথা ।  
মায়াম্ বদীমামুদগ্ধং বদতাং কিং ন দুর্ঘটম্ ॥ ৭ ॥

যথা ব্রাহ্মণাঃ তারস্তে তদ্যুক্তং চ ( যতঃ )  
সর্কত্র সন্তি হু ( ভোঃ ) বদীমাম্ মায়াম্ ( চিন্মর-  
শক্তিং ন তু অসম্ব্যক্তিকাম্ অবিদ্যাম্ ) উদগ্ধম্  
( স্বীকৃত্য ) বদতাং ( জনানাং ) কিং দুর্ঘটং ন ॥ ৭ ॥

হে উদ্ভব ! ব্রাহ্মণগণ যাহা নির্ণয়  
করিয়াছেন, তাহা অযুক্ত নহে ; যেহেতু  
সর্কত্রই সকল তত্ত্ব অন্তর্ভূত আছে ।  
আমার মায়ার স্বীকার-পূর্কক যিনি যাহা  
বলেন, তাহা কিছুই দুর্ঘট নহে ॥ ৭ ॥

তবে ভট্টাচার্য্য কহে যাহ গোলাগ্রেরস্থানে  
আমার নামে গণ সহ কর নিমন্ত্রণে ॥

প্রসাদ আনিয়া তাঁরে করাহ আগে ভিক্ষা  
পশ্চাৎ আমারে আসি করাইহ শিক্ষা ॥  
আচার্য্য ভগিনীপতি স্থালক ভট্টাচার্য্য ।  
নিন্দা স্তুতি হাশ্বে শিক্ষা করান আচার্য্য ৩৬  
আচার্য্যের সিদ্ধান্তে মুক্তদের হটল সন্তোষ  
ভট্টাচার্য্যের বাক্যে মনে হৈল দুঃখ রোষ  
গোলাগ্রের স্থানে আচার্য্য কৈল আগমন ।  
ভট্টাচার্য্যের নামে তাঁরে কৈল নিমন্ত্রণ ॥  
মুক্ত সহিতে কহে ভট্টাচার্য্যের কথা ।  
ভট্টাচার্য্য নিন্দা করে মনে পাই ব্যথা ॥  
শুনি মহাপ্রভু কহে ঐছে মতি কহ ।  
আমা প্রতি ভট্টাচার্য্যের আছে অনুগ্রহ ৩৭  
আমার সন্ন্যাসধর্ম চাহেন রাখিতে ।  
বাংসল্যে করুণায় কহে কি দোষ ইহাতে  
আর দিন মহাপ্রভু ভট্টাচার্য্য মনে ।  
আনন্দে করিল জগন্নাথদরশনে ॥  
ভট্টাচার্য্য সঙ্গে তাঁর মন্দিরে আঠল ।  
প্রভুরে আসন দিয়া আপনে বসিল ॥  
বেদান্ত পড়াইতে তবে আরম্ভ করিল ।  
স্নেহভক্তি করি কিছু প্রভুরে কহিল ॥  
বেদান্ত শ্রবণ এই সন্ন্যাসীর ধর্ম ।  
নিরন্তর কর তুমি বেদান্ত শ্রবণ ॥ ৩৮ ॥  
প্রভু কহে মোরে তুমি কর অনুগ্রহ ।  
সেইত কর্তব্য আমার তুমি যেই কহ ॥  
সাত দিন পর্যন্ত করে বেদান্তশ্রবণে ॥  
ভাল মন্দ নাহি কহে বসি মাত্র শুনে ॥  
অষ্টম দিবসে তাঁরে কহে সার্কভৌম ।  
সাতদিন কর তুমি বেদান্ত শ্রবণ ॥  
ভাল মন্দ নাহি কহ, রহ মৌন ধরি ।  
বুঝ কি না বুঝ ইহা বুঝিতে না পারি ॥ ৩৯ ॥  
প্রভু কহে মুখ আমি নাহি অধ্যয়ন ।  
তোমার আত্মাতে মাত্র করিয়ে শ্রবণ ॥

সন্ন্যাসীর ধর্ম লাগি অবগমাত্র করি ।  
 তুমি যে কল্পহ অর্থ বুঝিতে না পারি ॥৪০॥  
 ভট্টাচার্য্য্য কহে না বুঝি এই জ্ঞান যার ।  
 বুঝিবার তরে সেই পুছে আরবার ॥  
 তুমি শুনি শুনি, রহ গৌনমাত্র ধরি ।  
 ছদয়ে কি আছে তোমার বুঝিতে না পারি ॥৪১॥  
 প্রভু কহে সূত্রের অর্থ বুঝিয়ে নির্মল ।  
 তোমার ব্যাখ্যা শুনি মন হয়ত বিকল ॥  
 সূত্রের অর্থ, ভাস্য কহে প্রকাশিয়া ।  
 তুমি ভাস্য কহ সূত্রের অর্থ আছাদিয়া ॥৪২॥  
 সূত্রের মুখ্যার্থ তুমি না কর ব্যাখ্যান ।  
 কল্পনা অর্থেতে তাহা কর আছাদন ॥৪৩॥  
 উপনিষদ্ শব্দের মুখ্য অর্থ যেই হয় ।  
 সেই মুখ্য-অর্থ ব্যাসসূত্রে সব কয় ॥ ৪৪ ॥  
 মুখ্যার্থ ছাড়িয়া কর গৌণার্থ কল্পনা ।  
 অভিধা বৃত্তি ছাড়ি শব্দের করহ লক্ষণা ॥৪৫॥  
 প্রমাণের মধ্যে ঙ্গতি প্রমাণ প্রদান ।  
 ঙ্গতি যেই অর্থ কহে সেই সে প্রমাণ ॥  
 জীবের অস্থি বিষ্ঠা দুই শব্দ গৌময় ।  
 ঙ্গতিবাক্যে সেই দুই মহাপবিত্র হয় ॥৪৬॥  
 স্বতঃ প্রমাণ বেদ সত্য, যেই কহে ।  
 লক্ষণা করিলে স্বতঃপ্রামাণ্য হানি হয়ে ৪৭  
 ব্যাসের সূত্রের অর্থ সূর্য্যের কিরণ ।  
 স্বকল্পিত ভাস্য-মেঘে করে আছাদন ॥  
 বেদপুরাণে করে ব্রহ্ম নিরূপণ ।  
 সেই ব্রহ্ম বৃহদ্রত্ব ঐশ্বরলক্ষণ ॥ ৪৮ ॥  
 সর্বেশ্বর্য্য পরিপূর্ণ স্বয়ং ভগবান্ ।  
 তাঁরে নিরাকার কহি করহ ব্যাখ্যান ॥  
 নির্কিংশেব তাঁরে কহে যেই ঙ্গতিগণ ।  
 প্রাকৃত নিষেধি, অপ্রাকৃত করয়ে স্থাপন ৪৯

তথাহি শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয় নাটকে ষষ্ঠাঙ্কে হর-  
 শীর্ষণকবাজবনচম্—

যা যা ঙ্গতির্জন্মতি নির্কিংশেবং  
 সা সাতিথত্তে সবিশেষমেব ।  
 বিচারযোগে সতি হস্ত তাসাং  
 প্রায়ো বলীয়ঃ সবিশেষমেব ॥ ৮ ॥

যা যা ঙ্গতিঃ ( বেদঃ ) নির্কিংশেবং ( কেবল  
 চিন্মাত্রং ) জন্মন্তি সা সা ( ঙ্গতিঃ ) সবিশেষং  
 ( রূপগুণাদিময়ম্ ) এব অতিথত্তে ( অতিথয়া  
 মুখ্যাবৃত্ত্যা কথয়তি ) হস্ত ( আশ্চর্য্যে ) তাসাং  
 ( ঙ্গতীনাং ) বিচারযোগে সতি প্রায়ঃ ( বাহুল্যেন )  
 সবিশেষম্ এব বলীয়ঃ ( বলবন্তবতি ) ॥ ৮ ॥

যে যে ঙ্গতি ব্রহ্মবস্তুরূপে নির্কিংশেব  
 বলিয়া কীর্তন করিতেছেন, সেই সেই  
 ঙ্গতিই আবার তাঁহাকে সবিশেষও  
 বলিতেছেন । অতএব বিচারে সবিশেষ  
 পক্ষই অধিকাংশ স্থলে বলবান্ হয় ॥ ৮ ॥

ব্রহ্ম হৈতে জন্মে বিশ্ব যেই ব্রহ্মে জীবয় ।  
 সেই ব্রহ্মে পুনরপি হয় যাই লয় ॥  
 অপাদান করণাধিকরণ কারক তিন ।  
 ভগবানের সবিশেষ এই চিহ্ন তিন ॥৫০॥  
 ভগবান্ বহু হৈতে যবে কৈল মন ।  
 প্রাকৃত শক্তিকে তবে কৈল বিলোকন ॥  
 সে কালে নাহিক জন্মে প্রাকৃত মন নয়ন ।  
 অতএব অপ্রাকৃত ব্রহ্মের নেত্র মন ॥ ৫১ ॥  
 ব্রহ্ম শব্দে কহে পূর্ণ স্বয়ং ভগবান্ ।  
 স্বয়ং ভগবান্ কৃষ্ণ শাস্ত্র-পরমাণ ॥  
 বেদের নিগূঢ় অর্থ বুঝনে না যায় ।  
 পূরণবাক্যে সেই অর্থ করয়ে নিশ্চয় ॥৫২॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে  
 ত্রিংশ শ্লোকঃ—

অহোভাগ্য-মহোভাগ্যং নন্দগোপব্রজোকসাম্ ।  
 যন্মিত্রং পরমানন্দং পূর্ণং ব্রহ্ম সনাতনম্ ॥ ৯ ॥

পরমানন্দ পূর্ণ সনাতনম্ ব্রহ্ম যদ্বিত্তং ( যেবাং  
মিত্তং তেবাং ) নন্দগোপব্রজোকসাং ( শ্রীমন্নন্দরাজ-  
ব্রজবাসিমিত্তাং পশুপক্ষিপর্ধ্যস্তানাং সর্কেষাম  
এব ) অহোস্তাগাম্ অহোস্তাগাং ॥ ৯ ॥

পরমানন্দস্বরূপ পূর্ণ সনাতন ব্রহ্ম  
যাঁহাদিগের মিত্র, সেই গোপরাজ নন্দ ও  
অপরাপর ব্রজবাসীগণের অত্যাশ্চর্য্য  
ভাগ্য ! অত্যাশ্চর্য্য ভাগ্য ! ॥ ৯ ॥

অপাবি পাদ শ্রুতি বর্কে প্রাকৃত পাদি টরণ  
পুনঃ কহে শীঘ্র চলে করে সর্ক গ্রহণ ॥  
অতএব শ্রুতি কহে ব্রহ্ম সবিশেষ ।  
মুখ্যাপ্তিছাডিলক্ষণাতে মাননির্কির্শেষে ৫ ৩ ৫ ৩  
সর্কেষা পূর্ণানন্দ বিগ্রহ যাঁহার ।  
হেন ভগবানে তুমি কহ নিরাকার ॥  
স্বাভাবিক তিন শক্তি যেই ব্রহ্মে হয় ।  
নিঃশক্তি করিয়া তাঁরে করহ নিশ্চয় ॥ ৫ ৪ ॥

তথাহি শ্রীভগবৎসদর্ভৃতঃ বিষ্ণুপুরাণবচনম্—  
বিষ্ণুশক্তিঃ পরা প্রোক্তা ক্ষেত্রজাখ্যা তথা পরা ।  
অবিদ্যাকর্মসংজ্ঞাতা তৃতীয়া শক্তি-রিগ্যতে ॥ ১০ ॥  
যা বা ক্ষেত্রজশক্তিঃ সা বেষ্টিতা নৃপ সর্কগা ।  
সংসারতাপানখিলান-বাপ্নোস্তাত্ত সন্ততান্ ॥ ১১ ॥  
তয়া তিরোহিতত্বাচ্চ শক্তিঃ ক্ষেত্রজ সংজিতা ।  
সর্কভূতেষু ভূপাল তারতম্যোন বর্কতে ॥ ১২ ॥

বিষ্ণুশক্তিঃ পরা প্রোক্তা ক্ষেত্রজাখ্যা তথা  
অপরা অবিদ্যাকর্মসংজ্ঞা অন্য তৃতীয়া শক্তিঃ  
ইযতে । ( হে ) নৃপ, সর্কগা যা বা ক্ষেত্রজশক্তিঃ  
সা ( অবিদ্যয়া ) বেষ্টিতা ( আশ্রিতা সতি ) অত্র  
( সংসারে ) সন্ততান্ ( বিস্তেজং প্রাপ্য কর্মতিঃ )  
অখিলান্ সংসারতাপান্ অবাপ্নোতি । ( হে ) ভূপাল,  
ক্ষেত্রজসংজিতা শক্তিঃ তয়া ( অবিদ্যয়া ) তিরো-  
হিতত্বাৎ ( সমাবৃতত্বাৎ ) চ সর্কভূতেষু ( স্বাবয়-

ব্রহ্মাদি প্রাণিষু ) তারতম্যোন বর্কতে ( বস্তৃতঃ ন  
নূনাধিক্যা, চিদগুরুপত্বাৎ ) ॥ ১০—১২ ॥

বিষ্ণুর শক্তিত্রয়ের মধ্যে চিৎস্বরূপা  
পরশক্তি, অপরা ক্ষেত্রজাখ্যা জীবশক্তি,  
তৃতীয়া মায়শক্তি । হে রাজন্ ! সর্কগা  
ক্ষেত্রজাখ্যা শক্তি অবিদ্যা কর্তৃক আরত  
হইয়া অখিল সংসারের তাপ প্রাপ্ত হয় ।  
হে ভূপাল ! অবিদ্যা কর্তৃক আবরণ  
নিমিত্ত জীবশক্তি সর্কভূতে তারতম্যরূপে  
বর্কমান প্রতীয়মান হয় । বস্তৃতঃ অগু-  
চৈতন্ত্বচ্ছ হেতু জীবশক্তির তারতম্য  
নাই ॥ ১০—১২ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে নবমশ্লোকধৃতঃ  
বিষ্ণুপুরাণবচনম্—

হ্লাদিনী সন্ধিনী সখিৎ তযোকা সর্কসংস্থিতৌ ।  
হ্লাদতাপকরী মিশ্রা ত্বয়ি নো গুণবর্জিতৌ ॥ ১৩ ॥  
গচ্ছিদানন্দময় হয় ঈশ্বর স্বরূপ ।

তিন অংশে চিচ্ছক্তি হয় তিন রূপ ॥  
আনন্দাংশে হ্লাদিনী সদংশে সন্ধিনী ।  
চিদংশে সখিৎ যারে জ্ঞান করি মানি ॥ ৫ ৫ ॥  
অস্তরঙ্গা চিচ্ছক্তি তটস্থা জীবশক্তি ।  
বহিরঙ্গা মায় তিনে করে প্রেমভক্তি ॥  
যড়ি প-ঐশ্বর্য্য প্রভুর চিচ্ছক্তি বিলাস ।  
হেন শক্তি নাহি মান পরম সাহস ॥ ৫ ৬ ॥  
মায়ামীশ মায় বশ ঈশ্বরে জীবে তেদ ।  
হেন জীব ঈশ্বর সনে করহ অভেদ ॥  
গীতাশাস্ত্রে জীবরূপ শক্তি করি মানে ।  
হেন জীবে অভেদ কর ঈশ্বরের সনে ॥ ৫ ৭ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং সপ্তমে বর্কশ্লোকধৃতঃ  
শ্রীগীতাবচনম্—

অপরেস্মিতত্বস্যং প্রকৃতিং বিকি মে পরাম্ !  
জীবভূতাং মহাবাহো নয়েনং ধার্য্যতে জগৎ ॥ ১৪ ॥



ঈশ্বরের শ্রীবিগ্রহ সচ্চিদানন্দাকার ।  
 সে বিগ্রহে কত সত্বগুণের বিকার ॥  
 শ্রীবিগ্রহ যে না মানে সেইত পামণ্ডী ।  
 অদৃশ্য অস্পৃশ্য হয় সেই যমদণ্ডী ॥ ৫৮ ॥  
 বেদ না মানিয়া বৌদ্ধ হয়ত নাস্তিক ।  
 বেদাশ্রয়া নাস্তিক বাদ বৌদ্ধেতে অধিক ॥  
 জীব নিস্তারের হেতু সূত্র কৈল ব্যাস ।  
 মায়াবাদি-ভাষ্য শুনিলে হয় সর্সনাশ ॥৫৯  
 পরিণামবাদ ব্যাসঃসূত্রের সম্মত ।  
 অচিন্ত্য-শক্ত্য ঈশ্বর জগজ্জপে পরিণত ॥  
 মনি যৈছে অক্ষয় প্রসবে হেমভার ।  
 জগজ্জপ হয় ঈশ্বর তনু অবিকার ॥ ৬০ ॥  
 ব্যাসজ্ঞান বলি সেই সূত্রে দোষ দিয়া ।  
 বিবর্তবাদ স্থাপিয়াছে কল্পনা করিয়া ॥৬১॥  
 জীবের দেহে আত্মবুদ্ধি সেই মিথ্যা হয় ।  
 জগৎ যে মিথ্যা নহে নশ্বরমাত্র কয় ॥৬২ ॥  
 প্রণব যে মহাবাক্য সে ঈশ্বরমূর্তি ।  
 প্রণব হৈতে সর্স বেদ জগৎ উৎপত্তি ॥৬৩॥  
 তত্ত্বমসি জীবহেতু প্রাদেশিক বাক্য ।  
 প্রণব না মানি তারে কহে মহাবাক্য ॥৬৪  
 এইমত কল্পনা ভাষ্যে শত দোষ দিল ।  
 ভট্টাচার্য্য পূর্নপক্ষ অনেক করিল ॥  
 বিতণ্ডা ছল নিগ্রহাদি অনেক উঠাইল ।  
 সব খণ্ডি প্রভু নিজ মত সে স্থাপিল ॥৬৫॥  
 ভগবান্ সন্থক, ভক্তি অভিধেয় হয় ।  
 প্রেম প্রয়োজন বেদে তিন বস্তু কয় ॥  
 আর যে যে কহে কিছু সকলি কল্পনা ।  
 স্বঃপ্রমাণ বেদবাক্যে কল্পন লক্ষণা ॥৬৬॥  
 আচার্য্যের দোষ নাহি ঈশ্বর আজ্ঞা হৈল  
 অতএব কল্পনা করি নাস্তিক শাস্ত্র কৈল ৬৭

তথাহি পদ্মপুরাণে উত্তরখণ্ডে ষিষষ্টিতমাধ্যায়ে  
 একত্রিশ্লোকৈশ্বর শিবঃ প্রতি শ্রীকৃষ্ণবাক্যম্—

স্বাগমৈঃ কল্পিতৈশ্চ জনান্ মধিমুখান্ কুরু ।  
 মাঞ্চ গোপয় যেন স্যাৎ সৃষ্টিরেখোত্তরোত্তরা ॥১৫১॥  
 ( হে শিব ) ত্বং কল্পিতৈঃ স্বাগমৈঃ জনান্  
 মধিমুখান্ কুরু মাং চ গোপয় যেন ( লোকানাং  
 মধিমুখেষু মদগোপনকরণেন চ ) এষা সৃষ্টিঃ  
 উত্তরোত্তরা ( পুনঃ পুনঃ প্রবৃ্ত্তিশালিনী ) স্যাৎ  
 ( তবতি ) ॥ ১৫ ॥

হে শঙ্কর ! তুমি কল্পিত নিষ্কৃতন্ত্র  
 দ্বারা লোক সকলকে আগ্রা হইতে বিমুখ  
 এবং আমাকে গোপন কর । এইরূপেই  
 উত্তরোত্তর সৃষ্টি চলিবে ॥ ১৫ ॥

তথাহি তত্রৈব পঞ্চবিংশাধ্যায়ে সপ্তমশ্লোকঃ—  
 মায়াবাদমসঙ্কাস্তং প্রচ্ছন্নং বৌদ্ধমুচ্যতে ।  
 মদৈব বিহিতং দেবি কলৌ ব্রাহ্মণমূর্তিনা ॥ ১৬ ॥

( হে ) দেবি, মায়াবাদম্ অসঙ্কাস্তম্ ( অসং-  
 তানাং কৃষ্ণবিমুখানাং শাস্ত্রং ) কলৌ ময়া এব  
 ব্রাহ্মণমূর্তিনা ( শঙ্করাচার্য্যাকপেণ ) বিহিতং ( কৃতং,  
 যৎ সত্ত্বিঃ ) প্রচ্ছন্নং বৌদ্ধম্ উচ্যতে ॥ ১৬ ॥

হে দেবি ! মায়াবাদরূপ অসং শাস্ত্র  
 যাহাকে প্রচ্ছন্ন বৌদ্ধশাস্ত্র বলা যায়,  
 তাহা আমিই শঙ্করাচার্য্যরূপে কলিতে  
 লগতে প্রচার করিয়াছি ॥ ১৬ ॥

শুনি ভট্টাচার্য্য হৈলা পরম বিস্মিত ।  
 মুখে না নিঃসরে বাণী হইলা স্তম্ভিত ॥  
 প্রভু কহে ভট্টাচার্য্য না কর বিস্ময় ।  
 ভগবানে ভক্তি পরম পুরুষার্থ হয় ॥  
 আত্মারাম পর্যান্ত করে ঈশ্বর ভজন ।  
 এঁছে অচিন্ত্য ভগবানের গুণগণ ॥ ৬৮ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমস্কন্ধে সপ্তমাধ্যায়ে  
 দশমশ্লোকঃ—

আজ্ঞারামাশ্চ মুনয়ো নিগ্রহা অপ্যকক্রমে ।  
কুর্কস্তাহৈতুকীং ভক্তিমিথস্তৃতগুণো হরিঃ ॥১৭॥

আজ্ঞারামাঃ মুনয়ঃ চ নিগ্রহাঃ অপি উরুক্রমে  
অহৈতুকীং ভক্তিং কুর্কস্তি, ইথস্তৃতগুণঃ ( আজ্ঞা-  
রামাণাম্ অপি আকর্ষণশ্চভাবঃ ) হরিঃ ॥ ১৭ ॥

শ্রীহরির এমনিই গুণ যে, আজ্ঞারাম  
মুনিগণ নিগ্রহ হইয়াও সেই উরুক্রমে  
ভক্তি করিয়া থাকেন ॥ ১৭ ॥

শুনি ভট্টাচার্য্য কহে শুন মহাশয় ।  
এই শ্লোকের অর্থ শুনিতে বাঞ্ছা হয় ॥  
প্রভু কহে তুমি কি অর্থকরতাহা আগে শুনি  
পাছে আমি করিব অর্থ যেন। কিছু জানি  
শুনি ভট্টাচার্য্য শ্লোক করিল ব্যাখ্যান ।  
তর্কশাস্ত্র মত উঠায় বিবিধ বিধান ॥  
নববিধ অর্থ তর্কশাস্ত্র মত লৈয়া ।  
শুনি মহাপ্রভু কহে ঈশং হানিয়া ॥  
ভট্টাচার্য্য জানি তুমি সাক্ষাৎ রহস্পতি ।  
শাস্ত্রব্যাখ্যাকরিতেকারো নাহি ঐচ্ছশক্তি  
কিন্তু তুমি অর্থ কৈলে পাণ্ডিত্য প্রতিভায়  
ইহা বহি শ্লোকের আছে অর অভিপ্রায় ৭০  
ভট্টাচার্য্যের প্রার্থনায় প্রভু ব্যাখ্যা কৈল ।  
তার নব অর্থ মধ্যে এক না ছুইল ॥  
আজ্ঞারামাদি-শ্লোকে একাদশ পদ হয় ।  
পৃথক্ পৃথক্ কৈল পদের অর্থ নিশ্চয় ॥  
তত্ত্বপদ প্রাধান্যে আজ্ঞারাম মিলাইয়া ।  
অষ্টাদশ অর্থ কৈল অভিপ্রায় লয়া ॥ ৭১ ॥  
ভগবান্ তাঁর ভক্তি তাঁর গুণগণ ।  
অচিন্ত্য প্রভাব তিনের না যায় কখন ॥  
অন্য যত সাধ্য সাধন করি আচ্ছাদন ।  
এই তিনে হরে সিদ্ধসাধকের মন ॥

মনকাদি শুকদেব তাহাতে প্রমাণ ।  
এই মত নানা অর্থ করিল ব্যাখ্যান ॥ ৭২ ॥  
শুনি ভট্টাচার্য্য মনে হৈল চমৎকার ।  
প্রভুকে কৃষ্ণ জানি কবে আপনা দিক্কার ।  
ইহৌত সাক্ষাৎ কৃষ্ণ ইহা না জানিয়া ।  
মহাপরাধ কৈলু গর্কিত হইয়া ॥  
আত্মনিন্দা করি লৈল প্রভুর শরণ ।  
কৃপা করিবারে তবে প্রভুর হৈল মন ৭৩  
দেখাইল তারে আগে চতুর্ভুজ রূপ ।  
পাছে শ্যাম বংশীমুখ স্বকীয় স্বরূপ ॥  
দেখি সার্কভৌম পড়ে দণ্ডবৎ করি ।  
পুনঃ উঠি স্তুতি করে ছুই কর যুড়ি ॥ ৭৪ ॥  
প্রভুর রূপায় তারে স্কুরিল সব তত্ত্ব ।  
নাম প্রেমদান আদি বর্ণের মহত্ত্ব ॥  
শতশ্লোক কৈল এক দণ্ড না যাইতে ।  
রহস্পতি তৈছে শ্লোক না পারে করিতে ৭৫  
শুনি প্রভু সুখে তারে কৈল আলিঙ্গন ।  
ভট্টাচার্য্য প্রেমাবেশে হৈলা অচেতন ॥  
অশ্রু কম্প স্নেদ পুলকভরে খরহরি ।  
নাচে গায় কান্দে পড়ে প্রভুপদ ধরি ৭৬ ॥  
দেখি গোপীনাথচার্য্য হরমিত মন ।  
ভট্টাচার্য্যের নৃত্য দেখি হাসে প্রভুর গণ  
গোপীনাথচার্য্য কহে মহাপ্রভু প্রতি ।  
সেই ভট্টাচার্য্যের প্রভু কৈলে এই গতি ॥  
প্রভু কহে তুমি ভক্ত তোমার সঙ্গ হৈতে ।  
জগন্নাথ ইহারে রূপা কৈল ভালমতে ॥  
তবে ভট্টাচার্য্যে প্রভু সুস্থির করিল ।  
স্থির হইয়া ভট্টাচার্য্য বহু স্তুতি কৈল ॥৭৭॥  
জগৎ তারিলে প্রভু মেহো অল্পকার্য্য ।  
আমা উদ্ধারিলে তুমি এ শক্তি আশ্চর্য্য ॥  
তর্কশাস্ত্রে জড় আমি যৈছে লৌহপিণ্ড ।  
আমা দ্রবাইলে তুমি প্রতাপ প্রচণ্ড ॥

স্তুতি শুনি মহাপ্রভু নিজ বাসা আইলা ।  
 ভট্টাচার্য আচার্য্যদ্বারে ভিক্ষা করাইলা ৭৮  
 আর দিনে প্রভু গেলা জগন্নাথ দর্শনে ।  
 দর্শন করিলা জগন্নাথ শয্যোখানে ॥  
 পূজারি আনিয়া মালা প্রসাদান্ন দিলা ।  
 প্রসাদান্ন মালা পায় প্রভু হর্ষ হৈলা ॥  
 সেই প্রসাদান্ন মালা আঁচলে বান্ধিয়া ।  
 ভট্টাচার্য্যের ঘরে আইলা অর্য্যক হৈয়া ॥  
 অরুণোদয় কালে প্রভুর হৈলা আগমন ।  
 সেই কালে ভট্টাচার্য্যের হৈল জাগরণ ॥  
 কৃষ্ণ কৃষ্ণ ক্ষুট কহি ভট্টাচার্য্য জাগিলা ।  
 কৃষ্ণনাম শুনি প্রভুর আনন্দ বাড়িলা ॥৭৯॥  
 বাহিরে প্রভুর মনে হৈল দরশন ।  
 আস্তে ব্যস্তে কৈল প্রভুর চরণদন্দন ॥  
 বসিতে আসন দিয়া দৌহেত বসিলা ।  
 প্রসাদান্ন খুলি প্রভু তাঁর হস্তে দিলা ॥  
 প্রসাদ পায় ভট্টাচার্য্যের আনন্দ হইল ।  
 সক্ষ্যা স্নান দস্তধাবন যদ্যপি না কৈল ॥  
 চৈতন্যপ্রসাদে মনের জাড্য সব গেল ।  
 এই শ্লোক পড়ি অন্ন ভক্ষণ করিল ॥ ৮০ ॥

তথাহি পদ্মপুরাণে—

শুষ্ণং পর্য্যাসিতং বাপি নীতং বা দূরদেশতঃ ।  
 প্রাপ্তমাত্রেণ ভোক্তব্যং নাত্র কালবিচারণা ॥ ১৮ ॥  
 শুষ্ণং (রসবিহীনং) পর্য্যাসিতং (পূর্কদিনপক্ষং)  
 দূরদেশতঃ নীতম্ ( আনীতং ) প্রাপ্তমাত্রেণ  
 ( যদাপ্নুয়াৎ তদৈব ) ভোক্তব্যম্ অত্র ( মহাপ্রসাদ-  
 ভোজন বিষয়ে ) কালবিচারণা ( নিত্যনৈমিত্তিকা-  
 দ্যাবশ্যক কৰ্ম্মাপেক্ষা ) ন ॥ ১৮ ॥

শুষ্ণ হউক, পর্য্যাসিত হউক বা দূর-  
 দেশ হইতে আনীত হউক, প্রাপ্ত মাত্রেই  
 মহাপ্রসাদান্ন ভোজন করিবে; ইহাতে  
 কালবিচার করিবে না ॥ ১৮ ॥

তথাহি তত্রৈব—

ন বেশনিয়মস্তত্র ন কালনিয়মস্তথা ।  
 প্রাপ্তমন্নং ক্রতং শিষ্টৈর্ভোক্তব্যং হরিরব্রবীৎ ॥ ১৯ ॥

তত্র ( মহাপ্রসাদভোজনে ) বেশনিয়মঃ ( শুভ্যা-  
 শুদ্ধি-স্থান-বিচারঃ ) ন তথা কালনিয়মঃ ( যোগ্যা-  
 যোগ্যত্ব বিচারঃ ) ন প্রাপ্তম্ অন্নং ( মহাপ্রসাদং )  
 ক্রতং ( তৎক্ষণমেব ) শিষ্টৈঃ ( বৈদিকাচারমম্পন্নৈঃ  
 জনৈঃ ) ভোক্তব্যম্ ( ইতি ) হরিঃ ( স্বয়মেব )  
 অব্রবীৎ ॥ ১৯ ॥

মহাপ্রসাদ ভোজন বিষয়ে দেশ ও  
 কালের নিয়ম নাই, প্রাপ্তমাত্রেই ভোজন  
 করিবে, ইহা শ্রীহরি বলিয়াছেন ॥ ১৯ ॥

দেখি আনন্দিত হৈল মহাপ্রভুর মন ।  
 প্রেমাবিষ্ট হয় কৈলা তারে আলিঙ্গন ॥  
 তুই জন পরি দৌহে করেন নর্ভন ।  
 দৌহার স্পর্শেতে দৌহার প্রফুল্ল হৈল মন  
 স্বেদ কম্প অশ্রু দৌহে আনন্দে ভাসিলা ।  
 প্রেমাবিষ্ট হয় প্রভু কহিতে লাগিলা ॥৮১॥  
 আজি মুঞি অনায়াসে জিনিলু ত্রিভুবন ।  
 আজি মুঞি করিলু বৈকুণ্ঠে আরোহণ ॥  
 আজি মোর পূর্ণ হৈল সব অভিলাষ ।  
 নার্কভৌমের হৈল মহাপ্রসাদে বিশ্বাস ৮২ ॥  
 আজি নিকপটে তুমি হৈলা কৃষ্ণশ্রয় ।  
 কৃষ্ণ নিকপটে হৈলা তোমাতে সদয় ॥  
 আজি সে শিশিল তোমার দেহাদি বন্ধন ।  
 আজি ছিন্ন কৈলে তুমি মায়ার বন্ধন ॥  
 আজি কৃষ্ণপ্রাপ্তিযোগ্য হৈল তোমার মন ।  
 বেদ ধর্ম্ম লজ্জি কৈলে প্রসাদ ভক্ষণ ॥৮৩॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দ্বিতীয়স্কন্ধে সপ্তমাধ্যায়ে  
 বিষ্ণুসংহায়াং শ্লোকে নারদঃ প্রাপ্তি ব্রহ্মব্যাক্যম্—

যেবাং স এব ভগবান্ দয়য়েদনস্তঃ  
সর্কান্মনাশ্রিতপদো যদি নির্বালীকম্ ।  
তে দুস্তরামতিত্তরস্তি চ দেবমায়াং  
নৈবাং মমাহমিতি ধীঃ শৃগালভক্ষ্যে ॥ ২০ ॥

সঃ এব অনস্তঃ ভগবান্ যেবাং দয়য়েৎ (দয়াং  
কুখ্যাৎ, তে চ) যদি নির্বালীকং (নিরুপটং যথা-  
স্যাৎ তথা) সর্কান্মনা (জ্ঞানকর্মাদি নিরপে-  
ক্ষতয়া সর্কতোভাবেন) আশ্রিতপদঃ (আশ্রিত  
চরণাঃ ভবন্তি) তে দুস্তরাং (তর্জুনশক্যামপি)  
দেবমায়াং (দেবস্ত ভগবতঃ মায়াম্) অতিত্তরস্তি  
চ এষাম্ (অকপটেন ভগবচ্চরণাশ্রিতানাং)  
শৃগালভক্ষ্যে (শৃগালানাং ভক্ষ্যে দেহে) মমাহঃ  
(মমেন্তি অহমিতি চ) ইতি ধীঃ (বুদ্ধিঃ) ন  
(ভবতি) ॥ ২০ ॥

সেই অনন্ত ভগবান্ গাঁহাদিগকে  
রূপা করেন, তাঁহারা যদি সর্কতোভাবে  
অকপটে তাঁহার চরণতরি আশ্রয় করেন,  
তবে দুস্তর মায়াসাগর পার হইতে ও  
তাঁহার তত্ত্ব বিদিত হইতে পারেন।  
আর তাঁহাদিগের শৃগাল কুকুরের ভক্ষ্য  
এই পাকভৌতিক দেহে অহং মমতাও  
থাকে না ॥ ২০ ॥

এত কহি মহাপ্রভু আইলা নিজস্থানে ।  
সেই হৈতে ভট্টাচার্যের খণ্ডিল অভিমানে  
চৈতন্যচরণ বিনে নাহি জানে আন ।  
ভক্তি বিমু নাহি করে শাস্ত্রের ব্যাখ্যান ॥  
গোপীনাথচার্য্য তার বৈষ্ণবতা দেখিয়া ।  
হরি হরি বলি নাচে করতালি দিয়া ॥৮৪॥  
আর দিন ভট্টাচার্য্য চলিলা দর্শনে ।  
জগন্নাথ না দেখি আইলা প্রভু স্থানে ॥  
দণ্ডবৎ করি কৈল বহুবিধ স্তুতি ।  
দৈন্য কহি কহে নিজ পূর্বের দুর্দতি ॥

ভক্তিসাধন শ্রেষ্ঠ শুনিতে হৈল মন ।  
প্রভু উপদেশ কৈল নাম সংকীর্তন ॥ ৮৫ ॥

তথাহি আদিলীলারাং সপ্তমে তৃতীয়শ্লোকধ্বতো  
বৃহন্নারদীয বচনম্—  
হরেন্নাম হরেন্নাম হরেন্নামৈব কেবলম্ ।  
কলৌ নাস্ত্যেব নাস্ত্যেব নাস্ত্যেব গতিরশ্রুতা ॥২১

এই শ্লোকের অর্থ শুনাইল করিয়া বিস্তার  
শুনি ভট্টাচার্য্যের মনে হৈল চমৎকার ॥  
গোপীনাথচার্য্য কহে পূর্বে যে কহিল ।  
শুন ভট্টাচার্য্য তোমার সেইত হইল ॥  
ভট্টাচার্য্য কহে তাঁরে কবি নমস্কারে ।  
তোমার সম্বন্ধে প্রভু রূপা কৈল মোরে ॥  
তুমি মহাভাগবত আমি তর্ক-অঙ্গে ।  
প্রভু রূপা কৈল মোরে তোমার সম্বন্ধে ৮৬  
বিনয় শুনি তুষ্ঠ প্রভু কৈল আলিঙ্গন ।  
কহিল যারা কর জগন্নাথ দর্শন ॥  
জগদানন্দ দামোদর দুই সঙ্গে লয়া ।  
বরে আইলা ভট্টাচার্য্য জগন্নাথ দেখিয়া ।  
উত্তম উত্তম প্রসাদ তাহা যে পাইল ।  
নিজ বিপ্র হাতে দুই জন সঙ্গে দিল ॥  
নিজ দুই শ্লোক লেখি এক তালপাতে ।  
প্রভুকে দিহ বলি দিল জগদানন্দ হাতে ৮৭  
প্রভুস্থানে আইলা দোহে প্রসাদ পত্রী লয়া  
মুকুন্দ দত্ত পত্রী বাটিল তাব ঠাঞি পায়  
দুই শ্লোক বাহির ভিত্তে লিখিয়া রাখিল ।  
তবে জগদানন্দ পত্রী প্রভুরে লয়া দিল ॥  
প্রভু শ্লোক পড়ি পত্র চিরিয়া ফেলিল ।  
ভিত্তে দেখি ভক্ত সব শ্লোক কণ্ঠ কৈল ৮৮

তথাহি শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয় নাটকে ষষ্ঠাঙ্কে  
ধাত্রিংশধ্বতো সার্কভৌমভট্টাচার্য্যধ্বতো শ্লোকো—

বৈরাগ্যবিদ্যা-নিজভক্তিযোগ-  
শিক্ষার্থমেকঃ পুরুষঃ পুরাণঃ ।  
শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যশরীরধারী  
কৃপাধুধির্ধনুসং প্রপদ্যে ॥ ২২ ॥  
কালাগষ্টঃ ভক্তিযোগং নিজং যঃ  
প্রোক্তকর্তুং কৃষ্ণচৈতন্যনামা ।  
আবিভূতস্তস্ত পাদারবিন্দে  
গাঢ়ং গাঢ়ং লীল্যতাং চিত্তভূষণঃ ॥ ২৩ ॥

বৈরাগ্যবিদ্যানিজেভক্তিযোগশিক্ষার্থং (বৈরাগ্যং  
প্রপঞ্চবস্ত্রবনাসক্তিঃ, বিদ্যা ভগবন্তস্মানুভবঃ, নিজ-  
ভক্তিযোগঃ প্রেমভক্তিঃ তেবাং শিক্ষার্থং স্বয়ম্  
অচুষ্ঠায় পরান্ শিক্ষয়িত্বম্ উপদেষ্টুম্) একঃ  
(ষষ্ঠীয় বিজাতীয়স্বগতভেদশূন্যঃ) পুরাণঃ  
(পুরাপি নব ইতি নির্বিকারঃ) কৃপাধুধিঃ পুরুষঃ  
(শ্রীকৃষ্ণঃ) যঃ শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যশরীরধারী (শ্রীকৃষ্ণ-  
চৈতন্য এব শরীরং ধর্তুং প্রকটয়িত্বং লীল্যস্যোতি)  
অহং তং প্রপদ্যে ॥ ২২ ॥

কালং (কাল প্রভাবাং) নষ্টং (সাধারণ-  
লোকলোচনাগোচরং) নিজং ভক্তিযোগং প্রোক্ত-  
কর্তুং (প্রকটয়িত্বং) কৃষ্ণচৈতন্যনামা (সন্)  
আবিভূতঃ তস্য পাদারবিন্দে চিত্তভূষণঃ গাঢ়ং গাঢ়ং  
(গাঢ়ং প্রকারেণ) লীল্যতাং (লীল্যো ভবতু) ॥২৩॥

বৈরাগ্য, বিদ্যা ও নিজ ভক্তিযোগ  
আপামরণগনকে শিক্ষা দিবার জন্য যে  
পুরাণ পুরুষ শ্রীকৃষ্ণ দয়া পরবশ হইয়া  
শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য শরীর ধারণ করিয়াছেন,  
আমি তাঁহার শরণাগত হইলাম। কাল-  
বশে বিলুপ্ত নিজ ভক্তিযোগ প্রকাশ  
করিবার জন্য যিনি শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য নাম  
ধারণ পূর্বক আবিভূত হইয়াছেন,  
আমার চিত্তভ্রমর তাঁহার পাদপদ্মে গাঢ়-  
রূপে লীন হউক ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥

এই দুই শ্লোক ভক্তকণ্ঠে রত্নহার ।  
সার্কভৌমের কীর্তি ঘোষে ঢকাবাদ্যাকার  
সার্কভৌম হৈল প্রভুর ভক্ত একতান ।  
মহাপ্রভু বিনে সেব্য নাহি জানে আন ॥  
শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য শচীশূত গুণধাম ।  
এই ধ্যান এই জপ এই লয় নাম ॥  
একদিন সার্কভৌম প্রভুস্থানে আইলা ।  
নমস্কার করি শ্লোক পড়িতে লাগিলা ॥  
ভাগবতের ব্রহ্মসুতের শ্লোক পড়িলা ।  
শ্লোকশেষে দুই অক্ষর পাঠ ফিরাইলা ৮৯

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে  
অষ্টমশ্লোকঃ—

তত্তেহমুকম্পাং সূসমীক্ষ্যমাণো  
ভূঞ্জান এবাশ্বকৃতং বিপাকম্ ।  
কৃদাশপুভি কিদধনমন্তে  
জীবেত যো ভক্তিপদে স দায়ভাক্ ॥ ২৪ ॥

তৎ (তস্মাৎ) তে অমুকম্পাং সূসমীক্ষ্যমাণঃ  
(প্রতীক্ষমাণঃ) আশ্বকৃতং (স্বর্জিতং) বিপাকং  
(কর্মফলম্, অন্যদ্রব্যং সন্) ভূঞ্জানঃ এব স্বব্যাগ্-  
বপুভিঃ তে (তুভ্যাং) নমঃ বিদধৎ যঃ জীবেত সঃ  
ভক্তিপদে দায়ভাক্ (ভবতি) ॥ ২৪ ॥

হে প্রভো! যে জন নিবিল কার্যে  
তোমার করুণা অবলোকন করতঃ কায়-  
মনোবাক্যে তোমায় নমস্কার করিয়া  
তোমার অনুকম্পা প্রতীক্ষায় জীবিত  
থাকিবে, সেই তোমার দয়াধিকার প্রাপ্ত  
হয় ॥ ২৪ ॥

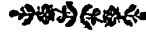
প্রভু কহে মুক্তিপদে ইহা পাঠ হয় ।  
ভক্তিপদে কেনে পড় কি তোমার আশয়  
ভট্টাচার্য্য কহে ভক্তি নহে মুক্তি ফল ।  
ভগবন্তক্তি বিমুখের হয় দণ্ড কেবল ॥

ক্লেশের বিগ্রহ যেই সত্য নাহি মানে ।  
 যেই নিন্দা-যুদ্ধাদিক করে তার মনে ॥  
 সেই দুয়ের দণ্ড হয় ব্রহ্মসায়ুজ্য মুক্তি ।  
 তার মুক্তি ফল নহে যেই করে ভক্তি ॥১০॥  
 যদ্যপি সে মুক্তি হয় পঞ্চ পরকার ।  
 সালোকা সামীপ্যামারূপ্যাস্তি সায়ুজ্য আর  
 সালোক্যাদি চারি যদি হয় সেবাদ্বার ।  
 তবে কদাচিৎ ভক্ত করে অঙ্গীকার ॥১১॥  
 সায়ুজ্য অনিতে ভক্তের হয় ঘৃণা ভয় ।  
 নরক বাঞ্ছয় তবু সায়ুজ্য না লয় ॥  
 ব্রহ্ম ঐশ্বর সায়ুজ্য দুইত প্রকার ।  
 ব্রহ্মসায়ুজ্য হৈতে ঐশ্বরসায়ুজ্য দিক্কার ॥১২॥  
 তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে পঞ্চত্রিংশশ্লোক-  
 বৃত্তঃ শ্রীমন্তাগবতবচনম্ —  
 সালোকা সাস্তি সামীপ্যামারূপ্যৈকমপ্যুত ।  
 দীযমানং ন গৃহ্ণন্তি বিনা মৎসেবনং জনাঃ ॥২৫॥  
 প্রভু কহে মুক্তিপদের আর অর্থ হয় ।  
 মুক্তিপদ শব্দে সাক্ষাৎ ঐশ্বর কহয় ॥  
 মুক্তি পদে যার সেই মুক্তিপদ হয় ।  
 নবম পদার্থ মুক্ত্যের কিম্বা সমাশ্রয় ॥১৩॥  
 দুই অর্থে ক্লেশ কহে কাহে পাঠ ফিরি ।  
 সার্কভোগ কহে ও শব্দ কহিতে না পারি ॥  
 যদ্যপি তোমার অর্থ দুই, শব্দ কয় ।  
 তথাপি অঙ্গীলদোষ কহমে না যায় ॥১৪॥  
 যদ্যপি মুক্তি শব্দের হয় পঞ্চ বৃত্তি ।  
 রুঢ়ি বৃত্ত্যে করে তবু সায়ুজ্যে প্রতীতি ॥

মুক্তি শব্দ কহিতে মনে হয় ঘৃণা ভ্রাম ।  
 ভক্তি শব্দ কহিতে মনে হয়ত উল্লাস ॥১৫॥  
 অনিয়া হাসেন প্রভু আনন্দিত মনে ।  
 ভট্টাচার্য্যে কৈল প্রভু দৃঢ় আলিঙ্গনে ॥  
 যে ভট্টাচার্য্য পড়ে, পড়ায় মায়াবাদ ।  
 তাঁর হেন বাক্য ক্ষুরে চৈতন্যপ্রসাদ ॥  
 লোহাকে যাবৎ স্পর্শি হেম নাহি কবে ।  
 তাবৎ স্পর্শমণি কেহ চিনিতে না পারে ॥  
 ভট্টাচার্য্যের বৈষ্ণবতা দেখি সার্কজন ।  
 প্রভুকে জানিল সাক্ষাৎ ব্রহ্মহ্মনন্দন ॥১৬॥  
 কাশীগিঞ্জ আদি করি নীলাচলবাগী ।  
 শরণ লইল তবে প্রভুপদে আসি ॥  
 সে সকল কথা আগে করিব বর্ণন ।  
 সার্কভোগ করে যৈছে প্রভুর সেবন ॥  
 যৈছে পরিপাটি করে ভিক্ষা নির্কাহন ।  
 বিস্তারিয়া আগে তাহা করিব বর্ণন ॥১৭॥  
 এই প্রভুর লীলা সার্কভোগের গিলন ।  
 ইহা যেই শ্রদ্ধা করি করয়ে শ্রবণ ॥  
 জ্ঞানকর্ম্ম-পাশ হৈতে হয় বিমোচন ।  
 অচিরে পায় সেই চৈতন্যচরণ ॥  
 শ্রীরূপ রঘুনাথ-পদে যার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে ক্লেশদাস ॥ ১৮ ॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে ঋদ্ধাখণ্ডে  
 সার্কভোগমোদ্ধারণ নাম ষষ্ঠ  
 পরিচ্ছেদ ॥ ৬ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপ শ্রীশ্যামলাল-পদারবিন্দসেবি-  
 বিনোদবিহারীগোপ্বামি কৃতাস্বয়বোধিনী ও সুরবোধিনী-সমন্বিত  
 শ্রীসার্কভোগমোদ্ধারণ নাম ষষ্ঠঃ পরিচ্ছেদঃ ॥ ৬ ॥

## সপ্তম পরিচ্ছেদ ।



ওই কারণ্য -

ধ্বং তং নৌমি চৈতন্যং বাসুদেবং দয়ার্জুনীঃ ।  
নষ্টকুষ্ঠং রূপপুষ্ঠং ভক্তিভূষ্টং চকার যঃ ॥১॥

যঃ দয়ার্জুনীঃ ( দয়য়া দ্রবীভূতা দীঃ বুদ্ধিঃ যস্য  
সঃ ) বাসুদেবং ( কুষ্ঠাক্রান্তং তথামানং বিপ্রং )  
নষ্টকুষ্ঠং রূপপুষ্ঠং ভক্তিভূষ্টং চকার তং ধন্যং  
চৈতন্যং নৌমি ॥ ১ ॥

যিনি দয়ার্জুচিত্ত হইয়া বাসুদেব নামক  
বিপ্রকে কুষ্ঠরোগ হইতে মুক্ত করতঃ  
সুরূপ সম্পন্ন এবং ভক্তি দ্বারা নষ্ট  
করিয়াছেন, আমি সেই ধন্য জীচৈতন্যকে  
প্রণাম করি ॥ ১ ॥

জয় জয় জীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
জয়াঈব্রতচন্দ্র জয় গৌরভক্রমন্দ ॥  
এইমত সার্কভৌমের নিস্তার করিল ।  
দক্ষিণ পননে প্রভুর ইচ্ছা উপজিল ॥  
মাঘ-শুক্লপক্ষে প্রভু করিল সন্ন্যাস ।  
ফাল্গুনে আসিয়া কৈল নীলাচলে বাস ॥১॥  
ফাল্গুনের শেষে দোলযাত্রা সে দেখিল ।  
প্রোমাবেশে তাঁহা বহু নৃত্য গীত কৈল ॥  
চৈত্রে রহি কৈল সার্কভৌমবিমোচন ।  
বৈশাখ প্রথমে দক্ষিণ যাইতে হৈল মন ॥  
নিজগণ আনি কহে বিনয় করিয়া ।  
আলিঙ্গন করে সবারে জীহস্তে ধরিয়া ॥২॥  
তোমা সব জানি আমি প্রাণাধিক করি ।  
প্রাণ ছাড়াযায়, তোমাসব ছাড়িতে নাপারি  
তুমি সব এই আগার বন্ধুরূত্ব কৈলে ।  
ইহা আনি মোরে জগন্নাথ দেখাইলে ॥

এবে গবা স্থানে মুঞি মাগো এই দামে ।  
গবে মেলি আজ্ঞা দেহ যাইব দক্ষিণে ॥৩॥  
বিশ্বরূপ-উদ্দেশে আমি অবশ্য যাইব ।  
একাকী যাইব কাহো সঙ্কে না লইব ॥  
সেতুবন্ধ হৈতে আমি না আসি যাবৎ ।  
নীলাচলে তুমি সব রহিবে তাবৎ ॥  
বিশ্বরূপের সিদ্ধিপ্রাপ্তি জানেন সকল ।  
দক্ষিণদেশ উদ্ধারিতে করে এই ছল ॥৪॥  
শুনিয়া সবার মনে হৈল মহাছুঃখ ।  
বজ্র যেন মাথায় পড়ে শুখাইল মুখ ॥  
নিত্যানন্দ প্রভু কহে ঐছে কাহে হয় ।  
একাকী যাইবে তুমি কে ইহা সহয় ॥  
এক দুই সঙ্কে চলু না পড় হঠরঙ্কে ।  
যারে কহ এক দুই সেই চলু সঙ্কে ॥  
দক্ষিণের তীর্থপথ আমি সব জানি ।  
আমি সঙ্কে চলি প্রভু আজ্ঞা দেহ তুমি ॥  
প্রভু কহে আমি নর্তক তুমি স্ত্রধার ।  
মৈছে তুমি নাচাহ তৈছে নর্তন আগার ॥  
সন্ন্যাস করি আমি চলিলাও বৃন্দাবন ।  
তুমি আমা লৈয়া আইলা অদ্বৈতভবন ॥৫॥  
নীলাচল আসিতে তুমি ভাঙ্গিলে মোর দণ্ড  
তোমা সবার গাঢ়স্নেহে আগার কার্যভঙ্গ  
জগদানন্দ চাহে আগার বিষয় ভুঞ্জাইতে ।  
যেই কহে সেই ভয়ে চাহিয়ে করিতে ॥  
কভু যদি ইহাঁর বাক্য করিয়ে অন্যথা ।  
ক্রোধে তিন দিন আমায়নাহিকহে কথা ॥  
মুকুন্দ হয়েন দুঃখী দেখি সন্ন্যাসধর্ম ।  
তিনবার শীতে স্নান ভূমিতে শয়ন ॥

অন্তরে দুঃখী মুকুন্দ কিছু নাহি কহে মুখে ।  
 ইহার দুঃখ দেখি আমার দ্বিগুণ হয় দুঃখে ॥৫॥  
 আমি ত সন্ন্যাসী দামোদর ব্রহ্মচারী ।  
 সদা রহে আমার উপর শিক্ষাদণ্ড ধরি ॥  
 ইহার অগ্রেতে আমি না জানি ব্যবহার ।  
 ইহাঁরে না ভায় স্ব তন্ত্র চরিত্র আমার ॥  
 লোকাপেক্ষা নাহি ইহাঁর কৃষ্ণরূপা হইতে ।  
 আমি লোকাপেক্ষাকভূনাপারিছাড়িতে ॥৬॥  
 তাতে তুমি সব ইহা রহ নীলাচলে ।  
 দিনকণ্ঠে আমি তীর্থ ভ্রমিবে একলে ॥  
 ইহা সবার বশ প্রভু হয় যে যে গুণে ।  
 দোষারোপ ছলে করে গুণ আশ্বাদনে ॥  
 চৈতন্যের ভক্তবাৎসল্য অকণ্য কখন ।  
 আপনে বৈরাগ্য দুঃখ করেন সহন ॥  
 সেই দুঃখ দেখি যেই ভক্ত দুঃখ পায় ।  
 সেই দুঃখ তাঁব শক্যে সহন না যায় ॥৭॥  
 গুণে দোষোক্ষার ছলে সবা নিষেধিয়া ।  
 একাকী ভ্রমিবেন তীর্থ বৈরাগ্য করিয়া ॥  
 তবে চারি জন বহু বিনতি করিল ।  
 স্বতন্ত্র ঈশ্বর প্রভু কিছু না মানিল ॥  
 তবে নিত্যানন্দ কহে যে আজ্ঞা তোমাব ।  
 দুঃখ সুখ হউক সেই কর্তব্য আমার ॥  
 কিন্তু এক নিবেদন করোঁ আরবার ।  
 বিচার করিয়া তাহা কর অঙ্গীকার ॥ ৮ ॥  
 ক্ষৌপীন বহির্বাণ আর জলপাত্র ।  
 আর কিছু নাহি সঙ্গে যাবে এই মাত্র ॥  
 তোমার দুই হস্ত বন্ধ নামগণনে ।  
 জলপাত্র বহির্বাণ বহিবে কেমনে ॥  
 প্রেমাবেশে পথে তুমি হবে অচেতন ।  
 জলপাত্র বস্ত্রের কেবা করিবে রক্ষণ ॥  
 কৃষ্ণদাস নাম এই সরল ব্রাহ্মণ ।  
 ইহা সঙ্গে করি লহ ধর নিবেদন ॥

জলপাত্র বস্ত্র বহি তোমার সঙ্গে যাবে ।  
 যে তোমার ইচ্ছা কর কিছু না বলিবে ॥৯॥  
 তবে তার বাক্যে প্রভু কৈল অঙ্গীকারে ।  
 তাহা সবা লয়া গেলা মার্কণ্ডেয় ঘরে ॥  
 নমস্করি মার্কণ্ডেয় আনন নিবেদিল ।  
 সবাকারে মিলি প্রভু আমনে বসাইল ॥  
 নানা কৃষ্ণবাস্তা কহি প্রভু কহিল তাহারে ।  
 তোমার ঠাঁঞি আইলা ঙ্গাজ্ঞামাগিবানে ॥  
 সন্ন্যাস করি বিষ্ণুরূপ গিয়াছে দক্ষিণে ।  
 অবশ্য কবিব আমি তার অথেষণে ॥  
 আজ্ঞা দেহ দক্ষিণে আমি অবশ্য চলিব ।  
 তোমার আজ্ঞাতে শুভেলেউটিআনিব ॥১০॥  
 শুনি মার্কণ্ডেয় হৈলা অচ্যুত কাতর ।  
 চরণে ধরিয়া কহে বিষাদ উত্তর ॥  
 বহুজন্ম পুণ্যফলে পাইলু তোমার সঙ্গ ।  
 হেন সঙ্গ বিধি মোর কবিব বিভঙ্গ ॥  
 শিরে বজ্র পড়ে যদি পুঞ্জ মরি যায় ।  
 তাহা সহি, তোমার বিচ্ছেদ সহন না যায় ॥  
 স্ব তন্ত্র ঈশ্বর তুমি করিবে গমন ।  
 দিনকণ্ঠে রহ, দেখি তোমার চরণ ॥  
 তাহার বিনয়ে প্রভুর শিখিল হৈল মন ।  
 রহিলা দিবস কণ্ঠে না কৈলা গমন ॥১১॥  
 ভটাচার্য্য আগ্রহ করি করে নিমন্ত্রণ ।  
 গৃহে পাক করি প্রভুকে করায় ভোজন ॥  
 তাহার ব্রাহ্মণী তার নাম ধাটীর মাতা ।  
 রাক্ষি ভিক্ষা দেন তেঁহো আশ্চর্য্য তাঁর কথা ॥  
 আগন্ত কহিব তাহা কনিয়া বিস্তার ।  
 এবে কহি প্রভুর দক্ষিণ ধাত্রা সমাচার ॥১২॥  
 দিন চারি রহি প্রভু ভটাচার্য্য-স্থানে ।  
 চলিবার লাগি আজ্ঞা মাগিল আর দিনে ॥  
 প্রভুর আগ্রহে ভটাচার্য্য সম্মত হইলা ।  
 প্রভু তেহেঁ জগন্নাথ-মন্দিরে আইলা ॥



দর্শন করি ঠাকুর-পাশ আজ্ঞা মাগিল ।  
 পূজারী প্রভুরে মালা প্রসাদ আনি দিল ॥  
 আজ্ঞা মালা পায়া হর্ষে নমস্কার করি ।  
 আনন্দে দক্ষিণ দেশ চলিলা গৌরহরি ॥১৩॥  
 ভট্টাচার্য্য সঙ্গে আর যত নিজগণ ।  
 জগন্নাথ প্রদক্ষিণ করি করিলা গমন ॥  
 গনুদ্র তীরে তীরে আলালনাথ-পথে ।  
 সার্কভৌম কহিলা আচার্য্য-গোপীনাথে ॥  
 চারি কোপীন বহির্দ্বার রাখিয়াছি ঘরে ।  
 তাহা প্রসাদান লয়া আইল বিপ্রদ্বারে ॥  
 তবে সার্কভৌম কহে প্রভুর চরণে ।  
 অবশ্য পালিবে মোর এই নিবেদনে ॥  
 রায় রামানন্দ আছে গোদাবরী-তীরে ।  
 অধিকারী হয়েন ত্রিহেঁ বিদ্যানগরে ॥  
 শূদ্র-বিষয়ি জানে তারে উপেক্ষা না করিব  
 আমার বচনে তাঁরে অবশ্য মিলিবে ॥১৪॥  
 তোমার সঙ্গে যোগ্য তিহেঁ একজন ।  
 পৃথিবীতে রগিব-ভক্ত নাহি তাঁর সম ॥  
 পাণ্ডিত্য ভক্তিরস দুয়ের তিহেঁ সীমা ।  
 সম্ভাষিলে জানিবে তুমি তাঁহার মহিমা ॥  
 অলৌকিক বাক্যচেষ্টা তার না বুঝিয়া ।  
 পরিহাস করিয়াছি বৈষ্ণব বলিয়া ॥  
 তোমার প্রসাদে এবে জানিল তার তত্ত্ব ।  
 শঙ্কায়িলে জানিবে তার যেমন মহত্ত্ব ॥১৫॥  
 অঙ্গীকার কবি প্রভু তাহার বচন ।  
 তারে বিদায় দিতে তারে কৈল আলিঙ্গন ॥  
 ঘরে রুঞ্চ ভজি মোরে করিহ আশীর্বাদে ।  
 নীলাচলে আগি যেন তোমার প্রসাদে ॥  
 এত বলি মহাপ্রভু করিলা গমন ।  
 মূর্ছিত হইয়া তাগ পড়িলা সার্কভৌম ॥  
 তারে উপেক্ষিয়া কৈল শীঘ্র গমন ।  
 কে বুঝিতে পারে মহাপ্রভুব চিত্ত মন ॥

মহানুভাবের স্বভাব এই মত হয় ।

পুস্পসম কোমল কঠিন বজ্রময় ॥ ১৬ ॥

তথাহি ভবভূক্তিকৃত বীরচরিত্রায়া উত্তরচরিতে

তৃতীয়ান্ধে ত্রয়োবিংশশ্লোকঃ—

বজ্রাদপি কঠোরানি মৃদুনি কুম্ভাদপি ।

লোকোত্তরাণাং চেতাংসি কো হি বিজ্ঞাতুমীশ্বরঃ ॥২

বজ্রং অপি কঠোরানি কুম্ভাং অপি মৃদুনি ॥

লোকোত্তরানাম্ ( অলৌকিকানাং ) চেতাংসি

( অন্তঃকরণানি ) বিজ্ঞাতুং কঃ হি ঈশ্বরঃ ( সমর্থঃ ) ॥২॥

বজ্র হইতে কঠিন ও পুস্প হইতে  
 কোমল মহানুভবগণের চিত্ত জানিতে  
 কে সমর্থ ? ॥ ২ ॥

নিত্যানন্দ-প্রভু ভট্টাচার্য্যে উঠাইল ।

তার লোকনঙ্গে তার ঘরে পাঠাইল ॥

ভক্তগণ শীঘ্র আগি লৈল প্রভুর সাথ ।

বস্ত্র প্রসাদ লয়া তাবৎ আইলাগোপীনাথ ॥

সবা সঙ্গে তবে প্রভু আলালনাথ আইল ;

নমস্কার করি তাঁরে বস্ত্র স্তুতি কৈল ॥

প্রোমাবেশে নৃত্য গীত কৈল কথোক্ষণ ।

দেখিতে আইল তাহা বৈদ্যে যত জন ॥১৭॥

চতুর্দিকের লোক সব বলে হরি হরি ।

প্রোমাবেশে মধ্যে নৃত্য করে গৌরহরি ॥

কাঞ্চন সদৃশ দেহ অরুণ বসন ।

পুলকাক্ষ কম্প খেদ তাহাতে ভ্রমণ ॥

দেখিয়া লোকের মনে হৈল চমৎকার ।

যত লোক আইসে কেহো নাহি যায় ঘর ॥

কেহো নাচে কেহো গায় শ্রীকৃষ্ণগোপাল ।

প্রোমে ভাসিল লোক শ্রী রুদ্ধ যুবা বাল ॥১৮॥

দেখি নিত্যানন্দ-প্রভু কহে ভক্তগণে ।

এইরূপ নৃত্য আগে হবে গ্রামে গ্রামে ॥

অতিকাল হৈল লোক ছাড়িয়া না যায় ।  
 তবে নিত্যানন্দ গোমাত্রিঃ সৃজিল উপায় ॥  
 মধ্যাহ্ন করিতে গেলা প্রভুকে লইয়া ।  
 তাহা দেখি লোক আইসে চৌদিগে ধাইয়া  
 মধ্যাহ্ন করিয়া আইলা দেবতা মন্দিরে ।  
 নিজপণ প্রবেশি কবচি দিল দ্বাবে ॥  
 তবে গোপীনাথ দুই প্রভুকেভিক্ষা করাইল  
 প্রভুর শেষ প্রসাদান্ন তবে বাঁটি খাইল ॥১৯  
 শুনি শুনি লোক সব আসি বসি দ্বারে ।  
 হরি হরি বলি লোক কোলাহল করে ॥  
 তবে মহাপ্রভু দ্বার করাইল মোচন ।  
 আনন্দে আসিয়া লোক কৈল দরশন ॥  
 এই মত সক্ষ্মা পর্যাস্ত লোক আইসে যায় ।  
 বৈষ্ণব হইল লোক তবে নাচে গায় ॥  
 এক্রপে সেই ঠাত্রিঃ ভক্তগণ সঙ্গে ।  
 সেই রাত্রি গোড়াইলা কৃষ্ণকথারঙ্গে ॥২০  
 প্রাতঃকালে স্নান করি কবিল গমন ।  
 ভক্তগণে বিদায় দিল করি আলিঙ্গন ॥  
 মুচ্ছিত হইয়া তবে ভূমিতে পড়িলা ।  
 তাহা সব পানে প্রভু ফিরি না চাহিলা ॥  
 বিচ্ছেদে ব্যাকুল প্রভু চলিলা দুঃখী হয় ।  
 পাছে কৃষ্ণদাস যায় পাত্র বস্ত্র লয়া ॥  
 ভক্তগণ উপবাসী তাহাত্রিঃ রহিলা ।  
 আর দিন দুঃখী হয় নীলাচলে আইলা ॥  
 মত্ত সিংহ-প্রায় প্রভু করিলা গমন ।  
 প্রেমাবেশে যায় করি নাম সংকীৰ্ত্তন ॥২১

• তথাহি শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যব্যাক্যম্ ।

কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ হে -  
 কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ হে ।  
 কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ রক্ষ মাং  
 কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ পাহি মাং ॥

রামরাঘবরামরাঘবরামরাঘব রক্ষমাং ।  
 কৃষ্ণকেশব কৃষ্ণকেশব কৃষ্ণকেশব পাহিমাং ২২  
 এই শ্লোক পঢ়ি পথে চলে গৌরহরি ।  
 লোক দেখি পথে কহে বোল হরি হরি ।  
 সেই লোক প্রেমে মত্ত বশে হরি কৃষ্ণ ।  
 প্রভুর পাছে সঙ্গে যায় দর্শনে সতুষ্ট ॥  
 কতক্ষণ রহি প্রভু তারে আলিঙ্গিয়া ।  
 বিদায় করেন তারে শক্তি সঞ্চারিয়া ॥২৩  
 সেই জন নিজ গ্রামে করিয়া গমন ।  
 কৃষ্ণবলে হাসে কান্দে নাচে অনুক্ষণ ॥  
 যারে দেখে তাবে কহে, কহ কৃষ্ণ নাম ।  
 এই মত বৈষ্ণব কৈল সব নিজগ্রাম ॥  
 গ্রামান্তর হৈতে দৈবে আইসে যত জন ।  
 তাঁহার দর্শন রূপায় হয় তাঁর মন ॥  
 সেই যাই গ্রামের লোক বৈষ্ণব করয় ।  
 অন্য গ্রামী আসি তারে দেখি বৈষ্ণব হয় ॥  
 সেই যাই আর গ্রামে করে উপদেশ ।  
 এই মত বৈষ্ণব হৈল সব দক্ষিণদেশ ॥২৪  
 এইমত পথে যাইতে শত শত জন ।  
 বৈষ্ণব করেন তারে করি আলিঙ্গন ॥  
 যেই গ্রামে রহি ভিক্ষা করে যার ঘরে ।  
 সেই গ্রামের লোক আইসে প্রভু দেখিবারে ॥  
 প্রভুর রূপায় হয় মহাভাগবত ।  
 সে সব আচার্য্য হয় তারিল জগত ॥২৫  
 এই মত যাবৎ প্রভু গেলা সেতুবন্ধে ।  
 সব দেশ ভরু হৈলা প্রভুর সঙ্ক্ষে ॥  
 নবদ্বীপে যেই শক্তি না কৈল প্রকাশে ।  
 সে শক্তি প্রকাশি নিস্তারিল দক্ষিণদেশে ॥  
 প্রভুরে যে ভজে তারে তাঁর রূপা হয় ।  
 সেই সে এ সব লীলা সত্য করি লয় ॥  
 অলৌকিক লীলাতে যারনা জন্মে বিশ্বাস ।  
 ইহলোক পরলোক তার হয় নাশ ॥২৬ ॥

প্রথমে কহিল প্রভুর বরণে গমন ।  
 এইরূপ জানিহ যাবৎ দক্ষিণভ্রমণ ॥  
 এইমত যাইতে যাইতে গেলা কুর্মস্থান ।  
 কুর্ম দেখি তাঁরে কৈল স্তবন প্রণাম ॥  
 প্রোমাবেশে হাসি কান্দি নৃত্য গীত কৈলা  
 দেখি সর্প লোকের চিত্তে চমৎকার হৈলা ॥  
 আশ্চর্য্যে শুনি সব লোক আইল দেখিবাবে  
 প্রভুরূপ প্রেম দেখি হৈল চমৎকারে ॥  
 দর্শনে বৈষ্ণব হৈলা বলে কৃষ্ণ হরি ।  
 প্রোমাবেশে নাচে লোক উর্দ্ধ বাহু করি ॥২৭॥  
 কৃষ্ণনাম লোকমুখে শুনি অবিরাম ।  
 সেই লোক বৈষ্ণব কৈল অন্য সব গ্রাম ॥  
 এই মত পরম্পরায় সব দেশ বৈষ্ণব হৈল  
 কৃষ্ণনামামৃত-বন্যায় দেশ ভাসাইল ॥  
 কথোক্ষণে প্রভু যদি বাহু প্রকাশিল ।  
 কুর্মে সেবক বহু সন্মান করিল ॥  
 যেই যেই ক্ষেত্র যান তাহা এই ব্যবহার ।  
 এক ঠাঞি কহিল না কহিব আরবার ॥  
 কুর্মনামে সেই গ্রামে বৈদিক ব্রাহ্মণ ।  
 বহু শ্রদ্ধা ভজ্যে প্রভুর কৈল নিমন্ত্রণ ॥  
 ঘরে আনি প্রভুর কৈল পাদপ্রক্ষালন ।  
 সেই জল, বংশ সহ করিল ডক্ষণ ॥ ২৮ ॥  
 অনেক প্রকার স্নেহে ভিক্ষা করাইল ।  
 গোনাঞির প্রসাদান সবংশে খাইল ॥  
 যেই পাদপদ্ম তোমার ব্রহ্মা ধ্যান করে ।  
 সেই পাদপদ্ম সাক্ষাৎ আইল মোর ঘরে ॥  
 আমার ভাগ্যের নীমা না যায় কখন ।  
 আঞ্জি মোর শ্লাঘ্য হৈল জন্ম কুলধর্ম ॥  
 কৃপা কর মহাপ্রভু বাঙ তোমার সঙ্গে ।  
 সহিতে না পার ছুঃখ বিষয়তরঙ্গে ॥ ২৯ ॥  
 প্রভু কহে এছে বাত কড়ু না কহিবা ।  
 গৃহে রহি কৃষ্ণনাম নিরন্তর লৈবা ॥

যারে দেখ তারে কর কৃষ্ণ উপদেশ ।  
 আমার আজ্ঞায় গুরু হয়্য তার এই দেশ ॥  
 কড়ু না বাধিবে তোমায় বিষয়তরঙ্গ ।  
 পুনরপি এই ঠাঞি পাবে মোর সঙ্গ ॥  
 এইমত যার ঘরে প্রভু করে ভিক্ষা ।  
 সেই এছে কহে তারে করান এই শিক্ষা ॥৩০॥  
 পথে যাইতে দেবালয়ে রহে যেই গ্রামে ।  
 যার ঘরে ভিক্ষা করে ছুই চারিস্থানে ॥  
 কুর্মে যৈছে রীত এছে কৈল সর্পঠাঞি ।  
 নীলাচল পুনঃ যাবৎ না আইলা গোনাঞি ॥  
 অতএব ইহাঁ কহিল করিয়া বিস্তার ।  
 এইমত জানিবে প্রভুর সর্কত্র ব্যবহার ॥  
 এইমত সেই রাত্রি তাঁহাই রহিলা ।  
 স্নান করি প্রভু প্রাতঃকালে ত চলিলা ॥  
 প্রভু অনুব্রজি কুর্মে বহুদূর গেলা ।  
 প্রভু তারে যত্র করি ঘরে পাঠাইলা ॥৩১॥  
 বাসুদেব নাম এক দ্বিজ মহাশয় ।  
 সর্কক্ষে গলিত কুষ্ঠ মেহো কিড়াময় ॥  
 অঙ্গ হৈতে সেই কিড়া ভূমি পড়ি যায় ।  
 উঠাইয়া সেই কীট বাখে সেই ঠায় ॥  
 বাস্তিতে শুনিতে হো গোনাঞির আগমন ।  
 দেখিতে আইলা প্রাতে কুর্মের ভবন ॥৩২॥  
 প্রভুর গমন কুর্মে মুখেতে শুনিয়া ।  
 ভূমিতে পড়িলা ছুঃখে মূচ্ছিত হইয়া ॥  
 অনেক প্রকারে বিলাপ করিতে লাগিলা ।  
 সেই ক্ষণে আসি প্রভু তাঁরে অলিঙ্গিলা ॥  
 প্রভুর স্পর্শে ছুঃখ-সঙ্গে কুষ্ঠ দূর গেল ।  
 আনন্দ সাহিতে অঙ্গ সুন্দর হইল ॥  
 প্রভুর কৃপা দেখি তার বিস্ময় হৈল মন ।  
 লোক পড়ি পায়ে ধরি করয়ে স্তবন ॥৩৩॥

তথাহি আদিলীলামং সপ্তদশে তৃতীয়শ্লোক-  
 ধৃতঃ শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

কাহ্ন দরিদ্রঃ পাপীয়ান্ ক কৃষ্ণঃ শ্রীনিকेतনঃ ।  
 ব্রহ্মবন্ধুরিত্তি স্নাহং বাহুভ্যাং পরিরস্তিতঃ ॥ ৩ ॥

বহু স্তুতি করি কহে শুন দয়াগয় ।  
 জীবে এই গুণ নাহি তোমাতেই হয় ॥  
 মোরে দেখি মোর গন্ধে পলায় পামব ।  
 হেন মোরে স্পর্শ তুমি স্ব তন্ত্র জৈথব ॥  
 কিন্তু আছিলাত্ত ভাল অধম হইয়া ।  
 এবে অহঙ্কার মোর জন্মিবে আগিয়া ॥৩৪॥

প্রভু কহে কভু তোমার না হবে অভিমান  
 নিরন্তর লহ তুমি কৃষ্ণ কৃষ্ণ নাম ॥  
 কৃষ্ণ উপদেশি কর জীবের নিস্তাব ।  
 অচিন্তিতে কৃষ্ণ তোমা কবিব অঙ্গীকার ॥  
 এতেক কহিয়া প্রভু কৈল অন্তর্দানে ।  
 ছুই বিপ্রে গলাগলি কান্দে প্রভুর গুণে ॥৩৫॥

বাসুদেব উদ্ধার এই কহিল আখ্যান ।  
 বাসুদেবামৃতপ্রদ হইল প্রভুর নাম ॥  
 এইত কহিল প্রভুর প্রথম গমন ।  
 কুর্শ্ম-দরশন বাসুদেব-বিমোচন ॥  
 শ্রদ্ধা করি করে বেট এ লীলা শ্রবণ ।  
 অবিলম্বে গিলে তারে চৈতন্যচরণ ॥ ৩৬ ॥

চৈতন্যলীলার আদি অষ্ট নাহি জানি ।  
 সেই লিখি য়েই মহাশয়ের মুখে শুনি ॥  
 ইথে অপরাধ মোর না লইহ ভক্তগণ ।  
 তোমা সবার চরণ মোর একান্ত শরণ ॥  
 শ্রীকৃপ রঘুনাথ পদে যার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৩৭ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
 শ্রীবাসুদেবোদ্ধারনাম সপ্তম  
 পরিচ্ছেদ ॥ ৭ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপ শ্রীশ্যামলাল-পদারবিন্দসেবি-  
 বিনোদবিহারিগোস্বামি কৃতভাষ্যবোধিনী ও সুরবোধিনী-সম্বিত  
 শ্রীবাসুদেবোদ্ধারনাম সপ্তম পরিচ্ছেদঃ ॥ ৬ ॥

## অষ্টম পরিচ্ছেদ ।

গ্রহকারস্য—  
 সঞ্চাৰ্য্য রামাভিধভক্তমেঘে স্বভক্তিসিদ্ধান্তচরামৃতানি ।  
 গোরাঙ্কিরেতৈরমুনাবিতীর্ণৈস্তজ্জস্বরত্নালয়তাংপ্রযাতি ।

গোরাঙ্কিঃ ( গোৱ এব প্রেমসমুদ্রঃ ) রামাভিধ-  
 ভক্তমেঘে ( রামানন্দরায়ঃ নামকঃ এব ভক্তমেঘঃ  
 সিদ্ধান্তামৃতসেচকঃ তস্মিন্ ) স্বভক্তিসিদ্ধান্তচরা-  
 মৃতানি সঞ্চাৰ্য্য অমুনা ( রামানন্দমেঘেন ) এতৈঃ

( স্বভক্তিসিদ্ধান্তামৃতঃ ) বিতীর্ণৈঃ ( বিতীর্ণৈঃ )  
 তজ্জস্বরত্নালয়তাং ( তানি সিদ্ধান্তচরামৃতানি  
 জানস্তি ) সে তে এৱ তজ্জস্বাঃ তেভ্যাং স্বরূপঃ তজ-  
 জস্বঃ বোধঃ স এব রত্নং তস্য আলয়তাং ) প্রযাতি  
 ( প্রাপ্নোতি ) ॥ ১ ॥

শ্রীগৌররূপসিদ্ধু রামানন্দ রায় নামক  
 ভক্তরূপ মেঘে স্বভক্তি সিদ্ধান্তরূপ অমৃত

সকল করতঃ তৎকর্তৃক বর্ষিত সেই  
সিদ্ধান্তানুত দ্বারা সিদ্ধান্তবোধ স্বরূপ  
রত্নগণের আশ্রয় হইলেন । ১ ॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
জয়দৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তগুন্দ ॥  
পূর্ব-রীতে প্রভু আগে করিল গমনে ।  
জিয়ড় নৃসিংহ-ক্ষেত্রে গেলা কথোদিনে ॥১॥  
নৃসিংহ দেখিয়া কৈল দণ্ডবৎ নতি ।  
প্রেমাবেশে কৈল বহু নৃত্য গীত স্তুতি ॥  
শ্রীনৃসিংহ জয় নৃসিংহ জয় জয় নৃসিংহ ।  
প্রহ্লাদেশ জয় পদ্মানুখ পদ্মভূষণ ॥ ২ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে সপ্তমস্কন্ধে নবমাধ্যায়ে  
প্রথমশ্লোকস্য শ্রীশ্বামি কৃত টীকায়ঃ ধৃতগনঃ—  
উগ্রো-ইপ্যমুগ্র এবায়ং স্বভক্তানাং নৃকেশরী ।  
কেশরী ব স্বপোতানা-মন্তেষামুগ্রবিক্রমঃ ॥ ২ ॥

স্বপোতানাং (সম্বন্ধে শাস্তোহপি) অনোয়াং  
(গজাদীনাং সম্বন্ধে) উগ্রবিক্রমঃ কেশরী ইব অয়ং  
নৃকেশরী (নৃসিংহঃ, অমুরাণাং সম্বন্ধে) উগ্রঃ  
অপি স্বভক্তানাং (সম্বন্ধে) অমুগ্রঃ (শাস্তঃ)  
এব ॥ ২ ॥

নিংহ যেমন স্ব-সন্তানগণের নিকট  
অনুগ্রহ হইয়া অন্যের (শাবকদ্রোহি-  
গণের) সম্বন্ধে উগ্র; তদ্রূপ শ্রীনৃসিংহ-  
দেব স্বভক্তগণের সম্বন্ধে শাস্তমূর্ত্তি হইয়াও  
অভক্তের নিকট ভয়ঙ্কর ॥ ২ ॥

এই মত নানা শ্লোক পঢ়ি স্তুতি কৈল ।  
নৃসিংহদেবক মালা-প্রসাদ আনি দিল ॥  
পূর্ববৎ কোন বিপ্র কৈল নিগত্ৰণ ।  
সেই রাত্রি তাঁহা রহি করিলা গমন ॥  
প্রভাতে উঠিয়া প্রভু চলিলা প্রেমাবেশে ।  
দিক্‌বিদিক্‌ জ্ঞান নাহি রাত্রি দিবসে ॥৩॥

পূর্ববৎ বৈষ্ণব করি সব লোকগণে ।  
গোদাবরী তীরে চলি আইলা কথোদিনে ॥  
গোদাবরী দেখি হৈল যমুনা স্মরণ ।  
তীরে বন দেখি স্মৃতি হৈল বৃন্দাবন ॥  
সেই বনে কথোক্ষণ করি নৃত্য গান ।  
গোদাবরী পার হয়া কৈল তাহা স্নান ॥৪॥  
ষাট ছাড়ি কথো দূরে জল সন্নিধানে ।  
বসিয়া করেন প্রভু নাম সঙ্কীর্তনে ॥  
হেন কালে দোলায় চড়ি রামানন্দ রায় ।  
স্নান করিবারে আইলা বাজনা বাজায় ॥৫॥  
তাঁর সঙ্গে আইলা বহু বৈদিক ব্রাহ্মণ ।  
বিধিমত কৈল তেঁহো স্নানাদি তর্পণ ॥  
প্রভু তাঁরে দেখি জাণিল এই রামরায় ।  
তাঁহাবে মিলিতে প্রভুর মন উঠি ধায় ॥  
তথাপি পৈর্য্য করি প্রভু রহিলা বসিয়া ।  
রামানন্দ আইলা গপূর্ব্বমুখ্যাসি দেখিয়া ॥৬॥  
সূর্যশতসমকাস্তি অরুণ বসন ।  
সুবলিত প্রকাণ্ড দেহ কমল লোচন ॥  
দেখিয়া তাহার মনে হৈল চমৎকার ।  
আসিয়া করিল দণ্ডবৎ নমস্কার ॥  
উঠি প্রভু কহে উঠ কহ কৃষ্ণ কৃষ্ণ ।  
তারে আলিঙ্গিতে প্রভুর হৃদয় সতৃষ্ণ ॥৭॥  
তথাপি পুছিল তুমি রায় রামানন্দ ।  
তেঁহো কহে সেই হস্ত দাগ শৃঙ্গ মন্দ ॥  
তবে প্রভু কৈল তাঁরে দৃঢ় আলিঙ্গন ।  
প্রেমাবেশে প্রভু ভৃত্য দৌহে অচেতন ॥  
স্বাভাবিক প্রেম দৌহার উদয় করিলা ।  
দৌহাআলিঙ্গিয়া দৌহেভুমিত্তেপড়িলা ॥৮॥  
স্তুস্ত শ্বেদ অক্ষু কম্প পুলক বৈবর্গ্য ।  
দৌহার মুখে শুনি গদগদ কৃষ্ণবর্ণ ॥৯॥  
দেখিয়া ব্রাহ্মণ গণের হৈল চমৎকার ।  
বৈদিক ব্রাহ্মণ সব করেন বিচার ॥

এইত সন্ন্যাসীর তেজ দেখি ব্রহ্ম সম ।  
 শূদ্র আলিঙ্গিয়া কেনে করেন ক্রন্দন ॥  
 এই মহারাজ মহা পণ্ডিত গম্ভীর ।  
 সন্ন্যাসীর স্পর্শে মত্ত হইল অস্থির ॥  
 এইমত বিপ্রগণ ভাবে মনে মন ।  
 বিজ্ঞাতীয় লোক দেখি প্রভু কৈল মন্থরণ ॥  
 সুস্থ হয়্য দৌহে সেই স্থানেতে বসিলা ।  
 তবে হাদি মহাপ্রভু কহিতে লাগিলা ॥১০॥  
 সার্কভৌম ভট্টাচার্য্য কহিল তোমার গুণ ।  
 মিলিতে তোমারে মোরে করিল যতন ॥  
 তোমা মিলিবারে মোর এথা আগমন ।  
 ভাল হৈল অন্যায়মে পাইল দরশন ॥১১॥  
 রায় কহে সার্কভৌম করেন ভূতাজ্ঞান ।  
 পরোক্ষহ মোর হিতে হয় সাবধান ॥  
 তার রূপায় পাইলু তোমার চরণ দর্শন ।  
 আজি সফল হইল মোর মনুষ্যজন্ম ॥১২॥  
 সার্কভৌমে তোমার রূপা তার এই চিহ্ন ।  
 অস্পৃশ্য স্পর্শিলে হয় তাঁর প্রোমাদীন ॥  
 কাঁহা তুমি ঈশ্বর সাক্ষ্যং নাবায়ণ ।  
 কাঁহা মুণ্ডি রাজমেবী বিষয়ী শূদ্রাদম ॥  
 মোর দর্শন তোমায় বেদে নিষেধয় ।  
 মোর স্পর্শে না করিলে ঘৃণা-বেদভয় ॥১৩॥  
 তোমার রূপায় তোমায় করায় নিন্দকর্ম্ম ।  
 স্বতন্ত্র ঈশ্বর তুমি কে জানে তোমার মর্ম্ম ।  
 আসা নিস্তারিতে তোমার ইহা আগমন ।  
 রূপা করি মোরে আদি দিলা দরশন ॥  
 মহাস্ত স্বভাব এই তারিতে পামর ।  
 নিজ কার্য্য নাহি তবু যান তার ঘর ॥১৪॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে অষ্টমাধ্যায়ে  
 চতুর্থশ্লোকে গর্গং প্রতি শ্রীনন্দবাক্যম্—  
 মহাশিচলনং নৃণাং গৃহিনাং দীনচেতসাম্ ।  
 নিঃশ্রেয়সায় ভগবন্ কল্পতে নাশ্রুখা কচিং ॥ ৩ ॥

(হে) ভগবন্! মহাশিচলনং (মহতং বিচ-  
 লনং স্বাশ্রমাং অন্যত্র গমনং ন সম্ভবতি প্রয়ো-  
 জনাত্বাৎ) যদি কচিং গমনং ভবতি তদা )  
 দীনচেতসাং ( ব্যাকুলতয়া বিবেকে অসমর্থং চেতঃ  
 যেষাং তেষাং ) গৃহিনাং নৃণাং নিঃশ্রেয়সায় ( মঙ্গ-  
 লায়) কল্পতে অন্যথা (স্বপ্রয়োজনায়) ন (যেটতে ॥৩॥

হে ভগবন্! ভবাদৃশ মহান ব্যক্তির  
 যে নিজ আশ্রম হইতে অন্যত্র গমন  
 করিয়া থাকেন, তাহা স্বপ্রয়োজন জন্য  
 নহে; পরন্তু দীনচিত্ত গৃহিণের মঙ্গলোৎসেই  
 জন্য। অন্যথা, আপনাদিগের কোন  
 প্রয়োজন না থাকায় তাহা ঘটতে পারে  
 না ॥ ৩ ॥

আমার সঙ্গে ব্রাহ্মণাদি মহাশ্রেয় জন ।  
 তোমার দর্শনে সবার দ্রবীভূত মন ॥  
 রক্ষ রক্ষ নাম শুনি সবার বদনে ।  
 সবার অঙ্গ পুলকিত অশ্রনয়নে ॥  
 সাক্ষতে প্রকৃতে তোমার ঈশ্বরলক্ষণ ।  
 জীবে না সম্ভবে এই অপ্রাকৃত গুণ ॥১৩॥  
 প্রভু কহে তুমি মহাভাগবতোত্তম ।  
 তোমার দর্শনে সবার দ্রবীভূত মন ॥  
 আনের কা কথা আমি মায়াবাদী সন্ন্যাসী ।  
 আমিও তোমার স্পর্শে রক্ষপ্রমে ভাসি ॥  
 এই জানি কঠিন মোর হৃদয় গোপিতে ।  
 সার্কভৌম কহিলেন তোমারে মিলিতে ॥১৬॥  
 এইমত দৌহে স্তুতি করে দৌহার গুণে ।  
 দৌহে দৌহা দরশনে আনন্দিত মনে ॥  
 হেনকালে বৈদিক এক বৈষ্ণব ব্রাহ্মণ ।  
 দণ্ডবৎ করি কৈল প্রভুর নিমন্ত্রণ ॥  
 নিমন্ত্রণ মানিল তারে বৈষ্ণব জানিয়া ।  
 রামানন্দে কহে প্রভু ঈষৎ হাসিয়া ॥

তোমার মুখে কৃষ্ণকথা শুনিতে হয় মন ।  
 পুনরপি পাই যেন তোমার দর্শন ॥ ১৭ ॥  
 রায় কহে আইলা যদি পায়র শোধিতে ।  
 দর্শনমাত্র শুদ্ধ নহে মোর ছুষ্টে চিত্তে ॥  
 দিন পাঁচ সাত রহি করহ মাৰ্জ্জন ।  
 তবে শুদ্ধ হয় মোর এই ছুষ্টে মন ॥  
 যত্নপি বিচ্ছেদ দৌহারুণহনে না যায় ।  
 তবু দণ্ডবৎ করি চলিলা রামরায় ॥ ১৮ ॥  
 প্রভু যাঞা সেই নিপ্র-বরে ভিক্ষা কৈল ।  
 দুই জনার উৎকঠায় আসি সঙ্খ্যা হৈল ॥  
 প্রভু স্নানকৃত্য করি আছেন বসিয়া ।  
 এক ভৃত্য সঙ্গে রায় মিলিল আসিয়া ॥  
 দণ্ডবৎ কৈলা রায় প্রভু কৈল আলিঙ্গনে ।  
 দুই জন কথা কন বসি রহঃস্থানে ॥ ১৯ ॥  
 প্রভু কহে পড় শ্লোক নাথ্যের নির্ণয় ।  
 রায় কহে স্বধর্মাচরণে বিষ্ণুভক্তি হয় ॥ ২০ ॥

তথাহি বিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়ংশে অষ্টমাধ্যায়ে  
 নবমশ্লোকঃ—

বর্ণাশ্রমাচারবতা পুরুষেণ পরঃ পুমান্ ।  
 বিষ্ণুরাধ্যাতে পস্থা নাশ্চন্তোষকারণম্ ॥ ৪ ॥

বর্ণাশ্রমাচারবতা ( বেদপুরাণাগমাত্মক্কাচার  
 বতা ) পুরুষেণ পরঃ পুমান্ বিষ্ণুঃ আরাধ্যতে  
 ( এষ এব ) পস্থা, অন্যঃ ( শ্রুত্বা ক্রবর্ধপরি ত্যাগেন )  
 তৎ ( বিষ্ণোঃ ) তোষকারণং ন ( ভবতি ) ॥ ৪ ॥

মুন্সয় যে বেদ, পুরাণ ও আগমোক্ত  
 অপিকারানুরূপ বর্ণাশ্রমাচার পালন  
 করেন, তাহাতেই পরম পুরুষ বিষ্ণুর  
 আরাধনা করা হয়। অতএব ইহাই  
 বিষ্ণু সন্তোষের উপায়, এতদ্ভিন্ন উপায়া-  
 ন্তর নাই ॥ ৪ ॥

প্রভু কহে এহো বাহু আগে কহ আর ।  
 রায় কহে ক্রুক্ষে কর্ম্মার্পণ সাধ্য সার ॥ ২১ ॥

তথাহি শ্রীগীতায়াং নবমাধ্যায়ে সপ্তবিংশ-  
 শ্লোকে শ্রীকৃষ্ণবাক্যম্—

যৎ করোষি যদশ্নাসি যজ্জুহোষি দদাসি যৎ ।  
 যত্পস্যসি কোন্তেষ্য তৎ কুরুষ মদর্পণম্ ॥ ৫ ॥

( হে ) কোন্তেষ্য ! যৎ ( দেহমাত্রসাধকং  
 লৌকিকং কর্ম্ম ) করোষি যৎ ( দেহধারণার্থম্  
 অন্নাদিকম্ ) অশ্নাসি যৎ ( সংপাত্রেভ্যঃ অন্নহিরণ্যা-  
 দিকং ) দদাসি যৎ তপস্যসি ( প্রত্যক্ষমজ্ঞাত-  
 হুরিতক্ষয়ে চাত্মরাদি আচরসি ) তৎ ( সর্কং )  
 মদর্পণং ( যথাস্যাত্তথা ) কুরুষ ॥ ৫ ॥

হে অর্জুন ! যাহা কিছু কর, যাহা  
 কিছু ভোগ কর, যাহা কিছু হবন কর,  
 যাহা কিছু দান কর, যে কোন তপস্যা  
 কর, সে সকলই আমাতে অর্পণ কর ॥ ৫ ॥

প্রভু কহে এহো বাহু আগে কহ আর ।  
 রায় কহে স্বধর্ম্মত্যাগ ভক্তি সাধ্য সার ॥ ২২ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে একা-  
 দশাধ্যায়ে দ্বাত্রিংশশ্লোকে শ্রীভগবৎবাক্যম্—

আজ্ঞায়ৈব শুণান্ দোষান্ ময়াদিষ্টানপি স্বকান্ ।  
 ধর্ম্মান্ সংতাজ্য যঃ সর্কান্ মাং ভজ্যেৎ স তু সন্তমঃ ॥ ৬ ॥

যঃ ( জনঃ ) শুণান্ ( ধর্ম্মাচরণে সত্বশুদ্ধাদীন্ )  
 দোষান্ ( তন্ত্যাগে চিত্তমাদিন্যাদীন্ ) আজ্ঞায়  
 ( জ্ঞাত্বা ) অপি ময়া ( বেদরূপেণ ) আদিষ্টান্  
 ( উপাদিষ্টান্ ) সর্কান্ ধর্ম্মান্ সংতাজ্য মাং ভজ্যেৎ  
 স তু সন্তমঃ ॥ ৬ ॥

যে ব্যক্তি ধর্ম্মাচারের গুণ ও  
 তন্ত্যাগের দোষ সকল জানিয়াও বেদরূপ

আমা কর্তৃক উপদিষ্ট সমস্ত স্বধর্ম পরি-  
ত্যাগ পূর্বক আমাকে উজ্ঞন করে, সেই  
ব্যক্তি সাধু ১ ৬ ॥

তথাহি শ্রীমদাচার্য্যম্ অষ্টাদশাধ্যায়ে ষট্‌ষষ্টিতম-  
শ্লোকঃ—

সর্বধর্ম্মান্ পরিত্যজ্য যামেকং পরণং ব্রজ ।

অহং ত্বাং সর্বপাপেভ্যো মোক্ষয়িষ্যামি মা শুচঃ ॥ ১ ॥

সর্বধর্ম্মান্ পরিত্যজ্য ( স্বরূপতঃ ত্যক্ত্ৱা )  
মাং ( সর্বেধর্ম্মং কৃৎসন্ ) একং ( নতু মন্তোহন্যাং  
শিতিকর্থাদিং ) পরণং ব্রজ ( প্রপদ্যত ) অহং  
( সর্বেধর্ম্মং ) সর্বপাপেভ্যঃ ত্বাং ( পরণাগতং )  
মোক্ষয়িষ্যামি মা শুচঃ ( অচিরায়ুয়া নয়ী হৃদি-  
স্তদ্ধিমিচ্ছতাতিচিরসাধ্যা হৃকরাশ্চ তে কৃচ্ছাদয়ঃ  
কথমমুঠেয়া ইতি শোকং মা কার্ষীঃ ) ॥ ১ ॥

হে অর্জুন ! সমুদায় ধর্ম্ম স্বরূপতঃ  
পরিত্যাগ করিয়া একমাত্র আমারই  
শরণাপন্ন হও, আমি তোমাকে সমুদায়  
পাপ হইতে মুক্ত করিব । “অল্লায়ু দ্বারা  
চিরসাধ্য ও দুষ্কর কৃচ্ছাদির অনুষ্ঠান  
কিরূপে করিব” বলিয়া শোক করিও  
না ॥ ১ ॥

প্রভু কহে এহো বাহু আগে কহ আর ।  
রায় কহে জ্ঞানমিশ্র-ভক্তি সাধ্যসার ॥ ২ ॥

তথাহি শ্রীমদাচার্য্যম্ অষ্টাদশাধ্যায়ে চতুঃ-  
পঞ্চাশত্তমশ্লোকঃ—

ব্রহ্মভূতঃ প্রসন্নাত্মা ন শোচতি ন কাঙ্কতি ।

সমঃ সর্বেষু ভূতেষু মন্তক্তি লভতে পরাম্ ॥ ৮ ॥

ব্রহ্মভূতঃ ( সাক্ষাৎ-কৃতাষ্টগুণকস্বরূপঃ )  
প্রসন্নাত্মা ( ক্লেণকর্ম্মবিপাকশয়ানাং বিগমোক্তি-

ব্রহ্মঃ জনঃ মদন্তান্ কাংশিৎ প্রীতি ) ন শোচতি  
( চ ) ন কাঙ্কতি । সর্বেষু ( মদনোষু উচ্চা-  
বচেযু ) ভূতেষু সমঃ ( সন্ ) পরাং মন্তক্তি  
লভতে ॥ ৮ ॥

হে অর্জুন ! যে ব্যক্তি ব্রহ্মভূত এবং  
প্রসন্নাত্মা, তিনি আমা ভিন্ন কোন বস্তুর  
জন্য শোক করেন না বা আকাঙ্ক্ষাও  
করেন না । ক্রমে সর্বভূতে সমস্ত উপ-  
স্থিত হইলে পরা মন্তক্তি লাভ হয় ॥ ৮ ॥

প্রভু কহে এহো বাহু আগে কহ আর ।  
রায় কহে জ্ঞানশূন্য ভক্তিসাধ্য সার ॥ ২ ৪ ॥

তথাহি শ্রীমদাচার্য্যম্ দশমস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে  
তৃতীয়শ্লোকে ব্রহ্মবাক্যম্—

জ্ঞানে প্রয়াসমুদপাস্য নমস্ত এব

জীবন্তি সন্থধরিতাঃ ভবদীয় বার্তাম্ ।

স্থানস্থিতাঃ শ্রুতিগতাঃ তদুবাঙ্ মনোভি-

র্ষে প্রায়শোহজিতভিতোহ্যসি তৈস্ত্রিলোক্যাম্ ॥ ৯ ॥

জ্ঞানে ( জ্ঞাননিমিত্তং ) প্রয়াসং ( শ্রমম্ ) উদ-  
পাস্য ( দূরতঃ ত্যক্ত্ৱা ) স্থানস্থিতাঃ ( স তাং  
নিবাসস্থানে স্বস্থানে বা স্থিতাঃ ) সন্থধরিতাঃ  
( সন্তিঃ ভগবদ্বক্তৈঃ সন্থধরিতাঃ স্বতাবত এব  
নিতাং প্রকৃতিতাং ) শ্রুতিগতাঃ ( শ্রবণপ্রাপ্তাঃ )  
ভবদীয় বার্তাং ( কথাং ) যে ( জনাঃ ) তদুবাঙ্  
মনোভিঃ নমস্তঃ ( সংকূর্ষম্ ) এব জীবন্তি  
( হে ) অজিত ! ( কালকর্মাদিতিরজিতঃ ) অসি  
প্রায়শঃ ত্রিলোক্যাং তৈঃ ( ত্বং ) জিতঃ ( বশীকৃতঃ )  
অসি ॥ ৯ ॥

সাঁহারা জ্ঞানের নিগিত কিছুমাত্র  
চেষ্টা না করিয়া স্থস্থানে অবস্থান পূর্বক  
সাধুগণ কর্তৃক স্বতাবতঃ প্রকাশিত ভব-



দ্বীয় বার্তা শ্রবণ ও ঐ বার্তাকেই কায়-  
মনোবাক্য দ্বারা সংকার পূর্বক জীবন  
ধারণ করেন ; হে অজিত ! তুমি কাল-  
কর্মাদি কর্তৃক অজিত হইয়াও তাঁহা-  
দিগের দ্বারা প্রায়ই এই ত্রিলোক মপ্যে  
বশীভূত হইয়া থাক ॥ ৯ ॥

প্রভু কহে এহো হয় আগে কহ আর ।  
রায় কহে প্রেমভক্তি সর্ব সাধ্যসার ॥২৫॥

তথাহি পদ্যাবলীমেকাদশাঙ্কযুত রামানন্দ-  
রারকৃত শ্লোক :-

নানোগচারকৃতপূজনাস্বাবহোঃ  
প্রেমৈব ভক্তহৃদয়ং সুখবিজ্ঞতং স্যাৎ ।  
বাবৎ হৃদন্তি অঠরে অরঠা পিপাসা  
তাবৎ সুখায় ভবতো নহু ভক্ষ্যাপেয়ে ॥ ১০ ॥

বাবৎ অঠরে অরঠা ( অতিশায়িনী ) হৃৎ  
পিপাসা ( চ ) অস্তি তাবৎ নহু ( নিশ্চিতং )  
ভক্ষ্যাপেয়ে সুখায় ভবতঃ ( ভবৎ ) আস্বাবহোঃ  
( শ্রীকৃষ্ণস্য ) উপচারকৃতপূজনং নানা ( বিনা )  
পেয়া এন ভক্তহৃদয়ং সুখবিজ্ঞতং ( অনাস্বাসেন  
দ্রবীভূতং ) স্যাৎ ( অজাতপ্রেমাঃ সাধকানাম্  
উপচারাদিভিঃ বাহাপূজা সুখায় ভবতি ) ॥ ১০ ॥

যে কাল পর্য্যন্ত উদরে বলবতী ক্ষুধা  
ও পিপাসা থাকে, সেই কাল পর্য্যন্তই  
যেমন ভক্ষ্য ও পেয় বস্তু সুখদায়ক হয়,  
তদ্রূপ প্রেমের লাভ না হওয়া পর্য্যন্ত  
হৃদয়ের শূন্যতা বশতঃ উপচারকৃত  
পূজনের যাদৃশ সুখ প্রদত্ত থাকে, প্রেম  
লাভ হইলে হৃদয়ের পূর্ণতা বশতঃ আর  
উপচার কৃত পূজনের তাদৃশ সুখপ্রদত্ত  
থাকে না । প্রেমিক ভক্ত, প্রেম দ্বারাই  
কৃতার্থতা লাভ করিয়া থাকেন ॥ ১০ ॥

তথাহি তত্রৈব দ্বাদশাঙ্কযুত শ্লোকঃ—

কৃষ্ণভক্তিরসভাবিতামতিঃ  
ক্রীরতাং যদি কুতোহপি লভ্যতে ।  
তত্র লৌগ্যমপি মূল্যমেকলং  
অন্যকোটিমুকুটৈ ন লভ্যতে ॥ ১১ ॥

( ভো ) যদি কুতঃ ( স্থানাৎ জনাৎ বা )  
অপি লভ্যতে ( তর্হি ) কৃষ্ণভক্তিরসভাবিতা-  
মতিঃ ( যুগ্মাভিঃ ) ক্রীরতাং তত্র ( কৃষ্ণভক্ত্যর্জনে )  
একলং লৌগ্যং ( লোভ এব ) মূল্যং ( ভক্তু )  
অন্যকোটিমুকুটৈঃ ন লভ্যতে ॥ ১১ ॥

কৃষ্ণভক্তি রস দ্বারা ভাবিত মতি  
যদি কোথাও অনুসন্ধান করিয়া পাও,  
তবে উহা যত পূর্বক ক্রয় কর, উহার  
মূল্য একমাত্র লালসা ; তদ্বিন্ন কোটি  
কোটি জন্মের সুকুটি দ্বারাও ঐ মতি  
লাভ করা যায় না ॥ ১১ ॥

প্রভু কহে এহো হয় আগে কহ আর ।  
রায় কহে দাস্য-প্রেম সর্বসাধ্য সার ॥২৬॥

তথাহি শ্রীমত্তাগবতে নবমস্কন্ধে পঞ্চমাধ্যায়ে  
একাদশশ্লোকে অবরীষং প্রতি হর্ষাসাবাক্যম্—  
যন্নামশ্রুতিমাত্রেণ পুমান্ ভবতি নিশ্চলঃ ।  
তস্য তীর্থপদঃ কিং বা দাসানামবশিষ্যতে ॥১২॥

যন্নামশ্রুতিমাত্রেণ পুমান্ ( জীবঃ ) নিশ্চলঃ  
ভবতি তস্য তীর্থপদঃ ( পাদে তীর্থঃ বস্য তস্য  
ভগবতঃ ) দাসানাম্ কিং বা অবশিষ্যতে ( অপি  
ন কিঞ্চিদেব ) ॥ ১২ ॥

যাঁহার নাম শ্রবণমাত্র পুরুষ নিশ্চল  
হয়েন, সেই তীর্থপাদ প্রভুর দাসগণের  
আর কি অলভ্য থাকে ? ॥ ১২ ॥

তথাহি মধ্যনীলার্নাং প্রথমে দ্বাদশাঙ্কযুত  
গোপ্তাবিপাদোক্তশ্লোকঃ—

ভবন্তমেবামুচরন্নিস্তরঃ

প্রশান্তনিশেখমনোরথাস্তরঃ ।

কদাৎমৈকান্তিকনিত্যকিকরঃ

প্রহর্ষনিষ্ঠামি স নাথ জীবিতম্ ॥ ১৩ ॥

প্রভু কহে এহো হয় আগে কহ আর ।  
রায় কহে সখ্যপ্রেম সর্বসাধ্যসার ॥ ২৭ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে দ্বাদশাধ্যায়ে  
দশমস্কন্ধে পরীক্ষিতঃ প্রতি শুকদেববাক্যম্—  
ইখং সত্যং ব্রহ্মস্বখামুভূত্যা  
দাম্যং গভানাং পরদৈবভেদে ।  
মারাপ্রিতানাং নরদারকেণ  
সার্কিং বিজহুঃ কৃতপুণ্যপুঞ্জাঃ ॥ ১৪ ॥

ইখম্ (এবং প্রকারেণ) কৃতপুণ্যপুঞ্জাঃ  
(গোপবালাঃ) সত্যং (নির্কিশেষজ্ঞানিনাং)  
ব্রহ্মস্বখামুভূত্যা (ব্রহ্মস্বখামুভবস্বরূপেণ) দাম্যং-  
গভানাং (গৌরবমরজ্ঞানসাম্যৈর্ধর্ম্যামুভব-সঙ্-  
চিত্তচিত্তানাং) পরদৈবভেদে মারাপ্রিতানাং  
(ভগবন্মারামোহিতানাং, তৎকৃপাবিশেষম্ অব-  
লম্বমানানাং শুদ্ধতক্রিমতাং বা) নরদারকেণ  
(নরদারকরূপেণ, মধুরনরাকারেণ বা, সুরতা  
শ্রীভগবতা) সার্কিং বিজহুঃ ॥ ১৪ ॥

এইরূপে প্রচুর পুণ্যশালী গোপ-  
বালকগণ, নির্কিশেষ জ্ঞানিগণের সম্বন্ধে  
ব্রহ্মস্বখামুভবস্বরূপ, দাম্যভাব প্রাপ্ত  
ভক্তগণের সম্বন্ধে পরদৈবতাস্বরূপ এবং  
ভগবন্মারামোহিত ব্যক্তিগণের বা শুদ্ধ  
ভক্তগণের সম্বন্ধে নরবালক বা মধুর-  
নরাকার স্বরূপ শ্রীকৃষ্ণের সহিত বিহার  
করিতে লাগিলেন ॥ ১৪ ॥

প্রভু কহে এহোত্তম আগে কহ আর ।  
রায় কহে বাৎসল্য-প্রেম সর্বসাধ্যসার ॥ ২৮ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে অষ্টমাধ্যায়ে  
ষট্চত্বারিংশোলোকঃ—  
নন্দঃ কিমকরোদ্ভ্রুক্ণ শ্রেয় এবং মহোদরম্ ।  
যশোদা বা মহাতাগা পপৌ যস্যঃ স্তনং হরিঃ ॥ ১৫ ॥

(হে) ব্রহ্মন্! নন্দ এবং মহোদরং শ্রেয়ঃ  
কিম্ অকরোৎ? মহাতাগা যশোদা বা (কিম্  
অকরোৎ) হরিঃ যস্যঃ স্তনং পপৌ ॥ ১৫ ॥

হে ব্রহ্মন্! নন্দ মহাকলঙ্কনক এমন কি  
শ্রেয়স্কর কর্ম আচরণ করিলেন, বাহাতে  
তিনি শ্রীকৃষ্ণকে পুত্ররূপে প্রাপ্ত হইলেন?  
আর মহাতাগা যশোদাই বা এমন কি  
আচরণ করিলেন, যে কারণে শ্রীহরি  
 তাঁহার পুত্র হইবার পূর্বক স্তনপান  
করিলেন? ॥ ১৫ ॥

তথাহি তত্ৰৈব নবমাধ্যায়ে বিংশোলোকে  
শুকদেববাক্যম্—  
নেমং বিরিকো ন ভবো ন শ্রীরণ্যঙ্গসংশ্রা ।  
প্রসাদং লেভিরে গোপী যতৎপ্রাপ বিমুক্তিদাৎ ॥ ১৬ ॥

বিমুক্তিদাৎ (কৃষ্ণাৎ) যৎ (যৎ প্রসাদং)  
গোপী (যশোদা) প্রাপ, তৎ (তম্) ইমং প্রসাদং  
ন বিরিকঃ ন ভবুঃ ন শ্রীঃ অঙ্গসংশ্রা (জারা)  
অপি লেভিরে ॥ ১৬ ॥

বিমুক্তিদাতা শ্রীকৃষ্ণ হইতে যে প্রসাদ  
গোপী যশোদা প্রাপ্ত হইলেন, সেই এই  
প্রসাদ ব্রহ্মা পুত্র হইয়াও শিব আত্মীয়  
হইয়াও এবং লক্ষ্মী অঙ্গাশ্রিতা ভার্য্যা  
হইয়াও লাভ করেন নাই ॥ ১৬ ॥

প্রভু কহে এহোত্তম আগে কহ আর ।  
রায় কহে কান্ত্যপ্রেম সর্বসাধ্যসার ॥ ২৯ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে সপ্তচত্বা-  
রিংশাধ্যায়ে ষট্চত্বারিংশোলোকঃ—

নারং শ্রিয়োহঙ্গ উ নিতাস্তরতে: প্রসাদঃ  
 স্বর্গোষিতাং নলিনগন্ধকচাং কুতোহস্তাঃ ।  
 রাসোৎসবেহস্ত ভুজদণ্ডগৃহীতকণ্ঠ-  
 লকাশিবাং য উদগাং ব্রজসুন্দরীগাম্ ॥ ১৭ ॥

রাসোৎসবে অস্ত্র (শ্রীকৃষ্ণস্ত) ভুজদণ্ড-  
 গৃহীতকণ্ঠলকাশিবাং (ভুজদণ্ডাভ্যাং গৃহীতঃ  
 আলিঙ্গিতঃ কণ্ঠঃ যেন তেন লকাঃ আশিবাঃ  
 মনোরথাঃ যান্তি: ভাসাং) ব্রজসুন্দরীগাং য অয়ং  
 প্রসাদঃ উদগাং (আবির্ভবঃ, স ভগবৎ-প্রসাদঃ)  
 নলিনগন্ধকচাং (নলিনস্ত্রৈব গন্ধো রুক্ কান্তিষ্ঠ  
 বাসাং ভাসাং) স্বর্গোষিতাং ন (অভূৎ) উ  
 (অহো) অঙ্গে (বন্ধসি) নিতাস্তরতে: (একান্ত-  
 রতিমত্যা:) শ্রিয়ঃ (লক্ষ্ম্যা: অপি অয়ং প্রসাদঃ  
 নাত্বং) অস্তাঃ (শ্রিয়ঃ তু) কুতঃ (এবং প্রসাদ-  
 বিষয়া: স্য:) ॥ ১৭ ॥

রাসোৎসবে শ্রীকৃষ্ণের ভুজদণ্ড দ্বারা  
 কণ্ঠে গৃহীত ও তদ্বারা লক্ষ মনোরথ  
 হইয়া ব্রজসুন্দরীগণ যে প্রসাদ প্রাপ্ত  
 হইয়াছেন, অন্যান্য কামিনীর কথা দূরে  
 থাকুক, পদ্মগন্ধা ও কমলকান্তি স্বর্গ  
 কামিনীরাও সেই প্রসাদ প্রাপ্ত হন  
 নাই; এবং বক্ষঃস্থলে একান্তরতিমতী  
 স্বয়ং লক্ষ্মীদেবীও সেই প্রসাদ পান  
 নাই ॥ ১৭ ॥

তথাহি আদিলীলারং, পঞ্চমে একবিংশ-  
 শ্লোকধৃতঃ শ্রীমত্তাগবতবচনম্—

ভাসামাবিরভূচ্ছোরি: স্মরমানমুখাধুরঃ ।  
 পীতাম্বরধরঃ স্রগী সাক্ষান্নম্মথম্মথঃ ॥ ১৮ ॥

কৃষ্ণপ্রাণ্ডির উপায় বলবিধ হয় ।  
 কৃষ্ণপ্রাণ্ডের তারতম্য বলত আছে ॥  
 কিন্তু যার যেই ভাগ সেই সর্কোস্তম ।  
 তটস্থ হৃগম পিচারিলে আছে তারতম ॥৩০

তথাহি আদিলীলারং চতুর্থে পঞ্চমশ্লোকধৃতঃ  
 রসামৃতোক্ত শ্রীকৃষ্ণগোপ্যমিবচনম্—  
 যথোত্তরমসৌ স্বাহ বিশেষোপ্লাসমযাপি ।  
 রতিবাসনয়া স্বাহী ভাসতে কাপি কস্তচিৎ ॥১৯॥

পূর্ক পূর্ক রসের গুণ পরে পরে হয় ।  
 দুই তিন গণনে পঞ্চ পর্য্যন্ত বাঢ়য় ।  
 গুণাপিক্যে স্বাদাদিক্য বাঢ়ে প্রতিরসে ।  
 শান্তদাস্য, সখ্যবাৎসল্যের গুণমধুরেতে বৈসে  
 আকাশাদির গুণ যেন পর পর ভূতে ।  
 দুই তিন ক্রমে বাঢ়ে পঞ্চ পৃথিবীতে ॥৩১॥  
 পরিপূর্ণ কৃষ্ণপ্রাণ্ডি এই প্রেম হইতে ।  
 এই প্রেমের বশ কৃষ্ণ কহে ভাগবতে ॥৩২

তথাহি আদিলীলারং চতুর্থে তৃতীয়শ্লোক-  
 ধৃতঃ শ্রীমত্তাগবতবচনম্—  
 মরি ভক্তি হি ভূতানামমৃতস্বায় কল্পতে ।  
 দিষ্ট্যা যদাসীন্নংসেহো তবতীনাং মদাপনঃ ॥২০॥

কৃষ্ণের প্রতিজ্ঞা দৃঢ় সর্বকাল আছে ।  
 যে যৈছে ভজে কৃষ্ণ তারে ভজে তৈছে ॥৩৩

তথাহি আদিলীলারং চতুর্থে দ্বিতীয়শ্লোক-  
 ধৃতঃ শ্রীশ্রীভাবচনম্—  
 বে যথা মাং প্রপশ্বস্তে তাংস্তথৈব ভজাম্যহম্ ।  
 মম বদ্যাত্মগুণস্তে মহুযাঃ পার্শ্ব সর্কণঃ ॥ ২১ ॥

এই প্রেমার অনুরূপ না পারে ভক্তিতে ।  
 স্ততএব ঋণী হয় কহে ভাগবতে ॥ ৩৪ ॥

তথাহি আদিলীলারং চতুর্থে একোনত্রিংশঃ  
 শ্লোকধৃতঃ শ্রীমত্তাগবতবচনম্—  
 ন পারয়েহং নিরবস্তসংযুজাং  
 স্বসাদুকৃত্যং বিব্ধাযুযাপি বঃ ।  
 বা মাতলন্থ হৃঙ্করণেহশুভালাঃ  
 সংবৃণ্য ত্বঃ প্রতিবাতু সাধুনা ॥ ২২ ॥

বদ্যপি কৃষ্ণসৌন্দর্য মাধুর্যের ধূর্য ।  
ব্রজদেবীর সঙ্গে তাঁর বাঢ়য়ে মাধুর্য ॥৩৩॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ভ্রমত্রিংশাধ্যায়ে ষষ্ঠ-  
শ্লোকঃ—

তত্রাতিশুভতে তাত্তির্ভগবান্ দেবকীমুতঃ ।  
মধ্যে মণীনাং হৈমানাং মহামারকতো যথা ॥২৩॥

তত্র ( রাসমণ্ডলে ) হৈমানাং ( সুবর্ণরচি-  
তানাং ) মণীনাং ( ধরোঃ ধরোঃ ) মধ্যে মহা-  
মারকতঃ যথা ( ইব ) তাত্তিঃ ( গোপীতিঃ বৃতঃ )  
ভগবান্ দেবকীমুতঃ অতিশুভতে ॥ ২৩ ॥

সুবর্ণ দ্বারা রচিত দুইটি দুইটি মণির  
মধ্যে এক একটি ইন্দ্রনীলমণির ন্যায়  
যশোদানন্দন ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ ঐ রাস-  
মণ্ডল মধ্যে গোপীমণ্ডলে পরিবৃত হইয়া  
অতিশয় শোভা পাইতে লাগিলেন ॥২৩॥

প্রভু কহে এই মাধ্যাবধি স্মৃনিশ্চয় ।  
রূপা করি কহ যদি আগে কিছু হয় ॥  
রায় কহে ইহার আগে পুছে হেন জনে ।  
এতদিন নাহি জানি আছয়ে ভুবনে ॥  
ইহার মধ্যে রাধার প্রেম সাপাশিরোগণি ।  
ইহার মহিমা সর্কশান্ত্রে তে বাখানি ॥৩৩॥

তথাহি আদিলীলার্নঃ চতুর্থে একোনচত্বা-  
রিংশশ্লোকধৃতঃ পদ্মপুরাণ বচনম্—

যথা রাধাপ্রিয়া বিকোন্তস্তাঃ কুণ্ডং প্রিয়ং তথা ।  
সর্কগোপীমু স্টেবকা বিকোরভ্যন্তবলভা ॥ ২৪ ॥

তথাহি আদিলীলার্নঃ চতুর্থে চতুর্দশশ্লোক-  
ধৃতঃ শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

অনরা রাধিতো নুনং ভগবান্ হরিরীধরঃ ।  
বমো বিহার গোবিলঃ প্রীতো বামনসভ্রং ॥ ২৫ ॥

প্রভু কহে আগে কহ শুনি পাইয়ে মুখে ।  
অপূর্ক অম্বতনদী বহে তোমার মুখে ॥

চুরি করি রাধাকে নিল গোপীগণের ডরে ।  
অন্যাপেক্ষা হৈলে প্রেমের গাঢ়তা না ক্ষুরে  
রাধা লাগিগোপীরে যদি সাক্ষাৎকরেত্যাগ ।  
তবে জানি রাধায় কৃষ্ণের গাঢ় অনুরাগ ॥৩৩॥  
রায় কহে তাঁহার শুন প্রেমের মহিমা ।

ত্রিঞ্জগতে নাহি রাধা প্রেমের উপমা ॥  
গোপীগণের রাগনৃত্য-মণ্ডলী ছাড়িয়া ।  
রাধা চাহি বনে ফিরে বিলাপ করিএঃ ॥৩৬॥

তথাহি আদিলীলার্নঃ চতুর্থে একচত্বরিংশ  
শ্লোকধৃতঃ গীতগোবিন্দোক্ত ভ্রমদেববাক্যম্—

কংসারিরপি সংসারবাসনাবন্ধশৃঙ্খলান্ ।  
রাধামাধায় ক্ৰময়ে তত্যাগ ব্রহ্মসুন্দরীঃ ॥২৬॥

তথাহি শ্রীগীতগোবিন্দে তৃতীয়সর্গে দ্বিতীয়-  
শ্লোকঃ—

ইতস্তত্তত্তামমুসৃত্য রাধিকা-  
মনক্ৰবাণত্রপথিন্নমানসঃ ।  
কৃতাস্ততাপঃ স কলিন্দনন্দিনী-  
তটাস্তকুঞ্জে বিষসাদ মাধবঃ ॥ ২৭ ॥

অনক্ৰবাণত্রপথিন্নমানসঃ ( কামবাণত্রপেণ থিন্নং  
মানসঃ যস্য সঃ ) কৃতাস্ততাপঃ ( অহো তস্তাঃ  
সর্কোত্তমতাং জানন্তাপি মন্দথিয়া মরা কথমেবং  
কৃতমিত্তি কৃতঃ পশ্চাত্তাপো যেন সঃ ) স ( এব )  
মাধবঃ ( রাধাহুরাগতন্ত্রিত্তাকুলঃ ) ইতস্ততঃ তাং  
রাধিকাম্ অমুসৃত্য ( অথিবা ) কলিন্দনন্দিনী-  
তটাস্তকুঞ্জে ( কলিন্দনন্দিত্তাঃ যমুনারাঃ তটপ্রান্ত-  
কুঞ্জে ) বিষসাদ ( বিষাদং চকার ) ॥ ২৭ ॥

অনক্ৰবাণত্রাঘাতে থিন্নমনা এবং অমু-  
তাপকারী শ্রীকৃষ্ণ ইতস্ততঃ শ্রীরাধাকে  
অশ্বেষণ করতঃ যমুনার তটপ্রান্তকুঞ্জে  
বিবাদ করিয়াছিলেন ॥ ২৭ ॥

এই দুই শ্লোকের অর্থ বিচারিলে জানি ।  
বিচারিতে উঠে যেন অমৃতের খনি ॥  
শতকোটি গোপীসঙ্গে রাসবিলাস ।  
তার মধ্যে এক মূর্তি রহে রাধাপাশ ॥  
সাধারণ প্রেম দেখি সর্বত্র সমতা ।  
রাধার কুটিল প্রেম হইল বামতা ॥ ৩৯ ॥

তথাহি উজ্জলনীলমণৌ শৃঙ্গারভেদকথনে  
ত্রিচংগরিংশ্লোকঃ—

অহেরিব গতি প্রেমঃ স্বভাবকুটীলা ভবেৎ ।  
অতো হেতোয়হেতোশ্চ যুনোর্মাম উদকতি ॥২৮

অহেঃ (সর্পস্ত) ইব প্রেমঃ গতিঃ স্বভাব-  
কুটীলা ভবেৎ । অতঃ হেতোঃ অহেতোঃ চ  
যুনোঃ (নায়িকানায়কয়োঃ) মান উদকতি ॥২৮॥

সর্পের ন্যায় প্রেমের স্বভাবতই  
কুটিলগতি । এই নিসিদ্ধ কোন কারণ  
থাকুক বা না থাকুক, নায়ক ও নায়িকার  
সহজেই মানের উদয় হইয়া থাকে ॥২৮॥

ক্রোধ করি রাস ছাড়ি গেলা মান করি ।

তারে না দেখিয়া ব্যাকুল হইলা শ্রীহরি ॥

সম্যক বাসনা কৃষ্ণের ইচ্ছা রাসলীলা ।

রাসলীলা বাসনায় একা রাধিকা শৃঙ্খলা ॥

তাহা বিনু রাসলীলা নাহি ভায় চিন্তে ।

মণ্ডলী ছাড়িয়া গেলা রাধা অশ্বেষিতে ॥৪০

ইতস্ততঃ ভ্রমি কাঁহা রাধা না পাইয়া ।

বিষাদ করেন কামবাণে খিন্ন হয় ॥

শতকোটি গোপীতে নহে কাম নির্দাপণ ।

ইহাতেই অনুমানি শ্রীরাধিকার গুণ ॥৪১॥

প্রভু কহে যে লাগি আইলাওতোমাস্থানে ।

সেই সব রসবস্ত-তত্ত্ব হৈল জ্ঞানে ॥

এইত জানিল সেব্য সাধ্যের নির্ণয় ।

আগেআরকিছুআমারশুনিতেমন হয় ॥৪২॥

কৃষ্ণের স্বরূপ কহ রাধিকা-স্বরূপ ।

রস কোন তত্ত্ব, প্রেম কোন তত্ত্ব রূপ ॥

কৃপা করি এই তত্ত্ব কহিত আমারে ।

তোমাবিনেইহাকেহোনিরূপিতেনারে ॥৪৩॥

রায় কহে ইহা আমি কিছুই না জানি ।

যে তুমি কহাও সেই কহি আমি বাণী ॥

তোমার শিক্ষায় পঢ়ি যেন শুকের পাঠ ।

সাক্ষাৎ ঈশ্বর তুমি কে বুঝে তোমার নাট ॥

হৃদয়ে প্রেরণ করি জিহ্বায় কহাও বাণী ।

কি কহিয়ে ভাল মন্দ কিছুই না জানি ॥৪৪

প্রভু কহে মায়াবাদী আমি ত সন্ন্যাসী ।

ভক্তিতত্ত্ব নাহি জানি মায়াবাদে ভাসি ॥

সার্কভৌম সঙ্গে মোর মন নির্দল হৈল ।

কৃষ্ণভক্তি তত্ত্ব কথা তাহারে পুছিল ॥

তেহো কহে আমি নাহি জানি কৃষ্ণকথা ।

সবে রামানন্দ জানেনতঁহোনাহিএথা ॥৪৫

তোমাস্থানেআইলাওতোমারমহিমাশুনিয়া

তুমি মোরে স্তুতি কর সন্ন্যাসী জানিয়া ॥

কিবা বিপ্র কিবা শূদ্র শ্রাস্তী কেনে নয় ।

যেই কৃষ্ণতত্ত্ববেত্তা সেই গুরু হয় ॥ ৪৬॥

সন্ন্যাসী বলিয়া মোরে না কর বঞ্চন ।

রাধাকৃষ্ণতত্ত্ব কহি পূর্ণ কর মন ॥

যদ্যপি রায় প্রেমী মহাভাগবতে ।

তার মন কৃষ্ণমায়া নারে আচ্ছাদিতে ॥

তথাপি প্রভুর ইচ্ছা পরম প্রবল ।

জানি তঁহো রায়ের মন হৈল টলমল ॥৪৭

রায় কহে আমি নট তুমি সূত্রধার ।

যেমত নাচাহ তৈছে চাহি নাচিবার ॥

মোর জিহ্বা বীণাযন্ত্র তুমি বীণাধারী ।

তোমার মনে যেই উঠে তাহা উচ্চারী ॥৪৮

ঈশ্বর পরম কৃষ্ণ স্বরূপ ভগবান্ ।

সর্ব অবতারী সর্ব কারণ প্রধান ॥

অনন্ত বৈকুণ্ঠ আর অনন্ত অবতার ।  
অনন্ত ব্রহ্মাণ্ড ইহা সবার আধার ॥  
সচ্চিদানন্দ তনু শ্রীব্রহ্মেশ্বরানন্দন ।  
সর্কৈশ্বর্য্য সর্কৈশক্তি সর্কৈরসপূর্ণ ॥ ৪৯ ॥

তথাহি আদিলীলারঃ দ্বিতীয়ে অষ্টাদশ-  
শ্লোকখুতঃ ব্রহ্মসংহিতাবচনম্—  
ঈশ্বরঃ পরমঃ কৃষ্ণঃ সচ্চিদানন্দবিগ্রহঃ ।  
অনাদিরাদিগোবিন্দঃ সর্কৈকারণতারণম্ ॥ ২৯ ॥

ব্রহ্মাবনে অপ্রাকৃত নবীনমদন ।  
কামগায়ত্রী কামবীজে য়াঁর উপাসন ॥  
পুরুষ যোষিৎ কিবা স্থাবর জঙ্গম ।  
সর্কৈচিত্তাকর্ষক সাক্ষান্নম্মণমদন ॥ ৫০ ॥

তথাহি আদিলীলারঃ পঞ্চমে একবিংশ  
শ্লোকখুতঃ শ্রীমন্তাগবতবচনম্—  
তামামাবিরভূচ্ছোরিঃ স্মরমানমুখাশুভঃ ।  
পীতাম্বরধরঃ সখী সাক্ষান্নম্মণমগ্নথঃ ॥ ৩০ ॥

নানাভক্তে রসামৃত নানাবিধ হয় ।  
সেই সব রসামৃতের বিষয় আশ্রয় ॥ ৫১ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিদ্ধৌ প্রথমলহর্যাং  
প্রথমশ্লোকঃ—  
অখিলরসামৃতমূর্ত্তিঃ প্রস্মরকচিরুদ্ধতারকাপালিঃ ।  
কলিতশ্চামাললিতো রাধাপ্রেয়ান্ বিধুর্জয়তি ॥৩১॥

অখিলরসামৃতমূর্ত্তিঃ (অখিলাঃ রসাঃ বক্ষ্যমাণাঃ  
শাস্তাদ্যাঃ দ্বাদশরসাঃ যস্মিন্ তাদৃশম্ অমৃতং  
পরমানন্দঃ এব মূর্ত্তিঃ যস্য সঃ) প্রস্মরকচিরুদ্ধ-  
তারকাপালিঃ ( প্রস্মররাভিঃ প্রস্মরণলীলাভিঃ  
কচিভিঃ কান্তিভিঃ কৃৎসে বশীকৃতে তারকাপালী  
যেন সঃ) কলিতশ্চামাললিতঃ ( কলিতে আত্মসাৎ-  
কৃতে শ্চামা শ্চামলা ললিতা চ যেন সঃ) রাধা-  
প্রেয়ান্ ( রাধায়াঃ প্রেয়ান্ অতিশয়েন শ্রীভিকর্জা)

বিধুঃ ( বিধুনোতি খণ্ডয়তি সর্কৈদ্বঃখম্ অতিক্রামতি  
সর্কৈক্ষেতি, যথা বিদধাতি কয়োতি সর্কৈদ্বঃখং  
সর্কৈক্ষেতি) জয়তি ।

শ্লেষার্থঃ—অখিলরসামৃতমূর্ত্তিঃ (অখিলাঃ অখণ্ডঃ  
রসঃ আত্মাদঃ বত্র তাদৃশম্ অমৃতং পীযুষং তদাশ্বি-  
কৈব মূর্ত্তিঃ যশুলং যস্য সঃ) প্রস্মরকচিরুদ্ধ-  
তারকাপালিঃ ( প্রস্মররাভিঃ কচিভিঃ কান্তিভিঃ  
কৃৎসা আবৃত্তা তারকাপাং পালিঃ শ্রেণী যেন সঃ ।  
ইতি পূর্ক্বেবং নিজকান্তিবশীকৃত-কান্তিমতীগণ-  
বিরাজমানস্বাংশেনাপি জ্জয়ং ) কলিতশ্চামাললিতঃ  
( কলিতম্ উরীকৃতং শ্চামায়াঃ রাভ্রেঃ ললিতং  
বিলাসঃ যেন স ইতি রাভ্রিবিলাসিভ্বেনাপি জ্জয়ং )  
রাধাপ্রেয়ান্ ( রাধায়াং বিশাখানায়াং তারানাং  
প্রেয়ান্ অধিকপ্ৰীতিমান্ । ঋতুরাজপূর্ণিমায়াং  
তদনুগামিভ্যাং ইতি তদনুগতিমাত্রসাধ্যবৈভব-  
বিজ্ঞস্বাংশেনাপি জ্জয়ং ) বিধুঃ ( পূর্ণচন্দ্রঃ) জয়তি  
( সর্কৈত উৎকর্ষণে বর্জিত ) ॥ ৩১ ॥

যাঁহার আনন্দময় মূর্ত্তি শাস্তাদি দ্বাদশ  
রসের আশ্রয়স্বরূপ, যাঁহার অতুল কান্তি  
বিস্তার অবলোকন করিয়া তারকা ও  
পালিকা নামী গোপীদ্বয় বিমুগ্ধ হইয়াছেন  
এবং যিনি শ্চামা ও ললিতাকে আত্মগত  
করিয়াছেন ; শ্রীরাধার পরম প্রেয়ভাস্কর  
নিখিল সুখ-বিধানকারী সেই শ্রীকৃষ্ণ  
জয়যুক্ত হউন ॥

শ্লেষার্থঃ—যাঁহার মূর্ত্তি-নিঃসৃত অমৃত  
ধারাকে জীবগণ অখণ্ডরূপে আত্মাদন  
করে, যিনি স্বীয় প্রস্মরণশীল কিরণসমূহ  
দ্বারা তারকানিকরে আত্মত থাকেন এবং  
যিনি ষামিনী কামিনীর সহিত বিলাস  
অঙ্গীকার করিয়াছেন, তারাসুন্দরী  
বিশাখার পরম প্রেমাস্পদ সেই পূর্ণচন্দ্রই  
জ্যোতিষ্কগণের মধ্যে শ্রেষ্ঠ ॥ ৩১ ॥

শৃঙ্গার রসরাজময়মূর্তিধর ।

অতএব আত্মপর্য্যন্ত সৰ্ব্বচিত্তহর ॥ ৫২ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে ষিচবারিংশ-  
শ্লোকধৃত শ্রীগীতগোবিন্দোক্ত শ্রীজয়ধেববাক্যম্—  
বিবেধানমুরঞ্জনেন জনয়দ্রানন্দমিন্দীবর-  
শ্ৰেণীশ্চামলকোমলৈরুপনয়নৈরনমস্কোৎসবম্ ।  
সুজ্ঞানং ব্রজসুন্দরীভিরভিত্তঃ প্রত্যঙ্গমাণিদিত্তঃ  
শৃঙ্গারঃ সখি মূর্তিমানিব মধো মুগ্ধো হরিঃ ক্রীড়িতা ৩২ ॥

লক্ষ্মীকান্ত আদি অবতারের হরে মন ॥ ৫৩ ॥

তথাচি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে একোনবতি-  
তমাধ্যায়ে ষাট্রিংশশ্লোকে শ্রীকৃষ্ণার্জুনে প্রক্তি  
ভূমাপুরুষবাক্যম্—

দ্বিজাস্বজ্ঞা মে যুবরেদিদৃক্ষুণা  
ময়োপনীতা ভূবি ধর্মগুপ্তয়ে ।  
কলাবতীর্ণাববনের্ভরাসুরান্  
হবেহ ভূয়স্তরয়েতমস্তি মে ॥ ৩৩ ॥

ধর্মগুপ্তয়ে কলাবতীর্ণো ( কলাভিঃ সর্বাভিঃ  
শক্তিভিঃসুক্লাবতীর্ণো সর্বাংশসম্বলিততয়া প্রকটো)  
যুবয়োঃ ( যুবাং ) দিদৃক্ষুণা মে ( মম ) ভূবি ( ধামি)  
দ্বিজাস্বজ্ঞাঃ ময়া উপনীতা ( আনীতা ) ভূয়ঃ  
( পুনরাপ ) অবনোঃ ( অবশিষ্টান্ ) ভরাসুরান্  
হতা ইহ মে ( মম ) অস্তি ( সমীপায় ) তরয়েতং  
( শীঘ্রং প্রস্থাপয়েতম্ ) ॥ ৩৩ ॥

হে কৃষ্ণার্জুন ! ধর্মরক্ষার্থ তোমরা  
দুই জন নিখিল শক্তিগণ সহ পৃথিবীতে  
প্রকট হইয়াছ। তোমাদিগকে দেখি-  
বার জন্য আমি দ্বিজবালকগণকে এখানে  
আনয়ন করিয়াছি। পুনরায় অবশিষ্ট  
অবনীর ভারভূত অসুরগণকে বধ করিয়া  
আমার নিকট প্রেরণ কর ॥ ৩৩ ॥

লক্ষ্মী আদি নারীগণে করে আকর্ষণ ॥ ৫৪ ॥

তথাহি তটৈত্রব বোড়শাধ্যায়ে ষট্রিংশশ্লোকে  
শ্রীকৃষ্ণং প্রতি নাগপত্নীবাক্যম্—

কস্যানুভাবোহস্ত ন দেব বিদ্যহে  
তবজিৎ রেণু স্পর্শাধিকারঃ ।  
যদ্বাহুয়া শ্রীর্ললনাচরন্তপো  
বিহায় কামান্ সূচিরং ধৃতব্রতা ॥ ৩৪ ॥

যদ্বাহুয়া ( যস্য ত্বদজিৎ রেণু স্পর্শাধিকারস্ত  
বাহুয়া ) শ্রীর্ললনা ( শ্রীঃ এব ললনা উত্তমা স্ত্রী )  
সর্কান্ কামান্ বিহায় ধৃতব্রতা ( সতী ) সূচিরং  
তপঃ অচরৎ, অস্ত ( নীচস্য অপি ) তব অজিৎ-  
রেণু স্পর্শাধিকারঃ অস্যা ( তপ-আদেঃ সূকৃতস্য )  
অনুভাবঃ ( কলম্ ইতি বিশেষতঃ ) ন বিদ্যহে ॥ ৩৪

হে দেব ! যে চরণরেণু স্পর্শাধি-  
কারের প্রাত্যাশায় লক্ষ্মী কামনা ত্যাগ  
পূর্ব্বক ধৃতব্রতা হইয়া সূচির কাল তপস্যা-  
চরণ করেন ; এই সর্পরূপ নিকৃষ্ট জীব,  
তোমার লক্ষ্মীসেব্য দুর্লভ চরণরেণু  
স্পর্শাধিকার কোন সূকৃতির ফলে প্রাপ্ত  
হইল, তাহা জানি না ॥ ৩৪ ॥

আপনার মাধুর্য্যে হরে আপনার মন ।  
আপনে আপনাচাহেকরিতে আলিঙ্গন ॥ ৫৫ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে বিংশশ্লোকধৃত  
শ্রীললিতমাধবচনম্—

অপরিকলিতপূর্ব্বঃ কশ্চনংকারকারী  
ক্ষুরতি মম গরীয়ানেষ মাধুর্য্যাপুরঃ ।  
অয়মহমপি হস্ত শ্রেক্ষ্য যঃ লুক্চেতাঃ  
সরভসমূপভোক্তুং কাময়ে রাধিক্বেব ॥ ৩৫ ॥

সজ্ঞেপে কহিল এই কৃষ্ণের স্বরূপ ।  
এবে সজ্ঞেপে কহি শুন রাধাতত্ত্বরূপ ॥  
কৃষ্ণের অনন্তশক্তি তাতে তিন প্রধান ।  
চিহ্নিত্তি মার্য্যশক্তি জীবশক্তি নাম ॥

অস্তরঙ্গাঃবহিরঙ্গা তটস্থা কহি ষারে ।  
অস্তরঙ্গা স্বরূপশক্তি সবার উপরে ॥ ৫৬ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং সপ্তমে সপ্তমশ্লোকধৃতঃ  
শ্রীবিষ্ণুপুরাণবচনম্—

বিষ্ণুশক্তিঃ পরা প্রোক্তা ক্ষেত্রজাখ্যা তথাপরা ।  
অবিদ্যাকর্মসংক্রান্তা তৃতীয়া শক্তিরিযাতে ॥ ৩৬ ॥

সং চিৎ আনন্দময় কৃষ্ণের স্বরূপ ।  
অতএব স্বরূপশক্তি হয় তিন রূপ ॥  
আনন্দাংশেঃহ্লাদিনী সদংশে সন্ধিনী ।  
চিদংশে সশ্বিৎষারে জ্ঞান করি মানি ॥৫৭

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে নবমশ্লোকধৃতঃ  
শ্রীবিষ্ণুপুরাণবচনম্—

হ্লাদিনীসন্ধিনীসংবিষয়োকাসর্বসংস্থিতৌ ।  
হ্লাদতাপকরী মিশ্রা স্থি নো গুণবর্জিতৈ ॥ ৩৭ ॥

কৃষ্ণকে আহ্লাদে তাতে নাম আহ্লাদিনী  
সেই শক্তিদ্বারে সুখ আশ্বাদে আপনি ॥  
সুখরূপ কৃষ্ণ করে সুখ আশ্বাদন ।  
ভক্তগণে সুখ দিতে হ্লাদিনী কারণ ॥৫৮॥  
হ্লাদিনীর সার অংশ তার প্রেম নাম ।  
আনন্দচিন্ময়রস প্রেমের আখ্যান ॥  
প্রেমের পরম সার মহাভাব জানি ।  
সেই মহাভাবরূপা রাধাঠাকুরাণী ॥ ৫৯ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে একাদশশ্লোক-  
ধৃতঃ শ্রীউজ্জ্বলনীলমণিবচনম্—

ভয়োরণ্যভয়োরম্যে রাধিকা সর্বধাধিকা ।  
মহাভাবস্বরূপেরঃ গুণৈরতি বরীরসী ॥ ৩৮ ॥

প্রেমের স্বরূপ দেহ প্রোমে বিভাবিত ।  
কৃষ্ণের প্রেমসী শ্রেষ্ঠা জগতে বিদিত ॥৬০॥

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে ষাটশ্লোকধৃতঃ  
শ্রীভ্রমরধ্বজবচনম্—

আনন্দচিন্ময়রস প্রতিভাবিভাতি-  
ভাতি র্য এব নিজরূপত্তরা কলাভিঃ ।  
গোলোক এব নিবসত্যখিলাস্বভূতো  
গোবিন্দমাদিপুরুষঃ তমহং ভজামি ॥ ৩৯ ॥

সেই মহাভাব হয় চিন্তামণি সার ।  
কৃষ্ণবাঞ্জা পূর্ণ করে এই কার্য যার ॥  
মহাভাব চিন্তামণি রাধার স্বরূপ ।  
ললিতাদি সখী তাঁর কায়বৃষ্ণ রূপ ॥ ৬১ ॥  
রাধা প্রতি কৃষ্ণস্নেহ সুগন্ধি উদ্বর্তন ।  
তাতে অতি সুগন্ধি দেহ উজ্জ্বল বরণ ॥  
কারুণ্যামৃতধারায় স্নান প্রথম ।  
তারুণ্যামৃতধারায় স্নান মধ্যম ॥  
লাবণ্যামৃতধারায় তরুণি স্নান ।  
নিজ-লজ্জা শ্যাম পটে শাড়ী পরিধান ॥৬২॥  
কৃষ্ণঅনুরাগ দ্বিতীয় অরুণ বসন ।  
প্রণয় মান কঞ্চুলিকায় বন্ধ আচ্ছাদন ॥  
সৌন্দর্য্য কুঙ্কুম সখী প্রণয় চন্দন ।  
শ্মিত কান্তি কপূর তিনঅঙ্গেবিলেপন ॥৬৩  
কৃষ্ণের উজ্জ্বলরস মুগমদভর ।  
সেই মুগমদে বিচিত্রিত কলেবর ॥  
প্রচ্ছন্ন মান বাম্য ধর্ম্মিল্য বিহ্বাস ।  
ধীরাধীরাত্ম গুণ অঙ্গে পটবাস ॥ ৬৪ ॥  
রাগ তাম্বুলরাগে অধর উজ্জ্বল ।  
প্রেম কোটিল্য নেত্রযুগলে কজ্জল ॥  
সুদীপ্ত সাত্ত্বিকভাব ইর্যাদি সফারী ।  
এই সব ভাব ভূষণ প্রতি অঙ্গে ভরি ॥৬৫  
কিলকিঞ্চিতাদিভাব বিংশতি ভূষিত ।  
গুণশ্রেণী পুষ্পমালা সর্কাদ্দে পুরিত ॥৬৬॥  
সৌভাগ্যতিলক চারু ললাটে উজ্জ্বল ।  
প্রেমবৈচিত্র্য রত্ন হৃদয়ে তরল ॥ ৬৭ ॥  
মধ্য বয়স্থিতা সখী স্কন্ধে করন্যাস ।  
কৃষ্ণলীলা মনোরঞ্জিত সখী-আশপাশ ॥৬৮॥



নিজ্ঞান-সৌরভালয়ে গর্দ-পর্যাক ।  
তাতে বসিয়াছে সদা চিত্তে কৃষ্ণসঙ্গ ॥৬৯॥  
কৃষ্ণনাম গুণ যশ অবতংস কাণে ।  
কৃষ্ণনাম গুণ যশ প্রবাহ বচনে ॥  
কৃষ্ণকে করায় শ্রীমদস গধুপান ।  
নিরন্তর পূর্ণ করে কৃষ্ণের সর্বকাম ॥৭০॥  
কৃষ্ণের বিশ্বন্ধ-প্রেম রত্নের আকর ।  
অনুপম গুণগণে পূর্ণ কলেবর ॥ ৭১ ॥

তথাহি শ্রীগোবিন্দলীলামৃতে একাদশসর্গে  
ষাদশাধিকশততমশ্লোকে শ্রীরাধাকুন্দলতরোক্তিক্রি-  
প্রত্যুক্তি—

কা কৃষ্ণস্য প্রণয়জনিত্ত্বঃ শ্রীমতী রাধিকৈক্যা ।  
কাস্য প্রেমসামুপমগুণা রাধিকৈক্যা ন চাশ্রা ।  
লৈক্যাং কেশে দৃশি তরলতা নিষ্ঠুরত্বং কুচেহস্যঃ  
বাঙ্গা পূর্ত্যৈ প্রভবতি হরেবরাধিকৈক্যা ন চাশ্রা ॥৪০॥

কৃষ্ণস্য প্রণয়জনিত্ত্বঃ (প্রণয়স্যা উৎপত্তি ভূমিঃ)  
কা ? একা শ্রীমতী রাধিকা অস্য ( কৃষ্ণস্য )  
প্রেমসী কা ? অনুপমগুণা একা রাধিকা ন চ  
অশ্রা । অস্যাঃ ( রাধায়াঃ ) কেশে লৈক্যাং  
( কোটিয়াং ) দৃশি ( নয়নে ) তরলতা ( চঞ্চলতা )  
কুচে নিষ্ঠুরত্বং ( কাঠিন্যং, যৎ বর্ততে তস্যাং একা  
রাধিকা ) হরেঃ বাঙ্গাপূর্ত্যৈ ( বাঙ্গাং পূরয়িত্বং )  
প্রভবতি ন চ অশ্রা ( কাপি ) ॥ ৪০ ॥

শ্রীকৃষ্ণের প্রায়স্ংপত্তি স্থান কে ?  
কেবলমাত্র শ্রীমতী রাধিকা ; শ্রীকৃষ্ণের  
প্রিয়তমা কে ? অনুপমগুণা শ্রীরাধিকাই,  
অন্য কেহ নহে । শ্রীরাধার কেশে  
কৌটিল্য লোচনে চাঞ্চল্য ও স্তনযুগলে  
কাঠিন্য থাকায় ইনিই একমাত্র শ্রীকৃষ্ণের  
বাঙ্গা পূরণে সমর্থ ॥ ৪০ ॥

বঁহার সৌভাগ্যগুণ বাঞ্ছে সত্যভামা ।  
বঁার ঠাঞি কলা বিলাস শিখে ব্রজরামা

বঁার সৌন্দর্য্যাঙ্গিগুণ বাঞ্ছে লক্ষ্মীপার্কতী ।  
বঁার পতিব্রতা ধর্ম বাঞ্ছে অরুঙ্কতী ॥  
যার সঙ্গগুণগণের কৃষ্ণ না পান পারী ।  
তাঁর গুণ গণিবে কেমনে জীব ছার ॥৭২॥  
প্রভু কহে জানিল কৃষ্ণরাধা-প্রেমতত্ত্ব ।  
শুনিতে চাহিয়ে দৌহার বিলাস মহত্ব ॥  
রায় কহে কৃষ্ণ হয়ে ধীরললিত ।  
নিরন্তর কাংক্রীড়া বঁাহার চরিত ॥ ৭৩ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিদ্ধৌ দক্ষিণবিভাগে  
বিভাবলহর্যাং পঞ্চদশাধিকশততমশ্লোকে—  
বিদগ্ধো নবতাকুণ্যঃ পরিহাসবিশারদঃ ।  
নিশ্চিন্তো ধীরললিতঃ স্যাৎ প্রায়ঃ প্রেমসীবশঃ ॥৪১॥

বিদগ্ধঃ ( লীলাবিলাসময়ঃ ) নবতাকুণ্যঃ  
( নবযৌবনাস্থিতঃ নিত্যানুতনঃ ) পরিহাসবিশারদঃ  
নিশ্চিন্তঃ ( চিন্তাস্তররহিতঃ চ ) ধীরললিতঃ ( নায়কঃ )  
প্রায়ঃ প্রেমসী বশঃ ( প্রেমসীন্যং প্রেমবিশেষ-  
যুক্তানাং তারতম্যান বশীভূতঃ ) স্যাৎ ॥ ৪১ ॥

লীলাবিলাসময়, নবযুবা, পরিহাসপটু  
ও চিন্তাস্তররহিত নায়ককে ধীরললিত  
নায়ক বলে । ইনি প্রেমানুসারে প্রায়ই  
প্রেমসীর বশীভূত হন ॥ ৪১ ॥

রাত্রিদিনে কুঞ্জক্রীড়া করে রাধাসঙ্গে ।  
কৈশোর-বয়স সফল কৈল ক্রীড়ারঙ্গে ॥৪২॥

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে বোড়শশ্লোকধৃতং  
রসামৃতবচনম্—

বাচাস্পতিতর্করী-রতিকলাপ্রাগলভ্যস্মারাদিকাং  
ত্রীড়াকুঞ্চিতলোচনাং বিরচয়ন্ত্যে সখীনামসৌ ।  
তদ্বক্ষ্যকুচিয়কেনিমকরীপাণ্ডিত্যপারং গতঃ  
কৈশোরং সফলী কয়োতি

কলয়ন কুঞ্জে বিহারং হরিঃ ॥ ৪২ ॥

প্রভু কহে এই হয় আগে কহ আর ।  
রায় কহে ইহা বই বুদ্ধির গতি নাহি আর ॥  
যেবা প্রেমবিলাস-বিবর্ত এক হয় ।  
তাহা শুনি তোমার সুখ হয় কি না হয় ॥  
এত কহি আপন কৃত গীত এক গাইল ।  
প্রোমে প্রভু স্বহস্তে তার মুখ আচ্ছাদিল ॥৭৫

তথাহি গীতঃ ।

পহিলহি রাগ নয়নভঙ্গ ভেল ।  
অনুদিন বাঢ়ল অবধি না গেল ॥ ৭৬ ॥  
না সো রমণ না হাম রমণী ।  
ছুঁছ মন মনোভব পেশল জানি ॥  
এ সখি ! সো সব প্রেমকাহিনী ।  
কানুঠাসে কহবি বিচুরল জানি ॥ ৭৭ ॥  
না খোজলুঁ দূতী না খোজলুঁ আর্ন ।  
ছুঁছকে মিলনে মধত পাঁচবাণ ॥  
অবসোই বিরাগ তুছ ভেলি দূতী ।  
সুখরুখ প্রেমক ঐহন রীতি ॥ ৭৮ ॥

তথাহি শ্রীউজ্জ্বলনীলমণৌ স্থায়ীভাবকথনে  
দশাধিকশততমশ্লোকঃ—  
রাধায়্য ভবতশ্চ চিত্তজতুনী-শ্বৈদৈর্বিলাপ্য ক্রমাদ্  
বৃক্ষমজ্রিনিকুঞ্জকুঞ্জরপতে নিধৃতভেদভ্রমন্ ।  
চিত্রায় স্বয়ম্বরঞ্জয়মিহ ব্রহ্মাণ্ডহর্ষোদরে  
ভূয়োতির্নবরাগহিঙ্গুলভরৈঃ শৃঙ্গারকারুঃ কৃতী ॥৪৩॥

( হে ) অজ্রিনিকুঞ্জকুঞ্জরপতে ! শৃঙ্গারকারুঃ  
কৃতী ( নিপুণঃ ) রাধায়্যঃ ভবতঃ চ চিত্তজতুনী-  
শ্বৈদৈঃ ( চিত্তে এব জতুনী লাক্ষে শ্বৈদৈঃ তদাখা-  
সাখিকবিশেষবৃত্তিভিঃ অন্তর্বহিঃস্বরূপাভিঃ । পক্ষে-  
মুহুরিত্যতাপৈঃ ) ক্রমাৎ ( শটেনঃ শটেনঃ ) নিধৃত-  
ভেদভ্রমন্ ( নিধৃতঃ ভেদ এব ভ্রমঃ বস্মিন্  
তথাকৃতং বধাস্যান্তথা ) বৃক্ষন্ ( একীভাবেন  
মেলয়ন্ ) ইহ ব্রহ্মাণ্ডহর্ষোদরে ( ব্রহ্মাণ্ডেব হর্ষাৎ  
কন্যোদরে, বহু ব্রহ্মাণ্ডেযু যানি হর্ষাণি ধনিনাং

বাশাঃ তদ্বদরে তবর্ষিণিনিকনস্বদরে, অভিশমোক্ত্য  
তক্তজনাস্তঃকরণে ) চিত্রায় ( চিত্রলেখায়, পক্ষে  
আশ্চর্যায় ) ভূয়োভিঃ ( বহুভরৈঃ ) নবরাগহিঙ্গুল-  
ভরৈঃ স্বয়ম্ অধরঞ্জয় ॥ ৪৩ ॥

হে গোবর্দ্ধননিকুঞ্জবনস্বমস্তকরিরাজ !  
শৃঙ্গার কারুকার্যে সুনিপুণ শিল্পী,  
শ্রীরাধার ও তোমার চিত্তরূপ স্বৈদ  
অর্থাৎ অন্তর্বাছ দ্রবীভাবরূপ সাঙ্খিক-  
ভাব দ্বারা দ্রবীভূত করিয়া ভেদভ্রম  
নিরাশ পূর্নক মিশ্রিত করতঃ ব্রহ্মাণ্ড-  
হর্ষোদর চিত্রার্থ বহুতর নবরাগরূপ হিঙ্গুল  
দ্বারা স্বয়ং অনুরঞ্জিত করিয়াছ ॥ ৪৩ ॥

প্রভু কহে সাধ্যবস্ত অবধি এই হয় ।  
তোমার প্রসাদে ইহা জানিল নিশ্চয় ।  
সাধ্যবস্ত সাধন বিনু কেহো নাহি পায় ।  
রূপা করি কহ রায় পাবার উপায় ॥ ৭৯ ॥  
রায় কহে যে কহাও সেই কহি বাণী ।  
কি কহিয়ে ভাল মন্দ কিছই না জানি ॥  
ত্রিভুবন মধ্যে ঐছে আছে কোন্ ধীর ।  
যে তোমার মায়ানাটে হইবেক স্থির ॥  
মোর মুখে বক্তা তুমি, তুমি হও শ্রোতা ॥  
অত্যন্ত রহস্য শুন সাধনের কথা ॥  
রাধাকৃষ্ণের লীলা এই অতি গূঢ়তর ।  
দাস্য বাৎসল্যভাবের না হয় গোচর ॥৮০  
সবে এক সখীগণের ইহা অধিকার ।  
সখী হৈতে হয় এই লীলার বিস্তার ॥  
সখী বিনু এই লীলা পুষ্টি নাহি হয় ।  
সখী লীলাবিস্তারিঞা সখী আশ্বাদয় ॥৮১  
সখী বিনু এই লীলার নাহি অন্যের গতি ।  
সখীভাবে তাহা যেই করে অনুগতি ॥  
রাধাকৃষ্ণ কুঞ্জসেবা সাধ্য সেই পায় ।  
সেই সাধ্য পাইতে আর নাহিক উপায় ॥৮২

তথাহি শ্রীগোবিন্দলীলামৃতে দশমসর্গে সপ্ত-  
দশশ্লোকঃ—

বিভূরপি স্বরূপঃ স্বপ্রকাশোহপি ভাবঃ  
ক্ষণমপি নহি রাধাক্ষরো ধী ঋতে স্বাঃ ।  
প্রবহতি রসপুষ্টিং চিহ্নিত্বতীরিবেশঃ  
শ্রয়তি ন পদমাঙ্গং কঃ সখীনাং রসজ্ঞঃ ॥ ৪৪ ॥

ঈশ্বরঃ ( ঈশ্বরঃ ) চিহ্নিত্বতীঃ ( বিনা যথা পুষ্টিং  
ন প্রাপ্নোতি, তৎ ) ইব রাধাক্ষরোঃ ভাবঃ  
বিভূঃ ( পরম মহান্ ) অপি স্বরূপঃ ( আনন্দঘনঃ )  
স্বপ্রকাশঃ ( স্বয়ং প্রকাশরূপঃ ) অপি স্বাঃ ( স্বীয়াঃ  
তমোঃ রাধাক্ষরোঃ স্বরূপাঃ ) যাঃ ( সখীঃ, তাঃ )  
ঋতে ( বিনা ) রসপুষ্টিং ন হি প্রবহতি ( অতঃ )  
আঙ্গং সখীনাং পদং কঃ ( রসজ্ঞঃ ভক্তঃ ) ন  
শ্রয়তি ? ( অপিতু সর্বৈ আশ্রয়ন্ত্যেবেতি ভাবঃ ) ॥ ৪৪ ॥

ঈশ্বর চিহ্নিত্ব ব্যতীত যেমন পুষ্টি  
লাভ করেন না, তদ্রূপ রাধাক্ষরের  
ভাব সর্বব্যাপক আনন্দঘন ও স্বপ্রকাশ  
হইলেও সখী ব্যতীত ক্ষণকালের জন্যও  
রস পোষণ করিতে সমর্থ হয় না। অত-  
এব সেই সখীগণের পদ কোন্ রসজ্ঞ  
ব্যক্তি আশ্রয় না করেন ? ॥ ৪৪ ॥

সখীর স্বভাব এক অকথ্য কথন ।  
কৃষ্ণ সহ নিজলীলায় নাহি সখীর মন ॥  
কৃষ্ণ সহ রাধিকার লীলা সে করায় ।  
নিজকেলি হৈতেতাতে কোটিসুখপায় ॥ ৮৩ ॥  
রাধার স্বরূপ কৃষ্ণপ্রেম কল্পলতা ।  
সখীগণ হয় তার পল্লব পুষ্পপাতা ॥  
কৃষ্ণলীলামৃতে যদি লতাকে লিখয় ।  
নিজসেকহইতেপল্লবাদেরকোটিসুখহয় ॥ ৮৪ ॥

তথাহি শ্রীগোবিন্দলীলামৃতে দশমসর্গে ষোড়শ-  
শ্লোকঃ—

সখ্যাঃ শ্রীরাধিকায়্যা ব্রজকুমুদ-  
বিধোহ্লাদিনীনাশক্লেঃ  
সারাংশপ্রেমবল্ল্যাঃ কিশলয়-  
দলপুষ্পাদিতুল্যাঃ স্বতুল্যাঃ ।  
সিক্তায়াঃ কৃষ্ণলীলামৃতরস-  
নিচরৈরকল্পসন্ত্যামমুখ্যাম্  
জাতোল্লাসাঃ স্বসেকাচ্ছত গুণ-  
মধিকং সন্তি যতন চিত্রম্ ॥ ৪৫ ॥

ব্রজকুমুদবিধোঃ ( ব্রজরূপকুমুদানি তেভাম্  
আহ্লাদকতয়া বিধোঃ শ্রীকৃষ্ণস্ত ) হ্লাদিনীনাশ-  
শক্লেঃ ( হ্লাদিনীতি নাম্নী যা শক্তিঃ তস্তাঃ )  
সারাংশপ্রেমবল্ল্যাঃ ( সারাংশঃ যঃ প্রেমা স এব  
বল্লী লতা তস্তাঃ ) শ্রীরাধিকায়্যাঃ সখ্যাঃ ( ললিতা-  
নিশাখাদয়ঃ ) কিশলয়দলপুষ্পাদিতুল্যাঃ ( অতএব )  
স্বতুল্যাঃ ( রাধাসদৃশাঃ অতঃ ) কৃষ্ণলীলামৃতরস-  
নিচরৈঃ অমুখ্যাং ( রাধায়াম্ ) উল্লসন্ত্যাং ( চ সত্যং  
তাঃ সখ্যাঃ ) স্বসেকাৎ শতগুণম্ অধিকং জাতো-  
ল্লাসাঃ ( ভবন্তি, ইতি ) যৎ তৎ ন চিত্রম্ ॥ ৪৫ ॥

ব্রজকুমুদগণের আনন্দপ্রদ শ্রীকৃষ্ণ-  
চন্দ্রের হ্লাদিনী নাম্নী শক্তির সারাংশ  
মহাভাবরূপা শ্রীরাধালতার কিশলয় পত্র  
ও পুষ্পাদিতুল্যাসখীগণ। অতএব তাঁহারা  
শ্রীরাধাসদৃশা। এই হেতু কৃষ্ণলীলামৃত-  
রস দ্বারা রাধালতা সিক্ত হইয়া উল্লাস-  
যুক্ত হইলে পত্র পুষ্পাদিরূপ সখীগণের  
যে স্বীয় সেকজনিত সুখ হইতে শতগুণ  
অধিক সুখ হয়, ইহা আশ্চর্য্য নহে ॥ ৪৫ ॥

যদ্যপি সখীর কৃষ্ণসঙ্গমে নাহি মন ।  
তথাপি রাধিকা যত্নে করান সঙ্গম ॥  
নানা ছলে কৃষ্ণে প্রেরি সঙ্গম করায় ।  
আত্ম কৃষ্ণসঙ্গ হৈতে কোটি সুখ পায় ॥ ৮৫ ॥

অন্যোনে্যে বিমুক্ত প্রেমে করে রস পুষ্ট ।  
তা সবার প্রেম দেখি কৃষ্ণ হয় তুষ্ট ॥  
সহজে গোপীর প্রেম নহে প্রাকৃত কাম ।  
কামক্রিয়া-সাম্যোত্তারেকহেকামনাম ॥৮৬॥

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে পঞ্চবিংশশ্লোক-  
ধৃতং গৌতমীয়তন্ত্রবচনম্—  
প্রেমৈব গোপরামাণাং কাম ইত্যগমৎ প্রথাম্ ।  
ইতুঙ্কবাদয়োহিপত্যং বাঞ্ছন্তি ভগবৎ-প্রিয়াঃ ॥৪৬॥

নিজেঙ্গিয় সুখহেতু কামের তাৎপর্য্য ।  
কৃষ্ণসুখের তাৎপর্য্য গোপীভাব বর্ষ্য ॥  
নিজেঙ্গিয় সুখবাঞ্ছা নাহি গোপিকার ।  
কৃষ্ণে সুখ দিতে করে সঙ্গম বিহার ॥ ৮৭

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে ষড়বিংশশ্লোক-  
ধৃতং শ্রীমন্তাগবতবচনম্—  
যতে স্ফুটচরণাধ্বকং স্তনেশু  
ভীতাঃ শঠনৈঃ প্রিয় দমীমহি কর্কশেষু ।  
তেনাটবীমটসি তদ্ব্যথতে ন কিং-স্বিং  
কূর্পাদিভিন্নমতি বীর্ভবদায়ুযাং নঃ ॥ ৪৭ ॥

সেই গোপীভাবানুভবে যার লোভ হয় ।  
বেদধর্ম্ম সর্ম্মতেজি সেইকৃষ্ণেরেভজয় ॥৮৮॥  
রাগানুগামার্গে তারে ভঞ্জে যেই জন ।  
সেই জন পায় ব্রজে ব্রজেঙ্গনন্দন ॥ ৮৯ ॥  
ব্রজলোকের কোন ভাব লঞাযেই ভঞ্জে ।  
ভাবযোগ্য দেহ পাঞা কৃষ্ণ পায় ব্রজে ॥  
তাহাতে দৃষ্টান্ত উপনিষদ্ শ্রুতিগণ ।  
রাগমার্গে ভজি পাইল ব্রজেঙ্গনন্দন ॥৯০

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমস্কন্ধে সপ্তাশীতিভমা-  
ধ্যায়ে অমোবিংশশ্লোকে ভগবন্তমুদিত্ত বেনস্ততিঃ—  
নিভৃতমক্শ্মনোকদৃঢ়যোগযুক্তো হৃদি যশ্বনয়  
উপাসতে তদ্বয়মোহপি যয়ঃ স্মরণাৎ ।

ক্রিয় উরগেঙ্গভোগভুজদগুবিষক্ৰধিয়ো  
বয়মপি তে সমাঃ সমদৃশোহজিবুসরোজ মুখাঃ ॥৪৮॥

নিভৃতমক্শ্মনোকদৃঢ়যোগযুক্তঃ ( নিভৃতানি  
সংযমিতানি মক্শ্মনঃ মনঃ অক্ষাপি যৈঃ তে নিভৃত-  
মক্শ্মনোহক্ষাঃ তে চ তে চ দৃঢ়যোগং যুক্তস্তীতি  
দৃঢ়যোগযুক্তঃ চ তে ) মুনয়ঃ যৎ ( নির্কিংশেষাবি-  
র্ভাববিশেষমৎ ব্রহ্মাখ্যং তৎ ) হৃদি উপাসতে ( ধ্যায়ন্তি,  
অনুভবন্তি তু চিরাৎ ) তৎ ( এব তৎ ) অয়মঃ  
অপি স্মরণাৎ ( স্মরণমাত্রাৎ তেভ্যঃ প্রথমম্ এব )  
যয়ুঃ ( প্রাপুঃ তন্ন লীনা বভূবুঃ ) উরগেঙ্গভোগ-  
ভুজদগুবিষক্ৰধিয়ঃ ( উরগেঙ্গস্ত শেষস্ত ভোগঃ  
দেহঃ স্তৎ সমদৃশোঃ ভুজদগুযোঃ বিষক্ৰা ধীঃ যাসাং  
তাঃ ) ক্রিয়ঃ ( তব নিত্য-প্রেমস্তঃ শ্রীরাধাদয়ঃ যৎ  
যাঃ ) তে ( তব ) অজিবুসরোজমুখাঃ ( স্পর্শমাধু-  
র্য্যাপি হৃদি উপাসতে ) বয়ম্ অপি সমাঃ ( শ্রীমন্নন্দ-  
ব্রজগোপীভূ প্রাপ্ত্যা কায়বৃহৎ তন্তু ল্যারুপাঃ ) সম-  
দৃশঃ ( তন্তাবানুগতভাবাঃ চ সত্যঃ তাঃ যযিম ) ॥৪৮॥

প্রতিগণ কহিলেন, হে প্রভো ।  
প্রাণ মনঃ এবং ইঙ্গিয়গণ সংযম পূর্কক  
দৃঢ়যোগযুক্ত মুনিগণ হৃদয়ে যে তত্ত্ব উপা-  
ননা করেন, অরিবর্গ শক্রভাবে স্মরণ  
করিয়াও তাহাই প্রাপ্ত হইয়াছে । সর্প-  
দেহাকৃতি আপনার ভুজদগুে অতিশয়  
আসক্তচিত্ত গোপীগণ আপনার স্পর্শ  
মাধুর্য্য সাক্ষাৎ বক্ষঃস্থলে ভজন করেন ।  
আমরা ( শ্রুত্যভিমানী দেবতা ) তাহাতে  
অযোগ্য হইলেও, নন্দব্রজে গোপীদেহ  
প্রাপ্তিপূর্কক কায়বৃহৎ দ্বারা তাঁহাদের  
সদৃশা হইয়া তাঁহাদের ভাবের অনুগত  
ভাব লাভ করতঃ তোমার স্পর্শমাধুর্য্য  
অনুভব করিব ॥ ৪৮ ॥

সমদৃশ শব্দে কহে সেই ভাবে অনুগতি ।  
সমা শব্দে কহে শ্রুতির গোপীদেহ প্রাপ্তি ॥

অল্পি পদ্মাসুপা কহে কৃষ্ণসঙ্গানন্দ ।

বিধিসার্গে নাহি পায় ব্রজে কৃষ্ণচন্দ্র ॥৯১

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে নবমাধ্যায়ে  
বোধশ্লোকঃ—

নারং সুখাপো ভগবান্ দেহিনাং গোপিকাসুতঃ ।

জ্ঞানিনাঞ্চাত্মতানাং যথা ভক্তিসম্ভামিহ ॥৪৯৯

অয়ং গোপিকাসুতঃ ভগবান্ ইহ ( সংসারে  
বর্ষমানানাং ) যথা ভক্তিমতাং সুখাপঃ ( সুখেন  
আপ্যতে ইতি ) দেহিনাং ( দেহাভিমানিনাং  
ভাগসাদীনাং ) জ্ঞানিনাং ( নিবৃত্তাভিমানিনাম্ )  
আত্মতূতানাম্ ( আত্মজ্ঞানিনাং ) চ ( তথা সুখাপঃ )  
ন ॥ ৪৯ ॥

এই গোপিকাসুত ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ  
এই সংসারে বর্ষমান ভক্তিসমস্ত ব্যক্তি-  
গণের যেরূপ সুখলভ্য, দেহাভিমানী  
ভাপসগণের বা নিবৃত্তাভিমানী জ্ঞানী-  
দিগের তদ্রূপ সুখলভ্য নহেন ॥ ৪৯ ॥

অতএব গোপীভাব করি অঙ্গীকার ।  
রাত্রি দিনে চিন্তে রাধাকৃষ্ণের বিহার ॥  
দিক্‌দেহে চিন্তি করে তাহাঞি সেবন ।  
সখীভাবে পায় রাধাকৃষ্ণের চরণ ॥ ৯২ ॥  
গোপী অনুগতি বিনু ঐশ্বর্য্য জ্ঞানে ।  
ভজিলেহ নাহি পায় ব্রজেঙ্গনন্দনে ॥  
তাহাতে দৃষ্টান্ত, লক্ষ্মী করিল। ভজন ।  
তথাপি না পাইল ব্রজে ব্রজেঙ্গনন্দন ॥৯৩

তথাহি মধ্যনীলারাম্ অষ্টমে সপ্তদশশ্লোকধৃতং  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্ ।

নারং প্রিয়োহনু উ নিতান্তরতেঃ প্রসাদঃ  
অর্থোবিভাং নলিনগন্ধকচাং কুতোহস্তাঃ ।  
রাসোৎসবেহত তুঙ্গদগুহীতকর্ষ-  
লক্ষ্মাপিবাং বঃ উদগাদ্ ব্রজসুন্দরীণাম্ ॥ ৫০ ॥

এত শুনি প্রভু তারে কৈল আলিঙ্গন ।

দুইজন গলাগলি করেন ক্রন্দন ॥

এই মত প্রেমাবেশে রাত্রি গোঙাইলা ।

প্রাতঃকালে নিজনিজ কার্য্যে ছুঁহে গেলা ॥

বিদায় সময়ে প্রভুর চরণে ধরিয়।

রামানন্দ কহে কিছু বিনতি করিয়া ॥৯৪

মোরে রূপা করিতে প্রভুর ইহা আগমন ।

দিন দশ রহি শোধ মোর দুষ্ট মন ॥

তোমা বই অন্য নাহি জীব উদ্ধারিতে ।

তোমা বই অন্য নাহি কৃষ্ণপ্রেম দিতে ॥

প্রভু কহে আইলাম শুনি তোমার গুণ ।

কৃষ্ণকথা শুনি, শুদ্ধ করাইতে মন ॥

যেছেশুনিলতৈছে দেখিল তোমারমহিমা ।

রাধাকৃষ্ণপ্রেম-রস জ্ঞানেরতুঙ্গি সীমা ॥৯৫

দশ দিনের কা কথা যাবৎ আমি জীব ।

তাবৎ তোমার সঙ্গ ছাড়িতে নারিব ॥

নীলাচলে তুমি আমি রহিব একসঙ্গে ।

সুখে গোঙাইব কাল কৃষ্ণকথা-রঙ্গে ॥

এত বলি ছুঁহে নিজ নিজ কার্য্যে গেলা ।

সন্ধ্যাকালে রায় পুনঃ আসিঞা মিলিলা ॥

অন্যোন্মন্যমিলিঞা ছুঁহে নিভুতে বসিঞা ।

প্রশ্নোত্তর গোষ্ঠী করে আনন্দিত হঞা ॥

প্রভু পুছেন রামানন্দ করেন উত্তর ।

এই মত সেই রাত্রি কণা পরস্পর ॥ ৯৬ ॥

প্রভু কহে কোন্ বিদ্যা বিদ্যামধ্যে সার ॥

রায় কহে কৃষ্ণভক্তিবিহ্ন বিদ্যা নাহি আর ।

কীর্ত্তিগণমধ্যে জীবের কোন্ বড় কীর্ত্তি ।

কৃষ্ণভক্ত বলিয়া যাহার হয় খ্যাতি ॥

সম্পত্তি মধ্যে জীবের কোন সম্পত্তি গণি ।

রাধাকৃষ্ণে প্রেম যার সেই বড় ধনী ॥ ৯৭

দুঃখ মধ্যে কোন্ দুঃখ হয় গুরুতর ।

কৃষ্ণভক্ত বিরহ বিনু দুঃখ নাহি আর ॥

মুক্তমধ্যে কোন্ জীব মুক্ত করি মানি ।  
 কৃষ্ণপ্রেম ধীর সেই মুক্ত শিরোগণি ॥ ৯৮  
 গান মধ্যে কোন্ গান জীবের নিজধর্ম ।  
 রাধাকৃষ্ণের প্রেমকেলি যে গীতের মর্ম ॥  
 শ্রেয়ো মধ্যে কোন্ শ্রেয়ো জীবের হয় সার ।  
 কৃষ্ণভক্ত সঙ্গ বিনু শ্রেয়ো নাহি আর ॥  
 কাহার স্মরণ জীব করে অনুক্ষণ ।  
 কৃষ্ণনাম গুণ লীলা প্রধান স্মরণ ॥ ৯৯ ॥  
 ধ্যেয় মধ্যে জীবের কর্তব্য কোন্ ধ্যান ।  
 রাধাকৃষ্ণ-পদাশুভ ধ্যান প্রধান ॥  
 সর্ব তেজি জীবের কর্তব্য কাঁহা বাগ ।  
 জীৱন্যাবন ভূমি যাঁহা নিত্য লীলারাগ ॥  
 শ্রবণমধ্যে জীবের কোন্ শ্রেষ্ঠ শ্রবণ ।  
 রাধাকৃষ্ণ প্রেমকেলি কর্ণরায়ন ॥ ১০০ ॥  
 উপাস্যের মধ্যে কোন্ উপাস্য প্রধান ।  
 শ্রেষ্ঠ উপাস্য যুগল রাধাকৃষ্ণ নাম ॥  
 মুক্তিভক্তি বাঞ্ছে যই কাঁহা ছুঁহার গতি ।  
 শ্বাবরদেহে দেবদেহে যৈছে অবস্থিতি ॥  
 অরসজ্ঞ কাক চুষে জ্ঞান-নিশ্বফলে ।  
 রসজ্ঞ কোকিল খায় প্রেমাত্র মুকুলে ॥  
 অভাগিয়া জ্ঞানী আশ্বাদয়ে শুক জ্ঞান ।  
 কৃষ্ণপ্রেমামৃতপান করে ভাগ্যবান ॥ ১০১ ॥  
 এই মত দুইজন কৃষ্ণকথাবেশে ।  
 নৃত্যগীত রোদনে হইল রাত্রি শেষে ॥  
 ছুঁহে নিজ নিজ কার্য্যে চলিলা বিহানে ।  
 সঙ্ঘাকালে রায় আসি গিলিলা আর দিনে ।  
 ইষ্ট গোষ্ঠী কৃষ্ণকথা কহি কথাক্ষণ ।  
 প্রভুপদে ধরি রায় করে নিবেদন ॥ ১০২ ॥  
 কৃষ্ণতত্ত্ব রাধাতত্ত্ব প্রেমতত্ত্ব সার ।  
 রসতত্ত্ব লীলাতত্ত্ব বিবিধ প্রকার ॥  
 এত তত্ত্ব যোর চিত্তে কৈলে প্রকাশন ।  
 ব্রহ্মারে বেদ যৈছে পঢ়াইল নারায়ণ ॥

অন্তর্থাগী ঈশ্বরের এই রীতি হয় ।  
 বাহিরে না কহে বস্তু প্রকাশে হৃদয় ॥ ১০৩ ॥  
 তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমস্কন্ধে প্রথমাধ্যায়ে  
 প্রথমশ্লোকঃ—  
 জন্মান্যত্র যতোহৃৎস্বরাদিতরতশ্চাৰ্থেবভিজ্ঞঃ স্বরাটু  
 তেনে ব্রহ্ম ধূম্য য আদিকবয়ে মুহূঃ যং স্বরঃ ।  
 তেজোবারিসুপাং বধা বিনিময়ো বস ত্রিসর্গোহুযুযা  
 ধাম্মা যেন সদা নিরন্তকুহকং সত্যং পরং ধীমাহ ॥৫১ ॥  
 অর্থেষু কার্য্যমাভেযু অস্বয়াং-ইতরতঃ (অস্বয়-  
 ব্যতিরেকাত্যাং) চ বৎ অত্র (প্রত্যক্ষাদিপ্রমাণ-  
 সিদ্ধস্ত অনন্তকোটিব্রহ্মাণ্ডাকৃতজগতঃ) জন্মাদি  
 (জন্মস্থিতভঙ্গং তৎ) যতঃ (নিমিত্তোপাদান-  
 স্বরূপাং পরমেশ্বরাং ভবতি চ) অভিজ্ঞঃ  
 (অভিতঃ সর্বপ্রকারেণ সামান্ততঃ বিণেশ্বতঃ চ  
 সর্বং জানাতি যঃ চ) স্বরাটু (যেন এব রাজতে,  
 ইতি স্বতঃসিদ্ধজ্ঞানঃ) বৎ (যস্মিন্ ব্রহ্মণি বেদে)  
 স্বরঃ (জ্ঞানিনঃ ব্রহ্মাদয়ঃ) অপি মুহুস্তি (মোহং  
 প্রাপ্নু বস্তু তৎ) ব্রহ্ম (তৎ বেদম্) আদিকবয়ে  
 (ব্রহ্মণে) ধূম্য (মনসি) যঃ (চ) তেনে (প্রকা-  
 শিতবান্) বধা তেজোবারিসুপাং বিনিময়ঃ ব্যত্যয়ঃ  
 অস্তস্মিন্ অস্ত্রাবভাসঃ) ত্রিসর্গঃ (ত্রৈলোকাঃ নাম  
 গুণানাং তদ্ব্যয়জঃসংঘানাং সর্গঃ ভূতেপ্রিয়-  
 দেবতাঃরূপঃ) বসত্র (উদ্ধে ভগবৎ স্বরূপে) অমুযা  
 (সত্যং, সুখা মিথ্যা বা তৎ) যেন ধাম্মা (মহমা)  
 সদা নিরন্তকুহকং (নিরন্তঃ কুহকং কপট-যস্মিন্  
 যেন বা স্বং) সত্যং (সত্যস্বরূপং) পরং (পরমেশ-  
 ্বরঃ) ধীমাহ (ধ্যয়েম) ॥  
 বধা—অস্বয়াং (অহুগচ্ছতি সদা নিজপরমা-  
 নন্দশক্তিরূপায়াং তত্যাং শ্রীরাধায়াম্ আসক্তো  
 ভবতীতি । শ্রীকৃষ্ণঃ তস্যাং বসাত্তথা) ইতরতঃ  
 (ইতরতশ্চ তত্র সদা বিতীরায়াঃ শ্রীরাধায়া এব)  
 যতঃ (যত্যাঃ) আদ্যত্র (আদিরসত্র) জন্ম (প্রোহ-  
 র্ভাবঃ) যৌ এব আদিরসবিধায়াঃ পরমনিধানম্ ।  
 অতএবভরোরতাত্ত্বতবিদ্যাসনাত্মনীধুতীণতামুদিশতি,

যঃ) অর্থেন্ ( তত্ত্ববিলাসকলাপেযু ) অভিজ্ঞঃ  
 ( বিদ্বৎ, যা চ ) স্বরাট্ ( যেন তথাবিধেন আত্মনা  
 রাজতে বিলাসভীতি । অতএব সৰ্ব্বতোহপি  
 আশ্চর্য্যাকপয়োঃ ভয়োঃ বর্ণনে মম তৎকৃৎপৈব  
 নামগ্রীতাহ ) আদিকবয়ে ( প্রথমং তন্নীলাবর্ণনম্  
 আরম্ভমানায় মহ্যং শ্রীবেদব্যাসায় ) হৃদা ( অন্তঃ-  
 করণধারৈব ) ব্রহ্ম ( নিজদীপ্যপ্রতিপাদকং শব্দ-  
 ব্রহ্ম যঃ ) তেনে ( আরম্ভসমকালমেব যুগপৎ সৰ্ব্ব-  
 মিদং পুরাণং মম হৃদি প্রকাশিতবান্ ) যৎ ( যস্তাঃ  
 চ ) সুরয়ঃ ( ষেযাদয়োহপি ) মুহুন্তি ( স্বরূপ-  
 সৌন্দর্য্যগুণাদিভিঃ অভ্যুত্থতা কেয়মসি নির্ব্বক্তুন্  
 আরক্কা নিশ্চেষ্টুং ন শক্ণুবন্তি । তয়োঃ আশ্চর্য্য-  
 রূপং ব্যনক্তি ) তেজোবারিমুদাম্ ( অচৈতজ্ঞা-  
 নামপি ) যথা ( যেন প্রকারেণ ) বিনিময়ঃ ( পর-  
 স্পরং যজ্ঞাবিপর্য্যয়ো ভবতি তথা যো বিভ্রাজত  
 ইতি শেবঃ । বাক্যশেবঞ্চ ভাবাভিভূত্বেন ন  
 বক্তুং শক্তবানিতি গম্যতে । তত্র তেজসঃ  
 চম্বাদেঃ তৎপদনথকাস্ত বিস্মারতাদিনা বারিমুদমি-  
 ত্তেজস্বপর্মাযান্তিঃ । বারিপো নদ্যাদেশ্চ তৎ-  
 সংসর্গ বংশীযান্তাদিনা বহ্যাদি তেজবৎ উচ্চুনা-  
 প্রাপ্তি, পাযাণাদি মুদচ্চ স্তম্ভপ্রাপ্তিঃ । মুদঞ্চ  
 পাযাণাদেঃ তৎকাস্তিকন্দশীচ্ছুরিত্বেন তেজোবৎ  
 উচ্চলতা প্রাপ্তিঃ, বংশীযাণাদিনা বারিপচ্চ জবতা  
 প্রাপ্তিরিতি । তদেতৎ সৰ্ব্বং তস্মৈ দীপ্যাবর্ণনে  
 প্রসিক্তমেব ) যত্র ( যস্তাঃ চ বিদ্যমানায়াং ) ত্রিগর্গঃ  
 ( ত্রিধা গর্গঃ শ্রীভূদীশেতি শক্তিগ্রী প্রাহুর্ভাবো বা  
 স্বাক্ষয়গুণাবল্যাবনীতি স্থানত্রয়গতশক্তিবর্গত্রয়  
 প্রাহুর্ভাবো বা বৃন্দাবন এব রসব্যবহারেণ সুহৃদদা-  
 সীনপ্রতিপক্ষনায়িকারূপ ত্রিভেদানাং সর্কাসামপি  
 ব্রহ্মদেবীনামেব প্রাহুর্ভাবো বা ) মুখা ( মিথোবা ।  
 যস্তাঃ সৌন্দর্য্যাদিগুণসম্পদা ভাস্তাঃ ক্লেশ্চ ন  
 কিকিবিষ প্রোগ্রনমর্হতীত্যর্থঃ ) যেন ধামা ( স্ব-  
 প্রভাবেন ) সদা নিরন্তরুহকং ( নিরন্তং স্বলীলা  
 প্রতিবন্ধকানাং অরতীপ্রভৃতীনাং প্রতিপক্ষনায়ি-  
 কানাং চ কুহকং মারা যেন তৎতথা ) সত্যং  
 ( তাদৃশশ্চৈব সত্যসিক্তম্ । যথা পরস্পরং বিলাসা-

দিভিঃ জনবরতম্ আনন্দসন্দোহদানে কৃতসত্য-  
 মিব জাতম্ । তত্র নিশ্চলমিত্যর্থঃ । অতএব )  
 পরম্ ( অস্তত্র কুরাপি অদৃষ্টগুণলীলাদিভিঃ বিশ্ব-  
 বিশ্বাপকত্বাৎ সৰ্ব্বতোহপ্যুৎকষ্টম্ তঃ পরমশক্তি-  
 শক্তিমন্বেনাতিশয়িতমহাভাবরসেন বা পরস্পর-  
 মভিন্নতাং গতয়োঠৈক্যং ) ধীমহি ॥ ৫১ ॥

যিনি সৃষ্টবস্তুমাত্রেরই সংস্করণেবর্তমান  
 আছেন বলিয়া উহার অস্তিত্ব প্রতীত  
 হইতেছে এবং অবস্তু অর্থাৎ আকাশ-  
 কুসুমাদি অলীক পদার্থে যঁহার কোন  
 সম্বন্ধ নাই বলিয়াই তৎসমুদায়ের উপ-  
 লব্ধি হইতেছে না ; সুতরাং যিনি এই  
 পরিদৃশ্যমান জগতের সৃষ্টি, স্থিতি ও  
 প্রলয়ের কারণ, যিনি সর্গজ ও স্বতঃসিদ্ধ  
 জ্ঞানস্বরূপ এবং যে বেদে জ্ঞানিগণও মুগ্ধ  
 হন, সেই বেদ যিনি আদিকবি ব্রহ্মার  
 হৃদয়ে সঙ্গলমাত্রে প্রকাশ করিয়াছেন,  
 এবং তেজঃ জল বা মৃত্তিকার বিকার  
 স্বরূপ কাচাদিতে ঐ বস্তু সকলের এক  
 বস্তুতে অন্য বস্তুর ভ্রম, যেরূপ অধিষ্ঠানের  
 সত্য হইলে সত্য বলিয়া প্রতীত হয়,  
 তদ্রূপ যঁহার সত্যতায় সত্ত্ব, রজঃ ও  
 তমঃ এই গুণত্রয়ের সৃষ্টি, ভূত, ইন্দ্রিয় ও  
 দেবতা বস্তুতঃ মিথ্যা হইলেও সত্যস্বরূপে  
 প্রতীত হইতেছে, অথবা তেজে জল  
 ভ্রমাদি যেরূপ বস্তুতঃ অলীক ; তদ্রূপ  
 যঁহা ব্যতিরেকে গুণত্রয়ের সৃষ্টিসকলই  
 মিথ্যা, ( যঁহার পরমার্থ সত্যত্ব প্রতি-  
 পাদন জন্য আদ্যন্তযুক্ত অসার বিশ্বের  
 বস্তুতঃ মিথ্যাত্ব না হইলেও মিথ্যাত্ব উক্ত  
 হইয়াছে ) এবং স্বীয় তেজঃ প্রভাবে  
 যাহাতে মায়িক সম্বন্ধ নিরন্ত হইয়াছে

সেই সত্যস্বরূপ পরমেশ্বরকে ধ্যান  
করি ॥ ৫১ ॥

এক সংশয় মোর আছয়ে হৃদয়ে ।  
রূপা করি কহ মোরে তাহার নিশ্চয়ে ॥  
পহিলে দেখিলু তোমা সন্ন্যাসীস্বরূপ ।  
এবে তোমা দেখিঁ মুঞি শ্যামগোপরূপ ॥  
তোমার সম্মুখে দেখি কাঞ্চন পঞ্চালিকা ।  
তার গৌরকান্তো তোমার সর্কাজ ঢাকা ॥  
তাহাতে প্রকট দেখি জীবংশীবদন ।  
নানা ভাবে চঞ্চল তাহে কমলনয়ন ॥  
এই মত তোমা দেখি হয় চমৎকার ।  
অকপটে কহ প্রভু কারণ ইহার ॥ ১০৪ ॥  
প্রভু কহে ক্রুক্ষে তোমার গাঢ়প্রেম হয় ।  
প্রেমের স্বভাব এই জানিহ নিশ্চয় ॥  
মহাভাগবত দেখে স্বাবর জঙ্গম !  
তঁাহা তঁাহা হয় তাঁর ক্রুক্ষের স্কুরণ ॥  
স্বাবর জঙ্গম দেখে না, দেখে তার মূর্তি ।  
সর্কত্র হয় নিজ ইষ্টদেব স্কুর্তি ॥ ১০৫ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে দ্বিতীয়া-  
ধ্যায়ৈ ত্রিচত্বারিংশোলোকঃ—  
সর্কভূতেষু যঃ পশ্চেত্তগবদ্ব্যবমান্বনঃ ।  
ভূতানি ভগবত্যাশ্বনোষ ভাগবতোক্তমঃ ॥ ৫২ ॥

যঃ সর্কভূতেষু আশ্বনঃ ভগবদ্ব্যবঃ পশ্চেৎ  
( অমৃতভবতি ) আশ্বনি ভগবতি ভূতানি ( চ ) এষঃ  
ভাগবতোক্তমঃ ॥ ৫২ ॥

যিনি চেতন ও অচেতন সকল পদার্থে  
অধিষ্ঠিত আত্মাকে শ্রীভগবানের আবি-  
র্ভাব স্বরূপে দর্শন করেন এবং যিনি  
আবির্ভূত আত্মস্বরূপ শ্রীভগবানে সকল  
পদার্থকেই দর্শন করেন, তিনিই উত্তম  
ভগবন্ত ॥ ৫২ ॥

তথাহি তৃত্বৈব দশমস্কন্ধে পঞ্চত্রিংশাধ্যায়ৈ  
নবমলোকঃ—

বনলতাস্তরব আশ্বনি বিষ্ণুঃ  
ব্যঞ্জমন্ত্য ইব পুষ্পকলাঢ্যাঃ ।  
প্রণতভারবিটপাঃ মধুধারাঃ  
প্রেমহৃষ্টতনবো ববুযুঃ স ॥ ৫৩ ॥

প্রণতভারবিটপাঃ পুষ্পকলাঢ্যা প্রেমহৃষ্টতনবঃ  
বনলতাঃ তরবঃ ( চ ) আশ্বনি বিষ্ণুঃ ব্যঞ্জমন্ত্যঃ  
( প্রকাশমানং হৃচরন্ত্যঃ ) ইব মধুধারাঃ ববুযুঃ স ॥ ৫৩ ॥

হে সখি ! ভাবনাত শাখা, পুষ্প-  
ফলাশ্রিত প্রেমহৃষ্ট শরীর বনলতা ও তরু  
সকল আপনাতে বিষ্ণু প্রকাশমান ইহা  
স্মৃচনা করিতে করিতেই যেন মধুধারা  
বর্ষণ করিয়া থাকেন ॥ ৫৩ ॥

শ্রীরাধাক্রুক্ষে তোমার গাঢ় প্রেমা হয় ।  
যাঁহা তাঁহা রাধাক্রুক্ষে তোমারে স্কুরয় ॥  
রায় কহে প্রভু তুমি ছাড় ভারিভুরি ।  
মোর আগে নিজরূপ না করিহ চুরি ॥ ১০৬ ॥  
শ্রীরাধার ভাব কাস্তি করি অঙ্গীকার ।  
নিজ রস আশ্বাদিতে কৈলে অবতার ॥  
নিজ গুঢ় কার্য তোমার প্রেম আশ্বাদন ।  
আনুসন্ধে প্রেমময় কৈলে ত্রিভুবন ॥  
আপনে আইলা মোরে করিতে উদ্ধার ।  
এবে যে কপট কর কোন ব্যবহার ॥ ১০৭ ॥  
তবে প্রভু হাঁসি তাঁরে দেখাইল স্বরূপ ।  
রসরাজ মহাভাব দুই একরূপ ॥  
দেখি রামানন্দ হৈলা আনন্দে মূর্ছিত ।  
ধরিতে না পারে দেহ পড়িলা ভূমিত ॥  
প্রভু তাঁরে হস্ত স্পর্শি করাইল চেতন ।  
সন্ন্যাসীরবেশ দেখি বিস্মিত হইল মন ॥ ১০৮ ॥  
আলিঙ্গন করি প্রভু কৈল আশ্বাসন ।  
তোমা নিম্ন এ রূপ না দেখে কোন জন ॥



মোর তব্ব নীলারস তোমার গোচরে ।  
 সতএব এই রূপ দেখাইল তোমারে ॥  
 গৌর-অঙ্গ নহে মোর রাধাঙ্গস্পর্শনি ।  
 গোপেশ্বরস্বত্বিনুতৌহোনাঙ্গস্পর্শেঅন্যজন ॥  
 তাঁর ভাবে ভাবিত আমি করি আশ্রমন ।  
 তবে কৃষ্ণাধর্য্য রস করি আশ্রাদন ॥ ১০৯ ॥  
 তোমারঠাণ্ডিআমারগুণ নহেকোনকর্ম ।  
 লুকাইলে প্রেম বলে জানে সব মর্শ্ব ॥  
 গুণ রাখিও কাহা না করিহ প্রকাশ ।  
 আমার বাতুল চেষ্টা লোকে উপহাস ॥  
 আমি এক বাতুল তুমি দ্বিতীয় বাতুল ।  
 অতএব তোমায় আশ্রয় এক সমতুল ॥  
 এইরূপে দশ রাত্রি রামানন্দ সঙ্গে ।  
 সুখে গোঙাইল প্রভু কৃষ্ণকথা রঙ্গে ॥  
 নিগূঢ় ব্রজের নীলারসের বিচার ।  
 অনেক হৈল তার না পাইল পার ॥ ১১০ ॥  
 তামা কাঁসা রূপা সোনা রত্ন চিন্তামণি ।  
 কেহো যদি কাঁহা পোতা পায় এক খনি ॥  
 ক্রমে উঠাইতে যেন উত্তম বস্তু পায় ।  
 তৈছে প্রাক্সোত্তর কৈল প্রভু রামরায় ॥ ১১১ ॥  
 আর দিন রায় পাশ বিদায় মাগিলা ।  
 বিদায়ের কালে তারে এই আজ্ঞা দিলা ॥  
 বিষয় ছাড়িয়া তুমি যাহ নীলাচলে ।  
 আমি তীর্থ করি তাহাআসিব অল্পকালে ॥  
 দুই জন নীলাচলে রহিব একসঙ্গে ।  
 সুখে গোঙাইব কাল কৃষ্ণকথা রঙ্গে ॥  
 এত বলি রামানন্দে করি আলিঙ্গন ।  
 তারে ঘরে পাঠাইয়া করিলা শয়ন ॥  
 প্রাতঃকালে উঠে প্রভু দেখি হনুমান্ ।  
 তারে নমস্করি দক্ষিণ করিলা প্রয়াণ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যরূপ শ্রীশ্যামলালপদারবিন্দসেবি-বিনোদবিহারিগোপালদি  
 কৃতধর্মবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত রামানন্দরাসঙ্গোৎসবনামাষ্টমপরিচ্ছেদঃ ॥ ৮ ॥

বিদ্যাপুরে নানামত লোক বৈসে যত ।  
 প্রভু দেখি বৈষ্ণব হৈল ছাড়ি নিজ মত ॥  
 রামানন্দ হৈলা প্রভুর বিরহে বিহ্বল ।  
 প্রভুধ্যানে রহে বিষয়ছাড়িয়াগকল ॥ ১১২ ॥  
 সংক্ষেপে কহিল রামানন্দের মিলন ।  
 বিস্তারি বর্ণিতে নারে সহস্রবদন ॥  
 সহজে চৈতন্যচরিত্র ঘন দুক্ষপুর ।  
 রামানন্দ চরিত্র তাহে খণ্ড প্রচুর ॥  
 রাধাকৃষ্ণদীলা তাতে কর্পূর মিলন ।  
 ভাগ্যবান্ যেই সেইকরেআশ্রাদন ॥ ১১৩ ॥  
 যেই ইহা একবার পিয়ে কর্ণধারে ।  
 তার কর্ণলোভ ইহা ছাড়িতে না পারে ॥  
 সর্বতত্ত্ব জ্ঞান হয় ইহার শ্রবণে ।  
 প্রেমভক্তি হয় রাধাকৃষ্ণের চরণে ॥  
 চৈতন্যের গুঢ়তত্ত্ব জানি ইহা হৈতে ।  
 বিশ্বাস করি শুন তর্ক না করিহ চিন্তে ॥  
 অলৌকিক লীলা এষ্ট পরম নিগূঢ় ।  
 বিশ্বাসে পাইয়ে তর্কে হয় অতি দূর ॥ ১১৪ ॥  
 শ্রীচৈতন্য নিত্যানন্দ অদ্বৈতচরণ ।  
 ঝাঁহার সর্বস্ব তাঁরে মিলে এই ধন ॥  
 রামানন্দরাসে মোর কোটি নমস্কার ।  
 ঝাঁর মুখে কৈল প্রভু রসের বিস্তার ॥  
 দামোদব স্বরূপের কড়চা অনুসারে ।  
 রামানন্দ মিলন ধীলা করিল প্রচারে ॥  
 শ্রীরূপ রঘুনাথ পদে যার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ১১৫ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
 রামানন্দরাসঙ্গোৎসববর্ণন নামাষ্টম  
 পরিচ্ছেদ ॥ ৮ ॥

## নবম পরিচ্ছেদ ।

নানামতগ্রহগ্রস্তান্ দাক্ষিণাত্যজনদিপান্ ।  
 রূপারিণা বিমূঢ়োস্তান্ গৌরশ্চক্রে স বৈষ্ণবান্ ॥১॥

সঃ গৌরঃ নানামতগ্রহগ্রস্তান্ (নানা বহু-  
 বিধানি মতানি এব গ্রহাঃ নক্ষত্রাঃ তৈঃ গ্রস্তান্  
 সিলিভ্তান্) দাক্ষিণাত্যজনদিপান্ (দাক্ষিণাত্য-  
 জনাঃ এব দ্বিগাঃ গজাঃ তান্) রূপারিণা (রূপা-  
 চক্রেণ, গ্রহেভ্যঃ) বিমূঢ়া এতান্ বৈষ্ণবান্ চক্রে ॥১॥

শ্রীগৌরান্ন নানাবিধমতরূপ কুন্তীর  
 কর্তৃক গ্রস্ত দাক্ষিণাত্য জনরূপ হস্তি-  
 গণকে রূপারূপ চক্র দ্বারা বিমুক্ত করতঃ  
 বৈষ্ণব করেন ॥ ১ ॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
 জয়াদৈতচ্ছ জয় গৌরভক্ত রুন্দ ॥  
 দক্ষিণগমন প্রভুর অতি বিলক্ষণ ।  
 সহস্র সহস্র তীর্থ করিল দর্শন ॥  
 সেই সব তীর্থ স্পর্শি মহাতীর্থ কৈল ।  
 সেই ছলে সেই দেশের লোক নিস্তারিল ১  
 তীর্থযাত্রায় তীর্থক্রম কহিতে না পারি ।  
 দক্ষিণ বামে হয় তীর্থ গমন ফেরাকেরি ॥  
 অতএব নাম মাত্র করিয়ে লিখন ।  
 কহিতে না পারি তার যথা অনুক্রম ॥  
 পূর্ববৎ পথে যাইতে যে পায় দর্শন !  
 যেই গ্রামে রহে, সেই গ্রামের যত জন ॥  
 সবই বৈষ্ণব হয়, কহে কৃষ্ণ হরি ।  
 অন্য গ্রাম নিস্তারয়ে সেই বৈষ্ণব করি ॥২॥  
 দক্ষিণ দেশের লোক অনেক প্রকার ।  
 কেহ কর্মী কেহ জ্ঞানী পাষাণী অপার ॥

সেই সব লোক প্রভুর দর্শন প্রভাবে ।  
 নিজ নিজ মত ছাড়ি হইলা বৈষ্ণবে ॥  
 বৈষ্ণবের মধ্যে রাম উপাসক সব ।  
 কেহ তৎবাদী, কেহ হয় শ্রীবৈষ্ণব ॥  
 সে সব বৈষ্ণব মহাপ্রভুর দর্শনে ।  
 কৃষ্ণ উপাসক হয় লয় কৃষ্ণনামে ॥ ৩ ॥  
 রামরাঘব রামরাঘব রামরাঘব রক্ষ মাং  
 কৃষ্ণকেশবকৃষ্ণকেশবকৃষ্ণকেশবপাহিমাং ॥৪  
 এই শ্লোক পথে পড়ি করিলা প্রয়াণ ।  
 গৌতমীগঙ্গাতে যাই কৈলা তাঁহা স্নান ॥  
 মল্লিকার্জুন তীর্থে যাই মহেশ দেখিল ।  
 তাঁহা সব লোকে কৃষ্ণ নাম লওয়াইল ॥৫॥  
 দাগরাম-মহাদেব করিল দর্শন ।  
 অহোবল নৃসিংহেতে করিল গমন ॥  
 নৃসিংহ দেখিয়া তারে কৈল নতি স্তুতি ।  
 সিদ্ধবট গেলা ষাঁহা শ্রীমীতাপতি ॥  
 রঘুনাথ দেখি কৈল প্রণতি স্তবন ।  
 তাঁহা এক বিপ্র তাঁরে কৈল নিমন্ত্রণ ॥  
 সেই বিপ্র রামনাগ নিরন্তর লয় ।  
 রাগনাম বিনু অন্য বচন না কয় "।  
 সেই দিন তার ঘরে রহিল ভিক্ষা করি ।  
 তারে রূপা করি আগে চলিলাগৌরহরি ॥৬  
 স্কন্দকোত্র তীর্থে কৈল স্কন্দ দর্শন ।  
 ত্রিঘট আইলা তাঁহা দেখি ত্রিবিক্রম ॥  
 পুনঃ সিদ্ধবট আইলা সেই বিপ্রঘরে ।  
 সেই বিপ্র কৃষ্ণ নাম লয় নিরন্তরে ॥  
 ভিক্ষা করি মহাপ্রভু তারে প্রসন্ন কৈল ।  
 কহ বিপ্র এই তোমার কোন দশা হৈল ॥

পূর্বে তুমি নিরন্তর কহিতে রামনাম ।  
 এবে কেন নিরন্তর কহ কৃষ্ণনাম ॥ ৭ ॥  
 বিপ্র কহে এই তোমার দর্শনপ্রভাব ।  
 তোমা দেখি গেল মোর আকস্ম স্বভাব ॥  
 বাল্যাবধি রামনাম গ্রহণ আমার ।  
 তোমা দেখি কৃষ্ণনাম আইল একবার ॥  
 সেই হৈতে কৃষ্ণনাম জিহ্বাতে বসিল ।  
 কৃষ্ণনাম শ্বুরে রামনাম দূরে গেল ॥  
 বাল্যকাল হৈতে মোর স্বভাব এক হয় ।  
 নামের মহিমা-শাস্ত্র করিয়ে সঞ্চয় ॥ ৮ ॥

তথাহি পদ্মপুরাণে শ্রীরামচন্দ্রস্ত শতনামস্তোত্রে  
 ষষ্ঠমশ্লোকঃ—

রমস্তে যোগিনোহনস্তে সত্যানন্দে চিদাম্বনি ।  
 ইতি রামপদেনাসৌ পরং ব্রহ্মাভিধীয়তে ॥ ২ ॥

যোগিনঃ অনস্তে সত্যানন্দে চিদাম্বনি রমস্তে ।  
 ইতি রামপদেন অসৌ ( দ্বাশরথিঃ ) পরং ব্রহ্ম অন্নি-  
 ধীয়তে ( কথ্যতে ) ॥ ২ ॥

অপরিচ্ছিন্ন, সত্যানন্দ, চিৎস্বরূপ ত্ত্বে  
 যোগিগণ রমণ করেন । এই রাম পদ  
 দ্বারা দশরথ পুত্রই পরব্রহ্ম শব্দে বোধিত  
 হন ॥ ২ ॥

তথাহি শ্রীমহাভারতে উদ্যোগপর্বায়ৈক-  
 সপ্ততিতমাধ্যায়ে চতুর্থশ্লোকঃ—  
 কষিভূ বাচকঃ শকো গচ্চ নিবৃতিবাচকঃ ।  
 তয়োঁরৈক্যাং পরং ব্রহ্ম কৃষ্ণ ইত্যভিধীয়তে ॥ ৩ ॥

কৃষিঃ শব্দঃ ভূবাচকঃ ( সত্ত্বাবাচকঃ ) গঃ চ  
 নিবৃতিবাচকঃ ( আনন্দবাচকঃ ) তয়োঃ ( কৃষিগ-  
 কারার্থয়োঃ ) ঐক্যাং কৃষ্ণঃ ( এব ) পরং ব্রহ্ম ইতি  
 অভিধীয়তে ॥ ৩ ॥

কৃষি পাতু সত্ত্বাবাচক এবং গ শব্দ  
 আনন্দবাচক । এই দুয়ের ঐক্য পরং-  
 ব্রহ্মই কৃষ্ণরূপে কথিত হন ॥ ৩ ॥

পরং ব্রহ্ম দুই নাম সমান হইল ।  
 পুনঃ আর শাস্ত্রে কিছু বিশেষ পাইল ॥৯॥  
 তথাহি পদ্মপুরাণে শ্রীরামচন্দ্রস্ত শতনামস্তোত্রে  
 নবমশ্লোকঃ—

রাম রামেতি রামেতি রমে রামে মনোরমে ।  
 সহস্রনামভিস্তুলাং রামনাম বরাননে ॥ ৪ ॥  
 ( হে ) বরাননে ! রাম রামেতি রামেতি ( সৎ-  
 কীর্ত্যেতি শেবঃ, অহং ) মনোরমে রামে ( দ্বাশ-  
 রথো ) রমে ( পরব্রহ্মানন্দাত্বং করোমি । কৃত  
 এবমিতি চেদাহ, বতঃ ) রামনামঃ সহস্রনামভিঃ  
 ( শ্রীবিষ্ণুসহস্রনামস্তোত্রেঃ ) তুলাং ( সমপুণ্য-  
 প্রদম্ ॥ ৪ ॥

মহাদেব বলিলেন, হে পার্কৃতি !  
 আমি পুনঃ পুনঃ রামনাম কীর্তন করিয়া  
 চিন্তাকর্ষক শ্রীরামে পরব্রহ্মানন্দ অনুভব  
 করি । একবার রামনাম কীর্তন করিলে  
 মহাভারতীয় বিষ্ণু-সহস্রনাম পাঠের  
 ফল লাভ হয় ॥ ৪ ॥

তথাহি শ্রীহরিতত্ত্ববিলাসে একাদশবিলাসে  
 ষষ্ঠপঞ্চাশদধিক দ্বিশতীকৃতং ব্রহ্মাণ্ডপুরাণবচনম্—  
 সহস্রনাম্নাং পুণ্যানাং ত্রিবারত্বাত্য তু যৎফলম্ ।  
 একাবৃত্তাত্য তু কৃষ্ণস্ত নামৈকং তৎ প্রযচ্ছতি ॥ ৫ ॥

পুণ্যানাং ( পবিত্রাণাং ) সহস্রনাম্নাং ত্রিবারত্বাত্য  
 ( ত্রিবারপাঠেন ) যৎ ফলং ( ভবতি ) কৃষ্ণস্ত  
 নামৈকং একাবৃত্তাত্য ( একবারপাঠেন ) তৎ ( ফলং )  
 প্রযচ্ছতি ॥ ৫ ॥

বিষ্ণুর সহস্র নাম তিনবার পাঠ  
 করিলে যে ফল লাভ হয়, কৃষ্ণাবতার  
 সম্বন্ধীয় কোন নাম বারেক কীর্তন করিলে  
 সেই ফল লাভ হয় ॥ ৫ ॥

এই বাক্যে কৃষ্ণনামের মহিমা অপার ।  
 তথাপি লইতে নারি শুন হেতু তায় ॥  
 ইষ্টদেব রাম, তাঁর নামে স্মৃথ পাই ।  
 স্মৃথ পায়্য সেই নাম রাত্রি দিনে গাই ॥

ভোমার দর্শনে যবে কৃষ্ণনাম আইল ।  
 তাহার মহিমা এই মনেতে লাগিল ॥  
 সেই কৃষ্ণ তুমি সাক্ষাৎ ইহা নিষ্কারিল ।  
 এত কহি বিপ্র প্রভুর চরণে পড়িল ॥ ১০ ॥  
 তারে কৃপা করি প্রভু চলিলা আর দিনে ।  
 বৃদ্ধকানী আসি কৈল শিব দরশনে ॥  
 তাঁহা হৈতে চলি আগে গেল একগ্রাম ।  
 ব্রাহ্মণ-সমাজে তাহা করিলা বিশ্রাম ॥  
 প্রভুর প্রভাবে লোক আইল দর্শনে ।  
 লক্ষার্কুদ লোক আইসে নাহিক গণনে ॥  
 গোলাগ্রীর সৌন্দর্য্য দেখিতাতে প্রেমাবেশ  
 সবে কৃষ্ণ কহে বৈষ্ণব হৈল সব দেশ ॥ ১১ ॥  
 তार्কিক মীমাংসক যত মায়াবাদিগণ ।  
 সাংখ্য পাতঞ্জল স্মৃতি পুরাণ আর্গম ॥  
 নিজ নিজ শাস্ত্রে সবে উদ্ধা হৈ প্রচণ্ড ।  
 সর্কমত দুমি প্রভু করে খণ্ড খণ্ড ॥  
 সর্কত্র স্থাপয়ে প্রভু বৈষ্ণবসিদ্ধান্তে ।  
 প্রভুর সিদ্ধান্ত কেহো না পারে খণ্ডিতে ॥  
 হারি হারি, প্রভু মতে করেন প্রবেশ ।  
 এই মত বৈষ্ণব প্রভু কৈল দক্ষিণদেশ ॥ ১২ ॥  
 পাষণ্ডির গণ আইল পাণ্ডিত্য শুনিয়া ।  
 গর্ক করি আইল সজে শিষ্যগণ লয়া ॥  
 বৌদ্ধাচার্য্য মহাশণ্ডিত নিজ নবমতে ।  
 প্রভু আগে উদ্ধা হ করিলাগিলাকহিতে ॥  
 বদ্যপি অসম্ভাব্য বৌদ্ধ অযুক্ত দেখিতে ।  
 তথাপি বলিলা প্রভু গর্ক খণ্ডাইতে ॥  
 তর্কপ্রধান বৌদ্ধশাস্ত্র নবমতে ।  
 তর্কেই খণ্ডিল প্রভু না পারে স্থাপিতে ॥  
 বৌদ্ধাচার্য্য নব নব প্রস্ত উঠাইল ।  
 দৃঢ়বৃক্তি তর্কে প্রভু খণ্ড খণ্ড কৈল ॥ ১৩ ॥  
 দার্শনিক পণ্ডিত সবার পাইল পরাজয় ।  
 লোকে হাস্য করে বৌদ্ধ পাইল লজ্জাতয়

প্রভুকে বৈষ্ণব জানি বৌদ্ধ খর গেল ।  
 সর্ক বৌদ্ধ মিলি তবে কুমন্ত্রণা কৈলা ॥  
 অপবিত্র অন্ন এক খালিতে করিয়া ।  
 প্রভু আগে আনিল বিষ্ণুপ্রসাদ বলিয়া ॥  
 হেনকালে মহাকায় এক পক্ষী আইল ।  
 ঠোটে করি খালি সহ অন্ন লয়া গেল ॥  
 বৌদ্ধগণের উপর অন্নপড়ে অমেধ্য হইয়া ।  
 বৌদ্ধাচার্য্যের মাথায় খালি পড়িল বাজিয়া  
 তেরছে পড়িল খালি মাথা কাটা গেল ।  
 মুচ্ছিত হইয়া আচার্য্য ভূমিতে পড়িল ১৪  
 হাহাকার করি কান্দে সব শিষ্যগণ ।  
 সবে আসি প্রভু-পদে লইল শরণ ॥  
 তুমিহ ঈশ্বর সাক্ষাৎ ক্ষম অপরাধ ।  
 জীয়াহ আমার গুরু করহ প্রসাদ ॥  
 প্রভু কহে সবে কহ কৃষ্ণ কৃষ্ণ হরি ।  
 গুরু কর্ণে কহ কৃষ্ণনাম উচ্চ করি ॥  
 তোমা সবার গুরু তবে পাইবে চেতন ।  
 সর্ক বৌদ্ধ মিলি করে কৃষ্ণ-সঙ্গীর্জন ॥  
 গুরু কর্ণে কহে, কহ কৃষ্ণ নাম হরি ।  
 চেতন পাইল আচার্য্য উঠে হরি বলি ॥ ১৫ ॥  
 কৃষ্ণ কহি আচার্য্য প্রভুকে করয়ে বিনয় ।  
 দেখিয়া সর্কল লোক পাইল বিস্ময় ॥  
 এইমত কোড়ুক করি শচীর নন্দন ।  
 অন্তর্দান কৈল কেহো না পায় দর্শন ॥  
 মহাপ্রভু চলি আইলা ত্রিপদী ত্রিমল্লৈ ।  
 চতুর্ভূজ বিষ্ণু দেখি গেল বেকটাচলে ॥  
 ত্রিপদী আসিয়া কৈল স্তীরামদর্শন ।  
 রঘুনাথ-আগে কৈল প্রণাম শুভন ॥  
 স্বপ্রভাবে লোক সবার করাইয়া বিস্ময় ।  
 পানানরসিংহ আইলা প্রভু দয়াময় ॥  
 নৃসিংহে প্রণতি স্তুতি প্রেমাবেশে কৈল ।  
 প্রভুর প্রভাবে লোক চমৎকার হৈল ॥ ১৬ ॥

শিবকাঞ্চী আসি কৈল শিব দরশন ।  
 প্রভাবে বৈষ্ণব কৈল সব শান্ত শৈবগণ ॥  
 বিষ্ণুকাঞ্চী আসি দেখিল লক্ষ্মীনারায়ণ ।  
 প্রণাম করিয়া কৈল বহুত স্তবন ॥  
 প্রেমাবেশে নৃত্য গীত বহুত করিল ।  
 দিন দুই রহি লোকে ক্লমভক্ত কৈল ॥  
 ত্রিগুণ দেখি গেলা ত্রিকাল-হৃদি-স্থান ।  
 মহাদেব দেখি তারে করিলা প্রণাম ॥  
 পঞ্চতীর্থ যাই কৈল শিব দরশন ।  
 বৃদ্ধকাল তীর্থ তবে করিল গমন ॥  
 শ্বেতবরাহ দেখি তাঁরে নমস্কার করি ।  
 পীতাম্বর শিব স্থানে গেলা গৌরহরি ॥  
 শিয়ালী ভৈরবী দেবী করিল দর্শন ।  
 কাবেরীর তীরে আইলা শটীর নন্দন ॥১৭॥  
 গোসমাজ শিব দেখি আইলা বেদাবন ।  
 মহাদেব দেখি তারে করিলা বন্দন ॥  
 অমৃতলিঙ্গ শিব আসি দর্শন করিল ।  
 সব শিবালয়ে শৈব বৈষ্ণব করিল ॥  
 দেবস্থানে আসি কৈল বিষ্ণুদরশন ।  
 শ্রীবৈষ্ণবগণ-মনে গোষ্ঠী অনুক্ষণ ॥  
 কুম্ভকর্ণ কপালের দেখি সরোবর ।  
 শিবক্ষেত্রে শিব দেখে গৌরানন্দনন্দন ॥  
 পাপনাশনে বিষ্ণু করি দরশন ।  
 শ্রীরক্ষক্রে তবে কৈল আগমন ॥  
 কাবেরীতে স্নান করি দেখি রক্তনাথ ।  
 স্তুতি প্রণতি করি মানিল কৃতার্থ ॥  
 প্রেমাবেশে কৈল বহু গান নর্তন ।  
 দেখি চমৎকার হৈল সর্বলোক মন ॥১৮॥  
 শ্রীবৈষ্ণব এক বেলটভট্ট নাম ।  
 প্রভুর নিমন্ত্রণ কৈল করিয়া সন্ধান ॥  
 নিজ ঘরে লয়া কৈল পাদ প্রক্ষালন ।  
 সেই স্নান সবংখেতে করিল ভক্ষণ ॥

ভিক্ষা করাইয়া কিছু কৈল নিবেদন ।  
 চতুর্ভাগ্য আসি প্রভু কৈল উপসন্ন ॥  
 চাতুর্ভাগ্য রূপা করি রহ মোর ঘরে ।  
 কৃষ্ণকথা কহি রূপায় নিস্তার আমারে ॥  
 তার ঘরে রহিলা প্রভু কৃষ্ণকথা রসে ।  
 ভট্ট সঙ্গে গোড়াইলা মুখে চারি মাসে ॥  
 কাবেরীতে স্নান করি শ্রীরক্ষ দর্শন ।  
 প্রতিদিন প্রেমাবেশে করেন নর্তন ॥১৯॥  
 গৌন্দর্য্য প্রেমাবেশ দেখি সর্ব লোক ।  
 দেখিবারে আইসে সবারংখে গুঃখশোক ॥  
 লক্ষ লক্ষ লোক আইসে নানা দেশ হৈতে  
 সবে কৃষ্ণনাম কহে প্রভুরে দেখিতে ॥  
 কৃষ্ণনাম বিনে কেহো নাহি বোলে আর ।  
 সবে কৃষ্ণভক্ত হৈল লোকে চমৎকার ॥  
 শ্রীরক্ষক্ষেত্রে বৈসে যতেক ব্রাহ্মণ ।  
 এক এক দিন সবে কৈল নিমন্ত্রণ ॥  
 এক এক দিনে চাতুর্ভাগ্য পূর্ণ হৈল ।  
 কথোক ব্রাহ্মণ ভিক্ষার দিন না পাইল ॥২০॥  
 সেই ক্ষেত্রে রহে এক বৈষ্ণব ব্রাহ্মণ ।  
 দেবালয়ে বসি করে গীতা আবর্তন ॥  
 অষ্টাদশাধ্যায় পড়ে আনন্দ-আবেশে ।  
 অশুদ্ধ পড়েন লোকে করে উপহাসে ॥  
 কেহোহাসে কেহোনিন্দে তাহানাহিমানি ।  
 আবিষ্ট হইয়া গীতা পড়ে আনন্দিত মনে ॥  
 পুলকান্ত কম্প স্নেদ যাবৎ পঠন ।  
 দেখি আনন্দিত হৈল মহাপ্রভুর মন ॥২১॥  
 মহাপ্রভু পুছিল। তাবে শুন মহাশয় ।  
 কোন্ অর্থ জানি তোমার এত সুখ হয় ॥  
 বিপ্র কহে মুখ আসি শকার্ণ না জানি ।  
 শুদ্ধাশুদ্ধ গীতা পড়ি গুরু-আজ্ঞা মানি ॥  
 স্বর্গের রথে কৃষ্ণ হয়ে রক্ষুধর ।  
 বসিয়াছে হাতে ভোক্তা স্নানলক্ষ্মণ ॥

অর্জুনে কহিতে আছেন হিত উপদেশ ।  
 তাহা দেখি হয় মোর আনন্দ আবেশ ॥  
 বাবৎ পঢ়োঁ তাবৎ পাণ্ড তাঁর দরশন ।  
 এইলাগি গীতাপাঠ নাছাড়ে মোরমন ॥২২॥  
 প্রভু কহে গীতা পাঠে তোমারি অধিকার  
 তুমি সে জানহ এই গীতার অর্থ সার ॥  
 এত বলি সেই বিপ্রে কৈল আলিঙ্গন ।  
 প্রভুর পাদ ধরি বিপ্র করেন স্তবন ॥  
 তোমা দেখি তাহা হইতে-দিগুণ সুখ হয়  
 সেই কৃষ্ণ তুমি হেন মোর মনে লয় ॥  
 কৃষ্ণ স্মৃর্ত্যে তার মন হইয়াছে নির্মল ।  
 অতএব প্রভুর তত্ত্ব জানিল সকল ॥  
 তবে মহাপ্রভু তারে করাইল শিক্ষণ ।  
 এই বাত কাঁহা না করিবে প্রকাশন ॥  
 সেই বিপ্র মহাপ্রভুর মহাভক্ত হৈল ।  
 চারি মাস প্রভুর সঙ্গ কভু না ছাড়িল ॥২৩॥  
 এই মত ভট্টগৃহে রহে গৌরচন্দ্র ।  
 নিরন্তর ভট্টগঙ্গে কৃষ্ণকথা রঙ্গ ॥  
 শ্রীবৈষ্ণব ভট্ট সেবে লক্ষ্মীনারায়ণ ।  
 তাঁর ভক্তিনিষ্ঠা দেখি প্রভুর তুষ্ট মন ॥  
 নিরন্তর তাঁর সঙ্গ হৈল সখ্যভাব ।  
 হাগ্য পরিহাস ছুঁহে সখ্যের স্বভাব ॥  
 প্রভু কহে ভট্ট তোমার লক্ষ্মী ঠাকুরাণী ।  
 কান্তবন্ধঃস্থিতা পতিব্রতা শিরোমণি ॥  
 আমার ঠাকুর কৃষ্ণ গোপ গোচারণ ।  
 সাধ্বী হয় কেনে চাহে তাঁহার সঙ্গম ॥  
 এই লাগি সুখভোগ ছাড়ি চিরকাল ।  
 ব্রত নিয়ম করি তপ করিলা অপার ॥ ২৪ ॥

তথাহি মধ্যলীলারাম্ অষ্টমে চতুস্ত্রিংশলোক-  
 ধৃতং শ্রীমত্তাগবতবচনম্—

কস্তাঃস্তাবোহস্ত ন থেব বিদ্বহে

তবাস্তুরেণু স্পর্শাধিকারঃ ।

বহাংগা শ্রীশর্গনাচরন্তপো

বিহার্য কামান্ হৃচিরং ধৃতব্রতা ॥ ৩ ॥

ভট্ট কহে কৃষ্ণ নারায়ণ একই স্বরূপ ।  
 কৃষ্ণেতে অধিক লীলা বৈদম্বাদি রূপ ॥  
 তাঁর স্পর্শে নাহি যায় পতিব্রতা ধর্ম ।  
 কৌতুকে লক্ষ্মী চাহেন কৃষ্ণের সঙ্গম ॥২৫॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ পূর্ববিভাগে  
 দ্বিতীয়লহর্যাং ষাট্রিংশলোকঃ—

সিদ্ধান্ততত্ত্বভেদেহপি শ্রীশকৃষ্ণস্বরূপয়োঃ ।

রসেনোৎকৃষ্যতে কৃষ্ণরূপমেবা রসস্থিতিঃ ॥ ৭ ॥

সিদ্ধান্ততঃ শ্রীশকৃষ্ণস্বরূপয়োঃ ( নারায়ণকৃষ্ণ-  
 তত্ত্বয়োঃ ) অভেদে ( সতি ) অপি রসেন কৃষ্ণ-  
 রূপম্ উৎকৃষ্যতে ( উৎকৃষ্টতয়া একাত্মত । বতঃ  
 তস্ত রসস্ত ) এবা ( এব ) স্থিতিঃ ( স্থতাবঃ । বৎ  
 কৃষ্ণরূপম্ এবং উৎকৃষ্টত্বেন দর্শয়তি ) ॥ ৭ ॥

সিদ্ধান্তিত হইলে যদিও শ্রীনাথ এবং  
 শ্রীকৃষ্ণে স্বরূপতঃ কোন প্রভেদ নাই,  
 তথাপি কেবল প্রেমময়রস নিবন্ধন,  
 শ্রীকৃষ্ণের উৎকর্ষ লক্ষিত হইয়া থাকে ।  
 বাস্তবিক প্রেমেরও এইরূপ প্রকৃতি যে  
 তাহা আলম্বনকে উৎকৃষ্টরূপে প্রদর্শন  
 করে ॥ ৭ ॥

কৃষ্ণসঙ্গে পতিব্রতা ধর্ম নহে নাশ ।  
 অধিক লাভ পাইয়ে আর রাসবিলাস ॥  
 বিনোদিনী লক্ষ্মীর হয়ে কৃষ্ণে অভিলাষ ।  
 ইহাতে কি দোষ কেনে কর পরিহাস ॥  
 প্রভু কহে দোষ নাহি ইহা আমি জানি ।  
 রাস না পাইলা লক্ষ্মী ইহা শাস্ত্রে শুনি ॥২৬

তথাহি মধ্যলীলারাম্ অষ্টমে সপ্তদশলোকধৃতং  
 শ্রীমত্তাগবতবচনম্—

নারং শিরোহক্ উ সিতাস্তরতেঃ প্রাসাদঃ

ধর্বোস্থিতাং নশ্বিনধক্কাচাং কুস্তোহস্তাঃ ।

রাসোৎসবেস্ত ভূজনগুণহীতকর্ণ-

লক্ষ্মীবাং য উদগাদব্রজহৃদরীণাম্ ॥ ৮ ॥

লক্ষ্মী কেনে না পাইলা কি ইহার কারণ ।

তপ করি কৈছে কৃষ্ণ পাইলে শ্রুতিগণ ॥২৭

তথাহি মধ্যলীলারাম্ অষ্টমে ষষ্ঠচত্বারিংশ-

শ্লোকধৃতং শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

নিভৃতমকুণ্ডনোকদৃঢ়বোগযুজো হৃদি যশ্নুনয়

উপাসতে তদরয়োহপি যয়ুঃ স্বরণাং ।

স্মিন্ন উরগেন্দ্ৰভোগভুজনশ্চবিষকুধিরো

বয়মপি তে সমাঃ সমদৃশোহজিযু সরোজসুধাঃ ॥৯

শ্রুতি পায় লক্ষ্মী না পায় ইথে কি কারণ ।

ভট্ট কহে ইহা প্রবেশিতে নারে মোর মন

আগি জীব ক্ষুদ্রবুদ্ধি সহজে অস্থির ।

দৈবের লীলা কোটিসমুদ্রগন্তীর ॥

তুমি সেই সাক্ষাৎ কৃষ্ণ জান নিজ কর্ম ।

বারেজ্ঞানহন্যেজ্ঞানেতোমারলীলামর্ম্ম ॥২৮

প্রভু কহে কৃষ্ণের এক স্বভাব বিলক্ষণ ।

স্বমাধুর্য্যে সর্কচিত্ত করে আকর্ষণ ॥

ব্রজলোকের ভাবে পাই তাঁহার চরণ ।

তাঁয়ে ঈশ্বর করি নাহি জানে ব্রজজন ॥

কেহ তাঁরে পুঞ্জ-জ্ঞানে উদুখলে বান্ধে ।

কেহ সখা-জ্ঞানে জিনি চড়ে তার কাঞ্চে ॥

ব্রজেন্দ্রনন্দন তাঁরে জানে ব্রজজন ।

ঐখর্য্য-জ্ঞান নাহি নিজ সখক্ গমন ॥

ব্রজলোকের ভাবে যেই করয়ে ভজন ।

সেই জন পায় ব্রজে ব্রজেন্দ্রনন্দন ॥ ২৯ ॥

তথাহি মধ্যলীলারাম্ অষ্টমে ঊনপঞ্চাশশ্লোক-

ধৃতং শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

নারং সুখাপো ভগবান্ দেহিগাং গোপিকাসুতঃ ।

জানিনাং চান্মতুতানাং বধা ভক্তিমভ্যমিহঃ ॥ ১০ ॥

শ্রুতিগণ গোপীগণের অনুগত হঞা ।

অকেশরীসুত ভঞ্জে গোপীভাব লঞা ॥

দেহান্তরে গোপীদেহ অজে যবে পাইল ।

সেই দেহে কৃষ্ণসঙ্গে রাসক্রীড়া কৈল ॥৩০॥

গোপজাতি কৃষ্ণ, গোপী প্রেমসী তাঁহার ।

দেবী বা অন্য স্ত্রী কৃষ্ণ না করে অঙ্গীকার ॥

লক্ষ্মী চাহে সেই দেহে কৃষ্ণের সঙ্গম ।

গোপিকা-অনুগা হঞা না কৈল ভজন ॥

অন্য দেহে না পাইয়ে রাসবিলাস ।

অতএব “নায়ং” শ্লোকে কহে বেদব্যাস ॥৩১

পূর্বে ভট্টের মনে এক ছিল অভিমান ।

শ্রীনারায়ণ হয়েন স্বয়ং ভগবান্ ॥

তাঁহার ভজন সর্বোপরি কক্ষা হয় ।

শ্রীবৈষ্ণবভজন এই সর্বোপরি হয় ॥

এই তার গর্ক প্রভু করিতে খণ্ডন ।

পরিহাসদ্বারে উঠায় এতেক বচন ॥

প্রভু কহে ভট্ট তুমি না কর সংশয় ।

স্বয়ং ভগবান্ কৃষ্ণের এই স্বভাব হয় ॥

কৃষ্ণের বিলাস মূর্ত্তি শ্রীনারায়ণ ।

অতএব লক্ষ্মী-আদির হরে তেঁহ মন ॥৩২॥

তথাহি আদিলীলারাম্ দ্বিতীয়ে ত্রয়োদশশ্লোক

ধৃতং শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

এতে চাংশকলাঃ পুংসঃ কৃষ্ণস্ত ভগবান্ স্বরম্ ।

ইন্দ্রারিব্যাকুলং লোকং মৃড়রন্তি যুগে যুগে ॥ ১১ ॥

নারায়ণ হৈতে কৃষ্ণের অসাধারণ গুণ ।

অতএব লক্ষ্মীর কৃষ্ণে ভূষণ অনুক্ষণ ॥

তুমি যে পঢ়িলে শ্লোক সেই পরমাণ ।

সেই শ্লোকে আইসেকৃষ্ণ-স্বয়ংভগবান্ ॥৩৩॥

তথাহি মধ্যলীলারাম্ নবমে সপ্তমশ্লোকধৃতং

রসামৃতসিদ্ধবচনম্—

সিদ্ধান্ততত্বভেদেহপি শ্রীশকৃষ্ণস্বরপরোঃ ।

রসেনোৎকৃষ্যতে কৃষ্ণরূপমেবা রসহিত্তিঃ ॥ ১২ ॥

স্বয়ং ভগবত্তে কৃষ্ণ হরে লক্ষ্মীর মন ।

গোপিকার মন হরিতে নারে নারায়ণ ॥

নারায়ণের কা কথা শ্রীকৃষ্ণ আপনে ।  
গোপিকারে হাস্য করিতে হয় নারায়ণে ॥  
চতুভুজমূর্ত্তি দেখায় গোপীগণ আগে ।  
সেই কৃষ্ণে গোপিকার নহে অনুরাগে ॥ ৩৪

তথাহি আদিদীপায়ঃ সপ্তদশে অষ্টমশ্লোকখ্যতঃ  
ললিতমাদবনাটকবচনম্—  
গোপীনাং পশুপেজ্জনন্দনজুযো ভাবন্য কস্তাং কৃতী  
বিজ্ঞাতুং ক্ষমতে হরুহপদবীসকারিণঃ প্রক্রিয়াম্ ।  
আবিকুবতি বৈষ্ণবীমপিতমুং তস্মিন্ ভূগৈর্জিহ্বুভি-  
র্ধাশাং হস্ত চতুর্ভিরহুতক্ষণৈঃ সাগোদয় কুঞ্চতি ॥ ১৩

এত কহি প্রভু তার গর্জ চূর্ণ করিয়া ।  
তারে সুখ দিতে কহে নিদ্রাস্ত ফিরাইয়া ॥  
ছুঃখ না মানিহ ভট্ট কৈল পরিহাস ।  
শাস্ত্র-সিদ্ধান্ত শুন যাতে নৈষ্ণব বিশ্বাস ॥  
কৃষ্ণ নারায়ণ যৈছে একই স্বরূপ ।  
গোপী লক্ষ্মী ভেদ নাহি হয় এক রূপ ॥  
গোপী দ্বারে লক্ষ্মী করে কৃষ্ণ সঙ্গাস্বাদ ।  
ঈশ্বরহে ভেদ মানিলে হয় অপরাধ ॥  
একই ঈশ্বর ভক্তের ধ্যান অনুরূপ ।  
একই বিগ্রহে করে নানাকার রূপ ॥ ৩৫ ॥

তথাহি নারদপঞ্চরাত্রবচনম্—  
মণির্ধ্বা বিভাগেন নীলপীতাদিভিষুতঃ ।  
রূপভেদমবাপ্নোতি ধ্যানভেদান্তথাচ্যুতঃ ॥ ১৪ ॥  
মণিঃ ( বৈদূর্ঘ্যঃ বহুরূপত্বাৎ ) যথা নীলপীতা-  
দিভিঃ ( বর্ণৈঃ ) যুতঃ বিভাগেন ( উপলক্ষিতঃ  
ভবতি ) তথা অচ্যুতঃ ধ্যানভেদাৎ রূপভেদম্  
অবাপ্নোতি ॥ ১৪ ॥

যেমন বৈদূর্ঘ্যমণি বিভাগবিশেষে  
নীলপীতাদি বর্ণযুক্ত হয়, তদ্রূপ শ্রীভগবান্  
অচ্যুত উপাসনা ভেদে ভিন্নরূপে প্রতীত  
হন ॥ ১৪ ॥

ভট্ট কহে কাঁহা মুক্তি জীব পামর ।  
কাঁহা তুমি সেই কৃষ্ণ সাক্ষাৎ ঈশ্বর ॥  
অগাম ঈশ্বর-লীলা কিছু নাহি জানি ।  
তুমি যেই কহ সেই সত্য করি মানি ॥  
মোরে পূর্ণ রূপা কৈল লক্ষ্মীনারায়ণ ।  
তাঁর রূপায় পাইল তোমার চরণ দর্শন ॥  
রূপা করি কহিলে মোরে কৃষ্ণের মহিমা ।  
যাররূপশ্রুতৈশ্বর্যের কেহোনা পায়সীমা ॥ ৩৬  
এবে সে জানিল কৃষ্ণভক্তি সর্বোপরি ।  
কৃতার্থ করিলে মোরে কহিয়ে রূপা বারি ॥  
এত বলি ভট্ট পড়ে প্রভুর চরণে ।  
রূপা করি প্রভু তারে কৈল আলিঙ্গনে ॥  
চাতুর্মাশ্র পূর্ণ হৈল ভট্টের আঙ্গা লরা ।  
দক্ষিণ চলিলা প্রভু শ্রীরঙ্গ দেখিয়া ॥  
সঙ্কেতে চলিলা ভট্ট না যায় ভবনে ।  
তারে বিদায় দিল প্রভু অনেক যতনে ॥  
প্রভুর বিচ্ছেদে ভট্ট হৈলা অচেতন ।  
এই রঙ্গ লীলা করে শ্রীশচীনন্দন ॥ ৩৭ ॥  
স্ববভ পর্দত চলি আইলা গৌরহরি ।  
নারায়ণ দেখি তাঁহা স্তুতি নতি করি ॥  
পরমানন্দপুরী তাঁহা রহে চতুর্মাশ ।  
শুনি মহাপ্রভু গেলা পুরী গোমাক্রিঃ পাশ  
পুরী গোমাক্রিঃর প্রভু কৈল চরণ-বন্দন ।  
প্রোমে পুরী গোমাক্রিঃতারে কৈল আলিঙ্গন-  
তিন দিন প্রোমে ছুঁহে কৃষ্ণকথা রঙ্গে ।  
সেই বিপ্র ঘরে ছুঁহে রহে একসঙ্গে ॥  
পুরীগোমাক্রিঃকহেআগিয়াবপুরুষোত্তমে ।  
পুরুষোত্তম দেখি গৌড় যাব গঙ্গাস্নানে ॥  
প্রভু কহে তুমি পুনঃ আইস নীলাচলে ।  
আমি সেতুবন্ধ হৈতে আশিব অঙ্গকালে ॥  
তোমার নিকটে রহি হেন বাঞ্ছা হয় ।  
নীলাচলে আদিবে মোরে হইয়া সদয় ॥



এত বলি তার ঠাঞি এই আজ্ঞা লয়া ।  
 দক্ষিণ চলিলা প্রভু হরষিত হয় ॥ ৩৮ ॥  
 পরমানন্দপুরী তবে চলিলা নীলাচলে ।  
 মহাপ্রভু চলি চলি আইলা শ্রীশৈলে ॥  
 শিবদুর্গা রহে তাঁহা ব্রাহ্মণেব বেশে ।  
 মহাপ্রভু দেখি ছুঁহার হইল উল্লাসে ॥  
 তিন দিন ভিক্ষা দিল করি নিমন্ত্রণ ।  
 নিভূতে বসি গুণ্ড কথা কহে দুই জন ॥  
 তার মনে মহাপ্রভু করি ইষ্টগোষ্ঠী ।  
 তার আজ্ঞা লয়া আইলা পুরী কামকোষ্ঠী  
 দক্ষিণ মথুরা আইলা কামকোষ্ঠী হইতে ।  
 শূহা দেখা হৈল এক ব্রাহ্মণ সহিতে ॥  
 সেই বিপ্র মহাপ্রভুর কৈল নিমন্ত্রণ ।  
 রামভক্ত সেই বিপ্র বিরক্ত মহাজন ॥  
 কৃতমাল্য স্নান করি আইলা তার ঘরে ।  
 ভিক্ষা কি দিবেক বিপ্র পাক নাহি করে ॥  
 মহাপ্রভু কহে তারে শুন মহাশয় ।  
 মধ্যাহ্ন হইল কেনে পাক নাহি হয় ॥৩৯॥  
 বিপ্র কহে প্রভু মোর অরণ্যে বসতি ।  
 পাকের সামগ্রী বনে না মিলে সম্প্রতি ॥  
 বন্যাশাক ফল মূল আনিবে লক্ষণ ।  
 তবে সীতা করিবেন পাক প্রয়োজন ॥  
 তার উপাসনা জানি প্রভু ভূষ্ট হৈলা ।  
 আশ্বে বাস্বে সেই বিপ্র রন্ধন করিলা ॥  
 প্রভু ভিক্ষা কৈল দিন তৃতীয় প্রহরে ।  
 নির্দিষ্ট সেই বিপ্র উপবাস করে ॥  
 প্রভু কহে বিপ্র কাহে কর উপবাস ।  
 কেনে এত দুঃখে তুমি করহ ছতাশ ॥৪০॥  
 বিপ্র কহে জীবনে মোর নাহি প্রয়োজন ।  
 অগ্নি জ্বলে প্রাণেগিয়া ছাড়িব জীবন ॥  
 অসম্মাতা মহালক্ষ্মী সীতা ঠাকুরাণী ।  
 স্বাক্ষরে স্পর্শিল তাঁরে ইহা কর্ণে শুনি ॥

এ শরীর ধরিবারে কভু না যুয়ায় ।  
 এই দুঃখে জ্বলে দেহ প্রাণ নাহি যায় ॥  
 প্রভু কহে এ ভাবনা না করিহ আর ।  
 পণ্ডিত হইয়া কেনে না কর বিচার ॥  
 ঈশ্বরপ্রিয়সী সীতা চিদানন্দমূর্ত্তি ।  
 প্রাকৃত ইন্দ্রিয়ে তাঁরে দেখিতে নাহিশক্তি  
 স্পর্শিবার কার্য আছুক, না পায় দর্শন ।  
 সীতার আকৃতি মায়া হরিল রাবণ ॥  
 রাবণ আসিতে সীতা অন্তর্জান কৈল ।  
 রাবণের আগে মায়া সীতা পাঠাইল ॥  
 অপ্রাকৃত বস্তু নহে প্রাকৃত গোচর ।  
 বেদপুরাণেতে এই কহে নিরন্তর ॥ ৪১ ॥

তথাহি কুর্খপুরাণবচনম্—

সীতয়ারাধিতো বহ্নিছায়াসীতামজীজনৎ ।  
 তাং জহার দশগ্রীবঃ সীতা বহ্নিপুং গত ॥১৫॥  
 পরীক্ষা সময়ে বহ্নিঃ ছায়াসীতা বিবেশ সা ।  
 বহ্নিঃ সীতাং সমানীয় তৎ-পুরস্তাদনীনয়ৎ ॥১৬

সীতয়া আরাধিতঃ ( প্রার্থিতঃ সন্ ) বহ্নিঃ  
 ছায়াসীতাং ( মায়াসীতাম্ ) অজীজনৎ ( আবি-  
 র্ভাবিতবান্ ) তাং ( ছায়াসীতাং ) দশগ্রীবঃ ( রাবণঃ )  
 জহার ; সীতা বহ্নিপুং গত । পরীক্ষা সময়ে  
 সা ছায়াসীতা বহ্নিম্ ( অগ্নিকুণ্ডং ) বিবেশ, বহ্নিঃ  
 স্বপুরাৎ ( তু ) সীতাং সমানীয় তৎ ( সীতামচন্দ্রত )  
 পুরস্তাৎ ( অগ্রম্ ) অনীনয়ৎ ॥ ১৫।১৬ ॥

সীতা কর্তৃক প্রার্থিত হইয়া, অগ্নি-  
 দেব মায়াসীতাকে প্রকাশ করিয়াছিলেন ।  
 রাবণ সেই মায়াসীতাকে হরণ করে ।  
 সীতাদেবী বহ্নিলোকে গমন করিয়া-  
 ছিলেন । পরে যখন সীতার অগ্নি-  
 পরীক্ষা হয়, তখন মায়াসীতা বহ্নিতে  
 প্রবেশ করিলে, সেই সময় অগ্নিদেব  
 স্বয়ং রূপা সীতাকে সীরামের সমীপে

আনয়ন করতঃ তাঁহাকে প্রদান  
 করেন ॥ ১৫।১৬ ॥  
 বিশ্বাস করহ তুমি আমার বচনে ।  
 পুনরপি কুভাবনা না করিহ মনে ॥  
 প্রভুর বচনে বিপ্রে হৈল বিশ্বাস ।  
 ভোজন করিল হৈল জীবনের আশ ॥  
 তারে আশ্বাসিয়া প্রভু করিলা গমন ।  
 ক্লুতমালায় স্নান করি আইলা দুর্কেশন ॥  
 দুর্কেশনে রঘুনাথে করি দরশন ।  
 মহেশ্বরশৈলে পরশুরামে করিলা বন্দন ॥  
 সেতুবন্ধে আসি কৈল ধনুতীর্থে স্নান ।  
 রামেশ্বর দেখি তাঁহা করিলা বিশ্রাম ॥৪২॥  
 বিপ্রগভায় শুনে তাঁহা কুর্নপুরাণ ।  
 তার মধ্যে আইল পতিব্রতা-উপাখ্যান ॥  
 মায়াসীতা নীল রাবণ শুনিল ব্যাখ্যানে ।  
 শুনি মহাপ্রভু হৈলা আনন্দিত মনে ॥  
 পতিব্রতা-শিরোমণি জনকনন্দিনী ।  
 জগতের মাতা সীতা স্ত্রীরামগেহিনী ॥  
 রাবণ দেখি সীতা লৈল অগ্নির শরণ ।  
 রাবণ হৈতে অগ্নি কৈলা সীতা আবরণ ॥  
 সীতা লয়া রাখিলেন পার্শ্বতীর স্থানে ।  
 মায়াসীতা দিয়া অগ্নি বঞ্চিলা রাবণে ॥  
 রঘুনাথ আসি যবে রাবণ মারিল ।  
 অগ্নিপরীক্ষা দিতে যবে সীতারে আনিল ॥  
 তবে মায়াসীতা অগ্নি করি অন্তর্দান ।  
 সত্য সীতা আনি দিল রাম বিদ্যমান ॥৪৩॥  
 শুনিয়া প্রভুর আনন্দিত হৈল মন ।  
 রামদাস বিপ্রে কথ্য হইল স্মরণ ॥  
 'এ সব সিদ্ধান্ত শুনি প্রভুর আনন্দ হইল ।  
 ব্রাহ্মণের স্থানে মাগি সেই পত্র লৈল ॥  
 নূতন পত্র লিখিয়া পুস্তকে রাখাইল ।  
 প্রতীতি লাগি পুরাতন পত্র মাগি লৈল ॥

পত্র লয়া পুনঃ দক্ষিণ মথুরা আইলা ।  
 রামদাস বিপ্রে দিয়া দুঃখ খণ্ডাইলা ॥  
 পত্র পাঞা বিপ্রে হৈল আনন্দিত মন ।  
 প্রভুর চরণ ধরি করয়ে ক্রন্দন ॥  
 বিপ্র কহে তুমি সাক্ষাৎ স্ত্রীরঘুনন্দন ।  
 সন্ন্যাসির বেশে মোরে দিলে দরশন ॥৪৪॥  
 মহাদুঃখ হৈতে মোরে করিলে নিস্তার ।  
 আজি মোর ঘরে ভিক্ষা কর অঙ্গীকার ॥  
 মনোদুঃখে ভাল ভিক্ষা না দিল সে দিনে  
 মোর ভাগ্যে পুনরপি পাইল দর্শনে ॥  
 এত বলি স্মৃখে বিপ্র শীত্র পাক কৈল ।  
 উত্তম প্রকারে প্রভুকে ভিক্ষা করাইল ॥  
 সেই রাত্রি তাঁহা রহি তারে রূপা করি ।  
 পাণ্ডুদেশ তাম্রপর্ণী আইলা গৌরহরি ॥  
 তাহা আসি স্নান করি তাম্রপর্ণী তীরে ।  
 নয়ত্রিপদী দেখি বুলে কুতূহলে ॥  
 চিয়ড়তাল্য তীর্থে দেখি স্ত্রীরামলক্ষণ ।  
 তিলকাঞ্চি আসি কৈল শিব দরশন ॥  
 গজেশ্বরমোক্ষণ তীর্থে দেখি বিষ্ণুমূর্ত্তি ।  
 পানাগড়ি তীর্থে আসি দেখি সীতাপতি ॥  
 রামভানু আসি দেখে স্ত্রীরামলক্ষণ ।  
 স্ত্রীবৈকুণ্ঠে বিষ্ণু আসি কৈল দরশন ॥ ৪৫ ॥  
 মলয়পার্শ্বতে কৈল অগস্ত্যবন্দন ।  
 কন্যাকুমারী তাঁহা কৈল দরশন ॥  
 আগমীতলাতে রাম দেখি গৌরহরি ।  
 মল্লার দেশেতে আইলা ধাঁহা ভট্টমারি ॥  
 তমাল কার্তিক দেখি আইলা বেতাপানী  
 রঘুনাথ দেখি তাঁহা বঞ্চিলা রজনী ॥  
 গোমাতঙ্গির সঙ্গে রহে কৃষ্ণদাস ব্রাহ্মণ ।  
 ভট্টমারি সহ তার হৈল দরশন ॥  
 স্ত্রীধন দেখাই তারে লোভ জন্মাইল ।  
 আৰ্য্য সরল বিপ্রে বুদ্ধিনাশ হৈল ॥

প্রাতে উঠি আইলা বিপ্র ভট্টমারি ঘরে ।  
 তাহার উদ্দেশে প্রভু আইলা সত্বরে ॥  
 আসিয়া কহিল সব ভট্টমারিগণে ।  
 আমার ব্রাহ্মণ তুমি রাখ কি কারণে ॥  
 তুমিহ সন্ন্যাসী, দেখ আমিহ সন্ন্যাসী ।  
 আসায় হুঃখ দেহ তুমি, ন্যায়নাহিবাসি ৪৬  
 শুনি সব ভট্টমারী উঠে অস্ত্র লঞা ।  
 মারিবারে আইসে সব চারিদিগে ধাঞা ।  
 তার অস্ত্র তার অঙ্গে পড়ে হাতে হৈতে ।  
 খণ্ড খণ্ড হৈল ভট্টমারী পলায় চারিভিত্তে  
 ভট্টমারি ঘরে মহা উঠিল ক্রন্দন ।  
 কেশে ধরি বিপ্র লঞা করিলা গমন ॥  
 সেই দিনে চলি আইলা পয়স্বিনীতীরে ।  
 স্নান করি গেলা আদিকেশবমন্দিরে ॥  
 কেশব দেখিয়া প্রেমে আবিষ্ট হইলী ।  
 নতি স্তুতি নৃত্য গীত বহুত করিলা ॥  
 প্রেম দেখি লোকের হইল মহা চমৎকার ।  
 সর্দ লোক কৈল প্রভুর পরম সৎকার ॥  
 সহ্য ভক্তগণ সহ তাঁহা পোষ্টী হৈল ।  
 ব্রহ্মসংহিতাদ্যার তাঁহাই পাইল ॥ ৪৭ ॥  
 পুঁথী পাশ প্রভুর হৈল আনন্দ অপার ।  
 কম্প অশ্রু শ্বেদ স্তম্ভ পুলক বিকার ॥  
 সিদ্ধান্ত শাস্ত্র নাহি ব্রহ্মসংহিতা সমান ।  
 গোবিন্দ-মহিমা-জ্ঞানের পরম কারণ ॥  
 অল্প অক্ষরে কহে সিদ্ধান্ত অপার ।  
 সকল বৈষ্ণব-শাস্ত্র মধ্যে অতি-সার ॥  
 বহু যত্নে সেই পুঁথী নিল লেখাইয়া ।  
 অনন্ত পদ্মনাভ আইলা হরষিত হয় ॥  
 দিন-দুই পদ্মনাভের করি দরশন ।  
 আনন্দে দেখিতে আইলা শ্রীজনার্দন ॥ ৪৮ ॥  
 দিন দুই তাঁহা করি কীর্তন নর্দন ।  
 পয়োক্ষী আসিয়া দেখে শঙ্কর নারায়ণ ॥

সিংহারিমঠ আইলা শঙ্করাচার্য-স্থানে ।  
 মৎস্ত-তীর্থ দেখি কৈল ভুঙ্গভদ্রায় স্থানে ॥  
 মধ্বাচার্য-স্থানে আইলা ধাঁহা তত্ববাদী ।  
 উড়ু-পুরুষ স্বরূপ দেখি হৈলা প্রেমোন্মাদী  
 নর্ভক গোপাল কৃষ্ণ পরম মোহনে ।  
 মধ্বাচার্যে স্বপ্ন দিয়া আইলা তার স্থানে ॥  
 গোপীচন্দন ভিতর আছিল ডিগ্বাতে ।  
 মধ্বাচার্য সেই কৃষ্ণ পাইল কোন মতে ॥  
 মধ্বাচার্য আনি তারে করিল স্থাপন ।  
 অদ্যাবধি তাঁর সেবা কবে তত্ববাদিগণ ৪৯  
 কৃষ্ণমূর্তি দেখি প্রভু মহাসুখ পাইল ।  
 প্রেমাদেশে নৃত্য গীত বহুক্ষণ কৈল ॥  
 তত্ববাদিগণ প্রভুকে মারাবাদি জানে ।  
 প্রথম দর্শনে প্রভুর না কৈল সম্ভাষণে ॥  
 পাছে প্রেমাবেশ দেখি হৈল চমৎকার ।  
 বৈষ্ণব জ্ঞানেতে বহু করিল সৎকার ॥  
 তা সবার অন্তরে গর্দন জানি গৌরচন্দ্র ।  
 তা সবা-সহিত গোষ্ঠী করিল আরম্ভ ॥  
 তত্ববাদী আচার্য শাস্ত্রে পরম প্রবীণ ।  
 তারে প্রশ্ন কৈল প্রভু হয়। যেন দীন ॥  
 সাধ্য সাধন আশি না জানি ভালমতে ।  
 সাধ্যসাধন শ্রেষ্ঠ জানাহ আমাতে ॥  
 আচার্য কহে বর্ণাশ্রম-ধর্ম কৃষ্ণে সমর্পণ ।  
 এই হয় কৃষ্ণভক্তের শ্রেষ্ঠ সাধন ॥  
 পঞ্চবিধ মুক্তি পায়। বৈকুণ্ঠে গমন ।  
 সাধ্যশ্রেষ্ঠ হয় এই শাস্ত্র নিরূপণ ॥  
 প্রভু কহে শাস্ত্রে কহে শ্রবণ কীর্তন ।  
 কৃষ্ণপ্রেম সেবা ফলের পরম সাধন ॥ ৫০ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে সপ্তমস্কন্ধে পঞ্চমাধ্যায়ে  
 অষ্টাদশশ্লোকঃ—

শ্রবণং কীর্তনং বিষ্ণোঃ স্মরণং পাদসেবনম্ ।  
 অর্চনং বন্দনং দাস্ত্বং সখ্যামান্নবিবেচনম্ ॥

ইতি পুংসর্পিভাঃ বিকো ভক্তিশেষবলক্ষণা ।  
 ক্রিয়েত ভগবত্যাক্ষা তদ্বস্তেহধীতমুত্তমম্ ॥ ১৭ ॥  
 শ্রবণং ( নামরূপগুণপরিবরণীলাময় শব্দানাং  
 প্রাক্শ্রম্পর্শঃ ) কীর্তনং ( ভগবনামাদিনি উচ্চৈঃ  
 ানম্ ) বিকোঃ স্মরণং ( মনসামুসন্ধানং ) পাদসেবনং  
 কালাবেশাভ্যাচিতপরিচর্যা ) অর্চনং বন্দনং দাস্যং  
 তদ্বাসোহস্মি ইতি অভিমানঃ ) সখ্যাং ( বন্ধুভাবেন  
 দীর্ঘস্থিতাশংসনং ) আশ্বনিবেদনং ( বেহাদি-  
 দ্বাঙ্গ্যপার্থ্যস্তত্বসর্কতোভাবেন তস্মিন্ এব অর্পণম্ )  
 তি নবলক্ষণা ( নব লক্ষণাণি যত্রাঃ সা ) ভগবতি  
 তদ্বিষয়িকা ) অক্ষা ( সাক্ষাদ্রূপা, ন তু কর্ম্মাভ্যর্পণ-  
 পা পরম্পরা ) ভক্তিঃ পুংসা বিকো অর্পিতা  
 তদর্থমেবেদমিতি ভাবিতা ন তু ধর্ম্মার্থাদিম্ ।  
 যবেবং ভূতা ) চেৎ ক্রিয়েত ( তদা তেন কর্ত্তা  
 ৎ ) অধীতং তৎ উত্তমং মস্তে ॥ ১৭ ॥

শ্রবণ, কীর্তন, স্মরণ, পাদসেবন,  
 মর্চন, বন্দন, দাস্য, সখ্যা, এবং আশ্ব-  
 নিবেদন, এই নবলক্ষণা ভক্তি কর্ম্মাৰ্পণ-  
 পা পারম্পরিকী না হইয়া যদি ভগবানে  
 সাক্ষাদ্রূপা এবং ধর্ম্মাদিতে অর্পিত না  
 হইয়া পুরুষ কর্ত্তক ত্রীবিধুতেই অর্পিত  
 হয়, এতাদৃশী ভক্তি যদি কেহ করে,  
 তবে তাহারই অধ্যয়ন আমি উত্তম  
 বলিয়া মনে করি ॥ ১৭ ॥

শ্রবণ কীর্তন হৈতে ক্লেশ হয় শ্রেয়া ।  
 সেই পরম পুরুষার্ধ, পুরুষার্থের সীমা ॥ ৫১ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং সপ্তমে চতুর্থশ্লোকধৃত  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

এবং ব্রতঃ শ্রিয়নামকীৰ্ত্তা-  
 জাতাহুয়োগো ভ্রতচিত্ত উচ্চৈঃ ।  
 হসত্যথো যৌদ্ধিতি যৌতি  
 গায়ত্য়ান্নামবম্ ভ্যক্তি লোকবাহুঃ ॥ ১৮ ॥

কর্ম্মত্যাগ কর্ম্মনিম্না সর্কশাজ্জে কহে ।  
 কর্ম্ম হৈতে ক্লেশপ্রেম-ভক্তি কভু নহে ॥ ৫২

তথাহি মধ্যলীলায়াং অষ্টমে ষষ্ঠশ্লোকধৃতঃ  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

আজ্ঞায়ৈবং গুণান্ দোষান্মাদিষ্টানপি স্বকান্ ।  
 ধর্ম্মান্ সংত্যাজ্য যঃ সর্কান্ মাং ভজ্যেৎ স তু সত্তমঃ ১৯  
 তথাহি মধ্যলীলায়াং অষ্টমে সপ্তমশ্লোকধৃতঃ  
 শ্রীগীতাবচনম্—

সর্কধর্ম্মান্ পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্রজ ।  
 অহং ত্বাং সর্কপাপেভ্যা মোক্ষায়ামি মা শুচঃ ২০

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে বিংশতি-  
 তমাধ্যায়ে নবমশ্লোকঃ—

তাবৎ কর্ম্মাণি কুর্কীত ন নির্কিণ্ডেত যাবতা ।  
 মৎকথা শ্রবণাদৌ বা শ্রদ্ধা যাবন্ন জায়তে ॥ ২১ ॥

যাবতা ( যাবৎ ) নির্কিণ্ডেত ( কর্ম্মণা এব  
 অন্তঃকরণগুণৌ সত্যং নির্কেশদঃ ) ন ( জায়তে )  
 মৎকথা শ্রবণাদৌ বা শ্রদ্ধা ( বিশ্বাসঃ ) ন জায়তে  
 তাবৎ কর্ম্মাণি ( নিতানৈমিত্তিকাদীগি ) কুর্কীত ॥ ২১

যতদিন পর্য্যন্ত না চিত্তশুদ্ধি হইয়া  
 বৈরাগ্য জন্মে, অথবা যতদিন না আমার  
 কথা শ্রবণাদিতে শ্রদ্ধা জন্মে ; ততদিন  
 চিত্তশুদ্ধির জন্য মিত্য নৈমিত্তিকাদি কর্ম্ম  
 সকল আচরণ করিবে ॥ ২১ ॥

পঞ্চবিধ মুক্তি ত্যাগ করে ভক্তগণ ।  
 ফল্য করি মুক্তি দেখে নরকের সম ॥ ৫৩ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে পঞ্চত্রিশ্লোক-  
 ধৃতঃ শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

সালোক্যসাক্ষি সানীপ্যসাক্ষৈপ্যকম্মপ্যুত ।  
 দীর্ঘমানং ন গৃহস্তি বিনা মৎসেবনং জনাঃ ॥ ২২ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে পঞ্চমস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে  
 ত্রিচত্বারিংশশ্লোকঃ—

যৌ হৃত্যজান্ কিত্তিহৃতম্বজনার্থদারান্  
 প্রার্থ্যাং শ্রিয়ঃ সুরবর্নৈঃ সধবালোক্যাম্ ।

নৈচ্ছন্নপুস্তহুচিভাং মহতাং মধুঘিট  
সেবাহুরক্তমনসামস্তবোহপি ফল্যঃ ॥ ২৩ ॥

(হে) নৃপ! দৃষ্টান্তান্ (মুনিভিরপি ভ্যাক্-  
মণক্যান্) কিত্তিস্তত্ত্বজনার্থবান্ (কিত্তিশ্চ  
স্বতাঃ পুত্রকস্তাশ্চ স্বজনশ্চ অর্থাশ্চ দারাঃ পত্ন্যাশ্চ  
তান্) সুরবরৈঃ (অমরোক্তমৈঃ) প্রার্থাং (প্রার্থনিত্বং  
যোগ্যাং) সধবাবলোক্যং (ভরতস্ত দয়া যথা  
ভবতি এবমেব আলোক্যঃ যস্তাঃ তাং) শ্রিয়ং  
(সম্পদধিষ্ঠাত্রীপাং) যঃ (ভূপতিঃ ভরতঃ) ন  
ঐচ্ছৎ (ইতি) তৎ উচিতং (এব। যতঃ) মধুঘিট-  
সেবাহুরক্তমনসাম্ (মধুঘিষঃ ভগবতঃ সেবায়াম্  
অহুরক্তঃ মনঃ যেবাং তেবাং) মহতাং (সম্বন্ধে)  
অভবঃ (মোক্শঃ) অপি ফল্যঃ (তুচ্ছ এব কিমুত্তম্)  
রাজ্যাদয়ঃ অন্তঃ তৈশ্চৈবং বিষয়ত্যাগঃ ন চিত্রম্ ॥২৩

মুণিগণের দুস্ত্যজ ক্ষিত্তি, পুত্র, কস্তা,  
বান্ধব, অর্থ, কলত্র এবং ভরতের দয়া-  
পাত্রী হইবার জন্য সম্পূহলোচনে সর্কদা  
অবলোকন করেন, সেই দেবগণের  
প্রার্থনীয় রাজ্য সম্পত্তি সকল, মহারাজ  
ভরত যে ইচ্ছা করেন নাই, তাহা  
তাঁহার উচিত হইয়াছিল; ইহা আশ্চর্য্য  
নহে! যেহেতু ষাঁহাদের ভগবৎ-সেবায়  
মন অনুরক্ত হইয়াছে, সেই মহৎব্যক্তিগণ  
মোক্শ পর্য্যন্তকেও তুচ্ছ বোধ করেন ॥২৩॥

তথাহি তৈশ্চৈব বর্ষস্বক্কে সপ্তদশাধায়ে ত্রয়ো-  
বিংশশ্লোকঃ—

নারায়ণপরাঃ সর্কেন ন কুতশ্চন বিভ্রাতি ।  
অর্গাপবর্গনয়কেষপি তুল্যার্থবর্শিনঃ ॥ ২৪ ॥

অর্গাপবর্গনয়কেষু অপি তুল্যার্থবর্শিনঃ নারায়ণ-  
পরঃ ( ভগবৎপরায়ণাঃ ) সর্কেন ( জনাঃ ) কুতশ্চনঃ  
ন বিভ্রাতি ॥ ২৪ ॥

মহাদেব কহিলেন, হে পর্কতি ।

ষাঁহাদের স্বর্গ, মুক্তি ও নরকে তুল্যার্থ  
দৃষ্টি, সেই ভগবন্তুক্তগণ কিহুতেই ভীত  
নহেন ॥ ২৪ ॥

কর্ম্ম মুক্তি দুই বস্তু ত্যজে ভক্তগণ ।  
সেই দুই স্থাপ তুমি সাধ্য সাধন ॥  
সন্ন্যাসী দেখিয়া আমা করহ বঞ্চন ।  
না কহিলা তেত্রিঃ সাধ্য সাধন লক্ষণ ॥

শুনি তত্বাচার্য্য হৈলা অন্তরে লঙ্কিত ।  
প্রভুর বৈষ্ণবতা দেখি হইলা বিস্মিত ॥  
আচার্য্য কহে তুমি যেই কহ সেই সত্য হয়  
গর্ক শাস্ত্রে পৈষ্ণবের এই স্মুনিশ্চয় ॥

তথাপি মধ্বাচার্য্য যে করিয়াছে নির্ক্ক ।  
সেই আচরিয়ে সবে সম্প্রদায় সঘঙ্ক ॥২৪॥  
প্রভু কহে কর্ম্ম জানী দুই ভক্তিহীন ।  
তোমার সম্প্রদায় দেখি সেই দুই চিহ্ন ॥  
সবে এক গুণ দেখি তোমার সম্প্রদায় ।  
সত্য বিগ্রহ করি দৈশ্বরে করহ নিশ্চয় ॥  
এইমত তার ঘরের গর্ক চূর্ণ করি ।  
ফল্গুতীর্থ তবে চলি আইলা গৌরহরি ॥  
ত্রিতকুপ বিশালায় করি দরশন ।

পঞ্চাম্পরা তীর্থ আইলা শচীর নন্দন ॥  
গোকর্ণ শিব দেখি আইলা দ্বৈপায়নী ।  
সুপারক তীর্থ আইলা ন্যাসিশিরোমণি ॥  
কোলাপুরে লক্ষ্মী দেখি ক্ষীর ভগবতী ।  
লাঙ্গা গণেশ দেখি চোরা-ভগবতী ॥

তথা হৈতে পাণ্ডুর আইলা গৌরচন্দ্র ।  
বিষ্ঠল ঠাকুর দেখি পাইল আনন্দ ॥২৫॥  
শ্রেমাবেশে কৈল বহু নর্কন কীর্কন ।  
প্রভুর শ্রেম দেখি সবার চমৎকার মন ॥  
তাঁহা এক বিশ্র তাঁরে নিমন্ত্রণ কৈল ।

ভিক্ষা করি তাঁহা এক শুভবার্তা পাইল ॥

মাধবপুরীর শিষ্য জীরঙ্গপুরী নাম ।  
 সেই গ্রামে বিপ্রগৃহে করেন বিশ্রাম ॥  
 শুনিয়া চলিল প্রভু তারে দেখিবারে ।  
 বিপ্রগৃহে বসিয়াছেন দেখিল তাহারে ॥  
 প্রেমাবেশে করে তারে দণ্ডপরগাম ।  
 পুলকাক্ষ কম্প সব অঙ্গে পড়ে ঘাম ॥  
 দেখিয়া বিম্মিত হৈল জীরঙ্গপুরীর মন ।  
 উঠ উঠ শ্রীপাদ বলি বলিল বচন ॥  
 শ্রীপাদ ধরহ আমার গোনাক্ষির সম্বন্ধ ।  
 তাহা বিদ্যু অন্যত্র নাহি এই প্রেমার গন্ধ ॥  
 এত বলি প্রভুকে উঠাই কৈল আলিঙ্গন ।  
 গলাগলি করি ছুঁহে করেন ক্রন্দন ॥ ৫৬ ॥  
 ক্রণেকে আবেশ ছাড়ি ছুঁহার ধৈর্য্য হৈল ।  
 দৈশ্বরপুরীর সম্বন্ধ প্রভু জানাইল ॥  
 দুইজনে কৃষ্ণকথা কহে রাত্রিদিনে ।  
 এইমত গোঙাইল পাঁচ সাত দিনে ॥  
 কোতুকে পুরী তাঁরে পুছিল জন্মস্থান ।  
 গোনাক্ষি কোতুকে নিল নবদ্বীপ নাম ॥  
 জীমাধবপুরীর সঙ্গে জীরঙ্গপুরী ।  
 পূর্বে আসিয়াছিল নদীয়া নগরী ॥  
 জগন্নাথমিশ্রঘরে তিস্তা যে করিল ।  
 অপূর্ব মোচার ঘণ্ট তাঁহা যে খাইল ॥  
 জগন্নাথের ব্রাহ্মণী মহাপতিব্রতা ।  
 বাৎসল্যে হয় তিঁহো যেন জগন্নাভা ॥  
 রন্ধনে নিপুণা নাহি তা সম ত্রিভুবনে ।  
 পুত্রসম স্নেহে করায় সন্ন্যাসি-ভোজনে ॥  
 তার একপুত্র যোগ্য করিয়া সন্ন্যাস ।  
 শঙ্করারণ্য নাম তার অলপ বয়স ॥  
 এই তীর্থে শঙ্করারণ্যের সিদ্ধিপ্রাপ্তি হৈল ।  
 প্রভাবে জীরঙ্গপুরী এতেক কহিল ॥ ৫৭ ॥  
 প্রভু কহে পূর্বাশ্রমে তেহঁা মোর জাতা ।  
 জগন্নাথ মিশ্র মোর পূর্বাশ্রমে পিতা ॥

এইমত দুই জনে ইষ্টগোষ্ঠী করি ।  
 দ্বারকা দেখিতে চলিল জীরঙ্গপুরী ॥  
 দিন চারি প্রভুকে তাহা রাখিল ব্রাহ্মণ ।  
 ভীমরথি স্নান করে বিষ্ঠাল দর্শন ॥  
 তবে মহাপ্রভু আইলা কৃষ্ণবেণা তীর ।  
 নানা তীর্থে দেখি তাঁহা দেবতামন্দির ॥  
 ব্রাহ্মসমাজ সব বৈষ্ণব চরিত ।  
 বৈষ্ণব সকল পঢ়ে কৃষ্ণকর্ণামৃত ॥  
 কর্ণামৃত শুনি প্রভুর আনন্দ হইল ।  
 আগ্রহ করিয়া পুঁথি লেখাইয়া নিল ॥  
 কর্ণামৃতসম বস্তু নাহি ত্রিভুবনে ।  
 যাহা হৈতে হয় শুদ্ধ কৃষ্ণপ্রেম জানে ॥  
 সৌন্দর্য্য মাধুর্য্য কৃষ্ণলীলার অবধি ।  
 সে জানে যে কর্ণামৃত পড়ে নিরবধি ॥  
 ব্রহ্মসংহিতা, কর্ণামৃত দুই পুঁথি পাঞা ।  
 মহারত্ন প্রায় দুই আইলা সঙ্গে লয়া ॥ ৫৮ ॥  
 তাপী স্নান করি আইলা মাহিম্বতী পুরে ।  
 নানা তীর্থে দেখে তাঁহা নন্দদার তীরে ॥  
 ধনুতীর্থে দেখি কৈলা নির্ঝঙ্ক্যাতে স্নানে  
 ঋষ্যমুখপর্কত আইলা দণ্ডক-অরণ্যে ॥  
 সপ্ততালরক্ষ তাহা কানন ভিতর ।  
 অতিবৃদ্ধ অতি শূল অতি উচ্চতর ॥  
 সপ্ততাল দেখি প্রভু আলিঙ্গন কৈল ।  
 সশরীরে সপ্ততাল বৈকুণ্ঠে চলিল ॥  
 শূন্যস্থান দেখি লোকেব হৈল চসৎকার ।  
 লোকে কহে এ সন্ন্যাসী রাম অবতার ॥  
 সশরীরে গেল তাল শ্রীবৈকুণ্ঠ ধাম ।  
 ঐছে শক্তি কার হয় বিনে এক রাম ॥  
 প্রভু আসি কৈলা পম্পা সরোবরে স্নান ।  
 পঞ্চবটী আসি তাঁহা করিল বিশ্রাম ॥ ৫৯ ॥  
 নাসিক ত্র্যম্বক দেখি গেলা ব্রহ্মগিরি ।  
 কুশাবর্ত আইলা বাঁহা জন্মিলা গোদাবরী ॥

গগনগোদাবরী দেখি তীর্থ বহুতর ।  
 পুনরপি আইলা প্রভু বিদ্যানগর ॥  
 রামানন্দ রায় শুনি প্রভুর আগমন ।  
 আনন্দে আগিয়া কৈল প্রভুর মিলন ॥  
 দণ্ডবৎ হয় পড়ে চরণে ধরিয়া ।  
 আলিঙ্গন কৈল প্রভু তারে উঠাইয়া ॥  
 দুই জন প্রেমাবেশে করয়ে ক্রন্দন ।  
 প্রেমাবেশে শিথিল হৈল দুই জনার মন ॥  
 কথোক্ষণে ছুট জন সৃষ্টির হইয়া ।  
 নানা ইষ্টগোষ্ঠী করে একত্রে বসিয়া ॥  
 তীর্থযাত্রা কণা প্রভু সকল কহিলা ।  
 কর্ণামৃত ব্রহ্মসংহিতা দুই পুথি দিলা ॥  
 প্রভু কহে তুমি যেই সিদ্ধাস্ত কহিলে ।  
 এই দুই পুথি সেই সব সাক্ষী দিলে ॥  
 রায়ের আনন্দ হৈল পুস্তক পাইয়া ।  
 প্রভু সহ আশ্রয়িল রাখিল লিখিয়া ॥৬০॥  
 গোসাঞি আইলা গ্রামে হৈল কোলাহল ।  
 গোসাঞি দেখিতে লোক আইল সকল ॥  
 লোক দেখি রামানন্দ গেলা নিজঘরে ।  
 মধ্যাহ্নে উঠিলা প্রভু ভিক্ষা করিবারে ॥  
 রাত্রিকালে রায় পুনঃ কৈল আগমন ।  
 দুই জন কৃষ্ণকথায় করে জাগরণ ॥  
 দুই জনে কৃষ্ণকথা হয় রাত্রিদিনে ।  
 পরম আনন্দে গেল পাঁচ সাত দিনে ॥  
 রামানন্দকহেগোসাঞিতোমারআজ্ঞাপায়  
 রাজ্যকে লিখিল আমি বিনতি করিয়া ॥  
 রাজ্য মোরে আজ্ঞা দিলা নীলাচল যাইতে  
 চলিবারসজ্জাআমিলাগিয়াছি করিতে ॥৬১॥  
 প্রভু কহে এথা মোর এ নিমিত্ত আগমন ।  
 তোমা লয়া নীলাচলে করিব গমন ॥  
 রায় কহে প্রভু আপে চল নীলাচল ।  
 মোর সঙ্গে হাতী ঘোড়া সৈন্য কোলাহল

দিন দশে ইহা সব করি সমাধান ।  
 তোমার পাছে পাছে আমি করিব প্রয়াণ  
 তবে মহাপ্রভু তারে আশিতে আজ্ঞা দিয়া  
 নীলাচল চলিলা প্রভু আনন্দিত হয় ॥  
 যেই পথে পূর্বে প্রভু করিল গমন ।  
 সেই পথে চলিলা প্রভু দেখি বৈষ্ণবগণ ॥  
 বাঁহা যায় উঠে লোক হরিধ্বনি করি ।  
 দেখিয়া আনন্দ বড় পাইলা গৌরহরি ॥৬২  
 আলালনাথ আমি কৃষ্ণদাসে পাঠাইলা ।  
 নিত্যানন্দ আদি নিজগণে বোলাইলা ॥  
 প্রভুর আগমন শুনি নিত্যানন্দরায় ।  
 উঠিয়া চলিলা প্রেমে খেহো নাহি পায় ॥  
 জগদানন্দ দাসোদর পণ্ডিত মুকুন্দ ।  
 নাচিয়া চলিলা দেহে না ধরে আনন্দ ॥  
 গোস্বামীনাথার্চ্য চলে আনন্দিত হঞা ।  
 প্রভুরে মিলিলা যবে পথে লাগ পাঞা ॥  
 প্রভু প্রেমাবেশে সবায় কৈল আলিঙ্গন ।  
 প্রেমাবেশে সব করে আনন্দে ক্রন্দন ॥  
 সার্কভৌম ভট্টাচার্য আনন্দে চলিলা ।  
 সমুদ্রের তীরে আসি প্রভুরে মিলিলা ॥৬৩  
 সার্কভৌম মহাপ্রভুর পড়িলা চরণে ।  
 প্রভু তারে উঠাইয়া কৈল আলিঙ্গনে ॥  
 প্রেমাবেশে সার্কভৌম করেন ক্রন্দনে ।  
 সব সঙ্গ আইলা প্রভু ঈশ্বর দর্শনে ॥  
 জগন্নাথ দেখি প্রভুর প্রেমাবেশ হৈল ।  
 কল্প স্বৈদ পুলকাক্ষ শরীর ভাসিল ॥  
 বহু নৃত্য গীত কৈল প্রেমাবিষ্ট হঞা ।  
 পাণ্ডাপাল সব আইলা প্রসাদ মালা লঞা  
 মালা প্রসাদ পাঞা তবে প্রভু সৃষ্টির হৈল  
 জগন্নাথের সেবক সব আনন্দে মিলিলা ॥  
 কাশীমিশ্র আসি পড়িল প্রভুর চরণে ।  
 মান্য করি প্রভু তারে কৈল আলিঙ্গনে ॥

জগন্নাথের পড়িছা আমি প্রভুরে মিলিলা  
 প্রভু লঞা সার্কভৌম নিজ ঘরে গেলা ॥৩৪  
 ঘোর ঘরে ভিক্ষা বলি নিমন্ত্রণ কৈলা ।  
 দিব্য দিব্য মহাপ্রসাদ অনেক আনাইলা ॥  
 মধ্যাহ্ন করিয়া প্রভু নিজগণ লয়া ।  
 সার্কভৌম ঘরে ভিক্ষা করিল আসিয়া ॥  
 ভিক্ষা করাইয়া তাঁরে করাইলা শয়ন ।  
 আপনে সার্কভৌম করে পাদ সম্বাহন ॥  
 প্রভু তাঁরে পাঠাইলা ভোজন করিতে ।  
 সেই রাত্রি তাঁর ঘরে রহিলা তাঁর শ্রীতে ॥  
 সার্কভৌম নন্দে আর লঞা নিজগণ ।  
 তীর্থযাত্রা কথা কহি কৈলা জাগরণ ॥  
 প্রভু কহে এত তীর্থ কৈল পর্যটন ।  
 তোমা সম বৈষ্ণব না দেখিল এক জর্মন ॥  
 এক রামানন্দ রায় বল সুখ দিল ।  
 ভট্ট কহে এই লাগি মিলিতে কহিল ॥  
 তীর্থযাত্রা কথা এই হৈল সমাপন ।  
 সঙ্ক্ষেপে কহিল বিস্তার না যায় বর্ণন ॥

অনন্ত চৈতন্যকথা কহিতে না জানি ।  
 লোভে লঙ্কাখাঞাতারকরিটানাটানি ॥৩৫  
 প্রভুর তীর্থযাত্রা কথা শুনে যেই জন ।  
 চৈতন্যচরণে পায় গাঢ় প্রেমধন ॥  
 চৈতন্যচরিত্র শুন শ্রদ্ধা ভক্তি করি ।  
 মাৎস্য্য ছাড়িয়া মুখে বল হরি হরি ॥  
 এই কলিকালে আর নাহি অন্য ধর্ম ।  
 বৈষ্ণব বৈষ্ণবশাস্ত্রে এই কহে ধর্ম ॥  
 চৈতন্যচন্দ্রের জীলা অগাধ গম্ভীর ।  
 প্রবেশ করিতে নারি স্পর্শি রহি তীর ॥  
 চৈতন্যচরিত্র শ্রদ্ধায় শুনে যেই জন ।  
 যতক বিচারে, তত পায় প্রেমধন ॥  
 শ্রীরূপ রঘুনাথ পদে যার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৩৬ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
 দক্ষিণদেশতীর্থভ্রমণনাম  
 নবম পরিচ্ছেদ ॥ ৯ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপ শ্রীশ্যামলালপদারবিন্দসেবি বিনোদবিহারিগোবিন্দমি  
 ক্তাধরবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত দক্ষিণদেশভ্রমণং নাম নবমপরিচ্ছেদঃ ॥ ৯ ॥

## দশম পরিচ্ছেদ ।



গ্রন্থকারস্য ।—

ভং বন্দে গৌরজলদং স্বস্ত যো দর্শনামৃতৈঃ ।

বিচ্ছেদাবগ্রহ্নান-ভক্তশত্ৰুজীবরং ॥ ১ ॥

যঃ (গৌরঃ) স্বস্ত দর্শনামৃতৈঃ বিচ্ছেদাবগ্রহ-  
 ন্নানভক্তশত্ৰুনি (বিচ্ছেদ এব অবগ্রহঃ বর্ষণ-  
 ব্যাঘাতঃ তেন ন্নানঃ শত্রুপ্রায়ঃ ভক্তা এব  
 শত্ৰুনি) অজীবরং ভং গৌরজলদং বন্দে ॥ ১ ॥

যিনি নিজ দর্শনরূপ অমৃতজল দ্বারা  
 বিচ্ছেদরূপ অনাদৃষ্টি বশতঃ শত্রুপ্রায়  
 ভক্তরূপ শত্ৰুগণকে জীবিত করিয়া-  
 ছিলেন, আমি সেই গৌররূপ জলদকে  
 বন্দনা কবি ॥ ১ ॥



জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিক্যানন্দ ।  
জয়দ্বৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্ত রন্দ ॥  
পূর্বে যবে মহাপ্রভু চলিলা দক্ষিণে ।  
প্রতাপরুদ্র রাজা তবে

বোলাইলা সার্কভৌমে ॥

বসিতে আনন দিল করি নমস্কারে ।  
মহাপ্রভুর বার্তা তবে পুছিল তাহারে ॥১॥  
শুনিল তোমার ঘরে এক মহাশয় ।  
গৌড় হৈতে আইলা তেঁহো মহারূপায় ॥  
তোমাতে বহু রূপা বৈলা কহে মর্কজন ।  
রূপা করি করাহ মোরে তাঁহার দর্শন ॥  
ভট্ট কহে যে শুনিলে সেই সত্য হয় ।  
তাঁহার দর্শন তোমার ঘটন না হয় ॥  
বিরক্ত সন্ন্যাসী তিঁহো রহয়ে নির্জনে ।  
স্বপ্নেই না করে তিঁহো রাজ-দরশনে ॥  
তথাপি কোন প্রকারে তোমায়

করাইতাম দর্শন ।

প্রতি করিলা তিঁহো দক্ষিণ গমন ॥২॥  
রাজা কহে জগন্নাথ ছাড়ি কেন গেলা ।  
ভট্ট কহে মহাশয়ের এই এক লীলা ॥

পবিত্র করিতে করেন তীর্থাভ্রমণ ।  
দেই ছলে নিস্তারয়ে সাংসারিক জন ॥৩॥

তথাহি আদিদীপায়াম প্রথমে ষাট্রিংশশ্লোক-  
ধৃতং শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

ভবদ্বিধা ভাগবতাস্তীর্থীভূতাঃ স্মরণং প্রভো ।

তীর্থী কুর্পস্তু তীর্থানি স্বাস্থ্যেহন গদাভূতা ॥২॥

বৈষ্ণবের এই হয় সত্যাব নিশ্চল ।

তিঁহো জীব নহে হন স্বতন্ত্র ঈশ্বর ॥

রাজা কহে তারে তুমি যাইতে কেন দিলে

পায়ে পাড় যত্ন করি কেনে না রাখিলে ॥

ভট্টাচার্য্য কহে তিঁহো ঈশ্বর স্বতন্ত্র ।

সাক্ষাৎ শ্রীকৃষ্ণ তেঁহোনহে পরতন্ত্র ॥

তথাপি রাখিতে তাঁরে বহু যত্ন কৈল ।

ঈশ্বরের স্বতন্ত্র ইচ্ছা রাখিতে নারিল ॥৪॥

রাজা কহে ভট্ট তুমি বিজ্ঞশিরোমণি ।

তুমি তাঁরে কৃষ্ণ কহ তাতে সত্য মানি ॥

পুনরপি ইহাঁ তাঁর হইলে আগমন ।

একবার দেখি করি সফল নয়ন ॥

ভট্টাচার্য্য কহে তিঁহো আসিব অল্পকালে ।

রহিতে তাঁরে এক স্থান চাহিয়ে বিরলে ॥

ঠাকুরের নিকট হবে হইব নির্জনে ।

এঁছে নির্ণয় করি দেহ এক স্থানে ॥ ৫ ॥

রাজা কহে এঁছে কাশীমিশ্রের সদন ।

ঠাকুরের নিকট হয় পরম নির্জন ॥

এত কহি রাজা রহে উৎকণ্ঠিত হঞা ।

ভট্টাচার্য্য কাশীমিশ্রে কহিল সব গিয়া ॥

কাশীমিশ্র কহে আমি বড় ভাগ্যবানু ।

মোর ঘরে প্রভুগাদের হবে অবস্থান ॥

এইমত পুরুষোত্তমবানী যত জন ।

প্রভুরে মিলিতে সবার উৎকণ্ঠিত মন ॥

সব লোকের উৎকণ্ঠা যবে অত্যন্ত বাড়িলা

মহাপ্রভু দক্ষিণ হৈতে তবহিঁ আইলা ॥৬॥

শুনি অনন্দিত হৈল সবার মন ।

সবে মেলি সার্কভৌমে কৈল নিবেদন ॥

প্রভু সহ আশা সবার করহ মিলন ।

তোমার প্রসাদে পাই চৈতন্যচরণ ॥

ভট্টাচার্য্য কহে কালি কাশীমিশ্র-ঘরে ।

প্রভু যাইবেন তাঁহা মিলাইব সবারে ॥

আর দিন মহাপ্রভু ভট্টাচার্য্য সঙ্গে ।

জগন্নাথ দরশন কৈল মহারঙ্গে ॥

মহাপ্রসাদ দিয়া তাঁহা মিলিলা সেবকগণ ।

মহাপ্রভু সবারকারে কৈল আলিঙ্গন ॥ ৭ ॥

দর্শন করি মহাপ্রভু চলিলা বাহিরে ।

ভট্টাচার্য্য নিল তাঁরে কাশীমিশ্র ঘরে ॥

কাশীমিশ্র পড়িলা আমি প্রভুর চরণে ।  
 গৃহ সহিত আত্মা তাঁরে কৈল সমর্পণে ॥  
 প্রভু চতুর্ভুজমূর্ত্তি তারে দেখাইল ।  
 আল্লনাৎ করি তারে আলিঙ্গন কৈল ॥  
 তবে মহাপ্রভু তাহা বসিলা আসনে ।  
 চৌদিকে বসিলা নিত্যানন্দাদি-ভক্তগণে ॥  
 মুখী হৈলা প্রভু দেখি বাসার সংস্থান ।  
 যেই বাসা হয় প্রভুর মর্ক সমাধান ॥ ৮ ॥  
 মার্কভৌম কহে প্রভু তোমার যোগ্য বাসা  
 তুমি অঙ্গীকার কর এইমিশ্রের বড় আশা ॥  
 প্রভু কহে এই দেহ তোমা সমাকার ।  
 যেই তুমি কহ সেই সম্মত আমার ॥ ৯ ॥  
 তবে মার্কভৌম প্রভুর দক্ষিণ পার্শ্বে বসি  
 মিলাইতে লাগিলা সব পুরুষোত্তমবাসী ॥  
 এই সব লোক প্রভু বৈসে নীলাচলে ।  
 উৎকণ্ঠিত হইয়াছে বড় তোমা মিলিবারে ॥  
 তুমিত চাতক যৈছে মেঘেরে হাঁকারে ।  
 তৈছে এই সব, সব কর অঙ্গীকারে ॥ ১০ ॥  
 জগন্নাথ সেবক এই নাম জনাঙ্গিন ।  
 অনবসরে করে প্রভুর স্ত্রী অঙ্গসেবন ॥  
 কৃষ্ণদাস নাম এই স্বর্গবেত্রধারী ।  
 শিখিমাহিতী এই লিখন অধিকারী ॥  
 প্রহ্লাদমিশ্র ইহঁ বৈষ্ণব প্রধান ।  
 জগন্নাথ মহাসোয়ার ইহঁ দাস নাম ॥  
 নুরারিমাহাতী শিখিমাহাতীর ভাই ।  
 তোমার চরণে বিদ্যু অন্য গতি নাই ॥  
 চন্দনেশ্বর সিংহেশ্বর মুরারি ব্রাহ্মণ ।  
 বিষ্ণুদাস ইহঁে ধ্যায় তোমার চরণ ॥  
 প্রহররাজ মহাপাত্র ইহঁে মহামতি ।  
 পরমানন্দ মহাপাত্র ইহার সংহতি ॥ ১০ ॥  
 এই সব বৈষ্ণব এই ক্ষেত্রের ভূষণ ।  
 একান্তভাবে ভঙ্কে সব তোমার চরণ ॥

তবে সবে পায়ে পড়ে দণ্ডবৎ হঞা ।  
 সব আলিঙ্গিল প্রভু প্রসাদ করিঞা ॥  
 হেনকালে আইলা তাঁহা ভবানন্দ রায় ।  
 চারি পুত্র সঙ্গে পড়ে মহাপ্রভুর পায় ॥  
 মার্কভৌম কহে এই রায় ভবানন্দ ।  
 ইহার প্রথম পুত্র রায় রামানন্দ ॥  
 তবে মহাপ্রভু তারে কৈল আলিঙ্গন ।  
 স্তুতি করি কহে রামানন্দবিবরণ ॥ ১১ ॥  
 রামানন্দ হেন রত্ন বাহার তনয় ।  
 তাহার মহিমা লোকে কহিলে না হয় ॥  
 গাফাৎ পাণ্ডু তুমি তোমার পত্নী কুন্তী ।  
 পঞ্চপাণ্ডব তোমার পঞ্চপুত্র মহামতি ॥  
 রায় কহে আমি শূদ্র বিষয়ী অধম ।  
 গৌরে স্পর্শ তুমি এই ঐশ্বরলক্ষণ ॥  
 নিজ গৃহ বিস্ত ভৃত্য পঞ্চপুত্র মনে ।  
 আত্ম সমর্পিল আমি তোমার চরণে ॥  
 এই বাণীনাথ রহিলে তোমার চরণে ।  
 যবে সেই আত্মা সেই করিবে সেবনে ॥  
 আত্মীয় জ্ঞান করি সঙ্কোচ না করিবে ।  
 যেইববেইছা তোমার সেই আত্মাদিবে ॥ ১২ ॥  
 প্রভু কহে কি সঙ্কোচ, নহ তুমি পর ।  
 জন্মে জন্মে তুমি আমার সবংশে কিঙ্কর ॥  
 দিন পাঁচ মাত ভিতরে আদিব রামানন্দ  
 তাঁর সঙ্গে পূর্ণ হবে আমার আনন্দ ॥  
 এত বলি প্রভু তারে কৈল আলিঙ্গন ।  
 তার পুত্র সব, শিরে ধরিল চরণ ॥  
 তবে মহাপ্রভু তারে ঘরে পাঠাইল ।  
 বাণীনাথ পট্টনায়ক নিকটে রাখিল ॥  
 ভট্টাচার্য্য সবলোকে বিদ্যায় করিল ।  
 তবে প্রভু কালাক্রম দাগে বোলাইল ॥  
 প্রভু কহে ভট্ট শুন ইহার চরিত ।  
 দক্ষিণ গেলেন ইহঁে আমার সহিত ॥

ভট্টমারি হৈতে গেলা আমারে ছাড়িয়া ।  
ভট্টমারি হৈতে ইহায় আনিল উদ্ধারিয়া ॥  
এবে আসি ইহা গানি করিল বিদায়-।  
গাঁহা তাঁহা বাহ আমা-গনে নাহি দায় ॥১৩  
এ ত শুনি কৃষ্ণদাস কান্দিতে লাগিলা ।  
মধ্যাহ্ন করিতে মহাপ্রভু উঠি গেলা ॥  
নিত্যানন্দ জগদানন্দ মুকুন্দ দামোদর ।  
চারিজনে যুক্তি তবে করিল অন্তর ॥  
গৌড়দেশে পাঠাইতে চাহি একজন ।  
আইকে কহুক বাই প্রভুর আগমন ॥  
অদ্বৈত শ্রীবাস-আদি যত ভক্তগণ ।  
নবেই আসিব শুনি প্রভুর আগমন ॥  
এই কৃষ্ণদাসে দিব গৌড়ে পাঠাইয়া ।  
এত কহি তারে রাখিল আশ্বাস করিয়া ॥১৪  
আর দিন প্রভু ঠাই কৈল নিবেদন ।  
আজ্ঞা দেহ গৌড়দেশ পাঠাই এক জন ॥  
তোমার দক্ষিণ গমন শুনি শচী আই ।  
অদ্বৈতাদি বৈষ্ণবগণ আছেন দুঃখ পাই ॥  
একজন বাই কহে শুভু সমাচার ।  
প্রভু কহে কর সেই যে ইচ্ছা তোমার ॥  
তবে সেই কৃষ্ণদাসে গৌড়ে পাঠাইল ।  
বৈষ্ণব সব্বারে দিতে মহাপ্রসাদ দিল ॥  
তবে গৌড়দেশ আইলা কালাকৃষ্ণদাস ।  
নবদ্বীপ গেলা তিহৌ শচী আই-পাশ ॥  
মহাপ্রসাদ দিয়া তাঁরে কৈল নমস্কার ।  
দক্ষিণ হৈতে আইলা প্রভু কহে সমাচার ॥১৫  
শুনি আনন্দিত হৈল শচী মাতার মন ।  
শ্রীনিবাস আদি আর যত ভক্তগণ ॥  
শুনিয়া সব্বার হৈল পরম উল্লাস ।  
অদ্বৈত আচার্য্য গৃহে গেলা কৃষ্ণদাস ॥  
আচার্য্যে প্রসাদ দিয়া কৈল নমস্কার ।  
সম্যক্ কহিল মহাপ্রভুব সমাচার ॥

শুনিয়া আচার্য্য গোসাঞি পরমানন্দ হৈলা  
প্রেমাবেশে লুকার বহু নৃত্য গীত কৈলা ॥১৬  
হরিদাস ঠাকুরের হৈল পরম আনন্দ ।  
বাসুদেব দত্ত, গুণ্ড মুরারি, শিবানন্দ ॥  
আচার্য্যরত্ন আর পণ্ডিত বক্রেশ্বর ।  
আচার্য্যনিধি আর পণ্ডিত গদাধর ॥  
শ্রীরাম পণ্ডিত আর পণ্ডিত দামোদর ।  
শ্রীমানু পণ্ডিত আর বিজয় শ্রীধর ॥  
রাঘব পণ্ডিত আর আচার্য্যনন্দন ।  
কতক কহিব আরম্ভ যত প্রভুর গণ ॥  
শুনিয়া সব্বার হৈল পরম উল্লাস ।  
নবে মিলি আইলা শ্রীঅদ্বৈতের পাশ ॥  
আচার্য্যের কৈল নবে চরণবন্দন ।  
আচার্য্য গোসাঞি কৈল সব্বা আলিঙ্গন ॥  
দুই তিন দিন আচার্য্য মহোৎসব কৈল ।  
নীলাচল যাইতে তবে যুক্তি দৃঢ় হৈল ॥  
নবে মিলি নবদ্বীপে একত্র হইয়া ।  
নীলাদ্রি চলিল শচীমাতার আজ্ঞা লয়া ॥১৭  
প্রভুর সমাচার শুনি কুলীনপ্রাগবাসী ।  
মতরাজ রামানন্দ মিলিলা তাঁহা আসি ॥  
মুকুন্দ নরহরি রঘুনন্দন খণ্ড হৈতে ।  
আচার্য্যের ঠাঞি আইলা নীলাচল যাইতে  
সেইকালে দক্ষিণ হৈতে পরমানন্দপুরী ।  
গঙ্গাতীরে তীরে আইলা নদীয়া নগরী ॥  
আইর মন্দিরে সুখে করিল বিশ্রাম ।  
আই তাঁরে ভিক্ষা দিল করিয়া সন্মান ॥  
প্রভু আগমন তিহৌ তথাই শুলিল ।  
শীঘ্র নীলাচল যাইতে তাঁর ইচ্ছা হৈল ॥  
প্রভুর এক ভক্ত দ্বিজ কমলাকান্ত নাম ।  
তাঁরে লঞা নীলাচল করিল প্রয়াণ ॥১৮  
সত্বরে আসিয়া তিহৌ মিলিলা প্রভুরে ।  
প্রভর আনন্দ হৈল পাইয়া তাঁহারে ॥

প্রোমাবেশে কৈল তাঁর চরণবন্দন ।  
 তিহৌ প্রোমাবেশে কৈল প্রভুরে আলিঙ্গন  
 প্রভু কহে তোমা সঙ্গে রহিতে বাঞ্ছা হয়  
 মোরে রূপা কর নীলাদ্রি আশ্রয় ॥  
 পুরী কহে তোমা সঙ্গে রহিতে বাঞ্ছা করি  
 গোড় হৈতে আইলাম নীলাচলপুরী ॥  
 দক্ষিণ হইতে তোমার শুনি আগমন ।  
 শচীর আনন্দ হৈল যত ভক্তগণ ॥  
 সবই আসিতেছেন তোমায়ে দেখিতে ।  
 তা সব বিলম্ব দেখি আইলাম ভরিতে ১৯  
 কাম্বীমিশ্রের আবাসে নিভূতে এক ঘর ।  
 প্রভু তাঁরে দিল আর সেবার কিঙ্কর ॥  
 আর দিনে আইলা স্বরূপদামোদর ।  
 প্রভুর অত্যন্ত মর্ম্ব রসের সাগর ॥  
 পুরুষোত্তম-আচার্য্য তাঁর নাম পূর্বাশ্রমে ।  
 নবদ্বীপে ছিলা তিহৌ প্রভুব চরণে ॥  
 প্রভুর সন্ন্যাস দেখি উন্মত্ত হইয়া ।  
 সন্ন্যাস গ্রহণ কৈল বারাণসী গিয়া ॥  
 চৈতন্যানন্দ গুরু তার, আজ্ঞা দিল তারে ।  
 বেদান্ত পড়িয়া পড়াও সমস্ত লোকেরে ২০  
 পরম বিরক্ত তিহৌ পরম পণ্ডিত ।  
 কাশ্মিনে আশ্রিয়াছে শ্রীকৃষ্ণ-চরিত ॥  
 নিশ্চিন্তে কৃষ্ণ ভজিব এইত কারণ ।  
 উন্মাদে করিলা তিহৌ সন্ন্যাস গ্রহণ ॥  
 সন্ন্যাস করিল শিখা সূত্র ত্যাগ রূপ ।  
 যোগপট্ট না লইল নাম হইল স্বরূপ ॥  
 গুরু ঠাঞি আজ্ঞা মাগি আইল নীলাচলে ।  
 রাত্রিদিন কৃষ্ণপ্রেম আনন্দ বিহ্বলে ॥  
 পাণ্ডিত্যের অবধি কথা নাহি কার সনে ।  
 নির্জনে রহেন সব লোক নাহি জানে ২১ ॥  
 কৃষ্ণরসতত্ত্ববেত্তা দেহ প্রেমরূপ ।  
 সাক্ষাৎ মহাপ্রভুর দ্বিতীয় স্বরূপ ॥

এস্থ শ্লোক গীত কেহো প্রভু আগে আনে  
 স্বরূপ পরীক্ষা কৈলে পাছে প্রভু শুনে ॥  
 ভক্তিগিন্দান্ত বিরুদ্ধ যেই, আর রগাভাগ ।  
 শুনিতে না হয় প্রভুর চিত্তের উল্লাস ॥  
 অতএব স্বরূপ আগে করে পরীক্ষণ ।  
 শুদ্ধ হয় যদি করায় প্রভুকে শ্রবণ ॥  
 বিজ্ঞাপতি চণ্ডিদাস শ্রীশ্রীতগোবিন্দ ।  
 এই তিন গীতে করে প্রভুর আনন্দ ॥  
 সঙ্গীতে গঙ্কর সম শাস্ত্রে রহস্পতি ।  
 দামোদর সম আর নাহি মহামতি ॥  
 অদ্বৈত নিত্যানন্দের পরম প্রিয়তম ।  
 শ্রীবাগাদি ভক্তগণের হয় প্রাণসম ॥  
 সেই দামোদর আসি দণ্ডবৎ হৈলা ।  
 চরণে পড়িয়া শ্লোক পড়িতে লাগিলা ॥২২

তথাহি শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয়নামটকে অষ্টমোহ  
 চতুর্দশশ্লোকঃ—

হেলোকুলিতখেদয়া বিশদয়া প্রোমীলদামোদয়া  
 শাম্যচ্ছাত্র-বিবাদয়া রসদয়া চিত্তার্পিতোন্মাদয়া ।  
 শখন্তজিবিনোদয়া সমদয়া মাধুর্য্যমধ্যাদয়া  
 শ্রীচৈতন্যদয়ানিধে তব দয়া ভূয়াদমন্দোদয়া ॥ ৩ ॥

(হে) শ্রীচৈতন্যদয়ানিধে! হেলোকুলিত-  
 খেদয়া (হেলয়া অবজয়া উদ্ধূলিতঃ দুঃখদেব  
 নিঃসারিতঃ খেদো মনস্তাপো যয়া তয়া) বিশদয়া  
 (নির্ম্মলতয়া সর্বপ্রকাশিকয়া শুদ্ধস্বরূপয়া)  
 প্রোমীলদামোদয়া (প্রাকর্ষণে উন্মীলন সর্বমাবৃথন  
 আমোদঃ পরমানন্দঃ যন্তাং তয়া) শাম্যচ্ছাত্র-  
 বিবাদয়া (শাম্যন্ উপরতিঃ প্রাপ্নুব শান্ত্যানাং  
 বিবাদঃ যন্তাং তয়া) রসদয়া (রসং দয়াতি অমু-  
 ভাবয়তি যা তয়া) চিত্তার্পিতোন্মাদয়া (চিত্তে  
 অর্পিত উন্মাদঃ তদাখ্য সঞ্চারিতাবঃ যয়া তয়া)  
 শখন্তজিবিনোদয়া (শখং নিরন্তরং তজ্জিৎ  
 বিনোদয়তি সঞ্চারয়তি যা তয়া) সমদয়া (মা  
 লম্বা সহ বর্তমানং স্যৎ স্তগবস্তং দয়াতি যা

তয়া ; ভালবাসকারাদি পাঠেন শনৎ ভগবন্ত-  
বুদ্ধিং দধতি বা তয়া ) মাধুর্যমর্ধ্যাদয়া (মাধুর্য্যানাং  
মর্ধ্যাদা যন্তাং তয়া ) অমনোদয়া ( অমনঃ কৃষ্ঠা-  
রহিতঃ উদয়ঃ যন্তাং সা পাত্ৰাপাঙ্কবিচাররাহিত্বাৎ  
সৰ্বত্রগামিনী তব দয়া ( ময়ি ) ভূয়াৎ ॥ ৩ ॥

হে দয়ানিধে শ্রীচৈতন্য ! তোমার  
দয়ায় অতি সহজেই লোকের সকল  
সম্পাদ দূরে যায়, চিত্ত নির্মল হয় এবং  
হৃদয়ে প্রেমানন্দের প্রকাশ হয়। তোমার  
দয়ায় শাস্ত্রাদির বিবাদ প্রশমিত হয়  
এবং উহা চিত্তে রস সঞ্চার করতঃ প্রগাঢ়  
মমতার সৃষ্টি করে। ইহা হইতেই নিরন্তর  
ভক্তিসুখ ও সৰ্বত্র সয়দর্শন লাভ হয়।  
ইহা সকল মাধুর্য্যের সার। তুমি করুণা  
করিয়া এই অধমজননে সৰ্বত্রগামিনী সেই  
দয়া প্রকাশ কর ॥ ৩ ॥

উঠাইয়া মহাপ্রভু কৈল আলিঙ্গন ।  
দুই জন প্রেমাবেশে হৈলা অচেতন ॥  
কথোক্ষণে দুই জনে স্থির বনে হৈলা ।  
তবে মহাপ্রভু তারে কহিতে লাগিলা ॥  
তুমি যে আসিবে আজি স্নেহেতে দেখিল  
ভাল হৈল অক্ষ যেন দুই নেত্র পাইল ॥  
স্বরূপ কহে প্রভু মোর ক্ষম অপরাধ ।  
তোমা ছাড়ি অন্যত্র গেন্নু করিনু প্রমাদ ॥  
তোমার চরণে মোর নাহি প্রেমলেশ ।  
তোমা ছাড়ি পাপী মুঞি গেন্নু অন্যদেশ ॥  
মুঞিতোমা ছাড়িনু তুমি মোরেনা ছাড়িলা ।  
রূপারঙ্গু গলে বাঞ্ছি চরণে আনিলা ॥২৩॥  
তবে স্বরূপ কৈল নিত্যানন্দের বন্দন ।  
নিত্যানন্দ প্রভু কৈল প্রেম আলিঙ্গন ॥  
জগদানন্দ মুকুন্দ শঙ্কর সার্কভোম ।  
সবা সনে যথাযোগ্য করিলা মিলন ॥

পরমানন্দপুরীর কৈল চরণবন্দন ।  
পুরীগোসাঞি তারে কৈল প্রেম আলিঙ্গন  
মহাপ্রভু দিলা তাঁরে নিভূতে বাসা ঘর ।  
জলাদি পরিচর্যা লাগি এক কিস্কর ॥  
আর দিন সার্কভোমাদি ভক্তগণ সঙ্গে ।  
বসিয়াছেন মহাপ্রভু কৃষ্ণকথা রঙ্গে ॥  
হেনকালে গোবিন্দের হৈল আগমন ।  
দণ্ডবৎ করি কহে বিনয় বচন ॥  
ঈশ্বরপুরীর ভৃত্য গোবিন্দ মোর নাম ।  
পুরীগোসাঞির আজ্ঞায় আইনু তবস্থান ॥২৪  
দিক্খিপ্রাপ্তিকালে গোসাঞি

আজ্ঞা কৈলা মোরে ।  
কৃষ্ণচৈতন্য নিকট রহি সেবহ তাঁহারে ॥  
কাশীধর আসিবেন তীর্থ দেখিয়া ।  
প্রভু আজ্ঞায় তোমাব পদে আইনু ধাইয়া  
গোসাঞি কহে পুরীধর বাৎসল্য  
করি মোরে ।

রূপা করি মোর ঠাঞি  
পাঠাইলা তোমারে ॥  
এত শুনি সার্কভোম প্রভুরে পুছিল ।  
পুরী গোসাঞি শূদ্র সেবক কাঁহেতো  
রাখিলা ॥২৫॥

প্রভু কহে ঈশ্বর হয় পরম স্বতন্ত্র ।  
ঈশ্বরের রূপা নহে বেদপরতন্ত্র ॥  
ঈশ্বরের রূপা, জাতিকুলাদি না যানে ।  
বিভুরের ঘরে কৃষ্ণ করিলা ভোজনে ॥  
স্নেহলেশাপেক্ষা মাত্র ঈশ্বর-রূপার ।  
স্নেহ বশ হয় করে স্বতন্ত্র আচার ॥  
মর্ধ্যাদা হৈতে কোটি সুখ স্নেহ-আচরণে ।  
পরম আনন্দ হয় বাহার শ্রবণে ॥  
এত বলি গোবিন্দেরে কৈল আলিঙ্গন ।  
গোবিন্দ করিল প্রভুর চরণবন্দন ॥

প্রভু কহে ভট্টচার্য্য করহ বিচার ।  
 গুরুর কিঙ্কর হয় মান্য সে আমার ॥  
 ইহাকে আপন সেবা করাইতে না যুয়ায় ।  
 গুরুর আজ্ঞা দিয়াছেন কি করি উপায় ॥  
 ভট্টচার্য্য কহে গুরুর আজ্ঞা বলবান্ ।  
 গুরুর-আজ্ঞা না লজিব শাস্ত্র পরমাণ ॥২৬॥  
 তথাহি রঘুবংশে চতুর্দশসর্গে ষট্চত্বারিংশশ্লোকঃ—  
 ন শুশ্রবাম্মাতরি ভার্গবেণ  
 পিতৃনিয়োগাৎ প্রহৃতং দ্বিষত্বৎ ।  
 প্রভাগ্রহীদগ্রজশাসনং ত-  
 দাজ্ঞা গুরুণাং হবিচারণীয়া ॥৪॥

পিতৃঃ নিয়োগাৎ ভার্গবেণ ( জামদগ্নোন )  
 মাতরি ( রেণুকায়ানং ) দ্বিষত্বৎ প্রহৃতং ( প্রহারং )  
 শুশ্রবান্ ( শুশ্রবান্ ) সঃ ( লক্ষণঃ ) তদ্ অগ্রজ-  
 শাসনং প্রভাগ্রহীৎ হি ( যস্মাৎ ) গুরুণাম্ আজ্ঞা  
 অবিচারণীয়া ॥ ৪ ॥

পরশুরাম পিতার আজ্ঞায় শক্রবৎ  
 জনীর শিরশ্ছেদন করিয়াছিলেন শুনিয়া  
 শ্রীলক্ষ্মণ শ্রীরামচন্দ্রের গীতাবনবাসরূপ  
 আজ্ঞা প্রতিপালন করিয়াছিলেন ;  
 যেহেতু গুরুগণের আজ্ঞায় দোষগুণ  
 বিচার করা কর্তব্য নহে ॥ ৪ ॥  
 তবে মহাপ্রভু তারে করি অঙ্গীকার ।  
 আপন শ্রীঅঙ্গসেবা দিল অধিকার ॥  
 প্রভুর প্রিয় ভৃত্য করি সবে করে মান ।  
 সকল বৈষ্যবের গোবিন্দ করে সমাধান ॥  
 ছোট বড় কীর্তিনিয়া দুই হরিদাস ।  
 রামাই নন্দাই রহে গোবিন্দের পাশ ॥  
 গোবিন্দের সঙ্গে করে প্রভুর সেবন ।  
 গোবিন্দের ভাগ্য গীমা না যায় বর্ণন ॥  
 আর দিন মুকুন্দ দত্ত কহে প্রভু স্থানে ।  
 ব্রহ্মানন্দ-ভারতী আইলা তোমার দর্শনে ॥  
 আজ্ঞা দেহ যদি তাঁরে আনিয়ে এথাই ।  
 প্রভু কহে গুরু তিহোঁ যাব তার ঠাঞি ॥২৭॥

এত বলি মহাপ্রভু সব ভক্ত সঙ্গে ।  
 চলি আইলা ব্রহ্মানন্দ-ভারতীর আগে ॥  
 ব্রহ্মানন্দ পরিয়াছে মুগচর্ম্মাস্বর ।  
 তাহা দেখি প্রভুর দুঃখ হৈল অন্তর ॥  
 দেখিয়াও ছদ্ম কৈল যেমন দেখি নাই ।  
 মুকুন্দেরে পুছে কোথা ভারতী গোমাত্রিঃ ॥  
 মুকুন্দ কহে এই দেখ আগে বিদ্যমান ।  
 প্রভু কহে তিহোঁ নহে তুমি অগেয়ান ॥  
 অন্যেরে অন্য কহ নাহি তোমার জ্ঞান ।  
 ভারতী গোমাত্রিঃ কেনে পরিবেন চাম২৮  
 শুনি ব্রহ্মানন্দ করে হৃদয়ে বিচারে ।  
 মোর চর্ম্মাস্বর এই না ভায় ইহাঁরে ॥  
 ভাল কহে চর্ম্মাস্বর দস্ত লাগি পরি ।  
 চর্ম্মাস্বর পরিধানে সংসার না তরি ॥  
 আজি হৈতে না পরিব এই চর্ম্মাস্বর ।  
 প্রভু বহির্দর্শ্য আনাইলা জানিয়া অন্তর ॥  
 চর্ম্ম ছাড়ি ব্রহ্মানন্দ পরিল বনন ।  
 প্রভু আসি কৈল তাঁর চরণবন্দন ॥  
 ভারতীকহেতোমারআচারলোকশিখাইতে  
 পুনঃ না করিবে নতি ভয় পাই চিত্তে ॥  
 সম্প্রতিক দুই ব্রহ্ম ইহা চলল ।  
 জগন্নাথ অচল ব্রহ্ম, তুমিত সচল ॥  
 তুমি গৌরবর্ণ তিহোঁ শ্যামল বরণ ।  
 দুই ব্রহ্মে কৈল সব জগত তারণ ॥ ২৯ ॥  
 প্রভু কহে সত্য কহ তোমার আগমনে ।  
 দুই ব্রহ্ম প্রকট হইল শ্রীপুরুষোত্তমে ॥  
 ব্রহ্মানন্দ নাম তুমি গৌরব্রহ্ম চল ।  
 শ্যামব্রহ্ম জগন্নাথ বলিয়াছে অচল ॥  
 ভারতী কহে সার্বভৌম মধ্যস্থ হইয়া ।  
 ইহাঁ সহ আমার ন্যায় বুঝ মন দিয়া ॥  
 ব্যাপ্য ব্যাপক ভাবে জীব ব্রহ্ম জানি ।  
 জীব ব্যাপ্য ব্রহ্ম ব্যাপক শাস্ত্রেত বাখানি

চন্দ্র সুচাইয়া কৈলে আমার শোধন ।

দৌহার ব্যাপ্য ব্যাপকত্বে এইত কারণ ৩০

তথাহি আদিলীগায়াং তৃতীয়ে নবমশ্লোকস্থতং  
নহাভারতবচনম্—

স্বর্ণবর্ণো হেমাঙ্গো বরালঙ্কননাঙ্গদী ।

সম্মাসকৃচ্ছমঃ শাস্তো নিষ্ঠাশান্তিপরায়ণঃ ॥৫॥

এই সব নামের ইহো হয় নিজ্ঞাপাদ ।

চন্দনাক্ত প্রনাদ তোমার দ্বিভূজে অঙ্গদ ॥

ভট্টাচার্য্য কহে ভারতী দেখি তোমার জয়

প্রভু কহে বেই কহ সেই সত্য হয় ॥

গুরু শিষ্য ন্যায়ে, শিষ্য সত্য পরাজয় ।

ভারতী কহে এহো নহে অন্য হেতু হয় ॥

ভক্ত ঠাই তুমি হার এ তোমার স্বভাব ।

আর এক গুন তুমি আপন প্রভাব ॥

আজন্ম করিল আমি নিরাকার ধ্যান ।

তোমা দেখি কৃষ্ণ হইলা মোর বিদ্যমান ॥

কৃষ্ণ নাম মুখে স্কুরে মনে নেত্রে কৃষ্ণ ।

তোমাকে তজ্রপ দেখি হৃদয় সতৃষ্ণ ॥

বিষ্ণুমঙ্গল কহিল বৈছে দশা আপনার ।

ইহা দেখি সেই দশা হৈল আমার ॥৩১॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ পশ্চিমবিভাগে  
প্রথমলহরীয়াং বিংশাঙ্কে বিষ্ণুমঙ্গলবচনম্—

অদ্বৈতবীথীপথিকৈরুপাস্তাঃ

স্বানন্দসিংহাসনলক্ষনীকঃ ।

হঠেন কেনাপি বয়ং শঠেন

দাসীকৃত্য গোপবধূবিটেন ॥ ৬ ॥

অদ্বৈতবীথীপথিকৈঃ ( অদ্বৈতং তত্ত্বমদীতি  
নির্ভেদোপাসনা এব বীথী পস্থাঃ তস্তাং যে পথিকাঃ  
উপাসকাঃ তৈঃ ) উপাস্তাঃ স্বানন্দসিংহাসনলক্ষ-  
নীকঃ বয়ং ( তথাভূতমুপি ) কেনাপি গোপবধূ-  
বিটেন ( গোপরমণীনাং বিটেন কামকলাদিভিঃ  
বশীকরণশীলেন ) শঠেন হঠেন ( বলাৎকারণে )  
দাসীকৃত্যঃ ( গোপাঙ্গনামুগা কৃত্যঃ ) ॥ ৬ ॥

আমরা অদ্বৈতমার্গের উপাসকগণের

উপাস্য ছিলাম এবং আত্মানন্দ-সিংহা-  
ননে পূজিত হইতাম । সম্প্রতি কোন  
কোন গোপবধূ-লম্পট শঠ কর্তৃক বল  
পূর্বক গোপীর অনুগতা হইয়াছি ॥ ৬ ॥

প্রভু কহে কৃষ্ণে তোমার গাঢ় প্রেমা হয় ।

যাঁহা নেত্র পড়ে তাঁহা শ্রীকৃষ্ণ স্কুবয় ॥

ভট্টাচার্য্য কহে ছুঁ হার স্নগত্য বচন ।

আগে যদি কৃষ্ণ দেন সাক্ষাৎ দর্শন ॥

প্রেম বিনা কভু নহে তাঁর সাক্ষাৎকার ।

ইহার রূপাতে হয় দর্শন ইহার ॥

প্রভু কহে বিষ্ণু বিষ্ণু কি কহ সার্বভৌম ।

অতিস্তুতি হয় এই মিন্দার লক্ষণ ॥

এত বলি ভারতী লয়া নিজবাসা আইলা ।

ভারতীগোনাঞি প্রভুর নিকটে রহিলা ॥৩২

রামভদ্রাচার্য্য আর ভগবান্ আচার্য্য ।

প্রভু পাশে রহিলা ছুঁ হে ছাড়ি অন্য কার্য্য

কাশীখর গোনাঞি আইলা আর দিনে ।

সম্মান করিয়া প্রভু রাখিল নিজ স্থানে ॥

প্রভুরে করান লয়া ঈশ্বর দর্শন ।

আগে লোক ভীড় সব করে নিবারণ ॥

যত নদ নদী যৈছে সমুদ্রে মিলয় ।

ঐছে মহাপ্রভুর ভক্ত যাঁহা তাঁহা হয় ॥

সবে আসি মিলিলা প্রভুর শ্রীচরণে ।

প্রভু রূপা করি সবারে রাখিলা নিজস্থানে

এইত কহিল প্রভুর বৈষ্ণব মিলন ।

ইহা যেই শুনে পায় চৈতন্য-চরণ ॥

শ্রীরূপ রঘুনাথ পদে যার আশ ।

চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৩৩ ॥

ইতি বৈষ্ণবমিলন নাম দশমপরিচ্ছেদ ॥১০

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপ শ্রীশ্রীমলালপদারবিন্দসেবি বিনোদবিহারি-  
গোপবাসিনী কৃত্যধরবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত বৈষ্ণবমিলনং নাম দশমপরিচ্ছেদঃ ॥ ১০ ॥

## একাদশ পরিচ্ছেদ ।



অত্মাঙ্গুং তাণ্ডং গৌরচন্দ্রঃ  
কুর্কনু ভট্টকঃ শ্রীজগন্নাথগেহে ।  
নানাভাবালঙ্কৃত্যঙ্গঃ স্বধাম্না  
চক্রে বিখং প্রেমবস্ত্রানিমগ্নম্ ॥ ১ ॥

শ্রীজগন্নাথগেহে ভট্টকঃ (সহ) গৌরচন্দ্রঃ  
অত্মাঙ্গুং তাণ্ডং (নৃত্যবিশেষং) কুর্কনু নানা-  
ভাবালঙ্কৃত্যঙ্গঃ (সনু) স্বধাম্না (অসাধারণ স্ব-  
মাধুর্যেণ) বিখং প্রেমবস্ত্রানিমগ্নম্ চক্রে ॥ ১ ॥

শ্রীজগন্নাথ-মন্দিরে ভক্তগণের সহিত  
শ্রীগৌরচন্দ্র অত্মাঙ্গু নৃত্য করিতে  
করিতে সাধিকাদি নানা ভাবালঙ্কৃত্যঙ্গ  
হওতঃ স্বমাধুর্য্য দ্বারা বিশ্বকে প্রেমবন্যায়  
নিগম্ন করিয়াছিলেন ॥ ১ ॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
জয়াদ্বৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তরুন্দ ॥  
আর দিন সার্কভৌম কহে প্রভুস্থানে ।  
অভয় দান দেহ তবে করি নিবেদনে ॥  
প্রভু কহে কহ তুমি, কিছু নাহি ভয় ।  
যোগ্য হৈলে করিব অযোগ্য হইলে নয় ॥১  
সার্কভৌম কহে এই প্রাপ্যরুজ্জ রায় ।  
উৎকণ্ঠিত হয় তোমা মিলিবারে চায় ॥  
কর্ণে হস্ত দিয়া প্রভু স্মরে নারায়ণ ।  
সার্কভৌমে কহে কেন কহ অযোগ্য বচন  
সন্ন্যাসী বিরক্ত আমার রাজদরশন ।  
শ্রী-দরশন-সম বিষের ভক্ষণ ॥ ২ ॥

তথাহি শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয়নাটকে অষ্টমাঙ্কে চতু-  
র্বিংশতিশ্লোকঃ—

নিক্ষিঞ্চনশ্চ ভগবন্তুজেনোম্মুখশ্চ  
পারং পরং জিগমিষোর্ভবসাগরশ্চ ।  
সন্দর্শনং বিষয়িণামথ যোষিতাঞ্চ  
হা হস্ত হস্ত বিষভক্ষণতোহপ্যাদাধু ॥ ২ ॥

ভবসাগরশ্চ পরং পারং জিগমিষোঃ (গন্তু-  
কামশ্চ) নিক্ষিঞ্চনশ্চ (ভ্যক্তপরিগ্রহশ্চ) ভগবন্তু-  
জেনোম্মুখশ্চ (ভগবন্তুজনে প্রসূতশ্চ) বিষয়িণাং  
যোষিতাং চ সন্দর্শনং, হা হস্ত হস্ত বিষভক্ষণতঃ  
অপি অদাধু (অকল্যাণকরম্) ॥ ২ ॥

ভবসাগরের পর পার গমনেচ্ছুক  
ভগবন্তুজনে প্রসূত সন্ন্যাসির পক্ষে বিষয়ী  
ও শ্রীর দর্শন বিষপান হইতেও অক-  
ল্যাণকর ॥ ২ ॥

সার্কভৌম কহে সত্য তোমার বচন ।  
জগন্নাথ দেবক রাজা কিন্তু ভক্তোত্তম ॥  
প্রভু কহে তথাপি রাজা কালনর্ণাকার ।  
কাষ্ঠনারী-স্পর্শে মৈছে উপজে বিকার ॥২  
তথাহি শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয়নাটকে অষ্টমাঙ্কে  
পঞ্চবিংশতিশ্লোকঃ—

আকাবাদপি তেতব্যং শ্রীণাং বিষয়িণামপি ।  
যথাহের্মনসঃ ক্ষোভস্তথা তস্যাকৃতেরপি ॥ ৩ ॥

যথা অহেঃ (সর্পাৎ) মনসঃ ক্ষোভঃ (ভয়ং  
ভবতি) তথা তস্য (সর্পস্য) আকৃতঃ (কৃত্রিমা-  
কারাৎ) অপি (ভয়ং ভবতীতি, ভয়ং) শ্রীণাং  
বিষয়িণাং (চ) অপি আকাবাৎ (আলেখ্যাৎ  
চিত্রপটস্থিতাৎ, কাষ্ঠপাষাণাদিনির্ধিতহস্তম্মূর্ধেঃ বা)  
অপি (নিক্ষিঞ্চনাদিভিঃ) তেতব্যম্ ॥ ৩ ॥

প্রাকৃত সর্পের ন্যায়, যেমন কৃত্রিয়



নর্ণও ভয়োৎপাদন করিয়া থাকে, তদ্রূপ  
শ্রীর ও বিয়ির কৃত্রিম আকারও ভীতি-  
প্রদ ॥ ৩ ॥

এঁছে বাত পুনরপি সুখে না আনিবে ।  
পুনঃ যদি কথ, আসা এথা না দেখিবে ॥  
ভয় পাষা নার্দীঃ সৈম নিভয়রে গেলা ।  
হেনকালে প্রাতাপরদ্র পুরুষোত্তমে আইল  
রামানন্দ রায় আইলা পঙ্কপতি-সঙ্গে ।  
প্রথমেই প্রভবে গামি গিলিলেন রঙ্গে ॥  
রায় প্রণতি বৈকল পাভু বৈকল আলিঙ্গন ।  
ছুই জনে প্রেমাবেশে করেন ক্রন্দন ॥  
রায়-মনে প্রভুর দেখি স্নেহ ব্যবহার ।  
নব ভক্তগণ মনে হৈল চমৎকার ॥ ৪ ॥  
রায় কহে তোমার আজ্ঞায়রাজাকে কহিঃ  
তোমার ইচ্ছায় রাজাসৌরেবিসয়ছাড়াই  
আমি কহিল আসা হৈতে না হয় বিয়য় ।  
চৈতন্যচরণে রহে যদি আজ্ঞা হয় ॥  
তোমার নাম শুনি রাজা আনন্দিত হৈবা  
আসন হৈতে উষ্টি মোরে আলিঙ্গন কৈলা  
তোমার নাম শুনি হৈল মহাপ্রোণাবেশে  
মোর হাতে ধরি কহে পবিত্র বিশেষে ॥  
তোমার যে বর্জন তুমি খাহ সে বর্জন ।  
নিশ্চিন্ত হইয়া সেব প্রভুর চরণ ॥ ৫ ॥  
আমি ছার সোগ্য নহি তাঁর দরশনে ।  
তাঁরে যেই সেবে তার সফল জীবনে ॥  
পরম রূপালু তিহৌ ব্রজেন্দ্রনন্দন ।  
কোম জন্মে মোরে অবশ্য দিবে দরশন ॥  
যে তাঁর প্রেম আর্জি দেখিল তোমাতে ।  
তাঁর এক লেশ প্রীতি নাহিক আমাতে ॥  
প্রভু কহেন তুমি রক্ষা করত প্রদান ।  
তোমাতে যে প্রীতি করে সেই ভাগ্য মান ॥

তোমাকে এতক প্রীতি হইল রাজার ।  
এই গুণে কৃষ্ণ তাঁরে করিবেন অঙ্গীকার ॥

তথাহি লঘুভাগবতামৃতে ভক্তামৃতে সপ্তমঙ্ক-  
ধৃতং আদিপুরণে মর্কটং প্রতি শ্রীকৃষ্ণবাক্যম্—  
মম ভক্তা হি যে পার্থ ন মে ভক্তাস্ত তে মতাঃ ।  
মহুকস্য তু মে ভক্তাস্তে মে ভক্ততমা মতাঃ ॥৪॥

(হে) পার্থ! যে (ভক্তপ্রীতিশূন্যঃ) মম  
ভক্তাঃ তে মে (মম) ভক্তাঃ তু ন (শ্রেষ্ঠাঃ)  
মতাঃ । যে মহুকস্য (শ্রীরাধাদয়ঃ) তু ভক্তাঃ  
তে ভক্ততমাঃ মতাঃ (সমতাঃ) ॥ ৪ ॥

হে পার্থ! যাহারা কেবল আগা-  
তেই প্রীতি করিয়া থাকেন, তাহারা  
আমার শ্রেষ্ঠ ভক্ত নহেন; কিন্তু যাহারা  
আমার ভক্তের ভক্ত, তাহারা ই আমার  
ভক্ততম ॥ ৪ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে একোন-  
বিংশধ্যায়ে একবিংশশ্লোকঃ—

আদরঃ পরিচর্যায়াং সর্দাঙ্গৈরভিবন্দনম্ ।  
মহুকপূজাভাদিকা সর্দাঙ্গৈঃ স্মৃতিঃ ॥ ৫ ॥

পরিচর্যায়াং (সেবায়াং) আদরঃ সর্দাঙ্গৈঃ  
(অঙ্গপ্রত্যঙ্গাদিভিঃ) অভিবন্দনম্ অভাদিকা  
(সং পূজাতোহপি তত্র মন সন্তোষবিষেধাৎ)  
মহুকপূজা সর্দাঙ্গৈঃ স্মৃতিঃ ॥ ৫ ॥

আমার পূজায় আদর, অঙ্গপ্রত্য-  
ঙ্গাদি দ্বারা বন্দন, আমার সন্তোষ জ্ঞানে  
আমার ভক্তের পূজা শ্রেষ্ঠ বলিয়া জানা  
এবং মদল প্রাপীতে সন্তোষ স্ফুর্তিই মহু-  
ক্তির কারণ ॥ ৫ ॥

তথাহি লঘুভাগবতামৃতে ভক্তামৃতে পঞ্চমঙ্ক-  
ধৃতং পদ্মপুরাণে পার্বতীং প্রতি শিববাক্যম্—  
আরাধনানাং সর্দেবাং বিষ্ণোরারাদনং পরম্ ।  
তস্যাং পরতরং দেবি তদীমানাং সমর্জনম্ ॥ ৬ ॥

(হে) দেবি ! সর্বেষাম্ আরাধনানাং (মধ্যে)  
বিষোঃ (শ্রীকৃষ্ণস্য) আরাধনং পরং (শ্রেষ্ঠং)  
তস্মাৎ (শ্রীকৃষ্ণসারাধনাং অপি) ভদীরানাং  
(শ্রীরাধানীনাং) সমর্চনং পবতরং (প্রশস্ততরম্) ॥৬।

হে দেবি ! সকল আরাধনার মধ্যে  
বিষ্ণুব আরাধনাই শ্রেষ্ঠ ; তদপেক্ষা  
ভদীর ভক্তের আরাধনা শ্রেষ্ঠতর ॥৬॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে সপ্তমাপ্যয়ে  
বিশ্বশ্লোকঃ—

হুরাপা হুন্নতপসঃ সেবা বৈকুণ্ঠবয়ম্ ॥  
যত্রোপগীয়তে নিত্যং দেবদেবঃ জনাৰ্দ্দিনঃ ॥৭॥

যত্র (সেযু মহৎসু সর্কৈরেব) নিত্যং দেবদেবঃ  
জনাৰ্দ্দিনঃ উপগীয়তে (তত্র) বৈকুণ্ঠবয়ম্ (বৈকুণ্ঠ  
শ্রীকৃষ্ণস্ত তলোকস্য বা বয়ম্ সর্গভূতেশু মহৎসু)  
সেবা হুন্নতপসঃ (অল্পপূজাভ্যনশ্চ) হি হুরাপা ॥৭॥

বাহারা সর্বদা দেবদেব জনাৰ্দ্দিনের  
গুণাদি গান করিয়া থাকেন, সেই কৃষ্ণ-  
প্রাপ্তির পথস্বরূপ হরিভক্তগুণের সেবা  
লাভ অল্পপূজা ব্যক্তির পক্ষে তুল্য ॥ ৭ ॥

পূরী ভাবতী গোসাগ্রিঃ স্বরূপ নিত্যানন্দ ।  
চান্নি গোসাগ্রিঃ কৈল রায় চরণাভিবন্দ ॥  
জগদানন্দ মুকুন্দাদি বত ভক্তগণ ।

যথাসোগ্য মন ভক্তে করিলা মিলন ॥

প্রভু কহে রায় দেখিলে কমললোচন ।

রায় কহে এবে যাই পাব দরশন ॥

প্রভু কহে রায় তুমি কি কৰ্ম করিলা ।

ঈশ্বর না দেখি আগে এথা কেনে আইলা ।

রায় কহে চরণরথ হৃদয় সারথি ।

বাহা লয়া যায় তাঁহা যায় জীব রথী ॥

আমি কি করিব মন ইহা লয়া আইল ।

জগন্নাথ দরশনে বিচার না কৈল ॥ ৭ ॥

প্রভু কহে যাহ শীঘ্র কর দরশন ।

এছে স্বর যাই কর কুটুম্ব মিলন ॥

প্রভু-আজ্ঞা পায় রায় চলিলা দর্শনে ।

রায়ের প্রেমভক্তি রীতি বুকে কোন্ জনে

ক্ষেত্রে আনি রাজা সার্কভৌমে বোলাইল

সার্কভৌমে নমস্করি তাহারে পুছিল ॥

মোর লাগি প্রভু পাদে কৈলে নিবেদন ।

সার্কভৌম কহে কৈল অনেক যতন ॥৮॥

তথাপি না করে তিহেঁ রাজ-দরশন ।

ক্ষেত্র ছাড়ে পুনঃ যদি করি নিবেদন ॥

শুনিয়া রাজার মনে দুঃখ উপজিল ।

বিবাদ করিয়া কিছু কহিতে লাগিল ॥

পাপী নীচ উদ্ধারিতে তাঁর অবতার ।

শুনি জগাই মাদাই তিহেঁ করিলা উদ্ধার ॥

প্রতাপরুদ্র ছাড়ি করিবেন জগত উদ্ধার ।

এই প্রতিজ্ঞা করি, করিয়াছেন অবতার ॥৯॥

তথাহি ত্রিচৈতন্যচন্দ্রোদয়নাটকে অষ্টমাস্কন্ধে  
সপ্ততিতমশ্লোকে সার্কভৌমং প্রতি প্রতাপরুদ্র-  
বাক্যম্—

অদর্শনীয়ানপি নীচজাতীন

স বীক্ষতে চত্ব তথাপি নো মাম্ ।

নদেববর্জ্যং রুপয়িষ্যতীতি

নির্ণয় কিং মোহবততার দেবঃ ॥৮ ॥

সঃ (গোরাঙ্গঃ) অদর্শনীয়ান্ (দ্রষ্টু মনহাঁন্)

নীচজাতীন (যবনাদীন) অপ বীক্ষতে (কারুণ্য-

দৃষ্ট্যা বিলোকয়তি) চত্ব (খেদে) তথাপি মাং ন

(বীক্ষতে) নদেববর্জ্যং (মাসেকং বর্জয়িত্বা,

অজ্ঞান্) রুপয়িষ্যতি ইতি কিং নির্ণয় (প্রতিজ্ঞায়)

সঃ দেবঃ (গোরাঙ্গঃ) অবততারঃ (প্রকটোহুঃ) ॥৮

দর্শনের অযোগ্য যবনাদি নীচজাতি-

গনকেও তিনি কারুণ্যদৃষ্টি দ্বারা দর্শন

দিতেছেন ; কিন্তু হায় ! আমাকে দর্শন  
দিলেন না । অতএব আমাকে বর্জন  
পূর্বক জগতকে রূপা করিবেন, ইহা  
প্রতিজ্ঞা করতঃ কি সেই শ্রীচৈতন্যদেব  
অবতীর্ণ হইয়াছেন ? ॥ ৮ ॥

তাঁর প্রতিজ্ঞা না করিব রাজদরশন ।  
মোর প্রতিজ্ঞা তাঁহা বিনা ছাড়িব জীবন ।  
যদি সেই মহাপ্রভুর না পাই রূপাধন ।  
কিবা রাজ্য কিবা দেহ সব অকারণ ॥  
এত শুনি ভট্টাচার্য্য হইলা চিন্তিত ।  
রাজার অনুরাগ দেখি হইলা বিস্মিত ॥  
ভট্টাচার্য্য কহে দেব না কর বিবাদ ।  
তোমার উপর প্রভুর হবে অবশ্য প্রসাদ ।  
হেঁহো প্রেমাদীন তোমার প্রেম গাঢ়তর ।  
অবশ্য করিবেন রূপা তোমার উপর ॥  
তথাপি কহিয়ে আমি এক উপায় ।  
এই উপায় কর, প্রভু দেখিবে যাহায় ॥  
রথযাত্রা দিনে প্রভু সব ভক্ত লয়া ।  
রথ আগে নৃত্য করে প্রেমাবিষ্ট হয় ॥  
প্রেমাবেশে পুষ্পাদ্যানে করেন প্রবেশ ।  
সেই কালে তুমি একা ছাড়ি রাজবেশ ॥  
রুম-রাসপঞ্চাধ্যায়ী করিতে পঠন ।  
একলে গিয়া মহাপ্রভুর ধরিবে চরণ ॥ ১১ ॥  
বাহুজ্ঞান নাহি সেকালে রুম-নাম শুনি ।  
আলিঙ্গন করিব তোমায় বৈষ্ণব জানি ॥  
রামানন্দরায় আজি তোমার প্রেমগুণ ।  
প্রভু আগে কহিল তাতে ফিরিয়াছে মন ॥  
শুনি গজপতি মনে মুখ উপজিল ।  
প্রভুরে মিলিতে এই যুক্তি দৃঢ় কৈল ॥  
স্নানযাত্রা কবে হবে পুছিল ভেটেরে ।  
ভট্ট কহে তিন দিন আছয়ে যাত্রায় ॥ ১২ ॥

স্নানযাত্রা দেখি প্রভু পাইল বড় মুখ ।  
ঈশ্বরের অনবসরে হৈল মহামুখ ॥  
গোপীভাবে প্রভু বিরহে বিস্মল হইয়া ।  
আলালনাথে গেলা প্রভু সবাকে ছাড়িয়া ॥  
পাছে ভক্তগণ গেলা প্রভুর চরণে ।  
গৌড় হৈতে ভক্ত আইসে কৈল নিবেদনে  
নার্নভৌম নীলাচলে আইলা প্রভু লয়া ।  
প্রভু আইলা রাজার ঠাঁঞি কহিল আসিয়া  
হেনকালে আইলা তাঁহা গোপীনাথচার্য্য ।  
রাজাকে আশীর্বাদিকহে শুন ভট্টাচার্য্য ॥ ১৩ ॥  
গৌড় হৈতে বৈষ্ণব আসিয়াছে দুই শত ।  
মহাপ্রভুর ভক্ত সব মহাভাগবত ॥  
নরেন্দ্র আসিয়া তবে হৈলা বিদ্যমান ।  
তাঁ সবার চাহি বাস প্রসাদ সমাধান ॥  
রাজা কহে পড়িছারে আমি আজ্ঞা করিব  
বাগা-আদি যে চাহি পড়িছা সব দিব ॥  
মহাপ্রভুর গণ যত আইলা গৌড় হৈতে ।  
ভট্টাচার্য্য একে একে দেখাহ আগাতে ॥  
ভট্ট কহে অট্টালিকা কর আরোহণ ।  
গোপীনাথ চিনে সবাকে করাবে দর্শন ॥  
আমি কাহো না চিনি চিনিতে মন হয় ।  
গোপীনাথচার্য্য সবার করাবে পরিচয় ॥ ১৪ ॥  
এত কহি তিন জন অট্টালী চঢ়িলা ।  
হেনকালে বৈষ্ণবগণ নিকটে আইলা ॥  
দামোদর স্বরূপ গোবিন্দ দুই জন ।  
মালা প্রসাদ লয়া যায় যঁহা বৈষ্ণবগণ ॥  
প্রথমেই মহাপ্রভু পাঠাইলা দুঁহারে ।  
রাজা কহে এই কোন্ দুই চিনাহ আমারে  
ভট্টাচার্য্য কহে এই স্বরূপ দামোদর ।  
মহাপ্রভুর ইহঁ হয় দ্বিতীয় কলেবর ॥  
দ্বিতীয় গোবিন্দভূত্য ইহঁা সবা দিয়া ।  
মালা পাঠাঞাছেন প্রভু গৌরব করিয়া ॥ ১৫ ॥

আদৌ মালা অদ্বৈতেরে স্বরূপ পরাইল ।  
 পাছে গোবিন্দ দ্বিতীয় মালা তাঁরে দিল ॥  
 তবে গোবিন্দ দণ্ডবৎ কৈল আচার্য্যেরে ।  
 তারে না চিনেন আচার্য্যপুছিলাদামোদরে  
 দামোদর কহেন ইহাঁর গোবিন্দ নাম ।  
 ঈশ্বরপুরীর সেবক অতি গুণবান্ ॥  
 প্রভু সেবা করিতে ইহারে পুরীআজ্ঞাদিলা  
 অতএব প্রভু ইহাঁকে নিকটে রাখিলা ॥  
 রাজা কহে যারে মালা দিল দুই জন ।  
 আশ্চর্য্য তেজ এই, বড় মহাস্ত কোন্ ॥১৬  
 ভট্টাচার্য্য কহে ইহাঁর নাম অদ্বৈত আচার্য্য  
 মহাপ্রভুর মান্ধপাত্র সন্ন্যশিরোধার্য্য ॥  
 শ্রীবাস পণ্ডিত ইহোঁ পণ্ডিত বক্রেশ্বর ।  
 বিদ্যানিধি আচার্য্য ইহোঁ পণ্ডিত গর্দাধর  
 আচার্য্যরত্ন ইহোঁ আচার্য্য পুরন্দর ।  
 গঙ্গাদাস পণ্ডিত ইহোঁ পণ্ডিত শঙ্কর ॥  
 এই মুরারিগুপ্ত এই পণ্ডিত নারায়ণ ।  
 হরিদাস ঠাকুর এই ভুবন-পাবন ॥  
 এই হরিভট্ট এই শ্রীমুসিংহানন্দ ।  
 এই বাসুদেব দত্ত এই শিবানন্দ ॥ ১৭ ॥  
 গোবিন্দমাদব আর বাসুদেব ঘোষ ।  
 তিন ভাই কীর্তনে করে প্রভুর সন্তোষ ॥  
 রাঘব পণ্ডিত এই আচার্য্য নন্দন ।  
 শ্রীমান্ পণ্ডিত এই শ্রীকান্ত নারায়ণ ॥  
 শুল্কাস্বর এই, এই শ্রীধর বিজয় ।  
 বল্লভসেন এই পুরুষোত্তম সঞ্জয় ॥  
 কুলীনগ্রামবাসী এই সত্যরাজ খান ।  
 রামানন্দ আদি এই দেখ বিদ্যমান ॥  
 মুকুন্দদাস নরহরিঃশ্রীরঘুনন্দন ।  
 খণ্ডবাসী চিরঞ্জীব আর সুলোচন ॥  
 কতেক কহিব এই দেখ যত জন ।  
 শ্রীচৈতন্যগণ সব চৈতন্য-জীবন ॥ ১৮ ॥

রাজা কহে দেখ আমার হৈল চমৎকার ।  
 বৈষ্ণবের ঐছে তেজ নাহি দেখি আর ॥  
 কোটি-সূর্য্য-সম সবার উজ্জ্বল বরণ ।  
 কছু নাহি শুনি এই মধুর কীর্তন ॥  
 ঐছে প্রেম ঐছে নৃত্য ঐছে হরিধ্বনি ।  
 কাঁহা নাহি দেখি, ঐছে কাঁহা নাহি শুনি ॥  
 ভট্টাচার্য্য কহে তোমার স্নহত্যা বচন ।  
 চৈতন্যের সৃষ্টি এই নামসকীর্তন ॥  
 অবতঁরি চৈতন্য কৈল ধর্ম্মপ্রচারণ ।  
 কলিকালের ধর্ম্ম, কৃষ্ণ-নামসকীর্তন ॥  
 সকীর্তন-যজ্ঞে তাঁর করে আরাধন ।  
 সেইত স্নমেধা আর কলি-হত জন ॥১৯॥

তথাহি আদিলীলায়াং তৃতীয়ে দশনশ্লোকধৃতং  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

কৃষ্ণবর্ণং ত্রিষাকৃষ্ণং সঙ্গোপান্নান্নপার্বদম্ ।

যঃ স্কীর্তনপ্রারৈর্যজন্তি হি স্নমেধসঃ ॥২০॥

রাজা কহে শাস্ত্রপ্রমাণ চৈতন্য হয় কৃষ্ণ ।  
 তবে কেন পণ্ডিত সব তাহাতে বিতৃষ্ণ ॥  
 ভট্ট কহে তাঁর রূপা লেশ হয় যারে ।  
 সেই সে তাঁহারে কৃষ্ণ করি লৈতে পারে ॥  
 তাঁর রূপা নাহি যারে পণ্ডিত নহে কেনে ।  
 দেখিলে শুনিলে তারে ঈশ্বর না মানে ॥২০॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং ষষ্ঠে দ্বিতীয়েশ্লোকধৃতং  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

অথাপি তে দেব পদাশুল্কদ্বয়-

প্রসাদলেশানুগৃহীত এব হি ।

জানতি তৎসং ভগবন্মহিমা

ন চাস্ত্র একোহপি চিরং বিচিষন্ ॥ ১০ ॥

রাজা কহে তবে জগন্নাথ না দেখিয়া ।  
 চৈতন্যের বাগা আগে চলিলা ধাইয়া ॥  
 ভট্ট কহে এই স্বাভাবিক প্রেম রীত ।  
 মহাপ্রভু মিলিতে সবার উৎকণ্ঠিত চিত ॥

আগে তাঁরে মিলি তবে তাঁরে আগে লয়া  
 তাঁর সঙ্গে জগন্নাথ দেখিব আসিয়া ॥  
 রাজা কহে ভবানন্দের পুত্র বাণীনাথ ।  
 মহাপ্রসাদ লয়া সঙ্গে জন পাঁচ সাত ॥  
 মহাপ্রভুর আশয় করিল গমন ।  
 এত মহাপ্রসাদ বা চাচি কি কারণ ॥ ২১ ॥  
 ভট্ট কহে ভক্তগণ আইল জানিয়া ।  
 প্রভুর ঈশ্বরে প্রসাদ যায় তাঁহা লয়া ॥  
 রাজা কহে উপবাস ক্ষৌর তীর্থের নিধান  
 তাহা না করিয়া কেনে খান অন্ন পান ॥  
 ভট্ট কহে ভূমি কহ সেই বিধি ধর্ম ।  
 এই কাগ-সার্গের আছে স্মৃষ্ণ ধর্ম মর্ম ॥  
 ঈশ্বরের পরোক্ষ আজ্ঞা ক্ষৌর উপোষণ ।  
 প্রভুর সাক্ষাৎ-আজ্ঞা প্রসাদ-ভক্ষণ ॥  
 তাঁহা উপবাস যাহা নাহি মহাপ্রসাদ ।  
 প্রভু-আজ্ঞা প্রসাদ ত্যাগ হয় অপরাধ ॥ ২২ ॥  
 বিশেষে শ্রীহস্তে প্রভু করিব পরিবেশন ।  
 এত লাভ চাড়ি কোন্ করে উপোষণ ॥  
 পূর্বে প্রভু প্রসাদার মোবে আমি দিল ।  
 প্রাতে শয্যা বসি আমি সেই অন্ন খাইব  
 যারে রূপা করি করে হৃদয়ে প্রেরণ ।  
 কৃপাশ্রয়ে ছাড়ে সেই বেদলোকধর্ম ॥ ২৩ ॥  
 তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে চতুর্থস্কন্ধে একোনত্রিংশা-  
 ধায়ে ত্রয়চত্বারিংশোক্তঃ—  
 যদা যস্যানুগৃহ্ণতি ভগবান্নান্নভাবিতঃ ।  
 স জগতি মন্তিঃ লোকে বেদে চ পরিনিষ্ঠিতান্ ॥ ১১ ॥  
 আশ্চর্য্যভাবিতঃ ( সন্ ) যদা ভগবান্ যদা ( যং )  
 অনুগৃহ্ণতি ( ভদা ) সঃ লোকে ( লৌকিকব্যব-  
 হারে ) বেদে ( কর্মকাণ্ডে ) চ পরিনিষ্ঠিতাং মন্তিঃ  
 জগতি ॥ ১১ ॥

শুদ্ধচিত্তে ভাবিত হইয়া ভগবান্  
 যেকালে ষাঁহার প্রতি রূপা করেন,

সেই সময়ে সে ব্যক্তি লৌকিক ব্যবহারে  
 ও কর্মকাণ্ডে পরিনিষ্ঠিত বুদ্ধি ত্যাগ  
 করে ॥ ১১ ॥

তবে রাজা অটালিকা হৈতে তলে আইল।  
 কাশীমিশ্র পড়িছা পাত্র ছুঁহা বোলাইল ॥  
 প্রতাপরুদ্র আজ্ঞা দিল সেই দুই জনে ।  
 প্রভু স্থানে আসিয়াছে যত ভক্তগণে ॥  
 সবারে স্বচ্ছন্দ বাগা স্বচ্ছন্দ প্রসাদ ।  
 স্বচ্ছন্দে দর্শন করাইহ যেন নহে বাদ ॥  
 প্রভুর আজ্ঞা পরিহ ছুঁহে সাবধান হৈয়া ।  
 আজ্ঞা নহে, তাহা করিহ ইঙ্গিত বুঝিয়া ॥  
 এত বলি বিদায় দিল সেই দুই জনে ।  
 নার্নভৌম দেখি আইল। বৈষ্ণব মিলনে ২৪  
 গোপীনাথচাৰ্য্য ভট্টাচার্য্য নার্নভৌম ।  
 দূরে রক্তি দেখে প্রভুর বৈষ্ণব-সঙ্গম ॥  
 নিঃসঙ্গার ভাঙ্খিনে ছাড়ি মন বৈষ্ণবগণ ।  
 কাশীমিশ্রগৃহ-পথে করিয়া গমন ॥  
 হেনকালে মহাপ্রভু নিজগণ সঙ্গে ।  
 বৈষ্ণব মিলিলা আমি পণে মহাবন্দে ॥  
 অদ্বৈত করিল প্রভুর চরণবন্দন ।  
 আচার্য্যেরে কৈল প্রভু প্রেম-আলিঙ্গন ॥  
 প্রেমানন্দে হৈলা দুঁহে পরম অধির ।  
 সময় দেখিয়া প্রভু হৈলা কিছু দীর ॥ ২৫ ॥  
 শ্রীবানাদি কৈল প্রভুর চরণ বন্দন ।  
 প্রত্যেকে করিলা প্রভু প্রেম আলিঙ্গন ॥  
 একে একে সব ভক্তে কৈল সস্তাষণ ।  
 সভা লৈয়া অভ্যন্তরে করিলা গমন ॥  
 মিশ্রের আবাগ সেই হয় অল্প স্থান ।  
 অসংখ্য বৈষ্ণব তাহা হৈল পরিমাণ ॥  
 আপন নিকটে প্রভু সব বসাইল ।  
 আপনে শ্রীহস্তে সবায় মালা চন্দন দিল ॥ ২৬ ॥

ভট্টাচার্য্য আচার্য্য আইলা প্রভুস্থানে ।  
 যথাযোগ্য মিলন করিল সবা সনে ॥  
 সইদেহেরে প্রভু কহে দিনয় বচনে ।  
 আজি আমি পূর্ণ হৈলাম তোমার আগমনে ।  
 অদ্বৈতকহে ঈশ্বরের এই স্বভাব হয় ।  
 বদ্যপি আপনে পূর্ণ সইর্নৈশ্বর্য্যময় ॥  
 তথাপি ভক্ত সঙ্গে তাঁর হয় সুখোলাস ।  
 ভক্তসঙ্গে করে নিত্য বিবিধ বিলাস ॥২৭  
 বাসুদেব দেখি প্রভু আনন্দিত হৈয়া ।  
 তারে কিছু কহে তার অপে হস্ত দিয়া ॥  
 বদ্যপি মুকুন্দ আমার সঙ্গে শিশু হৈতে ।  
 তাহা হৈতে অধিক সুখতোমাকে দেখিতে  
 বাসু কহে মুকুন্দ আদৌ পাইলে তোমাঙ্গ  
 তোমার চরণপ্রাপ্তি সেই পুনর্জন্ম ॥  
 ছোট হৈয়া মুকুন্দ এবে হৈলা মোর জ্যেষ্ঠ  
 তোমার রূপাপাত্র তাতে সর্দগু শ্রেষ্ঠ ॥  
 পুনঃ প্রভু কহে আমি তোমার নিমিত্তে ।  
 দুই পুস্তক আনিয়াছি দক্ষিণ হইতে ॥  
 স্বরূপের ঠাঞি আছে লহ লেখাইয়া ।  
 বাসুদেব আনন্দ হৈলা পুস্তক পাইয়া ॥২৮  
 প্রত্যেকে সকল বৈখণ্ড লিখিয়া লইল ।  
 ক্রমে ক্রমে দুই পুস্তক জগৎ ব্যাপিল ॥  
 জীৱানাঞ্জে কহে প্রভু করি মহাপ্রীত ।  
 তোমার চারি ভাইর আমি হই মূল্যক্রীত ॥  
 জীবান কহেন কেনে কহ বিপরীত ।  
 রূপামৃগ্যে হই তোমার চারি ভাই ক্রীত ।  
 শঙ্কর দেখিয়া প্রভু কহে দামোদরে ।  
 নগৌরব প্রীতি আনান তোমার উপরে ॥  
 শুদ্ধাংকৈবল প্রেম আমার ইহার উপর ।  
 অতএব মোর সঙ্গে রাখ শঙ্কর ॥ ২৯ ॥  
 দমোদর কহে শঙ্কর ছোট আমা হৈতে ।  
 এবে আমার বড় ভাই তোমার রূপাতে ॥

শিবানন্দে কহে প্রভু ত্রোমায় আমাতে ।  
 গাঢ় অনুরাগ হয় জানি আগে হৈতে ॥  
 শুনি শিবানন্দ সেন প্রেমাবিষ্ট হৈয়া ।  
 দণ্ডবৎ হৈয়া পড়ে শ্লোক পড়িয়া ॥ ৩০ ॥

তথাহি ত্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয়নাটকে অষ্টমাঙ্কে  
 অনীতিতমশ্লোকঃ--

নিমজ্জতোহনন্তভার্ণবাস্ত-

শ্চিরায় মে কুলমিবাসি লক্ঃ ।

ত্য়্যাপি লক্ঃ ভগবন্নিবাসী-

মহত্তমং পাত্রমিদং দয়ায়াঃ ॥ ১২ ॥

( হে ) জনস্ত ! ভবার্ণবাস্তঃ (যস্যে) নিমজ্জতঃ

( নিমগ্নীভূয় তিষ্ঠতঃ ) মে ( অহং ) চিরায় কুলমিব  
 ( তটমিব ত্বং ) লক্হোহসি । ( হে ) ভগবন্, ত্য়্য  
 অপি দয়ায়াঃ অমহত্তমং পাত্রং লক্হম্ ॥ ১২ ॥

হে অনন্ত ! আমি ভবনমুদ্র মধ্য  
 নিমগ্ন ছিলাম, বহুকালের পানে 'দ্য  
 তটরূপ তোমাকে প্রাপ্ত হইলাম ।  
 হে ভগবন্ ! 'দ্য তুমিও দবা কবিবাব  
 উপযুক্ত পাত্ররূপ আমাকে লাভ  
 করিলে ॥ ১২ ॥

প্রথমেই মুরারিগুণ্ড প্রভুরে না মিলিয়া ।

বাহিরে পড়িয়াছেন দণ্ড ৫ হৈয়া ॥

মুরারি না দেখি প্রভু করে অধেবণ ।

মুরারি লইতে দয়া আইলা বহুজন ॥

ভূণ দুই গুচ্ছ মুরারি দশনে ধরিয়া ।

মহাপ্রভুর আগে গেলা দৈন্যদীন হয় ॥

মুরারি দেখিয়া প্রভু উঠিলা মিলিতে ।

পাছে ভাগে মুরারি তবে লাগিলা বলিতে

মোরে না ছুইহ মুঞি অধম পামর ।

তোমার স্পর্শযোগ্য নহে পাপকলেবর ॥৩১

প্রভু কহে মুরারি কর দৈন্য সম্বরণ ।

তোমার দৈন্য দেখি মোর বিদীর্ণ হয় মন ॥

এত বলি প্রভু তারে করি আলিঙ্গন ।  
 নিকটে বসাইয়া কবে অঙ্গ সম্মার্জন ॥  
 আচার্য্যরত্ন বিদ্যানিধি পণ্ডিত গদাধর ।  
 হরিভট্ট গঙ্গাদাস আচার্য্য পুরন্দর ॥  
 প্রত্যেকে নবার প্রভু করি গুণগান ।  
 পুনঃ পুনঃ আলিঙ্গিয়া করিল সম্মান ॥  
 সবারে সম্মানি প্রভুর হইল উল্লাস ।  
 হরিদাস না দেখিয়া কহে কাঁহা হরিদাস ॥  
 দূরে গৈতে হরিদাস গোসাঞি দেখিয়া ।  
 রাজপথ প্রান্তে পড়িয়াছে দণ্ডবৎ হয় ॥  
 মিলন স্থানে আসি প্রভুরে না মিলিলা ।  
 রাজপথ প্রান্তে দূরে পড়িয়া রহিলা ॥৩২॥  
 ভক্ত সব ধায়া আইলা হরিদাস নিতে ।  
 প্রভু তোমায় মিলি তেচাহে চলহ তুরিতে ।  
 হরিদাস কহে মুঞি নীচজাতি ছার ।  
 মন্দির নিকট যাইতে নাহি অধিকার ॥  
 নিভূতে টোটা মধ্য যদি স্থান খানিকপাণ্ড  
 তাঁহা পড়ি রহেঁ একা কাল গোঙাও ॥  
 জগন্নাথের সেবক মোর স্পর্শ নাহি হয় ।  
 তাঁহা পড়ি বহেঁ মোর এই বাঞ্ছা হয় ॥  
 এই কথা লোক গিয়া প্রভুরে কহিল ।  
 শুনি মহাপ্রভু মনে বড় স্তম্ভ পাইল ॥  
 হেনকালে কানীশিশ্র পড়িছা দুই জন ।  
 আসিয়া করিল প্রভুর চরণ দন্দন ॥  
 সর্ব বৈষ্ণবেরে দেখি সুখি বড় হৈলা ।  
 যথাযোগ্য সবা মনে আনন্দে মিলিলা ॥৩৩॥  
 প্রভু-পাদে দুই জন কৈল নিবেদন ।  
 আজ্ঞা দেহ বৈষ্ণবের করি সমাধান ॥  
 সবার করিয়াছি বাসাগৃহ সংস্থান ।  
 মহাপ্রসাদান্ন সবার করি সমাধান ॥  
 প্রভু কহে গোপীনাথ বাহ সবা লয়া ।  
 বাঁহা বাঁহা কহে তাঁহা বাগা দেহ যায়া ॥

মহাপ্রসাদান্ন দেহ বাণীনাথ স্থানে ।  
 সর্ব বৈষ্ণবের এহেঁ করিব সমাধানে ॥  
 আমার নিকটে এই পুষ্পের উদ্যানে ।  
 একখানি ঘর আছে পরম নির্জনে ॥  
 সেই ঘর আগাকে দেহ আছে প্রয়োজন ।  
 নিভূতে বসিয়া তাঁহা করিব স্মরণ ॥  
 মিশ্র কহে সব তোমার মাগ কি কারণ ।  
 আপন ইচ্ছায় লহ চাহ সেই স্থান ॥  
 আমি দুই হই তোমার দাস আজ্ঞাকারী ।  
 সেই চাহি সেই আজ্ঞা কর কৃপা করি ॥  
 এত কহি দুই জন বিদায় করিলা ।  
 গোপীনাথ বাণীনাথ দুই গঞ্জে দিলা ॥৩৪॥  
 গোপীনাথে দেখাইল সব বাগা ঘর ।  
 বাণীনাথ ঠাঞি দিল প্রসাদ বিস্তর ॥  
 বাণীনাথ আইলা অন্ন পিঠা পানা লয়া ।  
 গোপীনাথ আইলা বাগার সংস্কার করিয়া  
 মহাপ্রভু কহে শুন সব বৈষ্ণবগণ ।  
 নিজ নিজ বাগা সবে করহ গমন ॥  
 সমুদ্র স্নান করি কর চূড়া-দরশন ।  
 তবে এথা আসি আজি করিবে ভোজন ॥  
 প্রভু নমস্কারি সবে বাগাতে চলিলা ।  
 গোপীনাথচার্য্য সবায় বাগা স্থান দিলা ॥৩৫॥  
 তবে প্রভু আইলা হরিদাস মিলনে ।  
 হরিদাস করে প্রেমে নাম সংকীৰ্ত্তনে ॥  
 প্রভু দেখি পড়ে আগে দণ্ডবৎ হয় ।  
 প্রভু আলিঙ্গন দিল তারে উঠাইয়া ॥  
 দুই জনে প্রেমাবেশে করেন কন্দনে ।  
 প্রভু-গুণে ভৃত্য বিকল প্রভু ভৃত্য-গুণে ॥  
 হরিদাস কহে প্রভু না ছুইহ মোরে ।  
 মুঞি নীচ অস্পৃশ্য পরম পামরে ॥  
 প্রভু কহে তোমা স্পর্শি পবিত্র হইতে ।  
 তোমার পবিত্র ধর্ম নাহিক আমাতে ॥

ক্ষণে ক্ষণে কর তুমি সর্কতীর্থে স্নান ।  
ক্ষণে ক্ষণে কর তুমি যজ্ঞ তপ দান ।  
নিরন্তর কব চারি বেদ অধ্যয়ন ।  
দ্বিজ ন্যাসি হৈতে তুমি পরম পাবন ॥৩৬॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে ত্রয়স্ত্রিংশা-  
ধ্যায়ৈ সপ্তসঙ্খ্যোক্তঃ—

অহোবত ঋপচোহতো গরীয়ান্  
যজ্ঞিস্থাগ্রে বর্জতে নাম তুভ্যম্ ।  
তেপুশ্পপশ্চে জুহবুঃ সমুঃ সর্বাঃ  
ব্রহ্মানূর্নাম গুণস্তি যে তে ॥ ১৩ ॥

অহো ( আশ্চর্য্যে ) বত ( হর্ষে ) যৎ-জিহ্বাগ্রে  
তুভ্যং ( তব ) নাম বর্জতে ( সঃ ) ঋপচঃ ( অপি )  
অতঃ গরীয়ান্ । তে নাম যে গুণস্তি ( তে ) তপঃ  
তেপুঃ জুহবুঃ সমুঃ ( তীর্থেষু স্নাতাঃ ) অর্ঘ্যাঃ  
( সদাচার্য্যঃ ) ব্রহ্মানূচুঃ ( সাংসং বেদমধীতবন্তঃ ) ॥১৩

যাঁহার জিহ্বাগ্রে তোমার নাম বিদ্যা-  
মান রহিয়াছে, সে চণ্ডাল হইলেও পূজ্য-  
তম । যাঁহারা তোমার নাম গ্রহণ করেন,  
তাঁহাদের তপস্যা, হোম, তীর্থস্নান, সদা-  
চার এবং বেদ অধ্যয়ন করা হয় ॥ ১৩ ॥

এত বলি তাবলে গেল। পুষ্পাদ্যানে ।  
অতি নিভৃত সেই গৃহে দিল বাসা স্থানে ॥  
এই স্থানে রহ, কর নাম সঙ্কীর্তন ।  
প্রতিদিন আসি আসি করিব মিলন ॥  
মন্দিরের চক্র দেখি করিহ প্রণাম ।  
এই ঠাঞি তোমার আসিনে প্রসাদান্ন ॥  
নিত্যানন্দ জগদানন্দ দামোদর মুকুন্দ ।  
হরিদাসে মিলি সবে পাইল আনন্দ ॥  
সমুদ্র স্নান করি প্রভু আইলা নিজস্থান ।  
অধৈতাদি গেলা সিদ্ধ করিবারে স্নান ॥৩  
আসি জগন্নাথের কৈল চূড়া-দরশন ।  
প্রভুর আবাসে আইলা করিতে ভোজন ॥

সবারে বসাইল প্রভু যোগ্যক্রম করি ।  
শ্রীহস্তে পরিবেশন কৈল গৌরহরি ॥  
অন্ন অন্ন না আইসে দিতে প্রভুর হাতে ।  
দুই তিনজন্যর ভক্ষ্য দেন একে এক পাতে ॥  
প্রভু না খাইলে কেহো না করে ভোজন ।  
উদ্ধিহস্তে বসিয়া রহিলা ভক্তগণ ॥  
স্বরূপগোসাঞি প্রভুরে কৈল নিবেদন ।  
তুমি না বনিলে কেহো না করে ভোজন ॥  
তোমার সঙ্গে সন্ন্যাসী রহে যত জন ।  
গোপীনাথ তারে করিয়াছে নিমন্ত্রণ ॥৩৬॥  
আচার্য্য আসিয়াছে ভিক্ষার প্রসাদান্ন লয়া  
পুরী ভারতী আছে তোমাপেক্ষা করিয়া ॥  
নিত্যানন্দ লয়া ভিক্ষা করিতে বৈস তুমি ।  
বৈষ্ণবেরে পরিবেশন করিতেছি আমি ॥  
তবে প্রভু প্রসাদান্ন গোবিন্দ হাতে দিল ।  
যত্ন করি হরিদাস ঠাকুরে পাঠাইল ॥  
আপনে বসিলা সব সন্ন্যাসী লইয়া ।  
পরিবেশন করে আচার্য্য হরষিত হইয়া ॥৩৭  
স্বরূপ গোসাঞি দামোদর জগদানন্দ ।  
বৈষ্ণবেরে পরিবেশন হইয়া আনন্দ ॥  
নানা পিঠা পান্না খায় আকর্ষ পুরিয়া ।  
মধ্যে মধ্যে হরি কহে উচ্চ করিয়া ॥  
ভোজনসমাপ্তি হৈল কৈল আচমন ।  
সবারে পরাইল প্রভু মালা চন্দন ॥  
বিশ্রাম করিতে সবে নিজ বাসা গেলা ।  
সঙ্ক্যাকালে আসি পুনঃ প্রভুরে মিলিলা ॥  
হেনকালে রামানন্দ আইলা প্রভু স্থানে ।  
প্রভু মিলাইলা তারে সব বৈষ্ণব-সনে ॥  
সবা লয়া গেলা প্রভু জগন্নাথালয় ।  
কীর্তন আরম্ভ তাঁহা কৈলা মহাশয় ॥  
সঙ্ক্যাপূ দেখি আরম্ভিলা সঙ্কীর্তন ।  
পড়িছা আনিদিল সবারেমালাচন্দন ॥৪০॥



চারিদিকে চারিসম্প্রদায় করে সঙ্কীর্ণন ।  
 মধ্যে নৃত্য করে প্রভু শচীর নন্দন ॥  
 অষ্ট মৃদঙ্গ বাজে বজ্রিণ করতাল ।  
 হরিশ্রবণী করে বৈষ্ণব কহে ভাল ভাল ॥  
 কীর্তনের মহামঙ্গল ধ্বনি যে উঠিল ।  
 চতুর্দশলোক ভরি ব্রহ্মাণ্ড ভেদিল ॥  
 পুরাষোত্তমবাসী লোক আইল দেখিবারে ॥  
 কীর্তন দেখি উড়িয়া লোক হৈল চমৎকারে ॥  
 তবে প্রভু জগন্নাথের মন্দির বেড়িয়া ।  
 প্রদক্ষিণ করি বুলে নর্দন করিয়া ॥  
 আগে পাছে গান করে চারি সম্প্রদায় ।  
 আছাড়ের কালে ধরে নিত্যানন্দ রায় ॥৪১॥  
 অক্ষয় পুসক কম্প প্রাশ্রয় ছন্দার ।  
 প্রেমের বিকার দেখি লোকে চমৎকার ॥  
 পিচকারির ধারা যেন অক্ষয় নয়নে ।  
 চারিদিকের লোক সব করয়ে সিনানে ॥  
 বেড়ানৃত্য মহাপ্রভু করি কথোক্ষণ ।  
 মন্দিরের পাছে রহি করেন কীর্তন ॥  
 চারিদিকে চারি সম্প্রদায় উচ্চস্বরে গায় ।  
 মধ্যে তাণ্ডব নৃত্য করে গৌররায় ॥  
 বহুক্ষণ নৃত্য করি প্রভু স্থির হৈলা ।  
 চারি মহাশ্রেণে তবে নাচিতে আজ্ঞা দিলা ॥  
 অদ্বৈত আচার্য্য নাচে এক সম্প্রদায় ।  
 আর সম্প্রদায়ে নাচে নিত্যানন্দরায় ॥  
 আর সম্প্রদায়ে নাচে পণ্ডিত বক্রেশ্বর ।  
 শ্রীবাস নাচেন আর সম্প্রদায় ভিতর ॥ ৪২ ॥  
 মধ্যে রহি মহাপ্রভু করেন দর্শন ।  
 তাঁহা এক এইর্থা তাঁর হৈল প্রকটন ॥  
 চারিদিকে নৃত্য বীত বস্ত্র বস্ত্র জন ।  
 সবে দেখে, করে প্রভু আশ্রয় জন ॥

চারি জনের নৃত্য প্রভুর দেখিতে সঙ্কীর্ণন  
 সেই অভিনাবে করে এইর্থা প্রকাশ ॥  
 দর্শনে অষ্টবিশ তাঁর দেখি মাত্র জানে ।  
 কেমনে চৌদিকে দেখে ইহা নাহিকানে ॥  
 পুষ্টির ভোজনে যেন কৃষ্ণ ন্যাস্থানে ।  
 চৌদিকের সখা কহে চাহে আশী-পাদনে ॥  
 নৃত্য করিতে যেই আইলে সন্নিধানে ।  
 মহাপ্রভু করে তারে হৃৎ আশ্রয়নে ॥৪৩॥  
 মহানৃত্য মহাপ্রেম মহাসঙ্কীর্ণন ।  
 দেখি প্রেমানন্দে তাসে নীলাচলের জন ॥  
 গজপতি রাজা শুনি কীর্তনমহেশে ।  
 অট্টালী চড়িয়া দেখে স্বগণ সহিতে ॥  
 সঙ্কীর্ণন দেখি রাজার হৈল চমৎকার ।  
 প্রভুরে মিলিতে উৎকর্ষা বাঢ়িল অপার ॥  
 কীর্তন সমাপি প্রভু দেখি পুষ্পাঞ্জলি ।  
 সর্ব বৈষ্ণব লয়া বাসা আইলা গৌরহরি ॥  
 পড়িছা আনিয়া দিল প্রসাদ বিস্তর ।  
 সবারে বাঁড়িয়া তাহা দিলেন কেশর ॥  
 সবারে বিদায় দিল করিতে শরন ।  
 এই মত লীলা করে শচীর নন্দন ॥  
 যাবত আছিল সব মহাপ্রভুর সঙ্গে ।  
 প্রতিদিন এই মত করে কীর্তন রঙ্গে ॥  
 এইত কহিল প্রভুর কীর্তন বিহাসী ।  
 যেই ইহা শুনে হয় চৈতন্তের দাস ॥  
 শ্রীরূপ রঘুনাথ পদে যার আশ্রয়  
 চৈতন্তচরিতামৃত কহে কৃষ্ণবাসক ৩৩ ॥

ইতি শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতামৃতস্য  
 বেড়াকীর্তনবিহার্য্যবর্ণনস্য  
 একাদশসর্গস্তমোঃ ১১৪ ॥

ইতি শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতামৃতস্য... শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতামৃতস্য... শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতামৃতস্য...

## দ্বাদশ পরিচ্ছেদ ।



শ্রী গুণ্ডিচামন্দিরমার্গনন্দঃ

সম্মার্জয়ন কালনতঃ স গোরঃ ।

বচিস্তবং শীতলম্ উজ্জ্বলক

কুকোপবেশোপরিবৃৎ চকার ॥ ১ ॥

সঃ গোরঃ আশ্বযুগৈঃ শ্রী গুণ্ডিচামন্দিরং  
(প্রথমং) সম্মার্জয়ন (পশ্চাৎ) কালনতঃ  
(প্রকালনেন) বচিস্তবং (বেবাং শীতানাং উজ্জ্বানাং  
চিত্তবং) শীতলম্ উজ্জ্বলং চ কুকোপবেশোপরিবৃৎ  
চকার ॥ ১ ॥

শ্রীগৌরাক্ত ভক্তগণের সহিত  
শ্রীগুণ্ডিচামন্দিরমার্জন ও প্রকালন করিয়া  
ভক্তচিত্তের ন্যায় শীতল, উজ্জ্বল ও শ্রীকৃষ্ণ  
উপবেশনের যোগ্য করিয়াছিলেন ॥১॥

জয় জয় মহাপ্রভু শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য ।  
জয় জয় নিত্যানন্দ জয়দৈবত ধন্য ॥  
জয় জয় শ্রী বাসাদি গৌরভক্তগণ ।  
শক্তি দেহ, করি বেধ চৈতন্যবর্ণন ॥  
পূর্বে দক্ষিণ হৈতে যবে প্রভু আইলা ।  
তারে মিলিতে গজপতি উৎকণ্ঠিত হৈলা ॥১  
কটক হৈতে পত্নী দিল সার্কভৌম ঠাকি ।  
প্রভু-সাজা হুঙ্কারি দেখিবারে বাই ॥  
ভট্টাচার্য্য দিলিলা প্রভুর সাজা না হইল ।  
পুনরাপি রাজ্য করে পত্নী পাঠাইল ॥  
প্রভুর নিকটে বক্ত জ্ঞানের ভক্তগণ ।  
মোর সাজি আসবারে করি নিবেদন ॥  
যে পদে পদে পদে পদে পদে পদে পদে  
যে পদে পদে পদে পদে পদে পদে পদে

তা সবার প্রসাদে দিলে। শ্রীপ্রভুর পারা  
প্রভুকৃপা বিহু মোরে রাজ্য নাহি ভার ॥  
যদি মোরে কৃপা না করিব সৌরহরি ।  
রাজ্য ছাড়ি যোগী হই হইব ভিখারি ॥  
ভট্টাচার্য্য পত্নী দেখি চিন্তিত হইয়া ।  
ভক্তগণ-পাশ গেলা সে পত্নী লইয়া ॥  
সবারে মিলিয়া কহিলা রাজ্যবিবরণ ॥  
পাছে সেই পত্নী সবারে করাইল-দর্শন ॥১  
পত্নী দেখি সবার মনে হইল বিস্ময় ।  
প্রভুর পদে গজপতির এত ভক্তি হয় ॥  
সবে কহে প্রভু তারে কছু না মিলিবে ।  
আমি সব কহি যবে দুঃখ সে মানিবে ॥  
সার্কভৌম কহে সবে চল একবার ।  
মিলিতে না কহিব, কহিব রাজ্যব্যবহার ॥  
এত কহি সবে গেলা মহাপ্রভুস্থানে ।  
কহিতে উল্লুখ সবে না কহে বচনে ॥  
প্রভু কহে কি কহিতে সবার আশ্রয়ন ।  
দেখি যে কহিতে চাহ, না কহ কি কারণ ॥৪  
নিত্যানন্দ কহে তোমার চাহি নিবেদিত ॥  
না কহিলে রহিতে নারি কহিতে ভর সিক্ত  
যোগ্যযোগ্য সব তোমার চাহি নিবেদিত  
তোমা না মিলিলে রাজ্য চাহে যোগী হইতে  
মদ্যপি জমিয়া প্রভুর কোমল বৈশ্য হইতে  
তথাপি বাহিরে কহে নিষ্ঠুর রহিত ॥১  
তোমা সবারে উল্লাস এই সবারে উল্লাস  
হৃদয় হইলে পদে পদে পদে পদে

পরমার্থ যাউ, লোকে করিব নিশ্চয় ।  
 লোক রহ, দামোদর করিব কুৎসন ।  
 তোমা সবাক্সায় আমি না মিলি রাজারি ।  
 দামোদর কহে যদি তবে মিলি তারে ॥ ৩ ॥  
 দামোদর কহে তুমি স্বতন্ত্র ঈশ্বর ।  
 কর্তব্যাকর্তব্য সব তোমার গোচর ।  
 আমি কোন্ কুন্ড জীব তোমারে বিধি দিব  
 আপনে মিলিবে তাঁরে তাহা যে দেখিব ॥  
 রাজা তোমার স্নেহ করে তুমি স্নেহবন্দ ।  
 তাঁর স্নেহে করাবে তারে তোমার পরশ ।  
 বদ্যপি ঈশ্বর তুমি পরম সত্ত্বজ ।  
 তথাপি স্বভাবে হও প্রেম-পরতন্ত্র ॥ ৬ ॥  
 নিত্যানন্দ কহে এই হইল কোন জন ।  
 যে তোমারে কহে কর রাজারে মিলন ॥  
 কিন্তু অনুরাগী লোকের স্বভাব এক হয় ।  
 ইষ্ট না পাইলে নিজ পরাণ ছাড়য় ॥  
 ব্যক্তিক ব্রাহ্মণী হয় তাহাতে প্রমাণ ।  
 কৃষ্ণ লাগি পতি-আগে ছাড়িল পরাণ ॥  
 এক যুক্তি আছে যদি কর অবধান ।  
 তুমিহ না মিলি তারে, রহে তারে আপ ॥  
 এক বহির্ভাস যদি দেহ রূপা করি ।  
 তাহা পাঞা প্রাণরাখেতোমার আশাধরি ॥ ৭ ॥  
 প্রভু কহে তুমি সব পরম বিদ্বান্ ।  
 যেই ভাগ হয় সেই কর সমাধান ॥  
 তবে নিত্যানন্দগোশাঞ্জে গোবিন্দের পাশ  
 মাসির পাইল প্রভুর এক বহির্ভাস ॥  
 সেই বহির্ভাস সর্গিভৌম-পাশ দিল ।  
 সার্বভৌম সেই বন্ধ রক্ষণের পাঠাইল ॥  
 বন্ধ পাঞা পাসিছিল প্রভুর সর্গিভৌম ॥  
 প্রভুর পশি করে সর্গিভৌম-পাশ ৩ ৩ ৩  
 রামানন্দর বাবে মিলিবে তুমি তারি ॥  
 কৈশিকের মিলনে তিকুর দুই মোক্ক নাশ ॥

তবে রাজা বহির্ভাস করিলে দামোদর  
 আপন-মিলন পাসি মিলিতে মাসিক  
 মহাপ্রভু বিহারনা করিল তোমারে ।  
 মোরে মিলিবেত অবশ্য মাঝে জিহায়ে  
 একমতে দুই জন কেমনে হবে আশিলা ॥  
 রামানন্দর তবে প্রভুরে মিলিলা ॥  
 প্রভূপদে প্রেমভক্তি জারাইল রাজার ।  
 প্রসঙ্গ পাইয়া এইহ কহে তার বার ॥ ৬ ॥  
 রাজমন্ত্রী রামানন্দ বাবহারে নিপুণ ।  
 রাজ-প্রীতি করি জবার মহাপ্রভুর সন ॥  
 উৎকণ্ঠাতে প্রতাপরত্ন মারে-রহিবারে ।  
 রামানন্দ সাধিলেন প্রভু মিলিবারে ॥  
 রামানন্দ প্রভুপায় কৈল বিবেচন ॥  
 একবার প্রতাপরত্নে দেখা হ চরণ ॥  
 প্রভু কহে রামানন্দ কহ বিচারিলা ।  
 রাজারে মিলিতে মুরার সন্ন্যাসী হইয়া ॥  
 রাজার মিলনে তিকুর দুই মোক্ক নাশ ॥  
 পরলোক রহ, লোকে করে উপহাস ॥  
 রামানন্দ কহে তুমি ঈশ্বর স্বতন্ত্র ॥  
 কারে তোমার ভয় তুমি নহ পরতন্ত্র ॥  
 প্রভু কহে আমি অনূব্য আজমে সন্ন্যাসী  
 কামদোষাকো ব্যবহারে তর বাসি ॥  
 সন্ন্যাসির অল্প ভিত্ত সর্ক লোকে পায় ॥  
 গুল্লবট্ট মসিবিহু বৈকে মা সূকার ॥  
 রায় করে কত পাপির করিয়াছে অকারি  
 ঈশ্বরমেরক তোমারি কত সঙ্গপতি ॥  
 প্রভু কহে পুণ ইহকো পুণের কাম ॥  
 মুরাবিহুসারক কেমনে করি সঙ্গ ॥  
 বদ্যপি প্রতাপরত্নের সঙ্গ করি ॥  
 তাহারি মিলন করি সর্গিভৌম-পাশ ॥  
 কবায়ি প্রতাপরত্নের সঙ্গ করি ॥

প্রথমেই প্রভু হাশিমি আসিলে ।  
 পড়িছা পাজে সার্বভৌম আনিগুহাধিরা ১০  
 তিন জনার পাশে প্রভু হাশিমি কহিল ।  
 গুণিচামন্দির মার্জন সেবা মাগি নিল ।  
 পড়িছা বলে আনি সব সেবক ভোগ্যার ।  
 যেই তোমার ইচ্ছা সেই কর্তব্য আদ্যার ।  
 যিনেহে রাজ্যার সাজা হৈয়াহে আমাধে  
 যেই প্রভুর ইচ্ছা সেই শীল করিবারে ।  
 তোমার ষোগ্য সেবা নহে মন্দিরমার্জন ।  
 এহো এক লীলা কর যে তোমার মন ১১  
 কিন্তু ঘট সম্মার্কনী বহুত চাহিরে ।  
 আজ্ঞা দেহ আনি সব ইহা আনি বিরে ।  
 তবে শত শত ঘট শত সম্মার্কনী ।  
 নুতন প্রভুর আগে পড়িছা দিল আনি ।  
 আর দিন প্রভাতে প্রভু লঞা নিজগণ ।  
 জীহন্তে সবার অঙ্গে লেপিল চন্দন ।  
 জীহন্তে সবারে দিল একেক মার্জনী ।  
 সবগণ লঞা প্রভু চলিলা আপনি ।  
 গুণিচামন্দির পেলা করিতে মার্জন ।  
 প্রথমে মার্জনী লগ্না করিল শোধন ১২  
 তিতর মন্দির উপর সব সম্মার্কিল ।  
 সিংহাসন মার্জি চারিভিত্ত শোধিল ।  
 ছোট বড় মন্দির কৈল মার্জন পৌধন ।  
 পাছে ভৈহে শোধিলেন জীকগণকারন ।  
 চারিপাশে শত শত সম্মার্কনী করে ।  
 আপনি শোধরে প্রভু শিখার সবারে  
 প্রেমোদ্যোগ বৃহ শোধে লর কুকমার ।  
 মন্দিরগণ কুক কহে করে নিজ কল ১৩  
 মন্দিরগণ মনু দেখিতে শোভন ।  
 করিছা কামে মন্দিরগণ নর সবারে  
 প্রেমোদ্যোগ পোতি হৈয়াহে প্রেম  
 প্রভুর সবারে মনু দেখিতে শোভন ১৪

প্রথমেই প্রভু হাশিমি আসিলে ।  
 পুজেরা যিনিহে সেই বিলিলা আপনি ।  
 তবে মনু মনু সব রাজ্যচক করিলা ।  
 প্রভুর মজার তার পুজ লগ্না আইলা ১২  
 পুজেরা মন্দির পুজ প্রাথমবরণ ।  
 কৈশোর বরণ কীৰ্ত্ত কামল মনন ।  
 পীতাম্বর বনে অঙ্গের নর আভরণ ।  
 কুকমারগণের স্তি যো হৈলা উকীপন ।  
 তারে দেখি মহাপ্রভুর কুকমুখি হৈলা ।  
 প্রেমাবেশে তারে মিলি কহিতে লাগিলা ১৩  
 এই মহাভাগবত বাহার দর্শনে ।  
 ব্রজেন্দ্রনন্দন স্মৃতি হয় সর্গজনে ।  
 কুতাব হইলাগ আনি ইহার দর্শনে ।  
 এত বলি পুনঃ তারে কৈল আনিদনে ১৪  
 প্রভুপদে রাজপুত্র হৈল প্রেমাবেশ ।  
 যেদ কল্প অক্ষ স্তম্ভ বহুতক বিশেষ ।  
 কুক কুক কহে নাচে কররে রোদন ।  
 তার ভীণ্য দেখি শ্রাবা করে ভক্তগণ ১৫  
 তবে মহাপ্রভু তারে ধৈর্য করাইল ।  
 নিভ্য আসি আমার মিলিহ এইআজাদিল ১৬  
 বিদায় হইয়া রায় আইল রাজপুত্র লঞা ।  
 রাজা কুখ পাইল পুজের চেটা দেখিরা ।  
 পুত্র আনিজন করি প্রেমাবিষ্ট হৈলা ।  
 সাক্ষি পূরণ যেন মহাপ্রভুর পাইল ১৭  
 সেই যৈহে ভাগ্যবান রাজ্যার মনন ।  
 প্রভুর ভক্তগণ যমো হৈলা একমন ১৮  
 এই মনু মনু মনু ভক্তগণ সবেক ।  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ১৯  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ২০  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ২১  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ২২  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ২৩  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ২৪  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ২৫  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ২৬  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ২৭  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ২৮  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ২৯  
 মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু মনু ৩০

ভূগ ধূলী কিঁকর সব একত্র করিয়া ।  
 বহির্কাসে করি ফেলায় বাহিরে লইয়া ॥  
 এইমত ভক্তগণ করি নিজবাসে ।  
 ভূগ ধূলী বাহিরে ফেলায় পরম হরিষে ॥  
 প্রভু কহে কে কত করিয়াছ মার্জন ।  
 ভূগধূলী-পরিমাণে জানিব পরিশ্রম ॥  
 সবার ঝাটি আনি বোকা একত্র করিল ।  
 সবা হৈতে প্রভুর বোকা অধিক হইল ॥  
 এই মত অভ্যস্তর করিল মার্জন ।  
 পুনঃ সবাকারে দিল করিয়া বণ্টন ॥  
 সুশ্ৰুধূলী ভূগ কাঁকর সব কর দূর ।  
 ভালমতে শোধ সব প্রভুর অন্তঃপুর ॥১৯  
 সব বৈষ্ণব লঞা যবে দুইবার শোধিল ।  
 দেখি মহাপ্রভুর মনে সন্তোষ হইল ॥  
 আর শতজন জল শত ঘট ভরি ।  
 প্রথমেই লয়া আছে কালাপেক্ষা করি ॥  
 জল আন বলি যবে মহাপ্রভু কহিল ।  
 তবে শতঘট আনি প্রভু আগে দিল ॥  
 প্রথমে করিল প্রভু মন্দির প্রক্ষালন ।  
 উর্দ্ধ অধোভিত্তি গৃহমধ্য সিংহাসন ॥  
 খাপরা ভরিয়া জল উর্দ্ধে চালাইল ।  
 সেই জলে উর্দ্ধ শোধি ভিত প্রক্ষালিল ॥২০  
 প্রথমে করিল প্রভু মন্দির প্রক্ষালন ।  
 শ্রীহস্তে করেন সিংহাসনের মার্জন ॥  
 ভক্তগণ করে গৃহমধ্য প্রক্ষালন ।  
 নিজ নিজ হস্তে করে মন্দির মার্জন ॥  
 কেহো জল আনি দেয় মহাপ্রভুর করে ।  
 কেহো ছলে দেয় তাঁর চরণ উপরে ॥  
 কেহো লুকাইয়া করে সেই জলপান ।  
 কেহো মাগি লয় কেহো অন্যে করে দান  
 বর ধুই প্রণালিকায় জল ছাড়ি দিল ।  
 সেই জল প্রাক্ষণ সব ভরিয়া রহিল ॥

নিজ নিজ বস্ত্রে কৈল গৃহসম্মার্জন ।  
 প্রভু নিজ বস্ত্রে মার্জিলেন সিংহাসন ॥২১  
 শত ঘট জলে হৈল মন্দির মার্জন ।  
 মন্দির শোধিয়া কৈল যেন নিজ মন ॥  
 নির্মল শীতল দ্বিধ করিলা মন্দিরে ।  
 আপন হৃদয় যেন ধরিল বাহিরে ॥  
 শত শত লোক জল ভরে সরোবরে ।  
 ঘাটে স্থল নাহি কেহো কুপে জল ভরে ॥  
 পূর্ণকুম্ভ লয়া আইসে শত ভক্তগণ ।  
 শূন্য ঘট লয়া যায় আর শত জন ॥  
 নিত্যানন্দাঙ্কিত স্বরূপ ভারতী আর পুরী ।  
 ইহাঁ বিনু আর সব আনে জল ভরি ॥  
 ঘটে ঘটে ঠেকি কত ঘট ভাঙ্গি গেল ।  
 শত শত ঘট তাহা লোকে লয়া আইল ॥২২  
 জল ভরে ঘর ধোয় করে হরিধ্বনি ।  
 কৃষ্ণ হরি ধ্বনি বিনু আর নাহি গুনি ॥  
 কৃষ্ণ কৃষ্ণ কহি করে ঘট সমর্পণ ।  
 কৃষ্ণ কৃষ্ণ কহি করে ঘটের প্রার্থন ॥  
 যেই যেই করে সেই কহে কৃষ্ণনামে ।  
 কৃষ্ণনাম হৈলা তাহা সঙ্কত সর্বকামে ॥  
 প্রেমাবেশে প্রভু কহে কৃষ্ণ কৃষ্ণ নাম ।  
 একলে করেন প্রেমে শতজনের কাম ॥  
 শতহাতে করে যেন কালন মার্জন ।  
 প্রতি জন পাশে যাই করায় শিক্ষণ ॥  
 ভাল কর্দ দেখি তারে করে প্রশংসন ।  
 মন না মিলিলে করে পবিত্র ভৎসন ॥  
 তুমি ভাল করিয়াছ শিখাই অন্যেয়ে ।  
 এইমত ভাল কর্দ সেহো যেন করে ॥২৩  
 একথা গুনিয়া সবে সন্তুষ্ট হয়া ।  
 ভালমতে করে কর্দ সবে মন দিয়া ॥  
 তবে প্রভু প্রক্ষালিল শ্রীকৃষ্ণমোহন ।  
 ভোগমগ্ন তব কৈল প্রক্ষালন ॥

নাটশালা ধুই ধুইল চত্বর প্রাক্ষণ ।  
 পাকশালা আদি কৈল সব প্রাক্ষালন ॥  
 মন্দিরের চতুর্দিক প্রাক্ষালন কৈল ।  
 সব অন্তঃপুর ভালমতে ধোয়াইল ॥  
 হেনকালে এক গোড়িয়া স্নবুদ্ধি সরল ।  
 প্রভুর চরণযুগে দিল ঘট জল ॥  
 সেই জল লয়া আপনে পান কৈল ।  
 তাহা দেখি প্রভুর মনে দুঃখ রোষ হৈল ॥  
 যদ্যপি গোসাঞি তারে হয়াছে সন্তোষ ।  
 শিক্ষা লাগি বাহিরে তথাপি করে রোষ ২৪  
 স্বরূপগোসাঞি আনি কহিল তাহারে ।  
 এই দেখ তোমার গোড়ীয়ার ব্যবহারে ॥  
 দেখরমন্দিরে মোর পাদ ধোয়াইল ।  
 সেই জল লয়া আপনে পান কৈল ॥  
 এই অপরাধে মোর কাঁহা হবে গতি ।  
 তোমার গোড়ীয়া করে এতেক কৈজ্ঞতি ॥  
 তবে স্বরূপগোসাঞিতারঘাড়েহাত দিয়া ।  
 ঢেকা মারি পুরীর বাহির কৈল লয়া ॥  
 পুনঃ আসি প্রভুর পায় করিল বিনয় ।  
 অজ্ঞের অপরাধ ক্ষমা করিতে যুয়ায় ॥২৫  
 তবে মহাপ্রভু মনে সন্তোষ হইলা ।  
 নারি করি দুই পাশে সবা বসাইলা ॥  
 আপনে বসিয়া মাঝে আপনার হাতে ॥  
 তুণ কাটা কুটা সব লাগিলা কুড়াইতে ॥  
 কে কত কুড়ায় সব একত্র করিব । ১  
 বার অল্প তার ঠাঞি পিঠাপানা লব ॥  
 এইমত সব পুরী করিল শোধন ।  
 শীতল নির্মল কৈল যেন নিজ মন ॥  
 প্রণালিকা ছাড়ি যদি জল বহাইল ।  
 নূতন নদী যেন সমুদ্রে মিলিল ॥ ২৬ ॥  
 এইমত পুরদ্বার অগ্রে পথ বসত ।  
 সকল শোধিত তাহা কে বর্ণিবে কত ॥

নুসিংহমন্দির-ভিতর বাহির শোধিল ।  
 ক্ষণেক বিশ্রাম করি নৃত্য আরম্ভিল ॥  
 চারিদিকে ভক্তগণ করেন কীর্তন ।  
 মধ্যে নৃত্য করে প্রভু মন্তসিংহ-সম ॥  
 শ্বেদ কল্প বৈবর্ণ্যাঙ্গ পুলক ছকার ।  
 নিজ অঙ্গ ধুই আগে চলে অঙ্গধার ॥  
 চারিদিকে ভক্ত অঙ্গ কৈল প্রাক্ষালন ।  
 শ্রাবণমাসে মেঘ যেন করে বরিষণ ॥২৭॥  
 মহা উচ্চ গন্ধীর্তনে আকাশ ভরিল ।  
 প্রভুর উদ্ভগু নৃত্যে ভুমিকম্প হৈল ॥  
 স্বরূপের উচ্চ গান প্রভুরে সদা ভায় ।  
 আনন্দে উদ্ভগু নৃত্য করে গৌররায় ॥  
 এইমতে কথোক্ষণ নৃত্য করিয়া ।  
 বিশ্রাম করিল প্রভু সময় বুঝিয়া ॥  
 আচার্য্য গোসাঞির পুত্র শ্রীগোপাল নাম  
 নৃত্য করিতে তারে আজ্ঞা দিল ভগবান ॥  
 প্রেমাবেশে নৃত্যে তিহঁ হইলা মূচ্ছিতে ।  
 অচেতন হয় তিহঁ পড়িলা ভূমিতে ॥  
 আস্তে ব্যস্তে আচার্য্য তারে লৈলা কোলে  
 খানসরহিত দেখি হইলা বিকলে ॥  
 নুসিংহের মন্ত্র পড়ি মারে জলছাটি ।  
 গল্গল শব্দে ব্রহ্মাণ্ড বায় ফাটি ॥  
 অনেক করিল তড় না হয় চেতন ।  
 আচার্য্য কান্দেন, কান্দে সব ভক্তগণ ॥  
 তবে মহাপ্রভু তার বুকে হাত দিল ।  
 উঠহ গোপাল বলি উচ্চৈঃস্বর কৈল ॥  
 শুনিতেই গোপালের হইল চেতন ।  
 হরি বলি নৃত্য করে সব ভক্তগণ ॥ ২৯ ॥  
 এই লীলা বর্ণিয়াছেন দাস বন্দাবন ।  
 অতএব সংক্ষেপ করি করিল বর্ণন ॥  
 তবে মহাপ্রভু ক্ষণেক বিশ্রাম করিয়া ।  
 সরোবরে জলকীড়া কৈল ভক্ত লঞা ॥

তীবে উঠি পরি সবে শুক বসন ।  
 নুনিংহদেব নমস্করি গেলা উপবন ॥  
 উদ্যানে বসিলা প্রভু ভক্তগণ লঞা ।  
 তবে বাণীনাথ আইলা প্রসাদ লইয়া ॥  
 কাশীগিঞ তুলসী পড়িছা দুই জন ।  
 পঞ্চশত লোক যত করয়ে ভক্ষণ ॥  
 তত অন্ন পিঠা পানা সব পাঠাইল ।  
 দেখিয়া প্রভুর চিত্তে সন্তোষ হইল ॥৩০॥  
 পুরী গোসাঞি মহাপ্রভু ভারতী ব্রহ্মানন্দ  
 অদ্বৈত আচার্য্য আর প্রভু নিত্যানন্দ ॥  
 আচার্য্যরত্ন আচার্য্যনিধি শ্রীবাস গদাধর  
 শঙ্করারণ্য ন্যায়াচার্য্য রাঘব বক্রেশ্বর ॥  
 প্রভু আজ্ঞা পাঞা বৈসে নিজ সার্কভৌমঃ  
 পিণ্ডোপরি বৈসে প্রভু লঞা এত জন ॥  
 তার তলে তার তলে করি অনুক্রম ।  
 উদ্যান ভরি বৈসে ভক্ত করিতে ভোজন  
 হরিদাস বলি প্রভু ডাকে ঘনে ঘন ।  
 দূরে রহি হরিদাস করে নিবেদন ॥  
 ভক্তসঙ্গে প্রভু করেন প্রসাদ অপসীকার ।  
 এগন্ধে বসিতে যোগ্য নই মুঞি ছার ॥  
 পাছেমোরে প্রসাদগোবিন্দদিবেবহির্দ্বারে  
 মন জানি প্রভু পুনঃ না বলিলা তারে ॥৩১॥  
 স্বরূপ গোসাঞি জগদানন্দ দামোদর ।  
 কাশীশ্বর গোপীনাথ বাণীনাথ শঙ্কর ॥  
 পরিবেশন করে তাহা এই সাত জন ।  
 মধ্যে মধ্যে হরিধ্বনি করে ভক্তগণ ॥  
 পুলিনভোজন যৈছে ক্লেশ পূর্বে কৈল ।  
 সেই লীলা মহাপ্রভুর মনে স্মৃতি হৈল ॥  
 যতপি প্রেমাবেশে প্রভু হইলা অধীর ।  
 সময় বুঝিয়া তবু মন কৈল স্থির ॥  
 প্রভু কহে মোরে দেহ লাফরা ব্যঞ্জনে ।  
 পিঠাপানা অমৃত গোটিকা দেহ ভক্তগণে

সার্কজ প্রভু জানেন যারে যেই ভার ।  
 তারে তারে সেই দেয়ায় স্বরূপ দ্বারায় ॥৩২॥  
 জগদানন্দ বেড়ার পরিবেশন করিতে ।  
 প্রভুর পাতে ভাল দ্রব্য দেন আচম্বিতে ॥  
 যদ্যপি দিলে প্রভু তারে করেন রোষ ।  
 বলে ছলে তবু দেন দিলে সে সন্তোষ ॥  
 পুনঃ আসি সেই দ্রব্য করে নিরীক্ষণ ।  
 তার ভয়ে প্রভু কিছু করেন ভক্ষণ ॥  
 না খাইলে জগদানন্দ করিবে উপবাস ।  
 তার আগে কিছু খায় মনে এই ত্রাস ॥৩৩॥  
 স্বরূপ গোসাঞি ভাল গিষ্ট প্রসাদ লঞা ।  
 প্রভুকে নিবেদন করে আগে দাণ্ডাইয়া ॥  
 এই মহাপ্রাদ অল্প কর আশ্বাদন ।  
 দেখ জগন্নাথ কৈছে করিয়াছেন ভোজন ।  
 এত বলি কিছু আগে করে সমর্পণ ।  
 তার স্নেহে প্রভু কিছু করেন ভক্ষণ ॥  
 এই মত দুই জন করেন বার বার ।  
 বিচিত্র এই দুই ভক্তের স্নেহব্যবহার ॥  
 সার্কভৌমে প্রভু বস্যাঞাছেন নিজপাশে  
 দুই ভক্তের স্নেহ দেখি সার্কভৌম হাসে  
 সার্কভৌমে প্রভু প্রসাদ উত্তম ।  
 স্নেহ করি বার বার করান ভোজন ॥৩৪॥  
 গোপীনাথচার্য্য উত্তম মহাপ্রসাদ আনি ।  
 সার্কভৌমে দিয়া কহে সুমধুর বাণী ॥  
 ভট্টাচার্য্যে পূর্বে তোমার যত ব্যবহার ।  
 কাহা এই পরমানন্দ করহ বিচার ॥  
 সার্কভৌম কহে আমি তাকিক কুবুদ্ধি ।  
 তোমার প্রসাদে আমার এ সম্পদ সিদ্ধি  
 মহাপ্রভু বিনে কেহে নাহি দরাময় ।  
 কাকেরে গরুড় কয়ে এঁহে কোন হয় ॥  
 তাকিক লুগাল সঙ্গে তেউ তেউ করি ।  
 সেই মুখে এবে কথা কহি কুবুদ্ধি ॥

কাঁহা বহিমুখ তাকিক শিষ্যগণ সঙ্গ ।  
 কাঁহা এই সঙ্গ স্থপানমুদ্র তরঙ্গ ॥ ৩৫ ॥  
 প্রভু কহে পূর্নগিন্দ কৃষ্ণ তোমার প্রীতি ।  
 তোমানঙ্গে আশা সবার হৈল কৃষ্ণ মতি ।  
 ভক্তমহিমা বাড়াইতে ভক্তে সুখ দিতে ।  
 মহাপ্রভু সগ আর নাহি ত্রিজগতে ॥  
 তবে প্রভু প্রত্যেকে সব ভক্ত নাম লয়া ।  
 পিঠাপানা দেয়াইলা প্রসাদ করিয়া ॥  
 অদ্বৈত নিত্যানন্দ বসিয়াছেন একঠাঞি ।  
 দুইজনে ক্রীড়া কলহ লাগিল তথাই ॥ ৩৬ ॥  
 অদ্বৈত কহে অবধূতের সঙ্গে একপঙ্ক্তি  
 ভোজন করি, না জানি হবে কোন্ গতি ॥  
 প্রভু ত সন্ন্যাসী উহার নাহি অপচয় ।  
 অন্নদোষে সন্ন্যাসির দোষ নাহি হয় ॥  
 “নান্নদোষেণ মক্ষরী” এই শাস্ত্রের প্রমাণ  
 গৃহস্থ ব্রাহ্মণ আমার এই দোষ স্থান ॥  
 জন্ম কুল শীলাচার না জানি বাহার ।  
 তার সঙ্গে একপঙ্ক্তি বড় অনাচার ॥ ৩৭ ॥  
 নিত্যানন্দ কহে তুমি অদ্বৈত আচার্য্য ।  
 অদ্বৈত সিদ্ধান্তে বাপে, শুদ্ধভক্তি কার্য্য ॥  
 তোমার সিদ্ধান্ত সঙ্গ করে যেই জনে ।  
 এক বস্তু বিনে সেই দ্বিতীয় না মানে ॥  
 হেন তোমার সঙ্গে মোর একত্র ভোজন ।  
 না জানি তোমার সঙ্গে কৈছে হয় মন ॥  
 এইমত দুই জনে করে বোলাবুলি ।  
 ব্যাজ স্তুতি করে দুঁহে যৈছে গালাগালি ।  
 তবে প্রভু সব বৈষ্ণবের নাম লয়া ।  
 প্রসাদ দেয়ান, যেন কৃপা-অমৃত সিঞ্চিয়া ॥  
 ভোজন করি উঠে তবে হরিশ্রবণি করি ।  
 হরিশ্রবণি উঠিল সেই স্বর্গ মর্ত্য ভরি ॥ ৩৮ ॥  
 তবে মহাপ্রভু সব নিজ ভক্তগণে ।  
 সবাকে ক্রীহস্তে দিল মাল্যচন্দনে ॥

তবে পরিবেশক স্বরূপাদি মাত জন !  
 গৃহ-ভিতর বসি বৈল প্রসাদ ভোজন ॥  
 প্রভুর অবশেষ গোবিন্দ রাখিল দরিয়া ।  
 সেই অন্ন কিছু হরিদামে দিল লয়া ॥  
 ভক্তগণ গোবিন্দপাশ প্রসাদ মাগি নিল ।  
 পাঁছে সেই প্রসাদ গোবিন্দ আপনে পাইল  
 স্বতন্ত্র ঈশ্বর প্রভু করে নানা খেলা ।  
 “দোয়াপাখালা” নামকৈলা এই এক লীলা  
 আর দিন জগন্নাথের নেত্রোৎসব নাম ।  
 মহোৎসব হৈল ভক্তের প্রাণ-সমান ॥  
 পক্ষ দিন দুঃখী-লোক প্রভু অদর্শনে ।  
 আনন্দিত হৈলা জগন্নাথ দরশনে ॥ ৩৯ ॥  
 মহাপ্রভু সুখে লৈয়া সব ভক্তগণ ।  
 জগন্নাথ দরশনে করিলা গমন ॥  
 আগে কাশীধর যায় লোক নিবারিয়া ।  
 পাঁছে গোবিন্দ যায় জলকরঙ্গ লইয়া ॥  
 প্রভু আগে পুরী ভারতী দুঁহার গমন ।  
 স্বরূপ অদ্বৈত দুই পার্শ্বে দুই জন ॥  
 পাঁছে পার্শ্বে চলি যায় আর ভক্তগণ ।  
 উৎকণ্ঠায় গেলা জগন্নাথের ভবন ॥  
 দরশন লোভে করি মর্যাদা লঙ্ঘন ।  
 ভোগমগ্নপ যাঞা করে নিমগ্ন দরশন ॥ ৪০ ॥  
 তুমারি প্রভুর নেত্র এ...  
 গাঢ়াশক্ত্যে পিয়ে কৃষ্ণের বদন...  
 প্রফুল্ল কমল জিনি নয়ন-বুগল ।  
 নীলমণি দর্পণকাস্তি গণ্ড বরুণমল ॥  
 বাদুলির ফুল জিনি অধর স্বরঙ্গ ।  
 ঈষৎ হমিতকাস্তি অমৃততরঙ্গ ॥  
 ক্রীমুখ সৌন্দর্য্য-মধু নাচে অগণে ক্ষণে ।  
 কোটি কোটি ভক্তনেত্রভূষণ করে পানে ॥  
 যত পিয়ে তত ভূষণ বাড়ে নিবন্ধর ।  
 মুখানুজ ছাড়ি নেত্র না হরিশ্রবণ ॥

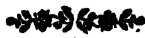


এই মতে মহাপ্রভু লক্ষ্য ভক্তগণ ।  
 মধ্যাহ্ন পর্য্যন্ত কৈল শ্রীমুখ দর্শন ॥  
 স্নেহ কম্প অশ্রু জল বহে অনুক্ষণ ।  
 দর্শনের লোভে অশ্রু করে সম্বরণ ॥৪১॥  
 মধ্যে মধ্যে ভোগ লাগে মধ্যে দরশন ।  
 ভোগের সময়ে প্রভু করেন গঙ্গীর্জন ॥  
 দর্শন আনন্দে প্রভু দয় পাশরিল ।  
 ভক্তগণ মধ্যাহ্ন করিতে প্রভু লয়া আইল ॥

প্রাতঃকালে রথযাত্রা হইবে জানিয়া ।  
 সেবকে লাগিল ভোগ বিগুণ করিয়া ॥  
 গুণ্ডিচামন্দির লীলা সংক্ষেপে কহিল ।  
 বাহা দেখি শুনি পাপির কৃষ্ণভক্তি হৈল ॥  
 শ্রীমদগ্নিগোপ পদে বার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যে মধ্যাহ্নে গুণ্ডিচামন্দির  
 মাজনং নাম ষাটশ পরিচ্ছেদ ॥১২॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যাহ্নে শ্রীচৈতন্যবরুণ শ্রীশ্রীমদগ্নিগোপনারবিন্দনেবি বিনোদবিহারীগোপাল-  
 কৃতাবরবোধিনী ও সুবোধিনীসম্বিত গুণ্ডিচামন্দির মাজনং নাম ষাটশ পরিচ্ছেদ ॥১২॥

### ত্রয়োদশ পরিচ্ছেদ ।



স জীরাং কৃষ্ণচৈতন্য শ্রীমদগ্নিগোপ ননর্ভ যঃ ।  
 যেনাশীলগতাং চিত্রং জগন্নাথোহপি বিস্মিতঃ ॥১॥

যঃ শ্রীমদগ্নিগোপ ( শ্রীমদগ্নিগোপ জগন্নাথবিধিতস্ত  
 রথস্ত সম্মুখে ) ননর্ভ, যেন ( ননর্ভেন ) জগতাং  
 চিত্রং ( চমৎকারম্ ) আশীং, ( জগতাং বার্তা দূরত  
 আস্তাং ) জগনাথঃ অপি বিস্মিতঃ ( আশীং ) সঃ  
 কৃষ্ণচৈতন্যঃ জীরাং ॥ ১ ॥

যিনি শ্রীজগন্নাথদেবের রথার্থে নৃত্য  
 করতঃ লোক সকলের চমৎকারিতা  
 সম্পাদন করিয়াছিলেন এবং বাঁহার নৃত্য  
 দর্শনে শ্রীজগন্নাথদেবও বিস্মিত হইয়া-  
 ছিলেন, সেই কৃষ্ণচৈতন্যের জয়  
 হউক ॥ ১ ॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ  
 জয় শ্রীমদগ্নিগোপ জয় শ্রীমদগ্নিগোপ

জয় শ্রীমদগ্নিগোপ জয় একমন ।  
 রথযাত্রার নৃত্য প্রভুর পরমমোহন ॥  
 আর দিন মহাপ্রভু হয় সাবধান ।  
 রাত্রে উঠি, গণ সঙ্গে কৈলা প্রাতঃস্নান ॥  
 পাণ্ডুবিক্রম দেখিবারে করিল গমন ।  
 জগন্নাথ যাত্রা কৈল তাড়ি সিংহাসন ॥ ১  
 আপনে প্রতাপরুদ্র লয়া পাতঙ্গণ ।  
 মহাপ্রভুর গণে করায় বিক্রম দর্শন ।  
 অশ্রিত নিত্যানন্দাদি সঙ্গে ভক্তগণ ।  
 মুখে মহাপ্রভু দেখে কৈশরগগন ।  
 বলিষ্ঠ দরিত্রাগণ যেন সম্ভাতি ।  
 জগন্নাথবিক্রম করায় করি বাঁড়াহাতি ॥  
 কতক দরিত্রা করে অক্ষয়ানন্দন ।  
 কতক দরিত্রা করে শ্রীমদগ্নিগোপ ॥ ২ ॥  
 কচিৎকৈ অক্ষয়ানন্দ পটভোরি ।  
 হই নিশে মনোহর বসন অক্ষয়ানন্দ ॥

উক্ত দুই ভূমি সব পাতি স্থানে স্থানে ।  
 এক ভূমি হৈতে আর ভূমি করার পমনে ।  
 প্রভাদাঘাতে ভূমি হয় রত খণ্ড ।  
 তুণা সব উক্তি বার শব্দ হয় প্রচণ্ড ।  
 বিশ্বস্তর জগন্নাথ চালাইতে শক্তি কার ।  
 আপন ইচ্ছায় চলে করিতে বিহার ।  
 মহাপ্রভু 'নশিম' বলি করে উচ্ছ্বাসি ।  
 নানা বাদ্য কোলাহল কিছুই না শুনি ॥৩॥  
 তবে প্রতাপরত্ন করে আপনে সেবন ।  
 স্বর্গমার্জনী লৈয়া করে পথ সম্মার্জন ।  
 চন্দন জলে করেন পথ নিষিকনে ।  
 তুচ্ছ সেবা করে, বৈসে রাজসিংহাসনে ।  
 উত্তম হইয়া রাজা করে তুচ্ছ সেবন ।  
 অতএব জগন্নাথের রূপার ভাজন ॥ ৪ ॥  
 মহাপ্রভু সুখ পাইল সে সেবা দেখিতে ।  
 মহাপ্রভুর রূপা পাইলা সে সেবা হইতে ॥৪॥  
 রথের সাজনি দেখি লোকে চমৎকার ।  
 সব হেমময় রথ-সুমেরু আকার ॥  
 শত শত গুরুচামর মর্পণ উজ্জ্বল ।  
 উপরে পতাকা শত চান্দোয়া নির্মল ॥  
 বাঘর কিঙ্কিনী বীজে ঘণ্টার কণিত ।  
 নানা চিত্র পটবস্ত্রে রথ বিভূষিত ॥  
 লীলার চড়িলা ঈশ্বর রথের উপর ।  
 আর দুই রথে চড়ে সুভদ্রা হলধর ॥ ৫ ॥  
 পঞ্চদশ দিন ঈশ্বর মহালক্ষী লয়া ।  
 তার সঙ্গে কীড়া কৈল নিভূতে বসিয়া ॥  
 তাহার মস্তকি লক্ষা ভক্তসুখ দিতে ।  
 রথে চড়ি বাহির হৈলা বিহার করিতে ॥  
 স্কন্ধ বেত বালু পথ পুলিনের সম ।  
 দুইধিকে ঘোড়া সব যেন দুন্দ্যাবন ॥ ৬ ॥  
 রথে চড়ি জগন্নাথ করিল মন ।  
 দুই পাশে পশু কল আনয়িত জন ॥

গৌড় সব রথ টালি করিয়া আনন্দ ।  
 কণে শীত্ৰ চলে রথ কাণে চলে মন্দ ॥  
 কণে দ্বির হয় রথে টানিলে না চলে ।  
 ঈশ্বরেছায় চলরথ নাচলেকায়োরলে ॥  
 তবে মহাপ্রভু সব লয়া নিজগণ ।  
 স্বহস্তে পরাইলা সবানে মালাচন্দন ।  
 পরমানন্দপুরী আর ভারতী ব্রহ্মানন্দ ॥ \* ॥  
 শ্রীহস্তে চন্দন পায়া বাছিল আনন্দ ॥  
 অধৈত আচার্য আর প্রভু নিত্যানন্দ ॥  
 শ্রীহস্ত স্পর্শে দুহে হইলা আনন্দ ॥  
 কীর্তনীরাগে দিলা মালা চন্দন ।  
 স্বরূপ শ্রীবাস তার মুখ্য দুই জন ॥ ৮ ॥  
 চারি সম্প্রদায় হৈল চকিশ গায়ন ।  
 দুই দুই মাদ্জিক হৈল অষ্ট জন ॥  
 তবে মহাপ্রভু মনে বিচার করিয়া ।  
 চারি সম্প্রদায় কৈল গায়ন বাটিয়া ॥  
 নিত্যানন্দ অধৈত হরিদাস বক্তৃথয়ে ।  
 চারি জনে আজ্ঞা দিল নৃত্য করিবারে ॥৯॥  
 প্রথম সম্প্রদায় কৈল স্বরূপ প্রধান ।  
 আর পঞ্চ জন দিল তার পালিগান ॥  
 দামোদর নারায়ণ দত্ত গোবিন্দ ।  
 রাঘবপণ্ডিত আর শ্রীগোবিন্দানন্দ ॥  
 অধৈত আচার্য তাঁহা নৃত্য করিতে দিল ।  
 শ্রীবাস প্রধান আর সম্প্রদায় কৈল ॥ ১০ ॥  
 গঙ্গাদাস হরিদাস শ্রীমান শুভানন্দ ।  
 শ্রীরামপণ্ডিত তাঁহা নাচে নিত্যানন্দ ॥  
 বাসুদেব গোপীনাথ মুরারি বাঁহা গায় ॥  
 মুকুন্দ প্রধান কৈল আর সম্প্রদায় ॥  
 শ্রীকান্ত বলভসেন আর দুই জন ।  
 হরিদাস ঠাকুর তাঁহা করেন নর্তন ॥ ১১ ॥  
 গোবিন্দচোর প্রধান কৈল আর সম্প্রদায় ॥  
 হরিদাস বিক্রমাস রাঘব বাঁহা গায় ॥

মাদক বাসুদেব আর দুই সহোদর ।  
 নৃত্য করেন তাঁহা পণ্ডিত বুদ্ধেশ্বর ॥  
 কুলিনগ্রামের এক কীর্তনীয়া সমাজ ।  
 তাঁহা নৃত্য করে রামানন্দ সত্যরাজ ॥  
 শান্তিপুত্র-আচার্যের এক সম্প্রদায় ।  
 অচ্যুতানন্দ নাচে তাঁহা আর সব গায় ॥  
 ধণ্ডের সম্প্রদায় করে অন্যত্র কীর্তন ।  
 নরহরি নাচে তাঁহা জীরঘুনন্দন ॥ ১২ ॥  
 জগন্নাথ আগে চারি সম্প্রদায় গায় ।  
 দুই পার্শ্বে দুই পাছে এক সম্প্রদায় ॥  
 সাত সম্প্রদায়ে বাজে চৌদ্দ মাদল ।  
 যার ধ্বনি শুনি, বৈষ্ণব হৈল পাগল ॥  
 শ্রীবৈষ্ণব-ঘটামেঘে হইল বাদল ।  
 সঙ্কীর্ণনামৃত সহ বর্ষে নেত্রজল ॥  
 ত্রিভুবন ভরি উঠে সঙ্কীর্ণন-ধ্বনি ।  
 অন্য বাদ্যাদির ধ্বনি কিছুই না শুনি ॥ ১৩ ॥  
 সাত ঠাঞি বুলে প্রভু হরি হরি বুলি ।  
 জয় জয় জগন্নাথ কহে হস্ত তুলি ॥  
 আর এক শক্তি প্রভু করিল প্রকাশ ।  
 এককালে সাত ঠাঞি করেন বিলাস ॥  
 সব কহে প্রভু আছে এই সম্প্রদায় ।  
 অন্য ঠাঞি নাহি যায় আমারে দয়ায় ॥  
 কেহো লখিতে নারে অচিন্ত্য প্রভু শক্তি ।  
 অন্তরঙ্গ ভক্ত জানে যার শুদ্ধভক্তি ॥ ১৪ ॥  
 কীর্তন দেখিয়া জগন্নাথ হরষিত ।  
 কীর্তন দেখেন রথ করিয়া সুগিত ॥  
 প্রতাপরুদ্রের হৈল পরম বিস্ময় ।  
 দেখিতে বিবশ রাজা হৈলা প্রেমময় ॥  
 কাশীমিশ্রে কহে রাজা প্রভুর মহিমা ।  
 কাশীমিশ্রে কহে শুধ ভাগ্যের নাহি সীমা १৫ ॥  
 সার্কভৌম সহ রাজ্য করে ঠারাঠারি ।  
 আর কেহো নাহি জানে চৈতন্যের চরিত্র ॥

ধারে তাঁর রূপা তারে সে কামিতে পারে  
 রূপা বিনে ত্রুকাটিক জানিতে না পারে ॥  
 রাজার তুচ্ছ সেবা দেখি প্রসন্ন-প্রভুর মন ।  
 সে প্রসাদে পাইল এই রহস্য দর্শন ॥ ১৬ ॥  
 সাক্ষাতে না দেখেই দেন, পরোক্ষে এতদধা  
 কে বুঝিতে পারে চৈতন্যের এই সায় ॥  
 সার্কভৌম কাশীমিশ্রে দুই মহাশয় ।  
 রাজারে প্রসাদ দেখি হৈলা বিস্ময় ॥  
 এইমত লীলা প্রভু করি কতকণ ।  
 আপনে গায়েন নাচে নিজ ভক্তগণ ॥ ১৭ ॥  
 কতু এক মুক্তি হয় কতু বহুমুক্তি ।  
 কার্য অনুরূপ প্রভু প্রকাশয়ে শক্তি ॥  
 লীলাবেশে নাহি প্রভুর নিজানুসন্ধান ।  
 ইচ্ছা জানি লীলাশক্তি করে সমাধান ॥  
 পূর্বে যৈছে রাগাদিলীলা কৈলা রুদ্ধাবনে  
 অলৌকিক লীলা গৌর করে ক্ষণে ক্ষণে ॥  
 ভক্তগণ অনুভবে নাহি জানে আন ।  
 শ্রীভাগবত শাস্ত্র তাহাতে প্রমাণ ॥ ১৮ ॥  
 এই মত মহাপ্রভু করি নৃত্য রঙ্গে ।  
 ভাসাইল সব লোক প্রেমের তরঙ্গে ॥  
 এইমত হৈল কৃষ্ণের রথ আরোহণ ।  
 তার আগে নাচাইল প্রভু নিজগণ ॥  
 আগে শুন জগন্নাথের গুণিচা গমন ।  
 তার আগে প্রভু যৈছে করিল নর্তন ॥  
 এইমত কীর্তন প্রভু করি কতকণ ।  
 আপন উদযোগে নাচাইল ভক্তগণ ॥ ১৯ ॥  
 আপনে নাচিতে যবে প্রভুর মন হৈল ।  
 সাত সম্প্রদায় তবে একত্র করিল ॥  
 শ্রীবাস রামাই রঘু গোবিন্দ মুকুন্দ ।  
 হরিদাস গোবিন্দানন্দ মাধব গোবিন্দ ॥  
 উদ্ধণ নৃত্যে যবে প্রভুর হৈল মন ।  
 স্বরূপের সঙ্গে বিল এই সব জন ॥

এই দশ জন প্রভুর সঙ্গে বীর খার ।  
 আর সঙ্গদার চারিদিকে রহি গার ॥  
 দণ্ডবৎ করি প্রভু বুড়ি দুই হাত ।  
 উর্ধ্বমুখে স্তুতি করে দেখি জগন্নাথ ॥ ২০ ॥

তথাহি ব্রহ্মভারতে শাস্তিপর্বণি—  
 নমো ব্রহ্মণ্যদেবার গোত্রাঙ্গপহিতার চ ।  
 অগস্তিতার কৃষ্ণায় গোবিন্দ্যার নয়োনমঃ ॥ ২ ॥

ব্রহ্মণ্যদেবার ( ব্রহ্মণ্যান্য পূজার ) গো-  
 ব্রাহ্মপহিতার চ নমঃ, অগস্তিতার কৃষ্ণায় গোবিন্দ্যার  
 নমঃ নমঃ ॥ ২ ॥

যিনি ব্রহ্মণ্যগণের পূজ্য, গো-ব্রাহ্ম-  
 গণের হিতকারী, জগতের কল্যাণদায়ক,  
 গোগণের পালক, সেই যশোদানন্দন  
 শ্রীকৃষ্ণকে নমস্কার ॥ ২ ॥

তথাহি পদ্যাবল্যাম্—  
 জয়তি জয়তি দেবো দেবকীন্দনোহসৌ  
 জয়তি জয়তি কৃষ্ণো বৃষ্ণিবংশ প্রদীপঃ ।  
 জয়তি জয়তি মেঘশ্রামলাঃ কোমলাঙ্গো  
 জয়তি জয়তি পৃথ্বীভারনামো মুকুন্দঃ ॥ ৩ ॥

অসৌ দেবকীন্দনঃ দেবঃ জয়তি জয়তি,  
 বৃষ্ণিবংশ-প্রদীপঃ ( বৃষ্ণীনাং গোপানাং যদুনাং চ  
 বংশং প্রদীপয়তি সমুজ্জলয়তি যঃ সঃ ) কৃষ্ণঃ জয়তি  
 জয়তি । মেঘশ্রামলাঃ ( নবজলধরবৎ শ্রামলাঃ  
 যন্ত সঃ ) কোমলাঙ্গঃ ( কোমলং যুহুস্পর্শম্ অঙ্গং  
 যন্ত সঃ ) জয়তি জয়তি পৃথ্বীভারনাথঃ মুকুন্দঃ  
 জয়তি জয়তি ॥ ৩ ॥

দেবকীন্দন দেব জয়যুক্ত হউন,  
 বৃষ্ণিকুলের উজ্জ্বলকারি শ্রীকৃষ্ণের জয়  
 হউক, নবজলধর সদৃশ শ্রামল এবং  
 কোমলাঙ্গ শ্রীকৃষ্ণের জয় হউক, ভূতার-  
 হারী মুকুন্দ জয়যুক্ত হউন ॥ ৩ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ব্রহ্মসংহিতায়  
 চতুর্বিংশ অঙ্কে—

অয়তি জননিবাসো দেবকীন্দন্যবাণো  
 বহুবরপরিষৎ ঐশ্ব-র্ঘ্যেতিরত্নধর্মম্ ।  
 স্থিরচরবৃজিনয়ঃ স্থম্বিতশ্রীমুখেন  
 ব্রহ্মপুরবনিতানাং বর্ধনন্ কামদেবম্ ॥ ৪ ॥

জননিবাসঃ ( জনেযু তদীয়েষু অন্তরালেযু বাবব-  
 গোপাদিযু সাক্ষারিবাসঃ অস্তেযু তৎসু স্তিরূপঃ যন্ত  
 সঃ ) দেবকীন্দন্যবানঃ ( দেবক্যাং জন্ম জননলীলাসু-  
 করণেন প্রোহুর্ভাবঃ বানঃ তৎস্বভূতংসু কথান তু ছল-  
 লাত্যাদি রূপো যন্ত ) বধা দেবক্যাং জন্মনো বানঃ  
 খ্যাতিঃ ‘নন্দম্বাঙ্গুজ উৎপন্ন’ ইত্যত্র ব্যাখ্যাতরীত্যা  
 তু শ্রীযশোধারামপি তর্ক্য জন্ম যন্তেতি) বহুবরপরিষৎ  
 ( বহুবরাঃ ক্ষত্রিয়াঃ গোপাঃ চ পরিষৎ সত্য রূপা  
 যন্ত সঃ ) ঐশ্ব-র্ঘ্যেতিঃ অধর্মম্ অস্তন্ ( দুর্নীকুর্কন্ )  
 স্থিরচরবৃজিনয়ঃ স্থিরচরাণাম্ অন্তরলানাং অবয়োগ-  
 দুঃখহস্তা বাহিরলানাং সংসারহস্তাপি সন্ ) স্থম্বিত-  
 শ্রীমুখেন ( শোভনং স্মিতং তদুপলক্ষিতং প্রসাদ-  
 বিলাসাদিকং যত্র তেন স্তভাবত এব শ্রীমুখেন  
 মুখেন এব ) ব্রহ্মপুরবনিতানাং ( প্রাধান্ততঃ  
 প্রথমোক্তানাং ব্রহ্মবনিতানাং তদন্তরলানাং পুর-  
 বনিতানাং জনিতাত্যর্থাৎস্বর্গাণাং তাসাং যোষিতাং  
 যঃ ) কামদেবঃ ( কামঃ স এক দীর্ঘতি পরমপ্রেম-  
 রূপত্বাৎ সর্বভোহপি বিরাজতি তৎ ) বর্ধনন্  
 ( সঠৈদেবোদীপয়ন্ ) অয়তি ( পরিকটৈঃ সহ তাবৃশ-  
 বিলাসাদিবিশিষ্টৌ স্বজ্ঞে পুরধরে চ সখা সর্বোৎ-  
 কর্ণেণ বিরাজত এব হিতম্ ) ॥ ৪ ॥

যিনি যাদব ও গোপগণের সাক্ষাৎ  
 সঙ্গকে বাস করেন, দেবকীতে বাঁহার  
 জন্ম খ্যাতি হইয়াছে এবং যশোদাতে  
 বাঁহার জন্ম সিদ্ধান্তিত হয়, বহুবর অর্থাৎ  
 ক্ষত্রিয় এবং গোপগণ বাঁহার সত্য স্বরূপ,  
 যিনি নিজ বাহু স্বরূপ ভক্ত দ্বারা জগতের  
 অধর্মকে বিনাশ করতঃ অন্তরত্ন অস্তরের  
 সবিরোগরূপ দুঃখ এবং বহিরকোর সংসার-  
 নাশ করিতেছেন, শোভনসমিত মুখ

শ্রীমুখ অনুরাগবতী ব্রজবধু ও পুণ্ডরীক  
গণের প্রেমরূপ কামের সর্বদা উদ্দীপন  
করতঃ শ্রীকৃষ্ণ হারকা, মধুরা ও হৃন্দাধনে  
নিত্য বিরাজ করিতেছেন ॥ ৪ ॥

তথাহি পদ্যাবল্যাং যিসংগতাস্থতবচনম্—  
নাহং বিশ্রো ন চ মরপতির্নাপি বৈশ্রো ন শূদ্রো  
নাহং বর্ণী ন চ গৃহপতির্নো বনস্থো যতির্বা ।  
কিন্তু শ্রোগ্যনিখিলপরমানন্দপূর্ণামৃতাক্ষে-  
র্গোপীতর্ভুঃ পদকমলরো-দাসদাসানুদাসঃ ॥৫॥

অহং ন বিশ্রোঃ ন চ মরপতিঃ ( কত্রিয়ভাতিঃ )  
নাপি বৈশ্রোঃ ন শূদ্রঃ অহং ন বর্ণী ( ব্রহ্মচারী ) ন  
চ গৃহপতিঃ ( গৃহস্থঃ ) ন বনস্থঃ ( বানপ্রস্থঃ ) বা  
যতিঃ । কিন্তু শ্রোগ্যনিখিলপরমানন্দপূর্ণামৃতাক্ষেঃ  
( প্রভূতভরঃ উদ্যান উদয়মুৎকর্ষন আবির্করন যো  
নিখিলপরমানন্দঃ ন এষ সর্বানন্দকরত্বাৎ পূর্ণা-  
মৃতাক্ষিঃ তস্য ) গোপীতর্ভুঃ পদকমলরোঃ দাস-  
দাসানুদাসঃ ( শ্রীকৃষ্ণ যো দাসাঃ তেবাং দাসাঃ  
তেষামপি অহং অহুদাসঃ হীনবাসোহস্মি । এতন্তু  
সর্বং মৈন্যোনেবোক্তং বস্তুতত্ত কৃষ্ণদাসোহস্মীতি  
তাৎপর্যম্ ) ॥ ৫ ॥

আমি ব্রাহ্মণ নহি, ক্ষত্রিয় নহি, বৈশ্য  
নহি, শূদ্র নহি, গৃহস্থ নহি, বনবাসী নহি,  
ব্রহ্মচারী নহি, সম্যাসীও নহি, কিন্তু নিখিল-  
পরমানন্দ-পূর্ণামৃতসমুদ্ররূপ শ্রীগোপী-  
নাথ শ্রীকৃষ্ণের চরণকমলের দাসগণের  
দাসানুদাস ॥ ৫ ॥

এত পঢ়ি পুসরপি করিলা প্রণাম ।  
যোড়হাতে ভক্তরূপ বন্দে ভগবান ।  
উছও বুজের প্রভু করিয়া ছকার ।  
চকু জমি, জার মৈছে অলপত আকার ।  
সুতো প্রভুহ বাধা ধীরা পড়ু পবিত্রল ।  
সুখের অধি পেল করে উদয়ন ॥১১॥

তত্বে বৈ পুনাকাজ বন্দ্য বৈবর্ণ্য  
নানা ভাবে বিবশতা পূর্ব হর দৈর্য ।  
আছাড় খাইয়া পড়ি তুমি গড়ি যার ।  
সুবর্ণ পর্ত্ত যেন কুমিতে সোটার ॥২২॥  
নিত্যানন্দ প্রভু দুই হস্ত প্রসারিয়া ।  
প্রভুকে ধরিতে বলে আশে পাশে ধারা ।  
প্রভু পাছে বলে আচার্য করিয়া ছকার ।  
হরিদাস হরিদেবাল বোলে বার বার ।  
লোক নিবারিতে হৈল তিন মণ্ডল ।  
প্রথম মণ্ডল নিত্যানন্দ মহাবল ॥  
কানীশ্বর গোবিন্দাদি যত ভক্তগণ ।  
হাতাছাতি করি হৈল দ্বিতীয়াবরণ ॥  
বাহিরে প্রতাপরুদ্র লৈয়া পাত্রগণ ।  
মণ্ডলী হইয়া করে লোক নিবারণ ॥  
হরিচন্দনের কঙ্কে হস্তাবলম্বিয়া ।  
প্রভুর নৃত্য দেখে রাজা আবিষ্ট হইয়া ॥২৩॥  
হেনকালে শ্রীনিবাস প্রেমাবিষ্ট মন ।  
রাজার আগে রহি দেখে প্রভুর নর্তন ॥  
রাজার আগে হরিচন্দন দেখি শ্রীনিবাস ।  
হস্তে তারে স্পর্শি কহে হও এক পাশ ॥  
নৃত্যাবেশে শ্রীনিবাস কিছুই না জানে ।  
বার বার ঠেলে তার জোড় হৈল মনে ।  
চাপড় মাড়িয়া তারে কৈল নিবারণ ।  
চাপড় খাইয়া ক্রুদ্ধ হৈলা সে হরিচন্দন ॥  
ক্রুদ্ধ হয় তারে কিছু চাহে বলিবারে ।  
আপনে প্রতাপরুদ্র নিবারিল তারে ॥২৪॥  
ভাগ্যবানু তুমি ইহার হস্তস্পর্শ পাইলা ।  
আমার ভাগ্যে নাহি, তুমি কৃতার্থ হইলা ॥  
প্রভুর নৃত্য দেখি লোকের হৈল চমৎকার ।  
অন্য আত্ম, অপরাধের আনন্দ অপার ॥  
রথ স্থির করি আপনোই করে গমন ।  
অনিবিনেয়ে করে নৃত্য করণ ॥

মৃত্যু বন্যাসের হৃদয়ে উল্লাস ।  
 মৃত্যু দেখি দুই জনার জীমুখে হৈল হাস ॥২৫॥  
 উদগু নৃত্যে প্রভুর স্নেহক বিকার ।  
 অষ্ট সাধিক ভাবেল্লয় হয় সমকাল ॥  
 মাংস ত্রণ সহ যৌমরুদ্র পুলকিত ।  
 শিমুলির বৃক্ষ যেন কটকে বেষ্টিত ॥২৬॥  
 একেক দণ্ডের কম্প দেখি আগে ভয় ।  
 লোক জানে দত্ত সব খসিয়া পড়য় ॥  
 সর্বাঙ্গে প্রবেশ ছুটে তাতে রক্তোক্ষাম ।  
 জঙ্গ গগ জঙ্গ গগ গগাদ বচন ॥  
 জলযন্ত্র ধারা যেন বহে অঞ্জলল ।  
 আশ পাশ লোক যত ভিজিল সকল ॥  
 দেহকান্তি গৌর কভু দেখিয়ে অরুণ ।  
 কভু কান্তি দেখি যেন মল্লিকা পুষ্প সম ॥২৭॥  
 কভু স্তম্ব কভু প্রভু ভূমিতে পড়য় ।  
 শুককান্ঠ সম হস্ত পাদ না চলয় ॥  
 কভু ভূমি পড়ে, কভু হয় স্বাসহীন ।  
 বাহা দেখি ভক্তগণের হয় প্রাণ-ক্ষীণ ॥  
 কভু নেত্র-নাসাজল মুখে পড়ে ফেন ।  
 অমৃতের ধারা চক্ষু-বিন্দু বহে যেন ॥২৮॥  
 সেই ফেন লইয়া শুভানন্দ কৈল পান ।  
 কৃষ্ণপ্রোমে মত্ত তেঁহো বড় ভাগ্যবান ॥  
 এইমত উদগু নৃত্য করি কতক্ষণ ।  
 ভাব বিশেষে প্রভুর প্রবেশিল মন ॥  
 উদগু নৃত্য ছাড়ি স্বরূপে অজ্ঞা দিল ।  
 হৃদয় জানিয়া স্বরূপ পাইতে লাগিল ॥২৯॥

তথাহি পদং ।

সেই । সেই ত পরাণ নথ পাইল ।  
 বাহা শাস্তি মনদহনে বুরি পেল ॥৩০॥  
 এই কৃষ্ণ সার উদ গার দাসের ॥  
 আনন্দে মত্ত হইয়া করেন কথন ॥

দীরে ধীরে জগন্নাথ করিলা মনন ।  
 আগে কৃত্য করি চলে শরীর নন্দন ॥  
 জগন্নাথে নেত্র দিয়া সবে গায় নাচে ।  
 কীর্তনিয়া সহ প্রভু চলে পাছে পাছে ॥  
 জগন্নাথে ময় প্রভুর নয়ন হৃদয় ।  
 শ্রীহৃদযুগে করে গীতের অভিনয় ॥ ৩ ॥  
 গৌর বড়ি আগে না যায় শ্রাম হর শ্বিরে  
 গৌর আগে যায় শ্রাম তলে ধীরে ধীরে ॥  
 এইমত গৌরশ্রাম করে ঠেলাঠেলি ।  
 সরথ শ্রামেরে রাখে গৌর মহাবলী ॥  
 নাচিতে নাচিতে প্রভুর হৈল ভাবাসর ॥  
 হস্ত তুলি লোক পড়ে করি উচ্চৈঃস্বর ॥৩২॥

তথাহি মধ্যলীলায় প্রথমে বটলোকবৃত্তং  
 কাব্যপ্রকাশে কতশিলাসিকারায়ঃ বচনম্—  
 যঃ কোমরহরঃ স এব হি বরুণা এব চৈত্রকপা-  
 ত্তে চৌম্বলিতমালতীমুরত্তরঃ শ্রৌষ্ঠাঃ কদম্বানিলাঃ  
 সা চৈবানি তথাপি তত্র সুরতযাপারলীলাবিধৌ  
 রেবারোধনি বেতসীতকতলে চেতঃ সযুৎকঠতে ॥৬॥  
 এই শ্লোক মহাপ্রভু পড়ে বারবার ।  
 স্বরূপ বিনে কেহ অর্থ না জানে ইহার ॥  
 এই শ্লোকের অর্থ পূর্বে করিয়াছি ব্যাখ্যান  
 শ্লোকের ভাবার্থ করি সংক্ষেপ আখ্যান ॥৩৩॥  
 পূর্বে যেন কুরুক্ষেত্রে সব গোপীগণি ।  
 কৃষ্ণের দর্শন পাঞা আনন্দিত মন ॥  
 জগন্নাথ দেখি প্রভুর সে ভাব উঠিল ।  
 সেই ভাবাবিষ্ট হৈয়া ধূয়া গাওরাইল ॥৩৪॥  
 অবশেষে রাখাক্ষকে কৈলা নিবেদন ।  
 সেই ভূমি সেই আমি সে নবসঙ্গম ॥  
 তথাপি আমার মন হরে বৃন্দাবন ॥  
 বৃন্দাবনে উদয় করাহ আপন চরণ ৩৫ ॥  
 কিহা শোকারসর ছাড়ি যোজন সখ্যবিন  
 তাঁহা পুকারিয়া কুরি বিকল হৃদি ॥

এইহা রাজবেশ সব সঙ্গে কজিয়গণ ।  
 তাঁহা গোপগণ সঙ্গে মুরলীবদন ।  
 ব্রজে তোমার সঙ্গে সেই সুখ আশ্বাদন ।  
 সে সুখ গমুজের এইহা নাহি এক কণ ॥৩৬॥  
 অমা লঞা পুনঃ লীলা কর রুন্দাবনে ।  
 তবে আমার মনোবাঞ্ছা হয়ত পুরণে ॥  
 ভাগবতে আছে এই রাধিকাবচন ।  
 পূর্বে তাহা সূত্র মধ্যে করিয়াছি বর্ণন ॥  
 সেই ভাবাবেশে প্রভু পড়ে এই শ্লোক ।  
 শ্লোকের যে অর্থ কেহ নাহি বুঝে লোক ॥  
 স্বরূপগোসাঞি জানেন না কহে অর্থ তার ॥  
 শ্রীকৃষ্ণগোসাঞি কৈল সে অর্থ প্রচার ॥  
 স্বরূপ সঙ্গে বার অর্থ করে আশ্বাদন ।  
 নৃত্যমধ্যে সেই শ্লোক করেন পঠন ॥৩৭॥

তথাহি মধ্যলীলায় প্রথমে অষ্টমশ্লোকখুতঃ  
 শ্রীময়্যগবতবচনম্ —

আহুত তে নলিনাত পদার বিলং  
 যোগেশ্বরৈর্হৃদি বিচিত্ত্যমগাথোদৈঃ ।  
 সংসারকূপপতিতোত্তরণাবলম্বং  
 গেহং জ্বামপি মনস্বাদিয়াং সদা নঃ ॥ ৭ ॥

অস্যার্থঃ । যথা রাগ ॥

অন্যের যে অন্য মন, আমার মন রুন্দাবন,  
 মনে বনে এক করি জানি ।  
 তাহা তোমার পদদ্বয়, করাহ যদি উদয়,  
 তবে তোমার পূর্ণ রূপা মানি ॥৩৮॥  
 প্রাণনাথ শুন মোর সত্য নিবেদন ।  
 ব্রজ আমার সদন, তাহাতে তোমার সঙ্গম,  
 না পাইলে না রহে জীবন ॥৩৯॥  
 পূর্বে উক্তব-দ্বারে, এবে সাক্ষাৎ আগারে,  
 যোগ জানের কহিলে উপায় ।  
 তুমি বিদক রূপাময় জান আমার হৃদয়,  
 আনন্দ এবে করিতে না বুঝার ॥৪০॥

চিত্তকাচিত্তোমা হৈতে, বিবরচা হিলাগাইতে,  
 বহু করি নারি কাড়িবারে ।  
 তারে ধ্যানশিক্ষা কর, লোকহাসাইয়া সার,  
 স্থানাস্থান না কর বিচারে ॥৪১॥  
 নহে গোপী যোগেশ্বর, তোমার পদকমল,  
 ধ্যান করি পাইবে সন্তোষ ।  
 তোমার বাক্যপরিপাটী, তার মধুকুটনাটী,  
 শুন গোপীর বাঢ়ে আর রোষ ॥৪২॥  
 দেহস্বতিনাহিয়ার, সংসারকুপকাঁহাতার,  
 তাহা হৈতে না চাহে উদ্ধার ।  
 বিবরহসমুদ্রজলে, কাম তিমিঞ্জিলে গিলে,  
 গোপীগণে লহ তার পার ॥৪৩॥  
 রুন্দাবন গোবর্দ্ধন, যমুনা পুলিন বন,  
 সেই কুঞ্জে রাসাদিক লীলা ।  
 সেই ব্রজ ব্রজজন, মাতাপিতা বক্রগণ,  
 বড় চিত্র কেমনে পাশরিল ॥৪৪॥  
 বিদক মুহু-সদাগুণ, সুশীল হিষ্ট করুণ,  
 তুমি তোমার নাহি দোষাভাস ।  
 তবে যে তোমার মন, নাহি সরে ব্রজজন,  
 সে আমার ছুঁইব'বিলস ॥৪৫॥  
 না গণি আপন দুঃখ, দেখি ব্রজেশ্বরী-মুখ,  
 ব্রজজন হৃদয় বিদরে ।  
 কিবামার ব্রজবাসী, কিবাজীয়াও ব্রজে আসি,  
 কেনে জীয়াও দুঃখ সহিবারে ॥৪৬॥  
 তোমার যে অন্যবেশ, অন্য সঙ্গ অন্য দেশ,  
 ব্রজজনে কতু নাহি ভায় ।  
 ব্রজভূমিছাড়িতেনারে, তোমার না দেখিলে সরে  
 ব্রজজনের কি হবে উপায় ॥৪৭॥  
 তুমি ব্রজের জীবন, ব্রজরাজের প্রাণধন,  
 তুমি ব্রজের সকল সম্পদ ।  
 রূপার্য তোমার মন, আসি জীয়াও ব্রজজন,  
 ব্রজে উদয় করাতু নিজ সদন ॥৪৮॥

পূনর্ধারাগাঃ ।

শুনিস্যরাধিকাবাণীঃ ব্রজপ্রেমা মনে আনি,  
 জাবে ব্যাকুলিত দেহ মন ।  
 ব্রজলোকের প্রেমশুনি, আপনাকে কী মানি  
 করে কৃষ্ণ তার আশাসন ॥৪৯॥  
 প্রাণপ্রিয়ে শুন মোর সত্য বচন ।  
 তোমাসবারশ্রমণে, বুরোঁ মুঞ্জিরাজিদিনে,  
 মোর দুঃখ না জানে কোন জন ॥৫০॥  
 ব্রজবাসী বত জন, মাতা পিতা সখাগণ,  
 সবে হয় মোর প্রাণসম ।  
 তারমধ্যে গোপীগণ, সাক্ষাৎ মোর জীবন,  
 তুমি মোর জীবনের জীবন ॥৫০॥  
 তোমাসবার প্রেমরসে, আমাকে করিলা বেশ  
 আমি তোমার অধীন কেবল ।  
 তোমাসবা ছাড়াইয়া, আমা দূরদেশে লয়া,  
 রাখিয়াছে দুর্দৈব শ্রবল ॥৫১॥  
 প্রিয়া-প্রিয়-সঙ্গহীন, প্রিয়প্রিয়া সঙ্গ বিনা,  
 নাহি জীয়ে এ সত্য প্রমাণ ।  
 মোর দশা শুনে যবে, তার এই দশা হবে,  
 এই ভয়ে ছুঁ হে রাখে প্রাণ ॥৫২॥  
 সেই সত্য প্রেমবতী, প্রেমবান্ সেই পতি,  
 বিয়োগে যে বাঞ্ছে প্রিয়হিতে ।  
 না গণে আপনার দুঃখ, বাঞ্ছে প্রিয়জনসুখ,  
 সেই দুই মিলে অচিরাতে ॥৫৩॥  
 রাখিতে তোমার জীবন, সেবিআমিনারায়ণ,  
 তার শত্ৰু আসি মিত্রি নিত্ৰি ।  
 তোমাসনে কীড়া করি, নিত্ৰিষাই বহুপুরী,  
 তাহা তুমি মান আমা স্কৃতি ॥৫৪॥  
 মোর ভাষ্যে শোবিরয়ে, তোমার বে প্রেমহরে  
 সেই প্রেম পরম প্রেম ।  
 সুকায়ী পদাশ্রয়নে, শঙ্করায় তোমাসনে,  
 প্রেমসেই আমার প্রেম ॥৫৫॥

বাদবের প্রতিপক্ষ, হুই কত কলংগণ,  
 তাহা আমি সব কৈল কর ।  
 আছে দুই চারিজন, তাহা মারি ব্রজাবন,  
 আইলাম জানিহ নিশ্চর ॥৫৬॥  
 সেই শত্রুগণ হৈতে, ব্রজজন রাখিতে,  
 রহি রাজ্যে উদাসীন হঞা ।  
 যে বা স্ত্রী পুত্র ধন, করি রাজ্য আবরণ,  
 যদুগণের সন্তোষ লাগিয়া ॥৫৭॥  
 তোমার বে প্রেমশুণে, করে আমা আকর্ষণে,  
 আনিবে আমা দিন দশ বিশে ।  
 পুনঃ আসি ব্রন্দাবনে, ব্রজবধু তোমা সনে,  
 বিলাসিব রাজিদিবসে ॥৫৮॥  
 এত তারে কহি কৃষ্ণ, ব্রজ বাইতে সত্বক,  
 এক শ্লোক পড়ি শুনাইল ।  
 সেই শ্লোকশুনি রাধা, খণ্ডিল সকল বাধা,  
 কৃষ্ণপ্রাপ্তি প্রতীত হইল ॥৫৯॥  
 তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে তৃতীয়মোক্ধতঃ  
 শ্রীমন্তাগবতবচনম্—  
 ময়ি ভক্তিহি তৃতানামমৃতধার করতে ।  
 বিষ্টা যদাসীমৎসেহো ভবতীনাং মদাধনঃ ॥৬  
 এই সব অর্থ প্রভু, স্বরূপের সনে ।  
 রাত্রি দিনে ধরে বসি করে আশ্বাদনে ॥  
 নৃত্যকালে সেই ভাবে আবিষ্ট হইয়া ।  
 শ্লোক পড়ি নাচে জগন্নাথ বদন চাঞা ॥  
 স্বরূপগোস্বামির ভাগ্য না যায় বর্ণন ।  
 প্রভুতে আবিষ্ট, যার কায় বাক্য মন ॥  
 স্বরূপের ইন্দ্রিয় প্রভু নিজে প্রিয়গণ ।  
 আবিষ্ট করিয়া করে গান আশ্বাদন ॥৬০॥  
 ভাবাবেশে প্রভু কতু তুমিতে বসিয়া ।  
 তর্কনীতে তুমি লেখে অধোমুখ হৈরা-  
 অঙ্গুষ্ঠিতে ক্ষত হবে জাগি দামোদর ।  
 ডকে নিশ্চয়ই নিদারকে প্রভু কর ॥



প্রভুর ভাবানুরূপ স্বরূপের গান ।  
 যবে যেই রস তাহা করে মৃগ্গমান্ ॥  
 শ্রীজগন্নাথের দেখি শ্রীমুখকমল ।  
 তাহার উপর সুন্দর নয়নযুগল ॥  
 সূর্য্যের কিরণে মুখ করে বল্মগল ।  
 মাল্য বস্ত্র অলঙ্কার দিব্য পরিমল ॥ ৬১ ॥  
 প্রভুর হৃদয়ে আনন্দ-সিন্ধু উখলিল ।  
 উন্মাদ বঞ্চাবায়ু তৎক্ষণে উঠিল ॥  
 আনন্দ উন্মাদে উঠে ভাবের তরঙ্গ ।  
 নানাভাব সৈন্যে উপজিল যুদ্ধরঙ্গ ॥  
 ভাববাদয় ভাবশান্তি নক্ষি শাবল্য ।  
 নঞ্চারী সাত্বিক স্থায়ী সবার প্রাবল্য ॥ ৬২ ॥  
 প্রভুর শরীর যেন শুদ্ধ হেমাচল ।  
 ভাবপুষ্প ভ্রম তাতে পুষ্পিত সকল ॥  
 দেখিতে লোকের আকর্ষয়ে চিত্ত মন ।  
 প্রেমামুক্ত রুচ্যে প্রভু সিন্ধে সর্গজন ॥  
 জগন্নাথসেবক যত রাজপাত্রগণ ।  
 যাত্ৰিক লোক নীলাচলবাণী যত জন ॥  
 প্রভুর নৃত্য প্রেম দেখি হয় চমৎকার ।  
 রুঞ্চ্যপ্রেম উপজিল হৃদয়ে সবার ॥ ৬৩ ॥  
 প্রেমের নাচে গায় লোক করে কোলাহল ।  
 প্রভুর নৃত্য দেখি যবে আনন্দে বিহ্বল ॥  
 অন্যের কা কথা জগন্নাথ হলধর ।  
 প্রভুর নৃত্য দেখি সুখে চলেন মন্থর ॥  
 কছু সুখে নৃত্যরঙ্গ দেখে রথ রাখি ।  
 যে কোতুক যে দেখিল সেইতার সাক্ষী ॥ ৬৪ ॥  
 এইমত প্রভু নৃত্য করিতে ভ্রমিতে ।  
 প্রতাপরুদ্রের আগে লাগিলা পড়িতে ॥  
 মগ্নমে প্রতাপরুদ্র প্রভুকে ধরিল ।  
 তাহারে দেখিতে প্রভুর বাহুজান হইল ॥  
 রাজা দেখি মহাপ্রভু করেন ধিকার ।  
 ছি ছি বিষয়িন্শর্ষ হইল আমার ॥

আবেশে নিত্যানন্দ না হৈলা সাবধানে ।  
 কাশীশ্বরগোবিন্দাদিআজিলাঅন্যস্থানে ॥ ৬৫ ॥  
 যদ্যপি রাজার দেখি হাড়ির সেবন ।  
 প্রথম হৈঞাছে তারে মিলিবারে মন ॥  
 তথাপি আপনগণ করিতে সাবধান ।  
 বাহে কিছু রোষণ্ডান কৈলা ভগবান ॥ ৬৬ ॥  
 প্রভুর বচনে রাজার মনে হৈল ভয় ।  
 সার্কভৌম কহে তুমি না কর সংশয় ॥  
 তোমার উপরে প্রভুর প্রথম আছে মন ।  
 তোমা লক্ষ্য করি শিখায়েন নিজগণ ॥  
 অবগর জানি আমি করিব নিবেদন ।  
 সেই কালে যাই, করিহ প্রভুর মিলন ॥  
 তবে মহাপ্রভু রথ প্রাদক্ষিণ হৈঞা ।  
 রথ পাছে যাই ঠেলে রথে মাথা দিঞা ॥  
 ঠেলিলে চলিল রথ হড় হড় করি ।  
 চৌদিকের লোক উঠে বলি হরি হরি ॥ ৬৭ ॥  
 তবে প্রভু নিজ ভক্তগণ লয়া সঙ্গে ।  
 বলভদ্র সুভদ্রা আগে নৃত্য কীরে রঙ্গে ॥  
 তাঁহা নৃত্য করি জগন্নাথ আগে আইলা ।  
 জগন্নাথ দেখি নৃত্য করিতে লাগিলা ॥  
 চলিয়া আটলা রথ বলগণ্ডি স্থানে ।  
 জগন্নাথ রথ রাখি দেখে ডাহিন বামে ॥  
 বামে বিপ্রশাসন নারিকেল বন ।  
 ডাহিনে পুষ্পোদ্যান যেন বৃন্দাবন ॥ ৬৮ ॥  
 আগে নৃত্য করে গৌর লয়া ভক্তগণ ।  
 রথ রাখি জগন্নাথ করেন দর্শন ॥  
 সেই স্থানে ভোগ লাগে আছয়ে নিয়ম ।  
 কোটি ভোগ জগন্নাথ করে আশ্বাদন ॥  
 জগন্নাথের ছোট বড় যত দাসগণ ।  
 নিজ নিজোত্তম-ভোগ করে সমর্পণ ॥  
 রাজা রাজমহিবীরন্দ পাত্র মিত্রগণ ।  
 নীলাচলবাণী যত ছোট বড় জন ॥

নানাদেশের বাত্রিক দেশী যত জন ।  
নিজ নিজ ভোগ তাঁহা কৈল সমর্পণ ॥৩৯॥  
আগে পাছে ছুই পার্শ্বে পুষ্পোদ্যান বনে  
যে যাহা পায় ভোগ লাগায় নাহিক নিয়মে  
ভোগের সময়ে লোকের মহাভিড় হৈলা  
নৃত্য ছাড়ি মহাপ্রভু উপবনে গেলা ॥  
প্রেমাবেশে মহাপ্রভু উপবন গিয়া ।  
পুষ্পোদ্যান গৃহপিণ্ডায় রহিলা পড়িয়া ॥  
নৃত্যপরিশ্রমে প্রভুর দেহে ঘন ঘর্ষ ।  
সুগন্ধ শীতল বায়ু করয়ে সেবন ॥ ৭০ ॥  
যত ভক্ত কীর্তনীয়া আনিয়া আরামে ।  
প্রতি বৃক্ষতলে সবে করিলা বিশ্রামে ॥  
এইত কহিল প্রভুর মহাসকীর্তন ।  
জগন্নাথের আগে যৈছে করিলা নর্তন ॥  
রথাত্মে মহাপ্রভুর নৃত্য বিবরণ ।  
চৈতন্যচরিতামৃত গোসাঞিকরিছেন বর্ণন ॥৭১॥

তথাহি স্তবমালায়াং প্রথমে সপ্তমশ্লোকঃ—

রথাক্রত্বারাদপিপদবি নীলাচলপতে-  
রদত্রপ্রেমোর্ধ্বক্ষুরিতনটনোল্লাসবিবশঃ ।  
সহর্ষং গায়ত্ৰিঃ পরিবৃত্ততত্ববৈষ্ণবজর্জরৈঃ ;  
স চৈতন্তঃ কিং মে পুনরপি দূশোর্ধ্বাশ্চতি পনম ॥২॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীশ্রীনন্দলালপদারবিন্দসেবি বিনোদবিহারিগোস্বামি-  
কৃতভগবতাবোধিনী ও সুবোধিনীসম্বিত রথাগেনর্জনং নাম ত্রয়োদশপরিচ্ছেদ ॥ ১৩ ॥

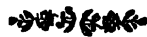
রথাক্রত্ব নীলাচলপতে: ( শ্রীজগন্নাথ )  
আরাং ( নিকটে ) অধিপদবি ( পথি ) অদত্র-  
প্রেমোর্ধ্বক্ষুরিতনটনোল্লাসবিবশঃ ( অদত্রেণ  
মহতা প্রেমোর্ধ্বিণা ক্ষুরিতো যো নটনোল্লাসঃ  
নৃত্যান্তিশয়ঃ তেন বিবশঃ ) সহর্ষং গায়ত্ৰিঃ বৈষ্ণব-  
জর্জরৈঃ পরিবৃত্ততত্বঃ সঃ চৈতন্ত্যঃ মে দূশোঃ পনং  
পুনরপি কিং যান্ততি ॥ ২ ॥

মিনি রথাক্রত্ব শ্রীজগন্নাথদেবের  
পুরোবর্তি পথে প্রেমতরঙ্গে নৃত্য করিতে  
করিতে বিবশ হইয়াছিলেন এবং সানন্দে  
মকীর্তনকারী বৈষ্ণবগণ দ্বারা পরিবৃত্ত  
দেহ, সেই শ্রীচৈতন্য কি পুনরায় আমার  
নয়নগোচর হইবেন ॥ ২ ॥

ইহা যেই শুনে সেই গৌরচন্দ্র পায় ।  
যুগুড় বিশ্বাস সহ তার প্রেমভক্তি হয় ॥  
শ্রীকৃপ রঘুনাথ পদে যার আশ ।  
চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৭২ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
রথাগেনর্জনং নাম ত্রয়োদশ-  
পরিচ্ছেদ ॥ ১৩ ॥

## চতুর্দশ পরিচ্ছেদ ।



গৌরঃ পশুমাঙ্কবৃন্দৈঃ শ্রীলক্ষ্মীবিজয়োৎসবম্ ।  
শ্ৰদ্ধা গোপীরসোল্লাসং হৃষ্টঃ প্রেমা ননর্ত সঃ ॥ ১ ॥  
গৌরঃ আঙ্কবৃন্দৈঃ ( ভক্ত্যংগৈঃ সহ ) শ্রীলক্ষ্মী-  
বিজয়োৎসবং পশুন্ গোপীরসোল্লাসং ( গোপী-

প্রেমমাধুর্যং ) শ্ৰদ্ধা হৃষ্টঃ ( সন্ ) প্রেমা সঃ  
( গৌরঃ ) ননর্ত ॥ ১ ॥  
শ্রীগৌরাঙ্গ নিজভক্তগণের শ্রীলক্ষ্মী  
বিজয়োৎসব দর্শন করিতে করিতে

গোপীগণের প্রেমমাধুর্য্য শ্রবণ করিয়া  
পরমানন্দিত হওতঃ প্রেমে মৃত্য করিয়া-  
ছিলেন ॥ ১ ॥

জয় জয় গৌরচন্দ্র শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য ।  
জয় জয় নিত্যানন্দ জয়দেবত ধন্য ॥  
জয় জয় শ্রীবাসাদি গৌরভক্তগণ ।  
জয় শ্রোতাগণ যার গৌর প্রাণধন ॥  
এইমত প্রভু আছে প্রেমের আবেশে ।  
হেনকালে প্রতাপরুদ্র করিলা প্রবেশে ॥১॥  
সার্কভোম উপদেশে ছাড়ি রাজবেশ ।  
একলা বৈষ্ণববেশে আইলা সেই দেশ ॥  
সব ভক্তের আজ্ঞা লৈল যোড়হাত হৈঞা ।  
প্রভুপাদ ধরি পড়ে সাহস করিয়া ॥  
আঁখি বুঁজি প্রভু, প্রেমে ভুমিতে শয়ন ।  
নৃপতি নৈপুণ্যে করে পাদ সম্বাহন ॥  
রাসলীলার শ্লোক পঢ়ি করয়ে স্তবন ।  
“জয়তি তেহধিকং” অধ্যায়করয়েপঠন ॥২॥  
শুনিতে শুনিতে প্রভুর সন্তোষ অপার ।  
বোল বোল বলি, উচ্চ বলে বারবার ॥  
‘তব কথামৃতং’ শ্লোক রাজা যে পঢ়িল ।  
উঠি প্রেমাবেশে প্রভু আলিঙ্গন দিল ॥  
তুমি মোরে বহু দিলে অমূল্য রতন ।  
মোর কিছু দিতে নাহি দিল আলিঙ্গন ॥  
এত বলি সেই শ্লোক পড়ে বারবার ।  
দুই জনার অঙ্গে কম্প নেত্রে জলধার ॥৩॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে একত্রিংশা-  
ধ্যায়ে নবমশ্লোকঃ—

তব কথামৃতং তপ্তজীবনং  
কবিত্তরীড়িতং কাম্বাণহং ।  
শ্রবণমঙ্গলং শ্রীমদাততং  
ভূবি গুণন্তি যে ভূমিদা জনাঃ ॥ ২ ॥

কপ্তজীবনং কবিত্তরীড়িতং কাম্বাণহং  
শ্রবণমঙ্গলং শ্রীমদাততং ভূবি গুণন্তি যে ভূমিদা জনাঃ ॥ ২ ॥

ভাগধিয়ান্ জীবন্তি মুকুপখ্যন্তর্দশাতো রক্ষ-  
তীতি তৎ) কবিত্তিঃ ( আত্মারামৈঃ) উড়িতং  
( স্ততং ) কাম্বাণহং শ্রবণমঙ্গলং ( সর্কার্থসাধকং )  
শ্রীমৎ তব কথামৃতম্ আততং ( বিবৃতং বখা ভবতি  
তথা ) ভূবি যে গুণন্তি ( নিরুপমন্তি, তে ) জনাঃ  
ভূমিদাঃ ( বহুদাতারঃ ) ॥ ২ ॥

তাপিতজনের জীবনস্বরূপ, জ্ঞানিগণ  
কর্তৃক স্তব, পাপনাশন ও শ্রবণমঙ্গল  
তোমার কথামৃত এই ভুমণ্ডলে বাঁহারা  
বিস্তৃতভাবে কীর্তন করেন, নিশ্চয়  
তাঁহারা জন্মান্তরে বহুল দান অর্থাৎ  
পুণ্য করিয়াছিলেন ॥ ২ ॥

‘ভূমিদা ভূমিদা’ বলি করে আলিঙ্গন ।  
ইহা নাহি জানে, এহো হয় কোন জন ॥  
পূর্ন সেবা দেখি তারে রূপা উপজিল ।  
অনুসন্ধান বিনে রূপা-প্রসাদ করিল ॥  
এই দেখ চৈতন্যের রূপা মহাবল ।  
তার অনুসন্ধান বিনু করয়ে সকল ॥ ৪ ॥  
প্রভু কহে কে তুমি করিলে মোর হিত ।  
মাচক্ষিতে আমি পিয়াও রুঞ্চলীলামৃত ॥  
রাজা কহে আমি তোমারদাসের অনুদাসা  
ভৃত্যের ভৃত্য কর মোরে এই মোরআশ ॥  
তবে মহাপ্রভু তারে ঐশ্বর্য্য দেখাইল ।  
কাঁহা না কহিও ইহা নিবেধ করিল ॥  
রাজা হেন জানে প্রভু না কৈল প্রকাশ ।  
অন্তরে সব জানে প্রভু বাহিরে উদাস ॥  
প্রতাপরুদ্রের ভাগ্য দেখি ভক্তগণ ।  
রাজাকে প্রশংসে সবে আনন্দিত মন ॥৫॥  
দণ্ডবৎ করি রাজা বাহিরে চলিলা ।  
যোড়হাত করি সবে ভক্তেরে বন্দিলা ॥  
মধ্যাহ্ন করিলা প্রভু লঞা ভক্তগণ ।  
বাগিনাথ প্রসাদ লৈয়া কৈল আশ্রয়ন ॥

সার্কভৌম রামানন্দ বাণীনাথে দিয়া ।  
 প্রসাদ পাঠাইল রাজা বহুত করিয়া ॥  
 বালগণি ভোগের প্রসাদ উত্তম অনন্ত ।  
 নিসকড়ি প্রসাদ আইল যার নাহি অন্ত ॥৬  
 ছেনাপানা পৈড় আত্র নারিকেল কাঠাল ।  
 নানাবিধ কমলক আর বীজতাল ॥  
 নারঙ্গ ছোলঙ্গ টাবা কমলা যীজপুর ।  
 বাদাম ছোহরা ড্রাক্সা পিণ্ডখর্জুর ॥  
 মনোহরা লাড়ু আদি শতেক প্রকার ।  
 অমৃতগুটিকা-আদি ক্ষীরসা অপার ॥  
 অমৃতমণ্ডা ছেনার বড়ী আর কপূরকুলি ।  
 সরামৃত সরভাজা আর সরপুলী ॥  
 হরিবল্লভ সেবতি কপূরমালতী ।  
 ডালিমা মরিছা লাড়ু নবাত অমৃতি ॥  
 পদ্মচিনি চন্দ্রকান্তি খাজা খণ্ডসার ।  
 বিয়ড়ী কদম্বী তিলাখাজার প্রকার ॥  
 নারঙ্গ ছোলঙ্গ আত্ররন্ধের আকার ।  
 ফল ফুল পত্রযুক্ত খণ্ডের বিকার ॥  
 দধিভুঞ্জ দধিতরু রসাল শিখরিণী ।  
 সলবণমুল্লাঙ্কুর আদা খানি খানি ॥  
 নেবুকোলি-আদি নানাপ্রকার আচার ।  
 লিখিতে না পারি প্রসাদ কতেক প্রকার ॥  
 প্রসাদে পুরিত হৈল অর্ধ উপবন ।  
 দেখিয়া সন্তোষ হৈল মহাপ্রভুর মন ॥ ৭ ॥  
 এইমত জগন্নাথ করেন ভোজন ।  
 এই মুখে মহাপ্রভুর জুড়ায় নয়ন ॥  
 কেয়া-পত্রদ্রোণি আইল বোঝা পাঁচসাত ।  
 একেকজনে দশজোনা দিল একেক পাত ॥  
 কীর্তনীয়ার পরিশ্রম জানি গৌররায় ।  
 তা সবাকে ষাণ্ডাইতে প্রভুর মন ধায় ॥  
 পাঁতি পাঁতি করি ভক্তগণ বসাইলা ।  
 পরিবেশন করিলারে আপনে লাগিলা ॥

প্রভু না খাইলে কেহ না করে ভোজন ।  
 স্বরূপগোসাঞি তবে কৈলা নিবেদন ॥  
 আপনে বৈসহ প্রভু ভোজন করিতে ।  
 তুমি না খাইলে কেহো না পারেখাইতে ॥  
 তবে মহাপ্রভু বৈসে নিজগণ লঞা ।  
 ভোজন করাইল সবাকে আকর্ষ পুরিয়া ॥  
 ভোজন করি বসিলা প্রভু করি আচমন ।  
 প্রসাদ উবরিল ষায় সহশ্রেক জন ॥ ৯ ॥  
 প্রভুর আজ্ঞায় গোবিন্দ দীনহীন জনে ।  
 ছুঃখিত কাঞ্চাল আনি করাইল ভোজনে ॥  
 কাঞ্চালের ভোজন রঙ্গ দেখে গৌরহরি ।  
 হরিবোল বলি তারে উপদেশ করি ॥  
 হরি হরি বোলে কাঞ্চাল প্রেমেভাসি যার  
 ঐছন অন্তত লীলা করে গৌররায় ॥  
 ইহা জগন্নাথের রথ চলন সময় ।  
 গৌড় সব রথ টানে আগে না চলয় ॥  
 টানিতেনাপারি গৌড়সবে রথছাড়িদিলা ।  
 পাত্রমিত্র লৈঞা রাজা ব্যগ্র হৈয়া আইলা ॥  
 মহামল্লগণ লঞা রথ চালাইতে ।  
 আপনে লাগিলা রথ না পারেটানিতে ॥১০  
 ব্যগ্র হৈঞা রাজা, আনি মত্ত হস্তিগণ ।  
 রথ চালাইতে রথে করিলা ষোটন ॥  
 মত্ত হস্তিগণ টানে যার যত বল ।  
 এক পাদ না চলে রথ হইল অচল ॥  
 গুনি মহাপ্রভু আইলা নিজগণ লঞা ।  
 মত্তহস্তী রথ টানে দেখে দাণ্ডাইঞা ॥  
 অক্লেশের ষায়ে হস্তী করয়ে চিৎকার ।  
 রথ নাহি চলে, লোকে করে হাহাকার ॥১১  
 তবে মহাপ্রভু সব হস্তী ঘুচাইল ।  
 নিজগণে রথ-কাছি টানিবারে দিল ॥  
 আপনে রথের পাছে ঠেলে মাথা দিয়া ।  
 হড় হড় করি রথ চলিলা ধাইয়া ॥

ভক্তগণ কাছিতে হাত দিবা মাত্র যায় ।  
 আপনে চলয়ে রথ টানিতে না পায় ॥  
 মহানন্দে শোক করে জয় জয় ধ্বনি ।  
 জয় জগন্নাথ বই আর নাহি শুনি ॥  
 নিমিষেকে রথ গেলা গুণ্ডিচার দ্বার ।  
 চৈতন্যপ্রাতাপ দেখি লোকে চমৎকার ॥১২  
 জয় গৌরচন্দ্র জয় শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য ।  
 এইমত কোলাহল লোকে ধন্য ধন্য ॥  
 দেখিয়া প্রতাপরুদ্র পাত্র মিত্র সঙ্গে ।  
 প্রভুর মহিমা দেখি প্রেমে ফুলে অঙ্গে ॥  
 পাণ্ডুবিজয় তবে কৈল সেবকগণে ।  
 জগন্নাথ বসিল আজি নিজ সিংহাসনে ॥  
 স্তম্ভদ্বা বলদেব সিংহাসনেতে আইলা ।  
 জগন্নাথের স্নান ভোগ হইতে লাগিলা ॥১৩  
 অঙ্গণে ত মহাপ্রভু লঞা ভক্তগণ ।  
 আনন্দে আরস্তিল প্রভু নর্দন কীর্তন ॥  
 আনন্দেতে মহাপ্রভুর প্রেম উধলিল ।  
 দেখি সব লোক প্রেমসমুদ্রে ভাসিল ॥  
 নৃত্য করি সঙ্ঘাকালে আরতি দেখিল ॥  
 আইটোটা আসি প্রভু বিশ্রাম করিল ॥  
 অষ্টৈতাদি ভক্তগণ নিমন্ত্রণ কৈল ।  
 মুখ্য মুখ্য নব জন নব দিন পাইল ॥১৪  
 আর ভক্তগণ চাতুর্মাশ্র বহু দিনে ।  
 এক এক দিনে করি পড়িল বটনে ॥  
 চারিমাগের দিন, মুখ্য ভক্ত বাঁটি নিল ।  
 আর ভক্তগণ অবসর না পাইল ॥  
 একদিন নিমন্ত্রণ করে দুই তিন মেলি ।  
 এই মত মহাপ্রভুর নিমন্ত্রণ কেলি ॥ ১৫ ॥  
 প্রাতঃকালে স্নান করি দেখি জগন্নাথ ।  
 সঙ্কীর্ণন নৃত্য করে ভক্তগণ সাথ ॥  
 কতু অষ্টৈত নাচে কতু নিত্যানন্দ ।  
 কতু বরিদাস নাচে কতু অচ্যুতানন্দ ॥

কতু বক্রেশ্বর কতু আর ভক্তগণে ।  
 ত্রিমুখ্যা কীর্তন করে গুণ্ডিচা প্রাঙ্গণে ॥  
 রুদ্দাবন আইলা কৃষ্ণ এই প্রভুর জ্ঞান ।  
 কৃষ্ণের বিরহ-ক্ষুধি হৈল অবসান ॥  
 রাধাসঙ্গে কৃষ্ণলীলা এই হৈল জ্ঞানে ।  
 এই রসে মগ্ন প্রভু হইলা আপনে ॥১৩  
 নানোদ্যানে ভক্তসঙ্গে রুদ্দাবনলীলা ।  
 ইন্দ্রদ্যুম্ন-সরোবরে করে জলখেলা ॥  
 আপনে সকল ভঞ্জে সিক্কে জল দিয়া ।  
 সব ভক্তগণ সিক্কে চৌদিকে বেঢ়িয়া ॥  
 কতু এক মণ্ডল কতু অনেক মণ্ডলে ।  
 জলমগ্নক বাদ্য বাজায়, সবে করতলে ॥  
 দুই দুই জন মেলি করে জল-রগ ।  
 কেহো হারে জিনে প্রভু করে দরশন ॥১৭  
 অষ্টৈত নিত্যানন্দ করে জল ফেলাফেলি ।  
 আচার্য্য হারিয়া পাছে করে গালাগালি ॥  
 বিদ্যানিধির জলযুদ্ধ স্বরূপের সনে ।  
 গুণ্ড দত্ত জলযুদ্ধ করে দুই জনে ॥  
 শ্রীবাগ সহিতে জল খেলে গদাধর ।  
 রাঘব-পণ্ডিত সনে খেলে বক্রেশ্বর ॥  
 মার্কভোগ সহ খেলে রামানন্দ রায় ।  
 গান্ধীর্ধ্য গেল ছুঁ হার, হৈল শিশুপ্রায় ॥১৮  
 মহাপ্রভু তাঁহা ছুঁ হার চাঞ্চল্য দেখিয়া ।  
 গোপীনাথার্চাৰ্য্যে কিছু কহেন হারিয়া ॥  
 পণ্ডিত গন্ধীর দুঁহে প্রামাণিক জন ।  
 বালাচাঞ্চল্য করে করহ বর্জন ॥  
 গোপীনাথ কহে তোমার রূপা মহাসিদ্ধ  
 উত্তলিত হয় যদি তার এক বিশু ॥  
 যেরু মন্দরপর্নত ডুবায় বধা তথা ।  
 এই দুই গওশৈল ঐহাঙ্গর কা কথা ॥ ১৯ ॥  
 শুকভক্ত খলি খাইতে লাগে গেল দার ।  
 তারে লীলাভক্ত গিরীধর রূপা তোমার

হাসি মহাপ্রভু তবে অধৈত আনিল ।  
 জলের উপরে তারে শেষশয্যা কৈল ॥  
 আপনে তাহার উপর করিল শয়ন ।  
 শেষশায়ি-লীলা প্রভু কৈল প্রকটন ॥  
 শ্রীঅধৈত নিজশক্তি প্রকট করিয়া ।  
 মহাপ্রভু লঞা বুলে জলেত ভাসিয়া ॥২০॥  
 এইমত জলক্রীড়া করি কতক্ষণ ।  
 আইটোটা আইলা প্রভু লঞা ভক্তগণ ॥  
 পুরী ভারতী-আদি মুখ্য ভক্তগণ ।  
 আচার্যের নিমন্ত্রণে করিল ভোজন ॥  
 বাণীনাথ আর যত প্রসাদ আনিল ।  
 মহাপ্রভুর গণে সেই প্রসাদ খাইল ॥  
 অপরাহ্নে আসি কৈল দর্শন নর্তন ।  
 নিশাতে উদ্যানে আসি করিল শয়ন ॥২১॥  
 আর দিন আসি কৈল ঈশ্বর দর্শন ।  
 প্রাক্ষণে নৃত্য গীত কবিলা কতক্ষণ ॥  
 ভক্তগণ সঙ্গে প্রভু উদ্যানে আসিয়া ।  
 রন্দাবন বিহার করে ভক্তগণ লঞা ॥  
 বৃক্ষবল্লি প্রফুল্লিত প্রভুর দর্শনে ।  
 ভূক পিক গায়, বহে শীতল পবনে ॥  
 প্রতি বৃক্ষতলে প্রভু করেন নর্তন ।  
 বাসুদেব দস্ত মাত্র করেন গায়ন ॥  
 এক এক বৃক্ষতলে এক এক গায় ।  
 পরম আবেশে একা নাচে গৌররায় ॥২২॥  
 তবে বক্রেশ্বরে প্রভু কহিল নাচিতে ।  
 বক্রেশ্বর নাচে প্রভু লাগিলা গাইতে ॥  
 প্রভু সঙ্গে স্বরূপাদি কীৰ্ত্তনীয়া গায় ।  
 দিগ্বিধিগ নাহি জ্ঞান প্রেমের বন্যায় ॥  
 এইমত কতক্ষণ করি বনলীলা ॥  
 নরেন্দ্র-নরেন্দ্রের গেলা করিতে জলখেলা  
 জলক্রীড়া করি পুনঃ আইলা উদ্যানে ।  
 ভোজনপীড়া কৈল তবে লঞা ভক্তগণে ॥

নব দিন শুভিচাতে রহে জগন্নাথ ।  
 মহাপ্রভু এহে লীলা করে ভক্তসাথ ॥  
 জগন্নাথবল্লভ নাম বড় পুষ্পারাম ।  
 নব দিন করে প্রভু তথাই বিশ্রাম ॥  
 হোরাপঞ্চমীর দিন আইল জানিয়া ।  
 কাশীমিশ্রে কহে রাজা সবত্র করিয়া ॥  
 কালি হোরাপঞ্চমী শ্রীলক্ষ্মীর বিজয় ।  
 এহে উৎসব কর যৈছে কভু নাহি হয় ॥২৪॥  
 মহোৎসব কর তৈছে বিশেষ সম্ভার ।  
 দেখি মহাপ্রভুর বৈছে হয় চমৎকার ॥  
 ঠাকুরের ভাণ্ডারে আর আমার ভাণ্ডারে  
 চিত্রবস্ত্র আর ছত্র কিঙ্কিণী চামরে ॥  
 ধ্বজপতাকা যণ্টাদর্পণ করহ মণ্ডন ।  
 নানাবাদ্য নৃত্য দোলা করহ সাজন ॥২৫॥  
 দ্বিগুণ করিয়া কর সব উপহার ।  
 রথযাত্রা হৈতে যেন হয় চমৎকার ॥  
 সেইত করিহ প্রভু লঞা নিজগণ ।  
 স্বচ্ছন্দে আসিয়া যৈছে করেন দর্শন ॥  
 প্রাতঃকালে মহাপ্রভু নিজগণ লঞা ।  
 জগন্নাথদর্শন কৈল সুন্দরচল যাঞা ॥  
 নীলাচল আইলা পুনঃ ভক্তগণ সঙ্গে ।  
 দেখিতে উৎকণ্ঠা হোরাপঞ্চমীর রঙ্গে ॥  
 কাশীমিশ্রে প্রভুকে বহু আদর করিয়া ।  
 গণসহ ভাল স্থানে বসাইল লঞা ॥  
 রমবিশেষ প্রভুর শুনিতে মন হৈল ।  
 ঈষৎ হাসিয়া তবে স্বরূপে পুছিল ॥ ২৬ ॥  
 যদ্যপি জগন্নাথ করে দ্বারকাবিহার ।  
 সহজ প্রকট করে পরম উদার ॥  
 তথাপি বৎসর মধ্যে হয় একবার ।  
 রন্দাবন দেখিবারে উৎকণ্ঠা অপার ॥  
 রন্দাবন সম এই উপবনগণ ।  
 তাহা দেখিবারে উৎকণ্ঠিত হয় মন ॥

বাহির হইতে করে রথবাত্রা ছল ।  
 সুন্দরাতল যায় প্রভু ছাড়ি নীলাচল ॥  
 নানাপুষ্পোদ্ভাদানে তাঁহা খেলে রাত্রিদিনে  
 লক্ষ্মীদেবী সঙ্গে নাহি লয় কি কারণে ॥২৭  
 স্বরূপ কহে শুন প্রভু কারণ ইহার ।  
 বৃন্দাবন-ক্রীড়ার লক্ষ্মীর নাহি অধিকার ॥  
 বৃন্দাবন ক্রীড়ার মহার গোপীগণ ।  
 গোপীগণে অন্যকৃষ্ণের হরিতে নারে মন ॥২৮  
 প্রভু কহে যাত্রা ছলে কৃষ্ণের গমন ।  
 সুভদ্রা আর বলদেব সঙ্গে দুই জন ॥  
 গোপীগণে লীলা যত করে উপবনে ।  
 নিগূঢ় কৃষ্ণের ভাব কেহো নাহি জানে ॥  
 অতএব প্রকট কৃষ্ণের নাহি কিছু দোষ ।  
 তবে কেন লক্ষ্মীদেবী করে এত রোষ ॥  
 স্বরূপ কহে প্রেমবতীর এইত স্বভাব ।  
 কান্তের ঐদাস্যলেশে হয় ক্রোধভাব ॥২৯  
 হেনকালে ঋচিত বাহে বিবিধ রতন ।  
 সুবর্ণের চৌদোলাতে করি আরোহণ ॥  
 ছত্র চামর ধ্বজ পতাকা তোরণ ।  
 নানাবাদ্য আগে নাচে দেবদাসীগণ ॥  
 তাহু লসম্পট কাঁরি ব্যঞ্জন চামর ।  
 সাথে যায় দাসী শত দিব্য ভূষাধর ॥  
 অলৌকিক ঐশ্বর্য সঙ্গে বহু পরিবার ।  
 ফুঙ্ক হৈঞা লক্ষ্মীদেবী আইলা সিংহদার ॥  
 শ্রীজগন্নাথের যত মুখ্য ভূত্যগণ ।  
 লক্ষ্মীদাসীগণ তারে করেন বঞ্জন ॥ ৩০ ॥  
 বাঙ্কিয়া আনিয়া পাড়ে লক্ষ্মীর চরণে ।  
 চোরে যেন দণ্ড করি লয় নানাধনে ॥  
 অচেতন রথ তাঁর করেন তাড়ন ।  
 নানামত স্নানি দেন ভণ্ডের বচন ॥ ৩১ ॥  
 লক্ষ্মীসঙ্গে দাসীগণের প্রাগলভ্য দেখিয়া ।  
 বাঙ্কি মহাপ্রভুর গণ মুখে বক্ত দিয়া ॥

দামোদর কহে এইহে মানের প্রকার ॥  
 ত্রিজগতে কাহা নাহি দেখি শুনি আর ॥  
 মানিনী নিরুৎসাহে ছাড়ে বিচুষণ ।  
 ভূমি বসি, নখে লিখে, মলিনবদন ॥  
 পূর্বে সত্যভামার শুনি এইবিধ মান ।  
 ব্রজে গোপীগণের মানরগের নিধান ॥  
 ঐহো নিজ সর্বসম্পত্তি প্রকট করিয়া ।  
 প্রিয়ের উপরে যার সৈন্য সাজাইয়া ॥৩২  
 প্রভু কহে কহ ব্রজমানের প্রকার ।  
 স্বরূপ কহে গোপীমান নদী শতধার ॥  
 নায়িকার স্বভাব প্রেমযুক্তি বহুভেদ ।  
 সেই ভেদে নানাপ্রকার মানের উদ্ভেদ ॥  
 সম্যক্ গোপীর মান না যায় কখন ।  
 এক দুই ভেদে করি দিগ্‌দরশন ॥৩৩  
 মানে কেহো হয় ধীরা কেহত অধীরা ।  
 এই তিন ভেদে কেহো হয় ধীরাধীরা ॥৩৪  
 ধীরা, কান্ত দূরে দেখি করে প্রত্যাখান ।  
 নিকট আসিতে করে আসন প্রদান ॥  
 হৃদি কোপ মুখে কহে মধুর বচন ।  
 প্রিয় আলিঙ্গিতে তারে করে আলিঙ্গন ॥  
 সরল ব্যবহারে করে মানের তোষণ ।  
 কিবা সোজ্জ্বল্যাক্যে করে প্রিয়নিরসন ॥৩৫  
 অধীরা, নিষ্ঠূর্যাক্যে করয়ে ভৎসন ।  
 কর্ণোৎপলে তাড়ে করে মালায় বঞ্জন ॥৩৬  
 ধীরাধীরা বক্র্যাক্যে করে উপহাস ।  
 কতু স্তুতি কতু নিন্দা কতু বা উদাস ॥৩৭  
 মুঞ্চা মথ্যা প্রগলভা তিন নায়িকার ভেদ ॥  
 মুঞ্চা নাহি জানে মানের বৈদগ্ধ্য বিভেদ ॥  
 মুখ আচ্ছাদিয়া করে কেবল রোদন ।  
 কান্তের বিনয় বাক্যে হয় পরসর ॥৩৮  
 মথ্যা প্রগলভা ধরে ধীরামি বিভেদ ।  
 তার মধ্যে সবায় স্বভাব তির ভেদ ॥

কেহো প্রার্থী কেহো মূঢ় কেহো হয় সগা  
স্বস্বভাবে কৃষ্ণের বাচায় রসসীমা ॥  
প্রার্থ্য মার্কব নাগ্য স্ব ভাব নির্দোষ ।  
সেই সেই স্ব ভাবে কৃষ্ণে করায় সন্তোষাঃ ২২  
একথা শুনিয়া প্রভুর আনন্দ অপার ।  
কহ কহ দামোদর কহে বার বার ॥  
দামোদর কহে কৃষ্ণ রসিকশেখর ।  
রস আন্বাদক রসময় কলেবর ॥  
প্রেমময়নপু-কৃষ্ণ ভক্তুপ্রেমগাধীন ।  
বিশুদ্ধ প্রেমরস গুণে গোপিকা প্রবীণ ॥  
গোপিকার প্রেমে নাহি রসাতান দোষ ।  
অতএব কৃষ্ণের করে পরম সন্তোষ ॥৪০॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে ত্রয়স্তিংশা-  
ধ্যায়ে ষড়্বিংশশ্লোকঃ—

এবং শশাঙ্কান্তুবিরাজিতা নিশাঃ

স সত্যকামোহমুহুরতাবলাগণঃ ।

সিবেব আশ্রয়তবরুদসৌরভঃ

সর্পাঃশরৎকাব্যকথারসপ্রয়াঃ ॥ ৩ ॥

এবম্ (উক্ত প্রাকারেণ) সত্যকামঃ (সত্য-  
সকলঃ) অমুরতাবলাগণঃ (অমুরকঃ প্রীতিযুক্তঃ  
অবলাগণঃ যস্মিন্ তাদৃশঃ) আশ্বনি (অন্তর্মনসি)  
অবরুদসৌরভঃ (অবরুদঃ সমস্ততঃ স্থাপিতাঃ  
সৌরভাঃ সুরতসম্বন্ধিনঃ তাবহাবাদয়ঃ যেন তাদৃশঃ)  
সঃ (ভগবান্) শরৎকাব্যকথারসপ্রয়াঃ (শরদি  
ভবঃ কাব্যোয়ু কথামানাঃ যেরসঃ তেষাম্ আশ্রয়-  
ভূতাঃ তাঃ তাঃ) শশাঙ্কান্তুবিরাজিতাঃ (শশাঙ্ক  
অংশুতিঃ কিরণৈঃ বিরাজিতাঃ উজ্জলীকৃতঃ)  
সর্পাঃ (এব) নিশাঃ সিবেবে ॥ ৩ ॥

সত্যসকল শ্রীকৃষ্ণ, সুরত-সম্বন্ধি-  
ভাবহাবাদি আজ্ঞাতে অবরোধ পূর্বক  
প্রীতিযুক্ত অবলাগণের সহিত উক্ত-  
প্রকারে কথ্যমান শরৎকালীন রসসকলের

আশ্রয়ভূত ও চন্দ্রকিরণে সমুজ্জ্বল রাত্রি-  
মকল উপভোগ করিয়াছিলেন ॥ ৩ ॥  
বামা এক গোপীগণ দক্ষিণা এক গণ ।  
নানাভাবে করায় কৃষ্ণে রস আন্বাদন ॥  
গোপীগণমধ্যে শ্রেষ্ঠা রাধাঠাকুরাণী ।  
নির্মল উজ্জ্বল রস প্রেমবহু-খনি ॥ ৪১ ॥  
বয়সে মধ্যমা তিঁহো স্বভাবেতে সগা ।  
গাঢ়প্রেমভাবে তিঁহো নিরন্তর বামা ॥  
বাম্য স্বভাবে মান উঠে নিরন্তর ।  
তার বাস্যে উঠে কৃষ্ণের আনন্দ সাগরঃ ৪২

তথাহি মধ্যলীলাম্ অষ্টমে অষ্টবিংশশ্লোক-  
ধৃতঃ উজ্জলনীলমণিঃবচনম্—

অহেরিব গতিঃ প্রেমঃ স্বভাবকুটীলা ভবেৎ ।

অতো হেতোরহেতোশ্চ বুনোমান উৎকৃতি ॥ ৪ ॥

এত শূনি বাঢ়ে প্রভুর আনন্দ সাগর ।

কহ কহ বলে তবে কহে দামোদর ॥

অধিকৃঢ় মহাভাব সদা রাধার প্রেম ।

বিশুদ্ধ নির্মল যেন দশবান্ হেম ॥ ৪৩ ॥

কৃষ্ণ দরশন যদি পায় আচম্বিতে ।

নানা ভাব বিভ্রমণে হয় বিভ্রমিতে ॥

অষ্টসাত্ত্বিক হর্ষাদি ব্যতিচারী আর ।

সহজ প্রেম, বিংশতি ভাব অলঙ্কার ॥৪৪॥

কিলকিঞ্চিত, কুটুমিত, বিলাস, ললিত ।

বিন্মোক মোটায়িত আর মোক্ষ্য চকিত ॥

এত ভাব ভ্রুয় ভূষিত রাধা অঙ্গ ।

দেখিয়া উছলে কৃষ্ণের সুখান্ধিতরঙ্গ ॥৪৫॥

কিলকিঞ্চিত ভাব ভ্রুয়ার শুন বিবরণ ।

যে ভ্রুয় ভূষিত রাধা চরে কৃষ্ণের মন ॥

রাধা দেখি কৃষ্ণ যদি ছুঁইতে করে মন ।

দানঘাটি পথে যবে বর্জেন গমন ॥

যবে আদি মানা করে পুষ্প উঠাইতে ।

সখী আগে চাহে যদি অঙ্গে হস্ত দিতে ॥



এই সব স্থানে কিলকিঞ্চিত উদ্ভাসম ।

প্রথমেই হর্ষ সফারী মূল কারণ ॥ ৪৬ ॥

তথাহি উজ্জলনীলমণৌ অমুভাবপ্রকরণে  
একসপ্ততিতমশ্লোকঃ—

গর্ভাভিনাষকদিতস্মিতাস্ময়াভয়ক্রুধাম্ ।

সঙ্করীকরণং হর্ষাচ্চ্যতে কিলকিঞ্চিতম্ ॥ ৫ ॥

হর্ষাৎ ( হেতোঃ ) গর্ভাভিনাষকদিতস্মিতা-  
স্ময়াভয়ক্রুধাম্ ( এতেষাং সপ্তানাং ভাবানাং )  
সঙ্করীকরণং ( মিশ্রণং যুগপৎ প্রাকট্যাং ) কিল-  
কিঞ্চিতম্ উচ্যতে ॥ ৫ ॥

হর্ষজনিত গর্ভ, অভিলাস, শুকরোদন,  
হাস্য, ক্রোধ ও ভয়, এই সকল ভাবের  
একত্র মিলনকে কিলকিঞ্চিত ভাব  
বলে ॥ ৫ ॥

আর সাত ভাব আসি সহজে মিলয় ।

অষ্ট ভাব সম্মিলনে মহাভাব হয় ॥

গর্ভ অভিলাস ভয় শুকরুদিত ।

ক্রোধ অস্ময়া সহ আর মন্দস্মিত ॥

নানাশ্বাধু অষ্টভাবে একত্র মিলন ।

যাহার আশ্বাদে তুণ্ড হয় কুব্ধমন ॥ ৪৭ ॥

দধিখণ্ড ঘৃত মধু মরিচ কপূর ।

এলাচ্যাদি মিলনে যৈছে রমাল। মধুর ॥

এই ভাবযুক্ত দেখি রাধাস্ত-নয়ন ।

সদস হইতে সুখ পার কোটী গুণ ॥ ৪৮ ॥

তথাহি উজ্জলনীলমণৌ অমুভাব প্রকরণে  
ত্রিসপ্ততিতমশ্লোকঃ—

অস্তঃস্মেরতমোজ্জনা জলকণব্যাকীর্ণপদ্মাকুরা, কিঞ্চিৎ  
পাটলিতাঞ্চনা রাসকতোৎসবিন্দু পুরঃকুঞ্চতী ।

কুঞ্চতীঃ পশুি সাধাপনমধুপবাস্তুরোরোত্তরা, রাধায়াঃ  
কিন্দাকাঙ্কিতমস্মিতা দৃষ্টিঃ সঃ বঃ ক্রিয়াৎ ॥ ৬ ॥

সামনে পশি মধুর ( মধুতঃ প্রব ) কুঞ্চায়াঃ  
বিন্দুভিঃ ( কুঞ্চতীঃ ) কুঞ্চায়াঃ ( অস্তঃ মনাস

স্মেরতমা উজ্জনা যয়াঃ সা ) জলকণব্যাকীর্ণপদ্মা-  
কুরা ( বাহিঃ অশ্রুপারিবিন্দুভিঃ ব্যাকীর্ণঃ পদ্মাকুরা  
যয়াঃ সা ) কিঞ্চিৎ পাটলিতাঞ্চনা রাসকতোৎ-  
সবিন্দু কুঞ্চতী মধুপবাস্তুরোরোত্তরা মধুরা ব্যাভুধা  
কুটীলা চ বা তারা কনীণিকা তমা উত্তরা শ্রেষ্ঠা )  
কিন্দাকাঙ্কিতত্ত্বকিনী ( কিন্দাকাঙ্কিতঃ ভাববিশেষঃ  
স্তবকয়িতুঃ স্তবকীকর্তুঃ বহিরীষৎ প্রকটয়িতুঃ  
নীলং যথাঃ সা ) দৃষ্টিঃ বঃ ( যুযাকং ) শ্রিয়ং  
( শ্রেয়সম্পত্তিং ) ক্রিয়াৎ ( করোতু ) ॥ ৬ ॥

দানঘটের পথিমধ্যে শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক  
অবরুদ্ধা শ্রীরাধার অন্তরে মন্দহসিত  
নিবন্ধন পরমোজ্জলা ও জলকণার দ্বারা  
পদ্মনকল পরিব্যাপ্তা, ক্রোধে অরুণ-  
বর্ণা, গন্ধুচিতা এবং মধুর ও কোটীল্যযুক্ত  
তারার দ্বারা অলৌকিক মৌন্দর্য্যশালিনী  
কিলকিঞ্চিত স্তবকিনী দৃষ্টি তোমাদের  
প্রেমসম্পত্তি বিধান করুন ॥ ৬ ॥

তথাহি গোবিন্দলীলাবৃত্তে নবমসর্গে অষ্টাদশ-  
শ্লোকঃ—

বাস্পব্যাকুলিতাকৃণাকলচলস্নেহং রসোল্লাসিতং  
হেলোল্লাসচলাধরং কুটিলিতক্রমুগ্ধবদ্যৎস্মিতম্ ।

লাস্তায়াঃ কিলকিঞ্চিতাঞ্চিতমসৌ বীক্ষ্যাননং সঙ্গমা-  
দানন্দং তমবাপ কোটিগুণিতং যোহভূনগীর্নোচরঃ ॥ ৭ ॥

কাস্তায়াঃ ( রাধায়াঃ নিরোপজনিত ) বাস্প-  
ব্যাকুলিতাকৃণাকলচলস্নেহং ( বাস্পঃ নয়নবারিভিঃ  
ব্যাকুলিতে অরুণং রক্তবর্ণম্ অঞ্চলং প্রাস্তভাগৌ  
যয়োঃ তথাভূতং চ চপত্বী চঞ্চলে নেত্রে যস্মিন্ তৎ )  
রসোল্লাসিতং হেলোল্লাসচলাধরং ( হেলয়া শৃঙ্খার-  
সূচক-ভাববিশেষেণ উজ্জসিতুঃ শীলমস্ত তথাভূতঃ  
চলঃ কম্পনানঃ অধরঃ যস্মিন্ তৎ ) কুটিলিত-  
ক্রমুগ্ধং ( কুটীলিকৃতং ক্রমুগ্ধং যস্মিন্ তৎ ) উগ্ধৎ-  
স্মিতং ( উগ্ধৎ উদগচ্ছৎ স্মিতং মন্দহসিতং যস্মিন্  
তৎ ) কিলকিঞ্চিতম্ আননং বীক্ষ্য অসৌ ( শ্রীকৃষ্ণঃ )  
সঙ্গমাৎ কোটিগুণিতং তম্ আনন্দম্ অবাপ যঃ

(অনন্দঃ) গীর্গোচরঃ (গিরাং গোচরঃ বিষয়ঃ) ন অভূৎ ॥ ৭ ॥

দানলীলায় শ্রীকৃষ্ণ যখন শ্রীরাধার পথরোধ করেন, তখন রোদন, রোষ ও ভয়প্রযুক্ত বাষ্পব্যাকুল অরুণপ্রাস্ত ও চঞ্চলনয়নবিশিষ্টে, গর্দভবশতঃ রসোপ্লাস-ময়, অভিলাম বশতঃ শৃঙ্গারসূচক ভাব উদয়ে চঞ্চল অপরবিশিষ্টে অশ্রুয়া বশতঃ ক্রুটিযুক্ত ও মুহূচ্চাস্তনস্থপিত, অতএব কিলকিকিতাখ্য অলঙ্কারে অলঙ্কৃত শ্রীরাধার বদন অবলোকন করিয়া সঙ্গম হইতেও কোটিগুণ অধিক আনন্দ শ্রীকৃষ্ণ লাভ করিয়াছিলেন; তাহা বাক্যের বিময় নহে ॥ ৭ ॥

এত শুনি প্রভুর হৈল আনন্দিত মন ।  
সুখানিষ্ট হৈয়া স্বরূপে কৈল আলিঙ্গন ॥  
বিলাসাদি ভাব ভয়ার কহ ত লক্ষণ ।  
যেই ভাবে রাধা হরে গোবিন্দের মন ॥  
তবে ত স্বরূপ গোসাঞি কহিতে লাগিল  
শুনি প্রভু ভক্তগণ মহাসুখ পাইল ॥  
রাধা বসি আছে কিবা বন্দাবনে যায় !  
তাহা যদি আচক্ষিতে কৃষ্ণ দেখা পায় ॥  
দেখিতই নানা ভাব হয় বিলক্ষণ ।  
যেই বৈলক্ষণের নাম বিলাস ভূষণ ॥৪৯॥

তথাহি উচ্ছন্ননীলমণৌ অমুভাবপ্রকরণে  
সপ্তমষ্টভগম্লোকঃ—

গতিস্থানাসনাদীনাং মুখনেত্রাদিকর্মণাম্ ।  
তাৎকালিকস্ত বৈশিষ্ট্যং বিলাসঃ প্রিয়সঙ্গম্ ॥ ৮ ॥

গতিস্থানাসনাদীনাং মুখনেত্রাদিকর্মণাম্ (চ)  
প্রিয়সঙ্গমঃ (প্রিয়সঙ্গজনিতং) তাৎকালিকঃ (প্রিয়-  
ভমিলনসময়োদ্ভূতং) বৈশিষ্ট্যং তু বিলাসঃ  
(উচ্যতে) ॥ ৮ ॥

গতি, স্থান, উপবেশনাদি ও মুখ-  
নেত্রাদির কর্ম্ম সকলের প্রিয়সঙ্গম-  
জনিত তাৎকালিক বৈশিষ্ট্যকে বিলাস  
বুলে ॥ ৮ ॥

লঙ্কা হর্ষ অভিলাম সঙ্গম বাগ্য ভয় ।

এত ভাব মিলি রাধা চঞ্চল করয় ॥৫০॥

তথাহি গোবিন্দলীলামৃতে নবমসর্গে একাদশ-  
ম্লোকঃ—

পুরঃ কৃষ্ণালোক্যং স্থগিতকুটীলাস্যা গতিরভূৎ  
তিরশ্চীনং কৃষ্ণাধরদরসুতং শ্রীমুখমপি ।  
চলন্তারং ফারং নয়নযুগ্মভূম্মিত্তি সা  
বিলাসাখ্যাবলঙ্করণবলিতাসীৎ প্রিয়মুদে ॥ ৯ ॥

পুরঃ (অগ্রো) কৃষ্ণালোক্যং (কৃষ্ণম্ আলোক্য)  
অস্যাঃ (শ্রীরাধায়াঃ) গতিঃ স্থগিতাকুটীলা (স্থগিতা  
কুটীলা চ) অভূৎ, শ্রীমুখম্ অপি তিরশ্চীনং (বক্রী-  
ভূতং) কৃষ্ণাধরদরসুতং (নীলাধরেণ দর ঈষৎ  
আবৃতঞ্চ অভূৎ) চলন্তারং (চলন্তীতারা যত্র তৎ)  
ফারং (বিষুতং) নয়নযুগ্মং (চ) আভূম্মং (ঈষৎ  
বক্রঞ্চ অভূৎ) ইতি সা (রাধা) প্রিয়মুদে (প্রিয়স্য  
শ্রীকৃষ্ণস্য মুদে আনন্দায়) বিলাসাখ্যাবলঙ্করণ-  
বলিতা (বিলাসনাগমেথেন শ্বেন স্বরূপভূতেন  
অলঙ্করণেন বলিতা যুতা) অসীৎ ॥ ৯ ॥

সম্মুখে শ্রীকৃষ্ণকে দর্শন করতঃ শ্রী-  
রাধার গতি স্থগিতা ও কুটীলা হইয়াছিল,  
শ্রীমুখ বক্র ও নীলবগনে ঈষদ্ আৱৃত  
হইয়াছিল, আঘূর্ণিত লোচনদ্বয় বিস্ফা-  
রিত হইয়াছিল, এইরূপে শ্রীকৃষ্ণের  
আনন্দ বিধানার্থে শ্রীরাধা বিলাস নামক  
স্বীয় অলঙ্কারে বিভূষিতা হইয়াছিলেন ॥৯  
কৃষ্ণ আগে রাধা যদি রহে দাণ্ডাইয়া ।  
তিন অঙ্গভঙ্গে রহে জা নাচাইয়া ॥  
মুখে নেত্রে করে নানা ভাবের উল্কার ।  
এই কান্তা ভাবের নাম ললিতালঙ্কার ॥৫১

তথাহি উজ্জলনীলমণৌ অমৃতভাবপ্রকরণে  
পঞ্চদশস্তিতমশ্লোকঃ—

বিত্যাসভঙ্গিরদানাং ক্রবিলাসমনোহরা ।

সুকুমারা ভবেৎ যত্র ললিতং তদুদাহৃতম্ ॥ ১০ ॥

যত্র ( ভাবে ) অদানাং সুকুমারা ( মধুরা )  
বিত্যাসভঙ্গিঃ ক্রবিলাস মনোহরা ( চ ) ভবেৎ তৎ  
ললিতং ( ভাববিশেষঃ ) উদাহৃতম্ ॥ ১০ ॥

যাহাতে ক্রবিক্ষেপের মনোহারিত্ব ও  
অঙ্গসকলের বিন্যাসভঙ্গির সুকুমারতা  
প্রকাশ পায়, তাহার নাম ললিত ॥১০॥

ললিত ভূষিত যদি রাধা দেখে কৃষ্ণ ।  
ছুঁহে ছুঁহা গিলিবারে হয়ত সতৃষ্ণ ॥ ৫২ ॥

তথাহি গোবিন্দলীলামৃতে নবমসর্গে চতুর্দশ-  
শ্লোকঃ—

হ্রিয়া তির্থাগৃহীবাচরণকটিভঙ্গীসুমধুরা  
চলচ্চিলীবল্লীদলিতরতিনাথোজ্জিতধনুঃ ।  
প্রিয়প্রমোদাসোসানিসতললিতালালিততনুঃ  
প্রিয়প্রীট্যে সাসীহৃদিতললিতালঙ্কতিযুতা ॥ ১১ ॥

হ্রিয়া ( লঙ্করা ) তির্থাগৃহীবাচরণকটিভঙ্গী-  
সুমধুরা চলচ্চিলীবল্লীদলিতরতিনাথোজ্জিতধনুঃ  
( চলন্তী চিলীক্রঃ সৈব বলী লতা তয়া দলিতঃ  
নিজ্জিতঃ রতিনাথস্য কামস্য উজ্জিতং প্রভাবাতি-  
শয়ং তদ্ব্যক্তং ধনুঃ যয়া সা ) প্রিয়প্রমোদাসো-  
নিসতললিতালালিততনুঃ ( প্রিয়স্য শ্রীকৃষ্ণস্য প্রেমঃ  
য উল্লাসঃ তেন উল্লাসিতা চাসৌ ললিতা চেতি  
তয়া ললিতা সেবিতা তনুঃ যস্যঃ সা ) সা ( রাধা )  
প্রিয়প্রীট্যে ( শ্রীকৃষ্ণস্য আনন্দস্য ) উদিতললিতা-  
লঙ্কতিযুতা ( উদিতম্ অভিব্যক্তং যং ললিতং  
ভাববিশেষং তদেব অলঙ্কারেণ যুক্তা ) আসীৎ ॥১১

যিনি লঙ্কায় ঐবাদের বক্র করতঃ  
চরণ ও কটির মধুর ভঙ্গী করিয়া চঞ্চল  
জ্বলতা দ্বারা কন্দর্পের প্রভাবময় ধনুকে  
পত্রাজিত পূর্বক প্রিয়তমের প্রেমে উল্লা-

সিতা ও ললিতা কর্তৃক সেবিতাদী  
শ্রীরাধা প্রিয় শ্রীকৃষ্ণের প্রীতি সম্পাদনার্থ  
ললিতভাবরূপ অলঙ্কারে অলঙ্কৃত হইয়া-  
ছিলেন ॥ ১১ ॥

লোভে কৃষ্ণ আসি করে কধুকাকর্ষণ ।  
অন্তরে উল্লাস বাহিরে রাধা করে নিবারণ  
বাহিরে বামতা ক্রোধ ভিতরে সুখ মন ।  
কুটমিত নাম এই ভাববিভূষণ ॥ ৫৩ ॥

তথাহি উজ্জলনীলমণৌ অমৃতভাব প্রকরণে  
ত্রিশস্তিতমশ্লোকঃ—

স্তনাধরাদিগ্রহণে হৃৎপ্রীতাবপি সজ্ঞমাৎ ।  
বহিঃ ক্রোধো ব্যথিতবৎ প্রোক্তং কুটমিতং বৃষ্টেঃ ॥১২  
স্তনাধরাদিগ্রহণে হৃৎপ্রীতৌ অপি সজ্ঞমাৎ  
ব্যথিতবৎ বহিঃ ক্রোধঃ ( ভবেৎ ) বৃষ্টেঃ ( তৎ )  
কুটমিতং প্রোক্তম্ ॥ ১২ ॥

স্তন ও অধরাদি গ্রহণে হৃদয়ে প্রীতি  
হইলেও সজ্ঞবশতঃ ব্যথিতের ন্যায় বাছে  
যে ক্রোধ প্রকাশ হয়, বুধগণ তাহাকে  
কুটমিত ভাব বলে ॥ ১২ ॥

কৃষ্ণবাঞ্ছা পূর্ণ হয় করে পাণিরোধ ।  
অন্তরে আনন্দ রাধা বাহিরে বাম্য ক্রোধ ।  
বাধা পাঞা করে যেন শুষ্ক রোদন ।  
ঈষৎ হাসিঞা করে কৃষ্ণকে ভৎসন ॥৫৪॥

তথাহি গোপালগোপালশ্লোকঃ—  
পাণিরোধমবিরোধিতবাঞ্ছং  
ভৎসনাম্ মধুরশ্রিতগর্তাঃ ।  
মাধবস্ত কুরুতে কন্থভোক-  
র্হারিশুদ্ধকরিতঞ্চ মুখেহপি ॥ ১৩ ॥

কন্থভোকঃ ( কনিকরবৎ উন্ন বস্তাঃ সা রাধা )  
মাধবস্ত অবিরোধিতবাঞ্ছং ( তৎপাণিত্যাগং কর্ত্বুং  
নাঙ্কি বাঞ্ছা যস্মিন্ তৎ ) পাণিরোধং ( নিস্রাজ  
হস্তাংশবারণং ) মধুরশ্রিতগর্তাঃ ভৎসনাঃ চ মুখে

অপি হারিত্তকরুদিতং ( কৃষ্ণময় মনঃ হর্ষুঃ শীগমত  
তথাভূতং শুক্লদিতং কপটরোদনং ) চ কুরুতে ॥১৩

করিকরবৎ উরুদেশাং বাহার সেই  
ক্রীনাধা শ্রীক্ষয় কত্বক নিজাক্ষ স্পর্শে  
বাহুয়া থাকিলেও তাঁহার পাণিরোধ  
অর্থাৎ নিজাক্ষে হস্তাধারবরণ এবং  
মধুব হাস্যগর্ভ ভৎসন ও মুখে শ্রীকৃষ্ণের  
মনোহারী কপট রোদন করিতে লাগি-  
লেন ॥ ১৩ ॥

এই মত আর সব ভাব বিভূষণ ।  
যাহাতে ভূষিত রাধা হরে কৃষ্ণ মন ॥  
অনন্ত কৃষ্ণের লীলা না যায় বর্ণন ।  
আপনে বর্ণেন যদি সহস্রবদন ॥ ৫৫ ॥ ১  
ক্রীনিবাস হাসি কহে শুন দামোদর ।  
আমার লক্ষ্মীর দেখ সম্পদ বিস্তর ॥  
রুদ্দাবন-সম্পদ কেবল ফল কিশলয় ।  
গিরিপাত্ত শিখিপিজ্জ গুঞ্জাফলময় ॥  
রুদ্দাবন দেখিবারে গেলা জগন্নাথ ।  
শুনি লক্ষ্মীদেবী মনে হৈল আসোয়াথ ॥  
এ সম্পত্তি ছাড়ি কেন গেলা রুদ্দাবন ।  
তারে হাস্ত করিতে লক্ষ্মী করিলাসাজন ৫৬  
তোমার ঠাকুর দেখ এত সম্পত্তি ছাড়ি ।  
পাত ফল ফল লোভে গেলা পুষ্পবাড়ি ॥  
এই কর্ম করি কহায় বিদম্বশিরোমণি ।  
লক্ষ্মীর অগ্রেতে নিজ প্রভু দেহ আনি ॥  
এত বলি লক্ষ্মীদেবীর সব দাসীগণ ।  
কটবস্ত্রে বান্ধি আনে প্রভুর পরিজন ॥  
লক্ষ্মীর চরণে আনি করায় প্রণতি ।  
ধনদণ্ড লয় আর করায় বিনতি ॥৫৭॥  
রথের উপরে করে দণ্ডের তাড়ন ।  
চোরপ্রায় করে জগন্নাথের ভৃত্যগণ ॥

সব ভৃত্যগণ কতে করি খোড়াহাত ।  
কালি আনি তোমার আগে দিব জগন্নাথ  
তবে লক্ষ্মী শাস্ত হৈয়া যান নিজঘর ।  
আমার লক্ষ্মীর সম্পদ বাক্য অগোচর ॥  
দুক্ষ আউটে দদি মদো তোমারগোপীগণে  
আমার ঠাকুরাণী বৈসে রত্ননিংতামনে ।  
নারদপ্রকৃতি জীবাম করে পরিহাস ।  
শুনি হাংসে মহাপ্রভুর যত নিজ দাস ॥৫৮  
প্রভু কহে শ্রীবাস তোমার নারদ স্বভাব ।  
ঐখর্যভায় তোমায় ঈশ্বরপ্রভাব ॥  
দামোদর স্বরূপ ইহৌ শুদ্ধ ব্রজবাসী ।  
ঐখর্য না জানে রহে শুদ্ধপ্রমে ভাসি ॥  
স্বরূপ কহেন শ্রীবাস শুন সাবধানে ।  
রুদ্দাবনসম্পদ তোমার নাহি পড়ে মনে ॥  
রুদ্দাবনের সাহজিক যে সম্পদ-সিদ্ধু ।  
দারকা বৈকুণ্ঠ সম্পদ তার এক িস্তু ॥১৯॥  
পবনপুরুষোত্তম স্বয়ং ভগবান্ ।  
কৃষ্ণ বাঁহা ধনী সেই রুদ্দাবন ধাম ॥  
চিন্তামণিময় ভূমি চিন্তামণি ভবন ।  
চিন্তামণিগণ দাসী চরণ-ভূষণ ॥  
কল্পবৃক্ষলতা বাঁহা সাহজিক বন ।  
পুষ্পফল বিনে কেহো না মাগে অস্ত্র ধন ॥  
অনন্ত কামধেনু বাঁহা চরে বনে বনে ।  
দুক্ষমাত্র দেন কেহো না মাগে অন্য ধনে ॥  
সহজ লোকের কথা বাঁহা দিব্য গীত ।  
সহজ গমন করে নৃত্য পরতীত ॥  
মর্কত্র জল বাঁহা অমৃতসমান ।  
চিদানন্দ জ্যোতিঃ স্বাদ্য বাঁহা মূর্তিমান্ ॥  
লক্ষ্মী জিনি গুণ বাঁহা লক্ষ্মীর সমাজ ।  
কৃষ্ণবংশী করে বাঁহা প্রিয়সখী কাজ ॥৬০॥

তথাহি ব্রহ্মসংহিতায়ঃ শকুনাধ্যায়ে দিব্যট্ট-  
শুনমোকঃ—

শ্রিয়ঃ কান্তঃ কান্তঃ পরমপুরুষঃ কল্পতরবো  
 ক্রমা ভূমিচিন্তামণিগণময়ী তোরমমৃতম্  
 কথা গানং নাট্যং গমনমপি বংশী প্রিয়সখী  
 চিদানন্দজ্যোতিঃ পরমপি তদাস্বাদ্যমপি চ ॥১৪

( যত্র পরমপুরুষঃ কান্তঃ ( একঃ ) কান্তাঃ  
 ( বহুঃ ) ) শ্রিয়ঃ ক্রমাঃ কল্পতরবঃ ভূমিঃ চিন্তামণি-  
 গণময়ী তোরম্ অমৃতং কথা গানং গমনম্ অপি  
 নাট্যং বংশী প্রিয়সখী চিদানন্দজ্যোতিঃ পরম্  
 ( প্রকাশ্যং ) অপি তদাস্বাদ্যং ( তথা তদেব তেবাং  
 ভোগ্যাং পরাংশত্বাং ) অপি চ ॥ ১৪ ॥

শ্রীমুন্দাবনে পরমপুরুষ শ্রীকৃষ্ণ কান্ত  
 ও শ্রীরাধাদি পরমরমা সকল কান্তা,  
 তথাকার রুক্মসকল, সকলফলপ্রদ কল্প-  
 রুক, ভূমি চিন্তামণিগণময়ী, ভবন সকল  
 চিন্তামণিময়, জল অমৃতময়, কথাসকল  
 দিব্যগীতময়ী, গতি বিচিত্রনৃত্যময়ী, বংশী  
 প্রিয়সখী, জ্যোতিষ্কগণ চিদানন্দময় । ১৪ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ দক্ষিণবিভাগে  
 বিভাবলহর্য্যাং ধৃতঃ বিধমল্লল্লোকঃ—

চিন্তামণিচরণভূষণসঙ্গনানাং  
 শৃঙ্গারপুষ্পতরবস্তরবঃ সুরাণাম্ ।  
 বৃন্দাবনে ব্রজধনং নমু কামধেনু-  
 বৃন্দানি চেতি সুখসিকুরহো বিভূতিঃ ॥১৫॥

বৃন্দাবনে অঙ্গনানাং চরণভূষণং চিন্তামণিঃ  
 সুরাণাং তরবঃ ( ব্রজবৃন্দাঃ ) শৃঙ্গারপুষ্পতরবঃ  
 ( শৃঙ্গার বেশরচনাট্যৈ পুষ্পতরবঃ ) কামধেনু-  
 বৃন্দানি চ ব্রজধনং ( গোধনং ) অহো বিভূতিঃ  
 ( বৃন্দাবনস্ত মহৈর্ধর্য্যাং ) সুখসিকুরঃ ॥১৫॥

শ্রীমুন্দাবনের অঙ্গনাগণের চরণভূষণ  
 চিন্তামণিময় দেবতরুসকল বসনভূষণ-  
 প্রসবকারী, কামধেনু সকলই শ্রীমুন্দা-  
 বনের ধেনু, অহো! শ্রীমুন্দাবনের  
 বিভূতি সুখসিকুময়ী ॥ ১৫ ॥

শুনি প্রেমাবেশে নৃত্য করে শ্রীনিবাস ।  
 কলকালি বাজায় করে অটু অটু হাস ॥  
 রাধার শুক্লরস প্রভু আবেশে শুনিল ।  
 সেই রগাবেশে প্রভু নৃত্য আরম্ভিল ॥  
 রগাবেশে প্রভুর নৃত্য, স্বরূপের গান ।  
 বোল বোল বলি প্রভু পাতে নিজ কাণ ॥  
 ব্রজরস গীত শুনি প্রেম উখলিল ।  
 পুরুষোত্তম গ্রাম প্রভু প্রেমে ভাগাইল ॥৩১  
 লক্ষ্মীদেবী যথাকালে গেলা নিজ ঘর ।  
 প্রভু নৃত্য করে, হৈল তৃতীয় প্রহর ॥  
 চারি সম্প্রদায় গান করি শ্রান্ত হৈল ।  
 মহাপ্রভুর প্রেমাবেশে দ্বিগুণ বাঢ়িল ॥  
 রাধা প্রেমাবেশে প্রভু হৈলা সেই মূর্তি ।  
 নিত্যানন্দ দূরে দেখি করেন প্রাণ্ডি ॥  
 নিত্যানন্দ জানিয়া প্রভুর ভাবাবেশ ।  
 নিকট না আইসে রহে কিছু দূরদেশ ॥  
 নিত্যানন্দ বিনা প্রভুকে ধরে কোন্ জন ।  
 প্রভুর আবেশ না যায় না রহে কীর্তন ॥৩২  
 ভঙ্গী করি স্বরূপ সবার শ্রম জানাইল ।  
 ভক্তগণের শ্রম দেখি প্রভুর বাহু হৈল ॥  
 সব ভক্ত লঞা প্রভু গেলা পুষ্পোদ্যানে ।  
 বিশ্রাম করিয়া কৈল সাধ্যাত্মিক স্থানে ॥  
 জগন্নাথের প্রসাদ আইল বহু উপহার ।  
 লক্ষ্মীর প্রসাদ আইল বিবিধ প্রকার ॥  
 সব লঞা নানারঙ্গে করিল ভোজন ।  
 সজ্জা স্থান করি কৈল জগন্নাথদর্শন ॥৩৩॥  
 জগন্নাথ দেখি কৈল নর্তন কীর্তন ।  
 নরেন্দ্রে জলক্রীড়া করে লৈঞা ভক্তগণ ॥  
 উদ্যানে আসিয়া করেন বন্য ভোজনে ।  
 এই মত ক্রীড়া প্রভু কৈল অষ্ট দিনে ॥  
 আর দিনে জগন্নাথের তিতর বিজয় ।  
 রথে চড়ি জগন্নাথ চলে নিজালয় ॥

পূর্ববৎ কৈল প্রভু লৈঞা ভক্তগণ ।  
 পরম আনন্দে করে কীর্তনঃনর্তন ॥৩৪॥  
 জগন্নাথের পুনঃ পাণ্ডুবিজয় হৈল ।  
 এক কোটি পট্টডোরী তাহা টুটি গেল ॥  
 পাণ্ডুবিজয়ের তুলি ফাটি ফুটি যায় ।  
 জগন্নাথের ভরে তুলি উড়িয়া পলায় ॥  
 কুশীনগ্রামী রামানন্দ সত্যরাজ খান ।  
 তারে আজ্ঞা দিল প্রভু করিয়া সন্মান ॥  
 এই পট্টডোরীর তুঙ্গি হও যজমান ।  
 প্রতিবর্ষ আনিবে ডোরী করিয়া নিশ্চয় ৩৫  
 এত বলি দিলা তারে ছিঁড়া পট্টডোরী ।  
 ইহা দেখি করিবে ডোরী অতি দৃঢ় করি ॥  
 এই পট্টডোরীতে হয় শেষের অধিষ্ঠান ।  
 দশমূর্তি ধরিবে সেই সেবে ভগবান্ ॥

ভাগ্যবান্ সত্যরাজ বসু রামানন্দ ।  
 সেবা আজ্ঞা পাঞা হৈল পরম রানন্দ ॥  
 প্রতিবর্ষ গুণ্ডিচাতে সব ভক্তসঙ্গে ।  
 পট্টডোরী লঞা আসে অতি বড় রঙ্গে ৩৬  
 তবে জগন্নাথ বাই বগিলা সিংহাসনে ।  
 মহাপ্রভু ঘর আইলা লৈয়া ভক্তগণে ॥  
 এই মত ভক্তগণে যাত্রা দেখাইল ।  
 ভক্তগণ লঞা রুম্মাবনকৈলি কৈল ॥  
 চৈতন্তপ্রভুর লীলা অনন্ত অপার ।  
 সহস্রবদনে যার নাহি পায় পার ॥  
 শ্রীকৃপ রঘুনাথ পদে যায় আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৩৭ ॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
 হোরাধর্মীষাত্রাদর্শনংনাম  
 চতুর্দশ পরিচ্ছেদ ॥১৪॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যবন্দন শ্রীশ্যামলালপদারবিন্দসেবি-  
 বিনোদবিহারিগোস্বামি কৃতাবল্লবোধিনী ও সুবোধিনী-সমবিত হোরা-

পঞ্চমীষাত্রাদর্শনংনাম চতুর্দশ পরিচ্ছেদঃ ॥ ১৫ ॥

## পঞ্চদশ পরিচ্ছেদ ।

—

সার্কভৌমগৃহে জুজন বনিন্দকমসোষকম্ ।  
 অঙ্গীকুর্ভন শ্ৰুটাং চক্রে গৌরঃ স্বাঃ ভক্তবশ্তান্ ॥  
 গৌরঃ সার্কভৌমগৃহে জুজন (সনু) বনিন্দকম্  
 অসোষকং (সার্কভৌমজামাতারঃ) অঙ্গীকুর্ভন  
 স্বাঃ (নিজাং) ভক্তবশ্তান্ শ্ৰুটাং (ব্যক্তাং বধা  
 তান্তথা) চক্রে ॥ ১ ॥

শ্রীগৌরান্দ সার্কভৌম ভট্টাচার্য্যের  
 গৃহে ভিন্দা গ্রহণ করতঃ বনিন্দক সার্ক-

ভৌম-জামাতা অসোষকে অঙ্গীকার  
 পূর্বক নিজ-ভক্তবশ্ততা গুণের আক্ষিয়ার  
 করিয়াছিলেন ॥১॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
 জয়দ্বৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তবন্দ ॥  
 জয় শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে প্রোতাগণ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত বার প্রাণধন ॥

এই মত মহাপ্রভু ভক্তগণ গঙ্গে ।  
 নীলাচলে রহি করে নৃত্য গীত রঙ্গে ॥  
 প্রথম বৎসরে জগন্নাথ দরশন ।  
 নৃত্য গীত দণ্ডবৎ প্রাণম স্তবন ॥১॥  
 উপলভোগ লাগিলে করে বাহিরে বিজয়  
 হরিদাস মিলি আইসে আপন মিলয় ॥  
 ঘরে আসি করে প্রভু নামসঙ্কীৰ্ত্তন ।  
 অদ্বৈত আগিয়া করে প্রভুর পূজন ॥২॥  
 সুগন্ধি সলিলে দেন পাদ্য আচমন ।  
 সর্দাঙ্গে লেপয়ে প্রভুর সুগন্ধি চন্দন ॥  
 গলে মালা দেয় মাথায় তুলসীগঞ্জবী ।  
 যোড়হস্তে স্তুতি করে পদে নমস্করি ॥  
 পূজাপাত্রের পুষ্প তুলসী শেষ যে আছিল ।  
 সেই সব লঞা প্রভু আচার্য্য পূজিল ॥ ৩ ॥

তথাহি—

"রাধে কৃষ্ণ রমে বিষ্ণো সীতে রাম শিবে শিব ।  
 ঘাহসি সাহসি নমোনিতাং  
 ঘোহসি সোহসি নমোহস্ত তে ॥২॥"

হে রাধে ! হে কৃষ্ণ ! হে রমে !  
 হে বিষ্ণো ! হে সীতে ! হে রাম !  
 হে শিবে । হে শিব ! তুমি যেই হও,  
 তোমাকে নমস্কার ॥ ২ ॥

যোহসি সোহসি নমোহস্ততে এই মন্ত্র পড়ে  
 মুখবাদ্য করি প্রভু হানে আচার্য্যেরে ॥  
 এই মত অন্যোন্ম্যে করে নমস্কার ।  
 প্রভুকে নিগম্ভণ আচার্য্য করে বার বার ॥  
 আচার্য্যের নিগম্ভণ আশ্চর্য্য কখন ।  
 বিস্তারি বর্ণিয়াছেন দাস বৃন্দাবন ॥  
 পুনরুক্তি ভয়ে তাহা না কৈল বর্ণন ।  
 আর ভক্তগণ প্রভুকে করে নিগম্ভণ ॥৪॥  
 কেহো ঘরভাত করে কেহো প্রসাদান্ন ।  
 এইমত বৈষ্ণবগণ করে নিগম্ভণ ॥

একেকদিন একেক ভক্ত গৃহে মহোৎসব  
 প্রভু গঙ্গে তাঁহা ভোজন করে ভক্ত সব ॥  
 চারিগাংস রহিলা গব মহাপ্রভু গঙ্গে ।  
 জগন্নাথের নানাযাত্রা দেখে মহারঙ্গে । ৫  
 এইমত নানারঙ্গে চাতুর্মাশ্র গেল।  
 কৃষ্ণজন্ম-যাত্রায় প্রভু গোপবেশ হৈলা ॥  
 কৃষ্ণজন্ম-যাত্রা দিনে নন্দমহোৎসব ।  
 গোপবেশ হৈলা প্রভু লৈয়া ভক্তগব ॥  
 দধি দুধ্ধ ভার গবে নিজ কান্ধে করি ।  
 মহোৎসব স্থানে আইলা বুলি হরি হবি ॥৬  
 কানাইখুটিয়া আছে নন্দবেশ ধরি ।  
 জগন্নাথ মাহিতী হইয়াছে ব্রজেশ্বরী ॥  
 আপনে প্রতাপরুদ্র আর মিশ্রকানী ।  
 সার্কভৌম আর পড়িছা পাত্র তুলসী ॥  
 ঐহা সব লঞা প্রভু করে নৃত্য রঙ্গ ।  
 দধি দুধ্ধ হরিদাজলে ভরে সবার অঙ্গ ॥  
 অদ্বৈত কহে গত্য কহি না করিহ কোপ ।  
 লগুড় ফিরাইতে পার তবে জানি গোপন  
 তবে লগুড় লঞা প্রভু ফিরাইতে লাগিলা  
 বার বার আকাশে তুলি লুকিয়া ধরিলা ॥  
 শিরের উপরে পৃষ্ঠে সম্মুখে দুই পাশে ।  
 পাদমধ্যে ফিরায় লগুড় দেখি লোক হাসে  
 অলাত চক্রের প্রায় লগুড় ফিরায় ।  
 দেখি সব লোক চিত্তে চমৎকার পায় ॥  
 এই মত নিত্যানন্দ ফিরায় লগুড় ।  
 কে জানিবে তাহাঁ দৌহার গোপভাবগূঢ়  
 প্রতাপরুদ্রের আজায় পড়িছা তুলসী ।  
 জগন্নাথের প্রসাদ এক বস্ত্র লঞা আসি ॥  
 বস্ত্রমূল্য বস্ত্র প্রভুর মস্তকে বান্ধিল ।  
 আচার্য্যাদি প্রভুর সব গণে পরাইল ॥  
 কানাই খুটিয়া জগন্নাথ দুই জন ।  
 আবেশে বিলাইলা ঘরে ছিল স্বত ধন ॥

দেখি নদীতরু বক নদীতরু পাইলা  
 পিতামাতা জানে বুঝবে বনফার কৈল  
 পরম আবেশ প্রভু আইলা নিজ ঘর।  
 এইমত নীলা করে গৌরাক হৃদয় ॥ ১ ॥  
 বিক্রমাদেশী মহাবিলম্বের দিনে ।  
 বানর-সৈন্য হগ, প্রভু গৌরা তক্তগণে ॥  
 হনুমারাবেশে প্রভু বৃন্দাশা লঞা ।  
 লকার গড়ে চটি যেন কেলে গড় ভাঙ্গিয়া ॥  
 কাঁহা রে রাবণা, প্রভু কহে ক্রোধাবেশে ।  
 জগন্মাতা হরে পাশ্ট মারিনু সবংশে ॥  
 গোসাঞির আবেশ দেখি লোকে চমৎকার  
 সর্জলোক জর জর বলে বারবার ॥ ১০ ॥  
 এইমত রাসবাতা আর নীপাবনী ।  
 উধানদ্বারনী যাত্রা দেখিল সকলি ॥  
 একদিন মহাপ্রভু নিত্যানন্দ লঞা ।  
 দুই ভাই বৃক্তি কৈল নিভৃতে বসিয়া ॥  
 কিবা বৃক্তি কৈল দুহে কেহো নাহি জানে ।  
 ফলে অসুমান পাছে কৈল ভক্তগণে ॥  
 তবে মহাপ্রভু সব ভক্ত বোলাইল ।  
 গৌড়দেশ বাহ সবে বিদায় করিল ॥  
 সবারে কহিল প্রভু প্রত্যক্ষ আসিয়া ।  
 গুণ্ডা কেধিয়া থাকে পাশ্বারে মিলিয়া ॥ ১১ ॥  
 আচাৰ্য্যেরে আজ্ঞা দিল করিয়া সন্মান ।  
 আচাৰ্য্যদিগেরে কবির কৃকভক্তি দান ॥  
 নিত্যানন্দে আজ্ঞা দিল বাক পৌড়দেশে ।  
 অনর্গল প্রেমভক্তি করিহ প্রকাশে ॥  
 রামরাম সত্যকব সত্যি কথোবচনে  
 হোমেরে বহুসংখ্যকি বিদ্যেজ্ঞানী সবে  
 নরো নরো আমি তোমার নিভৃতি বাইল  
 মননিকরিতী তোমার সবারে সিব ॥ ১২ ॥  
 ক্রীড়ার নিভৃতি করিহ সবারে সিব

তোমার দুহে কৈল সবারে সিব  
 তুমি দেখা পাবে আর কেহো নাহি  
 এই বস্ত্র যাত্রাকে দিহ এ সব প্রকাশ  
 নওৎ করি আমার কমাইহ অপরাধ  
 তার সেবা ছাড়ি আমি করিয়াছি সবার  
 ধর্ম নহে কৈল আমি নিজ ধর্মদান ॥ ১৩ ॥  
 তার প্রেমবশে আমি তার সেবাধর্ম ।  
 তাহা ছাড়ি করিয়াছি মাতুলের কর্ম ॥  
 বাতুল বালকের মাতা নাহি লয় দোক  
 এত জানি মাতা মোরে জানিবে সন্তোষ ।  
 কি কার্য সন্ন্যাসে মোর প্রেম নিজ জন  
 যেকালে সন্ন্যাস কৈল ছন্ন হৈল মন ॥  
 নীলাচলে আছে বৃষ্টি তাঁহার পাশ্বাতে  
 মধ্যে মধ্যে বাই তাঁর চরণ দেখিতে ॥  
 নিত্য বাই দেখি মুক্তি তাঁহার চরণে ॥  
 ক্ষুণ্ণজানে তিহো সত্য নাহি মানে ॥ ১৪ ॥  
 একদিন শাল্যর ব্যজন পাঁচ সাত ।  
 শাক মোচাঘট ডষ্ট পটোল নিষপাত ॥  
 লেখু আদা খণ্ড দধি দুধ খণ্ডসার ।  
 শালগ্রামে সর্পিণি বহু উপহার ॥  
 প্রসাদ লইয়া কোলে করেন কন্দন ॥  
 নিম্বাঞির প্রিয় মোর এ সব ব্যঞ্জন ॥  
 নিম্বাই নাহিক ঘরে কে করে ভোজন ॥  
 মোর ধ্যানেন অক্ষয়লে ডরিল নরক ॥  
 সীত্ৰ বাই বৃষ্টি সব করিল ভক্ষণ ॥  
 শূন্যপাত্র দেখে অক্ষয় করিয়া মার্জনা ॥  
 কে অর ব্যজন খাইল শূন্য কেনে পাশ  
 হেন বৃষ্টি বারগোপাল খাইলেদ অর  
 কিবা মোর মন সখার অর যৈরা  
 কিবা মোর মন আমি সত্যকব  
 কিবা আমি অরক পাশে সব



অন্ন ব্যঞ্জন পূর্ণ দেখি সকল ভাঙ্গন ।  
 দেখিয়া সংসার কিছু চমৎকার মন ॥  
 ঈশান দ্বারার পূর্ন স্থান দেখাইল ।  
 পুনরপি গোপালেন্নে অন্ন সমলিল ॥১৬॥  
 এই মত ববে করে উত্তম রন্ধন ।  
 মোরে খাওয়াইতে করে উৎকর্ষা কন্দন ॥  
 তার প্রেমে আমি মোরে করার ভোজনে ।  
 অন্তরে মানয়ে সুখ বাছে নাহি মানে ॥  
 এই বিজয়া-দশমীতে হৈল এই রীতি ।  
 তাঁহাকে পুছিঞা তাঁরে করাইছ প্রতীতি ॥  
 এতেক করিতে প্রভু বিহ্বল হইলা ।  
 লোকি বিদ্যার করিতে প্রভু ধৈর্য ধরিল ॥১৭॥  
 রাঘবপণ্ডিতে কহে বচন সরস ।  
 তব নিষ্ঠাপ্রেমে আমি হই তব বশ ॥  
 ঐহার কৃষ্ণসেবার কথা শুন সর্বজন ।  
 পরম পবিত্র সেবা অতিসকৌন্তম ॥  
 আর দ্রব্য রত শুন নারিকেলের কথা ।  
 পাঁচগুণা কড়ি নারিকেল বিকার বথা ॥  
 বাড়ীতে কত শত রুক লক্ষ লক্ষ ফল ।  
 তথাপি শুনেন বথা মিষ্ট নারিকেল ॥  
 একেক কলের মূল্য দিঞা চারি চারি পং  
 দশ কোশ হৈতে আনার করিয়া যতন ॥১৮॥  
 প্রতি দিন পাঁচ ছর ফল ছোলাইয়া ।  
 সুশীতল করিতে রাখে জলে ডুবাইয়া ॥  
 ভোগের সময়ে পুনঃ ছোলি সংকরি ।  
 রুকে মর্ষণ করে মুখ ছিন্ন করি ॥  
 রুক সেই নারিকেল জল পান করি ।  
 কতু শূন্য কল রাখে কতু জল তরি ॥  
 জলশূন্য কল দেখি পণ্ডিত হরমিত ।  
 কল ভাঙ্গি লক্ষ কৈল সংপার পুত্রিত ॥১৯॥  
 লক্ষ রসনিয়া করে রাখিরে গোত্রি ।  
 লক্ষ খাওয়া রুক করে শূন্য কাছরি ॥

কতু শূন্য কল পান্য পান্য করে শূন্যে ।  
 প্রজা বাজক পবিত্রের প্রেমসিদ্ধ ভাগে ॥  
 একদিন কল কল সংকরি করিয়া ।  
 ভোগ লাগাইতে সেবক আইল করিয়া ॥  
 অবসর নাহি হয় বিলম্ব হইল ।  
 ফল পাত্র হাতে সেবক দ্বারেরেতে রহিল ॥  
 দ্বারের উপর ভিত্তে তেহো হাত দিল ॥  
 সেই হাতে কল ছুইলা পণ্ডিত দেখিল ॥২০॥  
 পণ্ডিত কহে দ্বারে লোক করে বাতারাতে  
 তার পদধূলি উড়ি লাগে উপর ভিত্তে ॥  
 সেই ভিত্তে হাত দিরা কল পরশিলা ।  
 কৃষ্ণযোগ্য নহে কল অপবিত্র হৈলা ॥  
 এত বলি কল কেলে প্রাচীর লজিরা ।  
 ঐছে পবিত্র প্রেমসেবা জগত জিনিরা ॥  
 তবে আর নারিকেল সংস্কার করাইল ।  
 পরম পবিত্র করি ভোগ লাগাইল ॥  
 এই মত কলা আশ্র নায়েক কাঁঠাল ।  
 যাহা যাহা দূর গ্রামে শুনে আছে ভাল ॥  
 বহুমূল্য দিয়া আনে করিয়া যতন ।  
 পবিত্র সংস্কার করি করে নিবেদন ॥ ২১ ॥  
 এইমত ব্যঞ্জনের শাকমূল ফল ।  
 এইমত চিড়া জড়ুগ সন্দেশ সকল ॥  
 এইমত পিঠাপান্য কীর ওদব ।  
 পরম পবিত্র আর করে সকৌন্তম ॥  
 কাশপ্তি আদি আচার অনেক প্রকার ।  
 গন্ধ বস্ত্র অলঙ্কার সব দিব্যসার ॥  
 এইমত প্রেমসেবা করে অধুপম ।  
 যাহা দেখি সব হৌকের মুক্তির নরম ॥  
 এত বলি রাখিবেরে কৈল আনিখন ।  
 এইমত সম্মানিল লক তরুণ ॥ ২২ ॥  
 শিবানন্দ গৌর কহে করিহ সম্মান ।  
 বাহুগেহ গৌর কহে করিহ সম্মান ॥

পরের দিনে বার করে নিয়ে গিয়েছিল।  
 সেই দিনে বার করে নিয়ে গিয়েছিল।  
 গৃহস্থ হরের ইহা চাছিলে সত্যরাজ।  
 নক্ষত্র না জেনে কই তরুণ না হয়।  
 ইহার পুত্রের সারসার সব তোকা স্থানে।  
 সরথের ককা কুমি করিছ সমাধানে।  
 প্রতিবৎ আমায় সব তর্কগণ লঞা।  
 গুণ্ডচর আসিবে সবার পালন করিরা ॥২৩॥  
 কুলীনগ্রামিরে কহে সন্মান করিয়া।  
 প্রত্যক আসিবে স্বাত্রার পটু ভোরী লৈরা ॥  
 গুণ রাজধান দৈল শ্রীকৃষ্ণবিজয়।  
 তাঁহা এক বাক্য তাঁর আছে প্রেমময় ॥  
 নন্দের নন্দন কৃষ্ণ মোর প্রাণনাথ।  
 এই বাক্য বিকাইছু তার বংশের হাত ॥  
 তোমার কা কথা তোমার গ্রামের কুকুর।  
 সেহো মোর প্রিয়, অন্যজন নহে দূর ॥২৪॥  
 তবে রামানন্দ আর সত্যরাজ খান।  
 প্রভুর চরণে কিছু কৈল নিবেদন ॥  
 গৃহস্থ বিষয়ী আমি কি মোর সাধনে।  
 শ্রীমুখে আজ্ঞা কর প্রভু, নিবেদি চরণে ॥  
 প্রভু কহে বৈষ্ণবসেবা কৃষ্ণের সেবন।  
 নিরন্তর কর কৃষ্ণনাম সঙ্গীর্জন ॥  
 সত্যরাজ কহে বৈষ্ণব চিনিব কেমনে।  
 কে বৈষ্ণব কহ তার সামান্য লক্ষণে ॥২৫॥  
 প্রভু কহে বার মুখে শুনি একবার।  
 কৃষ্ণনাম পূজ্য সেই শ্রেষ্ঠ সখাকার ॥  
 এক কৃষ্ণ নামে করে সর্গপাণ ক্ষয়।  
 নববিধ ভক্তিপূর্ণ নাম হৈতে হয় ॥  
 দীক্ষা পূরুষ্য বিধি অপেক্ষা না করে।  
 দ্বিজাংশে আটগুণে সবারে উচ্চারণে।  
 আবৃত্তি করে করে সঙ্গের সঙ্গের।  
 বিদ্যাভ্যাস করে করে সঙ্গের সঙ্গের ॥

সত্যরাজ কহে—  
 আকীর্ণকভেদেবং সত্যরাজকারণে ॥  
 মাচাভালমমুদোক সুলকে বুলত মোক সিন্ধা।  
 নো দীক্ষাং নচ দীক্ষণং সহ পূরুষ্যং মন্যমিহ ॥  
 যদ্বোহং মন্যমাস্পৃগেব ফলতি শ্রীকৃষ্ণনামসখ্যে ॥

আকীর্ণকভেদেবং (আকীর্ণং কৃতং চেভ্যো বসিষ্টি  
 তেবং) সত্যরাজং অহংসং (প্রারক্যপ্রারক্যানি  
 পাণ্যং চ) উচ্চাটনং (দুরীকরণশীলং) আচাভালম  
 (চতালপর্য়াসন) অমুকলোকুললভঃ (অমুক-  
 লোকানাং বাক্যশক্তিবিশিষ্ট মনুষ্যমাত্রাণাং সুলভঃ)  
 যুক্তিপ্রিয়ঃ (বোদ্ধপ্পভেঃ) বস্তঃ (বশীকারকঃ)  
 চ (কিঞ্চ যত্রবিদ্যাধিবৎ) দীক্ষাং (তৎসমকর্তব্যং)  
 দক্ষিণাং (তট্টৈতত্তদিকার্থং) পূরুষ্যং চ মনীষ্য  
 (জীবৎ) ন ঐক্ষতে (অপেক্ষতে, সং) শ্রীকৃষ্ণ  
 নামাস্বকঃ (শ্রীকৃষ্ণেতি নাম আত্মা বরণং স্বভেতি)  
 অয়ং মন্ত্রঃ মন্যমাস্পৃগেব ফলতি (দুর্মানমানসঃ  
 পূর্ষকং প্রেমাবিজ্ঞাবয়তি) ॥ ৩ ॥

বাহা কর্তৃক স্বভাবতই আকর্ষিত হয়,  
 মহাপাতকের নাশক, বাক্যশক্তিসম্পন্ন আ-  
 চণ্ডাল সকল লোকের পক্ষে সুলভ, মোক্ষ-  
 সম্পত্তির বশীকারক, দীক্ষা-পূরুষ্য-  
 বিধান নিরক্ষিপে সেই এই শ্রীকৃষ্ণনাম-  
 রূপ মন্ত্র জিহ্বা স্পর্শমাত্র দুর্কাসনা বিনাশ  
 পূর্ষক প্রেমফল প্রদান করেন ॥ ৩ ॥

অতএব বার মুখে এক কৃষ্ণনাম।  
 সেইত বৈষ্ণব তার করিছ পরম সন্মান ॥  
 খণ্ডের মুকুন্দদাগ শ্রীরঘুনন্দন।  
 নরহরি দাঁদ মুখ্য এই তিনজন ॥  
 মুরুলদাঁদেয়ে পুছে শ্রীশচীনন্দন।  
 কুমি পিতা পুত্র তোমার কি রঘুনন্দন ॥  
 কিবা রঘুনন্দন পিতা কুমি ভাকার অক্ষয়  
 নিশ্চয় করিয়া কহ নাটক পাপের ॥

মুকুন্দ কহে রঘুনন্দন মোর পিতা হর ।  
 আমি তার পুত্র এই আমার নিশ্চয় ॥  
 আমি স্বর্গের কৃষ্ণভক্তি রঘুনন্দন বৈতে ।  
 অতএব রঘু পিতা আমার নিশ্চিত্তে ॥  
 শুনি হর্ষে কহে প্রভু করিলে নিশ্চয় ।  
 বাহা হৈতে কৃষ্ণভক্তি সেই গুরু হয় ॥  
 ভক্তের মহিমা প্রভু করিতে পার সুখ ।  
 ভক্তের মহিমা কহিতে হয় পঞ্চমুখ ॥২৮॥  
 ভক্তগণে কহে শুন মুকুন্দের প্রেম ।  
 নিগূঢ় নিশ্চল প্রেম যেন দৃঢ়হেম ॥  
 বাছে রাজবৈদ্য ইহো করে রাজসেবা ।  
 অন্তরে ক্রোধের প্রেমই হৈর জানিবে কবেবা ॥  
 একদিন স্নেহরাজার উচ্চ টঙ্কিতে ।  
 চিকিৎসার বাত কহে তাহার অগ্রেতে ॥  
 হেরকালে এক মধুরপুচ্ছের আড়ানি ।  
 রাজার শিরোপরি ধরে এক ভৃত্য আনি ॥  
 মধুরপুছ দেখি মুকুন্দ প্রেমাবিষ্ট হৈলা ।  
 অতি উচ্চ টঙ্কি হৈতে ভূমিতে পড়িলা ॥২৯॥  
 রাজার জ্ঞান রাজবৈদ্যের হইল মরণ ।  
 আপনে নামিয়া রাজা করাইল চেতন ॥  
 রাজা কহে ব্যথা তুমি পেলে কোন্ ঠাঁঞি  
 মুকুন্দ কহে অতিবড় ব্যথা নাহি পাই ॥  
 রাজা কহে মুকুন্দ তুমি পড়িলা কি লাগি ।  
 মুকুন্দ কহে মোর এক ব্যাধি আছে মৃগী ॥  
 মহাবিদগ্ধ রাজা সেই সব বাত জানে ।  
 মুকুন্দের হৈল তার মহাসিদ্ধ জানে ॥৩০॥  
 রঘুনন্দন মোর করে ক্রোধের মন্দিরে ।  
 ঘাণে পুঙ্করিণী তার বাহা খাট তীরে ॥  
 কদম্বের বৃক্ষ এক কুটে বারমানে ।  
 নিত্য দুই পুষ্প হয় কৃষ্ণ অমৃতগণে ॥  
 মুকুন্দের কহে পুনঃ মধুর রচনা  
 তোমার যে কার্য্য ধর্ম্মের উপাসনা ॥

মধুরন্দনের কথায় ক্রোধের মন্দির  
 কৃষ্ণসেবা বিনা ইহান অথায় নাহি মন ॥  
 নরহরি রহ আমার ভক্তগণ গণে ॥  
 এই তিন কার্য্য সদা কর যিসকলে ॥৩১॥  
 সার্কভৌম রিহায়াবহুলাদি দুই ভাই ।  
 দুইজনে কৃপা করি কহেন গোলাঞি ॥  
 দারুজন রূপে কৃষ্ণ একট সস্ততি ।  
 দরশন জানে করে স্বীকের মুক্তি ॥  
 দারুজ্ঞানরূপে সাক্ষাৎ শ্রীপুরুষোত্তম ।  
 ভাগীরথী সাক্ষাৎ হয় জলব্রহ্মসম ॥  
 সার্কভৌম কর দারুজ্ঞান আরাধন ।  
 বাচস্পতি কর জলব্রহ্মের সেবন ॥  
 মুরারি গুণ্ডেরে প্রভু করি আদিনন ।  
 তার ভক্তিনিষ্ঠা কহি শুন ভক্তগণ ॥  
 পূর্বে ইহানে লোভাইল বারবার ॥  
 পরম মধুর গুণ্ড ব্রজেন্দ্রকুমার ॥৩২॥  
 স্বয়ং ভগবান্ সর্ব্ব অংশী সর্বাশ্রয় ।  
 বিশুদ্ধ নিশ্চল প্রেম সর্ব্বরসময় ॥  
 বিদগ্ধ চতুর ধীর রসিকশেখর ।  
 সকল সঙ্গ গুরুন্দ রত্ন-রত্নাকর ॥  
 মধুর চরিত্র ক্রোধের মধুর বিলাস ।  
 চাতুর্য্য বৈদগ্ধ্য করে বেঁহো লীলারাস ॥৩৩॥  
 সেই কৃষ্ণ ভক্ত তুমি হও কৃষ্ণাশ্রয় ।  
 কৃষ্ণ বিবু উপাসনা মনে নাহি লয় ॥  
 এইমত বারবার শুনিয়া বচন ।  
 আমার গৌরবে কিছু কহিলে গেল মন ॥  
 আমারে কহেন আমি তোমার কিঙ্কর ।  
 তোমার আজ্ঞাকারী আমি নাহি স্বতন্ত্র ॥  
 এত বলি বর পেলা হিত্তে রাতিকালে ॥  
 রঘুনাথ ত্যাগ চিত্তি করিলা বিকসে ॥  
 কেমনে জানির রঘুনাথের চরণ ॥  
 আদিত্যকে বাস করি সবার সঙ্গ ॥৩৪॥

এই মত প্রকাশ করা কর্তব্য নয়।  
 মনের বাস্তব নাহি রাখি কেবল জাগরণে।  
 প্রাতঃকালে আমি মোর ধরিয়া চরণ।  
 কামিনীকে কামিনীতে কিছু করে নিবেদন।  
 রত্ননাথ পায়ের মুক্তি বেচিয়াছেই মাথা।  
 ছাড়িতে না পারি রাগ, মনে পাণ্ড ব্যথা।  
 জীৱত্বনাথচরণ ছাড়ি না যায়।  
 তোমার আত্মা শুধু হর কিকরের উপায়  
 তাতে মোরে এই রূপা কর দয়াময়।  
 তোমার আগে মৃত্যু হউকবাউক সংসার ৷ ৩৫  
 এত শুনি আমি মনে বড় মুখ পাইল।  
 ইহাৱে উঠাইয়া তবে আলিঙ্গন দিল।  
 সাধু সাধু গুণ তোমার স্মৃতি ভজন।  
 আমার বচনে তোমার না টলিল মন ॥  
 এইমত সেবকের স্মৃতি, চাহি প্রভু পায়।  
 প্রভু ছাড়াইলে পদ ছাড়া নাহি যায় ॥  
 তোমার ভাবমিষ্ঠা জানিবার তরে।  
 তোমাৱে আগ্রহ আমি কৈল বাৱেবাৱে ॥  
 সাক্ষাৎ হনুযানু তুমি জীৱামকিঙ্কর।  
 তুমি কেন ছাড়িবে তার চরণকমল ॥  
 সেই মুরারিগুণ এই মোর প্রাণসম।  
 ইহাৱ দৈন্যশুনি, দেখি কাটে মোর মন ॥ ৩৬  
 তবে বাসুদেবে প্রভু করি আলিঙ্গন।  
 তার গুণ কহে বৈরা সহস্র বদন ॥  
 নিজগুণ শুনি বাসুদেব লজ্জা পাঞ।  
 নিবেদন করে প্রভু-চরণে ধরিয়া ॥  
 লগৎ ডারিতে প্রভু তোমার অবতার ॥  
 মোর নিবেদন এক কর অঙ্গীকার ॥  
 করিবেক সমর্পণ প্রভু তুমি মহা দয়াময়।  
 তুমি বক কর যদি অন্যমনে হর।  
 কীৰ্ত্তন শুনে দেখি মোর মন মিলনে।  
 স্বপ্নসংহিতা পাপ প্রভু সেবক পায়েরে ॥

জীবেরাণ্য পাপা মুক্তি করি রত্নকোষ  
 সকল জীবের প্রভু হইল জীবেরাণ্য ৷ ৩৭  
 এত শুনি মহাপ্রভুৱ হিত ভাবিয়া।  
 অশ্রু কল্প স্বরূপে বলিতে লাগিয়া।  
 তোমার এই চিত্ত নহে ভূমিত প্রজ্ঞা।  
 তোমার উপরে ক্রকের সম্পূর্ণ প্রজ্ঞা।  
 ক্রক সেই সত্য করে যেই মাগে ভৃত্য।  
 ভৃত্যবাহু পূর্ণ বিনু ক্রকের নাহি অনক্রত  
 ব্রহ্মাণ্ডজীবের তুমি বাঞ্ছিলে নিস্তার।  
 বিনা পাপভোগে হবে সবার উদ্ধার।  
 অসমর্থ নহে ক্রক ধরে সর্ব বল।  
 তোমাকে বা কেনে ডুগ্ধাইবে পাপকল ॥  
 তুমি যার হিত বাঞ্ছ সে হৈল বৈষ্ণব।  
 বৈষ্ণবের পাপ ক্রক দূর করে সব ॥ ৩৮ ॥  
 তথাহি ব্রহ্মসংহিতায়াং পঞ্চমাধ্যায়ে ষষ্ঠতম  
 শ্লোকঃ—  
 বিশ্বব্রহ্মগোপমথংস্বৈরমহো স্বকর্ণ-  
 বন্ধাহুরূপফলভাজনমাতনোতি।  
 কৰ্ম্মাণি নির্দহতি কিম্ব চ তজ্জিতাজাৎ  
 গোবিন্দমহাদিপুরুষঃ তমহং তস্মি ॥ ৪৯ ॥  
 যঃ তু ইন্দ্রগোপঃ ( স্বপ্নরক্তবর্ণ কীটবিশেষম  
 অথবা ইন্দ্রঃ ( ত্রিলোকপতিঃ ) স্বকর্ণবন্ধাহুরূপ-  
 ফলভাজনঃ ( স্বকর্ণবন্ধাহুরূপস্য ফলস্য ভাজন-  
 পাত্ৰম্ ) আতনোতি, কিম্ব তজ্জিতাজাৎ চ কৰ্ম্মাণি  
 ( প্রারদ্ধাপ্রারদ্ধাণি ) নির্দহতি তন্ম্ অধিগুরুষা  
 গোবিন্দম্ অহং তস্মি ॥ ৪ ॥  
 যিনি ইন্দ্রগোপ ( লৃক্ষ রক্তবর্ণ কীট  
 বিশেষ ) অথবা ইন্দ্র প্রভৃতি সকলকেই  
 নিজ কৰ্ম্মানুরূপ ফল প্রদান করেন এবং  
 তৎকর্ত্ত্বক সর্ববিধ কৰ্ম্ম নিঃশেষে বিনাশ  
 করেন, সেই আদিপুরুষ গোবিন্দকে  
 আমি ভজন করি ॥ ৪৯ ॥



সার্কভৌমঃ সার্কভৌমঃ ।  
 সোভ্যাত্ত ক্রিষ্ণি কৈল সিবৈদনঃ ।  
 এবে কৰ্ম্ম কৰ্ম্ম কৌতমেশ গেলো ।  
 এবে প্রভু নিমন্ত্রণের অবসর হৈলো ।  
 এবে মোর ধরে ভিক্ষা কর মাগ তরি ।  
 প্রভু কহে ধর্ম্ম মহে করিতে না পারি ।  
 সার্কভৌম কহে ভিক্ষা কর বিশ দিন ।  
 প্রভু কহে এহো মহে বতিধর্ম্ম চিহ্ন ।  
 সার্কভৌম কহে কর দিন পঞ্চদশ ।  
 প্রভু কহে তোমার ভিক্ষা এক দিবস ॥৪২॥  
 তবে সার্কভৌম প্রভুর চরণে ধরিয়া ।  
 দশ দিন কর কহে বিনতি করিয়া ॥  
 প্রভু ক্রমে ক্রমে পঞ্চ দিন ঘটাইল ।  
 পঞ্চদিন তার ভিক্ষা নিয়ম করিল ॥  
 তবে সার্কভৌম করে আর নিবেদন ।  
 তোমার সঙ্গে সন্ন্যাসী আছে দশ জন ॥  
 পুরীগোসাক্ষির পঞ্চ দিন ভিক্ষা মোর ঘরে  
 পূর্বে আমি কহিয়াছি তোমার গোচরে ॥৪৩॥  
 দামোদর স্বরূপ হয় বাজব আমার ।  
 কছু তোমার সঙ্গে যাবে কছু একে ঘর ॥  
 আর অষ্ট সন্ন্যাসির ভিক্ষা দুই দুই দিবনে  
 এক এক দিনে এক এক সন্ন্যাসীপূর্ণ দৈব মানে  
 বহুত সন্ন্যাসী যদি আইসে এক ঠাকুরে ।  
 সম্মান করিতে নারি অপরাধ পাই ॥  
 তুমি নিজ দ্বারা সঙ্গে আনিবে মোর ঘর ।  
 কছু সঙ্গে আনিবেন স্বরূপ দামোদর ॥৪৪॥  
 প্রভুর ইচ্ছিত পঞ্চো আমদিত মন ।  
 সেই দিন কৈল কহা প্রভুর নিমন্ত্রণ ॥  
 সার্কভৌম সার্কভৌম সার্কভৌম গৃহিণী ।  
 প্রভুর সন্ন্যাসী কৈল সবেতে অন্ননী ॥  
 সার্কভৌম সার্কভৌম সার্কভৌম সার্কভৌম ॥  
 সার্কভৌম সার্কভৌম সার্কভৌম সার্কভৌম ॥

ভট্টাচার্য্য পুত্র সার্কভৌম সার্কভৌম ॥  
 বেবা শাক মলাদি সার্কভৌম সার্কভৌম ॥  
 আপনে ভট্টাচার্য্য করে থাকে সন্ন্যাসী ॥  
 বাসীরমাতা বিচক্ষণা জানে পাকশালা ॥  
 পাকশালায় দক্ষিণে দুই ভোগালয় ॥  
 এক ঘরে শালগ্রামের ভোগ সেবা হয় ॥  
 আর ঘর মহাপ্রভুর ভিক্ষার লাগিয়া ॥  
 নিতুতে করিয়াছেন নুতন করিয়া ॥  
 বাহে এক ঘর তার প্রভু প্রবেশিতে ॥  
 পাকশালায় এক ঘর পরিবেশন করিতে ॥  
 বস্ত্রিশা কলার এক আকট বস্ত্র পাত ॥  
 তিনমান তুলের উভারিল ভাত ॥  
 পীত সুগন্ধি ঘৃতে অন্ন সিক্ত কৈল ॥  
 চারিদিকে পাতে স্তূত বহিয়া চলিল ॥  
 কেয়াপত্র কলার খোলা ভোঙ্গা মারিসারি  
 চারিদিকে ধরিয়াছে নানা ব্যঞ্জন ভরি ॥৪৬॥  
 দশ প্রকার শাক নিব সুকতার ঝোল ।  
 মরিচের ঝাল ছেনাবড়া বড়িঘোল ॥  
 দুধভূষি দুধকুন্মাও বেসারি লাকরা ॥  
 মোচাঘণ্ট মোচাভাজা বিবিধ সাকরা ॥  
 রন্ধ কুন্মাও বড়ি ব্যঞ্জন অপার ।  
 ফুলবড়ি ফলমূলে বিবিধ প্রকার ॥  
 নব নিষপত্র সহ ভাজা বার্তাকী ।  
 ফুলবড়ি পটোল ভাজা কুন্মাও মামচাকী ॥  
 অষ্ট মাস মুদ্রা সুপ অমৃত নিন্দর ॥  
 মধুরান্ন বড়া অন্নাদি অন্ন পাঁচ ঘর ॥  
 মুদ্রাবড়া মামবড়া কলাবড়া মিষ্ট ॥  
 কীরপুলী মারিকেলপুলী আর বৃত্ত মিষ্ট ॥  
 কাঞ্জিরড়া দুধচিড়া দুধলকলতা ॥  
 আর বড় পীঠা বৈদ্য কহিতে না পারি ॥  
 স্তূতসিক্ত পরিহার সুসুকৃতিক কহি ॥  
 পরিহার কহি বহুত পাত্রে ভাজা মরি ॥

রনাল। মথিত দধি সন্দেশ অপার ।  
 গোড়ে উৎকলে যত ভঞ্জন প্রকার ॥  
 শ্রদ্ধা করি ভটাচার্য্য সব করাইল ।  
 শ্রব পীঠ উপরে শুভ্র বসন ধরিল ॥  
 দুই পাশে সুগন্ধি শীতল জল ঝারি ।  
 অন্নব্যঞ্জন উপরি দেন তুলসীমঞ্জরী ॥  
 অমৃত গুটিকা পিঠাপানা আনাইল ।  
 জগন্নাথ প্রসাদ সব পৃথক্ ধরিল ॥৪৮॥  
 হেনকালে মহাপ্রভু মধ্যাহ্ন করিয়া ।  
 একলে আইল। তার হৃদয় জানিয়া ॥  
 ভটাচার্য্য কৈল তার পাদ প্রক্ষালন ।  
 যবের ভিতর গেলা করিতে ভোজন ॥  
 অন্নাদি দেখিয়া প্রভু বিস্মিত হইয়া ॥  
 ভটাচার্য্যে কহেন কিছু ভঙ্গি করিয়া ॥  
 অলৌকিক এই সব অন্নব্যঞ্জন ।  
 তুই গ্রহণ ভিতরে কৈছে হইল রন্ধন ॥৪৯॥  
 শত চুলায় যদি শত জন পাক করে ।  
 তবু শীঘ্র এত ব্যঞ্জন রাখিতে না পারে ॥  
 কৃষ্ণে ভোগ লাগাইয়াছ অনুমান করি ।  
 উপরে দেখিয়ে যাতে তুলসী মঞ্জরী ॥  
 ভাগ্যবানু তুমি, সকল তোমার উদ্যোগ ।  
 রাখাকৃষ্ণে লাগাঞাছ এতাদৃশ ভোগ ॥  
 অন্নের গৌরভ্য বর্ণ পরম যোজন ।  
 রাখাকৃষ্ণে সাক্ষাৎ ইহা করিয়াছেন ভোজন ॥  
 তোমার অনেক ভাগ্য কত প্রশংসিব ।  
 আমি ভাগ্যবানু ইহা অবশেষ পাব ॥  
 কৃষ্ণের আসন পীঠ রাখ উঠাইয়া ।  
 মোরে প্রসাদ দেহভিন্নপাত্রেকে করিয়া ॥৫০॥  
 ভটাচার্য্য কহে প্রভু না কর বিস্ময় ।  
 যে খাইবে তার শক্যে ভোগ্য সিদ্ধ হয় ॥  
 না মোর উদ্যোগে না গৃহীণীর রন্ধনে ।  
 বার শক্যে ভোগ সিদ্ধি সেই তাহা জানে ॥

এই ত আসনে বসি করহ ভোজন ।  
 প্রভু কহে পুঙ্খ এই কৃষ্ণের আসন ॥  
 ভট্ট কহে অন্ন পীঠ সমান প্রসাদ ।  
 তুমি খাইবে পীঠে বসিতে কাহা অপরাধ ॥  
 প্রভু কহে ভাল বলিলে শাস্ত্র আজ্ঞা হয় ।  
 কৃষ্ণের সকল শেষ ভৃত্য আশ্বাদয় ॥৫১॥

তথাহি শ্রীমত্তাগবতে একাদশবন্ধে বঠাখ্যানে  
 একত্রিংশস্রোকে:—

ত্ৰয়োপযুক্তসংগন্ধবাসোহলকারচর্চিতাঃ ।

উচ্ছিষ্টভোজিনো দাসান্তব মারাং জয়েম হি ॥৬॥

ত্ৰয়োপযুক্তসংগন্ধবাসোহলকারচর্চিতাঃ উচ্ছিষ্ট-  
 ভোজিনঃ ( উচ্ছিষ্টং প্রসাদানং ভোক্তুং শীলং  
 যেষাং তে ) দাসাঃ ( বয়ং ) তব মায়াং জয়েম ॥৬॥

হে ভগবন্ ! আপনার উপযুক্ত মাল্য,  
 গন্ধ, বস্ত্র ও অলঙ্কারে অলঙ্কৃত আপনার  
 উচ্ছিষ্টভোজি দাস আমরা আপনার মায়া  
 জয় করিতে সমর্থ হইব ॥ ৬ ॥

তথাপি এতেক অন্ন খাওন না যায় ।  
 ভট্ট কহে জানি খাও যতেক যায় ॥  
 নীলাচলে ভোজন তুমি কর বায়ববার ।  
 এক এক ভোগে অন্ন খাও শত শত ভার  
 দ্বারকাতে বোলসহস্র মহিবীমন্দিরে ।  
 অষ্টাদশ মাতা আর ষাটবের ঘরে ॥  
 ব্রজে জেঠা খুড়া মায়া পিসাদি গোপগণ ।  
 লখারন্দ সবার ঘরে বিস্ক্যাতা ভোজন ॥  
 গোবর্দ্ধন বজ্জে খাইলে অন্ন রাশি রাশি ।  
 তার লেখে মোর অন্ন নহে এক প্রাসী ॥  
 তুমিত দ্বন্দ্বের মুঞি ক্ষুদ্র কোন্ হার ।  
 একপ্রাস মাধুকরী কর অঙ্গীকার ॥ ৫২ ॥  
 এত শুনি হাদি প্রভু বসিলা ভোজনে ।  
 জগন্নাথ প্রসাদ তট দেন রন্ধনে ॥

হেনকালে অমোঘ নাম ডটের জামাতা ।  
 কুলীন নিন্দক তেঁহো যাতীকন্টার ভর্তা ॥  
 ভোজন দেখিতে চাহে আসিতে না পারে  
 লাঠি হাতে ভটাচার্য্য আছেন দুয়ারে ॥  
 তেঁহো যদি প্রসাদ দিতে হৈলা আনমন ।  
 অমোঘ আসি অন্ন দেখি করয়ে নিন্দন ॥  
 এই অন্ন তুণ্ড হয় দশ বার জন ।  
 একলা সন্ন্যাসী করে এতেক ভোজন ॥৫৩  
 শুনিতেই ভটাচার্য্য উলটি চাহিল ।  
 তার অবধান দেখি অমোঘ পলাইল ॥  
 ভটাচার্য্য লাঠি লঞা মারিতে ধাইলা ।  
 পলাইলা অমোঘ তার লাগ না পাইলা ॥  
 তারে গালি শাপ দিতে ভটাচার্য্য আইল  
 নিন্দা শুনি মহাপ্রভু হাসিতে লাগিল ॥  
 শুনি যাঠীর মাতা বুক শিরে ঘাত মরারে ।  
 যাঠী আজিহোক রাড়ী বলেবারম্বারে ॥৫৪  
 দৌহার দুঃখ দেখি প্রভু ছুঁহা প্রবেধিয়া ।  
 ছুঁহার ইচ্ছাতে ভোজন কৈল তুষ্ট হৈয়া ॥  
 আচমন করাইয়া ভট্ট দিল মুখবাস ।  
 তুলসীমঞ্জরী লবঙ্গ এলাচি সুাস ॥  
 সর্ষাপে পরাইল প্রভুর মালা চন্দন ।  
 দণ্ডবৎ হৈয়া কহে দৈন্য বচন ॥  
 নিন্দা করাইতে তোমা আনিবু নিজ ঘরে  
 এই অপরাধ প্রভু ক্ষমা কর মোরে ॥৫৫॥  
 প্রভু কহে নিন্দা নহে সহজ কহিল ।  
 ইহাতে তোমার কিবা অপরাধ হৈল ॥  
 এত বলি মহাপ্রভু চলিলা ভবনে ।  
 ভটাচার্য্য তার ঘর গেলা তার মনে ॥  
 প্রভু পায় পড়ি বহু আশ্বনিন্দা কৈল ।  
 তারে শাস্ত করি প্রভু ঘরে পাঠাইল ॥৫৬  
 ঘরে আসি ভটাচার্য্য যাঠীর মাতা-সনে ।  
 আপনা নিঞ্জিয়া কিছু কহেন বচনে ॥

চৈতন্যপ্রভুর নিন্দা শুনিলা বাহা হৈতে ।  
 তারে বধ কৈলে হয় পাপ প্রায়শ্চিত্তে ॥  
 কিবা নিজ প্রাণ যদি করিয়ে মৌচন ।  
 দুই নহে যোগ্য দুই শরীর ব্রাহ্মণ ॥  
 পুনঃ সেই নিন্দকের মুখ না দেখিব ।  
 পরিত্যাগ কৈল তার নাগ না লইব ॥  
 যাঠীকে কহ ছাড়ুক সহ হইল পতিত ।  
 পতিত হইলে ভর্তা ত্যক্তিতে উচিত ॥৫৭

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে সপ্তমস্কন্ধে একাদশা-  
 ধ্যারে ষড়্বিংশতিলোকঃ—

সঙ্কটাহলোলুপা দক্ষা ধর্মজ্ঞা শ্রিয়সত্যাক্ ।  
 অপ্রমত্তা শুচিঃ স্নিদ্ধা পতিং তপতিতং ভজেৎ ॥৭॥

( যথালীলাভেন ) সঙ্কটী (ভাবন্যাত্রেহপি ভোগে)  
 আলোলুপা দক্ষা ( অনলনা ) ধর্মজ্ঞা শ্রিয়সত্য-  
 বাক্ অপ্রমত্তা শুচিঃ স্নিদ্ধা অপতিতং (মহাপাতক-  
 শূন্যং) পতিং ভজেৎ ( যথাহ যাজ্ঞবল্ক্যঃ আশুদে:  
 সংপ্রতীক্ষ্যো হি মহাপাতকদুর্ষিতঃ ) ॥ ৭ ॥

পতিব্রতা শ্রী যথালীলাভে সঙ্কটী,  
 আলোলুপা, অনলনা, ধর্মজ্ঞা, শ্রিয় ও  
 সত্যভাবিনী, সর্কত্র অপ্রমত্তা, শুচি ও  
 স্নিদ্ধা হইয়া মহাপাতকশূন্য স্বামির  
 ভজনা করিবেন ॥ ৭ ॥

সেই রাত্রে অসৌখ্য কাঁহা পলাইয়া গেল ।  
 প্রাতঃকালে তার বিস্মৃতিকা ব্যাধি হৈল ॥  
 অমোঘ মরেন শুনি কহে ভটাচার্য্য ।  
 মহায় হইয়া দৈব কৈল মোর কার্য্য ॥  
 জৈথরেতে অপরাধ ফলে ততক্ষণ ।  
 এত বলি পড়ে দুই শাস্ত্রের বচন ॥৫৮॥

তথাহি মহাভারতে বনপর্কণি একচত্বারিংশ-  
 দধিকৃষ্ণততমাধ্যায়ে পঞ্চদশলোকঃ—

মহতা হি প্রবেতেন সন্নহ গজবাক্সিত্তিঃ ।  
 অস্মাভির্গদহুর্ভেয়ং গবর্কৈস্তদমুর্জিতম্ ॥ ৮ ॥



( হে রাজন্ ) সস্বহ ( পরিকরং বন্ধা ) গজ-  
বাক্তিভিঃ ( সহ ) অস্বাভিঃ মহতা প্রবশ্চেন বৎ  
( কৌরবদমনরূপম্ ) অমুঠৈরং তৎ ( এব কৃতম্ অতঃ )  
গজকৈঃ অমুঠিতম্ ॥ ৮ ॥

ঘোষযাত্রাচ্ছলে পাণ্ডবগণকে স্ব-  
বৈভব প্রদর্শক কৌরবগণ গজকর্ক কতৃক  
নীত হইলে, তচ্ছবনে ভীম যুধিষ্ঠিরকে  
বলেন, হে ধর্ম্মরাজ ! বক্রপন্নিকর হইয়া  
গজবাক্সিসহ মহাযত্ন পূর্বক আমরা যে  
কর্ম্মের অনুষ্ঠান করিতাম, অদ্য গজকর্কগণ  
সেই কার্য্য সম্পন্ন করিয়াছেন ॥ ৮ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে চতুর্থাধ্যায়ে  
একত্রিংশস্কন্ধঃ—

আয়ুঃ শ্রিয়ং বশো ধর্ম্মং লোকানাশিষ এব চ ।  
হস্তি শ্রেয়াংসি সর্কাণি পুংসো মহদতিক্রমঃ ॥ ৯ ॥

মহদতিক্রমঃ ( মহতাম্ অতিক্রমঃ তিরস্কারঃ )  
পুংসঃ আয়ুঃ শ্রিয়ং বশঃ ধর্ম্মং লোকান্ আশিষঃ  
এব চ সর্কাণি শ্রেয়াংসি হস্তি ॥ ৯ ॥

মহাজাগরে প্রতি অভ্যাচার পুরু-  
ষের আয়ু, শ্রী, বশ, ধর্ম্ম, স্বর্গাদি লোক  
ও উন্নতি প্রভৃতি সকল কল্যাণই নষ্ট  
করিয়া থাকে ॥ ৯ ॥

গোপীনাথচার্য্য গেলা প্রভুর দর্শনে ।  
প্রভু তায়ে পুছিল ভটাচার্য্য বিবরণে ॥  
আচার্য্য কহে উপবাস কৈল দুই জনে ।  
বিস্মৃচিকা ব্যাধে অমোঘ ছাড়য়ে জীবনে ॥  
শুনি রূপাময় প্রভু আইলা ধাইয়া ।  
অমোঘের কহে তার বৃকে হস্ত দিয়া ॥  
সহজে নির্মল এই ব্রাহ্মণ-হৃদয় ।  
কৃষ্ণের বনিতে এই যোগ্যস্থল হয় ॥ ১১ ॥  
সান্দর্ঘ্য চণ্ডাল কেন ইহা বসাইলে ।

পবিত্র স্থান অপবিত্র কৈলে ॥

সার্কভৌম সঙ্গে তোমার কল্মষ হইল ক্ষয়  
কল্মষ ঘুচিলে জীব কৃষ্ণনাম লয় ॥  
উঠহ অমোঘ তুমি কহ কৃষ্ণনাম ।  
অচিরে তোমারে রূপা করিব ভগবান ॥ ১০ ॥  
শুনি কৃষ্ণ কৃষ্ণ বলি অমোঘ উঠিলা ।  
প্রেমোন্মাদে মত্ত হইয়া নাচিতে লাগিলা ॥  
কম্পাশ্রু পুলক স্বৈদ স্তম্ভ স্বরভঙ্গ ।  
প্রভু হানে দেখি তার প্রেমের তরঙ্গ ॥  
প্রভুর চরণে ধরি করয়ে বিনয় ।  
অপরাধ ক্ষম মোর প্রভু দয়াময় ॥  
এই ছার মুখে তোমার করিল নিন্দনে ।  
এত বলি আপন গালে চড়ায় আপনে ॥  
চড়াইতে চড়াইতে গাল ফুলাইল ।  
হাতে ধরি গোপীনাথচার্য্য নিবেদিল ॥ ১১ ॥  
প্রভু আশ্বাসন করে স্পর্শি তার গাত্র ।  
সার্কভৌম-সম্বন্ধে তুমি মোর স্নেহপাত্র ॥  
সার্কভৌম-গৃহে দাস দাগী যে কুকুর ।  
সেহো প্রিয় হয়ে মোর অন্ত রহ দূর ॥  
অপরাধ নাহি সদা লহ কৃষ্ণনাম ।  
এত বলি প্রভু আইলা সার্কভৌমস্থান ॥ ১২ ॥  
প্রভু দেখি সার্কভৌম ধরিলা চরণে ।  
প্রভু তারে আলিঙ্গিয়া বসিলা আসনে ॥  
প্রভু কহে অমোঘ শিশু কিবা তার দোষ  
কেনে উপবাস কর কেনে তারে রোষ ॥  
উঠ স্নান করি দেখ জগন্নাথ-মুখ ।  
শীত্র আসি ভোজন কর তবে মোর সুখ ॥  
তাবৎ রহিব আমি এথাই বসিয়া ।  
যাবৎ না পাইবে তুমি প্রসাদ আসিয়া ॥  
প্রভুপাদ ধরি ভট্ট কহিতে লাগিলা ।  
মরিত অমোঘ তারে কেনে জিয়াইলা ॥  
প্রভু কহেন অমোঘ শিশু তোমার বাণক  
বালক-দোষ না লয় পিতা বাহাতে পালক

এবে বৈকব হৈল তার গেল অপরাধ ।  
 তাহার উপরে এবে করহ প্রসাদ ॥৬৩॥  
 ভটু কহে চল প্রভু ঈশ্বর দর্শনে ।  
 স্থান করি তাহা সুক্ৰি আসিছো এখনে ॥  
 প্রভু কহে গোপীনাথ ইহাই রহিবা ।  
 প্রসাদ পাইলে তুমি আমারে কহিবা ॥  
 এত বলি প্রভু গেলা ঈশ্বরদর্শনে ।  
 ভটু স্থান দর্শন করি করিল ভোজনে ॥  
 সেই অমোঘ হৈল প্রভুর ভক্ত একান্ত ।  
 প্রেমে মত্ত কৃষ্ণনাম লয় মহাশান্ত ॥  
 ঐছে চিত্র লীলা করে শতীর নন্দন ।  
 যেই দেখে শুনে তার বিস্ময় হয় মন ॥

ঐছে ভটুগৃহে করে ভোজন বিলাস ।  
 তার মধ্যে নানাচিত্র চরিত্র প্রকাশ ॥৬৪॥  
 সার্কভৌম ঘরে এই ভোজন চরিত্র ।  
 সার্কভৌম প্রীত বাহা হৈল বিদিত ॥  
 যাঠীর মাতার প্রেম প্রভুর প্রসাদ ।  
 ভক্তসম্বন্ধে বাহা কুমিলা অপরাধ ॥  
 শ্রদ্ধা করি এই লীলা শুনে যেইজন ।  
 অচিরান্তে পায় সেই চৈতন্যচরণ ॥  
 শ্রীরূপ রঘুনাথপদে যার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৬৫ ॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
 সার্কভৌমগৃহে ভোজনবিলাসো-  
 নাম পঞ্চদশ পরিচ্ছেদ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যরূপ শ্রীশ্রীমদলাল পদারবিন্দ-সেবি বিনোদবিহারি-  
 গোবামি কৃত্যধরবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত সার্কভৌমগৃহে ভোজনবিলাস-  
 নাম পঞ্চদশপরিচ্ছেদ ॥ ১৫ ॥

## ষোড়শ পরিচ্ছেদ ।



গৌড়োদ্যানং গৌড়মেঘঃ সিকন্ স্বলোকনামৃতৈঃ ।  
 ভবাম্বিনগ্ধজনভাবীরুধঃ সমজীবয়ৎ ॥ ১ ॥  
 গৌড়মেঘঃ স্বলোকনামৃতৈঃ ( নিলাবলোকন-  
 রূপামৃতৈঃ ) গৌড়োদ্যানং ( গৌড়দেশরূপ-উদ্যানং )  
 সিকন্ ভবাম্বিনগ্ধজনভাবীরুধঃ ( সংসারাম্বিনা তাপ-  
 জ্বরেণ দগ্ধা বা জনতা জনসমূহাঃ তা এব বীরুধঃ  
 লতাঃ তাঃ ) সমজীবয়ৎ ॥ ১ ॥  
 গৌররূপ মেঘ স্বদর্শনরূপ অমৃত  
 দ্বারা গৌড়দেশরূপ উদ্যানকে সিক্ত  
 করতঃ সংসারানলে দগ্ধ জনতারূপ  
 লতাকে জীবিত করিয়াছিলেন ॥১॥

জয় জয় গৌরচন্দ্র জয় নিত্যানন্দ ।  
 জয়াঈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তরূন্দ ॥  
 প্রভুর হইল ইচ্ছা বাইতে রন্দাবন ।  
 শুনিয়া প্রতাপরুদ্র হইলা বিমন ॥  
 সার্কভৌম রামানন্দ আনি দুই জন ।  
 দুইারে কহেন রাজা বিনয় বচন ॥ ১ ॥  
 নীলাঞ্জি ডাড়ি প্রভুর মন অন্যত্র বাইতে ।  
 তোমরা করিহ বড় তাঁহারে রাখিতে ॥  
 তাঁহা বিহু এই রাজ্য মনে নাই ভার্য্য ।  
 গোসাঞি রাখিতে করিহ অনেক উপায় ॥

সান্নিধ্যম্ রামানন্দং বুদ্ধম সনৈ ।  
 যবে যুক্তি করে প্রভু বাইতে বৃন্দাবনে ৷১৥  
 দুইে কহে রথযাত্রা কর ধরশন ।  
 কার্তিকমাগ আইলে করিহ গমন ॥  
 কার্তিক আইলে কহে হইবে বড় শীত ।  
 দোলযাত্রা দেখি বাইহ এই ভাল রীত ॥  
 আজি কালি করি উঠার বিবিধ উপার ।  
 যাইতে সম্মতি না দেন বিচ্ছেদের ভয় ॥  
 যত্নপি স্ততন্ত্র প্রভু নহে নিবারণ ।  
 ভক্ত ইচ্ছা বিনা তবু না করে গমন ॥ ১০ ॥  
 তৃতীয় বৎসরে সব গৌড়ের ভক্তগণ ।  
 নীলাচল চলিতে সবার হৈল মন ॥  
 সবে মিলি গেলা অদ্বৈত আচার্যের পাশে ।  
 প্রভু দেখিতে চলিলা আচার্য পরম উল্লাসে ॥  
 বদ্যপি প্রভুর শাস্তা গৌড়ে রহিতে ।  
 নিত্যানন্দপ্রভুকে প্রেমভক্তি প্রকাশিতে ॥  
 তথাপি চলিলা মহাপ্রভুকে দেখিতে ।  
 নিত্যানন্দ-প্রেমচেষ্টা কে পারে বুঝিতে ॥১১॥  
 আচার্যরত্ন বিদ্যানিধি শ্রী বাসুদেব রামাই ।  
 বাসুদেব মুরারি গোবিন্দ তিন ভাই ॥  
 রাঘবপণ্ডিত নিজ কালি সাজাইয়া ।  
 কুলীনগ্রামবাসী চলে পট্টডোরী লঞা ॥  
 ধণ্ডবাসী নরহরি জীরয়নন্দন ।  
 সব ভক্ত চলে তার কে করে গণন ॥  
 শিবানন্দসেন করে খাটি সমাধান ।  
 সবাকে পালন করি সুখে লঞা যান ॥  
 শিবানন্দ জানে উড়িয়া পথের সন্ধান ।  
 সবার মর্ককার্য করে দেয় বাসান্দান ॥১২॥  
 সে বৎসর প্রভু দেখিতে সব ঠাকুরাণী ।  
 চলিয়া অদ্বৈতপথে অচ্যুতকন্যা ॥  
 শ্রী বাসুদেব গদে চলিলা মালিনী ।  
 শিবানন্দসেন সঙ্গে তাহার হইল যাত্রা ॥

শিবানন্দের বক্তৃত্ত্বের কারণে ১১  
 তেঁহো চলিয়াছে প্রভু সৌম্যক ভিলাস ॥১৩॥  
 আচার্যরত্ন গদে চলে তাহার মালিনী ।  
 তাঁহার প্রেমের কথা কথিত না জানি ॥  
 সব ঠাকুরাণী মহাপ্রভুকে ভিলাসিতে ।  
 প্রভুর জির নানাভাবে কৈলা মন বৈতে ॥  
 শিবানন্দসেন করে সহ সমাধান ।  
 খাটিয়াল প্রবোধে সবাকারে বৈদ্যবাসস্থান ॥  
 ভক্ত্য দিরা করেন সবার মর্কত্র পালনে ।  
 পরম আনন্দে যাম প্রভুর মর্কনে ॥  
 রেমুণা আসি গোপীনাথ কৈলা ধরশন ।  
 আচার্য করিলা তাঁহা কীর্ত্তম নর্কম ॥১৪॥  
 নিত্যানন্দের পরিচয় সব সেবক সনে ।  
 বহুত সম্মান কৈলা আসি সেবকগণে ॥  
 সেই রাত্রি সব মহাস্ত তাহাই রছিল ।  
 বার কীর আনি সেবক আগেতে ধরিল ॥  
 কীর বাঁটি সবাকারে দিলা প্রভু নিত্যানন্দ ॥  
 কীরপ্রসাদ পাঞা সবার বাছিল আনন্দ ॥  
 মাধবপুরীর কথা গোপাল স্থাপন ।  
 তাহারে গোপাল বৈছে মাগিলা চন্দন ॥  
 তার লাগি গোপীনাথ কীর চুরি কৈল ।  
 পূর্বে মহাপ্রভুর মুখে বে কথা শুনিল ॥  
 সেই কথা সবার মধ্যে কহে নিত্যানন্দ ।  
 শুনিয়া আচার্য সনে পাইল আনন্দ ॥১৫॥  
 এই মন্ত চলি চলি কটক আইলা ।  
 সাক্ষিগোপাল দেখি তাহা মেদিম রছিল ॥  
 সাক্ষিগোপালক কথা কহে নিত্যানন্দ ॥  
 শুনিয়া বৈকব মনে ব্যক্তি প্রসন্ন ॥  
 মহাপ্রভু দিলিতে সবার হৃৎকণ্ড অস্তর ।  
 নীত চলি আইলা সখে শ্রী বাসুদেব ॥  
 সাতার নানারক আইলা সৌন্দর্য্য ভিলাস ॥  
 হইয়ালা পট্টডোরী বসন পরে মালিনী ॥

কুলীমক্রমী পুত্রোহুঃ কুলীমক্রমীঃ ।  
 অর্জুনঃ কুলীমক্রমীঃ কুলীমক্রমীঃ ॥  
 তাহা হইল অর্জুন কৈল কুলীমক্রমীঃ ।  
 নাট্যেতে নাট্যেতে ভবে আইলা দুইজন ।  
 পুনঃ মালা দিরা স্বরসাদিমিজন ।  
 আশুবাড়ি পাঠাইল শচীর নন্দন ।  
 নরেন্দ্রে আসিয়া তাহা সবারে মিলিলা ।  
 মহাপ্রভুর দত্ত মালা সবারে পরাইলা ।  
 নিবেদন করি কৈল আইলা শুনি গৌররার ।  
 আপনে আসিয়া প্রভু মিলিলা সবার ।  
 সবা লঞা কৈল জগরাধ করশন ।  
 সবা লঞা আইলা পুনঃ আপন শুভন ॥১০  
 বাণীনাথ কামীমিত্র প্রসাদ আনিল ।  
 স্বহস্তে সবারে প্রভু প্রসাদ খাওয়াইল ॥  
 পূর্ব বৎসরের বার বেই বাসা স্থান ।  
 তাহা সবা পাঠাইয়া করিলা বিজ্ঞান ॥  
 এইমত উক্তগণ রহিলা চারিমাগ ।  
 প্রভুর সহিতে করে কীর্তন বিলাস ॥  
 পূর্ববৎ রথধাত্রা কাল ববে আইল ।  
 সবা লঞা গুণ্ডিচামন্দির প্রকালিল ॥১১  
 কুলীমক্রমী পুত্রোহুঃ কুলীমক্রমীঃ ॥  
 পূর্ববৎ রথ আগে সৃত্যাদি করিল ॥  
 বহু সৃত্য করি প্রভু চলিলা উদ্যানে ।  
 বাপীতীরে তাহা বাই করিল বিজ্ঞানে ॥  
 রাঢ়ী এক বিপ্র হৈলো নিত্যানন্দের বাস ।  
 মহাপ্রভুর নাম কুলীমক্রমী ॥  
 ঘট ভরি ভরি প্রভুর অভিব্যেক কৈল ।  
 তার অভিব্যেকে প্রভু মহাত্ম হৈল ॥  
 বলমতি ভেদনের বহু প্রসাদে আইল ।  
 সবা লঞা মহাপ্রভুর অঙ্গার সাইল ॥১২  
 সবারে কুলীমক্রমী কৈল করশন ।  
 বিদ্যার বিদ্যার দ্বারা সবে কুলীমক্রমী

আচার্য্যসেবা কৈল কুলীমক্রমী ॥  
 তার মধ্যে কৈল বেহে রত করিষণ ॥  
 বিভ্রান্তি বর্ণিলা তাহা রত্নাবন দান ।  
 তবে প্রভুর নিমন্ত্রণ কৈল জীমিবান ॥  
 প্রভুর জিহ্না নানা ব্যঞ্জন রাখেন মালিনী ।  
 উভয়ে মঙ্গলীমতিমান বাৎসাল্যজননী ॥১৩  
 আচার্য্যসেবা আদি বত উক্তগণ ।  
 মধ্যে মধ্যে মহাপ্রভুকে করে নিমন্ত্রণ ॥  
 চাতুর্মাগ্যান্তে প্রভু নিত্যানন্দ লঞা ।  
 কিবা বুক্তি করে নিতি নিতুতে বসিলা ॥  
 আচার্য্য প্রভুকে কহে ঠারে ঠারে ।  
 আচার্য্য উক্ত পড়ে কহে বুক্তিতে না পারে  
 তার মুখ দেখি হাসে শচীর নন্দন ।  
 অঙ্গীকার জানি আচার্য্য করেন নর্তন ॥  
 কিবা প্রার্থনা কিবা আজ্ঞা কহে না বুক্তিল ।  
 আলিঙ্গন করি প্রভু তারে বিদ্যারদিল ॥১৪  
 নিত্যানন্দে কহে প্রভু শুনহ জীপাদ ।  
 এই আমি মাগি তুমি করহ প্রসাদ ॥  
 প্রতিবর্ষ মীলাচলে তুমি না আসিবে ।  
 গৌড়ে রহি মোর ইচ্ছা সফল করিবে ॥  
 তাঁহা সিদ্ধি করে হেন অন্য না দেখিবে ।  
 আমার ছুতর কর্তব্য তোমা হৈতে হবে ॥  
 নিত্যানন্দ কহে আমি দেহ; তুমি প্রাণ ॥  
 দেহ প্রাণ ভিন্ন নহে এইত প্রমাণ ॥  
 অচিন্ত্য শক্তো কর তুমি জাহার বটন ।  
 যে করাহ সেই করি নাহিক নিরম ॥  
 তারে বিদ্যার দিল প্রভু করি আলিঙ্গন ॥  
 এইমত বিদ্যার দিল সব উক্তগণ ॥১৫  
 কুলীমক্রমী পূর্ববৎ কৈল নিবেদন ।  
 প্রভু আজ্ঞা বর আমার কর্তব্য কামন ॥  
 প্রভু কহে বৈকুণ্ঠেশ্বর নাম সঙ্গীতমা  
 দুই জন কৈল পানে জীমিবান ॥

তেহো কহে কে বৈকব কি তাঁর সঙ্গ  
 তবে হাসি কহে প্রভু জানি তার মন  
 ক্লকনাম নিরন্তর বাহার বদনে ।  
 সে বৈকবশ্রেষ্ঠ ভক্ত জাহার চরণে ।  
 বর্নান্তরে তারা পুনঃ আছে প্রায় কৈল ।  
 • বৈকবের ভারভঙ্গ্য প্রভু শিলাইল ॥ ১৬ ॥  
 বাহার দর্শনে দুখে আইসে ক্লকনাম ।  
 তাহারে জানিহু তুমি বৈকবপ্রধান ।  
 ক্রম করি প্রভু কহে বৈকবলক্ষণ ।  
 বৈকব বৈকবতর আর বৈকবতম ।  
 এইমত সব বৈকব গোড়েরে চলিলা ।  
 বিদ্যানিধি সে বৎসর নীলাজি রহিলা ।  
 স্বরূপ সহিত তার হয় সখ্য প্রীতি ।  
 দুইজনে ক্লককথা একস্থানে স্থিতি ॥ ১৭ ॥  
 গদাধরপণ্ডিতে তেহো পুনঃ মন্ত্র দিল ।  
 ওড়ন বস্তীর দিনে যাত্রাদি দেখিল ।  
 জগন্নাথ পঠেন তাতে মাতৃরা বসন ।  
 দেখিয়া সন্নয় হৈল বিদ্যানিধির মন ।  
 সেই রাত্রে জগন্নাথ বলাই আসিরা ।  
 দুই ভাই চড়ার তারে হাসিরা হাসিরা ।  
 গাল ফুলিল আচার্য অন্তরে উল্লাস ।  
 বিস্তারি বর্ণিলা ইহা ব্রহ্মাবন দাস ॥ ১৮ ॥  
 এইমত প্রত্যক আসেন গোড়ের ভক্তগণ ।  
 প্রভু সঙ্গ রহি করেন যাত্রা দরশন ।  
 তার মধ্যে যে যে বর্ষে আছরে বিশেষ ।  
 বিস্তারিলা তাহা পাছে কহিব বিশেষ ।  
 এইমত মর্দাঙ্গের তারি বর্ষ গেল ।  
 দক্ষিণ বাইকে আসিতে দুই বর্ষ হৈল-  
 দ্বার দুই বর্ষ তাহে ব্রহ্মাবন বাইতে ।  
 রামানন্দহুতে প্রভু মা পানে চলিতে ।  
 পুষ্কর বঙ্গেরে গোড়ের ভক্তগণ আইলা ।  
 পুষ্কর বঙ্গেরে আসি গোড়েরে চলিলা ॥ ১৯ ॥

জানিছক তারি কহে সন্নয় বচনে ।  
 বহুত উত্তর তা যার বাইকে ব্রহ্মাবন ।  
 তোমা সবার হুতে দুই বর্ষ না কৈল গমন ।  
 অবশ্য চলিহু হুবে সন্নয় সঙ্গতি ।  
 তোমা দুই বিদে কোরি অন্য নাহি গতি ।  
 গোড়দেশ হয় মোগ দুই সন্নয়র ।  
 জননী কারুণী এই দুই ব্রহ্মাবন ।  
 গোড়দেশে সিরা যাব তা সবা দেখিরা ।  
 তুমি হুবে আজ্ঞা দেহ এসন্ন হইরা ॥ ২০ ॥  
 শুনি প্রভুর বাণী হুবে মনে বিচারন ।  
 প্রভু সনে অতি হঠ বড় ভাল নয় ।  
 দুহে কহে এবে বর্ষা চলিতে নারিবা ।  
 বিজয়া দশমী আইলে অবশ্য চলিবা ।  
 আনন্দে বরিবা প্রভু কৈল সমাধান ।  
 বিজয়াদশমী দিনে করিলা প্রয়াণ ।  
 জগন্নাথের প্রসাদ প্রভু বত পাঞাছিল ।  
 কড়ার চন্দন ডোর সব সঙ্গ লইলা ॥ ২১ ॥  
 জগন্নাথে আজ্ঞা মাগি প্রভাতে চলিলা ।  
 উড়িয়া ভক্তগণ সঙ্গ পাছে চলি আইলা ।  
 উড়িয়া ভক্তেরে প্রভু যত্নে নিবর্তাইলা ।  
 নিজগণ লঞা প্রভু ভবানীপুর আইলা ।  
 রামানন্দ আইলা পাছে হোলাতে চড়িরা ।  
 বাণীনাথ বহু প্রসাদ দিল পাঠাইরা ।  
 প্রসাদ ভোজন করি তথাই রহিলা ।  
 প্রাতঃকালে চলি প্রভু ভুবনেশ্বর আইলা ।  
 কটক আসিলা কৈলা গোপাল রসন ।  
 যশোধর বিক্রম কৈল প্রভুকে বিস্ময়র ॥ ২২ ॥  
 রামানন্দ তার সব পদ বিস্তারিলা ।  
 বাহির উদ্যানে জাব প্রভু সিনি সেনা ।  
 তিকা করি বক্রমণ্ডলে আসিলা বিলাহ ।  
 প্রভাপুত্রর হাতি তার হাতিয়া প্রভাব

তুনি কামৰূপত সাজা সাজ চৰি আইলা ।  
 প্রভু দেৱি হওনং তুমিতে পুসিলা ॥  
 পুনঃ উঠে পুনঃ পুড়ে পুৰি বিহল ।  
 ভক্তি করে পুসকাৰ নেত্রে বহে জল ॥২৩॥  
 তার ভক্তি দেৱি প্রভুর চুৰি হৈল মন ।  
 উঠি মহাপাত্ৰ তাকে কৈল আলিঙ্গন ।  
 পুনঃ ভক্তি করি সাজা করেন প্ৰণাম ।  
 প্রভু কৃপাক্ষেত্রে তার দেখ কৈল দ্বন্দ ॥  
 সুস্থ করি রামানন্দ সাজা বসাইলা ।  
 কামনোবাক্যে প্রভু তাকে কৃপা কৈলা ।  
 এই কৃপা তার উপর কৈল গৌৰধাম ।  
 প্রতাপকল্প সন্তোষ বাতে হৈল নাম ॥  
 রাজপাত্ৰগণ কৈল প্রভুর বন্দন ।  
 সাজারে বিদায় দিল শচীৰ নন্দন ॥ ২৪ ॥  
 বাহির আসি রাজা আজ্ঞা পত্নী লেখাইল ।  
 নিজরাজ্যে বিষয়ী বত তাকে পাঠাইল ॥  
 গ্রামে গ্রামে নৃতন আবাস করিবা ।  
 পাঁচ সাত নব্যগৃহ সামগ্ৰী ভরিবা ॥  
 আপনে প্রভু লঞা তাহা উত্তরিবা ।  
 রাজ্যদিন বেত্র হস্তে সেবন করিবা ॥  
 দুই মহাপাত্ৰ হরিচন্দন মঙ্গরাজ ।  
 তাকে আজ্ঞা দিল রাজা কর সব কাজ ॥২৫॥  
 এক নব্য সৌকা রাখ আনি নদীতীরে ।  
 বাঁহা প্রভু স্থান করি বাবে নদীপারে ॥  
 তাঁহা স্তম্ভ রোপণ কর মহাতীৰ্থ করি ।  
 নিত্য স্থান করি তাঁহা তাঁহা বেন স্তম্ভি ॥  
 চতুৰ্ভাৰে উত্তৰীতে কর মহাবাস ।  
 রামানন্দ হাৰ তুমি মহাপাত্ৰ পাশ ॥  
 সন্ধ্যাতে চলিব প্রভু কৃপাতি শুনিব ।  
 হাজি উপর জাদু গৃহে স্তম্ভ চফালি ॥  
 প্রভু কৃপাতি পশন হবে স্তম্ভি স্তম্ভি ॥  
 সন্ধ্যাৰে চলিব প্রভু কৃপাতি শুনিব ॥

চিত্ৰোৎপৰা নদী কানি তাঁহা হৈল স্থান ।  
 মহিষী সকল দেখি করয়ে প্ৰণাম ॥  
 প্রভুর দৰশনে সবে হৈলা প্ৰেমস্বৰ ॥  
 কৃষ্ণ কৃষ্ণ কহে অক্ষ নেত্রে বরিবর ॥  
 এমত কৃপাদু নাহি শুনি ত্ৰিভুবনে ॥  
 কৃষ্ণপ্ৰেমা হর বার হুৰে দরশনে ॥  
 নৌকাতে চড়িয়া প্রভু নদী হৈল পার ॥  
 জ্যোৎস্নাবতী সাজি চলি আইলা চতুৰ্ভাৰ ॥  
 সাজে রহি তাঁহা প্ৰাতে স্থানকৃত্য কৈল ॥  
 হেনকালেজগন্নাথের মহপ্ৰসাদ আইল ॥২৭॥  
 সাজাৰ আজ্ঞাৰ পড়িহা প্ৰতি দিনে দিগে ॥  
 বহুত প্ৰসাদ পাঠায় দিয়া বহু জনে ॥  
 অগণ সহিত প্রভু প্ৰসাদ অঙ্গীকরি ॥  
 উঠিলা চলিলা প্রভু বলি হরি হরি ॥  
 রামানন্দ মঙ্গরাজ শ্ৰীহরিচন্দন ॥  
 সঙ্গে সেবা করি চলে এই তিমজন ॥  
 প্রভু সঙ্গে পুরীগোসাঞি স্বৰূপ দামোদর ॥  
 জগদানন্দ গোবিন্দ মুকুন্দ কাশীধর ॥  
 হরিনাস ঠাকুর আর পণ্ডিত বজ্জেশ্বর ॥  
 গোপীনাথচাৰ্য্য আর পণ্ডিত দামোদর ॥  
 রামাই নন্দাই আর বহু ভৃত্যগণ ॥  
 প্ৰধান কহিল, সবার কে করে গণন ॥২৮॥  
 গদাধরপণ্ডিত ববে সঙ্গেতে চলিলা ॥  
 ক্ষেত্ৰসন্ন্যাস না ছাড়িহ প্রভু নিৰেখিলা ॥  
 পণ্ডিত কহে বাঁহা তুমি সেই নীলচল ॥  
 ক্ষেত্ৰসন্ন্যাস মোর বাউক রসাতল ॥  
 প্রভু কহে ইহা কর গোপীনাথ সেবন ॥  
 পণ্ডিত করে কোটি সেবা তৎপাৰ দৰশন ॥  
 প্রভু কহে সেবা ছাড়িবে সন্ন্যাস লাগে হোৱন ॥  
 ইহা কহি সেবা কর আমার সন্মুখে ॥২৯॥  
 পণ্ডিত কহে সব হোব আমার উপক ॥  
 তোমার সঙ্গে না বাৰিব বাহ একেশ্বর ॥

আই দেখিতে বাব, না বাব তোমালাগি ।  
 প্রতিজ্ঞাসেবাভ্যাংগেহোমতারআমিফাগী ॥  
 এত বলি পণ্ডিত পোসাঞি পৃথক চলিলা ।  
 কটক আসি প্রভু ভারে সঙ্গে আনাইলা ॥  
 পণ্ডিতের গৌরব প্রেম বুঝন না যায় ।  
 প্রতিজ্ঞা কৃষ্ণসেনা ছাড়িলা তুণপ্রায় ॥৩ ॥  
 তাহার চরিত্রে প্রভু অন্তরে সন্তোষ ।  
 তার হাতে ধরি কহে করি প্রণয়রোষ ॥  
 প্রতিজ্ঞাসেবাহাড়িবেএইতোমারউদ্দেশ ॥  
 সেই নিজ হৈল ছাড়ি আইলে দূরদেশ ॥  
 আমা সহ রহিতে চাহ বাঞ্ছ নিজ সুখ ।  
 তোমার ছুই ধর্ম যার আমার হয় দুঃখ ॥  
 গোর সুখ চাহ যদি নীলাচলে চল ।  
 আমার শপথ যদি আর কিছু বল ॥  
 এত বলি মহাপ্রভু নৌকাতে চড়িলা ।  
 মুচ্ছিত হইয়া পণ্ডিত তাঁহাই পড়িলা ॥  
 পণ্ডিতেলএগাষেতেসার্কভৌমেআজ্ঞাদিলা ।  
 ভটাচার্য্য কহে উঠ এছে প্রভুর লীলা ॥  
 তুমি জান কৃষ্ণ নিজ প্রতিজ্ঞা ছাড়িলা ।  
 ভক্তরূপাবশেষীঅরপ্রতিজ্ঞা রাখিলা ॥৩১

তথাহি শ্রীমদ্ভগবতে প্রথমস্কন্ধে নবমাধ্যায়ে  
 চতুস্ত্রিংশশ্লোকঃ—

অনিগমমপহার মংপ্রতিজ্ঞা-  
 মৃতমধিকর্তৃমবপ্ৰতো রপস্থঃ ।  
 ধৃতরথচরণোহত্যারাজলদৃশ-  
 হঁরিরিব হস্তনিভং গতান্তরীরঃ ॥ ২ ॥

অনিগমং ( অপহৃত এবং সাহায্যস্বাক্ষর করি-  
 যানীতি অপ্রতিজ্ঞা ) অপহার ( হিংসা ) মংপ্রতিজ্ঞাং  
 ( শ্রীকৃষ্ণং পশ্চৎ গ্রাহয়িত্বানীভ্যেবাং রূপাং প্রতিজ্ঞাং )  
 মৃতং ( সত্যং বখা তবতি তথা ) অধিকর্তৃং ( বা )  
 মবপ্ৰতঃ ( সন্দ এবং ) অবপ্ৰতঃ ( মহাবৈশ্যমর্জীর্ণ )  
 ধৃতরথচরণঃ ( ধৃতঃ রথচরণঃ চক্রং যেন সঃ ) ইত্যং

( হস্তিনঃ ) হস্তং, হরিঃ ( লিংহঃ ) ইব অক্ষয়ং  
 ( অস্তিমুখং অর্যবৎ । তদ্বাচ সংযুক্তৈশ্চ মহাবান্যটা-  
 বিদ্বৈঃ ঈশ্বরহ সর্গকৃত্যেণ প্রতিপদং ) চলদৃশঃ  
 ( চলন্তী গৌঃ পৃথী বস্মান্তেনৈব সংযুক্তৈশ্চ পথি )  
 গতান্তরীরঃ ( গতং পতিতম্ উত্তরীরং বস্ত্রং বস্ত  
 নঃ, মে গতিঃ তবত্ব ) ॥২ ॥

যিনি নিজ প্রতিজ্ঞা পরিত্যাগ করতঃ  
 আমার ( শ্রীকৃষ্ণের ) প্রতিজ্ঞা সত্য করি-  
 বার জন্য সহসা অর্ধকৃতনের রথ হইতে  
 অবতরণ পূর্বক চক্রধারণ করিয়া, হস্তী  
 মারিতে সিংহ যেমন ধাবিত হয়, তরুণ  
 আমার অভিমুখে ধাবিত হইয়াছিলেন,  
 তৎকালে বাঁহার সংরক্তে পৃথিবী প্রতি  
 পদে কম্পিত হইতে লাগিল এবং বাঁহার  
 উত্তরীয় বসন অঙ্গ হইতে ঝলিত হইতে-  
 ছিল, এবমিধ মুকুন্দ আমার গতি  
 হউন ॥ ২ ॥

এইমত প্রভু তোমার বিরহ সহিয়া ।  
 তোমার প্রতিজ্ঞা রক্ষা কৈল যতনকরিয়া ॥  
 এইমত কহি তারে প্রবোধ করিলা ।  
 ছুইজন শোকাকুলি নীলাচলে আইলা ॥  
 প্রভু লাগি ধর্মকর্ম ছাড়ে ভক্তগণ ।  
 ভক্তধর্ম হানি প্রভুর না হয় সহন ॥  
 প্রেমের বিবর্ত ইহা শুনে সেই জন ।  
 অচিরে মিলন ভারে চৈতন্যচরণ ॥ ২ ॥  
 দুই রাজপাক সেই প্রভু প্রদে যায় ।  
 বাজপুর আসি তারে দিলেন বিদায় ॥  
 প্রভু বিদায় দিল তার যার প্রভু সনে ।  
 কৃষ্ণকথা রামানন্দ সঙ্গে রাত্রিদিনে ॥  
 প্রতিগ্রাসে স্বাক আঞ্জার রাজকৃত্যগণ ।  
 নর্যাগৃহে নানা প্রঃ যা করয়ে সেবন ॥

এইমত চলি প্রভু রেমুণা আইলা ।  
 তাঁহা হৈতে রামানন্দে বিদায় করিলা ॥  
 ভূমিতে পড়িলা রায় নাহিক চেতন ।  
 রায় কোলে করি প্রভু করয়ে ক্রন্দন ॥  
 রায়ের বিদায় কথা না বায় কখন ।  
 কহিতে না পারি এই তাহার বর্ণন ॥৩৩॥  
 তবে ওড়দেশসীমা প্রভু চলি আইলা ।  
 তাহা রাজঅধিকারী প্রভুরে মিলিলা ॥  
 দিন দুই চারি তেঁহো করিলা সেবন ।  
 আগে চলিবার সেই কহে বিবরণ ॥  
 মদ্যপ যবনরাজের আগে অধিকার ।  
 তার ভয়ে কেহো পথে নারে চলিবার ॥  
 পিচ্ছলদা পর্য্যন্ত সব তার অধিকার ।  
 তার ভয়ে নদী কেহো হৈতে নারে পার ॥  
 দিনকথো রহ সন্ধি করি তার সনে ।  
 শ্লুখেতে নৌকার তোমা করাব গমনে ॥  
 হেনকালে সেই যবনের এক চর ।  
 উড়িয়া কটকে আইল করি রেশান্তর ॥  
 প্রভুর অন্তত সেই চরিত্র দেখিয়া ।  
 হিন্দু চর কহে সেই যবন-ঠাঞি গিয়া ॥  
 এক সরাসী আইলা জগন্নাথ হৈতে ।  
 অনেক সিদ্ধপুরুষ লোক হয় তার সাথে ॥  
 মিরস্তর সবে করে কৃষ্ণসঙ্কীর্তন ।  
 সবে হাসে গায় নাচে করয়ে ক্রন্দন ॥  
 লক্ষ লক্ষ লোক আইসে দেখিতে তাঁহারে ।  
 তাঁহা দেখি পুনরপি যাইতে নারে ঘরে ॥  
 সেই সব লোক হয় বাতুলের প্রায় ।  
 কৃষ্ণ কহি নাচে কান্দে গড়াগড়ি যায় ॥৩৫॥  
 কহিবার কথা নহে দেখিলে সে জানি ।  
 তাহার প্রভাবে তারে ঈশ্বর করি মানি ॥  
 এত কহি সেই চর 'হরি কৃষ্ণ' গায় ।  
 হাসে কান্দে নাচে গায় বাতুলের প্রায় ॥

এত শুনি যবনের মন কিরি গেল ।  
 আপন বিশ্বাস উড়িয়া স্থান পাঠাইল ॥  
 বিশ্বাস আসিয়া প্রভুর চরণ বন্দিল ।  
 'কৃষ্ণ কৃষ্ণ' কহে প্রোগে বিজ্ঞান হইল ॥৩৬॥  
 ধৈর্য্য করি উড়িয়াকে কহে নমস্করি ।  
 তোমার ঠাঞি পাঠাইল মেচ্ছ অধিকারী ॥  
 তুমি যদি আজ্ঞা দেহ এখানে আসিয়া ।  
 যবনাধিকারী যায় প্রভুরে দেখিয়া ॥  
 বহুত উৎকর্থা তার করিয়াছে বিনয় ।  
 তোমা সনে এই সন্ধি নাহি যুদ্ধ ভয় ॥  
 শুনি মহাপাত্র কহে হইয়া বিস্ময় ।  
 মদ্যপ যবনের চিত্ত এঁছে কে করয় ॥  
 প্রভুর প্রতাপে তার মন কিরি গেল ।  
 দর্শন শ্রবণে যার জগৎ তরিল ॥ ৩৭ ॥  
 এত বলি বিশ্বাসেরে কহেন বচন ।  
 ভাগ্য তাঁর আসি করুন প্রভুর দর্শন ॥  
 প্রতীত করিয়ে তবে নিরস্ত্র হইয়া ।  
 আসিবেন সঙ্গে পাঁচ সাত ভৃত্য লৈয়া ।  
 বিশ্বাস যাইয়া তারে সকল কহিল ।  
 হিন্দুবেশ ধরি সেই যবন আইল ॥  
 দূরে হৈতে প্রভু দেখি ভূমিতে পড়িয়া ।  
 দণ্ডবৎ করে অশ্রু-পুলকিত হয় ॥ ৩৮ ॥  
 মহাপাত্র আনিল তারে করিয়া সন্মান ।  
 যোড়হাতে প্রভু আগে লয় স্মরণাম ॥  
 অধম যবনকূলে কেনে জন্ম হইল ।  
 বিধি মোরে হিন্দুকূলে কেনে না সৃজিল ॥  
 হিন্দু হৈলে পাইতুঁ তোমার চরণসম্মিধান ।  
 ব্যর্থ মোর এই দেহ যাউক পরাণ ॥  
 এত শুনি মহাপাত্র আবিষ্ট হইয়া ।  
 প্রভুকে করেন স্তুতি চরণে ধরিয়া ॥  
 চণ্ডাল পবিত্র যার স্ত্রী নাম শ্রবণে ।  
 হেন তোমার এই জীব পাইল দর্শনে ॥



ইহার যে এই গতি কি ইহা বিস্ময় ।

সেই গতিতেই তাই মত হয় ॥৩৯॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে ত্রয়ত্রিংশা-  
ধ্যায়ে ষষ্ঠশ্লোকঃ—

যনামধেষশ্রবণামুকীর্তনাদ্-

যৎ প্রহরণাদ্ব্যংস্রণাদপি কচিৎ ।

ঋদোহপি সত্যঃ সর্বনাম কল্পতে

কৃতঃ পুনস্তে ভগবনুর্দর্শনাৎ ॥ ৩ ॥

যনামধেষশ্রবণামুকীর্তনাদ্ ( নামধেষশ্রব-  
ণামুকীর্তনঞ্চ তস্মাৎ ) যৎ প্রহরণাৎ ( নমস্কারাৎ )  
যৎ স্ররণাৎ অপি কচিৎ ঋদোঃ ( স্বপচঃ ) অপি সদাঃ  
সর্বনাম ( সোমযাগায় ) কল্পতে ( যোগ্যঃ ভবতি )  
ভগবনু তে : দর্শনাৎ পুনঃ কৃতঃ ॥ ৩ ॥

সাঁহার নাম শ্রবণ ও কীর্তন অথবা  
সাঁহাকে নমস্কার কিম্বা সাঁহাকে স্ররণ  
করিয়া স্বপচও তৎক্ষণাৎ শুচি হইয়া  
সোমযাগের নিমিত্ত যোগ্য হয়; হে  
ভগবনু! সেই তুমি, তোমার দর্শনে  
পবিত্র হইবে, এ বিষয়ে বক্তব্য কি? ॥৩॥

কর মহাপ্রভু তাবৈ রূপাদৃষ্টি করি ।

সেই গতিতেই তাই মত হয় 'রূপহরি' ॥

সেই কহে মোরে যদি কৈলে অঙ্গীকার ।

এক আজ্ঞা দেহ মোরেকরোঁ সন্তোমার ॥

গোব্রাহ্মণবৈষ্ণবহিংসাকরিয়াছোঁ অপার ।

সেই পাপ হৈতে মোর হউক নিস্তার ॥৪০॥

তবে মুকুন্দ দস্ত কহে শুন মহাশয় ।

গঙ্গাতীরে যাইতে মহাপ্রভুর মন হয় ॥

তাহা যাইতে কর তুমি সহায় প্রকার ।

এই বড় আজ্ঞা এই বড় উপকার ॥

তবে সেই মহাপ্রভুর চরণ বন্দিয়া ।

ছষ্ট হৈয়া চলে যথা বন্দনা করিয়া ॥

মহাপাত্র তাহা মনে কৈল কোলাকুলি ।

অনেক সামগ্রী দিয়া করিল মিতালি ॥

প্রাতঃকালে সেই বহু নৌকা সাজাইয়া ।

প্রভুকে আনিতে দিল বিশ্বাস পাঠায়া ॥

মহাপাত্র চলি আইলা মহাপ্রভুমনে ।

শ্লেচ্ছ আসি কৈল প্রভুর চরণ বন্দনেঃ ॥৪১॥

এক নবীন নৌকার মধ্যে তার ঘর ।

সগণে চড়াইল প্রভুকে তাহার উপর ॥

মহাপাত্র মহাপ্রভু করিল বিদায় ।

কান্দিতে কান্দিতে সেই তীরে রহি চায় ॥

জলদস্যু ভয়ে সেই যবন চলিল ।

দশ নৌকা ভরি বহু সৈন্য সঙ্গে লৈল ॥

মজ্জেশ্বর ছুষ্ঠ নদে পার করাইল ।

পিচ্ছলদা পর্য্যন্ত সেই যবন আইল ॥

তারে বিদায় দিল প্রভু সেই গ্রাম হৈতে ।

সেকালে তাহার চেষ্টা না পারি বর্ণিতে ॥

অলৌকিক শীলা করে শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য ।

সেই ইহা শুনে তার জন্ম দেখ ধন্য ॥

সেই নৌকা চড়ি প্রভুআইলা পানিহাটি ।

নাবিকেরে পরাইল নিজ রূপাশাটি ॥৪২॥

প্রভু আইলা করি লোকে হৈল কোলাহল

মনুষ্যে ভরিল সব জল আর স্থল ॥

রাঘবপণ্ডিত আসি প্রভু লৈঞা গেলা ।

পথে বড় লোকভীড় কষ্টেসৃষ্টে আইলা ॥

একদিন তাহা মাত্র করিলা নিবাস ।

প্রাতে কুমারহট্ট আইলা যাহা শ্রীনিবাস ॥

তাহা হৈতে আগে গেলা শিবানন্দ ঘর ।

বাসুদেব গৃহে পাছে আইলা ঈশ্বর ॥৪৩॥

বাচস্পতি-গৃহে প্রভু যেমতে রহিলা ।

লোক ভীড় ভয়ে যৈছে কুলীয়া আইলা ॥

মাধবদাস গৃহে তাহা শচীর নন্দন ।

লক্ষ কোটি লোক তাহা পাইল দর্শন ॥

সাত দিন রহি তাহা লোক নিস্তারিলা ।  
 শাস্তিপুরে আচার্য্যের ঘবে ঐছে গেলা ॥  
 দিন দুই চারি প্রভু তাঁহাই রহিলা ।  
 শচীমাতা আনি তাঁর দুঃখ খণ্ডাইলা ॥  
 তবে রামকেলি গ্রাম প্রভু যৈছে গেলা ।  
 নাটশালা হৈতে যৈছে পুনঃ ফিরি আইলা ॥  
 শাস্তিপুরে পুনঃ কৈলা দশ দিন বাস ।  
 বিস্তারি বর্ণিয়াছেন রুদ্দাবন দাস ॥  
 অতএব ইহাঁ তার না কৈল বিস্তার ।  
 পুনরুক্তি হয় এস্থ বাঢ়য়ে অপার ॥  
 তার মধ্যে মিলিলা যৈছে রূপ সনাতন ।  
 নৃসিংহানন্দ কৈল যৈছে পথের সাজন ॥  
 সূত্রমধ্যে সেই লীলা আমিহ বর্ণিল ।  
 অতএব পুনঃ তাহা ইহাঁ না লিখিল ॥৪৫॥  
 পুনরপি প্রভু যদি শাস্তিপূর আইলা ।  
 রঘুনাথ দাস তবে আসিয়া মিলিলা ॥  
 হিরণ্যদাস গোবর্দ্ধন দুই মহোদর ।  
 সগুগ্রাম বার লক্ষ মুদার ঈশ্বর ॥  
 মহৈশ্বর্য্যযুক্ত দুঁহে বদান্য ব্রাহ্মণ্য ।  
 সদাচার সংকুল পার্শ্বিক অগ্রগণ্য ॥  
 নদীয়াবাণী ব্রাহ্মণের উপজীব্য প্রায় ।  
 অর্থ ভূমি দান দিয়া করেন সহায় ॥  
 নীলাম্বর চক্রবর্তী আরাধ্য দুঁহার ।  
 চক্রবর্তী করে দুঁহার ভাতৃ ব্যবহার ॥  
 শিশুপুরন্দরে পূর্বে করেছেন সেবনে ।  
 অতএব প্রভুরে দুঁহে ভালরীতে জানে ॥৪৬॥  
 সেই গোবর্দ্ধনের পুত্র রঘুনাথ দাস ।  
 বাল্যকাল হৈতে তৈহো বিষয়ে উদাস ॥  
 সন্ন্যাস করি প্রভু যবে শাস্তিপূর আইলা ।  
 তবে আসি রঘুনাথ তাঁহারে মিলিলা ॥  
 প্রভুর চরণে পড়ে প্রোষাবিষ্ট হৈয়া ।  
 প্রভুপাদম্পর্শ কৈল করুণা করিয়া ॥

তার পিতা সদা করে আচার্য্য সেবন ।  
 অতএব আচার্য্য তারে হইলা প্রসন্ন ॥  
 আচার্য্য প্রসাদে পাইল প্রভুর শেষপাত ।  
 প্রভুর চরণ দেখে দিন পাঁচ সাত ॥৪৭॥  
 প্রভু তারে বিদায় দিয়া গেলা নীলাচল ।  
 তৈহো ঘরে আনি হৈলা প্রোমেতেপাগল ॥  
 বারবার পলায় তৈহো নীলাদ্রি যাইতে ।  
 পিতা তারে বাক্ষি রাখে আনি পথ হৈতে ॥  
 পঞ্চ পাইকে তাঁরে রাখে রাত্রিদিনে ।  
 চারি সেবক এক বিপ্রা রহে তাঁর সনে ॥  
 এই দশ জনে তাঁরে রাখে নিরস্তর ।  
 নীলাচল যাইতে না পায় দুঃখিত অন্তর ॥  
 এবে যদি মহাপ্রভু শাস্তিপূর আইলা ।  
 শুনি পিতা ঠাঞি রঘুনাথ নিবেদিলা ॥  
 আজ্ঞা দেহ যাই দেখি প্রভুর চরণ ।  
 অন্যথা না রহে মোর শরীর জীবন ॥৪৮॥  
 শুনি তার পিতা বললোক দ্রব্য দিয়া ।  
 পাঠাইল তারে শীঘ্র আমিহ বলিয়া ॥  
 সাত দিন শাস্তিপূরে প্রভু নগ্নে রহে ।  
 রাত্রিদিন তিঁহো এই মনঃকথা কহে ॥  
 রক্ষকের হাতে আমি কেমনে ছুটিব ।  
 কেমনে প্রভুর নগ্নে নীলাচল যাব ॥  
 মর্দজ্ঞ গৌরঙ্গ প্রভু জানি তার মন ।  
 শিক্ষারূপ কহে তাঁরে আশ্বাস বচন ॥  
 স্থির হঞা ঘরে যাহ না হইও বাতুল ।  
 ক্রমে ক্রমে পায় লোক ভবসিন্ধু-কুল ॥৪৯॥  
 মর্কট বৈরাগ্য না করিহ মোক দেখাইয়া ।  
 যথাযোগ্য বিষয় ভুঞ্জ অনানন্দ হৈঞা ॥  
 অন্তরনিষ্ঠা কর বাঞ্ছে লোক ব্যবহার ।  
 অচিরাতে কৃষ্ণ তোমা করিবেন উদ্ধার ॥  
 রুদ্দাবন দেখি যবে আসিব নীলাচলে ।  
 তবে তুমি আমা পাশ আসিহ কোন স্থলে ॥

সেকালে সে ছল ক্রম ক্রমাবে ভোগ্যেরে ।  
 ক্রমক্রমাবে তারে কেরাধিতে পারিলে ॥৫০॥  
 এত কহি মহাপ্রভু বিদায় তারে দিল ।  
 ঘরে আসি তেঁহো প্রভুর শিক্ষা আচরিল ।  
 বাহ্য বৈরাগ্য বাউলতা সকল ছাড়িয়া ।  
 যথাযুক্ত কার্য করে অনাগত হঞা ।  
 দেখি তাঁর পিতা মাতা বড় তুষ্ট হৈল ।  
 তাঁর আবরণে কিছু শিথিল হইল ॥  
 ইহা প্রভু একত্র করি সব ভক্তগণ ।  
 অষ্টম নিত্যানন্দাদি আর যত জন ॥  
 সবা আলিঙ্গন করি কহেন গোসাঁঞি ।  
 সবে আজ্ঞা দেহ আমি নীলাচল যাই ॥৫১॥  
 সবা সহিত হৈল আমার ইহঁর মিলন ।  
 এ বর্ষ নীলাজি কেহো না করিহ গমন ॥  
 আমি তাঁহা হৈতে অবশ্য ব্রহ্মাবন যাব ।  
 সবে আজ্ঞা দেহ তবে নির্ঝিন্দে আসিব ॥  
 মাতার চরণ ধরি বহু বিনয় কৈল ।  
 ব্রহ্মাবন যাইতে তাঁর আজ্ঞা লইল ॥  
 তবে নবদীপে তাঁরে দিল পাঠাইয়া ।  
 নীলাজি চলিলা সব ভক্ত লৈয়া ॥  
 সেই সব লোক পথে করয়ে সেবন ।  
 স্নুখে নীলাচলে আইলা শরীর নন্দন ॥  
 প্রভু আসি জগন্নাথ দরশন কৈল ।  
 মহাপ্রভু আইলা গ্রামে কোলাহল হৈল ॥  
 আনন্দিত ভক্তগণ আসিয়া মিলিলা ।  
 প্রেমে আলিঙ্গন প্রভু সবারে করিলা ॥  
 কানীশিঙ্গ রামানন্দ প্রহ্লাদ সার্কভৌম ।  
 বাগীনাথ শিথি আদি যত ভক্তগণ ॥  
 গদাধরপণ্ডিত আসি প্রভুরে মিলিলা ।  
 সবার অগ্রেতে প্রভু কহিতে লাগিলা ॥৫২॥  
 ব্রহ্মাবন যাব আমি গৌড়দেশ দিয়া ।  
 নিজ মাতা আর গঙ্গার চরণ দেখিলা ॥

এত কহে করি সোভে করিল পনমন ॥  
 সহজে ক সঙ্কে হৈল নিজ ভক্তগণ ॥  
 লক্ষ লক্ষ লোক আইসে কোলুক বেণিতে ।  
 লোকের সঙ্ঘটে পথ না পারি চলিতে ॥  
 বাঁহা রহি তাঁহা যর প্রাচীর হয় চূর্ণ ।  
 বাঁহা নেত্র পড়ে তাঁহা দেখি লোকপূর্ণ ॥  
 কষ্টপুষ্ট করি গেলাম রামকেনী গ্রাম ।  
 আমার ঠাঞি আইলা রূপসনাতননাম ॥৫৩॥  
 দুই ভাই ভক্তরাজ ক্রমক্রমাপাত্র ।  
 ব্যবহারে মহামন্ত্রী হয়ে রাজপাত্র ॥  
 বিদ্যা ভক্তি বুদ্ধিবলে পরম প্রবীণ ।  
 তবু আপনাকে জানে তৃণ হৈতে হীন ॥  
 তার দৈন্য দেখি শুনি পাষণ বিদরে ।  
 আমি তুষ্ট হঞা তবে কহিল দুঁ হারে ॥  
 উত্তম হঞা হীন করি মান আপনারে ।  
 অচিরে করিবে ক্রম দুঁ হার উদ্ধারে ॥  
 এত কহি আমি তারে বিদায় সবে দিল ।  
 গমনকালে সনাতন প্রাহেলী পড়িল ॥৫৪॥  
 বাঁহা সঙ্গে হয় এই লোক লক্ষ কোটি ।  
 ব্রহ্মাবন যাবার এই নহে পরিপাটি ॥  
 তবে আমি গুনিলমাত্র না কৈল অবধান ।  
 প্রাতে চলি আইলাম নাটশালা গ্রাম ॥  
 রাজিকালে আমি মনে বিচার করিল ।  
 সনাতন আমারে কি প্রাহেলী কহিল ॥  
 ভালত কহিল এই আমার এত লোক সঙ্গে  
 লোক দেখিকহিবেমোরে এই একটুকে ॥৫৬॥  
 দুর্লভ দুর্গম সেই নির্জন ব্রহ্মাবন ।  
 একলা বাইব কিহা সঙ্গে একজন ॥  
 মাধবেই পুরী তাঁহা দেখা একেবারে ॥  
 বাদিনার স্বাক্ষি পাতি চলিয়াছি তথারে ॥  
 ব্রহ্মাবন যাব কালা একলা পলাইয়া ।  
 সৈন্যসঙ্গে চলিয়াছি বৈকি কানীশিঙ্গ ॥

বিক বিক আসানাতক বলি হইলার সন্নিহিত ।  
 নিরন্ত হইয়া পুনঃ আইলু গদাধীর ॥৫৭॥  
 ভক্তগণে রাখি আইলাম নিজ নিজস্থানে ।  
 আমি সঙ্গে আইলা সবে পাঁচ ছয় জনে ॥  
 নিরীয়ে এবে কৈছে বাই বৃন্দাবন ।  
 সবে মিলি হুক্তি দেহ হইয়া প্রসন্ন ॥  
 গদাধরে ছাড়ি গোগাম ইহৌ হুঃখ পাইল ।  
 সেই ছেড়ু বৃন্দাবন যাইতে নারিল ॥  
 তবে গদাধর প্রভুর পায়েতে ধরিতা ।  
 বিনয় করিয়া কহে প্রেমাবিষ্ট হৈয়া ॥  
 তুমি বাঁহা রহ গেই হয় বৃন্দাবন ।  
 তাঁহা গলা বনুনা তাঁহা সর্গ ভীষণ ॥  
 তবু বৃন্দাবন বাহ লোক শিক্ষাইতে ।  
 সেইত করিবে সেই লয় তোমারটি তে ॥৫৮॥  
 এই আগে আইল প্রভু বর্ষা চারি মাস ।  
 এই চারি মাস কর নীলাচলে বাস ॥  
 পাটছ সেই আচরিবা যেই তোমার মন ।  
 আপন ইচ্ছার চল, রহ, কে করে বারণ ॥

শুনি লয় উক্ত কহে প্রভুর চরণে ।  
 সবার এই ইচ্ছা পণ্ডিত কৈলা নিবেদনে ॥  
 সবার ইচ্ছার প্রভু চারিমাস রহিল ।  
 শুনিয়া প্রতাপরুদ্র আনন্দিত হৈলা ॥৫৯॥  
 সেই দিবসে গদাধর কৈল নিমন্ত্রণ ।  
 তাঁহা ভিক্ষা কৈলা প্রভু লঞা ভক্তগণ ॥  
 ভিক্ষাতে পণ্ডিতের স্নেহ প্রভুর আশ্বাসন ।  
 মনুষ্যের শঙ্কো ছুই না হয় বর্ণন ॥  
 এইগত গৌরলীলা অনন্ত অপার ।  
 সংক্ষেপে করিয়ে কথা না যায় বিস্তার ॥  
 মহশ্রবদনে কহে আপনে অনন্ত ।  
 তবু এক দিনের তেঁহো নাহি পায় অন্ত ॥  
 শ্রীকৃষ্ণ রঘুনাথ পদে বার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥৬০॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে পুনঃ  
 গৌড়গমনবিলাসনাম বোড়শ  
 পরিচ্ছেদ ॥ ১৬ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে শ্রীশ্রীমদাদ্যাদ্যবিলাস-  
 গোবাসিনী কৃতাবরবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত পুনঃ গৌড়গমনবিলাস-  
 নাম বোড়শপরিচ্ছেদ ॥ ১৬ ॥

### সপ্তদশ পরিচ্ছেদ ।



গজেন্দ্র বৃন্দাবনং গৌরো ব্যাক্ষ্যেতপথগান্ বনে ।  
 প্রোথোদ্যতান্ সর্বোদ্যান্ বিদগ্ধে কৃষ্ণকরিনঃ ॥১॥  
 গৌরঃ বৃন্দাবনং গজেন্দ্রং (গজেন্দ্রকঃ সন্)  
 বনে ব্যাক্ষ্যেতপথগান্ প্রোথোদ্যতান্ (প্রোথো  
 উদ্যানং প্রোথোদ্যান্) কৃষ্ণকরিনঃ (কৃষ্ণকরিনঃ)

মাগকান্ ) সর্বোদ্যান্ ( প্রোথোদ্যান্ ) সহ উদ্যানভূত্যা  
 বেবাং তান্ ) বিদগ্ধে ॥ ১ ॥

শ্রীগৌরায় বৃন্দাবনে গমন করিতে  
 করিতে পথিমধ্যে ব্যাক্ষ্য, বোধী, বরিন ও

পক্ষিগণকে প্রেমাবিষ্ট করতঃ কৃষ্ণনাম  
আপক ও আপনার সহিত উৎসব নৃত্য  
করাইয়াছিলেন ॥১॥

জয় জয় গৌরচন্দ্র জয় নিত্যানন্দ ।  
জয়নৈমিত্তচন্দ্র জয় গৌরভক্তনন্দ ॥  
শরৎকাল আইল প্রভু চলিতে কৈল মতি ।  
রাগানন্দ স্বরূপ সঙ্গে নিভূতে যুকতি ॥  
মোর সহায় কর যদি তুমি দুই জন ।  
তবে আমি যাই দেখি শ্রীহৃন্দাবন ॥  
রাত্রে উঠি বনপথে পলাইয়া যাব ।  
একলা চলিব সঙ্গে কাহো না লইব ॥১॥

কেহো যদি সঙ্গে লৈতে উঠি পাছে ধায় ।  
সবারে রাখিবে যেন কেহো নাহি যায় ॥  
প্রসন্ন হরা আজ্ঞা দিবে না মানিবে দুঃখ ।  
তোমা সবার সুখে, পথে হবে মোর সুখ ॥  
দুইজন কহে তুমি ঈশ্বর স্বতন্ত্র ।  
যেই ইচ্ছা সেই করিবে নহ পরতন্ত্র ॥  
কিন্তু আমি দুঁহার শুন এক নিবেদন ।  
তোমার সুখে আমার সুখ কহিলেআপন ॥  
আমা দুহার মনে তবে বড় সুখ হয় ।  
এক নিবেদন যদি ধর দয়াময় ॥২॥

উত্তম ব্রাহ্মণ এক সঙ্গে অবশ্য চাহি ।  
ভিক্ষা করি ভিক্ষা দিবে বাবে পাত্র বহি  
বনপথে যাইতে নাহি ভোজ্যার ব্রাহ্মণ ।  
আজ্ঞা কর সঙ্গে চলে বিপ্র একজন ॥  
প্রভু কহে নিজ সঙ্গী কাঁহো না লইব ।  
একজন লৈলে আনের মনে দুঃখ হইব ॥  
নুতন সঙ্গী হইবেক স্নিগ্ধ বার মন ।  
এঁহে যদি পাই তবে লই একজন ॥৩॥  
স্বরূপ কহে এই বলভদ্র ভটাচার্য্য ।

তোমাতে সুস্নিগ্ধ বড় পণ্ডিত সাধু আর্থা ॥

এখনেই তোমা সঙ্গে আইলাগোড় টহতো  
ইহার ইচ্ছা আছে সর্কতীর্থ করিতে ॥  
ইহার সঙ্গেতে আছে বিপ্র এক ভৃত্য ।  
ইহোঁ পথে করিবেন সেবা ভিক্ষাকৃত্য ॥  
ইহাঁ সঙ্গে লহ যদি হয় সবার সুখ ।  
বনপথে যেতে তোমার নহে কোন দুঃখ ॥  
এই বিপ্র বহি লবে বস্ত্রাশূভাজন ।  
ভটাচার্য্য ভিক্ষা দিবে করি ভিক্ষাটন ॥৪॥  
তাহার বচন প্রভু অঙ্গীকার কৈল ।  
বলভদ্র ভটাচার্য্য সঙ্গে করি লৈল ॥  
পূর্ব রাত্রে জগন্নাথের আজ্ঞা লইয়া ।  
শেষ রাত্রে উঠি প্রভু চলিলা লুকাইয়া ।  
প্রাতঃকালে ভক্তগণ প্রভু না দেখিয়া ॥৫॥  
অবেশণ করি বুলে ব্যাকুল হইয়া ॥  
স্বরূপ গোসাঞি সবার কৈল নিবারণ ।  
নিয়ন্ত হঞা রহে সবে জানি প্রভুর মন ॥  
প্রসিদ্ধ পথ ছাড়ি প্রভু উপপথে চলিলা ।  
কটক ডাহিনে করি বনে প্রবেশিলা ॥৬॥  
নির্জন বনে চলে প্রভু কৃষ্ণনাম লয়া ।  
হস্তী ব্যাজ পথ ছাড়ে প্রভুরে দেখিয়া ॥  
পালে পালে ব্যাজ হস্তী গও শূকরগণ ।  
তার মধ্যে আবেশে প্রভু করেন গমন ॥  
তাহা দেখি ভটাচার্য্যের মহাত্মর হয় ।  
প্রভুর প্রতাপে তারা এক পাশ হয় ॥  
একদিন পথে ব্যাজ করিয়াছে শয়ন ।  
আবেশে তাহাতে প্রভুর লাগিল চরণ ॥  
প্রভু কহে 'কৃক' কহ ব্যাজ উঠিল ।  
'কৃক কৃক' কহি ব্যাজ নাচিতে লাগিল ॥৭॥  
আর দিন মনে প্রভু করে নদীদান ।  
মস্ত হস্তিযুগ আইল করিতে জলপান ॥  
প্রভু জলে কৃত্য করেন আগে হস্তী আইল  
'কৃক' কহ বহি প্রভু কৃক কহি মাইলা ॥

সেই জলবিন্দু কণ লাগে বার গাঙ্গী ।  
সেই 'কৃষ্ণ কৃষ্ণ' কহে প্রেমে নাচে ধার ।  
কেহো ভূমি পড়ে কেহো করলে চিৎকার  
দেখি ভট্টাচার্য্য মনে লাগে চমৎকার ॥  
পথে বাইতে প্রভু করে উচ্চ সঙ্কীৰ্তন ।  
মধুরকণ্ঠ ধ্বনি শুনি আইসে মৃগীগণ ॥  
ধ্বনি শুনি ভাহিনে বামে যায় প্রভুসঙ্গে ।  
প্রভু তার অঙ্গ পৌঁছেলোকপড়েরঙ্গে ॥৭॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে একবিংশাধ্যায়ে  
একাদশশ্লোকঃ—

ধষ্ঠাঃ স মুচমতরোহপি হরিণ্যা এতা  
বা নন্দনন্দনমুপাত্তবিচিত্রবেশম্ ।  
আকর্ষ্য বেণুরিক্ষিতং সহকৃষ্ণসারাঃ  
পূজাং মধুবিরচিতাং প্রণয়াবলোকৈঃ ॥ ২ ॥

(হে সখি) মুচমতরঃ অপি এতাঃ হরিণ্যাঃ  
ধষ্ঠাঃ ( কৃতার্থাঃ ) স ( এব ) বাঃ বেণুরিক্ষিতং  
(বেণুরপিতম্) আকর্ষ্য (শ্রদ্ধা) সহকৃষ্ণসারাঃ ( কৃষ্ণ-  
সারৈঃ সহ ) উপাত্তবিচিত্রবেশম্ ( উপাত্তঃ বিচিত্রঃ  
বেশঃ যেন তৎ ) নন্দনন্দনং ( প্রেতি ) প্রণয়াব-  
লোকৈঃ বিরচিতাং পূজাং মধুঃ ( কৃতবত্যঃ ) ॥২॥

হে সখি ! পশুজাতি বলিয়া বিবেক-  
হীন হইলেও এই হরিণী-সকল কৃতার্থই,  
যেহেতু ইহার। শ্রীকৃষ্ণের বেণু ধ্বনি শ্রবণ  
করিয়া কৃষ্ণসারের সহিত বিচিত্র বেশ-  
বিশিষ্ট নন্দনন্দনকে লক্ষ্য করিয়া প্রণয়া-  
বলোকন দ্বারা বিরচিত পূজা বিধান  
করিতেছে ॥২॥

হেনকালে ব্যাজ তাঁহা আইল পাঁচ সাত ।  
ব্যাজ মৃগ মিলি চলে মহাপ্রভুর সাথ ॥  
দেখি মন্যপ্রভুর বৃন্দাবন স্মৃতি হৈল ।  
বৃন্দাবন গুণ বর্ণন লোক পড়িল ॥ ৮ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে একবিংশাধ্যায়ে  
যষ্ঠিতমশ্লোকঃ—

যত্র নৈসর্গদর্শৈর্যঃ সহাসন্ মৃগগায়ঃ ।  
মিত্রানীবাশিতাবাসক্রতকটুতর্বাদিকে ॥ ৩ ॥

অশিতাবাসক্রতকটুতর্বাদিকে ( অশিতত  
শ্রীকৃষ্ণত আবাসেন ক্রতাঃ পলারিতাঃ কটুতর্বাদিকঃ  
কোথলোভবয়ঃ যশ্নাৎ তমিন্ ) যত্র ( শ্রীবৃন্দাবনে )  
নৈসর্গদর্শৈর্যঃ ( স্বাভাবিক বৈরবৃত্তঃ ) মৃগগায়ঃ  
মিত্রাণি ইব সম ( এব ) আসন্ ॥ ৩ ॥

শ্রীকৃষ্ণের নিবাস হেতুকোথ লোভাদি  
বিরহিত শ্রীবৃন্দাবন স্বাভাবিক বৈরযুক্ত  
মনুষ্য পশুাদি মিত্র-ভাবে একত্র বাস  
করিত ॥৩॥

'কৃষ্ণ কৃষ্ণ' কহ বুলি প্রভু যবে বৈল ।  
'কৃষ্ণ' কহি ব্যাজ মৃগ নাচিতে লাগিল ॥  
নাচে কান্দে মৃগগণ ব্যাজগণ সঙ্গে ।  
বলভদ্র ভট্টাচার্য্য দেখে প্রভুর সঙ্গে ॥  
ব্যাজ মৃগ অন্যান্যে করে আলিঙ্গন ।  
মুখে মুখ লাগাইরাকরে অন্যান্যে চুষন ॥  
কৌতুক দেখিয়া প্রভু হাসিতে লাগিল ।  
তাহা সবা ছাড়ি প্রভু আগে চলি গেল ॥  
মমুরাদি পক্ষীগণ প্রভুকে দেখিয়া ।  
সঙ্গে চলে 'কৃষ্ণ' বলে নাচে মত্ত হৈয়া ॥  
হরিবোল বলি প্রভু করে উচ্চ ধ্বনি ।  
বৃন্দলতা প্রকুলিত সেই ধ্বনি শুনি ॥  
বারিধিতে স্বাবর জলম হয় বত ॥  
কৃষ্ণনাম দিয়া প্রেমে কৈল উদ্ভট ॥ ১০ ॥

যেই প্রায় দিয়া যায় বাঁধা করে স্থিতি ।  
সে সব প্রেমের লোকের হয় কৃষ্ণভক্তি ॥  
কেহ যদি তার মুখে শুনে কৃষ্ণনাম ।  
তার মুখে আন শুনে তার মুখে আন ॥

সবে 'কৃষ্ণহরি' বুলি নাচে কাশ্বে হাসে ।  
 পরম্পরা সৰ্বক্ষে ভক্ত হৈলা সৰ্বদেশে ॥  
 যদ্যপি মহাপ্রভু লোক সৰ্বেষ্টের জাগে ।  
 প্রেম গুণ করে বাহিরে না করে প্রকাশে ॥  
 তথাপি তাহার দর্শন শ্রবণ প্রভাবে ।  
 সকল দেশের লোক হইল বৈকবে ॥১১॥  
 গৌড় বঙ্গ রাঢ় উৎকলাদি দেশে গিয়া ।  
 লোকের নিস্তার কৈলা আপনে জমিয়া ॥  
 মথুরা যাবার হলে আসি বারিধণ্ড ।  
 ভিন্ন প্রায় লোক তাঁহা পরম পাষণ্ড ॥  
 নাম প্রেম দিয়া কৈল সবার উদ্ধার ।  
 চৈতন্যের গুণ লীলা বুঝে শক্তি কার ॥  
 বন দেখি জন্ম হয় এই বৃন্দাবন ।  
 শৈল দেখি মানে প্রভু এই গোবর্জন ॥১২॥  
 বাঁহা নদী দেখে তাঁহা মানয়ে কালিন্দী ।  
 তাঁহা নাচে গায় প্রেমাবেশে পড়ে কান্দী ॥  
 পথে যাইতে ভট্টাচার্য্য শাক মূল কল ।  
 বাঁহা যেই পায় তাঁহা লয়েন সকল ॥  
 যে গ্রামে রহে তাঁহা হয় যে ব্রাহ্মণ ।  
 পাঁচ সাত বিপ্র প্রভুর করে নিমন্ত্রণ ॥  
 কেহো অন্ন আনি দেয় ভট্টাচার্য্য স্থানে ।  
 কেহ দধি দুগ্ধ কেহ ঘৃতখণ্ড আনে ॥  
 বাঁহা বিপ্র নাহি তাঁহা শূদ্র মহাজন ।  
 আনি সবে ভট্টাচার্য্যে করে নিমন্ত্রণ ॥১৩॥  
 ভট্টাচার্য্য পাক করে বন্য ব্যঞ্জন ।  
 বন্য ব্যঞ্জনে প্রভুর আনন্দিত মন ॥  
 দুই চারি দিনের অন্ন রাখেন সংহতি ।  
 বাঁহা শূন্য বনলোকের নাহিক বসতি ॥  
 তাঁহা সেই অন্ন ভট্টাচার্য্য করে পাক ।  
 কলমূলের ব্যঞ্জন করে বন্য নানা শাক ॥  
 পরম সন্তোষ প্রভুর বন্য ব্যঞ্জনে ।  
 মহামুখ পান যে হিলে রহেন বিকনে ॥১৪॥

ভট্টাচার্য্য মেধা করে বেছে বেছে দাস ।  
 তার বিপ্র বহে জলপাত্র বহির্কাস ॥  
 নিকরের উকোদকে আন তিনবার ।  
 দুই সন্ধ্যা অস্থিতাপে কাঠ অপার ॥১৫॥  
 নিরন্তর প্রেমাবেশে নির্জনে গমন ।  
 সুখ অনুভবি প্রভু কহেন বচন ॥  
 গুন ভট্টাচার্য্য আমি জমিনু বহু দেশ ।  
 বনপথের সুখের সম নাহি লবলেশ ॥  
 কৃষ্ণ কৃপালু আমার বহু কৃপা কৈল ।  
 বনপথে আমি মোরে এত সুখ দিল ॥  
 পূর্বে বৃন্দাবন বাইতে করিল বিচার ।  
 মাতা গঙ্গা অবশ্য দেখিব একবার ॥১৬॥  
 ভক্তগণ সঙ্গে অবশ্য করিব মিলন ।  
 ভক্তগণ সঙ্গে লঞা যাব বৃন্দাবন ॥  
 এত ভাবি গৌড়দেশে করিল গমন ।  
 মাতা গঙ্গা ভক্ত মিলি সুখী হৈল মন ॥  
 ভক্তগণ লঞা তবে চলিলাম রঙ্গে ।  
 লক্ষ কোটি লোক তাঁহা হৈল মোর সঙ্গে ॥  
 সনাতন মুখে কৃষ্ণ আসা শিখাইলা ।  
 তাহা বিদ্য করি বনপথে লঞা আইল ॥১৭॥  
 কৃপার সাগর দীনহীন-দয়াময় ।  
 কৃষ্ণকৃপা বিহু কোন সুখ নাহি হয় ॥  
 ভট্টাচার্য্যে আলিঙ্গিয়া তাঁহাকে কহিল ।  
 তোমার প্রসাদে আমি এত সুখ পাইল ॥  
 তেঁহো কহে তুমি কৃষ্ণ তুমি দয়াময় ।  
 অধম জীব মুঞি মোরে হইলা সদয় ॥  
 মুঞি ছারি কোন, মোরেসদেপঞা আইলা  
 কৃপা করি মোর হাতে ভিক্ষা যে করিল ॥  
 অধম কাকেরে কৈলে পরকৃপমান ।  
 স্বতন্ত্র উদর তুমি অরুণ ভগবান ॥১৮॥  
 তথাহি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃত প্রথমসর্গে  
 প্রথমসর্গে ভট্টাচার্য্যের বর্ণনা

আসি দেখে কহে প্রভু কহে হোয়ন ।  
 প্রভু কহে কহা হই উঠি কৈলা আলিঙ্গন ।  
 চক্ষুশেখর কহে প্রভু বৎ রূপা কৈলা ।  
 জাগসে আনিয়া ভ্রাতো দরশন দিলা ।  
 আপন পরিষে বসি বানাগী স্থানে ।  
 ময়া ব্রহ্ম শব্দ বিনা নাহি শুনি কাণে ॥  
 বড় দর্শন বাখ্যা বিস্ম কথা নাহি এথা ।  
 মিশ্র রূপা করি মোরে শুনি ব্রহ্মকথা ।  
 নিরন্তর হুঁহে চিহ্নি ভ্রাতোয় চরণ ।  
 গর্ভজ ঈশ্বর তুমি দিলা দরশন ॥  
 শুনি মহাপ্রভু যাবেন জীহ্বািবন ।  
 দিনকথা রহি তার ভৃত্য দুইজন ॥  
 মিশ্র কহে প্রভু যাবৎ কাশীতে রহিছে ।  
 মোর নিমন্ত্রণ বিনা অস্ত না মানিবে ॥  
 এইমত মহাপ্রভু দুই ভৃত্যবশ ।  
 ইচ্ছা নাহি তবু কাশীতে রহিলা দিন দশ ॥  
 মহারাষ্ট্রী বিপ্র আইসে প্রভুকে দেখিতে ।  
 প্রভু প্রেমরূপ দেখি হইলা বিস্মিতে ॥১১  
 বিপ্রা সব নিমন্ত্রণে প্রভু নাহি মানে ।  
 প্রভু কহে আজি হইয়াছে নিমন্ত্রণে ॥  
 এইমত প্রতিদিন করেন বঞ্চন ।  
 সন্ন্যাসির সঙ্গ ভয়ে না মানে নিমন্ত্রণ ॥  
 প্রকাশানন্দ শ্রীপাদ সত্যতে বসিলা ।  
 বেদান্ত পঢ়ান বহু শিষ্যগণ লঞা ॥  
 এক বিপ্র দেখি আইল প্রভুর স্যবধারি ।  
 প্রকাশানন্দ আগে কহে চরিত্র উহারি ॥  
 এক সন্ন্যাসী আইলা অগরাণ বৈকুণ্ঠ ।  
 তারার মহিমা প্রভাব না পারি বর্ণিতে ॥  
 একাণ শরীর প্রভু স্বাক্ষরবরণ ।  
 আত্মমুক্তিত হুত কমলনয়ন ॥  
 বড় বিহু হইবের নরক পানশা ॥  
 সবই ভ্রাতোয় হইবে ব্রহ্মকথা ॥

সুখ কহে কহি মরণে মরণে মরণে ॥  
 কৈলা কহা হুত পুরান কহবন ॥ ১ ॥  
 বৎ রূপা কহে সঙ্গলত বসিলা শুনি গিরি ।  
 মলমলত হুত পুরান কহবন কহা যবে ॥১১  
 বাহার রূপা মুকুকে বিচাল করেন  
 এবং পঙ্কুকে পঙ্কুত লজনে সমর্থ করেন,  
 সেই পরমানন্দ মাধবকে প্রণাম করি ॥৪৪  
 এই মত বলভদ্র করেন স্তবন ।  
 প্রেমসেবা করি তুট্ট কৈল প্রভুর মন ॥  
 এইমত নানা স্মৃথে চলি আইলা কাশী ।  
 মণিকর্ণিকায় জ্ঞান কৈল মধ্যাহ্নে আসি ॥  
 মেকালে তপনমিশ্র করে গঙ্গান্নান ।  
 প্রভু দেখি হৈল কিছু সবিস্ময় জ্ঞান ॥  
 পূর্বে শুনিয়াছি প্রভু করিয়াছে সন্ন্যাস ।  
 নিশ্চয় করিল হৈল হৃদয়ে উজাস ॥১৮  
 প্রভুর চরণ ধরি করয়ে রোদন ।  
 প্রভু তারে উঠাইয়া কৈল আলিঙ্গন ॥  
 প্রভু লঞা গেলা বিষ্ণেশ্বর দরশন ।  
 তবে আসি দেখে বিস্মুমাধবচরণ ॥  
 ঘরে লয়া আইলা প্রভুকে আনন্দিতহয়া ।  
 সেবা করি স্তুতা করে বস্ত্র উড়াইয়া ॥  
 প্রভুর চরণোদক সবংশে কৈল পান ।  
 ভট্টাচার্যের পূজা কৈলা বহুত সন্মান ॥  
 প্রভুর নিমন্ত্রণ করি গৃহে ভিক্ষা দিল ।  
 বলভদ্র ভট্টাচার্যে পাক করাইল ॥ ১৯ ॥  
 ভিক্ষা করি মহাপ্রভু করিলা শয়ন ।  
 রিক্তপুত্র নহু করে পাতনবাহন ॥  
 প্রভুর সেবার নিম্ন সবংশে বাইলা ।  
 প্রভু আইলা শুনি চক্ষুশেখর আইলা ॥  
 মিলে মিলে মিলে মিলে মিলে মিলে ॥  
 মিলে মিলে মিলে মিলে মিলে মিলে ॥



তোহা দেখি জ্ঞান হয় এই নারায়ণ ।  
 যেই তারে দেখে করে কৃষ্ণসঙ্কীর্ণন ॥  
 মহাভাগবত লক্ষণ শুনি ভাণবতে ।  
 সে সব লক্ষণ প্রকট দেখিয়ে তাঁহাতে ॥২৩  
 নিরন্তর কৃষ্ণনাম জিহ্বা তাঁর গায় ।  
 নেত্রযুগে অশ্রুজল গঙ্গাধারা প্রায় ॥  
 ক্ষণে নাচে হাসে গায় করয়ে ক্রন্দন ।  
 ক্ষণেকে ছাড়ার যেন নিঃস্বের গর্জন ॥  
 জগৎ-মঙ্গল তার কৃষ্ণচৈতন্য নাম ।  
 নাম রূপ গুণ তার সব অনুপম ॥  
 দেখিলে সে জানি তাঁরে ঈশ্বরের রীতি ।  
 অলৌকিক কথা শুনি কে করেপ্রতীতি ॥২৪  
 শুনিয়া প্রকাশানন্দ বহুত হাসিলা ।  
 বিপ্রকে উপহাস করি কহিতে লাগিলা ॥  
 শুনিয়াছি গৌড়দেশে সন্ন্যাসী ভাবুক ।  
 কেশব ভারতী-শিষ্য লোক-প্রভারক ॥  
 চৈতন্য নাম তার ভাবুকগণ লঞা ।  
 দেশে দেশে গ্রামে বুলে নাচিয়া গায়িয়া ॥  
 যেই তারে দেখে সেই ঈশ্বর করি কহে ।  
 ঐছে মোহন বিদ্যা যে দেখে সে মোহে ॥  
 সার্কভৈম উটাচার্য্য পণ্ডিত প্রবল ।  
 শুনি চৈতন্যের সঙ্গে হইল পাগল ॥২৫॥  
 সন্ন্যাসী নামমাত্র মহা ঐশ্রজালী ।  
 কাশীপুরে না বিকাবে তার ভাবকালী ॥  
 বেদান্ত শ্রবণ কর না যাইহ তার পাশ ।  
 উচ্ছ্বল লোক সঙ্গে দুই শোক নাশ ॥  
 এত শুনি সেই বিপ্র মহাভূষণ পাইল ।  
 কৃষ্ণ কৃষ্ণ কহি তাঁহা হৈতে উঠি গেল ॥  
 প্রভু দরশনে শুক হইয়াছে তার মন ।  
 প্রভু আগে দুঃখী হৈয়া কহে বিবরণ ॥  
 শুনি মহাপ্রভু ঈষৎ হাসিয়া রহিলা ।  
 পুনরপি সেই বিপ্র প্রভুরে পুছিল ॥২৬॥

তার আগে আমি হবে তোমার নাম লৈল  
 সেহো তোমার নাম জানে আপনে কহিল  
 তোমা দোষ কহিতে করে নামের উচ্চার  
 চৈতন্য চৈতন্য কহি কহে তিনবার ॥  
 তিনবারে কৃষ্ণনাম না আইল তার মুখে ।  
 অবজ্ঞাতে নাম লয় শুনি পাই দুঃখে ॥২৭  
 ইহার কারণ মোরে কহ রূপা করি ।  
 তোমা দেখি জিহ্বা মোর বোলে কৃষ্ণহরি  
 প্রভু কহে মারাবাদী কৃষ্ণ অপরাধী ।  
 ব্রহ্মচৈতন্য আত্মা এই কহে নিরবধি ॥  
 অতএব তার মুখে না আইসে কৃষ্ণনাম ।  
 কৃষ্ণনাম কৃষ্ণস্বরূপ দুইত সমান ॥  
 নাম বিগ্রহস্বরূপ তিন এক রূপ ।  
 তিনে ভেদ নাহি তিন চিদানন্দরূপ ॥  
 দেহ দেহী নাম নামী কৃষ্ণে নাহি ভেদ ।  
 জীবের ধর্ম নাম দেহ স্বরূপ বিভেদ ॥২৮

তথাহি হরিভক্তিবিলাসনৈকাদশবিলাসে উন-  
 শ্লোকতাদিকদ্বিশতান্বয়তপত্রপুণ্যবচনম্—  
 নাম চিন্তামণিঃ কৃষ্ণচৈতন্যরসবিগ্রহঃ ।  
 পূর্ণঃ শুদ্ধো নিত্যশুদ্ধোভিন্নস্বাম্যামনামিনোঃ ॥১

নামনামিনোঃ অভিন্নত্বাৎ নাম চিন্তামণিঃ  
 ( সর্বাভীষ্টদাতা বসন্তদেব ) কৃষ্ণঃ ( কৃষ্ণত্ব স্বরূপং )  
 চৈতন্যরসবিগ্রহঃ পূর্ণঃ শুদ্ধঃ নিত্যশুদ্ধঃ ॥ ১ ॥

নাম এবং নামির ভেদ না থাকায়  
 শ্রীকৃষ্ণই নামরূপে আবিভূত হইয়াছেন,  
 অতএব নাম কৃষ্ণস্বরূপ, নাম চৈতন্য  
 রসমূর্তী, সর্বাধি শক্তিতে পূর্ণ, সার্বজনিক  
 রহিত, নিত্যশুদ্ধ এবং চিন্তামণির ন্যায়  
 সর্বাভীষ্টপ্রদ ॥১॥

অতএব কৃষ্ণের নাম দেহ বিলাস ।  
 প্রাকৃতেন্দ্রিয় গ্রাহক নহে হয় স্বপ্রকাশ ॥

কৃষ্ণনাম কৃষ্ণশব্দ কৃষ্ণলীলাসুন্দ ।

কৃষ্ণের স্বরূপ সম সব চিদানন্দ ॥ ২৯ ॥

তথাহি ভক্তিরসাত্তনিকৌ পূর্ববিভাগে বিত্তীর-  
নব্বাং বক্তনীতিমস্লোকঃ—

অতঃ শ্রীকৃষ্ণনামাদি ন ভবেৎপ্রোক্তমিত্রৈঃ ।

সেবোদ্বৃখে হি জিহ্বাদৌ স্বরমেব স্ফুট্যদঃ ॥ ৬

অতঃ (নামনামিনোরভেদাৎ) শ্রীকৃষ্ণনামাদিঃ  
ইত্রিইঃ ( প্রাকৃতৈঃ ) গ্রাহ্যং ( বিবরীকৃতং ) ন  
ভবেৎ সেবোদ্বৃখে ( ভগবৎস্বরূপ ভগ্নামগ্রহণার  
প্রয়ত্তে ) হি অদঃ ( নামঃ ) স্বরম্ এব জিহ্বাদৌ  
স্ফুটতি ॥ ৬ ॥

নাম ও নামী অভেদ বশতঃ সচ্চিদা-  
নন্দস্বরূপ শ্রীকৃষ্ণনামাদি প্রাকৃত ইন্দ্রি-  
য়ের বিষয় হয় না । জিহ্বাদি ইন্দ্রিয়গণ  
ভগবৎস্বরূপনামাদি গ্রহণে প্রবৃত্ত হইলে  
স্বপ্রকাশ নামাদি তাহাতে স্বরংই প্রকা-  
শিত হয় ॥ ৬ ॥

ব্রহ্মানন্দ হৈতে পূর্ণানন্দ লীলারস ।

ব্রহ্মজ্ঞানি আকর্ষিয়া করে নিজ বশ ॥ ৩০

তথাহি শ্রীমত্তাগবতে ষাটশব্দকে ষাটশাধ্যায়ে  
দ্বিপ্রকাশশব্দমস্লোকঃ—

স্বস্থখনিভৃতচেতাঃ স্বস্থান্যাতাবো-

হপ্যজিতকচিত্রলীলাকষ্টসারস্তবীরম্ ।

ব্যতস্থত কৃপয়া স্বস্তবীর্যং পুরাণং

ভমখিলবুজিনয়ঃ ব্যাগসুহৃৎ নতোহস্মি ॥ ৭ ॥

স্বস্থখনিভৃতচেতাঃ ( স্বস্থখেন ব্রহ্মানন্দেন  
নিভৃতং পরিপূর্ণং চেতো বশ সঃ ) তস্থান্যাতাবো-  
( তেইনৈব ব্যাপ্তঃ দুরীভূতঃ অন্যত্র ভাবঃ মনো-  
ব্যাপারঃ বশ তথাভূতঃ ) অপি অজিতকচিত্রলীলা-  
কষ্টসারঃ ( অজিতস্ত শ্রীকৃষ্ণস্ত কচিত্রাভিঃ লীলাভিঃ  
আকষ্টঃ সারঃ স্বস্থখার্থার্থ্যং বশ তথাভূতঃ স ভক্তঃ )  
বঃ তববীর্যং ( পরমার্থপ্রকাশকং ) তবীর্যং ( কৃষ্ণ-  
লীলাবীর্যং ) পুরাণং ( ভাগবতং ) কৃপয়া ব্যতস্থত

ভম্ অখিলবুজিনয়ঃ ( অখিলং স্রাদৃপভাবস্ত প্রতি-  
হৃদম্ উদাসীনক সর্বং বুজিনং হস্তীভিঃ ) ব্যাগ-  
সুহৃৎ ( শ্রীকৃষ্ণং ) নতোহস্মি ॥ ৭ ॥

বীহার চিত্ত ব্রহ্মানন্দে পরিপূর্ণ এবং  
যিনি সেই হেতু অন্যত্র ভাবশূন্য হইয়াও  
শ্রীকৃষ্ণের রুচিকর লীলা শ্রবণে অধীরতা  
হেতু কৃপা বশতঃ লোকে পরমার্থ প্রকা-  
শক কৃষ্ণলীলাময় শ্রীমত্তাগবতপুরাণ  
প্রচার করিয়াছেন, সেই অখিলদ্রুৎখ-  
নিবারক ব্যাগনন্দন শ্রীশুকদেবকে আমি  
প্রণাম করি ॥ ৭ ॥

ব্রহ্মানন্দ হৈতে পূর্ণানন্দ কৃষ্ণগণ ।  
অতএব আকর্ষয়ে আত্মারামের মন ॥ ৩১ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াঃ বর্ষে সপ্তদশশ্লোকখণ্ড-  
শ্রীমত্তাগবতবচনম্—  
আত্মারামাশ্চ যুনয়ো নিগ্রহা অপূরাক্রমে ।  
কুরুন্ত্যহৈতুকীং ভক্তিমিখলুতগুণো হরিঃ ॥ ৮ ॥

এহা সব রত্ন কৃষ্ণচরণসম্বন্ধে ।  
আত্মারামের মন হরে তুলসীর গঞ্জে ॥ ৩২

তথাহি শ্রীমত্তাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে পঞ্চদশাধ্যায়ে  
ত্রয়োশ্চত্বারিংশশব্দমস্লোকঃ—

ভক্তারবিল্বনয়নস্ত পদারবিল্ব-

কিজ্জকমিশ্রতুলসীমকরনবায়ুঃ ।

অস্তর্গতঃ স্ববিবরণে চকার তেবাং

সংকোভসম্ভরজুয়ামপি চিত্ততথোঃ ॥ ৯ ॥

ভক্ত অরবিল্বনয়নস্ত ( ভগবতঃ ) পদারবিল্ব-  
কিজ্জকমিশ্রতুলসীমকরনবায়ুঃ ( পদারবিল্বনোঃ  
কিজ্জকৈঃ কেশরৈঃ মিশ্রা বা তুলসী ভক্তাঃ মকরনবৈল  
যুক্তো বায়ুঃ ) স্ববিবরণে ( নাসাচ্ছিন্নে ) অস্তর্গতঃ  
( সন্ ) অক্ষরজুবাং ( ব্রহ্মানন্দসেবিণাম্ ) অপি  
তেবাং ( সনকাদীনাং ) চিত্ততথোঃ সংকোভং  
চকার ॥ ৯ ॥

সেই কমলনয়ন শ্রীকৃষ্ণের চরণাৰ্পিত  
পদ্মকিঙ্কমিশ্রিত তুলসীর বায়ু নাশাচ্ছিন্ন  
দ্বারা অন্তরে প্রবেশ করতঃ সেই ব্রহ্মা-  
নন্দ-সেবি সনকাদির চিত্ত এবং দেহতে  
সম্যক্ ক্ৰোন্ডের অর্থাৎ চিত্তে অতিশয়িত  
হর্ষ এবং শরীরে রোমাঞ্ছের অভিব্যক্তি  
করিয়াছিলেন ॥ ৯ ॥

অতএব কৃষ্ণনাম না আইসে তার মুখে ।  
মায়াবাদিগণ বাতে মহাবহিমুখে ॥  
ভাবকলী বেচিত্তেআমিআইনু কাশীপুরে  
গ্রাহক নাহি না বিকায় লঞা যাব ঘরে ॥  
ভারিবোঝা লঞা এলাম কেমনে লঞাযাব  
অঙ্গ অঙ্গ মূল্য লঞা ইহাঞি বেচিব ॥  
এত বলি সেই বিপ্রে আত্মসাৎ করি ।  
প্রাতে উঠি মথুরা চলিলা গৌরহরি ॥২৩  
সেই তিন সঙ্গে চলে প্রভু নিমেষিল ।  
দূরে হৈতে তিন জনায় ঘরে পাঠাইল ॥  
প্রভুর বিরহে তিনে একত্র মিলিয়া ।  
প্রভুর গুণগান করে আনন্দে বসিয়া ॥  
প্রয়াগে আসিয়া প্রভু কৈলা বেলীম্বান ।  
মাধব দেখিয়া তাঁহা কৈল নৃত্য গান ॥  
যমুনা দেখিয়া প্রেমে পড়ে ঝাঁপ দিয়া ।  
আস্তেবাস্তে ভট্টাচার্য্য উঠায় ধরিয়া ॥৩৪॥  
এইমত তিন দিন প্রয়াগে রহিলা ।  
কৃষ্ণনাম প্রেম দিয়া লোক নিস্তারিলা ॥  
মথুরা চলিলা পথে যাঁহা রহি যায় ।  
কৃষ্ণনাম প্রেম দিয়া লোকে করে নাচায় ॥  
পূর্বে যৈছে দক্ষিণ যাইতেলোকনিস্তারিলা  
পশ্চিমদেশ তৈছে সব বৈষ্ণব করিলা ॥  
পথে যাঁহা যাঁহা হয় যমুনা দর্শন ।  
তাঁহা ঝাঁপ দিয়া পড়ে প্রেমে অচিন্তন ॥৩৫॥

মথুরা নিকট আইলাম মথুরা দেখিয়া ।  
দণ্ডবৎ হৈয়া পড়ে প্রেমাৰিষ্ট হৈয়া ॥  
মথুরা আসিয়া কৈল বিশ্রান্তিঘাটে ম্বান ।  
জন্মস্থান কেশব দেখি করিল প্রণাম ॥  
প্রেমাৰেণে নাচে গায় সঘন হুকান ।  
প্রভুর প্রেমাৰেণ দেখি লোকে চমৎকার  
এক বিপ্র পড়ে প্রভুর চরণ ধরিয়া ।  
প্রভুসঙ্গে নৃত্য করে প্রেমাৰিষ্ট হৈয়া ॥  
ছুঁহে প্রেমে নৃত্য করি করে কোলাকুলি ।  
হরি কৃষ্ণ কহ ছুঁহে বলে বাছ তুলি ॥৩৬  
লোক হরি হরি বলে কোলাহল হইল ।  
কেশবনেবক প্রভুকে মালা পরাইল ॥  
লোক কহে প্রভু দেখি হইয়া বিস্ময় ।  
এরূপ এ প্রেম লৌকিক কতু নয় ॥  
যাহার দর্শনে লোক প্রেমে মত্ত হৈয়া ।  
হাসে নাচে কান্দে গায় কৃষ্ণনাম লয়া ॥  
সৰ্ক্ষথা নিশ্চয় ইহো কৃষ্ণ অবতার ।  
মথুরা আইলা লোকের করিতে নিস্তার ॥  
তবে মহাপ্রভু সেই ব্রাহ্মণ লইয়া ।  
তাহাকে পুছিল কিছু নিভুতে বসিয়া ॥  
আর্য্য সরল তুমি বৃদ্ধ ব্রাহ্মণ ।  
কাঁহা হৈতে পাইলে তুমি এই প্রেমধন ॥৩৭  
বিপ্র কহে শ্রীপাদ শ্রীমাধবব্রহ্মপুরী ।  
জগিতে জমিতে আইলা মথুরানগরী ॥  
কৃপা করি তেঁহ মোর নিলয়ে রহিলা ।  
মোর শিষ্য করি মোর হাতে ভিক্ষাকৈলা  
গোপালপ্রকটসেবা কৈলা মহাশয় ।  
অদ্যাপিহ সেই সেবা গোবর্দ্ধনে হয় ॥  
শুনি প্রভু কৈলা তার চরণ বন্দন ।  
ভয় পাঞা প্রভু-পায় পড়িল ব্রাহ্মণ ॥  
প্রভু কহে তুমি গুরু আমি শিষ্যপ্রায় ।

শুনিয়া বিশ্বয় বিপ্র কহে তর পাঞা ।  
 ঐছে বাত কহ কেন সন্ন্যাসী হইয়া ।  
 কিন্তু তোমার প্রেম দেখি মনে অনুমানি ।  
 মাধবেশ্বর পুরীর সখক ধর হেন জানি ॥  
 ঐ প্রেমা তাঁহা বাঁহা তাঁহার সখক ।  
 তাঁহা বিনা এই প্রেমার কাঁহা নাহি গন্ধ ॥  
 তবে ভট্টাচার্য্য তাঁরে সখক কহিল ।  
 শুনি আনন্দিত বিপ্র নাচিতে লাগিল ॥  
 তবে বিপ্র প্রভু লঞা আইল নিজ ঘরে ।  
 আপন ইচ্ছায় প্রভুর নানা সেবা করে ॥  
 ভিক্ষা লাগি ভট্টাচার্য্যে করাইল রন্ধন ।  
 তবে মহাপ্রভু আসি বলিলা বচন ॥  
 পুরীগোপাঞ্জির তব ঠাঞি করেছেন ভিক্ষা  
 যোরে তুমি ভিক্ষা দেহ সেইমোরশিক্ষাঃ-  
 তথাহি আদিলীলায়াং তৃতীয়ে পঞ্চমশ্লোকধৃত-  
 শ্লীলীতাবচনম্—  
 যদ্বদাচরতি শ্রেষ্ঠতত্তদেবেত্তরো জনাঃ ।  
 স যৎ প্রমাণং কুন্তে লোকস্তদনুবর্ততে ॥১০॥  
 যদ্যপি সনৌড়িয়া জাতি হয় সে ব্রাহ্মণ ।  
 সনৌড়িয়া-ঘরে সন্ন্যাসী না করে ভোজন  
 তথাপি পুরী দেখি তাঁর নৈষ্কম আচার ।  
 শিষ্য করি তাঁর ভিক্ষা কৈলা অঙ্গীকার ॥  
 মহাপ্রভু যদি তাঁরে ভিক্ষা মাগিল ।  
 দৈন্য করি সেই বিপ্র প্রভুরে কহিল ॥৪১॥  
 তোমারে ভিক্ষা দিব এই ভাগ্যসেআমার  
 তুমি ঐশ্বর, নাহি তোমার বিধি ব্যবহার ॥  
 দুস্থুখ লোক তোমার করিবে নিন্দন ।  
 সহিতে নারিব সেই দুষ্টের বচন ॥  
 প্রভু কহে ক্ষতি স্থতি যত ঋষিগণ ।  
 সব এক মত নহে; ধর্ম-ভিন্ন ভিন্ন ॥  
 ধর্মস্থাপন হেতু সাধু ব্যবহার ।  
 পুরীগোপাঞ্জির আচরণ সেই ধর্ম সারঃ৪২

তথাহি মহাভারতে বনপর্কণি ষাটশাধিক-  
 ত্রিশততমোধ্যায়ে সপ্তদশাধিকশততমশ্লোকঃ—  
 তর্কোহ প্রতীষ্ঠঃ শ্রুতরো বিভিন্নাঃ  
 নৈকো ঋষিব্রত মতঃ প্রমাণম্ ।  
 ধর্মতত্ত্বং নিহিতং গুহায়াং  
 মহাজনো যেন গতঃ স পহাঃ ॥ ১১ ॥

তর্কঃ অপ্ৰতীষ্ঠঃ ( নির্ণয়শূন্যঃ ) শ্রুতমঃ (অপি)  
 বিভিন্নাঃ ( পরস্পর বিরুদ্ধার্থবাদিনঃ ) একঃ ঋষিঃ  
 ন ( আসীৎ ) বস্য মতঃ প্রমাণম্ ( অতএব ) ধর্মতত্ত্ব  
 ত্বং গুহায়াং ( গুহাসদৃশনিভৃতস্থানে ) নিহিতং  
 ( নাস্তং সর্দেক্ষরবিজ্ঞাতমিত্যর্থঃ ) যেন ( পথা )  
 মহাজনঃ ( পূর্বাচার্য্যঃ ) গতঃ ( প্রচারিতঃ ) স  
 পহাঃ ( শ্রেষ্ঠতম ) ॥ ১১ ॥

তর্ক দ্বারা তত্ত্ব নির্ণয় হয় না, শ্রুতি-  
 গণ পরস্পর বিরুদ্ধার্থবাদী; একটি  
 ঋষিও দেখা যায় না, বাঁহাদের মত  
 প্রমাণিত হয় । অতএব ধর্মতত্ত্ব নিভৃত-  
 স্থানে ন্যস্ত রহিয়াছেন । সুতরাং পূর্বা-  
 চার্য্যেরা যে পথে বিচরণ করিয়াছেন,  
 সেই পথই প্রশস্ততম ॥ ১১ ॥  
 তবে সেই বিপ্র প্রভুকে ভিক্ষা কবাইল ।  
 মধুপুরীর লোক প্রভুকে দেখিতে আইল ॥  
 লক্ষসংখ্যে লোক আইল নাহিক গণন ।  
 বাহির হইয়া প্রভু দিলা দরশন ॥  
 বাহু তুলি বলে প্রভু বোল হরি হরি ।  
 প্রেমে মত্ত নাচে লোক হরিশ্রবনি করি ॥৪৬॥  
 যমুনার চক্ষিশঘাটে প্রভু কৈল স্থান ।  
 সেই বিপ্র প্রভুকে দেখায় তীর্থস্থান ॥  
 অন্নতু বিশ্রাম দীর্ঘবিষ্ণু ভূতেশ্বর ।  
 মহাবিদ্যা গোকর্ণাদি দেখিল বিস্তর ॥  
 বন দেখিবারে যদি প্রভু মন কৈল ।  
 সেইত ব্রাহ্মণ তবে নিজ সঙ্গে লৈল ॥

২ধু ভাল কুমুদ বজলা বন গেলা ।  
 তাঁহা তাঁহা ছান করি প্রেমাবিষ্ট হৈলা ॥  
 পথে গাভীঘটা চরে প্রভুকে দেখিয়া ।  
 প্রভুকে বেঢ়য়ে আসি হকার করিয়া ॥৪৪  
 গাভী দেখি স্তম্ভ প্রভু প্রেগের তরঙ্গে ।  
 বাৎসল্যে গাভীগণ চাটে প্রভুর অঙ্গে ॥  
 সুস্থ হঞা প্রভু করে অঙ্গকণ্ঠন ।  
 প্রভু সঙ্গে চলে নাহি ছাড়ে ধেনুগণ ॥  
 কষ্টসৃষ্টে দেখু সব রাখিল গোয়াল ।  
 প্রভু কষ্টধনি শুনি আইলা মৃগীপাল ॥  
 মৃগ মৃগী, মুখ দেখে প্রভুর অঙ্গ চাটে ।  
 ভয় নাহি করে সঙ্গে চলি যায় বাটে ॥৪৫  
 শুক পিক ভৃঙ্গ প্রভুকে দেখি পঞ্চম গায়  
 শিখিগণ নৃত্য করে প্রভু আগে যায় ॥  
 প্রভু দেখি রন্দাবনের রক্ষলতাগণ ।  
 অঙ্কুর পুলক মধু অশ্রু বরিষণ ॥  
 ফল ফুলে ভরি ডাল পড়ে প্রভুর পায় ।  
 বন্ধু দেখি বন্ধু যেন ভেট লঞা যায় ॥  
 প্রভু দেখি রন্দাবনের শ্রাবর জঙ্গম ।  
 আনন্দিত বন্ধু যৈছে দেখি বন্ধুগণ ॥  
 তা সবার প্রীতি দেখি প্রভু ভাবাবেশে ।  
 সব সঙ্গে ক্রীড়া করে হঞা তার বশে ॥৪৬  
 প্রতি রক্ষলতা প্রভু করে আলিঙ্গন ।  
 পুষ্প আদি ধ্যানের করে ক্রোধ সমর্পণ ॥  
 অশ্রু কম্প পুলক প্রেমে শরীর অস্থিরে ।  
 কৃষ্ণবোল কৃষ্ণবোল বলে উচ্চস্বরে ॥  
 শ্রাবর জঙ্গম মেলি করে কৃষ্ণধনি ।  
 প্রভুর গস্তীর স্বরে যৈছে প্রতিধনি ॥৪৭  
 মৃগের গলা ধরি প্রভু করেন রোদন ।  
 মৃগের পুলক অঙ্গ অশ্রু নয়ন ॥  
 রক্ষডালে শুকশারী দিল দরশন ।  
 তাহা দেখি প্রভুর কিছু শুনিত হৈল মন

শুকশারিকা প্রভুর হাতে উড়ি পড়ে ।  
 প্রভুকে শুনাইয়া কৃষ্ণগুণশ্লোক পড়ে ॥৪৮  
 তথাহি গোবিন্দলীলামৃতে ত্রয়োদশসর্গে উন-  
 ত্রিংশশ্লোকঃ—  
 সৌন্দর্য্যং ললনালিধৈর্যদলনং লীলারম্যস্তম্বিনী  
 বীৰ্য্যং কন্দুকিতাদ্রিবর্য্যমমলাঃ পারে পরাধ্বং গুণাঃ ।  
 শীলং সর্দাজনামুরজনমহো যস্তায়মস্মৎ প্রভু-  
 বিধ্বং বিশ্বজনীনকীর্ত্তিরবতাং কৃষ্ণো জগন্মোহনঃ ॥১২

যত ( শ্রীকৃষ্ণ ) সৌন্দর্য্যং ললনালিধৈর্য-  
 দলনং ( ললনালীনাং স্ত্রীবিশেষসমূহানাং ধৈর্য্যং  
 দলয়িতুং শীলমস্তেতি তথাভূতং ) লীলারম্যস্তম্বিনী  
 ( লীলারম্যং বৈকুণ্ঠলক্ষ্মীং স্তম্বয়িতুং ক্ষোভয়িতুং  
 শীলমস্তাঃ ) বীৰ্য্যং ( প্রভাবশ্চ ) কন্দুকিতাদ্রিবর্য্যং  
 ( কন্দুকিতঃ কন্দুকীকৃতঃ অদ্রিবর্য্যো গোবর্দ্ধনো  
 যেন তৎ ) অমলাঃ ( প্রকৃতিসংসর্গরহিতাঃ ) গুণাঃ  
 ( চ ) পারেপরাধ্বং ( পরাধ্বস্ত পারে ) শীলং  
 সর্দাজনামুরজনং ( সর্দান্ জনান্ অহুরজয়িতং  
 শীলমস্তেতি তৎ ) বিশ্বজনীনকীর্ত্তিঃ ( বিশ্বজনায়  
 হিতা কীর্ত্তিধ্বং সঃ ) অস্মৎ অস্মৎপ্রভুঃ জগ-  
 ন্মোহনঃ কৃষ্ণঃ বিশ্বম্ অবতাং ॥ ১২ ॥

ষাঁহার সৌন্দর্য্য, ললনাগণের দৈর্ঘ্যকে  
 বিদলিত করে, বৈকুণ্ঠলক্ষ্মীর স্তম্ব-  
 বিধায়িনী; ষাঁহার প্রভাব অদ্রিবর  
 গোবর্দ্ধনকে কন্দুক ( ভাঁটা ) মদুশ  
 করিয়াছে; ষাঁহার অপ্রাকৃত গুণাবলী  
 সংখ্যার অগোচর; ষাঁহার স্বভাব জন  
 গণের উল্লাসবর্জক এবং কীর্ত্তি বিশ্বজনের  
 হিতসাধিনী সেই আমাদের জগন্মোহন  
 শ্রীকৃষ্ণ বিশ্বের মঙ্গল বিধান করুন ॥১২॥

শুকমুখে শুনি তবে কৃষ্ণের বর্ণন ।  
 শারিকা করয়ে তবে রাধিকা-বর্ণন ॥৪৯॥

তথাহি গোবিন্দলীলামৃতে ত্রয়োদশসর্গে ত্রিংশ  
 শ্লোকঃ—

শ্রীরাধিকার্য্যঃ প্রিয়তা সুরূপতা  
সুশীলতা নর্ন্তনগানচাতুরী ।  
শুণালিসম্পৎ কবিতা চ রাজতে  
জগন্মনোমোহনচিত্তমোহিনী ॥ ১৩ ॥

শ্রীরাধিকার্য্যঃ প্রিয়তা ( প্রেম ) সুরূপতা  
( সৌন্দর্য্যং ) সুশীলতা ( সুস্বভাবঃ ) নর্ন্তনগান-  
চাতুরী শুণালিসম্পৎ ( শুণশ্রেণিক্রুপা সম্পত্তি )  
কবিতা চ জগন্মোহনচিত্তমোহিনী ( সতী )  
রাজতে ॥ ১৩ ॥

শ্রীরাধার প্রেম, সৌন্দর্য্য, সুস্বভাব,  
গান ও নর্ন্তন-নৈপুণ্য, শুণসম্পত্তি এবং  
কবিত্ব ; ইহারা প্রত্যেকে জগন্মোহন  
শ্রীকৃষ্ণের চিত্তমোহন করিয়া দাঁণ্ডি  
পাইতেছেন ॥ ১৩ ॥

পুনঃ শুক কহে কৃষ্ণ মদনমোহন ।  
তবে আর শ্লোক পুনঃ করিল পঠন ॥৫০॥

তথাহি গোবিন্দলীলাসূত্রে গ্রহকারস্য শ্লোক-  
ধরণ—

বংশীধারী জগন্নারীচিত্তহারী চ সঃ শারিকে ।  
বিহারী গোপনারীভিজ্ঞান্যমদনমোহনঃ ॥১৪॥

( হে ) শারিকে ! বংশীধারী জগন্নারীচিত্তহারী  
গোপনারীতিঃ বিহারী সঃ মদনমোহনঃ জীয়াৎ ॥১৪

হে শারিকে ! সেই বংশীধারী,  
জগন্নারীগণের চিত্তমাদক এবং সর্কদা  
গোপবণিতাগণের সহিত বিলাসকারী  
মদনমোহন শ্রীকৃষ্ণ সর্দাপেক্ষা নিজের  
উৎকর্ষ আবিষ্কার করুন ॥ ১৪ ॥

পুনঃ শারী কহে শুনে করি পরিহাস ॥৫১

রাধাসঙ্গে বদা ভাতি তদা মদনমোহনঃ ।

অন্যথা বিখমোহোহপি স্বয়ং মদনমোহিতঃ ॥১৫

( হে শুক ) বদা ( শ্রীকৃষ্ণঃ ) রাধাসঙ্গে ভাতি  
তদা মদনমোহনঃ অন্যথা ( তৎসাহিত্যাত্তাবে )

বিখমোহঃ অপি স্বয়ং মদনমোহিতঃ ( মদনেন  
মোহিতঃ জায়তে ) ॥ ১৫ ॥

যে সময়ে শ্রীকৃষ্ণের সমীপে শ্রীরাধা  
প্রকাশ পান, তখনই শ্রীরাধার প্রভাবে  
শ্রীকৃষ্ণ মদনকে মুগ্ধ করেন ; শ্রীরাধা  
নিকটে না থাকিলে তিনি বিখমোহন  
হইয়াও আপনাই মদন কর্তৃক মোহিত  
হয়েন ॥ ১৫ ॥

এত শুনি প্রভুর হৈল নিশ্চয় উল্লাস ॥ ৫২  
শুকসারী উড়ি পুনঃ গেলা বৃক্ষডালে ।

ময়ূরের মৃত্যু প্রভু দেখে কুতূহলে ॥  
ময়ূরকণ্ঠ দেখি কৃষ্ণকান্তি স্মৃতি হৈলা ।

প্রেমাবেশে মহাপ্রভু ভূমিতে পড়িলা ॥  
প্রভুকে মুগ্ধিত দেখি সেইত ব্রাহ্মণ ।

ভট্টাচার্য্য সঙ্গে করে প্রভুর সম্বর্পণ ॥  
আস্তেবাস্তে মহাপ্রভুর লঞা বহির্বাস ।

জলসেক করে অঙ্গে বস্ত্রের বাতাস ॥৫৩॥  
প্রভুর কর্ণে কৃষ্ণ নাম কহে উচ্চ করি ।

চেতন পাইয়া প্রভু বায় গড়াগড়ি ॥  
কণ্টক দুর্গম বনে অঙ্গ ক্ষত হৈল ।

ভট্টাচার্য্য প্রভুকে কোলে করি সুস্থ কৈল  
কৃষ্ণাবেশে প্রভুর প্রেমে গর গর মন ।

বোল বোল বুলি উঠি করেন নর্ন্তন ॥  
ভট্টাচার্য্য সেই বিপ্র কৃষ্ণনাম গায় ।

নাচিতে নাচিতে প্রভু পথে চলি যায় ॥৫৪  
প্রভুর প্রেমাবেশ দেখি ব্রাহ্মণ বিস্মিত ।

প্রভুর রক্ষা লাগি ভট্টাচার্য্য চিত্তিত ॥  
নীলাচলে ছিলা যৈছে প্রেমাবেশ মন ।

রুম্বাবন যাইতে পথে হৈল শতশুণ ॥  
সহস্রশুণ প্রেম বাঢ়ে মথুরাদর্শনে ।

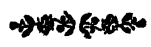
লক্ষশুণ প্রেম হৈল জসে যবে বনে ॥

অন্যদেশে প্রেম উথলে বৃন্দাবন নামে ।  
 সাক্ষাৎ জমরে এবে সেই বৃন্দাবনে ।  
 প্রেমে গর গর মন ত্রিভি সিবনে ।  
 মানভিলাদি নিরীহ করেন অত্যাগে ॥৫৫॥  
 এইমত প্রেমে যাবৎ জমিলা বার বন ।  
 একত্র লিখিল সব না বার বর্ণন ॥  
 বৃন্দাবনে হৈল বত প্রেমের বিকার ।  
 কোটিগ্রহে অনন্ত লিখে তাহার বিস্তার ॥

তবু দিবিহারে মারি বার বার কণা ।  
 উৎসে করিতে করি নিম্নগমন ।  
 জগৎ ভাসিল চৈতন্যলীলার পাখারে ।  
 বার বত শক্তি সেই পাখারে সীতালৈ ।  
 শ্রীরূপ রচনাখ পদে বার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতাম্বুত কহে কৃষ্ণদাস ॥৫৬॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতাম্বুতে মধ্যখণ্ডে বৃন্দা-  
 বনগমনং নাম সপ্তদশ পরিচ্ছেদ ॥১৭॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতাম্বুতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যবরণ শ্রীশ্রামালানন্দারবিন্দ-সেবি বিনোদবিহারি-  
 গোবামি কৃতাবরণোদিনি ও সুবোধিনী সমন্বিত বৃন্দাবনগমন  
 নাম সপ্তদশপরিচ্ছেদ ॥ ১৭ ॥

### অষ্টাদশ পরিচ্ছেদ ।



বৃন্দাবনে হিরচরানন্দন স্বাবলোকনৈঃ ।  
 আস্থানক তদালোক্যগৌরাকঃ পরিতোহব্রমৎ ॥১॥  
 গৌরাকঃ বৃন্দাবনে স্বাবলোকনৈঃ ( স্বদর্শন-  
 দ্বানৈঃ ) হিরচরান্ ( স্বাবরান্ অলমাস্ত ) তদা-  
 লোক্যং ( তেবাং স্বাবরামিখাম্ অবলোকং প্রাপ্য )  
 আস্থানক চ নন্দরন্থ ( সন্থ ) পরিতঃ ( ইতস্ততঃ )  
 অব্রমৎ ॥ ১ ॥

শ্রীবৃন্দাবনে শ্রীগৌরাক স্বীয় অব-  
 লোকন স্বারা স্বাবর-জলমতে এবং  
 আপনাকে বৃন্দাবনদর্শন স্বারা আনন্দ  
 প্রদান করতঃ ইতস্ততঃ জমপ করিয়া-  
 হিলেন ॥ ১ ॥

অন্য দেশে প্রেম উথলে বৃন্দাবন নামে ।  
 সাক্ষাৎ জমরে এবে সেই বৃন্দাবনে ।

এইমত মহাপ্রজ্ঞ নাচিতে নাচিতে ।  
 আরিট গ্রামে আইলা বাহু হৈল আচম্বিতে  
 আরিটে রাখুকুণ্ডবার্তা পুছে লোকস্থানে  
 কেহ নাহি কহে সেই জ্ঞানকর না জানে ॥১॥  
 তীর্থলোপ জানি প্রভু সর্কজ তগবান্ ।  
 দুই ধান্য ক্ষেত্রে অল্প জলে কৈল মান ॥  
 দেখি সব গ্রামী লোকের বিন্দর হৈল মন  
 প্রভু প্রেমে করে রাখুকুণ্ডের স্তবন ॥  
 সর্কগোপী বৈতে রাখা কৃষ্ণের ধোয়নী ।  
 তৈছে রাখুকুণ্ড শ্রীর গিরীর সরনী ॥২॥

রাখি আদিলীলার চক্রে উভচারিণে-  
 মোকখণ্ডসুসুপকরন  
 বনগমনে শ্রীচৈতন্যভাবতাম্বুতঃ শ্রীচৈতন্যভাবতাম্বুতঃ  
 মধ্যখণ্ডে বৃন্দাবনগমনং নাম সপ্তদশপরিচ্ছেদ ॥ ১৭ ॥

বেই কুণ্ডে মিত্র কৃষ্ণ রাধিকার মিলে ।  
 কপে কলকোলি করে জীরে মনসে ॥  
 সেই কুণ্ডে বেই একবার করে স্থান ।  
 তারে কৃষ্ণ রাধিকার প্রেম দেন দান ॥  
 কুণ্ডের সাধুসী বেন রাধার মধুরিমা ।  
 কুণ্ডের মহিমা বেন রাধার মহিমা ॥৩॥

তথাহি গোবিন্দগীতায়ুতে সপ্তমর্গে ষাধিক-  
 পততমোঃ—

শ্রীরাধেব হরেন্তরীমসরনী প্রেটাতুতঃ বৈশুপৈ-  
 বস্যাং শ্রীভূতমাথবেকুরনিশং শ্রীত্যা তরা ক্রীড়তি ।  
 প্রেমামিন্ বত রাধিকেষ লভতে বস্যাং সক্রংমানক্রং  
 ভগ্যা বৈ মহিমা তথা মধুরিমা কেনাস্ত বর্ণ্যঃকিতৌঃ

শ্রীরাধা ইব তরীমসরনী (রাধাকুণ্ড) অদুতৈঃ  
 (চবৎকারবিত্তিঃ) বৈঃ (অসাধারণঃ) শুপৈঃ  
 (বিভববক্রংপাবনাবিত্তিঃ) হরেঃ (শ্রীকৃষ্ণস্য)  
 প্রেটাতা (অতীব ক্রীড়িবিত্তা) বস্যাং (কুণ্ডে)  
 শ্রীভূতমাথবেকুঃ (শ্রীকৃষ্ণচক্রঃ) তরা (রাধায়া সহ)  
 শ্রীত্যা অমিন্ (অবিরতঃ) ক্রীড়তি । বস্যাং  
 (কুণ্ডে) সক্রং (একবারং) মানক্রং (জনঃ)  
 অমিন্ (হরৌ) বত (অশ্চর্য্যং) রাধিকা ইব  
 প্রেমা লভতে, তথা ভগ্যাঃ (কুণ্ডস্য) মহিমা  
 মধুরিমা (চ) কিতৌ (পৃথিব্যাং) কেন (অনেন)  
 বর্ণ্যঃ (বর্ণনীযঃ) অস্ত ? ॥ ৩ ॥

শ্রীরাধার ন্যায় শ্রীরাধাকুণ্ড সর্বজন-  
 চমৎকার ও অসাধারণ গুণ হেতু  
 শ্রীকৃষ্ণের অতীব প্রিয় । অজ্ঞের পূর্ণচক্র  
 শ্রীকৃষ্ণ উহার গুণে বশীভূত হইয়া  
 উহাতে নিরন্তর শ্রীরাধার ললিত বিহার  
 করিয়া থাকেন; যে ব্যক্তি উহাতে  
 একবার ভ্রম করেন, তিনি শ্রীরাধার  
 ন্যায় শ্রীকৃষ্ণকে প্রেম লাভ করেন । এই  
 কুণ্ডের মহিমা এবং রাধার শিখিতলে  
 প্রেম লাভ করিবার সর্ব সারস্বত

এইরূপ ভক্তি করে প্রেমলাভ হয় ।  
 জীরে মৃত্য করে কুণ্ডলীলা মধুরিমা ॥  
 কুণ্ডের মৃত্তিকা ময়া তিলক করিল ।  
 ভট্টাচার্য্য দ্বারা মৃত্তিকা সঙ্কে কিছু লৈল ॥  
 তবে চলি আইলা প্রভু সুমনসরোবল ।  
 তাহা গোবর্জন দেখি হইলা বিহ্বল ॥  
 গোবর্জন দেখি প্রভু হৈলা দণ্ডবত ।  
 এক শীলা আলিঙ্গিয়া তৈল উনমত ১৪৪  
 প্রেমে মত্ত চলি আইলা গোবর্জন প্রাম ।  
 হরিদেব দেখি তাঁরে করিলা প্রণাম ॥  
 মধুরা পছের পশ্চিমদলে বার বাস ।  
 হরিদেব নারায়ণ আদি পরকাশ ॥  
 হরিদেব আগে নাচে প্রেমে মত্ত হয় ।  
 দেখিতে আইল লোক আশ্চর্য্য শুনিয়া ॥  
 প্রভু-প্রেমসৌন্দর্য্য দেখি লোকে চমৎকার  
 হরিদেব ভূত্য প্রভুর করিমা সংকার ১৫৪  
 ভট্টাচার্য্য অক্ষকুণ্ডে পাকক্রিয়া কৈলা ।  
 অক্ষকুণ্ডে স্থান করি প্রভু ভিক্ষা কৈলা ॥  
 সেই রাজি রহিলা হরিদেবের মন্দিরে ।  
 রাত্রে মহাপ্রভু মনে করিলা বিচারে ॥  
 গোবর্জন উপরে আমি কতু না চড়িব ।  
 গোপাল দেবের দর্শন কেমনে পাইব ॥  
 এত মনে করি প্রভু মৌন ধরি রহিলা ।  
 জানি গোপাল স্নেহভর ভদ্রী উঠাইলা ১৬৪

তথাহি এইকারণ্য—  
 অনাকরকবে শৈলং বসৈ তত্কাভিনানিকৈঃ ।  
 অবলম্ব গিরেঃ কৃকা গৌরার বনবর্ষণং ১৬৪  
 কৃকঃ গিরেঃ (গৌবর্ধনং) অবলম্ব (অবতীর্ণ্য)  
 শৈলং অনাকরকবে (আরোহ্য ম্ অস্তিত্যে কৃকঃ)  
 তত্কাভিনানিকৈঃ (স্বপ্নায়াঃ স্বপ্নাভ্যাসেব স্বপ্ন-  
 স্বপ্নাভ্যাসে) গৌরার (গৌবর্ধনোদ্ভাব্য)



ভ্রামকাকার) বনৈ (আকনে) বম্ (আসানম্) ।  
অদর্শনং ॥ ৪ ॥

গোবর্জন হইতে অবতরণ করিয়া  
গোপালদেব, পর্ত্তে আরোহণ করিতে  
অনিক্কক ভক্তাভিমাত্রী রাধাকান্তি দ্বারা  
শ্রামকান্তি সম্বাদিত আপনাকে  
অদর্শন দান করিয়াছিলেন ॥৪॥

অনুকূট নাম গ্রামে গোপালের স্থিতি ।  
রাজপুতলোকের সেই গ্রামেতে বসতি ॥  
একজন আসি রাজে গ্রামিকে কহিল ।  
তব গ্রাম মন্দিতে তুড়ুকধারী সাজিল ॥  
আজি রাজে পলাহ না রহিও একজন ।  
ঠাকুর লঞা ভাগ আসিবে কালযবন ॥  
শুনিয়া গ্রামের লোক চিত্তিত হৈল ।  
প্রথমে গোপাল লঞা গাঠুলিগ্রামেথুইল ॥  
বিশ্রম্ভে গোপালের নিভূতে সেবন ।  
গ্রাম উজাড় হৈল পলাইল সর্কজন ॥  
এহে স্নেহভয়ে গোপালভাগেবারেবারে  
মন্দির ছাড়ি কুঞ্জে রহে কিবা গ্রামান্তরে ॥  
প্রাতঃকালে প্রভু মানসগঙ্গার করি স্বান ॥  
গোবর্জন পরিক্রমার করিলা প্রয়াণ ॥  
গোবর্জন দেখি প্রভু প্রেমাবিষ্ট হয় ।  
নাচিতে লাগিলা এই শ্লোক পড়িয়া ॥৬॥

তথাহি শ্রীমতঃপুস্তকে বন্দনক্বে একবিংশোধ্যায়ে  
নট্যবশয়োঃ—

কৃত্যমস্মিন্ধমা হরিনামবধো-  
বহাবিকৃতকলপপ্রমোঃ ।  
মানসঃকলিতঃ মহেশ্বরেণোত্তমোর্বৎ  
পানীয়বহুরসকলমূল্যে ॥৬॥

( ৬ ) কৃত্যমস্মিন্ধমা হরিনামবধো-  
বহাবিকৃতকলপপ্রমোঃ ।  
মানসঃকলিতঃ মহেশ্বরেণোত্তমোর্বৎ  
পানীয়বহুরসকলমূল্যে ॥৬॥

চরণপদে প্রমোহে বহু ভাষাঃ কৃত্যমস্মিন্ধমা  
মহেশ্বরেণোত্তমোর্বৎ পানীয়-  
বহুরসকলমূল্যে ( পানীয়ঃ সুবর্ণলো গোহন-  
কূপেঃ কল্যেঃ কল্যাঃ সুক্লিঃ তুঃগোহিতঃ ) মানস-  
ভনোক্তি ॥ ৬ ॥

হে অবলাগণ । এই গোবর্জন গিরি  
নিশ্চয় হরিনামশ্রেষ্ঠ : কারণ, ইনি রাস-  
কৃষ্ণের চরণস্পর্শে প্রেমোদিত হইয়া  
পানীয় উৎকৃষ্ট ভূগ কন্দর কন্দ ও মূল দ্বারা  
গো ও গোপালগণের সহিত কৃকবল-  
রামের যথোচিত পূজা করিতেছেন ॥৫॥

গোবিন্দকুণ্ডাদি তীর্থে প্রভু কৈল স্বানে ।  
তথাই শুনিল গোপাল গাঠুলিগ্রামে ॥  
সেই গ্রামে গিয়া কৈল গোপাল দর্শন ।  
প্রেমাবেশে প্রভু করে কীর্তন নর্ত্তন ॥  
গোপালের সৌন্দর্য দেখি প্রভুর আবেশ  
এই শ্লোক গঢ়ি নাচে হৈল দিন শেষ ॥৬॥

তথাহি তজ্জিরসামুতসিকৌ দক্ষিণবিভাগে  
বিভাবলংঘ্যেঃ ষড়বিংশশ্লোকঃ—

বামভামরসাক্ষ্য ভূমদণ্ডঃ স পাতু বঃ ।  
জ্যাডাকন্দুভতাং যেন নীতো গোবর্জনে গিরিঃ ॥৭॥  
যেন (বামভূমদণ্ডেণ) গোবর্জনঃ গিরিঃ ক্রীড়া-  
কন্দুভতাং নীতঃ ( প্রান্তঃ ) ভামরসাক্ষ্য ( পদ-  
নয়নস্য শ্রীকৃষ্ণস্য ) সঃ ( প্রসিদ্ধঃ ) বাসঃ ভূমদণ্ডঃ  
বঃ ( বুদ্ভাবং ) পাতু ॥ ৬ ॥

যিনি গোবর্জন পর্ত্তে কঙ্কতুল্য  
বামদণ্ডে উর্কে ধারণ করিয়াছিলেন, গায়-  
নরন শ্রীকৃষ্ণের সেই বাসদত্ত ভোমা-  
দিগকে রক্ষা করুন ॥ ৬ ॥

এইমত ভিন্ন ভিন্ন গোপাল দেখিল  
চতুর্দশবর গোপালসে স্মরণে করিল  
গোপাল কঙ্কতুল্যে কঙ্কতুল্যে কঙ্ক  
কঙ্কতুল্যে কঙ্কতুল্যে কঙ্কতুল্যে কঙ্ক

গোপালস্বরূপে বসি অতু হেনা ভলে ।  
 প্রভু বাহ্যসিদ্ধির করিল গোপালে ॥  
 এইমত গোপালের করণ স্বভাব ।  
 সেই ভক্তের যবে দেখিতে হয় ভাব ॥  
 দেখিতে উৎকর্ষা হয় না চড়ে গোবর্জনে  
 কোন ভুলে গোপাল উতরে আপনে ॥  
 কতু কুঞ্জে রহে কতু রহে গ্রামান্তরে ।  
 সেই ভক্ত তাঁহা আসি দেখয়ে তাঁহারে ॥১০  
 পর্কতে না চড়ে হুই রূপ সনাতন ।  
 এইরূপে তা সবারে দিয়াছেন দর্শন ॥  
 রক্তকালে রূপ না পারে দূরে যাটতে ।  
 বাহ্য হৈল গোপালের সৌন্দর্য দেখিতে  
 স্নেহভরে গোপাল আইল মথুরা নগরে ।  
 একমাস রহিলা বিষ্ঠলেখনঘরে ॥  
 তবে রূপগোসাঞি সব নিজগণ লয়া ।  
 এক মাস দর্শন কৈলা মথুরা রহিয়া ॥১১  
 সঙ্গত গোপালভট্ট দাস রঘুনাথ ।  
 রঘুনাথ ভট্টগোসাঞি আর লোনাথ ॥  
 ভুগর্ভগোসাঞি আর শ্রীচীবগোসাঞি ।  
 শ্রীবাদবাচার্য আর গোবিন্দগোসাঞি ॥  
 শ্রীউদ্ধবদাস আর মাধব দুইজন ।  
 শ্রীগোপালদাস আর দাসনারায়ণ ॥  
 গোবিন্দ ভক্ত আর বাণী কৃষ্ণদাস ।  
 পুণ্ডরীকাক্ষ ঈশান লঘু হরিদাস ॥ ১২ ॥  
 এই সব মুখ্য ভক্ত লঞা নিজসঙ্গে ।  
 শ্রীগোপাল দর্শন কৈল বহুরঙ্গে ॥  
 একমাস রহি গোপাল নিজস্থানে গেলা ।  
 শ্রীরূপগোসাঞি শ্রীরুক্মাবন আইলা ॥  
 প্রত্যবে করিল গোপালরূপার আশ্বাসনে  
 তলে কহায়েকু সেলা কাম্যকবলে ॥  
 প্রভুত পদম-সিদ্ধি পূর্ক বে কহিল ।  
 গোপাল রূপস্বরূপ স্বরূপ আশ্বিন ॥

তাঁহা লীলাস্থান দেখি গেলা নন্দীধর ।  
 নন্দীধর দেখি হৈলা প্রেমোত্তে বিহ্বল ॥  
 পাবনাদি সরকুণ্ডে স্নান করিয়া ।  
 লোকেনে পুছিল পর্কত উপরে চটিয়া ॥  
 কিছু দেবমূর্তি হয় পর্কত উপরে ।  
 লোক কহে মূর্তি হয় গোফান ভিতরে ॥১৪  
 হুইদিকে মাতা পিতা পুষ্ট কলেবর ।  
 মধ্যে এক শিশু হয় ত্রিতল সুন্দর ॥  
 শুনি মহাপ্রভু মনে আনন্দ পাইয়া ।  
 তিনমূর্তি দেখে সেই গোফা উবাড়িয়া ॥  
 ব্রজেন্দ্র-ব্রজেশ্বরী কৈল চরণ বন্দন ।  
 প্রেমাবেশে কৃষ্ণের কৈল সর্কাক স্পর্শন ॥  
 সব দিন প্রেমাবেশে মৃত্য গীত কৈলা ।  
 তাহা হৈতে চলি প্রভু খদির বন আইলা ॥  
 লীলাস্থল দেখি দেখি গেলা শেষাশ্রী ।  
 লক্ষ্মী দেখি এই স্রোক পঢ়েন গোসাঞি ॥১৫

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে বড়বিশ্বমোহ-  
 যুক্তশ্রীমত্তাগবত্তবচনম্—  
 যৎ তে হুদ্রাতচরণাশুকহং স্তনেহু  
 শীতাঃ শনৈঃ প্রিয় দ্বীমহি কর্কশবু ।  
 তেনাটবীমটসি তদ্ব্যখতে ন কিংবিৎ  
 কুর্পাদিক্রমতি বীর্ভবদায়ুধাং নঃ ॥ ৭ ॥

তবে খেলাতীর্ষ দেখি ভাগির বন আইলা  
 যমুনাতে পার হৈঞা ভ্রম্বন গেলা ॥  
 শ্রীবন দেখি পুনঃ গেল লৌহবন ।  
 মহাবন গিয়া জঙ্গস্থান দর্শন ॥  
 যমলাঞ্ছন ভক্তনাদি দেখি লীলাস্থল  
 প্রেমাবেশে প্রভুর মন হৈল টলমল ॥  
 গোকুল দেখিয়া আইলা মথুরানগরে ।  
 জঙ্গস্থান দেখি রহে সেই বিজ্ঞঘরে ॥  
 লোকের সবট দেখি মথুরা কাড়িয়া  
 একমাসে লক্ষমতীর্ষ রহিয়া আইয়া ॥

আর দিন প্রভু আইলা দেখিতে বন্দাবন ।  
 কাশিক্রমে গান কৈল আর প্রসঙ্গন ॥  
 দ্বাদশাদিত্য তীর্থ হৈতে কেশীতীর্থ আইলা  
 রাসধনী দেখি প্রেমে মূর্ছিত হইলা ॥  
 চেতন পাইয়া পুনঃ গড়াগড়ি যায় ।  
 হাসে নাচে কান্দে পড়ে উচ্ছ্বরে গায় ॥১৭  
 এই রঙ্গে সেই দিন তাহা গোয়াইলা ।  
 সক্ষ্যাতে অক্রুরে আসি ভিক্ষা নির্কাইলা ॥  
 প্রাতে বন্দাবনে কৈল চীরঘাটে স্নান ।  
 তেতুগীর তলাতে আসি করিলা বিশ্রাম ॥  
 রুঞ্চনীলাকালের সেই রক্ষ পুরাতন ।  
 তার তলে পিণ্ডিবাক্সা পরম চিকণ ॥  
 নিকটে বসুনা বহে শীতল সমীর ।  
 বন্দাবন শোভা দেখে যগুনীর নীর ॥১৮  
 তেতুগীর তলে বসি করেন কীর্তন ।  
 মধ্যাহ্ন করি আসি করে অক্রুরেভোজন ॥  
 অক্রুরের লোক আগে প্রভুরে দেখিতে ।  
 লোকভীড়ে স্বচ্ছন্দে নাবে একীর্জনকরিতে ॥  
 বন্দাবনে আসি প্রভু বসিয়া একান্তে ।  
 নাম কীর্তন করে মধ্যাহ্ন পরান্তে ॥  
 তৃতীয় প্রহরে লোক পায় দরশন ।  
 গারে উপদেশ করে নাম সঙ্গীর্জন ॥  
 হেনকালে আইলা বৈষ্ণব রুঞ্চদাস নাম ।  
 রাজপাক্ষ্যতি গৃহস্থ বসুনা পারে গ্রাম ॥১৯  
 বেশিমান করি হৈলো কালিদহ যাইতে  
 আমদীতলাতে প্রভু দেখে আচম্বিতে ॥  
 প্রভুর রূপ প্রেম দেখি হৈলো চমৎকার ।  
 দণ্ডনঃ হঞা প্রভুকে করে নমস্কার ॥  
 প্রভু কহে কে তুমি কাঁহা তোমার ঘর ।  
 রুঞ্চদাস কহে মুঞি গৃহস্থ পামর ॥  
 রাজপুত্র জাতি মুঞি, পারে মোর ঘর ।  
 মোর ইচ্ছা হয় হও বৈষ্ণবকিঙ্কর ॥

কিন্তু আজি মুঞি এক স্বপন দেখিলু ।  
 সেই স্বপ্ন পরতেক তোমা আসি পাইলু ॥  
 প্রভু তারে রূপা কৈল আলিঙ্গন করি ।  
 প্রেমে মত্ত হৈল নাচে বলে হরি হরি ॥২০  
 প্রভু সঙ্গে মধ্যাহ্নে অক্রুরতীর্থে আইলা ।  
 প্রভুর অবশিষ্টপাত্র প্রানাদ পাইলা ॥  
 প্রাতে প্রভু সঙ্গে আইলা জলপাত্র লয়া ।  
 প্রভু সঙ্গে রহে গৃহ শ্রী পুত্র ছাড়িয়া ॥২১  
 বন্দাবনে পুনঃ রুঞ্চ প্রকট হইলা ।  
 বাঁহা তাঁহা লোক সব কহিতে লাগিলা ॥  
 একদিন মথুরার লোক প্রাতঃকালে ।  
 বন্দাবন হৈতে আইসে করি কোলাহলে  
 প্রভু দেখি লোক কৈল চরণ বন্দন ।  
 প্রভু কহে কাঁহা হৈতে কৈলে আগমন ॥  
 লোক কহে রুঞ্চ প্রকট কালিদহজলে ।  
 কালিশিরে নৃত্য করে, ফণি রত্নজলে ॥  
 সাক্ষাৎ দেখিল লোক নাহিক বিস্ময় ।  
 শুনি হাসি কহে প্রভু সব সত্য হয় ॥ ২২  
 এইমত তিন রাত্রি লোকের গমন ।  
 তবে আসি কহে রুঞ্চের পাইল দর্শন ॥  
 প্রভু আগে কহে লোক শ্রীকৃষ্ণ দেখিল ।  
 সরস্বতী এই বাক্য সত্য কহাইল ॥  
 মহাপ্রভু দেখি সত্য রুঞ্চ দর্শন ।  
 নিজাক্ষানে সত্য ছাড়ি অসত্যোপভ্রম ॥  
 ভট্টাচার্য্য কহে তবে প্রভুর চরণে ।  
 সাক্ষাৎ দেখ যাই করি রুঞ্চদর্শনে ॥২৩  
 তবে প্রভু কহে তারে চাপড় মারিয়া ।  
 মূর্খের বাক্যে মূর্খ হও পণ্ডিত হইয়া ॥  
 রুঞ্চ কেনে দর্শনে দিবেন কলিকালে ।  
 নিজ ভ্রমে মূর্খলোক করে কোলাহলে ॥  
 বাতুল না হও রহ স্বরেত বসিয়া ।  
 রুঞ্চ দর্শন করিহ কালি রাতে যাঞা ॥২৪

প্রাতঃকালে ভব্যলোক প্রভুস্থানে আইলা ।  
 কৃষ্ণ দেখি আইলা প্রভু তাহারে পুছিয়া ।  
 লোক কহে রাতে কৈবর্ত্ত নৌকাতে চট্টিয়া  
 কালিদহে মৎস্য মাঝে দেউটি জালিয়া ॥  
 দূরে হৈতে তাহা দেখি লোকের হয় ভ্রম ।  
 কালির শরীরে কৃষ্ণ করিছে নর্ত্তন ॥২৫॥  
 নৌকাতে কালিয় জ্ঞান দীপে রজ্জুজ্ঞানে ।  
 জালিয়াকে মূৰ্খলোক কৃষ্ণ করি মানে ॥  
 রন্দাবনে কৃষ্ণ আইলা এই সত্য হয় ।  
 রন্দাকে দেখিল লোক এহো গিথ্যা নয় ॥  
 কিস্তি কাঁহে কৃষ্ণ দেখে ভ্রমে কাঁহো মানে  
 স্থাপুপুরুষে যৈছে বিপন্নীত জ্ঞানে ॥২৬॥  
 প্রভু কহে কাঁহা পাইলে কৃষ্ণদরশন ।  
 লোক কহে সন্ন্যাসী তুমি জন্ম নারায়ণ ।  
 রন্দাবনে হৈলা তুমি কৃষ্ণ অবতার ।  
 তোমা দেখি সব লোক হৈল নিস্তার ॥২৭॥  
 প্রভু কহে বিষ্ণু বিষ্ণু ইহা না করিয় ।  
 জীবাধমে বিষ্ণুজ্ঞান কভু না করিহ ॥  
 সন্ন্যাসী চিংকণ জীব কিরণকণম ।  
 যতৈশ্বর্য্যপূর্ণ কৃষ্ণ হয় সূর্য্যোপম ॥  
 জীব আর ঈশ্বরতত্ত্ব কভু নহে সম ।  
 অলদয়িরাশি যৈছে ক্ষুলিপ্তের কণ ॥২৮॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমস্কন্ধে সপ্তমাধ্যায়ে  
 ষষ্ঠশ্লোকে ভাবার্থদীপিকায়াম্ ধৃতং শ্রীবিষ্ণুস্বামি-  
 বচনম্—

হ্লাদিনী সংবিদ্যম্লিষ্টঃ সচ্চিদানন্দ ঈশ্বরঃ ।  
 স্বাবিদ্যাসংযুক্তো জীবঃ সংক্লেপনিকরাকরঃ ॥৮

ঈশ্বরঃ (শ্রীকৃষ্ণঃ) হ্লাদিন্যা সংবিদা (চ  
 স্বরূপভূত্যা শক্ত্যা) আলিষ্টঃ (আলিঙ্গিতঃ, অন্ত-  
 এব) সচ্চিদানন্দঃ । জীবঃ (তু) স্বাবিদ্যাসংযুক্তঃ  
 (সেবাৎ মূলভতস্ত ভগবতঃ অজ্ঞানেন আবৃতঃ সন্)  
 সংক্লেপনিকরাকরঃ (সংক্লেপানাৎ নিষ্করণ্য সমুহস্ত  
 আকরঃ খনিঃ) ॥ ৮ ॥

যিনি স্বরূপভূত হ্লাদিনী এবং সন্নিৎ  
 শক্তি দ্বারা আলিঙ্গিত, তিনিই অখণ্ড  
 সচ্চিদানন্দ ঈশ্বর শ্রীকৃষ্ণ । যিনি স্ব-স্বরূপ  
 ভগবত্ত্বের অজ্ঞানে সমায়ত হইয়া  
 বিবিধ ক্লেশের খনিষ্করূপ তিনিই জীব ॥৮॥  
 যেই মূঢ় কহে জীব, ঈশ্বর হয় সম ।

সেইত পাষণ্ডী হয় দণ্ডে তারে যম ॥ ২৯॥

তথাহি হরিত্তিক্তিবলাসে প্রথমবিলাসে  
 ত্রিসপ্ততিতমশ্লোকঃ—

যস্ম নারায়ণং দেবং ব্রহ্মরুদ্রাদিদৈবতৈঃ ।

সমত্বেনৈব বীক্ষেত স পাষণ্ডী ভবেৎ জ্ঞবম্ ॥৯

যঃ ( জনঃ ) তু নারায়ণং দেবং ব্রহ্মরুদ্রাদি-  
 দৈবতৈঃ সমত্বেন ( সমানতয়া ) এব বীক্ষেত  
 ( আলোচয়েৎ ) স জ্ঞবৎ ( নিশ্চিতং ) পাষণ্ডী  
 ভবেৎ ॥ ৯ ॥

যে ব্যক্তি ব্রহ্ম এবং রুদ্রাদি দেবগণের  
 সহিত নারায়ণকে সমান করিয়া আলো-  
 চনা করে, সে নিশ্চয় পাষণ্ডী ॥ ৯ ॥

লোক কহে তোমাতে কভু নহে জীব মতি  
 কৃষ্ণের সদৃশ তোমার আকৃতি প্রকৃতি ॥  
 আকৃতে তোমাকে দেখি ব্রজেস্ত্রনন্দন ।  
 দেহকান্তি পীতাম্বর কৈলে আচ্ছাদন ॥

মুগমদ বস্ত্রে বান্ধি তবু না লুকায় ।  
 ঈশ্বরপ্রভাব তোমার ঢাকা নাহি যায় ॥

অলৌকিক শক্তি তোমার বুদ্ধি-অগোচর ।

তোমা দেখি কৃষ্ণপ্রোমে জগৎ পাগল ॥৩০

শ্রী বাল ব্রহ্ম কিবা চণ্ডাল যবন ।

যেই তোমা একবার পায় দরশন ॥

কৃষ্ণনাম লয় নাচে হয় উনমত ।

আচার্য্য হইল সেই তারিল জগত ॥

দর্শনের কার্য্য আছুক যে তোমা নাম শুনে

সেহো কৃষ্ণপ্রোমে মস্ত তারে ত্রিভুবনে ॥

তোমার নাম শুনি হয় খপচ পাবন ।  
 অলৌকিক শক্তি তোমার না যায় কখন ৷১  
 তথাহি মধ্যমীলায়াং ষোড়শে তৃতীয়শ্লোকখু-  
 ত্রীমদ্ভাগবতবচনম্—  
 যন্নামধেষশ্রবণানুকীর্ণনাং  
 যৎ প্রেক্ষণাদ্ যৎ স্মরণাদপি কচিৎ ।  
 ষাদোচপি সন্তঃ সর্বনায় করন্তে  
 কুতঃ পুনন্তে ভগবন্নুদর্শনাৎ ॥ ১০ ॥

এইমত মহিমা তোমার তটস্থ লক্ষণ ।  
 স্বরূপ লক্ষণে তুমি ব্রহ্মেশ্বরনন্দন ॥ ৩৩ ॥  
 সেই সব লোকে প্রভু প্রসাদ করিলা ।  
 প্রেমনামে মন্তলোক নিজঘর গেলা ॥  
 এইমত কথোদিন অক্রুরে রহিলা ।  
 কৃষ্ণনাম প্রেম দিয়া লোক নিস্তারিলা ॥  
 মাধবপুরীর শিষ্য সেইত ব্রাহ্মণ ।  
 মথুরাতে ঘরে ঘরে করায় নিমন্ত্রণ ॥  
 মথুরার যত লোক ব্রাহ্মণ সম্বন্ধন ।  
 ভট্টাচার্য্য স্থানে আসি করে নিমন্ত্রণ ॥  
 একদিন দশ বিশ আসে নিমন্ত্রণ ।  
 ভট্টাচার্য্য একমাত্র করেন গ্রহণ ॥  
 অবসর না পায় লোক নিমন্ত্রণ দিতে ।  
 সেই বিপ্রে সাধে লোক নিমন্ত্রণ নিতে ৩৪  
 কান্যকূজ দাক্ষিণাত্য বৈদিক ব্রাহ্মণ ।  
 দৈন্য করি করে আসি প্রভুব নিমন্ত্রণ ॥  
 প্রাতঃকালে অক্রুরে আসি রন্ধন করিয়া ।  
 প্রভুকে ভিক্ষা দেন শালগ্রামে সমর্পিয়া ॥  
 একদিন অক্রুরঘাটের উপরে ।  
 বসি মহাপ্রভু মনে করেন বিচারে ॥  
 এই ঘাটে অক্রুর বৈকুণ্ঠ দেখিল ।  
 ব্রজবাসী লোক গোলোক দর্শন পাইল ৩৫  
 এত বলি ঝাঁপ দিল জলের উপরে ।  
 ভবিয়া রহিলা প্রভু জলের ভিতরে ॥

দেখি কৃষ্ণদাস কান্দি ফুকার করিল ।  
 ভট্টাচার্য্য শীত্র আসি প্রভু উঠাইল ॥  
 তবে ভট্টাচার্য্য সেই ব্রাহ্মণ লইয়া ।  
 যুক্তি করিল কিছু নিভূতে বসিয়া ॥  
 আজি আমি আছিলাম উঠাইল প্রভুরে ।  
 রন্দাবনে ডুবে যদি কে উঠাবে তাঁরে ॥  
 লোকের সংঘটে নিমন্ত্রণের জঞ্জাল ।  
 নিরন্তর আবেশ প্রভুর না দেখিয়ে ভাল ।  
 রন্দাবন হৈতে যবে প্রভুরে কাড়িয়ে ।  
 তবে সে মঙ্গল এই কোন যুক্ত্যে হয়ে ৩৬  
 বিপ্র কহে প্রয়াগে প্রভুরে লঞা যাই ।  
 গঙ্গাতীর-পথে যাই তবে সুখ পাই ॥  
 সোরোক্ষেত্রে যাই আগে করি গঙ্গাস্নান ।  
 সেই পথে প্রভু লঞা করিয়ে প্রয়াগ ॥  
 মাঘমাস লাগিল আসি ইবে যদি যাঠয়ে ।  
 মকরে প্রয়াগ স্নান কথোদিনে পাইয়ে ॥  
 আপনার দুঃখ কিছু কবি নিবেদন ।  
 মকর প্রাশংসি প্রয়াগ করিহ সূচন ॥  
 গঙ্গাতীর-পথে সুখ জানাইহ তাঁরে ৩৭  
 ভট্টাচার্য্য আসি তবে কহিল প্রভুরে ॥  
 সহিতে না পারি প্রভু লোকের গড়বাড়ি ।  
 নিমন্ত্রণ লাগি লোক করে ছড়াছড়ি ॥  
 প্রাতঃকালে আসে লোক তোমাকেনাপায়  
 তোমার লাগ না পাইয়া মোর মাথাখায় ॥  
 তবে সুখ যবে গঙ্গাতীর পথে যাই ।  
 এবে যদি চলি প্রয়াগে মকর স্নান পাই ॥  
 উদ্বিগ্ন হইল চিত্ত সহিতে না পারি ।  
 প্রভুর যেই আজ্ঞা হয় সেই শিরে ধরি ৩৮  
 যদ্যপি রন্দাবন ত্যাগে প্রভুর নাহি মন ।  
 ভক্তেচ্ছা করিতে কহে মধুর বচন ॥  
 তুমি আমা আনি দেখাইলে রন্দাবন ।  
 এই ঋণ আমি করিতে নাহিব পোষণ ॥

যে তোমার ইচ্ছা আমি তাহাই করিব ।  
 বাঁহা লঞা বাহ তুমি তাঁহাই যাইব ॥  
 প্রাতঃকালে মহাপ্রভু প্রাতঃস্নান কৈল ।  
 বৃন্দাবন ছাড়িব জানি প্রেমাবেশে হৈল ॥  
 বাহুবিচার নাহি প্রেমাসিষ্ট মন ।  
 ভট্টাচার্য্য কহে চল যাই মহাবন ॥  
 এত বলি প্রভুকে মৌক্য বনাইয়া ।  
 পার করি ভট্টাচার্য্য চলিলা লইয়া ॥৫৮॥  
 প্রেমী রুঞ্চদাস আর সেইত ব্রাহ্মণ ।  
 গঙ্গাতীর পথে যাইতে বিজ্ঞ দুইজন ॥  
 যাইতে এক বৃক্ষতলে প্রভু বন্য লঞা ।  
 বনিলা সবার পথশ্রান্তি দেখিয়া ॥  
 সেই বৃক্ষ নিকটে চরে বহু গাভীগণ ।  
 তাহা দেখি মহাপ্রভুর উল্লসিত মন ॥  
 আচম্বিতে এক গোপ বাঁশী বাজাইল ।  
 শুনিতেই মহাপ্রভুর প্রেমাবেশ হৈল ॥  
 অচেতন হঞা প্রভু ভূমিতে পড়িলা ।  
 মুখে ফেণ পড়ে নানায় স্বাগরুদ্গ হৈলা ॥৬০॥  
 হেনকালে তাঁহা আমোয়ার দশ আইলা ।  
 স্নেহ পাঠান ঘোড়া গৈতে উত্তরিলা ॥  
 প্রভুরে দেখিয়া স্নেহ করয়ে বিচার ।  
 এই যতি পাশ ছিল সুবর্ণ অপার ॥  
 এই পঞ্চ বাটোয়ার ধুতরা খাওয়াইঞা ।  
 মারি ডারিয়াছে যতির সব ধন লঞা ॥  
 তবে পাঠান সেই পঞ্চ জনেরে বাঙ্কিল ।  
 কাটিতেচাহে গোড়িয়াসব কাঁপিতলাগিল ॥  
 রুঞ্চদাস রাজপুত নির্ভয়সে বড় ।  
 সেই বিপ্র নির্ভয় সে মুখে বড় দঢ় ॥৬০॥  
 বিপ্র কহে পাঠানতোমারপাতদারদোহাট  
 চল তুমি আমি শিকদার পাশ যাই ॥  
 এই যতি আমার গুরু আমি মাধুরব্রাহ্মণ ।  
 পাতদার আগে আমার আছে দশ জন ॥

এই যতি ব্যাধিতে কড়ু হয়েত মুর্ছিত ।  
 অবহিঁ চেতন পাবে হইবে সম্বিত ॥  
 কণেক ইহা বৈগ বাঙ্কি রাখহ সবারে ।  
 ইহাঁকে পুছিয়া তুমি মারিহ আমারে ॥৬১॥  
 পাঠান কহে তুমি পশ্চিমা মাধু দুই জন ।  
 গোড়ীয়া ঠগ এই কাঁপে তিনজন ॥  
 রুঞ্চদাস কহে মোর ঘর এই গ্রামে ।  
 দুই শত তুরকী আছে শতেক কামানে ॥  
 এখন আসিব সব আমি যদি ফুকরি ।  
 ঘোড়াপিড়া লবে লুট তোমা সব মারি ॥  
 গোড়ীয়া বাটপাড় নহে তুমি বাটপাড় ।  
 তীর্থনানী লুট আর চাহ মারিবার ॥৬২॥  
 শুনি পাঠানের মনে সঙ্কোচ হইল ।  
 হেনকালে মহাপ্রভু চেতন পাইল ॥  
 চন্দার করি উঠে মহাপ্রভু বলি হরি হরি  
 প্রেমাবেশে নৃত্য করে উর্দ্ধগাল করি ॥  
 প্রেমাবেশে প্রভু যদি করয়ে চিৎকার ।  
 স্নেহের হৃদয়ে যেন লাগে শেলধার ॥  
 ভয় পাঞা স্নেহ ছাড়ি দিল পঞ্চজন ।  
 প্রভু না দেখিল নিজগণের বন্ধন ॥৬৩॥  
 ভট্টাচার্য্য আমি মরি প্রভু বনাইল ।  
 স্নেহগণ আগে দেখি প্রভুর বাহু হৈল ॥  
 স্নেহগণ আমি দূরে বন্ধিণ চরণ ।  
 প্রভু আগে কহে, এই ঠগ পঞ্চজন ॥  
 এই পঞ্চ মেলি তোমায় ধুতরা খাওয়াইয়া  
 তোমা ধন লৈল তোমা পাগল করিয়া ॥৬৪॥  
 প্রভু কহে ঠগ নহে মোর সঙ্গীজন ।  
 ভিক্ষুক সন্ন্যাসী মোর নাহি কিছু ধন ॥  
 মৃগীব্যাদিতে মুঞি কড়ু হই অচেতন ।  
 এই পঞ্চ দয়া করি করেন পালন ॥  
 সেই স্নেহ মধ্যে এক পরম গস্তীর ।  
 কালাবজ্র পরে তারে লোকে কহে পীর ॥

চিত্ত আত্ম হৈল তার প্রকৃষ্ণে নিখিয়া ।  
 নিরীশেব এক স্বাপে অশান্তি উরিয়া ।  
 অধর ব্রহ্মবাদ সেই করিল তাগন ।  
 তারি শাস্ত্র বৃত্তে প্রকৃষ্ণ করিল অশুন ।  
 সেই স্বাপি কহে প্রভু সকল খণ্ডিল ।  
 উত্তর না আলি মুখে মহাস্তম্ব হৈল ॥৪৫  
 প্রভু কহে তব শাস্ত্রে স্বাপে নিরীশেবে ।  
 তাহা খণ্ডি সবিশেষ স্থাপিরাছে খেবে ॥  
 জোমার শাস্ত্র শেবে কহে এক ঈশ্বর ।  
 বৈভব্যা পূর্ণ তেঁহো শ্রাম কলেবর ।  
 সংচিৎ আদমক দেহ পূর্ণ ব্রহ্মরূপ ।  
 সর্গাঙ্ক সর্গক নিত্য সর্গাদি স্বরূপ ।  
 সৃষ্টি স্থিতি প্রলয় তাঁহা হৈতে হয় ।  
 সুল পুত্র অগতের তেঁহো সমাশ্রয় ॥  
 সর্গশ্রেষ্ঠ সর্গাধ্য কারণের কারণ ।  
 তাঁর তত্ত্ব হয় জীবের সংসার তারণ ॥৪৬  
 তাঁর সেবা বিনা জীবের না যায় সংসার ।  
 তাঁহার চরণে শ্রীতি পুরুষার্থ সার ॥  
 মোক্ষার্থ আনন্দ যার নহে এক কণ ।  
 পূর্ণ নিন্দ্র প্রাপ্তি তাঁর চরণ সেবন ।  
 কর্ম জ্ঞান যোগ আগে করিয়ে স্থাপন ।  
 সকল খণ্ডিয়া স্থাপে ঈশ্বরসেবন ॥  
 স্রোতার পণ্ডিত সবে নহি শাস্ত্রজ্ঞান ।  
 পূর্কারণ বিধিযে পর বলবান্ ॥  
 নিরুপায় যথ সুবি বিচার করিয়া ।  
 কিবা নিবিয়াছে খেয়ে নির্ধর করিয়া ॥৪৭  
 রসক কহে বে কহ সেই সত্য হয় ।  
 শাস্ত্রে নিরিয়াছে কেহো লৈতে তা পারিল  
 নিরীশেব যোগ্যকি লঞা করেন ব্যাখ্যান  
 তাহার মোক্ষার্থে সেবা করিবে তাহি জান  
 সেইত পুণ্যকর্ম যদি সত্য করিলেক  
 মোক্ষের সূত্র বহু কহিবে তাহি সঙ্গীত

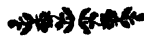
অনেক সোপান যদি কহিবে তাহাতে  
 সাধাসাধন বহু নাহি নিরীশেব  
 জোমা কৈকি জিহবা খোলি সত্ব কুবরাম ।  
 মানি বড় জানী এই সেল অধিনায়ক  
 কৃপা করি কহ মোমে সাধাসাধন  
 এত বলি পড়ে সেই প্রভুর চরণে ॥  
 প্রভু কহে উঠ কুবরাম তুমি বৈলা  
 কোটি জন্মের লাগ সেল পাবির হইলা ॥  
 কৃক কহ কৃক কহ কৈল উপদেশ ।  
 তবে কৃক কহে সবার হৈল প্রেমাবেশ ॥৪৯  
 রামদাস বলি প্রভু তার কৈল নামা  
 আর এক পাঠানের নাম বিজুলিখান ॥  
 অদপ বরন তেঁহো রাজার কুমার ।  
 রামদাগ আদি পাঠান চাকর তাহার ॥  
 কৃক বলি সেই পড়ে মহাপ্রভুর পার ।  
 প্রভু শ্রীচরণ দিল তাহার মাধার ॥  
 তা সবারে কৃপা করি প্রভুত চলিলা ।  
 সেইত পাঠান সব বৈরাগী হইলা ॥  
 পাঠানবৈষ্ণব বলি হৈল তার খ্যাতি ।  
 সর্কত্র গাইয়া বুলে মহাপ্রভুর কীর্তি ॥  
 সেই বিজুলিখান হৈল মহাভাগবত ।  
 সর্কতীর্থে হৈল তার পরম মহত ॥ ৫০ ॥  
 এঁহে লীলা করে প্রভু শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য ।  
 পশ্চিম আসিয়া কৈল স্ববনারি ধন্য ॥  
 সোমোৎসবে আসি প্রভু কৈল মহামান  
 মহাতীরপথে কৈল প্ররাধে প্ররান ॥  
 সেই কুবরাম বিজুলি প্রভু বিচার দিল ।  
 খোদমাতে হইলক করিতে পারিল ॥  
 অসার পলাক কহে কৈলক সত্ব মান ।  
 কুবরাম চরণে কহ বুলে বীর্যপার ॥  
 প্রভু কহে সোমোৎসবে কুবরাম  
 সবারে কৃপা করি প্রভুত চলিলা

শুনি মহাপ্রভু ইহং হাসিতে লাগিলা ।  
 সেই দুইজন প্রভু সঙ্গে চলি আইলা ॥৫১॥  
 যেই যেই জন প্রভুর দর্শন পাইল ।  
 সেই সেই জন মহাত্মাগবত হৈল ॥  
 সেই প্রেমে মত্ত, নাচে করে সঙ্কীৰ্ত্তন ।  
 তার সঙ্গে অন্য অন্য তার সঙ্গে আন ॥  
 এইমত বৈকুণ্ঠ হইল সব প্রোমে ।  
 সংসার তরিল গৌর ভগবানের নামে ॥  
 দক্ষিণ বাইতে যৈছে শক্তি প্রকাশিল ।  
 সেই মত পশ্চিমদেশ প্রেমে ভাসাইল ॥৫২॥  
 এইমত চলি প্রভু প্রয়াগ আইলা ।  
 দশ দিন ত্রিবেণীতে মকর স্নান কৈলা ॥  
 হৃন্দাবনগমন প্রভুর চরিত্র অনন্ত ।  
 সহস্রবদন যার নাহি পায় অন্ত ॥

তাহা কে কহিতে পারে কুম্ভজীব হৈলা ।  
 দিগ্‌দরশন লাগি কহি সূত্র করিয়া ॥  
 অলৌকিক লীলা প্রভুর নহে লোক রীতি  
 শুনিলেহ ভাগ্যহীনের না হয় প্রতীতি ॥৫৩॥  
 আদ্যোপান্তে চৈতন্যলীলা অলৌকিকজ্ঞান  
 শ্রদ্ধা করি শুন, ইহা সত্য করি মান ॥  
 যেই তর্ক করে ইহা, সেই মুর্থরাজ ।  
 আপনার মুণ্ডে সে আপনে পাড়ে বাজ ॥  
 চৈতন্যচরিত্র এই অমৃতের গিহু ।  
 জগত আনন্দে ডাঙ্গায় যার এক বিদু ॥  
 শ্রীরূপ রঘুনাথ পদে যার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥৫৪॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
 শ্রীহৃন্দাবনদর্শনবিলাসো নাম  
 অষ্টাদশপরিচ্ছেদ ॥১৮॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যরূপ শ্রীশ্যামলালপদারবিন্দ-সেবি বিনোদবিহারি-  
 গোখামি কৃতধরবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত হৃন্দাবনগমন  
 নাম অষ্টাদশপরিচ্ছেদ ॥ ১৮ ॥

## উনবিংশ পরিচ্ছেদ ।



হৃন্দাবনীয়াং রসকেলিবার্তাং  
 কালেন সুপ্রাং নিম্পক্তিযুৎকঃ ।  
 সর্কার্য রূপে ব্যতনোং পুনঃ স  
 প্রভূবিধৌ প্রাগিবি শোকস্বষ্টিম্ ॥ ১ ॥  
 স প্রভুঃ ( শ্রীচৈতন্যঃ ) উৎকঃ ( স্বাধূর্য্যা-  
 স্বাদনার্থম্ উগ্রনাঃ সন্ ) প্রোক্ত্ব বিধৌ ( ব্রহ্মনি )  
 শোকস্বষ্টিং ( তবিসমর্জনশক্তিম্ ) ইব রূপে ( শ্রীরূপ-  
 গোখামিনে ) নিম্পক্তিং ( রসকেলিবার্তাপ্রোক্তা-  
 নিনীং স্ব স্বরূপশক্তিং ) সর্কার্য কালেন সুপ্রাং  
 সঙ্গতঃ ( সঙ্গতঃ ) সঙ্গতঃ ( সঙ্গতঃ ) ॥ ১ ॥

সৃষ্টির প্রথমে যোগন ব্রহ্মাতে সৃষ্টি-  
 শক্তি সঞ্চারিত করিয়াছিলেন, তজ্জপ  
 শ্রীরূপচৈতন্য উৎকৃষ্ট চিত্ত হইয়া শ্রীরূপ  
 গোখামিতে শক্তি সঞ্চার করতঃ পুনর্বার  
 হৃন্দাবনের রসকেলিবার্তা সর্কার্য বিস্তা-  
 রিত করিয়াছিলেন ॥ ১ ॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
 জয়বৈভবজয় জয় গৌরভক্তহৃদ ॥



শ্রীরূপ সনাতন রামকেলি গ্রামে ।  
 প্রভুকে মিলিয়া গেলা আপন ভবনে ॥  
 দুই ভাই বিষয়ত্যাগের উপার সৃজিল ।  
 বহু ধন দিয়া দুই ব্রাহ্মণ বরিল ॥  
 কৃষ্ণমন্ত্রে করাইল দুই পুরস্চরণ ।  
 অচিরান্তে পাইবারে চৈতন্যচরণ ॥ ১ ॥  
 তবে শ্রীরূপগোসাঞি নৌকাতে ভরিয়া ।  
 আপনার ঘর আইলা বহু ধন লঞা ॥  
 ব্রাহ্মণ-বৈষ্ণবে দিল তার অর্জধনে ।  
 এক চৌটি ধন দিল কুটম্বভরণে ॥  
 দশ বহু লাগি চৌটি সঞ্চয় করিল ।  
 ভাল ভাল বিপ্র স্থানে স্থাপ্য রাখিল ॥  
 গৌড়ে লঞা রাখিল মুদ্রা দশহাজারে ।  
 সনাতন ব্যয় করে রাহে মুদিঘরে ॥ ২ ॥  
 শ্রীরূপ শুনিল প্রভুর নীলাজি গমন ।  
 বনপথে যাবেন প্রভু শ্রীহৃন্দাবন ॥  
 শ্রীরূপ নীলাচলে পাঠাইল দুইজন ।  
 প্রভু হৃন্দাবনে যবে করেন গমন ॥  
 শীঘ্র আসি মোরে তবে দিবে সমাচার ।  
 শুনিয়া তদমুরূপ করিব ব্যবহার ॥ ৩ ॥  
 হেথা সনাতন গোসাঞি ভাবে মনে মন ।  
 রাজা মোরে শ্রীতি করে সে মোর বন্ধন ॥  
 কোন মতে রাজা যদি মোরে ক্রুদ্ধ হয় ।  
 তবে অব্যাহতি হয় করিল নিশ্চয় ॥  
 অশ্বাস্থ্যর ছল করি রাহে নিজ ঘরে ।  
 রাজকার্য ছাড়িল না ব্যয় রাজঘারে ॥ ৪ ॥  
 লোভী কায়স্থগণ রাজকার্য করে ।  
 আপনে স্বগ্রহে করে শাস্ত্রের বিচারে ॥  
 ভট্টাচার্য পণ্ডিত বিশ ত্রিশ লয়া ।  
 ভাগবতবিচার করে সভাতে বসিয়া ॥  
 একদিন কৌড়েঘর সঙ্গে একজন ।  
 আচরিতে রে সভাতে কৈল আগমন ॥

পাতলা দেখিয়া সবে সজ্জমে উঠিল ।  
 সজ্জমে আগুন দিয়া রাজা বসাইল ॥ ৫ ॥  
 রাজা কহে তব স্থানে বৈদ্য পাঠাইল ।  
 বৈদ্য কহে ব্যাধি নহে সুস্থ সে দেখিল ॥  
 আমার বে কিছু কার্য সব তোমা লয়া ।  
 কার্য ছাড়ি ঘরে তুমি রহিলা বসিয়া ॥  
 মোর যত কার্য কাম সব কৈলা নাশ ।  
 কি তব জ্বরে হয় কহ মোর পাশ ॥ ৬ ॥  
 সনাতন কহে নহে, আমা হৈতে কাম ।  
 আর জন দিয়া কর কার্য সমাধান ॥  
 তবে ক্রুদ্ধ হয় রাজা কহে আরবার ।  
 তোর বড় ভাই করে দস্যু ব্যবহার ॥  
 জীব বহু মারি সব চাকলা কৈল নাশ ।  
 হেথা তুমি কৈলে মোর সর্সকার্য নাশ ॥ ৭ ॥  
 সনাতন কহে তুমি স্বতন্ত্র গৌড়েঘর ।  
 যেই যেই দোষ করে দেহ তার কল ॥  
 এত শুনি গৌড়েঘর উঠি ঘর গেলা ।  
 পলাইবা জানি সনাতনেরে বাঙ্ছিল ॥  
 হেনকালে চলিলা রাজা উড়িয়া মারিতে ।  
 সনাতনে কহে তুমি চল মোর সাথে ॥  
 তেঁহো কহে তুমি যাবে দেবে দুঃখ দিতে ।  
 মোর শক্তি নাহি ভোগার সঙ্গে যাইতে ॥ ৮ ॥  
 তবে তারে বাঙ্চি রাখি করিল গমন ।  
 হেথা নীলাজি হৈতে প্রভু চলিলাহৃন্দাবন ॥  
 তবে সেই দুই চর রূপ ঠাঞি আইলা ।  
 হৃন্দাবন চলিলা প্রভু আগিয়া কহিলা ॥  
 শুনি শ্রীরূপ লিখিলা সনাতন ঠাঞি ।  
 হৃন্দাবন চলিলা শ্রীচৈতন্যগোসাঞি ॥ ৯ ॥  
 আমি দুই চলিলাম তাঁহাকে মিলিতে ।  
 তুমি বৈছে তৈছে দুটি আইনতঁাহা হৈতে ॥  
 দশসহস্র মুদ্রা স্মারকেরে মুদিশানে ।  
 তাহা দিয়া শীঘ্র কর আশ্রয়সাধনে ॥

বৈছে ভৈছে দুটি দুই আইস বৃন্দাবন।  
 এত লিখি দুই ভাই করিলা গমন ॥১০॥  
 অনুপম মলিক তার নাম শ্রীবল্লভ।  
 রূপগোসাঞির ছোট ভাই পরম বৈষ্ণব।  
 তাহারে লক্ষ্য শ্রীরূপ প্রয়াগ আইলা।  
 মহাপ্রভু তাহা শুনি আনন্দিতা হৈলা ॥  
 মহাপ্রভু চলিরাছেন মাধব দর্শনে।  
 লক্ষ লক্ষ লোক আইল প্রভুর মিলনে ॥  
 কেহ কান্দে কেহ হাসে কেহ নাচে গায়।  
 কৃষ্ণ কৃষ্ণ বলি কেহো গড়গড়ি যায় ॥১১॥  
 গঙ্গাবমুনা প্রয়াগ নারিল ডুবাইতে।  
 প্রভু ডুবাইলা কৃষ্ণপ্রেমের বন্যাতে ॥  
 ভীড় দেখি দুই ভাই রহিলা নির্জনে।  
 প্রভুর আবেশ হইল মাধবদর্শনে ॥  
 প্রেমাবেশে প্রভু নাচে হরিধ্বনি করি।  
 উর্দ্ধবাহু করি বোলে বোল হরি হরি ॥  
 প্রভুর মহিমা দেখি লোকে চমৎকার।  
 প্রয়াগে প্রভুর লীলা নারি বর্ণিবার ॥১২॥  
 দাক্ষিণাত্য বিপ্র সহ আছে পরিচয়।  
 সেই বিপ্র নিমন্ত্রিয়া নিল নিজালয় ॥  
 বিপ্রগৃহে আসি প্রভু নিভূতে বসিলা।  
 শ্রীরূপ বল্লভ দুই আসিয়া মিলিলা ॥  
 দুই গুচ্ছ তৃণ দুই হৈ দশনে ধরিয়া।  
 দূরে প্রভু দেখি পড়ে দণ্ডবৎ হরা ॥১৩॥  
 নানা শ্লোক পড়ি উঠে পড়ে বারবার।  
 প্রভু দেখি প্রেমাবেশ হইল দুঁহার ॥  
 শ্রীরূপ দেখিয়া প্রভুর প্রসন্ন হৈল মন।  
 উঠ উঠ রূপ আইস বলিলা বচন ॥  
 কৃষ্ণের কক্ষণ কিছুর না ধর বর্জন  
 বিবররূপ বৈতেকাটিল তোমা দুইজন ॥১৪॥

তথাহি শ্রীহরিকৃতবিদ্যাসঙ্গ বৃন্দাবনবিশ্বাসে  
 একনবমাস্তম্যশ্রীরূপবাক্যম্—

ন মে প্রিয়শ্চতুর্ভেদী বক্তব্যঃ ধপচঃ প্রিয়ঃ।  
 তমৈ বেদং ততো গ্রাহং স চ পূজ্যো বখা স্ববন্ ॥২  
 চতুর্ভেদী (বেদনচতুর্ভেদাত্মনস্কোপি অতঃ  
 বিপ্রঃ) ন মে প্রিয়ঃ (কিত্ব) ধপচঃ (চণ্ডাল  
 বিশেষঃ) বক্তব্যঃ (চেৎ, মম) প্রিয়ঃ (প্রীতি  
 বিধরঃ) তমৈ (ভাষূশ খণচার) বেদং (দানং  
 কুর্যাৎ) ততঃ গ্রাহং (প্রতিগৃহীয়াৎ) বখা অহং  
 (পূজ্যঃ, ভবা) স চ পূজ্যঃ (আবরণীয়ঃ) ॥ ২ ॥

চতুর্ভেদাত্ম্যাসকারী ব্রাহ্মণ ভক্তি-  
 শূন্য হইলে আমার প্রিয় হয় না। চণ্ডাল  
 যদি আমাতে ভক্তিমান হয়, সে আমার  
 প্রিয় হয়। অতএব ভাষূশ ভক্ত চণ্ডালই  
 দানের পাত্র এবং তাহা হইতে প্রতিগ্রহ  
 করিবে এবং সে ব্যক্তি আমার ন্যায়  
 আদরের পাত্র ॥ ২ ॥

এত পড়ি প্রভু দুঁহা কৈল আলিঙ্গন।  
 রূপাতে দুঁহার মাখে ধরিল চরণ ॥  
 প্রভু রূপা পাঞা দুঁহে দুই কর যুড়ি।  
 দীন হয় স্তুতি করে নানা শ্লোক পড়ি ॥১৫॥

তথাহি শ্রীরূপগোস্বামিবাক্যম্—  
 নমো মহাবদাভ্যাম কৃষ্ণপ্রেমপ্রদায় তে।  
 কৃষ্ণায় কৃষ্ণচৈতন্যনামে গৌরধিবে নমঃ ॥৩৪  
 মহাবদান্যায় (কল্পতরুকাননধেবাদিন্দ অধরী-  
 কৃত্য দাতৃপ্রবরার) কৃষ্ণপ্রেমপ্রদায় (কৃষ্ণভ  
 বশীকরণ মহৌষধিবিষ প্রেমদায়ঃ ধ্বাতীতি তমৈ)  
 কৃষ্ণচৈতন্যনামে (কৃষ্ণস্য চৈতন্যং সম্যক্ অহু-  
 ভবো যদ্বাৎ তথাভূতং নানা বস্ত তমৈ) গৌর-  
 ধিবে (গৌরী পীতা বিটু কান্তিঃ বস্য তমৈ)  
 কৃষ্ণায় (যশোদানন্দনায়) তে (তুভ্যং) নমঃ  
 নমঃ ॥ ৩ ॥

দাতার শিরোমণি, শ্রীকৃষ্ণপ্রেমপ্রদ  
 এবং দেহকান্তি দ্বারা পিতারদান শ্রীকৃষ্ণ

চৈতন্য নামে বিখ্যাত শ্রীষশোদানন্দনকে  
প্রণাম করি ॥ ৩ ॥

তথাহি শ্রীগোবিন্দলীলামৃত্তে প্রথমসর্গে  
দ্বিতীয়শ্লোকঃ—

বোহজ্ঞানমত্তং ভুবনং রূপালু-  
কলাধরমপ্যকরোং প্রথমত্তম্ ।  
স্বপ্রেমসম্পৎসুধয়াভুতেহং  
শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যময়ং প্রণমো ॥ ৪ ॥

যঃ রূপালুঃ অজ্ঞানমত্তম্ ( অজ্ঞানে অযথাধ-  
ভুতে সংসারে মত্তম্ অবধানশূন্যং ) ভুবনম্ উল্লা-  
সয়ন্ ( অজ্ঞানরোগং বিনাশ্র ) স্বপ্রেমসম্পৎসুধয়া  
( স্বপ্রেমসম্পৎ এব সুধা তয়া ) প্রমত্তম্ অকরোং  
অভুতেহম্ অয়ং শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যং প্রণমো ( শরণং  
ব্রহ্মামি ) ॥ ৪ ॥

যিনি অজ্ঞানমত্ত জীবগণের ভবরোগ  
বিনাশ করতঃ নিজপ্রেমসম্পত্তিরূপ অমৃত  
ঘারা তাহাদিগকে প্রমত্ত করিয়াছেন,  
সেই অমৃত বাসনাপরতন্ত্র শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য  
মহাপ্রভুর শরণ লইলাম ॥ ৪ ॥

তবে মহাপ্রভু তারে নিকটে বসাইল ।  
সনাতনের বার্তা কহ তাহারে পুছিল ॥  
শ্রীরূপ কহেন তেঁহো বন্দি রাজঘরে ।  
তুমি যদি উদ্ধার, তবে হইব উদ্ধারে ॥  
প্রভু কহে সনাতনের হইয়াছে গোচন ।  
অচিরান্তে আমা সনে হইব মিলন ॥  
সপ্যাকু করিতে বিপ্র প্রভুরে কহিলা ।  
রূপগোনাঞি সে দিবসভাঁহাই রহিলা ॥১২  
ভট্টাচার্য্য ছুই ভাইর নিমন্ত্রণ কৈল ।  
প্রভুর প্রসাদ পাত্র ছুই ভাই পাইল ॥  
ত্রিবেণী উপরে প্রভুর বাসায়র স্থান ।  
ছুই ভাই বাসা কৈল প্রভু সন্নিধান ॥  
সেকালে বঙ্গভট্ট রহে আড়ইল গ্রামে ।  
মহাপ্রভুমাইলাশুনিআইলা তাঁর স্থানে ॥১৩

দণ্ডবৎ কৈল তিঁহো প্রভু আলিঙ্গিল ।  
ছুই জনে কৃষ্ণকথা কতোক্ষণ হৈল ॥  
কৃষ্ণকথায় প্রভুর মহাপ্রেম উথলিল ।  
ভট্টের সঙ্কোচে প্রভু সধরণ কৈল ॥  
অন্তরে গর গর প্রেম নহে সধরণ ।  
দেখি চমৎকার হৈল বঙ্গভট্টের মন ॥১৮  
তবে ভট্ট মহাপ্রভুর নিমন্ত্রণ কৈলা ।  
মহাপ্রভু ছুই ভাই তারে মিলাইলা ॥  
দূরে হৈতে ছুই ভাই ভূমিতে পড়িয়া ।  
ভট্টে দণ্ডবৎ কৈল মহাদীন হয় ॥  
ভট্ট মিলিবারে যায় ছুঁহে পলায় দূরে ।  
অস্পৃশ্য পামর মুঞি না ছুঁইহ মোরে ॥১৯  
ভট্টের বিস্ময় হৈল প্রভুর হর্ষমন ।  
ভট্টেরে কহিল প্রভু তার বিবরণ ॥  
ঞিহা না স্পর্শিহ ইহঁো জাতি অতি হীন ।  
বৈদিক যাজিক তুমি কুলীন প্রবীণ ॥  
ছুঁহার মুখে কৃষ্ণনাম নিরন্তর শুনি ।  
ভট্ট কহে প্রভুর কিছু ইঞ্জিত ভক্তি জানি ॥  
ইহঁার মুখে কৃষ্ণনাম করিছে নর্জন ।  
ইহঁত অধম নহে হয় সর্কোত্তম ॥২০ ॥

তথাহি মহাদীলাম্যং একাদশে ত্রয়োদশশ্লোক-  
ধৃতশ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

অহো বত ধপচোহতো গরীয়ান্  
যজ্জিহ্বাগ্রে বর্জতে নাম তুভ্যম্ ।  
তেপুস্তপস্তে জুহবুঃ সন্নুরাগ্যা  
ব্রহ্মানুর্চনাম গৃণন্তি যে তে ॥ ৫ ॥

শুনি মহাপ্রভু তারে বহু প্রশংসিলা ।  
প্রোমাবিষ্ট হঞা শ্লোক পঢ়িতেলাগিলা ॥২১

তথাহি হরিতক্তিস্থখোদরে তৃতীয়াধ্যায়ে  
দ্বাদশশ্লোকঃ—

শুচিঃ সঙ্কতিদীপ্যায়িন্দধ্বজ্জাতিবৃন্দাবনঃ ।  
ধ্বপাকোহপি বৃন্দেঃ প্লাঘো ন  
বেদাচ্যোহপি মাত্তিকঃ ॥ ৬ ॥

সত্ত্বিক্তিগীষ্টাধিদগ্ধক্ৰীতিকন্যবঃ ( সত্ত্বিক্তিঃ  
অনন্তাত্তিক্তিরেব দীপ্য প্রক্কলিতঃ অগ্নিঃ তেন  
দগ্ধঃ দুর্জাতায়ন্তকং কদম্বং চণ্ডালম্বহেতুভূতং পাপং  
যন্ত সং, অতএব ) তুচিঃ ( এবভূতঃ ) স্বপাকঃ  
অপি বৃধিঃ শ্লাঘাঃ ( আদরনীয়ঃ ) বেদক্কঃ ( অধীত-  
সর্কবেদঃ ) নাস্তিকঃ ( ভাদৃশ ভগবত্তক্তিবিবর্জিত-  
শ্চেৎ ) ন ( আদরনীয়ঃ ) ॥ ৬ ॥

অনন্যাভক্তিরূপ প্রক্কলিত অগ্নি দ্বারা  
যাহার দুর্জাতির আরম্ভক পাপসমূহ  
ভস্মীভূত হইয়াছে, অতএব পরম পবিত্র,  
এবশ্রকার চণ্ডালও পশ্চিভগণের আদর-  
নীয় । সর্কবেদবেত্তা হইয়াও ভগবত্তক্তি  
বিবর্জিত হইলে কোন কালেই আদরের  
যোগ্য নহে ॥ ৬ ॥

তথাহি তর্কত্রৈব একাদশশ্লোকঃ—

ভগবত্তক্তিহীনস্য জাতিঃ শাস্তং জপস্তপঃ ।

অপ্রাণস্যেব দেহস্য মণ্ডনং লোকরঞ্জনম্ ॥৭॥

ভগবত্তক্তিহীনস্য (জনস্য) জাতিঃ (ব্রাহ্মণবাদিঃ)  
শাস্তং ( বেদাধ্যয়নাদিঃ ) জপঃ ( পুরশ্চরণাদিঃ )  
তপঃ ( কৃচ্ছ্রচাক্ষায়নাদিঃ এতৎ সর্কং ) অপ্রাণস্য  
(মৃতস্য) দেহস্য মণ্ডনম্ ( অলঙ্করণম্ ) ইব লোক-  
রঞ্জনম্ ( এব নতু সংসারমোচকম্ ) ॥ ৭ ॥

হ্রিভক্তিবিহীন ব্যক্তির জাতি,  
বেদাধ্যয়নাদি, পুরশ্চরণাদি এবং তপস্শা  
মৃতদেহের মণ্ডনের ন্যায় লোকরঞ্জন  
সাত্রে পর্য্যাপ্ত হয় ॥ ৭ ॥

প্রভুর প্রেমাবেশ আর প্রভাব ভক্তিসার ।  
সৌন্দর্য্যাদি দেখি ভাটের হৈল চমৎকার ॥  
স্বধন প্রভুরে ভট্ট নৌকাতে চড়াইয়া ।  
ভিক্ষা দিতে নিজ ঘরে চলিলা লইয়া ॥  
যমুনার জল দেখি চিক্কণ শ্রামল ।  
প্রেমাবেশে প্রভুর মন হইল পাগল ॥২২॥

হুক্কার করি যমুনার জলে দিল কাঁপ ।  
প্রভু দেখি সবার মনে হৈল ভয় কাঁপ ॥  
আস্তে ব্যস্তে সবে প্রভু ধরি উঠাইলা ।  
নৌকার উপরে প্রভু নাচিতে লাগিলা ॥  
মহাপ্রভুর ভরে নৌকা করে টলমল ।  
ডুবিতে লাগিল নৌকাঝলকেভরেজল ॥২৩  
যদ্যপি ভট্ট আগে প্রভুর ধৈর্য্য হৈল মন ।  
দুরীর উদ্ভট্ট প্রেম নহে সম্বরণ ॥  
দেশ পাত্র দেখি প্রভুর যবে ধৈর্য্য হৈল ।  
আড়হিলের ঘাটে তবে নৌকা উত্তরিল ॥  
ভয়ে ভট্ট সঙ্গে রহি মধ্যাহ্ন করায় ।  
নিজগৃহে আইলা প্রভুকে স্বসঙ্গে লইয়া ॥২৪  
আনন্দিত হৈয়া ভট্ট দিল দিব্যাঙ্গন ।  
আপনে করিলা প্রভুর পাদ প্রক্ষালন ॥  
বংশ সহ সেই জল মস্তকে ধরিল ।  
নূতন কোপীন বহির্কীাস পরাইল ॥  
গন্ধপুষ্প ধূপদীপে মহাপূজা কৈল ।  
ভট্টাচার্য্যে মান্য করি পাক করাইল ॥২৫॥  
ভিক্ষা করাইল প্রভুকে সম্নেহ যতনে ।  
রূপগোশাক্রি দুই ভাইকেকরাইলভোজনে  
ভট্টাচার্য্য ক্রীর্ণপেয়ে দেওয়াইল অবশেষ ।  
তবে সেই প্রসাদ কৃষ্ণদাস পাইল শেষ ॥  
মুখবাস দিয়া প্রভুকে করাইল শয়ন ।  
আপনে ভট্ট করে প্রভুর পাদসম্বাহন ॥২৬॥  
প্রভু পাঠাইল তাঁরে করিতে ভোজনে ।  
ভোজন করি আইলা তিঁহো প্রভুর চরণে  
হেনকালে আইলা রঘুপতি উপাধ্যায় ।  
তিরোহিতা পশ্চিভ বড় বৈষ্ণব মহাশয় ॥  
আসি কৈল তিঁহ প্রভুর চরণবন্দন ।  
কৃষ্ণ মতি রজ বলে প্রভুর বচন ॥ ২৭ ॥  
শুনি আনন্দিত হৈল উপাধ্যায়ের মন ।  
প্রভু তাঁরে কহে কহ কৃষ্ণের বর্ণন ॥

নিজ কৃত কৃষ্ণলীলা ক্রৌঞ্চ পটিল ।

শুনি মহাপ্রভুব মহাপ্রেমাবেশ হৈল ॥২৮॥

তথাহি পদ্যাবল্যাম্ রঘুপত্ন্যুপাধায়কৃতশ্লোকঃ—

শ্রুতিমপরে শ্রুতিমিতরে

ভারতমন্ত্রে ভজন্ত ভবভীতাঃ ।

অহমিহ নন্দং বন্দে

যদ্যালিন্দে পরং ব্রহ্ম ॥ ৮ ॥

ভবভীতাঃ ( মন্ত্ৰঃ ) অপরে (মোক্ষাকাঙ্ক্ষিণঃ)

শ্রুতিম্ ইতরে ( কৰ্ম্মনার্গপরায়ণাঃ ) শ্রুতিম্ অন্ত্রে

( সকামাঃ ) ভারতং ভজন্ত । যস্য ( নন্দস্য )

অলিন্দে ( বহির্দ্বার প্রকোষ্ঠে ) পরং ব্রহ্ম ( শ্রীকৃষ্ণঃ

প্রকাশতে ) অহং ( তু ) ইহ ( মনুষ্যজন্মনি, তং )

নন্দং ( ব্রহ্মরাজং ) বন্দে ॥ ৮ ॥

সংসারভরে ভীত হইয়া কেহ

শ্রুতিকে, কেহ শ্রুতিকে, কেহ ভারতকে

ভজনা করেন ; যিনি যাহা করুন,

বাহার আঙ্গিনার পরজন্ম বিরাজমান,

আমি সেই নন্দমহাশয়কে বন্দনা করি ॥৮

রনুপতি উপাধায় নমস্কার কৈল ।

• আগে কহ প্রভুদ্ব্যক্যে উপাধায় বহিল ২৯

তথাহি তর্কৈব রনুপত্ন্যুপাধায়কৃত শ্লোকঃ—

কম্পতি কণ্মিত্ত্বনীশে সম্পতি

কো বা প্রতীতিমায়াতু ।

গোপতিতনয়াকুঞ্জ গোপবধূটাবিটং ব্রহ্ম ॥৯॥

গোপতিতনয়াকুঞ্জে ( গোপাতিঃ স্বর্গ্যঃ তস্য

তনয়া যমুনা তস্যঃ তীরস্থলভামগুপে ) গোপ-

বধূটাবিটং ( গোপবধূটানাম্ অল্পবয়স্কানাং গোপ-

স্ত্রীণাং বিটন্ উপভোগলম্পটরূপং ) ব্রহ্ম ( প্রকা-

শতে, ঈতি বিচিত্রং ) সম্পতি কং ( জনং ) প্রতি

কথং কৃত্বম্ ঈশে ( সমর্থো ভবামি ) কং বা ( জনং )

প্রতীতিং ( বিশ্বাসম্ ) আয়াতু ॥ ৯ ॥

যমুনাতীরস্থ নিকুঞ্জবনে অল্পবয়স্ক

গোপবধূগণে অতিশয় ভোগ লম্পট

ব্রহ্ম প্রকাশিত, একথা কাহাকেই বা

বলিতে পারি, বলিলেই বা কে বিশ্বাস

করিবে ॥ ৯ ॥

প্রভু কহে, বল তিঁহো পড়ে কৃষ্ণলীলা ।

প্রেমাবেশে প্রভুর দেহ মন আলুয়াইলা ॥

প্রেম দেখি উপাধায়ের হৈল চমৎকার ।

মনুষ্য নহে ইহঁো কৃষ্ণ করিল নির্দার ॥৩০

প্রভু কহে উপাধায় শ্রেষ্ঠ কহ কায় ।

‘শ্যামমেব পরং রূপং’ কহে উপাধায় ॥

শ্যামরূপের বাসস্থান শ্রেষ্ঠ মান কায় ।

‘পুরী মধুপুরী বরা’ কহে উপাধায় ॥৩১॥

বীল্যপৌগণ্ড কৈশোরবয়ঃ শ্রেষ্ঠ মান কায়

‘বয়ঃ কৈশোরকং ধ্যেয়ং’ কহে উপাধায়

রসগণ মধ্যে তুমি শ্রেষ্ঠ মান কায় ।

‘আদ্যএব পরো রসঃ’ কহে উপাধায় ॥

প্রভু কহে ভাল তব্ব শিখাইলে মোরে ।

এত বলি শ্লোক পড়ে গদগদ স্বরে ॥৩২॥

তথাহি পদ্যাবল্যাম্ ত্রিসম্প্রতিতমশ্লোকঃ—

শ্যামমেব পরং রূপং পুরী মধুপুরী বরা ।

বয়ঃ কৈশোরকং ধ্যেয়মাখ্য এব পরো রসঃ ॥১০

( রূপাণাং মধ্যে ) শ্যামম্ এব রূপং পরং

মধুপুরী ( পুরীণাং মধ্যে ) বরা ( শ্রেষ্ঠা, বয়সাং

বিবিধত্বেহপি ) কৈশোরকং বয়ঃ ( এব ) ধ্যেয়ং

( নানারসেষু সৎস্ব ) আখ্যঃ ( মধুদুঃ ) এব রসঃ

পরঃ ( শ্রেষ্ঠঃ ) ॥ ১০ ॥

রূপের মধ্যে শ্যামরূপ, পুরীর মধ্যে

মধুপুরী, বয়সের মধ্যে কৈশোরবয়স ধ্যেয়

এবং রসের মধ্যে উজ্জ্বল রস শ্রেষ্ঠ ॥১০॥

প্রেমাবেশে প্রভু তারে কৈল আলিঙ্গন ।

প্রোমে মত্ত হএগা তেঁহো করেন নর্ভন ॥

দেখিয়া বলভ ভবৈর চমৎকার হৈল ।

দুই পুত্র আনি প্রভুর চরণে পাড়িল ॥

প্রভু দেখিবারে গ্রামের সব লোক আইল  
 প্রভুর দর্শনে সবার প্রেমভক্তি হৈল ॥৩৩॥  
 ব্রাহ্মণ সকল করে প্রভুর নিমন্ত্রণ ।  
 বস্ত্র ভট্ট সব তাহা করে নিবারণ ॥  
 প্রেমোন্মাদে পড়ে প্রভু মধ্য যমুনাতে ।  
 প্রয়াগে চালাব ইহাঁ না দিব রহিতে ॥  
 যার ইচ্ছা প্রয়াগ যাঞ কর নিমন্ত্রণ ।  
 এত বলি প্রভু লঞা করিল গমন ॥৩৪॥  
 গঙ্গাপথে প্রভুকে নৌকাতে বসাইয়া ।  
 প্রয়াগ আইলা ভট্টগোসাঞি লইয়া ॥  
 লোকভীড় ভয়ে প্রভু দশাশ্বমেধে যায়া ।  
 জীৰুপেরে শিক্ষা দিল শক্তি সঞ্চারিয়া ॥  
 কৃষ্ণতত্ত্ব ভক্তিতত্ত্ব রসতত্ত্ব প্রাপ্ত ।  
 সব শিখাইল প্রভু ভাগবতসিদ্ধান্ত ॥৩৫॥  
 রামানন্দ পাশ যত সিদ্ধান্ত শুনিল ।  
 রূপের উপর রূপা করি সব শিখাইল ॥  
 জীৰুপ হৃদয়ে প্রভু শক্তি সঞ্চারিল ।  
 সর্বতত্ত্ব নিরূপণে প্রবীণ করিল ॥  
 শিবানন্দসেন পুত্র কবিকর্ণপুর ।  
 দুঁহার মিলন গ্রন্থে লিখিয়াছে প্রচুর ॥৩৬॥

তথাহি চৈতন্যচন্দ্রোদয়নাটকে নবমাক্ষে অষ্ট-  
 চত্বারিংশশ্লোকঃ—

কালেন বৃন্দাবনকেলিবাস্তা  
 লুপ্তেতি তাং ব্যাপয়িতুং বিশিষ্য ।  
 কৃপামৃতেনাভিষেচ দেব-  
 স্তত্বেব রূপঞ্চ সনাতনঞ্চ ॥ ১১ ॥

কালেন ( ভগবদ্বিচ্ছারূপেণ ) বৃন্দাবনকেলি-  
 বাস্তু লুপ্তা ( অপ্রকটা ) ইতি ( হেতোঃ তাং  
 বাস্তুং ) বিশিষ্য ( বিশিষ্টাং কৃৎস্না ) ব্যাপয়িতুং  
 ( সাধারণগোচরীকর্তুং ) দেবঃ ( শ্রীচৈতন্যঃ ) তত্বেব  
 ( বৃন্দাবন এব ) রূপং চ সনাতনং চ কৃপামৃতেন  
 অভিষেচ ( অভিষিক্তবান্ ) ॥ ১১ ॥

বৃন্দাবনের কেলিবাস্তা কালে বিলুপ্ত  
 হওয়ায়, শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যদেব পুনরায়  
 তাঁহাকে বিশেষরূপে প্রকাশিত করিবার  
 নিমিত্ত সেই বৃন্দাবনে রূপ এবং সনাতন  
 গোস্বামিকে সেই কার্যে অস্তিত্বিক্ত  
 করিয়াছিলেন ॥ ১১ ॥

তথাহি তত্বেব ত্রিচত্বারিংশশ্লোকঃ—

যঃ প্রাগেব প্রিয়গুণগণৈর্গাঢ়বন্ধোহপি মুক্তো  
 গেহাধ্যাত্মস ইব পরো মূর্ত্ত্ব এবাপ্যমূর্ত্ত্বা  
 প্রেমালানৈর্দৃঢ়তরপরিষদ্রসৈঃ প্রয়াগে  
 তং শ্রীকৃপং সমসমুপদেশোহহুজগ্রাহ দেবঃ ॥ ১২ ॥

যঃ ( শ্রীকৃপঃ ) প্রিয়গুণগণৈর্গাঢ়বন্ধঃ ( প্রিয়স্ত  
 শ্রীচৈতন্যস্য গুণগণৈঃ গাঢ়ং দৃঢ়তরং যথাসান্তথা  
 বন্ধঃ ) অপি গেহাধ্যাত্মস ( গেহাবেশ্যং ) প্রাগেব  
 মুক্তঃ পরঃ ( শূদ্রার ) রসঃ ইব অমূর্ত্ত্বঃ অপি মূর্ত্ত্বঃ  
 এব । প্রয়াগে ( তীর্থে ) দেবঃ ( শ্রীচৈতন্যঃ )  
 প্রেমালানৈঃ দৃঢ়তরপরিষদ্রসৈঃ ( গাঢ়-আলিঙ্গন-  
 প্রকারৈঃ ) অহুপদেশ ( শ্রীভক্তেন ) সমঃ তং  
 শ্রীকৃপম্ অহুজগ্রাহ ( স্বরূপাবিষয়ী চকার ) ॥১২॥

যিনি পূর্বে হইতেই শ্রীচৈতন্যগুণসমূহ  
 দ্বারা দৃঢ়তর বন্ধ হইয়া ও গৃহবন্ধন হইতে  
 বিমুক্ত, অমূর্ত্ত্ব শূদ্রার রসই যেন মূর্ত্ত্বি  
 ধারণ করতঃ যে রূপাকারে প্রকাশিত ।  
 শ্রীচৈতন্য শ্রীবল্লভের সহিত সেই শ্রীকৃপকে  
 প্রেমালানৈ এবং গাঢ় আলিঙ্গন দ্বারা স্বীয়  
 রূপাপাত্র করিয়াছিলেন ॥ ১২ ॥

তথাহি তত্বেব ত্রিচত্বারিংশশ্লোকঃ—

প্রিয়স্বরূপে দয়িতস্বরূপে  
 প্রেমস্বরূপে সহজাভিক্রুপা ।  
 নিজানুরূপে প্রভুরেকরূপে  
 ততান রূপে স্ববিলাসরূপে ॥ ১৩ ॥

প্রিয়স্বরূপে ( ভক্তরূপে ) দয়িতস্বরূপে ( দয়িতঃ  
 দত্তঃ স্বরূপম্ আত্মা যত্মৈ স তদ্ভিন্ ) একরূপে

( একমুঃ ভক্তিরূপং যস্য ভগ্নিন্ ) স্ববিলাসরূপে  
( নিজবিভূতিবরূপে ) রূপে ( শ্রীরূপ গোপামিনি )  
প্রভুঃ ( শ্রীচৈতন্যঃ ) সংজ্ঞাভিরূপে ( সহজে স্বাভা-  
বিকে আভরূপে মধুরে তে চ তেচ ) নিজাত্মরূপে  
( বপ্রয়োজন সাদৃশী ) প্রেমবরূপে ( প্রেম চ স্বরূপং  
চ তে কৰ্মভূতে ) ভক্তান ( আবেশিতবান্ ) ॥১৩॥

যে শ্রীরূপকে আপনাকে প্রদান  
করিয়াছিলেন, যিনি শ্রীচৈতন্যের কলে-  
বর বিশেষ এবং যিনি শ্রীচৈতন্যের  
বিভূতিবরূপ, সেই রূপগোপামিতে  
স্বাভাবিক ও পরমমধুর স্বীয়প্রেম এ  
স্বরূপ স্বপ্রয়োজনরূপ প্রেম বিস্তার  
করিয়াছিলেন ॥ ১৩ ॥

এইমত কর্ণপুর লিখে স্থানে স্থানে ।  
প্রভু রূপা কৈল যৈছে রূপ সনাতনে ॥  
মহাপ্রভুর যত বড় ছোট ভক্তমাত্র ।  
রূপসনাতন সবার রূপা গৌরবপাত্র ॥  
কেহো যদি দেশে যায় দেখি রুদ্দাবন ।  
তাকে প্রসন্ন করে প্রভুর পারিষদগণ ॥৩৭॥  
কহ তাঁহা কৈছে রহে রূপ সনাতন ।  
কৈছে রহে কৈছে বৈরাগ্যকৈছেবাতোজন  
কৈছে অষ্টপ্রহর করে শ্রীকৃষ্ণভজন ।  
তবে প্রশংসিয়া কহে সেই ভক্তগণ ॥  
অনিকেতন ছুঁহে বনে যত রুকগণ ।  
এক এক রুকতলে একরাত্রি শয়ন ॥৩৮॥  
বিপ্রগৃহে স্থলভিক্টা কাঁহা মাধুকরী ।  
শুকরুটি চানা চাবায় ভোগ পরিহরি ॥  
করোয়া মাত্র হাতে কহা ছিঁড়া বহির্কাস  
রুকনাম রুককথা নর্দন উল্লাস ॥  
সাজি গুণপ্রহর রুকভজন চারিদণ্ড শয়ন ।  
নামগকীর্তনপ্রেমে সেহোনহেঁকোনদিন ৩৯

কভু ভক্তিরস শাস্ত্র করয়ে লিখন ।  
চৈতন্যকথা শুনে করে চৈতন্যচিন্তন ॥  
এই কথা শুনি মহান্তের মহাসুখ হয় ।  
চৈতন্যের রূপা বাঁহা তাঁহা কি বিশ্বয় ॥  
চৈতন্যের রূপা রূপ লিখিয়াছেন আপনে  
ভক্তি রসাত্মকসিদ্ধান্তের মঙ্গলাচরণে ॥৪০॥

তথাহি ভক্তিরসাত্মকসিদ্ধৌ পূর্ববিভাগে প্রথম-  
লহর্যাং দ্বিতীয়শ্লোকঃ—  
হৃদি যস্য প্রেরণয়া প্রবর্তিতোহহং বরাকরূপোহপি ।  
ভগ্য হরেঃ পদকমলং বন্দে চৈতন্যদেবস্য ॥ ১৪ ॥

বরাকরূপঃ ( সুন্দররূপঃ ) অপি যস্য হৃদি  
( হৃদিস্থ ) প্রেরণয়া অহং প্রবর্তিতঃ ( অগ্নিন্  
সন্দর্ভে ইতি শেবঃ ) ভগ্য চৈতন্যদেবস্য হরেঃ  
পদকমলম্ ( অহং ) বন্দে ॥ ১৪ ॥

আমি অতি জঘন্য হইলেও ( যিনি  
রূপা করিয়া ) আমার হৃদয়ে উপকরণগুলি  
সমর্পণ পূর্বক এই প্রস্থ নির্মাণে প্রবর্তিত  
করিয়াছেন ; সেই চৈতন্যদেব হরির  
চরণকমল অভিবাদন করি ॥ ১৪ ॥

এইমত দশ দিন প্রয়াগে রহিয়া ।  
শ্রীরূপেরে শিক্ষা দিল শক্তিসংখ্যারিয়া ॥  
প্রভু কহেন শুন রূপ ভক্তিরসের লক্ষণ ।  
সুন্দরূপে কহি বিস্তার না যায় বর্ণন ॥  
পারাবার শূন্য গম্ভীর ভক্তিরসসিদ্ধ ।  
তোমাকে চাখাইতে তারকহিএকবিন্দু ॥৪১॥  
এইত ব্রহ্মাণ্ডঃ ভরি অনন্ত জীবগণ ।  
চৌরাশিলক্ষযোনিতে সবে করয়ে জয়গণ ॥  
কেশাশ্রমভাংশ তার পুনঃ শতাংশ করি ।  
তার সম সুন্দরীবেদ স্বরূপ বিচারি ॥৪২॥

তথাহি প্রাচীনবৈকবশ্রুতিঃ—  
কেশাশ্রমভাগসা শতাংশসদৃশাস্বকঃ ।  
জীবঃ সুন্দররূপোহহং সংখ্যাভীতো বি চিত্তকণঃ ॥১৫

কেশাগ্রশতভাগস্য শতাংশসদৃশায়কঃ সূক্ষ্মরূপঃ চিত্রকণঃ অরং জীবঃ সংখ্যাভীতঃ হি ॥ ১৫ ॥

কেশাগ্রে শতভাগের একভাগ তাহার শতাংশের একাংশ সদৃশ অতিশয় সূক্ষ্ম চিত্র অণু পদার্থই জীব, ইহা অনন্ত ॥ ১৫ ॥

তথাহি পঞ্চদশাং চিত্রবীণে একাশীতিতম-  
শ্লোকঃ—

বালাগ্রশতভাগস্য শতধা কল্পিতস্য চ ।

ভাগো জীবঃ স বিজ্ঞের ইতি চাহাপরা শ্রুতিঃ ॥ ১৬ ॥

বালাগ্রশতভাগস্য শতধা কল্পিতস্য চ ভাগঃ ( যঃ ) সঃ জীবঃ বিজ্ঞেরঃ ইতি অপরা শ্রুতিঃ আহ ॥ ১৬ ॥

কেশাগ্র শতভাগের একভাগ তাহার শতাংশের কল্পিত একাংশই জীবের স্বরূপ ইহা অন্যবেদে কথিত হইয়াছে ॥ ১৬ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে বোধশা-  
ধ্যায়ে একাদশশ্লোকে উক্তং শ্রুতি শ্রীভগব-  
ষাক্যম্—

সূক্ষ্মাণামপ্যাহং জীবঃ ॥ ১৭ ॥

অহং সূক্ষ্মাণাং ( মধ্যে ) জীবঃ ॥ ১৭ ॥

হে উক্তব ! সূক্ষ্ম পদার্থের মধ্যে জীব আমি অর্থাৎ জীব আমার সূক্ষ্ম বিভূতি ॥ ১৭ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে সপ্তানীতি-  
তমাধ্যায়ে ষড়বিংশশ্লোকঃ—

অপরিমিতা প্রবাত্তত্বতো যদি সর্বগতা-

তর্হি ন শাস্ততেতি নিরমো প্রব নেতরথা ।

অকনি চ বহ্নরং তদবিমূচ্য নিয়ন্তু ভবেৎ

সমসমুদ্যানতাং বহ্নমতং মতদুইতরা ॥ ১৮ ॥

( হে ) প্রব ! অপরিমিতাঃ ( বস্তুতঃ এব  
অনন্তসংখ্যাঃ ) প্রবাঃ ( নিত্য্যঃ চ বে ) তদুভূতঃ  
( জীবাঃ তে ) যদি সর্বগতাঃ ( বিস্তারঃ স্যঃ )  
তর্হি ( তেবাং ব্যাপ্যাত্মাবেন সনস্যাং ) শাস্ততা

ইতি নিরমঃ ন ( জ্ঞাৎ ) ইতরথা ( জীবন্ত অণুৎসন  
ব্যাপ্যাত্মাবে তু সতি ভিন্নরমঃ ন ইতি ) ন ( অণিতু  
সঃ বটেতে এব ) বহ্নরং ( বহুপাদানকং যৎ ) অকনি  
( জাতং তৎ উপাদানং কন্তু তন্তু জায়মানন্ত যৎ )  
নিয়ন্তু ভবেৎ, তৎ অবিমূচ্য ( কিঞ্চিৎ অপি অমুক্ত )  
যৎ ( উপাদানরূপং পরমাখ্যাৎ ভবৎ কেন অপি  
অপরেণ ) সমং ( সমানম্ ইতি ) অমুদ্যানতাদি  
( অমুজাম্ অপি বহ্নতাং ) মতদুইতরা ( মতন্ত  
দুইতরা অণুৎসনে ) অমতং ( জাতং ন তবতি ) ॥ ১৮

হে প্রব ! অসংখ্য এবং নিত্য জীব-  
গণ যদি ব্যাপক হয়, তাহা হইলে জীব  
তোমার শাসনের বিময় এ নিয়ম থাকে  
না ; ব্যাপক হইলে নিয়ম নিয়ন্তু ভাদের  
ঘটনা হইতে পারে না, যে বহ্নির  
বিস্কুলিঙ্গাদি উৎপন্ন হয়, বহ্নি নিজাংশ  
এবং স্কুদ্র স্কুলিঙ্গাদিকে স্বরূপরূপে  
অঙ্গীকার করিয়া যেমন তাহার নিরাম-  
ক হয় ; তদ্রূপ তোমার বিভিন্নাংশ  
জীবকে স্বরূপ বলিয়া স্বীকার করতঃ  
তাহার নিরামক হও । গেই জীবের  
সহিত তোমাকে বাহার সমান করিয়া  
জানে, তাহাদিগের তাদৃশ স্থান  
দোষাশ্রিত ॥ ১৮ ॥

তার মধ্যে স্থাবরজঙ্গম দুই ভেদ ।  
জঙ্গমে তীর্থকু জল স্থলচর ভেদ ॥  
তার মধ্যে মনুষ্যজাতি অতি অল্পতর ।  
তার মধ্যে স্নেহ পুলিন্দ বৌদ্ধ শবর ॥ ১৯ ॥  
বেদনিষ্ঠমধ্যে অর্ধেক মুখে বেদ মানে ।  
বেদনিষ্ঠক পাপ করে ধর্ম নাহি পণে ॥  
ধর্মচারিমধ্যে বহুত কর্মনিষ্ঠ ।  
কোটি কর্মনিষ্ঠ মধ্যে এক জ্ঞানিশ্রেষ্ঠ ॥ ১৯ ॥



কোটিজানি মধ্যে হয় একজন মুক্ত ।  
কোটিমুক্ত মধ্যে এক দুর্ভাগ কৃষ্ণভক্ত ॥  
কৃষ্ণভক্ত নিকাম অতএব শাস্ত ।  
ভুক্তিমুক্তি-সিক্তিকামী সকল অশাস্ত ॥৪৫॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ষষ্ঠস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে  
পঞ্চমশ্লোকঃ—

সুজ্ঞানানপি সিদ্ধানাং নারায়ণপরায়ণঃ ।  
সুদুর্ভাগঃ প্রাণান্তান্মা কোটিষপি মহামুনে ॥১১॥

সুজ্ঞানাং সিদ্ধানাং কোটিবু অপি ( মধ্যে )  
প্রাণান্তান্মা নারায়ণপরায়ণঃ সুদুর্ভাগঃ ॥ ১১ ॥

হে মহামুনে ! মুক্ত ও প্রাণসালো-  
ক্যাদির কোটির মধ্যেও সর্কোপদ্রবশূচ্য  
হইয়া কেবল নারায়ণ সেবাভিলাষী  
এতাবশ্য একজনও সুদুর্ভাগ ॥ ১১ ॥

ব্রহ্মাণ্ড জ্বলিতে কোন ভাগ্যবান্ জীব ।  
গুরুকৃপাপ্রসাদে পায় ভক্তিনতা বীজ ॥  
মালী হঞা সেই বীজ করয়ে রোপণ ।  
শ্রবণ কীর্তন জলে করয়ে সেচন ॥৪৬॥  
উপক্ৰিয়া বাঢ়ে লতা ব্রহ্মাণ্ড ভেদি যায় ।  
বিন্ধ্য ব্রহ্মলোক ভেদি পরব্যোম পায় ॥  
তবে যায় তুহুপরি গোলোক হৃদ্যবন ।  
কৃষ্ণচরণ কল্পহৃদয়ে করে আরোহণ ॥  
তঁাহা বিস্তারিত হয় ফলে প্রেম ফল ।  
ইহা মালী নিত্য সিক্তে শ্রবণাদি জল ॥৪৭॥  
বদি বৈষ্ণব অপরাধ উঠে হাতী মাথা ।  
উপাড়ে বা ছেড়ে তবে শুধি যায় লতা ॥  
তাতে মালী বড় করি করে আবরণ ।  
অপরাধ হাতির বৈছে না হয় উন্মাদ ॥৪৮॥  
কিন্তু লতার অঙ্কে বদি উঠে উপশাখা ।  
ভুক্তিমুক্তি বাহ্য বত অসংখ্য তার লেখা ।  
নিষিদ্ধাচার কুটিমাটি জীবহিংসন ।  
লাভ প্রতিষ্ঠাদি বত উপশাখার গণ ॥৪৯॥

সেকজস পায় উপশাখা বাঢ়ি যায় ।  
শুক হয় মূলশাখা বাঢ়িতে না পায় ॥৫০॥  
প্রথমেই উপশাখার করয়ে ছেদন ।  
তবে মূলশাখা বাঢ়ি যায় হৃদ্যবন ॥  
প্রেমফল পাকি পড়ে মালী আশ্বাদয় ।  
লতা অবলম্বি মালী কল্পহৃদয় পায় ॥৫১॥  
তঁাহা সেই কল্পহৃদয়ের করয়ে সেচন ।  
সুখে প্রেমফল রস করে আশ্বাদন ॥  
এইত পরমফল পরম পুরুষার্থ ।  
যার আগে ভূগভূত্য চারি পুরুষার্থ ॥৫২॥

তথাহি ললিতমাধবে পঞ্চমস্কন্ধে ত্রিভীয়াশ্লোকঃ—

ঋদ্ধা সিদ্ধিব্রহ্মবিজয়িতা সত্যধর্মী সমাধি-  
ব্রহ্মানন্দো গুরুপিত চমৎকারয়তোব তাবৎ ।  
বাবৎ প্রেমাং মধুরিপুংসীকারসিক্তৌবধীনাং  
গচ্ছোহপ্যন্তঃকরণসরসীপাছতাং ন প্রযাতি ॥২০॥

বাবৎ মধুরিপুংসীকারসিক্তৌবধীনাং ( মধু-  
রিপোঃ শ্রীকৃষ্ণ বলীকারে সিক্তৌবধিরূপানাং )  
প্রেমাং ( শাকাদীনাং মধ্যে বত কস্তাপি ) গচ্ছঃ  
( লেশঃ ) অপি অন্তঃকরণসরসীপাছতাং ( অন্তঃ-  
করণপদব্যাঃ পথিকতাং ) ন প্রযাতি ( গচ্ছতি )  
তাবৎ ঋদ্ধা ( সম্পূর্ণা ) সিদ্ধিব্রহ্মবিজয়িতা ( সিদ্ধী-  
গাম্ অগ্নিমাভট্টসিদ্ধীগাং ব্রহ্মেন সমুহেন বিজ্ঞেতুং  
শীলমস্য তস্য তাবৎ ইতি সা ) সত্যধর্মী সমাধিঃ  
( চিত্তেকাগ্র্যং ) ব্রহ্মানন্দঃ গুরুঃ ( সর্কোৎকৃষ্টঃ )  
অপি ( চ ) চমৎকারয়তি এব ॥ ২০ ॥

যে পর্যন্ত শ্রীকৃষ্ণবলীকরণ বিষয়ে  
সিদ্ধঐবধি স্বরূপ প্রেমসমূহের লেশও  
অন্তঃকরণ পথের পথিকতা প্রাপ্ত না  
হয়, সে পর্যন্ত সম্পূর্ণা অগ্নিাদি অষ্ট-  
সিদ্ধি, সাধনসম্পন্নসমাধি এবং শ্রেষ্ঠ  
ব্রহ্মানন্দও চমৎকারান্তিময় প্রাপ্ত করা-  
ইয়া থাকে ॥ ২০ ॥

শুদ্ধভক্তি হৈতে হয় প্রেম উৎপন্ন ।  
অতএব শুদ্ধভক্তির করিয়ে লক্ষণ ।  
অন্ত বাহী অন্য পূজা ছাড়ি জ্ঞানকর্ষ ।  
আনুকূল্যে সর্কেছিরে কৃষ্ণানুশীলন ।  
এই শুদ্ধভক্তি ইহা হৈতে প্রেম হয় ।  
পঞ্চরাত্রে ভাগবতে এই লক্ষণ কয় ॥১৩॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্ধৌ পূর্ববিভাগে প্রথম-  
লহরীয়াং একাদশাঙ্কস্থতং নারদপঞ্চরাত্রবচনম্—  
সর্কোপাধিবিনিমুক্তং তৎপরত্বেন নির্মলম্ ।  
হৃবীকেশ হৃবীকেশসেবনং ভক্তিক্রচ্যতে ॥২১॥

সর্কোপাধিবিনিমুক্তং ( অত্যাভিলাষিতাশূন্তং )  
নির্মলম্ ( জ্ঞানকর্মাধিসংমিশ্রপরহিতং ) তৎ-  
পরত্বেন ( আত্মকূল্যেন ) হৃবীকেশ ( ইচ্ছিন্নব্যাপা-  
রেন ) হৃবীকেশসেবনং ভক্তিঃ উচ্যতে ॥ ২১ ॥

ইচ্ছিন্নগণ দ্বারা হৃবীকেশ শ্রীকৃষ্ণের  
সেবনকেই ভক্তি বলা যায় । এই সেবন-  
রূপ অনুকূল অনুশীলন, ভক্তি ভিন্ন  
অন্যান্য ফলের বাসনা শূন্য ও নির্মল ॥২১॥

তথাহি আদিলীলারঃ চতুর্থে চতুত্রিংশ পঞ্চ-  
ত্রিংশোক্তস্থতং শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

মদগুণজ্ঞানাত্রেণ মরি সর্কগুহাশয়ে  
মনোগতিরবিক্টিরা বধা গদাভসোহধ্বয়ো ।  
লক্ষণং ভক্তিবোগস্য নিগূর্ণস্য হ্যাদাস্ততম্  
অহৈতুক্যাব্যবহিতা বা ভক্তিঃ পুরুষোত্তমে ॥২২  
সালোকাসাষ্টি সারীপ্যাসারূপৈক্যকক্ষমপ্যত ।  
দীয়মানং ন গৃহ্ণতি বিনা মৎসেবনং জনাঃ ॥২৩॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে উনত্রিংশা-  
ধ্যয়ে দ্বাদশশ্লোকঃ—

স এব ভক্তিবোগাখ্য আত্যন্তিক উদাহৃতঃ ।  
বেনাভিত্রক্সা ত্রিগুণং মত্তাব্যোপপদ্যতে ॥২৪॥

স এব ভক্তিবোগাখ্য আত্যন্তিকঃ ( অত্যন্তে  
সর্কান্তে ভব, ন জু সাব্ভাষ্যতে ) উদাহৃতঃ ।  
বেন ত্রিগুণম্ অভিত্রক্সা ( অভিক্রম্য ) মত্তাব্য

( মম বিদ্যানানভাট্টে সাক্ষাৎকার্য বা মৎপ্রেম-  
বিশেষায় ) উপপদ্যতে ( সমর্থঃ ভবতি ) ॥ ২৪ ॥

সেই ভক্তিবোগই আত্যন্তিক বলিয়া  
কথিত হয় । যদ্বারা গুণত্রয় অভিক্রম  
করিয়া আমার প্রেম বিশেষ লাভ করিতে  
যোগ্য হয় ॥ ২৪ ॥

ভুক্তিমুক্তি বাহী যদি এই মনে হয় ।  
সাধন করিলে প্রেম উৎপন্ন না হয় ॥২৪॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্ধৌ পূর্ববিভাগে  
দ্বিতীয়লহরীয়াং দ্বিতীয়শ্লোকঃ—  
ভুক্তিমুক্তিস্পৃহা বাবৎ পিশাচী হৃদি বর্ধতে ।  
ভাবতুক্তিনুখতাত্র কথমভ্যাসয়ো ভবেৎ ॥ ২৫ ॥

বাবৎ হৃদি ভুক্তিমুক্তিস্পৃহা পিশাচী বর্ধতে  
ভাবৎ অত্র ( হৃদয়ে ) ভক্তিনুখত কথম্ অভ্যাসয়ো  
ভবেৎ ॥ ২৫ ॥

যতদিন ভুক্তি ও মুক্তি বিষয়ে স্পৃহা-  
রূপ পিশাচী হৃদয়ে বর্ধমান থাকিবে,  
সেইকাল পর্যন্ত ভক্তিনুখের কিরূপে  
অভ্যাস হইবে ? ॥ ২৫ ॥

সাধনভক্তি হৈতে হয় রতির উদয় ।  
রতি গাঢ় হৈলে তার প্রেম নাম হয় ।  
প্রেম সুদ্ধি ক্রমে নাম স্নেহ মান প্রণয় ।  
রাগ অনুরাগ ভাব মহাভাব হয় ॥ ২৬ ॥  
যেছে বীজ ইন্দুরস গুড় খণ্ডসার ।  
শর্করা শিতামিশ্রি উত্তম মিশ্রি আর ।  
এই সব কৃষ্ণভক্তিরস স্মারিতাব ।  
স্মারিতাবে মিলে যদি বিভাব অনুভাব ।  
সাধিক ব্যভিচারি ভাবের মিলনে ।  
কৃষ্ণভক্তি রস হয় অমৃত আত্মদানে ॥২৬॥  
যেছে দধি সিতা স্নাত মরিচ কপূর ।  
মিলনে রসলাই হয় অমৃত মধুর ॥

ভক্তভেদে রতিভেদে পঞ্চ পরকার ।  
 শাস্তরতি দাগ্যরতি সখ্যরতি আর ॥৫৭॥  
 বাৎসল্যরতি মধুররতি পঞ্চ বিভেদ ।  
 রতিভেদে কৃষ্ণভক্তি রস পঞ্চভেদে ॥  
 শাস্ত দাস্য সখ্য বাৎসল্য মধুর রস নাগ ।  
 কৃষ্ণভক্তিরসমধ্যে এ পঞ্চ প্রাধান ॥ ৫৮ ॥  
 হাস্যাস্তৃত বীর করুণ রোদ্র বীভৎস ভয় ।  
 পঞ্চবিধ ভক্তে গোণ সপ্ত রস হয় ॥  
 পঞ্চ রস স্থায়ি ব্যাপি রহে ভক্তমনে ।  
 সপ্তগোণ আগম্ভক হয় পাইয়াকারণে ॥৫৯॥  
 শাস্তভক্ত নবযোগেশ্র সনকাদি আর ।  
 দাস্যভাব ভক্ত সর্গক সেবক অপার ॥  
 সখ্যভক্তি শ্রীদামাদি পুরে ভীমাঙ্কুর ।  
 বাৎসল্যভক্ত পিতা মাতা যত গুরুজন ॥  
 মধুর রসে ভক্ত মুখ্য ব্রজে গোপীগণ ।  
 মহিমীগণ লক্ষীগণ অসংখ্য গণন ॥ ৬০ ॥  
 পুনঃ কৃষ্ণরতি হয় দুইত প্রকার ।  
 ঐশ্বর্যজ্ঞানসিশ্রা কেবলা ভেদ আর ॥  
 গোকূলে কেবলা রতি ঐশ্বর্যজ্ঞান হীন ।  
 পুরী বয়ে বৈকুণ্ঠাদ্যে ঐশ্বর্যপ্রাবীণ ॥৬১॥  
 ঐশ্বর্যজ্ঞান প্রাধান্যেতে সঙ্কোচিত জীতি ।  
 দেখিলে না মানে ঐশ্বর্যকেবলার রীতি ॥  
 শাস্ত দাস্য রসে ঐশ্বর্য কাঁহা উদ্দীপন ।  
 বাৎসল্য সখ্য মধুর রসে সঙ্কোচন ॥  
 বসুদেবদেবকীর কৃষ্ণ চরণ বন্দিল ।  
 ঐশ্বর্যজ্ঞানে দুই হার মনে ভয় হৈল ॥৬২॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে চতুশ্চত্বারিংশা-  
 ধ্যায়ৈ একপঞ্চাশত্তমশ্লোকঃ—

দেবকী বসুদেবশ্চ বিজায় জগদীশ্বরৌ ।

কৃতসংবন্দনৌ পুত্রৌ সখ্যভাতে ন শক্তিতৌ ॥২৬

দেবকী বসুদেবঃ চ পুত্রৌ জগদীশ্বরৌ বিজায়  
 শক্তিতৌ ( সন্তৌ ) কৃতসংবন্দনৌ ( অপিতৌ ) ন  
 সখ্যভাতে ॥ ২৬ ॥

দেবকী ও বসুদেব দুই পুত্রকে জগ-  
 দীশ্বর বলিয়া জানিতে পারিয়াছিলেন ;  
 অতএব তাঁহারা বন্দনা করিলেও শকা-  
 প্রযুক্ত তাঁহাদিগকে আলিঙ্গন করিতে  
 পারিলেন না ॥ ২৬ ॥

কৃষ্ণের বিশ্বরূপদেখি অঙ্কুরের হৈল ভয় ।  
 সখ্যভাবে ধার্ষ্ট্যক্রমায় করিয়া বিনয় ॥৬৩

তথাহি শ্রীগীতারাম্ একাদশাধ্যায়ৈ একচত্বা-  
 রিংশধিচত্বারিংশশ্লোকৌ—

সখেতি মত্বা প্রসভং যদ্রুতং

হে কৃষ্ণ হে যাদব হে সখেতি ।

অজানতা মহিমানং ভবেদং

ময়া প্রমাদাৎ প্রণয়েন বাপি ॥ ২৭ ॥

যচ্চাবহাসার্থমসংকৃতোহসি

বিহারশয্যাসনভোজনেষু ।

একোহথবাচ্যুত তৎ সমকং

তৎ কানয়ে স্বামহমপ্রমেয়ম্ ॥ ২৮ ॥

( কৃষ্ণঃ ভগবান্ মে ) সখা ইতি মত্বা তব ইদং  
 ( সহস্রশীর্ষাদিলক্ষণঃ ) মহিমানম্ অজানতা ( অনমু-  
 ভবতা ) ময়া প্রমাদাৎ ( অনবধানতঃ ) প্রণয়েন  
 বা অপি ( স্বাৎ প্রতি ) প্রসভং ( ৪৪.৭ ) হে কৃষ্ণ,  
 হে যাদব, হে সখা ইতি যৎ উক্তং ( কিঞ্চ ) যৎ চ  
 বিহারশয্যাসনভোজনেষু স্বামং অবহাসার্থং ( পরি-  
 হাসায় ) একং ( বিজনে স্থিতঃ ) অথবা তৎসমকং  
 ( তেবাং পরিহসতাং সখীনাং পুরতঃ স্থিতঃ ) অহং  
 অসংকৃতঃ অসি ( হে ) অপ্রমেয়ম্ অচ্যুত তৎ  
 ( সর্গবচনরূপম্ অসংকারকং ) বাপরাধকাতং )  
 কানয়ে ( কামস্ত ) ॥ ২৭২৮ ॥

তোমার এই মহিমা না জানিয়া  
 প্রমাদবশতঃ অথবা প্রণয়প্রযুক্ত সখা-  
 বোধে হঠাৎ হে কৃষ্ণ, হে যাদব,  
 হে সখে প্রভৃতি বে লক্ষ লম্বোদন  
 করিয়াছি এবং বিহার, শয়ন, ভোজন

প্রাচীর (সময় পরিহাসকালে অন্যের  
অনমন্যে বা বন্ধুজনের সমক্ষে যে কিছু  
অসৎকার করিয়াছি, তুমি আমার ঐ  
সকল অপরাধ ক্ষমা কর ॥ ২৭।২৮ ॥

রুক্ম যদি রুক্মিণীকে কৈল পরিহাস ।  
রুক্মছাড়িবেনজানি রুক্মিণীরহৈলত্রাস ॥৬৪

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে ষষ্টিতমাধ্যায়ে  
ত্রয়োবিংশশ্লোকঃ—

ভক্তাঃ স্নহঃখতরশোকবিনষ্টবুদ্ধে-  
ইস্তাক্ষুধ্বলয়তো ব্যজনং পপাত ।  
দেহশ্চ বিরুবধিরঃ সঙ্কটৈব মুহূন্  
রস্তেব বাতবিহতা প্রেবিকীর্ষ্য কেশান্ ॥২৯॥

স্নহঃখতরশোকবিনষ্টবুদ্ধে: ( স্নহঃখম্ অশ্রিয়-  
শ্রবণাৎ ভয়ং ত্যাগশক্যায় শোকঃ অহুতাপঃ তৈ:  
বিনষ্টা বুদ্ধিঃ ভক্তাঃ ভক্তাঃ ) ভগ্নাঃ ( পরমদাক্ষিণ্য-  
মরপ্রেমবিখ্যাতারাঃ : শ্রীকৃষ্ণিণ্যাঃ ) স্নহঃখলয়তঃ  
( স্নহস্তি বলয়ানি যস্মাৎ তস্মাৎ ) হস্তাং ব্যজনং  
পপাত । বিরুবধিরঃ ( বিরুবা অবশা ধীঃ বস্যাঃ  
ভগ্নাঃ, অতএব ) সহসা এব দেহঃ চ মুহূন্ কেশান্  
প্রেবিকীর্ষ্য বাতবিহতা রজ্জা ইব ( পপাত ) ॥২৯॥

সান্তিশয় ছুঃখ, ভয় এবং শোকে  
হতবুদ্ধি রুক্মিণীর হস্ত হইতে বলয় ও  
ব্যজন পতিত হইয়াছিল । আর বুদ্ধি-  
রুত্তি অবশ হওয়ায় তাঁহার দেহ মোহ-  
পরভক্ত হইয়া কেশসমূহ বিকীর্ণ করতঃ  
বাতাহত কদলীর ন্যায় পতিত হইয়া-  
ছিল ॥ ২৯ ॥

কেবলার শুদ্ধপ্রেম ঐশ্বর্য না জানে ।  
ঐশ্বর্য দেখিলে নিজ সম্বন্ধ সে মানে ॥৩০॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে অষ্টমাধ্যায়ে  
পঞ্চচষাশ্লোকঃ—

অথ্য উপনিষত্তিঃ সাংখ্যযৌগৈঃ সাবর্তৈঃ ।  
উপগীৰমানমাহাশ্রায় হরিঃ সাহসভক্তান্বজন্ ॥৩০॥

অথ্য উপনিষত্তিঃ সাংখ্যযৌগৈঃ সাবর্তৈঃ চ  
উপগীৰমানমাহাশ্রায় ( উপগীৰমানং মাহাশ্রায়ং বলা  
তং ) হরিঃ সা ( যশোনা ) আশ্রয়ন্ অমস্তত ॥৩০॥

বেদের পূর্কভাগে অর্থাৎ কর্মকাণ্ডে  
ইন্দ্রাদিরূপে উহার উত্তর ভাগে অর্থাৎ  
জ্ঞানকাণ্ডে ব্রহ্মরূপে সাংখ্যে পুরুষরূপে  
যোগে পরমাত্মরূপে ভক্তিশাস্ত্রে ভগব-  
ক্রূপে ও পাশুপতাদি শাস্ত্রে শিবাদিরূপে  
সাঁহার মাহাশ্রয় গীত হইয়া থাকে, যশোনা  
সেই শ্রীহরিকে আপনার পুত্র বলিয়া  
মনে করিতে লাগিলেন ॥ ৩০ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে নবমাধ্যায়ে  
চতুর্দশশ্লোকঃ—

তং মত্বাস্বজ্ঞনব্যক্তং মর্ত্যগিজমখোক্ষজন্ ।  
গোপিকোলুখলে দাম্না ববন্ধ প্রাকৃতং যথা ॥৩১  
অব্যক্তং অখোক্ষজন্ মর্ত্যালিদং ( রূপমা শীকৃত-  
মহুযানটাম্ ) আশ্রয়ন্ মত্বা গোপিকা প্রাকৃতং  
( বালকং ) যথা ( তথা ) দাম্না উদুখলে ববন্ধ ॥৩১

কারুণ্যবশতঃ সন্যাস্যসীরধারী সেই  
অব্যক্ত ও প্রাকৃতাদিপ্রমাণের অর্গোচর  
পরমেশ্বরকে পুত্র মনে করিয়া, যশোনা  
প্রাকৃত বালকের ন্যায় তাঁহাকে রজ্জু  
দ্বারা উদুখলে বন্ধন করিলেন ॥৩১ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে অষ্টাদশাধ্যায়ে  
চতুর্বিংশতিশ্লোকঃ—

উবাহ ক্রকো ভগবান্ শ্রীদামানং পরাজিতঃ ।  
বৃষভং ভব্রসেনশ্চ প্রলম্বো যোহিনীস্বতম্ ॥৩২॥

ভগবান্ ক্রকঃ পরাজিতঃ ( সন্ ) শ্রীদামান্  
ভব্রসেনঃ বৃষভং প্রলম্বঃ চ যোহিনীস্বতম্  
উবাহ ॥ ৩২ ॥

ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ পরাজিত হইয়া  
শ্রীদামকে ভব্রসেন বৃষকে এবং প্রলম্ব  
বলরামকে বহন করিতে লাগিলেন ॥৩২॥

তথাহি শ্রীমত্যাগবতে দশমস্কন্ধে ত্রিংশাধ্যায়ে  
উনচত্বারিংশোলোকঃ—

ততো গতা বনোদেশং সৃষ্টা কেশবমত্রবীৎ ।  
ন পারয়েহং চলিত্বং নয় মাং বজ তে মনঃ ।  
এবমুক্তঃ প্রিয়ামাহ ক্ব আকঙ্কতামিতি ॥৩৩॥

ততঃ (এবমভিমানস্তরং) বনোদেশং গতা  
সৃষ্টা (সা) অহং চলিত্বং ন পারয়ে (অতঃ) মাং  
(স্বং) বজ মনঃ (বজ জিগমিবসি তত্র) নয়  
(ইতি) কেশবন্ অত্রবীৎ । এবম্ উক্তঃ (সঃ  
শ্রীকৃষ্ণঃ এবং চেৎ তর্হি স্বয়া) ক্বক্ব আক-  
ঙ্কতাম্ ইতি (তাং) প্রিয়াং (শ্রুতি) আহ ॥৩৩॥

এইরূপ অভিমানের পর তিনি বনা-  
স্তরে গমন পূর্বক গর্কিত হইয়া শ্রীকৃষ্ণকে  
বলিলেন, “আমি আর চলিতে পারিব  
না, অতএব তুমি যে স্থানে গমন করিতে  
মানস করিয়াছ, আমাকে সেই স্থানে  
লইয়া চল ।” তিনি এইরূপ বলিলে  
শ্রীকৃষ্ণ তাঁহাকে বলিলেন, “বদি তাহাই  
হয়, তবে তুমি আমার স্বক্কে আরোহণ  
কর” ॥ ৩৩ ॥

তথাহি শ্রীমত্যাগবতে একাদশস্কন্ধে একত্রিংশা-  
ধ্যায়ে ষোড়শোলোকঃ—

পতিস্তুতাধরত্রাতৃবাঙ্কবা-  
নতিবিলম্ব্য তেহস্ত্যাত্যাগতাঃ ।  
গতিবিগতবোধ্ণীতমোহিতাঃ  
কিতব বোবিতঃ ক্ত্যাজেমিপি ॥ ৩৪ ॥

(হে) অচ্যুত! গতিবিগতঃ তব উদনীত-  
মোহিতাঃ (বহৎ) পতিস্তুতাধরত্রাতৃবাঙ্কবা অতি-  
বিলম্ব্য (অনাদৃত্য) তে (তব) অতি (সমীপম্)  
নাগতাঃ (হে) কিতব, নিপি বোবিতঃ কঃ  
ক্ত্যাজেৎ ? ॥ ৩৪ ॥

হে অচ্যুত! তুমি আমাদিগের  
আগমনের কারণ বিদিত আছ । আমারা

তোমার বেগুণীতে মোহিত হইয়া পতি,  
পুত্র, জাতি, জাতা ও বাঙ্কব সকলের  
অনাদর পূর্বক তোমার সমীপে আগমন  
করিয়াছি । হে শঠ! ত্রীসকলকে কে  
রাজিকালে ত্যাগ করিয়া থাকে ? ॥ ৩৪ ॥

শান্ত রসে স্বরূপ বুদ্ধে কৃষ্ণকনিষ্ঠতা ।

“শমোমগ্নিষ্ঠতা বুদ্ধে” রিতিশ্রীমুখগাথা ॥৬৬

তথাহি তক্তিরসামৃতসির্ষো দক্ষিণবিভাগে  
প্রথমলহর্যাম্ একবিংশোলোকঃ—

শমো মগ্নিষ্ঠতা বুদ্ধেমিতি শ্রীভগবৎসঃ ।

তগ্নিষ্ঠা হর্ষটা বুদ্ধেরেতাং শান্তিরতিং বিনা ॥৩৫  
বুদ্ধে মগ্নিষ্ঠতা শমঃ ইতি শ্রীভগবৎসঃ এতাং  
শান্তিরতিং বিনা বুদ্ধে তগ্নিষ্ঠা হর্ষটা (ন  
সম্ভবতি) ॥ ৩৫ ॥

বুদ্ধির মগ্নিষ্ঠতা আমাতে নিষ্ঠাকে  
শম বলে, এইটি শ্রীকৃষ্ণবাক্য । অতএব  
শান্তিরতি ব্যতীত বুদ্ধির ভগবগ্নিষ্ঠা  
অসম্ভব ॥ ৩৫ ॥

তথাহি শ্রীমত্যাগবতে একাদশস্কন্ধে উনবিংশা-  
ধ্যায়ে ষট্‌ত্রিংশোলোকঃ—

শমো মগ্নিষ্ঠতা বুদ্ধেদম ইন্দ্রিয়সংযমঃ ।  
ভিত্তিকা হুঃখসংমর্ষো জিহ্বোপস্থলয়ো যুতিঃ ॥ ৩৬ ॥

• বুদ্ধে মগ্নিষ্ঠতা শমঃ ইন্দ্রিয়সংযমঃ দমঃ হুঃখ-  
সংমর্ষঃ (হুঃখসংযমঃ) ভিত্তিকা জিহ্বোপস্থলয়ো  
(জিহ্বোপস্থলয়ো বেগধারণং) যুতিঃ ॥ ৩৬ ॥

আমাতে বুদ্ধিবৃত্তির নৈশ্চল্যের নাম  
শম, ইন্দ্রিয়-সংযমের নাম দম, হুঃখ  
সহিষ্ণুতার নাম ভিত্তিকা, জিহ্বা ও উপ-  
স্থের বেগধারণ কে যুতি বলে ॥ ৩৬ ॥

কৃষ্ণ বিনা তৃকাত্যাগ তার কার্য মানি ।  
অতএব শান্ত কৃষ্ণতত্ত্ব এক জানি ॥

স্বর্ণ মোক্ষ কৃষ্ণভক্ত নরক করি মানে ।  
 কৃষ্ণনিষ্ঠাভূষণাভ্যাগ শাস্তের দুই গুণে ॥ ৬৭ ॥

তথাহি মধ্যলীলারঃ নবমে চতুর্বিংশতিশ্লোক-  
 ধৃতঃ শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—  
 নারায়ণপরঃ সর্কেন ন কৃতচন বিস্ত্যতি ।  
 স্বর্ণাপবর্গদরকেষপি তুল্যার্থবর্শিনঃ ॥ ৩৭ ॥

এই দুই গুণ ব্যাপে সর্ক ভক্তগুণে ।  
 আকাশের শব্দ গুণ বৈছে ভূতগুণে ॥  
 শাস্তের স্বভাব কৃষ্ণে মমতাগন্ধ হীন ।  
 পরম ব্রহ্ম পরমাত্মা জ্ঞান প্রবীণ ॥ ৬৮ ॥  
 কেবল স্বরূপ জ্ঞান হয় শাস্তরসে ।  
 পূর্ণৈশ্বর্য্য প্রভুজ্ঞান অধিক হয় দাস্যে ॥  
 দৈশ্বরজ্ঞানে সঙ্গম গৌরব প্রচুরে ।  
 সেবা করি কৃষ্ণে সুখ দেন নিরন্তরে ॥ ৬৯ ॥  
 শাস্তের গুণ দাস্যে আছে অধিক সেবন ।  
 অতএব দাস্যের সে হয় দুই গুণ ॥  
 শাস্তের গুণ দাস্যের সেবন সখে দুই হয় ।  
 দাস্যে সঙ্গম গৌরবনখে বিখ্যাসময় ॥ ৭০ ॥  
 কাঙ্কে চড়ে কাঙ্কে চড়ার করে ক্রীড়ারণ ।  
 কৃষ্ণসেবে কৃষ্ণকে করায় আপন সেবন ॥  
 বিশস্ত প্রধান সখ্য সঙ্গম গৌরবহীন ।  
 অতএব সখ্যরসে তিন গুণ চিহ্ন ॥ ৭১ ॥  
 মমতা অধিক কৃষ্ণে আত্মসম জ্ঞান ।  
 অতএব সখ্যরসের বশ ভগবান্ ॥  
 বাৎসল্যে শাস্তের গুণ দাস্যের সেবন ।  
 সেই সেবনের নাম ইহা লালনপালন ॥ ৭২ ॥  
 সখ্যের গুণ অসঙ্কোচ অগৌরব সার ।  
 মমতাধিক্য তাড়ন ভৎসন ব্যবহার ॥  
 আপনাকে পালকজ্ঞান কৃষ্ণপাল্যজ্ঞান ।  
 চারি রসের গুণে বাৎসল্য অমৃত সমান ॥  
 সে অমৃতানন্দে ভক্তসহ ডুবরে আপনে ।  
 কৃষ্ণভক্তবশগুণ কহে ঐশ্বর্য্যজ্ঞানিগণে ॥ ৭৩ ॥

তথাহি শ্রীভক্তিরক্তিবিলাসস্য ষোড়শবিলাসে  
 একোদশতাত্ত্বতং পরমুরাণবচনম্—  
 ইতীদৃক্‌বলীলাভিরানন্দকুণ্ডে  
 বযোবং নিমজ্জতমাখ্যাপরতম্ ।  
 তদীরশিতজেনু ততৈর্জিতম্  
 পুনঃ প্রেমভক্তং শতাবৃত্তি বন্দে ॥ ৩৮ ॥

ইতীদৃক্‌বলীলাভিঃ ( ইতি এবং ভক্তবস্ত্রতয়া )  
 বযোবং ( নিমজ্জপোকুলবাসিপ্রাণিজাতং সর্কমেব )  
 আনন্দকুণ্ডে নিমজ্জতং, তদীরশিতজেনু ( ভগবদৈ-  
 শ্বর্য্যপরেষু ) ততৈর্জিতম্ ( আশ্রমোভক্তবস্ত্রতাম্ )  
 আখ্যাপরতং ( ভক্তিপরমাণমেব বস্ত্রোহহং ন তু  
 জ্ঞানপরামিতি প্রথমতঃ ) তাম্ ( ঐশ্বর্য্যং ) প্রেমতঃ  
 ( ভক্তি বিশেষণ ) শতাবৃত্তি ( বখাত্তাতথা শত-  
 বারান্ ) পুনঃ বন্দে ॥ ৩৮ ॥

তুমি এবস্থি দামোদরলীলা ও তৎ  
 সৃশ বাল্যলীলা দ্বারা গোকুলবাসি  
 প্রাণিমাটকে আনন্দকুণ্ডে নিমগ্ন করি-  
 তেছ এবং স্বীয় ঐশ্বর্য্য-জ্ঞান-পরায়ণ-  
 দিগকে নিজের ভক্তবস্ত্রতা জানাইতেছ ;  
 আমি ভক্তি বিশেষ দ্বারা সেই জোমাটকে  
 শতবার পুনঃ পুনঃ রন্দনা করি ॥ ৩৮ ॥

মধুররসে কৃষ্ণনিষ্ঠা সেবা অভিষয় ।  
 সখ্যের অসঙ্কোচ লালন মমতাধিক্য হয় ।  
 কান্তভাবে নিজাক দিয়া করেন সেবন ।  
 অতএব মধুর রসে হয় পঞ্চগুণ ॥ ৭৪ ॥  
 আকাশাদির গুণ বৈছে পর পর ভূতে ।  
 এক দুই তিন ক্রমে পঞ্চ পৃথিবীতে ॥  
 এইমত মধুরে সব ভাব সমাহার ।  
 অতএব স্বাদাধিকোর করে চমৎকার ॥ ৭৫ ॥  
 এই ভক্তিরসের কৈল দিগ্‌ দরশন ।  
 ইহা বিস্তারিয়া মনে করিহ ভাবন ॥  
 ভাবিতে ভাবিতে কৃষ্ণ ক্ষুরিবে অন্তরে ।  
 কৃষ্ণকৃপার অক্ষ পায় রসসিদ্ধ পাতরে ॥

এত বলি প্রভু তারে কৈল আলিঙ্গন ।  
 বারাগণী চলিবারে প্রভুর হৈল মন ॥৭৬॥  
 প্রভাতে উঠিয়া যবে করিলা গমন ।  
 তবে প্রভুপদে রূপ কৈল নিবেদন ॥  
 মোরে আঙ্কা হয় আইসো শ্রীচরণসঙ্গে ।  
 সহিতে নারিব তোমার বিরহতরঙ্গে ॥৭৭॥  
 প্রভু কহে তোমার কর্তব্য আমার বচন ।  
 নিকটে আনিয়াছ তুমি যাহ রন্দাবন ॥  
 রন্দাবন হইতে তুমি গৌড়দেশ দিয়া ।  
 আমারে মিলিবে নীলাচলেতে আসিয়া ॥  
 তাবে আলিঙ্গিয়া প্রভু নৌকাতে চড়িলা ।  
 মুচ্ছিত হইয়া তিঁহো তাঁহাই পড়িলা ॥৭৮॥  
 দাক্ষিণাত্য বিপ্র তাঁরে ঘরেলৈয়া গেলা ।  
 তবে জুই ভাই রন্দাবনেরে চলিলা ॥  
 মহাপ্রভু চলি চলি আইলা বারাগণী ।  
 চন্দ্রশেখরমিলিলা গ্রামের বাহিরে আসি ।  
 রাত্রি স্বপ্ন দেখেতিহঁে প্রভুআইলাঘরে ।  
 প্রাতঃকালেআসিরহে গ্রামেরবাহিরে ॥৭৯॥  
 আচম্বিতে প্রভু দেখি চরণে পড়িলা ।  
 আনন্দিত হঞা নিজ গৃহে লঞা আইলা ॥  
 তপনমিশ্র শুনি আসি প্রভুরে মিলিলা ।  
 ইষ্টগোষ্ঠী করি প্রভুরে নিমন্ত্রণ কৈলা ॥

নিজ ঘরে লঞা প্রভুরে ভিক্ষা করাইলা ॥  
 তট্টাচার্য্যে নিমন্ত্রণ চন্দ্রশেখর কৈলা ॥৮০॥  
 ভিক্ষা করাই মিশ্র কহে প্রভুপায় ধরি ।  
 এক ভিক্ষা মাগো মোরে দেহ রূপাকরি ॥  
 যাবৎ তোমার হয় কাশীপুরে স্থিতি ।  
 মোর ভিক্ষা বিনা না মানিবে কতি ॥৮১॥  
 প্রভু জানেন দিন পাঁচ সাত মে রহিব ।  
 গম্যানির সঙ্গে ভিক্ষা কাঁহা না করিব ॥  
 এত জানি তাঁর বাক্য করি অঙ্গীকারে ।  
 বাগা নিষ্ঠা হৈল চন্দ্রশেখরের ঘরে ॥  
 মহারাষ্ট্রী বিপ্র আসি প্রভুরে মিলিলা ।  
 প্রভুতারেকূপাকরিস্নেহপ্রকাশিলা ॥৮২॥  
 মহাপ্রভু আইলা শুনি শিষ্ট শিষ্ট জন ।  
 ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় আসি করেন দর্শন ॥  
 শ্রীরূপ উপরে প্রভু রূপা যৈছে কৈল ।  
 অনেক বিস্তার কথা সংক্ষেপে কহিল ॥  
 শ্রদ্ধা করি এই লীলা যেই জন শুনে ।  
 প্রেমভক্তি পায় সেই প্রভুর চরণে ॥  
 শ্রীরূপ রঘুনাথ পদে বার আশ ।  
 চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥৮৩॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
 শ্রীরূপানুগ্রহো নাম উনবিংশ  
 পরিচ্ছেদ ॥ ১৯ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপ শ্রীশ্রামলালপদারবিষ্ম-দেবি বিনোদবিহারি-  
 গোস্বামি কৃত্যঙ্গরোধিনী ও সুবোধিনীসম্বিত শ্রীরূপানুগ্রহনাম  
 উনবিংশপরিচ্ছেদ ॥ ১৯ ॥

## বিংশ পরিচ্ছেদ ।

—\*—\*—\*—

বন্দেহন স্বাধুই শ্রীচৈতন্য প্রভু ।  
 নীচোহপি যৎপ্রসাদাৎ স্তঃস্বভক্তিঃ প্রসবর্তীঃ ॥১॥  
 যৎ প্রসাদাৎ নীচঃ অপি ভ ক্রমঃ প্রসবর্তীকঃ  
 ক্রমঃ (স্ম) অনস্বঃ স্বভক্তিঃ শ্রীচৈতন্য প্রভুস্ম  
 (১৬২, বন্দে . . . )  
 অনন্ত ও অক্ষুণ্ণ ক্রমবিকাশী শ্রীচৈতন্য  
 মহাপ্রভুকে বন্দনা করি । বঁহার রূপায়  
 নীচ ব্যক্তিও ভক্তিপথের প্রসবর্তক হয় ॥১॥  
 জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
 জয়ৈতৎ চন্দ্র জয় গৌরভক্ত বন্দ ॥  
 তেথা গৌড়ে মনাতন আছে বন্দিশাশে ।  
 শ্রীকৃপণোমায়িকরপত্নী আইলহেনকালে ॥১॥  
 পত্নী পাণ্ডা মনাতন আনন্দিতা হৈলা ।  
 যখন রক্ষক পাশ কহিতে লাগিলা ॥  
 তুমি এক জিন্দা পীর মহা ভাগ্যান্ব ।  
 কিতাব কোরাণ শাস্ত্রে আছে তব জ্ঞান ॥২॥  
 এক বন্দি ছাড়ে যদি নিজ ধন দিয়া ।  
 মংগার হৈতে মুক্ত তারেকরেনগোমাঞা ॥  
 পূর্বে তোমার আমি করিয়াছি উপকার ।  
 তুমি আমা ছাড়ি কর প্রভুপকার ॥  
 পাঁচ সহস্র মুদ্রা দিব কর অঙ্গীকার ।  
 পণ্য অর্থ দুই লাভ হইবে তোমার ॥ ৩ ॥  
 তবে সেই যখন কহে শুন মহাশয় ।  
 তোমাকে ছাড়িয়ে কিন্তু করি রাজভয় ॥  
 মনাতন কহে রাজায় না করিহ ভয় ।  
 দক্ষিণ গিয়াছে যদি নেউটি আসয় ॥ ৪ ॥  
 তাহাবে কহিও সেই বাহ্যক্রমে গেল ।  
 গঙ্গার নিকটে গঙ্গাজলে কাঁপ দিল ॥

অনেক দখিল হাব লাগ না পাইল ।  
 গঙ্গার কাঁপিতে কাঁপ কাঁপা রহি গেল ॥১॥  
 শ্রীচৈতন্য আমি এদেশে না রব ।  
 দরবেশ হঞা আমি মন্ডা চলি যাব ॥  
 তথায় যখন পরমম না দেখিল ।  
 তাহাজারমুদ্রা আমি গামেবাশিকল ॥৩॥  
 লোভ হইল যখনে দ্রব্য দেখিয়া ।  
 রাহে গঙ্গাপার কৈল তাঁড়ুকা কাটিয়া ॥  
 গড়িবার পথ ছাড়িল নাহে তাঁহা বাহিতে ।  
 রাত্রিদিনে চলিআইসা পাতোড়া পর্ত্তে ॥  
 তাঁহা এক ভূমিক হয় তার ঠাঞি গেলা ।  
 পর্ত্ত পার কর মোবে বিনয় করিলা ॥৫॥  
 সেই ভূঞার সঙ্গে রহে হাত গনিতঃ ।  
 ভূঞার কাণে কহে সেই জানি এককথা ॥  
 ইহার ঠাঞি সুবর্ণের অষ্ট মোহর হয় ।  
 শুন আনন্দিত ভূঞা মনাতনে কয় ॥  
 ভোজন করহ বাণ্ডা রন্ধন করিয়া ।  
 রাহে পার করি দিব নিজ লোক দিয়া ॥৬॥  
 এত বলি অঙ্গ দিল করিয়া সম্মান ।  
 মনাতন আমি তবে কৈল নদীমান ॥  
 দুই উপবাসে রাফি ভোজন করিল ।  
 রাজমন্ত্রী মনাতন মনে বিচারিল ॥  
 এই ভূঞা আমায় কেনে সম্মান করিল ।  
 এত মনে করি তবে দ্রুগানে পুছিল ॥  
 তোমার ঠাঞি জানি কিছু দ্রব্য আছয় ।  
 ক্রমান কহে মোবঠাঞি যাতমোহরহয় ॥৯॥  
 শুন মনাতন তারে করিল ভৎসন ।  
 সঙ্গে কেনে আনিয়াছ এই কাল যম ॥



তবে সেই সাত মোহর হস্তেতে করিরা ।  
 তুষ্ণার আগে যাই কহে মোহর ধরিরা ॥  
 এই সাত স্বর্ণ মোহর আছিল আমার ।  
 ইহা লঞা ধর্ম দেখি পর্ত্ত কর পার ॥১০॥  
 রাজবন্দী আমি গড়িবার খাইতে নারি ।  
 পুণ্য হবে মোরে পর্ত্ত দেহ পার করি ।  
 তুষ্ণা হাসিকহে আমি জেনেছি পহিলে ।  
 অষ্ট মোহর হয় তোমার সেবক আঁচলে ॥  
 তোমারি মোহরলই তাম আজিকার সাত্রে ।  
 ভাল হৈল কহিলে ছুটাইলে পাপ হতে ॥১১॥  
 সন্তুষ্ট হইলাম আমি মোহর না লব ।  
 পুণ্য লাগি পর্ত্ত তোমা পার করি দিব ॥  
 গোসাঞি কহে কেহদ্রব্য লবে আমামারি ।  
 প্রাণরক্ষা কর আমার দ্রব্য অঙ্গীকরি ।  
 তবে তুষ্ণা গোসাঞিগন্ধেচারিপাইক দিলে ।  
 সাত্রে সাত্রে বনপথে পর্ত্তপার কৈল ॥১২॥  
 পার হৈয়া গোসাঞি তবে পুছিল দিশানে ।  
 জানি শেষদ্রব্য কিছু আছে তোমার স্থানে ॥  
 ইশান কহে এক মোহর আছে অবশেষ ।  
 গোসাঞি কহে মোহরলঞা যাহ তুমি দেশ ॥  
 তারে বিদার দিয়া গোসাঞি একলা চলিল ।  
 হাতেকরোঁরা ছিঁড়া কাঁথা নির্ভর হইলা ॥১৩॥  
 চলি চলি গোসাঞি তবে আইলা হাকিপুরে ।  
 সন্ধ্যাকালে বসিল এক উদ্যান ভিতরে ॥  
 সেই হাকিপুরে রহে শ্রীকান্ত তার নাম ।  
 গোসাঞির ভগিনীপতি করে রাজকাহ ॥  
 ভিন্ন লক্ষ-মুদ্রা রাজা দিয়াছে তার সনে ।  
 ঘোড়াশূল্যলৈয়া পাঠার পাৎসার স্থানে ॥১৪॥  
 উর্ধ্ব উপর বসি সেই গোসাঞি দেখিল ।  
 সাত্রে একজনসঙ্গে গোসাঞি পাশ আইল ॥  
 দুই জনে মিলি তাঁরা ইষ্টকোণী হৈল ।  
 ভবিষ্যৎ কথা গোসাঞি গজলা ভবিল ॥

তিহো কহে দিন দুই রহ এই স্থানে ।  
 ভদ্র হও ছাড় এই মলিন বসনে ॥১৫॥  
 গোসাঞি কহে একজন ইহা না রহিব ।  
 গঙ্গাপার করি দেহ এখনে চলিব ॥  
 যত্ন করি এক তোটক স্থল তেঁহো দিলা ।  
 গঙ্গাপার করি দিল গোসাই চলিলা ॥  
 তবে বারণসী গোসাঞি আইলা কতদিনে ।  
 শুনি আনন্দিত হৈলা প্রভুর অগমনে ॥১৬॥  
 চন্দ্রশেখর ঘরে আসি দুয়ারে বসিলা ।  
 মহাপ্রভু জানি চন্দ্রশেখরে কহিলা ॥  
 ঘরে এক বৈকব হয় বোলাহ তাহারে ।  
 চন্দ্রশেখর দেখে বৈকব নাহিক দুয়ারে ॥  
 বৈকব দুয়ারে নাহি প্রভুরে কহিল ।  
 কেহ হয় করি প্রভু তাঁহারে পুছিল ॥১৭॥  
 তিহো কহে এক দরবেশ আছে দুয়ারে ।  
 তাহে আন প্রভুবাক্যে কহিল আসিতারে ॥  
 প্রভু তোমায় বোলায় আইস দরবেশ ।  
 এত শুনি সমাতন করিল প্রবেশ ॥  
 তাহারে অঙ্গণে দেখি প্রভু ধার্য আইলা ।  
 তাঁরে আলিঙ্গন করি প্রেমা বিষ্ট হৈলা ॥১৮॥  
 প্রভু স্পর্শে প্রেমা বিষ্ট হৈল সনাতন ।  
 মোরে না ছুঁইহ বোলে গঙ্গাদবচন ॥  
 দুই জনে গলাগলি রোদন অপার ।  
 দেখি চন্দ্রশেখরের হৈল চমৎকার ॥  
 তবে প্রভু তার হাতে ধরি লয়া গেল ।  
 পিড়ার উপরে তারে পাশে বসাইলা ॥১৯॥  
 শ্রীহস্তে করে দ তাঁর অঙ্গ সন্দর্শন ।  
 তিহো কহে মোরে প্রভু না কর স্পর্শন ॥  
 প্রভু কহে তোমা স্পর্শি আত্মপবিত্রিতে ।  
 তজ্জিবলে পার ছুঁবি ব্রহ্মাণ্ডশোভিতে ॥২০॥  
 ভবাহি আধিপাত্য প্রবেশে যাবি মোক্ষপুং  
 শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা

তববিধা কৃপাবতাতীর্ণকৃত্যঃ স্বয়ং প্রভো ।  
তীর্ণ্য কুর্যতি তীর্ণ্যনি স্বাত্ময়েন গদাত্মতা ॥ ২ ॥

তথাহি মহ্যনীমায়াম্ উনবিংশে বিতীরমোক-  
মুতং ইতিহাসমবৃত্তমোক্ততগবত্বাকাম্—

ন মে প্রিয়ন্তকুর্যেদী মতকঃ খপচঃ প্রিয়াঃ ।  
তমৈ বেয়ং ততো প্রাকং স চ পুজ্যো যথা বহু ॥ ৩ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে সপ্তমস্কন্ধে নবমাধ্যায়ে  
দশমশ্লোকঃ—

বিপ্রাদ্বিষড়্‌শুণ্ণমুতাদরবিন্দনাভ-  
পাদারবিন্দবিমুখাৎ খপচং বরিত্তম্ ।  
মন্যো ভদর্পিতমনোবচনেহিতার্থ-  
প্রাণং পুন্যতি স কুলং ন তু তুরিমানঃ ॥ ৪ ॥

অরবিন্দনাভপাদারবিন্দবিমুখাৎ (শ্রীকৃষ্ণস্ত  
পাদারবিন্দাৎ বিমুখাৎ তক্তিহীনং) বিষড়্‌শুণ্ণ-  
মুতং (ধর্মশ্চ সত্যঞ্চ দমশ্চ তপশ্চ মাৎসর্যাঞ্চ হ্রীশ্চ  
তিত্তিকা চ অনসূয়া চ যজ্ঞশ্চ দানঞ্চ ধৃতিশ্চ শ্রুত-  
কেতি দাদশগুণাঃ তৈঃ মুক্তাং) বিপ্রাৎ ভদর্পিত-  
মনোবচনেহিতার্থপ্রাণং (তৎ তস্মিন্ অরবিন্দনাভে  
অর্পিতা মনঃ বচনঃ কর্ম্ম অর্থং প্রাণঞ্চ যেন তৎ)  
খপচং বরিত্তং মন্যো (যতঃ) সঃ (খপচঃ) কুলং  
পুন্যতি তু তুরিমানঃ (গর্ভবৃক্‌বিপ্রঃ আত্মানমপি)  
ন (পুন্যতি কৃতঃ কুলম্) ॥ ৪ ॥

শ্রীকৃষ্ণ-পাদপদ্মে ভক্তি-রহিত এবং  
ধর্ম্ম, সত্য, দম, তপ, মাৎসর্যা, হ্রী,  
তিত্তিকা, অনসূয়া, যজ্ঞ, দান, ধৃতি ও  
বেদাধ্যয়ন এই দাদশ গুণযুক্ত ব্রাহ্মণ  
হইতে শ্রীকৃষ্ণচরণাবিন্দে অর্পিত মন,  
ব্যক্তি, কারিক চেটী, অর্থ এবং প্রাণ বৎ-  
কর্তৃক ভাবুশ্চ-চণ্ডালও যজ্ঞত। যে হেতু  
ভাবুশ্চ-চণ্ডাল কুল পবিত্র করেন। পাতি-  
গর-ধর্ম্মবৃত্ত-গেই বিপ্র-আপনারিক-কর্তৃ  
কনিত্তে পাদে দাঃ

তোমা দেখি তোমা স্মরণি মাই তব গুণ ।  
সর্কেপ্রিয়-কল এই শাস্ত্রনিকূপণ ॥ ২ ॥

তথাহি হরিকৃষ্ণসংখ্যায়ের ক্রমোৎসাহায়ের  
বিতীরমোকঃ—

অম্মোঃ কলং স্বাদৃশদর্শনং হি  
তথাঃ কলং স্বাদৃশগাজলমঃ ।  
লিঙ্হাকলং স্বাদৃশকীর্তনং হি  
সুহৃৎতা ভাগবতা হি লোকৈ ॥ ৫ ॥

স্বাদৃশদর্শনং (স্বাদৃশানাং তব জুলানাং হরি-  
তক্তানাং দর্শনম্) অম্মোঃ কলং, স্বাদৃশগাজলমঃ  
তথাঃ কলং, স্বাদৃশকীর্তনং হি লিঙ্হাকলং (অত-  
এব) লোকৈ ভাগবতা হি (এব) সুহৃৎতা ॥ ৫ ॥

পৃথিবী কহিলেন, হে প্রহ্লাদ, তোমার  
মত ব্যক্তিকে দর্শন করাই চক্ষুর ফল,  
তোমার মত ব্যক্তির অঙ্গ সঙ্গ করাই  
দেহের ফল এবং তোমার মত ব্যক্তির  
কীর্তন করাই লিঙ্হার ফল, যে হেতু  
সংসার মধ্যে ভগবন্তকেই সুহৃৎতা ॥ ৫ ॥

এত কহি কহে প্রভু শুন গনাতন ।  
কৃষ্ণ বড় কৃপাময় পতিত-পাবন ॥

মহারৌরব হৈতে তোমা করিল উচ্চার ।  
কৃপার সমুদ্রে কৃষ্ণ গভীর অপার ॥ ২ ॥

গনাতন কহে কৃষ্ণে আমি নাহি জানি ।  
আমার উচ্চার হেতু তোমার কৃপা মানি ॥

কেমতে ছুটিল বলি প্রভু প্রায় কৈলা-  
আদেয়াপাত সব কথা তিহ শুনাইলা ॥ ২ ॥

প্রভুকহেতোমার দুইভাই প্রায়গেসিলিলা ।  
রূপ অসুপম দুই রূপাবন গেলা ॥

তপসসিঞ্জেরে আর চক্ষুশেখরেনে  
প্রভুআজারগনাতন মিলিলা হুঁকারে ॥ ২ ॥

তপসসিঞ্জ কহে তাঁরে কৈল নিরস্তন  
প্রভু কহে কৈল উচ্চারি মাত গনাতন ॥

চন্দ্রশেখরে প্রভু কহিল বোলাইয়া ।  
 এই বেশ দূর কর বাহ ইহা লঞা ॥২৫॥  
 ভদ্র করাইয়া গঙ্গান্নান করাইলা ।  
 শেখর আনিয়া তবে নূতন বস্ত্র দিলা ॥  
 সেই বস্ত্র সনাতন না কৈল অঙ্গীকার ।  
 গুনিয়া প্রভুর মনে আনন্দ অপার ॥২৬॥  
 মধ্যাহ্ন করিয়া প্রভু ভিক্ষা করিবারে ।  
 সনাতন লঞা গেলা তপনমিশ্র-ঘরে ॥  
 পাদপ্রক্ষালন করি ভিক্ষাতে বসিলা ।  
 সনাতনে প্রসাদদেহ মিশ্রেরে কহিলা ॥২৭॥  
 মিশ্র কহে সনাতনের কিছু কৃত্য আছে ।  
 তুমি ভিক্ষা কর তারে প্রসাদদিব পাছে ॥  
 ভিক্ষা করি মহাপ্রভু বিশ্রাম করিলা ।  
 মিশ্র প্রভুর শেষ পাত্র সনাতনে দিলা ॥  
 মিশ্র সনাতনে দিল নূতন বসন ।  
 বস্ত্র না লইল এই কৈল নিবেদন ॥  
 মোরে বস্ত্র দিতে যদি হয় তোমার মন ।  
 নিজ পরিধান এক দেহ পুরাতন ॥  
 তবে মিশ্র পুরাতন এক ধৃতি দিলা ।  
 সনাতন দুইবহির্গাম কোপীন করিলা ॥২৮॥  
 মহারাষ্ট্রি যিক্রে প্রভু মিলাইলা সনাতন ।  
 সেই বিক্রা তাঁরে কৈল মহানিমন্ত্রণ ॥  
 সনাতন তুমি যাবৎ কাশীতে রহিবে ।  
 তাবৎ আমার ঘরে স্তোজন করিবে ॥২৯॥  
 সনাতন কহে আমি মাধুকরী করিব ।  
 স্নানপূজার ঘরে ভিক্ষা একত্রে কেনে লিব ॥  
 সনাতনের বৈরাগ্যে প্রভুর আনন্দ অপার ।  
 ভোটকঞ্চল দেখি প্রভু চাহেবারবার ॥৩০॥  
 সনাতন কানিল এই প্রভুরে না তার ।  
 ভোট ত্যাগ করিবারে চিহ্নিল উপার ।  
 এত চিহ্নি দেখা সবার মধ্যস্থ করিতে ।  
 একপোড়িয়া কাঁথা দিয়া বস্ত্রসীমাইতে ॥৩১॥

তারে করে করে কাঁথা কর উপকাঁবে ।  
 এই ভোটকঞা এই কাঁথা দেহ মোরে ॥  
 সেই কহে হাস্য কর প্রামাণিক হঞা ।  
 বস্ত্রমূল্য ভোট কেনে দিবে কাঁথালঞা ॥৩২॥  
 তিহো কহে হাস্য নহে কহি সত্যবাণী ॥  
 ভোট লহ তুমি মোরে দেহ কাঁথাখানি ॥  
 এত বলি কাঁথা নিল ভোট তারে দিয়া ।  
 প্রভু ঠাই আইলা কাঁথা গলায় বান্ধিয়া ॥  
 প্রভু কহে তোমার ভোটকঞ্চল কাঁথাগেল ॥  
 প্রভু পায়ে সব কথা গোসাই কহিল ॥৩৩॥  
 প্রভু কহে ইহা আমি করিয়াছি বিচার ।  
 বিষয়রোগ খণ্ডাইলা কৃষ্ণ ধে তোমার ॥  
 সে কেনে রাখিব তোমার শেব বিষয়ভোগ ।  
 রোগখণ্ডি সৰ্বেষ্য না রাখে শেষ রোগ ॥  
 তিন মুদ্রার ভোট গায়ে মাধুকরী আস ।  
 ধর্মহানি হয় লোকে করে উপহাস ॥৩৪॥  
 গোসাই কহে যে খণ্ডাইলে কুবিষয়ভোগ ।  
 তার ইচ্ছায় গেল মোর শেব বিষয়রোগ ॥  
 তবে প্রসন্ন হঞা প্রভু তাঁরে রূপা কৈল ।  
 প্রভুরূপায় প্রসন্ন করিতে তাঁর শঙ্কিতৈল ॥৩৫॥  
 পূর্বে যেন রায়-পাশ প্রভু প্রসন্ন কৈলা ।  
 তাঁর শক্ত্যে রামানন্দ তাঁরে উত্তর দিলা ॥  
 ইহা প্রভুর শক্ত্যে প্রসন্ন করে সনাতন ।  
 আপনে মহাপ্রভু করে তত্ত্বনিরূপণ ॥৩৬॥  
 তথাহি গ্রন্থকার্যা—  
 কৃষ্ণবস্ত্রমাদুর্ঘোষব্যতিক্রমপ্রসন্ন ।  
 তৎ সনাতনাজ্ঞেয়ং রূপরোপনিবেশ সঃ ॥৩৭॥  
 স উপঃ (ঐতৈত্তম্যঃ) কৃষ্ণা সনাতনার কৃষ্ণ-  
 বস্ত্রমাদুর্ঘোষব্যতিক্রমপ্রসন্নং কৃষ্ণ উপনিবেশ ॥৩৮॥  
 ঐতৈত্তম্যদেব কৃপা কহিলা ঐতৈত্তম্য-  
 বস্ত্রমাদুর্ঘোষব্যতিক্রমপ্রসন্নং কৃষ্ণ উপনিবেশ ॥৩৯॥  
 সনাতন কহে সনাতন সনাতন ॥৪০॥

তবে সমস্তই প্রকৃতির চরণে ধরিতা ।  
 দৈন্য বিনাশ করে দন্তে ভূপ সঞ্চার ।  
 নীচকার্য নীচসকলী পতিত অধম ।  
 কুবির-রূপে পড়ি গোড়াইলাম জনম ।  
 আপনার হিতাহিত কিছুই না জানি ।  
 গ্রাম্যব্যবহারেপণ্ডিত তাহি সত্যমানি ॥৩৭  
 রূপা করি যদি মোরে করিলে উদ্ধার ।  
 আপন রূপাতে কহ কর্তব্য আমার ।  
 কে আমি কেনে আমা জারে তাপত্রয় ।  
 ইহা নাহি জানি কিনা কেমনেহিত হয় ॥৩৮  
 সাধ্যসাধন তব পুছিতে না জানি ।  
 রূপা করি সব তব কহত আপনি ।  
 এতু কহে রুকুরূপা তোমাতে পূর্ণ হয় ।  
 সর্বত্ব জান জোয়ারি নাহি তাপত্রয় ।  
 রুকুরক্তি ধর তুমি জান তবভাব ।  
 জানি দার্তা লাগি পুছে সাধুর স্বভাব ॥৩৯

তথাহি তত্ত্বিরনামৃতনিকৌ পূর্ববিভাগে দ্বিতীয়-  
 লংঘ্যঃ সপ্তচন্দ্রাংশিন্দ্রোকঃ—

অচিরাদেব সর্কারঃ সিধাতোবামতীপিতঃ ।  
 সর্কারগ্যাববোধার বেবাং নিরুন্ধিনী মতিঃ ॥৭।  
 সর্কারত ( ভাগবতধর্মত ) অববোধার (জাতুং)  
 বেবাং মতিঃ নিরুন্ধিনী ( অধাবসিতা ম্যাৎ )  
 এবাং ( মহাঅনাম্ ) অভিল্পিতঃ ( বাহিতঃ )  
 সর্কারঃ অচিরাত্ এব সিধাতি ॥ ৭ ॥

ভাগবত ধর্মের নিগূঢ় তত্ত্ব অবগত  
 হইবার জন্য বাহাদের মতি অতিশয় বন্ধ-  
 বতী, তাহাদের অভিলষিত সকল  
 বিষয়ই অবিলাসে সিদ্ধ হইয়া থাকে ॥৭।  
 বোধ্যপাত্র হও তুমি তত্ত্ব প্রবর্তিতকৈ ।  
 ক্রমে সব তত্ত্ব যখন করিয়ে তোমারকৈ সি-  
 দ্ধীকর, তখন হইবে রুকুর সিদ্ধারকৈ ।  
 তাহা হইবে সর্বত্বের অধিকারকৈ ॥৮।

সূর্য্যাস্তে কিরণ য়েহে অগ্নি খালোচর ।  
 স্বাভাবিকশক্তি ক্রমেক গিনপ্রকারহর ॥৪২

তথাহি বিষ্ণুপুরাণে প্রথমাংশে বাহিলাধ্যায়ে  
 চতুঃপঞ্চাশত্তমশ্লোকঃ—

একদেশস্থিত তাগেজ্যোৎস্না বিস্তারিণী বধা ।  
 পরত ব্রহ্মণঃ শক্তি তথেষদমখিলং জগৎ ॥৮৭  
 একদেশস্থিত অগ্নে জ্যোৎস্না ( প্রজা ) বধা  
 বিস্তারিণী তথা ইহম্ অখিলং ( ব্রহ্মাধিরণ্যং )  
 জগৎ পরত ব্রহ্মণঃ শক্তিঃ ( কৃতবিতারঃ ) ॥৮৭

একদেশস্থিত অগ্নির কিরণ যেমন  
 চতুর্দিকে বিস্তীর্ণ হয়, তক্রূপ এই অখিল  
 জগৎ পরব্রহ্মেরই শক্তি ॥৮।

তথাহি তত্ত্বৈব প্রথমাংশে তৃতীয়াধ্যায়ে দ্বিতীয়-  
 শ্লোকঃ—

শক্তয়ঃ সর্কারভাবানামচিত্তাজ্ঞানগোচরাঃ ।  
 যতোহিতো ব্রহ্মণতাত্ত্ব সর্গান্য্য ভাবশক্তয়ঃ ।  
 ভবন্তি তপতাত্ শ্রেষ্ঠ পাবকত্ব বধোক্ততা ॥৯।  
 ( হে ) তপতাত্ শ্রেষ্ঠ ! পাবকত্ব উক্ততা বধা  
 ( তথা ) সর্কারভাবানাং ( মনিনস্মারীনাং ) শক্তয়ঃ  
 অচিত্তাজ্ঞানগোচরাঃ ( তর্কাতীতং ব্রহ্মজ্ঞানং কাব্যীভ-  
 ষাৎপশপতিপ্রমাণকং তত্ত্ব নোচরাঃ মতি ) । বতঃ  
 অতঃ ব্রহ্মণঃ তাঃ স্তু ( তথাবিধাঃ ) সর্গান্য্য ভাব-  
 শক্তয়ঃ ( শক্তি ) ॥ ৯ ॥

হে তপোধন । অগ্নির উজ্জ্বলশক্তির  
 ন্যায় মণিমন্ত্রাদি সকল পদার্থেই অচিহ্ন  
 ও বুদ্ধির অগোচর শক্তি বিদ্যমান থাকি-  
 ল্যাহে, তক্রূপ ব্রহ্মেরও স্বাভাবিক শক্তি  
 তাঁহার পরিপন্থ হইতে অতির সর্গাদি সিদ্ধি  
 শক্তি আছে ॥৯।

ক্রমেক স্বাভাবিক তিন শক্তি পরিপন্থি ।  
 চিত্তক্তি মনোশক্তি আর কীর্ত্তিক্রিয় ॥

তথাহি মধ্যমীয়াঃ পদে চার্বাকান্য্যসং-  
 যোগশাস্ত্রী বিশেষণতরুণী—

বিহুশক্তিঃ পরা প্রোক্তা ক্ষেত্রজ্ঞাণ্য তথা পরা ।  
 অবিতাকর্ষণঃ জ্ঞাতা তৃতীয়া শক্তিরিহ্যভে ॥১০॥  
 বা বা ক্ষেত্রজ্ঞশক্তিঃ সা বেষ্টিতা নৃপ সর্বদা ।  
 সংসারতাপানখিলানবাগ্নোত্যত্র সন্ততান্ ॥১১॥  
 তত্র তিরোহিতম্বাচ শক্তিঃ ক্ষেত্রজ্ঞসংজিতা ।  
 সর্বভূতেষু ভূপাল ভারতম্যোন বর্জিতে ॥১২॥

তথাহি আদিনীলারাং সপ্তমে বটশ্লোকবৃত্তং  
 শ্রীগীতাবচনম্—

অপরেরমিতত্বন্যাং প্রকৃতিং বিদ্ধি মে পরাম্ ।  
 জীবভূতাং মহাবাহো বসেনৎ ধাৰ্ঘতে অগৎ ॥১৩॥  
 কৃষ্ণ ভুলি সেই জীব অনাদি বহিমুখ ।  
 অতএব মায়ী তারে দেয় সংসার-দুঃখ ॥  
 কত্তু স্বর্গে উঠায় কত্তু নরকে ভূষায় ।  
 দণ্ড্য জনে রাজা যেন নদীতে চূষায় ॥৪৪॥  
 তথাহি শ্রীমতগবতে একাদশ স্বকে বিতীরাধ্যারে  
 সপ্তত্রিংশশ্লোকঃ—

ভরণং বিতীরাভিনিবেশতঃ স্যা-

দীশাদপেততত বিপর্যায়োহৃষ্টিঃ ।  
 তন্নায়রাতো বৃধ আভলেৎ ভং  
 ভট্টৈক্যকরেশৎ গুরুদেবতায়্যা ॥১৪॥

( বতঃ ) ঈশাৎ ( ভগবতঃ ) অপেতন্য ( চ্যুতস্য  
 বিমুখস্য জীবস্য এব)তন্নায়রাতো(তস্য ভগবতঃ নায়রাতো)  
 অষ্টিঃ ( বরুণাক্ষুর্টিঃ ভবক্তি, ততঃ ) বিপর্যায়ঃ  
 (দেহান্যাত্মাভিমানঃ ভবক্তি, ততঃ চ) বিতীরাভি-  
 নিবেশতঃ ( বিতীয়ে দেহান্যৌ উপাধিত্বভে অভিনি-  
 বেশতঃ অভিমানেৎ ) ভরণং স্যাৎ ( অভ্যঃ ) বৃধঃ  
 (সিঙ্গলী) তন্ ঈশৎ ( প্রববতঃ ) আভলেৎ ( ঈশৎ  
 পুত্রি ভবেৎ, ততঃ ) গুরুদেবতায়্যা ( গুরুঃ এব  
 দেবতা আত্মা চ বসত তথাভূতঃ সন্ ) একম্  
 ( বিজ্ঞাপকস্বরূপাননরূপা অধ্যাত্মরিণ্যা )  
 ভট্টা ( সাক্ষাৎভাগবতভগবতঃ ) ভলেৎ ॥ ১৪ ॥

পূর্বসংসার হইতে বিহুশক্তি জীবের হারা  
 বশতঃ বরুণের বিপর্যয়কর্ত্তব্য প্রকৃতি

দেহে আত্মাভিমান বটে। বিতীরাভিনিবেশ  
 যে দেহেইঞ্জিরাদি তাহাতে অভিনিবেশ  
 হইলেই ভয় ভয়ে। অতএব জ্ঞানী ব্যক্তি  
 গুরুতে দেবতাবুদ্ধি এবং প্রিয়তাবুদ্ধি  
 স্থাপন পূর্বক ভক্তি সহকারে পরমেশ্বরের  
 ভজন করিবেন ॥১৪॥

শাস্ত্র সাধু রূপায় যদি কৃষ্ণোমুখ হয় ।  
 সেইকীবিনিস্তরেমারা তাহারেজ্ঞাভয় ॥৪৫

তথাহি শ্রীগীতারং সপ্তমাধ্যায়ে চতুর্দশশ্লোকঃ—  
 দৈবী হেবা গুণময়ী নন ময়া-দ্রুতয়া ।  
 মামেব বে প্রপদ্যন্তে মারামেতাৎ তরন্তি তে ॥১৫॥  
 মম ( সর্বোৎসবস্য ) এষা দৈবী ( আলৌকিক্য-  
 ত্যভূজ ) গুণময়ী ( সর্বারিগুণত্রয়ায়িকা ) ময়া  
 দ্রুতয়া ( তেখাৎ দ্রুতক্রমা ) মং ( সর্বোৎসবং ময়া-  
 নিয়ন্তারং কৃষ্ণং ) যে ( জনাঃ ) প্রপদ্যন্তে ( শরণং  
 গচ্ছন্তি ) তে এতাম্ ( অর্পবমিব অপারাম্ ) মারাম্  
 ( গোপদেবাদকাজলিমিব অশ্রমেন ) তরন্তি ॥ ১৫ ॥

আমার এই অলৌকিক ও অত্যন্তুত,  
 সর্বাদিত্রিগুণায়িকা মায়ী দ্রুতক্রম-  
 নীয়া। বাহারা আমার আশ্রয় গ্রহণ  
 করে, তাহারাই কেবল সমুদ্র ভুল্য মায়ী  
 হইতে গোপদ সদৃশ উত্তীর্ণ হয় ॥১৫॥

মায়ামুহুর্জ জীবের নাহি স্বভঃ কৃষ্ণ জ্ঞান ।  
 জীবেরে রূপায় কৃষ্ণ কৈল বেদপুবাণ ॥  
 শাস্ত্র গুরু আত্মরূপে আপনা জানান ।  
 কৃষ্ণ যোর প্রভুত্বাতা জীবের হয়জ্ঞান ॥৪৬॥  
 বেদশাস্ত্র কহে সূত্রস্বাভিধের প্রয়োজন ।  
 কৃষ্ণপ্রাপ্য সবভক্তিত্তি প্রাণ্ডেয় সাধন ॥  
 অভিধের নাম ভক্তি প্রেম প্রয়োজন ।  
 পুরুষার্শ্বিত্তিয়ারামি প্রেম মহাধন ॥৪৭॥  
 কৃষ্ণপ্রাপ্য, সেরামর প্রাণ্ডেয় কারণ ।  
 কৃষ্ণপ্রাপ্য, সেরামর কৃষ্ণবর মায়ীজন ॥৪৮

ইহাতে হঠাত বৈছে দারিত্রের ঘরে ।  
 সর্কজ আসি দরিত্র দেখি পুছয়েতাহারে ।  
 তুমি কেন দুঃখি তোমার আছে পিতৃধন ।  
 তোমারেনাকহি অন্যত্র ছাড়িল জীবন ॥৪৯॥  
 সর্কজের বাক্যে করে ধনের উদ্দেশ ।  
 ঐছে বেদপুরাণ কহে কৃষ্ণ-উপদেশ ॥  
 সর্কজের বাক্যে মূলধন অনুবন্ধ ।  
 সর্কশাস্ত্রে উপদেশে কৃষ্ণের সম্বন্ধ ॥৫০॥  
 বাপেক্স ধন আছে জানে ধন নাহি পায় ।  
 তবে সর্কজ কহে তারে প্রাণ্ডোর উপায় ॥  
 এই স্থানে ধন যদি দক্ষিণে খুদিবে ।  
 ভিমরুলবোরলাউঠিবে ধন নাপাইবে ॥৫১॥  
 পশ্চিমে খুদিলে তাহা বন্ধ এক হয় ।  
 সে বিন্ন করিবে ধন হাতে না পড়য় ॥  
 উত্তরে খুদিলে আছে কৃষ্ণ অঙ্গগরে ।  
 ধন না পাইবে খুদিতে গিলিবে সবারে ॥৫২॥  
 তাতে পূর্কদিগে মাটি অল্প খুদিতে ।  
 ধনের জাড়ি পড়িবেক তোমারহাতেতে ॥  
 ঐছে শাস্ত্র কহে কর্ম যোগ জ্ঞান ত্যজি ।  
 তন্ত্যে কৃষ্ণ বশ হয় তন্ত্যে তারে ভজি ॥৫৩॥

তথাহি আদিলীলারঃ সপ্তদশে পঞ্চমশ্লোক-  
 ধৃতঃ শ্রীমত্যাগবতবচনম্—

ন সাধরতি মাং বোগো ন সাখ্যং বর্ষ উভব ।

ন বাধ্যস্তপন্ত্যাগো ববা ভক্তির্মমোজিতা ॥১৬৩॥

তথাহি শ্রীমত্যাগবতে একাদশশ্লোকে চতুর্দশা-  
 ধ্যারে বিংশশ্লোকঃ—

তন্ত্যাহনেকরা গ্রাহঃ শ্রদ্ধয়া প্রিয়ঃ সত্যম্ ।

ভক্তিঃ পুরাতি মদিতা বপাকানপি সত্যবাং ॥১৬৪॥

সত্যং প্রিয়ঃ আত্মা অহম্ একরা (কেবলরা  
 অনন্যপ্রয়োজনরা) শ্রদ্ধয়া শ্রদ্ধা পূর্বিকরা ) তন্ত্য  
 গ্রাহঃ ( ক্রমাৎ বশীকর্যঃ ) । ভক্তিঃ মদিতা ( মদি  
 ধাতিং লভা সত্য ) বপাকানপি ( ভক্তিবিহীন ) সত্যবাং  
 ( সত্যবানবান ) আসি পুরাতি ১৬৩

সাধুগণের অভিজ্ঞির আত্মস্বরূপ  
 আমি, একমাত্র শ্রদ্ধাপূর্বিকা শুদ্ধা ভক্তি  
 ধারাই বশীকৃত হই । আমাতে নিষ্ঠারূপ  
 ভক্তি ক্রমশঃ সুদৃঢ় হইলে, চণ্ডালকেও  
 জাতিদোষ হইতে পবিত্র করে ॥১৬৩॥  
 অতএব ভক্তি কৃষ্ণপ্রাণ্ডোর উপায় ।  
 অভিধের বলি তারে সর্কশাস্ত্রে গার ॥  
 ধন পাইলে বৈছে সুখভোগ ফল পায় ।  
 সুখভোগ হইলে দুঃখ আপনে পলায় ॥৫৪॥  
 তৈছে ভক্তি ফল কৃষ্ণে প্রেম উপজায় ।  
 প্রেমে কৃষ্ণাশ্বাদ হৈলে ভব নাশ পায় ॥  
 দারিত্র্য নাশ ভব কয় প্রেমের ফল নয় ।  
 ভোগ প্রেমসুখ মুখ্য প্রয়োজন হয় ॥৫৫॥  
 বেদ শাস্ত্রে কহে সম্বন্ধাভিধের প্রয়োজন ।  
 কৃষ্ণ কৃষ্ণভক্তি প্রেম তিন মহাধন ॥  
 বেদাদি সকল শাস্ত্রে কৃষ্ণমুখ্য সম্বন্ধ ।  
 তার জ্ঞানে আনুসঙ্গে বার মায়াবন্ধ ॥৫৬॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্ধৌ দক্ষিণবিতাগে  
 চতুর্দশবর্ধ্যাং ত্রিশপ্ততিতমশ্লোকধৃতং পদ্মপুরাণ-  
 বচনম্—

ব্যামোহায় চরাচরস্য অগতস্তে তে পুরাণাগমা-  
 ত্যং তামেব হি দেবতাং পরমিকাং অল্পত ভক্ত্যাবদি ।  
 সিদ্ধান্তে পুনরেক এব ভগবান্ বিষ্ণুঃ সমত্যাগম-  
 ব্যাপ্যামেবু বিবেচনব্যতিকরণং নীতেন্ নিষ্ঠারিতে ॥১৮

তে তে পুরাণাগমাঃ চরাচরস্য  
 ব্যামোহায় ( ব্যামোহম্ উৎপাদকিত্বং ) কল্প্যাবদি  
 ( কল্পকালপর্ধ্যাৎ ) তাং তাং দেবতাম্  
 পরমিকাং হি অল্পত ( পুনঃ সমত্যাগমব্যাপ্যামেবু )  
 ( সর্কপ্রাণ্ডাণাং কৃষ্ণাবিত্ত্বিত্ব ) বিবেচনব্যতিকরণ  
 ( বিবেচনং বিচার্য ব্যতিকরণং আসক্ত্য কথং )  
 ( ভক্তিরসামৃত ) বিচার্য ( ভক্তি ) এককাল উপায়  
 বিচার্য ত্রিশপ্ততিতমঃ ১৮



তথাহি আদিলীলায়াং বিতীয়ে অরৌপমৌক-  
যুতঃ শ্রীমতাপবতবচনম্—

এতচ্চাংখরুণাং পুংসু ক্রুৎকৃত্ত ভগবান্ বনম্ ।  
ইত্রারিখ্যাংহুলাং গোবৎ সূচরুতি সূগে সূগে ॥২৩॥  
জ্ঞান, ধৌগি, তক্তি তিন সাধনৈক বশে ।  
ব্রহ্ম, আত্মা, ভগবান্ ত্রিবিধ প্রকাশে ॥৩২

তথাহি আদিলীলায়াং বিতীয়ে চতুর্থমৌকযুতঃ  
শ্রীমতাপবতবচনম্—

বনস্তি স্তং-তববিরতবৎ বনজ্ঞানমবয়ম্ ।  
ব্রহ্মেতি পরমাম্বেতি ভগবানিতি শব্দ্যতে ॥২৪॥  
ব্রহ্ম অঙ্গকাণ্ডি তাঁর নিরুশেষ প্রকাশে ।  
সূর্য্য বেন চন্দ্রচন্দ্রে জ্যোতির্ভ্রমর ভাসে ॥৩৩॥

তথাহি আদিলীলায়াং বিতীয়ে পঞ্চমৌকযুতঃ  
ব্রহ্মসংহিতাবচনম্—

বস্ত প্রতা প্রতবতো জগৎগুণকোটি-  
কোটিখশেববরুধাদিবিভূতিভিন্নম্ ।  
তব ক্র নিফলমনস্তমশেবতৃতং  
গোবিন্দমাদিপুরুষং ভবহং তজামি ॥ ২৫ ॥

পরমাত্মা বেহৌ-তিহৌ ক্রুৎকোর এক অংশ ।  
আজ্ঞার আত্মা হরেন ক্রুৎ সর্ক অবতংসা ॥৩৪

তথাহি শ্রীমতাপবতে দশমত্বে চতুর্দশাধ্যায়ে  
পঞ্চপঞ্চতমমৌকঃ—

ক্রুৎকোরনববেহি যমাত্মানমখিগাঙ্গনাম্ ।  
অগতিতায় গোংপ্যত্র দেহীখাততি যারসা ॥২৬॥  
সন্ এনং ক্রুৎকন্ অবিলাত্মানাম্ অববেহি । সঃ  
অপি অগতিতায় অত্র সার্বেরা দেহী ইব আত্মতি ॥২৭

ক্রুৎকোরনববেহি যমাত্মানমখিগাঙ্গনাম্ ।  
অগতিতায় গোংপ্যত্র দেহীখাততি যারসা ॥২৬॥  
সন্ এনং ক্রুৎকন্ অবিলাত্মানাম্ অববেহি । সঃ  
অপি অগতিতায় অত্র সার্বেরা দেহী ইব আত্মতি ॥২৭

তথাহি আদিলীলায়াং বিতীয়ে সপ্তমমৌকযুতঃ  
শ্রীমতাপবচনম্—

অবধা বহুসৈতেম কিং জ্ঞাতেন তবাক্ষিন ।  
বিষ্টত্যাঃখিমিং ক্রুৎসবেকাংশেম বিজ্ঞো অগৎ ॥২৮॥  
ভজো ভগবান্ অসুতবে পূর্নরুপে ॥  
এই বিগ্রহ তার অনন্ত স্বরূপ ।  
স্বরং-রূপ তদেকাক্ষ রূপাবেশ নাম ।  
প্রথমেই তিন রূপে রহে ভগবান্ ॥৩১॥

স্বরং-রূপে অরং-প্রকাশ ছুই রূপে স্কৃতি ।  
স্বরং-রূপে এক ক্রুৎ ব্রহ্মে গোপস্কৃতি ।  
প্রাতব বৈভব রূপে বিবিধ প্রকাশে ।  
এক বপু বহুরূপ বৈছে হৈলা রাসে ॥৩০

মহিমীবিবাহে হৈলা স্কৃতি বহুবিধ ।  
প্রাতব প্রকাশ এই শাস্ত্র-পরমজি ।  
সৌভর্য্যাদি প্রায় সেই কারব্যুৎ নর ।  
কারব্যুৎ হৈলে নারদের বিশ্বয় না হয় ॥৩১

তথাহি আদিলীলায়াং প্রথমে ত্রয়োদশমৌক-  
যুতঃ শ্রীমতাপবতবচনম্—

চিত্রং বতৈতদমেকেন বপুনা যুগপৎ পূষক্ ।  
পূষেহু ঘটবাহলং ত্রিণ এক উবাবহৎ ॥২৮॥  
সেই বপু সেই আকৃতি পূষক যদি ত্রিণে  
ভাব বেশ ভেদে মান বৈভব প্রকাশে  
অনন্ত প্রকাশে ক্রুৎকোর নাহি স্কৃতি  
আকার, বর্ণ, অত্র ভেদে নাম বিবেচনা

তথাহি শ্রীমতাপবতে দশমত্বে চতুর্দশাধ্যায়ে  
সপ্তমমৌকঃ—  
অত্র চ সত্যং প্রকৃত্যে বিখিনাতিহিতেন প্রকৃত্যে  
কৃত্তি বক্রমাত্মং ইহ বহুভৌকসুখিগাম্ ॥ ২৮ ॥

অত্র চ সত্যং প্রকৃত্যে বিখিনাতিহিতেন প্রকৃত্যে  
কৃত্তি বক্রমাত্মং ইহ বহুভৌকসুখিগাম্ ॥ ২৮ ॥

অত্র চ সত্যং প্রকৃত্যে বিখিনাতিহিতেন প্রকৃত্যে  
কৃত্তি বক্রমাত্মং ইহ বহুভৌকসুখিগাম্ ॥ ২৮ ॥



নারায়ণরূপেণ একমুষ্টিকং চ ) যাং বৈ ( এব )  
যদন্তি ॥ ২৯ ॥

অপর কেহ কেহ ত্রুজ পঞ্চরাত্রাদি  
বিধানে সংস্কৃত হইয়া আপনাকে ত্রুজ  
চিত্তা করিতে করিতে বাসুদেবাদিমূর্তি  
তোমাংকেই আরাধনা করিয়া থাকে ॥ ২৯ ॥

বৈভব প্রকাশ কৃষ্ণের শ্রীবলরাম ।

বর্ণমাত্র ভেদ সব কৃষ্ণের সমান ॥

বৈভব প্রকাশ যৈছে দেবকীতনুজ ।

দ্বিভুজ স্বরূপ কভু হয় চতুভুজ ॥ ৩৯ ॥

যে কালে দ্বিভুজ নাম বৈভব প্রকাশ ।

চতুভুজ হৈলে নাম প্রাভব বিলাস ॥

স্বয়ং-রূপে গোপবেশ গোপ-অভিমান ।

বাসুদেব ক্ষত্রিয়বেশ আমি ক্ষত্রিয়জ্ঞান ॥ ৭০ ॥

সৌন্দর্য মাধুর্য ঐশ্বর্য বৈদম্ব্যবিলাস ।

ব্রজেশ্বরনন্দনে ইহা অধিক উল্লাস ॥

গোবিন্দ-মাধুরী দেখি বাসুদেবের ক্ষোভ ।

সে মাধুরী আত্মাদিতে উপজয়ে লোভ ॥ ৭১ ॥

মথুরাতে যৈছে গন্ধর্ক নৃত্য দরশনে । ৭২ ॥

তথাহি ললিতমাধবে চতুর্থাঙ্কে উনবিংশশ্লোকঃ—

উদগীর্ণকৃতমাধুরীপরিমলতাতীরলীলত মে

বৈভবং হস্ত সমকরন মুহুরসৌ চিত্রীয়তে চারণঃ ।

চেতঃ কেলিকুতূহলোত্তরলিতং সত্যং সখে মামকং

যত প্রেক্ষ্য সন্নপতাং ব্রজবধূসারূপ্যাম্বিচ্ছতি ॥ ৩০ ॥

অসৌ চারণঃ উদগীর্ণকৃতমাধুরীপরিমলত

( উদগীর্ণঃ উদিতঃ অসুতমাধুরীণাং পরিমলঃ যত

সঃ তত ) আতীরলীলত ( গোপলীল্য ) মে ( মম )

বৈভবং ( কৃত্রিমরূপং ) সমকরন ( দর্শন ) মুহুঃ

( পুনঃ পুনঃ ) চিত্রীয়তে হস্ত ( হে ) সখে ! সত্যম্

( এব যদ্যমি ) যত সন্নপতাং ( সাদৃশ্যং ) প্রেক্ষ্য

সামকং ( মদীরং ) চেতঃ কেলিকুতূহলোত্তরলিতং

( কেলিনু কুতূহল্যং কোতুকায় উত্তরলিতম্ ) অতি-

শয়েন উৎসুকং সৎ ) ব্রজবধূসারূপ্যাং ( শ্রীরাধায়াঃ  
সমানরূপতাং ) অবিচ্ছতি ॥ ৩০ ॥

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, হে উদ্ধব ! যাহার  
অলৌকিক গধুরিমার সৌগন্ধ অতিশয়  
নিঃসৃত হইয়াছে, সেই গোপলীলাশালী  
কৃত্রিমরূপ আমার দেখাইয়া এই নট  
বারম্বার চমৎকারিতা সম্পাদন করি-  
তেছে । হে সখে, আমি সত্য করিয়া  
বলিতেছি, যাহার সারূপ্য অবলোকন  
করতঃ আমার চিত্ত কেলি-কৌতুকার্থ  
সাত্বিশয় চঞ্চল হইয়া শ্রীরাধার সারূপ্য  
বাঞ্ছা করিতেছে । ৩০ ॥

পুনঃ দ্বারকাতে যৈছে চিত্রবিলোকনে ॥ ৭৩ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে বিংশশ্লোকধৃতং  
ললিতমাধবচনম্—

অপারিকলিতপূর্কঃ কশ্চনৎকারকারী

ক্ষুরতি মম গরীরানেম মাধুর্যপুংঃ ।

অয়মহমপি হস্ত প্রেক্ষ্য যং লুকচেতাঃ

সরভসমুপভোক্তুং কাময়ে রাখিকেব ॥ ৩১ ॥

দেই বপু ভিন্নাভাগে কিছু ভিন্নাকার ।

ভাবাবেশাকৃতিভেদেতদেদেকান্ননামতার ৭৪

তদেকান্নরূপে বিলাস স্বাংশ দুই ভেদ ।

বিলাস স্বাংশের ভেদে বিবিধ বিভেদ ॥ ৭৫

প্রাভব বৈভবভেদে বিলাস দ্বিধাকার ।

বিলাসের বিলাস ভেদে অনন্ত প্রকার ॥

প্রাভব বিলাস বাসুদেব সর্কর্ষণ ।

প্রাত্যঙ্গ অনিরুদ্ধ মুখ্য চারি জন ॥ ৭৬ ॥

ব্রজে গোপভাব রামের পুরে ক্ষত্রিয় ভাবন

বর্ণ বেশ ভেদ তাতে বিলাস তার নাম ॥

বৈভব প্রকাশ আর প্রাভববিলাসে ।

এক মুর্খে স্বলদেব ভাব ভেদে ভাসে ॥ ৭৭ ॥

আদি চতুর্ভূহ ইহার নাহি কেহ সম ।  
 অনন্ত চতুর্ভূহগণের প্রাকট্য কারণ ॥  
 ক্রুষ্ণের এই চারি প্রাভব বিলাস ।  
 দ্বারকা মথুরাপুরে নিত্য ইহার বাস ॥৭৮॥  
 এই চারি হৈতে চন্নিশ মূর্তি পরকাশ ।  
 অস্ত্রভেদে নাম ভেদ বৈভববিলাস ॥  
 পুনঃ ক্রুষ্ণ চতুর্ভূহ লঞা পূর্ক রূপে ।  
 পরব্যোম মধ্যে বৈসে নারায়ণ রূপে ॥৭৯॥  
 তাহা হইতে পুনঃ চতুর্ভূহ পরকাশ ।  
 আবরণ রূপে চারিদিকে যার বাস ॥  
 চারি জনের পুনঃ পৃথক্ তিন তিন মূর্তি ।  
 কেশবাди যাহা হৈতে বিলাসের স্কৃতি ॥৮০॥  
 চক্রাদিধারণ ভেদে নাম ভেদ সম ।  
 বাসুদেবের মূর্তি কেশব নারায়ণ মাধব ॥  
 সঙ্কর্মণের মূর্তি গোবিন্দ বিষ্ণু শ্রীমধুসূদন ।  
 এ অস্ত্র গোবিন্দ নহে ব্রজেন্দ্রনন্দন ॥৮১॥  
 প্রত্যাশ্রয়ের ত্রিবিক্রম বামন শ্রীধর ।  
 অনিরুদ্ধের হৃষীকেশ পদ্মনাভ দামোদর ॥  
 দ্বাদশমানের দেবতা এষ্ট বার জন ।  
 মার্গশীর্ষে কেশব পৌষে নারায়ণ ॥  
 মাঘের দেবতা মাধব গোবিন্দ ফাল্গুনে ।  
 চৈত্রে বিষ্ণু বৈশাখে শ্রীমধুসূদনে ॥ ৮২ ॥  
 জ্যৈষ্ঠে ত্রিবিক্রম আষাঢ়ে বামন দেবেশ ।  
 শ্রাবণে শ্রীধর ভাদ্রে দেব হৃষীকেশ ॥  
 আশ্বিনে পদ্মনাভ কার্তিকে দামোদর ।  
 রাধাদামোদর অস্ত্র ব্রজেন্দ্রকোণ্ডর ॥  
 দ্বাদশ তিলক মন্ত্র এই দ্বাদশ নাম ।  
 আচমনে এই নামে স্পর্শি তন্তুস্থান ॥৮৩॥  
 এই চারি জনের বিলাস মূর্তি আর অষ্টজন  
 তা সবার নাম কহি শুন সনাতন ॥  
 পুরুষোত্তম অচ্যুত নৃসিংহ জনাৰ্দ্দন ।  
 হরি ক্রুষ্ণ অধোকজ উপেন্দ্র অষ্টজন ॥৮৪॥

বাসুদেবের বিলাস দুই অধোকজ পুরুষোত্তম  
 সঙ্কর্মণের বিলাস উপেন্দ্র অচ্যুত দুই জন ॥  
 প্রত্যাশ্রয়ের বিলাস দুই নৃসিংহ জনাৰ্দ্দন ।  
 অনিরুদ্ধের বিলাস হরি ক্রুষ্ণ দুই জন ॥৮৫॥  
 এই চন্নিশমূর্তি প্রাভব বিলাস প্রধান ।  
 অস্ত্রধারণ ভেদে ধরে ভিন্ন ভিন্ন নাম ॥  
 ইহার মধ্যে যাছাঁস হয় আকার বেশ ভেদ  
 সেই সেই হয় বিলাস বৈভব বিভেদ ॥৮৬॥  
 পদ্মনাভ ত্রিবিক্রম নৃসিংহ বামন ।  
 হরি ক্রুষ্ণ আদি হয় আকার বিলক্ষণ ॥  
 ক্রুষ্ণের প্রাভব বিলাস বাসুদেবাди চারিজন  
 নেই চারিজনের বিলাস বিংশতি গণন ॥  
 ইহা সবার পৃথক্ বৈকুণ্ঠ পরব্যোম ধামে ।  
 পূর্কাদি অষ্টদিকে তিন তিন ক্রমে ॥৮৭॥  
 যদ্যপি পরব্যোমে সবার নিত্যধাম ।  
 তথাপি ব্রহ্মাণ্ডে কারো কাঁহো সন্নিধান ॥  
 পরব্যোম মধ্যে নারায়ণের নিত্য স্থিতি ।  
 পরব্যোম উপরে ক্রুষ্ণলোকের বিভূতি ॥৮৮॥  
 এক ক্রুষ্ণলোক হয় ত্রিবিধ প্রকার ।  
 গোকুলাখ্য মথুরাখ্য দ্বারকাখ্য আর ॥  
 মথুরাতে কেশবের নিত্য সন্নিধান ।  
 নীলাচলে পুরুষোত্তম জগন্নাথ নাম ॥  
 প্রয়াগে মাধব মন্দারে শ্রীমধুসূদন ।  
 আনন্দারণ্যে বাসুদেব পদ্মনাভ জনাৰ্দ্দন ॥৮৯॥  
 বিষ্ণুকাবীতে বিষ্ণু রহে হরি মায়াপুরে ।  
 ঐছে আর নানামূর্তি ব্রহ্মাণ্ড ভিতরে ॥  
 এইমত ব্রহ্মাণ্ড মধ্যে সবার প্রকাশ ।  
 সঙ্কর্মণে নবখণ্ডে কবেন বিলাস ॥ ৯০ ॥  
 সর্কত্র প্রকাশ তার ভক্তে সুখ দিতে ।  
 জগতের অধর্ম নাশি ধর্ম স্থাপিতে ॥  
 ইহার মধ্যে কারো হয় অবতারে গণন ।  
 সৈছে বিষ্ণু ত্রিবিক্রম নৃসিংহ বামন ॥

অনুরক্তি ভেদ নাম ভেদের কারণ ।  
 চক্রাদিধারণ ভেদ শুন সনাতন ॥ ১১ ॥  
 দক্ষিণাধো হস্ত হৈতে বামাধঃ পৰ্য্যন্ত ।  
 চক্রাদি অস্ত্র ধারণে করি গণনার অস্ত ।  
 সিদ্ধার্থসংহিতা করে চক্রিণ সূক্তি গণন ।  
 তার মত কহি আগে চক্রাদি ধারণ ॥  
 বাসুদেব গদা শঙ্খ চক্র পদ্মকর ।  
 সর্ধর্ষণ, গুদা শঙ্খ পদ্ম চক্রধর ॥ ১২ ॥  
 প্রভুস্ব, শঙ্খ চক্র গদা পদ্মধর ।  
 অনিরুদ্ধ, চক্র গদা শঙ্খ পদ্মকর ॥  
 পরব্যোমে বাসুদেবাদি নিজ নিজ অস্ত্রধর  
 তারমত কহি বেই সব অস্ত্রকর ॥  
 ত্রিকেশব, পদ্ম শঙ্খ চক্র গদাকর ।  
 নারায়ণ শঙ্খ পদ্ম গদা চক্রধর ॥  
 ত্রিমাধব গদা চক্র শঙ্খপদ্ম কর ।  
 ত্রিভুবন চক্র গদা পদ্ম শঙ্খ ধর ॥১৩॥  
 ত্রিবিক্রম গদা পদ্ম চক্র শঙ্খকর ।  
 ত্রিবিক্রম পদ্ম গদা চক্র শঙ্খকর ।  
 ত্রিভামন শঙ্খ চক্র গদা পদ্মধর ॥  
 ত্রিধর পদ্ম চক্র গদা শঙ্খকর ।  
 স্বদীকেশ গদা চক্র পদ্ম শঙ্খধর ॥  
 পদ্মনাভ শঙ্খ পদ্ম চক্র গদাধর ।  
 দামোদর পদ্ম চক্র গদা শঙ্খধর ॥ ১৪ ॥  
 পুরুষোত্তম চক্র পদ্ম শঙ্খ গদাধর ।  
 অচ্যুত গদা পদ্ম চক্র শঙ্খকর ॥  
 নরসিংহ চক্র পদ্ম গদা শঙ্খকর ।  
 কামাধিন পদ্ম চক্র শঙ্খ গদাধর ॥  
 ত্রিধর শঙ্খ চক্র পদ্ম গদাধর ॥  
 ত্রিধর পদ্ম গদা পদ্ম চক্রকর ॥  
 অশোক পদ্ম গদা শঙ্খ চক্রকর ॥  
 ভৈরব শঙ্খ গদা চক্র পদ্মকর ॥

হরশীর পঞ্চরাক্ষে করে বোল কুর ॥  
 তার মত কহি এবে বক্রাদি ধারণ ॥১৫॥  
 কেশবভেদে পদ্ম শঙ্খ গদা উগ্রধর ।  
 মাধবভেদে চক্র গদা শঙ্খ পদ্মকর ॥  
 নারায়ণ ভেদে নামা ভেদ অস্ত্রধর ।  
 ইত্যাদিক ভেদ সব অস্ত্রধর ॥  
 স্বয়ং ভগবানু আর লীলা পুরুষোত্তম ।  
 এই দুই নাম ধরে ভ্রজেছনন্দন ॥  
 পুরীর আবরণরূপে পুরীর নবদিশে ।  
 নববাহুরূপে নবসুষ্টি পরকাশে ॥ ১৬ ॥  
 তথাহি শতভাগবদ্যুক্তে পুরুষোত্তো পাববিভূতি-  
 কথনে পঞ্চাশিতিতমশ্লোকঃ—  
 চত্বারো বাসুদেবাভা নারায়ণ-নৃসিংহকৌ ।  
 হয়গ্রীবো মহাক্রোড়ো ব্রহ্মা চেতি সর্বাধিতাঃ ॥৩২  
 বাসুদেবাভাঃ চত্বারঃ নারায়ণনৃসিংহকৌ (ইতি  
 যৌ) হয়গ্রীবঃ মহাক্রোড়ঃ ( বরাহঃ ) ব্রহ্মা চ ইতি  
 নব ( নববাহাঃ ) উদিতাঃ ( কবিতাঃ ) ॥ ৩২ ॥  
 বাসুদেব, সর্ধর্ষণ, প্রভুস্ব, অনিরুদ্ধ,  
 নারায়ণ, নৃসিংহ হয়গ্রীব, বরাহ এবং  
 ব্রহ্মা এই নববাহু কথিত হইয়াছে ॥৩২॥  
 প্রকাশ বিলাসের এই কহিল বিবরণ ।  
 স্বাংশের ভেদ এবে শুন সনাতন ॥  
 সর্ধর্ষণ মংস্তাদিক দুই ভেদ আর ।  
 পুরুষাবতার সর্ধর্ষণ মংস্তাদি অবতার ॥  
 অবতার হয় ক্রমের বড়ি ধ প্রকার ।  
 পুরুষাবতার এক লীলাবতার আর ॥১৭॥  
 গুণাবতার আর যুগান্তরবতার ।  
 যুগান্তর আর যুগান্তর অবতার ॥  
 বাণ্য পৌণ্ড্র হর বিক্রমের ধর ।  
 এতরূপে লীলা করে প্রকটনন্দন ॥১৮॥  
 সনাতনবতার ক্রমের নাহিক মথন ।  
 নববাহুরূপে তার কহি সিন্ধুসংঘন ॥

তথাহি বিদ্যালীনারং পঞ্চমে সর্বমঙ্গলোৎপত্তং  
বহুবিধমঙ্গলঃ—

অবতারঃ স্বরূপোক্তঃ বসন্তঃ সত্যনিবেশিতাঃ ।  
বর্ষাং বিদ্যালিনঃ কুল্যাঃ সরসঃ স্ত্যঃ সহস্রাঃ ॥৩৬॥

(হে) বিদ্যাঃ, সত্যনিবেশিতাঃ অবতারঃ হি  
অসংখ্যেয়াঃ বর্ষাং বিদ্যালিনঃ (অপকরশূভাৎ) ।  
সরসঃ (সকাশাৎ) কুল্যাঃ সহস্রাঃ (সত্ত্ববত্তি) ॥৩৬॥

হে বিদ্যগণ । উপকরশূন্য সরোবর  
হইতে যেমন সহস্র সহস্র তাদৃশ নির্ঝর  
সকল সন্তুত হয় ; তদ্রূপ স্বীয় প্রাদুর্ভাব-  
শক্তির সেবধিক্রম শ্রীহরির অসংখ্য অব-  
তার হয় ॥ ৩৬ ॥

প্রথমে করেন ক্রক পুরুষাবতার ।  
সেই ত পুরুষ হয় ত্রিবিধ প্রকার ॥১০০॥

তথাহি বিদ্যালীনারং পঞ্চমে সর্বমঙ্গলোৎপত্তং  
সাম্বতন্তরচনম্—

বিকোক্ত জীনি রূপাণি পুরুষাখ্যাত্মণো বিহঃ ।  
একত মহতঃ স্রষ্টৃ বিতীরং বওসংহিতম্ ।  
তৃতীয়ং সর্কতৃত্বং তানি জ্ঞাষা বিদ্যুতে ॥ ৩৪ ॥

অনন্তশক্তিমধ্যে ক্রকের তিনশক্তি প্রধান ।  
ইচ্ছাশক্তি, ক্রিয়াশক্তি, জ্ঞানশক্তি নাম ॥  
ইচ্ছাশক্তি প্রধান ক্রক ইচ্ছা সর্ককর্তা ।  
জ্ঞানশক্তি প্রধান বাসুদেবচিহ্নাধিষ্ঠাতা ॥১০১॥

ইচ্ছা, জ্ঞান, ক্রিয়া বিনা না হয় সৃজন ।  
তিনের তিন শক্তি মিসি অপক-রচন ॥  
ক্রিয়াশক্তি প্রধান সর্কবর্ণ বলরাম ।

প্রাকৃতপ্রাকৃত সৃষ্টি করেন নির্দাম ॥১০২॥  
অবতারের অধিষ্ঠাতা ক্রকের ইচ্ছার ।  
গোলোক বৈকুণ্ঠ সুখে ক্রিক্রি দায়ার ।  
বরাহে সপ্তম্যে নিজা ক্রিক্রি-বিদ্যার ।  
অসংখ্যে সর্কবর্ণ ক্রকের ক্রিয়ার ॥১০৩॥

তথাহি বিদ্যালীনারং পঞ্চমোক্তো বিদ্যালী-  
নোক্তঃ—

সহস্রগজং কমলং গোকুলাখ্যং মহৎপদম্ ।  
তৎকর্ণিকারং তদনন্তাংশনস্তবম্ ॥ ৩৫ ॥

সহস্রগজং কমলং মহৎপদং তৎ (ধাম)  
অনন্তাংশনস্তবম্ (অনন্তত শ্রীবলদেবত অংশেন  
জ্যোতির্বিভাগবিশেষেণ সত্ত্বঃ সর্বাভির্ভাবঃ বক্ত  
তৎ) তৎ কর্ণিকারং গোকুলাখ্যং তদনন্ত (তত  
শ্রীকৃকৃত ধাম শ্রীস্বরূপশোভাতিঃ সহ বাসবোপাং  
মহাত্তঃপুরম্) ॥ ৩৫ ॥

যে সহস্রদল কমলাকার গোকুল  
নামক সর্কোৎকৃষ্ট স্থান, বলদেবের  
অংশ অর্থাৎ জ্যোতির্বিভাগবিশেষে স্বারা  
আবির্ভূত হইয়াছে, সেই কমল কর্ণি-  
কাকে শ্রীকৃকের ধাম বলিয়া বর্ণন  
করিয়াছেন ॥ ৩৫ ॥

মায়া দ্বায়ে সৃজেন তিঁহো ব্রহ্মাণ্ডেরপণ ।  
জড়রূপা প্রকৃতি নহে ব্রহ্মাণ্ড কারণ ॥১০৪॥  
জড় হৈতে সৃষ্টি নহে ঈশ্বরশক্তি বিনে ।

তাহাতে সর্কবর্ণ করেন শক্তি আধানে ॥১০৫॥  
ঈশ্বরের শক্তো সৃষ্টি করনে প্রকৃতি ।  
লৌহ যেন অগ্নিশক্তো ধরে দাহশক্তি ॥১০৬॥

তথাহি শ্রীমত্যাগবতে দশমবন্ধে ষট্চত্বারিংশ-  
ধ্যায়ে একত্রিংশনোক্তঃ—

এতো হি বিশ্বস্য চ বীজবোদী  
মামো বৃক্কলঃ পুরুষঃ প্রধানম্ ।  
অবীর ভুক্তো বিলকরণস্য  
জানস্য চোশাত ইনো পুরানো ॥ ৩৬ ॥

হি (ব্রহ্মাণ্ড) মামো বৃক্কলঃ চ এতো বিশ্বস্য  
বীজবোদী পুরুষঃ প্রধানম্ । পুরানো ইনো ভুক্তো  
অবীর (ভুক্তাঃ) বিলকরণস্য (ভলকরণঃ)  
জানস্য (জৈতব্রহ্মণস্য বীজস্য) চ ইনো  
(শ্রীমত্যাগবতে) ॥ ৩৬ ॥

রাম ও কৃষ্ণ এই বিশ্বের বীজস্বরূপ ও  
 যোনিস্বরূপ পুরুষ ও প্রাকৃতি । এই দুই  
 পুরাণ পুরুষ ভূতসমূহে অনুপ্রবেশ পূর্বক  
 ভূতসমূহের ও তদ্বিলক্ষণ চৈতন্যাত্মক  
 জীবের নিয়ন্তা হইয়া রহিয়াছেন ॥ ৩৬ ॥

সৃষ্টি হেতু সেই মূর্তি প্রপঞ্চে অবতরে ।  
 সেই কেশ্বর মূর্তি অবতার নাম ধরে ॥  
 মায়াভীত পরব্যোমে সবার অবস্থান ।  
 বিশ্বে অবতারি ধরে অবতার নাম ॥  
 মায়া অবলোকিতে শ্রীসঙ্কর্ষণ ।  
 পুরুষরূপে অবতীর্ণ হইলা প্রথম ॥ ১০৭ ॥

তথাহি আদিপীলায়াং পঞ্চমে ষাটশ্লোকধৃতং  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

জগৃহে পৌরুষং রূপং ভগবান্ মহাদািভিঃ ।  
 সঙ্কৃতং যোড়শকলমাদৌ লোকসিসৃক্ষমা ॥৩৭॥

তথাহি আদিপীলায়াং পঞ্চমে একাদশশ্লোক-  
 ধৃতঃ শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

আদ্যোহবতারঃ পুরুষঃ পরম্য  
 কালঃ স্ভভাবঃ সদসয়নশ্চ ।  
 ত্রযাং বিকারো গুণ ইঞ্জিরামি  
 বিরাট্ বরাট্ স্বাম্ চরিত্ব ভূমঃ ॥ ৩৮ ॥

সেই পুরুষ বিরজাতে করেন শয়ন ।  
 কারণাক্ষিপারী নাম জগৎ-কারণ ॥  
 কারণাক্ষিপারে মায়ার নিত্য অবস্থিতি ।  
 বিরজান পারে পরব্যোমে নাহিগতি ॥১০৮

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে নবমাধ্যয়ে  
 দশশ্লোকঃ—

প্রবর্ততে বহু রজসবসন্তোঃ  
 সখক মিত্রঃ স চ কালক্রিয়মঃ ।

স বহু মায়া কিসৃতাণসে হরে-  
 রহস্রতা বহু সুরাসুরাক্রিভাঃ ॥ ৩৯ ॥

বহু (বৈকুণ্ঠে) রমঃ ভবঃ করোঃ মিত্রঃ বহুঃ

চ কালক্রিয়মঃ চ ম প্রবর্ততে, বহু মায়া স  
 (প্রবর্ততে) অগরে (ন সন্তি ইতি) কিসৃতা,  
 বহু সুরাসুরাক্রিভাঃ হরেঃ অহস্রতাঃ (পার্বদাঃ  
 সন্তি) ॥ ৩৯ ॥

যে বৈকুণ্ঠে রজঃ ও ভ্রমোগুণের এবং  
 রজসুস সম্বন্ধীয় প্রাকৃত সত্ত্বগুণের প্রকৃতি  
 নাই, বাহাতে গুণত্রয়ের সাম্যাবস্থারূপা  
 প্রকৃতি নাই, যেখানে কালের কোন  
 প্রভাব নাই এবং যেখানে মায়াও নাই ;  
 অতএব রাগলোভাদিও নাই । যে  
 বৈকুণ্ঠে হরির পার্শ্বদগণ সুরাসুর হইতেও  
 পূজ্যতম ॥ ৩৯ ॥

মায়ার যে দুই রুত্তি মায়া আর প্রাধান ।  
 মায়া নিমিত্ত হেতু, বিশ্বের প্রকৃতি উপাদান  
 সেই পুরুষ মায়া পানে করে অবধান ।  
 প্রকৃতি ক্ষুভিত করি করে বীর্ঘ্যাদান ॥  
 স্বাস্থবিশেষাভাসরূপে প্রকৃতি স্পর্শন ।  
 জীবরূপ বীজ তাতে কৈল সমর্পণ ॥১০৯॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে ষড়্বিংশা-  
 ধ্যয়ে অষ্টাদশশ্লোকঃ—

দৈবাৎ স্তুতিধর্মিণ্যাং স্বস্যাং যোনৌ পরঃ পুমান্ ।  
 আধত বীর্ঘ্যং সাহস্রত মহত্ত্বং বিরগমন্ ॥ ৪০ ॥

দৈবাৎ (জীবাটুট্যাং কাশাৎ বা) স্তুতি-  
 ধর্মিণ্যাং (স্তুতিভা ধর্মী গুণা স্বস্যাং তস্য্যাং)  
 স্বস্যাং যোনৌ (অভিব্যক্তিস্থানে) পরঃ পুমান্  
 বীর্ঘ্যং (জীবাধ্য চিক্রপশক্তিম্) আধত (আহিত-  
 বান্) সা (প্রকৃতিঃ) বিরগমন্ (প্রেক্ষানবহলাং)  
 মহত্ত্বম্ অসৃত ॥ ৪০ ॥

জীবের অসৃষ্ট বসন্তঃ প্রকৃতির শুধ-  
 কোত হইলে পরম পুরুষ স্রবাসিক্  
 প্রকৃতিতে জীবাধ্যতিক্রমপতির আধান

করেন, তাহাতে সেই প্রকৃতি হইতে  
প্রকাশবহুল মহত্ত্বের উৎপত্তি হয় ॥৪০॥

তথাহি শ্রীমত্তাগবতে তৃতীয়কণ্ডে পঞ্চমাধ্যায়ে  
ষড়বিংশতীকঃ—

কাশবৃত্ত্যা কু মায়াম্ গুণমধ্যাম্বেদকঃ ।

পুরুষোত্তমভূতেন বীৰ্য্যমাধক্ত বীৰ্য্যবান্ ॥৪১॥

কাশবৃত্ত্যা ( কালো বৃত্তিব্যাস্যঃ তন্ন মায়াম্  
নিমিত্তভূতরা ) গুণমধ্যাম্ ( কুভিত্তগুণায়ং ) মায়াম্  
ম্য ( অব্যক্তে ) বীৰ্য্যবান্ ( চিহ্নক্ৰিয়ুক্তঃ )  
অবেদকঃ ( ভগবান্ ) আশ্রমভূতেন ( স্বাংশেন  
ধারভূতেন ) পুরুষেণ ( প্রকৃতির্ভূত্বা ) বীৰ্য্যং  
( জীবাধ্যাশক্তিন্ ) আধক্ত ॥ ৪১ ॥

নিমিত্তভূতা অব্যক্তা মায়ার গুণ-  
কোভ হইলে চিহ্নক্ৰিয়ুক্ত ভগবান্, স্বাংশ-  
ভূত প্রকৃতির অধিষ্ঠাতা পুরুষ দ্বারা  
প্রকৃতিতে জীবনামকশক্তিকে আধান  
করিয়াছিলেন ॥ ৪১ ॥

তবে মহতত্ত্ব হৈতে ত্রিবিধ অহঙ্কার ।  
যাহা হৈতে দেবতেজস্রয় ভূতের প্রচার ॥  
সর্গ তত্ত্ব মিলি সৃষ্টিল ব্রহ্মাণ্ডেরগণ ।  
অনন্ত ব্রহ্মাণ্ড তার নাহিক গণন ॥১১০॥  
এঁহো মহৎস্রষ্টা পুরুষ মহাবিস্কু নাম ।  
অনন্ত ব্রহ্মাণ্ড তাঁর লোমকুপে ধাম ॥  
গবাক্ষে উড়িয়া ঝেছে রেণু আসে যায় ।  
পুরুষ নিখাল সহ ব্রহ্মাণ্ড বাহিরায় ॥  
পুনরপি নিখাল সহ বার অভ্যন্তর ।  
অনন্ত ঐশ্বর্য্য তাঁর সব মায়ামপার ॥ ১১১ ॥

তথাহি আদিপীঠায়াং পঞ্চমে সপ্তমশ্লোকধৃতং  
ব্রহ্মসংহিতাবচনম্—

বৈশ্যকনির্ধনিতকামমবাসক্য

জীবন্তি সোমবিলম্বা অক্ষতনাথাঃ ।

বিস্তর্য্যন্ত ইহ বস্যা কল্মষির্বিধো

গোবিধবাসিঃ সত্বঃ সত্বঃ কল্মষিঃ সত্বঃ ॥

সমস্ত ব্রহ্মাণ্ডগণের ইঁহো অন্তর্ধামী ।  
কারণাক্রিশারী সব জগতের স্বামী ॥

এইত কহিল প্রথম পুরুষের তত্ত্ব ।

দ্বিতীয় পুরুষের এবে শুনহ মহত্ব ॥১১২॥

সেই পুরুষ অনন্ত কোটি ব্রহ্মাণ্ড সৃষ্টিরা ।

প্রকৈক মূর্ত্তে প্রবেশিলা বহু মূর্ত্ত হইয়া ॥

প্রবেশ করিয়া দেখে সব অঙ্ককার ।

রহিতে নাহিক স্থান, করিলা বিচার ॥১১৩॥

নিজাপ্ন স্বেদজলে ব্রহ্মাণ্ডাক্ষ ভরিলা ।

সেই জলে শেষশয্যার শয়ন করিল ॥

তার নাভিপদ্ম হৈতে উঠিল এক পদ্ম ।

সেই পদ্মে জন্ম হৈল ব্রহ্মার জন্ম সখ্য ॥১১৪॥

সেই পদ্মনালে হইল চৌদক্ষুবন ।

তিঁহো ব্রহ্মা হয়ে সৃষ্টি করিল সৃজন ॥

বিষ্ণুরূপ হঞা করে জগত পালনে ।

গুণাতীত বিষ্ণু স্পর্শ নাহি মায়ামনে ॥১১৫॥

রসরূপ ধরি করে জগত-সংহার ।

সৃষ্টি, স্থিতি, প্রলয় হয় ইচ্ছায় খাঁহার ॥

ব্রহ্মা, বিষ্ণু, শিব তাঁর গুণ-অবতার ।

সৃষ্টি, স্থিতি, প্রলয় তিনের অধিকার ॥১১৬॥

হিরণ্যগর্ভ, অন্তর্ধামী, গর্তোদকশারী ।

সহস্রশীর্ষাদি করি বেদে খাঁরে গাই ॥

এইত দ্বিতীয় পুরুষ ব্রহ্মাণ্ড ঈশ্বর ।

মায়ার আশ্রয় হয় তবু মায়ামপার ॥১১৭॥

তৃতীয় পুরুষ বিষ্ণু, গুণ-অবতার ।

তুই অবতার তিতর গণনা তাঁহার ॥

বিরাট ব্যষ্টি জীবের তিঁহো অন্তর্ধামী ।

সীরোদকশারী তিঁহো পালনকর্তা স্বামী ॥

পুরুষাবতার এই কহিল নিরূপণ ।

নীলাবতার কহি এবে শুন সনাতন ॥১১৮॥

নীলাবতার ক্রকের না বায় গণন ।

প্রধান করিয়া করি দিল দরশন ॥

মৎস, কুর্মা, রঘুনাথ, সুসিংহ, বামন ।  
বরাহাদি লেখা যার না যার গণন ॥১১৯॥

তথাহি শ্রীমহাগণপত্তে দশমস্কন্ধে বিতীরাধ্যায়ে  
চম্বারিংশশ্লোকঃ—

মৎস্যাক্ষকচ্ছপবরাহনৃসিংহহংস-  
রাক্শ্যবিপ্রবিবুধেবু কৃতাবতারঃ ।  
অং পাসি মন্ত্রিকুবনক তথাধুনেশ  
ভারং ভুবো হর যদ্বত্তম বন্দনং তে ॥ ৪০ ॥

( হে ) ঈশ, ( অক্সমা যথা ) মৎস্যাক্ষকচ্ছপ-  
বরাহনৃসিংহহংসরাক্শ্যবিপ্রবিবুধেবু কৃতাবতারঃ  
( সনু ) অং নঃ ( অস্থানু দেবানু ) মন্ত্রিকুবনং  
( মন্ত্রিকুবনানু সাধুজনানু ) চ পাসি তথা অধুনা  
( অপি ) ভুবং ভাবঃ হর । ( হে ) যদ্বত্তম, তে  
( ভূভাং ) বন্দনং ॥ ৪০ ॥

হে ঈশ ! তুমি মৎস, হরগ্রীব, কুর্মা,  
বরাহ, সুসিংহ, হংস, শ্রীরামচন্দ্র, পরশু-  
ও বামন প্রভৃতি অবতার সকলে যেরূপ  
মন্ত্রিকুবনকে ও আমাদিগকে রক্ষা করিয়া  
থাক, তদ্রূপ অধুনা এই পৃথিবীর ভার  
হরণ কর । হে যদ্বত্তম, তোমাকে বন্দনা  
করি ॥ ৪০ ॥

লীলাবতারের কৈল দিগ্ মরশন ।  
গুণাবতারের এবে গুণ বিবরণ ।  
ব্রহ্মা, বিষ্ণু, শিব, তিন গুণাবতার ।  
ত্রিগুণাঙ্গীকার করে সৃষ্টিাদি ব্যবহার ॥১২०॥  
তক্ষিপ্রকৃত পুণ্যে কোন জীবোত্তম ।  
রক্ষণগুণে বিভাবিত করি তার মন ।  
পিতৃদাদকশারি হারা শক্তি সকারি ।  
যাতি সৃষ্টি করে ব্রহ্মারূপ ধরি ॥ ১২১ ॥

তথাহি শ্রীমহাগণপত্তে দশমস্কন্ধে  
পঞ্চাশৎশ্লোকঃ—

তাবান্ বখাঙ্গনকশেবু সিবোভু ভেজঃ  
বীরঃ কিরং প্রকটরতি তভবতঃ ।  
ব্রহ্মা হ এং অগনওবিধানকর্তা  
গোবিন্দাদিপুরুষং তমহং ভজামি ॥ ৪৪ ॥

যথা তাবান্ ( স্বর্ষ্যঃ ) সিবোভু অঙ্গনকশেবু  
( স্বর্ষ্যাকাশোবু ) বীরঃ কিরং ভেজঃ প্রকটরতি,  
অপি ( শকাং ভেন তদুপাধিকাংশেদ দাহাদি-  
কার্যং স্বরমেব করোতি ) তভবৎ হঃ এঃ ( পুরুষঃ )  
অত্র ( জীববিশেষে কিঞ্চিৎ ভেজঃ প্রকটরতি ভেন  
তদুপাধিকাংশেদ স্বরমেব ) ব্রহ্মা ( সনু ) অগনও-  
বিধানকর্তা ( ভবতি ) তম্ আদিপুরুষং গোবিন্দান্  
অহং ভজামি ॥ ৪৪ ॥

সূর্য যেমন স্বনামবিখ্যাত সূর্য্যাকান্ত-  
মণিতে স্বকীয় কিঞ্চিৎ ভেজঃ প্রকট  
করিয়াও ভেজঃ উপাধিক অংশ দ্বারা  
দাহাদি কার্য নিষ্পন্ন করেন ; তদ্রূপ  
যিনি জীববিশেষে কিঞ্চিৎ সৃষ্টিশক্তি  
প্রকাশ করতঃ তদুপাধিক অংশ দ্বারা  
স্বরং ব্রহ্মা হইয়া ব্যষ্টিকর্তা হইলেন ; সেই  
আদিপুরুষ গোবিন্দকে ভজনা করি ॥৪৪॥

কোন কল্পে যদি যোগ্য জীব নাহি পায় ।  
আপনে ঈশ্বর তবে অংশে ব্রহ্মা হয় ॥১২২॥

তথাহি আদিগীতারং পঞ্চমে উনবিংশশ্লোক-  
যুতং শ্রীমহাগণপত্তচন্দঃ—

বন্যাভিবু পঞ্চরজোহুর্ভিলোকপালৈঃ  
মৌন্যুতবৈধং তদুপাসিতভীর্ভীর্ভদ্র ।  
ব্রহ্মা ভবোহুহমপি বস্য কলাঃ কলায়াঃ  
শ্রীকোটিহুং তিরন্যা নৃপাদিনং ক ॥ ৪৫ ॥

নির্কাশ কলার রূক তনোত্তম অঙ্গীকারি ।  
সংহারার্থ মারি সবে কুলকল ধরি ।  
দানো সবে বিচারি করি বিচারি কল  
হুং তিরন্যা নৃপাদিনং ক ॥ ৪৫ ॥

দুষ্ক যেন অঙ্গঃবাগে দধিরূপ ধরে ।  
 দুষ্কান্তর বস্ত্র নহে দুষ্ক হৈতে নারে ॥১২০  
 তথাহি ব্রহ্মসংহিতায়ঃ পঞ্চমাধ্যায়ে পঞ্চচর্বা-  
 রিংশলোকঃ—

কীরং যথা দধি বিকারবিশেষযোগাৎ  
 সঞ্জায়তে নতু ততঃ পৃথগস্তি হেতোঃ ।  
 যঃ শত্ৰুতামপি তথা সমুপৈতি কার্যাদ্-  
 গোবিন্দমাদিপুরুষং তমহং ভজামি ॥ ৪৬ ॥

যথা বিকারবিশেষযোগাৎ কীরং ( দুষ্কং ) দধি  
 সংজায়তে ততঃ হেতোঃ ( হৃৎ ) ন পৃথক্ অস্তি  
 তু ( এবং ) তথা কার্যাত্ ( সংহারকার্যাবশ্যত্ )  
 যঃ ( পুরুষঃ ) শত্ৰুতাম্ অপি সমুপৈতি তম্ আদি-  
 পুরুষং গোবিন্দম্ অহং ভজামি ॥ ৪৬ ॥

দুষ্ক বিকারবিশেষযোগে যেমন দধি  
 হয় ; কিন্তু দধি স্বকারণ দুষ্ক হইতে  
 পৃথক পদার্থ নয় ; তদ্রূপ যিনি সংহা-  
 রাদি কার্যের নিমিত্ত রুদ্ররূপ প্রাপ্ত হইয়া-  
 ছেন, সেই আদিপুরুষ গোবিন্দকে আমি  
 ভজনা করি ॥ ৪৬ ॥

শিব সায়াক্তিসঙ্গী তসোঃশুণাবেশ ॥১২৪

তথাহি শ্রীমহাগবতে দশমস্কন্ধে অষ্টাশীত্য-  
 ধ্যায়ে তৃতীয়লোকঃ—

শিবঃ শক্তিযুতঃ শবৎ জিহ্লিকো গুণসংবৃতঃ ।  
 বৈকারিকতৈত্ত্বজসচ্চ তামসচ্চেতাঃ ত্রিধা ॥৪৭॥

শিবঃ শবৎ শক্তিযুতঃ জিহ্লিকঃ ( গুণত্রয়ো-  
 পাধিঃ ) বৈকারিকঃ ( সাত্ত্বিকঃ ) তৈত্ত্বজসঃ ( রাজসঃ )  
 তামসঃ চ ইতি অহম্ ( অহম্ভবং হি তত্ত্বরূপেণ )  
 ত্রিধা ( স চ ভববিষ্ঠাতা ) গুণসংবৃতঃ ॥ ৪৭ ॥

শিব নিরন্তর প্রকৃতিশক্তির সহিত  
 সংযুক্ত, ত্রিগুণোপাধি, গুণত্রয়ে আবৃত্ত  
 এবং সাত্ত্বিক, রাজস ও তামসভেদে  
 ত্রিবিধ অহকারের অধিষ্ঠাতা ॥ ৪৭ ॥

মায়াতীত, শুণাতীত বিষ্ণু পরমেশ ॥১২৫

তথাহি তট্টৈরব পঞ্চমলোকঃ—

হরিহি নিশ্চর্ণঃ সাক্ষাৎ পুরুষঃ প্রকৃত্তেঃ পরঃ ।  
 স সর্কদৃগুপদ্রষ্টা তৎ ভজমি গুণো ভবেৎ ॥ ৪৮ ॥

প্রকৃত্তেঃ পরঃ হরিঃ হি নিশ্চর্ণঃ ( শুণাতীতঃ )  
 সাক্ষাৎ ( এব ) পুরুষঃ ( ঈশ্বরঃ ) সঃ ( হরিঃ )  
 সর্কদৃক্ ( সর্কেবাৎ শিবব্রহ্মাদিনাং দৃক্ জ্ঞানং  
 যস্মাত্ততঃ সন্ ) উপদ্রষ্টা ( তদাদিসাক্ষী ভবতি,  
 অতঃ ) তৎ ভজমি নিশ্চর্ণঃ ( শুণাতীতফলভাগ্ )  
 ভবেৎ ॥ ৪৮ ॥

হরি নিশ্চর্ণ, সাক্ষাৎ পুরুষ, প্রকৃতির  
 পর, সকলের জ্ঞানপ্রদ এবং সর্কদৃক্ ।  
 তাঁহাকে ভজনা করিলে নিশ্চর্ণ ভাব  
 প্রাপ্ত হয় ॥ ৪৮ ॥

পালনার্থ স্বাংশ বিষ্ণুরূপে অবতীর্ণঃ ।

সত্ত্বগুণ দৃষ্টান্ত তাতে শুণমায়ঃ পরঃ ॥

স্বরূপ ঐশ্বর্য্য পূর্ণ কৃষ্ণসম প্রায় ।

কৃষ্ণঅংশী, তি হো অংশবেদে হেনগায় ॥১২৬

তথাহি ব্রহ্মসংহিতায়ঃ পঞ্চমাধ্যায়ে বিপকাশৎ  
 লোকঃ—

দীপার্জিরেব হি দশান্তরমত্বাপেত্য

দীপায়তে বিবৃত্তেহেতুসমানধর্ম্মা ।

যত্তাদৃগেব হি চ বিকৃত্তয়া বিভাতি

গোবিন্দমাদিপুরুষং তমহং ভজামি ॥৪৯॥

দীপার্জিঃ ( দীপশিখা ) এব হি ( যথা ) দশা-  
 ন্তরম্ অত্বাপেত্য বিবৃত্তেহেতুসমানধর্ম্মা ( বিবৃত্তঃ  
 বিস্তারিতঃ হেতোঃ মূলদীপত্বসমানঃ সদৃশঃ ধর্ম্মঃ  
 যয়া সা ) দীপায়তে ( পূর্কদীপবৎ আচ্যাত্ত তৎ  
 সদৃশতয়া প্রকাশতে ) তাদৃক্ এব যঃ ( পুরুষঃ )  
 বিকৃত্তয়া ( বিষ্ণুরূপেণ ) চ বিভাতি হি : তম্  
 আদিপুরুষং গোবিন্দম্ অহং ভজামি ॥ ৪৯ ॥

দীপশিখা যেমন দশান্তরে উপগত  
 হইয়া মূলদীপের সদৃশ ধর্ম্ম বিস্তার করতঃ



খুর্দ দীপের ছায় প্রকাশ পায়, তরুণ  
মিনি পালনার্থ বিষ্ণু হইয়া প্রকাশিত  
হইয়াছেন, সেই আদিপুরুষ গোবিন্দকে  
আমি ভজনা করি ॥ ৪৯ ॥

ব্রহ্মা শিব আজ্ঞাকারী ভক্ত অবতার ।  
পালনার্থ বিষ্ণু কৃষ্ণের স্বরূপ আকার ১২৭

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ত্রিংশত্তমোঃ ব্রহ্মাধ্যায়ে  
ত্রিংশতশ্লোকঃ—

স্বামি তন্নিস্কোহং হরো হরতি ত্বমঃ ।  
বিষং পুরুষরূপেণ পরিপাতি ত্রিশক্তিধ্বং ॥ ৫০ ॥

অহং তন্নিস্কৃতঃ ( সন্ ) বিষং স্বামি হরঃ  
ত্বমঃ ( সন্ ) হরতি, ত্রিশক্তিধ্বং পুরুষরূপেণ  
( বিষ্ণুনা মা কভারেণ ) পরিপাতি ॥ ৫০ ॥

ব্রহ্মা কহিলেন, হে নারদ ! তাঁহারই  
নিরোগে আমি বিষ্ণের সৃষ্টি করি, রুদ্র  
তাঁহার অদীন হইয়াই বিষ্ণের সংহার  
করেন, সেই ত্রিশক্তিশালী শ্রীহরি বিষ্ণু-  
রূপে বিষ্ণের পালন করেন ॥ ৫০ ॥

মহন্তরাবতার ইবে শুন সনাতন ।  
অসংখ্য গণনা তাঁর শুনহ কারণ ॥

ব্রহ্মার এক দিনে হয় চৌদ্দ মহন্তর ।  
চৌদ্দ অবতার তাঁহা করেন ঐশ্বর ॥

চৌদ্দ একদিনে মাগে চারি শত বিশ ।  
ব্রহ্মার বৎসরে পঞ্চস্রাজার চল্লিশ ॥ ১২৮ ॥

শতেক বৎসর হয় অদীন ব্রহ্মার ।  
শকলক্ষ চারি সংখ্র মহন্তরাবতার ॥

অনন্ত ব্রহ্মাও ঐছে করহ গণন ।  
স্বধাবিস্কুব এক নিশ্বাস ব্রহ্মার জীবন ॥

স্বধাবিস্কুল নিশ্বাসের নাবিক পর্য্যন্ত ।  
এক মহন্তরাবতার লেখার অন্ত ॥ ১২৯ ॥

সাবজুবে বজ্র স্বারোচিষে বিষ্ণু নাম ।  
ঐক্যমে সত্যসেন ভাসনে হরি অভিধান ॥

রৈবতেবৈবকুষ্ঠচাক্ষুবেঅজিঙবৈবস্বভে বামন  
সাবর্ণ্যে সার্কভৌম দক্ষসাবর্ণ্যে কৃষ্ণভূগর্জন  
বৃদ্ধসাবর্ণ্যে বিষক্সেন ধর্ম্মগেজুধর্ম্মসাবর্ণ্যে  
রুদ্রসাবর্ণ্যে সুধামা যোগেশ্বর দেবসাবর্ণ্যে  
ইন্দ্রসাবর্ণ্যে বৃহস্তানু অভিধান ।

এই চৌদ্দমহন্তরে চৌদ্দ অবতার নাম ১৩০  
যুগ অবতার কহি ইবে শুন সনাতন ।  
সত্য ত্রেতা দ্বাপর কলিযুগের গণন ॥

শুক্ল রক্ত কৃষ্ণ পীত ক্রমে চারি বর্ণ ।  
চারিবর্ণ ধরি কৃষ্ণ করায় যুগধর্ম্ম ॥ ১৩১ ॥

তথাহি আদিলীলারাঃ তৃতীয়ে সপ্তমশ্লোকঃ  
শ্রীমদ্ভাগবতগননম্—

আসন্ বর্ণাভ্রয়োহস্ত গৃহতোহমুযুগং তনুঃ ।  
শুক্লো রক্তস্তথা পীত ইদানীং কৃষ্ণতাং গতঃ ॥ ৫১ ॥

সত্যযুগের ধ্যান ধর্ম্ম শুক্লমূর্তি ধরি ।  
কর্দমেণে বর দিল বৈহো রূপা করি ॥  
কৃষ্ণ ধ্যান করে লোক জ্ঞান অধিকারী ।  
ত্রেতাযুগে বজ্র করায় রক্তবর্ণ ধরি ॥ ১৩২ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশতমোঃ পঞ্চমাধ্যায়ে  
একবিংশতিশ্লোকঃ—

কৃতে শুক্লশ্চতুর্বাছর্জটিলো বৎসাবরঃ ।  
কৃষ্ণানিনোপবীতাকান্ বিভ্রদত্তঃ কমণ্ডলুন্ ॥ ৫২ ॥  
কৃতে ( সত্যযুগে ) শুক্লঃ ( শুক্লবর্ণঃ শুক্লনামা  
চ ) চতুর্কবাছঃ জটিলঃ বৎসাবরঃ কৃষ্ণানিনোপ-  
বীতাকান্ দত্তঃ কমণ্ডলুঃ চ বিভ্রৎ ॥ ৫২ ॥

সত্যযুগে শুক্লবর্ণ চতুর্কবাছ জটিল  
বৎসাবর কৃষ্ণ-মুগচর্ম্মধারী বজ্রমূত্র-  
বিশিষ্ট অক্ষমালাভূষিত দণ্ডকমণ্ডলুধারী  
ব্রহ্মচারির বেশে অবতীর্ণ হইলেন ॥ ৫২ ॥

তথাহি তত্রৈব চতুর্বিংশতিশ্লোকঃ—  
ত্রেতায়াং রক্তবর্ণেহিদৌ চতুর্বাছজিমেঘলঃ ।  
হিরণ্যকেশজঘায়াঃ কৃষ্ণভ্রূয়াপলম্বকঃ ॥ ৫৩ ॥

ত্রৈলোক্যম্ অসৌ ( ভগবান্ ) রক্তবর্ণঃ চতু-  
 বারুঃ ত্রিবেদনঃ ( ত্রিগুণা দীক্ষাকৃত্তা মেখলা  
 কটিস্থত্রং যত সঃ ) হিরণ্যকেশঃ ( পিনাককেশঃ )  
 ত্রয়াম্বা ( অগ্নিবেদত্রয়ী প্রতিপাদিতঃ আত্মা  
 বৃষ্টিঃ যত সঃ অক্ষরাব্রাহ্মণলক্ষণঃ ( অক্ষু ক্ষবাদি  
 উপলক্ষণং চিহ্নং যত সঃ ) ॥ ৫০ ॥

ত্রৈত্যবুগে ঐ ভগবান্ রক্তবর্ণ চতু-  
 র্বাহু ত্রিমেখল হিরণ্যকেশ ত্রয়াম্বা এবং  
 অক্ষুক্ষব্রাহ্মণলক্ষিত যজ্ঞরূপে অবতীর্ণ  
 হইলেন ॥ ৫৩ ॥

কৃষ্ণপাদার্চন হয় দ্বাপরের ধর্ম ।  
 কৃষ্ণবর্ণেকরায়লোকে কৃষ্ণার্চনকর্ম ॥১০৩

তথাহি আদিদীনারাং তৃতীয়ে অষ্টমশ্লোকধৃতং  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

দ্বাপরে ভগবান্ স্তানঃ পীতবাসা নিজায়ুধঃ ।  
 শ্রীমৎসাদিত্তিরকৈশ্চ লক্ষণৈরুপলক্ষিতঃ ॥ ৫৪ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে পঞ্চমাধ্যায়ে  
 একোনত্রিংশশ্লোকঃ—

নমস্তে বাসুদেবার নমঃ সঙ্কর্ষণায় চ ।  
 প্রহ্লাদান্নানিকঙ্কার তুভ্যং ভগবতে নমঃ ॥৫৫॥

বাসুদেবার তে নমঃ সঙ্কর্ষণায় চ নমঃ প্রহ্লাদায়  
 অনিকঙ্কার তুভ্যং ভগবতে নমঃ ॥ ৫৫ ॥

বাসুদেব, তোমাকে প্রণাম ; সঙ্কর্ষণ,  
 অনিরুদ্ধ, প্রহ্লাদ, তোমাকে প্রণাম ॥৩৫॥

এই মন্ত্রে দ্বাপরেতে করে কৃষ্ণার্চন ।  
 কৃষ্ণনাম সঙ্কীর্তন কলিযুগের ধর্ম ॥  
 পীতবর্ণ ধরি তবে কৈঙ্কর প্রবর্তন ।  
 প্রেমভক্তি লোকে মিলি লক্ষ্য উত্তমণ ॥  
 ধর্ম প্রবর্তন করে ত্রৈলোক্যসম্বলন ।  
 প্রেমে গায় নাচে লোক করে সঙ্কীর্তন ॥১০৪

তথাহি আদিদীনারাং তৃতীয়ে দশমশ্লোকধৃতং  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

কৃষ্ণবর্ণং বিবাকৃষ্ণং সাক্ষোপাভ্যুপাধিবম্ ।  
 বটৈঃ সঙ্কীর্তন প্রারৈর্ষভক্তি হি সুমেধনঃ ॥৫৬॥

আর তিন বুগে ধ্যানান্ধিতে যেই ফল হয়  
 কলিকালে কৃষ্ণনামে সেই ফল পায় ॥১০৫

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দ্বাদশস্কন্ধে তৃতীয়াধ্যায়ে  
 একপঞ্চাশত্তমশ্লোকঃ—

কলেদর্শোবনিধে রাজসক্তি ছেকো মহান্ গুণঃ ।  
 কীর্তনাদেব কৃষ্ণস্ত যুক্তমমঃ পরং ব্রহ্মেৎ ॥ ৫৭ ॥

( হে ) রাজন্, দোষনিধে: ( দোষণাৎ নিধে:  
 অপি ) কলে: এক: ( কীর্তনাদয়রূপঃ ) মহান্  
 গুণঃ সক্তি হি ( যমাৎ ) কৃষ্ণস্ত কীর্তনাৎ এব  
 যুক্তমমঃ ( সন্ ) পরং ( সর্কোৎকৃষ্টপুত্রার্থৎ  
 প্রেমাগং ) ব্রহ্মেৎ ॥ ৫৭ ॥

হে রাজন্! কলি ব দোষ লমুদারেন  
 মধ্যে একটি গুণ দেখিতে পাওয়া যায়,  
 যে ব্যক্তি হরিকীর্তন করে, সে নরাধম  
 হইলেও বন্ধন মোচন পূর্বক পরম গতি  
 প্রাপ্ত হয় ॥ ৫৭ ॥

তথাহি তট্টৈব দ্বিগুণাশত্তমশ্লোকঃ—  
 কৃতে যদ্যারতো নিকুং ত্রেতায়াং বজতো মথৈঃ ।  
 দ্বাপরে পরিচর্ষমাং কপৌ ভক্য়িকীর্তনাৎ ॥৫৮॥

কৃতে ( সত্যযুগে ) নিকুং ধ্যারতঃ বৎ তৎ  
 ত্রেতায়াং মথৈঃ বজতঃ দ্বাপরে পরিচর্ষমাং কপৌ  
 হরিকীর্তনাৎ ( তৎ সর্কং প্রোগোতি ) ॥ ৫৮ ॥

সত্যযুগে বিকুল ধ্যানে মুক্ত হয়,  
 ত্রেতার বজ ধারাই মুক্ত হয়, দ্বাপরে বিকু-  
 সেবার মুক্ত হয়, আর কলিতে কীর্তন  
 ধারাই মুক্ত হয় ॥ ৫৮ ॥

তথাহি বিকুপুণে বট্টাণে দ্বিতীয়াধ্যায়ে  
 সপ্তদশশ্লোকঃ—

ধ্যারন্ কৃতে বন্ধন বট্টাশ্রেতায়াং দ্বাপরেভ্যর্চনম্ ।  
 বদ্যাজোতি ভদ্যাজোতি কপৌ সঙ্কীর্তী কেশবন্ ॥৫৯॥

কৃত (সত্য) ধ্যান ত্রেতায়াং যজ্ঞঃ যজন্  
 ষ্যপরে অর্চয়ন্ যৎ (ফলন্) আপ্নোক্তি কলৌ  
 কেশবং সঙ্কীৰ্ত্তা তৎ (সৰ্গম্) আপ্নোতি ॥ ৫৯ ॥

সত্যযুগে ধ্যান, ত্রেতায় যজ্ঞ এবং  
 ষ্যপরে অর্চন করিয়া বাহা প্রাপ্ত হয়,  
 কলিতে কেশবকীর্তন করিয়া তাহাই  
 লাভ হইয়া থাকে ॥ ৫৯ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে পঞ্চমা-  
 ধ্যায়ৈ পঞ্চত্রিংশস্লোকঃ—

কলিং সত্যজয়ন্ত্যৰ্থা গুণজ্ঞাঃ সারভাগিনঃ ।  
 যত্র সঙ্কীৰ্ত্তনেনৈব সৰ্গস্বার্থোহপি লভ্যতে ॥ ৬০ ॥

যত্র (কলৌ) সঙ্কীৰ্ত্তনেন (সাধনাস্তরনির-  
 গণক্ষেণ) এব সৰ্গঃ অপি স্বার্থঃ (সাধনসাহস্রৈঃ  
 সাধাঃ) লভ্যতে সারভাগিনঃ গুণজ্ঞাঃ অৰ্থাঃ  
 (তৎ) কলিং সত্যজয়ন্তি ॥ ৬০ ॥

হে রাজন, যে কলিতে সঙ্কীৰ্ত্তন দ্বারা  
 সকল স্বার্থই লাভ হয়; সারভাগী গুণজ্ঞ  
 অৰ্থা সকল সেই কলিকে সম্মান করিয়া  
 থাকেন ॥ ৬০ ॥

পূৰ্ব্ববৎ লিখি যবে যুগাবতারগণ ।  
 অসংখ্য সংখ্যা তার না হয় গণন ॥  
 চারিযুগের অবতার এই বিবরণ ।  
 শুনি ভঙ্গী করি তবে পুছে সনাতন ॥  
 রাজমন্ত্রী সনাতন বুকে রহস্পতি ।  
 প্রভুর রূপাতে পুছে অসঙ্কোচ মতি ॥  
 অতিক্রম্ জীব মুক্তি নীচ নীচাচার ।  
 কেমতেজানিবকলিতে কোন অবতার ॥ ১৩৬  
 প্রভু কহে অশ্র অবতার শাস্ত্রধারে জানি ।  
 কলি অবতার তৈছে শাস্ত্রব্যক্তে মানি ॥  
 সৰ্গজ মুনির বাক্য শাস্ত্র পরমাণ ।  
 জ্ঞানী সন্যাসীনের হর শাস্ত্রধারে জান ॥

অবতার নাহি কহে আমি অবতার ।  
 মুনি সব জানি করে লক্ষণ বিচার ॥ ১৩৭ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে দশমাধ্যায়ৈ  
 চতুত্রিংশস্লোকঃ—

বস্তাবতারা জায়ন্তে শরীরিষশরীরিণঃ ।  
 তৈতৈত্তরতুল্যাতিশয়ৈবীর্থাধৈর্হিষসদতৈঃ ॥ ৬১ ॥

অতুল্যাতিশয়ৈঃ (নাতি তুল্যম্ অতিশয়ঃ  
 আধিক্যং চ যেভ্যঃ তৈঃ অসমোর্ধৈঃ) দেহিষু  
 (প্রাকৃতেষু জীবেষু) অসদতৈঃ (অল্পপদৈঃ)  
 তৈঃ তৈঃ বীর্থাধৈঃ (পরাজনৈঃ) শরীরিষু (প্রাকৃ-  
 তেষু) অশরীরিণঃ (প্রাকৃতশরীররহিতস্য) বস্ত  
 (তব) অবতারাঃ জায়ন্তে ॥ ৬১ ॥

প্রাকৃত জীব সকলে অসম্ভব অস-  
 মোর্ধ প্রসিদ্ধ পরাক্রম সকল স্বাক্ষ  
 প্রাকৃত সংসারে প্রাকৃতশরীররহিত  
 তোমার অবতার সকল জাত হইয়া  
 থাকে ॥ ৬১ ॥

স্বরূপ লক্ষণ আর তটস্থ লক্ষণ ।  
 এই দুই লক্ষণে তত্ত্ব জানে মুনিগণ ॥  
 আকৃতে প্রকৃতে জানি স্বরূপ লক্ষণ ।  
 কার্যধারে জান এই তটস্থ লক্ষণ ॥  
 ভাগবতারস্তে ব্যাস মঙ্গলাচরণে ।  
 পরমেশ্বর নিরূপিল এ দুই লক্ষণে ॥ ১৩৮ ॥

তথাহি মথালীয়ায়াম্ অষ্টমে একপঞ্চাশত্তম-  
 স্লোকস্থং শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

অদ্ব্যস্তস্ত যতোহবমানিতরশ্চাৰ্ধেখভিজ্ঞঃ যরাটু  
 তেনে ব্রহ্ম হৃদা ব আদিকবরে মুহুস্তি যৎ প্ররমঃ ।  
 তেজোবারিমুদাং যথা বিনিময়ো বত্র ত্রিসর্গোহম্ববা  
 ধায়া যেন সন্য নিরন্তকুহকং সত্যং পরং ধীমহি ॥ ৬২  
 এই স্লোকে 'পর' শব্দে ব্রহ্ম নিরূপণ ।  
 'সত্য' শব্দে কহে তার স্বরূপ লক্ষণ ॥  
 বিশ্বসৃষ্ট্যাদি কৈল বেদ ব্রহ্মাকে পঢ়াইল ।  
 অর্থাভিজ্ঞস্তস্বরূপশক্ত্যেয়ারাদুরকৈল ॥ ১৩৯

এই সব কার্য তাঁর তটস্থ লক্ষণ ।  
অন্য অবতার ঐছে জানে মুনিগণ ॥  
অবতার কালে হয় জগতে গোচর ।  
এই দুই লক্ষণে কেহ জানেন ঈশ্বর ॥১৪০॥

সনাতন কহে যাতে ঈশ্বর লক্ষণ ।  
পী তর্পণ কার্য প্রেমদান সঙ্কীর্ষন ॥  
কলিকালে সেই কৃষ্ণাবতার নিশ্চয় ।  
সুদৃঢ় করিঞা কহ যাউক সংশয় ॥১৪১॥

প্রভু কহে চাতুরালি ছাড় সনাতন ।  
শক্ত্যাবেশ অবতারের শুন নিবরণ ॥  
শক্ত্যাবেশ অবতার অসংখ্য গণন ।  
দিনদরশন করি মুখ্য মুখ্য জন ॥১৪২॥

শক্ত্যাবেশ দুই রূপ গৌণ মুখ্য দেখি ।  
সাক্ষাৎশক্ত্যাবেশতার আভাসে বিভূতিলেখি  
ননকাদি নারদ পৃথু আর পরশুরাম ।  
জীবরূপ ব্রহ্মা আছে আবেশ তার নাম ॥

বৈকুণ্ঠে শেষ ধরা ধরয়ে অনন্ত ।  
এই মুখ্যাবেশাবতার বিস্তারেনা হি অনন্ত ॥১৪৩॥  
ননকাদ্যে জ্ঞানশক্তি নারদে শক্তি ভক্তি ।  
ব্রহ্মায় সৃষ্টিশক্তি অনন্তে ভূধারণ শক্তি ॥

শেষে স্বসেবন শক্তি পৃথুতে পালন ।  
পরশুরাম দুহুনাশক বীর্য সঞ্চারণ ॥১৪৪॥  
তথাহি লগুভাগবতামৃত পূর্বখণ্ডে প্রথম  
প্রকরণে অষ্টাদশশ্লোকঃ—

জ্ঞানশক্ত্যা দিকলয়া ব্রহ্মাবিষ্টো জনাৰ্দ্দিনঃ ।  
ত আবেশা নিগদ্যন্তে জীবা এব মহন্তমাঃ ॥৬০॥  
জনাৰ্দ্দিনঃ জ্ঞানশক্ত্যা দিকলয়া ব্রহ্ম (বেবু  
মহন্তমজীবেবু) আবিষ্টে ( ভবতি । ষ্ণবিত্তিঃ ) তে  
মহন্তমাঃ জীবাঃ এব আবেশা নিগদ্যন্তে (কথ্যন্তে) ॥৬০॥

যে সকল জীবে জ্ঞানশক্ত্যা দি কলা  
দ্বারা জনাৰ্দ্দিন আবিষ্ট হইলেন, সেই সমু-  
দায় মহন্তম জীবকে আবেশ বলা যায় ১৬০

বিভূতি করিয়ে বৈছেঙ্গীতা একাদশে ১-  
জগৎ ব্যাপিল কৃষ্ণ শক্তি ভাবাবেশে ॥১৪৫॥  
তথাহি শ্রীগীতারায়ঃ দশমাধ্যায়ে একচত্বারিংশ-  
শ্লোকঃ—

যদ্বদ্বিভূতিমৎ সৰ্বং শ্রীমদুর্জিতমেব বা ।  
তত্তদেবাবগচ্ছ ত্বং মম তেজোহংশসত্ত্বম্ ॥৬৪৪॥  
বিভূতিমৎ শ্রীমদুর্জিতঃ এব বা যৎ যৎ সৰ্বং  
( বস্তু ভবতি ) তৎ তৎ এব মম তেজোহংশসত্ত্বমঃ  
( তেজোহংশেন শক্তিলেশেন সত্ত্ববৎ সিদ্ধং ) যন্  
অবগচ্ছ ( প্রতীহি ) ॥ ৬৪ ॥

এই সংসারে ঐশ্বর্য্যসম্বিত, সম্পত্তি-  
বিশিষ্ট, বলপ্রভাবাদিসম্পন্ন যে যে বস্তু  
আছে, সে সকলই আমার শক্তিলেশ-  
সম্বৃত জানিবে ॥ ৬৪ ॥

তথাহি আদিনীলয়ারঃ বিতীয়ে সপ্তমশ্লোকধৃতঃ  
শ্রীগীতাবচনম্—  
অথবা বহনৈভেন কিং জ্ঞাতেন ত্ববার্জুন ।  
বিষ্টভ্যাহমিদং কৃৎসমকোঃশেন হিতো জগৎ ॥৬৫৪॥

এইত কহিল শক্ত্যাবেশ অবতার ।  
বাল্য পৌগণ্ড ধর্ম্মের শুনহ বিচার ॥  
কিশোরশেখর ধর্ম্মী ব্রজেশ্বনন্দন ।  
প্রকটলীলা করিবারে যবে করে মন ॥-  
আদৌ প্রকট করায় পিতামাতা ভক্তগণে ।  
পাছে প্রকট হয় জন্মাদিক লীলাকমে ॥১৪৬॥

তথাহি ভক্তিসাসমৃতসিদ্ধৌ দক্ষিণকিঙ্কলে  
প্রথমলহর্যাঃ সপ্তবিংশতিশ্লোকঃ—  
বয়সো বিবিধভেদপি সর্বভক্তিরসাপ্রয়ঃ ।  
ধর্ম্মী কিশোর এবাত্ৰ নিত্যলীলাবিলাসবান্ ॥৬৬॥

বয়সঃ বিবিধভেদে অপি অত্র সর্বভক্তিরসাপ্রয়ঃ  
নিত্যলীলাবিলাসবান্ কিশোরঃ এব ধর্ম্মী ( সর্ব  
গুণাঃ সক্তি অস্মিন্ ইতি ধর্ম্মী পূর্ণাবির্ভাবঃ ) ॥ ৬৬ ॥  
বয়সের কোমার, পৌগণ্ড ও কৈশো-

স্বাদি বিবিধ প্রকার ভেদ থাকিলেও  
সৰ্বভক্তিরসাত্মক, সৰ্বগুণাঙ্কিত ও নিত্য  
নূতনলীলা বিশিষ্ট কৈশোর বয়সই  
শ্রীকৃষ্ণের প্রশস্ত বয়স ॥ ৬৬ ॥

পুতনাদির বধ যত লীলা ক্রমে ক্রমে ।  
সব লীলা নিত্য প্রকট ক্রমে ক্রমে ॥  
অনন্তব্রজাও তার নাহিক গণন ।

কোন লীলা কোন ব্রজাওে হয় প্রকটন ॥

এই মত সব লীলা যেন গঙ্গাধার ।

সে সৌন্দর্যপ্রকটকরে ব্রজেন্দ্রকুমার ॥১৪  
ক্রমে বাল্য পৌগণ্ড কৈশোরতা প্রাপ্তি ।  
স্বাসাদি লীলা করে কৈশোরে নিত্যস্থিতি  
নিত্য লীলা শ্রীকৃষ্ণের সব শাস্ত্রে কয় ।

বুঝিতে না পারে লীলা নিত্য কেমনে হয়  
হুটুস্ত দিয়া কহি যবে তবে লোক জানে ।  
কৃষ্ণলীলানিত্যের জ্যোতিষ্কপ্রকাশে ॥১৫

জ্যোতিষ্ক্রে সূর্য যেন ভ্রমে রাত্রি দিনে ।  
সুপ্তসীপাসুধি লজ্জি ফিরি ক্রমে ক্রমে ॥

রাত্রি দিনে হয় ষাটদিনও পরিমাণ ।

তিনসহস্র ছয় শত পল তার মান ॥

সূর্যোদয় হতে ষাটপল ক্রমোদয় ।

সেই এক দণ্ড অষ্টদণ্ডে প্রহর হয় ॥

এক দুই তিন চারি প্রহরে অন্ত হয় ।

চারি প্রহর রাত্রি গেলে পুনঃ সূর্যোদয় ॥

এইহে কৃষ্ণলীলা মণ্ডল চৌদ্দ মঙ্গলরে ।

ব্রজাওমণ্ডলব্যাপি ক্রমে ক্রমে ফিরে ॥১৬

সওয়া শতবৎসর কৃষ্ণের প্রকট প্রকাশ ।

তাছা বৈছে ব্রজপুরে করিল বিলাস ॥

অলাং চক্রবৎ সেই লীলাচক্র ফিরে ।

সব লীলা সব ব্রজাওে ক্রমে উদয় করে ॥

অন্য বাল্য পৌগণ্ড কৈশোর প্রকাশ

পুতনাবধাদি করি মৌল্যাস্তবিলাস ॥১৭

কোন ব্রজাওে কোন লীলা হয় অবস্থান  
তাতে নিত্যলীলা কহে নিগমপুরাণ ॥

গোলোক গোকুল ধাম বিভু কৃষ্ণ সম ।

কৃষ্ণোচ্ছার ব্রজাওগণে তাহার সংক্রম ॥

অতএব গোলোকস্থল নিত্য বিহার ।

ব্রজাওগণে ক্রমে ক্রমে প্রকট তাহার ॥

ব্রজে কৃষ্ণ পূর্ণৈশ্বর্য প্রকাশে পূর্ণতম ।

পূরীষয়ে পরিস্ফোমে পূর্ণতর পূর্ণ ॥১৫১

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিদ্ধৌ দক্ষিণবিভাগে

প্রথমলহরীয়া অষ্টাদশতমতনাদিঅঙ্গমৌকাঃ—

হরিঃ পূর্ণতমঃ পূর্ণতরঃ পূর্ণ ইতি ত্রিণা ।

শ্রেষ্ঠমধ্যাদিত্তিঃ শষ্টৈর্নাতো যঃ পরিকীর্তিতঃ ॥৬৭

প্রকাশিতাখিলগুণঃ স্মৃতঃ পূর্ণতমো বৃধৈঃ ।

অসর্কব্যঞ্জকঃ পূর্ণতরঃ পূর্ণৈহিমদর্শকঃ ॥ ৬৮ ॥

কৃষ্ণত পূর্ণতমতা ব্যক্তাত্মগোকুলান্তরে ।

পূর্ণতা পূর্ণতরতা হারকামধূনাদিসু ॥ ৬৯ ॥

নাতো শ্রেষ্ঠমধ্যাদিত্তিঃ শষ্টৈঃ যঃ হরিঃ

পূর্ণতমঃ পূর্ণতরঃ পূর্ণঃ ইতি ত্রিণা পরিকীর্তিতঃ ।

প্রকাশিতাখিলগুণঃ পূর্ণতমঃ অসর্কব্যঞ্জকঃ পূর্ণতরঃ

অঙ্গদর্শকঃ পূর্ণঃ ( ইতি ) বৃধৈঃ স্মৃতঃ । গোকুলা-

ন্তরে কৃষ্ণস্য পূর্ণতমতা হারকামধূনাদিসু পূর্ণতা

পূর্ণতরতা ( চ ) ব্যক্তা অভূৎ ॥৬৭৬৮৬৯ ॥

নাট্যশাস্ত্রে শ্রেষ্ঠ ও মধ্যাদি ভেদে

হরি পূর্ণতম, পূর্ণতর এবং পূর্ণ বলিয়া

কীর্তিত হয়েন । অখিলগুণপ্রকাশক

পূর্ণতম, তদপেক্ষা অঙ্গগুণপ্রকাশক

পূর্ণতর, তাহা অপেক্ষাও অঙ্গগুণপ্রকা-

শক পূর্ণ, পণ্ডিতগণ এইরূপ কীর্তন

করিয়া থাকেন । গোকুলমধ্যে শ্রীকৃষ্ণের

পূর্ণতমতা, মধুরার পূর্ণতরতা এবং হার-

কার পূর্ণর ব্যক্ত হইয়াছে ॥৬৭৬৮৬৯

এক কৃষ্ণ ব্রজে পূর্ণতম ভগবান্ ।

আর সব অরূপ পূর্ণতর পূর্ণ নাম ॥

এই সংক্ষেপে কহিল কৃষ্ণের স্বরূপ বিচার  
 অনন্ত কহিতে নাবে ইহার বিস্তার ॥  
 অনন্ত স্বরূপ কৃষ্ণের নাহিক গণন ।  
 শাখাচন্দ্র স্তায়ে করি দিগ্দরশন ॥১৫২॥  
 ইহা যেই শুনে পড়ে সেই ভাগ্যবান্ ।  
 কৃষ্ণের স্বরূপ তত্ব হয় তার জান ॥

শ্রীরূপরঘুনাথ পদে বার আশ ।  
 চৈতন্তচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥১৫১॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্তচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
 সম্বন্ধতত্ত্বনিরূপণে শ্রীভগবৎস্বরূপ-  
 ভেদবিচারো নাম বিংশতি  
 পরিচ্ছেদ ॥ ২০ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্তচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্তস্বরূপ শ্রীশ্রামলাপদারবিক্রমেরি বিনোদবিহারি  
 গৌরীমুকতাধরবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত সম্বন্ধতত্ত্বনিরূপণে শ্রীভগবৎস্বরূপ-  
 ভেদবিচারো নাম বিংশতিতম পরিচ্ছেদ ॥ ২০ ॥

### একবিংশ পরিচ্ছেদ ।



অগত্যেকগতিং নহা হীনার্থাধিকসাধকম্ ।  
 শ্রীচৈতন্তং লিখামাস্য মাধুর্যৈর্ধর্ম্যশীকরম্ ॥১॥  
 অগত্যেকগতিং হীনার্থাধিকসাধকং ( হীনানাং  
 সম্বন্ধকর্ম্মরহিতানাং অতিনীচজনানাং বে অর্থাৎ  
 প্রয়োজনানি ধর্ম্মাধরো বা তেবাম্ অধিকং বধা  
 সাত্ত্বপা সাধকমিতি ) শ্রীচৈতন্তং নহা অস্য  
 ( শ্রীচৈতন্তস্য ) মাধুর্যৈর্ধর্ম্ম্যশীকরং লিখামি ॥ ১ ॥  
 যিনি অসত্তির একমাত্র গতি এবং  
 যিনি নীচজাতির প্রতি অধিক আগ্রহ  
 প্রকাশ করিয়া থাকেন, সেই চৈতন্ত-  
 দেবকে প্রণাম করতঃ তাঁহার মাধুর্য্য ও  
 ঐশ্বর্য্যের কণামাত্র লিখিতেছি ॥১॥  
 জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
 জয়দেবতন্ত্র জয় পৌরুষকর্ত্তব্যম্ ।  
 সর্ব্বস্বরূপের ধার পরব্যোম ধামে ।  
 পৃথক্ পৃথক্ বৈকুণ্ঠ সব, আধিক গণনে ॥

শত সহস্রাযুত লক্ষ কোটি যোজন ।  
 এক এক বৈকুণ্ঠের বিস্তার বর্ণন ॥  
 সব বৈকুণ্ঠ ব্যাপক আনন্দ চিন্ময় ।  
 পারিষদ বৈষ্ণব্যা পূর্ণ হাব হয় ॥১॥  
 অনন্তবৈকুণ্ঠ এক এক দেশে রহে বার ।  
 সে পরব্যোমের কে করে গণনা বিস্তার ॥  
 অনন্তবৈকুণ্ঠ পরব্যোম বার চলপ্রণী ।  
 সর্কোপরি কৃষ্ণলোক কপিকার গণি ॥  
 এই মত বৈষ্ণব্যা পূর্ণ অবতার ।  
 ব্রহ্মা শিব অনন্ত না পারিলেন কৌনহার ॥২॥  
 তথাহি শ্রীমভাগবতে দশমস্কন্ধে চতুর্ধশাধ্যায়ে  
 একবিংশতিশ্লোকঃ—  
 কো বেতি ভূম্ন ভগবন্ পরামম্  
 যোগেশ্বরোঋত্বতত্রিলোক্যাম্ ।  
 কাহৌ কথং বা কতি বা কদেতি  
 বিস্তারন ক্রীকসি যোগদারিন ॥ ২ ॥

( হে ) ভূমন্ ! ভগবন্ ! পরাশ্রম্ ! যোগেশ্বর ! ভবতঃ উত্তীঃ ( লীলাঃ ) ক কথং বা কদা কতি বা ইতি ত্রিলোক্যাং কঃ বেত্তি ? অহো ! যোগমায়াং ( মহাশরৎপশক্তিং ) বিস্তারমন্ ( যং ) ক্রীড়সি ॥ ২ ॥

ব্রহ্মা কহিলেন, হে ভূমন্, ভগবন্ পরাশ্রম্, যোগেশ্বর, আপনার লীলা সকল কোথায় কিরূপে কোন সময়ে বা কত প্রকার, ইহা এই ত্রিলোকমধ্যে কে জানে ? অহো ! আপনি যোগমায়া বিস্তার পূর্বক ক্রীড়া করিতেছেন ॥ ২ ॥

এই মত কৃষ্ণের দিব্য সঙ্গুণ অনন্ত ।  
ব্রহ্মা শিব সনকাদি না পায় যার অন্ত ॥ ৩ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে সপ্তমশ্লোকঃ—

শুগাশ্রমন্তেহপি শুগান্ বিদাতুঃ  
হিতাবতীর্ণস্য ক ঈশিরেহন্ত ।  
কালেন বৈবা বিমিতাঃ স্কটৈর্ন-  
ভূপাংশবঃ খে মিহিকাশ্চ্যভাসঃ ॥ ৩ ॥

শুগাশ্রমঃ ( শুগাধিতাতুঃ ) অস্যা ( বিখন্ত ) হিতাবতীর্ণস্য ( পালনায় অবতীর্ণস্য ) অপি তে ( ভব ) শুগান্ বিদাতুন্ ( এতাবন্তঃ ইতি গণয়িতুন্ অপি ) বৈঃ স্কটৈর্নঃ ( অতিনিপুটৈঃ স্কটৈর্নঃ ) কালেন ( বহুজ্ঞান ) ভূপাংশবঃ ( ভূ পরমাণবঃ ) খে ( আকাশে ) মিহিকাশ্চ্যভাসঃ ( মিহিকাঃ হিমকণাঃ স্চ্যভাসঃ দিবিনক্ষত্রাদিকিরণপরমাণবঃ ) বা বিমিতাঃ ( বিশেষণ গণিতাঃ, ভবেষুঃ তথাভূতাঃ অপি ) কে ( জনাঃ ) ঈশিরে ॥ ৩ ॥

ব্রহ্মা কহিলেন, যে সকল অতিনিপুণ ব্যক্তি বহুজ্ঞানে পার্শ্ব পরমাণুপুঞ্জ ও আকাশে হিমকণা সকল বা নক্ষত্রাদিকিরণপরমাণু সকল সূক্ষ্মসূক্ষ্ম গণনা করিতে পারেন, তাঁহারাও কি শুগা-

ধিতাতা ও এই বিশ্বের হিতার্থ অবতীর্ণ তোমার গুণগ্রামের ইয়ত্তা করিতে সমর্থ হইলেন ? ॥ ৩ ॥

ব্রহ্মাদি বহু অনন্ত সহস্রবদন ।

নিরন্তর গায় মুখে, না পায় গণন ॥ ৪ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে বিতীরস্কন্ধে সপ্তমাধ্যায়ে একচত্বারিংশশ্লোকঃ—

নাস্তং বিদামাহমসী মুনরোহগ্রদীতে  
মায়াবলস্য পুরুষস্য কুতোহপরে ।  
গায়ন্ শুগান্ দশশতানন আদিদেবঃ  
শেবোহধুনাপি সমবস্যাতি নাস্য পায়ন্ ॥ ৪ ॥

পুরুষস্য মায়াবলস্য অনন্ত অহং ন বিদামি ( বেদ্বি তথা ) তে ( ভব ) অগ্রভাঃ অসী মুনয়ঃ ( সনকাদয়ঃ চ ন ) অপরে বে ( তে ) কুতঃ ( বিদন্তি ) দশশতাননঃ আদিদেবঃ শেবঃ অপি অস্য শুগান্ গায়ন্ অধুনা ( অপি ) পায়ং ন সমবস্যাতি ( নিশ্চিনোতি ॥ ৪ ॥

ব্রহ্মা কহিলেন, হে বৎস ! তোমার অগ্রজ মুনীগণ এবং আমিও সেই পরমপুরুষ ভগবানের অন্ত জানিতে পারি নাই, অস্তে কিরূপে জানিবে ? সহস্রবদন আদিদেব অনন্তও তাঁহার গুণগান করিয়াও পার প্রাপ্ত হইলেন নাই ॥ ৪ ॥

সেহো রত সর্কজ শিরোমণি কৃষ্ণ ।

নিদ্রগুণের অন্ত না পাই হইতে সত্বক ॥ ৫ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে সপ্তশততমাধ্যায়ে একচত্বারিংশশ্লোকঃ—

দ্যাপত্তর এব তে ন যদুরন্তমনন্ততরা  
যমপি যবন্তরাশ্চনিচরা নহু সাবরণাঃ  
থ ইব রজ্যাসি বাস্তি ধরসা সহ বহু তদ-  
ধ্মি হি কলন্ত্যভিন্নরসেনেভ ভবরিন্দনাঃ ॥ ৫ ॥  
( হে ভগবন্ ) অনন্ততরঃ ( অনন্ততরঃ এব )

কে (তব) বহু (এতদ্ব্যন্তর) দ্বাপতরা (খর্গাধি-  
 লোকপতরাঃ স্রষ্টাধরঃ অপি) ন বহুঃ (ক্রাপুঃ,  
 বহাৎ) বহুঃ সপি (আত্মনঃ অন্তঃ না বাসি) বহু-  
 তরা (বহা তব অন্তরা মধ্যে) নহু (অহো) বহন  
 (কাপচক্ষেণ) খে (আকাশে) রজাধিনি ইব সাবরণাঃ  
 (উত্তরোত্তরবর্ণগণসমুদায়বর্ণগণ্যুত্কাঃ) অণুনিচরঃ  
 নহ (একথা এব ন তু পঠ্যায়েন) স্মৃতি (পরি-  
 স্রমতি) ভবস্রিধনাঃ (ভবতি ষ্মি নিধনং সমাধিঃ  
 বাসাত্ তাঃ) স্রঃ অতন্নিসমনেদ ষ্মি কলতি  
 হি। ৫।

শ্রুতিগণ কহিলেন, হে ভগবন,  
 আপনি অনন্ত, অতএব দেবতার। আপ-  
 নার অন্ত পান না। দেবতাদিগের কণা  
 দূরে থাকুক, আপনিও আপনার অন্ত  
 পান না। সাবরণ ব্রহ্মাও সকল  
 আকাশে রজঃকণার ন্যায় কালচক্র দ্বারা  
 পরিবর্তিত হইয়া আপনার দেহমধ্যেই  
 পরিভ্রমণ করিয়া থাকে। ভবৎপর্যা-  
 বসিতা শ্রুতিগণক অতন্নিসমন মুখে  
 অর্থাৎ “তৎ ন তৎ ন” বিচার করিয়া  
 আপনাতেই কলিত হইয়া থাকে। ৫।

সেহ রহু ব্রহ্মে ববে ক্রম অবতার।  
 তাঁর চরিত্র বিচারিতে মন না পার পার।  
 প্রাকৃতাপ্রাকৃত সৃষ্টি কৈল এক কণে।  
 অনন্ত বৈকুণ্ঠ অণু স্বপ্ন-নাথ সঙ্গে।  
 এমনক অব্যক্তে নাহি স্তম্বিরে অকৃত।  
 বাহার আরবে তিত হর অববৃত। ৬।  
 “কুবৎগৈরসংগাভিঃ” কুবৎবেক বাহি।  
 কুবলভে কভ যোগ সংগা বাহিঃ কুবনি।  
 এক এক যোগ করে যে বসন্তেরে।  
 সৌন্দর্য হইল সই অধরঃ সপকঃ

বৈজ বৈদ্যঃ পুত্র বত্র জনকানি।  
 গোপিনেশ্বের বত তার নাহি লোকা শার।  
 সবে হৈলো চতুর্ভুজ বৈকুণ্ঠের শক্তি।  
 পৃথক পৃথক ব্রহ্মাণ্ডের ব্রহ্মা করে স্ততি ৭।  
 এক ক্রক দেহ হৈতে সবার প্রকাশে।  
 কণেকে সবাই সেই শরীরে প্রবেশে।  
 ইহা দেখি ব্রহ্মা হৈলো মোহিত বিস্মিত।  
 স্ততি করি এই পাছে করিলা নিশ্চিত।  
 যে কহে ক্রকের বৈভব মুঞি সব জানো।  
 সে জানুক, কারণে মুঞি নাহি মানো।  
 এই যে তোমার অনন্ত বৈভবামৃতসিক্ত।  
 মোর বায়নোগম্য নহে তার এক বিন্দু। ৮

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে  
 অষ্টত্রিংশশ্লোকঃ—  
 জানন্ত এব জানন্ত কিং বহুত্যা ন মে প্রভো।  
 মনসো বপুবো বাচো বৈভবং তব গোচরঃ। ৩৪

(হে) প্রভো, জানন্তঃ এব জানন্ত; বহুত্যা  
 কিম্? তব বৈভবং যে (মন, ব্রহ্মণঃ) মনসঃ  
 বপুবঃ বাচঃ (চ) ন গোচরঃ (বিষয়ঃ ভবতি)। ৩৪।

হে প্রভো! অধিক বলিবার প্রয়োজন  
 কি? সাধারণ জানেন, সাধারণই জানেন।  
 তোমার বৈভব আমার কার্যসম্বন্ধে  
 বাক্যের বিষয়ীভূত হয় না। ৩৪।

ক্রকের মহিমা বহু, কেবা তার জাতি।  
 ব্রহ্মাবনস্থানের দেখ আশ্চর্য্য বিস্মতি।  
 যোলকোশ ব্রহ্মাবন শাস্ত্র পরকাশে।  
 তার এক যোগে বৈকুণ্ঠাঙ্গাগণ ক্রক  
 অপার ঐশ্বর্য্য ক্রকের নাহিক গণন।  
 ঐশ্বর্য্য-গনুয়ের এই কহিল এক কণ।  
 ঐশ্বর্য্য করিতে স্মৃতিল ঐশ্বর্য্য সাগর।  
 সনোহিত হইল সত্ব সত্ব সত্ব সত্ব





বিশি করবাদমুহে কোমল স্বভাব  
 হইয়াছেন, যদি মধুর ও ঐশ্বর্যের বিলাস-  
 শালী সেই ব্রহ্মরাজনন্দন শ্রীকৃষ্ণ করবৃত্ত  
 থাকিতে আমাদের চিত্তার দেশমাত্রও  
 উপস্থিত হইতেছে না ॥ ১১ ॥

তার তলে পরব্যোম বিষ্ণুলোক নাম ।  
 নারারগাদি অনন্ত স্বরূপের ধাম ॥  
 মধ্যম আবাস ক্রকের ষড়ৈশ্বর্য ভাণ্ডার ।  
 অনন্ত স্বরূপে বাঁহা করেন বিহার ॥  
 অনন্ত বৈকুণ্ঠ বাঁহা ভাণ্ডার কোঠরী ।  
 পারিষদগণ ষড়ৈশ্বর্যে আছে ভরি ॥ ১৫ ॥

তথাহি ব্রহ্মসংহিতারং পঞ্চমাধ্যায় জিচৎ-  
 রিশ্লোকঃ—

গোলোকান্নি নিজধারি তলে চ তস্য  
 দেবীমহেশহরিধামস্ত তেহু তেহু ।  
 তে তে প্রভাবনিচরা বিহিতাশ্চ যেন  
 গোবিন্দনাদিপুরুষং তমহং ভজামি ॥ ১২ ॥

তস্য ( শ্রীকৃষ্ণস্য ) গোলোকান্নি নিজধারি  
 তলে দেবীমহেশহরিধামস্ত ( দেবীদীনং যথোক্তম-  
 ন্দোঁর্জপ্রতাবদাত্তলোকান্নান্দোঁর্জপ্রতাবদ্বন্দ্ব গোলোকস্য  
 সর্কোঁর্জগামিষং সর্কোঁর্জপক্শক ব্যব-  
 হাপিতমস্তি ) তেহু তেহু চ। যেন তে তে  
 প্রভাবনিচরাঃ বিহিতাঃ চ তন্ আদিপুরুষং  
 গোবিন্দন্ অহং ভজামি ॥ ১২ ॥

গোলোক শ্রীকৃষ্ণের নিজধাম এবং  
 সর্কোঁর্জস্বর্গী স্বর্গ্যং কোকিলানীর । উহার  
 তলে হরিধাম স্বর্গ্যং পরব্যোম, মহেশ-  
 ধাম স্বর্গ্যং, বৃষ্টিধাম এবং হেতীধাম  
 স্বর্গ্যং, হারধাম, এই তিনটি কোকিল পর-  
 কাল যোগেবোকে কালপরপরভাবে নিত্য-  
 স্মরণ করিয়া থাকেন।

ঐশ্বর্যী সঙ্কল বিলাস করিয়াছেন সেই  
 আদিপুরুষ গোবিন্দকে ভজনা করিয়াছেন ॥

তথাহি লক্ষ্মীপবিত্যুতে পূর্বপাঠে শ্রীভক্তিঃ  
 ধামকথনে সপ্তাশীতিতমাত্মকং পরপর্যায়মহর্ষি-  
 প্রধানপরমব্যোমৌরভয়ে বিরজা নদী ।  
 বোদাক্ষেদক্ষমিতোয়ৈঃ প্রোবাভিতা ওজা ॥ ৩৭  
 তস্য্যাঃ পারে পরব্যোম ত্রিপাদুভুতং সনাতনম্ ।  
 অন্ততং ষাখতং নিত্যনুতনং পরনং পদম্ ॥ ৪৪ ॥

প্রধানপরমব্যোমোঃ অন্তরে ( মধ্যে ) বোদাক-  
 ক্ষেদক্ষমিতোয়ৈঃ ( বোদাকস্য ভগবতঃ স্বর্ক-  
 অনিতৈঃ তোয়ৈঃ ) প্রোবাভিতা ( প্রোবাভিতা ) ওজা  
 ( ত্রিলোকপাবনী ) বিরজা নদী ( অতি ) । তস্য্যাঃ  
 ( বিরজারঃ ) পারে ত্রিপাদুভুতং সনাতনম্ অমৃতং  
 ষাখতং ( সুহর্নবং ) নিত্যম্ অনন্তম্ পরনং পদম্  
 পরব্যোম ( অতি ) ॥ ৩৭ ১৪ ॥

প্রকৃতি এবং শ্রীকৃষ্ণের পরব্যোম  
 নামক মধ্যম আবাসের মধ্যে শ্রীভগ-  
 বানের যেদল্লবাহিনী, প্রোবাভিতা,  
 ত্রিলোকপাবনী বিরজা নামী নদী । ঐ  
 বিরজাই কারণার্থক্য ঐ বিরজার এক  
 পারে ত্রিপাদুবিভূতিশালী সনাতন, নিত্য-  
 নুতন, অমৃত, নিত্য, অনন্ত পরব্যোম  
 নামে স্থান আছে ॥ ৩৭ ১৪ ॥

তার তলে বাহ্যাবাস বিরজার পার  
 অনন্ত ব্রহ্মাণ্ড বাহা কোঠরী অপার ।  
 দেবীধাম নাম তার জীন বার বাসী ।  
 জগন্নাথী রাখি, রহে বাঁহা মায়ামাসী ॥ ১৩ ॥  
 ঐ তিন ধানের রূক হয় অধীশ্বর ।  
 গোলোক পরব্যোম প্রকৃতির পর  
 রিক্তিকি বিষ্ণুধাম-ত্রিপাদুভুতং সনাতন-  
 মায়ামাসী নামক পরব্যোম নামক স্থান

উপরি ভয়ভাগবতান্তে পূর্বধতে ত্রিপাদ-  
বিভূতিকাধনে পদ্মপুরাণবচনম্—

ত্রিপাদবিভূতের্ধামখ্যাং ত্রিপাদুভূতং তু তৎ পদম্ ।  
বিভূতির্মায়িকী সর্গা প্রোক্তা পাদাশ্রিক। বতঃ ॥১৫॥

তৎপদম্ ( গোলোকঃ ) ত্রিপাদবিভূতেঃ ধামখ্যাং  
( আশ্রয়খ্যাং ) ত্রিপাদুভূতং ( উচ্যতে ) বতঃ ( বদ্যং )  
সর্গা ( ভগবতঃ ) মায়িকী বিভূতিঃ পাদাশ্রিক।  
( একপাদরূপা ) প্রোক্তা ॥ ১৫ ॥

ত্রিপাদবিভূতির আশ্রয়শ্রয়কৃৎ ঐ  
পরয়োম ত্রিপাদস্বরূপ । বেহেতু জীভগ-  
বানের সমুদায় মায়িকী বিভূতি এক  
পাদরূপে কথিত হইয়াছে ॥ ১৫ ॥

ত্রিপাদ বিভূতি কৃষ্ণের, বাক্য অগোচর ।  
একপাদ বিভূতির গুণহ বিস্তার ॥

অনন্ত ব্রহ্মাণ্ডে যত ব্রহ্মা রুদ্রগণ ।  
'চির লোকপাল' শব্দে তাহার গণন ॥  
একদিন ঘারকাতে কৃষ্ণ দেখিবারে ।

ব্রহ্মাআইলাঘারপালজানাটলাকৃষ্ণেরে ॥১৬  
কৃষ্ণ কহেন, কোন ব্রহ্মা, কি নাম তাহার  
ঘারী আসি ব্রহ্মাকে পুছেন আরবার ॥  
বিস্মিত হইয়া ব্রহ্মা ঘারিরে কছিল ।

'কহ গিয়া সনকপিতা চতুর্মুখ আইল' ॥  
কৃষ্ণে জানাইয়া ঘারি ব্রহ্মা লঞা গেল।  
কৃষ্ণের চরণে ব্রহ্মা দণ্ডবৎ কৈলা ॥১৭॥

কৃষ্ণ, মাগু পূজা করি তারে প্রসন্ন কৈল ।  
কি লাগি তোমার ইহা আগমন হৈল ॥  
ব্রহ্মা কহে, তাহা পাছে করিব নিবেদন ।

এক সংশয় মনে তাহা করহ খণ্ডন ॥  
'কোন ব্রহ্মা' পুছিলেতুমি, কোন অভিপ্রায়ে  
আময় বহি জগতেআরকোন ব্রহ্মাহরে ১২-  
কনি ঘাসি কৃষ্ণ তব কহিলেন ধ্যায়ানে ।  
অগণ্য ব্রহ্মার স্তব আইলাকৃষ্ণেরে ॥

দশ বিশ শত সহস্রাযুত লক্ষ বদন ॥

কোটার্কুদ মুখ কারো, নাহিক গণন ॥

রুদ্রগণ আইলা লক্ষকোটি বদন ।

ইন্দ্রগণ আইলা লক্ষকোটি নয়ন ॥

দেখি চতুর্মুখ ব্রহ্মা কাঁকর হইলা ।

হস্তিগণ মধ্যে যেন শশক রহিলা ॥২১ ॥

আসি সব ব্রহ্মা, কৃষ্ণ-পাদপীঠ আগে ।

দণ্ডবৎ করিতে মুকুট পাদপীঠে লাগে ॥

কৃষ্ণের অচিন্ত্যশক্তি লখিতে কেহ নাহে ।

যত ব্রহ্মা তত মূর্তি একই শরীরে ॥

পাদপীঠে মুকুটগ্র সংঘটে উঠে ধরনি ।

পাদপীঠকে স্তুতি করে মুকুট হেন জানি ॥

ষোড়হাতে ব্রহ্মা রুদ্রাদি করেন স্তবন ।

বড় রূপা কৈলে প্রস্তু, দেখাটলে চরণ ॥২২

ভাগ্য মোর বোলাইলা দাস অঙ্গীকরি ।

কোন আজ্ঞা হয় তাহা করি, শিরে ধরি ॥

কৃষ্ণ কহে, তোমা সব দেখিতে চিত্ত হৈল

তার লাগি এক ঠাঁঞি সব বোলাইল ॥

সুখী হও সব, কিছু নাহি দৈত্যভয় ।

তারা কহে, তব প্রসাদে সর্কত্রই জয় ॥

সম্প্রতি যেন পৃথিবীতে হঞাছিল ভার ।

অনতীর্ণ হঞা তার করিলা সংহার ॥২৩॥

ঘারকাদি বিভূ, তাহার এইত প্রমাণ ।

আমারি ব্রহ্মাণ্ডে কৃষ্ণ সবাই হৈল জান ॥

কৃষ্ণসহ ঘারকাবৈভব অনুভব কৈল ।

একত্র মিলনে কেহো কাহো না দেখিল ॥

তবে কৃষ্ণ সৰ্ব ব্রহ্মাগণে বিদ্যার দিল ।

দণ্ডবৎ হৈঞা সব নিজ ঘরে গেল ॥

দেখি চতুর্মুখ ব্রহ্মার হৈল চমৎকাব ।

কৃষ্ণের চরণে আসি কৈল নমস্কার ॥

ব্রহ্মা কহে, পূর্বে আমি যে নিশ্চর কৈল ।

তাহার উদারগণ আসিআসি সে দেখিবারে ॥

তথাহি মধ্যমীয়ায় একবিংশে বটরোবধঃ  
শ্রীমত্যাগবতবচনম্—

অনন্ত এব জানন্ত কিং বহুক্যা ন বে প্রভো ।

মনসো বপুষো বাচো বৈতবঃ তব গোচর ॥১৩৯

কৃষ্ণকহে, এই ব্রহ্মাণ্ড পঞ্চাশৎকোটি বোজন  
অতিক্রম্য তাতে তোমার চারি বদন ॥

কোন ব্রহ্মাণ্ড শতকোটি, কোন লক্ষকোটি

কোন ব্রহ্মাণ্ড নিযুতকোটি, কোনকোটিকোটি

ব্রহ্মাণ্ডানুরূপ ব্রহ্মার শরীর বদন ।

এইরূপে পালি আমি ব্রহ্মাণ্ডের গণ ॥২৫॥

একপাদ নিভূতি, ঠেহার নাহি পরিমাণ ।

ত্রিপাদ্বিভূতিপরব্যোমের কেকরে উমাণ ॥২৬

তথাহি মধ্যমীয়ায় একবিংশে চতুর্দশলোক-

বৃত্তং পদ্মপুরাণবচনম্—

তস্যঃ পারে পরব্যোম ত্রিপাত্ত্বতঃ সনাতনম্ ।

অনুতঃ শাখতং নিত্যমনন্তঃ পরমং পদম্ ॥১৭॥

তবে কৃষ্ণ ব্রহ্মারে দিলেন বিদায় ।

কৃষ্ণের বিভূতি স্বরূপ জ্ঞানন না যায় ॥

ত্র্যধীশ্বর শব্দের অর্থ গুঢ় আর হয় ।

ত্রিশব্দেতে কৃষ্ণের তিন লোক করয় ॥

গোলোকাখা গোকুল মথুরা স্বারাবতী ।

এই তিন লোকে কৃষ্ণের সহজে নিত্যস্থিতি

অন্তরঙ্গ পূর্ণৈশ্বর্য পূর্ণ তিন ধাম ।

তিনের অধীশ্বর কৃষ্ণ স্বয়ং ভগবান্ ॥২৭॥

পূর্ক উক্ত ব্রহ্মাণ্ডের যত দিকপাল ।

অনন্ত বৈকুণ্ঠাবরণ চির লোকপাল ॥

তা সবার মুকুট কৃষ্ণ পাদপীঠ আগে ।

দণ্ডবৎ কালে তাঁর মণি পীঠে লাগে ।

মণিপীঠে ঠেকাঠেকি উঠে বনকসি ।

পীঠের স্ততি করে মুকুট হেম অমুমানিঃ ॥

বিক বিক্রমো কৃষ্ণ বিভা বিক্রমশান

বিক্রমশান

সেই স্বারা কালক্রমে নিত্য পূর্ণকাম ॥

অতএব বেদে কহে স্বয়ং ভগবান্ ॥২৮॥

কৃষ্ণের ঐশ্বর্য অপার অমৃতের সিক্ত ।

অবগাহিতে নারি তার, হুইল এক বিশুদ্ধ ॥

ঐশ্বর্য কহিতে প্রভুর কৃষ্ণ স্কৃতি হৈলা ॥

মাধুর্যে মজিল মন এক স্নোক পড়িল ॥৩০

তথাহি শ্রীমত্যাগবতে তৃতীয়বর্ষে বিতীরাধ্যায়ে

বাদশলোকঃ—

বহুভাঙ্গীলোপরি কং যোগেণ-

মারাবলং দর্শরতা গৃহীতম্ ।

বিদ্রাশনং বস্য চ সৌভগর্ধেঃ

পরং পদং ভূবণভূবণাদম্ ॥ ১৮ ॥

যোগমারাবলং দর্শরতা ( আনিকৃতং সকল  
বর্ত্তববিশ্বদগণঃ বদ্রাপনায়োতি ভাবঃ ) বহুভাঙ্গী-  
লীলোপরি কং ( বহুভাঙ্গীলীলায় ঔপরি কং যোগেণ  
নরাকৃতিভার্যঃ ) গৃহীতং ( ন কেবলমেতাবৎ তসৈব  
রূপান্তরে তাদৃশত্বানুভবাত্ তত্রাপি প্রতিক্রমশি  
অপূর্ক প্রকাশ্যৎ ) বস্য ( অশি ) চ বিদ্রাশনং  
( বতঃ ) সৌভগর্ধেঃ পরং পদং ভূবণভূবণাৎ  
( ভূবণানাং ভূবণানি অজানি যস্মিন্ তম্ ) ॥১৮॥

উক্রব কহিলেন, বিদুর! শ্রীভগ-  
বান্ আপন যোগমারার বল প্রদর্শন  
করাইয়া সৌভাগ্যাত্মশয়ের পরাক্রম  
মর্ত্যলীলার উপযুক্ত নরাকৃতি রূপ গ্রহণ  
করিয়াছিলেন। তাহাতে আপনিও মুগ্ধ  
হইয়াছিলেন, অধিকন্তু সেই মূর্তির অঙ্গ-  
সকল এরূপ শোভনীয় ছিল, যে ভূবণ  
সকলকেও ভূষিত করিত ॥ ১৮ ॥

যথা রাগঃ ॥

কৃষ্ণের বভেক খেলা, সর্কোত্তম মরনীলা

মরবপু তাহার স্বরূপা

গোপবেশ বেধকর, ময়কিশোর নটবহ

মরনীলা স্বরূপ অমৃত ॥৩০

কৃষ্ণের স্বরূপ অমৃত ॥৩০

যে রূপের এক কণ, ডুবায় যে ত্রিভুবন,  
 সর্বপ্রাণী করে আকর্ষণ ॥ ৩১ ॥  
 যোগমায়া চিহ্নক্তি, বিস্কন্ধ সস্ব পরিগতি,  
 তার শক্তি লোকে দেখাইতে ।  
 এই রূপ-রতন, ভক্তগণের গুঢ়ধন,  
 প্রকট কৈল নিত্যলীলা হৈতে ॥ ৩২ ॥  
 রূপ দেখি আপনায়, কৃষ্ণের হৈল চমৎকার,  
 আস্থাদিতে মনে উঠে কাম ।  
 সৌভাগ্যসারনাম, সৌন্দর্য্যাদিশুণগ্রাম,  
 এই রূপ তাঁর নিত্যধাম ॥ ৩৩ ॥  
 ভূষণের ভূষণ অঙ্গ, তাহে ললিত ত্রিভঙ্গ,  
 তদুপরি জগনু-নর্তন ।  
 ভেরুহ নেত্রান্ত বাণ, তার দৃঢ়সঙ্কান,  
 বিদ্বৈ বেধা গোপীগণ মন ॥ ৩৪ ॥  
 ব্রহ্মাও উপর পরব্যোম, তাঁহাযে স্বরূপগণ,  
 তা সবার বলে হরে মন ।  
 পতিব্রতা শিরোমণি, যারেকহে বেদবাণী,  
 আকর্ষয়ে সেই লক্ষ্মীগণ ॥ ৩৫ ॥  
 চড়ি গোপী মনোরথে, মম্বথের মনমথে,  
 নাম ধরে মদনসোহন ।  
 ক্রিনি পঞ্চশর দর্প, স্বয়ং নবকন্দর্প,  
 রাগ করে লঞা গোপীগণ ॥ ৩৬ ॥  
 নিম্বগম সখা সঙ্গে, গোগণ চবাণ রঙ্গে,  
 রুদ্ধাবনে স্বচ্ছন্দ বিহার ।  
 বার বেধু ধনি শুনি, স্থাবুর জঙ্গম প্রাণী,  
 পুলকঙ্গ বহে অঙ্গধার ॥ ৩৭ ॥  
 মুকমালা বকপাঁতি, ইন্দ্রধনু পিঙ্ক তথি,  
 পীতাঙ্কর বিজুরী গঞ্চার ।  
 কৃষ্ণ নবজলধর জগৎশস্ত উপর  
 বরিষয়ে লীলামুত্তম ॥ ৩৮ ॥  
 মাধুর্য্য ভগবতায়, ব্রজে কৈল পরচার,  
 তাহা ভক্ত-স্বাক্ষরে কলকল ॥ ৩৯ ॥

স্থানে স্থানে ভাগবতে, বর্ণিরাছে জ্ঞানাইতে,  
 যাহা শুনি মাতে ভক্তগণ ॥ ৩৯ ॥  
 কহিতে কৃষ্ণের মনে, শ্লোকপটে প্রেমাবেশে,  
 প্রেমে মনাতন-হাতে ধরি ।  
 গোপী ভাগ্য কৃষ্ণগুণ, যে করিল বর্ণন,  
 ভাবাবেশে মথুরানাগরী ॥ ৪০ ॥  
 তথাহি আদিলীলায় চতুর্থে চতুর্বিংশতি-  
 শ্লোকস্থত শ্রীমত্তাগবতবচনম্—  
 গোপাস্তপঃ কিমচরন্ বনমুখ্য রূপং  
 লাবণ্যসারমসমোদ্ধমনন্যসিকম্ ।  
 দৃগ্ভিঃ পিবন্ত্যনুসবান্তিনবং দুরাপ-  
 মেকাশুধাম যশসঃ শ্রিয় ঐশ্বর্য্য ॥ ১৯ ॥  
 বধা রাগঃ ॥  
 তারুণ্যামৃত পারাবার, তরঙ্গ লাবণ্যসার,  
 তাহাতে আবর্ত্ত ভাবোদাস ।  
 বংশীধনি চক্রবাক্ত, নারী মন ভূষণাত,  
 তাহা ডুবায় না হয় উল্লাস ॥ ৪১ ॥  
 সখি হে কোন তপ কৈল গোপীগণ ।  
 কৃষ্ণরূপ-মাধুরী পিয়া পিয়া নেত্র ভরি,  
 শ্লাঘ্য করে নেত্র তনু মন ॥ ৪২ ॥  
 যে মাধুরীর উর্দ্ধ আন, নাহি যার সমান,  
 পরব্যোমে স্বরূপের গণে ।  
 যেহোসব অবতারী, পরব্যোমে অধিকারী,  
 এ মাধুরী নাহি সে নারায়ণে ॥ ৪২ ॥  
 তাতেসাকীসেইরমা, নারায়ণের শ্রিয়তমা,  
 পতিব্রতাগণের উপাস্তা ।  
 তিহো যে মাধুরীলোভে, ছাড়ি সবকামভোগে  
 ব্রত করি করিল তপস্তা ॥ ৪৩ ॥  
 সেইত মাধুর্য্য-সার, অস্তমিদ্ধি নাহিতার,  
 তিহো মাধুর্য্যাদি-গুণ-খনি ।  
 আর সব পরকালে, তার রক্ত-গুণভানে,  
 যাহা বক্ত-স্বাক্ষরে কলকল ॥ ৪৪ ॥

সৌন্দর্যের রূপ, নব নব রূপে রূপ,

তার আগে কৃষ্ণের মাধুর্য।

ছুঁছে করে ছড়াছড়ি, বাঢ়ে মুখ নাহি মুড়ি,

নব নব ছুঁহার প্রার্থ্য ॥৪৫॥

কর্ম রূপ বোগ জ্ঞান, বিধিতক্তি তপোধ্যান,

ইহা হৈতে মাধুর্য তুল্যভ।

কেবল যে রাগমাগে, ভঞ্জে কৃষ্ণ অনুরাগে,

তারে কৃষ্ণমাধুর্য সুলভ ॥৪৬॥

সেই রূপ ব্রজাশ্রয়, ঐখর্য মাধুর্যময়,

দিব্য-গুণ গণ রত্নালয়।

আনের বৈভবগতা, কৃষ্ণদত্ত ভগবতা,

কৃষ্ণ সর্ক অংশী সর্কীশ্রয় ॥ ৪৭ ॥

শ্রী লজ্জা দয়া কীর্তি, ধৈর্য্য বৈশারদী যুতি,

এ সব কৃষ্ণের প্রতিষ্ঠিত।

সুশীল মুদুবদান্য, কৃষ্ণ সম নাহি অন্য,

কৃষ্ণ করে জগতের হিত ॥ ৪৮ ॥

কৃষ্ণ দেখি নানা জন, করে নিমিষ নিন্দন,

ব্রঞ্জে বিধি নিন্দে গোপীগণ।

সেই সব শ্লোক পঢ়ি, মহাপ্রভু অর্থ করি,

মুখমাধুর্য করে আশ্বাসন ॥ ৪৯ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে নবমস্কন্ধে চতুর্বিংশাধ্যায়ে  
পঞ্চত্রিংশশ্লোকঃ—

বদ্যাননং মকরকুণ্ডলচাকর্ণ-

ব্রাজবকপোলহৃতগং সবিলাসহাসন।

নিত্যোৎসবং ন তত্পূর্নশিতিঃ পিবন্ত্যো

নার্যো নরান্দ মুখিতাঃ কুপিতা নিমেষ ॥২০॥

বদ (শ্রীকৃষ্ণ) মকরকুণ্ডলচাকর্ণব্রাজব-  
কপোলহৃতগং (মকরকুণ্ডলচাকর্ণ) চাকর্ণ (দেবীপা-  
ন্যাস) নৌ কপৌ ভাক্যো ব্রাজবৌ নৌ কপালৌ  
ভাক্যো নরান্দ (ইই জনমনোহর) সবিলাসহাসনঃ  
(সুখানন্দ) নিত্যোৎসবঃ (সুখানন্দ) তত্পূর্নশিতিঃ (সুখানন্দ)

উৎসবং বসিন্ জং) আননং দারিঃ (সৌন্দর্য)

নরাঃ (স্বলাসনঃ) চ কুপিতাঃ (সেজাকুপিতাঃ)

পিবন্ত্যঃ (অপি) ন তত্পূঃ (নিমেষোৎসবঃ)

ব্যবধানমপ্যাসহানাঃ তৎকর্তৃঃ) নিমেষঃ চ কুপিতা

(বত্বঃ) ॥ ২০ ॥

মকরকুণ্ডল দ্বারা শোভমান মনোহর  
কর্ণমুগল এবং গণ্ডুর বাহার সৌন্দর্যের  
আবিষ্কার করিয়াছে, বিলাসমাখা হাস্ত  
বাছাতে বিরাজিত এবং সর্কদাই বাছাতে  
উৎসব বর্তমান রহিয়াছে; শ্রীকৃষ্ণের  
সেই মুখচন্দ্রে গোপগোপীগণ নেত্র  
দ্বারা পান করতঃ আনন্দিত হইয়াও তত্পূঃ  
হইতে পারেন নাই। যেহেতু নরনের  
নিমেষ অসহিষ্ণু হইয়া নিমেষের সৃষ্টিকর্তা  
নিমির প্রতি কোপ করিয়াছিলেন ॥২০॥

তথাহি আদিনীলারং চতুর্থে ষাণ্ঠিশ্লোকস্থতং  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনং—

অটতি বদ্বানহি কাননং

ত্রুটি বুগায়েত বামপতাতা।

কুটিলহৃতগং শ্রীমুখক তে

অত উদীকতাং পক্ষকদৃশাম ॥ ২১ ॥

বথারাগঃ ॥

কামগায়ত্রী মন্ত্ররূপ, চর কৃষ্ণের স্বরূপ  
সাক্ষি চক্ৰিশ অক্ষর তার হর।

সে অক্ষর চন্দ্র হর, কৃষ্ণ করি উদয়  
ত্রিলগৎ কৈল কাময়র ॥ ২০ ॥

সখি যে কৃষ্ণমুখ বিকরাকরাক।  
কৃষ্ণবপু সিংহাসনে, বসি রাজ্য পাশুর  
শঙ্কে করি চক্রেতঃসমাক ॥ ২১ ॥  
সুই পক্ষ সুরিষর, নিমিষী নরীশ্বর

...অবশ্যই হস্ত, তাহাতে চন্দন ...  
 নেহা এক পূর্ণচন্দ্র মানি ॥ ৫২ ॥  
 করনখ চান্দের ঠাট, বংশীউপর করে নাট,  
 তার গীত মুরলীর তান ।  
 পানখচন্দ্রগণ, তলে করে স্নানস্নান,  
 সুপুনের ধনি যার গান ॥ ৫৩ ॥  
 নাচে মকরকুণ্ডল, নেত্র লীলাকমল,  
 বিলাসী রাজ্য সতত নাচায় ।  
 ক্রমশঃ নাসিকাবাণ, ধনুস্তম্ব ছুই কাণ,  
 নারী মন লক্ষ্য বিক্ষে তার ॥ ৫৪ ॥  
 এই চান্দে বড় নাট, পসারি চান্দে হাট,  
 বিমিষুলে বিলায় নিজাম্বত ।  
 হাহসিতজ্যোৎস্নাম্বতে, কাহাকে অধরাম্বতে  
 সবলোক করে আপ্যায়িত ॥ ৫৫ ॥  
 বিপুল আরতাকরণ, মদনমদ সূর্ণন,  
 মজী বার এই দুই নয়ন ।  
 লাবণ্য কেলিসদন, জননেত্র রসায়ন,  
 সুখময় গোবিন্দবদন ॥ ৫৬ ॥  
 ধীর পূণ্য পুঞ্জকলে, সে মুখদর্শন সিলে,  
 ছুই আঁখি কি করিবে পান ।  
 ইঙ্গণবাচেষ্টকালোভ, পীতেনারেনমেনেকোভ,  
 দুঃখে করে বিধাতা নিন্দন ॥ ৫৭ ॥  
 না মিলেক লক্ষকোটি, সবেদিল আঁখিছুটি,  
 তাহে দিল নিমেষাক্ষাদনে ।  
 বিধি অত তপোধন, রমসুন্দর তার মন,  
 নাহি জানে বোধ্য সূক্ষনে ॥ ৫৮ ॥  
 রু-রেখিবে কৃষ্ণানন, তারে করে হিনয়ন,  
 বিধি হএণা ছেন অবিচার ।  
 জ্যোতির্মহি রোমধরে, কোটি আঁখিতার করে,  
 তারে জানি বোধ্য পুষ্টি তার ॥ ৫৯ ॥  
 ...

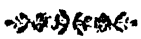
...  
 মোক পক্ষে ...  
 তথাহি শ্রীকৃষ্ণায়ুতে বিনয়তিমোকঃ—  
 মধুরং মধুরং বপুঃপ্রভ বিতো- ।  
 মধুরং মধুরং বদনং মধুরম্ ।  
 মধুগন্ধি মধুশ্চিত্তমেতথধে ।  
 মধুরং মধুরং মধুরং মধুরম্ ॥ ২১ ॥  
 অস্ত বিতোঃ বপুঃ মধুরং মধুরম্ (অতিসুমধুরং  
 বদনং (তু) মধুরং মধুরম্ (অতিভরাং সুমধুরং  
 অহো এতৎ মধুগন্ধি (মধুসৌরভবৃৎসং) মধুশ্চিত্তা  
 (তু) মধুরং মধুরং মধুরং মধুরম্ (অতিতমা  
 সুমধুরম্) ॥ ২২ ॥  
 অহো ! শ্রীকৃষ্ণের এই দেহ অতি  
 সুমধুর । বদন মধুরতর । এই মধুগন্ধি  
 মধুশ্চিত্ত মধুরতম ॥ ২২ ॥  
 যথা রাগঃ ॥  
 সনাতন, কৃষ্ণাধুর্য্য অম্বতের সিদ্ধ ।  
 যোর মন মারিপাতী, সব পীতে করে মতি  
 ছুইব বৈদ্য না দেয় এক বিদ্ধ ॥ ৬১ ॥  
 কৃষ্ণাক লাভগ্যপূর, মধুর হৈতে সুমধুর,  
 তাতে যেই মুখ সুধাকর ।  
 মধুর হৈতে সুমধুর, তাহা হৈতে সুমধুর,  
 তার যেই শ্রিতজ্যোৎস্নাকর ॥ ৬২ ॥  
 মধুর হৈতে সুমধুর, তাহা হৈতে সুমধুর,  
 তাহা হৈতে অতি সুমধুর ।  
 আপনার এক করণে, ব্যাপে সব ত্রিভুবনে,  
 দশদিক্ ব্যাপে যার পূর ॥ ৬৩ ॥  
 শ্রিতকিরণপুংগু রে, পৈপৈ অধরমধুপুং  
 ...

সেপদনিবোধীদিবৈকধায়, অশুভদিবৈকুষ্ঠেযায়,  
 বসে পৈশে জগতের কাণে ।  
 মন, মাতেয়া' কবি, বলাৎকাবেআনেধরি,  
 বিশেষ ৩২ যুবতীর গণে ॥ ৩২ ॥  
 সে পদনিবৃত্ত উক্ত, পতিত্র তারভাপে ব্রত,  
 পতি-কোম হৈতে কাড়ি আনে ।  
 বৈকুষ্ঠেব লক্ষ্মীগণে, যেই করে আকর্ষণে,  
 তার আগে কেবা গোপীগণে ॥ ৩৩ ॥  
 নীবীখনাযপতিআগে, চূড়কন্দ'করায়'ত্যাগে  
 বলে ধরি আনে কৃষ্ণস্থানে ।  
 গোপক পদ'লক্ষ্মা ভয়, সব জ্ঞান লুপ্ত হয়,  
 ঐছে নাচায় সব নারীগণে ॥ ৩৪ ॥  
 কাণেরভিত্তববাসাকরে, আপনেতাসদাস্কুরে  
 অস্ত্র শব্দ না দেয় প্রবেশিতে ।  
 আনকথানাসুনেকাণ, আনবলিতেবলেআন,  
 এই কৃষ্ণের বংশীর চরিতে ॥ ৩৫ ॥

পুনঃকয়পাজ্ঞানে, আনকহিতেকহিঅ'ানে,  
 কৃষ্ণরূপা তোমার উপরে ।  
 আমার চিত্ত জয় করি, মিজৈকর্ষ্যা মাধুরী,  
 মোর মুখে শুনায় তোমারে ॥ ৩৬ ॥  
 আশিত বাতুল আন কহিতে আন কহি ।  
 কৃষ্ণের মাধুর্য্য তজ্ঞোতে যাচি বচি ॥ ৩৭ ॥  
 তব প্রভু ক্ষণ এক মৌন ধরি রহে ।  
 মনে বৈদর্য্য করি পুনঃ সনাতনে কহে ॥ ৩৮ ॥  
 কৃষ্ণের মাধুণী আর মহাপ্রভুল মুখে ।  
 ইহা যেই শুনে সেই ভানে প্রেমসুখে ॥  
 শ্রীকৃপ রপুনাথ পদে যার আশ ।  
 চৈতন্তচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৩৯ ॥  
 ইতি চৈতন্তচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে মধ্যজ-  
 ত্ত প্রবিচারে শ্রীকৃষ্ণৈকর্ষ্যমাধুর্য্যবর্ণনং  
 নাম একবিংশ পরিচ্ছেদঃ ॥ ২১ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্তচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্তস্বরূপ শ্রীজামলাল পরাবিন্দ সেবি-বিনোদ'দেব'দি-  
 গোষাধি কৃতাম্বয়বোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত মধ্যজন্ত বচনে শ্রীকৃষ্ণৈকর্ষ্য মাধুর্য্য বর্ণনং  
 নাম একবিংশ পরিচ্ছেদ ॥ ২১ ॥

দ্বাবিংশ পরিচ্ছেদ ।



বলে শ্রীকৃষ্ণচৈতন্তদেবঃ তং কল্পণাবধম্ ।  
 কলাবশ্যতিগুচয়ঃ তক্তিধেন প্রকাশিতা ॥ ১ ॥  
 যেন অতিগুচা ইয়ঃ তক্তিঃ প্রকাশিতা তং  
 কল্পণাবধম্ শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যদেবম্ ( অহং ) বন্দে ॥ ২ ॥  
 এই কলিতে যিনি অতি রহস্যময়ী  
 উক্তিকে প্রকাশ করিয়াছেন, সেই

কল্পণাবধ শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যদেবকে বন্দনা  
 করি ॥ ১ ॥  
 জয় জয় শ্রীকৃষ্ণচৈতন্ত জয় নিত্যানন্দ ।  
 জয়দৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তরুন্দ ॥  
 এইত কহিল মধ্যজন্তের বিচার ।  
 বেদশাস্ত্রে উপদেশে, কৃষ্ণ এক যার ॥ ২ ॥



এবে কচি শুন অভিপের লক্ষণ ।  
 যাহা হৈতে পাই কৃষ্ণ, কৃষ্ণ-প্রেম ধন ॥  
 কৃষ্ণভক্তি অভিপের সর্বশাস্ত্রে কয় ।  
 অতএব মুনিগণ করিয়াছেন নিশ্চয় ॥ ১ ।

তথাহি মুনিবাক্যম্—

ঐক্যমাত্মা পূর্ণা দিশতি ভবদারাদনবিধিং  
 যথা মাতৃবাণী স্মৃতিরপি তথা বক্রি ভগিনী ।  
 পুরাণাত্মা যে বা সহজনিবহাস্তে তদমুগা  
 অতঃ সত্যং জ্ঞাতং মূবচর ভবনেন শরণম্ ॥২॥

ঐক্যঃ মাতা ( জননী) মাতৃবৎ সর্বদা হিত-  
 কারিণীত্বাৎ ) স্পৃষ্টা ( জিজ্ঞাসিতা সতী ) ভবৎ-  
 আরাধনবিধিং দিশত ( আশ্রয়পতি ) যথা মাতৃ-  
 বাণী স্মৃতিঃ ভগিনী অপ ( ঐতিহ্যতত্ত্বাৎ স্পৃষ্টা  
 সতী ) তথা বক্রি ( ভবদারাদনবিধিং কথয়তি )  
 যে বা পুরাণাত্মাঃ ( পুরাণতত্ত্বাদয়ঃ ) সহজনি-  
 বহাঃ ( সত্যোদয়াঃ ) তে তদমুগাঃ ( জননীভক্তিভো-  
 জ্ঞগাঃ ) সত্যঃ ভবদারাদনবিধিং বদন্তি ) অতঃ  
 ( হে ) মূবচর ! ভবান্ এব শরণম্ ( ইতি ) সত্যং  
 জ্ঞাতম্ ॥ ২ ॥

একটিই মানসের মাতা । তাঁহাকে  
 জিজ্ঞাসা করিলে, তিনি আপনার আরা-  
 ধনা করিতে উপদেশ করিয়া থাকেন ।  
 মাতা যাহা বলেন ভগিনী স্মৃতিও তাহাই  
 বলেন । পুরাণাদি ভ্রাতৃগণও জননী ও  
 ভগিনীবই সঙ্গুণ্ড । অতএব হে মূবচর !  
 আপনিকি একমাত্র আশ্রয়, ইহা সত্য  
 বুঝিয়াছি ॥ ২ ॥

অবগতানন্তং কৃষ্ণং স্বয়ং ভগবান্ ।  
 স্মৃতরূপে ঐক্যরূপে তার হয় অবস্থান ॥  
 স্বাংশ বিভিন্নাংশরূপে হইয়া বিস্তার ।  
 অনন্ত বৈকুণ্ঠ-ব্রহ্মাণ্ডে করেন বিহার ॥  
 স্বাংশ বিস্তার চতুর্দ্বার অস্তার গণ ।

বিভিন্নাংশ জীব তার শক্তিতে গণন ॥২॥

সেই বিভিন্নাংশ জীব, দুইত প্রকার ।  
 এক নিত্যমুক্ত একের নিত্যগংগার ॥  
 নিত্যমুক্ত নিত্য কৃষ্ণচরণে উদ্বুখ ।  
 কৃষ্ণপারিদ নাম ভুঞ্জে সেবায়ুখ ॥  
 নিত্যবদ্ধ কৃষ্ণ হৈতে নিত্য বহিস্মুখ ।  
 নিত্য গংগার ভুঞ্জে নরকাদি দুখ ॥ ৩ ॥  
 সেই দোষে মায়াপিশাচী দণ্ড করে তারে ।  
 আধ্যাত্মিকাদি তাপত্রয় তারে জারি মারে ॥  
 কামক্রোধের দান হএম তার লাগি খায় ।  
 ভ্রমিতে ভ্রমিতে যদি সাধুবৈদ্য পায় ॥  
 তার উপদেশ-মস্ত্রে পিশাচী পলায় ।  
 কৃষ্ণভক্তি পায় তবে কৃষ্ণ নিকট যায় ॥৪॥—

তথাহি তক্তিরসামৃতসিদ্ধৌ পশ্চিমবিভাগে  
 দ্বিতীয়বর্ধ্যাৎ অপরাধভঞ্জন বর্গশ্লোকঃ—

কামাদীনাং কতি ন কতিথা পাপিতা চর্নিদেশা  
 জাতা তেধাং ময়ি ন করুণা ন ত্রপা নোপশান্তিঃ ।  
 উৎসৃজ্যে তানথ যত্নপতে সাম্প্রতং লক্শবুদ্ধি-  
 স্বামায়াতঃ শরণমভয়ং মাং নিবৃজ্জকাম্যাত্তে ॥৩॥

কামাদীনাং কতিথা চর্নিদেশাঃ ( ছুটাঁজাঃ )  
 কতি ( প্রকারাঃ, অমাভিঃ ) ন পালিতাঃ ( অপি  
 তু পাপিতা এব, তথাপি ) তেধাং ( কামাদীনাং )  
 ময়ি ( বিবয়ে ) করুণা ( দয়া ) ত্রপা ( লজ্জা ) উপশান্তিঃ  
 ন জাতা । অথ ( অনন্তরং, হে ) যত্নপতে, সাম্প্রতম্  
 ( ইদানীং ) তান্ ( কামাদীন্ ) উৎসৃজ্য ( উৎসূর্ণপয়া )  
 লক্শবুদ্ধিঃ ( সন্ ) অভয়ং শরণং স্বাম্ আয়াতঃ  
 ( প্রাপ্তঃ ) মাং আকাম্যে ( স্বদাস্যে ) নিবৃজ্জ  
 ( নিয়োজয় ) ॥ ৩ ॥

আমি কামাদির কত চর্নিদেশ কত  
 প্রকারেই না পালন করিয়াছি, তথাপি  
 আমার প্রতি তাহাদের দয়া হইল না।  
 অথবা তাহারা আমাকে দয়া করিতে  
 অসমর্থ হইয়া লজ্জিত বা নিবৃত্তি হইল  
 না । হে যত্নপতে, ভোমার কৃপার

আমার জ্ঞান লাভ হইয়াছে, আমি তাহাদিগকে ত্যাগ করিয়া তোমার অভয়চরণ আশ্রয় করিয়াছি, তুমি আমাকে নিজদাস্ত্রে নিয়োগ কর ॥ ৩ ॥

কৃষ্ণভক্তি অভিধেয় হরত প্রধান ।

ভক্তিমুখনিরীক্ষক কর্ম, যোগ, জ্ঞান ।

এই সব সাধনের অতিতুচ্ছ ফল ।

কৃষ্ণভক্তি বিনা তাহা দিতে পারে বল ॥ ৫

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমস্কন্ধে পঞ্চমাধ্যায়ে ষাটশ্লোকঃ—

নৈকর্ষ্যমপ্যচ্যুতভাববর্জিতং

ন শোভতে জ্ঞানমলং নিরঞ্জনম্ ।

কৃতঃ পুনঃ শব্দভঙ্গমীষরে

ন চার্ণিতং কর্ম যদপ্যাকারণম্ ॥ ৪ ॥

নিরঞ্জনম্ ( উপাধিশূন্যং ) জ্ঞানং নৈকর্ষ্যম্ অপি অচ্যুতভাববর্জিতম্ ( অচ্যুতে ভাবঃ ভক্তিঃ তদ্বর্জিতং চেৎ ) অলম্ ( অত্যর্থঃ ) ন শোভতে ( সম্যক্ পরোক্ষার ন করতে, তদা ) শব্দং ( সাধন-কালে কলকালে চ ) অভঙ্গং ( দুঃখরূপং যৎ কাম্যং ) যৎ অপি অকারণম্ ( অকাম্যং ) কর্ম ঈষরে ন অর্ণিতং ( চেৎ ) কৃতঃ পুনঃ ( শোভতে ) ॥ ৪ ॥

শুভাশুভ-কর্ষ-লেশ-রহিত ব্রহ্মের সহিত একাকার বলিয়া জ্ঞানকে নৈকর্ষ্য বলে। নৈকর্ষ্যাভিধেয় জ্ঞান আবার অবিদ্যাখ্য অজ্ঞানের অর্থাৎ উপাধির নিবর্তক হয়। তাদৃশ জ্ঞানও যদি ভগবন্তুক্তিবর্জিত হয়, তবে তাহা কোন-রূপেই শোভা পায় না, অর্থাৎ ভগবৎ-সাক্ষাৎকার ঘটাইতে পারে না। জানেন-ই যখন ঈদৃশী দশা, তখন সাধনকালে ও কলকালে দুঃখপ্রাদ্ যে কাম্যকর্ষ ও অকাম্যকর্ষ, তাহা ঈষরে অর্ণিত না

হইলে, ভক্তির আকারে আকাবিত না হইলে, কি কখন শোভা পাইতে পারে ? ॥ ৪ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দ্বিতীয়স্কন্ধে চতুর্থাধ্যায়ে নগদশ্লোকঃ—

তপস্বিনো দানপরো যশস্বিনো

মনস্বিনো মন্ত্রবিদঃ স্তম্ভজনাঃ ।

ক্ষেমং ন বিন্শক্তি বিনা বদর্শণং

তস্মৈ স্তত্ত্বপ্রবশে নমোনমঃ ॥ ৫ ॥

তপস্বিনঃ দানপরো যশস্বিনঃ মনস্ব-  
বিনঃ স্তম্ভজনাঃ ( চ পুরুষাঃ ) বদর্শণং বিনা ক্ষেমং  
ন বিন্শক্তি, স্তত্ত্বপ্রবশে তস্মৈ নমঃ মনঃ ॥ ৫ ॥

তপস্বী, দানশীল, যশস্বী, যোগী,  
জপশীল এবং সদাচারিগণ যাহাতে স্বীয়  
তপস্তাদিকর্ষ অর্পণ না করিলে মঙ্গল  
প্রাপ্ত হইবে না, সেই মঙ্গলযশস্বিন  
পুরুষকে পুনঃ পুনঃ প্রণাম করি ॥ ৫ ॥

শুদ্ধ জ্ঞান, মুক্তি দিতে পারে ভক্তি বিনে ॥ ৬

তথাহি তত্রৈব দশমস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে চতুর্শ-  
্লোকঃ—

শ্রেয়ঃ সৃষ্টিং ভক্তিমুদয়া তে বিতো

ক্রিস্তস্তি বে কেবলবোধলক্ষণে ।

তেষামসৌ ক্লেশল এষ শিবাতে

নাভ্যং বধা হৃণতুর্বাধাতিগাম্ ॥ ৬ ॥

( হে ) বিতো, শ্রেয়ঃ সৃষ্টিং ( শ্রেয়সাম্  
অতুর্বাধাতিগাম্ ) নাং বর্ধাৎকামমোক্ষানাং বা  
সৃষ্টিঃ পরণং যস্যাঃ তাং ) তে ( তব ) ভক্তিমু-  
উদয়া ( ভ্যক্ত্য ) বে ( জনাঃ ) কেবলবোধলক্ষণে  
( জ্ঞানমাত্র প্রাপ্যর্থং ) ক্রিস্তস্ত ( শাস্ত্রাত্ম্যাদি  
ক্লেশং কুর্কৃতি ) হৃণতুর্বাধাতিগাম্ ( অন্নপ্রদান-  
ধাতুং পরিত্যজ্য অন্নকণহীনান্ হৃণত্যান্যাত্ম্যাদি  
পুমান্ অবরুতাঃ ) বধা ( তথা ) অপৌ ( পাত্না-

ভয়াসদিজনিতঃ) ক্লেশঃ ( ক্লেশঃ ) এব অব-  
শিষ্যঃ ৩ ন অন্তঃ ( জানং তু ন এব ভবতি ) ॥৬॥

হে বিভো ! মঙ্গলের হেতুভূতা  
দ্বন্দ্বীয়া ভক্তিকে পরিত্যাগ পূর্ব্বক যাহারা  
কেবল জ্ঞানলাভার্থ শাস্ত্রাভ্যাগাদি-ক্লেশ  
স্বীকার করে, স্থলভূমাবঘাতী ব্যক্তি-  
দিগের স্থায় তাঁহাদিগের ঐ ক্লেশই  
অবশিষ্ট থাকে, অন্য কিছুই লাভ হয়  
না ॥ ৬ ॥

কৃষ্ণোমুখে সেই মুক্তি হয়, বিনা জানে ॥৭

তথাহি মধ্যলীলায়াং বিংশে পঞ্চদশশ্লোকধ্বং  
শ্রীশ্রীপ্রবচনম্—

নৈনী হেথা গুণময়ী মম মায়াহরতয়া ।

নামেব যে প্রপশ্যন্তে মায়াসেতাং তরতি তে ॥৭

কৃষ্ণেব নিত্যদাস, জীব তাহা ভুলি গেল ।

সেই দোষে মায়া তার গলাব বাঞ্চিল ॥

তাতে কৃষ্ণ ভঞ্জে, করে গুরুন সেবন ।

মায়াভাগ ছুটে, পায় কৃষ্ণের চরণ ॥

চারি-চর্ণাশ্রমী যদি কৃষ্ণ নাহি ভঞ্জে ।

স্বপ্নে পরিয়া সে সৌভবে পড়ি মজে ॥৮॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে পঞ্চমা-  
ধ্যায়ে দ্বিতীয়তৃতীয়ৌ শ্লোকৌ—

মুপবাহুরুপাদেভ্যঃ পুরুষশাস্রমৈঃ সহ ।

চত্বারো জঞ্জিরে বর্ণা গুণৈর্বিপ্রাদয়ঃ পৃথক্ ॥৮॥

ব-এবাং পুরুষং সাক্ষাদাম্ম প্রভবমীশ্বরম্ ।

ন ভদ্রস্থ্যবজ্ঞানস্তি স্থানাদ্ভ্রষ্টাঃ পতন্ত্যধঃ ॥৯॥

পুরুষস্য ( ভগবতঃ ) মুপবাহুরুপাদেভ্যঃ গুণৈঃ

( পর্ব্ব দৈভিঃ ) আশ্রমৈঃ ( ব্রহ্মচর্যাাদিভিঃ ) সহ

পৃথক্ বিপ্রাদয়ঃ চত্বারঃ বর্ণাঃ জঞ্জিরে ॥

এবাং ( মধো ) যে ( জনাঃ ) সাক্ষাৎ আম্ম প্রভবম্

ঈশ্বরং ন ভদ্রাস্ত্র অবজ্ঞানস্তি ( তে ) স্থানাদ্ভ্রষ্টাঃ

( পতঃ ) অধঃ পতন্ত্যধঃ ॥ ৮-৯ ॥

বিরাট্ পুরুষের মুখ বাহু উরু ও  
চরণ হইতে সঙ্গীদিগুণ-তারতম্যে পৃথক্  
পৃথক্ চারিবর্ণের ও আশ্রমের উৎপত্তি  
হইয়াছে । যিনি উক্ত বর্ণাশ্রমসকলের  
সাক্ষাৎ জনকস্বরূপ সেই ঐশ্বর্যশালী  
পুরুষকে ভজন করেন না, স্তুরাৎ  
অবজ্ঞা করেন, তিনি কর্ম্মলক্ অদিকার  
হইতে চ্যুত ও অধঃপতিত হয়েন ॥৮-৯॥

জ্ঞানী জীবমুণ্ডদশা পাইনু করি মানে ।

বস্তুতঃ বুদ্ধি শুক্র নহে, ভক্তি বিনে ॥৯॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে দ্বিতীয়ধ্যায়ে  
পাশ্চিমশ্লোকঃ—

যেহনোহরবিন্দ্যাক্ বিমুক্তমানিন-

স্থ্যাস্তভাবাদবিশুক্কবুক্কয়ঃ ।

আকঙ্ক কৃচ্ছ্রেণ পরং পদং ততঃ

পতন্ত্যামো নাদৃত্বয়দজ্বয়ঃ ॥ ১০ ॥

( হে ) অরবিন্দ্যাক্, অনো যে বিমুক্তমানিনঃ  
( বিমুক্তাঃ বয়ম্ ইতি মন্যমানাঃ ) ত্বয় অন্ত-  
তাবাৎ ( ভক্তেঃ অভাবাৎ ) অবিশুক্কবুক্কয়ঃ কৃচ্ছ্রেণ  
( বহুজন্মতপসা ) পরং পদং ( মোক্ষমুহিতং  
সংকুলতপাঃপ্রভাদি ) আকঙ্ক নাদৃত্বয়দজ্বয়ঃ ( ন  
আদৃতে মুরাদজ্বয়ী যৈঃ তে তাদৃশাঃ সন্তঃ ) ততঃ  
পতন্তি ( নিঠৈঃ অস্তিত্বন্তে ॥ ১০ ॥

হে অরবিন্দলোচন ! যাহারা তোমার  
প্রতি বিমুখ, তাহারা তোমাতে ভক্তির  
অভাব হেতু মলিন চিত্ত হয়, এবং সংসার  
মধ্যে থাকিয়াও আপনাকে বিমুক্ত বোধ  
করিয়া তোমার পাদদ্বয়ের সমাদর  
করে না । যাহারা তোমার পাদপদ্মকে  
সমাদর করে না, তাহাদের গতিও সেই-  
রূপই হয় । তাহারা অতিকষ্টে বিষয়-  
সুখ পরিত্যাগ পূর্ব্বক তপস্তাদি দ্বা

সোক্ষনয়িত্বিত সংকুলঙ্ঘ্যাদি উৎকৃষ্ট  
অধিকার লাভ করিয়াও অহঙ্কার বশতঃ  
উহা হইতে ভ্রষ্ট হইয়া থাকে ॥ ১০ ॥

দ্রুৎ, সূর্য্যনাম মায়। হয় অক্ষকার ।

ধাণী দ্রুৎ তাঁত। নাহি মায়ার অধিকার ॥ ১০ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ত্রিতীয়স্কন্ধে সপ্তমাধ্যায়ে  
সপ্তচরিত্রাংশ্লোকঃ—

শখং প্রশান্তমভয়ং প্রতিবোধমাত্রং

শুদ্ধং সমং সদসতঃ পরমাত্মতত্ত্বম্ ।

শব্দো ন যত্র পুরুকারকবান্ ক্রিয়ার্থো

মায়। পটৈরত্যভিমুখে চ বিলঙ্ঘ্যমানা ।

তদ্ বৈ পদং ভগবতঃ পরমম্ পুংসো

ব্রহ্মৈতি যদ্বিহুঃস্বং বিশোকম্ ॥ ১১ ॥

( মনয়ঃ ) যৎ ব্রহ্ম ইতি বিহুঃ তৎ বৈ পরমম্  
পুংসঃ ভগবতঃ পদম্ । ( তৎ চ ব্রহ্ম ) অজস্বং  
বিশোকং শখং প্রশান্তং সমম্ অভয়ং প্রতিবোধ-  
মাত্রং শুদ্ধং সদসতঃ পবম্ আত্মতত্ত্বং ( চ ) যত্র  
( চ ব্রহ্মণি ) শব্দঃ পুরুকারকবান্ ক্রিয়ার্থঃ ( চ )  
ন ( অস্তি ), মায়। চ অভিমুখে ( স্বাত্ত্বং ) বিলঙ্ঘ-  
মানা ইব যস্মাৎ পটৈরতি ( দূরতঃ অপসরতি ) ॥ ১১ ॥

মুনিগণ সকল হইতে ব্রহ্মতত্ত্ব হেতু  
সে তত্ত্বকে ব্রহ্ম বলিয়া জানেন, সেই তত্ত্বই  
শ্রীভগবানের নির্বিকল্পসত্তারূপ, ব্রহ্মের  
সাক্ষাৎকারের পর বিচিত্ররূপাদি-বিকল্প-  
বিশেষবিশিষ্ট শ্রীভগবানের সাক্ষাৎকার  
হয় বলিয়া, শ্রীভগবৎস্বরূপেরই অন্তর্গত  
ব্রহ্ম, শ্রীভগবৎসাক্ষাৎকারের সোপান-  
স্বরূপ । ঐ ব্রহ্ম জ্ঞানস্বরূপ অজস্ব-  
সুখস্বরূপ, আত্মতত্ত্ব অর্থাৎ সকল আত্মার  
মূল ; কারণ, আত্মাই স্বপ্রকাশ হেতু ও  
নিরূপাদিপারমপ্রোগাম্পদ হেতু সেই  
সেই রূপে প্রতীত হইয়েন, নিত্যপ্রকাশ

( স্কাভরহিত ) অভয়, বিশোক, উৎপত্তি-  
বিকারপ্রাপ্তি ও সংস্কার এই চতুর্বিধ কৰ্ম্ম-  
ফলের প্রকাশক কৰ্ম্মকাণ্ডরূপ শব্দভাঁহার  
বোধক হয় না ; শুদ্ধ ( উদ্ভ্রিয়জন্যত্বানি-  
দোষরহিত ) ময় ( উচ্চনীচভাবশূন্য )  
কার্য্যমকল ও কারণমকলের উপরি-  
স্থিত ; অধিক কি, অয়ং মায়।ও তদভি-  
মুখস্থিত জীবন্তু পুরুষমকলে অবস্থান  
করিতে লঙ্ঘিত হইয়া দূরে পলায়ন  
করে ॥ ১১ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ত্রিতীয়স্কন্ধে  
ত্রয়োদশশ্লোকঃ—

বিলঙ্ঘ্যমানয়া যত্র স্বাত্ত্বমীকাপথেমুয়া ।

বিমোহিতা বিকথন্তে মমাহমিতি হৃদিগঃ ॥ ১২ ॥

যত্র ঈক্ষাপথে স্বাত্ত্বং বিলঙ্ঘ্যমানয়া অমুয়া  
( মায়য়া ) বিমোহিতাঃ ( অস্বদাদয়ঃ ) হৃদিগঃ মম  
অহম্ ইতি বিকথন্তে ( চ ) ॥ ১২ ॥

মায়। যে ভগবানের দৃষ্টিপথে অব-  
স্থান করিতে লঙ্ঘিত হইয়েন, দুর্ভুক্তি  
ব্যক্তিগণ সেই মায়ায় মোহিত হইয়া  
'আমি' ও 'আমার' বলিয়া গ্লাধা করিয়া  
থাকে ॥ ১২ ॥

'দ্রুৎ তোমার হস্ত' যদি বলি একবার ।  
মায়।ব্রহ্ম হৈতে ক্রুৎতারে করেন পার ॥ ১১ ॥

তথাহি শ্রীহরিতত্ত্ববিলাসত্র একাদশবিলাসে  
সপ্তনবত্যাধিকারিতাক্ষুতরামায়ণবচনম্—

সকৃদেব প্রণয়ো যন্তবাসীতি চ বাচতে ।

অভয়ং সর্কবা তন্মৈ দদাম্যোত্তমুং মম ॥ ১৩ ॥

যঃ প্রণয়ঃ ( শরণং গতঃ সন্ ) তব অশ্বি  
( তবামি ) ইতি সক্রৎ এব ( অশি ) বাচতে ।  
সর্কবা তন্মৈ অভয়ং দদামি মম এতৎ ব্রহ্মণ ॥ ১৩ ॥

যে একবার আমার শরণাগত হইয়া  
বলে, 'কৃষ্ণ আমি তোমার', আমি তাহারে  
সর্বদা অভয় প্রদান করিয়া থাকি, ইহাট  
আমার ব্রত ॥ ১৩ ॥

ভুক্তি মুক্তি সিদ্ধিকামী সুবুদ্ধি যদি হয় ।  
গাঢ় ভক্তিযোগে তবে ক্রম্বেরে ভজয় ॥ ১২ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ত্রিতীয়স্কন্ধে তৃতীয়াধ্যায়ে  
দশমশ্লোকঃ—

অকামঃ সৰ্বকামো বা মোক্ষকাম উদারধীঃ ।

তীত্রেণ ভক্তিযোগেন যজ্ঞেত পুরুষং পরম্ ॥ ১৪ ॥

সৰ্বকামঃ মোক্ষকামঃ অকামঃ ( একান্তভক্তঃ  
বা উদারধীঃ ( পুরুষঃ ) তীত্রেণ ( ত্রেণ স্বভাবতঃ  
যথা সৰ্বেন্দ্ৰ সাধোন্ পৰমশাধকতমেন ) ভক্তি-  
যোগেন পরং পুরুষং যজ্ঞেত ॥ ১৪ ॥

অকাম একান্তভক্ত, উক্তামুক্ত সৰ্ব-  
কাম কৰ্মী ও যোগী এবং মোক্ষকাম  
জ্ঞানী যদি উদারবুদ্ধি হয়েন, তবে তীব্র  
ভক্তিযোগ দ্বারা পূর্ণপুরুষ শ্রীভগবানের  
উপাসনা করিবেন ॥ ১৪ ॥

অন্য-কামী যদি করে ক্রম্বের ভজন ।  
না মাগিলেও কৃষ্ণ তারে দেন স্বচরণ ॥  
কৃষ্ণ কহে আমা ভঞ্জে মাগে বিষয়-সুখ ।  
অমৃত ছাড়ি বিষ মাগে এই বড় মুখ ॥  
আমি বিজ্ঞ এই মুখে বিষয় কেন দিব ।  
স্বচরণামৃত দিঞা বিষয় জুলাইব ॥ ১৩ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে শকস্কন্ধে উনবিংশাধ্যায়ে  
অষ্টাংশশ্লোকঃ—

সত্যং দিশত্যৰ্ঘিতসৰ্বিকো নুণাং

নৈবার্ধদো বৎ পুনর্ঘর্ষিতা বতঃ ।

বয়ং বিথন্তে ভজতামনিচ্ছতা-

নিচ্ছাপিধানং নিজপাদপল্লবম্ ॥ ১৫ ॥

তৈঃ ) অর্ঘিতঃ ( সদ্ ) বর্ণাৎ অর্ঘিতঃ

( কামিভং পরার্থং ) দিশতি ( দদতি ) সত্যং  
( তথাপি ) অর্ঘতঃ ( পরমার্থতঃ ) ন ( ভবতি এব )  
বৎ ( বস্মাৎ ) বতঃ ( দত্তাৎ অনন্তরং ) পুনঃ ( অপি )  
অর্ঘিতা ( ভবতি ) । অনিচ্ছতাম্ ( অপি ) ভজতাম্  
ইচ্ছাপিধানং ( সৰ্বকামসমাপকং ) নিজপাদ-  
পল্লবম্ ( এব ) বয়ং বিথন্তে ( তেভ্যো দদতি ) ॥ ১৫ ॥

শ্রীভগবান্ প্রার্থিত হইয়া সকাম  
সমুখ্যাদিগকে প্রার্থিত বস্তু প্রদান করি-  
লেও সহসা পরমার্থ প্রদান করেন না ;  
কারণ, তাহাদিগের প্রার্থিত লাভের  
পরও পুনঃ পুনঃ প্রার্থনা দেখা যায় ।  
কিন্তু যাহারা নিষ্কামভাবে উপাসনা  
করেন, তাহারা প্রার্থনা না করিলেও,  
শ্রীভগবান্ তাহাদিগকে সৰ্ববিধ কামনার  
আচ্ছাদক নিজপাদপল্লব প্রদান করিয়া  
পাকেন ॥ ১৫ ॥

কাম লাগি ক্রম্বভঞ্জে পায় কৃষ্ণরসে ।

কাম ছাড়ি দাস হৈতে করে অতীলাহে ॥ ১৪ ॥

তথাহি হরিতক্তিসুখোদরে সপ্তমাধ্যায়ে ঐব-  
চরিতে অষ্টাংশশ্লোকঃ—

স্থানান্তিলাবী তপসি স্থিতোহহং

কাং প্রাপ্তবান্ দেবমুনীন্সুগুহম্ ।

কাচং বিচক্ষরিব দিব্যরত্নঃ

স্মিন্ কৃতার্থোহস্মি বয়ং ন যাচে ॥ ১৬ ॥

স্থানান্তিলাবী অহং তপসি স্থিতঃ ( হে ) প্রভো,  
কাচং বিচক্ষন্ দিব্যরত্নম্ ইব দেবমুনীন্সুগুহম্ কাং  
প্রাপ্তবান্ ( অহং ) কৃতার্থঃ স্মি ( অতঃ, হে )  
স্মিন্, ( অস্তম্ ) বয়ং ন যাচে ॥ ১৬ ॥

হে প্রভো ! লোকে যেমন কাচ  
অন্বেষণ করিতে করিতে দিব্যরত্ন প্রাপ্ত  
হয়, আমিও তত্ত্বপ উৎকৃষ্ট স্থান পাইবার

নিমিত্ত তপস্যা করিতে করিতে দেবে

ও মুনীন্দ্রগণের পক্ষে দুর্লভ তদীয় চরণ  
প্রাপ্ত হইয়াছি; অতএব আমি কৃতার্থ  
হইয়াছি, আর কোন বর প্রার্থনা করি  
না ॥ ১৬ ॥

সংসারে জন্মিতে কোন ভাগ্যে কেহ তরে  
নদীর প্রবাহে যেন কাষ্ঠ লাগে তীরে ॥১৫

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে অষ্টত্রিংশোধ্যায়ের  
শুকসম্বোধঃ—

মৈবং মর্মানমস্তাপি স্তাদেবাচ্যুতদর্শনম্।

ত্রিঃশতং কালনত্যা কচিৎ তরতি কশ্চন ॥১৭॥

মৈবম্ অধমস্ত (নীচস্ত) অপি মম অচ্যুত-  
দর্শনং ত্রাৎ এব। (যতঃ) কালনত্যা ত্রিঃশতং  
কশ্চন কচিৎ তরতি ॥ ১৭ ॥

আমি (অক্রুর) অধম কংসের দূত  
হইলেও বঞ্চিত হইব মনে করি না, কিন্তু  
শ্রীকৃষ্ণের দর্শন লাভ করিব। কাল-  
প্রবাহে নীচমান হইয়াও কেহ কখন তীর  
প্রাপ্ত হইয়া থাকে ॥ ১৭ ॥

কোন ভাগ্যে কারো সংসার করোমুখ হয়  
সাধুসঙ্গে তার কৃষ্ণে রতি উপজয় ॥১৬॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে একপঞ্চাশ-  
তমোহধ্যায়ের ঐশকাম্বজসম্বোধঃ—

ভবাপবর্ণৌ ভ্রমতো বদা ভবেৎ

জনস্ত তর্হ্যচ্যুতসংসমাগমঃ।

সংসঙ্গমো বর্হি ভসৈব সঙ্গতো

পর্যবরণে ষ্মি জায়তে রতিঃ ॥ ১৮ ॥

(হে) অচ্যুত, ভ্রমতঃ (সংসরতঃ) জনস্ত বদা  
(অবস্থগ্রহণ) ভবাপবর্ণঃ (ভবস্ত অপবর্ণঃ জনঃ)  
ভবেৎ তর্হি সংসমাগমঃ (সত্যং সঙ্গঃ ত্রাৎ) বর্হি  
সংসঙ্গমঃ (ভবেৎ) তদা এব সঙ্গতো পর্যবরণে  
ষ্মি রতিঃ জায়তে ॥ ১৮ ॥

হে অচ্যুত! এই সংসারে জন

করিতে করিতে যখন কোন ব্যক্তির  
সংসার করোমুখ হয়, তখন জাতরতি  
সাধুর সঙ্গ লাভ হয়। জাতরতি সাধুর  
সঙ্গ লাভ হইলে, তাঁহার রূপায় কাব্য-  
কারগনিয়ন্ত্বরূপ তোমাতে রতি উৎ-  
পন্ন হয় ॥ ১৮ ॥

কৃষ্ণ যদি রূপা করেন কোন ভাগ্যবানে।  
গুরু অন্তর্ভুক্তিরূপে শিখান আপনি ॥১৭॥

তথাহি আদিলীলারং প্রথমে উনবিংশস্কন্ধ-  
ধৃতঃ শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

নৈবোপযস্তাপচিতিং কবরতবেণ

ত্রস্মায়ুবাণি কৃতমুচ্ছয়ঃ শরতঃ।

যোহন্তর্কহিতমুভূতামত্তং বিধুধ-

প্রাচ্যার্থৈতেভাবপুত্রা স্বগতিং ব্যনক্তি ॥ ১৯ ॥

সাধুসঙ্গে কৃষ্ণভক্ত্যে শ্রদ্ধা যদি হয়।

ভক্তিফল প্রেম হয়, সংসার বায় ক্ষয় ॥১৮

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে নিংশপরি-  
চ্ছেদে অষ্টমস্কন্ধঃ—

বৃচ্ছয়া সংকথাদৌ জাতশ্রদ্ধস্ত বঃ পুমান্।

ন নির্ঝিঙ্গো নাতিসক্তো ভক্তিবোগস্ত সিদ্ধিবঃ ॥২০

বৃচ্ছয়া সংকথাদৌ তু জাতশ্রদ্ধঃ বঃ পুমান্ ন

অতিসক্তঃ (বেহগেহকলত্রাদিষু অত্যাশক্তিঃ) ন

নির্ঝিঙ্গঃ অস্য (জনস্য) ভক্তিবোগঃ সিদ্ধিবঃ

(কলনঃ ভবতি) ॥ ২০ ॥

যিনি বিবরে অত্যাশক্ত বা অতি-  
বিরক্ত নহেন, তাদৃশ ব্যক্তিরই কোন  
ভাগ্যে সাধুসঙ্গে শ্রদ্ধা উৎপন্ন হইলে,  
ভক্তিবোগ লাভ হয়, এবং তাঁহার ঐ  
ভক্তিবোগই সিদ্ধিপ্রদ অর্থাৎ প্রেমোৎ-  
পাদক হইয়া থাকে ॥ ২০ ॥

স্বরূপা বিনা কোন কর্মে ভক্তি নয়।

কৃষ্ণপ্রতি যুগে যুগে সংসার না যায় করায়

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে পঞ্চমস্কন্ধে ষাটশাধ্যায়ে  
ষাটশশ্লোকঃ—

বহুগণৈস্তৎ তপসা ন যাতি  
ন চেজার্য নিপপদাদগৃহাদ্ভ্যা ।  
ন জ্ঞানস্যা নৈব জগামিসুগৌ-  
র্বিনা মহৎপাদরজোহুভিষেকম্ ॥ ২১ ॥

( ৫৫ ) বহুগণ ! মহৎপাদরজোহুভিষেকঃ  
বিদ্যা এতৎ ( ভগবৎসংস্রঃ ত্বং ) জ্ঞানস্যা ( ব্রহ্ম-  
চর্ষণ ) ন, গৃহাৎ ( গার্হস্থ্যে ) ন, তপসা ( বাণ-  
শ্রোত্বে ) ন, নিৰ্গুণাৎ ( সন্ন্যাসাৎ ) ন, ইজার্য  
( তত্র তত্র ভক্তদেবতাপাসনয়া ) চ ন, জগামি-  
সুগৌঃ ( উপাসিতৈঃ ) ন যাতি ( প্রাপ্নোতি ) ॥ ২১ ॥

হে বহুগণ ! সাধুর চরণরেণু দ্বারা  
অভিনেত্র ভিন্ন, ব্রহ্মচর্যা গার্হস্থ্য, বাণপ্রস্থ  
বা সন্ন্যাস দ্বারা, সেই সেই কর্মের সেই  
সেই দেবতার উপাসনা দ্বারা, অথবা  
জল, অগ্নি ও সূর্যের উপাসনা দ্বারা  
শ্রীকৃষ্ণকে প্রাপ্ত হওয়া যায় না ॥ ২১ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে সপ্তমস্কন্ধে পঞ্চমাধ্যায়ে  
পঞ্চবিংশশ্লোকঃ—

নৈবাৎ মতিস্তানচক্রক্রমজিৎ  
স্পৃশত্যানর্থাপগমো বদর্থঃ ।  
মহীমসাং পাদরজোহুভিষেকঃ  
নিকিঞ্চনানাং ন বৃণীত যাবৎ ॥ ২২ ॥

নিকিঞ্চনানাং ( নিরন্তবিষয়ান্ভিমানানাং ) মহী-  
মসাং ( মহত্তমানাং ) পাদরজোহুভিষেকঃ ( পদরজস্যা  
অভিষেকঃ ) যাবৎ ন বৃণীত তাবৎ ( প্রতিবাক্যতো  
জ্ঞাতে অপি ) এবাৎ ( গৃহাসক্তানাং ) মতিঃ উক-  
ক্রমজিৎ ( উক্ক্রমস্য জিৎ ) ন স্পৃশতি  
( প্রাপ্নোতি, অসম্ভাবনাদিতিঃ বিহত্বতঃ ) অনর্থাপ-  
গমঃ ( অনর্থগ্য তৎস্পর্শব্রহ্ম অপগমঃ ) বদর্থঃ ( বস্য  
অজিৎস্পর্শিন্যা মতে: অর্থ প্রয়োজনং । মহদমু-  
গ্রহাভাবাৎ ন তবনিশ্চয়ঃ নাপি মোক্ষঃ তেবা-  
নিত্যার্থঃ ) ॥ ২২ ॥

যাবৎ বিষয়াভিমানরহিত সাধুগণের  
চরণপুঞ্জি দ্বারা অভিনেত্র না হয়, তাবৎ  
শ্রীকৃষ্ণের পাদপদ্মে মতি হয় না ।  
শ্রীকৃষ্ণের পাদপদ্মে মতি জন্মিলেই সকল  
অনর্থের নিবৃত্তি হইয়া যায় ॥ ২২ ॥

সাধুসঙ্গ সাধুসঙ্গ সর্কশাগ্রে কয় ।  
শবমাগ্র সাধুসঙ্গে সর্কশাগ্রি হয় ॥ ২০ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমস্কন্ধে অষ্টাদশাধ্যায়ে  
ত্রয়োদশশ্লোকঃ—

তুল্যাম লবেনাপি ন স্বর্গং নাপুনর্ভবম্ ।  
ভগবৎসঙ্গিসঙ্গস্য মন্ত্যানাং কিমুতাপিবঃ ॥ ২৩ ॥

ভগবৎসঙ্গিসঙ্গস্য ( ভগবৎসঙ্গিনো বিষ্ণুভক্কাঃ  
তেষাং সঙ্গস্য ) লবেন ( অন্তঃকারণেন ) অপি  
স্বর্গং ন তুল্যাম ( গমং পশ্যামঃ ) অপুনর্ভবম্  
( অপি ) ন ( তুল্যাম ) মন্ত্যানাম্ আশিবঃ  
( রাজ্যাশ্চাঃ ) কিমুত ॥ ২৩ ॥

বিষ্ণুভক্তগণের অভ্যঙ্গ সঙ্গও যে  
ফল প্রদান করে, তাতার সহিত স্বর্গ  
বা মোক্ষের তুলনা হয় না । মরণশীল  
মানবগণের তুচ্ছ রাজ্যাদিসুখের সহিত  
তুলনা করিব কিরূপে ? ॥ ২৩ ॥

কৃষ্ণ রূপালু অর্জুনে লক্ষ্য করিঞা ।  
জগতেরে রাখিয়াছে উপদেশ দিঞা ॥ ২১ ॥

তথাহি শ্রীশ্রীভাগ্যে অষ্টাদশাধ্যায়ে চতুঃসপ্তিমে-  
পঞ্চমষ্টিতমো শ্লোকো—

সর্কশ্চতমঃ ভূমঃ শূণ মে পরমং বচঃ ।  
ইটৌহসি মে নৃচর্মিত ততো বক্ষ্যামি তে হিতম্ ॥ ২৪ ॥  
মম্মদা তব মন্তকো মদ্বাজী মাং নমস্কৃৎ ।  
মামেবৈব্যাসি সত্যতেপ্রতিজ্ঞানে প্রিরোহসি মে ॥ ২৫ ॥

( ভো অর্জুন ) পরমং সর্কশ্চতমঃ মে বচঃ  
ভূমঃ শূণ ( যতঃ অংশুচর্ম মে ( মম ) ইটঃ ( প্রিরুতমঃ )  
আসি, ততঃ কে হিতং বক্ষ্যামি । মম্মদা ( মজিষ্ঠঃ )





ভক্ত্যুৎসাহঃ) সঃ কনিষ্ঠঃ ( অধিকারী ) নিগততে  
( কথ্যতে ) ॥ ২৮২১ ॥

যিনি শাস্ত্রে ও শাস্ত্রানুগত যুক্তি  
বিন্যাসে বিশেষ নিষ্ঠুর, তত্ত্ববিচার,  
সাদনবিচার, এবং পুরুষার্থবিচার দ্বারা  
ভগবানই একমাত্র উপাস্ত্র ও প্রীতির  
বিষয়, এইরূপ নিশ্চয় যার মূঢ়তর এবং  
বিশ্বাস প্রাগাঢ় হইয়াছে, তিনিই তত্ত্ব-  
বিষয়ে উত্তম অধিকারী । যিনি শাস্ত্রে  
ও শাস্ত্রানুমোদিত যুক্তি প্রদর্শনে বিশেষ  
নৈপুণ্য লাভ করিতে পারেন নাই-  
কিন্তু অক্রাবানু হইয়াছেন, তিনি মধ্যম  
অধিকারী । শাস্ত্রে ও শাস্ত্রানুগত যুক্তি  
প্রদর্শনে নৈপুণ্য লাভ দূরে থাকুক, ধাঁহার  
বিশ্বাস কোমল অর্থাৎ বিরুদ্ধশাস্ত্র বা  
যুক্তি দ্বারা বাঁহার বিশ্বাস অন্যায়সেই  
শিথিল করা যায়, তিনি ভক্তিবিষয়ে  
কনিষ্ঠ অধিকারী ॥ ২৮২২ ॥

রতি, প্রেম, তারতম্যে ভক্ত তরতম ।  
একাদশঙ্কে সবার করিয়াছে লক্ষণ ॥২৫॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশঙ্কে বিতীয়া-  
ধ্যয়ে পঞ্চচত্বারিংশাদিভিন্নশ্লোকঃ—

সর্গভূতেষু যঃ শ্রেষ্ঠো ভগবত্তাবদাশ্রমঃ ।  
তুস্তানি ভগবত্যাশ্রয়েষু ভাগবতোক্তমঃ ॥৩০॥  
ঈশ্বরে ভগবীনেষু বাণিশেষু দ্বিষংস্র চ ।  
প্রেমমৈত্রী কৃপোপেক্ষাঃ যঃ সর্বোত্তম মধ্যমঃ ॥৩১॥  
অর্চ্যারামেব হরঃ পূজাঃ যঃ শ্রেষ্ঠয়েবহতে ।  
ন ভক্ত্যেব চাত্তেষু ন ভক্তঃ প্রাকৃতঃ স্মৃতঃ ॥৩২॥

যঃ সর্গভূতেষু আশ্রমঃ ভগবত্তাবং পশ্চেৎ  
( অমৃতভবতি ) আশ্রম ভগবতি তুস্তানি ( চ অমু-  
তভতি ) এষঃ ভাগবতোক্তমঃ । যঃ ঈশ্বরে ( ভগ-  
বতি ) ভগবীনেষু ( ভগবত্তেজেষু ) বাণিশেষু ( অজ্ঞেষু )  
বিষংস্র ( ভগবত্তক্তবেদেষু ) বা ( চ ) প্রেম বৈভী

কৃপা উপেক্ষা ( চ তাঃ ) করোতি সঃ মধ্যমঃ । যঃ  
হরয়ে ( হরিঃ শ্রীপদ্মভূম্ ) অর্চ্যারাম্ এষ শ্রদ্ধয়া  
পূজ্যাম্ ঈহতে তদ্ভক্তেষু অজ্ঞেষু চ ( পূজাং ) ন  
( ঈহতে ) সঃ প্রাকৃতঃ ( কনিষ্ঠঃ ) স্মৃতঃ ॥৩১-৩২॥

যিনি সর্গভূতে আশ্রম ভগবতাবং এবং  
আশ্রমরূপ ভগবানে সর্গভূতকে দর্শন  
করেন, তিনিই ভাগবতোক্তম । যিনি  
ঈশ্বরে, তাকে, অজ্ঞে ও দ্বেষকারিতে  
প্রেম, মৈত্রীতা ও উপেক্ষা করেন, তিনি  
মধ্যম ভক্ত । যিনি হরিতোষণার্থ প্রতি-  
মাতেই শ্রদ্ধা সহকারে পূজা করিয়া  
থাকেন, কিন্তু তদ্ভক্ত ও অন্য ব্যক্তি  
সকলে তাহা করেন না, তাঁহাকে কনিষ্ঠ  
ভক্ত বলা যায় ॥ ৩১-৩২ ॥

সর্গ মহাশুভগণ বৈষ্ণবশরীরে ।  
কৃষ্ণের সকল গুণ বৈষ্ণবে সকলে ॥২৬ ॥

তথাহি আদিনীলয়াং পঞ্চমে পঞ্চমশ্লোকপুত্রং  
শ্রীমদ্ভাগবতচরনম্—

যতাস্তি ভক্তভগবতাকিঞ্চন।  
সর্গৈল নৈত্তত্র লমাসতে স্মরাঃ ।  
হরাবভক্তস্ত কুতো মহদগুণ।  
মনোরথেনাসতি ধাবতো বহিঃ ॥ ৩৩ ॥

সেই সব গুণ হয় বৈষ্ণবলক্ষণ ।  
সব কথা না যায় করি দিগ্দরশন ।  
রূপালু, অরুণভ্রোহ, সত্যসার, সম ।  
নির্দোষ, দান্ত, যুতু, শুচি, অকিঞ্চন ।  
সর্গোপকারক, শাস্ত্র, কৃষ্ণৈকশরণ ।  
অকাম, নিরীহ, স্থির, বিজিতবড়গুণ ।  
মিতভুক্ত, অপ্ৰমত্ত, মানদ, অমানী ।  
গভীর, করুণ, মৈত্র, কবি, দক্ষ, মৌনী ॥২৭

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ততীয়েষু পঞ্চবিংশা-  
ধ্যয়ে বিংশশ্লোকঃ—

ত্রিতিক্ৰমঃ কারুণিকাঃ সুহৃদঃ সর্বাধেহিনাম্ ।

অজ্ঞাতশত্রবঃ শাস্তাঃ সাধবঃ সাধুভূষণাঃ ॥ ৩৪ ॥

ত্রিতিক্ৰমঃ কারুণিকাঃ সর্বাধেহিনাম্ সুহৃদঃ  
অজ্ঞাতশত্রবঃ শাস্তাঃ ( শমদমাদিসাধনচতুষ্টয়-  
সম্পন্নঃ ) সাধুভূষণাঃ ( অন্নং সাধবোপি যে সাধু-  
অস্তান চ ভূষণস্তি মানয়ন্তি, তে ) সাধবঃ  
( উচ্যন্তে ) ॥ ৩৪ ॥

যাঁহারা সত্যিযু, করুণাশীল, সুহৃদ,  
অজ্ঞাতশত্রু, শমদমাদি চতুষ্টয় সাধনসম্পন্ন  
এবং সাধুভূষণের সম্পন্নকর্তা, তাঁহাদিগকে  
সাধু বলে ॥ ৩৪ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে পঞ্চমস্কন্ধে পঞ্চমাধ্যায়ে  
দ্বিতীয়শ্লোকঃ—

মহৎসেবায় দ্বাপমাতবিস্মৃক্তে-  
স্তমোদারঃ যোষিতাং সঙ্গিসম্ভবম্ ।  
মহাশ্বস্তে সমাচিত্তাঃ প্রশাস্তা  
বিমন্ত্রবঃ সুহৃদঃ সাধবো যে ॥ ৩৫ ॥

মহৎসেবায় বিয়ুক্তেঃ দারম্ আতঃ যোষিতাং  
সঙ্গিসম্ভবম্ ( যে সঙ্গিনঃ তেষাং সঙ্গঃ ) তমোদারঃ  
( ভ্রমঃ সংসারজ দারঃ ) যে সমাচিত্তাঃ প্রশাস্তাঃ  
বিমন্ত্রবঃ সুহৃদঃ সাধবঃ তে মহাত্মাঃ ॥ ৩৫ ॥

পঞ্চভদ্রের কতিবেদন, তে পুত্রগণ ।  
পাণ্ডিতেরা মহৎসেবাকেই ভগবৎপ্রাপ্তির  
এবং যোষিতবিস্মৃতির সঙ্গকে মরক-  
প্রাপ্তির দ্বারস্বরূপ বলিয়াছেন । যাঁহারা  
সমাচিত্ত, প্রশান্ত, কোপহীন এবং সুহৃদ,  
তাঁহাবই মহাত্মা ॥ ৩৫ ॥

ক্লম্ভভক্তি জন্মমূল ভয় সাধুসঙ্গ ॥ ৩৬ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং ঐতিহ্যে অষ্টাদশশ্লোক-  
মুতঃ শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

ভবাপবর্গো ভ্রমতো বদা ভবেজ্  
জনস্ত তুর্হাদুত সংসমাগনঃ ।  
সংসঙ্গনো বর্হি তদৈব সঙ্গতো  
পলাবয়শে ঐষি কারতে রতিঃ ॥ ৩৬ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একবিংশস্কন্ধে দ্বিতীয়া-  
ধ্যায়ে ত্রিংশশ্লোকঃ—

অতঃ আত্মস্তিকং কেমং পূজ্যামো ভবতোহনবাঃ ।  
সংসারেহাশ্বিন্ কণাঙ্কোহপি সংসঙ্গঃ সেবদিনূর্ণাম্ ॥ ৩৭ ॥

অতঃ ( পুনঃ ভবদর্শনস্ত দুর্লভবাং ) অনবাঃ  
আত্মস্তিকং ( নিরতিশয়ং ) কেমং ভবতঃ পূজ্যামঃ ।  
আশ্বিন সংসারে কণাঙ্কঃ ( কণকালভবঃ ) অপি  
সংসঙ্গঃ নবাং সেবাধঃ ( সর্বাভীষ্টবঃ নিধিঃ ) ॥ ৩৭ ॥

ভগবদ্ভক্তের দর্শন দুর্লভ বলিয়াই,  
হে অনব স্মরণ ! আপনাদের নিকট  
নিরতিশয় মঙ্গল ভিজ্ঞান করিতেছি ।  
এই সংসারে কণাঙ্কও সাধুসঙ্গ মনুষ্যা-  
গণের সর্বাভীষ্টদ নিদিস্বরূপ ॥ ৩৭ ॥

কৃষ্ণপ্রোম জগো, তিঁহো পুনঃ মূঢ়্য অঙ্গ ॥ ২৯

তথাহি আদিহীলায়াং প্রথমে ত্রিংশশ্লোকমুতঃ  
শ্রীমদ্ভগবতবচনম্—

স তাং প্রেদশাস্ত্রম বীণাসংবিধো  
ভবন্তি হংকর্ণরনাথনাঃ কণাঃ ।  
তজ্জোষণাদাশ্বপর্ণবর্ধণ  
প্রদ্ধাবতির্ভক্তিহরকৃষ্ণিঘ্যতি ॥ ৫৮ ॥

অসংসঙ্গ ত্যাগ এই বৈকুণ্ঠ আচার ।  
ক্রীড়কী এক অমাপু কৃষ্ণাভক্ত আর ॥ ৩৮ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে একত্রিংশা-  
ধ্যায়ে পঞ্চবিংশশ্লোকঃ—

ন তথাশ্চ ভবেম্মোতো বদন্ত্যেত প্রসঙ্গতঃ ।  
যোষিতাসঙ্গোনাং পুংসো বদাঃ ভবৎসঙ্গসঙ্গতঃ ॥ ৩৯ ॥

যথা যোষিতাসঙ্গং যথা ভবৎসঙ্গসঙ্গতঃ ( যোষিতা-  
সঙ্গিনাং সঙ্গতঃ ) পুংসঃ সেতঃ বদাঃ চ ভবেৎ  
তথা অস্তপ্রসঙ্গতঃ অস্ত ( পুংসঃ যোষিতাঃ ) ন  
( ভবেৎ ) ॥ ৩৯ ॥

যোষিতাসঙ্গ এবং তাহার সঙ্গীর সঙ্গ  
অতীত অনিষ্টকর । এই দুই পুরুষের

সঙ্গে যেমন মোহ ও বন্ধন হয়, অন্য ব্যক্তির সঙ্গে তরুণ হয় না ॥ ৩৯ ॥

তথাহি তত্রৈব ত্রয়ত্রিংশততৃত্বিংশো শ্লোকো—  
সত্যং শৌচং দয়া মৌনং বুদ্ধিঃ স্ত্রীঃ ক্রীঃ যশঃ ক্রমাঃ ॥ ৪০ ॥

শ্রীমো দমো ভগশ্চেতি বৎসল্যাদ্বাতি সজ্জনম্ ॥ ৪০ ॥

ভগবত্বেত্বু মূঢ়েত্বু ষড়্ভিতান্ববসামুত্বু ।

সদং ন সূর্য্যাক্ষোচ্যেত্বু যৌবিত্বকীড়াযুগেত্বু চ ॥ ৪১ ॥

বৎসল্যং সত্যং শৌচং দয়া মৌনং বুদ্ধিঃ স্ত্রীঃ ক্রীঃ যশঃ ক্রমাঃ শমঃ দমঃ ভগঃ চ ইতি সজ্জনং বাতি । তেত্বু অশ্রুত্বু মূঢ়েত্বু অসামুত্বু ষড়্ভিতান্বব (বেহাশ্রবুদ্ধিত্বু) যৌবিত্বকীড়াযুগেত্বু যৌবিত্যং কীড়াযুগঃ ইব অধীনেত্বু) শৌচ্যেত্বু সদং ন সূর্য্যাক্ষ ॥ ৪০।৪১ ॥

যে অসৎসঙ্গ বশতঃ সত্য, শৌচ, দয়া, মৌন, বুদ্ধি, লজ্জা, স্ত্রী, যশ, ক্রমা, শম, দম ও ঐশ্বর্য্য সকল বিনষ্ট প্রাপ্ত হয়, বাহার্য্য অশান্ত, মূঢ়, অসামু, দেহে আশ্রবুদ্ধিবিশিষ্ট এবং কীড়াযুগের (বানরের) ন্যায় কামস্রীগণের অধীন ও শাকার্ত্ত, তাহাদের সঙ্গ কদাচ করিবে না ॥ ৪০।৪১ ॥

তথাহি ভক্তিরসামুত্বসিকৌ পূর্নবিভাগে  
ভীরসহর্ষ্যাম্ একপকাদপাকে কাত্যায়নসংহিতা-  
চনম্—

বরং হৃতবহুআলাপজরাত-ব্যবহৃত্তিঃ ।

ন শৌরিত্তিত্তাবিদুপজনসংবাদবৈশম্যম্ ॥ ৪২ ॥

হৃতবহুআলাপজরাতঃ ব্যবহৃত্তিঃ ( বিশেষণ বৈশম্যঃ) বরং, শৌরিত্তিত্তাবিদুপজনসংবাদবৈশম্যম্ শৌরিঃ ক্রকঃ ভগাঃ কিকিৎ ভিত্তারাঃ অপি বিদুপঃ ॥ ভমঃ ভেম সংবাদঃ সহবাদঃ এষ বৈশম্যং পীড়। (ঐশ্বর্য্য সৌভাগ্যম্) ॥ ৪২ ॥

কাজলিত হতাশনের শিবাবুক পজ-  
নের মধ্যে অবস্থান করিতে হয় সেই

ভাল, প্রমাণি যেন ক্রীককচিত্তা-বিদুপ-  
জনের সহবাস রূপ ক্রেশভোগ্য করিতে  
না হয় ॥ ৪২ ॥

তথাহি গোখামিপাদোক্তঃ শ্লোকপাদঃ—

না ত্রাকীঃ ক্ষীণপুণ্যান্ কতিদপি

ভগবত্কিহীনান্ মহুয্যান্ ॥ ৪৩ ॥

ভগবত্কিহীনান্ (অতএব) ক্ষীণপুণ্যান্ মহু-  
য্যান্ কচিং (লৌকিককার্য্যাদৌ) অপি মা (ন)  
ত্রাকীঃ (দৃষ্টবান্ যমিতি) ॥ ৪৩ ॥

ভগবত্কিহীন ক্ষীণপুণ্য সমুদয়গণকে  
লৌকিককার্য্যাদিতেও দেখিবে না ॥ ৪৩ ॥

এই সব ছাড়ি আর বর্ণাশ্রমধর্ম্ম ।

অকিঞ্চন হঞা লয় কৃষ্কৈকশরণ ॥ ৩১ ॥

তথাহি মধ্যমীলারাম্ অষ্টমে সপ্তমশ্লোকধৃতং  
শ্রীগীতাবচনম্—

সর্কধর্মান্ পরিত্যজ্য যামেকং পরণং ব্রজ ।

অহং যং সর্কপাপেভো মোক্ষয়িষ্যামি মা ॥ ৩৫ ॥ ৪৪

ভ৩-বৎসল, ক্রুতজ, সমর্প, বদাস্ত ॥

হেন ক্রকছাড়ি, পণ্ডিতনাহি ভজে অস্ত ॥ ৩২

তথাহি শ্রীমত্যাগবতে দশদ্বন্দ্ব অষ্টচয়ারিংশা-  
ধ্যায়ে ষড়্বিংশশ্লোকঃ—

কঃ পত্তিত্বনপরং পরণং সর্কীয়ান্-

ভক্তপ্রিয়াদৃগিরঃ সূহবঃ কৃতজাৎ ॥

সর্কান্ দধাতি সূহবো ভক্ততোহতিকানা-  
নাশ্বানমপ্যুচরণচমৌ ন বস্ত ॥ ৪৫ ॥

(বঃ) ভক্ততঃ (ভক্ততে) সূহবঃ (সূহবে)

সর্কান্ অভিকস্মান্ আশ্বানন্ অপি দধাতি বস্ত

উপচরণচমৌ ন (ভঃ) ভক্তপ্রিয়াং ভক্তগিরঃ

সূহবঃ কৃতজাৎ বৎ (ভক্তঃ) অপরণং কঃ পত্তিত্বং

পরণং সর্কীয়ান্ ॥ ৪৫ ॥

যিনি ভক্তনকারী ক্রমসক্রে সকল  
কামনা এবং আশাশঙ্কে ও কামিন-কামর

বাহার হান বা কুকি নাই, সেই কুকপ্রিয়, সত্যবাক্য, সুস্থ, কৃতজ্ঞ, তোমা ব্যতীত অপর কাহাকে কোন্ পণ্ডিত ব্যক্তি শরণ লইয়া থাকেন? ॥ ৪৫ ॥

বিজ্ঞানের হয় যদি কৃষ্ণগুণজ্ঞান।  
অশু ভক্তি ভজে তাতে উদ্ধর প্রমাণ ১৩০

তথাহি শ্রীমহাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে বিতীরাধ্যায়ে  
ত্রয়োবিংশশ্লোকঃ—

অহো বকী বং স্তনকালকুটং  
জিবাংসরাহ পায়রমণ্যাসাধী।  
লেভে গতিং ধাক্রাচিতাং ততোহস্থং  
কং বা দয়ালুং শরণং ব্রজেম ॥ ৪৬ ॥

অহো (আশ্চর্য্যঃ দয়ালুতারাঃ) জিবাংসরা  
(হস্তং ইচ্ছয়া অপি) স্তনকালকুটং (স্তনরোঃ  
সহৃতং কালকুটং বিসং) বং (শ্রীকৃষ্ণম্) অপায়রং  
বকী (পুতনা) অসাধী (ছষ্টা) অপি ধাক্রাচিতাং  
(ধাক্রাঃ মনোদারাঃ উচিতাং) গতিং লেভে (ভক্ত-  
বেশমাজ্জয়েণ বঃ সঙ্গতিং হস্তবান্) ততঃ অস্থং  
কং বা দয়ালুং শরণং ব্রজেম ॥ ৪৬ ॥

ছষ্টা পুতনা প্রাণবিনাশের অশু  
বাহাকে স্তনসহুত কালকুটবিষ পান  
করাইয়া জননীযোগ্য গতি লাভ করি-  
য়াছে, সেই কৃষ্ণ ভিন্ন এমন দয়ালু  
আর কে আছে যে তাঁহাকে ভজন  
করিব? ॥ ৪৬ ॥

শরণাগত অকিকনের একই লক্ষণ।  
তার মধ্যে প্রবেশের আত্মসমর্পণ ১০৪

তথাহি হরিতত্ত্ববিলাসত একাদশবিলাসে  
সপ্তদশাদিক চতুঃশতাব্দত বৈকবতবচনবসম্—  
আত্মকৃত্যত স্কন্ধঃ প্রাতিকৃত্যাবিবর্জিতম্।  
রুক্মিণীভি বিখ্যাসো গোপুং বৈ বরণং তথা।  
আত্মনিকোপকার্ণেণ্যে রুক্মিণী শরণাপতিঃ ৪৭।

তথাহিভি বদন্ বাচা তথৈব বদনং বিবন্।  
তৎস্থানমাত্মিতত্বা যোমতে পরণাগতঃ ১০৪

আত্মকৃত্যত (ভগবতঃ সনাতনাত্মকৃত্যতারাঃ) স্কন্ধঃ  
(কর্তব্যত্বেন নিরমঃ) প্রাতিকৃত্যাবিবর্জিতম্ (উদৈপ-  
রীচত বর্জিতম্) গোপুং (পতিত্বেন) বরণং  
(বীকরণং প্রার্থনং বা) তথা (বিখ্যাসরূপে প্রীতি-  
রূপে চ সখ্যে) রুক্মিণীভি ইতি বিখ্যাসঃ আত্ম-  
নিকোপকার্ণেণ্যে (আত্মনঃ নিকোপঃ সঙ্গবদন্।  
কার্ণ্যক ভগবন্ রুক্মিণী ইত্যাদি প্রকারেণ আত্ম-  
ত্বম্) ইতি বড়বিধা শরণাপতিঃ। তব (অহম্)  
আমি ইতি বাচা বদন্ তথা এব বদনং বিবন্ তথা  
(বেহেন) তৎস্থানং (ভক্ত ভগবতঃ স্থানং শ্রী-  
মধুবাণিকম্) আশ্রিতঃ (সন্) যোমতে (বঃ  
আনন্দম্ অল্পতবতি সঃ) শরণাগতঃ ॥ ৪৭।

আত্মকৃত্যত স্কন্ধ অর্থাৎ ভগবতঃ  
জনের কর্তব্যতার নিয়ম করণ,তথিপরীত  
কর্মের পরিত্যাগ, রক্ষা করিয়েন বলিয়া  
বিখ্যাসকরণ, পতিত্বে বরণ, আত্মনিবেদন  
ও কাতরতাপ্রকাশ এই ছয়টির নাম  
শরণাপতি। হে ভগবন্! 'আমি আপ-  
নার' ইহা যিনি বলেন, মনে মনেও সেই-  
রূপ জানিয়া থাকেন এবং মধুবাদি স্থান  
আশ্রয় করতঃ আনন্দোপভোগ করিয়া  
থাকেন, তিনিই শরণাগত ॥ ৪৭।

শরণ লঞা করে কৃষ্ণে আত্মসমর্পণ  
কৃষ্ণ তারে তৎকালে করেন আত্মসম ১০৫

তথাহি শ্রীমহাগবতে একাদশস্কন্ধে একোবি-  
ত্রিংশাধ্যায়ে চতুত্রিংশশ্লোকঃ—

মর্গো বদা ভ্যক্তসমস্তকর্ণা  
নিবেদিতাখা বিচিকীর্ষিতো মে।  
উদাবৃত্তং প্রতাপভবানো  
দয়ালুতারাঃ কবতে বৈব কৃষ্ণ।

মর্গো (মহাদেব) বদা ভ্যক্তসমস্তকর্ণা (সম্) বৈ

(স্বঃ) নিবেদিতায়া (ভবতি) ভবা (অর্চনী) সরা বিচকীর্ষিতঃ (বিশিষ্টঃ কৰ্ত্ত্ব্য ইষ্টো ভবতি। ভতশ্চ) অনুভবঃ (সোকঃ) প্রতিপত্তমানঃ সরা (সহ) আশ্রয়গার (মষ্টক্যার মৎসমান ঐশ্বৰ্য্যার ইতি বাবৎ) কয়তে (যোগ্যঃ ভবতি ॥ ৪২ ॥

সমুখ্য বখন সকল কর্ম ত্যাগ পূৰ্ণক সেবাভিলাষে পরসাজ্ঞাতে আত্মনামর্গণ করেন, তখনই জীবমুক্ত হইয়া মৎসদৃশ ঐশ্বৰ্য্যভোগের যোগ্য হইয়েন ॥ ৪২ ॥

এবে সাধনভক্তি-লক্ষণ শুন সনাতন ।  
 বাহা হৈতে পাই কৃষ্ণপ্রেম মহাধন ॥ ৩৬ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্দৌ পূৰ্ণবিভাগে  
 বিতীরলহর্যাং বিতীরলোকঃ—

কৃতিসাধ্যা ভবেৎ সাধ্যতা বা সাধনাতিথা ।  
 নিত্যসিদ্ধত ভাবস্ত প্রাকট্যাং হব সাধ্যতা ॥ ৫০ ॥

কৃতিসাধ্যা (কৃত্যা ইচ্ছিরপ্রেরণা সাধ্যা ৫২  
 না) সাধ্যতা বা (সাধ্যঃ ভাবঃ প্রেমাদিরূপঃ বরা  
 সা ন তু ভাবসিদ্ধা) সাধনাতিথা ভবেৎ । যদি  
 নিত্যসিদ্ধতা ভাবস্ত প্রাকট্যাং সাধ্যতা ॥ ৫০ ॥

ইচ্ছিরগণের প্রেরণা দ্বারা সাধনীয়া সামান্যভক্তিকেই সাধনভক্তি কহে । এতদ্বারা ভাব ও প্রেম সাধ্য হইয়াছে, এজন্য উহার সাধন নামটি অর্থ । ভাব ও প্রেম সাধ্য বলাতে, উহার 'কৃত্রিম' এই প্রকার জন্ম উপস্থিত হইলেও হইতে পারে ? বাস্তবিক উহা নিত্যসিদ্ধ বস্তু, উহার কোন সাধন নাই ; কিন্তু জীবের জন্ময়ে লুপ্তায়িত প্রেমের উদ্দীপন করণের নাম সাধন ॥ ৫০ ॥

অবগাদি-ক্রিয়া দ্বার স্বরূপ লক্ষণ ।  
 তটস্থ লক্ষণে উপকার প্রেমধন ।  
 নিত্যসিদ্ধ কৃষ্ণপ্রেম সাধ্য কহু সর ।  
 সাধনাদি কৃত্রিমের বনরে ভ্রমর ।

সেইত সাধনভক্তি দুই প্রকার ।  
 এক বৈদীভক্তি রাগানুগাভক্তি আর ।  
 রাগহীন জন্ম ভজে শাস্ত্রের আজ্ঞার ।  
 বৈদীভক্তি বলি তারে সর্কশাস্ত্রে গায় ॥ ৩৭

তথাহি শ্রীমত্ভাগবতে বিতীরক্বে প্রথমাধ্যায়ে  
 পঞ্চমলোকঃ—

তস্মাত্তরত সর্কাত্মা ভগবানীশ্বরো হরিঃ ।  
 শ্রোতব্যঃ কীর্তিতব্যশ্চ স্মর্তব্যশ্চৈতত্তরম্ ॥ ৫১ ॥

তস্মাৎ (হে) ভারত ! অতন্ন ইচ্ছতা (জনেন)  
 সর্কাত্মা ভগবান্ ঈশ্বরঃ হরিঃ শ্রোতব্যঃ কীর্তিতব্যঃ  
 চ স্মর্তব্যঃ চ ॥ ৫১ ॥

হে ভারত । মোক্ষার্থী ব্যক্তিগণ কর্তৃক সর্কাত্মা ভগবান্ ঈশ্বর হরিই শ্রোতব্য ; কীর্তিতব্য এবং স্মর্তব্য ॥ ৫১ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং ছাংশে অষ্টমমবসক-  
 শ্লোকধ্বতশ্রীমত্ভাগবতবচনধরম্—

মুখবাহুকপাদেভ্যঃ পুরুষস্যাত্মনৈঃ সহ ।  
 চক্ষুরো অজিরে বর্ণা ভগৈর্বিপ্রাদয়ঃ পৃথক ॥ ৫২  
 ষ এবাং পুরুষঃ সাকাদাত্মভববীশ্বরম্ ।  
 ন ভজন্ত্যবজানন্তি স্থানাদভ্রঃ পতন্ত্যথঃ ॥ ৫৩ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্দৌ পূৰ্ণবিভাগে  
 বিতীরলহর্যাং পঞ্চমাত্মত্বপন্নপূরণবচনম্—

স্মর্তব্যঃ সততং বিষ্ণুর্বিষ্মর্তব্যো ন কাচুচিং ।  
 সর্কে বিধিনিষেধাঃ স্ম্যরেতরোরেন বিহরঃ ॥ ৫৪ ॥

বিষ্ণুঃ সততং স্মর্তব্যঃ বিস্মর্তব্যঃ ন কাচুচিং,  
 সর্কে বিধিনিষেধাঃ একস্যাঃ (স্মর্তব্যাস্মর্তব্যরূপরোঃ  
 বিধিনিষেধরোঃ) এব বিহরঃ (অধীনঃ) স্ম্যঃ ॥ ৫৪ ॥

বিষ্ণুকে সর্করা স্মরণ করা কর্তব্য, কখন বিস্মৃত হওয়া উচিত নয় । বত বিধি ও নিষেধ পূর্বকই এই দুই বিধি নিষেধের সঙ্গীতে করা ॥

বিবিধাদ সাধনকর্ত্তি বহুত বিস্তার ।  
 সংক্ষেপে কহিয়ে কিছু সাধনাদ সার ॥৩॥  
 গুরুপাদাশ্রয়, দীক্ষা, গুরুর সেবন ।  
 সঙ্গসংগৃহা, সাধুগার্গানুগমন ।  
 কৃষ্ণপ্রীতে স্বেগভ্যাগ, কৃষ্ণতীর্থে বাস ।  
 যাবৎ নিরীহ প্রতিগ্রহ, একাদশ্যপবাগ ।  
 ধাত্রাঋণ-গো-বিপ্র-বৈষ্ণব-পূজন ।  
 সেবানামাপরাধাদি দূরে বিসর্জন ॥ ৩৯ ॥  
 অবৈষ্ণবসঙ্গ ভ্যাগ, বহু শিষ্য না করিবে ।  
 বহুগ্রহ কলাভ্যাগ, ব্যাখ্যান বর্জিবে ॥  
 হানি লাভ সম, শোকাদির বশ না হইবে ।  
 অশুদেব, অন্যশাস্ত্র নিন্দা না করিলে ॥  
 বিষ্ণু-বৈষ্ণব-নিন্দা গ্রাম্যবার্তা না শুনিবে ।  
 প্রাণিমাংসকেনোবাকোউষেগনাঃ দিবে ॥৪০॥  
 শ্রবণ, কীর্তন, স্মরণ, পূজন, বন্দন ।  
 পরিচর্যা, সখ্য, দাস্য, আজ্ঞানিবেদন ॥  
 অগ্রে নৃত্য, গীত, বিজ্ঞপ্তি, দণ্ডবসতি ।  
 অভ্যুপাসন, অমূত্রজ্যা, তীর্থ-গৃহে গতি ॥  
 পরিক্রমা, স্থবপাঠ, জপ, সংকীর্তন ।  
 ধূপ মালা গন্ধ মহাপ্রসাদ সেবন ॥ ৪১ ॥  
 আরাটিক, মহোৎসব, শ্রীমুক্তি দর্শন ।  
 নিজপ্রিয় দান ধ্যান, তদীয় সেবন ॥  
 তদীয় তুলসী, বৈষ্ণব, মনুসা, ভাসবত ।  
 এই চারি সেবা হয় কৃষ্ণ-অভিমত ॥  
 কৃষ্ণার্থে অখিল চেষ্টা, তৎকৃপাংলোকন ।  
 অশ্বিনিনাদি মহোৎসব, লক্ষা ভক্তগণ ॥৪২॥  
 সর্গধা শরণাপত্তি, কার্তিকাদি রত ।  
 চতুষষ্টি সঙ্গ এই পরম মহত্ত্ব ॥  
 সাধুসঙ্গ, নামকীর্তন, ভাসবত শ্রবণ ।  
 মনুসাবাস, শ্রীমুক্তের প্রকার সেবন ॥  
 সকল সাধন আর এই পঞ্চ-সঙ্গ ।  
 কৃষ্ণ-প্রসাদ করে এই পঞ্চের সঙ্গ পূর্ণ সঙ্গ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ পূর্ববিভাগে  
 দ্বিতীয়লহর্যাং ত্রিচোখারিণোদিক্রোচ্চাঃ—  
 শ্রদ্ধা বিশেষতঃ ক্রীতঃ শ্রীমুক্তেরজিন্দু-  
 সেবনে ।  
 শ্রীমন্তাগবতর্থাঃনামাখ্যানো রসিকৈঃ সহ ॥ ৫৫ ॥  
 সঙ্গাতীরাশয়ে দিচ্ছে সাধো সঙ্গঃ যতোবরে ।  
 নামসকীর্তনঃ শ্রীমন্তপুত্রামণ্ডলে হিতিঃ ॥ ৫৬ ॥  
 শ্রদ্ধাবিশেষতঃ ( বিশেষণ ) শ্রীমুক্তেরজিন্দু-  
 সেবনে ( শ্রীমুক্তঃ ভগবৎ-প্রতিমারঃ জিন্দু-  
 সেবনে ) ক্রীতঃ ( প্রিয়তাভিগমঃ ) রসিকৈঃ সহ  
 শ্রীমন্তাগবতর্থাঃনাম্ আখ্যানঃ । সঙ্গাতীরাশয়ে ( ব-  
 সমানবাসনে ) দিচ্ছে ( বেঁধপরে ) যতঃ ( যত্নাৎ )  
 বরে ( প্রেতে ) সাধো সঙ্গঃ নামসকীর্তনঃ শ্রীমন্তপুত্রা-  
 মণ্ডলে হিতিঃ ( বাগঃ ) ॥ ৫৫৫৬ ॥  
 শ্রদ্ধা পূর্বক শ্রীমুক্তিরচরণসেবনে  
 প্রীতি, রসিকনিকরের সহিত শ্রীমন্তাগ-  
 বতের অর্থ আখ্যান, বাঁহার অভিপ্রায়  
 আজ্ঞাসদৃশ এবং যিনি আপনা হইতে  
 উন্নত—ঈদৃশ স্নিহ্ব সাধুসঙ্গ নামসকী-  
 র্তন এবং মনুসামণ্ডলে হিতি ॥ ৫৫৫৬ ॥  
 তথাহি তটত্রব নবাবিকশততমাত্তমলোকঃ—  
 দুর্লভাত্তবীর্থেঅশ্বিন্ শ্রদ্ধা দুঃসহ পক্ষকে ।  
 বস বনোহপি সখ্যঃ সখিয়ার্ তাবদমনে ॥৫৭॥  
 দুর্লভাত্তবীর্থে অশ্বিন্ ( সাধুসখ্যাবিকে )  
 পক্ষকে ( অত্র পক্ষকে ) শ্রদ্ধা দুঃসহ পক্ষ, বস  
 ( পক্ষকে ) বসঃ ( অত্যন্তঃ ) সখ্যঃ ( প্রিয়দা-  
 র্শনঃ ) অপি সখিয়ার্ ( নিয়ন্ত্রণাধতিভানার্ ) ভাবঃ  
 কমনে ( ভাবস্য কমনে অভিযাকরে নববর্ধ  
 তবতি ) ॥ ৫৭ ॥  
 দুর্লভ অর্থাৎ অসুভ বীর্থাশালী শ্রীমুক্তি-  
 সেবনাদি যে এই পাঁচ প্রকার অঙ্গ,  
 তাহাতে অঙ্গা দূরে থাকুক অথুয়াজ সখ্য  
 থাকিলেও নিরাগরাধ ব্যক্তিরণের অন্তঃ-  
 করণে অতিরিক্ত ভাবের আবর্তিত হইয়া  
 থাকে ॥৫৭॥

এক অঙ্গ সাধে কেহো সাধে বহু অঙ্গ ।  
নিষ্ঠা হৈলে উপকার প্রেমের তরঙ্গ ॥৪৪॥  
এক অঙ্গে সিদ্ধি পাইল বহু ভক্তগণ ॥৪৫॥

তথাপি পড়াব্যাং তরুমাছায়ে দাকিণাত্য-  
শ্রীবিষ্ণুবক্তলোকঃ—

শ্রীবিষ্ণোঃ শ্রবণে পরীক্ষিতবদ্বৈরাসকিঃ কীর্তনে  
প্রহ্লাদঃ স্মরণে তদন্তিমু ভজনে লক্ষ্মীঃ পূজনে ।  
অক্রুরবন্দনে কপিপতির্দাসোহিব সখোহর্জুনঃ  
সর্কবান্ধনিবেদনে বলিরজুং কৃষ্ণাশুরেবাং পরম্ ॥৫৮

শ্রীবিষ্ণোঃ শ্রবণে পরীক্ষিত, কীর্তনে বৈরা-  
সকিঃ ( ভক্তঃ ) স্মরণে প্রহ্লাদঃ, তৎ-অন্তিমু ভজনে  
লক্ষ্মীঃ, পূজনে পূজুঃ, অতিবন্দনে অক্রুরঃ, দাস্যে  
কপিপতিঃ ( হনুমান্ ), অথ সখো অর্জুনঃ, সর্ক-  
বান্ধনিবেদনে বলিঃ, ( পরিনিষ্ঠিতঃ ) অজুং পরং  
( কেবলম্ ) এবাম্ ( একৈকাদশিত্য ) কৃষ্ণাশিঃ  
( কৃষ্ণপ্রাপ্তিঃ বহুব ) ॥ ৫৮ ॥

রাজা পরীক্ষিত শ্রবণে, শুকদেব  
কীর্তনে, প্রহ্লাদ স্মরণে, লক্ষ্মী পাদ-  
সেবনে, পুথুরাজা পূজনে, অক্রুর বন্দনে,  
হনুমান দাস্যে, অর্জুন সখে এবং  
বলিরাজা আশ্বনিবেদনে নিষ্ঠিত হইয়া  
ভগবৎপ্রেম লাভ করতঃ শ্রীভগবানকে  
পাইয়াছিলেন ॥ ৫৮ ॥

অশ্বরীবাণি ভক্তের বহু অঙ্গ সাধন ॥৪৬॥

তথাপি শ্রীমহাপরতে বনমুখে চতুর্থাধারে  
শ্রীমহাপরতে—

ন বৈ মনঃ কৃষ্ণপদারবিষ্ণো-  
র্ভোগসি বৈকুণ্ঠগুণানুভবনে ।  
করৌ হরেক্ষনিকরমাঙ্কনাদিমু  
ঐতিককারাচ্যুতসংকথোদরে ॥ ৫৯ ॥  
মুকুন্দলিলালয়দর্শনে দৃশৌ  
তদুভাগাত্রম্পর্শে অঙ্গসঙ্গম্ ।  
স্রাবক তৎপাদসরোজসৌরভে  
শ্রীমতু লন্যা রসনাং তদপিক ১-৩-১ ॥

পাদৌ হরঃ ক্রেত্রপদাঙ্গুসর্পণে  
শিরৌ হৃষীকেশপদাভিবন্দনে ।  
কামঞ্চ দাস্যে ন তু কামকামারা  
যথোক্তমঃশ্লোকজনপ্রয়া রতিঃ ॥ ৬০ ॥

সঃ ( অশ্বরীবাং ) কৃষ্ণপদারবিষ্ণোরঃ মনঃ,  
বৈকুণ্ঠগুণানুভবনে বচাংসি, হরঃ মন্দিরমাঙ্কনাদিমু  
করৌ, অচ্যুতসংকথোদরে ঐতিং ( জ্যোতঃ )  
চকার । মুকুন্দলিলালয়দর্শনে ( মুকুন্দত লিলালয়  
প্রতিমানাম্ আলয়ানাং মন্দিরপাঞ্চ দর্শনে ) দৃশৌ  
( নয়নৌ ) তদুভাগাত্রম্পর্শে অঙ্গসঙ্গমং, শ্রীমতু-  
লন্যাঃ ( শ্রীমত্যাঃ কুলন্যাঃ ) তৎপাদসরোজসৌরভে  
( তৎপাদ সরোজ সম্পর্কেণ যৎ সৌরভং তসিন্  
ভগবচ্চরণাশিত তুলসীগন্ধে ) স্রাণং চ, তদপিক্তে  
( মহাপ্রসাদয়ে ) রসনাং ( লিঙ্গবাং ) । হরঃ  
ক্রেত্রপদাঙ্গুসর্পণে পাদৌ, হৃষীকেশপদাভিবন্দনে  
শিরঃ, দাস্যে কামম্ ( অভিলাষং ), চ ন তু কাম-  
কামারা ( ভোগোচ্ছায়াং ) উক্তমঃশ্লোকজনপ্রয়া  
রতিঃ যথা ( যেনপ্রকারেণ অভবৎ ) ॥৫৯৬০৬১ ॥

মহারাজ অশ্বরীবা কৃষ্ণপাদপাঙ্গে মনঃ,  
শ্রীকৃষ্ণগুণানুভবনে বাগিঞ্জির, হরি-মন্দির-  
মাঙ্কনাদিতে করষয়, অচ্যুতের পবিত্র  
কথায় শ্রবণ, মুকুন্দ বিগ্রহ ও আলয়  
দর্শনে নেত্র, তদুভক্তের গাত্রম্পর্শে অঙ্গ-  
সঙ্গম, ভগবৎ-পাদপঙ্খ-সৌরভযুক্ত তুলসী-  
সৌরভে জ্ঞাপেঞ্জির, তদ্রিবেদিত অশ্বা-  
দির স্বাদগ্রহণে রসনাকে, ভগবৎ-ক্রেত্র-  
গমনে পাদদর এবং হৃষীকেশের চরণ-  
বন্দনে মস্তক নিযুক্ত করিয়াছিলেন ।  
অকৃচ্ছনাদি বিবর সেবাকে ভগবৎসনা-  
শ্রয়া রতি বেরূপে হয়, সেইরূপ করিয়া  
ভগবৎকান্তে ভৎপর করিয়াছিলেন, তাহাও  
ভগবৎ প্রসাদ স্বীকারার্থমাত্র হইয়াছিল,  
বিবরেঞ্জির হয় নাই ॥ ৫৯৬০৬১ ॥

কাম তাজি কুক ভঞ্জে শত্রু-সাজা মানি ।  
দেব ঋষি পিত্রাদিকের কভু নহে ঋণী ॥৪৭

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে পঞ্চমাধ্যায়ে  
একত্রিংশশ্লোকঃ—

দেবর্ষিকৃতান্তমূণাং পিতৃণাং

ন কিঙ্করো নারয়ণী চ রাজন ।

সর্কাস্থনা যঃ শরণং শরণাং

গতো মুকুন্দং পরিত্যজ্যঃ কর্তব্যং ॥ ৬২ ॥

(হে) রাজন! যঃ (জনঃ) কর্তব্যং (কৃত্যং  
ভেদং বা) পরিত্যজ্য সর্কাস্থনা শরণাং মুকুন্দং  
শরণং গত্যঃ, অয়ং দেবর্ষিকৃতান্তমূণাং পিতৃণাং ন  
কিঙ্করঃ ন ঋণী চ ॥ ৬২ ॥

যিনি কর্তব্য বা ভেদজ্ঞান ত্যাগ  
পূর্বক সর্কাতোভাবে শরণাগতপালক  
মুকুন্দের শরণাগত হয়েন, তিনি আর  
দেবতা, ঋষি, ভূত, পিতৃ বা কুটুম্বাদির  
নিকট ঋণী থাকেন না ॥ ৬২ ॥

বিধি-ধর্ম ছাড়ি ভঞ্জে কৃষ্ণের চরণ ।

নিষিদ্ধ পাপাচারে তার কভু নহে মন ॥

অজ্ঞানে বা যদি হয় পাপ উপস্থিত ।

কৃষ্ণতারে শুদ্ধকরে, নাকরায় প্রায়শ্চিত্ত ॥৪৮

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে পঞ্চমাধ্যায়ে  
চত্বারিংশশ্লোকঃ—

স্বপানমূলং ভক্ততঃ প্রিয়স্য

ভ্যক্তান্ততাবস্যা হরিঃ পরেশঃ ।

বিকর্ম যতোৎপত্তিতং কথঞ্চি-

কুনোতি সর্বং যদি সান্নিবিষ্টঃ ॥ ৬১ ॥

স্বপানমূলং ভক্ততঃ প্রিয়স্য ভ্যক্তান্ততাবস্যা  
(ভ্যক্তস্য) কথঞ্চিং যৎ চ বিকর্ম উৎপত্তিতং (ভবেৎ)  
যদি সান্নিবিষ্টঃ পরেশঃ হরিঃ তৎ (অপি) সর্বং  
কুনোতি ॥৬১॥

যাঁর পানমূল ভক্তনকারী প্রিয় স্বপ-  
নান্ততাবস্যা হরির কবির কোনসঙ্গে যে

কিছু নিষিদ্ধকর্ম উৎপত্তিত হয়, সে  
সকলও স্বপ্নে সান্নিবিষ্ট পরমেশ্বর হরির  
বিনষ্ট করিয়া থাকেন ॥ ৬১ ॥

জ্ঞান, বৈরাগ্য, ভক্তির কভু নহে অঙ্গ ॥৪৯

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে বিংশাধ্যায়ে  
একত্রিংশশ্লোকঃ—

তন্মান্নভক্তিযুক্তস্য যোগিনো বৈ মদাশ্বনঃ ।

ন জ্ঞানং ন চ বৈরাগ্যং প্রায়ঃ শ্রেয়ো ভবেদ্বিহী ॥৬৩

তন্মাৎ (ভক্তেঃ সর্কশ্রেষ্ঠত্বাৎ) বৈ মদভক্তি-  
যুক্তস্য মদাশ্বনঃ যোগিনঃ (ভক্তিযোগবিশিষ্টস্য)  
ইহ ন জ্ঞানং ন চ বৈরাগ্যং প্রায়ঃ শ্রেয়ঃ ভবেৎ ॥৬৩

জ্ঞান ও বৈরাগ্য অপেক্ষা ভক্তি-  
যোগের শ্রেষ্ঠতা হেতু আমাতে ভক্তি-  
যুক্ত এবং যাহার মন সর্কদা একমাত্র  
আমাতেই সংস্থিত তাদৃশ ভক্তিযোগযুক্ত  
ব্যক্তির ভক্তিই একমাত্র মঙ্গলপ্রদ হয়,  
কিন্তু কর্মতো দূরের কথা, জ্ঞান ও  
বৈরাগ্য প্রায়ই মঙ্গলপ্রদ হয় না ॥ ৬৩ ॥

অহিংসা যমনিয়মাди বলে কৃষ্ণভক্তসঙ্গ ॥৫০

তথাহি ভক্তিরসামুত্থিতম্ভো পূর্ববিভাগে বিতীর্ণ-  
লক্ষ্যং দ্ব্যধিকশততমোক্তত্বচনম্—

এতে ন হ্যহুতা ব্যাধ তবাহিংসারো গুণাঃ ।

হরিতক্তো প্রবৃত্তা বে ন তে হ্যঃ পরতাপিনঃ ॥৬৫॥

(হে) ব্যাধ! তব (হিংসার) এতে অহিংসারঃ  
গুণাঃ ন হি অহুতাঃ (যতো) বে (জনাতঃ) হরিতক্তো  
প্রবৃত্তাঃ তে পরতাপিনঃ ন হ্যঃ ॥ ৬৫ ॥

হে ব্যাধ! তোমার এই অহিংসাদি  
গুণ কদাচ অস্তিত্ব নহে, কারণ হরিতক্তি-  
প্রবৃত্ত ব্যক্তির স্বভাবতঃই পরতাপী  
হইতে ইচ্ছা করেন না ॥ ৬৫ ॥

বৈধিত্তিক সধিনের কহিল কিরণ ।

নাশাসুদা ভক্তির সঙ্গ কভু নহে মন ॥



রাগাঙ্গিকা ভক্তি মুখ্যা ব্রজবাসিন্ধবে ।  
ভার অনুগত ভক্তির রাগানুগী নামে ॥৫১

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্ধৌ পূর্ববিভাগে দ্বিতীয়-  
লহর্যাং একত্রিংশাদিকশততমাস্বধৃতবচনম্—

ইষ্টে স্বরসিকী রাগঃ পরমাবিষ্টতা ভবেৎ ।

তস্ময়ী বা ভবেৎভক্তিঃ সাত্ৰ রাগাঙ্কিকোদিতা ॥৬৬॥

ইষ্টে (বাছকুল্যবিধরে) স্বরসিকী (স্বাভাবিকী)  
পরমাবিষ্টতা (যা, সা) রাগঃ ভবেৎ । তস্ময়ী  
(ভবেৎপ্রেরিতা) বা ভক্তিঃ ভবেৎ অত্র সা রাগা-  
ঙ্কিকা উদিতা ( কথিতা ) ॥ ৬৬ ॥

অভীষ্ট বস্তুতে স্বাভাবিকী যে একটি  
প্রেমময়ী তুষা থাকে, তাহা হইতে একটি  
পরমাবিষ্টতা জন্মিয়া থাকে । যে প্রেম-  
ময়ী তুষা হইতে এই পরমাবিষ্টতা উৎ-  
পন্ন হয়, সেই প্রেমময়ী তুষার নাম রাগ ।  
রাগময়ী ভক্তির নাম রাগাঙ্কিকা ভক্তি ॥৬৫

ইষ্টে গাঢ় তুষা রাগ স্বরূপলক্ষণ ।

ইষ্টে আবিষ্টতা তটস্থলক্ষণ কথন ॥

রাগময়ী ভক্তির হয় রাগাঙ্কিকা নাম ।

তাহা শুনি লুক্ক হয় কোন ভাগ্যবান্ ॥

লোভে ব্রজবাসিভাবে করে অনুগতি ।

শাস্ত্রযুক্তিনাছিমানেরাগানুগারপ্রকৃতি ॥৫২

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্ধৌ পূর্ববিভাগে দ্বিতীয়-  
লহর্যাং একত্রিংশাদিকশততমাস্বধৃতবচনম্—

বিরাজস্তীমতিব্যক্তঃ ব্রজবাসিন্ধনাদিসু ।

রাগাঙ্কিকামহুস্ততা যা সা রাগাহুগোচাতে ॥৬৭

ব্রজবাসিন্ধনাদিব্ অতিব্যক্তঃ ( যথা স্তাত্থা )

বিরাজস্তীঃ । রাগাঙ্কিকাম্ অহুস্ততা বা সা রাগাহুগা  
উচ্যতে ॥ ৬৭ ॥

ব্রজবাসিন্ধবে পুস্পষ্টভাবে প্রকা-  
শিতা রাগাঙ্কিকা ভক্তির অনুগতা ভক্তি-  
কেই রাগানুগা ভক্তি বলে ॥ ৬৭ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্ধৌ পূর্ববিভাগে দ্বিতীয়-  
লহর্যাং সপ্তচষারিংশাদিকশততমাস্বধৃতবচনম্—

তত্তত্তাবাদিমাধুর্যে ঙ্গতে দীর্ঘরূপেভ্যে ।

নাত্ৰ শাস্ত্ৰং ন যুক্তিক তল্লোভোৎপত্তিলক্ষণম্ ॥৬৮॥

তত্তত্তাবাদিমাধুর্যে ( শ্রীভাগবতাদিসিদ্ধনির্দেশ-  
শাস্ত্রেসু ) ঙ্গতে ( শ্রবণধারা বৎকিঞ্চিৎ অহুভূতে  
সতি ) যৎ ( যন্ত ) ধীঃ ( যুক্তিঃ ) শাস্ত্ৰং ( বিধি-  
বাক্যং ) ন যুক্তিঃ চ ন অপেক্ষতে অত্র তৎ ( এব )  
লোভোৎপত্তিলক্ষণম্ ॥ ৬৮ ॥

শাস্ত্র ও যুক্তিকে কিছুমাত্র অপেক্ষা  
না করিয়া কেবল নন্দ যশোদাদির ভাব  
ও মাধুর্য্য শ্রবণ করিয়া যাহার অপেক্ষার  
বুদ্ধিবৃত্তি উন্মুখী হয়, পণ্ডিতেরা তাহা-  
কেই লোভোৎপত্তির লক্ষণ বলিয়া  
কীর্তন করেন ॥ ৬৮ ॥

বাহু আভ্যন্তর ইহার দুইত সাধন ।

বাহু সাধক-দেহে করে শ্রবণ কীর্তন ॥

মনে নিজ সিদ্ধদেহ করিয়া ভাবন ।

রাত্রিদিনে করে ব্রজে কৃষ্ণের সেবন ॥৬৯॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্ধৌ পূর্ববিভাগে  
দ্বিতীয়লহর্যাং পঞ্চাশদিকশততমাস্বধৃতবচনম্—

সেবা সাধকরূপেণ সিদ্ধরূপেণ চাত্ৰ হি ।

তস্তাবলিপ্সুনা কার্য্যা ব্রজলোকানুসারতঃ ॥৬৯॥

অত্র ( উপাসনারং ) তস্তাবলিপ্সুনা ( তৎ  
তন্ত ব্রজহস্ত নিভাতীষ্টত শ্রীকৃষ্ণপ্রেষ্ঠন্ত বঃ ভাবঃ  
রুতিবিশেষঃ তৎ লিপ্সুনা লোভমিচ্ছনা ) সাধক-  
রূপেণ ( যথাবস্থিতভবেন ) সিদ্ধরূপেণ ( অন্ত-  
শ্চিন্তিতাতীষ্টতৎসেবোপযোগিব্যেহেন ) চ ব্রজ-  
লোকানুসারতঃ ( শ্রীকৃষ্ণপ্রেষ্ঠননঃ তদনুসারতঃ )  
হি সেবা কার্য্যাঃ ( কর্তব্য্যঃ ) ॥ ৬৯ ॥

বাহু সাধকরূপে অর্থাৎ শরীরাদির  
চেষ্টা দ্বারা এবং অন্তরে সিদ্ধরূপে সর্বাং  
মনের দ্বারা শ্রীকৃষ্ণসেবার উপযোগি

নিজ সিদ্ধদেহ-ভাবনা করিয়া তৎপরি-  
করণে, অধিকারিগণ আশ্রয়ালয়নের  
গোপীর ভাব প্রার্থী হইয়া, তাঁহার প্রিয়-  
তম ভক্তগণের অনুসরণ পূর্বক ব্রজে  
শ্রীকৃষ্ণের সেবার রত হইবে ॥ ৬৯ ॥

নিজাভীষ্ট কৃষ্ণপ্রেষ্ঠ পাচতে লাগিয়া ।  
নিরন্তর সেবা করে অন্তর্মনা হঞা ॥৫৪॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্দৌ পূর্ববিভাগে  
দ্বিতীয়লহর্যাং একোনপঞ্চাশদধিকশততমাস্ত্যুত-  
বচনম্—

কৃষ্ণ স্মরন জনকান্ত প্রেষ্ঠং নিজসমীহিতম্ ।  
তত্তৎ কথারতশচাসৌ কুর্যাদ্যাসং ব্রজে সদা ॥ ৭০ ॥

প্রেষ্ঠং ( নিজভাবোচিতনীলাবিলাসিনং ) কৃষ্ণম্  
অন্ত ( কৃষ্ণস্ত ) নিজসমীহিতং ( স্বাভিলষনীয়ং )  
জনং চ স্মরন অসৌ ( সাধকঃ ) তত্তৎকথারতঃ  
( সন ) সদা ব্রজে বাসং কুর্য্যাৎ ( সাধকশরীরেণ,  
অসামর্থে মনসাপীতি ) ॥ ৭০ ॥

শ্রীকৃষ্ণকে এবং নিজসমীহিত তাঁহার  
প্রিয়তম ভক্তজনকে স্মরণ করতঃ, তত্তৎ  
কথায় অনুরক্ত হইয়া সমর্থ হইলে শরী-  
রাঙ্গি দ্বারা ব্রজধামাদিতে বাস করিবে,  
তদভাবে মানসিক বাস দ্বারা চরিতার্থতা  
লাভ করিবে ॥ ৭০ ॥

দাস সখা পিত্রাদি প্রেয়সীর গণ ।  
রাগমার্গে নিজ নিজ ভাবের গণন ॥৫৫॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে পঞ্চবিংশা-  
ধ্যায়ে সপ্তত্রিংশশ্লোকঃ—

ন কহিচ্চিন্নংপরাঃ শাস্তরূপে  
নজ্ঞান্তি নো রেহমিবিষো শেচি হেতিঃ ।

যেযাবৎ প্রিয় আত্মা হৃতস

সখা ভকঃ কৃষ্ণো বৈবসিতম্ ॥ ৫৫ ॥

শাস্তরূপে ( শাস্তম্ অবিকৃতং স্পৃগং বস্ত তবিন্  
বৈকুণ্ঠে ) নংপরাঃ ( ভবাসিনঃ লোকাঃ ) কহিচ্চি  
( কবাচিদপি ) ন নজ্ঞান্তি ( ভোগহীনাঃ ভবন্তি )  
অনিমিষঃ যে হেতি ( মদীয়ং কাশচক্রং ) ন শেচি  
( তান, ন এগতে ) যেযাম্ অহং প্রিয়ঃ আত্মা হৃতঃ  
সখা ভকঃ কৃষ্ণঃ বৈবসিতম্ ৫ ॥ ৭১ ॥

হে জননি ! আমি বাহাদের পতি,  
পুত্র, আত্মা, সখা, সুহৃৎ, গুরুজন এবং  
অভীষ্টদেব সেই আমার নিত্যধামবাসী  
একান্ত ভক্তগণের ভোগ্যবস্ত কখনই নষ্ট  
হয় না, এবং আমার কাশচক্রও তাহা-  
দিগকে গ্রাস করিতে পারে না ॥ ৭১ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্দৌ পূর্ববিভাগে  
দ্বিতীয়লহর্যাং দ্বিষষ্টিতমধিকশততমাস্ত্যুতবচনম্—  
পতিপুত্রসুহৃদ্বাত্রাপিতৃবন্দিভবকরিম্ ।

যে ধ্যায়ন্তি সনোদ্যুক্তান্তেভ্যোহপীহ নমোনমঃ ॥৭২॥

ইহ যে সদা উদ্যুক্তাঃ ( সন্তঃ ) হরিং পতিপুত্র  
সুহৃদ্বাত্রাপিতৃবৎ মিত্রবৎ ( চ ) ধ্যায়ন্তি তেভ্যঃ  
অপি নমঃ নমঃ ॥ ৭২ ॥

যাঁহার উদ্ভাসের, সহিত পতি, পুত্র,  
সুহৃৎ ভাতা, পিতা এবং মিত্রের ন্যায়  
শ্রীকৃষ্ণকে সর্বদা চিন্তা করেন, তাঁহা-  
দিগকে প্রণাম ॥ ৭২ ॥

এইমত যেই করে রাগানুগা ভক্তি ।

কৃষ্ণের চরণে তার উপক্রমে শ্রীতি ॥

শ্রীতাকুরে রতি, ভাব হয় দুই নাম ।

বাহা হৈতে বশ হয় শ্রীভগবান্ ॥

বাহা হৈতে পাইয়ে কৃষ্ণের প্রেমসেবন ॥

এইত কহিল অভিধেয়-বিবরণ ॥ ৫৬ ॥

অভিধেয়-ভক্তি এবে কহিল, সনাতন

সংস্করণে কহিল, বিস্তার না হইল ॥

অভিধের সাধনভক্তি শুনে সেই জন ।

শ্রীরূপ রঘুনাথ পদে যার আশ ।

অচিরাতে পায় সেই কৃষ্ণের চরণ ।

চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৫৭ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে অভিধেরভক্তিতত্ত্ববিচারো নামঃ

ষাণ্ডিক পরিচ্ছেদ ॥ ২২ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যস্বরূপশ্রীশ্রীমদলালপদারবিন্দসেব-বিনোদবিহারি-

গোপান্বিত কৃত্যধরবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত অভিধেরভক্তিতত্ত্ববিচার

নাম ষাণ্ডিক পরিচ্ছেদ ॥ ২২ ॥

## ত্রয়োবিংশ পরিচ্ছেদ ।

—

চিরাদনন্তং নিজগুণবিন্দুং

স্বপ্রেমনামামৃতমত্মাদারঃ ।

আপামরং যো বিত্ততার গৌরঃ

কৃষ্ণো জনেভ্যস্তমহং প্রপদ্যে ॥১

অত্মাদারঃ যঃ গৌরঃ চিরং অনন্তম্ ( অসম-  
পিতং ) নিজগুণবিন্দুং স্বপ্রেমনামামৃতম্ আপামরং  
জনেভ্যঃ বিত্ততার ( সঃ ) কৃষ্ণঃ ( যঃ গৌরঃ অভূৎ )  
তম্ অহং প্রপদ্যে ॥ ১ ॥

যে শ্রীকৃষ্ণ পরমোদার গৌররূপে  
বহুকাল ব্যাপিত অসমপিত অতি গুণ  
স্বীয় বিত্তরূপ প্রেমামৃত ও নামামৃত  
আপামর জনগণকে প্রদান করিয়া-  
ছিলেন ; তাঁহার আমি শরণাপন্ন হই ॥১॥

জয় জয় গৌরচন্দ্র জয় নিত্যানন্দ ।

জয়াদৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তরুদ ।

এবে শুন ভক্তিকল প্রেম প্রয়োজন ।

যাহার শ্রবণে হয় ভক্তিরসজ্ঞান ॥

কৃষ্ণে রতি গাঢ় হৈলে প্রেম অভিজান ।

কৃষ্ণভক্তিরসের সেই স্থায়ী ভাব নাম ॥১

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ পূর্ববিভাগে তৃতীয়-  
লহর্যাং প্রথমশ্লোকঃ—

শুদ্ধস্ববিশেষায়া প্রেমস্বর্গ্যাংতসাম্যভাক্ ।

কুচিভিচিন্তমাশ্বন্যাকুদনৌ ভাব উচ্যতে ॥২॥

শুদ্ধস্ববিশেষায়া ( কৃষ্ণস্বরূপশক্তিরূপঃ

শুদ্ধস্ববিশেষঃ যঃ স এব আত্মা তন্নিগ্রহপ্রিয়-  
জনাধিষ্ঠানকতয়া নিত্যসিদ্ধং স্বরূপং বস্তু সঃ )  
প্রেমস্বর্গ্যাংতসাম্যভাক্ ( প্রেমাস্বরূপঃ স্বর্গ্যঃ  
তত্র অচিরং উদয়িষ্যমাণাবস্থো গৃহতে, ততশ্চ  
তদংতসাম্যভাক্ ইতি । প্রেমঃ প্রথমচ্ছবিরূপ  
ইত্যর্থঃ ) কুচিভিঃ ( প্রাপ্ত্যভিলাষ-সকর্তৃকাঙ্-  
কুল্যাভিলাষ-সৌহার্দ্যভিলাষৈঃ ) চিন্তমাশ্বন্যকুৎ  
( চিন্তাত্র্যাকুৎ ) অনৌ ( ভক্তিবিশেষঃ ) ভাবঃ  
উচ্যতে ॥ ২ ॥

শুদ্ধস্ববিশেষস্বরূপ, প্রেমরূপ সূর্যের  
কিরণ সাত্বশশালী এবং কুচি অর্থাৎ  
ভগবৎ প্রাপ্ত্যভিলাষ, তদীয় আশুকুল্যা-  
ভিলাষ ও সৌহার্দ্যভিলাষ দ্বারা চিন্তের  
সিদ্ধতা সম্পাদক যে ভক্তিবিশেষ তাহার  
নাম ভাব ॥ ২ ॥

এই দুই ভাবের; স্বরূপতটস্থলক্ষণ ।  
প্রেমার লক্ষণ এবে শুন সনাতন ॥২॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্ধৌ পূর্ববিভাগে চতুর্থ-  
লহর্যাং প্রথমশ্লোকঃ—

সম্যঙ্ মন্থনিতবাস্তো অমত্মাতিশয়াঙ্কিতঃ ।  
ভাবঃ স এব সাক্ষাত্মা বৃধৈঃ প্রেমা নিগন্ততে ॥৩॥

সম্যঙ্ মন্থনিতবাস্তঃ ( সম্যক্ নিশ্চলাপুচিত্তঃ  
বৃতঃ ) অমত্মাতিশয়াঙ্কিতঃ ( অমত্মাতিশয়যুক্তঃ ) সঃ  
ভাবঃ সাক্ষাত্মা এব বৃধৈঃ ( তৎ ) প্রেমা নিগন্ততে  
( কথ্যতে ) ॥ ৩ ॥

যাহা হইতে চিত্ত সম্যকরূপে আর্জতা  
প্রাপ্ত হয় এবং সাত্বিশয় মমতা সম্পন্ন  
হয়, সেই গাঢ়তা প্রাপ্ত ভাবকে প্রেম  
বলে ॥ ৩ ॥

তথাহি হরিত্তিকিবিলাসে একাদশবিলাসে  
দ্ব্যনীতিতমাদিকশততমাক্ষুতনারদপঞ্চরাত্রবচনম্—

অনন্তমমতা বিক্ষৌ মমতা পেমসমতা ।  
ভক্তিরিত্যুচ্যতে ভীমপ্রহ্লাদোদ্ধবনারদৈঃ ॥৪॥

বিক্ষৌ ( ভগবতি ) প্রেমসমতা ( প্রেমরস-  
ব্যাপ্তা ) অনন্তমমতা ( যা ) মমতা ( মমায়মিতি-  
ভাবঃ ) ভীমপ্রহ্লাদোদ্ধবনারদৈঃ ( সা প্রেমলক্ষণা )  
ভক্তিঃ উচ্যতে ॥ ৪ ॥

শ্রীকৃষ্ণে অন্যবিষয়ক মমতারহিত  
প্রেমরসব্যাপ্তা মমতা হইলে, ভীম,  
প্রহ্লাদ, উদ্ধব ও নারদ প্রভৃতি সেই  
মমতাকে প্রেমভক্তি বলেন ॥ ৪ ॥

কোন ভাগ্যে কোন জীবের শ্রদ্ধা যদি হয়।  
তবে সেই জীব সাধুসঙ্গ করয় ॥

সাধুসঙ্গ হইতে হয় শ্রবণ কীর্তন ।

সাধন ভক্ত্যে হয় সর্ব অনর্থ নিবর্জন ॥৩॥

অনর্থ নিবৃত্তি হৈতে ভক্ত্যে নিষ্ঠা হয় ।

নিষ্ঠা হইতে শ্রবণাদ্যে রুচি উপভব ॥৪॥

রুচি হইতে হয় তবে আসক্তি প্রচুর ।  
আসক্তিহইতে চিত্তে জগ্নে কৃষ্ণে প্রীত্যাচুর ॥  
সেই ভাব গাঢ় হইলে ধরে প্রেম নাম ।  
সেই প্রেম প্রয়োজন সর্দানন্দ ধাম ॥৫॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্ধৌ পূর্ববিভাগে চতুর্থ-  
লহর্যাং একাদশশ্লোকঃ—

আদৌ শ্রদ্ধা ততঃ সাধুসঙ্গোহথ ভজনক্রিয়া ।  
ততোহনর্থনিবৃত্তিঃ স্ত্রাৎ ততো নিষ্ঠা রুচিস্ততঃ ॥৫॥  
অথাসক্তিস্ততো ভাবস্ততঃ প্রেমাভ্যাসক্তি ।  
সাধকানাময়ঃ প্রেমঃ প্রাহুর্ভাবে ভবেৎক্রমঃ ॥৬॥

আদৌ ( প্রথমসাধুসঙ্গে শাস্ত্রশ্রবণ দ্বারা ) শ্রদ্ধা  
( বিশ্বাসঃ ) ততঃ সাধুসঙ্গঃ ( ভজনরীতিশিক্ষা-  
নিবন্ধনঃ ) অথ ভজনক্রিয়া ততঃ অনর্থনিবৃত্তিঃ  
স্ত্রাৎ ততঃ নিষ্ঠা ( অবিকল্পেণ সাতত্যং ) ততঃ  
রুচিঃ ( অভিলাষঃ ) অথ আসক্তিঃ ততঃ ভাবঃ  
ততঃ প্রেমা অভ্যাসক্তি । সাধকানাং প্রেমঃ  
প্রাহুর্ভাবে অয়ঃ ক্রমঃ ভবেৎ ॥ ৫ ॥

প্রথমে শ্রদ্ধা, তৎপরে সাধুসঙ্গ,  
তদন্তর ভজনক্রিয়া, তাহার পর অনর্থ-  
নিবৃত্তি, তৎপরে নিষ্ঠা, তদন্তর রুচি,  
তৎপরে ভাব, তাহার পর প্রেমের উদয়  
হয় । সাধকগণের প্রেমাভিভাবে ইহাই  
প্রায়িক ক্রম ॥ ৫ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং প্রথমে ত্রিংশদশ্লোকস্তঃ  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

সতাং প্রসঙ্গায়ম বীর্যসংবিনো  
ভবন্তি স্বংকর্ণরসায়নাঃ কথাঃ ।  
তজ্জ্ঞাষণাদাধপবর্গবন্মানি  
শ্রদ্ধা রতিভক্তি রহুকমিবাতি ॥ ৭ ॥

যাহার হৃদয়ে এই ভাবাকুর হয় ।

তাহাতে এতেক চিহ্ন শাস্ত্রে এই কর ॥৬॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্ধৌ পূর্ববিভাগে তৃতীয়-  
লহর্যাং একাদশশ্লোকঃ—

কান্তিরবার্ণকালতঃ বিরক্তিশূন্যশুভতা ।  
 আশাবন্ধঃ সমুৎকর্থা নামগানে সদা রুচিঃ ॥৮ ॥  
 আসক্তিস্তদ্বৎগুণাখ্যানে শ্রীতিতত্ত্ববসতিস্থলে ।  
 ইত্যাদিমোহহুতাভাঃ স্বাধীকৃতভাবাকুরে জনে ॥৯ ॥

কান্তি, অবার্ণকালতা, বিরাগ ও  
 মানশূন্যতা, আশাবন্ধ, সমুৎকর্থা, নাম-  
 গানে সদা রুচি, ভগবদ্গুণাখ্যানে  
 আসক্তি ও তাঁহার বসতি স্থলে শ্রীতি  
 ইত্যাদি অনুভাবঃ যে সকল ব্যক্তিতে  
 ভাবের অকুর মাত্র জন্মিয়াছে, সেই সকল  
 মহাত্মাতে ইহা লক্ষিত হইয়া থাকে ॥৮।৯॥  
 এই নব শ্রীতাকুর যার চিত্তে হয় ।

প্রাকৃত ক্ষোভেতে তার ক্ষোভ নাহি হয় ॥৭

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমস্কন্ধে উনবিংশাধ্যায়ে  
 পঞ্চদশশ্লোকঃ—

তং যোগবাতং প্রতিবৃত্ত বিপ্রা  
 গঙ্গা চ দেবী ধৃতচিন্তনীশে ।  
 বিজ্ঞোপস্থঃ কুহকস্তককো বা  
 নশবলং গায়ত বিষ্ণুগাথাঃ ॥ ১০ ॥

(হে) বিপ্রাঃ । (ভবন্তঃ) দেবী গঙ্গা চ  
 দেশে ধৃতচিন্তং তং বা (মান্) উপবাতং (শরণা-  
 গতং) প্রতিবৃত্তং (জানন্ত) বিজ্ঞোপস্থঃ (বিজ্ঞে-  
 রিতঃ) কুহকঃ তককঃ বা অলং নশত্, বিষ্ণুগাথাঃ  
 গায়ত ॥ ১০ ॥

হে বিপ্রগণ । শ্রীভগবানে চিন্তধারণ  
 করিয়াছি ; অতএব আপনারা এবং  
 গঙ্গাদেবী আমাকে শরণাগত বলিয়া  
 জানুন এবং অর্চনা করুন । বিপ্র  
 যোগিত কুহক হউক বা তকক হউক

সে আমাকে দংশন করুক । আপনারা  
 বিষ্ণু গাথা গান করুন ॥ ১০ ॥

কুরুর সম্বন্ধ বিনে ব্যর্থ কাল নাহি যায় ॥  
 তথাহি হরিতক্তিশ্রুতধোরে দ্বাদশাধ্যায়ে সপ্ত-  
 ত্রিংশশ্লোকঃ—

বাগ্ভিত্তবস্তো মনসা শ্রবন্ত-  
 ত্ববা নমস্তোহপানিশং ন তুষ্টাঃ ।  
 তক্তাঃ শ্রবয়েজ্জলাঃ সমগ্র-  
 মায়ুর্হরেরেব সমর্পয়ন্তি ॥১১ ॥

তক্তাঃ অনিশং বাগ্ভিত্তবস্তঃ মনসা শ্রবন্তঃ  
 ত্ববা নমস্তঃ অপি ন তুষ্টাঃ । শ্রবয়েজ্জলাঃ (সন্তঃ)  
 সমগ্রম্ আয়ুঃ (কালং) হরেঃ এব সমর্পয়ন্তি ॥১১ ॥

ভক্তজন নিরন্তর বাক্য দ্বারা স্তব,  
 মনোমধ্যে শ্রবণ ও শরীর দ্বারা প্রণাম  
 করিয়া তুষ্ট না হওতঃ অশ্রু পুরঃসর সমস্ত  
 পরমায়ু শ্রীহরিতেই সমর্পণ করিয়া  
 থাকেন অর্থাৎ যাবজ্জীবন হরিসেবাতেই  
 তৎপর হয়েন ॥ ১১ ॥

ভুক্তি সিদ্ধি ইন্দ্রিয়ার্থ তাহে নাহি ভায় ॥৯

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে পঞ্চমস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে  
 ত্রিচত্বারিংশশ্লোকঃ—

যো হৃত্যজান্ দারহৃতান্ হৃদহরাজ্যং হৃদিশ্পৃশঃ ।  
 অহৌ যুবেব মল্লবহৃতমঃশ্লোকলাসঃ ॥ ১২ ॥  
 যঃ (ভরতঃ) উত্তমঃশ্লোকলাসঃ (সন্)  
 হৃদিশ্পৃশঃ (মনোজান্) হৃত্যজান্ হৃদহরাজ্যং  
 দারহৃতান্ (চ) যুবেব মল্লবৎ অহৌ ॥ ১২ ॥

মহারাজ ভরত ভগবৎ-প্রাপ্তাভিলাষী  
 হইয়া মনোজ্ঞ ও হৃত্যজ শ্রী, পুত্র, হৃদৎ  
 ও রাজ্যাদি যৌবনাপ্যভেই মল্লবৎ ত্যাগ  
 করিয়াছিলেন ॥ ১২ ॥

মল্লবৎ আশ্রয়কে ছাড় করি গায়েন ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ পূর্ববিভাগে তৃতীয়  
লহর্যাং পঞ্চদশাঙ্কধৃতপাদবচনম্—

হরৌ রতিং বহুশ্চৈব সত্বেজ্যাম্মৈ শিখামণিঃ ।  
ভিক্কাবট্টনরিপুংরে খপাকমপি বন্দতে ॥ ১৩ ॥

নরেন্দ্রানাং শিখামণিঃ এবঃ ( সম্রাড্ ) হরৌ  
রতিং বহু ( গন ) অরিপুং ভিক্কা অটন্ খপাকং  
( চণ্ডালবিশেষম্ ) অপি বন্দতে ॥ ১৩ ॥

ভূপতিগণের শিখামণিরূপ এই  
মহারাজ শ্রীকৃষ্ণে একান্তরতি লাভ করতঃ  
ভিক্কা নিমিত্ত শক্রগৃহে গমন করিতেন  
ও চণ্ডাল পর্যন্ত নীচ জাতিতেও প্রণত  
হইতেন ॥ ১৩ ॥

কৃষ্ণ রূপা করিবেন দৃঢ় করি জানে ॥ ১১ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ পূর্ববিভাগে তৃতীয়  
লহর্যাং ষোড়শাঙ্কধৃতপ্রভৃপাদভোক্তিঃ—

ন প্রেমা শ্রবণাদিভক্তিরাপি বা যোগোহথবা বৈষ্ণবো  
জ্ঞানং বা শুভকর্ম বা কিয়দহো সজ্জাতিরপ্যন্তি বা ।  
হীনার্থাদিহিকসাধকে ষরি তথাপ্যচ্ছেত্তমুলা সতী  
হে গোপীজনবল্লভ ব্যথরতে হা হা মদাটৈশব নাম্ ॥ ১৪ ॥

প্রেমা বা ( ভক্তেতুঃ ) শ্রবণাদিভক্তিঃ অপি  
অথবা যোগঃ বৈষ্ণবঃ ( বিষ্ণুধ্যানমরমং ) জ্ঞানং  
( ব্রহ্মনিষ্ঠং ) বা শুভকর্মঃ ( বর্ণাশ্রমচারাদিঙ্গণং )  
বা অহো কিয়ং সজ্জাতিঃ ( তৎযোগ্যতারেতুঃ )  
অপি বা নু অস্তি ( অতএব ) হে গোপীজনবল্লভ ।  
তথাপি হীনার্থাদিহিকসাধকে ষরি অচ্ছেত্তমুলা সতী  
হা হা নং ( মম ) আশা মাং ব্যথরতে ॥ ১৪ ॥

আমার প্রেম নাই এবং প্রেমের কারণ  
যে শ্রবণাদি সাধনভক্তি তাহাও নাই,  
ধ্যানধ্যানগাদি বৈষ্ণবযোগেরও অনুষ্ঠান  
নাই এবং জ্ঞান বা কোন শুভ কর্মেরও  
অনুষ্ঠান করি নাই, অধিক কি বলিব,  
সাত্বিক হইলেও বন্দ্যতা তাহাও নাই ।

অতএ হে গোপীজন বল্লভ । তোমাতে  
যে আমার (পাইব বলিরা) নিরন্তর আশা  
সেই আশাকে ব্যথিত করিতেছে ॥ ১৪ ॥  
সমুৎকণ্ঠা হয় সদা লালসা প্রাধান ॥ ১২ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং দ্বিতীয়ে নবমশ্লোকধৃতঃ  
কৃষ্ণকর্ণামৃতবচনম্—

ত্বচ্ছৈশবং ত্রিভুবনাত্মমিত্যবেহি  
মজাপলঞ্চ মম বা তব বাবিগম্যাম্ ।  
তং কিং করোমি বিরলং মুরলীবিলাসি  
মুগ্ধং মুখামুজমুদীক্ষিতুমীক্ষণাত্ম্যাম্ ॥ ১৫ ॥

নাম গানে সদা রুচি লয় কৃষ্ণনাম ॥ ১৩ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ পূর্ববিভাগে তৃতীয়  
লহর্যাং অষ্টাদশশ্লোকঃ—

রোদনবিন্দুমকরনন্দিন্দুগিন্দীবরাদ্য গোবিন্দ ।  
তব মধুরশ্বরকণ্ঠী গায়তি নামাবলীং বালা ॥ ১৬ ॥

( হে ) গোবিন্দ ! অদ্য রোদনবিন্দুমকরন-  
ন্দিন্দুগিন্দীবরা ( রোদন বিন্দবঃ এব মকরন্দাঃ জে  
শ্রুদন্তঃ ) দুর্গলিন্দিবরাত্যাং বশাঃ সা ) মধুরশ্বরকণ্ঠী  
বালা তব নামাবলীং গায়তি ॥ ১৬ ॥

হে গোবিন্দ ! অদ্য নয়নধূগলে  
অশ্রুজলে অভিবিক্তা রাধা তোমার  
নামাবলী গান করিতেছেন ॥ ১৬ ॥

কৃষ্ণগুণাখ্যানে হয় সর্বদা আসক্তি ॥ ১৫ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং একবিংশে দ্বাবিংশশ্লোক-  
ধৃতকৃষ্ণকর্ণামৃতবচনম্—

মধুরং মধুরং বপুরত বিতো-  
নধুরং মধুরং বদনং মধুরম্ ।  
মধুগন্ধি মুহসিতবেতদ্বহো  
মধুরং মধুরং মধুরং মধুরম্ ॥ ১৭ ॥

কৃষ্ণ-লীলা-স্থানে করে সর্বদা বসতি ॥ ১৫ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ পূর্ববিভাগে দ্বিতীয়  
লহর্যাং পঞ্চদশাঙ্কধৃতপাদবচনম্—

কদাছং যমুনাভীরে নামানি তব কীর্তয়ন্ ।  
উৎপাৎ পুণ্ডরীকাক রচয়িষ্যামি তাণ্ডবম্ ॥১৮॥  
(হে) পুণ্ডরীকাক ! কদা অহং ভব নামানি  
কীর্তয়ন্ উৎপাৎ : ( সন্ ) তাণ্ডবং ( নৃত্যং ) রচয়ি-  
ষ্যামি ॥ ১৮ ॥

হে পুণ্ডরীকাক ! কবে আমি যমুনা-  
ভীরে তোমার নামসকল কীর্তন করিতে  
করিতে সজ্জননয়নে নৃত্য আরম্ভ  
করিব ॥ ১৮ ॥

ক্লেশে রতি-চিহ্ন এই কৈল বিররণ ।  
ক্লেশপ্রেমের চিহ্ন এবে শুন সনাতন ॥  
যার চিত্তে ক্লেশপ্রেমা করয়ে উদয় ।  
তার বাক্য ক্রিয়া মুদ্রা বিজ্ঞে না বুঝয় ॥১৯॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ পূর্ববিভাগে চতুর্থ-  
লহরীয়াং ষাটশ্লোকঃ—

ধন্যস্তায়ং নবপ্রেমা যস্তোন্নীলতি চেতসি ।  
অন্তর্বাণিতরপাত্ত মুদ্রা সূহৃৎ সূহৃগমা ॥ ১৯ ॥

বস্ত ধন্যস্ত ( জনস্ত ) চেতসি নবপ্রেমা উন্নী-  
লতি ( উদয়তি ) অন্ত মুদ্রা অন্তর্বাণিতিঃ ( শাস্ত্র-  
বিভিঃ ) অপি সূহৃৎ সূহৃগমা ( বোদ্ধুম্ অশক্যা ) ॥১৯॥

যে ধন্যজনের চিত্তে এই নবীন  
প্রেমার উদয় হয়, তাহার বাক্যাদির  
পরিপাটী শাস্ত্রজ্ঞেরাও বুঝিতে পারে  
না ॥ ১৯ ॥

তথাহি আদিলীনারাং সপ্তমে চতুর্থশ্লোকধৃত-  
শ্রীমত্যাগবতবচনম্—

এবং ব্রতঃ ষপ্রিয়নামকীর্তা  
আতাহরোগো ক্রমচিহ্ন উচৈঃ ।  
হমভ্যাথো যোদিতি যৌতি পায়-  
ছাস্মাদবক্ ততি শোকবাহঃ ॥ ২০ ॥

প্রেমা ক্রমে বাঢ়ি হয় স্নেহ, মান, প্রণয় ।  
রোগ, অনুরাগ, ভাব, মহাভাব হয় ॥

যেছে বীজ ইক্ষুরস শুড় খণ্ডসার ।  
শর্করা সিতা মিশ্রি শুক্রমিশ্রি আর ॥১৭॥  
ইহা যেছে ক্রমে নির্মল, ক্রমে বাঢ়ে স্বাদ  
রতি প্রেমাদি তৈছে বাঢ়য়ে আশ্বাদ ॥১৮॥  
অধিকারি-ভেদে রতি পঞ্চপ্রকার ॥

শাস্ত, দাস্ত, সখ্য, বাৎসল্য, মধুর আর ॥  
এই পঞ্চ স্থায়ীভাব হয় পঞ্চ রস ॥  
যেই রসে ভক্ত সুখী, ক্লেশ হয় বশ ॥ ১৯ ॥

প্রেমাদিক স্থায়ীভাব সাগরী মিলনে ।  
ক্লেশভক্তি রসরূপে পায় পরিণামে ॥  
বিভাব, অনুভাব, সাত্বিক, ব্যভিচারী ।  
স্থায়ীভাব রস হয় মিলে এই চারি ॥২০॥  
দপি যেন খণ্ড মরিচ কপূর মিলনে ।  
রসালাখ্য রস হয় অপূর্ব আশ্বাদনে ॥

দ্বিবিধ বিভাব আলম্বন উদ্দীপন ।  
বংশীশ্বরাদি উদ্দীপন ক্লেশাদি আলম্বন ॥২১॥  
অনুভাব, শ্লিত, নৃত্য, গীতাদি উদ্দাম্বর ।  
সুস্বাদি সাত্বিক অনুভাবের ভিতর ॥  
নির্কেদ হর্ষাদি তেত্রিশ ব্যভিচারী ।

সব মেলি রস হয় চমৎকারকারী ॥ ২২ ॥  
পঞ্চবিধ রস শাস্ত, দাস্ত, সখ্য বাৎসল্য ।  
মধুররস শৃঙ্গার নাম সবাত্তে প্রাবল্য ॥  
শাস্তরসে শাস্তরতি প্রেমপর্যন্ত হয় ।  
দাস্তরতি রাগপর্যন্ত ক্রমেতে বাঢ়য় ॥২৩॥

সখ্য বাৎসল্য রস পায় অনুরাগ সীমা ।  
সুবলাদ্যের ভাব পর্যন্ত প্রেমের মহিমা ॥  
শাস্তাদি রসের যোগ, বিরোগ দুই ভেদ ।  
সখ্য, বাৎসল্যযোগাদির অনেকবিভেদ ॥২৪॥  
রুচ অধিকৃৎ ভাব কেবল মধুরে ।

মহিবীগণেরুচ, অধিকৃৎগোপিকানিকরে ॥  
অধিকৃৎ মহাভাব দুইত প্রকার ॥  
সন্তোষে মোদনবিহ্নে মোদনসীমাতার ॥

মাদকৌচুৰ্ণাদি কুর অনন্ত বিভেদ।  
 উদ্ঘূর্ণা চিত্রকল্প মোহনে হুই ভেদ ॥২৭॥  
 চিত্রকল্প দশ অঙ্গ প্রকল্পাদি নাম।  
 ভ্রমরগীতার দশলোক জাহাতে প্রমাণ ॥২৮॥  
 উদ্ঘূর্ণা বিবশ চেষ্টা দিব্যোন্মাদ নাম।  
 বিরহে কৃষ্ণকৃষ্টি আপনাকে কৃষ্ণজ্ঞান ॥২৯॥  
 সন্তোঙ্গী বিশ্লক্স্ত দ্বিবিধ শৃঙ্গার।  
 সন্তোঙ্গ অনন্ত অঙ্গ নাহি অন্ত তার ॥  
 বিশ্লক্স্ত চতুর্বিধ পূর্নরাগ মান।  
 প্রবাসাখ্য আর প্রেমবৈচিত্র্য আখ্যান ॥  
 রাধিকাদো পূর্নরাগ প্রসিক্ত প্রবাস গানে  
 প্রেমবৈচিত্র্য শ্রীদশমে মহিবীর্ণণে ॥৩০॥

তথাহি শ্রীমত্তাগবতে দশমস্কন্ধে নবতিতমাধ্যায়ে  
 সপ্তমশ্লোকঃ—  
 কুররি বিলপসি তং বীতনিদ্রা ন শেবে  
 স্বপিত্তি জগতি রাজ্যানীশ্বরো গুপ্তবোধঃ।  
 বয়মিব পাতকচ্চিত্গাঢ়নির্কিঙ্কচেতা  
 নলিননয়নহাসোবারণীলোকিতেন ॥ ২১ ॥

(হে) কুররি! জগতি স্বপ্ন (এব একা)  
 বীতনিদ্রা (সতী) ন শেবে (শয়নেচ্ছাম্ অপি ন  
 কুরুষ্যঃ যতঃ) বিলপসি (উচ্চৈঃ পরিবেদনামেব  
 কুরুষে) দৈবরঃ (শ্রীকৃষ্ণঃ অস্মাকং পতিস্ত) রাজ্যং  
 (তদধেষণশক্তিবিরোধিন্যাং) গুপ্তবোধঃ (কুত্রাপি  
 আচ্ছন্নঃ সন্) শেতে। (হে) সখি! কচিং  
 নলিননয়নহাসোবারণীলোকিতেন (নলিননয়ন্ত  
 হাসেন সহিতম্ উদারণং যং লীলেক্তং তেন)  
 বয়ম্ ইব গাঢ়নির্কিঙ্কচেতা (গাঢ়ম্ অতিশয়েন  
 নির্কিঙ্কচেতা) ॥ ২১ ॥

হে কুররি! এই জগতে তুমিই একা-  
 কিনি নিদ্রাশূন্য হইয়া শয়নের ইচ্ছাও  
 করিতেছ না, যেহেতু উচ্চৈঃস্বরে বিলাপ  
 করিতেছ। আমরাও পতি শ্রীকৃষ্ণ

স্থানে প্রকল্পভাবে শিলা বাইতেছেন।  
 হে সখি! বোধ করি, সত্যস্ত কটাক্ষ-  
 দ্বারা আমাদের ন্যায় তুমিও আকর্ষিত  
 চিত্তা হইয়াছ ॥ ২১ ॥

ব্রজেন্দ্রনন্দন কৃষ্ণ নায়কশিরোমণি।  
 নায়িকার শিরোমণি রাধাঠাকুরাণি ॥৩১॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ দক্ষিণবিভাগে  
 প্রথমলহর্যাং সপ্তমশ্লোকঃ—  
 নায়কানাং শিরোরত্নং কৃষ্ণস্ত ভগবান্ স্বয়ম্।  
 যত্র নিত্যতরা সর্কৈ বিরাজন্তে মহাগুণাঃ ॥ ২২ ॥

নায়কানাং (মধ্যে) স্বয়ং ভগবান্ কৃষ্ণঃ তু  
 শিরোরত্নং যত্র (যস্মিন্ শ্রীকৃষ্ণে) সর্কৈ মহাগুণাঃ  
 নিত্যতরা বিরাজন্তে ॥ ২২ ॥

স্বয়ং ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ নায়কের চূড়া-  
 মণি। যাহাতে সর্কবিধ মহাগুণশাশি  
 নিত্যরূপে বিরাজ করিতেছে ॥ ২২ ॥

তথাহি আদিলীল্যাং চতুর্থে ত্রয়োদশশ্লোকধ্বং  
 গোতবীষতন্ত্রবচনম্—  
 দেবী কৃষ্ণময়ী প্রোক্তা রাধিকা পরদেবতা।  
 সর্কণস্মীময়ী সর্ককান্তিঃ সন্মোহিনী পরা ॥ ২৩ ॥

অনন্ত কৃষ্ণের গুণ চৌষষ্টি প্রধান।  
 এক এক গুণ শুনি জুড়ায় ভক্তকাণ ॥২৪॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিকৌ দক্ষিণবিভাগে  
 প্রথমলহর্যাং একাদশাধিকারোঃ—

অয়ং নেতা সুরম্যাকঃ সর্কগল্পকথাধিতঃ।  
 কচিরন্তেজসা যুক্তো বলীমান্ বরসাধিতঃ ॥ ২৫ ॥  
 বিবিধাকৃতভাবাবিৎ সত্যবাক্ প্রিয়ধনঃ।  
 বাব্দকঃ স্পাগিত্যো বুদ্ধিমান্ প্রতিভাধিতঃ ॥ ২৬ ॥  
 বিদগ্ধশক্তুরো দক্ষঃ কৃতকঃ সুরভেদকঃ।

বেশকালতপাভ্রকঃ শাস্ত্রকুঃ গুণিকশী ॥ ২৭ ॥  
 দ্বিত্তো দ্বাভ্যঃ কশাশীলো বসীকো বৃত্তিমান্ সখিঃ।  
 বসীকো বসীকঃ পরা কবিরো নায়কঃ স্বয়ম্ ॥ ২৮ ॥



ধর্মিণো বিনয়ী হ্রীমান্ শরণাগতপালকঃ ।

সুখী ভক্তসুহৃৎ প্রেমবন্তঃ সর্বভক্তধরঃ ॥ ২৮ ॥

প্রতাপী কীর্ত্তিমান্ রক্তলোকঃ সাধুসমাশ্রয়ঃ ।

নারীগণমনোহারী সর্কারাধাঃ সমুদ্ভিমান্ ॥ ২৯ ॥

বয়ীমানীশ্বরচেতি গুণান্ততামুর্কীর্তিতাঃ ।

সমুদ্রা ইব পকাশদুর্বিগাহা হরেরমী ॥ ৩০ ॥

হরঃ ( শ্রীকৃষ্ণ ) অয়ং নেতা সুরম্যাজঃ সর্ব-

সম্পন্নাবিতঃ ( প্রভুতয়ঃ ) তন্ত অমুকীর্তিতাঃ

পকাশদু-গুণাঃ সমুদ্রা ইব দুর্কিগাহা ॥ ২৪—৩০ ॥

১। সুরম্যাজ, প্রশংসনীয় অঙ্গসম্মি-

বেশ। এইগুণটী আনির্ভাবের সময় হইতে

ব্যক্ত। ২। সর্বসম্পন্নাবিত, শ্রীকৃষ্ণের

সম্পন্ন গুণোৎসাহ ও অক্লান্ত ভেদে দ্বিবিধ।

রক্ততা ও তুঙ্গতাদিগুণজনিত লক্ষণের

নাম গুণোৎসাহ লক্ষণ। সপ্ত স্থানে রক্ততা,

ছয় স্থানে উচ্চতা তিন স্থানে বিস্তার,

তিন স্থানে ঋকর্তা, তিন স্থানে গম্ভীরতা,

পাঁচ স্থানে দীর্ঘতা, পাঁচ স্থানে সুক্ষতা।

এইরূপে গুণোৎসাহ সম্পন্ন বত্রিশটি। করা-

দিতে রেখাময় লক্ষণের নাম অক্লান্ত

লক্ষণ। এই লক্ষণ ষোলটি। ৩। রুচির,

সৌন্দর্য্য দ্বারা নয়নের আনন্দকারী, ইহা

বাল্যাদি লীলাত্রেয় বিশেষরূপে দৃষ্ট হয় ৪।

তেজস্বী, তেজরাশি এবং দুর্কর্ত্বতা ও সর্ব

পরাভয়কারী সমন্বিত; ইহা মঙ্গলদে

দৃষ্ট হয়। ৫। বয়ীমান্, বলবান্, ইহাও

মঙ্গলদে দৃষ্ট হয়। ৬। বয়োযুক্ত, বয়সের

বাল্যাদি বিবিধ ভেদ সত্ত্বেও সর্বভক্তি-

রসাত্মক, সর্বগুণযুক্ত ও নিত্য নূতনবিলাস

বিশিষ্ট কৈশোর বয়সই শ্রীকৃষ্ণের প্রশস্ত

বয়োগুণ; ইহা শ্রীরাঙ্গলীলাতেই ব্যক্ত

হয়। ৭। বিবিধভক্তভাবাতিঃ, সংস্কৃত

ভাবাতিঃ অর্থে কামরূপী, সুসম্বিত

ইহা গোচারণলীলার প্রথম প্রকাশপায়।

৮। সত্যবাক, এই গুণ জয়াসম্বন্ধাদি-

স্থলে দৃষ্ট হয়। ৯। প্রিয়হৃদ, অপরাধীজননেও

সান্ত্বনা বাক্যপ্রয়োগকারী, ইহা কালিয়-

নাগদমনে ব্যক্ত হয়। ১০। বাবদুক, শ্রবণ-

প্রিয় ও অখিলগুণাধিত বাক্য প্রয়োগ-

কুশল, ইহা ইন্দ্রযজ্ঞভঙ্গে প্রথম ব্যক্ত হয়।

১১। সুপাণ্ডিত্য, অখিলবিদ্যাবিৎ ও

যথোচিত কর্মকারক, ইহা গুরুগৃহে

ও দ্বারকালীলার ব্যক্ত আছে। ১২।

বুদ্ধিমান, মেধাবী ও সুক্ষবুদ্ধি; ইহা গুরু-

গৃহে ও কালযবনাদিবধে দৃষ্ট হয়। ১৩।

প্রতিভাধিত, নব নব প্রকাশশালিনী

বুদ্ধি বিশিষ্ট; ইহা মানভঞ্জনলীলাতে

প্রকাশিত। ১৪। বিদম্ভ, কলাবিলাস-

কুশল; ইহা বৃন্দাবনে পাশক্রীড়ায় পরি-

ব্যক্ত। ১৫। চতুর, এককালীন অনেক

কার্য সমাধানকারী; ইহা অরিষ্টবধে

প্রকাশ পায়। ১৬। দক্ষ, দুঃসাধ্য কার্য

সত্ত্বর সম্পাদনকারী; ইহা নরকাসুর-

বধে প্রকাশিত। ১৭। কৃতজ্ঞ, কৃতসেবা-

দিকর্মের অভিজ্ঞ; কাম্যবনে পাণ্ডব-

গণের নিকট গমনকালে এই গুণ পরি-

ক্ষুট দেখা যায়। ১৮। সুদৃঢ়ত্ব, সত্য-

প্রতিজ্ঞ ও সত্যনিয়ম; ইহা পারিজাত-

হরণে ব্যক্ত আছে। ১৯। দেশকাল-

সুপাত্তজ্ঞ, দেশ কাল ও পাত্র বিবেচনা

করিয়া কর্মকারী; উদ্ধবকে ব্রজে প্রেরণ-

কালে এই গুণ প্রকাশ পায়। ২০। শাস্ত্র-

চক্ষু, শাস্ত্রানুসারে কর্মকারী, ইহা দ্বারকা-

লীলার দৃষ্ট হয়। ২১। গুচি, ধর্ম বিস্তার

ও সর্বোৎসাহ প্রদায়ক, ইহা সারস্বতীর

প্রসঙ্গে দেখা যায়। ২২। বশী, ইন্দ্রিয়-  
জয়কারী; ইহা বংশবিস্তার প্রসঙ্গে  
দেখা যায়। ২৩। স্থির, আকলোদয়কর্ম-  
চারী; ইহা জাঘবতী পরিণয়ে ব্যক্ত। ২৪।  
দান্ত, ক্লেশসহিষ্ণু; ইহা গুরুগৃহে প্রকা-  
শিত। ২৫। ক্ষমাশীল, অপরাধসহিষ্ণু;  
ইহা শিশুপালবধে প্রকটিত। ২৬। গম্ভীর,  
দুর্লিঙ্গাছ আশয়; ইহা ব্রহ্মমোহনলীলায়  
ব্যক্ত। ২৭। প্রতিমান, পূর্ণকাম ও ক্ষোভের  
কারণ সত্ত্বও ক্ষোভরহিত; ইহা রাজ-  
স্বয় যজ্ঞে প্রকাশিত। ২৮। সমরাগ-  
হেষবিমুক্ত, ইহা কালিয় দমনে প্রকটিত  
। ২৯। বদান্য, দাতা, দ্বারকালীলায়  
নারদমোহে এই গুণ প্রকাশিত। ৩০।  
ধাঙ্গিক, ধর্মকারক ও ধর্মরক্ষক, ইহা  
দ্বারকালীলায় প্রকাশিত। ৩১। শূর, যুদ্ধ-  
বিষয়ে উৎসাহাঙ্গিত ও অস্ত্রপ্রয়োগনিপুণ,  
ইহা জরাসন্ধসংগ্রামে প্রকাশিত। ৩২।  
করণ, পরদুঃখসহিষ্ণু; জরাসন্ধ কর্তৃক  
বন্দরাজ্যগণের মোচনে এই গুণ প্রকটিত।  
৩৩। মান্যমানকৃত, গুরুব্রহ্ম ব্রাহ্মণসকল  
পূজাকারী, ইহা দ্বারকালীলায় প্রকা-  
শিত। ৩৪। বিনয়ী অনুদ্রুত; ইহা রাজ-  
স্বয়যজ্ঞে ব্যক্ত। ৩৫। দক্ষিণ, কোমল-  
চরিত্র, ইহা সত্যভামাপরিণয়ে প্রকা-  
শিত। ৩৬। স্ত্রীমান্ লজ্জাশীল; গুণ  
এই গোবর্দ্ধনধারণকালে প্রকটিত। ৩৭।  
শরণাগতপালক, এই গুণ বাণযুদ্ধে  
ব্যক্ত। ৩৮। সুখী, অন্নভিক্ষায় এই গুণ  
সুব্যক্ত আছে। ৩৯। ভক্তসুহৃদ, ভীষ্ম-  
নির্ধানে এই গুণ প্রকাশ পায়। ৪০।  
কোমল, সোহাগ স্বপ্নে না ক্রিয়ানী

প্রেমের বশীভূত, পৃথুকোপাধ্যানে ইহা  
প্রকাশিত। ৪১। সর্কশুভকর, সর্কজন-  
হিতকারী, ইহা উদ্ধবশিক্ষায় ব্যক্ত। ৪২।  
প্রতাপী। ৪৩। কীর্ত্তিমান্। ৪৪। রক্ত-  
লোক, সোকেব অমুরাগভাজন। ৪৫।  
সাপুসমাশ্রয়। ৪৬। নারীগণ মনোহারী। ৪৭।  
সর্কারাধ্য। ৪৮। সমৃদ্ধিমান্। ৪৯। বরী-  
য়ান্। ৫০। কেশর। শ্রীকৃষ্ণের এই পঞ্চাশটি  
গুণ সমুদ্রের ন্যায় দুর্লিঙ্গাহ। ২৪—৩০।

তথাহি তত্ৰৈব—

জীবেষুে বসন্তোহপি বিন্দুবিন্দুতরা কচিং।  
পরিপূর্ণতরা ভাস্তি তত্ৰৈব পুরুষোত্তমে ॥ ৩১ ॥  
অথ পঞ্চগুণা য়ে স্থারংশেন গিরিশাদিবু।  
সদা স্বরূপসংপ্রাপ্তঃ সর্কজ্ঞো নিতানুতনঃ।  
সক্তিমানন্দসাম্রাজঃ সর্কসিদ্ধিনিষেবিতঃ ॥ ৩২ ॥  
অথোচ্যন্তে গুণাঃ পঞ্চ য়ে লক্ষ্মীশাদিবর্জিনঃ।  
অবিচিন্ত্যমহাশক্তিঃ কোটিব্রহ্মাণ্ডবিগ্রহঃ।  
অবতারাবলীবিজ্ঞং হতারিগতিদায়কঃ।  
আচারামগণাকর্ষীত্যামী কৃষে কিলাত্ত্বতাঃ ॥ ৩৩ ॥  
সর্কাকৃতচনৎকারণীলাকলোপবারিধিঃ।  
অতুল্যমধুরপ্রেমমণ্ডিতপ্রিয়মণ্ডলঃ ॥ ৩৪ ॥  
ত্রিঙ্গগমানসাকর্ষীমুরদীকলকুঞ্জিতঃ।  
অসমানোর্জরূপশ্রীবিষ্মাপিত্ত্বচরায়ঃ ॥ ৩৫ ॥  
গীলা-প্রেমাশ্রিরাধিকায়ং মাদুর্ঘ্যে বেগুরূপয়োঃ।  
ইত্যসাধারণং প্রোক্তং গোবিন্দস্ত চতুর্টয়ম্।  
এবং গুণাশ্চতুর্ভেদাশ্চতুঃষষ্টিরুদাহতাঃ ॥

এতে ( গুণাঃ ) বিন্দুবিন্দুতরা কচিং জীবেষু  
বসন্তঃ অপি তত্ৰৈব পুরুষোত্তমে পরিপূর্ণতরা  
ভাস্তি। অংশেন ( যথাসম্ভববাংশেন ) গিরিশাদিবু  
( শ্রীশিবাদিবু ) য়ে পঞ্চগুণাঃ স্থাঃ ( অথ উদ্যন্তে )  
সদা স্বরূপসংপ্রাপ্তঃ সর্কজ্ঞঃ নিতানুতনঃ সক্তিমা-  
নন্দসাম্রাজঃ সর্কসিদ্ধিনিষেবিতঃ ( ইতি ৩-১ )  
লক্ষ্মীশাদিবর্জিনঃ য়ে পঞ্চগুণাঃ অথ উচ্যন্তে অবি-  
চিন্ত্যমহাশক্তিঃ কোটিব্রহ্মাণ্ডবিগ্রহঃ অসমান-

কালীনাথং হতারিগতিদাহকঃ। আত্মারামগণাকবি  
 ইতি অনী কক্ষে অকৃত্যঃ কিল। সর্কাসুতচমৎ-  
 কারলীলাকল্পোলবারিধিঃ অতুল্যমধুরপ্রেমমণ্ডিত-  
 প্রিয়মণ্ডলঃ। মুরলীকলকুঞ্জিতঃ ত্রিজগন্মানসাকর্ষী  
 অসমানোৎকরণশ্রীবিদ্যাপিতচর্যাতরঃ। লীলাপ্রেমা  
 প্রিয়ারাধিক্যং বেণুরূপরোঃ মাধুর্যে ইতি গোবিন্দশু  
 অসার্যরণং চতুঃস্থরং প্রোক্তম্ এবং চতুঃভেদাঃ গুণাঃ  
 চতুষ্টয়িঃ উদাহৃতঃ ॥ ৩১—৩৬ ॥

এই সমস্ত গুণ জীবগণেও দৃষ্ট হয়।  
 দৃষ্ট হইলেও সম্পূর্ণভাবে দৃষ্ট হয় না,  
 অংশতঃ দৃষ্ট হয় মাত্র। শ্রীকৃষ্ণেই এইগুলি  
 পরিপূর্ণভাবে দৃষ্ট হইয়া থাকে। সদা  
 স্বরূপসম্প্রাপ্ত (সায়িককার্যে অবশীকৃত)  
 সর্কজ, মিত্যানুভব, সচ্চিদানন্দসাস্ত্রাজ  
 (সচ্চিদানন্দঘনবিগ্রহ) ও সর্কমিচ্ছি-  
 নিবেষিত (সকল সিদ্ধি বাঁহার নিজবশে)  
 শ্রীকৃষ্ণের এই পাঁচটিগুণ আংশিকরূপে  
 গিরিশাদি দেবতাতেও দেখা গিয়া থাকে।  
 অবিচিন্ত্য মহাশক্তি (সৃষ্টিকর্তৃক, ত্রক্ষা-  
 রুদ্বাদিমোহন ও ভক্তের প্রারক্ খণ্ডঃ  
 প্রভৃতি অচিন্ত্যশক্তি সমন্বিত) কোটি  
 ত্রক্ষাশুবিগ্রহ (বিষ্ণুরূপ) অবতারাবলী-  
 বীজ (সর্কবতারের মূলপ্রায়) হতারি-  
 গতিদায়ক (শক্রগণের বিনাশসাধন পূর্কক  
 মুক্তিদাতা) ও আত্মারামগণাকর্ষী (মুক্ত-  
 গণেরও আকর্ষণকারী) শ্রীকৃষ্ণের এই  
 পাঁচটি গুণ জীনারায়ণাঙ্কিতেও দৃষ্ট  
 হয়। সর্কাসুতচমৎকারলীলাকল্পোলবারিধি  
 (লীলামাধুর্য) অতুল্যমধুরপ্রেমমণ্ডিত-  
 প্রিয়মণ্ডল (প্রেমমাধুর্য) ত্রিজগন্মানসা-  
 কবিমুরলীকলকুঞ্জিত (বেণুমাধুর্য) ও  
 অসমানোৎকরণশ্রীবিদ্যাপিতচর্যাতর (কপ

মাধুর্য) এই চারিটি গুণ শ্রীকৃষ্ণের অসা-  
 ধারণ। এইরূপে শ্রীকৃষ্ণের চতুঃস্থি  
 গুণ ॥ ৩১—৩৬ ॥

অনন্ত গুণ রাধিকার পঞ্চবিংশতি প্রধান।  
 যেই গুণে বশ হয় কৃষ্ণ ভগবান্ ॥ ৩৩ ॥

তথাহি উজ্জলনীলমণৌ শ্রীরাধাপ্রকরণে  
 নবমাহ্নে—

অথ বৃন্দাবনেশ্বৰ্যাঃ কীর্ত্যন্তে প্রবরা গুণাঃ।  
 মধুরেয়ং নববয়স্চলপাদোজ্জলশ্রিতা ॥ ৩৭ ॥  
 চারুসৌভাগ্যরেখাচ্যাংগক্লেম্মাদিতমাধবা।  
 সঙ্গীতপ্রসরাভিজ্ঞা রম্যবাঙ্ নন্দ্রপণ্ডিতা ॥ ৩৮ ॥  
 বিনীতা করুণাপূর্ণা বিদম্বা পাটবাঘিতা।  
 লজ্জাশীলা স্তম্ভায়া দৈর্ঘ্যগাভীর্ঘ্যশালিনী ॥ ৩৯ ॥  
 স্থবিলাসা মহাভাবপরমোৎকর্ষতর্ষিণী।  
 গোকুলপ্রেমবসতির্জগজ্জেনীলসদ্যশাঃ ॥ ৪০ ॥  
 গুরুর্পিত গুরুনেহা সখীপ্রণয়িতাবশা।  
 কৃষ্ণপ্রিয়াবলীমুখ্যা সন্ততাশ্রবকেশবা।  
 বহনা কিং গুণান্তত্যাঃ সংখ্যাভীতা হরেরিব ॥ ৪১ ॥

অথ বৃন্দাবনেশ্বৰ্যাঃ (শ্রীরাধায়াঃ) প্রবরাগুণাঃ  
 কীর্ত্যন্তে মধুরেয়ং নববয়স্চলপাদোজ্জলশ্রিতা  
 (ইত্যাদয়ঃ)। তত্যাঃ গুণাঃ কিং বহনা হরেঃ ইব  
 সংখ্যাভীতাঃ ॥ ৩৭—৪১ ॥

শ্রীকৃষ্ণের ন্যায় শ্রীরাধারও অপ্রাকৃত  
 অনন্ত গুণ উক্ত হইয়া থাকে। তন্মধ্যে  
 প্রধানতঃ যে পঞ্চবিংশতি গুণ তাহা  
 কীর্তিত হইতেছে। মধুরা, নববয়স, চঞ্চল-  
 নয়না, উজ্জলশ্রিতা, চারুসৌভাগ্যরেখাচ্যা  
 (পঞ্চাশৎ সংখ্যক সৌভাগ্যশুচক রেখা  
 বিশিষ্টা) গক্লেম্মাদিতমাধবা (গন্ধ দ্বারা  
 মাধবকে উন্মাদিত করেন) সঙ্গীতপ্রসরা-  
 ভিজ্ঞা, রম্যবাঙ্, নন্দ্রপণ্ডিতা, বিনীতা,  
 করুণাপূর্ণা, বিদম্বা, পাটবাঘিতা (চাতুর্ঘ্য-  
 শালিনী), স্তম্ভায়া, দৈর্ঘ্যশালিনী

গান্ধীবাশালিনী, সুবিলাসী, মহাত্মাব-  
পরমোৎকর্ষতথী ( সুকীণ্ড সাজিকভাব  
সকলের পূর্ণপ্রকাশভূমি ) গোকুলপ্রেম-  
বসতি (গোকুলজনপ্রিয়া) জগদ্ধে নীলসদ-  
যশা ( বাহার যশে সর্কজগৎ ব্যাপ্ত )  
গুরুপিতগুরুস্নেহ ( গুরুজনের অতিশয়  
স্নেহপাত্রী ) সখীপ্রণয়িতাবশা ( সখী-  
জনের প্রণয়াদীনা ) কৃষ্ণপ্রিয়াবলীমুখ্যা  
( কৃষ্ণপ্রিয়াগণশ্রেষ্ঠী ) সমুতাপ্রবকেশবা  
( সর্কদাকেশব বাহারআজ্ঞাধীন ) ॥৩৭।৪১॥

নারিকানা যক দুই রসের আলম্বন ।  
সেই দুই শ্রেষ্ঠ রাধা ব্রজেন্দ্রনন্দন ॥  
এই মত দাস্যো দাগ, সখ্যো সখাগণ ।  
বাৎসল্যে মাতাপিতা আশ্রয়ালম্বন ॥  
এই রস অনুভবে বৈছে ভক্তগণ ।  
বৈছে রস হয়, তার শুনহ লক্ষণ ॥:৪॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্দৌ দক্ষিণবিভাগে  
প্রথমলহর্যাং চতুর্থাঙ্কে—

ভক্তিনিধুতদোষাণাং প্রসন্নোচ্ছলচেতসাম্ ।  
শ্রীভাগবতরক্তানাং রসিকাসঙ্গরজিনাম্ ॥ ৪২ ॥  
জীবনীভূতগোবিন্দপাদভক্তিসুখশ্রিয়াম্ ।  
প্রেমাস্তরলভূতানি কৃত্যাত্তোবাহুতিষ্ঠতাম্ ॥ ৪৩ ॥  
ভক্তানাং হৃদি রাজতী সংস্কারযুগলোচ্ছলানি ।  
রতিরানন্দরূপেব নীরমানা তু রত্নতাম্ ॥ ৪৪ ॥  
কৃষ্ণাদিভির্বিভাবাঐগর্ভৈতরমুভবাবধিনি ।  
প্রৌঢ়ানন্দচমৎকারকাষ্ঠামপাদতে পরাম্ ॥৪৫॥

ভক্তিনিধুতদোষাণাং ( ভক্ত্যা নিধুতঃ দোষাঃ  
যেবাং ) প্রসন্নোচ্ছলচেতসাম্ শ্রীভাগবতরক্তানাং  
( শ্রীভাগবতার্থাস্বাদনপরাণাং ) রসিকাসঙ্গরজিনাম্  
( রসজ্ঞভক্তসঙ্গিনাম্ ) জীবনীভূতগোবিন্দপাদভক্তি-  
সুখশ্রিয়াম্ প্রেমাস্তরলভূতানি কৃত্যানি এব অহুতি-  
ষ্ঠতাম্ ভক্তানাং হৃদি বাহারসংস্কারলোচ্ছলানি

রূপা রক্তিঃ এব রাজতী তু অহুভবাবধিনি কৃষ্ণাদিবিঃ  
বিভাবাঐগর্ভৈঃ গর্ভৈঃ রত্নতাং নীরমানা পরাং প্রৌঢ়া-  
নন্দচমৎকারকাষ্ঠাম্ আপত্ততে ॥ ৪২—৪৫ ॥

ভক্তি প্রভাবে বাহাদের দোষ বিহীন  
রিত হইয়া শুক্লস্বাবির্ভাবের যোগ্য  
এবং উজ্জ্বল তন্মত্রে সর্কজ্ঞানসম্পন্নচিত্ত  
হইয়াছে, বাহারী শ্রীভাগবতার্থ আশ্রয়ে  
অনুরক্ত এবং রসজ্ঞভক্তগণসদী, শ্রীগো-  
বিন্দ পাদপদের ভক্তিসুখসম্পত্তি বাহা-  
দের জীবনীভূত, বাহারী কেবল প্রেমাস্ত-  
রল সাধন সকল অনুষ্ঠান করেন, তাহুশ  
ভক্তগণের হৃদয়ে সংস্কার যুগলোচ্ছলনা  
আনন্দরূপা যে রতি বিরাজিত আছে,  
সেই রতি অনুভবপথগত কৃষ্ণাদিবিভাগ-  
সমূহ দ্বারা আশ্রাদাতা প্রাপ্ত হইয়া  
প্রৌঢ়ানন্দ চমৎকারের পরাকাষ্ঠা প্রাপ্ত  
হইয়া থাকেন ॥ ৪২—৪৫ ॥

এই রসাস্বাদ নহে অভক্তের গণে ।

কৃষ্ণভক্তগণ করে রস আশ্রাদনে ॥ ৩৫ ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্দৌ দক্ষিণবিভাগে  
পঞ্চমলহর্যাং অষ্টমপুতিতমাস্তে—

সর্কধৈব হৃক্‌হোহয়মভক্তৈর্ভগবত্ৰসঃ ।  
তৎপাদাভূজসর্কধৈর্ভক্তৈরেবাহুততে ॥ ৪৬ ॥

অভক্তৈঃ অয়ং ভগবৎ রসঃ সর্কধা এব অহুতঃ  
তৎপাদাভূজসর্কধৈঃ ভক্তৈঃ এব অহুততে ॥ ৪৬ ॥

এই ভক্তিরস অভক্তদিগের সর্কপ্রকা-  
রেই দুক্লহ, কিন্তু কৃষ্ণপাদাভূজসর্কধৈ-  
ভক্তগণ নিরন্তর উহা আশ্রাদন করিয়া  
থাকেন ॥ ৪৬ ॥

তথাহি তত্রৈব পূর্ববিভাগে বিকীরণলহর্যাং  
পঞ্চবিংশাদিকলততমাস্তে—

অন্যলক্য বিঘনান বধাহবৃণসুভতঃ ।

নির্ঘণাঃ কৃষ্ণপাদে বৃষ্ণং যোগ্যস্বাদনে ॥ ৪৭ ॥

অনামকতুঃ ( সতঃ ) বর্থাঃ ( বভক্তাপবৃত্ত-  
 মাত্রং বধাত্তাভধা ) বিষয়ান্ উপযুক্তঃ ( ভুজ্ঞানস্ত  
 পুরুষস্ত যৎ ) বৈরাগ্যং ( তৎ ) যুক্তম্ উচ্যতে ॥৪৭

অনামক হইয়া যথাযোগ্য বিষয়োপ-  
 ভোগ করতঃ ক্রমশঃক্ষে যে আগ্রহ জন্মে,  
 এ স্থলে তাহাকেই যুক্তবৈরাগ্য বলিয়া  
 কীর্তন করিয়াছেন ॥ ৪৭ ॥

সংক্ষেপে কহিল এই প্রয়োজন বিবরণ ।  
 পঞ্চমপুরুষার্থ এই ক্রম প্রোধন ॥  
 পূর্বেতে প্রয়াগে আমি রসের বিচারে ।  
 তোমার ভাই রূপে কৈল শক্তি সঞ্চারে ॥  
 তুমিহ করিহ ভক্তি-শাস্ত্রের প্রচার ।  
 মথুরায় লুপ্ততীর্থের করিহ উদ্ধার ॥৩৬॥  
 শ্রীহৃদ্ধাবনে ক্রমসেবা বৈষ্ণব আচার ।  
 ভক্তি-স্মৃতি-শাস্ত্র করি করিহ প্রচার ॥  
 যুক্ত-বৈরাগ্য-স্থিতি সব শিক্ষাইল ।  
 শুক বৈরাগ্য জ্ঞান সব নিষেধিল ॥ ৩৭ ॥

তথাহি গীতায়াং ষাণশাধ্যায়ে ত্রয়োদশাদি-  
 মোকা:—

অদেষ্টা সর্কভূতানাম্ গৈত্রঃ করুণ এব চ ।  
 নির্গমো নিরহঙ্কারঃ সমদ্বঃখসুখঃ ক্ষমী ॥ ৪৮ ॥  
 সন্তুষ্টঃ সততং যোগী যতাত্মা দৃঢ়নিশ্চয়ঃ ।  
 ময্যর্পিতমনোবুদ্ধির্ধো মন্তুক্তঃ স মে প্রিয়ঃ ॥ ৪৯ ॥  
 যম্মাঘোষিজতে লোকো লোকায়োষিজতে চ যঃ ।  
 হর্ষামর্ষভয়োদেগৈর্মুক্তো যঃ স চ মে প্রিয়ঃ ॥ ৫০ ॥  
 অনপেক্ষঃ শুচির্দেহ উদাসীনো গতব্যথঃ ।  
 স্বর্কারন্তপরিভ্যাগী বো মন্তুক্তঃ স মে প্রিয়ঃ ॥ ৫১ ॥  
 যো ন হৃষ্যতি ন বেষ্টি ন শোচতি ন কাঙ্কতি ।  
 শুভাশুভপরিভ্যাগী ভক্তিমান্ যঃ স মে প্রিয়ঃ ॥৫২॥  
 সখ্য শত্রৌ চ মিত্রে চ তথা মানাপমানয়োঃ ।  
 শীতোষ্ণসুখদুঃখেষু সমঃ সঙ্গবিবর্জিতঃ ॥ ৫৩ ॥  
 তুল্যানিন্দাসক্তিমো নী সন্তোষে ন কেনচিৎ ।  
 স্তিরমতিঃ স্থিরমতিঃ ভক্তিমান্ ( সঃ ) নয়ঃ  
 মে প্রিয়ঃ ॥ যো ভক্তঃ যথোক্তম্ ইদং ধর্মান্মৃতং  
 পর্যুপাসতে শ্রদ্ধাধনা ( ভক্তিশ্রদ্ধালবঃ ) মৎপরমাঃ  
 ( মন্ত্রিতাঃ ) তে মে অতীব প্রিয়ঃ ( ভবন্তি ) ॥৪৮।৫৫

বে তু ধর্মান্মৃতনিবং যথোক্তং পর্যুপাসতে ।  
 শ্রদ্ধাধনা মৎপরমা ভক্তশ্রেহতীব মে প্রিয়ঃ ॥৫৫

সর্কভূতানাম্ অদেষ্টা মৈত্রঃ করুণঃ নির্গমঃ  
 নিরহঙ্কারঃ সমদ্বঃখসুখঃ ক্ষমী । সততং সন্তুষ্টঃ  
 যোগী যতাত্মা দৃঢ়নিশ্চয়ঃ ময়ি অর্পিতমনোবুদ্ধিঃ  
 যঃ সঃ মে প্রিয়ঃ মন্তুক্তঃ । যম্মাঘ লোকঃ ন  
 উষিজতে চ যঃ লোকান্ ন উষিজতে যঃ হর্ষামর্ষ-  
 ভয়োদেগৈঃ মুক্তঃ স চ মে প্রিয়ঃ । অনপেক্ষঃ  
 শুচিঃ দেহঃ উদাসীনঃ গতব্যথঃ স্বর্কারন্তপরিভ্যাগী  
 যঃ সঃ মে প্রিয়ঃ মন্তুক্তঃ । যো ন হৃষ্যতি ন বেষ্টি  
 ন শোচতি ন কাঙ্কতি শুভাশুভপরিভ্যাগী ভক্তি-  
 মান্ যঃ সঃ মে প্রিয়ঃ । সখ্যে চ মিত্রে চ তথা  
 মানাপমানয়োঃ সমঃ শীতোষ্ণসুখদুঃখেষু সমঃ সঙ্গ-  
 বিবর্জিতঃ । তুল্যানিন্দাসক্তিমো নী যেন কেনচিৎ  
 স্তিরমতিঃ স্থিরমতিঃ ভক্তিমান্ ( সঃ ) নয়ঃ  
 মে প্রিয়ঃ । যো ভক্তঃ যথোক্তম্ ইদং ধর্মান্মৃতং  
 পর্যুপাসতে শ্রদ্ধাধনা ( ভক্তিশ্রদ্ধালবঃ ) মৎপরমাঃ  
 ( মন্ত্রিতাঃ ) তে মে অতীব প্রিয়ঃ ( ভবন্তি ) ॥৪৮।৫৫

যিনি সর্কভূতের অদেষ্টা অর্থাৎ কেহ  
 দ্বেষ করিলেও আমার প্রারক্তানুসারে  
 পরমেশ্বর কর্তৃক প্রেরিত হইয়াই আগার  
 প্রতি দ্বেষ করিতেছে, এই বুদ্ধিতে তাহার  
 প্রতি দ্বেষরহিত, 'সমস্ত জীবই পরমেশ্ব-  
 রাপিষ্ঠিত' এই বুদ্ধিতে জীবমাত্রের প্রতি  
 স্নিগ্ধ, কোন কারণে কাহারও খেদ উপ-  
 স্থিত হইলে 'ঐ খেদ না হউক' এই  
 বুদ্ধিতে করুণ, দেহাদিতে মমতারহিত  
 ও আত্মবুদ্ধিরহিত, সুখের সময় হর্ষে ও  
 দুঃখের সময় উদ্বেগেও নিরাকুল, সহিষ্ণু,  
 সতত সন্তুষ্ট, গুরুকর্তৃক উপদিষ্ট-উপায়-  
 নিষ্ঠ, বিজিতে স্তির, কেহ কৃতক করিলেও  
 তদ্বারা বাঁহার বুদ্ধি বিচলিত হয় না,  
 পরম 'স্বামি হরিনাম' এইরূপই বুদ্ধি বিশ্ব

ধাকে, যিনি আমাতেই মন ও বুদ্ধি অর্পণ করিয়াছেন, এই প্রকার ভক্তই আমার প্রিয়। যিনি অনপেক্ষ অর্থাৎ অয়ং উপস্থিত ভোগ্যবিময়েও স্প হারহিত, শুচি, দক্ষ, উদাসীন, ব্যাধারহিত ও সর্পারস্তপরিভ্যাগী, তাদৃশ ভক্তই আমার প্রিয়। যিনি শত্রুমিত্রে, মানাপমানে, স্নীতোক্ষে ও সুখদুঃখে সমবুদ্ধি এবং কুসঙ্গবিবর্জিত, যিনি নিন্দা ও স্তুতিকে সমান বোধ করেন, যিনি যথালভতুষ্ট, নিবাসরহিত ও স্থিরবুদ্ধি তাদৃশ ভক্তিমানুই আমার প্রিয়। যিনি এই যথোক্ত ধর্মামৃতের সেবা করেন, তিনি আমার অতীব প্রিয় হইবেন ॥ ৪৮—৫৫ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ত্রিতীয়স্কন্ধে ত্রিতীয়াধ্যায়ে পঞ্চমশ্লোকঃ—

চীরাণি কিং পথি ন সন্তি দিশস্তি ভিক্ষাং  
নৈবাস্ত্বিপাঃ পরভূতঃ সরিতোহপ্যগুবান্ ।  
রুদ্রাঃ গুহাঃ কিমলিতোহবতি নোপসন্নান্  
কস্মাৎভজন্তি কবয়ো ধনহর্মদাক্তান্ ॥ ৫৬ ॥

পথি কিং চিরাণি ( বস্ত্রখণ্ডানি ) ন সন্তি পরভূতঃ অস্ত্বিপাঃ ভিক্ষাং ন এব দিশস্তি ( দাশস্তি কিং ) সরিতঃ অপি অন্তবান্ ( গুহাঃ কিং ) গুহাঃ রুদ্রাঃ ( কিম্ ) অজিতঃ কিম্ উপসন্নান্ ( শরণাগতান্ জনান্ ) ন অবতি কবয়ঃ কস্মাৎ ধনহর্মদাক্তান্ ( ধনেন যঃ হর্মদঃ তেন অদান্ ) ভজন্তি ॥ ৫৬ ॥

পথি মধ্যে পতিত জীর্ণ বস্ত্রখণ্ড থাকিতে বস্ত্রের নিমিত্ত, পরপোষক তরুরাজি থাকিতে অন্নের নিমিত্ত, জলপূর্ণ সরিৎ সরোবর থাকিতে পানীয়ের নিমিত্ত, গিরিকন্দর থাকিতে বাসস্থানের নিমিত্ত ও শরণাগতপালক শ্রীভগবান্ থাকিতে আশ্রয়ের নিমিত্ত সাধুলোক সকল কেন ধনমদাঙ্ক ব্যক্তিসকলের উপাসনা করিবেন ॥ ৫৬ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতপত্রিশততমোঃশ্লোকঃ

সামান্য কৃত্যবোধিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত প্রয়োজনপ্রেমবিচার  
নাম মহোদ্যোগ পরিচ্ছেদ ॥ ২৩ ॥

তবে সনাতন সব সিদ্ধান্ত পুছিল।  
ভাগবত সিদ্ধান্ত গৃহ সকল কহিলা ॥ ২৮ ॥  
হরিবংশে কহিরাছে গোলকেতে স্থিতি।  
ইন্দ্র আসি কৈল যবে শ্রীকৃষ্ণকে স্তুতি ॥  
মৌললীলা আর কৃষ্ণের অন্তর্দান।  
কেশাবতার যত আর বিরুদ্ধব্যাখ্যান ॥  
মহিবীহরণ আদি সব মায়াময়।  
ব্যাখ্যান শিখাইল যৈছে সুসিদ্ধান্ত হয় ॥  
তবে সনাতন প্রভুর চরণে ধরিয়া।  
নিবেদন কৈল কিছু দস্তে তুণ লঞা ॥  
নীচজাতি নীচসেবী মুঞি সুপামর।  
সিদ্ধান্তশিখাইলেবেই ব্রহ্মার অগোচর ॥ ৩১ ॥  
তুমি যে কহিলে এই সিদ্ধান্তামৃতসিক্ত।  
মোর মন ছুইতে নারে তার এক বিস্মু ॥  
পক্ষ নাচাইতে যদি হয় তোমার মন।  
বর দেহ মোর মাথে ধরিয়া চরণ ॥  
মুঞি যে শিখাইলু তাহা ক্ষুরক সকল।  
এই তোমার বর হৈতে হবে মোর বল ॥  
তবে মহাপ্রভু তার শিরে ধরি করে।  
বর দিল এই সব ক্ষুরক তোমারে ॥  
সংক্ষেপে কহিল প্রেমপ্রয়োজন সম্বাদ  
বিস্তারি কহিতে নারি, প্রভুর প্রসাদ  
প্রভুর উপদেশামৃত শুনে বেই জন।  
অচিরে মিলয়ে ভারে কৃষ্ণপ্রেমধন ॥  
শ্রীরূপ রঘুনাথ পদে বার আশ।  
চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৪০ ॥  
ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
প্রয়োজনপ্রেমবিচারনাম ত্রয়ো-  
বিংশ পরিচ্ছেদ ॥ ২৩ ॥

## চতুর্বিংশ পরিচ্ছেদ ।



আজ্ঞারামেতি-পদ্যাক্ষরার্থাংশুন্ যঃ প্রকাশয়ন্ ।  
জগত্তমো অহ্মারব্যাত্ স চৈতন্যোদয়াচলঃ ॥ ১ ॥

যঃ ( চৈতন্যঃ ) আজ্ঞারামেতিপদ্যাক্ষর্য অর্থাৎ-  
শুন্ ( অর্থাৎ একবচনপ্রকারাঃ তে এব অংশবঃ  
কিরণাঃ তান্ ) প্রকাশয়ন জগত্তমঃ ( জগতাং তমঃ )  
অহ্মার স চৈতন্যোদয়াচলঃ ( অহ্মানু ) অব্যাত্ ॥ ১ ॥

“আজ্ঞারামাঃ” শ্লোকরূপ সূর্য্যোর  
অর্থরূপ কিরণাবলি প্রকাশ করতঃ যিনি  
জগত্তের তমো নাশ করিয়াছেন, সেই  
চৈতন্যরূপ উদয়গিরি আমাদিগকে রক্ষা  
করুন ॥ ১ ॥

জয় জয় ত্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।  
জয়ান্বৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তরূন্দ ॥  
তবে সনাতন প্রভুর চরণে ধরিয়া ।  
পূনরপি কহে কিছু বিনয় করিয়া ॥  
পূর্বে শুনিয়াছি তুমি সার্কভৌম-স্থানে ।  
এ শ্লোকের আঠার অর্থ করিছ ব্যাখ্যানে ॥ ১

তথাহি শ্রীমতাগবতে প্রথমমন্ধে সপ্তমাধ্যায়ে  
দশমশ্লোকঃ—

আজ্ঞারামাশ্চ মুনয়ো নিগ্রহা অপ্যাক্রমে ।  
সূর্য্যভৈতুকীং তক্তিমিখতুতগুণো হরিঃ ॥ ২ ॥

আজ্ঞারামাঃ চ মুনয়ঃ নিগ্রহাঃ অপি উরুক্রমে  
অভৈতুকীং তক্তিং সূর্য্যভি ইখতুতগুণাঃ হরিঃ ॥ ২ ॥

আজ্ঞারাম মুনিগণ নিগ্রহা হইয়াও  
উরুক্রমে ফলান্তিসন্ধিরহিতা ভক্তি করিয়া  
থাকেন । হরির ভাবুপ আশাধারণ শুণ  
বঃ মুক্ত বা অমুক্ত সকলোই তদর্থ উৎসর্গ  
করেন ॥ ২ ॥

আশ্চর্য্য শুনিয়া মোর উৎকণ্ঠিত মন ।  
রূপা করি কহ যদি জুড়ায় শ্রবণ ॥  
প্রভু কহে আমি বাতুল আমার বচনে ।  
সার্কভৌম বাতুল তাহা সত্য করি মানে  
কিবা প্রলপিতাও কিছু নাহিক স্মরণে ।  
তোমার সঙ্গ বলে যদি হয় কিছু মনে ॥  
সহজে আমার কিছু অর্থ নাহি ভাসে ।  
তোমা সব সঙ্গ বলে যে কিছু প্রকাশে ॥ ২ ॥  
একাদশ পদ এই শ্লোকে সূনির্দল ।  
পৃথক পৃথক অর্থ করে বলমল ॥  
আত্মা শব্দে ব্রহ্ম, দেহ, মন, যজ্ঞ, ধৃতি ।  
বুদ্ধি, স্বভাব, এই সাত অর্থ প্রাপ্তি ॥ ৩ ॥

তথাহি বিশ্বপ্রকাশে—  
আত্মা দেহমনোব্রহ্মস্বভাবধৃতিবুদ্ধিবু ।  
প্রযজ্ঞে চ ॥ ৩ ॥  
আত্মা শব্দে ব্রহ্ম, দেহ, মন, যজ্ঞ,  
দৈর্ঘ্য, বুদ্ধি ও স্বভাব এই সাতটি অর্থ  
পাওয়া যায় ॥ ৩ ॥

এই গাতে রসে যেই, সেই আজ্ঞারামগণ ।  
আজ্ঞারামগণের আগে করিব গণন ॥  
মুক্তাদি শব্দের অর্থ শুন সনাতন ।  
পৃথক পৃথক অর্থ করি পাছেকরিবমিলন ॥ ৪  
মুনি শব্দে মননশীল, আর কহে মৌনী ।  
ভগব্দী, ব্রহ্মী, বতি আর ঋষি, মুনি ॥ ৫ ॥  
নিগ্রহ শব্দে কহে অবিদ্যাগ্রহ হীন ।  
বিধি নিবেধ বেদশাস্ত্র জানাদি বিহীন ॥  
মুখ, বীচ, রেছু আদি, সাদৃশ্যকরণ ॥

তথাহি বিশ্বপ্রকাশে—

নির্দেশ্যে নিজমাথে নির্দিষ্টনিবেশয়ঃ ১০১

এহ ধনে চ লক্ষ্যে বর্ণসংগ্রহেহপি চ ১০১

নির্ উপসর্গের অর্থ নিশ্চয়, নির্গত হওয়া, নির্মাণ এবং নিবেশ। গ্রন্থ শব্দের অর্থ, ধনসম্ভর্ড (ধনসঞ্চয়) বর্ণসংগ্রহন (অক্ষর সকলকে রীতিক্রমে বিন্যাস করা) ১। ৩। ৫।

উরুক্রম শব্দে কহে বড়-ঘার ক্রম।

ক্রমশব্দে কহে তার পাদ বিক্ষেপণ।

শক্তি, কম্পযুক্ত, পরিপাটী, শক্ত্যে, আক্রমণ।

চরণচালনে কাঁপাইলা ত্রিভুবন ১৭।

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দ্বিতীয়স্কন্ধে সপ্তমাধ্যায়ে একোনচত্বারিংশশ্লোকঃ—

বিষ্ণোহু বীর্ঘ্যগণনাং কতমোহহতীহ

যঃ পার্থিবান্যপি কবিবিমমে রজাংসি।

চক্ৰস্ত যঃ পরংহসাম্বলতাত্রিপৃষ্ঠং

যস্মাৎ ত্রিসাম্যসদনাং ককম্প্যানস্ম ৬ ॥

ইহ (সংসারে) যঃ কবিঃ (বুদ্ধিমান্ পুরুষঃ) পার্থিবানি রজাংসি অপি বিমমে (বিগণিতবান্, তাদৃশঃ অপি) কতমঃ হু যঃ (বিষ্ণুঃ) যস্মাৎ (কারণাৎ ত্রৈবিক্রমে) অম্বলতা (প্রতিবাতশৃংখলনঃ) পরংহসা (স্বপাদবেগেন) ত্রিসাম্যসদনাৎ (ত্রিসাম্যরূপং সদনম্ অধিষ্ঠানং প্রদানং তস্মাৎ আরভ্য) উরু (অধিকং) কম্প্যানং (কম্পমানং কম্পেন যানং যস্যোতি বা, অতঃ) ত্রিপৃষ্ঠং চক্ৰস্ত (ধৃতমান্ তস্য) বিষ্ণোঃ বীর্ঘ্যগণনাং (কর্তৃং কিম্) অহতি ৬ ॥

হে নারদ! বে ব্যক্তি পৃথিবীর পরমাণু গণনা করিতে পারেন, সে ব্যক্তি যে বিষ্ণু প্রতিষেড়ন পাদবেগে অম্বলিত করিয়াছেন, তাকে ত্রিসাম্যরূপে সদনম্ অধিষ্ঠান প্রদান করিয়া উরু (অধিক) কম্পমান (কম্পন যান) যস্যোতি বা, অতঃ ত্রিপৃষ্ঠং চক্ৰস্ত (ধৃতমান্ তস্য) বিষ্ণোঃ বীর্ঘ্যগণনাং (কর্তৃং কিম্) অহতি ৬ ॥

বিষ্ণুর বীর্ঘ্য গণনা করিতে কি সমর্থ হইবে? ১। ৬।

বিষ্ণুরূপে ব্যাপে, শক্ত্যে ধারণ, পোষণ। মাদুর্ঘ্যশক্ত্যে গোলোক, ঐশ্বর্য্যে পরমেশ্বর, মার্য্যশক্ত্যে ব্রহ্মাণ্ডাদি পরিপাটী সূক্ষ্ম। তিনের তিন শক্তি মেলি প্রপঞ্চ রচন। ১।

তথাহি বিশ্বপ্রকাশে—

ক্রমঃ শক্তৌ পরিপাট্যাং ক্রমশ্চালনকম্পয়োঃ ১৭।

ক্রম শব্দের অর্থ শক্তি, পরিপাটী, চালন ও কম্প ১৭।

কুর্কস্তি পদ এই পরস্মৈপদ হয়।

কৃষ্ণসুখ ভঞ্জে তাৎপর্য্য কহয় ১৯।

তথাহি পানিনিঃ ভূদিপ্রকরণে—

স্বরিতক্রিতঃ কত্রতিপ্রায়ে ক্রিয়াকলে ৮।

স্বরিত স্বর অর্থাৎ উদাত্ত (প্রথমস্বরঃ)

ও অনুদাত্ত (নীচস্বর) মিশ্রিত স্বর 'ঞ' যাহাদের 'ইৎ' হয়, সেই সকল যজ্ঞাদি ও সূত্রাদি ধাতুর উত্তর ক্রিয়ার ফল যদি কর্তার অভিপ্রোত অর্থাৎ নিজার্থে হয়, তাহা হইলে আত্মনেপদ হয়, কিন্তু এ স্থলে ক্রিয়াজন্ম মুখ্যোদ্দেশ্যভূতকাল কৃষ্ণের সুখার্থ কৃষ্ণকে ভক্তি করার নিজার্থে আত্মনেপদ না হইয়া পরস্মৈপদ হইয়াছে ৮ ॥

হেতু শব্দে কহে ভুক্তি আদি বাঞ্ছাভ্যন্তরে ভুক্তি, সিদ্ধি, মুক্তি, মুখ্য এ তিন প্রকারের এক ভুক্তি কহে ভোগ অনন্ত প্রকার।

সিদ্ধি অষ্টাদশ, মুক্তি পঞ্চ পরকার ১১। এই বাহা নাই তাঁহা ভক্তি অহৈতু্য। বাহা হৈতে বশ হয় স্বীকৃত কোরুণী। ভক্তি শব্দে অর্থ বাসন বিদ্যমান।



রতিলক্ষণা প্রেমলক্ষণা ইত্যাদি প্রচার ।  
 ভাবনাম মহাভাব উপর সবার ॥ ১১ ॥  
 শান্তভক্তের রতি বাড়ে প্রেম পর্য্যন্ত ।  
 দাম ভক্তের রক্তি হয় রাগ দশা অন্ত ॥  
 সখাগণের রতি বাড়ে অনুরাগ পর্য্যন্ত ।  
 পিতৃমাতৃস্নেহ-আদি অনুরাগ অন্ত ॥  
 কাঙ্ক্ষাগণের রতি পায় মহাভাব সীমা ।  
 'ভক্তি' শব্দের এই সব অর্থের মহিমা ॥ ১: ॥  
 'ইৎসু তুগুণঃ' শব্দের গুণহ ব্যাখ্যান ।  
 'ইৎসু' শব্দের ভিন্নার্থ, 'গুণ' শব্দের আন ।  
 'ইৎসু' শব্দের অর্থ পূর্ণানন্দময় ।  
 যার আগে ব্রহ্মানন্দ তুণ্ডুল্য হয় ॥ ১৩ ॥  
 তথাহি আদিলীলায়াং সপ্তমে পঞ্চমাস্কথতঃ  
 বিভক্তিসুধোদয়স্য বচনম্—  
 স্বৎসাক্ষাৎকরণাল্লাদবিশুদ্ধাক্রিহিতস্য মে ।  
 স্থখানি গোপদায়ন্তে ব্রাহ্মণ্যপি জগৎগুরো ॥১৭॥  
 সর্কাকর্মক সর্কাক্ষাদক মহারগায়ন ।  
 আপনার বলে করায় সর্ক বিস্মারণ ॥১৪॥  
 ভুক্তি সিদ্ধি মুক্তিসুখ ছাড়ায় যার গঞ্জে ।  
 অলৌকিকশক্তি গুণেক্ষরুপায়বাক্ষে ॥১৫॥  
 শাস্ত্রযুক্তি নাহি ইহা সিদ্ধান্ত বিচার ।  
 এই স্বভাব গুণ যাতে মাধুর্যের সার ॥১৬॥  
 'গুণ' শব্দের অর্থ কৃষ্ণের গুণ অনন্ত ।  
 সক্তিংরূপ গুণ সর্ক পূর্ণানন্দ ॥  
 ঐশ্বর্য্য মাধুর্য্য কারণ্য স্বরূপ পূর্ণতা ।  
 ভক্তবাৎসল্য আত্মপর্য্যন্ত বদাচতা ॥ ১৭ ॥  
 অলৌকিক রূপ রম সৌরভাদি গুণ ।  
 কারো মন কোন গুণে করে আকর্ষণ ॥১৮॥  
 সনকাদির মন হরিল সৌরভাদি গুণে ॥১৯॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং সপ্তদশে নবমাস্কথতঃ  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

তস্তারবিন্দনয়নস্ত পদারবিন্দ-

কিজ্জ্বলিতশুক্লসীমকরনবাবুঃ ।

অন্তর্গতঃ স্ববিবরণে চকার তেবাং

সংকোভমকরজ্জ্বামপি চিত্তভ্রমোঃ ॥১০॥

শুকদেবের মন হরিল লীলার শ্রবণে ॥২০॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দ্বিতীয়স্কন্ধে প্রথমাধ্যায়ে  
 নবমশ্লোকঃ—

পরিনিষ্ঠিতোহপি নৈশ্চণ্যে উত্তমঃশ্লোকলীলয়া ।

গৃহীতচেতা রাজর্ষে আখ্যানং বদধীতবান্ ॥ ১১ ॥

( হে ) রাজর্ষে । 'নৈশ্চণ্যে' পরিনিষ্ঠিতঃ অপি  
 ( অহম্ ) উত্তমঃশ্লোকলীলয়া গৃহীতচেতাঃ ( সন্ )  
 যৎ আখ্যানম্ অধীতবান্ ॥ ১১ ॥

হে রাজন্ । আমি নিগুণ ব্রহ্মে অব-  
 স্থিত ছিলাম সত্য, কিন্তু শ্রীভগবানের  
 লীলাশ্রবণে আকৃষ্ট চিত্ত হওতঃ শ্রীভাগ-  
 বত অধ্যয়ন করিয়াছি ॥ ১১ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং সপ্তদশে সপ্তমাস্কথতঃ  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

স্বস্বপ্নভিত্তচেতাশ্চদ্যদস্তান্যভাবো-

হপ্যাজিতরচিতরলীলাকৃষ্টসারস্তদীয়ম্ ।

ব্যতন্ত্রত রূপয়া যন্তবদীপং পুরাণং

তমপিনবৃজিনস্বং ব্যাসস্বহুং নতোহস্মি ॥১২॥

শ্রীঅঙ্গ-শ্রীরূপে হরে গোপীগণের মন ॥২১॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে একোনত্রিংশা-  
 ধ্যায়ে একোনচত্বারিংশশ্লোকঃ—

বীক্ষ্যালকাবৃতমুখং তব কুণ্ডলশ্চি-

গণ্ডস্থলাধরস্বধং হসিতাবলোকম্ ।

দন্তাভরণঞ্চ ভূজদণ্ডয়ুগং বিলোক্য

বন্ধঃ শ্রিরৈকরমণঞ্চ ভবাম দান্তঃ ॥ ১৩ ॥

তব অলকাবৃতমুখম্ কুণ্ডলশ্চিগণ্ডস্থলাধরস্বধং  
 ( কুণ্ডলয়োঃ শ্রীঃ শোভা যয়োঃ তে গণ্ডস্থলে বস্মিন্  
 অধরে স্থখা বস্মিন্ তৎ চ তৎ চ মুখং ) হসিতাব-  
 লোকং ( হসিতেন সহ অবলোকঃ বস্মিন্ তৎ চ  
 মুখং ) বীক্ষ্য দন্তাভরণং ( বস্তম্ অভরণং যেন ) ভূজ-  
 দণ্ডয়ুগং শ্রিরৈকরমণং ( শ্রিরঃ গুণ্যোঃ একং মুখং

রমণং রতিজনকং ) বন্ধঃ চ বিলোক্য দাত্তঃ  
ভবামঃ ॥ ১৩ ॥

তোমার অলকারিত কুণ্ডল-সুশোভিত  
গণ্ডস্থলালকৃত অধরসুধাঙ্কিত ও সহাস্ত্র-  
নিরীক্ষণযুক্ত বদনমণ্ডল এবং অভয়প্রদ  
ভুজদণ্ডযুগল ও লক্ষ্মীদেবীর প্রধান রতি-  
জনক বন্ধঃস্থল সন্দর্শন করিয়া আমার।  
তোমার দাসী হইতে ইচ্ছা করিয়াছি ॥ ১৩  
রূপগুণ শ্রবণে রুক্মিণ্যাদি আকর্ষণ ॥ ২২ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে দ্বিপঞ্চাশত্তমা-  
ধ্যায়ে সপ্তত্রিংশশ্লোকঃ—

শ্রদ্ধা গুণান্ ভুবনসুন্দর শৃংখতাং তে  
নির্কিঁশ্য কর্ণবিবরৈর্হরিতোহঙ্গতাপম্ ।  
রূপং দৃশ্যং দৃশিমতামখিলাগ-  
লাভং ত্রয়াচ্যুতাবিশতি চিত্তমপত্রপং মে ॥ ১৪ ॥

( হে ) ভুবনসুন্দর ! ( হে ) অচ্যুত ! শৃংখতাং  
( শ্রবণবতাং ) কর্ণবিবরৈঃ নির্কিঁশ্য ( অস্তঃ প্রাপিণ্য )  
অঙ্গতাপং হরতঃ তে ( ভব ) গুণান্ ( সর্বসুখ-  
দতাদীন তে সু একম্ একম্ অপি ) দৃশিমতাং  
( চক্ষুস্ততাং ) দৃশ্যং ( দৃগেত্রিয়াণাম্ ) অখিলাগ-  
লাভং রূপং ( কা স্ত্যবয়বসৌষ্ঠবঞ্চ ) শ্রদ্ধা ( শ্রবণ-  
পথপ্রাপ্তিমাত্রেন ) মে চিত্তম্ অপত্রপং ( লজ্জারহিতং  
সৎ ) ত্বয়ি আশিতি ( আ সম্যক্ অগ্রসন্ধানান্তর-  
রাহিত্যেন বিশতি ময়ং ভবতিঃ ) ॥ ১৪ ॥

হে ভুবনসুন্দর ! হে অচ্যুত ! কর্ণ-  
বিবর দ্বারা শ্রোতুবর্গের অন্তরে প্রবেশ  
করতঃ নিখিলতাপ হরণ করে, তোমার  
সেই গুণসমূহ এবং চক্ষুস্বানুগণের চক্ষু  
যাহাতে সমস্ত মাধুর্য আশ্বাদন করে,  
তোমার তাদৃশ রূপরাশি শ্রবণ করিয়া,  
আমার মন লজ্জা পরিত্যাগ করিয়া  
তোমাতে আবিষ্ট হইতেছে ॥ ১৪ ॥

বংশী-গীতে রূপে হরে লক্ষ্ম্যাতির মন ॥ ২৩

তথাহি মধ্যলীলারাম্ অষ্টমে চতুত্রিংশাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

কস্তান্নভাবস্য ন দেব বিদ্যহে  
তবাজ্বিরেণুস্পর্শাধিকারঃ ।  
যথাহুদা শ্রীললনাচরণং তপো  
বিহার্য কামান্ হৃচিরং ধৃতব্রতা ॥ ১৫ ॥

যোগ্যভাবে জগতের যত নারীগণ ॥ ২৪ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে একোত্রিংশা-  
ধ্যায়ে চত্বারিংশশ্লোকঃ—

কা স্ত্যাদ তে কলপদায়তবেগুগীত-  
সম্মোহিতার্থাচরিতাম্ চলৎ ত্রিলোক্যাম্ ।  
ত্রৈলোক্যাসৌভগমিদঞ্চ নিরীক্ষ্য রূপং  
যদৃগোদ্বিজক্রমমৃগাঃ পুংকান্যবিভ্রন্ ॥ ১৬ ॥

অঙ্গ ( হে রুক্ম ), তে ( ভব ) কলপদায়ত-  
বেগুগীতসম্মোহিতা ( কলানি মধুরানি পদানি  
যস্মিন্ তৎ চ তৎ আয়তং দীর্ঘং মূর্ছিতং চ যৎ  
বেগুগীতং তেন সম্মোহিতা আকৃষ্টচিত্তা সতী )  
ত্রৈলোক্যাসৌভগং ( লোকত্রয়ে সৌভগং সৌন্দর্যা-  
তিশয়যুক্তম্ ) ইদং রূপং চ নিরীক্ষ্য যৎ ( যাত্যায়  
বেগুগীতশ্রবণরূপদর্শনাত্যায়ং ) গোদ্বিজক্রমমৃগাঃ  
পুংকানি অবিভ্রন্ ( অবিভ্রুঃ ) কা ( সা ) জী  
( যা ) আর্থাচরিতাং ( সদাচারায়, স্বধর্মায় ) ন  
চলৎ ॥ ১৬ ॥

হে রুক্ম; যাহা শ্রবণ ও দর্শন করিয়া  
গো, পক্ষী, রুক্ম, ও মৃগ প্রভৃতিও পুল-  
কিত হইয়া থাকে, তোমার মধুরপদযুক্ত  
দীর্ঘমূর্ছিত সেই বেগুগীত দ্বারা আকৃষ্ট-  
চিত্ত হইয়া ও ত্রিলোকসুন্দর সেই এই  
রূপ নিরীক্ষণ করিয়া, ত্রিলোকমধ্যে এমন  
কোন জী আছে, যে স্বধর্ম হইতে বিচ-  
লিত না হয় ? ॥ ১৬ ॥

গুরু তুল্য জীর্ণগণের বাৎসল্যে আকর্ষণ ।  
দাস্য সখ্যাদিক ভাবে পুরুষাদিগণ ॥  
পক্ষী যুগ বৃক্ষ লতা চেতনাচেতন ।  
প্রোমে মত্ত করি আকর্ষয়ে ক্লেশগুণ ॥২৫॥

তথাহি তদৈব—

ত্রৈলোক্যসৌভগমিদঞ্চ নিরীক্ষ্য রূপং ।  
বদগোষিজক্রমযুগাঃ পুলকান্য বিভ্রন্ ॥ ১৭ ॥

হরি শব্দের নানা অর্থ দুই মুখ্যতম ।  
সর্পি অমঙ্গল হরে, প্রেম দিএই হরে মন ॥  
যৈছে তৈছে যোই কোই করয়ে স্মরণ ।  
চারিবিধ পাপ তার করে সংহারণ ॥ ২৬ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে চতুর্দশা-  
ধ্যায়ৈ অষ্টাদশশ্লোকঃ—

বধাঘিঃ স্তম্ভদ্বার্জিঃ করোত্যোথাংসি তদ্বদাৎ ।  
তথা মদ্বিষয়া ভক্তিরূপৈবনাংসি কৃৎসনশঃ ॥ ১৮ ॥

( হে উদ্ধব ) যথা স্তম্ভদ্বার্জিঃ ( স্তম্ভদ্বা-  
র্জিঃ বদ্য সঃ ) অঘিঃ এথাংসি ( কাষ্ঠানি ) তদ্বদাৎ  
করোতি তথা মদ্বিষয়া ভক্তিঃ কৃৎসনশঃ ( সর্পানি )  
এনাংসি ( পাপানি ) প্রারূপার্থাস্থানি নাশয়তি ॥১৮॥

প্রাজ্জ্বলিত অগ্নি যেমন কাষ্ঠরাশিকে  
ভস্মীভূত করে, হে উদ্ধব ! সেইরূপ  
মদ্বিষয়িনী ভক্তি সমস্ত পাপরাশিকে  
নিঃশেষে দহন করে ॥ ১৮ ॥

তবে করে ভক্তিবাদক কর্ম্ম অবিদ্যা নাশ ।  
শ্রবণাদ্যের ফল প্রোমা করয়ে প্রকাশ ॥  
নিষ্ক গুণে তবে হরে দেহেহিঁদ্রয় মন ।  
ঐছে ক্রপালু ক্লেশ, ঐছে তাঁর গুণগণ ॥২৭॥  
চারি পুরুষার্থ ছাড়ায়, গুণে হবে মন ।  
হরি শব্দের এই মুখ্যার্থ করিল লক্ষণ ॥  
'চ' 'অপি' দুই শব্দ হয়ত অব্যয় ।

যেই অর্থে লাগাইয়ে সেই অর্থ কয় ॥২৮॥

তথাপি 'চ' কানে কহে মুখ্য অর্থ সাত ॥২৯॥

তথাহি বিশ্বপ্রকাশে—

চাষাচরে সমাহারেহন্যোন্ম্যার্থে চ সমুচ্চরে ।  
যন্ত্রান্তরে তথা পাদপুরণেহ্যব্যধারণে ॥ ১৯ ॥

চ শব্দের অর্থ অঘাচয় ( অনুগম্য  
সমূহার্থে ), সমাহার ( একীকরণ ), অশ্চো-  
ন্যার্থ ( পরস্পরার্থ ), সমুচ্চয় ( পূর্ব  
কথাকে পরবাক্যে অনুবর্তিত করা ),  
যন্ত্রান্তর ( অন্য যন্ত্র ), পাদপুরণ ( বাক্যের  
নূনতা পরিহার ), এবং অবধারণে  
( নিশ্চয়ার্থে ) এই সাতটি ॥ ১৯ ॥

'অপি' শব্দের মুখ্য অর্থ সপ্ত বিখ্যাত ॥৩০॥

তথাহি বিশ্বপ্রকাশে—

অপি সম্ভাবনাশ্রমণকাগর্হাসমুচ্চরে ।  
তথা যুক্তপদার্থেষু কামাগারক্রিয়ায় চ ॥২০॥

অপি শব্দের অর্থ সম্ভাবনা, শ্রমণ,  
শকা, নিন্দা, সমুচ্চয়, যুক্তপদার্থ, ও কামা-  
চারক্রিয়া ॥ ২০ ॥

এই একাদশ পদের অর্থ নির্ণয় ।  
এবে শ্লোকার্থ কহি যাহা যে লাগয় ॥৩১॥  
ব্রহ্ম শব্দের অর্থতত্ত্ব সর্বব্রহ্মতম ।  
স্বরূপ ঐশ্বর্য্য করি নাহি য়ার সম ॥ ৩২ ॥

তথাহি বিষ্ণুপুরাণে প্রথমাংশে ষাটশাধ্যায়ে  
সপ্তপঞ্চাশত্তমশ্লোকঃ—

বৃহস্বাদবৃংহণত্যাচ্চ যৎ ব্রহ্ম পরমং বিদ্বঃ ॥ ২১ ॥

বৃহস্বাৎ বৃংহণত্যাৎ চ যৎ ব্রহ্ম পরমং বিদ্বঃ ॥২২॥

সর্বব্যাপিত্ব ও সকলের সংবন্ধকত্ব  
হেতু ব্রহ্ম নামে কথিত হইল ॥ ২১ ॥

সেই ব্রহ্ম শব্দে কহে স্বয়ং ভগবান্ ।  
অদ্বিতীয় জ্ঞান যাহা বিদ্ব নাহি আন ॥৩৩॥  
তথাহি আদিলীলারং দ্বিতীয়ে চতুর্থাঙ্কস্থত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

বদন্তি তত্ত্ববিদগুণং বদন্তানমবয়ম্ ।

ব্রহ্মেতি পরমাশ্বেতি ভগবানিতি শকাতে ॥২২॥

সেই অক্ষয়তন্ত্র কৃষ্ণ স্বয়ং ভগবান্ ।

ধাঁহা বিষ্ণু কাশ্যত্রয়ে বস্তু নাহি আন ॥৩৪

তথাহি আদিলীলায়াং প্রথমে অরোবিশোকধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

অহমেবাসমেবাগ্রে নানাদ্ যৎ সদস্যং পরম্ ।

পশ্চাদহং যদেতচ্চ বোহবশিষ্যোত সোহস্মাহম্ ॥২৩৭

আত্মা শব্দে কহে কৃষ্ণ ব্রহ্মস্বরূপ ।

সর্বব্যাপক সর্বসাক্ষী পরম স্বরূপ ॥৩৫॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে দ্বিতীয়াধ্যায়ে  
ত্রিচত্বারিংশশ্লোকে ভাবার্থদীপিকারায় তন্ত্রবচনম্—

আততত্চাচ্চ মাতৃত্বাদাত্মাহি পরমো হরিঃ ॥২৪৮

আততত্চাৎ ( সর্বব্যাপকত্বাৎ ) মাতৃত্বাৎ ( সর্ব-  
জাতৃত্বাৎ ) চ আত্মা হি পরমঃ হরিঃ ॥ ২৪ ॥

সর্বব্যাপকত্ব ও সর্বজাতৃত্ব হেতু হরিঃ  
পরম আত্মা স্বরূপ ॥ ২৪ ॥

সেই কৃষ্ণ প্রাপ্তি হেতু ত্রিবিধ সাধন ।

জ্ঞান যোগ ভক্তি তিনের পৃথক্ লক্ষণ ॥

তিন সাধনে ভগবান্ তিন স্বরূপে ভাসে  
ব্রহ্ম পরমাত্মা ভগবন্তে ত্রিবিধ প্রকাশে ॥৩৬

তথাহি আদিলীলায়াং দ্বিতীয়ে চতুর্থাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

বদন্তি তত্ত্ববিদস্তত্বং যজ্জ্ঞানমধ্বম্ ।

ব্রহ্মৈতি পরমাশ্চেতি ভগবানিতি শস্যতে ॥২৫৭

ব্রহ্ম আত্মা শব্দে যদি কৃষ্ণকে কহয় ।

রুচিরন্ত্যে নির্কিংশেষ অন্তর্ধামী কয় ॥

জ্ঞানমার্গে নির্কিংশেষ ব্রহ্ম প্রকাশে ।

যোগমার্গে অন্তর্ধামি স্বরূপেতে ভাসে ॥৩৭

রাগভক্তি বিধিভক্তি হয়ে দুই রূপ ।

স্বয়ং ভগবন্তে ভাগবন্তে প্রকাশ দুইরূপ ॥৩৮

রাগভক্ত্যে ব্রহ্মে স্বয়ং ভগবান্ পায় ॥৩৯॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং অষ্টমে একোনপঞ্চা-  
শতনামাঙ্কধৃত-শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

নাসং স্মথাপো ভগবান্ মেষ্টিগাং গোপিকাসুতঃ

জ্ঞানিনাঞ্চাত্মত্বানাং যথা ভক্তিমতামিহ ॥২৬৭

বিধিভক্ত্যে পার্যদদেহে বৈকুণ্ঠকে যায় ॥৪০

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে পঞ্চদশাধ্যায়ে  
পঞ্চবিংশশ্লোকঃ—

যচ্চ ব্রহ্মস্থানিমিষামৃষভামুভূত্যা

দূরেযমা হ্যপরি নঃ স্পৃহনীয়শীলাঃ ।

ভর্কু মিত্বঃ স্ময়শসঃ কথনামুরাগ-

বৈকুণ্ঠ্যাবাপ্কলয়া পুলকীকৃতান্নাঃ ॥২৭৭

অনিমিষামৃষভামুভূত্যা ( অনিমিষাং কালান-  
ধীনানাম্ ঋষভঃ শ্রেষ্ঠঃ হরিঃ তস্যা অমুভূত্যা )  
দূরেযমাঃ ( দূরে যমঃ যেষাং ) স্পৃহনীয়শীলাঃ ( স্পৃহ-  
নীয়ম্ এব শীলং যেষাং তে ) ভর্কুঃ ( হরেঃ যৎ )  
স্ময়শসঃ ( ভক্ত ) মিত্বঃ কথনামুরাগবৈকুণ্ঠ্যাবাপ্কলয়া  
( কথনে যঃ অমুরাগঃ তেন বৈকুণ্ঠ্যং বৈবশ্যং তেন  
বাপ্কলয়া তয়া সহ ) পুলকীকৃতান্নাঃ ( পুলকী-  
কৃতম্ অন্নং যেষাং তে ) চ নঃ ( অস্মাকম্ ) উপরি  
( স্থিতং ) যৎ ( বৈকুণ্ঠে ) ব্রহ্মস্থি ॥ ২৭ ॥

হে দেবগণ ! যাঁহারা কদাচ কাল  
প্রভাবের আয়ত্ত হন না, শ্রীহরির সেবা  
করতঃ যমকে দূরে উৎসারিত করিয়া-  
ছেন, যাঁহাদের কারুণ্যাদি স্বভাব আমা-  
দের বাঞ্ছনীয় এবং যাঁহারা পরম্পর নিজ-  
প্রভু ভগবানের উপাদেয় যশোরামি  
কীর্তনে অনুরাগভরে বিবশ হইয়া, অশ্রু  
সহিত পুলক ধারণ করেন, তাঁহারা  
আমাদের উপস্থিত বৈকুণ্ঠধামে গমন  
করিতে পারেন ॥ ২৭ ॥

সেই উপাসক হয় ত্রিবিধ প্রকার ।

অকাম, সর্বকাম, মোক্ষকাম আর ॥৪১॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং ষাণ্ডিশে চতুর্দশাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

অকামঃ সর্বকামো বা মোক্ষকাম উদারধীঃ ।

তীত্রেণ ভক্তিযোগেন যজ্ঞেত পুংকং পরম্ ॥ ২৮ ॥

বুদ্ধিমানের অর্থ বুদ্ধি বিচারক করতঃ  
 নিজকাম লাগি তাকে ক্রমকরে ভজক।  
 তত্ত্ববিশু কোণন মাধমে দিতে মারেকল  
 নব মল দেন তত্ত্ব অচর প্রবল।  
 অজ্ঞানভক্ততার অন্য সাধন।  
 অতএব হস্তিত্ত্ব বুদ্ধিমান জন ॥ ৪২ ॥

তথাহি পিত্তারঃ পদমাধ্যমে বোধ্যশ্লোকঃ—  
 চতুর্নিধা ভজতে মাং জনাঃ স্কন্ধতিনোহম্বুর্ন।  
 অর্থার্থী কিজ্ঞানুর্থার্থী জ্ঞানী চ ভরতর্ভত ॥ ২৯ ॥

(হে) ভরতর্ভত। (হে) অম্বুর্ন। স্কন্ধতিনঃ  
 জনাঃ মাং ভজতে (তে চ) চতুর্নিধাঃ, সার্ভঃ  
 (শক্রকোষাভ্যাসংগতঃ তদ্ভিমাশেচ্ছুঃ গজেনাদিঃ)।  
 কিজ্ঞানুঃ (বিবিধকামস্বরূপজ্ঞানেনেচ্ছুঃ শৌনকাদিঃ)।  
 অর্থার্থী (রাষ্ট্রাদিসম্পদিস্ছুঃ ক্রবাদিঃ)। জ্ঞানী  
 (শেবেশ্বন স্বাস্থ্যানং শেবেশ্বন পরমাশ্বানক মাং  
 জাতবানু শুবাদিঃ) চ ॥ ২৯ ॥

হে ভরতশ্রেষ্ঠ অর্জুন। সার্ভ (বিপদা-  
 পর) কিজ্ঞানু (তত্ত্বজ্ঞানেচ্ছু) অর্থার্থী  
 (ধনাদিপ্রার্থী) এবং জ্ঞানী এই চতুর্নিধ  
 পুরুতি লোক সকল আমাকে ভজনা  
 করেন ॥ ২৯ ॥

সার্ভ, অর্থার্থী, দুই সকামের ভিত্তর গণি।  
 কিজ্ঞানু, জ্ঞানী, দুই মোক্ষকাম মানি ॥ ৪০ ॥  
 এই চারি পুরুতি কর মহাজ্ঞান্যবান।  
 তত্ত্বৎ কামাদি হ্রাতি হর শুকতত্ত্বিমান ॥ ৪১ ॥  
 সাধুসক রূপন কিরা কৃষ্ণের রূপার।  
 কামাদি পূরণ হ্রাতি শুকতত্ত্বি পাৱ ॥ ৪২ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতঃ প্রথমকণ্ডে পদমাধ্যমে  
 প্রথমশ্লোকঃ—  
 সাকামকামসদো বাহুঃ সোংসবতে বৃকঃ।  
 বিবিধার্থঃ যোগে বহু পুরুতর্ভতঃ সোংসবতে ॥ ২৯ ॥  
 পদমাধ্যমে (সোংসবতে) বৃকঃ (সোংসবতে)

সাকামকামসদো বাহুঃ সোংসবতে বৃকঃ।  
 বিবিধার্থঃ যোগে বহু পুরুতর্ভতঃ সোংসবতে ॥ ২৯ ॥

সংসক প্রভাবে যিনি পুরাতন  
 দুঃসজ পরিভ্রাম করিয়াছেন, তিনি  
 সাধুগণ কর্তৃক কীর্ত্যমান কৃষ্ণের ভক্তক-  
 বশঃ একবার গ্রহণ করিরা, আর সংসক  
 ত্যাগ করিতে সক্ষম হন না ॥ ৩০ ॥

দুঃসজ কহি কৈতব আত্মবখনা।  
 কৃষ্ণ কৃকতক্তি বিসু অস্তান্ত কামনা ॥ ৪০ ॥

তথাহি আধিনীলারঃ প্রথমে সপ্তত্রিংশোক্ত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

ধর্মঃ প্রোচ্ছিতকৈতবোহত্র  
 পরমো নির্ধংসরণাৎ সত্যং

বেদ্যং বাস্তবমত্র বস্ত শিবং তাপজরোগানু ননম্।  
 শ্রীমদ্ভাগবতে মহামুনিব্রুতে কিংবা পঠেরীশ্বরঃ  
 সত্যো হন্যাবকথ্যতেহত্র  
 কৃতিভিঃ ওশ্রয়ুতিশুৎস্বনাৎ ॥ ৩১ ॥

‘প্র’ শব্দে মোক্ষবাঞ্ছা কৈতব প্রধান।  
 এই শ্লোকে স্বামী করিয়াছেন ব্যাখ্যান ॥  
 সক্ষম ভক্ত অজ্ঞ জানি দয়ালু ভগবান।  
 স্বচরণ দিঞা করে ইচ্ছার পিধান ॥ ৪১ ॥

তথাহি মহাধীলারঃ দ্বাবিংশে পঞ্চদশোক্ত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

সত্যং মিত্যজ্যবিতমর্ষিতো বৃণাৎ  
 মৈবার্থদো বৎ পুনর্মথিতা বক্তঃ।  
 বরং বিধতে ভবতানমিত্যজ্য-  
 মিচ্ছাপিধানং নিষ্কামপারবম্ ॥ ৩১ ॥

সাধুগণ কৃষ্ণরূপে ভক্তির সূত্রান।  
 এই ভিত্তর পর ভক্তদের কামের ক্রমত্যাগ ॥ ৪১ ॥  
 আনন্দ কৃষ্ণের ভক্ত হইয়াছেন কৃষ্ণের  
 কৃষ্ণরূপে ভক্ত হইয়াছেন কৃষ্ণের

মোক শাসিতা স্মৃতি এই কবির আত্মন  
 এনে কবি মোকের মূল্য পূরণ করি। ১৪।  
 জ্ঞানদানে উপাসক হইত প্রকার।  
 কেবল ব্রহ্ম-উপাসক সৌন্দর্যাকালী আর।  
 কেবল ব্রহ্ম-উপাসক তিন তের হয়।  
 সাধক ব্রহ্মস্বর আদি প্রাপ্তকলর। ১০।  
 ভক্তি বিহু কেবল জ্ঞানে মুক্তি নাহি হয়।  
 ভক্তি সাধন করি বেই প্রাপ্তকলর।  
 ভক্তির স্বভাব ব্রহ্ম হৈতে করে আকর্ষণ।  
 দিব্য দেহ দিগ্গা করার কৃষ্ণের ভজন।  
 ভক্তদেহ পাইলে হয় গুণের-স্মরণ।  
 গুণাক্রষ্ট হঞা করে নির্মল ভজন। ১১।

তথাহি শঙ্করভাষ্যতমোঃ—

মুক্তা অপি লীগরা বিপ্রহং কৃতা ভগবতঃ ভক্তন্তে ॥৩৭॥  
 জীবমুক্ত মুনিগণও ব্রহ্মানন্দ হইতে  
 অধিকতম আনন্দ অনুভব করিবার  
 নিমিত্ত লীলারশতঃ পার্শ্বদ দেহ ধারণ  
 করতঃ শ্রীকৃষ্ণের সেবা করিয়া থাকেন। ৩৫  
 জন্ম হৈতে শুক সনকাদি হয় ব্রহ্মজর।  
 কৃষ্ণগুণাক্রষ্ট হঞা কৃষ্ণেরে ভজন।  
 সনকাদ্যে কৃষ্ণরূপা সৌরভে হরে মন।  
 গুণাক্রষ্ট হঞা করে নির্মল ভজন। ১২।

তথাহি মধ্যলীলারঃ সপ্তমশ্চে মনমাক্ষত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতভাষ্যতমঃ—

ভক্ত্যবিমলমরুত পদ্যবিম-

কিত্তমিত্তমুগণীবরনখায়ুঃ।

স্বপ্নগতঃ শবিরেধ চকার ভেদাৎ

স্নানোভবকরুণামপি চিত্তভবোঃ ॥ ৩৪ ॥

ব্যান-কপার ভক্তদেহের লীলাদি প্রবণ।  
 কৃষ্ণগুণাক্রষ্ট হঞা করে সনক সনক। ৩৩।

তথাহি ভক্ত্যবিমলমরুত পদ্যবিম-

কিত্তমিত্তমুগণীবরনখায়ুঃ

হয়েও শাসিতা স্মৃতি এই কবির আত্মন  
 এনে কবি মোকের মূল্য পূরণ করি। ১৪।  
 জ্ঞানদানে উপাসক হইত প্রকার।  
 কেবল ব্রহ্ম-উপাসক সৌন্দর্যাকালী আর।  
 কেবল ব্রহ্ম-উপাসক তিন তের হয়।  
 সাধক ব্রহ্মস্বর আদি প্রাপ্তকলর। ১০।  
 ভক্তি বিহু কেবল জ্ঞানে মুক্তি নাহি হয়।  
 ভক্তি সাধন করি বেই প্রাপ্তকলর।  
 ভক্তির স্বভাব ব্রহ্ম হৈতে করে আকর্ষণ।  
 দিব্য দেহ দিগ্গা করার কৃষ্ণের ভজন।  
 ভক্তদেহ পাইলে হয় গুণের-স্মরণ।  
 গুণাক্রষ্ট হঞা করে নির্মল ভজন। ১১।

নবযোগেশ্বর জন্ম হৈতে সাধক জ্ঞানী।  
 বিধি শিব নারদমুখে কৃষ্ণ গুণ শুনি।  
 গুণাক্রষ্ট হঞা করে কৃষ্ণের ভজন।  
 একাদশকণ্ডে তার ভক্তিবিবরণ। ১৩।

তথাহি ভক্তিরশাস্ত্রমিত্তো পশ্চিমবিভাগে  
 প্রথমলহরীয়াঃ সপ্তমশ্লোকঃ—

অক্লেপাৎ কমলভূবঃ প্রবিত্ত গোষ্ঠীঃ  
 কুর্ত্তঃ শ্রুতিশিরসাঃ শ্রুতিঃ শ্রুতজাঃ।  
 উত্তমং বহুপুরসদস্যায় রতং  
 যোগীজাঃ পুলকভূতো নবাণ্যাপুঃ ॥ ৩৬ ॥  
 শ্রুতিজাঃ (বেদপারগাঃ) সব যোগেশ্বরাঃ  
 (ঋততনরাঃ) কমলভূবঃ (ব্রহ্মণঃ) অক্লেপাৎ  
 গোষ্ঠীঃ (সভাঃ প্রবিত্ত) শ্রুতিশিরসাঃ শ্রুতিঃ  
 (শ্রবণঃ) কুর্ত্তঃ অপি বহুপুরসদস্যায় (বারবার  
 গতং) পুলকভূতঃ (সভাঃ) উত্তমং রতম্ (উৎ  
 কর্ষাম্) অবাণুঃ ॥ ৩৬ ॥

পঞ্চবিধ ক্লেশ-বঞ্চিত ব্রহ্মার সন্তান  
 বেদজ ঋততনর সব যোগেশ্ব উদ্বিগ্ন  
 হইরা উপনিষৎ শ্রবণ করতঃ মর জ্ঞান  
 পুলকাক হইরা শ্রীকৃষ্ণের সাক্ষী  
 অশির রত প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। ৩৬।

মোক্ষকালী জ্ঞানী হর তিন পরকার  
 মুমুকু জীবসমস্ত প্রাপ্তবরণ আর  
 মুমুকু অর্পণে মনের সাধনাবিত্ত  
 মুমুকু অর্পণে মনের সাধনাবিত্ত

তথাহি শ্রীমদ্ভগবতে প্রথমোক্তে বিতীর্ণাধ্বায়ে  
বক্তবিশেষোক্তঃ—

মুমুক্শো যোরুপানি হিবা কৃতপতীমব ।

নারায়ণকলাঃ শান্তা ভজতি হৃদয়ৈঃ ॥ ৩৭ ॥

অর্থ মুমুক্শঃ ( জনাঃ ) অনম্ভবঃ ( সন্তাঃ )  
যোরুপানি কৃতপতীনি হিবা শান্তাঃ নারায়ণকলাঃ  
ভজতি হি ॥ ৩৭ ॥

মুমুক্শগণ দেবভাস্তরের অনিন্দক হওতঃ  
ধোরুপভাব পিতৃগণ, ভৃতগণ এবং প্রজা-  
পতি প্রভৃতিকে ত্যাগ করতঃ শান্ত  
নারায়ণমূর্তির উপাসনা করেন ॥৩৭॥

সেই সবেম সাধুসঙ্গে গুণ ক্ষুরায় ।  
কৃষ্ণভজনেচ্ছা করায়, মুমুক্ষা ছাড়ায় ॥৫৬॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্দৌ পশ্চিমবিভাগে  
বিতীর্ণমহর্ষ্যাং বটীতমাক্ষতহরিতিক্তিসুধোধনবচনম্—

অহো মহাত্মন বহুবোবহুটো-  
হুপোকেন ভাতোব ভবো গুণেন ।  
সংগমমাখ্যেন সুধাবহেন  
কৃত্যভ নো যেন কৃশা মুমুক্ষা ॥ ৩৮ ॥

( হে ) মহাত্মন ! অহো, এষ ভবঃ ( জন্মঃ )  
বহুবোবহুটঃ অপি সুধাবহেন সংগমমাখ্যেন একেন  
কণেন ভাতি যেন ( গুণেন ) অভ্যনঃ ( অমাকং )  
মুমুক্ষা ( মুক্তীচ্ছা ) কৃশা ( করী ) কৃত্য ॥ ৩৮ ॥

শৌনক কহিলেন, হে মহাত্মন ! কি  
আশ্চর্য্য ! এই সমুদ্রজন্ম বহু দোবে ছুট  
বইলেও এক মুমুক্শনক সংস্করণ গুণ  
দ্বারা শোভা পাইতেছে; যে গুণ অন্য  
আমাদের মুক্তীচ্ছাকে কীর্ণ করিল ॥৩৮॥

সুধাবহের মনে শৌনকাদি মুনিগণ ।  
মুমুক্ষা ছাড়িয়া কেলা কলেক ভজন ।  
কৃষ্ণক ভজনে কেহ কলেক ভজন ।  
মুমুক্ষা ছাড়িয়া অঙ্গভজনে ভজন ॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিন্দৌ পশ্চিমবিভাগে  
প্রথমমহর্ষ্যাং জ্যৈষ্ঠমহর্ষ্যাং—

অমিন্ মুমুক্শমুক্তৌ পরমাত্মনি বটীপতনে স্ফু হতি ।  
আত্মারামতরা মে বৃথা গতৌ বত চিরং কালঃ ॥৩৯॥  
বৃক্ষিপতনে ( বৃক্ষপত্নী ) মুমুক্শমুক্তৌ অমিন্  
( শ্রীকৃষ্ণে ) পরমাত্মনি স্ফু হতি ( সতি ) আত্মারামতরা  
( ইত্যত্মানেন ) যে ( মম ) চিরং কালঃ বৃথা  
গতঃ ॥ ৩৯ ॥

দ্বারকানগরীতে আনন্দখনমূর্তি পর-  
মাত্মা শ্রীকৃষ্ণ ক্ষুরিত থাকিতে, হায় !  
'আত্মারাম' এই অভিমান প্রযুক্ত আমার  
চিরকাল বৃথা গত হইল ॥ ৩৯ ॥

জীবমুক্ত অনেক, সেহ দুই ভেদ জানি ।  
ভক্ত্যে জীবমুক্ত, জ্ঞানে জীবমুক্ত মানি ॥  
ভক্ত্যে জীবমুক্ত যেই গুণে কৃষ্ণ ভজে ।  
শুদ্ধজ্ঞানে জীবমুক্ত অপরাধে মজে ॥৫৮॥

তথাহি মধ্যলীলারামে ষাষ্টিংশে দশমাক্ষত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

বেহন্তেহরবিন্দ্যক্ বিমুক্তমানিন-  
দ্ব্যন্ততাবাদবিগুরুবুধঃ ।  
আকুহ কৃচ্ছ্রেণ পরং পদং ততঃ  
পতন্ত্যধো নাদৃতমুদবজ্জ্বরঃ ॥ ৪০ ॥

তথাহি মধ্যলীলারামে অষ্টমে অষ্টমাক্ষতগীতা-  
বচনম্—

ব্রহ্মভূতঃ প্রেরাত্মা ন শোচতি ন কাঙ্কতি ।  
সমঃ সর্কেষু ভূতেষু মচক্রিং সততে পরাম্ ॥ ৪১ ॥

তথাহি মধ্যলীলারামে দশমো বটীকৃষ্ণভবিষয়ল-  
বচনম্—

অবেতবীণীপথিকেরপাতাঃ  
বানকসিংহালনলকরীকী ।  
পর্শেন কেমাসি বহং হর্শেন  
বাণীকো গোপবধিবীর ॥ ৪২ ॥

অকিঞ্চনো গণেশমুখ্যঃ সিন্ধো বৈশ্যপান  
কৃষ্ণগণাভিহুয়া অকৃত কৃষ্ণপাণি ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দ্বিতীয়স্কন্ধে দশমাধ্যায়ৈ  
ষষ্ঠোঃশ্লোকঃ—

মুক্তির্হি স্বাভাবরূপঃ স্বরূপেণ ব্যবস্থিতিঃ ॥ ৪৩ ॥

অন্যথারূপম্ (অবিদ্যায়া অধ্যাত্মম্ অজ্ঞত্বাদিকং)  
স্থিত্ব স্বরূপেণ ব্যবস্থিতিঃ ( স্বরূপসাক্ষাৎকারঃ )  
মুক্তিঃ ॥ ৪৩ ॥

অবিদ্যা কর্তৃক আরোপিত অজ্ঞত্বাদি  
পরিভ্রাণ করিয়া স্বরূপলাভ দ্বারা ভগবৎ-  
সাক্ষাৎকারই মুক্তি ॥ ৪৩ ॥

কৃষ্ণবহিস্মুখদোষে মায়া হৈতে ভয় ।  
কৃষ্ণোন্মুখভক্তি হৈতে মায়া মুক্ত হয় ॥৬০॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং বিংশে চতুর্দশাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

ভয়ং দ্বিতীয়াভিনিবেশতঃ স্ত্রা-  
দীশাদপেতস্ত্র বিপর্যয়োহস্থিতিঃ ।  
তন্নায়রাতো বৃধ আভজ্ঞেং তং  
ভক্ত্যকমেশং গুরুদেবতায়াম্ ॥ ৪৪ ॥

ভক্তি বিনা মুক্তি নহে, ভক্ত্যে মুক্তি হয় ॥৬১

তথাহি ভট্টকব পঞ্চদশাঙ্কধৃতগীতাবচনম্—  
দৈবী হেবা গুণময়ী মম মায়া হ্রতয়া ।  
মামেব যে প্রপদ্যন্তে মায়ামেতাং তরন্তি তে ॥৪৫॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং দ্বাবিংশে ষষ্ঠাঙ্কধৃতশ্রীমদ্ভা-  
গবতবচনম্—

শ্রেয়ঃ স্ফুটিং ভক্তিমুদত্ত ত্তে বিত্তো  
ক্রিশ্রুস্তি যে কেবলবোধলক্ষয়ে ।  
তেষামসৌ ক্লেশল এব শিষ্যতে  
নাভ্রদৃষথা স্থলত্বাব্যবতিনামু ॥ ৪৬ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং দ্বাবিংশে দশমাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

যেহনোহরবিন্দ্যাক বিমুক্তমানিন-  
দ্ব্যন্তত্বাবাদবিশুদ্ধবুদ্ধয়ঃ ।  
আক্লম্ব কৃচ্ছ্রেণ পরং পদং ততঃ  
পতন্ত্যথো নাদৃত্তমুদত্তমুয়ঃ ॥ ৪৭ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং দ্বাবিংশে অষ্টমাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

মুখবাহুকপাদেভ্যঃ পুঙ্কষত্শ্রনৈঃ সহ ।  
চত্বারো জঞ্জিরে বর্ণা শুনৈর্বিপ্রানয়ঃ পৃথক্ ॥৪৮

ভক্ত্যে মুক্তিপাইলে, অবশ্য কৃষ্ণেরে ভজয় ॥৬২

তথাহি শঙ্করভাষ্যধৃতম্—  
মুক্তা অপি লীলয়া বিগ্রহং  
কৃষা ভগবন্তং ভজন্তে ॥ ৪৯ ॥

এই ছয় আত্মারাম কৃষ্ণকে ভজয় ।  
পৃথক্ পৃথক্ চকার ইহা অপির অর্থ কয় ॥৬৩

‘আত্মারামাশ্চ অপি’করে কৃষ্ণে অহৈতুকীভক্তি  
‘মুদয়ঃ সন্ত ইতি’ কৃষ্ণ-মননে আসক্তি ॥৬৪  
‘নিগ্রহ’স্থা’ অবিদ্যাহীন কেহো বিধি হীন ।  
যাহা যেই যুক্ত সেই অর্থের অধীন ॥৬৫॥

চ শব্দে করি যদি ইতরেতর অর্থ ।  
আর এক অর্থ কহে পরম সমর্থ ॥  
আত্মারামাশ্চ আত্মারামাশ্চ কহি বার ছয় ।  
পঞ্চ আত্মারাম, ছয় চকার লুপ্ত হয় ॥

এক আত্মারাম শব্দ অবশেষ রহে ।  
এক আত্মারাম শব্দে ছয় জন কহে ॥৬৬॥

তথাহি সিন্ধাস্তকৌমুদ্যাম্ অজন্তপুংলিঙ্গ  
প্রকরণে—

“স্বরূপাণামেকশেষ একবিভক্তৌ”  
উক্তার্থানামপ্রয়োগঃ ।  
রামশ্চ রামশ্চ রামশ্চ রামা ইতিবৎ ॥ ৫০ ॥

একবিভক্তৌ স্বরূপাণামেকশেষঃ (যানি সনান-  
রূপানি দৃষ্টানি তেষাম্ এক এব শিষ্যতে) উক্তার্থা-  
নাম্ অপ্রয়োগঃ রামাঃ ইতিবৎ ॥ ৫০ ॥

একশেষ সমাসে স্বরূপ সকলের এক-  
শেষ এবং এক বিভক্তিতে যাহাদের অর্থ  
উক্ত হয়, তাহাদের অপ্রয়োগ হইয়া  
থাকে । যেমন “রামশ্চ রামশ্চ রামশ্চ”  
এই তিনের একশেষ “রামাঃ” ॥৫০॥



তবে যৌচকাবে সেই সমুচ্চয়কয় ।  
 'আজ্ঞারামাশচ মুনয়শচ' কৃষ্ণকে ভজয় ॥৬৭  
 'নিগ্রহা অপি' এই অপিসম্ভাবনে ।  
 এই সাত্ত্ব অর্থ প্রথম করিল ব্যাখ্যানেন ॥৬৮  
 অন্তর্যামি উপাসক আজ্ঞারাম কয় ।  
 সেই আজ্ঞারাম যোগী দুই ভেদ হয় ॥  
 নগর্ভ, নিগর্ভ, হয় এই দুই ভেদ ।  
 এক এক তিন ভেদে ছয় বিভেদ ॥৬৯

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দ্বিতীয়স্কন্ধে দ্বিতীয়াধ্যায়ে  
 অষ্টমশ্লোকঃ—

কেচিং স্বদেহাস্তর্হদয়াবকাশে  
 প্রাদেশমাত্রঃ পুরুষঃ বসন্তম্ ।  
 চতুর্ভূজং কল্পরথাদেশম্—  
 গদাধরং ধারণয়া স্মরন্তি ॥ ৫১ ॥

কেচিং স্বদেহাস্তর্হদয়াবকাশে বসন্তং প্রাদেশ-  
 মাত্রং চতুর্ভূজং কল্পরথাদেশম্গদাধরং পুরুষঃ  
 ধারণয়া স্মরন্তি ॥ ৫১ ॥

কতিপর মহাত্মা স্বদেহের অভ্যন্তরে  
 হৃদয়াকাশে প্রাদেশ ( শঙ্কনী ও অক্ষুঠের  
 বিস্তার পর্য্যন্ত ) পরিমিত পদ্ম, চক্র, শঙ্খ  
 ও গদাধারী চতুর্ভূজ পুরুষকে ধারণায়  
 স্মরণ করিয়া থাকেন ॥ ৫১ ॥

তথাহি তৃতীয় তৃতীয়স্কন্ধে অষ্টাবিংশাধ্যায়ে—

এবং হরৌ ভগবতি প্রতিলকভাবে  
 ভক্ত্যা ভবকৃদয় উৎপুলকঃ প্রমোদাৎ ।  
 ঔৎকর্থাবাপ্পকলয়া মুহুর্দমান-  
 স্তচ্চাপি চিত্তবিশিষ্টং শনৈকৈর্বিযুক্তৈঃ ॥ ৫২ ॥

এবং ( ধ্যানমার্গেণ ) ভগবতি হরৌ প্রতিলক-  
 ভাবঃ ভক্ত্যা ( শ্রবণাদিনা ) ভবকৃদয়ঃ ( ভবৎ কৃদয়ং  
 বৃত্ত ) প্রমোদাৎ উৎপুলকঃ ( উদ্গতানি পুলকানি  
 বৃত্ত ) ঔৎকর্থাবাপ্পকলয়া মুহুঃ অর্দমানঃ ( আনন্দ  
 সংপ্লেবে নিমজ্জ্যমাণঃ ) চ তৎ ( ছগ্রহস্ত ভগবতঃ  
 গ্রহণে ) বড়িশং ( মন্ত্রবেধনমিব উপায়ভূতং )

চিত্তং ( ধেরাৎ ) শনৈকৈঃ বিযুক্তৈঃ ( ভক্তারণে  
 শিথিলপ্রবৃত্তঃ ভবতি ) ॥ ৫২ ॥

এইরূপ ধ্যানমার্গ দ্বারা যিনি হরিতে  
 ভাব লাভ করিয়াছেন, শ্রবণ, কীর্তনাদিতে  
 যাহার চিত্ত দ্রবীভূত হয়, প্রেম হেতু  
 যাহার অঙ্গ পুলকিত হইয়া উঠে, এবং  
 উৎকর্থাজনিত অশ্রুৎকলা দ্বারা যিনি  
 আনন্দসংপ্লেবে নিমগ্ন হয়েন, তাহার তাদৃশ  
 চিত্ত বড়িশও ক্রমে ক্রমে ধের বস্তু হইতে  
 বিযুক্ত ( শিথিল ) হইয়া থাকে ॥ ৫২ ॥

যোগারুরুক্ষু, যোগারুঢ়, প্রাণুদিক্শি আর ।  
 এই তিন ভেদে হয় ছয় প্রকার ॥৭০॥

তথাহি গীতায়াং ষষ্ঠাধ্যায়ে তৃতীয়াধিশ্লোকৌ—

আরুরুক্ষোমূর্নৈর্যোগে কর্ম কারণমুচ্যতে ।  
 যোগারুঢ়স্ত তত্ত্বৈব শমঃ কারণমুচ্যতে ॥৫৩॥  
 যদা হি নেক্সিয়ার্থেসু ন কর্ম বহুবজ্জতে ।  
 সর্বসঙ্কল্পপর্যাসী যোগারুঢ়স্তদোচ্যতে ॥৫৪॥

যোগে ( ধ্যাননিষ্ঠম্ ) আরুরুক্ষঃ মূর্নৈঃ কর্ম  
 ( এব ) কারণম্ উচ্যতে তস্ত যোগারুঢ়স্ত ( ধ্যান-  
 নিষ্ঠস্ত ) শমঃ এব কারণম্ উচ্যতে । যদা ( আত্মা-  
 নন্দরসিকঃ সন্ ) ইক্ষিয়ার্থেসু ( শব্দাদিসু তৎ সাধ-  
 নেসু ) কর্ম বহুবজ্জতে সর্বসঙ্কল্পপর্যাসী  
 ( তদা ) তৎ ( তৎ ) যোগারুঢ়ঃ উচ্যতে ॥ ৫৩, ৫৪ ॥

ধ্যাননিষ্ঠারূপ যোগপদবীতে আরো-  
 হণ করিতে অভিলাষীব্যক্তির পক্ষে কর্ম  
 তদারোহণের কারণ ; আবার যোগারুঢ়  
 ব্যক্তির পক্ষে চিত্ত বিক্লেপ কর কর্মের  
 উপরতিরূপ শমই তাহার দৃঢ়তার প্রতি  
 কারণ । জীব যে সময়ে ইক্ষিয়ের বিষয়-  
 সকলে এবং কর্মে অনাগক্ত হইয়া  
 পূর্ণরূপে সংলগ্ন পরিত্যাগ করেন, তখনই  
 তাহাকে যোগারুঢ় বলা যায় ॥ ৫৩, ৫৪ ॥

এই ছয় বোণী মাদ্বুসজাদি হেতু পাঞা ।  
 কৃষ্ণ ভঞ্জে কৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট হইঞা ॥৭১॥  
 চ শব্দে অপি অর্থ ইহাও কহয় ।  
 নুনি নিগ্রাস্তা শব্দের পূর্ববৎ অর্থ কয় ॥  
 উক্রমে অহৈতুকী কাঁহা কোন অর্থ ।  
 এই তের অর্থ কহিল পরম সমর্থ ॥ ৭২ ॥  
 এই সব শাস্ত্র যবে ভঞ্জে ভগবান্ ।  
 শাস্ত্রভক্ত করি তবে কহি তার নাম ॥  
 আত্মা শব্দে মন কহে, মনে যেই রমে ।  
 মাদ্বুসঙ্গে সেই ভঞ্জে শ্রীকৃষ্ণচরণে ॥ ৭৩ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে সপ্তদ্বিতীয়া-  
 ধায়ে অষ্টাদশশ্লোকঃ—

উদরমুপাসতে ষ ঋষিবজ্রং কুর্পদৃশঃ  
 পরিসরপদ্ধতিং হৃদয়মাকরণয়ে দহরম্ ।  
 তত উদগাদনস্ত তব ধাম শিরঃ পরমং  
 পুনরিহ যৎ সমেত্য ন পতন্তি কৃতাস্তমুখে ॥৫৫

ঋ ষবজ্রং ( ঋষীগাং :সম্প্রদায়মার্গেষু ) যে  
 কুর্পদৃশঃ ( কুর্পং শর্করারজঃ বিদ্যতে দৃক্ষ অক্ষিসু  
 যোবাং তে রজঃ পিহিতদৃষ্টয়ঃ সূনদৃষ্টয়ঃ শর্করাকাঃ )  
 উদরং ( ব্রহ্মেতি মণিপুরস্থং ব্রহ্ম, বৈশ্বানরাখ্যাঃ  
 বৈশ্বানরাস্তর্ধামিণং ক্রিয়াশক্তিদায়কং বা, যদ্বা উদরং  
 বৈরাজস্ত নাভিসরোবরবিশিষ্টং;নভস্থলম্ ) উপাসতে  
 ( ধায়ন্তি ) । আকরণঃ ( অকরণস্ত অপত্যানি  
 আকরণাখ্যাঃ ঋষয়ঃ তু ) পরিসরপদ্ধতিং ( পরিতঃ  
 সরন্তি প্রসর্পন্তি ইতি পরিসরাঃ নাভাঃ তাসাঃ  
 গদ্ধতিং প্রসরণস্থানং সাক্ষাৎ হৃদয়স্থং ) দহরং  
 ( দহরাকাশাখ্যং দহরাকাশস্থ জীবাস্তর্ধামিণং জ্ঞান-  
 শক্তিদায়কং বা, যদ্বা দহরং দুর্গমং হৃদয়ং বৈরাজস্ত  
 উদরস্থরূপং জ্যোতির্মনীকং ব্রহ্ম উপাসতে । পরি-  
 সরপদ্ধতিং তদ্বিকটপ্রাপকং, হে ) অনন্ত ! ততঃ  
 ( হৃদয়াৎ ) তব ধাম ( উপলক্ষস্থানং সুসুমাখ্যং )  
 পরমং ( শ্রেষ্ঠং জ্যোতির্ময়ং ) শিরঃ ( মূর্ধন্যং  
 প্রক্তি ) উদগাৎ ( উদসর্পৎ ) যৎ সমেত্য ( প্রাপ্য )

পুনঃ ইহ কৃতাস্তমুখে ( কৃতাস্তস্ত কালস্ত মুখে  
 সংসারে ) ন পতন্তি ॥ ৫৫ ॥

ঋষি সম্প্রদায়ের মধ্যে সুলদৃষ্টি ঋষি-  
 গণ উদর মধ্যে মণিপুরস্থ ব্রহ্মের ধ্যান  
 করেন, অরণের পুত্র আকৃণি ঋষিগণ  
 নাড়ীগণের প্রসরণ স্থান হৃদয়স্থ সুসু-  
 মার উপাসনা করেন । হে অনন্ত !  
 সেই হৃদয় হইতে তোমার উপলক্ষি স্থান  
 জ্যোতির্ময় সুসুমা নাড়ী ব্রহ্মরন্ধ্রে  
 উদগত হইয়াছে, যাহাকে লাভ করিলে  
 আর এ সংসারে পতন হয় না । সেই  
 হৃদয়ে অবলম্বন করেন ॥ ৫৫ ॥

এহো কৃষ্ণগুণাক্রুষ্ট মহামুনি হঞা ।

অহৈতুকী ভক্তি করে নিগ্রাস্ত হইঞা ॥

‘আত্মা’ শব্দে যত্র কহে যত্র করিয়া ।

‘মুনয়োহপি’ কৃষ্ণ ভঞ্জে গুণাক্রুষ্ট হঞা ॥৭৪

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমস্কন্ধে পঞ্চমাধ্যায়ে  
 অষ্টাদশশ্লোকঃ—

তত্শিব হেতোঃ প্রথতেত কোবিদো

ন লভাতে যদ্ব্যভ্যাসমুপর্য্যথঃ ।

তল্লভাতে হ্রঃখবদন্যতঃ স্তথঃ

কালেন সর্কত্র গভীররংহসা ॥ ৫৬ ॥

উপর্য্যথঃ ( আত্রলোকস্থাবরপর্য্যস্তং ) ভ্রমতাং  
 ( ভ্রমন্তিজীবৈঃ ) যৎ ন লভাতে কোবিদঃ  
 ( বিবেকী ) তস্যৈব হেতোঃ প্রথতেত ( যত্রং  
 কুর্ধ্যাৎ ) গভীররংহসা কালেন হ্রঃখবৎ তৎ  
 ( বিষয়স্থখম্ ) অনাতঃ ( এব প্রাচীন স্বকর্মণা )  
 সর্কত্র ( নরকাদৌ অপি ) লভাতে ॥ ৫৬ ॥

উপরি ব্রহ্মলোক, অধঃ স্থাবরলোক  
 পর্য্যন্ত ভ্রমণ করিয়াও যাহা পাওয়া যায়  
 না, তাহারই নিমিত্ত যত্র করা পণ্ডিত  
 ব্যক্তির কর্তব্য, বৈবয়িকসুখ প্রাক্তন কর্ম-

বশতঃ, চেষ্টা ব্যতীতও ছুঃখের ন্যায়  
সর্বত্র লাভ হইয়া থাকে ॥ ৫৩ ॥

তথাহি মথালীলায়াং বিংশে সপ্তমাক্ষতভক্তি-  
রসামৃতসিদ্ধবচনম্—

অচিরাদেব সর্কার্থঃ সিধ্যাত্যেবামভীপ্সিতঃ ।

সক্কর্ষণ্যাবোধায় যেবাং নিরর্কঙ্কিনী মতিঃ ॥৫৭

চ শব্দ অপি অর্থে অপি শব্দ অবধারণে ।  
যত্রাগ্রহ বিনা, ভক্তি, না জন্মায় প্রোমে ॥৭৫

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিদ্ধৌ পূর্ববিভাগে প্রথম-  
লহর্যাং দ্বাবিংশশ্লোকঃ—

সংনৌঘেরনাসঙ্গৈরলভ্যা স্মৃচিরানপি ।

হরিণা চাশ্ব দয়েতি দ্বিধা সা স্যাৎ স্মৃহ্লভা ॥৫৮

অনাসঙ্গৈঃ সাধনৌঘৈঃ (নানাসাধনৈঃ) স্মৃচিরাৎ  
অপি অলভ্যা। হরিণা আশ্ব অদেয়া চ ইতি সা  
(ভক্তিঃ) স্মৃহ্লভা দ্বিধা স্যাৎ ॥ ৫৮ ॥

আসঙ্গরহিত সাধনসমূহ দ্বারা চির-  
কালেও অলভ্যা এবং কামনা থাকিলেও  
শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক আশ্ব অদেয়া। অতএব  
স্মৃহ্লভা ভক্তি দুই প্রকার ॥৫৮॥

তথাহি আদিলীলায়াং প্রথমে বিংশাক্ষত  
গীতাবচনম্—

তেষাং সততযুক্তানাং ভজতাং শ্রীতিপূর্নকম্ ।

দদামি বুদ্ধিবোগং তৎ যেন মামুপযাস্তি তে ॥৫৯

আত্মা শব্দে ধ্রুতি কহে ধৈর্য্যে যেই রমে ।  
ধৈর্য্যবস্ত্র এবং হঞা করয়ে ভজনে ॥

মুনি শব্দে পক্ষী ভূক নিগ্রহঁর্ষ মূর্খ জন ।

কৃষ্ণরূপা সাধুরূপায় ছুহার ভজন ॥ ৭৬ ॥

তথাহি শ্রীগভাগবতে দশমস্কন্ধে একবিংশাধ্যায়ে  
চতুর্দশশ্লোকঃ—

প্রায়ো বতাস্ব মুনয়ো বিহগা বনেহস্মিন্

কৃষ্ণেক্ষিতং তদ্বদিতং কলবেগুগীতম্ ।

আক্ৰহ যে জনভূজান্ রচিত্রপ্রবালান্

শৃঙ্খিতীলিতদৃশা বিগতান্যবাচঃ ॥

(হে) অশ্ব! অস্মিন্ বনে যে বিহগাঃ (তে)  
প্রায়ো মুনয়ঃ (এব ভবিতুম অর্হন্ত, যতঃ তে)  
কৃষ্ণেক্ষিতং রচিত্রপ্রবালান্ জনভূজান্ আক্ৰহ  
মীলিতদৃশাঃ বিগতান্যবাচঃ ( তাত্‌ন্যান্যবাচঃ সন্তঃ )  
তদ্বদিতং ( তেন প্রকটিতং ) কলবেগুগীতং (মধুর-  
বেগুগীতম্ এবং) শৃঙ্খিতী ॥ ৬০ ॥

হে সখি, এই বনের বিহঙ্গসকলও  
প্রায়ই মুনিগণ; কারণ, তাহারা শ্রীকৃষ্ণ  
সন্দর্শনার্থ মনোহর পল্লবাস্থিত তরুশাখা  
আশ্রয় করিয়া নিমীলিতনয়নে নিঃশব্দে  
তৎকর্তৃক প্রকটিত মধুর বেগুগীতই শ্রবণ  
করিতেছে ॥ ৬০ ॥

তথাহি তর্কত্ব পঞ্চদশাধ্যায়ে ষষ্ঠাদিশ্লোকৌ—

এতেহলিনস্তব যশোহখিললোকতীর্থং

গায়ন্ত আদিপুরুষামুপথং ভজন্তে ।

প্রায়ো অমী মুনিগণা ভবদীর্ঘমুখ্যা

গূঢ়ং বনেহপি ন জহতানবাস্মদৈবম্ ॥ ৬১ ॥

নৃত্যন্তামী শিখিন দ্বৈভা মুদা হরিণাঃ

কুর্পস্তু গোপা ইব তে প্রিয়মীক্ষণেন ।

স্মৃক্লেশ্চ কোকিলগণা গৃহমাগতাং

ধন্যা বনোকস ইয়ান্ হি সতাং নিসর্গঃ ॥

(হে) আদিপুরুষ! এতে অলিনঃ অখিল-

লোকতীর্থং ( সর্বজনশোধকং ) তব যশঃ গায়ন্তঃ

( সন্তঃ ) অনুপথং ( পথি পথি ত্বাং ) ভজন্তে, (হে)

অনব! অমী প্রায়ঃ ভবদীর্ঘমুখ্যাঃ মুনিগণাঃ

বনে গূঢ়ম্ অপি আস্মদৈবং ( ত্বাং ) ন জহতি ।

(হে) দ্বৈভা! অমী শিখিনঃ ( ময়ুরাঃ ) মুদা

নৃত্যন্তি; ( নৃতোনে ) গৃহম্ আগতাং তে ( তুভ্যাং )

প্রিয়ং কুর্পস্তু ( তথা ) হরিণাঃ গোপাঃ ইব

ঈক্ষণেন কোকিলগণাঃ চ স্মৃক্লেঃ ( স্তোত্ররূপৈঃ

মধুরশব্দৈঃ তুভ্যাং প্রিয়ং কুর্পস্তু । অতএব এতে)

বনোকসঃ ধন্যাঃ হি সতান্ ইয়ান্ নিসর্গঃ ॥৬১১৬২॥

হে আদিপুরুষ! এই জমরগণ তোমার

অখিলপাবন যশ গান করিতে করিতে

পথে পথে তোমার ভজন করিতেছে ।  
 হে অনঘ ! ইহারা প্রায়ই তোমার  
 সেবকপ্রধান মুনিগণ । ইহারা এই রুদ্দা-  
 বনে গৃহভাবে বিচরণকারী নিজ অভিষ্ট-  
 দেব তোমাকে ত্যাগ করিতেছে না ।  
 হে স্তবনীয় ! এই মরুরগণ আনন্দে নৃত্য  
 করিতেছে । ইহারা নৃত্য দ্বারাই গৃহা-  
 গত তোমার প্রিয় সাধন করিতেছে ।  
 ঐরূপ হরিণীগণও গোপীগণের স্তায় দৃষ্টি  
 দ্বারা এবং কোকিলকুল মধুর শব্দ দ্বারা  
 তোমার প্রিয়সাধন করিতেছে । অতএব  
 এই বনবাসিগণ পক্ষ ; কারণ গৃহাগত  
 ব্যক্তির উদ্দেশে স্থায় বস্তুর নিবেদন  
 আগ্রহই সাধুগণের স্বভাব ॥ ৬১৬২ ॥

তথাহি তত্রৈব পঞ্চত্রিংশাধ্যায়ে একাদশশ্লোকঃ—

সরসি সারসহংসবিহঙ্গা-  
 শচাক্ষুণ্ডিত্ততচেতস এতা ।  
 হরিমুপাসত তে যতচিত্তা  
 হস্ত মীলিতদৃশো ধৃতমোনোঃ ॥ ৬৩ ॥

সরসি ( য়ে ) চাক্ষুণ্ডিত্ততচেতসঃ যতচিত্তাঃ  
 সারসহংসবিহঙ্গাঃ তে এতা ( আগত্য ) ধৃতমোনোঃ  
 মীলিতদৃশঃ ( চ সন্তঃ ) হরিম্ উপাসতে ॥ ৬৩ ॥

সবোবরে মনোহর গীতে সমাক্রষ্ট-  
 চিত্ত সংযতমানস সারস হংস প্রভৃতি  
 বিহঙ্গগণ সমাগত হইয়া মৌন ভাবে  
 নিমীলিতনেত্রে তাঁহার উপাসনা করিয়া  
 থাকেন ॥ ৬৩ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ত্রিভীষন্ধকে চতুর্থাধ্যায়ে  
 অষ্টাদশশ্লোকঃ—

কিরাত্তুহুগাক্ত পুলিন্দপুঙ্কসা  
 আভীরকঙ্কা যবনাঃ শকাদয়ঃ ।  
 যেহনো চ পাপা যদপাশ্রয়াশ্রয়াঃ  
 শুদ্ধান্তি তন্নৈ প্রভবিক্বে নমঃ ॥ ৬৪ ॥

কিরাত্তুহুগাক্ত পুলিন্দপুঙ্কসাঃ আভীরকঙ্কাঃ যবনাঃ  
 শকাদয়ঃ অন্যে যে ( কৰ্ম্মতঃ পাপরূপাঃ ) যদপা-  
 শ্রয়াশ্রয়াঃ যদপাশ্রয়াঃ ভাগবতাঃ তদাশ্রয়াঃ সন্তঃ )  
 শুদ্ধান্তি, তন্নৈ প্রভবিক্বে নমঃ ॥ ৬৪ ॥

কিরাত, হুগ, অক্ষু, পুলিন্দ, পুঙ্কশ,  
 আভীর, শুক, যবন, এবং শুক প্রভৃতি  
 পাপজাতি এবং যাহারা পাপকৰ্ম্মবশতঃ  
 পাপাত্মা তাহারাও যে ভক্তগণের আশ্রয়  
 করিয়া শুদ্ধ হয়, সেই প্রভাবশালি ভগ-  
 বান্কে প্রণাম ॥ ৬৪ ॥

কিঞ্চা ধৃতিশব্দে নিজপূর্ণতা জ্ঞান কয় ।

দুঃখাভানে উত্তম প্রাপ্তো মহাপূর্ণ হয় ॥ ৭৭

তথাহি ভক্তিরসামৃতসিদ্ধৌ দক্ষিণবিভাগে  
 চতুর্থলহর্যাং পঞ্চমস্তুতিতমশ্লোকঃ—

ধৃতিঃ স্যাৎ পূর্ণতা জ্ঞানদুঃখাভাবোত্তমাস্তিভিঃ ।  
 অপ্ৰাপ্তাতীতনষ্টার্থানভিসংশোচনাদিক্ৰুৎ ॥ ৬৫ ॥

জ্ঞানদুঃখাভাবোত্তমাস্তিভিঃ (জ্ঞানেন ভগবদু-  
 ভবেন তথা ভগবৎসম্বন্ধেন যঃ দুঃখাভাবঃ তেন  
 তথা উত্তমসা ভগবৎসম্বন্ধিতয়া পরমপূৰ্ব্বার্থগ্য  
 প্রেয়ঃ প্রাপ্ত্যা চ তৈঃ যা) পূর্ণতা (মনসঃ অচাক্ষুণ্ড্যাং  
 সা) ধৃতিঃ স্যাৎ অপ্ৰাপ্তাতীতনষ্টার্থানভিসংশো-  
 চনাদিক্ৰুৎ ( অপ্ৰাপ্তয়া অতীতয়া নষ্টসা চ বিষয়স্য  
 চ অনভিশোচনং করোতীতি ) ॥ ৬৫ ॥

জ্ঞান, দুঃখাভাব এবং ভগবৎসম্বন্ধীয়  
 প্রেম লাভ হেতু মনের অচাক্ষুণ্ড্যাকে ধৃতি  
 বলে । অপ্ৰাপ্ত, অতীত এবং নষ্ট বিষয়ের  
 শোক না করাই তাহার অনুভাব ॥ ৬৫ ॥

কৃষ্ণভক্ত দুঃখহীন বাঞ্ছান্তর-হীন ।

কৃষ্ণপ্রেম-সেবা পূর্ণানন্দ-প্রবীণ ॥ ৭৮ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং চতুর্থে ষট্‌ত্রিংশাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমত্তাগবতবচনম্—

মৎসেবয়া প্রীতীতং তে সালোক্যাদিচতুষ্টয়ম্ ।  
 নেচ্ছন্তি সেবয়া পূর্ণাঃ কুতো'ন্ত্রং কাশবিপ্লুতম ॥ ৬৬

তথাহি গোঁসামিপাদোক্তশ্লোকঃ—

স্বীক্বেশে স্বীকানি যস্য ঠৈর্য্যগতানি হি ।

স এব ঠৈর্য্যাপ্নোতি সংসারে জীবচক্লে ॥৬৭॥

যস্য স্বীকানি ( ইঞ্জিয়ানি ) স্বীক্বেশে ( ভগবতি ) ঠৈর্য্যগতানি সঃ এব জীবচক্লে ( ক্ষণভঙ্গুরে ) সংসারে ঠৈর্য্যম্ আপ্নোতি হি ॥ ৬৭ ॥

শ্রীকৃষ্ণে যঁতান ইন্দ্রিয়গণ ঠৈর্য্য প্রাপ্ত হইয়াছে, এই ক্ষণভঙ্গুর চক্লে সংসারে তিনিই ঠৈর্য্য লাভ করেন ॥ ৬৭ ॥

‘চ’ অবধারণে ইহা ‘অপি’ সমুচ্চয়ে ।

প্ৰতিমন্ত হঞা ভক্লে পক্ষি-সূৰ্য্যচয়ে ॥৭৯ ॥

আত্মা শব্দে বুদ্ধি কহে বুদ্ধিবিশেষ ।

সামান্য বুদ্ধিয়ুক্ত সব জীব অশেষ ॥

বুদ্ধ্যে রমে আত্মারাম জুইত প্রকার ।

পণ্ডিত মূনিগণ নিগ্রহঁ মূৰ্খ আর ॥৮০॥

কৃষ্ণকৃপায় সাধুসঙ্গে বিচার বুদ্ধি হয় ।

সব ছাড়ি শুদ্ধভক্তি করে কৃষ্ণ পায় ॥৮১॥

তথাহি গীতায়াং দশমাধ্যায়ে অষ্টমশ্লোকঃ—

অহং সৰ্বস্য প্রভবো মন্তঃ সৰ্বং প্রবর্ত্ততে ।

ইতি মন্তা ভক্তন্তে মাং বুধা ভাবসম্মিতাঃ ॥৬৮॥

অহং সৰ্বস্য প্রভবঃ মন্তঃ ( যুক্তঃ ) সৰ্বং প্রবর্ত্ততে ( মদধীন-প্রবৃত্তিকম্ ) ইতি মন্তা বুধা ভাবসম্মিতাঃ ( সদ্গুণকমুখাং নিশ্চিত্য ভাবেন প্রেমা সমমিতাঃ সন্তঃ ) মাং ভক্তন্তে ॥ ৬৮ ॥

আমিই সকলের উৎপত্তি স্থান, আমা হইতেই সকল প্রবৃত্ত হয়, ইহা জানিয়া পণ্ডিতগণ ভাবসহকারে আমার ভজনা করেন ॥ ৬৮ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে ত্রিভীষক্কে সপ্তমাধ্যায়ে ষট্চষারিংশশ্লোকঃ—

তে বৈ বিদন্ত্যত্ৰিভীষন্তি চ দেবমায়াং

শ্রীশূদ্রহৃৎশবরা অপি পাপজীবাঃ ।

যদ্যত্ৰ তক্রমপরায়ণশীলশিক্ষা-

স্তিৰ্য্যগ্জনা অপি কিমু শ্ৰুতধারণা যে ॥৬৯॥

যদি অত্ৰ তক্রমপরায়ণশীলশিক্ষাঃ ( ভবন্তি, তর্হি যে ) শ্রীশূদ্রহৃৎশবরাঃ পাপজীবাঃ তে অপি ( তথা ) তিৰ্য্যগ্জনাঃ অপি দেবমায়াং বিদন্তি বৈ অত্ৰিভীষন্তি চ ( অতঃ ) যে শ্ৰুতধারণাঃ ( তে, তথাভূতাঃ সন্তঃ বিদন্তি অত্ৰিভীষন্তি ) কিমু ॥৬৯ ॥

অধিক কি, বাঁহার পাদবিন্যাস অদ্যুত ; সেই ভগবানই বাঁহাদের একমাত্র অবলম্বন, সেই ভক্তজনের চরিত্র বিষয়ে যদি শিক্ষা লাভ করে, তাহা হইলে শ্রী ও শূদ্র এবং কুণ্ণশবরাদি পাপ-জীবগণও, এমন কি, পশু পক্ষী প্রভৃতি নিকৃষ্ট প্রাণিবর্গও, ঐ দেবমায়ার অবগত ও উত্তীর্ণ হয় ; সুতরাং ভগবানের রূপ শ্রবণগোচর করিয়া, বাঁহারা মনোনিয়োগ করিয়াছেন, তাহাদের ত কথাই নাই ॥৬৯ ॥

বিচার করিঞা তবে ভক্লে কৃষ্ণপায় ।

সেই বুদ্ধি দেন তারে, যাতে তাঁরে পায় ॥৮২ ॥

তথাচি আদিনীলায়াং প্রথমে বিংশাধ্যায়-গীতাবচনম্—

তেষাং সততযুক্রানাং ভক্ততাং শ্রীতিপূর্বকম্ ।

দদামি বুদ্ধিবোগং তং যেন মায়ুপযান্তি তে ॥৭০ ॥

সৎসঙ্গ, কৃষ্ণসেবা, ভাগবত নাম ।

ব্রজবাস, এই পঞ্চ সাধন প্রধান ॥

এই পঞ্চ মধ্যে এক অঙ্গ করয় ।

সুবুদ্ধি জনের হয় কৃষ্ণপ্রোমোদয় ॥ ৮৩ ॥

তথাহি মধ্যাঙ্গীলায়াং ষাণ্ডিশে সপ্তপঞ্চাশত্তম-ধ্যায়-ভক্তিরসামুত্থিসম্বচনম্—

হ্রস্বাহুতবীর্যোহস্মিন্ শ্ৰদ্ধা দূরেহস্ত পঞ্চকে ।

যত্র শ্লোহপি সৰ্বকঃ সক্তিমাং ভাবজন্মনে ॥ ৭১ ॥

উদার মহতী যার সর্বোত্তমা বুদ্ধি ।

নানা কামে ভক্লে তবু পায় ভক্তিসিদ্ধি ॥৮৪ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং দ্বাবিংশে চতুর্দশাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

অকামঃ সর্স্ককামো বা মোক্ষকাম উদারনী ।

তীত্রেণ ভক্তিযোগেন যজ্ঞত পুরুষং পরম্ ॥৭২॥

ভক্তির স্বভাব সেই কাম ছাড়াইয়া ।

কৃষ্ণপদে ভক্তি করায় শুণে আকর্ষিতঃ ॥৮।

তথাহি মধ্যলীলায়াং ষষ্ঠে সপ্তদশাঙ্কধৃত-শ্রীমদ্ভাগ-  
বতবচনম্—

আত্মারামাশ্চ মুনয়ো নির্গ্রহা অপূর্বক্রমে ।

কুর্সন্ত্যট্টেতুর্কীং ভক্তিমিত্ত্বুতগুণো হরিঃ ॥ ৭৩

তথাহি মধ্যলীলায়াং দ্বাবিংশে পঞ্চদশাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

সত্যং দিশত্বর্থিতমর্থিতো নৃণাং

নৈবার্থদো যং পুনরর্থিতা যতঃ ।

অয়ং বিধত্তে ভক্ততামনৈচ্ছতা-

মিচ্ছাপিধানং নিজপাদপন্নবম্ ॥ ৭৪ ॥

আত্মা শব্দে স্বভাব কহে তাহে যেই রনে

আত্মারাম জীব যত স্বাবর জন্মসে ॥

জীবের স্বভাব কৃষ্ণদাস অভিমান ।

দেহে আত্মজ্ঞানে আচ্ছাদিত সেই জ্ঞান ॥

‘চ’ শব্দ ‘এব’ অর্থে ‘অপি’ সমুচ্চয় ।

‘আত্মারাম এব’ হঞা কৃষ্ণেরে ভজয় ॥ ৮৬

সেই জীব সনকাদি সব মুনিগণ ।

নিগ্রহস্থ মূর্খ নীচ স্বাবর পশুগণ ॥ ৮৭ ॥

ব্যাস শুক সনকাদ্যের প্রসিদ্ধ ভজন ।

নিগ্রহস্থ স্বাবরাদ্যের শুন পিবরণ ॥

কৃষ্ণরূপা হৈতে হয় স্বভাব উদয় ।

কৃষ্ণগুণাক্রষ্ট হঞা তাহারে ভজয় ॥ ৮৮ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে পঞ্চদশাধ্যায়ে  
অষ্টমশ্লোকঃ—

ধনোরমদ্য ধরণী তৃণবীকৃষৎ-

পাদস্পৃশ্যো ক্রমলতাঃ করজাতিমৃষ্টাঃ ।

নস্তোহদ্ভয়ঃ খগমৃগাঃ সদনাবলোটক-

র্গোপ্যোহস্তরেণ ভুজয়োরপি যৎস্পৃহা শ্রীঃ ॥৭৫

অস্থ (তব পাদস্পর্শাৎ) ইয়ং ধরণী ধন্যা (তথা)

ভুংপাদস্পৃশ্যঃ ( ভুংপাদো স্পৃশ্যন্তি ইতি ) তৃণ-

বীকৃষঃ করজাতিমৃষ্টং ( নথস্পৃষ্টাঃ ) ক্রমলতাঃ

সদনাবলোটকঃ নস্থঃ অদ্ভয়ঃ খগমৃগাঃ ভুজয়োঃ

অস্তরেণ ( কৃষ্মা ভুজমধ্যে বক্ষঃস্থলে আলিঙ্গনং

প্রাপ্য ) শ্রীঃ যৎস্পৃহা ( সন্ম্যাঃ অপি যম্মাালিঙ্গনস্য

স্পৃহা ভবতি, তৎ আলিঙ্গনং লক্ষ্য ) গোপ্যঃ অপি

ধন্যাঃ ( চ ) ॥ ৭৫ ॥

অদ্য তোমার পাদস্পর্শে এই ধরণী

ও তুলতাগণ, তোমার নখস্পর্শে তরু-

লতাগণ তোমার সক্রমণ অবলোকনে

নদী পর্স্কত ও মৃগ পক্ষি সকল এবং স্বয়ং

লক্ষ্মীও যে ভুজয়মধ্যবর্তী বক্ষঃস্থলের

আলিঙ্গন কামনা করেন, সেই আলিঙ্গন

লাভ করিয়া, গোপীগণও ধন্য হই-

লেন ॥ ৭৫ ॥

তথাহি তট্টৈব একবিংশাধ্যায়ে একোনিবিংশ-

শ্লোকঃ—

গা গোপটেকরম্বনং নয়তোকধার-

বেগুযনৈঃ কণপটৈস্তমুভুৎসু সখাঃ ।

অস্পন্দনঃ গতিমতাং পুলকস্তরুণাং

নির্গোগপাশকৃতলক্ষণমোবিচিহ্নম্ ॥ ৭৬ ॥

( হে ) সখাঃ ! গোপটেকঃ ( সহ ) অম্বনং

( প্রতিবনং ) গাঃ নয়তোঃ ( চারয়তোঃ ) নিযোগ-

পাশকৃতলক্ষণয়োঃ ( নিযোগাঃ ) দোহনবেলায়াং

গবাং পাদবন্ধনাভাঃ রক্তবঃ শাশাঃ দৃষ্টগবাম্

আকর্ষণার্থাঃ রক্তবঃ টেতঃ রক্তঃ লক্ষণং চিহ্নং

যয়োঃ তয়োঃ রানকৃষয়োঃ ) কণপটৈঃ উনারবেগু-

যনৈঃ ( শ্রবণান্দনায়টেকঃ বেগুযনৈঃ ) তমুভুৎসু

( শরীরিসু ) গতিমতাম্ অস্পন্দনং ( স্বাবরণধর্মঃ

তথা ) তরুণাং পুলকঃ ( জন্মধর্মঃ তৎ ইদং )

বিচিহ্নম্ ॥ ৭৬ ॥

হে মথীগণ ! গোপবন্দের সহিত  
ননে বনে গোচারণকারী এনং দোহন-  
কালীন নিয়োগ ও পাশ রঙ্জু চিহ্নে  
চিহ্নিত কৃষ্ণ ও বলবামের মধুর পদ-  
নিশিষ্টে শ্রবণানন্দদায়ক বেণুবর শ্রবণে  
যে দেহদারীদিগের মধ্যে জঙ্গম দেহি-  
গণের অস্পন্দনরূপ স্থাবরমর্ম ও স্থাবর  
দেহিগণের পুঙ্গবরূপ জঙ্গমমর্ম দৃষ্ট হয়,  
তাহা অতীব প্রিয় ॥ ৭৬ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং অষ্টমে দ্বিপঞ্চাশত্তমাক্ষ-  
বৃত্ত-শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

বনলতাস্তরব আত্মনি বিষ্ণুঃ  
বাল্লয়ন্ত্য ইব পুষ্পকসাতাঃ ।  
প্রণতভারবিটপা মধুধারাঃ  
প্রেমদ্বষ্টতনবো ববুসুঃ ॥ ৭৭ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং চতুর্বিংশশে চতুঃষষ্টিতমাক্ষ-  
বৃত্ত-শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

কিরাতহুণাক্ত পুলিন্দপুঙ্কসা  
আভীরকঙ্কা যবনাঃ শঙ্কাদয়ঃ ।  
বেহন্যো চ পাপা যবপাশ্রয়াশ্রয়াঃ  
স্কন্ধান্তি তমৈ প্রাভবিকবে নমঃ ॥ ৭৮ ॥

আগে তের অর্থ কৈল তার ছয় এই ।  
উনবিংশ অর্থ হৈল মিলি এই দুই ॥  
এ উনইণ অর্থ কৈল আগে শুন তার ।  
আত্মা শব্দে দেহ কহে তারি অর্থ তার ॥  
দেহে রমে দেহে ভঞ্জে দেহোপাধি ব্রহ্ম ।  
সংসঙ্গে সেহ করে শ্রীকৃষ্ণ ভঞ্জন ॥ ৮১ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং চতুর্বিংশশে পঞ্চপঞ্চাশত্ত-  
মাক্ষবৃত্ত-শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

উরমুপাসতে য ঋষিগণ্মু কূর্ণনৃশঃ  
পরিসরপদ্ধতিং ক্রদরমাকরণ্যো দহরম্ ।  
ভুত উদগানস্ত তব ধাম শিরঃ পরমং  
পুনরিহ বৎ সমেত্য ন পতন্তি কৃতাস্তমুখে ॥ ৭৯ ॥

দেহারামী কর্মান্ধ যাজিকাদি জন ।  
সংসঙ্গে কর্ম তেজি করয়ে ভঞ্জন ॥ ৯০ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমস্কন্ধে অষ্টাদশাধ্যায়ে  
দ্বাদশশ্লোকঃ—

কর্মণ্যশ্মিন্ননাখাসে ধুমপুত্রান্মনাং ভবান্ ।  
আপায়য়তি গোবিন্দপাদপদ্মাসবং মধু ॥ ৮০ ॥

ধুমপুত্রান্মনাং (ধূমেন ধূমৌ বিরজিতৌ আত্মনৌ  
শরীরচিত্তে যেধাম্ অস্মাকম্ ) অশ্মিন্ অনাখাসে  
( অবিশ্বসনীরে ) কর্শ্বণি ভবান্ মধু ( মধুরং )  
গোবিন্দপাদপদ্মাসবং (পাদপদ্মস্য যশোরূপম্ আসবং  
মকরন্দম্ ) আপায়য়তি ॥ ৮০ ॥

হে সূত! এই অশ্বিন্দসনীর মত্বর্গের  
ধূম সেবনে যাহাদের শরীর বিবর্ণ হইতে-  
ছিল, সেই আমাদিগকে তুমি স্নুমধুর  
শ্রীগোবিন্দের পাদপদ্ম-মকরন্দ পান  
করাইয়া আত্মা প্রদান করিলে ॥ ৮০ ॥

তপস্বী প্রভৃতি যত দেহারামী হয় ।  
নাপুসঙ্গে তপ ছাড়ি শ্রীকৃষ্ণ ভজয় ॥ ৯১ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে চতুর্থস্কন্ধে একবিংশাধ্যায়ে  
উনত্রিংশশ্লোকঃ—

যংপাদসেবাভিকৃতিস্তপস্বিনা-  
শশেষজন্মোপচিত্তং মলং ধিয়ঃ ।  
সত্ত্বঃ ক্ষিপোত্যত্রহমেধতী সতী  
যথা পদানুষ্ঠবিনিঃসৃত্য সরিৎ ॥ ৮১ ॥

যথা পদানুষ্ঠবিনিঃসৃত্য সরিৎ ( গঙ্গা, তথা )  
যংপাদসেবাভিকৃতিঃ অসহম্ ( অহনি অহনি )  
এধতী ( বদ্ধমানা ) সতী তপস্বিনাং ( সংসারতাপ-  
তপ্তানাম্ ) অপশেষজন্মোপচিত্তম্ ( অপশেষৈঃ জন্মভিঃ  
সহ ত্বং ) ধিয়ঃ মলং সদ্যঃ ক্ষিপোতি ॥ ৮১ ॥

হে সভ্যগণ ! পদানুষ্ঠা-বিনিঃসৃত্য  
গঙ্গার ত্রায় যাহার চরণ সেবাভিলাষ  
প্রতিদিন উত্তরোত্তর বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া  
সংসারে তাপশিথ ব্যক্তিগণের অশেষ জন্ম-

সখৃদ্ধবুদ্ধির মল নিঃশেষে ক্ষয় করেন,  
সেই হরিকেই ভজনা করিবে ॥ ৮১ ॥  
দেহারামী, সর্সকাম, সর্স আত্মারাম ।  
কৃষ্ণকৃপায় কৃষ্ণ ভঞ্জে ছাড়ি সর্সকাম ॥৯২

তথাহি মধ্যলীলায়াং ষাট্বেংশে ষোড়শাঙ্কপুত-  
হরিতত্ত্বসুধোদয়বচনম্--

স্থানাভিলাষী তপসি স্থিতোহং  
থাং প্রাপ্তবান্ দেবমুনীশ্চ শুভম্ ।  
কাচং বিচক্ষ্মিৎ দিব্যরত্নং  
স্বামিন্ কৃতার্থোহস্মি বরং ন যাচে ॥৮২॥

এই চারি অর্থ সহ হৈল তেইশ অর্থ ।  
আর তিন অর্থ শুন পরম সমর্থ ॥ ৯৩ ॥  
চ শব্দ সমুচ্চয়ে আর অর্থ কয় ।  
আত্মারামাশ্চ মুনয়শ্চ কৃষ্ণেরে ভজয় ॥৯৪॥  
নিগ্রহু হইএম ইহা অপি নিক্কারণে ।  
রামশ্চ কৃষ্ণশ্চ যথা বিহরয়ে বনে ॥৯৫॥  
চ শব্দ অপ্রাচয়ে অর্থ কহে আর ।  
‘বটো ভিক্ষামট পাপানয়’ ঐছে প্রকার ॥  
কৃষ্ণমনন মুনি, কৃষ্ণ সর্সদা ভজয় ।  
‘আত্মারামা অপি’ ভঞ্জেণৌণ অর্থ কয় ॥৯৬॥  
চ এবার্থে মুনয় এত কৃষ্ণ ভজয় ।  
‘আত্মারামা’ অপি অপি, গর্হা অর্থ কয় ॥  
নিগ্রহু হইএম এই ছুঁহার বিশেষণ ।  
আর অর্থ শুন যৈছে নাদুর সঙ্গম ॥৯৭॥  
নিগ্রহু শব্দ কহে তবে ব্যাধ নির্জন ।  
সাধুসঙ্গে সেহো করে শ্রীকৃষ্ণ-ভজন ॥  
কৃষ্ণরামশ্চ এব হয় কৃষ্ণমনন ।  
ব্যাধ হইএম হয় পূজ্য ভাগবতোত্তম ॥৯৮॥  
এক ভক্ত ব্যাধের কথা শুন সাবধানে ।  
যাহা হৈতে হয় সংসঙ্গ-সহিমার জ্ঞানে ॥৯৯॥  
একদিন নারদ, দেখি শ্রীনারায়ণ ।  
ত্রিপেণী-স্থানে প্রয়াগে করিল গমন ॥

বনপথে দেখে মুগ আছে ভুমে পড়ি ।  
বাণবিদ্ধ ভগ্নপদ করে ধড়ফড়ি ॥১০০॥  
আর কথোদূরে এক দেখিল শূকর ।  
তৈছে বিদ্ধ ভগ্নপাদ করে ধড়ফড় ॥  
ঐছে এক শশক দেখে আগে কথোদূরে ।  
জীবের দুঃখ দেখি নারদ ব্যাকুল অন্তরে ॥  
কথোদূরে দেখে ব্যাধ রক্ষে ওত হইয়া ।  
মুগ মারিবারে আছে বাণ যুড়িয়া ॥  
শ্যামবর্ণ রক্তমেত্র মহাভয়ঙ্কর ।  
ধনুর্দাঁপ হাতে যেন যম দণ্ডধর ॥১০১॥  
পথ ছাড়ি নারদ তার নিকট চলিয়া ।  
নারদ দেখিয়া দূরে মুগ পলাইয়া ॥  
ক্রুদ্ধ হইয়া ব্যাধ তারে গালি দিতে চায় ।  
নারদপ্রভাবে গালি মুখে না বাহিবায় ॥  
গোমাত্রি প্রয়াগ-পথ ছাড়ি কেন আইলা ॥  
তোমা দেখি মোর লক্ষ্য মুগ পলাইলা ॥১০২॥  
নারদ কহে পথ তুলি আইলাম পুচ্ছিতে ।  
মনে এক সংশয় হয় তাহা ঋণহিতে ॥  
পথে যে শূকর মুগ জানি তোমার হয় ।  
ব্যাধ কহে যেই কহ সেই সত্য হয় ॥  
নাবদ কহে জীব যদি মার তুমি বাণে ।  
অর্দ্ধমারা কর কাহেঁনা মার পরাণে ॥  
ব্যাধ কহে শুনগোমাত্রি মুগারিগোরনাম ।  
পিতার শিক্ষায় আমি করি ঐছে কাম ॥  
অর্দ্ধমারা মুগ যদি ধড়ফড় করে ।  
তবেত আনন্দ মোর বাড়য়ে অন্তরে ॥১০৩॥  
নারদ কহে এক বস্তু মাগি তোমার স্থানে ।  
ব্যাধ কহে মুগাদি লহ যেই তোমার মনে ॥  
মুগছাল চাহ যদি আইস মোর ঘরে ।  
যেই চাহ তাহা দিব মুগবাধাস্বরে ॥  
নারদ কহে ইহা আমি কিছুই না চাই ।  
আর এক দান আমি মাগি তোমার ঠাঁঞি



কালি হৈতে তুমি যে যুগাদি মারিবে ।  
 প্রথমেই মারিবে, অর্দ্ধমারানাকরিবে ॥১০৪॥  
 ব্যাধ কহে কিবা দান মাগিলে আমারে ।  
 অর্দ্ধ মারিলে কিবা হয়, তাহা কহ মোরে ॥  
 নারদ কহে অর্দ্ধ মারিলে জীব পায়ব্যথা ।  
 জীবে দুঃখ দিতেছ তোমার হইব অবস্থা ॥  
 ব্যাধ তুমি জীব মার, অল্প পাপ তোমার ।  
 কদর্ধিনা দিয়া মার এ পাপ অপার ॥  
 কদর্ধয়া তুমি যত মারিয়াছ জীবেরে ।  
 তারা তোমা ঐছে মারিবে জন্মজন্মান্তরে ॥  
 নারদের সঙ্গে ব্যাধের মন প্রাগম্ন হৈল ।  
 তার বাক্য শুনি মনে ভয় উপজিল ॥১০৫॥  
 ব্যাধ কহে বালা হৈতে এই আমার কর্ম্ম ।  
 কেমতে তরিব মুঞি পামর অধম ॥  
 এই পাপ ষায় মোর কেমন উপায় ।  
 নিস্তার করহ মোরে পড়েঁ তুয়া পায় ॥  
 নারদ কহে যদি ধর আমার বচন ।  
 তবেত করিতে পারি তোমার মোচন ॥  
 ব্যাধ কহে যেই কহ সেইত করিব ।  
 নারদ কহে ধনুক ভাঙ্গ তবেত কহিব ॥  
 ব্যাধ কহে ধনুক ভাঙ্গিলে বাঁচিব কেমনে  
 নারদ কহে আমি অন্ন দিব প্রতিদিনে ॥১০৬॥  
 ধনুক ভাঙ্গিয়া ব্যাধ তাঁর চরণে পড়িল ।  
 তারে উঠাইয়া নারদ উপদেশ কৈল ॥  
 ঘরে যাই ব্রাহ্মণে দেহ আছে যত ধন ।  
 এক এক বস্ত্র পরি বাহির হও দুই জন ॥  
 নদীতীরে একখানি কুঁড়িয়া করিয়া ।  
 তার আগে এক পিণ্ডি তুলসী রোপিঞা ॥  
 তুলসী পরিক্রমা কর তুলসীসেবন ।  
 নিরন্তর কৃষ্ণনাম কর সঙ্গীর্জন ॥  
 আমি তোমায় বহু অন্ন দিব দিনে দিনে ।  
 সেই অন্ন লবে, যাহা খাও দুই জনে ॥১০৭॥

তবে সেই যুগাদি তিনে নারদ সুস্থ কৈল ।  
 সুস্থ হয়ে যুগাদি তিনে দাঞা পলাইল ॥  
 দেখিয়া ব্যাধের মনে হইল চমৎকার ।  
 যথাস্থানে গেলা নারদ ব্যাধ এল ঘর ।  
 নারদের উপদেশ সকল করিল ।  
 গ্রামে ধনি হৈল ব্যাধ বৈষ্ণব হইল ॥  
 গ্রামের লোক সব অন্ন আনিতে লাগিল ।  
 অন্ন আনি সবে তার আগেতে ধরিল ॥  
 এক দিনে অন্ন আনে দশ বিশ জনে ।  
 দিলে তত লয় যত খায় দুই জনে ॥১০৮॥  
 এক দিন নারদ কহে শুনহ পর্ত্তে ।  
 আমার এক শিষ্য আছে চলহ দেখিতে ॥  
 তবে দুই ঋষি আইলা সেই ব্যাধ স্থানে ।  
 দূরে হৈতে ব্যাধ পাইল গুরুর দর্শনে ॥  
 আস্তে ব্যস্তে ধাঞা আইসে পথ নাহি পায়  
 পথে পিপীলিকা আদি ইতি উতি ধায় ॥  
 দণ্ডবৎ স্থানে পিপীলিকাদি দেখিঞা ।  
 বস্ত্রে স্থান ঝাড়ি পড়ে দণ্ডবৎ হৈঞা ॥  
 নারদ কহে ব্যাধ এই না হয় আশ্চর্য্য ।  
 হরিভক্ত্যে হিংসামূল্য হয় সাধুবর্ষ্য ॥১০৯॥  
 তথাহি মধ্যলীলায়াং দ্বাবিংশে পঞ্চমষ্টীতমাদ্ব্যধুত-  
 ভক্তিরসামৃতসিদ্ধবচনম্—  
 এতে ন হৃদুতা ব্যাধ তথাহিংসাদয়ো গুণাঃ ।  
 হরিভক্ত্যে প্রবৃত্তা যেন তে স্নাঃ পরতাপিনঃ ॥১১০॥  
 তবে সেই ব্যাধ ছুঁহা অঙ্গনে আনিঞা ।  
 কুশাসন আনি ছুঁহা ভক্ত্যে বসাইয়া ॥  
 জল আনি ভক্ত্যে ছুঁহার পদ প্রক্ষালিল ।  
 সেই জল শ্রীপুরুষে পিয়া শিরে লৈল ॥  
 কম্পাঙ্ক পুলক হয় কৃষ্ণগুণ গাঞা ।  
 উর্দ্ধবাহু নৃত্য করে বস্ত্র ফিরাইঞা ॥  
 দেখিঞা ব্যাধের প্রেম পর্ত্তত য়াহামুনি ।  
 নারদেরে কহে তুমি হও স্পর্শমনি ॥১১১॥

তথাহি ভক্তিরসামৃতে পূর্ব্ববিভাগে তৃতীয়-  
লহরীয়াং দশমাস্কন্ধতঙ্কান্দবচনম্—  
অহো ধতোহসি দেবর্ষে রুপয়া যন্ত তৎক্ষণাৎ ।  
নীচোহপ্যুৎপুলকো লেতে লুক্কো রতিমচাতে ॥৮৪

( হে ) দেবর্ষে ! অহো ধন্তঃ অসি যস্য ( তব )  
রুপয়া নীচঃ লুক্কঃ ( ব্যাধঃ ) উৎপুলকঃ ( সন্ )  
অচ্যুতে রতিং লেভে ॥ ৮৪ ॥

হে দেবর্ষে ! আপনি ধন্ত, যেহেতু  
আপনার রুপায় অতি নীচজাতি ব্যাধও  
পুলকাস্থিত কলেবর হইয়া সদ্য শ্রীকৃষ্ণে  
রতিলাভ করিয়াছে ॥ ৮৪ ॥

নারদ কহে বৈষ্ণব তোমার অন্ন কিছু আয়  
ব্যাধ কহে যারে পাঠাও সেই দিএয়া যায়  
এত অন্ন না পাঠাইহ কিছু কার্য্য নাঞি ।  
সবে দুই জনার যোগ্য ভক্ষ্যমাত্র চাই ॥  
নারদ কহে এঁছে রহ তুমি ভাগ্যবান্ ।  
এত বলি দুই জন কৈল অন্তর্দান ॥১১১॥  
এইত কহিল তোমায় ব্যাধের আখ্যান ।  
যাহা শুনিলে হয় সাধুসঙ্গ-প্রভাবজ্ঞান ॥  
এই আরঃতিন অর্থ গণনাতে পাইল ।  
এই দুই মেলি ছান্ধিশ অর্থ হৈল ॥  
আর অর্থ শুন যাহা অর্থের ভাণ্ডার ।  
সুলে দুই অর্থ, সুল্লে বত্রিশ প্রকার ॥১১২  
আজ্ঞা শব্দে কহে সর্কবিধ ভগবান্ ।  
এক স্ময়ং ভগবান্ আর ভগবান্ আখ্যান ।  
তাতে রমে যেই, সেই সব আত্মারাম ।  
বিধিভক্ত রাগভক্ত দুই বিধ নাম ॥১১৩  
দুই-বিধ ভক্ত হয় চারি চারি প্রকার ।  
পারিষদ, সাধনসিদ্ধ, সাধকগণ আর ॥  
জাতাজাত, রতিরূপে সাধক দুই ভেদ ।  
বিধি রাগ মার্গে চারি চারি অষ্ট বিভেদ ॥  
বিধিমার্গে নিস্তাসিদ্ধ-পারিষদ-দাস ।  
সখা, গুরু, কাস্তাগণ চারিবিধ প্রকাশ ॥১১৪

সাধনসিদ্ধ দাস, সখা, গুরু, কাস্তাগণ ।  
উৎপন্নরতি সাধকভক্ত চারিবিধ জন ॥  
অজ্ঞাতরতি সাধক ভক্ত এ চারিপ্রকার ।  
বিধিমার্গে ভক্ত যোড়শ ভেদ প্রচার ॥  
রাগমার্গে এঁছে আর ভক্ত ষোল ভেদ ।  
দুই মার্গে আত্মারাম বত্রিশ বিভেদ ॥১১৫  
মুনি, নিগ্রহ্ন, চ, অপি, চারি শব্দের অর্থ ।  
যাহা যেই লাগে তাহা করিয়ে সমর্থ ॥১১৬  
বত্রিশ ছান্ধিশ মিলি অষ্টপঞ্চাশ ।  
আর এক ভেদ শুন অর্থের প্রকাশ ॥১১৭  
ইতরেতর চ দিএয়া সমাস করিয়ে ।  
আটান্নবার আত্মারাম নাম লৈয়ে ॥  
‘আত্মারামাশ্চ, আত্মারামাশ্চ’ আটান্নবার  
শেষে সব লোপ করি রাখি একবার ॥১১৮  
তথাহি সিদ্ধাস্তকৌমুদ্যাম্—  
সরুপাণানামেকশেষ একবিভক্তৌ ॥ ৮৫ ।  
আটান্ন চকারের সব লোপ হয় ।  
এক আত্মারাম শব্দে আটান্ন অর্থ কয় ॥১১৯  
তথাহি তত্রৈব—  
উক্তার্থানামধ্বযোগঃ ।  
অখথবৃক্ষাশ্চ বটবৃক্ষাশ্চ কপিথবৃক্ষাশ্চ  
আম্রবৃক্ষাশ্চ বৃক্ষাঃ ॥ ৮৬ ॥  
‘অস্মিন্ বনে ফলন্তি বৃক্ষাঃ’ যৈছে হয় ।  
তৈছে সব আত্মারামকৃষ্ণেভক্তিকরয় ॥১২০  
আত্মারামশ্চ সমুচ্চয়ে কহিয়ে চকার ।  
‘মুনয়শ্চ’ ভক্তি করে এই অর্থ তার ॥১২১  
নিগ্রহ্না এব হৈএয়া, অপি নির্দারণে ।  
এই উনমষ্টি অর্থ করিল ব্যাখ্যানে ॥  
সর্ক সমুচ্চয়ে এক আব অর্থ হয় ।  
আত্মারামাশ্চ মুনয়শ্চ নিগ্রহ্নাশ্চ ভজয় ॥  
অপি শব্দ অবদারণে সেহো চারিবার ।  
চারি শব্দ সঙ্গে এব করিব উচ্চার ॥১২২॥  
তথাহি যথা—  
উরুক্রম এব ভক্তিমেব অষ্টৈতুকীমেব কুর্কস্তোবা ॥৮৭

এইত কহিল শ্লোকে ষাটসংখ্যা অর্থ ।  
এক অর্থ শুন আর প্রমাণে সমর্থ ॥১২৩ ॥  
আত্মা শব্দে কহে ক্ষেত্রজ্ঞ জীব লক্ষণ ।  
ব্রহ্মাদি কীটপর্যন্ত তাঁরশক্তিতেগণন ॥১২৪ ॥

তথাহি আদিলীলারায়ঃ সপ্তমে সপ্তমাক্ষয়ত-  
বিষ্ণুপুরাণবচনম্—

বিষ্ণুশক্তিঃ পরা শ্রোত্রা ক্ষেত্রজ্ঞাখ্যা তথাপর।  
অবিদ্যাকর্ষসংজ্ঞান্যা তৃতীয়া শক্তিরিযাতে ॥৮৮ ॥

তথাহি অমরকোষে স্বর্গবর্গে—

ক্ষেত্রজ্ঞ আত্মা পুরুষঃ ॥ ৮৯ ॥

ভ্রমিতে ভ্রমিতে যদি সাধুসঙ্গ পায় ।  
তবে মর্স ত্যজি মেহো কৃষ্ণকে ভজয় ॥  
ষাটি অর্থ কহিল এক কৃষ্ণের ভজন ।  
সেই অর্থ হয় সব ইহার উদাহরণ ॥  
একবষ্টি অর্থ এবে স্মৃনিম তোমার সঙ্গে ।  
তোমারভক্তিবলে উঠে অর্থেরতরঙ্গে ॥ ১২৫ ॥

তথাহি প্রাচীনশ্লোকঃ—

ভক্ত্যা ভাগবতং গ্রাহং ন বুদ্ধ্যা ন চ টীকয়া ॥২০ ॥

ভাগবতং ( শাস্ত্রং ) ভক্ত্যা গ্রাহং বুদ্ধ্যা ন  
টীকয়া চ ন ( গ্রাহম্ ) ॥ ২০ ॥

ভক্তিদ্বারাই কেবল ভাগবতের অর্থ  
সকল গ্রহণীয় হয়, বুদ্ধি বা টীকা দ্বারা  
অর্থ বোধগম্য হয় না ॥ ২০ ॥

তথাহি বিশ্বেশ্বরবাক্যম্—

অহং বেত্তি শুকো বেত্তি ব্যাসো

বেত্তি ন বেত্তি বা ॥ ১১ ॥

অহং ( মাং শিবম্ আচক্ষাণঃ ইতি অহং, ইতি  
নামধাতৌ কিপ্, ততঃ কৃতি কিপ্ অহং নারায়ণঃ )  
বেত্তি, শুকঃ বেত্তি, ব্যাসঃ বেত্তি ( অন্যে ) ন  
বেত্তি ॥ ১১ ॥

অহং অর্থাৎ আগার ( শিবের ) উপ-  
দেষ্টা নারায়ণ জানেন, শুকদেব জানেন  
এবং বেদব্যাস জানেন, অন্যে ভাগবতার্থ  
জানে না ॥ ১১ ॥

অর্থ শুনি সনাতন বিশ্বিত্ত হইয়া ।  
মহাপ্রভুর স্তুতি করেন চরণে পড়িয়া ॥  
সাক্ষাৎ ঈশ্বর তুমি ব্রহ্মেশ্বরনন্দন ।  
তোমার নিশ্বাসে সব বেদ প্রাবর্তন ॥  
তুমি বক্তা ভাগবতেব তুমি জ্ঞান অর্থ ।  
তোমাবিনু অম্ভাজানিতেনা হিকসমর্থ ॥১২৬ ॥  
প্রভু কহে কেন কর আমারে স্তবন ।  
ভাগবত-স্বরূপের কেন না কর বিচারণ ॥  
কৃষ্ণতুল্য ভাগবত বিভু সর্বাশ্রয় ।  
প্রতিশ্লোকে প্রত্যক্ষরে নানা অর্থ কয় ॥  
প্রশ্নোত্তরে ভাগবতে করিয়াছে নির্দার ।  
বাহার শ্রবণে লোকেলাগেচমৎকার ॥১২৭ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমস্কন্ধে প্রথমাধ্যায়ে  
ত্রয়োবিংশশ্লোকঃ—

কহি যোগেশ্বরে কৃষ্ণে ব্রহ্মণো ধর্মবর্ষণি ।

স্বাং কাষ্ঠানবুনোপেতে ধর্মঃ কং শরণং গতঃ ॥১২৮ ॥

যোগেশ্বরে ব্রহ্মণো ধর্মবর্ষণি কৃষ্ণে স্বাং  
কাষ্ঠাং ( স্বরূপম্ ) উপেতে ( প্রাপ্তে ) অধুনা  
ধর্মঃ কং শরণং গতঃ ( ভদপি ) ক্রহি ॥ ১২৮ ॥

ধর্মের বর্ষস্বরূপ ব্রহ্মণ্যদেব যোগে-  
শ্বর শ্রীকৃষ্ণ স্বধামে গমন করিলে, অধুনা  
ধর্ম কাহার শরণাপন্ন হইলেন ? ॥ ১২৮ ॥

তথাহি তত্ৰৈব তৃতীয়াধ্যায়ে ত্রয়শ্চত্বারিংশ-  
শ্লোকঃ—

কৃষ্ণে স্বধামোপগতে ধর্মজ্ঞানাদিভিঃ সহ ।

কলৌ নষ্টদৃশামেবঃ পুরাণার্কোহুধুনোদিভিঃ ॥১২৯ ॥

ধর্মজ্ঞানাদিভিঃ সহ কৃষ্ণে স্বধাম উপগতে  
( সতি ) অধুনা কলৌ নষ্টদৃশাম্ এবং পুরাণার্কঃ  
উদিভিঃ ॥ ১২৯ ॥

হে ঋষিগণ ! শ্রীকৃষ্ণ ধর্ম ও জ্ঞান  
প্রভৃতির সহিত নিজধামে গমন করিলে

কলিমল বিনষ্টে দৃষ্টি জীবনগণের সম্বন্ধে এই  
 পুরাণই সূর্যাস্বরূপে উদ্ভিত হইয়াছেন ॥১৩৭॥  
 এইত কহিল এক শ্লোকের ব্যাখ্যান ।  
 বাতুলের প্রলাপ করি কে মানে প্রমাণ ॥  
 আশা হেন যেবা কেহো আর বাতুল হয় ।  
 এই দৃষ্টে ভাগবতের অর্থ জানয় ॥১২৮॥  
 পুনঃ সনাতন কহে যুড়ি দুই করে ।  
 প্রভু আজ্ঞা দিল বৈষ্ণবস্মৃতি করিবারে ॥  
 মুক্তি নীচজাতি কিছু না জানো আচার ।  
 মো হৈতে কৈছে হয় স্মৃতিপরিচার ॥  
 সূত্র করি দিশা যদি কর উপদেশ ।  
 আপনে করহ যদি হৃদয়ে প্রবেশ ॥  
 তবে তার দিশা স্মুরে মো নীচ হৃদয়ে ।  
 ঈশ্বর তুমি যে কহাও সেই সিদ্ধ হয়ে ॥১২৯॥  
 প্রভু কহে যে করিতে করিবে তুমি মন ।  
 কৃষ্ণ সেই সেই তোমায় করাবে স্মুরণ ॥১৩০॥  
 তথাপি সূত্ররূপে শুন দিগ্‌দরশন ।  
 সর্কারণ লিখি আদৌ গুরু আশ্রয়ণ ॥  
 গুরুলক্ষণ শিষ্যলক্ষণ দুঁহা পরীক্ষণ ।  
 সেব্য ভগবান, সব মন্ত্রবিচারণ ॥  
 মন্ত্র অধিকারী, মন্ত্রসিদ্ধাদি শোপন ।  
 দীক্ষা, প্রাতঃস্মৃতিকৃত্য শৌচ, আচমন ॥১৩১॥  
 দন্তধাবন, স্নান, সঙ্খ্যাদি-বন্দন ।  
 গুরুসেবা, উর্দ্ধপুণ্ড্র, চক্রাদিধারণ ॥  
 গোপীচন্দন, মালাপুতি, তুলসী আহরণ ।  
 বস্ত্র পীঠ গৃহসংস্কার কৃষ্ণ প্রবেশন ॥১৩২॥  
 পঞ্চ মোড়শ, পঞ্চাশৎ উপচারে অর্চন ।  
 পঞ্চকালপূজা আর তিরুষ্কণের ভোজনশয়ন ॥  
 শ্রীমূর্তিলক্ষণ আর শালগ্রামলক্ষণ ।  
 নামমহিমা, নামাপরাধ দূরে বর্জন ॥১৩৩॥  
 বৈষ্ণব-লক্ষণ, সেবাপরাধ খণ্ডন ।  
 শঙ্খ জল গন্ধ পুষ্প ধূপাদি লক্ষণ ॥

জপ, স্তুতি, পরিক্রমা, দণ্ডবৎ বন্দন ।  
 পুরস্চরণবিধি, কৃষ্ণপ্রসাদভোজন ॥১৩৪॥  
 অনিবেদ্যত্যাগ, বৈষ্ণবসিদ্ধাদি বর্জন ।  
 সাধুলক্ষণ, সাধুসঙ্গ, সাধুসেবন ॥  
 অসৎসঙ্গত্যাগ, শ্রীভাগবত শ্রবণ ।  
 দিনকৃত্যপক্ষকৃত্য একাদশাদিবিবরণ ॥১৩৫॥  
 মাসকৃত্য জন্মাষ্টম্যাди বিধিবিচারণ ।  
 মথুরাবাস শ্রীমূর্তির প্রদায় সেবন ॥  
 একাদশী, জন্মাষ্টমী, বাসনবাদশী ।  
 শ্রীরামনবমী আর সুগিহচতুর্দশী ॥১৩৬॥  
 এই সবের বিক্রা ত্যাগ অবিকারণ ।  
 অকরণে দোষ, কৈশে ভক্তির লভন ॥১৩৭॥  
 সর্কত্র প্রমাণ দিবে পুরাণবচন ।  
 শ্রীমূর্তি বিষ্ণুমন্দির করণলক্ষণ ॥  
 সামান্য সদাচার বৈষ্ণব আচার ।  
 অকর্ষব্য, কর্ণব্য, স্মার্ত, বাসুদেয় ॥১৩৮॥  
 এই সংক্ষেপে কহিল সূত্র দিগ্‌দরশন ।  
 যবে তুমি লিখ, কৃষ্ণ করাবে স্মুরণ ॥  
 এইত কহিল প্রভুর সনাতনে প্রসাদ ।  
 বাহ্য শ্রবণে চিত্তের খণ্ডে অবসাদ ॥  
 নিজগ্রন্থে বর্ণপুর বিস্তার করিয়া ।  
 সনাতনে প্রসাদ রাখিয়াছে লিখিয়া ॥১৩৯॥

তথাহি শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয়নটীকে নবমাসকে  
 পঞ্চচত্বারিংশাদিনো কাঃ—  
 গোড়েন্দ্রস্য সভাবিভূষণমণিস্ত্যক্তা য পঞ্চাং শ্রিয়ং  
 রূপস্যাগ্রজ এব এব তরুণীং বৈরাগ্যলক্ষ্মীং নধে ।  
 অন্তর্ভক্তিরগেন পূর্ণদরনো বাহেহবপ্তাকৃতিঃ  
 শৈবটীলৈঃ পিহিতং মহাসর ইব শ্রীতিপ্রদত্তধিধাম্ ॥৯॥  
 তং সনাতনমুপাগতমজ্ঞো-  
 দৃষ্টিমাত্রমতিমাত্রপর্যর্ভঃ ।  
 আলিঙ্গিত পরিঘায়তদোর্ভাং  
 নাস্তকম্পমৎ চম্পকগৌরঃ ॥ ৯৫ ॥

কালেন বৃন্দাবনকেলিবার্জী  
লুপ্তেতি তাং খ্যাপয়িতুং বিশিষা ।  
কৃপামৃতেনাভিষিষেচ দেব-  
ভুতৈব রূপঞ্চ সনাতনঞ্চ ॥ ৯৬ ॥

গৌড়েশস্য সভাবিভূষণমণিঃ ( সভায়াং বিভূ-  
ষণে অলঙ্করণে মণিঃ ) যঃ কৃপস্য অগ্রজঃ এষঃ  
( সনাতনঃ ) এব ঋদ্ধাং ( সমুদ্ধাং ) শ্রিয়ং ত্যক্ত্বা  
ভরুণীং ( নবীনাং ) বৈরাগ্যালক্ষ্মীং ( সম্পত্তিঃ ) দধে ।  
শৈবালৈঃ পিহিতঃ মহাসর ইব অম্বর্জকিরসেন  
পূর্ণস্বরয়ঃ বাহ্যে অবধূতাকৃতিঃ উদ্ভিরাং ( ভক্তি-  
তযুপিদাং ) প্রীতিপ্রদঃ ( অভূৎ ) । অতিমাত্র-  
দয়াদঃ চম্পকগোহঃ অক্ষোঃ দৃষ্টিমাত্রম্ উপাগতং  
( হীনবেশেন আয়াতং ) তং সনাতনং পরিষায়-  
তদোর্ভায়াং সাহু কম্পং ( যথাস্যাত্তথা ) আলি-  
লিঙ্গ । কালেন বৃন্দাবনকেলিবার্জী লুপ্তা ইতি  
তাং বিশিষা খ্যাপয়িতুং দেবঃ ভুতৈব রূপং চ  
সনাতনং চ কৃপামৃতেন অভিষিষেচ ॥ ৯৪—৯৬ ॥

গৌড়েশ্বরের সভালঙ্করণে মনিস্বরূপ,  
শ্রীকৃপের জ্যেষ্ঠভ্রাতা সনাতন গোস্বামী  
সমুদ্রা সম্পত্তিলক্ষ্মী ত্যাগ করতঃ নবীনা  
বৈরাগ্যালক্ষ্মীকে আশ্রয় পূর্বক শৈবালে  
আচ্ছাদিত মহা সরোবরের ন্যায় অন্তর  
ভক্তিরসে পরিপূর্ণ বাহ্যে অবধূতাকৃতি  
হইয়াও ভক্তিতত্ত্বজ্ঞাপনের প্রীতিপ্রদ  
হইয়াছিলেন ।

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে শ্রীচৈতন্যরূপশ্রীশ্রীমলালপদারবিন্দসেবি-বিনোদবিহারি-  
গোস্বামি কৃতায়নবোদিনী ও সুবোধিনী সমন্বিত আশ্বারামশ্চেতি শ্লোক ব্যাখ্যা  
ও সনাতনানুগ্রহ নাম চতুর্বিংশ পরিচ্ছেদ ॥ ২৪ ॥

পরমদয়ালু, চম্পকসদৃশ গৌরবর্ণ  
শ্রীচৈতন্য, নেত্রপথে পতিত হইবামাত্র  
সনাতনকে বাহুদণ্ড দ্বারা আলিঙ্গন  
করিলেন ।

শ্রীকৃষ্ণের বৃন্দাবনবিলাস বার্জী কাল-  
ক্রমে বিলুপ্ত দেখিয়া, পুনরায় তাহা  
বিশেষরূপে প্রচার করিতে শ্রীচৈতন্য  
রূপ ও সনাতনকে করুণামৃত দ্বারা অভি-  
ষিক্ত করিয়াছেন ॥ ৯৪—৯৬ ॥

এইত কহিল সনাতনে প্রভুর প্রসাদ ।  
যাহার শ্রবণে ভক্তের খণ্ডে অবসাদ ॥  
কৃষ্ণের স্বরূপগণের হয় সব জ্ঞান ।  
বিধিরাগমার্গে মাধনভক্তির বিধান ॥  
কৃষ্ণপ্রেম ভক্তিরস ভক্তির সিদ্ধান্ত ।  
ইহার শ্রবণে ভক্ত জানে সব অন্ত ॥  
শ্রীচৈতন্য নিত্যানন্দ অদ্বৈতচরণ ।  
যার প্রাণমন সেই পায় এই ধন ॥  
শ্রীকৃপ রচুনাথ পদে যার আশ ।  
চৈতন্যচরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ১৪০ ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে  
আশ্বারামশ্চেতি শ্লোক ব্যাখ্যা  
সনাতনানুগ্রহো নাম চতু-  
র্বিংশ পরিচ্ছেদ ॥ ২৪ ॥

## পঞ্চবিংশ পরিচ্ছেদ ।

—\*—\*—\*—

বৈষ্ণবীকৃত্য সন্ন্যাসিমুখান্ কাশীনিবাসিনঃ ।

সনাতনং হৃৎসংস্কৃত্য প্রভুর্নীলাঙ্গিমাগমৎ ॥ ১ ॥

প্রভুঃ ( শ্রীচৈতন্যঃ ) কাশীনিবাসিনঃ সন্ন্যাসি-  
মুখান্ ( প্রকাশানন্দাদীন ) বৈষ্ণবীকৃত্য সনাতনং  
হৃৎসংস্কৃত্য ( চ ) নীলাঙ্গিমাগমৎ ॥ ১ ॥

মহাপ্রভু কাশীবাগি প্রকাশানন্দাদি  
প্রধান সন্ন্যাসিগণকে বৈষ্ণব এবং সনা-  
তনকে সুন্দররূপে সংস্কার করতঃ নীলা-  
চলে আগমন করিয়াছিলেন ॥ ১ ॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।

জয়দ্বৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তবৃন্দ ॥

এইমত মহাপ্রভু দুই মাস পর্য্যন্ত ।

শিখাইল তারে ভক্তি সিদ্ধান্তের অস্ত ॥

পরমানন্দ কীর্ত্তনীয় শেখরের সঙ্গী ।

প্রভুকে কীর্ত্তন শুনায় অতিবড়নঙ্গী ॥১

সন্ন্যাসিরগণে প্রভু যদি উপেক্ষিল ।

ভক্তদুঃখ খণ্ডাইতে পশ্চাৎ রূপা কৈল ॥

সন্ন্যাসিরে রূপা, পূর্বে লিখিয়াছি বিবরিঞা ॥

উদ্দেশ্য করিয়ে ইহঁৎ সংক্ষেপ করিঞা ॥

যাঁহা তাঁহা প্রভু নিন্দা করে সন্ন্যাসিরগণ ।

শুনি দুঃখে মহারাষ্ট্রী করয়ে চিস্তন ॥

প্রভুর স্বভাব তাঁরে দেখে যেই জনে ।

স্বরূপ অনুভবি তাঁরে ঈশ্বর করি মানে ॥২

কোন প্রকারে পারো যদি একত্র করিতে

রূপ দেখি সন্ন্যাসিগণ হবে ইহঁার ভক্তে ॥

বারাণসীবাগ আমার হয় সর্বকালে ।

সর্বকাল দুঃখ পাব ইহা না করিলে ॥

এত চিন্তি নিমজ্জিল সন্ন্যাসিরগণে ।

তবে সেই বিপ্র আইলা মহাপ্রভু-স্থানে ॥

হেন কালে নিন্দা শুনি শেখর, তপন ।

দুঃখ পাঞা প্রভু-পদে কৈল নিবেদন ॥৩

ভক্ত দুঃখ দেখি প্রভু মনেতে চিন্তিল ।

সন্ন্যাসির মন ফিরাইতে মন হৈল ॥

হেনকালে বিপ্র আসি কৈল নিমজ্জণ ।

অনেক দৈন্যাদি করি ধরিল চরণ ॥

তবে মহাপ্রভু তার নিমজ্জণ মানিলা ।

আর দিনে মধ্যাহ্ন করি তার ঘর গেলা ॥

তাঁহা যৈছে কৈল প্রভু সন্ন্যাসি-নিস্তার ।

পঞ্চতত্ত্বাখ্যানে তাহা করিয়াছি বিস্তার ॥৪

এস্থ বাঢ়ে পুনরুক্তি হয়ত কখন ।

তাহা যে না লিখিল তাহা করিয়ে লিখন ॥

যে দিবসে প্রভু সন্ন্যাসিরে রূপা কৈল ।

নে দিবস হৈতে গ্রামে কোলাহল হৈল ॥

লোকের সংঘট আইসে প্রভুরে দেখিতে

নানাশাস্ত্রে পণ্ডিত আইসে শাস্ত্রবিচারিতে

সবশাস্ত্র খণ্ডি প্রভু ভক্তি করে সার ।

সুযুক্তিক বাক্যে মন ফিরায় সবার ॥৫

উপদেশ লঞা করে কৃষ্ণসকীর্তন ।

সব লোক হানে গায় করয়ে নর্দন ॥

প্রভুরে প্রণত হৈল সন্ন্যাসিরগণ ।

আজ্ঞামধ্যে গোষ্ঠী করে ছাড়ি অধ্যয়ন ॥

প্রকাশানন্দের শিষ্য এক, তাহার সমান ।

সভা মণ্ডে কহে প্রভুর করিমা সন্মান ॥৬

শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য হয় সাক্ষাৎ নারায়ণ ।

ব্যাসসুত্রের অর্থ করেন অতি মনোমগ্ন ॥

উপনিষদের করেন মুখ্যার্থ ব্যাখ্যান ।  
 শুনি পণ্ডিতলোকের যুড়ায় মন কাণ ॥৭  
 সূত্র উপনিষদের মুখ্যার্থ ছাড়িয়া ।  
 আচার্য্য কল্পনা করে আশ্রয় করিয়া ॥  
 আচার্য্যকল্পিত অর্থ পণ্ডিত যে শুনে ।  
 মুখে 'হয় হয়' করে হৃদয়ে না মানে ॥৮  
 শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য-বাণী দৃঢ় মত মানি ।  
 কলিকালে গঙ্গাসাধর্মে সংসার না জিনি ।  
 'হরেন্দ্র' শ্লোকের যে করিল ব্যাখ্যান ।  
 সেই মত সুখদার্থ পরম প্রমাণ ॥  
 ভক্তি বিনু মুক্তি নহে ভাগবতে কয় ।  
 কলিকালে নামাভাঙ্গে সুখে মুক্তি হয় ॥৯।

তথাহি মধ্যলীলাম্বুধি ষাণ্ডিন্যে ষষ্ঠাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতচরনম্—

শ্রেয়ঃ সৃষ্টিং ভক্তিমনস্য তে বিভো  
 ক্লিষ্টান্তি যে কেবলবোধলক্ষণে ।  
 তেষামদৌ ক্লেশল এন শিষ্যতে  
 নান্যদৃথ্যা স্থূলভুবাবঘাতিনাম্ ॥ ২ ॥

তথাহি মধ্যলীলাম্বুধি ষাণ্ডিন্যে দশমাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতচরনম্—

যেহনোহরবিন্দ্যাক বিমুক্তমানিন-  
 স্ত্যস্তভাবাদবিস্তৃঙ্কবৃক্ষয়ঃ ।  
 আকঙ্ক কৃচ্ছেন পরং পদং ততঃ  
 পতন্ত্যধো নাদৃত যুগ্মদন্তু যঃ ॥ ৩ ॥

ব্রহ্ম শব্দে কহে যড়ৈশ্বর্য্যপূর্ণ ভগবান্ ।  
 তাহে নির্কিংশেষ স্খাপি পূর্ণতা হয় হান ॥  
 ঋতি পুরাণ কহে কৃষ্ণের চিহ্নক্তি বিলাস  
 তাহা নাহি মানে, পণ্ডিত করে উপহাস ॥১০।

তথাহি মধ্যলীলাম্বুধি অষ্টাদশে অষ্টমাঙ্কধৃত-  
 ভাবার্থদীপিকাচরনম্—

হলাদিন্যাং সংবিদ্যাসিষ্টঃ সক্তিদানন্দ ঈশ্বরঃ ।  
 বাহিধ্যাসংযুক্তো জীবঃ সংক্লেপনিকরাকরঃ ॥৪॥

চিদানন্দবিগ্রহ কৃষ্ণের মায়িক করি মানি ।  
 বড় পাপ এই, মত্যা চৈতন্যের বাণী ॥১১॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়স্কন্ধে নবমাধ্যায়ে  
 তৃতীয়শ্লোকঃ—

নাতঃ পরম পরম যত্তবতঃ স্বরূপ-  
 মানন্দমাত্মমবিকল্পমবিক্লেবচর্চঃ ।  
 পশ্যামি বিশ্বস্বল্পমেকমবিশ্বমাশ্বন্  
 ভূতেজ্জিগ্নাস্বকমদন্ত উপাশ্রিতোহস্মি ॥৫॥

( হে ) পরম ! যৎ ( যতঃ ) আনন্দমাত্মম্  
 ( আনন্দং ব্রহ্মত্বাক্তং ব্রহ্ম নির্কেশেষচিৎসং মায়া  
 অংশঃ যস্য তম্ ) অবিকল্পং ( ন বিদ্যাতে বিবিধঃ  
 কল্পঃ সৃষ্টাদিকল্পনা যত্র তম্ ) অবিক্লেবচর্চঃ ( অবিক্লেব  
 মায়য়া ন ভিন্নং বচর্চঃ তেজঃ শক্তিঃ যস্য তাদৃশং )  
 ভবতঃ স্বরূপং ( পূর্ণভগবদাদিরূপং, তত্ত্ব ) পরম  
 ন পশ্যামি । ( হে ) আশ্বন্ ! অতঃ ( কারণং )  
 বিশ্বস্বল্পম্ অবিখং ভূতেজ্জিগ্নাস্বকং ( ভূতানাম্  
 ইঞ্জিয়ানাঞ্চ আত্মা প্রধানাধ্যং স্বরূপং যত্র তৎ )  
 তে ( তব ) মদঃ ( রূপম্ ) উপাশ্রিতঃ অস্মি ॥৫॥

ব্রহ্মা কহিলেন, হে পরম ! যাহা আনন্দ  
 অর্থাৎ নির্কিংশেষ চিৎসং ব্রহ্ম বাঁহার মায়া  
 ( অংশ ), বাঁহাতে সৃষ্টাদি বিবিধ কল্পনা  
 নাই, যাহার শক্তি মায়াসস্তিগ্ন নয়, এব-  
 দ্বিধ আপনার পূর্ণভগবদাদিরূপ হইতে  
 শ্রেষ্ঠ কোনরূপ দেখিতেছি না । হে  
 আশ্বন্ ! এইহেতু যিনি স্বাংশ দ্বারা  
 বিশ্বকে সৃষ্টি করিয়া থাকেন, যিনি অধি-  
 তীয়, যিনি বিশ্ব হইতে ভিন্ন ও সমস্ত ভূত  
 ও ইন্দ্রিয়ের আত্মা যে প্রকৃতি বাঁহাতে  
 আছে; তোমার সেই এই রূপকে  
 আমি আশ্রয় করিলাম ॥ ৫ ॥

তথাহি তত্শ্বেব দশমস্কন্ধে ষট্চত্বারিংশাধ্যায়ে  
 ত্রয়শ্চত্বারিংশশ্লোকঃ—

দৃষ্টং শ্রুতং ভূতভবদুঃখবিষাৎ  
 স্থানুঃশ্চরিতুমহনকং বা ।  
 বিনাচ্যুতাদ্বস্তরং ন বাচ্যং  
 স এব সৰ্ব্বং পরমাত্মভূতঃ ॥ ৬ ॥

দৃষ্টং শ্রুতং ভূতভবদুঃখবিষাৎ স্থানুঃ চরিতুমহন  
 অন্নকং বা বস্তুরং ( বস্ত্রমাত্রং ) অচ্যুতং  
 বিনা ( ভিন্নতয়া ) ন বাচ্যম্ । পরমাত্মভূতঃ স এব  
 সৰ্ব্বম্ ॥ ৬ ॥

দৃষ্টে, শ্রুতে, বর্হমান ভূত, ভবিষ্যৎ,  
 স্থাবর, জঙ্গম, মহৎ বা অল্প বস্তুমাত্র  
 অচ্যুত হইতে ভিন্ন বলিতে পারা যায়  
 না । পরমাত্মভূত তিনিই সমুদায় ॥৬॥  
 তথাহি তত্রৈব তৃতীয়ঙ্কে নবমাধ্যয়ে চতুর্থ-  
 শ্লোকঃ—

তদ্বা ইদং ভুবনমঙ্গল মঙ্গলায়  
 ধ্যানেন স নো দর্শিতং ত উপাসকানাম্ ।  
 তশ্চৈবনমো ভগবতেহুবিধেম তুভ্যং  
 যো নাদৃতো নরকভাগ ভিরসং প্রসঙ্গৈঃ ॥ ৭ ॥  
 (হে) ভুবনমঙ্গল ! উপাসকানাং নঃ (অন্মাকং)

মঙ্গলায় ধ্যানেন তদ্বা ( তদেব ) তে ( তয়া ) ইদং  
 ( রূপং ) দর্শিতং স্মা নরকভাগ্ভিঃ অসং-  
 প্রসঙ্গৈঃ যঃ ( পুরুষঃ ) ন আদৃতঃ তশ্চৈব ভগবতে  
 তুভ্যং নমঃ অহুবিধেম ( অহুবৃত্তা করবাম ) ॥ ৭ ॥

হে ভুবনমঙ্গল ! আমরা তোমার  
 উপাসক, আমরাদিগের মঙ্গলার্থ ধ্যানেন,  
 তোমার সচ্চিদানন্দাত্মক সেই এই রূপ  
 দর্শন করাইলে। কুতর্কপরায়ণ নারকী  
 বহিমুখগণ তোমার ঐ রূপকে মায়ায়  
 বলিয়া আদর করে না। হে রূপাময় !  
 আমরা তোমার অনুরক্তি পরিচর্যা  
 করিয়া তোমাকে নিরন্তর প্রণাম করি ॥ ৭ ॥

তথাহি গীতায়াং নবমাধ্যয়ে একাদশশ্লোকঃ—  
 অসজ্ঞানস্তি মাং মুঢ়া মাহুযীং তনুশ্চিশ্রিতম্ ।  
 পরং ভাব্যমজ্ঞানতো মম ভূতমহেশ্বরম্ ॥ ৮ ॥

ভূতমহেশ্বরং ( নিখিলজগদেকেশ্বামিনং ) মম  
 পরং ভাবং ( ভবম্ ) অজ্ঞানস্তঃ মুঢ়াঃ মাহুযীং তনু  
 আশ্রিতং মাম্ অবজ্ঞানস্তি ( অবমন্যন্তে ) ॥ ৮ ॥

আমি ভূতগণের অধীশ্বর, আমার  
 পরম ভাব জানিতে না পারিয়াই মুঢ়  
 ব্যক্তিগণ, আমি মনুষ্যশরীর আশ্রয়  
 করিয়াছি বলিয়া আমার প্রতি অবজ্ঞা  
 প্রকাশ করিয়া থাকে ॥ ৮ ॥

তথাহি গীতায়াং ষোড়শাধ্যয়ে উনবিংশশ্লোকঃ—  
 তানসং দ্বিষতঃ কুরান্ সংসারেষু নরাধমান্ ।  
 ক্রিপাম্যজস্রমশ্চতানাসুরীশ্বেব যোনিষু ॥ ৯ ॥

দ্বিষতঃ কুরান্ অশুভান্ নরাধমান্ তান্  
 ( জনান্ ) এব সংসারেষু আনুগীযু অজস্রম্ অহং  
 ক্রিপামি ॥ ৯ ॥

আমি ছেষপরায়ণ, ক্রুর, অশুভ নরা-  
 ধম ব্যক্তিগণকে সংসারে অজস্র আনুগী  
 য়োনিতে নিষ্করণ করি ॥ ৯ ॥

সূত্রে পরিণামবাদ তাহা না মানিয়া ।  
 বিবর্কবাদ স্থাপে, ব্যাসে ভ্রান্ত কহিবার ১২ ॥  
 এইত কল্পিত অর্থ মনে মাতি ভায় ।  
 শাস্ত্র ছাড়ি কুকল্পনা পোষণে বৃথায় ।  
 পরমার্থ বিচার গেল, করি মাত্র বাদ ।  
 কাঁহা মুক্তি পাব, কাঁহা কৃষ্ণের প্রসাদ ॥ ১৩ ॥  
 ব্যাসসূত্রের অর্থ আচার্য্য করে আচ্ছাদন ।  
 এই সত্য হয়, শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যবচন ॥  
 চৈতন্যগোমাঞ্জি যেই কহে সেই সত্যসার  
 আর যত সত্য সেই সব চারখার ॥ ১৪ ॥  
 এত কহি সেই করে কৃষ্ণমর্দীন ।  
 শুনি প্রকাশানন্দ কিছু কহেন বচন ॥  
 আচার্য্যের আগ্রহ অদ্বৈতবাদ স্থাপিতে ।  
 তাতে সূত্রার্থ ব্যাখ্যা করে অন্যরীতে ॥ ১৫ ॥



ভগবন্তা মানিলে অদ্বৈত না যায় স্থাপন ।  
অভএব সব শাস্ত্র করয়ে খণ্ডন ॥  
যেই গ্রন্থকর্তা চাহে স্মৃত স্থাপিতে ।  
শাস্ত্রের সহজ অর্থ না হয় তাহা হৈতে ॥১৬॥  
মীমাংসক কহে ঈশ্বর হন কস্মের অঙ্গ ।  
সাংখ্য কহে জগতের প্রকৃতিকারণ সম্বন্ধ ॥  
ন্যায় কহে পরমাণু হৈতে বিশ্ব হয় ।  
স্বাভাবাদী নির্নিশেষ ব্রহ্ম হেতু কয় ॥  
পাতঞ্জলে কহে ঈশ্বর হয় স্বরূপ জ্ঞান ।  
বেদমতে কহে তিনি স্বরূপ ভগবান্ ॥  
ছয়ের ছয় মত ব্যাস কৈল আবর্তন ।  
সেই সব সূত্র লঞা বেদান্ত বর্ণন ॥১৭॥  
বেদান্তমতে ব্রহ্ম সাকার নিরূপণ ।  
নির্গুণ ব্যতিরেকে তেঁহো হয়েত সগুণ ॥১৮॥  
পরম কারণ ঈশ্বর কেহো নাহি জানে ।  
স্ব স্ব মত স্থাপে পরমতের খণ্ডনে ॥  
তাতে ছয় দর্শন হৈতে তত্ত্বস্বাহি জানি ॥  
মহাজন যেহঁকহে সেই সত্য মানি ॥১৯॥

তথাহি মথালীপাঠঃ সপ্তদশে একাদশাধ্যায়-  
মহাভারতবচনম্—

তর্কোহ প্রতিষ্ঠঃ ক্রতরো বিভিন্না  
নাস্মাবিবিধত মতং ন প্রমাণম্ ।  
ধর্মতত্ত্বং নিহিতং গুহ্যমাং  
মহাজনো যেন গতঃ স পদাঃ ॥ ১০ ॥

শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যবাণী অমৃতের ধার ।  
তেঁহো যে কহেন বস্ত্র সেই তত্ত্ব সার ॥  
এ সব রত্নান্ত গুণি মহারাষ্ট্রী ব্রাহ্মণ ।  
প্রভুকে কহিতে সুখে করিলা গমন ॥২০॥  
হেনকালে মহাপ্রভু পঞ্চনদে স্নান করি ।  
দোঁষহেতে চলিয়াছেন বিস্ময়াধব শ্রীহরি ॥  
পথে সেই বিপ্র সব রত্নান্ত কহিলা ।  
গুণি মহাপ্রভু সুখে ঈবং হানিলা ॥২১॥

মাধব-সৌন্দর্য দেখি আবিষ্ট হইলা ।  
অঙ্গনে আসিঞা প্রেমে নাচিতে লাগিলা ॥  
শেখর, পরমানন্দ, তপন, সনাতন ।  
চারি জনে মিলি করে নাম সঙ্কীর্তন ॥২২॥

তথাহি ভক্তকৃতঃ সঙ্কীর্তনম্—

হররে নমঃ কৃষ্ণ বাদবার নমঃ ।  
গোপাল গোবিন্দ রাম শ্রীমধুসূদন ॥ ১১ ॥

চৌদিকে লোক লক্ষ বোলে হরি হরি ।  
উঠিল মঙ্গলধ্বনি স্বর্ণ মর্ত্য ভরি ॥  
নিকটে হরিক্ষনি গুণি প্রকাশানন্দ ।  
কৌতুকে দেখিতে আইলালয়া শিষ্যবৃন্দ ॥  
দেখি প্রভুর নৃত্যপ্রেম দেহের মাধুরী ।  
শিষ্যগণ সঙ্গে সেহ বোলে হরি হরি ॥২৩॥  
কম্প, স্বরভঙ্গ, শ্বেদ, বৈবর্ণ্য, স্তম্ভ ।  
অশ্রুপারায় ভিক্রে লোক, পুলক কদম্ব ॥  
হর্ষ, দৈন্য, চাপল্যাদি, সঞ্চারী বিকার ।  
দেখি কাশীবাণী লোক হৈল চমৎকার ॥  
লোকসজ্জা দেখি প্রভুর যবে বাহ্য হৈলা  
সন্ন্যাসিরগণ দেখি নৃত্য সম্বরীলা ॥ ২৪ ॥

প্রকাশানন্দের কৈল চরণবন্দন ।  
প্রকাশানন্দ আসি তাঁর ধরিল চরণ ॥  
প্রভু কহে জগদ্ধনু তুমি পুজ্যতম ।  
আমি তোমার নাহি হই শিষ্যের শিষ্যসম  
শ্রেষ্ঠ হঞা কেনে কর হীনের বন্দন ।  
আমার সর্কনাশ হয় তুমি ব্রহ্মসম ॥  
যদ্যপি তোমাতে ব্রহ্ম সর্কত্র মাত্র ভাসো  
লোক শিক্ষা লাগি ঐছে করিতেনা আইসে ॥  
তিঁহোকহে আগেতোমানিন্দ্যাপূর্বেষেকরিল  
তোমার চরণস্পর্শি সব ক্ষমাইল ॥ ২৫ ॥

তথাহি বাসনাভাষ্যতপস্বিশিষ্টবচনম্—

ঐশ্বখুকা অপি পুনর্বাঞ্ছি সংসারবাসনাম্ ।  
যদ্যচিত্ত্যমহাশক্তৌ ভাগবত্যাগুণাধিনঃ ॥২৬॥

অচিন্ত্য মহাশক্তৌ ভগবতি যদি অপরাধিনঃ (স্বাঃ, তর্হি) জীবমুক্তাঃ অপি পুনঃ সংসারবাসনাঃ হ্যস্তি ( লভন্তে ) ॥ ১২ ॥

যদি অচিন্ত্যমহাশক্তিশালি ভগবানে অপরাধ হয়, তবে জীবমুক্তেরাও পুনরায় সংসারবাসনা প্রাপ্ত হয় ॥১২॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে চতুদ্বিংশাধ্যায়ে নবমশ্লোকঃ—

স বৈ ভগবতঃ শ্রীমৎপাদস্পর্শহতাশ্রুতঃ ।

ভেজে সর্পবপুর্হিষা রূপং বিদ্যাধরার্চিতম ॥১৩

সঃ বৈ ( চ সর্পঃ ) ভগবতঃ শ্রীমৎপাদস্পর্শহতাশ্রুতঃ ( শ্রীমতঃ ভক্তমনোরথপূরকসম্পাদবতঃ পাদস্ত স্পর্শে ন হতম্ অভক্তং সর্পভাপাদকং শাপ-রূপং যস্ত তথাভূতঃ সন্ ) সর্পবপুঃ হিষা বিদ্যাধরার্চিতং রূপং ভেজে ( প্রাপ ) ॥ ১৩ ॥

ঐ সর্পও ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণের ভক্ত-মনোরথপূরকসম্পাদ্বিশিষ্ট চরণের স্পর্শে বিনষ্টশাপ হইয়া সর্পশরীর পরিত্যাগ পূর্বক বিদ্যাধরণক কতৃক অর্চিত বিদ্যাধরশরীর প্রাপ্ত হইল ॥ ১৩ ॥

প্রভু কহে, বিষ্ণু বিষ্ণু, আমি জীব হীন ।  
জীবে বিষ্ণু মানি এই অপরাধ চিহ্ন ॥  
জীবে বিষ্ণুবুদ্ধি করে যেই ব্রহ্ম রুদ্র সম ।  
নারায়ণে মানে, তারে পাষণ্ডে গণন ॥২৬॥

তথাহি মধ্যলীলারাম্ অষ্টাদশে নবমাস্কন্ধত-পাদ্মোক্তরথশ্রবণম্—

যস্ত নারায়ণং মেবং ব্রহ্মরজাদিবৈবতৈঃ ।

সমঘেবৈব বীকেষু স পাবতী ভবেৎক্রবম্ ॥. ৪॥

প্রকাশানন্দ কহে তুমি দাক্ষ্য ভগবান্ ।  
তবু যদি কর তাঁর দাস অভিমান ॥  
তবু পুঙ্জ্য হও তুমি আমা সবাই হৈতে ।  
সর্বনাশহর আমারতোমারনিন্দাতে ॥২৭॥

তথাহি-মধ্যলীলারাম্ ঊনবিংশে ঊনবিংশাঙ্ক-ধৃত-শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

মুক্তানামপি সিদ্ধানাং মারায়ণপরায়ণঃ ।

সুহৃৎতঃ প্রেমাভ্যাগা কোটিদ্বিপি মহায়ুনে ॥১৪॥

তথাহি মধ্যলীলারাম্ পঞ্চদশে নবমাস্কন্ধত-শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

আয়ুঃ শ্রিয়ং যশো ধর্মং লোকানামিষ এষ চ ।

হস্তি শ্রেমাংসি সর্কালি পুংসো মহদভিক্রমঃ ॥১৬

তথাহি মধ্যলীলারাম্ ষাণ্ডিশে ষাণ্ডিশাঙ্কম্-শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

নৈবাং মতিস্তাবহুক্রমাঙ্গিৎ

স্পৃশ্তানর্থাপগমো ধর্মঃ ।

মহীয়সং পাদরজোহতিবেকং

নিক্কিৎনানাং ন বৃণীত ধাবৎ ॥ ১৭ ॥

এবে তোমার পদে মোর উপজিবে ভক্তি  
তার নিমিত্ত করি তোমার চরণে প্রণতি ॥  
এত বলি প্রভু লঞা তাহাই বলিলা ।  
প্রভুকে প্রকাশানন্দ পুছিতে লাগিলা ॥২৮॥  
মায়াবাদে কৈলে যত দোষের আখ্যান ।  
সবে ইহা জানি আচার্যেরকল্পিতব্যাখ্যান ॥  
সূত্রের করিলে তুমি মুখ্যার্থ বিবরণ ।  
তাহা শুনি সবার হৈল চমৎকার মন ॥২৯॥  
তুমিত ঈশ্বর তোমার আছে সর্বশক্তি ।  
সঙ্কল্পরূপে কহ তুমি শুনিতে হয় মতি ॥  
প্রভু কহে আমি জীব অতিতুচ্ছ জ্ঞান ।  
ব্যাসসূত্রের গম্ভীরার্থ ব্যাস ভগবান ॥৩০॥  
তার সূত্রের অর্থ কোন জীব নাহি জানে ।  
অন্তএবআপনসূত্রেরকরিয়াছেব্যাখ্যানে ॥  
যেই সূত্রকর্তা সে যদি করয়ে ব্যাখ্যান ।  
তবে সূত্রের অর্থ লোকের হয় জ্ঞান ॥৩১॥  
প্রণবের যেই অর্থ, গায়ত্রীতে সেই হয় ।  
সেই অর্থ-চতুঃশ্লোক বিবরণিয়া কর ॥

ব্রহ্মারে নারায়ণ চতুঃশ্লোক যে কহিল ।  
 ব্রহ্মা নারদে সেই শ্লোক উপদেশকৈল ॥৩২॥  
 সেই অর্থ নারদ ব্যাসদেবেরে কহিল ।  
 শূনি বেদব্যাস তাহা বিচার করিল ॥  
 এই অর্থ আমার সূত্রের ব্যাখ্যানুরূপ ।  
 শ্রীভাগবত করিব সূত্রের ভাষাস্বরূপ ॥৩৩॥  
 চারিবেদে উপনিষদে যত কিছু হয় ।  
 তার অর্থ লঞা ব্যাস করিল সঞ্চয় ॥  
 যেই সূত্রে যেই ঋক্ বিদ্যয় সচন ।  
 ভাগবতে সেই ঋক্ শ্লোক নিবন্ধন ॥  
 অতএব সূত্রের ভাষ্য শ্রীভাগবত ।  
 ভাগবতের শ্লোক উপনিষদকহে একমত ॥৩৪॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে অষ্টমস্কন্ধে প্রথমোধ্যায়ৈ  
 দশমশ্লোকঃ—

আত্মবাস্তমিদং সর্বং যৎ কিঞ্চিজ্জগত্যাং জগৎ ।  
 তেন ত্যক্তেন ভূঞ্জীথা মা গৃধঃ কশ্চচিৎকনম্ ॥১৮ ॥

জগত্যাং ( লোকে ) যৎ কিঞ্চিং জগৎ ( ভূত-  
 জাতম্ ) ইদং সর্বম্ আত্মবাস্তম্ ( আত্মনা ঈশ্বরেণ  
 অবাস্তম্ সত্ত্বাচৈতন্যাত্যাং ব্যাপাং ) তেন ( হেতুনা )  
 ত্যক্তেন ( ঈশ্বরার্পণেনৈব ) ভূঞ্জীথাঃ ( স্বার্থং )  
 কশ্চচিৎ ( অপি ) ধনং মা গৃধঃ ( অভিক্ষাঙ্কীঃ ) ॥১৮ ॥

এই লোকে যে কিছু পদার্থ আছে,  
 সে সকলই ঈশ্বরের সত্তা ও চৈতন্য দ্বারা  
 ব্যাপ্ত, অতএব ঈশ্বর বাহা কিছু অর্পণ  
 করিয়াছেন, তদ্বারাই ভোগ সকল কর,  
 আপনার নিমিত্ত কাহারও ধন আকাঙ্ক্ষা  
 করিও না ॥ ১৮ ॥

এক শ্লোক দেখাইয়া কৈল দিগ্‌দরশন ।

এইমত ভাগবতের শ্লোক ঋক্‌ সম ॥

শ্রীভাগবতে সঙ্ক্‌ভিষেয় প্রয়োজন ।

চতুঃশ্লোকীতে প্রকট তার করিয়াছে লক্ষণ ॥

আমি সঙ্ক্‌ তত্ত্ব, আমার জ্ঞান বিজ্ঞান ।  
 আমা পাইতে সাধনভক্তি অভিধেয় নাম ॥  
 সাধনের ফল প্রেমা মূলপ্রয়োজন ।  
 যেই প্রেমে পায় জীব আমার সেবন ॥৩৫॥

তথাহি আদিলীলায়াং প্রথমে একবিংশাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

জ্ঞানং পরমগুহ্যং মে যদ্বিজ্ঞানসমমিতম্ ।  
 সরহস্যং তদদর্শ গৃহাণ গদিতং ময়া ॥ ১৯ ॥  
 এই তিন তত্ত্ব আমি কহিব তোমারে ।  
 জীব তুমি, এই তিন নারিবে জানিবারে ॥  
 যৈছে আমার স্বরূপ, যৈছে আমার স্থিতি ।  
 যৈছে আমার গুণ, কর্ম্ম, যৈছে স্বর্ঘ্য-শক্তি ॥  
 আমার রূপায় ক্ষুরক এ সব তোমারে ।  
 এত বলি তিন তত্ত্ব কহিল তাহারে ॥৩৬॥

তথাহি আদিলীলায়াং প্রথমে দ্বাবিংশাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

যাবানহং যথাভাবো যক্রূপগুণকর্ম্মকঃ ।  
 তথৈব তব্বিজ্ঞানসমস্ত তে মদচগ্রহাৎ ॥ ২০ ॥  
 সৃষ্টির পূর্বে যৈছে স্বর্ঘ্য পূর্ণ আমি হইয়ে ।  
 প্রাপঞ্চ প্রকৃতি পুরুষ আমাতেই লয়ে ॥  
 সৃষ্টি করি তার মধ্যে আমিত বসিয়ে ।  
 প্রাপঞ্চ যে দেখ সব, সেহ আমি হইয়ে ।  
 প্রলয়ে অবশিষ্ট সব আমি পূর্ণ হইয়ে ।  
 প্রাকৃত প্রাপঞ্চ পায় আমাতেই লয়ে ॥৩৭ ॥

তথাহি আদিলীলায়াং প্রথমে ত্রয়োবিংশাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

অহমেবাসমেবাগ্রে নান্যদ্যৎ সদস্যং পরম্ ।  
 পশ্চাদহং যদেতচ্চ যোহবশিষ্যত সৌহস্যম্ ॥২১ ॥  
 ‘অহমেব অহমেব’ শ্লোকে তিনবার ।  
 পূর্ণস্বর্ঘ্য বিগ্রহ স্থিতির নির্দ্ধার ॥  
 সে বিগ্রহ নাহি মানে নিরাকার মানে ।  
 তারে তিরস্কার করি কৈল নির্দ্ধারণে ॥৩৮ ॥

এই সব শব্দ হয় জ্ঞান বিজ্ঞান বিবেক ।  
 মায়াকার্য্য মায়ী হৈতে আমি ব্যতিরেক ॥  
 দৈছে সূর্য্যাভাস স্থানে ভাসয়ে আভাস ।  
 সূর্য্য বিনু স্বভঃ তাঁর না হয় প্রকাশ ॥  
 মায়াতীত হৈলে হয় আমার অনুভব ।  
 এই সম্বন্ধতত্ত্ব কহিল শুন আর সব ॥৩৯॥

তথাহি আদিলীলায়াং প্রথমে চতুর্বিংশাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—  
 ঋতের্থং যৎ প্রতীয়েত ন প্রতীয়েত চান্মনি ।  
 তদ্বিদাদান্মনো মায়ং যথাভাসো যথাভসমঃ ॥২২॥  
 অভিধেয় সাধনভক্তির শুন হি চিটার ।  
 সর্কর্জন দেশকালদশায় ব্যাপ্তি যার ॥  
 ধর্মাদিবিষয়ে যৈছে এ চারি বিচার ।  
 সাধনভক্তি এই চারি বিচারের পার ॥  
 সব দেশে, কালে, দশায় জনের কর্তব্য ॥  
 গুরুপাশে সেই ভক্তি প্রাপ্তব্য শ্রোতব্য ॥৪০॥

তথাহি আদিলীলায়াং প্রথমে ষড়্বিংশাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—  
 এতাবদেব জিজ্ঞাসাঃ তত্ত্বজিজ্ঞাসুনাশ্বনঃ ।  
 অরয়ন্যতিরেকাভ্যাং যৎ স্যাৎ সর্কর্ম্ম সর্কর্দা ॥২৩॥  
 আমাতে যে প্রীতি, সেই প্রেম প্রয়োজন ।  
 কার্য্যদ্বারে কহি তাব স্বরূপ লক্ষণ ॥  
 পঞ্চভূত যৈছে ভূতের ভিতবে বাহিরে ।  
 ভক্তগণে ক্ষুরি আমি বাহিরে অন্তরে ॥৪১॥

তথাহি আদিলীলায়াং প্রথমে পঞ্চবিংশাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—  
 যথা মহাস্তি ভূতানি ভূতেশূচাবচেষথু ।  
 প্রবিষ্টান্যপ্রবিষ্টানি তথা তেশু ন তেশ্বহম্ ॥২৪॥  
 ভক্ত আসা বাঙ্কিয়াছে হৃদয়কমলে ।  
 বাঁহা নেত্র পড়ে তাঁহা আমাকে মহালে ॥৪২॥  
 তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশস্কন্ধে ত্রিভীয়াধ্যায়ে  
 পঞ্চপঞ্চাশত্তমশ্লোকঃ—

বিস্বকৃতি হৃদয়ং ন যস্য সাক্ষা-  
 ক্ষয়িরবশতিহিতোহপ্যবোধনাশঃ ।  
 প্রণয়রসনয়া ধৃতাজ্জ্ব পদ্মঃ  
 স ভবতি ভাগবতপ্রধান উক্ৰঃ ॥ ২৫ ॥

অবশাভিহিতঃ অপি অবোধনাশঃ হরিঃ (এব)  
 সাক্ষাৎ যস্য হৃদয়ং ন বিস্বকৃতি (মুকৃতি) প্রণয়রস-  
 নয়া ধৃতাজ্জ্ব পদ্মঃ সঃ ভাগবতপ্রধানঃ (ইতি)  
 উক্ৰঃ ভবতি ॥ ২৫ ॥

যে কোনরূপে হউক, বাঁহার নাম  
 উচ্চারিত হইলে সকল পাপ দূর হয়,  
 সেই হরি প্রেমরঞ্জু দ্বারা বক্রপাদ হইয়া  
 সাক্ষাৎ বাহার হৃদয় পরিত্যাগ করেন  
 না, তিনি উত্তম ভাগবত বলিয়া অভি-  
 হিত হন ॥ ২৫ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং অষ্টমে ষিণ্ণাশত্তমাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

সর্কর্ভূতেষু যঃ পশ্চেন্দ্রস্তগবত্ভাবমাশ্বনঃ ।  
 ভূতানি ভগবত্যাশ্বনোয ভাগবতোত্তমঃ ॥২৬॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে দশমস্কন্ধে ত্রিংশাধ্যায়ে  
 চতুর্থশ্লোকঃ—

গায়ন্ত্য উচ্চৈরমুম্বেব সংহতা  
 বিচিক্কাঙ্কমাত্তকবদ্বৈনাদবনম্ ।  
 পপ্রচ্ছুরাকামবদস্তরং বহি-  
 ভূতেশু সন্তং পুরুষং বনম্পতীন ॥ ২৭ ॥

সংহতাঃ ( মিলিতাঃ ) উচ্চৈঃ গায়ন্ত্যাঃ বনাম্  
 বনঃ ( গচ্ছন্ত্যাঃ ) অমুং ( শ্রীকৃষ্ণম্ ) এব উদ্যন্তকৃষ্ণং  
 বিচিক্কাঃ ( অমৃগয়ন্ ) । আকাশবৎ ভূতেশু ( চরা-  
 চরেষু ) বহিঃ অন্তরং ( চ ব্যাপ্য ) সন্তং ( বর্তমানম্  
 অন্তএস ) পুরুষঃ ( পূর্ণমপি শ্রীকৃষ্ণং ) বনম্পতীন  
 পপ্রচ্ছুঃ ॥ ২৭ ॥

তাঁহারা সমবেত হইয়া উচ্চৈঃস্বরে  
 গান করিতে করিতে বন হইতে বনান্তরে

গমন পূর্বক উন্নতের স্থায় শ্রীকৃষ্ণকেই  
অধেষণ করিতে লাগিলেন, আর তাঁহার।  
আকাশের স্থায় চরাচর সর্বভূতের  
অন্তরে ও বাহিরে বর্তমান সেই পূর্ণ-  
পুরুষ শ্রীকৃষ্ণের নারী বৃক্ষসকলের নিকট  
জিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন ॥ ২৭ ॥

অতএব ভাগবতে এই তিন কয় ।

সম্বন্ধাভিধেয় প্রয়োজনময় ৪৩ ॥

তথাহি আদিলীলারঃ দ্বিতীয়ে চতুর্থাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

বদন্তি তত্ত্ববিনস্তবঃ স্বজ্ঞানমধরম্ ।

ব্রহ্মেতি পরমাশ্চেতি ভগবান্নিতি শক্যতে ॥২৮॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে তৃতীয়ঙ্কে পঞ্চমাধ্যায়ে  
জ্যোতিংশ্লোকঃ—

ভগবানেক আসেনমগ্র আত্মান্নানং বিভূঃ ।

আশ্বেচ্ছামুগতাবান্মা নানামতু্যপলক্ষণঃ ॥ ২৯ ॥

অগ্রে ( সৃষ্টে: পূর্বম্ ) আশ্বেচ্ছামুগতে  
( আশ্বেচ্ছা সৃষ্টাদীচ্ছা তস্যা অমুগতো লীন-  
তারং সত্যাম্ ) ইদং ( বিখং পুরুষাদি-  
পার্শ্বিবর্ষাঙ্কং তদানীম্ একাকিনা স্থিতেন  
ভগবতা সর্হকীভূরাসীৎ যতঃ ) আত্মান্নানাম্  
( আত্মানং শুদ্ধজীবানামপি রশ্মিহানীয়াণাম্ আত্মা  
শুণ্ডলহানীরং পরমস্বরূপং ) বিভূঃ ( স্বামী ) এক  
( এব ) আত্মা ( স্বয়ং শিষ্ণ্বরূপঃ ) নানামতু্যপ-  
লক্ষণঃ ( বৈকুণ্ঠাদি নামামতু্যপি স এতৈক উপ-  
লক্ষিত ইতি ) ভগবান্ আস ( আসীৎ ) ॥ ২৯ ॥

সৃষ্টির পূর্বে সৃষ্টাদির ইচ্ছা তাঁহাতে  
লীন হইলে সে সময় পুরুষাদিপার্শ্বিব  
পর্যন্ত এই বিশ্ব ভগবানের সহিত একী-  
ভূত ছিল, যে হেতু তিনি শুদ্ধ জীবেরও  
পরম্বরূপ, ব্যাপক, স্বয়ংসিদ্ধস্বরূপ এবং  
বৈকুণ্ঠাদি নানাবৈভবে উপলক্ষিত এক-  
মাত্র ভগবান্ ছিলেন ॥ ২৯ ॥

তথাহি আদিলীলারঃ দ্বিতীয়ে জ্যোতিংশ্লোকধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

এতে চাংশকলাঃ পুংসঃ কক্ষন্ত ভগবান্ বরম্ ।

ইজারিব্যাকুলং লোকং যুদ্ধয়ন্তি যুগে যুগো ৩০ ॥

এইত সম্বন্ধ, শুন অভিধেয় ভক্তি ।

ভাগবতে প্রতিলোকব্যাপেষারস্থিতি ॥৪৪

তথাহি মধ্যলীলারঃ বিশেষে সপ্তদশাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

ভক্ত্যাহমেকমা গ্রাহঃ প্রকরাম্মা প্রিয়ঃ সতাম্ ।

ভক্তিঃ পুনাতি মন্বিষ্ঠা স্বপাকানপি সম্ভবাথা ৩১ ॥

তথাহি আদিলীলারঃ সপ্তদশে পঞ্চমাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

ন সাধয়তি মাং যোগো ন সাংখ্যং ধর্ম উদ্ধব ।

ন স্যাধ্যায়ন্তপস্ত্যাগো যথা ভক্তির্মমোক্ষিতা ॥৩২

তথাহি মধ্যলীলারঃ বিশেষে চতুর্দশাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

ভয়ং দ্বিতীয়াতিনিবেশতঃ স্তা-

দীশাদপেতস্ত বিপর্যায়োহস্থিতিঃ ।

তন্মায়রাতো বৃধ আতজ্ঞেং তং

ভট্টক্যকয়েশং গুরুদেবতাশ্চ ॥ ৩৩ ॥

এবে শুন প্রেম, যেই মূল প্রয়োজন ।

পুলকাক্ষ নৃত্য গীত যাহার লক্ষণ ॥ ৪৫ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশঙ্কে তৃতীয়াধ্যায়ে  
একত্রিংশ্লোকঃ—

সরস্তঃ স্মারসস্তস্ত মিণোহঘৌষহরং হরিম্ ।

ভক্ত্যা সজ্জাতয়া ভক্ত্যা বিহৃত্যংপুলকাং তহম্ ॥৩৪

( এবং ) ভক্ত্যা ( সাধনভক্ত্যা ) সজ্জাতয়া

( প্রেমলক্ষণর ) ভক্ত্যা অদৌষহরং হরিং সরস্তঃ  
মিথঃ স্মারসস্তঃ চ উৎপুলকাং ( রোমোদগমযুকাং )  
তহম্ বিব্রজি ॥ ৩৪ ॥

এইরূপে সাধনভক্তি দ্বারা আবিভূত  
প্রেমভক্তি দ্বারা পাপ-বিনাশক হরিকে  
স্মরণ করিয়া এবং অস্তকে স্মরণ করাইয়া  
লোমাক্ষিত কলেবর ধারণ করেন ॥ ৩৪ ॥

তথাহি আদিলীলারাম্ সপ্তমে চতুর্থাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

এবং ব্রতঃ ঋশ্মিরনামকীর্ত্যা  
জাতাহুর্ভাগো জ্ঞতচিত্ত উটৈঃ ।  
হসত্যধো রৌদ্রিত্তি রৌতি গায়-  
ত্বান্মাদববৃত্ত্যতি লোকবাহুঃ ॥ ৩৫ ॥

অতএব ভাগবত সূত্রের অর্থ রূপ ।  
নিজকৃত সূত্রের অর্থ ভাষ্যস্বরূপ ॥ ৪৬ ॥

তথাহি হরিত্তিক্তিবিলাসে দশমবিলাসে ত্র্যশীত্য-  
ধিকবিশততমোঙ্কধৃত-গায়ত্রবচনম্—

অর্থোহয়ং ব্রহ্মসূত্রাগাং ভারতার্ধবিনির্গয়ঃ ।  
গায়ত্রীভাষ্যরূপেহসৌ বেদার্থপরিসূহিতঃ ॥৩৬॥  
পুরাণানাং সামরূপঃ সাক্ষাদ্ ভগবতোদিতঃ ।  
ষাদশস্কন্ধস্কন্ধোহয়ং শতবিচ্ছেদসংযুতঃ ।  
প্রোছোহষ্টাদশসাহস্রঃ শ্রীমদ্ভাগবতাভিধঃ ॥৩৭ ॥

অয়ং শ্রীমদ্ভাগবতাভিধঃ গ্রন্থঃ ব্রহ্মসূত্রাগাং  
( বেদান্তসূত্রাগাম্ ) অর্থঃ ( অভিধেয়রূপঃ ) ভার-  
তার্ধবিনির্গয়ঃ ( মহাভারতস্ত অর্থানাং নির্গয়ঃ নিশ্চয়ঃ  
যস্মিন্ তথাবিধঃ ) অসৌ ( শ্রীভাগবতশাস্ত্রঃ ) গায়ত্রী-  
ভাষ্যরূপঃ ( গায়ত্র্যাঃ ব্যাখ্যারূপঃ ) বেদার্থপরি-  
সূহিতঃ ( বেদার্থৈঃ বদ্ধিতঃ ) পুরাণানাং ( মধ্যে )  
সামরূপঃ অয়ং ( গ্রন্থঃ ) ষাদশস্কন্ধস্কন্ধঃ শতবিচ্ছেদ-  
সংযুতঃ ( শব্দৈঃ পঞ্চত্রিংশাদধিকশতকসংখ্যারৈঃ  
বিচ্ছেদৈঃ অধ্যায়ৈঃ সংযুতঃ ) অষ্টাদশসাহস্রঃ  
( অষ্টাদশসহস্রৈঃ শ্লোকৈঃ সম্ব্যাতঃ ) সাক্ষাৎ  
ভগবতোদিতঃ ( ভগবতা উদিত কথিতঃ ) ॥৩৬।৩৭ ॥

যাহা ব্রহ্মসূত্রের অভিধেয়, যাহাতে  
মহাভারতের সমস্ত অর্থ নির্ণীত হইয়াছে,  
যাহা গায়ত্রীর ভাষ্যস্বরূপ, সমগ্র বেদার্থ  
দ্বারা যাহার কলেবর বদ্ধিত, যাহা পুরাণ  
সকলের মধ্যে সামবেদস্বরূপ, যাহাতে  
ষাদশটি স্কন্ধ সংযুক্ত, যাহাতে তিন শত  
পঁইত্রিশ অধ্যায় বিরাঞ্জিত এবং যাহাতে

অষ্টাদশসহস্র শ্লোক, সেই শ্রীমদ্ভাগবত  
স্বয়ং ভগবান্ কল্ক কথিত ॥ ৩৬।৩৭ ॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমস্কন্ধে তৃতীয়াধ্যায়ে  
ষিচৎচারিংশশ্লোকঃ—

সর্ববেদেতিহাসানাং সারং সারং সমুচ্চতম্ ॥৩৮॥  
সর্ববেদেতিহাসানাং সারং সারম্ ( উপাদেয়-  
ভোগঃ ) সমুচ্চতম্ ( ইদং শ্রীমদ্ভাগবতম্ ) ॥ ৩৮ ॥

বেদব্যাস সমগ্র বেদ ও ইতিহাস  
হইতে সার সার ভাগ উদ্ধার করিয়া এই  
শ্রীমদ্ভাগবত প্রণয়ন করেন ॥ ৩৮ ॥

তথাহি তত্ৰৈব ষাদশস্কন্ধে ত্রয়োদশাধ্যায়ে পঞ্চ-  
দশশ্লোকঃ—

সর্ববেদান্তসারং হি শ্রীভাগবতমিষাতে ।  
তদ্রসামুতত্পুস্ত্র নানাত্র সাদ্রতিঃ কচিং ॥৩৯॥

সর্ববেদান্তসারং হি শ্রীভাগবতম্ ইষাতে ।  
তদ্রসামুতত্পুস্ত্র ( তস্ত ভাগবতস্ত রস এব অমৃতং  
তেন তৃপ্তস্ত জনস্ত ) অন্যত্র ( শাস্ত্রানৌ ) কচিং  
রতিঃ ন স্যৎ ॥ ৩৯ ॥

সমস্ত বেদান্তশাস্ত্রের সারভূত ভাগ-  
বত শাস্ত্র । যেহেতু এই শ্রীমদ্ভাগবত-  
রসামুতে পরিতৃপ্তজনের অন্য শাস্ত্রাদিতে  
রতির সম্ভাবনা হয় নী ॥ ৩৯ ॥

গায়ত্রীর অর্থে এই গ্রন্থ আরম্ভণ ।

‘গত্যংপরং’সম্বন্ধ‘ধীমহি’সাদনেপ্রায়োজন ॥৪০ ॥

তথাহি মধ্যলীলারাম্ অষ্টমে একপঞ্চাশত্তমোঙ্ক-  
ধৃত-শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

জ্ঞানাদ্যস্য যতোহম্ববাদিতরত্শার্ধেবভিত্তকঃ স্মরাট্  
ভেনে ব্রহ্ম হৃদা ব আদিকবয়ে মুচ্যতি বং স্মরয়ঃ ।  
তেজোবারিমূনাং বধা বিনিময়ো বত্র ত্রিসর্গোহমৃষা  
ধারা শ্বেন সদানিরন্তকুহকংসত্যংপরংধীমহি ॥৪০॥

তথাহি আদিলীলারাম্ প্রথমে সপ্তত্রিংশাঙ্কধৃত-  
শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

ধর্মঃশ্রোত্রীতটৎ ৪১১২ রপরনোনির্ম্মৎসরাণংসতাং  
 বেদাং বাস্তবনম বস্ত শিবং ঙাপত্রয়োম্মূলনম্ ।  
 শ্রীমদ্ভাগবতে মহামুনিবৃতে কিম্বা-গর্ভেরীশ্বরঃ  
 মদ্যোক্তব্যবধ্যতেহঁত্রকৃতিভিঃ স্তম্মুক্তিত্তৎক্ষণাৎ ॥৪১১

কৃষ্ণভক্তিরসম্বরূপ শ্রীভাগবত ।  
 তাতে বেদশাস্ত্র হৈতে পরম মহত্ব ॥৪৮॥

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে প্রথমবর্গে প্রথমাধ্যায়ে  
 তৃতীয়শ্লোকঃ—

নিগমকল্পতরোগলিতং ফলং  
 শুকমুখাদমৃতদ্রবসংযুতম্ ।  
 পিবত ভাগবতং রসমালয়ং  
 মুহুরহো রসিকা ভুবি ভাবুকাঃ ॥ ৪২ ॥

অহো ( হে ) ভাবুকাঃ ( পরমমদলায়নাঃ )  
 রসিকাঃ ( ভগবৎপ্রীতিরসজ্ঞাঃ ) নিগমকল্পতরোঃ  
 শুকমুখং ভুবি গলিতম্ অমৃতদ্রবসংযুতং রসং  
 ফলং ভাগবতম্ আলয়ং মুহুঃ পিবত ॥ ৪২ ॥

এই শ্রীমদ্ভাগবত সর্কপুরুষার্থপ্রদ  
 বেদরূপ কল্পরক্ষের ফলস্বরূপ । ইহা  
 শুকমুখ হইতে গলিত হইয়া অখণ্ডরূপে  
 পৃথিবীতে পতিত হইয়াছে । অতএব  
 রসবিশেষ ভাবনাচতুর রসজ্ঞব্যক্তিগণ,  
 অমৃত দ্রবসংযুক্ত এই রসময় ফল মোক্ষ  
 পর্য্যন্ত বারম্বার পান করুন ॥ ৪২ ॥

তথাহি তটম্বে একোনবিংশশ্লোকঃ—  
 বয়স্ ন বিতৃপ্যাম উত্তমঃশ্লোকবিক্রমে ।  
 বস্ধ্বংতাং রসজ্ঞানাং স্বাহ স্বাহ পদে পদে ॥৪৩॥  
 বস্ধ্বংতাং রসজ্ঞানাং পদে পদে স্বাহ স্বাহ  
 ( তস্মিন্ ) উত্তমঃশ্লোকবিক্রমে বয়স্ তু ন বিতৃ-  
 প্যামঃ ॥ ৪৩ ॥

শ্রীভগবানের চরিত্র শ্রবণে আমরা  
 কখনই তৃপ্তিলাভ করিতে পারি না ।  
 রসজ্ঞ ব্যক্তিগণ ভগবচ্চরিত্র শ্রবণে পদে  
 পদেই স্বাহুত্ব অনুভব করিতে থাকেন ॥৪৩

অতএব ভাগবত করন্ব বিচার ।  
 ইহাতে পাইবে সূত্র, শ্রুতির অর্থ সার ।  
 নিরন্তর কর কৃষ্ণনাম গঙ্কীর্তন ।  
 হেলায় মুক্তি পাবে, পাবে কৃষ্ণপ্রোমধন ॥৪৩

তথাহি মধ্যলীলায়াং অষ্টমে অষ্টমাঙ্কধৃতদীপা-  
 বচনম্—

ব্রহ্মভূতঃ প্রসঙ্গাত্মা ন শোচতি ন কাঙ্কতি ।  
 সমঃ সর্কেষু ভূতেষু মন্তকিং লভতে পরাম্ ॥৪৪॥

তথাহি শাক্ষরভাষ্যম্—  
 মুক্তা অপি লীলয়া বিগ্রহং কৃত্বা ভগবন্তং ভজন্তে ॥ ৫ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং চতুর্কিংশে একাদশাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

পরিনিষ্ঠিতোহপি নৈশ্বর্গ্যে উত্তমঃশ্লোকলীলয়া ।  
 গৃহীতচেতা রাজর্ষে আখ্যানং যদধীতবান্ ॥ ৪৬ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং সপ্তদশে নবমাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

তস্যারবিন্দনয়নস্যা পদারবিন্দ-  
 কিঞ্চ রমিশ্চতুপসীমকরন্দবায়ুঃ ।  
 অন্তর্গতঃ স্ববিবরণে চকার তেবাং  
 সংকোভমক্ষরজুষ্যাপি চিন্ততযোঃ ॥ ৪৭ ॥

তথাহি মধ্যলীলায়াং বট্টে সপ্তদশাঙ্কধৃত-  
 শ্রীমদ্ভাগবতবচনম্—

আত্মারামাশ্চ মুনয়ো নিগ্রহা অপ্যক্ৰমে ।  
 কুর্কস্তাহৈতুকীং তক্তিমিখন্তু ত গণো হরিঃ ॥৪৮॥

হেনকালে সেই মহারাষ্ট্রীয় ব্রাহ্মণ ।  
 সভাতে কহিল এই শ্লোক বিবরণ ।  
 এই শ্লোকের অর্থ প্রভু একষষ্টিপ্রকার ।  
 করিয়াছেন,যাহা শুনি লোকে চমৎকার ॥  
 তবে সব লোক শুনিবারে আশ্রয় করিল ।  
 একষষ্টি অর্থ প্রভু বিবরি কহিল ॥  
 শুনিয়া লোকের হৈল বড় চমৎকার ।  
 চৈতন্যগোস্বামি কৃষ্ণ করিল নির্দ্বার ॥৫০

এত কহি উঠিয়া চলিলা গৌরহরি ।  
 নমস্কার করে লোক হরিক্ষনি করি ॥  
 সব কাশীবাসী করে নাম সঙ্কীৰ্ত্তন ।  
 প্রেমে হাসে কান্দে গায় করয়ে নৰ্ত্তন ॥  
 সন্ন্যাসী পণ্ডিত করে ভাগবত বিচার ।  
 বারাণসীদেশ প্রভু করিল নিস্তার ॥৫১॥  
 নিজগণ লঞা প্রভু আইলা বাসাঘর ।  
 বারাণসী হৈল দ্বিতীয় নদীয়ানগর ॥  
 নিজগণ লঞা প্রভু কহে হাশ্ব্য করি ।  
 কাশীতে বেচিতে আমি আনিল ভাবকালি ।  
 কাশীতে গ্রাহক নাহি, বস্তু না বিকায় ।  
 পুনরপি বহি দেশে লওয়া নাহি যায় ॥  
 আমি বোঝা বহিব তোমা সবার দুঃখ হৈল  
 তোমা সবার ইচ্ছায় বিনিমূলে বিলাইল ॥৫২  
 সবে কহে লোকতারিতে তোমার অবতার  
 পূৰ্ব দক্ষিণ পশ্চিম সব করিলা নিস্তার ॥  
 এক বারাণসী ছিল তোমাতে বিমুখ ।  
 তাহা নিস্তারিঞা কৈলে আমা সবার মুখ ॥৫৩  
 বারাণসী গ্রামে যদি কোলাহল হৈল ।  
 শুনি দেশী গ্রামী লোক আসিতে লাগিল ॥  
 লক্ষকোটী লোক আইসে নাহিক গণন ।  
 সঙ্কীর্ণ স্থানে প্রভুর না পায় দর্শন ॥  
 প্রভু যদি স্থানে যান, বিশ্বেশ্বর দরশনে ।  
 দুই দিকে লোক করে প্রভু বিলোকনে ॥  
 বাহু তুলি বলে প্রভু, কহ কৃষ্ণ হরি ।  
 দণ্ডবৎ করে লোক 'হরিক্ষনি' করি ॥৫৪॥  
 এইমত দিন পঞ্চ, লোক নিস্তারিঞা ।  
 আর দিন চলিলা প্রভু উদ্বিগ্ন হইয়া ॥  
 রাজ্যে উঠি প্রভু যদি করিলা গমন ।  
 পাছে লাগ লৈল তবে ভক্ত পঞ্চজন ॥  
 তপনমিশ্র রঘুনাথ মহারাষ্ট্রীয় ব্রাহ্মণ ।  
 চন্দ্রশেখর পরমানন্দ কীর্ত্তনীয়া জন ॥৫৫॥

সবে চাহে প্রভু-সঙ্গে নীলাচল বাইতে ।  
 সবাকে বিদায় দিল যত্নের সহিতে ॥  
 যার ইচ্ছা পাছে আইস আমারে দেখিতে  
 এবে আমি একা যাব ঝারিখণ্ড পথে ॥৫৬  
 সনাতনে কহিল তুমি বাহ বৃন্দাবন ।  
 তোমার দুই ভাই তাঁহা করিয়াছে গমন ॥  
 কান্ধা করঞ্জিয়া মোর কাঞ্চাল উক্তগণ ।  
 বৃন্দাবন আইলে তার করিহ পালন ॥  
 এত বলি চলিলা প্রভু সবা আলিঙ্গিঞা ।  
 সবেই পড়িলা তাহা মূচ্ছিত হইঞা ॥  
 কতক্ষণে উঠি সবে দুঃখে ঘর আইলা ।  
 সনাতনগোসাঞি বৃন্দাবনরে চলিলা ॥৫৭  
 এথা শ্রীকৃপগোসাঞি মথুরা আইলা ।  
 ধ্রুবঘাটে সুবুদ্ধিরায় তাঁহারে মিলিলা ॥৫৮  
 পূর্বে সুবুদ্ধিরায় ছিল গৌড়-অধিকারী ।  
 হসেন ঝাঁ সৈয়দ করে তাহার চাকরি ॥  
 দিঘী খোদাইতে তারে মননীব কৈলা ।  
 ছিদ্ৰ পাঞা রায় তারে চাবুক মারিলা ॥  
 পাছে যবে হসেন ঝাঁ গৌড়ে রাজা হৈলা  
 সুবুদ্ধি রায়েরে তেঁহে বহু বাড়াইলা ॥৫৯  
 তার স্ত্রী তার অপেক্ষে দেখে মারণের চিহ্নে  
 সুবুদ্ধি রায়েরে মারিতে কহে রাজাস্থানে ॥  
 রাজা কহে আমার পোষ্ঠী রায় হয় পিতা  
 ইহারে মারিব আমি ভাল নহে কথা ॥  
 স্ত্রী কহে জ্ঞাতি লহ, যদি প্রাণে না মারিবে  
 রাজা কহে জ্ঞাতি নিলে এহে নাহি জীব ॥  
 স্ত্রী মরিতে চাহে রাজা সন্নটে পড়িলা ।  
 কনোয়ার পাণি তার মুখে দেয়াইলা ॥৬০  
 তবে সুবুদ্ধি রায় সেই ছদ্ম পাইয়া ।  
 বারাণসী আইলা স্ববিষয় ছাড়িয়া ॥  
 প্রায়শ্চিত্ত পুছিলেন পণ্ডিতের স্থানে ।  
 তারা কহে তপস্বত ঋণা ছাড় প্রাণে ॥



কেহ কহে এহ নহে অল্প দোষ হয় ।  
 শুনিয়া রহিলা রায় করিয়া সংশয় ॥  
 তবে যদি মহাপ্রভু বারাণসী আইলা ।  
 তারে মিলি রায় আপন বৃত্তান্ত কহিলা ॥৬১  
 প্রভু কহে ইহাঁ হৈতে বাহ বৃন্দাবন ।  
 নিরন্তর কর কৃষ্ণনাগ সঙ্কীৰ্তন ॥  
 এক নামাভাসে তোমার পাপদোষ যাবে  
 আর নাম হৈতে কৃষ্ণচরণ পাইবে ॥ ৬২ ॥  
 প্রভু-আজ্ঞা পাঞা রায় বৃন্দাবনে চলিলা ।  
 প্রয়াগ অযোধ্যা দিঞা নৈমিষারণ্য আইলা  
 কথোদিন তিঁহো নৈমিষারণ্যে রহিলা ।  
 তাবৎ বৃন্দাবন দেখি প্রভু প্রয়াগে আইলা  
 মথুরা আসি রায় প্রভুর বার্তা পাইল ।  
 প্রভু-লাগ না পাঞা বড় মনে দুঃখ হৈল ॥  
 রায় শুককাষ্ঠ আনি বেচে মথুরাতে ।  
 পাঁচ ছয় পয়সা পায় এক এক বোঝাতে ॥  
 আপনে রহে এক পয়সার চাবনা খাইয়া ।  
 আর পয়সা বণিক স্থানে রাখেন ধরিয়া ॥  
 দুঃখিত বৈষ্ণব দেখি করান ভোজন ।  
 গোড়িয়া আইলে দধিভাত তৈল মর্দন ॥৬৪  
 রূপগোসাঞি আইলে তারে বহুপ্রীতিকৈলা  
 আপন সঙ্গ লৈয়া দ্বাদশ বন করাইলা ॥  
 মাগমাত্র রূপগোসাঞি রহিলা বৃন্দাবনে ।  
 শীঘ্র চলি আইলা সনাতনানুসন্ধানে ॥৬৫  
 গঙ্গাতীরপথে প্রভু প্রয়াগেতে গেলা ।  
 ইহা শুনি দুই ভাই সে পথে চলিলা ॥৬৬  
 এথা সনাতনগোসাঞি প্রয়াগে আসিঞা  
 মথুরা আইলা সরাগ রাজপথ দিঞা ॥  
 মথুরাতে সুবুদ্ধিরায় তাঁহারে মিলিলা ।  
 রূপ অনুপম কণা সকল কহিলা ॥  
 গঙ্গাপথে দুই ভাই রাজপথে সনাতন ।  
 শুভএব তাঁহা মনে না হৈল মিলন ॥৬৭

সুবুদ্ধিরায় বহু স্নেহ করে সনাতনে ।  
 ব্যবহার স্নেহ সনাতন নাহি মানে ॥  
 মহাবিরক্ত সনাতন জমে বনে বনে ।  
 প্রতিরুদ্ধে প্রতিকূঞ্জে রহে রাত্রিদিনে ॥  
 মথুরামাহাত্ম্য শাস্ত্র সংগ্রহ করিঞা ।  
 লুপ্ততীর্থ প্রকট করে বনেতে জমিঞা ॥৬৮  
 এইমত সনাতন বৃন্দাবনেতে রহিলা ।  
 রূপগোসাঞি দুই ভাই কাশীতে আইলা ॥  
 মহারাষ্ট্রী বিজ্ঞ, শেখর, মিশ্র তপন ।  
 তিন জন সহ রূপ করিল মিলন ॥  
 শেখরের ঘরে বাসা, মিশ্রঘরে ভিক্ষা ।  
 মিশ্রমুখে শুনে সনাতন প্রভুর শিক্ষা ॥৬৯  
 কাশীতে প্রভুর চরিত্র, শুনি তিনের মুখে  
 সন্ন্যাসিরে রূপা শুনি পাইলা বড়মুখে ॥  
 মহাপ্রভুতে লোকের প্রণত দেখিঞা ।  
 সুখী হৈলা লোকমুখে কীর্তন শুনিঞা ॥  
 দিন দশ রহি রূপ গোড়ৈ যাত্রা কৈল ।  
 সনাতন রূপের এই চরিত্র কহিল ॥৭০॥  
 এথা মহাপ্রভু যদি নীলাদ্রি চলিলা ।  
 নির্জন বনপথে যাইতে মহাসুখ পাইলা ॥  
 সুখে চলি আইসে প্রভু বলভদ্র সঙ্গ ।  
 পূর্ববৎ মৃগাদি সহ, করি নানারঙ্গে ॥৭১॥  
 আঠারনালাতে আসি ভটাচার্যের ব্রাহ্মণে  
 পাঠাইয়া বোলাইল সব নিজভক্তগণে ॥  
 শুনি সব ভক্তগণ পুনরপি জীলা ।  
 দেহে প্রাণ আইলে যৈছে ইন্দ্রিয় উঠিলা ॥  
 আনন্দে বিহ্বল ভক্ত ধাইঞা আইলা ।  
 নরেন্দ্রে আসিঞা সবে প্রভুরে মিলিলা ॥  
 পুরী ভারতীর প্রভু কৈল চরণবন্দন ।  
 ছুঁহে মহাপ্রভুকে কৈল প্রেম-আলিঙ্গন ॥৭২  
 দামোদর স্বরূপ পণ্ডিত গঙ্গাধর ।  
 জগদানন্দ কাশীধর গোবিন্দ বক্রেশ্বর ॥

কাশীমিশ্র প্রহ্লাদমিশ্র পণ্ডিত দামোদর ।  
 হরিদাসঠাকুর আর পণ্ডিত শঙ্কর ॥  
 আর যত ভক্ত প্রভুর চরণে পড়িলা ।  
 সব আলিঙ্গিয়া প্রভু প্রেমাবিষ্ট হৈলা ॥  
 আনন্দসমুদ্রে ভাসে সব ভক্তগণে ।  
 সবে লঞা চলিলা প্রভু জগন্নাথ দর্শনে ॥৭৩  
 জগন্নাথ দেখি প্রভু প্রেমাবিষ্ট হৈলা ।  
 ভক্তসঙ্গে বহুক্ষণ নৃত্যগীত কৈলা ॥  
 জগন্নাথসেবক আসি মালা প্রসাদ দিল ।  
 তুলসী পড়িছা আসি চরণ বন্দিল ॥৭৪  
 মহাপ্রভু আইলা গ্রামে হৈল কোলাহল ।  
 সার্কভৌম রামানন্দাদি মিলিলা সকল ॥  
 সব সঙ্কে লঞা প্রভু মিশ্রবাসা আইলা ।  
 সার্কভৌমপণ্ডিত গোসাঞি নিমন্ত্রিলা ॥৭৫  
 প্রভু কহে মহাপ্রসাদ আন এই স্থানে ।  
 সব সঙ্কে আঞ্জি ইহঁা করিব ভোজনে ॥  
 তবে ছুঁহে জগন্নাথের প্রসাদ আনিল ।  
 সব সঙ্কে মহাপ্রভু ভোজন করিল ॥  
 এইত কহিল প্রভুর, দেখি রুদ্দাবন ।  
 পুনরপি কৈল যৈছে নীলাদ্রি গমন ॥  
 ইহা যেই শ্রদ্ধা করি করয়ে শ্রবণ ।  
 অচিরাতে পায় সেই চৈতন্যচরণ ॥৭৬  
 এই মধ্যলীলার কৈল দিগ্‌দরশন ।  
 ছয়বর্ষ কৈল যৈছে গমনাগমন ॥  
 শেষ অষ্টাদশ বর্ষ নীলাচলে বাস ।  
 ভক্তগণ সঙ্কে করে কীর্তনবিলাস ॥  
 মধ্যলীলার ক্রম এবে করি অনুবাদ ।  
 অনুবাদ কৈলে হয় কথার আশ্বাদ ॥৭৭  
 প্রথম পরিচ্ছেদে শেষলীলার সূত্রকথন ।  
 তাঁহি মধ্যে কোন ভাগের বিস্তার বর্ণন ॥  
 দ্বিতীয় পরিচ্ছেদে প্রভুর প্রলাপ বর্ণন ।  
 তহি মধ্যে নানাভাবের দিগ্‌দরশন ॥

তৃতীয়পরিচ্ছেদে প্রভুর কহিল সমাগ ।  
 আচার্য্যের ঘরে যৈছে করিল বিলাস ॥  
 চতুর্থে মাধবপুরীর চরিত্র আশ্বাদন ।  
 গোপাল স্থাপন, ক্ষীরচূরির বর্ণন ॥  
 পঞ্চমে সাক্ষীগোপাল-চরিত্র বর্ণন ।  
 নিত্যানন্দ কহে প্রভু করে আশ্বাদন ॥৭৮  
 ষষ্ঠে সার্কভৌমে প্রভু করিল উদ্ধার ।  
 সপ্তমে তীর্থযাত্রা, বাসুদেবের নিস্তার ॥  
 অষ্টমে রামানন্দ সখাদ বিস্তার ।  
 আপনে গুনিল প্রভু সিদ্ধাস্তের সার ॥  
 নবমে কহিল দক্ষিণ-তীর্থভ্রমণ ।  
 দশমে কহিল সব বৈষ্ণবগিলন ॥  
 একাদশে শ্রীমন্দিরে বেড়াগন্ধীর্ভন ।  
 দ্বাদশে গুণ্ডিচামন্দিরমার্জনকালন ॥  
 ত্রয়োদশে রথ-আগে প্রভুর নর্ভন ।  
 চতুর্দশে হোরাপঞ্চমীযাত্রা দরশন ॥  
 উঁহি মধ্যে ব্রজদেবীর ভাবের শ্রবণ ।  
 স্বরূপ কহিল প্রভু কৈল আশ্বাদন ॥  
 পঞ্চদশে ভক্তের গুণ শ্রীমুখে কহিল ।  
 সার্কভৌমঘরে ভিক্ষা অমোঘে তারিল ॥৭৯  
 ষোড়শে রুদ্দাবনযাত্রা কৈলা গোড়পথে ।  
 পুনঃ নীলাচল আইলা নাটশালা হৈতে ॥  
 সপ্তদশে বনপথে মথুরাগমন !  
 অষ্টাদশে রুদ্দাবনবিহার বর্ণন ॥  
 উনবিংশে মথুরা হৈতে প্রয়াগে গমন ।  
 তার মধ্যে শ্রীকৃপেয়ে শক্তিসংকারণ ।  
 বিংশতি পরিচ্ছেদে সনাতনের গিলন ।  
 তার মধ্যে ভগবানের স্বরূপ বর্ণন ॥  
 একবিংশে ক্লৈশ্বর্য্য-মাধুর্য্য-বর্ণন ।  
 দ্বাবিংশে বিবিধ সাধনভক্তি বিবরণ ॥  
 ত্রয়োবিংশে প্রেমভক্তিরসের কথন ।  
 চতুর্বিংশে আত্মারামলোক্য বর্ণন ॥৮০ ॥

পঞ্চবিংশে কাশীবাসি বৈষ্ণবকরণ ।  
 কাশী হৈতে পুনঃ নীলাচলে আগমন ॥  
 পঞ্চবিংশতি পরিচ্ছেদের এই অনুবাদ ।  
 বাহার শ্রবণে হয় গ্রন্থ-অর্থাস্বাদ ॥  
 সংক্ষেপে কহিল এই মধ্যলীলাসার ।  
 কোটিগ্রন্থে বর্ণন না যায় ইহার বিস্তার ॥৮১॥  
 জীব নিস্তারিতে প্রভু জমিলা দেশেদেশে  
 আপনে আশ্রয়, ভক্তি করিল প্রকাশে ॥  
 কৃষ্ণতত্ত্ব, ভক্তিতত্ত্ব, প্রেমতত্ত্ব আর ।  
 ভাবতত্ত্ব, লীলাতত্ত্ব, রসতত্ত্ব সার ॥  
 শ্রীভাগবত তত্ত্বরস করিল প্রচার ।  
 কৃষ্ণ তুল্য ভাগবত জানাইল সংসার ॥  
 ভক্ত লাগি বিস্তারিল আপন বদনে ।  
 কাঁহো ভক্তমুখে কহায় শুনিল আপনে ॥৮২॥  
 শ্রীচৈতন্য সম আর কৃপালু বদান্ত ।  
 ভক্তবৎসল নাহি হৃৎগতে অন্য ॥  
 শ্রদ্ধা করি এই লীলা শুন ভক্তগণ ।  
 ইহার শ্রবণে পাবে চৈতন্যচরণ ॥  
 ইহার প্রসাদে পাবে কৃষ্ণতত্ত্ব সার ।  
 সর্বশাস্ত্র সিদ্ধান্তের ইহা পাবে পার ॥৮৩॥  
 যথারাগঃ ।  
 কৃষ্ণলীলামৃত সার, তাব শত শত ধার,  
 দশদিকে বহে যাহা হৈতে ।  
 সে চৈতন্যলীলা হয়, সরোবর অক্ষয়,  
 মনোহর চলাই তাহাতে ॥৮৪॥  
 ভক্তগণ শুন মোর দৈন্য বচন ।  
 তোমা সবার চরণ, ধূলি অঙ্গে বিভূষণ,  
 করি কিছু করো নিবেদন ॥৮৫॥  
 কৃষ্ণভক্তি সিদ্ধান্তগণ, নাতে প্রফুল্ল পদ্মবন,  
 তার মধু কর আশ্বাদন ।  
 প্রেমরস কুন্দবনে, প্রফুল্লিত রাত্রিদিনে,  
 তাতে চরাও মনোভূষণ ॥৮৬॥

নানাভাবের ভক্তজন, হংস চক্রবাকগণ,  
 যাতে গবে করেন বিহার ।  
 কৃষ্ণকেলি সুমুগল, যাহা পাই সর্বকাল,  
 ভক্ত হংস করয়ে আহার ॥৮৭॥  
 সেই সরোবরে গিয়া, হংস চক্রবাক হঞা,  
 সদা তাঁহা করহ বিলাস ।  
 খণ্ডিবে সকল দুঃখ, পাইবে পরম সুখ,  
 অনায়াসে হবে প্রেমোন্মাদ ॥৮৮॥  
 এই অমৃত অনুক্ষণ, মাধু মহাস্ত মেঘগণ,  
 বিখ্যোদ্যানে করে বরিষণ ।  
 তাতে ফলে প্রেমফল, ভক্ত খায় নিরন্তর,  
 তার শেষে জীয়ে জগজ্জন ॥৮৯॥  
 চৈতন্যলীলামৃত পূর, কৃষ্ণলীলা স্কন্ধপূর,  
 দুই মিলি হয় যে মাধুর্য্য ।  
 মাধু গুরুর প্রসাদে, তাতে যেই আশ্বাদে,  
 সেই জানে মাধুর্য্য প্রাচুর্য্য ॥৯০॥  
 এই লীলামৃত বিনে, খায় যদি অন্ন পানে,  
 তবু ভক্তের দুর্দল জীবন ।  
 যার একবিন্দু পানে, উৎফুল্লিত তনু মনে,  
 হাসে গায় করয়ে নর্তন ॥৯১॥  
 এ অমৃত কর পান, যাহা নম নাহি আন,  
 চিন্তে করি সুদৃঢ় বিশ্বাস ।  
 না পড় কুতর্ক গর্ভে, অমেধ্য কর্কশাবর্ভে,  
 যাতে পড়িলে হয় সর্বনাশ ॥৯২॥  
 শ্রীচৈতন্য নিত্যানন্দ, অদ্বৈতাদি ভক্তরন্দ,  
 আর যত শ্রোতাভক্তগণ ।  
 তোমা সবার শ্রীচরণ, করি শিরে বিভূষণ,  
 যাহা হৈতে অভীষ্টপূরণ ॥  
 শ্রীরূপ সনাতন, রঘুনাথ জীবচরণ,  
 শিরে ধরি যার করো আশ ।  
 কৃষ্ণলীলামৃতাসিত, চৈতন্যচরিতামৃত,  
 কহে কিছু দীন কৃষ্ণদাস ॥৯৩॥  
 ইতি পঞ্চবিংশতিতমঃ পরিচ্ছেদঃ ॥ ২৫ ॥  
 ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ড  
 সংপূর্ণমস্ত ॥

# শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতামৃত ।

অধ্যায়ে ।

—

প্রথম পরিচ্ছেদ ।

শ্লোকের ও পয়ারের ভাবার্থ ।

(১পা) "যস্মৈতি" প্রথম শ্লোকের তাৎপর্য। গ্রন্থকার পূর্বের স্থায় বিঘ্ন-বিনাশ ও অভীষ্টসিদ্ধির জন্য এই শ্লোকে মঙ্গলাচরণ করিলেন। শ্রীচৈতন্যরূপা ব্যতীত অজ্ঞ ব্যক্তির সার্কস্কন্ধ লাভ দুকহ বলিয়া, গ্রন্থকার সেই রূপা প্রার্থনায় শ্রীচৈতন্যকেই প্রণাম করিলেন। শ্রীচৈতন্য, সর্কশর্মদকীর্তন্য অর্থাৎ সর্ক-সুখদ-ব্যক্তিগণের কীর্তনযোগ্য হেতু, জগতের মঙ্গলপ্রদ গ্রন্থকারের শ্রীচৈতন্য-কীর্তন যোগ্য হইয়াছে। শ্রীচৈতন্য সর্ক-প্রকাশক অর্থাৎ সংস্করণে সকলের আশ্রয়স্বরূপ হওয়াতে গ্রন্থকারের তাঁহার আশ্রয় গ্রহণ করা মঙ্গল হইতেছে। অথবা 'শ্রী' শব্দে রাধা, তন্নামি ভক্তের তাদাক্য উপপন্ন বলিয়া অবতীর্ণ অর্থাৎ ভক্তভাভিমানিরূপে এই প্রপঞ্চ মধ্যে প্রকাশিত। অতএব তাদৃশ সচ্চিদানন্দ পুরুষ শ্রীকৃষ্ণের শরণাপন্ন ব্যতীত সুখি-

গণ অন্যের শরণাপন্ন হয়েন না বলিয়া গ্রন্থকারেব তাদৃশ প্রভুর রূপা প্রার্থনা যুক্তিসিদ্ধ। চন্দ্রাম্বুতে উক্ত হইয়াছে—

অচৈতন্যমিদং বিশ্বং যদি চৈতন্যমীশ্বরম্ ॥  
ন বিদুঃ সর্কশাস্ত্রজ্ঞা হপি ভ্রাম্যস্তি তে জনাঃ ॥  
দিগন্ত কুলমুচ্ছলং দিগপি বাগ্মিতাং দিগংশো  
দিগধ্যয়নমাকৃতিং নববয়ঃ শ্রিয়ঞ্চাস্তি বিক্ ।  
দিগন্তমপি দিক্ পরং বিসলাশ্রমাতঞ্চ দিক্  
নচেৎ পরিচিতঃ কলৌ প্রকটগৌরগোপীপতিঃ ॥

যাহারা শ্রীচৈতন্যকে ঈশ্বর বলিয়া না জানেন, তাঁহারা সর্কশাস্ত্রজ্ঞ হইলেও চৈতন্যশূন্য সংসারে রথ ভ্রমণ করেন। কলিযুগে প্রকাশিত গোপীপতি শ্রীগৌরকে যাহারা উপাসনা করেন না তাঁহাদের উজ্জলকুল, বাগ্মিতা, যৎঃ, অধ্যয়ন, রূপ, নববয়স, সম্পত্তি ; দ্বিজত্ব ও বিমল অঙ্গ-চর্যাদি আশ্রমকে দিক্। শ্রীচৈতন্য-লীলা আলোচনা করিলেই দৃষ্ট হইবে, তাঁহার রূপায় অজ্ঞ মগ্ন সর্কস্কন্ধ লাভ

কবে। এ সম্বন্ধে একটি দৃষ্টান্ত দেওয়া যাইতেছে,—শ্রীশ্রীশ্বেই উক্ত হইয়াছে, একদা মহাপ্রভু স্বীয় পারিষদশ্রেষ্ঠ পরি-  
 জ্ঞানে সমবেত এবং রথযাত্রা-দর্শনা-  
 ক্ষেত্রে মহাপ্রভুর চরণপাশে সমাগত  
 শিবানন্দসেনের ভবনে উপস্থিত হন।  
 শিবানন্দ তখন সমস্তে তাঁহার চরণ-  
 কমল বন্দনা করেন। তখন তাঁহার পুত্র  
 পুরীদাস বা কবিকর্ণপুর পিতার অনু-  
 মতিতে মহাপ্রভুর চরণ বন্দনা করিলেন।  
 মহাপ্রভু কহিলেন, তোমার এই পুত্র  
 উত্তম হইয়াছে, এই বলিয়া দয়া পূর্বক  
 তাঁহার মস্তকে চরণ প্রদান করিতে  
 অভিলাষী হইলেন। বাল্যশুলভ চাঞ্চল্য  
 বশতঃ বালক যখন মুখব্যাদান করেন,  
 তখন তিনি কৌতুহলাক্রান্ত হইয়া,চরণের  
 রুদ্ধাঙ্গুলি আশ্বাদিত করান, এবং অল-  
 ক্ষিত ভাবে দিব্য কাব্য কর্তৃত্ব শক্তি  
 সঞ্চারিত করিয়া ‘কৃষ্ণ কৃষ্ণ বল’ বলিয়া-  
 ছিলেন। অনন্তর ঐ শিশু, প্রফুল্লমুখে  
 ‘বল বল’ এইরূপে পিতা প্রভৃতি গুরুজন  
 কর্তৃক আদিষ্ট হইয়াও যখন কিছুই বলি-  
 লেন না, তখন মহাপ্রভু বিস্ময়াপন্ন  
 হইয়া বলিলেন, আমি সমস্ত বিশ্বকে  
 কৃষ্ণমস্ত্রে দীক্ষিত করিতে পারি, কিন্তু  
 এই বালককে পারিলাম না। তৎকালে  
 শ্রীশ্রীরূপগোপালী মহাপ্রভুকে বলিলেন,  
 ভগবান্ স্বয়ংই আমাকে কৃষ্ণনাম মহা-  
 মন্ত্র উপদেশ দিয়াছেন, অতএব আমি  
 কি প্রকারে সেই মহামন্ত্র উচ্চারণ করিব,  
 বালক এইরূপ বিবেচনা করিতেছে।  
 পরদিন মহাপ্রভু বলিলেন, ‘বৎস, কিঞ্চিৎ

বল’ তখন ঐ বালক শীঘ্র এক শ্লোক  
 রচনা করিলেন, যথা—

অবশ্যোঃ কুবলয়মক্সোরজনমুরসো মহেন্দ্রমণি নাম ।  
 বৃন্দাবনতরুনীনাং মণ্ডনমখিলং হরির্জয়তীতি ॥

যিনি কর্ণযুগলের কুবলয়,নয়নযুগলের  
 অঞ্জন, বক্ষঃস্থলের ইন্দ্রকান্তমণি নির্মিত  
 হার এবং বৃন্দাবনবাগিনী কামিনীগণের  
 আভরণ সেই হরির জয় হউক। এই  
 শ্লোক শুনিয়া মহাপ্রভু সন্তোষ লাভ  
 করতঃ ‘কবিকর্ণপুর’ নাম প্রদান করি-  
 লেন। লৌকীকরীতি বশতঃ দ্বিজবর  
 স্ত্রীনাথ পণ্ডিত দ্বারা তাঁহাকে পুনরায়  
 দীক্ষিত করান। এইরূপে চৈতন্যলীলার  
 আলোচনায় কবিকর্ণপুরের ন্যায় ছুরি  
 ছুরি প্রমাণ দৃষ্ট হইবে, বাঁহার রূপায়  
 অজ সর্বজ্ঞতা লাভ করে। অতএব  
 গ্রন্থকার বেদাদি দ্বারা দুস্প্রাপ্য স্থান  
 জানিবার জন্য প্রথমে শ্রীচৈতন্যকে পরে  
 পয়ারাদি দ্বারা মঙ্গলাচরণে তন্তুজগণের  
 রূপা প্রার্থনায় শ্রীচৈতন্য ও তন্তুজগণকে  
 বন্দনা করিলেন। চন্দ্রামৃতে যথা—

আচর্য্য ধর্ম্মং পরিচর্য্য বিষ্ণুং

বিচর্য্য তীর্থানি বিচর্য্য বেদান্ ।

বিনা ন গৌরপ্রিয়পাদসেবাং

বেদাদিহস্ত্রাপ্যাপদং বিদন্তি ॥

বর্ণাপ্রমাদিধর্ম্মাচরণ, বিষ্ণুসেবা,তীর্থ-  
 পর্য্যটন এবং বেদার্থবিচার করিলেও  
 শ্রীগৌরভক্তদিগের চরণসেবা ব্যতীত  
 বেদাদি দ্বারা দুস্প্রাপ্য যে স্থান, তাহা  
 জানিতে পারে না। এই হেতু গ্রন্থকার  
 সমস্ত ঐশ্বর্য্য ও মাধুর্য্য পরিপূর্ণ ভগবান্  
 শ্রীচৈতন্যদেবের প্রসন্নতা প্রার্থনা করি-

তেছেন এবং পয়ারেরোঁ তত্ত্বগণের চরণ বন্দনা করিয়াছেন ॥ ১ ॥

( ১ পা ) "বন্দ ইত্যাদি ।" দ্বিতীয়, তৃতীয়, চতুর্থ ও পঞ্চম শ্লোকের ভাবার্থ, আদিলীলার তাৎপর্য ব্যাখ্যায় ৯ম ও ২৪শ পত্রাঙ্কে, এবং তৃতীয় চতুর্থ ও পঞ্চম শ্লোকের তাৎপর্য ১৬শ পত্রাঙ্কে দৃষ্টি করিবেন ॥ ২—৫ ॥

( ১ পা ) "জয় জয়...নাম ভেদ কয়।" এই ১ম ও ২য় পয়ার দুইটির ভাবার্থ সহজই আছে—পূর্বে, আদিলীলায় । অতএব, শ্রীরুদ্দাবনদাস আদিলীলা বিস্তার করিয়াছেন, এই হেতু । "এবে" ইতি । শেষলীলার অশেষ বিধায় সম্যক কথন না হওয়াতে তাহার মুখ্য (প্রধান) সূত্রগণ কহি । তার মধ্যে, শেষলীলার মধ্যে । ইহা যে বিশেষ, যাহা রুদ্দাবন দাস বর্ণনা করেন নাই । "চক্ৰিশ বৎসর" চক্ৰিশ বৎসর গৃহে অবস্থান করিয়া যে লীলা করেন তাহার নাম আদিলীলা । ঐ চক্ৰিশ বৎসর শেষে যে মাঘমাস, ঐ মাসের শুরুপক্ষে কাটোয়ার কাঞ্চননগরে মহাপ্রভু সন্ন্যাস গ্রহণ করেন । সন্ন্যাস করিয়া ছয় বৎসর নীলাচল প্রভৃতি নানাস্থানে জমণ করিয়া যে লীলা করেন, তাহার নাম মধ্যলীলা । তৎপরে কেবল নীলাচলে অবস্থান করিয়া অষ্টাদশ বৎসর যে লীলা করেন, তাহার নাম অন্ত্যলীলা ॥ ১।২ ॥

( ২ পা ) "তার মধ্যে ছয় বৎসর..... দুই ভাই আইলা রুদ্দাবন ॥" এই ৩য় ও ৪র্থ পয়ার দুইটির ভাবার্থ সহজ আছে ।

প্রভুর শেষলীলায় মধ্য ও অন্ত্য এই দুইটি যে নাম ভেদ করিলেন, তদ্ব্যপ্যে অন্ত্যলীলার আবার দুইটি ভেদ করিতেছেন । যথা—ছয় বৎসর যাবৎ ভক্তগণ সঙ্গে প্রভু যে প্রেমভক্তি শিক্ষা দেন, তাহা এই একটা । তথায় শেষ দ্বাদশ বৎসর যাবৎ প্রভুর যে শ্রীকৃষ্ণবিরহ, অপরটি । তাহা হইলে শেষলীলার তিনটি ভাগ হইল । প্রথম চক্ৰিশ বৎসর পর হইতে ছয় বৎসর পর্যন্ত প্রভুর নীলাচল প্রভৃতি নানাদেশ জমণ, এইটি প্রথম বা মধ্যলীলা । তৎপরে কেবল নীলাচলে ছয় বৎসর পর্যন্ত প্রভুর প্রেমভক্তি শিক্ষা দান, এইটি দ্বিতীয় । তৎপরে দ্বাদশ বৎসর পর্যন্ত প্রভুর শ্রীকৃষ্ণবিরহ, এইটি তৃতীয় । মধ্যলীলা বিস্তার করিতে প্রথমে অন্ত্যলীলার ঐ দুইটি ভেদ দেখাইতেছেন, "অষ্টাদশ বর্ষ কৈল" ইত্যাদি । নীলাচলের ছয় বৎসরের লীলা বলিতেছেন, "তার মধ্যে অর্থাৎ নীলাচলে অষ্টাদশ বৎসর মধ্যে । কৃষ্ণপ্রেমোদ্দাম, কৃষ্ণপ্রেমে উন্মত্ত । "চৈতন্য সেব।" ইতি । এখানে চৈতন্য সেব ইত্যাদি শ্রীনিত্যানন্দবাক্য শ্রীকৃষ্ণভক্তনের বাধক নহে । শ্রীচৈতন্যে ভক্তি পূর্বক শ্রীকৃষ্ণভজন এইটিই তদ্বাক্যার্থ, নচেৎ "সহজেই নিত্যানন্দ কৃষ্ণ-প্রো-দাম" এই পূর্ব বাক্যের সহিত বিরোধ হয় । অতএব অরুণ কৃষ্ণপ্রেমোন্মত্ত হইয়া কেবল শ্রীচৈতন্যসেবাদি শিক্ষাদান হইতে পারে না । নিত্যানন্দ কৃষ্ণপ্রেমোদ্দাম বলাতে যে তিনি চৈতন্যপ্রেমোন্মত্ত নহেন, এরূপ কথা সঙ্গত নহে । বাৎসল্য,

সখা ও দাস্যভাবযুক্ত বলরাম নিত্যানন্দ হইলে, লোকশিক্ষা হেতু ভক্তস্বরূপ নিত্যানন্দ চৈতন্যদাস্ত্যাভিমান করিয়া চৈতন্যআজ্ঞা প্রতিপালন জন্য "প্রভু আজ্ঞায় কৈল যাহা তাহা প্রেম দান ।" এই পূর্ব পয়ারানুসারে কৃষ্ণ বা চৈতন্য প্রেম দান করিয়াছিলেন। যে হেতু কৃষ্ণই চৈতন্য এবং চৈতন্যই কৃষ্ণ। মৃত শোকের মৃত্যু অর্থাৎ ভেদবৃদ্ধি বিনাশ জন্য কৃষ্ণপ্রেম দান করতঃ চৈতন্য-সেবা, ভজন ও তন্মায় গ্রহণ করিতে উপদেশ দিতেন। শিক্ষাপ্রদ শ্রীকৃষ্ণ-ভজন উপদেশ দিয়া গুরুকেও ভজনা করিতে বলিলে যেমন বিরোধ হয় না বা কৃষ্ণোপাসনার বাধকতা করা হয় না, তদ্রূপ কৃষ্ণপ্রেম দিয়া বা কৃষ্ণভজনো-পদেশ দিয়া 'চৈতন্যসেবা' বলিলে বিরোধ অসম্ভব হয়। অথবা—যিনি চৈতন্যের সেবাদি করিবেন, তিনি আমার প্রাণ অর্থাৎ তত্ত্ব ল্যা প্রিয় হইবেন। প্রিয় হইলে তাহাকে আমি, আমার প্রভু চৈতন্যের আজ্ঞায় শ্রীরাধাকৃষ্ণের নিগূঢ়ত্ব বা প্রেম প্রদান করিব। "নিত্যই চৈতন্য নামে নাহি অপরাধের বিচার।" পূর্ব পয়ারানু-যায়ী চৈতন্যনাম গ্রহণাদি বা সেবাদি দ্বারা অপরাধশূন্য নিম্নলি চিত্ত হইলে কৃষ্ণপ্রেমোদয় হইবে। নচেৎ অশুদ্ধ চিত্তে প্রেমোদয় অসম্ভব। প্রভুবর নিত্যানন্দ এইরূপে চৈতন্যভক্তি গ্রহণ করাইয়া দীনহীন নিম্নকাদিগণকে নিস্তার করিলেন ॥ ৩৪ ॥

(২পা) "ভক্তি প্রচারিয়া .....

করেন গায়ন" ॥ এই ৫, ৬, ও ৭ম সংখ্যক পয়ারের ভাবার্থ সহজই আছে। সর্দভীর্ণ, ব্রজমণ্ডলস্থ সর্দভীর্ণ। মদন-গোপাল, সম্প্রতি-শ্রীমদনমোহন নামে বিখ্যাত, ইহার সেবা সনাতনগোস্বামী প্রকাশ করেন। রূপগোস্বামী শ্রীরাধা-গোবিন্দের সেবা প্রকাশ করেন। ব্রজের নিগূঢ়রস, ব্রজে গোপিকাগণের শ্রীকৃষ্ণ প্রতি যে ভাব। হরিভক্তিবিলাস, দাক্ষিণাত্য প্রদেশে কাবেরী নদীর তীরে বেলগুড়ি গ্রামে বেক্টভট্টের পুত্র গোপালভট্ট রূপসনাতনের আশ্রয়ে থাকিয়া কতকগুলি ভক্তিমাহাত্ম্যসূচক শ্লোক সংগ্রহ করেন। তাঁহার বৈষ্ণব-স্মৃতি প্রচারে মঙ্গলময়ী ইচ্ছা দেখিয়া, মহাজ্ঞা সনাতন একখানি বৈষ্ণবস্মৃতি রচনা পূর্বক গোপালভট্টের নামে প্রকাশ করিয়া সেই গ্রন্থে দিগ্দর্শিনী নামে এক টীকাও সম্বিবেশিত করেন। ঐ গ্রন্থের নাম ভগবন্তুক্তিবিলাস, এক্ষণে উহার নাম হরিভক্তিবিলাস। ভাগবতা-মৃত, ব্রহ্মভাগবতামৃত। দশমটীপ্লনী, বৃহত্তোষণী নামী দশমস্কন্ধের টীকা। দশম-চরিত, ইহাতে দশমস্কন্ধোক্ত লীলা বর্ণিত হইয়াছে। লক্ষগ্রন্থ, অনুষ্টূভূব্দের অক্ষর গণনা করিলে এক লক্ষ শ্লোক। রসামৃত-সিন্ধু, ভক্তিরসামৃতসিন্ধু। নাটকলক্ষণ, নাটকচক্রিকা নামক গ্রন্থ। তাঁর ভাত-পুত্র, রূপ ও সনাতনের ভাতার পুত্র। ভাগবতসন্দর্ভ, তত্ত্ব, ভগবৎ, পরমাত্ম, কৃষ্ণ, ভক্তি ও শ্রীতিভেদে ষট্‌সন্দর্ভ। মহাশূর, অতিবৃৎ। প্রত্যন্দ, প্রতি বৎসর।

অন্যোন্মাদ্য, পরস্পরে । ছুঁহার, প্রভু ও ভক্তের । দৌহবিনা, প্রভু ও ভক্ত ব্যতীত । “বাদশবৎসর ঐছে করে গতাগতি ॥” এই স্থানে কোন গ্রন্থে পাঠ আছে “বিশতি বৎসর ঐছে করে গতাগতি ॥” ৫—৭ ॥

( ৩ পা ) “মোই মেইত ... .. বুঝে লোক ।” এই ৮ম পয়ারের ভাবার্থ—মোই, হে মখি ! পাইনু, পাইলাম । যাচা লাগি, যাচার জন্যে । মদন-দহনে, কন্দর্পাঘ্নিতে । ঝুনি, দক্ষ হইয়া । গেদু, গেলাম । ধয়া অর্থাৎ পানের মুখ, যাচার সহিত সকল অংশের মিল থাকে । “কৃষ্ণ লইয়া” ইতি । মহাপ্রভু যখন রথের অগ্রে যাত্রা করেন, তখন শ্রীরাধা-ভাবে মনে মনে এই চিন্তা করেন, কুরুক্ষেত্র হইতে কৃষ্ণকে রক্ষে লইয়া যাইতেছি । এই ভাবে, শ্রীরাধাভাবে । যাত্রা মধ্যে, যাত্রা করিবার সময় ॥ ৮ ॥

( ৩ পা ) “যঃ কৌমারহর ইতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । অবিবাহিতা অবস্থায় কোন কন্যার দৈববশতঃ কোন পুরুষের সহিত সঙ্গম হইয়া পরে উভয়ের বিবাহ হইলে, ঐ কন্যা কোন সখীকে বলিতেছে, হে মখি ! যিনি আমার কৌমার অবস্থাকে হরণ করতঃ আমাকে বরণ করিয়াছিলেন, তিনিই আমার অভিমত বর । অথবা, যিনি পরমরসিকরূপে মেই কৌমার অবস্থায় আমার সম্বোগেচ্ছা উৎপাদন পূর্ব্বক মন হরণ করতঃ বিবাহ করিয়াছেন তিনিই আমার অভিপ্রোত বর । কেহ ‘কৌমারহর’ শব্দে উপপত্তি অর্থ

করেন । ইহা সম্ভব নহে ; কারণ রস-ভাগ প্রদক্ষ হেতু, ঐরূপ অর্থ শিষ্টজন কতৃক সম্ভব নহে । মহাপ্রভু এই শ্লোক পড়িয়াছিলেন । শ্রীরাধা নামপ্রী থাকার ত্তেও তাদৃশ স্থানাভাবে পূর্ব্বের ন্যায় আনন্দ অন্তত্ব তইতেছে না বলিয়া, মহাপ্রভু শ্রীরাধার ভাবে আশিষ্ট হইয়া যখন জগন্নাথ দর্শন করেন, তখন মনে এই চিন্তা করেন, বহুকাল পরে কুরুক্ষেত্রে আসিয়া কৃষ্ণদর্শন পাইলাম বটে, কিন্তু রম্ভাবনে যমুনা নীরে নিকৃঞ্জবনে কৃষ্ণসঙ্গসাভার্থ মনঃ সমুৎসুক হইতেছে । এই ভাবেবই শ্রাবক এই শ্লোক ॥ ৯ ॥

( ৪ পা ) “এই শ্লোকের অর্থ ... .. জানিলি কেমনে ॥” এই ৯ম ও ১০ম পয়ারের ভাবার্থ সহজ আছে । এই শ্লোকের, মহাপ্রভুর কথিত “যঃ কৌমারহর” শ্লোকের । অর্থ, মনোগতভাব । রূপ, শ্রীরূপগোস্থায়ী । উপলভোগ, কেহ বলেন, বাস্যভোগ বা বস্তুভোগ । যাহাকে এ দেশে শীতলভোগ বলে । কেহ বলেন, প্রান্তরীকালীন ভোগ । কেহ বলেন, “উপল” শব্দের অপভ্রংশ উপল শব্দ ; অতএব অল্পভোগ ব্যতীত যে ভোগ । কেহ বলেন, নিয়মিত ভোগের অতিরিক্ত যে ভোগ তাহাই উপলভোগ নামে দিখ্যাত । “এই তিন মध्ये” হরিদাস, রূপ ও মনাতন গোস্থায়ী এই তিন জনের মধ্যে । সেই শ্লোক, শ্রীরূপ কৃত শ্লোক । চাপড়, বাৎসল্যসূচক চপেটাদাত । মোর মোকের, “যঃ কৌমারহর” এই মছক্ শ্লোকের ॥ ১০ ॥



( ৪ পা ) “এত বলি তারে ... .. প্রস্তাব পাইয়া ।” এই ১১শ পয়ারের ভাবার্থ সহজ আছে। প্রসাদ, অনুগ্রহ। পুছেন, জিজ্ঞাসা করেন। গুটরস, ব্রজের উজ্জলরস। বিবেচনে, বিচার করিতে। আখ্যান, কথন। “এসব কথা” শ্রীরূপে শক্তিসংগার কথা মধ্যের উনবিংশ পরিচ্ছেদে এবং উক্ত শ্লোকের কথা অন্ত্যের প্রথম পরিচ্ছেদে বিস্তার করিয়া কহিয়াছেন। অর্থাৎ এখানে গোপীনাথ চিত্তের ভাগ দেখাইতে “সোহা ক্ষণে করেন জগৎপ্রাথ দর্শন” ইত্যাদি কথা বলিবার কোন প্রয়োজন না থাকিলেও, এখানে প্রস্তাব অর্থাৎ বিবাহাদি বলিবার অবকাশ পাইয়া তাহার উদ্দেশ (উল্লেখ) মাত্র কহিলাম। শ্রীরূপ-বিরহে মহাপ্রভু কিরূপ ব্যবহার করিতেন, তাহাই বলিলাম ॥ ১১ ॥

( ৪ পা ) “প্রিয়ঃ সোহয়মিতি ।” এই সপ্তম শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। কুরুক্ষেত্রসাত্ৰায় গোপীগণ শ্রীরূপসঙ্গলাভ করতঃ আনন্দিত না হওয়ায়, শ্রীরন্দাবনে শ্রীরূপের আগমন প্রার্থনা করিতেছেন। এই শ্লোকে ইহাই প্রমাণ করিবেন ॥ ১১ ॥

( ৫ পা ) “এই শ্লোকের.....হয় বাঞ্ছিত পূরণ ॥” এই ১২শ পয়ারের ভাবার্থ সহজ আছে। এই শ্লোকের, “প্রিয়ঃসোহয়ং” শ্লোকের। যৈছে, যেমন। তছু, তথাপি। ঐছন, ঐ প্রকার। মনুষ্যাগহন, মনুষ্যের ভীড় অর্থাৎ এত লোক জন যে ছুপ্পবেশ ॥ ১২ ॥

( ৫ পা ) “আহুশ্চেতি ।” এই অষ্টম শ্লোকের তাৎপর্য; কুরুক্ষেত্রে শ্রীরূপ গোপীগণ সহ মিলিত হইয়া তাঁহাদিগকে তত্ত্বজ্ঞান উপদেশ দিলে, প্রেমমত্ত গোপীগণ বক্রোক্তি দ্বারা ঈর্ষার সহিত বলিলেন, ওহে তত্ত্বজ্ঞানাপকশিরোমণে, গৃহ-বিস্ত-কুটুম্বাদিতে আমাদের অধিক আসক্তি দেখিয়া পূর্বে উজ্জব দ্বারা এবং সম্প্রতি স্বয়ংও যে অজ্ঞাননিবর্তক জ্ঞানোপদেশ দিয়া আমাদের চিত্ত নিঃশূল করিতেছ, আহা! ইহা তোমার নিরূপাধিক স্নেহই। মোক্ষের নিমিত্ত আমাদের মধ্যে কে তোমাকে জ্ঞাত হইয়াছে অর্থাৎ কে মোক্ষ প্রার্থনা করিতেছে, যে তাহাকে জ্ঞানোপদেশ দিতেছ? দুর্মেধা গোপপত্নীগণের হৃদয়ে এরূপ জ্ঞান কিরূপে সম্ভবে? যে হেতু তোমার চরণ-চিন্তা পর্য্যন্তও আমাদের হৃদয়ে আগমন করে না। সেই হেতু বলিতেছি, আমরা তোমার চিন্তায় যেমন অশক্য, তেমন আমাদের প্রতি রূপা কর। যদি বল, আমার চিন্তা করিতে না পারিবে কেন? তাহাতে বলিতেছেন, গস্তীরবুদ্ধিবিশিষ্ট যোগেশ্বরগণের হৃদয়ে যিনি চিন্তনীয়, স্বকর্মফল-সম্ভাপিতা এবং মন্দ-বুদ্ধি-বিশিষ্টা আমরা তাঁহাকে কিরূপে চিন্তা করিতে সক্ষম হইব? অতএব তুমি রূপা দ্বারা আমাদের সংসার দুঃখকে নিবারণ করিতে যত্ববান হও। গৃহাসক্তা আমাদের মনে সর্কদা উদ্ভিত হও।

অথবা—হে সাক্ষাৎ অজ্ঞানাকারনাশক সূর্য! তোমার এবম্বিধ তত্ত্ব-

জ্ঞানোপদেশরূপ কিরণে আমরা দগ্ধ হইতেছি। আমরা চকোরী, তোমার মুখচন্দ্রজ্যোৎস্নায় জীবনধারণ করিয়া থাকি। অতএব শ্রীরুদ্ধাবনে আগমন করতঃ স্বীয়রাসাদিবিলাস দ্বারা আগাদিগকে জীবিত কর। যদি বল, কি প্রকারে জীবনধারণ করিবে? যোগিগণের চিন্তনীয় তোমাকে, আমরা হৃদয়োপরি কুচদ্বয়ে ধারণ করতঃ জীবনধারণ করিতে পারিব। এতদ্ব্যতীত জীবনধারণের অন্য উপায় নাই। যদি বল, আমাকে চিন্তা করতঃ জীবনধারণ কর, যে হেতু তোমরা সূচতুরা। ইহা হইতে পারে না, যে হেতু তোমার চিন্তন আরম্ভ করিবামাত্রই, আমরা মুচ্ছারূপ সমুদ্রে পতিতা হই। অতএব তোমার চিন্তনের সম্ভাবনা কোথায়? আরও, তুমি চিন্তিত হইলে সংসাররূপে পতিতব্যক্তির উদ্ধারক হও, কিন্তু তোমার বিরহ-রূপ সমুদ্রে পতিত জনকে উদ্ধার করিতে সমর্থ হও না। আমরা গোপী, সংসাররূপে পতিতা নহি; যে হেতু বালাকাল হইতেই গৃহ, পতি ও সংসার-সুখ পরিত্যাগ করিয়াছি। এক্ষণে তোমার বিরহসমুদ্রে পতিতা। যদি বল, তোমরা দ্বারকায় আগমন কর; তোমাদের সহিত বিলাসাদির অনুষ্ঠান করতঃ দুঃখ নিবারণ করিতেছি। ইহা বলিতে পার না, যে হেতু শ্রীরুদ্ধাবন-সেবাকারিণী আমরা মনেও কখন শ্রীরুদ্ধাবন ত্যাগ করিতে পারি না। সেই শ্রীরুদ্ধাবনে তোমার পিঞ্জমৌলিধ ও

মুরলীমনোহরত্বাদি যে মাধুর্ষ্যসকল, তাহাই আমাদের পরম রুচিকর। তোমার রাজবেশ, হাতী, ঘোড়া প্রভৃতি ঐশ্বর্য্য আমাদের রুচিকর নহে। অতএব সেই শ্রীরুদ্ধাবনে তোমার চরণ উদয় কর। ব্রজভূমিতে উদিত হইলে তোমাব দর্শনেই আমাদের সম্ভাপের উপশম হইবে। নচেৎ, স্মরণ বা আত্মজ্ঞান দ্বারা সম্ভাপ উপশমিত হইবে না ॥ ৮ ॥

( ৫ পা ) "তোমার চরণ সোর..... লোক বুঝাইয়া ॥" এই ১২শ পয়ারের ভাবার্থ সহজ আছে। "আচশ্চ তে" এই শ্লোকের অভিপ্রায়ার্থ প্রকাশ করিতেছেন, "তোমার চরণ" শ্লোকের ইত্যাদি। ভাগ্যত শ্লোকার্থে, "আচশ্চ" এই শ্লোকের অর্থ। বিশদ, বিস্তার ॥ ১৩ ॥

( ৫ পা ) "যাতে লীলোতি" এই নবম শ্লোকের তাৎপর্য্য; লীলাপট্টিকায় জন্ম সূর্য্যপত্নী সংজ্ঞার প্রার্থনায় তদীয় পতিঃ বিশ্বকর্মা দ্বারকায় নবরুদ্ধাবন আনিবার করিলে; সেই স্থানে শ্রীরুদ্ধ কাস্ত্য-ভাবাপন্ন ব্রজবাসিনী গোপীগণ এবং মত্যাভামাকপিনী শ্রীরূপার সহিত বিবাহিত হইয়া শ্রীরূপাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, প্রেয়সি! প্রার্থনা কর, ইহার পর তোমার কি প্রিয়কর্য্য সাধন করিব? শ্রীরূপা কহিলেন, তে নাথ! রুক্মিণী-রূপে ভগিনী চন্দ্রাবলীকে, জাশ্ববতীরূপে মলিতাকে, নাগজিতীরূপে পদ্মাকে, মাদ্রীরূপে শ্যামলাকে, লক্ষণারূপে ভদ্রাকে, মিত্ররুদ্ধারূপে শৈব্যাকে ইত্যাদি রূপে যোড়শমংশ্র একশত গোপ-

কন্যাকে লাভ করিলাম । হৃৎক ব্রজ-  
স্বরী উপস্থিত ও এই রুদ্দাবনস্ব নিকুঞ্জ-  
ধামে আপনার সঙ্গলাভ করিলাম ;  
ইহার পর আর আমার কি প্রিয়কার্য  
সাধন করিবেন । তথাপি এই প্রার্থনা,  
শ্রীরুদ্দাবনে গমন করতঃ আমাদিগের  
সহিত মিলিত হওতঃ শ্রীমুখে বেণু ধারণ  
করিয়া রাস, বনবিহার, নৌখেলা ও  
দানলীলাদির অনুষ্ঠান করেন, ইহাই  
প্রার্থনা । এইস্থানে কেহ বলেন, ইহাতে  
প্রতিপাদিত হইল, দ্বারকাতে শ্রীকৃষ্ণের  
পরম যত্ন দ্বারা নির্মিত রুদ্দাবন, তন্নধ্যস্থ  
নিকুঞ্জ-কানন ॥ সেইস্থানে সকল সখী-  
গণ এবং নন্দ যশোদা প্রভৃতি ব্রজবাসি-  
বর্গ থাকিলেও মনের তৃপ্তি না হওয়ায়  
রুদ্দাবনগমন প্রার্থনা কবিয়াছেন এবং  
রাসের পর্য্যবসান স্বকীয়ভাবে রুদ্দাবনেই  
হইল । কেহ বলেন, পরকীয়াভাবে  
রসের পরম পুষ্টি, তাহাই দেখান হইল  
অর্থাৎ শ্রীরাধা সত্যভাগ্যরূপে বিবাহিত  
হইয়া নবরুদ্দাবনে শ্রীকৃষ্ণসহ বিহরণেও  
তৃপ্তিলাভ করিতে পারিলেন না ।  
আমরা বলি, কেবল স্বকীয়ায় ব্রজরসের  
অনুজ্জ্বলতা হেতু এবং কেবল পরকীয়ায়  
রসাভাগ্য দোষ হেতু ; শ্রীরাধার প্রার্থনা  
স্বকীয়ারসে পরকীয়ার পর্য্যবসান হই-  
তেছে অর্থাৎ পরকীয়াভাব আচরণ দ্বারা  
স্বকীয়ারস উজ্জ্বলতা প্রাপ্ত হয় বলিয়া  
এবং ব্রজ ব্যতীত ইহার অন্ত্র বাস না  
হওয়াতে শ্রীরাধা শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক বিবাহিত  
হইয়াও পরকীয়াভাব আচরণ দ্বারা  
শ্রীকৃষ্ণকে তাৎশ উজ্জ্বল রস আশ্বা-

দন করাইতে ব্রজে গমন প্রার্থনা  
করিতেছেন । শ্রীকৃষ্ণকে আনন্দ প্রদান  
করাই হলাদিনীশক্তির কার্য । শ্রীশ্রীব  
গোস্বামীও বলিয়াছেন—

“পরমস্বীয়া অপি পরকীয়ায়মাণাঃ

শ্রীব্রজদেব্যঃ ন তু পরকীয়াঃ ॥”

ব্রজদেবীগণ স্বকীয়া হইলেও পর-  
কীয়াব ভাব আচরণ করিতেন ; তাঁহার  
পরকীয়া নহেন । অথবা ‘ভ্রাত্মাভি-  
শ্চটুলপশুপীভাবমুদ্ধাস্তরাভিঃ ।’ অর্থাৎ  
চঞ্চল গোপস্বরীগণের ঔপপত্যময় বে  
ভাব তদ্বারা মোহিতান্তঃকরণ আমা-  
দিগের সহিত মিলিত হইয়া বিহার কর ।  
ইহাতেও পরকীয়াভাব আচরণ প্রকাশ  
পাইতেছে, কিন্তু পরকীয়া আচরণ প্রকাশ  
পাইতেছে না । অতএব স্বকীয়ায় পর-  
কীয়াভাব পর্য্যবসান হইতেছে ।

নন্দেহ হইতে পারে, গ্রন্থকর্তা  
শ্রীকৃষ্ণ গোস্বামী দ্বারকাস্থ নবরুদ্দাবনে  
শ্রীকৃষ্ণের সহিত ব্রজসুন্দরীগণের বিবাহ  
ললিতমাধব নামক গ্রন্থে কিরূপে বর্ণনা  
করিলেন ? গ্রন্থকার যদিও ঐরূপ বর্ণনা  
করিয়াছেন তথাপি, ভাগবতায়ুতন্ত্র  
পান্ডোস্তরখণ্ডীয় গদ্য পদ্য কথায় উক্ত  
না হইলেও যুক্তি দ্বারা জ্ঞাত হওয়া যায় ;  
যে কোন কল্পে দম্ববক্রবধের পর শ্রীকৃষ্ণ  
ব্রজভূমিতে আগমন করিলে তাঁহার  
সহিত ব্রজরমণীগণের বিবাহ হইয়াছিল ।  
অতএব দ্বারকায় তাঁহাদের বিবাহ  
কিরূপে সম্ভব হয় ? তদুত্তর, দ্বারকায়  
শ্রীকৃষ্ণের সহিত ব্রজরমণীগণের যে  
বিবাহ হইয়াছিল, তাহা প্রমাণহিত

নহে। ইহা কাদাচিৎ লীলা। যে হেতু  
পাশ্বে কার্তিক-মাহাত্ম্যে ৩২ অধ্যায়ে  
বলিয়াছেন—

“কৈশোরে গোপকন্যাত্তা যৌবনে রাজকন্যাকা  
ইতি।”

অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক বিবাহিত রমণী-  
গণ কৈশোরাবস্থায় গোপকন্যা এবং  
যৌবনাবস্থায় ভীষ্মক প্রভৃতি রাজগণের  
কন্যা। আরও স্বন্দপুত্রাণে গোপী-  
মাহাত্ম্যে এবং প্রভাসখণ্ডে আদিত্য-  
মাহাত্ম্যে উক্ত হইয়াছে, গোকুলস্থ  
কাত্যায়নীব্রতপরায়ণা ষোড়শসহস্র এক-  
শত গোকুলরমণী পটুমহিষী উদ্দেশে  
দ্বারকায় আগমন করিয়াছিলেন এবং  
শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক বিবাহিতা হন। সুতরাং  
পূর্ণতম শ্রীসুন্দারবনচন্দ্র শ্রীকৃষ্ণের পূর্ণ  
প্রকাশ যেমন দ্বারকানাথ শ্রীকৃষ্ণ, তদ্রূপ  
তদীয় পূর্ণতমা হলাদিনীশক্তি ব্রজসুন্দরী-  
গণের পূর্ণরূপা ভীষ্মক ও সত্রাজিৎ প্রভৃতি  
রাজগণের কন্যা রুক্মিণী সত্যভামাদি।  
অতএব দ্বারকায় তাঁহাদিগের বিবাহ  
বর্ণন সমুচিতই হইয়াছে। পূর্ণতম ব্রজ-  
ধামে তাঁহাদিগের বিবাহ হইয়াছে, এরূপ  
বর্ণন করিতে পার না। যে হেতু সমর্থ  
রাতিতে সমঞ্জসা রতি উৎপন্ন হইতে  
পারে না। সমঞ্জসা রতি যথা উজ্জ্বলে—

“পত্নীভাবান্তিমানা গুণাদিশ্রবণাদিজা।

কচিত্তেন্দিতসন্তোগতৃষ্ণা সাত্ত্বা সমঞ্জসা ॥”

যে রতিতে পত্নীভাব্তিমান বুদ্ধি হয়,  
যাহা গুণাদি শ্রবণে উৎপন্ন হইয়া থাকে  
এবং যাহাতে কখনই সন্তোগের তৃষ্ণা  
জন্মায়, তাহাই সমঞ্জসা। সমর্থরতি যথা,

“কিকিষিষমারাম্যাস্তা সন্তোগেচ্ছা ষয়ান্তিতঃ।

রত্যা তাদাম্যামাপন্নাসা সমর্থতি ভক্ততে ॥”

সাধারণী এবং সমঞ্জসা হইতে কিঞ্চিৎ

বিশেষ সন্তোগেচ্ছা যে রতিতে নায়ক ও  
নায়িকাতে একীভাব প্রাপ্ত হয়, তাহার  
নাম সমর্থ। ভাগবত শ্লোকের অর্থাৎ  
‘আহুশ্চ তে’ শ্লোকের গূঢ়ার্থ বিস্তার  
করিতে শ্রীকৃষ্ণ গোপ্যামী ‘মাতৈ’ এই  
শ্লোক করিয়াছেন ॥ ৯ ॥

( ৬পা ) ‘এইমতে মহাপ্রভু ... ..  
হয় রাত্রিদিনে ॥’ এই ১৪শ পয়ারের  
ভাবার্থ। এই মতে, বিরহাবস্থায়।  
‘সুভদ্রা’ ইতি। ভগিনী সুভদ্রা সঙ্গে  
আছেন, কিন্তু গোপী না থাকায় শ্রীকৃষ্ণের  
ব্রজভাব নাই; ইহা সিদ্ধান্তিত হইল।  
শ্রীমদ্ভাগবতে ১০স্ক ৪৭শ ভ্রমরগীতায়  
শ্রীরাধার উন্মাদাবস্থা বর্ণিত আছে।  
উদ্ঘূর্ণা, নানাপ্রকার বিলক্ষণ বৈবশ্য  
চেষ্টাকেই উদ্ঘূর্ণা বলে। প্রলাপ, ব্যর্থ  
অলাপ ॥ ১৪ ॥

( ৬পা ) ‘দ্বাদশ বৎসর শেষ.....  
তারে দেখাইল ॥’ এই ১৫শ ও ১৬শ  
পয়ার দুইটির ভাবার্থ। দ্বাদশবৎসরশেষ,  
শেষদ্বাদশবৎসর। এইমতে সন্ন্যাস হইতে  
উক্ত প্রকারে। ত্রিবিধানে, তিন  
প্রকারে অর্থাৎ প্রভুর সন্ন্যাস হইতে ছয়  
বৎসর যাবৎ নানাদেশ ভ্রমণ, এই এক।  
কেবল নীলাচলে ছয় বৎসর যাবৎ প্রেম-  
ভক্তিশিক্ষা প্রদান, এই এক। তৎপরে  
দ্বাদশ বৎসর পর্য্যন্ত শ্রীকৃষ্ণবিরহ, এই  
এক, এইরূপে ত্রিবিধান। কৈল, কহি-  
লাগ। শেষ-লীলার ত্রিবিধত্ব দেখাইয়া

উক্ত ত্রিবিধ লীলার মধ্যে প্রভুর সন্ন্যাস হইতে ছয় বৎসর লীলার নাম মধ্যলীলা । এক্ষণে মধ্যলীলার সূত্র বর্ণনা করিতে-  
ছেন, ‘প্রথম সূত্র’ ইত্যাদি । ‘তবে সার্কভৌম’ ইতি । আপন ঙ্গবমূর্তি, নিজের ঐশ্বর্য্য এবং বিগ্রহমূর্তি । এস্থলে মনেহ হইতে পানে, মহাপ্রভু নিজরূপ দেখাইয়া সার্কভৌমকে যে রূপা করিয়া-  
ছেন, সে সম্বন্ধে শ্রীগ্রন্থের ১ পরিচ্ছেদে কবিরাজ বলিতেছেন—

“দেখাইল আগে তাবে চতুর্ভুজরূপ ।

পাছে শ্যাম বংশীমুখ স্বকীয় স্বরূপ ॥”

শ্রীচৈতন্যভাগবতে অস্বাখণ্ডে তৃতীয়-  
অধ্যায়ে রন্দাবনদাস ঠাকুর বলিতে-  
ছেন—

“আম্মভাবে হইলা যড়ভুজ অবতার ।

প্রভু বোলে সার্কভৌম কি আর বিচার ॥”

এক্ষণে মহাজন লিখিত উভয় বাক্যের  
সামঞ্জস্য কি ১ তদন্তর, উভয় বাক্যই  
এক । কবিবাজের বাক্যটি রন্দাবন  
ঠাকুরের বাক্যের অনুবাদ মাত্র । ইহা  
একটু তিন্মা করিলেই অনুভব হয় ।  
আম্মভাব ও স্বকীয় স্বরূপ এই শব্দ দুইটি  
একার্থ । চতুর্ভুজ শব্দে যে কেবল  
শব্দ, মন, মদ্য ও পদ্মাদারী চতুর্ভুজ  
স্বাক্ষরিত হইয়া নহে । যে হেতু  
এস্থলে ঐশ্য প্রমাণ রচিত । যে চতুর্ভুজ  
রূপটি এ শ্যামবংশীমুখরূপ দেখাইয়াছেন  
উভয়টিই স্বকীয় স্বরূপ । উভয় রূপই  
এক সময়ে প্রকাশ পায় ; সার্কভৌম  
কেবল অগ্র পশ্চাৎ দর্শন করিয়াছিলেন  
বলিয়া ‘আগে’ ও ‘পাছে’ শব্দ মাত্র

প্রয়োগ করিয়াছেন । শুদ্ধ মাদুর্ধ্য অনু-  
ভবের শক্তি ছিল না বলিয়া, ঐশ্বর্য্য-  
মাদুর্ধ্যাত্মক যড়ভুজ অবতার দর্শন  
করাইয়া রূপা করতঃ তরুপযুক্ত করি-  
লেন । চতুর্ভুজ ও শ্যামবংশীমুখ বাক্যে  
যড়ভুজই বোপিত হয় ॥১৫। ১৬ ॥

(৬পা) “তবেত করিল ... তাহাতে  
লিখন ॥” এই ১৭শ ও ১৮শ পয়ারের  
ভাবার্থ সরল । কুর্দ্দক্ষেত্র, মাহদ্রাজ  
প্রেসিডেন্সির উত্তর গীমাস্থ গঞ্জাম জিলার  
অন্তর্গত এবং চিকাকোল হইতে আট  
মাইল পূর্বে সমুদ্রতীরে অবস্থিত । ঐ  
স্থানে কুর্দ্দাবতার শ্রীবিষ্ণুর মূর্তি বিরাজিত  
আছেন । প্রভু কুর্দ্দক্ষেত্র হইতে বিজয়  
নগর হইয়া গীমাচলে আগমন করিলেন ।  
গীমাচল একটি পার্কত্যাপ্রদেশ । এই  
পার্কতটি আটশত ফিট উচ্চ । ইহার  
উপর শ্রীনৃসিংহদেবের মন্দির ও মূর্তি  
বিরাজিত । এই বিগ্রহকে জিয়ড় নৃসিংহ  
বলে । এম্বন্ধে একটি ইতিহাস আছে—

ঐস্থানে পণ্ডুরা নামে এক গোপ বাস  
করিতেন । তিনি শ্রীকৃষ্ণের উদারভক্ত ও গৃহা-  
শ্রমী ছিলেন । তিনি এক বৎসর শশা নামে লতা  
রোপন করেন এবং সেই সকল লতায় অনেক  
ফলও ফলিয়াছিল । পণ্ডুরা শ্রীভগবানের জন্ত ঐ  
সকল ফল অতি যত্নে রক্ষা করিতেন । কোতুকী  
ভগবান্ ভক্তের সঙ্গে কোতুক করিবার জন্ত বরাহ-  
রূপ ধারণ করতঃ ফলভক্ষণ আরম্ভ করিলেন ।  
“আশ্চর্য্য, ভগবানের ভক্তদ্রব্য কি এতই প্রিয়, যে  
না দিলেও ভক্ষণ করেন ? অনন্তর ভক্ত পণ্ডুরা  
ভগবানের ফল কোনও জন্ততে ভক্ষণ করিতেছে  
জানিয়া, ধনুর্ধারসহ রাজজাগরণ করিতে লাগি-  
লেন । নিশীথরাতে দেখিতেছেন, এক বৃহৎ বরাহ

সেই ফল ভক্ষণ করিতেছে। ভগবানের দ্রব্য অপচয় হেতু ক্রুদ্ধ হইয়া পণ্ডুরা বরাহকে লক্ষ্য করতঃ বাণ নিক্ষেপ করিলেন। অতিকৌতুকী বরাহরূপী শ্রীভগবান্ আশ্রিতের 'রাম রাম' উচ্চারণ করিয়া পর্ত্তগহ্বরে প্রবেশ করিলেন। পণ্ডুরা বরাহমুখে রামনাম শ্রবণ করিয়া মৰ্ম্মাহত হইয়া গড়িলেন ও মনে করিলেন, "ভক্ত ভিন্ন বিপদ-সময়ে কে রাম নাম শ্রবণ করিবে। স্মরণ্য বরাহ একটি হরিভক্ত। সেই হরিভক্তের অঙ্গে বাণাঘাত করিলাম, আমার দিক্ জীবন। আমি ভক্তাপরাধী জীবন রাখিব না, অনাহারে প্রাণ পরিত্যাগ করিব।" এইরূপ প্রতিজ্ঞা করিয়া, পণ্ডুরা উপবাস করিতে লাগিলেন। রাত্রে শ্রীভগবান্ আকাশবাণীতে কহিলেন, "ওহে ভক্ত-রাজ, কেন উপবাস করিতেছ, উঠ, ভোজন কর। পণ্ডুরা কহিলেন, "আমি ভক্ত-অঙ্গে বাণাঘাত করিয়াছি, আমি আর প্রাণ রাখিব না।" শ্রীভগবান্ কহিলেন, "কোন ভক্তকে মাব নাট, আমি বরাহরূপ ধারণ করিয়া তোমার ফল গাইতে-ছিলাম। আমার অঙ্গে বাণ বিদ্ধ হয় নাট। কৌতুক নিমিত্ত 'রাম রাম' বলিয়া পলায়ন করিয়া-ছিলাম। ইহাতে তোমার কোন অপরাধ হয় নাই। যদি তুমি অপরাধই মনে কর, তবে ক্ষমা করিলাম।" পণ্ডুরা কহিলেন, যদি আমার অপ-রাধ ক্ষমা করিয়া থাকেন, তবে প্রসন্নতার বিশ্বাস, সাক্ষাৎ দর্শন দিন। ভক্তবৎসল ভগবান্ নৃসিংহরূপে ভক্ত-সম্মুখে আবির্ভূত হইলেন। পণ্ডুরা দর্শনা-নন্দনমুদ্রে নিমগ্ন হইলেন। পরে দণ্ডবৎ পূর্স্কক অনিমিষে দর্শন করিতে লাগিলেন। ভগবানের নিত্য স্তব এই যে, ভক্তকে দর্শন দিলেই বর প্রার্থনা করিতে বলেন। পুনঃ পুনঃ বর প্রার্থনা করিতে বলিলে, ভক্তরাজ বর প্রার্থনা করিলেন, "আপনি আমার গৃহে চলুন, আমার গৃহে থাকি-বেন। আমি আপনার সেবা করিব।" শ্রীনৃসিংহ ভগবান্ কহিলেন, "হে ভক্তবর, ঈশ্বর স্বরূপে

মহ্যাগৃহে অবস্থান অসম্ভব, তুমি আমার তরু, তোমার অনুরোধে তাগকবা যায় না।" পণ্ডুরা তুমি দেশীয় রাজাকে আমার সেবা করিতে কর ও এইখানে বহু দ্রুপ ঢালাইয়া পণ্ডুরা নৃসিংহবিগ্রহরূপে প্রকাশ পাইয়া পণ্ডুরা সেবা করিবে।" এই আজ্ঞা পণ্ডুরা রাজাকে সমস্ত ব্রতান্ত জানাইলেন। রাজা ভক্ত-বাণ্য বিশ্বাস না করিয়া কহিলেন, "ভগবানের সাক্ষাৎ অমুমতি শুনাইতে পার, তবে আমার বিশ্বাস হয়।" পণ্ডুরা পূর্ন অমুমতির স্থানে রাজাকে লটয়া গেলেন। গেমেস সন্তত রাজার কথা জানাইয়া কহিলেন, "হে ভগবান্, রাজা আমার কণায় বিশ্বাস করিতেছেন না, আপনি স্বয়ং ইহাকে দ্রুপ ঢালিবার অমুমতি করুন।" ভক্তবাক্য-অমুরোধে ভগবান্ কহিলেন, "রাজন! ভক্তবাক্য অবিশ্বাস করিও না, ভক্ত যাহা কহি-য়াছে, তাহা সত্য।" ভক্ত-সম্মুখে রাজার অনা-য়াসে ভগবদ্বাক্য কর্ণগোচর হইল। রাজা আজ্ঞা-রূপে দ্রুপ ঢালাইতে লাগিলেন, যত দ্রুপ ঢালাই হয়, ততই মূর্ত্তির প্রকাশ হয়, কিন্তু শ্রীচরণগুণ প্রকাশ হইল না। পরে ভগবান্ আদেশ করিলেন, "আর দ্রুপ ঢালিও না, চরণ উঠিবে না।" রাজা দ্রুপ ঢালাইতে নিরন্তর পাইয়া ক্রমশঃ মন্দির ও স্তম্ভরূপে সেবাদির বন্দোবস্ত করিয়া দিলেন। এইরূপে কিছুকাল গত হইলে একদিন এক সওদাগর নিজের দুইটি স্ত্রীসহ ঐ ঠাকুরবাড়ীতে উপস্থিত হন। আপনি বাহিরে থাকিয়া স্ত্রীদ্বয়কে ঠাকুর-দর্শনে পাঠাইয়া দেন। বহু সময় গত হইলেও স্ত্রী দুইটি দেখন আসিল না দেখিলেন, তখন সওদাগর মন্দিরমধ্যে প্রবেশ করিয়া দেখেন, তাঁর স্ত্রী-দুইটি পাষাণী মূর্ত্তি হইয়া রহি-য়াছে। ফলতঃ তাঁহার নৃসিংহভগবান প্রাপ্ত হইয়াছেন। ভক্ত সওদাগর অনেক আক্ষেপ করিতে লাগিলেন, "আমার স্ত্রী-দুইটির ভগবান্ প্রাপ্ত হইল, আমি পাইলাম না।" রাত্রে সওদা-

গরের প্রাণ স্বপাদেশ হইল, “হে ভক্ত, পরে তুমিও আগাকে পাইবে। এখন কিছু বর প্রার্থনা কর।” সওদাগর কহিলেন, “আপনি আমার স্ত্রী ছুইটিকে যেমন গ্রহণ করিয়াছেন, তক্রপ আমার নাম গ্রহণ করুন।” শ্রীভগবান্ “তপাস্ব” বলিয়া বর দিলেন। সওদাগরের নাম ছিগ জিয়ড়, ভগবানের নাম নৃসিংহ; এই ছুই নাম মিলনে নাম হইল জিয়ড়নৃসিংহ। ঐ নামের ইহাই কারণ।

ত্রিমল্ল, ত্রিপদী হইতে ছয় মাইল পূর্বে শেয়াচল নামক পর্বতের উপর বালাঙ্গী মূর্তি বিরাজিত। ঐ শেয়াচলই ত্রিমল্ল। ত্রিপদী, বর্তমান উত্তর আর্কট জিলার অন্তর্গত। এখানে শ্রীরামচন্দ্র মূর্তি আছে। অহোবল নৃসিংহ, অহোবল নামক নৃসিংহ। শ্রীরক্ষকত্র, কাবেরীর তীবে, এইস্থানে শ্রীরক্ষনাথ বিষ্ণু মূর্তি বিরাজিত। বর্তমান ইহার নাম শ্রীরক্ষপত্তন। ইহা রামানুজীয় বৈষ্ণবদিগের একটি প্রসিদ্ধ তীর্থ। শ্রীবৈষ্ণব, রামানুজসম্প্রদায়। ভট্টমারী, বাগাচারী সন্ন্যাসীবেশ্য। কৃষ্ণদাস, নিজসদী ব্রাহ্মণ। শ্রীরক্ষপুরী, ঠনি শ্রীমাধবেন্দ্র-পুরীর শিষ্য। তত্ত্ববাদী, মাধবসম্প্রদায়ী। তা সবার, তত্ত্ববাদিগণের। সেতুবন্ধ, এখানে রামেশ্বর মূর্তি বিরাজিত। বর্তমান ঐ স্থানের নাম পামবান্। ঐ স্থানে কুর্কপুরাণান্তর্গত রাবণ কর্তৃক মায়ামীতা হরণ শ্রবণ করেন ॥১৭।১৮॥

(৭ পা) “শুনিয়া প্রভুর ... .. ভক্তগণের মিলনে।” এই ১৯শ ও ২০শ দুই পয়ারের ভাবার্থ মরল। অনবসরে,

স্নানযাত্রার পর পনের দিন যাবৎ শ্রীজগন্নাথ দর্শনের বাধা হইলে। বিরহে, শ্রীজগন্নাথদর্শনবিরহে। আলাননাথ, পুরীর দক্ষিণ ছয়ক্রোশ ব্যবধানে। তারে, রামানন্দকে। সেইস্থানে, সেই উদ্যানে। এই স্থলে, রথযাত্রাদর্শন ছিলে ॥১৯।২০॥

(৭ পা) “সার্কভোমের গৃহে ... .. ক্ষমাইলা শ্রীবানাপরাধ।” এই ২১শ ও ২২শ সংখ্যক দুই পয়ারের ভাবার্থ সহজ। ডিফা, ভোজন। ষাঠী, সার্কভোমের কন্যা। রাণী, বিধবা। ষাঠীর স্বামী অমোঘ, প্রভুকে নিন্দা করাতে ষাঠীর মাতা নিন্দা করিয়া বলিয়াছিলেন, ষাঠী বিধবা হউক, যেমন আপন মাতা কোন সময়ে নিজ পুত্রকে বলে, তুমি মর। ইহা ব্যতীত অন্য কোন অর্থ হইতে পারে না। বর্ষান্তরে, পর বৎসরে। পালন, তত্ত্বাবধারণ। পথে, শ্রীক্ষেত্র-মধ্যের পথে। হোরাপঞ্চমী, রথযাত্রার দিন হইতে গণনায় পঞ্চম দিবসে লক্ষ্মী-দেবী রথস্থ জগন্নাথদেবকে দর্শন করেন বলিয়াই ইহার নাম হোরা বা হোরা পঞ্চমী। লগুড়, লাঠী। পথে, শ্রীক্ষেত্র হইতে গৌড়দেশ আসিবার পথে। “পুরী গোমাত্রিঃ” ইতি। পরমানন্দপুরী মহাপ্রভুর অনুপস্থিতি সময়ে তাঁহার স্মরণার্থ পরিধেয় বহির্কান চাহিয়া লইয়া ছিলেন। ভদ্রক, ভদ্রক নামক স্থান। আনি, গৌড়দেশে আসিয়া। বিদ্যা-বাচস্পতি গৃহেতে, সার্কভোমের জাতার গৃহে, কুমারহট্ট গ্রামে। কুলিয়াগ্রাম, কাঁচড়াপাড়া ষ্টেশনের ঈশান কোণে।

দেবানন্দের প্রাসাদ, পণ্ডিত দেবানন্দ ভাগবত অধ্যাপনা করিতেন; একদিন শ্রীবাসপণ্ডিত ইহার চতুস্পায়ীতে ভাগবত শুনিয়া প্রেমপরবশ হওতঃ মুচ্ছিত হইলে, দেবানন্দের ছাত্রগণ তাঁহাকে বহির্ভাগে নিক্ষেপ করেন। ইহাতে দেবানন্দের নৈষ্কাম্যপরাধ হয়। মহাপ্রভু কুলিয়াগ্রামে আগমন করিলে, একদিন বক্রেশ্বরপণ্ডিত প্রেমভরে নাচিতে নাচিতে দেবানন্দকে আলিঙ্গন করতঃ মহাপ্রভুর সমীপে লইয়া যান। ভক্ত-সংসর্গে ভক্তির উদয় হইলে, মহাপ্রভু তাঁহার প্রতি প্রসন্ন হইয়া ভাগবতের ভক্তিবিদ্যাস্ত বৃথাইয়া দিয়া তাঁহার অপরাধ ক্ষমা করিলেন। অদ্যাপিও এই স্থান অপরাধভঞ্জনপাঠ নামে বিখ্যাত। ক্ষমাইলা, ক্ষমা করাইলেন ॥ ২১। ২২ ॥

( ৮ পা ) \*পামণ্ডী নিম্নুক আদি ... ইহো নাটিক সংশয় ॥\* এই ২৩শ, ২৪শ ও ২৫শ সংখ্যক তিন পয়ারের ভাবার্থ সরল আছে। পথ মাজাইল মনে, মনে মনে পথ মাজাইয়াছিলেন। নিরন্ত, বোঁটা রচিত। কানাইর নাটশালা, রাজমহল হইতে তিন ক্রোশ অন্তরে। গৌড়ের, গৌড়রাজধানীর। বিনা দানে, বিনা বেতনে। \*তার হিংসায় লাভ নাহি।\* এই বাক্যের অভিপ্রায়, এই যে, যখন রাজা পাছে প্রভুর প্রতি কোন হিংসারূপ করে, এই ভয়ে তিনি প্রভুর সহিমা উড়াইয়া দেন। তথাহি চৈতন্যভাগবতে অন্ত্যখণ্ডে চতুর্থাধ্যায়ে—

\*শুনিয়া কেশবখান পরম সজ্জন।

ভয় পাই লুকাইয়া কহেন কখন ॥ ইত্যাদি”

দবীরখাগ, উত্তম লেখক বা সহকারী মন্ত্রী। পুছ, জিজ্ঞাসা কর ॥ ২৩—২৫ ॥

( ৯ পা ) “এত কহি রাজা গেল..... কহিতে বাসি লাজ।” এই ২৬শ পয়ারের ভাবার্থ সরল আছে। দবীরখাগ, শ্রীরূপ গোস্বামী। দুই ভাই, শ্রীরূপ ও সনাতন। বেশ লুকাইয়া, রাজকর্মচারির পরিচ্ছদ গোপন করতঃ। দুই জন, শ্রীনিত্যানন্দ ও হরিদাস। সাকর, গম্ভীরার্থ বাক্যের রচয়িতা; ইহা সনাতন গোস্বামির উপাধি। মঞ্জিক, শ্রেষ্ঠ। দশনে, দস্তে। দস্তে ভূণ ধারটি দৈন্য-সূচক। নীচজাতি, পতিতজাতি। নীচ-সঙ্গী, যবনের সঙ্গী। করি নীচকাজ, যবনের কার্য করি। শ্রীরূপসনাতন দৈন্যভাবে বলিতেছেন, হে প্রভো! আমরা যখন সংসর্গে থাকায় এবং যবনের দাসত্ব করিয়া তাহার অর্থ দ্বারা শরীর পোষণ করিয়াছি। অতঃপর যখন সদৃশ পতিতজাতি হইয়াছি। শ্রীরূপসনাতনের পরিচয় যথা—পূর্বকালে সর্বজ্ঞ জগদগুরু নামে একজন কর্ণাটদেশের রাজা ছিলেন। ইনি ভরদ্বাজগোত্রীয় ব্রাহ্মণ। নিজের ক্ষমতায় ইনি সমস্ত রাজগণ কর্তৃক পূজিত ছিলেন। ইহার অনিরুদ্ধদেব নামে একট পুত্র হয়। সেই অনিরুদ্ধদেবের ঔৎসে স্বীয়ের গর্ভে রূপেশ্বর ও হরিহর নামে দুই পুত্র জন্মগ্রহণ করে। রূপেশ্বর বহুবিধ শাস্ত্রে সুপণ্ডিত হইয়াছিলেন। তাৎপৰ্য্য দুর্ধর্ষে অত্যন্ত প্রবল হইয়াছিলেন। রূপেশ্বর হরিহর কর্তৃক রাজ্য হইতে বিতাড়িত হইয়া নিজের পত্নীকে সঙ্গে লইয়া আটটা ঘোটক সমেত



উত্তরদিকে শিখরভূমিতে যাত্রা করেন । তথায় যাইয়া শিখরেশ্বর নামক রাজার সহিত বন্ধুত্ব স্থাপন পূর্বক পরমস্থখে বাস করেন । ঐ স্থানে পদ্মনাভ নামে রূপেশ্বরের একটি পুত্র হয় । পদ্মনাভ শিখরভূমি পলিত্যাগ করতঃ গঙ্গাতীরে নৈহাটা গ্রামে আসিয়া বাস করেন, এবং তৎকালে একটি যজ্ঞোৎসব করিয়াছিলেন । ঐ সময়ে তাঁহার অষ্টাদশ কন্যা ও পাঁচটা পুত্র হয় । ১। পুরুষোত্তম, ২। জগন্নাথ, ৩। নারায়ণ, ৪। সুরাসি, ৫। মুকুন্দ । কুমার নামে মুকুন্দের একটি পুত্র হয় । কোন বিবাদ বিসম্বাদে কুমার বঙ্গদেশে ফরিদপুর জিয়ার দক্ষিণ বরিশালের অধীন চন্দ্রদ্বীপ পরগণার অন্তর্গত কতোয়াপাড়ে গমন করতঃ বাস করেন । কুনাবের পূজণ মদ্যে তিনটিই শ্রেষ্ঠ মাননীয়া । ১। সনাতন, ২। রূপ, ৩। বলভ বা অল্পপন । ইহার পুত্র শ্রীকৃষ্ণ । শ্রীকৃষ্ণ গোবামী স্ত্রে মহাপুত্র রূপাপার হয়েন বলিয়া, প্রথমেই তাঁহার নাম কথিত হয় । শ্রীকৃষ্ণের এবং কীমনাতনের পূর্ণনাম অমর ও সন্তোষ ছিল । অগ্রেতে, সম্মুখে ॥ ২৩ ॥

(৯ পা) "মতুল্য ইতি" দশম শ্লোকের ভাবার্থ শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । "তোমার অগ্রেতে" এই পয়াব প্রমাণ এই শ্লোক । সন্দৈন্যে বলিতেছেন, হে পুরুষোত্তম ! অর্থাৎ আপনি পুরুষ নাম-দারী ঈশ্বরগণ অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ বলিয়া আপনারই শরণাপন্ন হইতেছি । তথাহি শ্রুতি,—

"যশাৎ পরং নাপরমন্তি কিঞ্চিৎ  
যশ্যমানীযো ন জ্যাযোহস্তি কিঞ্চিৎ ।  
বক্ষ ইব স্তকো দিবি তিষ্ঠত্যোক-  
স্তেনেদং পূর্ণং পুরুষেণ সক্ষম ॥"

সেই পুরুষ সন্দোত্তম, তাঁহা হইতে উত্তম আদ কিছাই নাই । তিনি অণু

হইতেও অণুতর এবং মহান্ হইতেও মহত্তর । তিনি অদ্বিতীয়, তাঁহার দ্বিতীয় নাই । তিনি রক্ষের ন্যায় নিশ্চলভাবে স্মীয় মহিমারূপ পুরে অর্থাৎ স্বশক্তি-বৈভবরূপ নিজধামে অবস্থান করিতে-ছেন, অথচ তাঁহারই শক্তিপ্রকাশরূপ বিস্তৃত শাখাপ্রশাখায় এই সংসার পরি-পূর্ণ রহিয়াছে । অতএব আপনি প্রক্রমো-ত্তম বলিয়া আপনার শরণ গ্রহণ সঙ্গত হইতেছে । আমি এত পাপী ও অপরাধী যে, "পাপ ও অপরাধ হইতে আমাকে মুক্ত করুন" এরূপ প্রার্থনা করিতেও আমার লজ্জা হইতেছে । অতএব আপ-নাকে আমি আর কি বলিব । এই শ্লোকটি শ্রীকৃষ্ণ ও সনাতনেরই কথিত ॥ ১০ ॥

(৯ পা) "পতিত ভারিতে প্রভু..... দেখুক তোমার দয়াবল ॥" এই ২৭শ ও ২৮শ সংখ্যক পয়ারের ভাবার্থ, শ্রীকৃষ্ণ ও সনাতন নিজের অত্যন্ত দৈন্যতা দেখাইয়া বলিতেছেন, "পতিত ভারিতে" ইত্যাদি । মাহাত্মা তুলসীদাসও এরূপ বলিয়াছেন, যথা রামায়ণে—

"মো সম দীন ন দীনহিত  
তুঁহু সমান রঘুবীর ।  
অস বিচারি রঘুবংশমণি  
হরহঁ বিধম ভবতীর ॥"

হে রঘুবীর ! আমার সমান পতিত নাই, আর তোমার ন্যায় দীনহিতকারীও নাই ; হে রঘুবংশমণি, তঁহা বিচার করতঃ তোমার শরণাপন্ন হইয়াছি, আমার ভব-ভয় বিনাশ কর । তাহা, জগাই মাধাই । শ্রীকৃষ্ণ ও সনাতন নিজেরাও ব্রাহ্মণজাতি

এই আশঙ্কায় বলিতেছেন, 'ব্রাহ্মণজাতি' ইত্যাদি । নীচসেবা, স্নেহের বেতন গ্রহণপূর্বক আজ্ঞা প্রতিপালন । কুপ্পার, অধীন । স্নেহজাতি, কর্মস্নেহ । স্নেহমধ্যে থাকিয়া স্নেহের বেতন গ্রহণ করতঃ তাহাদের আজ্ঞামত কার্য্য করি । নিজে ব্রাহ্মণ বলিয়া বলিয়াছেন, "গোব্রাহ্মণ-দ্রোহি সঞ্জে আমার সঙ্গম ।" নচেৎ গোব্রাহ্মণ-দ্রোহ করি বলিতেন । মোর কর্ম, আমার প্রারন্ধ কর্ম অর্থাৎ ব্রাহ্মণ হইয়া মবনের অধীনে দৈহিকাদি প্রতিপালন করি, ইহা আমারই প্রারন্ধকর্ম ফল । কুবিষয়, ভগবন্তুঞ্জির প্রতিবুল বিবয় । বসী, বলবান । বাত, কথা । স্বদয়া, নিজদয়া । "সত্য এক বাত" ইত্যাদি পয়ার পোষক শ্লোক পরে বলিতেছেন, "ন মুমেতি ।" ২৫। ২৬ ।

(১০ পা) "ন মুমেতি ।" এই একাদশ শ্লোকের ভাবার্থ শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । পরভুংখ নিমোচনের নাম দয়া । যদিও তোমার নিজ, পর ভেদ নাই, যদিও আমি তোমার নিত্য দাস, তথাপি তোমার প্রতি প্রতিকূলতা আচরণ দ্বারা তোমা হইতে অনেক দূরে কুবিষয়-বিষ্ঠাগর্ভে পতিত হইয়াছি । অতএব আমা ভিন্ন আর পতিত নাই, যাহাকে দয়া করিবে । যদি আমাকে দয়া না কর, তবে কাহার নিমিত্ত দয়া ভার বহন করিবে । বেদান্তে উক্ত হইয়াছে, "নৈকট্যায়ৈকট্যং দূরাদ্দূরম্ ।" অর্থাৎ তোমার প্রতি উন্মুখব্যক্তিগণের সম্বন্ধে তুমি নিকট হইতেও অতি নিকটে,

তোমার প্রতি বিমুখজনের সম্বন্ধে তুমি দূর হইতে অতি দূরে অবস্থান কর । তোমার স্বপর ভেদ না থাকিলেও, বিমুখজনই পররূপে প্রতীত হয় । অতএব এই বিমুখজনের ভবভুংখ বিনাশ করতঃ দয়া শব্দার্থের সফলতা কর ॥১১॥

(১০ পা) "আপনা অযোগ্য ..... বাঞ্জা উঠয়ে অন্তরে ॥" এই ২৯শ পয়ারের ভাবার্থ মরল আছে । আপন, নিজেকে । ক্ষোভ, বাধা অর্থাৎ অত্যন্ত অযোগ্যবশতঃ বসিতে বাধা হইতেছে । গুণে, দীনবৎসলতা গুণে । উপজায়, উৎপন্ন হয় । কবে, কখন । এই বাঞ্জা, পর শ্লোকোক্ত তোমার সেবারূপ বাঞ্জা । যদি বল, গৌরদেহে এমন কি গুণ আছে, যাহাতে রূপ মনোহনের লোভ উৎপন্ন হয় ? তথাপি চন্দ্রানুভে—

"ক মা নিবসুংকণা ক উদৈববনদ্ধুতম্ ।

ক মা বৎসলতা শৌরে গৌরে যাদুক্ তবায়মি ॥"

হে রুণ ! তোমার গৌরদেহে বাদুশী অনিবার্য্য রূপা ও অদ্ভুতবৈভব এবং বাৎসল্যভাব দৃষ্ট হয়, তদ্রূপ আর কুত্রাপি দেখা যায় না ॥ ২৯ ॥

(১০ পা) "ভবন্তুনিতি ।" এই দ্বাদশ শ্লোকের ভাবার্থ শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । "তৈছে মোর এই বাঞ্জা" পয়ারোক্ত বাঞ্জা প্রকাশক এই শ্লোক । হে নাথ অর্থাৎ সর্বজনরক্ষক । বিষয়াদিতে বাসনা থাকিতে ভগবৎসেবা লাভ হয় না বলিয়া, বাসনা পরিত্যাগ করিতে প্রার্থনা করিতেছেন । সেবা ব্যতীত

প্রকৃত আনন্দ লাভ হয় না বলিয়া, সেবার বাসনা করিতেছেন ॥ ১২ ॥

( ১০ পা ) “শুনি মহাপ্রভু ... পাঠাইল তোমারে ॥” এই ৩০শ পয়ারের ভাবার্থ, এস্থলে স্বরূপত্ব বিধায় ‘রূপ’ এই পদ প্রয়োগ করিলেন, এক্ষণে তাহার রূপ নাম হয় নাই, পশ্চাৎ ঐ নাম হইবে, ইদানীন্তন দবীরখাস। এইহেতু রূপ বলিয়া আবার দবীরখাস বলিয়াছেন। দুই ভাই, শ্রীরূপ ও সনাতন। পূর্বে শ্রীকৃষ্ণলীলায় শ্রীরূপ রূপমঞ্জরী এবং শ্রীসনাতন রতিমঞ্জরী ছিলেন বলিয়া পুরাতন দাস বলিলেন। রাজদত্ত উপাদি পরমার্থে লাগে না বলিয়া মহাপ্রভু উভাদের ঐ উপাদি ছাড়াইয়া বিয়ম মুক্ত করিলেন। “আজি হইতে” ইত্যাদি ॥৩০॥

( ১০ পা ) “পরব্যসনিনীতি ।” এই ত্রয়োদশ শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। ‘শিখাইতে শ্লোক লিখি’ তাহা এই শ্লোক ॥ ১৩ ॥

( ১০ পা ) “গৌড় নিকটে ... তাহা কৃষ্ণচরিতলীলা ॥” এই ৩১শ ও ৩২শ পয়ারের ভাবার্থ সরল আছে। গৌড় নিকট, গৌড়রাজ্যের নিকট অথবা নামকৈলি গ্রাম। ভয়, সংসার হইতে উদ্ধার হইবার ভয়। তপাপি, গৌররাজ্য তোমাকে ভক্তি করিলেও। প্রতীতি, বিশ্বাস। যদি বল, শ্রীচৈতন্যকে পরমেশ্বর জানিয়াও কেন যখন হইতে ভয় করিয়া তথায় থাকিতে তাহাকে নিষেধ করেন? ইহাতে বলিতেছেন, ‘যদ্যপি’ ইতি। কৃষ্ণচরিত লীলা, জনশ্রুতি আছে,

দিনাজপুর প্রদেশে বাণরাজ্যের বাটী ছিল, তৎকন্যা উহার হরণকালে শ্রীকৃষ্ণ ( কানাইর নাটশালা আধুনিক বাহার নাম ) ঐ স্থানে অবস্থিত করেন। সেই চিহ্ন কিছু কিছু আছে, তাহা মহাপ্রভু দর্শন করেন ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥

( ১১ পা ) “সেই রাত্রে তাহা ... গেলা নীলাচল ॥” এই ৩৩ ও ৩৪ পয়ারদ্বয়ের ভাবার্থ সরল। মথুরা—মাথুরামণ্ডল। রমভঙ্গ, ভজনের বাধা। দিন পাঁচ সাত, বারদিন। তাঁর ঠাঞি ভিক্ষা ব্যবহার, শচীমাতা পাক করিয়া মহাপ্রভুকে ভোজন করাইয়াছিলেন। বারিখণ্ড পথে, বন পথে। নানা রঙ্গ, ব্যাভ্রাদি পশুকে হরি বলাইয়া। সম্মাণিবে রূপা করি, প্রকাশানন্দকে রূপা করতঃ ॥ ৩১ ৩৪ ॥

( ১২ পা ) “ছয় বর্ষ ঐছে ... সব বৈল নিত্যস্থিতি ॥” এই ৩৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল। ছয় বৎসর, সম্মাস হইতে ছয় বৎসর। ইতি উত্তি, ইত্যন্ততঃ। সম্মাস হইতে ছয় বৎসর পর্য্যন্ত লীলার সূত্র কহিয়া শেষ অষ্টাদশ বর্ষের মধ্যে প্রথম ছয় বৎসরের লীলার সূত্র বলিতেছেন, ‘অন্ত্যলীলার সূত্র’ ইতি। চারিমাংস, রথযাত্রা হইতে চারিমাংস। পণ্ডিত গোসাঞি, গদাধর পণ্ডিত ॥ ৩৫ ॥

( ১২ পা ) “শ্রীঅদ্বৈত নিত্যানন্দ... প্রভু তাহারে কহিলা ॥” এই ৩৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল। হরিদাসের সিদ্ধি প্রাপ্তি, ‘সাধনাৎ সিদ্ধিরিত্যুক্তা’ সাধনের ফল প্রাপ্তির নাম সিদ্ধিপ্রাপ্তি

অর্থাৎ ভক্তি-সাপনাস্তর ইহলোক হইতে ভক্তের নিজঅভিলষিতদেহ ধারণ করতঃ ভগবদ্ধামে গমন পূর্বক তৎপার্বদত্ত প্রাপ্তিকে সিদ্ধি প্রাপ্তি বলে । যদি বল, ইহলোক হইতে গমন কসায় মৃত্যুবৎ প্রতীতি হওয়াতে, তাহাতে ছুঃখ না হইয়া মহোৎসব হয় কিরূপে ? তত্ত্বত্তর, এই ভগবদ্ধাম স্বাভীষ্টদেহে ভগবৎসঙ্গীপে গমন করতঃ ভগবৎসেবানন্দ উপভোগ করিতেছেন, এই নিবেচনায় তাহার বন্ধুবর্গ তদানন্দে আনন্দিত হইয়। এখানে তরুদ্দেশে মহোৎসব করিয়া থাকেন । পুনরাগমন, জীৱনদাবন হইতে জীক্ষেক্রে আগমন । শক্তিসংস্কারণ, জীৱাধারুষ্ণ-লীলার রসশাস্ত্র প্রকাশ করিতে শক্তি-সংস্কারণ । হরিদাসের দণ্ড কণা, অন্ত্য-লীলার দ্বিতীয়পরিচ্ছেদে উক্ত হইয়াছে । দামোদরের বাক্যদণ্ড কণা, অন্ত্যের তৃতীয়পরিচ্ছেদে উক্ত হইয়াছে । সনাতন গোস্বামির পরীক্ষা, অন্ত্যের চতুর্থপরিচ্ছেদে বিবৃত আছে । বলভ ভট্ট, গোকুলস্থ গোস্বামিদের পূর্বপুরুষ ॥ ৩৬ ॥

( ১২ পা ) \*প্রভুসমিশ্রেণে ... .. টাক দিয়া নিজহাত ॥\* এই ৩২২ ও ৩৮২ পয়ার দ্বয়ের ভাবার্থ সরল । প্রভু স্নেহিত্রাতা, এ বিষয় অন্ত্যের নবম পরিচ্ছেদে বিবৃত আছে । ঘাটাইলা, কনাইলা । মনুষ্যের বেশ ধরি, চৌদ্দভূবন মধ্যে দেবতা প্রভৃতির মনুষ্যবেশ ধারণ করিয়াছিলেন । উদ্ধত, প্রষ্টতা । নাশালে নাশ করিলে । আর্দ্র, ক্লিষ্ট । দ্রবিল, আর্দ্র হইল । মুখ ঢাক, জীৱাস প্রভুকে বলিতেছেন, হে প্রভো ! আমরা আপন-নার গুণকীর্তন করিতে আশা করিতেছি, এখন এই সকল লোককে নিবারণ করুন ॥ ৩৭ । ৩৮ ॥

( ১৩ পা ) "সূর্য্য বৈছে উদয় ... .. কহে কৃষ্ণদাস ॥" এই ৩৯৭ পয়ারের ভাবার্থ সরল । কাম, মনোভিলাষ । নিত্যানন্দ পাশ, যে সময় নিত্যানন্দ প্রভু পানিহাটী গ্রামে ছিষেন । আদি দ্বাদশ বৎসর, সন্ন্যাস হইতে দ্বাদশ বৎসর । ৩৯৮ ইতি মধ্যলীলায়াং প্রথম পরিচ্ছেদে সুবোধিনী টীপনী ॥ ১ ॥

## দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ ।

( ১৩ পা ) বিচ্ছেদেহ্মিন্মিতি । প্রথম শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । দ্বিতীয়পরিচ্ছেদে যে বিষয় কথিত হইবে তাহা এই শ্লোকের অর্থে

প্রকাশ করিলেন । প্রাণাপাদি শব্দের আদি পদে উচ্ছ্বলের অনুভাব বিরতাক্ত আলাপাদিও জানিবেন । এই পরি-চ্ছেদে মহাপ্রভুর অন্ত্যলীলার সূত্র ৩

কৃষ্ণবিচ্ছেদজনিত প্রলাপাদি অনুবর্ণিত হইবে ॥ ১ ॥

( ১০ পা ) “জয় জয় গৌরচন্দ্র……  
… কণে অঙ্গ ফুলে ॥” এই ১ম পয়ারের  
ভাবার্থ—মহাপ্রভুর প্রলাপাদি বর্ণনা  
করিতে গ্রন্থকার গৌরভক্তগণের রূপা  
প্রার্থনায় তাঁহাদিগকে বন্দনা করিলেন ;  
বেহেতু তদন্তর্গত উজ্জ্বলভক্তি পথে ক্রীড়া  
করিতেছেন। শেষ, নন্দ্যাম হইতে প্রথম  
দ্বাদশ বৎসরের পর । “শ্রীরাধিকার চেষ্টা  
যৈছে”, ভাগবতে ১০ম স্কন্ধে ৪৭ অধ্যায়ে  
গোপীসাস্ত্রনার্থ উদ্ধব ব্রজে আগমন  
করিলে, তাঁহাকে দর্শন করিয়া জীবাধার  
যে সকল চেষ্টা অর্থাৎ দিব্যোন্মাদ হইয়া-  
ছিল, মহাপ্রভুর সেইরূপ অবস্থা দিবা-  
রাত্র হইত । রূঢ় ও অধিরূঢ় ভেদে মহা-  
ভাব দ্বিবিধ । মোদন ও মাদন ভেদে  
অধিরূঢ় মহাভাব দুই প্রকার । তথাহি  
উজ্জ্বলে—

“মোদনঃ স ধর্মোর্ব্রজ সাধিকোদীপ্তসৌষ্টবম্ ॥”

যে অধিরূঢ়ভাবে শ্রীরাধাক্ষেপের মাত্ত্বিক-  
ভাব সকলের উদয় হয় তাহার নাম  
মোদন । এই মোদনাখ্য মহাভাব শ্রী-  
রাধার যুথ ভিন্ন অন্যত্র প্রকট হয় না,  
কারণ এই মোদন জ্ঞানাদিনীশক্তির পরম  
রক্তিরূপ । তথাহি উজ্জ্বলে—

“রাধিকাযুথ এবাসৌ মোদনো নভু সর্বতঃ ।

যঃ শ্রীমান্ জ্ঞানাদিনীশক্তেঃ স্ববিলাসঃ প্রিয়োবরঃ ।

ঐ মোহন শ্রীরাধার যুথের্তেই সম্ভব  
হয়, সর্বত্র হয় না, এই শ্রীমান্ মোদনই  
জ্ঞানাদিনীশক্তির প্রিয়তর শ্রেষ্ঠ বিলাস ।  
তথাহি তত্রৈব—

“মোদনোহয়ং প্রবিলম্বনশায়াং মোহনো ভবেৎ ।  
যস্মিন্ বিরহবৈবশ্যাৎ সূদীপ্তা এব সাধিকাঃ ॥”

এই মোদন ভাব বিলম্বদশাতে মোহন  
নামে কথিত হয়, যে মোহনে বিরহ-  
বৈবশ্যহেতু মাত্ত্বিকভাব সকল সুন্দররূপে  
প্রকাশ পাইয়া থাকে । দিব্যোন্মাদ প্রভৃতি  
তাহার অনুভাব । শ্রীরাধাতে প্রায়ই এই  
মোহনের উল্লেখ হয় । যাহাতে প্রতি  
সঞ্চারিতেই মোহের প্রাধান্য থাকে ।  
তথাহি উজ্জ্বলে—

“এতত্ত্ব মোহনাখ্যস্ত গতিং কামপ্যুপেয়ম্ঃ ।

ভ্রমাতা কাপি বৈচিত্রী দিব্যোন্মাদ ইতীর্ষাতে ॥”

কোন অনির্কচনীয়া রুতি বিশেষ প্রাপ্ত  
এই মোহনভাবের ভ্রম মদ্যশ বৈচিত্রী দশা  
লাভ হইলে, পণ্ডিতগণ তাহাকে দিব্যো-  
ন্মাদ বলিয়া থাকেন । উদ্যুর্ণা, চিত্রজল্ল,  
প্রজল্ল, পরিজল্ল, বিজল্ল, উজ্জল্ল, সংজল্ল,  
অবজল্ল, অভিজল্ল, আজল্ল, প্রতিজল্ল ও  
সুজল্ল ভেদে দিব্যোন্মাদ বহুবিধ ।  
দিব্যোন্মাদ প্রভৃতির ভেদ অন্ত্যালীলায়  
দেখান হইবে । চেষ্টা, কাণিক ব্যাপার ।  
প্রলাপ, অকারণ বাক্য । বাদ, বচন ।  
রোমকুপে রক্তোন্মাদ ইত্যাদি, সূদীপ্ত  
মাত্ত্বিকভাবের চিহ্ন । হালে, নড়ে ॥১॥

( ১৪ পা ) “গস্তীরা ভিতরে……  
কুর্সরূপ দেখিয়ে প্রভুরে ॥” এই ২য় ও  
৩য় পয়ার ছয়ের ভাবার্থ সরল । গস্তীরা,  
অভ্যন্তর গৃহ বা চোরাকুটারী । লব,  
লেশ । “তিন দ্বারে” ইতি । গস্তীয়ার  
উর্দ্ধ দ্বার দিয়া উপর চত্বরে যাইয়া তত্রস্থ  
তিনটা উচ্চ ভিত্তি উল্লঙ্ঘন করিয়া বাহিরে  
গমন করেন অর্থাৎ রুদ্ধদ্বার তিনটা উচ্চ

প্রাচীর লঙ্ঘন করতঃ বাহিরে পতিত  
হয়েন। তথাহি চৈতন্তস্ববকঙ্গরক্ষে দাগ-  
রঘুনাথেন উক্ত—

“অহুৎঘাটা দ্বারদ্বয়মূক চ ভিত্তিব্রহ্মমহো  
বিনজ্যোতৈঃ কালিঙ্গিকস্বরভীমশ্যে নিপতিতঃ ॥”

তিন দ্বারা উদ্ঘাটন না করিয়া তিনটি  
উচ্চ প্রাচীর উল্লঙ্ঘন করিয়া কলিঙ্গদেশ  
জাত গাভী মধ্যে পতিত হয়েন। কেহ  
বলেন, মহাপ্রভু যে স্থানে থাকিতেন  
সেই ঘরের তিনটি দ্বার ছিল। বহির্ভাগে  
কপাট রুদ্ধ থাকিত, মহাপ্রভু যাইবার  
সময় তাহারা আপনি উন্মুক্ত হইয়াছিল।  
গিংহ দ্বারে, শ্রীজগন্নাথের মন্দির প্রবে-  
শের প্রথম দ্বার। চটক পর্কত, পুরীর  
নিকটস্থ তন্নামা পর্কত। উপবনোদ্যান,  
জগন্নাথবল্লভ উদ্যান অথবা কৃত্রিম বন  
ও বনভেদ। কাঁহা, কোথাও। বিতস্তি,  
অর্দ্ধহস্ত বা বিগৎ ॥ ২।৩ ॥

(১৪ পা) “এই মত অমৃতভাব.....  
পড়ে নিরস্তর ॥” এই ৪র্থ পয়ারের  
ভাবার্থ—বিলাপ, দুঃখজনিত বাক্য।  
রায়ের, রামানন্দ রায়ের। নাটক, জগ-  
ন্নাথবল্লভ নাটক। রামানন্দ রায় রুত  
শ্রীজগন্নাথবল্লভ নাটকের তৃতীয়াক্ষে  
শ্রীরাধার প্রতি শশিমুখীর বাক্য শ্রবণ  
করিয়া মহাপ্রভু “কাঁহা করো কাঁহা পাও”  
ইত্যাদি বাক্য বলিয়াছিলেন। নচেৎ  
পর শ্লোকোক্তির অপর সম্ভবিত দেখা  
যায় না। শ্রীরাধাকে শশিমুখী বলিলেন,—

“হীনং পতিমপি ভজতে রমণী ।  
কেশরিণং কিমু বলয়তি হরিণী ॥  
রাধিকে পরিহর মাধবরাগমরে ॥”

পতি, হীন হইলেও রমণী তাহাকে  
ভজনা করে, হরিণী কি সিংহের শৌর্য-  
বীৰ্য্য দেখিয়া তাহাতে অনুরক্তা হয় p হে  
রাধিকে, মাধবের প্রতি অনুরাগ পরিত্যাগ  
কর। এ সম্বন্ধে লোচন দাসের পদ যথা—

“রাধিকা হে, তুঁহ বৃথা কর অহুতাপ।  
শ্রামক নাম ছোড়ি, আন ভজ সুন্দরি,  
হামে করহ ধনি মাপ ॥ ৫ ॥  
তুয়া গুণ গাঁথি হাস, নাগর নিয়রে  
কহলি বিবিধ পরকার ।  
শুনইতে কর হাস, নিঠুর সোই নাগর,  
না বুঝল পিরতি বেভার ॥  
শ্রাম গৌয়ার, হাম বুঝল রে সখি,  
শুন তুহঁ বচন সঠায় ।  
তুহঁ বর নাগরী, রূপে গুণে আগোরি,  
হাগাওবি আপনার নাম ॥  
অঙ্গন সঙ্গুণ, হবয় তহঁ অঙ্গন,  
সরল হবয় নহ কান ।  
সুজন তুহঁ রাই, কুজন সোই নাগর  
ভাকর প্রেম গরল সমান ॥  
বহ উতয়োল, না হই বর নাগরি,  
সহজে সহজে লেহ কাঙ্গ ।  
লোচন বচন, শুনহ বরমোহিনী,  
মিলব নাগররাজ ॥  
আর মঝু বাণী শুনহ বর রাই ।  
মাধবরাগ পরিহর ঘর যাই ॥ ৫ ॥  
তুহঁ বর সুন্দরী অধিলজগতসার ।  
কুল-নীল-ধৈরয়-ধরমে অপার ॥  
পতিবরতাক এমত নহ রীত ।  
নিজপতি ছোড়কে না কুৰু অহুচিত ॥  
অকৃতি পতি যদি হয় গুণহীন ।  
ওবু কুলকামিনী তাক অধীন ॥  
কেশরী অলখি না ভুলত হরিণী ।  
সুশীতল চাঁদ না ভজত নলিনী ॥

কুলবণিতাগণ এমত বেষ্টার ।  
পরপুরুষাধিগমন হুরাচার ॥  
এত শুনি নাগরী হওল উদাস ।  
আশ্বাস করতঃ দীন লোচনদাস ॥”

রায়ের এই গীত শ্রবণ করতঃ মহাপ্রভু  
উদাস হওতঃ “প্রেমচ্ছেদ” এই শ্লোক  
পুনঃ পুনঃ পাঠ করিতে লাগিলেন ॥ ৪ ॥

( ১৪ পা ) “প্রেমচ্ছেদরুজ ইতি ।”  
এই দ্বিতীয় শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে  
প্রকাশ আছে । গ্রন্থকার “উপজিলে  
প্রেমাকুব” ইত্যাদি পয়ারে এই শ্লোকের  
অর্থ করিবেন । ইহার অর্থ প্রকাশক  
লোচনদাসের একটি পদ আছে যথা—

সখি হে কি কহব সে সব হুখ ।  
আমার অন্তর, হম অর অর,  
বিদরিয়া যায় বুক ॥ ৩ ॥  
প্রেমের বেদন, না জানে কখন,  
নিদয় নিঠুর হরি ।  
কুলিণ সমান, তাহার পরাণ,  
বধিতে অবলা নারী ॥  
প্রেম হুরাচার, না করে বিচার,  
স্থানস্থান নাহি জানে ।  
সে শঠ লম্পট, কুটিল কপট,  
নিশি দিশি পড়ে মনে ॥  
হাম কুলবতী, নবীনা যুবতী,  
কাহুর পিরিতি কাল ।  
তাহাতে মদন, হইয়ে দাক্ষণ,  
হবয়ে হানয়ে শেল ॥  
আনের বেদন, আন নাহি জানে,  
ভনশো পরাণ সখি ।  
মোর মনোহুখ, তুমি নাহি দেখ,  
আন জনে কাঁহা লখি ॥  
কি মোষ ভোমার, পরাণ আমার,  
সেহ মোর বশ নয় ।

কাহু বিরহেতে, বলিলে যাইতে,  
তথাপি প্রাণ না যায় ॥  
নারীর যৌবন, দিন দুই তিন,  
যেন পদ্মপত্রের জল ।  
বিধি মোরে বাম, না হেরিল ঞ্চাম,  
আমার করম ফল ॥  
সখীর সদন, করি বিলপন,  
সঙ্গলনয়ন ধনী ।  
হেরিয়া লোচন, আশ্বাস বচন,  
কহে যুড়ি দুই পাণি ॥

দ্বিতীয় শ্লোকের ভাবার্থ পর পয়ারে  
বলিতেছেন ॥ ২ ॥

( ১৪ ) “উপজিলে প্রেমাকুব…………  
না রহে পরাণ ॥” এই ৫ম পয়ারের  
ভাবার্থ—শ্রীমহাপ্রভু উক্ত “প্রেমচ্ছেদ-  
রুজঃ” এই শ্লোকের অর্থ বলিতেছেন ।  
“প্রেমচ্ছেদরুজোঃবগচ্ছতি হরিণায়ং ইহার  
অর্থ করিতেছেন, “উপজিলে” ইতি ।  
প্রেমের অন্তর উৎপন্ন হইলে যে সুখ  
এবং উৎপন্নপ্রেম ভঙ্গ হইলে যে দুঃখ-  
পুর অর্থাৎ দুঃখরাশি হয়, সাবধান  
হেতু শ্রীকৃষ্ণ তাহা ( দুঃখানুভব ) পান  
করেন না । পান শব্দে ইহাই বোধিত  
হইতেছে, অনুভব দূরের কথা তৎসম্বন্ধে  
একেবারেই অজ্ঞাত । এখানে “অব-  
গচ্ছতি” এই ক্রিয়ার অর্থ “করে পান”  
অর্থাৎ অবগত হওয়া । যদি বল, শ্রীকৃষ্ণ  
নায়কশ্রেষ্ঠ রসিকশেখর, তিনি প্রেম-  
ভঙ্গের দুঃখ জানেন না কিরূপে ?  
ইহাতে বলিতেছেন, “বাহিরে” ইতি ।  
সাবধান, বড় নিপুণ । শ্রীকৃষ্ণকে রসিক-  
শেখর দেখিতে বটে, কিন্তু তিনি শঠ

বলিয়া প্রেমীভঙ্গের দুঃখ জানেন না।  
শঠের লক্ষণ, তথাহি উজ্জ্বলে—  
“প্রিয়ং বন্ধি পুরোহস্তত্র বিপ্রিয়ং কুরুতে ভ্রমম্।  
নিগূঢ়মপরাধঞ্চ শঠোহয়ং কথিতো বৃথৈঃ ॥”

যিনি সম্মুখে প্রিয়কার্য্য করেন,  
পরোক্ষে অপ্রিয়কার্য্য করেন এবং গুপ্ত  
অপরাধ করেন, পণ্ডিতেরা তাহাকে শঠ  
বলেন। শঠতা নায়কের একটি গুণ।  
রসপুষ্টির জন্য শ্রীকৃষ্ণ শঠতা করিতেন;  
বাস্তবিক তিনি শঠ নহেন। এ সম্বন্ধে  
ভূরি ভূরি প্রমাণ দৃষ্ট হয়। কেহ বলেন,  
প্রেম, সমুদ্রস্বরূপ নির্দেহাদি সঞ্চারি-  
ভাবগণ তাহার তরঙ্গস্বরূপ। সমুদ্র  
হইতে যেমন তরঙ্গরাশি উদ্ভূত হইয়া  
সমুদ্রকে বর্দ্ধিত করে, পশ্চাৎ তাহাতে  
মিশিয়া তৎস্বরূপ হইয়া যায়; তদ্রূপ  
প্রেমসমুদ্র হইতে নির্দেহাদি সঞ্চারি-  
ভাব উদ্ভূত হইয়া প্রেমকে বর্দ্ধিত করে  
এবং তাহাতে মিশিয়া তৎস্বরূপ হইয়া  
যায়। এই স্থানে ঈর্ষাভাবের উচ্চাতি  
হইল। ত্রয়প্রিংশৎ ভাবের মধ্যে না  
থাকিলেও অমর্মে ঈর্ষার অন্তর্ভাব করিয়া-  
ছেন। যদি বল, যদি এত দুঃখ তবে  
কেন প্রেম করিয়াছিলে? ইহাতে বলি-  
তেছেন, “হা হা বিদেঃ কা গতিঃ।”  
অর্থাৎ “নাথি হে, না বুঝিয়ে” ইতি।  
বিধান, বিধি। অর্থাৎ বিধাতা কাহার  
যে কি করেন, তাহা বুঝা যায় না। যে  
হেতু “সুখ লাগি” ইতি। সুখ, হইবে  
বলিয়া শ্রীকৃষ্ণ প্রেম করিলাম, কিন্তু  
বিধাতার চক্রে দুঃখ হইল। প্রেম  
করিলে যে দুঃখ হয় তাহা জানি না।

এ স্থানে বিষাদের উৎপত্তি। অভীষ্ট  
বস্তুর অপ্রাপ্তি, আরম্ভ কার্যের অসিদ্ধি,  
বিপদ ও অপরাধাদি জনিত অনুতাপকে  
বিষাদ বলে। উপায় ও মহায়ের অনু-  
সন্ধান, চিন্তা, রোদন বিলাপ, দীর্ঘনিশ্বাস,  
বৈবর্ণ্য এবং মুখশোষাদি তাহার ক্রিয়া।  
এ স্থানে অভীষ্টবস্তুর অপ্রাপ্তি হেতু অনু-  
তাপ। বিলাপ অনুভাব। এইরূপমর্কত্র  
জানিবেন ॥ ৫ ॥

(১৪ পা) “কুটিল প্রেমাঃ……নারি  
উকাশিতে।” এই ৬ষ্ঠ পরায়ের ভাবার্থ।  
যদি বল, নিষ্কপতি বা অশ পুরুষ থাকিতে,  
শঠ পুরুষ শ্রীকৃষ্ণে কেন প্রেম করিয়া-  
ছিলে? তাহাতে বলিতেছেন, “ন চ  
প্রেম বা স্থানাস্থানমবৈতি।” অর্থাৎ  
“কুটিল প্রেমা” ইতি। অগেয়ান, অজ্ঞান।  
উকাশিতে শব্দের অর্থ কেহ বলেন,  
প্রকাশ করিতে। কেহ বলেন, খুলিতে  
বা ছেদন করিতে অর্থাৎ গুণরূপ দড়ির  
বন্ধন ছেদন করিতে। অজ্ঞান কুটিল  
প্রেম যোগ্য বা অযোগ্য নায়ক জানেন না  
এবং ভাল-মন্দ কিছুই বিচার করে না।  
অতএব অজ্ঞানবশতঃ শ্রীকৃষ্ণের শঠতা  
না জানিয়াই তাহাতে প্রেম হইয়াছিল।  
যদি বল, অজ্ঞানবশতঃ যে কর্ম করিয়া-  
ছিলে, এক্ষণে জ্ঞান হইয়াছে। অতএব  
শ্রীকৃষ্ণের প্রতি সেই প্রেম ত্যাগ কর  
না? তাহাতে বলিতেছেন, তাহা হইতে  
পারে না; কেন না, “ক্রুর শঠের” ইতি।  
শঠের গুণডোরে আঁসি হাতে গলে বন্ধ  
আছি, ত্যাগের ইচ্ছা থাকিলেও বন্ধন  
হেতু উহা ত্যাগ করিতে পারিতেছি না।



যত ত্যাগ করিতে ইচ্ছা করি, গুণডোর  
তত আমায় বন্ধন করিতেছে ॥ ৬ ॥

(১৪ পা.) “যে মদন.....না লয়  
জীবন ॥” এই ৭ম পয়ারের ভাবার্থ।  
একে প্রেমবিচ্ছেদ হেতু দুঃখভোগ করি-  
তেছি, তাহাতে আবার এ সময় মদন দুঃখ  
দিতেছে, এই অভিপ্রায়ে বলিতেছেন,  
“নাপি মদনো” অর্থাৎ “যে মদন” ইতি।  
তনুহীন, শরীরবিহীন। পরবীণ, নিপুণ।  
পাঁচবাণ—সম্মোহন, উন্মাদন, শোষণ,  
তাপন ও স্তম্বন। সঙ্কে, সঙ্কান করে।  
মদন পঞ্চবাণ দ্বারা বিরহীকে বিদ্ধ  
করতঃ একেবারে জীবন না লইয়া অর্ধ-  
মৃতের স্থায় দুঃখ দেয়। যদি বল, মদন  
তোমায় যদি দুঃখ দেয়, তবে তাহার  
প্রতিকার কর না কেন? ইহাতে  
বলিতেছেন, “তনুহীন” অর্থাৎ মদনের  
যদি শরীর থাকিত তবে প্রতিকার করি-  
তাম অর্থাৎ প্রতিহার দিতাম ॥ ৭ ॥

(১৪ পা.) “অন্যের যে দুঃখ...দৈর্ঘ্য  
করিবার ॥” এই ৮ম পয়ারের ভাবার্থ।  
যদি বল, শ্রীকৃষ্ণে যে প্রেম করিয়াছ,  
তাহাও ত্যাগ করিতে পারিবে না এবং  
মদনকেও প্রতিশোধ যখন দিতে পারিবে  
না, তখন দৈর্ঘ্যধারণ করাই কর্তব্য।  
ইহাতে বলিতেছেন, “অন্যো বেদ ন  
চান্যদুঃখমখিলং” অর্থাৎ “অন্যের যে  
দুঃখ মনে” ইত্যাদি। অন্য জন কাঁহা  
লিখি, অন্য জনের কথা কি বলিব।  
একের মনের দুঃখ অন্যের অনুভবের  
বিষয় হয় না। শ্রীকৃষ্ণ-বিরহ জন্য  
আমার মনের দুঃখ যে কি পরিমাণ

হইয়াছে, তাহা না জানিয়া দৈর্ঘ্য ধারণ  
করিতে বলিতেছ বটে, কিন্তু তাহা ধরা  
যায় না। এরূপ দুঃখ তোমার হইলে  
ভুগিও কখন দৈর্ঘ্য ধরিতে পারিতে না  
বা আমাকে দৈর্ঘ্য ধরিতে বলিতে না।  
যাহারা আমার দুঃখে দুঃখিনী বলিয়া  
থাকে এবং সর্বদা আমার নিকটে থাকে,  
সেই প্রিয় সখীরাই যখন আমার দুঃখ  
না জানিয়া দৈর্ঘ্যধারণ করিতে বলি-  
তেছে, তখন অন্যে যে বলিবে তাহাতে  
আর আশ্চর্য্য কি? অন্যে, যাহারা প্রিয়-  
সখী নহে বা যাহাদের অপ্রাকৃত প্রেম  
হয় নাই। প্রাকৃত প্রেমের উৎকর্ষতাতে  
যখন দৈর্ঘ্য চলে না, তখন অপ্রাকৃত  
প্রেম সম্বন্ধে বক্তব্য কি? ॥ ৮ ॥

(১৫ পা.) “কৃষ্ণকৃপা.....জীবে  
কোনজন ॥” এই ৯ম পয়ারের ভাবার্থ,  
যদি বল, শ্রীকৃষ্ণ দয়ার সাগর, তিনি  
অবশ্যই একদিন তোমায় দয়া করতঃ  
তোমার দুঃখ বিনাশ করিবেন। অত-  
এব তদাশায় জীবন ধারণ কর।  
ইহাতে বলিতেছেন, “সখি তোর” ইতি।  
হে সখি! তোর এ বচন বিফল। আমি  
ততদিন বাঁচিলে ত? যে দিন শ্রীকৃষ্ণ  
আমায় অঙ্গীকার করিবেন, সে দিন  
পর্য্যন্ত কে জীবিত থাকিবে? এই অভি-  
প্রায়ে বলিতেছেন, “নো জীবনং বাশ্রবং”  
অর্থাৎ জীবের “জীবন” ইতি। পদ্মপত্রে  
জলের ন্যায় জীবন চঞ্চল। জীবন  
থাকিলে, শ্রীকৃষ্ণ অঙ্গীকার করিবেন,  
কিন্তু জীবনের স্থিরতা প্রাতিই বিশ্বাস  
নাই, যে ততদিন থাকিবে ॥ ৯ ॥

( ১৫ পা ) “শতবৎসর..... দিন  
 দুই চারি ॥” এই ১০ম পর্ষাবের ভাবার্থ।  
 যদি বল, শতবৎসর পর্য্যন্ত এখনও জীবনা-  
 স্তের সময় আছে, অতএব কিছুদিন  
 পরেই শ্রীকৃষ্ণ তোমাকে অঙ্গীকার করি-  
 বেন। ইহাতে বলিতেছেন, “দ্বিতীয়েণ্যেব  
 দিনানি যৌবনসিদ্ধং” অর্থাৎ “নারীর”  
 ইতি। মনোহারী যৌবন না থাকিলে,  
 শ্রীকৃষ্ণ আর অঙ্গীকার করিবেন না  
 অর্থাৎ মনুষ্যজীবন শতবৎসর স্থায়ি  
 হইলেও, কৃষ্ণসুখ হেতু যৌবন অল্পদিন  
 স্থায়ী অর্থাৎ আমার যৌবনের পর শ্রীকৃষ্ণ  
 আসিলে, কি দিয়া তাঁহার সেবাসুখ  
 সম্পাদন করিব ॥ ১০ ॥

( ১৫ পা ) “অগ্নি যেন নিজ.....  
 সমুদ্রেতে ডারে ॥” এই ১১শ পর্ষারের  
 ভাবার্থ। যদি বল, শ্রীকৃষ্ণ কিরূপে পর-  
 নারী বধ করেন। ইহাতে বলিতে-  
 ছেন, “অগ্নি যেন” ইতি। নিজধাম,  
 নিজরূপ। অভিরাম, মনোহর। ডারে,  
 ডুাইয়া দেন। অগ্নি যেমন নিজের  
 মনোহর-রূপ দ্বারা পতঙ্গকে আকর্ষণ  
 করতঃ তাহার প্রাণবিনাশ করে, তদ্রূপ  
 শ্রীকৃষ্ণ নিজগুণ দ্বারা নারীগণকে আকর্ষণ  
 করতঃ বধ করে। দুঃখ সমুদ্রে ক্ষেপণই  
 তাঁর নারীবধে সাবধানতা ॥ ১১ ॥

( ১৫ পা ) “এতেক বিলাপ.....  
 শ্লোক কৈল পাঠ ॥” এই ২২শ পর্ষারের  
 ভাবার্থ। ঐন্দ্রকার মহাপ্রভুর পর শ্লোক-  
 বলিবার প্রস্তাব করিতেছেন, “এতেক”  
 ইতি। বিলাপ, দুঃখজনিত বাক্য। বিষাদ,  
 অনুতাপ। উবারিয়া, খুলিয়া ॥ ১২ ॥

( ১৫ পা ) “শ্রীকৃষ্ণরূপেতি ॥” এই  
 তৃতীয় শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে  
 প্রকাশ আছে। ঐন্দ্রকারও ইহার অর্থ  
 পর পর্ষারে করিতেছেন। বিষাদভাবে  
 মহাপ্রভু যে শ্লোক বলিয়াছেন, তাহা  
 এই শ্লোক। বিষাদভাবের লক্ষণ, যথা  
 রসাম্মতগিন্মতে—

“ইষ্টানবাশ্চি প্রারক কার্যাসিক্তি বিপত্তিতঃ ।  
 অপরাধাদিতোহপি স্যান্নুতাপো বিষন্নতা ॥  
 অত্রোপায়সহায়ানুশক্তি চিন্তা চ রোদনম্ ।  
 বিলাপখাসবৈবর্ণ্যমুখশোষণয়োহপি চ ॥”

ইষ্টের অপাশ্চি, প্রারককার্যের  
 অসিক্তি, বিপদ ও অপরাধ-বশতঃ অনু-  
 তাপ ও বিষন্নতা তাহাকে বিষাদ বলে।  
 ইহাতে উপায়, সহায়, অনুসন্ধান, চিন্তা,  
 বিলাপ, শ্বাস, বৈবর্ণ্য, ও মুখশুকাদি  
 হইয়া থাকে ॥ ৩ ॥

( ১৫ পা ) “বংশীগানাম্মতধাম.....  
 সকল বিফল ॥” এই ১৩শ পর্ষারের  
 ভাবার্থ। মহাপ্রভুর কথিত শ্লোকের  
 অর্থ করিতে শ্রীকৃষ্ণের রূপাদি পাঁচটির  
 সেবা ব্যতীত নিজের চক্ষুরাদি পাঁচটি  
 ইন্দ্রিয়ের ব্যর্থতা বলিবার জন্য প্রথমে  
 চক্ষুর ব্যর্থতা বলিতেছেন, “বংশী” ইতি।  
 বংশী-গানাম্মত-ধাম, বংশীর গানরূপ  
 অমৃতের বাসস্থান। লাবণ্যাম্মতজন্ম-  
 স্থান, সৌন্দর্য্যরূপ অমৃতের জন্মস্থান  
 অর্থাৎ লোকে যে কিছু সৌন্দর্য্য আছে,  
 তাহা সেই শ্রীমুখচন্দ্রের ছটার কিঞ্চিৎ  
 আভাসমাত্র! কেহ বলেন, লাবণ্য এই  
 শব্দটি লবণ শব্দ হইতে নিস্পন্ন হইয়াছে।  
 যেমন লবণাস্বতে চাক্টিক্য ছটা থাকে,

তদ্রূপ রূপের চাক্চিক্যকে লাভণ্য বলে । পদ্ম, পতিত হউক । যে নয়ন শ্রীকৃষ্ণমুখ দর্শন করে নাই, তাহা রুখা । শ্লোকোক্ত শেন চরঃদ্বয়ের অর্থ করিতেছেন, “নখি হে” ইতি । শ্রীকৃষ্ণদর্শনাদি ব্যতীত আমার দেহাদি সকলই রুখা । এখানে “সকল” এই পদে শ্লোকোক্ত “অহানি” পদেবও অর্থ চইয়াছে, অর্থাৎ দিবস সকলও নর্থ ॥ ১৩ ॥

( ১৫ পা ) “কৃষ্ণের মধুর.....ভঙ্গার সমান ॥” এই ১৪শ ও ১৫শ পয়ারদ্বয়ের ভাবার্থ । কর্ণের ব্যর্থতা বলিতেছেন, “কৃষ্ণেব” ইতি । তরঙ্গিনী, নদী । শ্রবণে, কর্ণে । কানা কড়ির ছিদ্র যেমন কোন কার্যকর হয় না, প্রত্যুত লোকে তাহাকে অগ্রাহ করে, তাহার বিনিময়ে দ্রব্যাদি পাওয়া যায় না ; তদ্রূপ অমৃত-নদীদেহরূপ শ্রীকৃষ্ণের মধুর বাক্য যে কর্ণে প্রবেশ করে নাই, তাহা অকিঞ্চিৎকর । নাসিকার ব্যর্থতা দেখাইতেছেন, “মুগ-মদ” ইতি । যেই, কৃষ্ণের অঙ্গ-গন্ধ । তাব, মুগনাভি ও নীলপদ্মের সম্মিলন-জনিত সুগন্ধ । যাব, যে নাসার । ভঙ্গা, লৌহাদি জারণ নিমিত্ত চর্শ্ব নির্মিত যন্ত্রবিশেষ, জাঁতা ইতি ভাষা । ভঙ্গার শ্বাদি থাকিলেও যেমন কোন সুগন্ধ গ্রহণ করিতে উহা সমর্থ হয় না, কেবল ভঙ্গারশিতে ব্যাণ্ড হয় এবং নিরন্তর অগ্নিতাপ গ্রহণ করে ; তদ্রূপ যে নাসা কৃষ্ণাঙ্গ-গন্ধ গ্রহণ না করিয়া প্রাকৃত গন্ধে মুগ্ধ হয়, সে কেবল দুর্দাসনারূপ ভঙ্গ-রাশিতে পরিব্যাণ্ড হয় এবং সর্ষদা

আধ্যাত্মিকাদি তাপত্রয়ে দহমান হয় । এইহেতু বলিলেন, “তার নাসা ভঙ্গার সমান ॥” ১৪। ১৫ ॥

( ১৫ পা ) “কৃষ্ণের অপরামৃত..... লৌহ সম জানি ॥” এই ১৬শ ও ১৭শ পয়ারদ্বয়ের ভাবার্থ । জিহ্বার ব্যর্থতা বলিতেছেন, “কৃষ্ণের” ইতি । সুধামার স্বাদু বিনিম্বন, যে পর্যন্ত শ্রীকৃষ্ণের অপরামৃত, গুণ ও চরিত্রের আশ্বাদন না করে, সেই পর্যন্ত সুধামারের প্রশংসা করে, কিন্তু কৃষ্ণের অপরামৃত পান ও গুণ-চরিত্রের কীর্তন করিলে, তখন উহার নিকট সুধা হয় বলিয়া নির্দিত হয় । ভেক জিহ্বাসম, ভেক যেমন সুমধুর জলরাশিতে বাস করিয়াও তাহার জিহ্বা কর্মমুক্ত জল পান করে ; তদ্রূপ যে জিহ্বা কৃষ্ণের অপরামৃত পান না করিয়া কর্মম মদুশ প্রাকৃত রসের আশ্বাদন করে, তাহাই ভেক জিহ্বাসম । অথবা—ভেক জিহ্বা যেমন হরিগুণ কীর্তন না করিয়া স্বীয় শব্দ দ্বারা নিজশব্দ নর্পকে আস্থান করতঃ তাহার কবলে নিপতিত হইয়া প্রাণ হারায় ; তদ্রূপ যে জিহ্বা কৃষ্ণগুণ-চরিত্র কীর্তনে পরাঙ্মুখ হইয়া বিষয়বার্তা কীর্তন করতঃ কাল-নর্পকে আস্থান করিয়া তাহার কবলে পতিত হইয়া নিজজীবনে বঞ্চিত হয়, সে রসনা ভেক জিহ্বাসম । কেহ বলেন, ভেকের জিহ্বা না থাকায় তাহার সহিত উপমাই হইতে পারে না, তাহা নহে, ভেকের জিহ্বা আছে, কিন্তু তাহাতে কোন রস গ্রহণ করিতে পারে না ।

দ্বিগিত্ত্বিয়ার ব্যর্থতা বলিতেছেন, ‘কৃষ্ণ কর’ ইতি । করপদতল, করতল ও পদতল । যেন স্পর্শ মণি, শ্রীকৃষ্ণের হস্ত ও পদতল এমনিই স্পর্শিতল যে, যে ব্যক্তি তাগ স্পর্শ করিয়া স্পর্শিতল হয়, সে আবার অল্পকে স্পর্শিতল করে । অথবা, স্পর্শমণি যেমন লৌহকে সুবর্ণ কবে, তদ্রূপ কৃষ্ণাঙ্গস্পর্শে কুজার ছায় প্রাকৃত দেহও অপ্রাকৃত হয় । বা শ্রীকৃষ্ণ-কর-পদতল স্পর্শে তাপিত ব্যক্তিও স্পর্শিতল হয় । তার স্পর্শ, কৃষ্ণ-করপদতল স্পর্শ । গণি, গণনা করি । কর্মকারেরা কঠিন লৌহকে যেমন দক্ষ করতঃ হাতুড়ীর আঘাত করে ; তদ্রূপ বাহার কৃষ্ণকর-পদতল স্পর্শ নাই, তাহার সেই বপু মায়া কর্তৃক ত্রিতাপে দক্ষ হও তঃ কাম জ্যোতি-দির পদাঘাত প্রাপ্ত হয় । এই হেতু ‘সেই বপু লৌহমম জানি’ বলিলেন ॥ ১৬, ১৭ ॥

( ১৫ পা ) ‘কবি এত.....পড়ে এক শ্লোক ॥’ এই ১৮শ পয়ারের ভাবার্থ । মহাপ্রভুর কথিত পর শ্লোক বলিবার প্রস্তাব প্রকাশ করিতে গ্রন্থকার বলিতেছেন, ‘কবি এত’ ইতি । বিলপন, দুঃখ-জনিত বাক্য । দৈন্য, দুঃখ ত্রাস এবং অপরাধাদিতে আপনাকে নিরুষ্ণজ্ঞান । চাটু, হৃদয়ের অপটুতা, মলিনতা, চিন্তা, এবং অঙ্গের জড়তা দৈন্যের কার্য । নির্বেদ ; মহার্ক্তি, বিচ্ছেদ, ঈর্ষা এবং মদ্বিবেকাদি দ্বারা নিজের অবমাননা । অবসাদ, অবসন্নতা ॥ ১৮ ॥

( ১৬ পা ) ‘যদেতি ।’ এই ৪র্থ শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । গ্রন্থ-

কার পর পয়ারে ইহার অর্থ করিতে-ছেন । ‘পড়ে এক শ্লোক’ তাগ এই শ্লোক । মহাপ্রভু দৈন্যাদি ভাবে এই শ্লোক বলিয়াছেন ॥ ৪ ॥

( ১৬ পা ) ‘যে কালে.....কবির সকল ॥’ এই ১৯শ ও ২০শ পয়ারদ্বয়ের ভাবার্থ । ‘যদা যাতো দৈবাদিতা’ শ্লোকের অর্থ করিতেছেন, ‘যে কালে’ ইতি । যে কালে, জাগ্রদবস্থায় । স্বপনে, স্বপ্নাবস্থায় বা অকস্মাৎ প্রাদুর্ভাব হইয়া-ছিলেন । বংশীবদন বলাতে নবকৈশোরের অভিব্যক্তি সূচিত হইল । আনন্দ আর মদন মন হরণ করাতে শ্রীকৃষ্ণদর্শনের বাধা হইল । অতএব তাহারা বৈরী ( শত্রু ) । নেত্র ভরি, চক্ষু পূর্ণ করিয়া অর্থাৎ আশা নিরুত্তি করিয়া । মনঃ সংযোগেই বস্তু গ্রহণ হয়, কিন্তু মদন ও আনন্দ আসার মন হরণ করাতে নেত্র ভরিয়া শ্রীকৃষ্ণ দর্শন করিতে পারি নাই । শ্লোকোক্ত ‘পুনঃস্মৃতি’ চরণের অর্থ করিতেছেন, ‘পুনঃ বদি’ ইতি । ঘটা, দণ্ড । ক্ষণ, অষ্টাদশ নিমেষে এক কাষ্ঠা ত্রিশ কাষ্ঠায় এক কলা, ত্রিশ কলায় এক ক্ষণ । পল, দণ্ডের ষষ্টি ভাগের এক ভাগ । সকল, ক্ষণদণ্ডাদি । ‘কোন ক্ষণ’ এখানে কর্তৃপদ । শ্রীকৃষ্ণদর্শন-সময়কে বহু বহু করিয়া রাখিব অর্থাৎ এবার শ্রীকৃষ্ণ-দর্শন পাইলে মদন ও আনন্দকে দূরীভূত করিয়া তাঁহাকে আশানুরূপ দর্শন করিব ॥ ১৯, ২০ ॥

( ১৬ পা ) ‘ক্ষণে বাছ.....শ্লোক উচ্চারণ ॥’ এই ২১শ, ২২শ ও ২৩শ



“শ্লোক পড়ে ‘অনভূত’ তাহা এই  
শ্লোক ॥ ৬ ॥

(১৭ পা) ‘দূরে শুদ্ধপ্রেম……  
জানিহ নিশ্চয় ॥’ এই ২৬শ পয়ারের  
ভাবার্থ। মহাপ্রভু কথিত শ্লোকের অর্থ  
করিতেছেন, “দূরে” ইতি। শুদ্ধ, স্ব-  
সুখবাসনাশূন্য। কপট, স্ব-সুখবাসনা-  
বিশিষ্ট। কৃষ্ণপায়, শ্রীকৃষ্ণচরণে। শ্রীকৃষ্ণ-  
চরণে শুদ্ধ প্রেমগন্ধ দূরে থাকুক, কপট  
প্রেমবন্ধনও নাই। প্রেম যদি নাই,  
তবে ক্রন্দন কর কেন? ইহাতে বলি-  
তেছেন, “ক্রন্দামীত্যাদি।” অর্থাৎ “তবে  
যে” ইতি। সৌভাগ্যাতিশয় জানাইবার  
জন্য ক্রন্দন করি, প্রেম জন্য নহে ॥২৬॥

(১৭ পা) ‘যাতে বংশীধ্বনি……  
করিয়ে ধারণ ॥’ এই ২৭শ পয়ারের  
ভাবার্থ। কপট প্রেমবন্ধের অভাবের  
কারণ বলিতেছেন, “বংশীবিলাসীত্যাদি”  
অর্থাৎ “যাতে” ইতি। যাতে বংশীধ্বনি  
সুখ, যে মুখচন্দ্রের বংশীধ্বনিতে আমা-  
দের সুখ হয়। না দেখি, না দেখিয়া।  
অবলম্বন, বিষয়ালম্বন অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ।  
যে মুখচন্দ্রস্থিত বংশীর শব্দরূপ অমুতে  
আমাদের সুখ হয়, এরূপ শ্রীকৃষ্ণমুখ-  
চন্দ্রিমা না দেখিয়াও, যদি সেই মুখচন্দ্র  
প্রেমের বিষয় না হয়, অথচ নিজদেহে  
প্রীতি করি; তাহা হইলেই শ্রীকৃষ্ণে  
আমার কপট প্রেমবন্ধনের অভাবও হই-  
তেছে অর্থাৎ নিজ-সুখ নিমিত্ত যদি  
শ্রীকৃষ্ণে প্রেম করিতাম, তবে শ্রীকৃষ্ণে  
কপট প্রেমবন্ধন থাকিত, তাহাও যখন  
নাই, সুতরাং কপট প্রেমবন্ধনভাব

হইল। “নিজ দেহ” ইতি। নিজ-দেহে  
যে প্রীতি করি, তাহা কেবল অর্থাৎ কপট  
প্রেমশূন্য শুদ্ধকামের রীতি অনুযায়ী।  
কামভোগের নিমিত্ত যে প্রাণধারণ,  
তাহা কীটতুল্য অর্থাৎ কীটের ন্যায় ভেদ  
প্রাণধারণ করিতেছি ॥ ২৭ ॥

(১৭ পা) ‘কৃষ্ণপ্রেম…… মসি-  
বিন্দু ॥’ এই ২৮শ পয়ারের ভাবার্থ।  
শুদ্ধপ্রেম কি, তাহা বলিতেছেন, “কৃষ্ণ”  
ইতি। শুদ্ধ গঙ্গাজল, তৃণকর্দমাতিরহিত  
শরৎ-কালীয় নির্মল গঙ্গাজল। নির্মল  
গঙ্গাজল যেমন স্বাদু ও সংসারমোচক,  
তদ্রূপ স্ব-সুখবাসনারহিত নির্মল কৃষ্ণ-  
প্রেম স্বাদু ও সংসারমোচক। অশুদ্ধ  
গঙ্গাজল যেমন সংসারমোচক কিন্তু স্বাদু  
নহে, তদ্রূপ স্ব-সুখবাসনায়ুক্ত কৃষ্ণপ্রেম  
সংসারমোচক কিন্তু স্বাদু নহে। যদি  
বল, নির্মল প্রেমে স্ব-সুখবাসনা কিরূপে  
প্রকাশ পায়? ইহাতে বলিতেছেন,  
“নির্মল” ইতি। মসী, কালিমা। শুদ্ধ  
বস্ত্রে যেমন কালিমা-বিন্দু আপনাই  
প্রকাশ পায়, তদ্রূপ নির্মল প্রেমে বা  
অনুরাগে অন্য দাগ (স্ব-সুখবাসনারূপ-  
চিহ্ন) লুকায় না, উহা আপনাই প্রকাশ  
পায় ॥ ২৭ ॥

(১৭ পা) ‘শুদ্ধপ্রেম…… অন্তুত  
চরিত।’ এই ২৯শ পয়ারের ভাবার্থ।  
যদি বল, সেই শুদ্ধপ্রেমে যদি নিজসুখ  
নাই, তবে তাহাতে কি সুখ? ইহাতে  
বলিতেছেন, “শুদ্ধ” ইতি। শুদ্ধপ্রেম  
সমুদ্রতুল্য বলিয়া উহার সুখ কহিবার  
যোগ্য নহে। তথাপি সেই সিদ্ধর এক

বিন্দু পাইলে বাউলে ( বাতুল হইয়া )  
তাহার বলে, এবং তাহার এক বিন্দুতেই  
বাঁহুল জগৎ প্রাবিত করে অর্থাৎ জগতকে  
প্রোমে স্মৃখী করে। অতএব ইহা বলিলে,  
কে পাতিয়ায় ( বিশ্বাস করিবে ) অর্থাৎ  
শুদ্ধ-প্রোমের যে একবিন্দু লাভ করিয়াছে,  
সেই বিশ্বাস করিবে, অন্যের বিশ্বাস  
হইবে না ॥ ২৯ ॥

( ১৭ পা ) “এই মত.....একত্র  
মিলন ॥” এই ৩০৭ ও ৩১২ পয়ারদ্বয়ের  
ভাবার্থ। দিনে দিনে, প্রতিদিন।  
যদি বল, ঐরূপ প্রোমে বড়ই কষ্ট দেখি-  
তেছি। অতএব কষ্টজনক প্রোমে প্রয়ো-  
জন কি? ইহাতে বলিতেছেন, “বাহিরে”  
ইতি। বিষ-স্বালায় ন্যায় বাহিরে দুঃখ-  
নুভব হইলেও মনে মহা আনন্দ থাকায়  
কোনই কষ্ট নাই পরন্তু স্মৃখই হয়; যে  
হেতু স্মৃখ দুঃখ মনোমর্দন। যে প্রোমে  
বাহিরে দুঃখানুভব হয় এবং ভিতরে  
আনন্দানুভব হয়, তাহার আশ্বাদনের  
প্রকার দেখাইতেছেন, “তগু ইক্ষু” ইতি।  
তগু ইক্ষু চর্কণের স্বাদুতা বৃদ্ধির জন্য  
উষ্ণতা নিমিত্ত মুখদাহ হইলেও যেমন  
তগু ইক্ষু-চর্কণকারিগণের অপরিত্যক্ত  
এবং উপাদেয়; তদ্রূপ কৃষ্ণ-প্রোমানন্দ  
স্বাদুতানিকের হেতু বলিয়া বিষ-স্বালায়  
বিরহ থাকিলেও প্রেমিকগণের অপরি-  
ত্যক্ত এবং পরম উপাদেয়। ইহাই কৃষ্ণ-  
প্রোমের অদ্ভুত চরিত্র। এই প্রেম বীর  
মনে প্রকাশ পায়, সেই ব্যক্তিই ইহার  
বিষামৃতের একত্র কিরূপ মিলন এবং  
ইহার বিক্রম অর্থাৎ আশ্বাদন বুঝিতে

পারেন। অন্যে পারেন না বা বাক্য  
দ্বারা ইহা ব্যক্ত হন না। অথবা কৃষ্ণ-  
প্রোমের অদ্ভুত চরিত্র বলিয়া, দুঃখও স্মৃখ-  
রূপে অনুভাবিত হয় ॥ ৩০। ৩১ ॥

( ১৭ পা ) “ঐড়াভিরিতি।” এই  
মগুম শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। “সেই প্রোমা বীর মনে” এই  
পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক। বিষামৃত  
মিশ্রিত কৃষ্ণ-বিষয়ক প্রেম মর্কদা জাগ-  
রিত থাকে, একবারও নিদ্রিত হয় না  
অর্থাৎ ক্ষণকালও মন হইতে অপসারিত  
হয় না। বাচক শব্দের অভাব হেতু  
প্রোমের কথা বলাও যায় না, কেবল  
অনুভবই হইয়া থাকে। এই প্রোমের  
পথ শ্রীকৃষ্ণে অনুরাগ-বিশিষ্ট জনেরই  
গোচরীভূত হয়। প্রাক্ষ বা উত্তর দ্বারা  
গন্য কেহ ইহার পথ জানিতে পারেন  
না। কৃষ্ণবিচ্ছেদ উপস্থিত হইলে কণ্টক-  
বিন্দু ব্যথার তুল্য অনুযায়ী শক্তিবিন্দু  
ব্যথার ন্যায় এই প্রোমের জ্ঞান হয়।  
কৃষ্ণ-সংযোগ উপস্থিত হইলে, এই প্রেম  
অমৃত মাধুর্য্যের অহঙ্কার বিনাশ করে ॥৭॥

( ১৮ পা ) “যে কালে.....অশ্রুজলে ॥”  
এই ৩২২ ও ৩৩২ পয়ারদ্বয়ের ভাবার্থ  
সরল আছে। গ্রন্থকার মহাপ্রভুর শ্রী-  
কৃষ্ণ-বিষয়ক অপর বিরহদশা বলিতেছেন,  
“যে কালে” ইতি। শ্রীরাম, শ্রীবলরাম।  
মহাপ্রভু বলিতেছেন, “সকল” ইতি।  
পদ্মলোচন, জগন্নাথ। আনন্দের কি  
কহিব বলে, সে আনন্দের বল ( উচ্ছ্বাস )  
কি বলিব? গ্রন্থকার বলিতেছেন,  
“গরুড়ের” ইতি। গরুড়ের গর্ভধানে,

শ্রীজগন্নাথের সম্মুখস্থ নাটমন্দিরের পূর্ব-  
ভাগে গরুড়ের স্তম্ভ আছে, তরুপরি  
গরুড়ের মূর্ত্তি স্থাপিত আছে। সন্নিধানে,  
নিকটে। সেই স্থানে দণ্ডায়মান থাকিয়া  
মহাপ্রভু ষোল্লিখদিন জগন্নাথদেবকে দর্শন  
করিতেন। নিম্নখালে, ঐ স্তম্ভমূলে  
অদ্যাপিও একটি গর্ভ রহিয়াছে ॥৩২।৩৩॥

( ১৮ পা ) “তঁাহা হৈতে.....  
পড়িতে ॥” এই ৩৪৯, হইতে ৩৬৭ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। তঁাহা হৈতে,  
গরুড়স্তম্ভের নিকট হৈতে। পৃথিবী-  
লেখন, মাটী খোঁটা, এইটি চিন্তার কার্য।  
কুরুক্ষেত্রে শ্রীরাধার শ্রীকৃষ্ণমিলনান্ত-  
ভাবে মহাপ্রভু বলিতেছেন, “হা হা”  
ঠতি। হাহা শব্দ খেদবাক্য। অভী-  
ষ্টের অপ্রাপ্তি ও অনিষ্টের প্রাপ্তি জনিত  
বিচারকে চিন্তা বলে। শ্বাস, অধো-  
মুখতা, ভূমিলিখন, বৈবর্ণ্য, উন্মিত্তা,  
বিলাপ, উত্তাপ, ক্লান্ততা, কম্প ও দৈন্য  
প্রভৃতি তাহার অনুভাব। গ্রন্থকার  
মহাপ্রভুর পরশ্লোক বলিবার প্রস্তাব  
প্রকাশ করিতেছেন, “উঠিল” ইতি।  
ভাবাবেগ, ভাবের প্রাবল্য। উদ্বেগ,  
মনের কম্প। নিশ্বাস, চাপল্য স্তম্ভ,  
চিন্তা, অশ্রু, বৈবর্ণ্য ও ঘর্ম প্রভৃতি তাহার  
কার্য। এই উদ্বেগ প্রোষিত ভর্তৃকা  
নারিকার তৃতীয় অবস্থা। প্রোষিত  
ভর্তৃকা, বিদেশগতা স্বামী ॥৩৪-৩৬॥

( ১৮ পা ) “অমুনীতি” এই অষ্টম  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। নানাস্লোক, তন্মধ্যে এই  
শ্লোক। শ্রীরাধা বিরহাশ্রিতালার উদ্ভিয়া

হইয়া ক্ষণকালকেও বহুদিন বোধে  
অত্যন্ত দুঃখ বশতঃ যে প্রলাপ করিয়া-  
ছিলেন, গ্রন্থকর্ত্তা তাহাই বর্ণন পূর্ব্বক  
কহিতেছেন, “অমুনীতি” অর্থাৎ অহো-  
রাত্র দিনের মধ্যে যে ক্ষণ সকল আছে,  
তাহা কোটিকল্প বলিয়া বোধ হইতেছে,  
হায় ! তোমার দর্শন ব্যতীত আমি ইহা  
কিরাপে অতিবাহিত করিব, তাহার  
উপায় বল। যদি বল, তোমরা যদি  
অনন্তে তত্ত্ব হইয়াছ, তাহা হইলে তোমা-  
দের পতিগণ অশ্রবণ করিতেছে, তাহা-  
দের নিকট গমন কর। ইহাতে শ্রীরাধা  
কহিলেন, “হে অনাথবন্ধে” অর্থাৎ আর্জিদ  
পতি পুত্রে কি হইবে ? বংশীধ্বনি দ্বারা  
তুমি আমাদের পতি ছাড়াইয়া অনাথা-  
করিয়াছ। অতএব ত্যক্তপাতী অনাথা-  
গণ আমাদের সম্বন্ধে তুমিই একমাত্র  
বন্ধু। সেই দুঃখদ পতিগণকে আমরা  
ত্যাগ করিয়াছি, স্মৃতরাং দর্শন দাও।  
যদি বল, পতিসেবা শ্রীগণের ধর্ম্ম। সেই  
ধর্ম্ম কেন পরিত্যাগ করিবে। ইহাতে  
বলিতেছেন, “হে হরে” অর্থাৎ চিন্ত ও  
ইন্দ্রিয়হারি ! ইহা তোমার অযোগ্য  
বাক্য ; যেহেতু তুমিই আমাদের মন ও  
ইন্দ্রিয়গণকে হরণ করিয়াছ। অতএব  
ইহাতে তুমিই দোষী, তোমার একরূপ  
উপদেশ শোভা পায় না। যদি বল,  
তোমরা কামিনী, স্মৃতরাং চঞ্চলা। মোহ  
বশতঃ তোমরা ধর্ম্ম ত্যাগ করিতে পার,  
আমি কিরাপে ধর্ম্মত্যাগ করিব এবং মন  
হরণ করিয়াই বা কেন তোমাদের ধর্ম্ম  
ছাড়াইব। ইহাতে বলিতেছেন, “হে



করুণৈকসিদ্ধো” অর্থাৎ তুমি যদি আমাদের ধর্ম ত্যাগ না করাইয়া থাক এবং আমরা যদি নিজ ইচ্ছায় ধর্মত্যাগ করিয়া থাকি, তবে রূপাসিদ্ধ হেতু ধর্মত্যাগিনী আমাদের প্রতি অনুগ্রহ কর ॥ ৮ ॥

( ১৮ পা ) “তোমার.....উপায় ॥

এই ৩৭২ ও ৩৮২ পয়ারঘরের ভাবার্থ সরল । মহাপ্রভুর কথিত “অমুনি” শ্লোকের অর্থ করিতেছেন, “তোমার” ইতি । কাটন, অতিবাহিত করা । গ্রন্থকার প্রভুর পর শ্লোক বলিবার প্রস্তাব প্রকাশ করিতেছেন, “উঠিল” ইতি ॥ ৩৭।৩৮ ॥

( ১৮ পা ) “ত্বচ্ছৈশবমিতি ।” এই

নবম শ্লোকের শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “পুছেন উপায়” এই উপায় জিজ্ঞাসার এই শ্লোক । শ্রীরাধা উদ্বৃগ্নদশায় শ্রীকৃষ্ণের শৈশবাদি ( কৈশোরাদি ) বর্ণন করিলে গ্রন্থকর্তা তাহাই উল্লেখ করিতেছেন । যদি বল, “তোমার নেত্র চাপল্য তোমার স্থায় অস্থ কোন রমণীতে এরূপ বিফলতা দৃষ্ট হইতেছে না, তুমি সাধ্বী-শ্রেষ্ঠা, অতএব গম্ভীরা হও । এইরূপে সখীগণও তোমাকে বুঝাইতেছে ।” শ্রীকৃষ্ণের এরূপ পরিহাসবাক্যকে মনে স্মরণ করতঃ শ্রীকৃষ্ণের প্রতি উদ্বেগের সহিত যে প্রালাপ করিয়াছিলেন, লীলাশুক তাহাই বর্ণন পূর্বক করিতেছেন, মানকত্ব ও আকর্ষকত্বাদি গুণনিশিষ্ট মাধুর্য্য দ্বারা তোমার কৈশোর ও আমার চাপল্য ত্রিভুবনে আশ্চর্য্য জানিও । এই দুইটাই তোমার ও আমার জের । অথবা আমার চাপল্য তোমা কর্তৃক উৎপাদিত

হইয়াছে, ইহা তোমার বা স্বীয় হেতু আমার জানিবার যোগ্য । অন্যের হুঃখ অন্যে জানে না, এই ন্যায়ঃ বশতঃ সখীগণও আমার উদ্বেগ সম্যক জানে না, যে হেতু তুমি এইরূপ বলিতেছ । পুনরায় প্রোচ্ছলিত উদ্বেগে সর্দৈন্যে বলিতেছেন, নয়ন দ্বারা তোমার মুখপদ্ম দর্শন করিতে কি করিব ? যাহা করিলে দর্শন হয়, তুমি তাহার উপদেশ কর । যদি বল, আমার মুখপদ্ম না দেখিলে কি হইবে ? ইহাতে বলিতেছেন, তোমার দর্শন না হইলে, চক্ষুবিশিষ্ট জনের চক্ষু বিফল । তথাহি দানকেলি কৌমুদ্যাম্—

“ভবতু মাধবজল্পমশ্বতোঃ

শ্রবণয়োরলমশ্রবনির্মম ।

তমবিলোকয়তোরবিলোকনিঃ ।

সখি বিলোচনয়োগে কিলানয়োগে ॥”

শ্রীরাধা কহিলেন, হে সখি ! আমার শ্রবণদ্বয় মাধবের গুণানুবাদ শ্রবণ করে নাই, এই হেতু ইহাদের বধিরতাই ভাল, আমার চক্ষুদ্বয় তাঁহাকে দর্শন করে নাই, এ কারণ ইহাদের অন্ধত্বই ভাল । যদি বল, এক্ষণে আমাকে দেখিতে পাইতেছ না ; অতএব আমাকে কিরূপে দেখিবে ? ইহাতে বলিতেছেন, আমরা কুলবধু, আমাদের পক্ষে তোমার দর্শন দুর্লভ । এক্ষণে গোচারণাদি দ্বারা অবসর প্রাপ্ত হইয়াও যদি দেখা না দাও, তবে তুমিই নিষ্ঠুর । অথবা যদি বল, আমার ন্যায় অন্য কোন ব্যক্তিকে দর্শন কর না কেন ? ইহাতে বলিতেছেন, মুরলী-বিলাসি হেতু তাহা বিরল ॥ ৯ ॥

( ১৯ পা ) "তোমার.....সম্বোধন ।"  
 এই ৩৯ং, হইতে ও ৪১শ পয়ার পর্য্যন্ত  
 ভাবার্থ । "স্বৈচ্ছৈশ্বমিতি" শ্লোকের অর্থ  
 করিতেছেন, "তোমার" ইতি । মাধুরী,  
 মাধুর্য্য । দেহের' অনির্কচনীয় রূপকে  
 মাধুর্য্য বলে । বল, প্রভাব । গ্রন্থকার  
 মহাপ্রভুর পর শ্লোক বলিবার প্রস্তাব  
 প্রকাশ করিতেছেন, "নানাভাবের"  
 ইত্যাদি । তথাহি রসামৃত্তে,

"ইরূপমোর্ত্তিরমোর্ত্তী সন্ধিঃ স্যাভাবয়োমূতিঃ ॥"

সমান রূপ অথবা ভিন্নরূপ ভাবস্বয়ের  
 পরস্পর মিলনের নাম সন্ধি । সমান ভাব-  
 স্বয়ের সন্ধি, ভিন্ন ভাবস্বয়ের সন্ধি, এক  
 হেতুর সন্ধি ও অনেক হেতুর সন্ধি ভেদে  
 সন্ধি চারি প্রকার । তথাহি তত্রৈব—

"নবলভঃ তু ভাবানাং সমর্দঃ স্যাৎ পরস্পরম্ ॥"

ভাবসকলের পরস্পর সম্বন্ধের নাম  
 শাবল্য । তথাচ—

"কালান্ধমত্মমৌৎসুক্যমিষ্টেকান্তিস্পৃহাদিভিঃ ।  
 মুখশোষণা-চিন্তা-নিশ্বাসস্থিরতাদিকৃৎ ॥"

অভীষ্টবস্তুর দর্শনস্পৃহা ও প্রাপ্তি-  
 স্পৃহা নিমিত্ত কালবিলম্বের অসহিষ্ণু-  
 তাকে উৎসুক্য বলে । ইহাতে মুখ-  
 শোষ, ডরা, চিন্তা, দীর্ঘনিশ্বাস এবং স্থির-  
 তাদি হইয়া থাকে । তথাচ—

"রাগশ্বেবাদিত্তিক্তিত্তলাবৎ চাপলং ভবেৎ ।

তত্রাবিচার পার্থক্যবচ্ছন্দাচরণায়ঃ ॥"

রাগ ও শ্বেবাদি জনিত চিন্তের যে  
 লঘুতা তাহার ঈষৎ চপলতা । ইহাতে  
 অবিচার, নির্ভরবাক্য ও স্বচ্ছন্দচারিতা  
 প্রভৃতি হইয়া থাকে । তথাচ—

"স্বৈচ্ছৈশ্বাপরাধায়নোর্ত্তিত্যন্ত বীনতা ।

চাটুকস্মাৎ মানিন্য চিন্তানলভিমাদিকৃৎ ॥"

দুঃখ, ত্রাস ও অপরাধাদি হইতে যে  
 দৌর্ভল্য হয় তাহার নাম বৈদ্য । ইহাতে  
 চাটু, হৃদয়ের ক্ষুণ্ণতা, মলিনতা, চিন্তা ও  
 অন্ধের জড়তা হয় । তথাচ—

"অপরাধছক্কাদিজাতং চণ্ডমুগ্রতা ।

বধবন্ধশিরঃকম্প-ভৎ ননোভাডনাদিকৃৎ ॥"

অপরাধ, ও ছুরক্কাদিজনিত ক্রোধকে  
 উগ্রতা ( রোষ ) কহে । ইহাতে বধ,  
 বন্ধ, শিরঃকম্প, ভৎসন ও ভাডনাদি  
 হইয়া থাকে । তথাচ—

"অধিক্ষেপাপমানাদেঃ স্যাদমর্ষণহসহিষ্ণুতা ।"

তিরস্কার ও অপমানাদি জন্য  
 অসহিষ্ণুতার নাম অমর্ষ । ইহাতে অর্ষ,  
 শিরঃকম্পন, বিবর্ণতা, চিন্তা, উপায়া-  
 শ্বেষণ, আক্রোশ, বিমুখতা ও ভাডনা  
 প্রভৃতি হইয়া থাকে । তথাচ—

"উন্মাদো হৃদ্রমঃ শৌচানন্দাধিরহাদিধঃ ।"

অতিশয় আনন্দ, আপদ এবং বির-  
 হাদিজনিত হৃদ্রমকে উন্মাদ বলে ।  
 ইহাতে অটহাগ, নৃত্য, সঙ্গীত, ব্যর্থচেষ্টা,  
 প্রলাপ, ধাবন, ক্রীংকার এবং বিপরীত  
 ক্রিয়াদি হইয়া থাকে ! প্রেমোন্মাদ,  
 প্রেমপ্রভব । ভাবগণ, স্থায়ী ও ব্যক্তি-  
 চারী প্রভৃতি । অবসাদ, অবসন্নতা ।  
 গ্রহানিষ্ট ব্যক্তি যেমন গ্রহের ইচ্ছার  
 কার্য্য করে, তক্রূপ মহাপ্রভুও ভাবানিষ্ট  
 হইয়া ভাবের অনুরূপ কার্য্য করিতে-  
 ছেন ॥ ৩৯-৪১ ॥

( ১৯ পা ) "হে দেব ইতি ।" এই  
 দশম শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
 আছে । "মহাপ্রভুর সম্বোধনোক্তি এই  
 শ্লোক । অনন্তর জীর্বাধা গাজোখান

করতঃ চতুর্দিক অবলোকন করিয়া বলিলেন, হে গণি। নুপুরের শব্দ শ্রুত হইতেছে, কিন্তু ক্রুশকে দেখিতে পাওয়া যাইতেছে না। তবে কি এই কুঞ্জমধ্যে কোন রমণীর সহিত রমমাণ শঠ ক্রুশ রহিয়াছেন? পুনরায় উদ্ভাদ ভাবাবেশে, অন্য নারী কর্তৃক সন্তোষ চিরুজ্ঞ আগত শ্রীকৃষ্ণকে অগ্রে দর্শনকারিণি শ্রীরাধার তাহার প্রতি অমর্মভাবের উদয় হইয়াছিল। পুনরায় শ্রীকৃষ্ণের অন্যত্র গমন আশঙ্কা করিয়া, পশ্চাৎ তাপ বশতঃ ঐশুক্যের উদয়ে শ্রীরাধার সঙ্কিভাব উৎপন্ন হইল। অমর্ম ও ঐশুক্য ভাবকে আশ্রয় করিয়া শাবল্যভাব উদ্ভিত হইল। অমর্মের অনুগতা অশূয়া উগ্রতা ও অসহিষ্ণুভাব শ্রীরাধাতে প্রকাশ পাইয়াছিল। ঐশুক্যের অনুগা মতি, দৈন্য ও চাপল্যাভিভাবের উদয় হয়। অনন্তর উদ্ভাদের অনুগতা ভাবসঙ্কি ও ভাবশাবল্য প্রকাশ পায়। শ্রীরাধার প্রলাপবাক্যের গ্রন্থকার অনুবর্ণন করিতেছেন। শ্রীকৃষ্ণকে অন্য রমণী কর্তৃক সন্তুজ্ঞ জানিয়া অমর্ষোদয় বশতঃ স্বাভাবিক নিজ দীরাধীরমধ্যাত্ত গুণকে আশ্রয় করতঃ ক্রন্দনের সহিত বক্রোক্তি দ্বারা শ্রীরাধা শ্রীকৃষ্ণকে সন্বেধন করিতেছেন, “হে দেব” অর্থাৎ অন্য রমণীর সহিত ক্রীড়া কর বলিয়া তোমায় “দেব” বলিয়া সন্বেধন করিতেছি। অতএব সেই রমণীর নিকট গমন কর। দীরাধীর লক্ষণ যথা—

“দীরাধীর হু বক্রোক্ত্যা নবান্য বদতি প্রিয়ম্ ॥”

দীরাধীরা নায়িকা বাণেশ্বর সহিত বক্রোক্তি দ্বারা নায়ককে প্রিয় বলেন। সেই সময় অবজ্ঞাবশতঃ শ্রীকৃষ্ণের গমন অনুভব করিয়া ক্রুশদর্শনে ঐশুক্য হইয়া বলিতেছেন, “হে দরিত।” অর্থাৎ তুমি আমার প্রাণপ্রিয়; সুতরাং কেন আমাকে ত্যাগ করিতেছ? তুমি পুনরায় দর্শন দাও। বিনীতের ন্যায় শ্রীকৃষ্ণের আগমন জানিয়া অমর্মের অনুগা অশূয়ার উদয় বশতঃ শ্রীরাধা দীরমধ্যাত্ত গুণকে আশ্রয় করতঃ বক্রোক্তি দ্বারা সোল্লুঠ বচন বলিতেছেন, “হে ভুবনৈকবক্রো” অর্থাৎ ইহাতে তোমার আর কি দোষ, তুমি কেবল আমার ও সর্কগোপীগণের বন্ধু নহ, পরন্তু বেগুনাদাকৃষ্টভুবনের সমস্ত রমণীগণের বন্ধু। অতএব তাহাদের নিকট নিজ-প্রিয়সাধনে গমন কর। দীরাধার লক্ষণ যথা—

“দীরা তু বক্রি বক্রোক্ত্যা সোৎ

প্রাসং সাগসং প্রিয়ম্ ॥”

দীরা নায়িকা সাপরাধপ্রিয়কে বক্রোক্তি দ্বারা সোল্লুঠ বচন বলেন। পুনরায় শ্রীকৃষ্ণের গমনানুমান করতঃ ঐশুক্যানুগত মত্যাখ্য ভাবোদয় বশতঃ বলিতেছেন, “হে ক্রুশ” অর্থাৎ হে শ্রাম-সুন্দর, তুমি আমার চিত্ত আকর্ষণ করিয়াছ, আমার অভিমানে তোমার কি হইবে? অতএব আমাকে দর্শন দাও। “হে প্রিয়ে! আমি কৃষ্ণের বাহিরেই ছিলাম, কোথাও গমন করি নাই, আমার প্রতি প্রসন্ন হও।” এবম্বিধ অনুনয়কারি শ্রীকৃষ্ণের আগমন বোধ

করতঃ উগ্রভা ভাবোদয় বশতঃ অধীর-  
মধ্যাহ্ন গুণকে আশ্রয় করিয়া সরোষে  
বলিতেছেন, “হে চপল” অর্থাৎ গোপী-  
গণের কালসর্প। পরজীচোর। এখান  
হইতে গমন কর। অধীরার লক্ষণ যথা—  
“অধীরা পরবৈর্বাণৈর্নিরন্তেষুঃ ক্షা ॥”

অধীরা নামিকা রোষ প্রকাশ করতঃ  
কান্তকে নিষ্ঠুর বাক্য বলেন। পুনরায়  
শ্রীকৃষ্ণের গমন শঙ্কা করতঃ শ্রীরাধা  
বলিলেন, হায়! আমি অবজ্ঞা করাতে,  
শ্রীকৃষ্ণ গমন করিল, পুনরায় কি  
আগিবে না? এইরূপে শ্রীরাধার দৈন্য-  
ভাবের উদয়ে কাকু বাক্যে বলিতেছেন,  
“হে করুণৈকসিক্কা” অর্থাৎ যদিও আমি  
অপরাধিনী, তথাপি তুমি করুণাময় ও  
কোমল। অতএব তুমি আগাকে দর্শন  
দাও। “হে প্রিয়ে! রুধা অভিমান  
দ্বারা কেন আমাকে কষ্ট প্রদান করি-  
তেছ? প্রসন্ন হও” এরূপে অনুনয়কারি  
শ্রীকৃষ্ণের আগমন আশঙ্কা করতঃ অসম্মা-  
নুগা অবহিখাভাবোদয় বশতঃ ধীর-  
প্রগলভা গুণকে আশ্রয় করিয়া উদাসিন্যা  
বাক্যে বলিতেছেন, “হে নাথ” অর্থাৎ  
তুমি কি ব্রজবাসিগণকে রক্ষা কর নাই?  
কোন রমণী নষ্টবুদ্ধি হওতঃ তোমাকে  
সম্ভাষণ করে না? কিন্তু ব্রাহ্মণীগণ  
কর্তৃক মৌনব্রত গ্রহণে তোমার সম্ভাষণ  
করি নাই। অতএব আমার এই অপরাধ  
ক্ষমণীয়। ধীরপ্রগলভার লক্ষণ যথা—

“উদান্তে হ্রতে ধীর সাবহিখা চ সাধরা ॥”

ধীরপ্রগলভা দুই প্রকার, একা  
মানিনী অবস্থা প্রাপ্ত হইয়া সম্ভোগ

বিষয়ে উদাসিন্যা, দ্বিতীয়া অবহিখা  
(আকার সঙ্কোচন) ও আদরাষিতা।  
পুনরায় শ্রীকৃষ্ণের গমন শঙ্কা করিয়া শ্রী-  
রাধা কহিলেন, শ্রীকৃষ্ণ কি নিরন্ত হই-  
লেন? অথবা আর তিনি আগিবেন  
না? কোন কালে যদি তিনি রূপা পূর্কক  
পুনরায় দর্শন দেন, সেই কালে আমি  
নিজেই তাহাকে কষ্টে গ্রহণ করিব।  
চাপল্যোদয় তেতু সর্দেত্তে বলিতেছেন,  
“হে রমণ” অর্থাৎ সর্দদা তুমি আমাকে  
রমণ করিয়া থাক বলিয়া, তুমি রমণ।  
এক্ষণে তুমি আগমন করতঃ আগাকে  
রমণ কর। শ্রীকৃষ্ণের পুনরাগমন অনু-  
ভব করিয়া তিরস্কৃত আগম্বক অসম্মভাবে  
প্রবল স্নানভাবিক ঔৎসুক্য দ্বারা আক্রান্ত  
মনা হইয়া শ্রীরাধা শ্রীকৃষ্ণকে আলিঙ্গন  
করিতে বাহুযুগল প্রসার করিলেন, কিন্তু  
শ্রীকৃষ্ণকে প্রাপ্ত না হওয়াতে তাঁহার  
বাহুক্ষুর্ভি হইল। তখন তিনি ব্যাকুল্য  
হইয়া কহিলেন, “হে নয়নাভিরাম! কবে  
তুমি আমার নয়নগোচর হইবে? আকৃত  
অনুরাগদশায় ভক্তের সাধক শরীরেও  
সেই সেই ভাবের উদয় হয় ॥ ১০ ॥

(১৯ পা) “উন্মাদের.....সম্মান।”  
এই ৪২শ পয়ারের ভাবার্থ। মহাপ্রভু  
মানভরে সোল্লুগ্ঠন বচনাদি দ্বারা নানা-  
ভাবে “হে দেব” এই শ্লোক পাঠ করিয়া-  
ছিলেন, প্রমুদার সেই মানের এবং সোল্লুগ্ঠ-  
বচনাদির উৎপত্তির প্রকার দেখাইতে-  
ছেন, “উন্মাদের” ইতি। তথাহি উক্তুলে—

“সর্দাবহাসু সর্দত্র ভদ্রনস্বতরা সদা।

অতস্মিৎ স্তবতিভ্রান্তিকম্মাদ ইতি কীর্তিতঃ ॥”

সর্বত্র সকল অবস্থাতে সকল কালে  
ক্লমমনক্লতা প্রযুক্ত সে এ বস্তু নহে, এই  
বলিয়া যে জ্ঞাপ্তি তাহাকে উদ্ভাদ বলে।  
ইহাতে ইষ্টেষ্ম, নিষ্কাশ, নিমেষ ও বির-  
হাদি হয়। প্রণয়মান, প্রণয়োপমান বা  
প্রণয় ও মান। তত্রৈব—

“মানো নথানো বিক্লান্ত প্রণয়ঃ প্রোচাতে বৃথৈঃ।”

প্রিয়জননের সহিত আপনার অভেদ  
মনন হয়, এরূপ মানকে পণ্ডিতেরা প্রণয়  
বলে। মান যথা তত্রৈব—

“দেহন্তু তুষ্ণতা প্রাপ্ত্যা মাধুর্যং মানরমবন্।

যো ধারয়ত্যান্দিশ্যাংস মান ইতি কীর্ত্যতে ॥”

যে স্নেহ উৎকৃষ্টতা প্রাপ্তি হেতু নূতন  
মাধুর্যকে অনুভব করাইয়া কৌটিল্যকে  
ধারণ করার তাহাকে মান বলে।  
সোল্লুষ্ঠবচন, পরিহাসযুক্ত বাক্য। গর্ক  
যথা, রসায়ুতে—

“সৌভাগ্যরূপতারুণ্যগুণসর্কোক্তমাশ্রয়ৈঃ।

ইষ্টলাভাদিনা চানাহেলনং গর্ক নির্ঘাতে ॥”

সৌভাগ্য, রূপতারুণ্য, গুণ, সর্কো-  
ক্তম আশ্রয় ও ইষ্টবস্তু লাভাদি দ্বারা  
অন্যের অবজ্ঞাকে গর্ক কহে। ব্যাক-  
স্ততি যথা, কাব্যপ্রকাশে—

“ব্যাকস্ততিস্থখে নিন্দা স্ততিরী। কুটিরগুণা।”

স্ততিতে পর্য্যবসান যে নিন্দা, বা  
নিন্দাতে পর্য্যবসান যে স্ততি তাহাকে  
ব্যাকস্ততি বলে। উদ্ভাদদশায় শ্রীকৃষ্ণ  
শঙ্কুষ্ঠি হওয়ার্তে ভাবাবেশে অর্থাৎ যে  
সময়ে বেরূপ ভাবের উদয় হয়, তন্তুদ্ভাবা-  
বেশে প্রণয়মানের উদয় হয়, তন্তুদ্ভাবা-  
বেশে প্রণয়মানের উদয় হয়, তন্তুদ্ভাবা-  
সোল্লুষ্ঠ বচনাদি হয় ॥ ৪২ ॥

( ১৯ পা ) “তুমি দেব……করে

মান ॥” এই ৪৩শ ও ৪৪শ পয়ারদ্বয়ের  
ভাবার্থ। শ্লোকোক্ত “হে দেব” ইহার  
অর্থ করিতেছেন, “তুমি” ইতি। দেব  
অর্থাৎ ক্রীড়ার্ত। সেই ক্রীড়া দেখা-  
ইতেছেন, “ভুবনের” ইতি। অন্য রমণী  
সহ ক্রীড়া করিতে তথায় গমন কর,  
এখানে থাকিবার প্রয়োজন নাই।  
শ্লোকোক্ত “হে দয়িত” ইহার অর্থ করি-  
তেছেন, “তুমি মোর” ইতি। দয়িত,  
প্রিয়। আমাতে যে তোমার চিন্ত বাস  
করে অর্থাৎ তুমি যে আমাকে মনে কর,  
সে আমার ভাগ্য। অতএব সেই ভাগ্যে  
তুমি আগমন কর। অথবা আমাকে  
মনে করিয়া আমার সৌভাগ্য নিমিত্ত  
দর্শন দাও। শ্লোকোক্ত “হে ভুবনৈক-  
বন্ধো” ইহার অর্থ করিতেছেন, “ভুবনে”  
ইতি। কর সব সমাধান অর্থাৎ তুমি  
ভুবনের বন্ধু, একা আমার নয়। অত-  
এব তাহাদের নিকট গমন করতঃ নিজ  
প্রয়োজন সিদ্ধি কর। শ্লোকোক্ত “হে  
কৃষ্ণ” ইহার অর্থ করিতেছেন, “তুমি”  
ইতি। কৃষ্ণ অর্থাৎ চিন্তহর। “ঐছে”  
ইতি। আমার মানে প্রয়োজন নাই  
একবার দর্শন দাও ॥ ৪৩৪৪ ॥

( ১৯ পা ) “তোমার……বৈদধ্য-  
বিলান ॥” এই ৪৫শ ও ৪৬শ পয়ার  
দ্বয়ের ভাবার্থ। শ্লোকোক্ত “হে চপল”  
ইহার অর্থ করিতেছেন, “তোমার” ইতি।  
চঞ্চলমতিস্থ প্রযুক্ত তোমার একত্র স্থিতি  
না হওয়ার্তে তুমি অন্তর্ভূত গমন কর,  
ইহাতে তোমার কোষ নাই। অতএব  
তুমি গমন কর। শ্লোকোক্ত “হে কল্পৈক-

সিদ্ধো" ইহার অর্থ করিতেছেন, "তুমিত" ইতি । যদিও আমি অপরাধ করিয়াছি, তথাপি নিজকরণা ও কোমল স্বভাব বশতঃ দর্শন দাও । শ্লোকোক্ত "হে নাথ" ইহার অর্থ করিতেছেন, "তুমি" ইতি । ব্রজরক্ষার নিমিত্ত বহুকার্য্যে ব্যাপ্ত থাকায় তোমার আগমনের অবকাশ নাই । এখানে অমরীমানুগত আকার গোপন প্রকাশ পাইতেছে । শ্লোকের তাৎপর্য্যে দৃষ্টি করিবেন । ব্রাহ্মণী কতৃক মৌনব্রতে সন্তাষণ করি নাই । এই বাক্যে অব-  
হিখা প্রকাশ পাইল । শ্লোকোক্ত "হে রমণ" ইহার অর্থ করিতেছেন, "তুমি" ইতি । কলাবিলাসাদিতে যুক্ত চিত্তকে বিদম্ব বলে । আপনি বিদম্ব, অতএব আগমন করিয়া আমার সহিত রমণ করুন ॥ ৪৫৪৩ ॥

( ১৯ পা ) 'মোর বাক্য.....  
মুছিত ॥' এই ৪৭শ ও ৪৮শ পরায়ের স্বয়ের ভাবার্থ । শ্লোকোক্ত "হে নয়নাভিরাম ।" ইহার অর্থ করিতে অবশিষ্ট বাক্যের অর্থ করিবার জন্ত বলিতেছেন, "মোর" ইতি । শ্লোকোক্ত "হা হা" এই শেষ চরণের অর্থ করিতেছেন "হাহা পুনঃ" ইতি । গ্রন্থকার মহাপ্রভুর কথিত "মার স্বয়মিতি ।" পর-  
শ্লোক বলিবার প্রস্তাব প্রকাশ করিতে-  
ছেন, "স্তু" ইত্যাদি । যথা রসামৃত্তে—  
"বভো হর্ষভরাস্চর্চবিবাদামর্ষণস্তবঃ ।"

হর্ষ, ভয়, আশ্চর্য্য বিবাদ ও ক্রোধ  
হইতে স্তু উৎপন্ন হয়, ইহাতে বাক্যাদি-  
রাহিত্য, নিশ্চলতা ও অভাবাদি প্রকাশ  
পায় । কল্প যথা তদ্রৈব—

"বিভ্রাসামর্ষহর্ষাট্যৈবেপধ্বর্গাজ্জলোদ্যক্ণৎ ।"  
বিভ্রাস, 'ক্রোধ ও হর্ষাদি দ্বারা যে  
গাজ্জের চাকল্য, তাহার নাম কল্প ।  
"বেদো হর্ষভরক্রোধাদিভঃ ক্লেশকরভনোঃ ।"  
হর্ষ, ভয় ও ক্রোধাদিজনিত শরীরে  
আত্মতা করণকে প্রাশ্বেদ বলে ।

"বিবাদরোষভীতান্দেবৈবর্ণ্যং বর্ণবিক্রিয়া ।  
ভাবৈজ্ঞরত মালিন্যকার্য্যাণ্যঃ পরিকীৰ্ত্তিভাঃ ॥"  
বিবাদ, ক্রোধ ও ভয়াদি হইতে বর্ণ  
বিকারের নাম বৈবর্ণ্য, ইহাতে মলিনতা  
ও ক্লেশতা হয় । অশ্রু যথা তদ্রৈব—

"হর্ষরোষবিবাদাদৈয়রশ্রুনেত্রৈ জলোদগমঃ ।"  
হর্ষ, ক্রোধ ও বিবাদাদি দ্বারা বিনা  
প্রযত্নে নেত্রৈ যে জলোদগম হয়, তাহার  
নাম অশ্রু । হর্ষজনিত অশ্রুতে শীতলত্ব  
ও ক্রোধাদিজনিত অশ্রুতে উষ্ণত্ব সম্ভব  
হয় । স্বরভেদ যথা তদ্রৈব—

"বিবাদবিস্ময়ামর্ষহর্ষভীত্যানিস্তবন্ ।  
বৈবর্ণ্যং স্বরভেদঃ ভাদেবগদগদিকাদিক্ণৎ ॥"  
বিবাদ, বিস্ময়, ক্রোধ, আনন্দ ও  
ভয়াদি হইতে স্বরভেদ হয় । গদগদ  
বাক্যকে স্বরভেদ কহে ।

"রোমাঞ্চেহং কিলার্চ্য্যহর্ষোৎসাহভয়াদিভঃ ।  
রোমানভ্যাদগমস্তত্র গাজসম্পর্শনাদয়ঃ ॥"

আশ্চর্য্য দর্শন, হর্ষ, উৎসাহ ও ভয়াদি  
জন্য রোমাঞ্চ হয় । ইহাতে রোমসঙ্ক-  
লের উদ্গম ও গাজসম্পর্শাদি হইয়া  
থাকে । হাঁসে কান্দে ইত্যাদি উদ্ভাষন  
নামক অনুভাবের শীত ও ক্ষেপণ এই  
দুইটী অবস্থা বলা হইল । যাহা অনুভব  
করিয়া পরমানন্দে হৃদয় সুশীতল হয়,  
তাহার কিয়ার নাম শীত । ইহাতে

জুস্তা গীত, দীর্ঘনিশ্বাস, লোকানপেক্ষিতা, লালাশ্রাব ও হাস্য হয়। শ্রীহরিবিরহ সমুদ্ভিত হইলে কালক্ষেপণার্থ যে ক্রিয়া প্রকাশ হয়, তাহার নাম ক্ষেপণ। ইহাতে নৃত্য, বিলুপ্তি, চিৎকার, তনুমোটন, ছন্দার, অট্টহাস, ঘূর্ণা ও হিঙ্কা হয়। এক্ষণে হাস্য ও গান শীতানুভব এবং নৃত্য ও ক্রন্দন ক্ষেপণানুভব। অন্যান্য বিষয় রসামুতে দেখিবেন। পূর্বে সাতটি সাত্ত্বিক বলিয়া এক্ষণে “ভূমে পড়িয়া” ইহাতে অষ্টসাত্ত্বিকভাব মহাপ্রভুর শরীরে উদয় হওয়ায় সূদীপ্তসাত্ত্বিক বলা হইল। ইহা মহাভাব ব্যতীত অন্যত্র সম্ভব হয় না ॥ ৪৭।৪৮ ॥

(২০পা) “মূর্ছায়.....নিশ্চয়।” এই ৪৯৭ পয়ারের ভাবার্থ। মূর্ছায় সাক্ষাৎকার (শ্রীকৃষ্ণসাক্ষাৎ) পাইয়া ছন্দার করতঃ কহিলেন, এই আইলা মহাশয় (শ্রীকৃষ্ণ)। ইহা শ্রীরাধার ভাবে সখীন প্রতি উক্তি। “কৃষ্ণে” ইতি কৃষ্ণের মাদুরীর উদ্ভাদিনী শক্তি দ্বারা কৃষ্ণে প্রথমে নানা ভ্রম হইল, শ্লোক পাঠ করতঃ কৃষ্ণ বলিয়া নিশ্চয় করিলেন ॥৪৯॥

(২০ পা) “মারঃ স্বয়মিতি।” এই একাদশ শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “শ্লোক পড়ি” তাহা এই শ্লোক! ইহার অর্থ গ্রন্থকার পর পয়ারে করিতেছেন ॥ ১১ ॥

(২০ পা) “কিবা এই.....নেত্রানন্দ ॥” এই ৫০৭ পয়ারের ভাবার্থ। বিরহবিল্লবা শ্রীরাধা মুচ্ছিত অবস্থায় দূর হইতে অকস্মাৎ শ্রীকৃষ্ণকে দর্শন

করতঃ কন্দর্পভ্রমে ভয় বশতঃ বলিতে-ছেন, “মারঃ স্বয়ং নু” অর্থাৎ “কিবা এই সাক্ষাৎ কামা।” জগত্তরে মারে বলিয়া কন্দর্পের একটি নাম মার, সেই জগৎমারক কাম আমাকে মারিবার জন্ত কি আনিতেছে? পুনঃ মাদুর্য্য অনুভব করিয়া আশ্চর্য্যে বলিতেছেন, “মধুর-দ্যুতিগণ্ডলং নু” অর্থাৎ “কিবা দ্যুতিবিশ্ব মূর্ত্তিমান।” সেই কন্দর্প এরূপ মধুর নহে; তবে ইনি মধুর কান্তিমণ্ডল কি? পুনঃ আশ্চর্য্যে বলিতেছেন, “মাদুর্য্যামেব নু” অর্থাৎ “কি মাদুর্য্য স্বয়ং মূর্ত্তিমন্ত। কেবল কান্তিমণ্ডলে এত আশ্চর্য্যাতা নাই; অতএব ইনি কি মূর্ত্তিমান মাদুর্য্য? পুনঃ মন ও নয়নের অতিশয় তৃপ্তি হওয়াতে মস্তোমের সহিত কহিতেছেন; “মনোনয়নামৃতং নু” অর্থাৎ “কিবা মনোনেন্দ্রোৎসব।” কেবল মাদুর্য্যে মন প্রভৃতির তৃপ্তি হয় না, অতএব ইনি কি মন নয়নের অমৃত? পুনঃ অবয়ব অনুভব করিয়া কহিতেছেন, “বেগীমুজো নু” অর্থাৎ “কিবা প্রাণের বল্লভ।” অমৃতে করচরণাদি অবয়ব নাই। অতএব ইনি কি বেগীমুজ অর্থাৎ প্রবাসের পর সমাগত কান্ত? পুনঃ সুন্দররূপে অবলোকন করিয়া আনন্দের সহিত কহিতে-ছেন, “মমেত্যাদি” অর্থ “গত্য কৃষ্ণ আইলা নেত্রানন্দ।” কি আশ্চর্য্য ইনি যে আমার জীবনবল্লভ নবকিশোর শ্রীকৃষ্ণ আমার নয়নকে আনন্দ দিবার জন্য উদয় হইয়াছেন। হে সখিগণ! তোমরা দর্শন কর ॥ ৫০ ॥

( ২০ পা ) "গুরু নানা.....পরম আনন্দ" এই ৫১৭ ও ৫২৭ পয়ারদ্বয়ের ভাবার্থ। গ্রন্থকার অন্ত্যলীলার সূত্র বর্ণনায় যে প্রলাপাদি বর্ণন করিলেন, তদতিরিক্ত আরও প্রলাপাদি আছে, ইহা বলিতেছেন, "গুরু" ইতি। যে যে ভাব প্রভুকে যাহা করায়, তিনি তাহাই করেন, অর্থাৎ ভাবের অধীন হইয়া প্রলাপাদি দ্বারা শেষলীলায় কালযাপন করেন। সেই সকল ভাব দেখাইতেছেন, "নির্দেদ"—মনু্য, প্রণয় রোষ ॥ ৫১।৫২ ॥

( ২০ পা ) "পুরী.....ভাবোদয়।" এই ৫৩৭ ও ৫৪৭ পয়ারদ্বয়ের ভাবার্থ মরল। মুখ্য, প্রদান। পুরী, অর্থাৎ পরমানন্দপুরী মহাপ্রভুর গুরুবর্গের মধ্যে একজন বলিয়া প্রভুতে বাৎসল্য ভাব। মুখ্যরমানন্দ, মধুরভাব। "লীলাশুক" ইতি। লীলাশুক, বিশ্বমঙ্গল। বিশ্বমঙ্গল কৃষ্ণকর্ণামৃত রচনা করায় তাঁহার গুরু সোমগিরি তাঁহার লীলাশুক নাম রাখেন অর্থাৎ কৃষ্ণলীলা বর্ণনে শুক মদৃশ। কর্ণামৃতে তাহার নানা ভাবোদয় বর্ণিত আছে। সাধকশরীরে প্রেম পর্য্যন্তই শেষ সীমা, কিন্তু প্রেমপরিণাম স্নেহ মানাদি উদয় হয় না; তথাপি বিশ্বমঙ্গলে তাহা যখন উদয় হইয়াছে. তখন পরমেশ্বর মহাপ্রভুতে এই সকল ভাবোদয় হইবে, তাহাতে কি বিশ্বয়। 'ভাতে' ইতি। একেত মহাপ্রভু অবিচিন্ত্য মহাশক্তিবিশিষ্ট তাহাতে আবার মধুররসকে আশ্রয় করিয়াছেন বলিয়া তাঁহাতেই সর্ব ভাবোদয় হয় ॥ ৫৩।৫৪ ॥

( ২০ পা ) "পূর্কে.....শিরোমণি" ইতি। এই ৫৫৭ ও ৫৬৭ পয়ারদ্বয়ের ভাবার্থ। কি কারণে মধুর-রসায়ন করিয়াছেন, তাহা বলিতেছেন, "পূর্কে" ইতি। তিন অভিলাষে, শ্রীরাধার প্রণয়-মহিমা, স্বমাদুর্য্য ও তদাস্বাদে শ্রীরাধার সুখ। "যত্নেহো" ইতি। আশ্রয়জাতীয় ভাব ব্যতীত বিষয়জাতীয় মাদুর্য্য সম্যক্ অস্বাদন হয় না। "আপনে" ইতি। সেই তিন বস্তু আপনি অস্বাদন করিয়া ভক্তগণকে তদাস্বাদনোপায় শিক্ষা দিলেন। প্রেম-চিন্তামণি, প্রেমরূপ চিন্তামণি অর্থাৎ চিন্তামণির নিকট যে যাহা প্রার্থনা করে তাহাই যেমন প্রাপ্ত হয়; তদ্রূপ প্রেমের নিকট যে যাহা চায় তাহাই পায়। "নাহি" ইতি। পাত্র-পাত্র বিচার না করিয়া প্রেমদান করিয়াছেন ॥ ৫৫।৫৬ ॥

( ২০ পা ) "এই গুণ্ড.....দাসের নঙ্গ" ইতি। এই ৫৭৭ ও ৫৮৭ পয়ারদ্বয়ের ভাবার্থ মরল। গুণ্ডভাবসিন্ধু, এই সিন্ধু সত্য, ত্রেতা ও দ্বাপরযুগে গুণ্ড ছিল। "সেই" ইতি। শ্রীচৈতন্যের রূপা হইলে এনং তাঁহার দাসানুদাসের সহিত নঙ্গ হইলে, শ্রীচৈতন্যলীলা বৃষ্টিতে পারে।

"ধর্ম্মদ্বিস্বসেবী চ তীর্থটি বেদপারগঃ।

ন বেত্তি ব্রহ্মতত্ত্বং হি গৌরভক্তাশ্রয়ং বিনা ॥"

ধর্ম্মাচরণকারী, বিস্বসেবী, তীর্থপর্য্যটনকারী ও বেদপারগ হইয়াও গৌরভক্তাশ্রয় ব্যতিরেকে ব্রহ্মতত্ত্ব কখনই জানিতে পারে না ॥ ৫৭।৫৮ ॥

( ২১ পা ) "চৈতন্যলীলা.....আরা-



ধিতে” ইতি ॥ এই ৫৯তম পয়ারের ভাবার্থ সরল। এই গ্রন্থের অন্ত্যলীলা নিজ কল্পিত নহে, তাহা বলিতেছেন, “চৈতন্য” ইতি। রত্নসার, শ্রেষ্ঠরত্ন। তিহো, স্বরূপ গোপ্যামী। ভেটে, উপ-হারে। শ্রীস্বরূপ গোপ্যামী জানিতেন, তাহা হইতে শ্রীরঘুনান্থ দাস প্রাপ্ত হয়েন। তাঁহার নিকট শ্রবণ করিয়া বর্ণন করিলাম। “মহাপ্রভুব পরম মঙ্গল লীলাময় শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে প্রচুর শ্লোক আছে; ইহা সকলের বোধগম্য নহে।” এরূপ বলিয়া যাঁহার লোকের প্রস্তুতি সঙ্কোচ করিতে প্রস্তুত হইবেন, তাঁহা-দিগকে গ্রন্থের অত্যন্ত দুর্কৌশলতা সত্ত্বেও মহাপ্রভুর কৃপাবলে গ্রন্থশ্রবণে যাহার প্রস্তুতি হইবে, তাহার সম্বন্ধে এই গ্রন্থের তত্ত্ব অত্যন্ত সুবোধ হইবে; গ্রন্থকার ইহা বলিতেছেন, “যদি কেহ” ইতি। ইতরজন, যাঁহার সংস্কৃত জানেন না। শ্রীচৈতন্যে চিত্ত অর্পিত হইলে গ্রন্থের তত্ত্ব সুবোধ হইবে! যথা চন্দ্রামৃতে—

“সর্কসাধনহীনোহপি পরমার্শর্চ্যবৈভবে।

গৌরাজে ন্যস্তভাবো যঃ সর্কার্শপূর্ণ এব সঃ ॥”

সর্কোৎকৃষ্ট চমৎকারকারী ঐশ্বৰ্য্য-শালী গৌরাজের প্রতি যাঁহার চিত্ত সমর্পিত হয়, তিনি সকল সাধন হীন হইলেও সর্কার্শ-শিরোমণি নিগূঢ়-প্রোমে পরিপূর্ণ হয়েন। “প্রভুর” ইতি। শ্রীচৈতন্যলীলা বর্ণনে যেখানে যে শ্লোক প্রয়োজন হইয়াছে, সেখানে সেই শ্লোক প্রামাণ্যরূপে সন্নিবেশিত করাতে ভাষ্য-কঠিন হওয়াতে ইতরজন না বুঝিলে কি

করিব? বিশেষ এক কার্য্যে সকল চিত্ত সম্বোধ করিতে পারা যায় না। শ্লোক না বলিলে প্রভুর লীলাবর্ণন সুচারুরূপে হয় না। অতএব সকলের চিত্ত আরাধনা (সম্বোধ) করিতে পারিলাম না। কারণ প্রভুর লীলা বর্ণন করিতে গেলে চিত্ত আরাধনা হয় না; চিত্তবিনোদন করিলে তল্লীলা সুন্দররূপে বর্ণনা করা হয় না ॥ ৫৯ ॥

‘ ( ২১ পা ) “নাহি কারো.....বড় হয় হিত ॥” এই ৬০তম পয়ারের ভাবার্থ। অজ্ঞজন বুঝিতে পারিবে না বলিয়া, যে শ্লোক সন্নিবেশ করিয়াছি, তাহা নহে; কেননা, তাহার সহিত আমার বিরোধ নাই এবং শ্লোক সন্নিবেশ করিতেও কেহ অনুরোধ করে নাই। “যদি হয়” ইতি। যদি কাহারও প্রতি রাগ ( ভালবাগা ) বা দ্বেষ ( হিংসা ) থাকে, তবেই রাগ ও ও দ্বেষ অনুগত ভাবে বিষয় লেখা যায়; কিন্তু তাহা আমার না থাকতে এরূপ ভাবেই প্রকাশ করিয়াছি। যদি বল, রাগ ও দ্বেষ যদি তোমার নাই, তবে শ্লোক ব্যতীত চৈতন্যলীলা বর্ণন করিলে না কেন? ইহাতে বলিতেছেন, “সহজ” ইতি। চিনি কিরূপ গিষ্ঠ, ইহা যেমন বলা যায় না; তদ্রূপ সহজ ( অনা-রোপিত ) বস্তু লেখা যায় না অর্থাৎ শ্লোক সন্নিবেশ করিলেও সহজবস্তু প্রকাশ করিয়াছি। ভাবজগৎ তাহা বুঝিতে পারিবেন। “যদি হয় রাগো-দ্বেশ” এই পাঠে। যদি রাগের ( চিত্ত-রঞ্জনের ) উদ্দেশ ( অনুসন্ধান ) থাকে,

তবে তাহাতে আবেশ ( চিত্তের একা-  
গ্রতা ) হয় বলিয়া সহজ ( স্বাভাবিক  
প্রেম ) বস্তু লেখা হয় না ; যেহেতু চিত্ত-  
রঞ্জনেন মন থাকায় লেখ্যের অনুসন্ধান  
ধাকে না। অজ্ঞানেরও ইহাতে অধি-  
কার আছে, ইহা বলিতেছেন, “যেবা”  
ইতি। অজ্ঞব্যক্তি চৈতন্যলীলা শ্রবণ  
করিতে করিতে বা এই গ্রন্থ পাঠ করিতে  
করিতে চৈতন্যলীলার অদ্ভুত ( অলৌ-  
কিক ) শক্তি দ্বারা তাঁহার কৃষ্ণ প্রেম  
উৎপন্ন হইবে এবং রসের রীতি সহজ  
বস্তু বলিয়া যাহা লেখা যায় না তাহা  
জানিবে। অতএব চৈতন্যলীলা শ্রবণে  
বড় হিত হয়। তথাহি চন্দ্রামৃত—

“সংসারসিদ্ধান্তরণে ধনয়ং যদি ম্যাৎ  
সঙ্কীর্ণান্মতরসে স্নগতে মনশ্চৎ ।  
প্রেমাধুধৌ বিহরণে যদি চিত্তবৃত্তি-  
শ্চৈতন্তজ্ঞচরণে শরণং প্রনাতু ॥”

সংসার-সাগরতরণে, সঙ্কীর্ণান্মত  
রসান্মানে এবং প্রেমসমুদ্-বিহারে যদি  
তোমার মন হয়, তবে শ্রীচৈতন্যের  
চরণে শরণ গ্রহণ কর ॥ ৬০ ॥

( ২১ পা ) “ভাগবত.....কৃষ্ণদাস ॥”  
এই ৬১তম, হইতে ৬৩তম পয়ার তিনটির  
ভাবার্থ সরল। কাঠিন্যপ্রযুক্তও সকলে  
এ গ্রন্থ বুঝিতে পারিবেন। ইহা উদা-  
হরণের সহিত বলিতেছেন, “ভাগবত”  
ইতি। ভাগবতের রূপায় যেমন শ্লোকময়  
ভাগবত বুঝিতে পারে, তদ্রূপ এই  
গ্রন্থের বা চৈতন্যের রূপায় ইহা বুঝিতে  
পারিবে। মধ্যলীলায় অন্ত্যলীলার সূত্র  
বর্ণনা কর কেন ? বা তাহা সূত্রে বিস্তা-  
রই কর কেন ? ইহাতে বলিতেছেন,  
“এই অন্ত্যলীলা” ইত্যাদি। ইহা মধ্যে,  
চৈতন্যলীলাবর্ণন সময় মধ্যে। জীয়ে,  
জীবিত থাকি ॥ ৬১-৬৩ ॥

ইতি দ্বিতীয় পরিচ্ছেদে স্ত্রীমোদিনী টীপনী ॥ ২ ॥

## তৃতীয় পরিচ্ছেদ ।

—৩৩৩৩৩—

( ২২ পা ) “ন্যায়মিতি ।” এই প্রথম  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। এই পরিচ্ছেদে গ্রন্থকার যাহা  
বলিবেন, তাহা শ্লোকার্থে প্রকাশ করিয়া  
শ্রীচৈতন্যকে প্রণাম করতঃ পূর্বের স্থায়  
মঙ্গলাচরণ করিলেন। এই পরিচ্ছেদে

শ্রীচৈতন্যের সন্ন্যাস ও শ্রীঅদ্বৈতগৃহ  
ভোজন বিলাসাদি বর্ণিত হইয়াছে ॥ ১ ॥

( ২২ পা ) “জয় জয়.....রাঢ়-  
দেশে ॥” এই ১ম পয়ারের ভাবার্থ  
সরল। চৈতন্যলীলাবর্ণনে চৈতন্যভক্তের  
রূপা প্রার্থনা করিতেছেন, “জয় জয়”

ইতি । চৈতন্যভক্তের কৃষ্ণপদাশুভ্রসে  
একমাত্র অধিকার হেতু গ্রন্থকার তন্তু-  
গণকে বন্দনা করিলেন । তথাহি—

“কৃষ্ণপদাশুভ্রসম্বন্ধঃ কথং ন কচিৎ ।

জানন্ত্যহুভবন্ত্যেব তং সমং গৌরপার্বদাঃ ॥”

শ্রীকৃষ্ণপাদপদ্মরসে যে কোন বিশেষ  
সম্বন্ধ কোথাও কাহারও হয় নাই । গৌর-  
পার্বদগণই সেই রস জানেন ও অনুভব  
করেন । ভ্রমিতে, ভ্রমণ করিয়া ॥ ১ ॥

( ২২ পা ) “এতামিতি ।” এই শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

অবস্থিত দেশে কোন এক ব্রাহ্মণ যক্ষবিশ্বের  
জ্ঞান ইহলোক ও পরলোকে বন্ধনা করিয়া  
প্রচুর ধন সঞ্চয় করেন । পরে কর্তব্য কর্মের  
অন্যায় দ্বারা পুণ্য ক্ষয় হইলে, তাহার সমস্ত ধন  
নষ্ট হইয়া যায় । ঐ ব্রাহ্মণ পূর্বে যে ভগবন্তজন  
করিয়াছিলেন, তাহা অধিন্যাস । ধনাদি নষ্ট  
হইলে, সেই ভজনপ্রভাবে তাহার বৈরাগ্য উপ-  
স্থিত হইলে বলিয়াছিলেন, নিশ্চয়ই ভগবান  
আমার প্রতি স্নেহসম হইয়াছেন, নচেৎ ধনক্ষয়ে  
আমার চিন্তে এরূপ নির্বেদ আসিয়া কেন উপ-  
স্থিত হইল ? তখন তিনি সম্যাসির বেশে ভিক্ষা  
দ্বারা জীবিকা নির্বাহ করিতে লাগিলেন । তৎ-  
কালে দুই লোকগণ তাহাকে নানা হিংস্র দিলে,  
তিনি একটি গাথা দ্বারা নানা হিংস্র প্রদর্শন  
পূর্বক নানা বিচার করিয়া বলেন, ইহারা আমার  
হিংস্র কারণ নহে, কেবল মনই সূখ হিংস্র  
কারণ । আত্মা প্রকৃতির পর, অহঙ্কার নিমিত্ত  
তাহার সূখ হিংস্র, বাস্তবিক তাহার সূখ হিংস্র  
নাই । ইত্যাদি বলিয়া বলিতেছেন, “এতামিতি ।”

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, হে উদ্ধব ! বিদ্ব  
দ্বারা শূন্যতা, পূর্বাঙ্কিতা যে আমার  
প্রতি শুদ্ধা ভক্তি ; ধনক্ষয়ে তাহা ব্রাহ্ম-  
ণের মনে উদ্ভিত হইয়াছিল । তাহার

মনে ভক্তি প্রাপ্ত হইলে, নিজের  
সুখ দুঃখনহনোপায় সন্ন্যাসকে অবলম্বন  
করিয়া পূর্বকথিত বিষয়গুলির বিচার  
করতঃ নিশ্চয় করিয়াছিলেন, “আমি  
শ্রীকৃষ্ণসেবা করিব” এবং তিনি আমার  
চরণসেবা দ্বারা অমৃতসিদ্ধিতে নিমগ্ন  
হওতঃ নৃত্য করিতে করিতে আনন্দের  
সহিত দর্প করিয়া বলিয়াছিলেন, “এতা-  
মিতি । অর্থাৎ 'দেহ ও দৈহিকাভিমান  
হইতে শুদ্ধ যে জীবাত্মা ; তাহার বিচা-  
রিতলক্ষণ স্বরূপকে ( জ্ঞানকে ) কিঞ্চি-  
মাত্র অবলম্বন করতঃ শ্রীকৃষ্ণের চরণ-  
সেবা দ্বারাই সংসারাকার হইতে উত্তীর্ণ  
হইব । পরমাশ্রমিতা ( জ্ঞান ) দ্বারা  
উত্তীর্ণ হইতে পারিব না । ইহা 'এব'  
শব্দ দ্বারাই প্রতিপন্ন হইতেছে । যদি  
বল, তবে পরমাশ্রমিতাকে অবলম্বন  
করিয়া কি করিতেছ ? ইহাতে বলিতে  
ছেন, “পূর্বতমৈরিত্তি ।” অর্থাৎ প্রাচীন  
মহর্ষিগণ কর্তৃক সমাদৃত বলিয়াই, উহা  
কিঞ্চিমাত্র অবলম্বন করিয়াছি । অথবা,  
অন্য বিষয়ে আবেশ পরিত্যাগ জন্য  
জ্ঞানে আস্থাশ্রমিতা করিয়াছি ॥ ২ ॥

( ২২ পা ) “প্রভু কহে..... শূন্য  
হরিনাম ॥” এই ২য় পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । “প্রভু কহে” ইতি । সাধু, সত্য ।  
ভিক্ষুক বচন, “এতামিতি শ্লোক বাক্য ।  
অতএব মুকুন্দসেবন ব্রত ( নিয়ম ) নির্ধা-  
রণ ( নির্ণয় ) কৈল ( করিলাম ) । অর্থাৎ  
এইরূপ নিয়মে মুকুন্দসেবা করিব, যেন  
কখন ভঙ্গ হয় না । দীর্ঘকাল অনু-  
পালনীয় সঙ্কল্পই ব্রত । কিরূপ নিয়মে

সেবা করিবেন তাহা বলিতেছেন, “পরাজ্ঞানিষ্ঠামাত্র” ইতি। এই পয়ারটি “এতামতি” শ্লোকের ফলিতার্থ। বেশ, আস্থা। অন্যাবেশ পরিত্যাগ নিমিত্ত দেহ ও দৈহিকাভিমান হইতে শুদ্ধ যে জীব, তাহার নিষ্ঠা অর্থাৎ জীব ব্রহ্মের অংশ ও দেহাদি হইতে অতিরিক্ত অত-এব তাহার সুখ দুঃখ নাই, এরূপ বিচারিতলক্ষণস্বরূপ যে আত্মা, তাহাতে আমার আস্থামাত্র, কিন্তু শ্রীকৃষ্ণসেবায় সংসার তরিব। আত্মতত্ত্বজ্ঞানে সংসার তরে না, কেবল শ্রীকৃষ্ণসেবায় উত্তীর্ণ হয়। সেই বেশ কৈল, সেই আস্থা করিলাম। এবে, এক্ষণে। কৃষ্ণনিষেরণ, কৃষ্ণসেবা। “গোপবালক” ইতি। প্রভুর দর্শন প্রভাবে গোপবালকেরা হরি হরি বলে। শূনি, হরিনাম শুনিয়া। তা সবার, গোপবালকগণের ॥ ২ ॥

(২৩ পা) “গুণ্ডে তা.....সব ভক্তগণ ॥” এই ৩য় পয়ারের ভাবার্থ সরল। গুণ্ডে, প্রভুর অসাক্ষাতে। করিয়া প্রবন্ধ, রচনা করিয়া। “ব্রহ্মানপথ” ইতি। পুছেন, জিজ্ঞাসা করেন। ব্রহ্মাবনের পথ দেখাইতে গঙ্গাতীরপথ দেখান কথা মিথ্যা হইলেও এখানে দোষ হয় না, কেননা, অনুরাগে শাস্ত্রা-পেক্ষা থাকে না। অথবা, শ্রীকৃষ্ণের আহারাদির জন্য যেমন যশোধার প্রলোভনবাক্য দোষাবহ নহে, তদ্রূপ তিন দিন উপবাসী শ্রীচৈতন্যের আহারাদির জন্য বাৎসল্য ভাবময় নিত্যানন্দের গঙ্গাতীরপথ দেখাইয়া অদৈত-

গৃহে আনয়ন করাও দোষাবহ নহে। গাঢ়স্নেহ বশতঃ ঐরূপ করিয়াছিলেন। তথাহি মধ্যের সপ্তমে মহাপ্রভুর উক্তি—  
“নীনাচল আসিতে তুমি ভালিলে মোর দণ্ড।  
তোমা সবার গাঢ়স্নেহে আমার কার্য তদ্বৎ ॥”  
অতএব নিত্যানন্দকৃত আচরণ দোষাবহঃনহে ॥ ৩ ॥

(২৩ পা) “তারে পাঠাইয়া..... করেন স্তবন ॥” এই ৪র্থ পয়ারের ভাবার্থ সরল। আগে, সম্মুখে। দিল! পরিচয়, আমিও ব্রহ্মাবন যাইব, এইরূপ পরিচয় দিলেন, আত্মপরিচয় নহে; যেহেতু ইতঃপূর্বে নিত্যানন্দের সহিত প্রভুর পরিচয় আছে। বিশেষ “প্রভু কহে শ্রীপাদ” এই বাক্যেও পূর্কপরিচয় প্রীতিত হইতেছে। যদি বল, গঙ্গাতীর-পথ দেখান নিত্যানন্দের দোষাবহ নহে, কিন্তু নিত্যানন্দ অদৈত-গৃহে যাইতেছেন অথচ প্রভুকে বলিতেছেন, “তোমা সনে যাব ব্রহ্মাবন” এই বাক্যটি সম্পূর্ণ মিথ্যা হইতেছে? ইহা হইতে পারে না, কেননা—

“আচার্য্য কহে তুমি যাহা তাঁহা ব্রহ্মাবন।”

এই পর পয়ারে কথার সমাধান হইবে। তেহৌ, নিত্যানন্দ। যদি বল, প্রভুকে গঙ্গার নিকট আনিয়া যমুনা বলিয়া দর্শন করান, ইহাতে নিত্যানন্দের বঞ্চনা প্রকাশ পাইতেছে। এই কথার সমাধান “আচার্য্য কহে মিথ্যা নহে” ইত্যাদি পর পয়ারে করিবেন ॥ ৪ ॥

(২৩ পা) “চিদানন্দভানোরিতি।” এই তৃতীয় শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্ধে

প্রকাশ আছে। মহাপ্রভু যমুনার যে স্তব করিয়াছেন, তাহা এই শ্লোক দ্বারা স্তব করিলেন ॥ ৩ ॥

(২৩ পা) “এত বলি.....গঙ্গাধার ॥”

এই ৫ম ও ৬ষ্ঠ পয়ারঘরের ভাবার্থ সরল। এত বলি, স্তব বলিয়া। কৈল গঙ্গান্নান, যমুনাজ্ঞানে গঙ্গান্নান করিলেন। কৌপীন, মেখলাবন্ধ পরিধেয় বস্ত্রখণ্ড। হেথা, বৃন্দাবনে। “আচার্য্য কহে” ইতি। যাহা, যেখানে। প্রাকৃত বস্তু তোমাকে স্পর্শ করিতে পারে না। অতএব তুমি যখন প্রাকৃত নানাদেশে গমন কর, তখন সেই সেই দেশে আধারশক্তিরূপ বিভূতি-বিশিষ্ট তক্তামের আবেশ হয় শ্রীকৃষ্ণসন্দর্ভে—

“যত্র কচিৎ প্রকটলীলায়াং তদগমনাদিকং  
শ্রমতে তদপি তেবাং আধারশক্তিরূপাণাং  
স্থানান্যাবেশাদেব মন্তব্যম্ ॥”

প্রকটলীলায় শ্রীকৃষ্ণের অন্যস্থানে যে গমনাদি শুনিতে পাওয়া যায়, তাহাতে নিত্য লীলাস্পদ আধারশক্তিরূপ স্থানসকলের আবেশ হয় জানিবেন। অতএব শ্রীকৃষ্ণই শ্রীচৈতন্য হওয়াতে তাহাতে প্রাকৃত বস্তুর স্পর্শ নাই। শ্রুতিও বলেন, “স ভগবঃ কস্মিন্ প্রতিষ্ঠিত ইতি। যে মহিমীতি।”

সেই ভগবান্ কোথায় প্রতিষ্ঠিত আছেন? নিজ মহিমায়। অতএব শ্রীচৈতন্য যেখানে গমন করেন, সেই স্থানেই বৃন্দাবনের আবেশ হওয়াতে, গঙ্গাতীরও বৃন্দাবন হইতেছে। শ্রীপাদবচন, নিত্যানন্দব্যাক্য। অদ্বৈত কহিলেন, প্রভো, উভয়মতেই আপনি প্রত্যক্ষীয় নহেন।

নির্দোষ এই নিত্যানন্দ আপনাকে এখানে আনিয়া নিজ শ্রীপাদ নামের সার্থকতা করিয়াছেন।

“শ্রিরং পাতীতি শ্রীপঃ কৃষ্ণম্ আদবাতীতি।”

শ্রীপদ শব্দে কৃষ্ণ, তাহাকে যিনি সম্যকরূপে দান করেন, তিনি শ্রীপাদ। ইনি শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যকে আমার হস্তে অর্পণ করিয়াছেন, এজন্য ইনিই শ্রীপাদ ॥৫৬॥

(২৩ পা) “পশ্চিম ধারে...অস্তর ॥”

এই ৭ম পয়ারের ভাবার্থ সরল। সুখ, নীরস। কৃথ, ঘৃতাদিনেহরহিত। সূপ, দাউল। “পাদ প্রক্ষালন” ইতি। সন্ন্যাসী গৃহস্থের পূজ্য, এইজন্য অদ্বৈত, প্রভুর পাদ প্রক্ষালন করিলেন এবং প্রভুও তাহা স্বীকার করিলেন নচেৎ গৌরব করিয়া তাঁহাকে পূর্বে পাদস্পর্শ করিতে দিতেন না ॥ ৭ ॥

(২৪ পা) “প্রথমেই পাক.....

লোক যত হয় ॥” এই ৮ম হইতে ১০ম পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। তিন-ঠাঞি, তিনস্থানে; শ্রীকৃষ্ণ, শ্রীচৈতন্য ও শ্রীনিত্যানন্দের জন্য। বাটাইল, প্রস্তুত করাইল। বস্ত্রিশা আঠিয়া কলার, বস্ত্রিশ ছড়া বিচি কলা জন্মায় যে রুক্ষে, সেই কলাগাছের। আঙ্গটয়া, উপরের অখণ্ড পত্রকে আঙ্গটপাত বলে। শাল্যম্, রামশালির অন্ন। পীত ঘৃতসিক্ত, গব্য-ঘৃতযুক্ত। সাজক বাসুক, হরিদ্রার সহিত বেতো শাক। সূক্তা, তিক্তবিশেষ, বা আচার। পঞ্চবিধ তিক্ত, গুলঞ্চ, নিম্ব, বাসক, পলতা ও কণ্টকারী বা পঞ্চ প্রকারের রন্ধিত ব্যঞ্জন। পঞ্চবিধ কাশ,

পিপুল, চই, পিপুলমূল, চিতামূল ও শুষ্টি বা পঞ্চ প্রকারের রক্ষিত ঝালের ব্যঞ্জন । ব্যঞ্জন এই কয়টি দ্রব্যযুক্ত হইলে এমনি অপূর্ণ হয়, যে আশ্বাদনে অমৃতনিম্বক । শর্করা, চিনি । দুগ্ধকুশ্মাণ্ড, দুগ্ধ দিয়া কুশ্মাণ্ড পাক । গধুবাল্ল, মিষ্ট অল্প ॥৮-১০॥

(২৪ পা) “মুলাবড়া.....তুমি যাহ ঘরে ॥” এই ১১শ, ১২শ ও ১৩শ পয়ার তিনটির ভাবার্থ সরল । মাষবড়া, শব্দে কেহ উরতি দাউলের বড়া কল্পনা করেন । কেহ বলেন, মাষকলাইয়ের বড়া । চতুর্দশী ও রনিবারেই মাষ ভক্ষণের বিশেষ নিষেধ পাওয়া যায় । “মাষঃ শ্রমস্বথবতাং নরানাং নিত্যং সেবনীয়ঞ্চম্ ॥”

শ্রমসুখবিশিষ্ট নরের মাষ নিত্যই সেবনীয় । পুলী, পিষ্টক । মুৎকুণ্ডিকা, মাটির ভাঁড় । লক্লকী, পিষ্টক বিশেষ । না শকি, পারি না । দুই প্রভু, জীচৈতন্ত ও জীনিত্যানন্দ । নোলাইল, ডাকিলেন । মনে, অস্ত্র লোক সকল । কৃত্য নাহি মরে, দিনকৃত্য কিছু হয় নাই ॥ ১১-১৩ ॥

(২৪ পা) “হরিদান কহে..... উচ্ছিষ্ট রাখিব ॥” এই ১৪শ হইতে ১৮শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । পাছে, অতঃপর । ঐছে, এই প্রকারে । “প্রভু জানে” ইতি । আচার্য্যের মন কথা, তিন ভোগের মধ্যে এক ভোগ জীকৃষ্ণকে দিয়াছেন, অপর দুই ভোগ দুই প্রভুর ক্ষম্ত অনিবেদিত রাখিয়াছেন ; জীকৃষ্ণ প্রসাদ আর জীচৈতন্তকে এবং জীবলদেব নিত্যানন্দকে দেওয়া হয় না । এই

তাহার মন কথা । বেদ্য, জ্ঞাত । তিনে, জীঅর্হিত লইয়া তিন ॥ ১৪—১৮ ॥

(২৫ পা) “আচার্য্য কহে..... করিল পুরণ ॥” এই ১৯শ হইতে ২৩শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । পিণ্ডা, রাশি । তার লেখে, ঐ রাশির তুলনায় । পঞ্চগ্রাস, ব্রাহ্মণের প্রথম ভোজনে ক্ষুদ্র পাঁচটা গ্রাস । জল দিল দুই গোমার্গির হাতে, মন্যাসিগ্গণের ভোজনের পূর্বে গৃহ-স্বামিকে জলগণ্ডুম প্রদান করিতে হয় । ইহাতে নিত্যানন্দেরও মন্যাস প্রাপ্তি পন্ন হইল । নিত্যানন্দ কহে কৈল ইত্যাদি বাক্য পরিহাসযুক্ত । তৈর্ধিক, তীর্থপর্য্যটক । দশবিশ মানের, কুড়ি সেরে এক শলী, দশ শলীতে এক বিশ হয়, সেই পরিমাণের । “না ছড়াইও” এই বাক্যে বুট ছড়াইতে অর্হিত অভিপ্রায় প্রকাশ করিলেন ॥ ১৯—২৩ ॥

(২৫ পা) নিত্যানন্দ কহে..... হৃদয় উপরে ॥” এই ২৪শ, হইতে ২৭শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । পেট না ভরিল, পরিহাস বাক্য । উবালি, ছড়াইয়া । “তোর জাতি” ইতি । তত্ত্বৈ ঈশ্বরের জাতি ও কুল না থাকায় উহা স্ততিবাক্য । পাগল, প্রেমোন্মত্ত । নাশিলে মোর সব স্মৃতিধর্ম্ম অর্থাৎ জী-নিত্যানন্দের প্রসাদস্পর্শে শুদ্ধ ভক্তির উদয় হওয়াতে স্মৃত্যুক্ত ধর্ম্মের রক্ষা হয় না । রসবাস, রস ও স্নগন্ধযুক্ত । মুখবাস, মুখশোধন ॥ ২৪—২৭ ॥

(২৬ পা) “আচার্য্য করিতে..... হরমিত হঞা ॥” এই ২৮ হইতে ৩০

পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । বহু নাচাইলে, আমাকে অবতীর্ণ করিয়া অনেক কার্য্য করাইলে । দুইজনে, মুকুন্দ ও হরিদাসকে । যে আছিল মনে, শ্রীচৈতন্য ও শ্রীনিত্যানন্দের প্রসাদ ভোজন করেন । নাহি সমাধান, গমনাগমন শেষ হয় না । বুলে আচার্য্য ধরিঞা অর্থাৎ শ্রীঅষ্টৈত প্রেমভরে ভূমিতলে পতিত হইবেন, এই আশঙ্কায় তাঁহাকে ধারণ করিয়া শ্রীনিত্যানন্দ জগণ করিতে লাগিলেন ॥২৮-৩০ ॥

( ২৬ পা ) “কি কহব রে.....ভাবের তরঙ্গে ॥” এই ৩১২ হইতে ৩৫২ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । গধুবা হইতে শ্রীকৃষ্ণ শ্রীরুদ্দাবনে আসিলে শ্রীরাধা যে পদ বলেন, তদনুবাদে শ্রীঅষ্টৈত উহা বলিতেছেন, “কি কহব” ইতি । কেহ বলেন, গুরু ও শ্রীকৃষ্ণ অভেদ করিয়া বলিতেছেন, শ্রীচৈতন্যের আগমনে মাধব অর্থাৎ আমার গুরু মাধবেন্দ্রপুরীর আগমন হইয়াছে । ওর, সীমা । চিরদিনে, বহুকাল পরে । গাই, গান করিয়া । ভাণ্ডিয়া, বধনা করিয়া । গোসাঞি দেখিয়া অর্থাৎ প্রেমোৎকর্ষায় প্রভুকে ক্রমে পতিত দেখিয়া । সোয়াধ, স্বাস্থ্য । কান্ধ, শ্রীকৃষ্ণ । বিষাদা-মর্ষ, বিষাদ ও অমর্ষ । ভাবসৈন্য, নির্কে দাদি সঞ্চারী-ভাবরূপ সৈন্য ॥৩১-৩৫ ॥

( ২৬ পা ) “তিনদিন উপবাসে..... প্রভু হইলা মদন ॥” এই ৩৬৫ হইতে ৪০২ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । উদ্গুন্ডো, ভাবাবেশে উর্দ্ধে লক্ষ প্রদানপূর্বক নৃত্য করিয়া । এইমত, অর্থাৎ প্রথমে যেরূপ ভাবে প্রভুর সেবা করিয়াছিলেন, সেইরূপে দশদিনই সেবা করেন । প্রভাতে, প্রভুর অষ্টৈতগৃহে সন্ন্যাসের পর প্রথম আগমনের পরদিন প্রাতঃকালে । সংঘট-সমুদ্র, অত্যন্ত ভীড় । রহিমু, রহিব ॥৩৬-৪০ ॥

( ২৭ পা ) “একে একে মিলিলা... নিমাই শরীরে ॥” এই ৪১২ হইতে ৪৩ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । দৃঢ়, গাঢ়-ভাবে । কৃপাদৃষ্টে হাসি, হাস্যপূর্বক কৃপাদৃষ্টি করতঃ । চূর্ণ হৈল হেন বাসো অর্থাৎ সেই স্ন্যকোমল কলেবর বা চূর্ণ হইল ॥ ৪১—৪৩ ॥

( ২৮ পা ) “এই মত শচীদেবী... পাপিষ্ঠ জীবন ॥” এই ৪৪২ হইতে ৪৮২ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । শ্রীচৈত-ন্যের ভূমিতে পতন দেখিয়া শ্রীগটীমাতা বাৎসল্যে হর্ষ, ভয় ও দৈন্যভাবে ব্যাকুল হইলেন । শ্রীচৈতন্য দর্শনে হর্ষ । ভূমিতে পতন ভয় । পতননিবারণে বিষ্ণুর নিকট প্রার্থনায় দৈন্য । বৈয়গ্র্য, ব্যাকুলতা । গতাগতি, যাতায়াত । বার্তা, সংবাদ । শক্তি, শক্তি ॥ ৪৪-৪৮ ॥

ইতি মধ্যলীলায়াং তৃতীয় পরিচ্ছেদে স্ত্রীবাধিনী টিপনী ।

## চতুর্থ পরিচ্ছেদ ।



( ৩০ পা ) “ষষ্টৈ দাতুমিতি ॥” এই প্রথম শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। ঐশ্বরকার এই চতুর্থ পরিচ্ছেদে শ্রীমাধবেশ্বরপুরীর চরিত্র বর্ণনা করিবেন বলিয়া তাঁহার রূপা প্রার্থনায় এই শ্লোক দ্বারা তাহাকে বন্দনা করিলেন ॥১৥

( ৩০ পা ) “জয় জয়.....আনিল মাগিয়া ॥” এই ১ম ও ২য় পয়ারের ভাবার্থ সরল। পূর্বের ন্যায় ঐশ্বরকার নিজ অভীষ্টদেব শ্রীচৈতন্য শ্রীনিত্যানন্দ, শ্রীঅদ্বৈত ও তদুক্তগণকে পয়ার দ্বাৰা বন্দনা করিলেন। দস্তকরি, অহঙ্কার করিয়া অর্থাৎ শ্রীস্বন্দ্যাবনদাসের বর্ণনা হইতে উক্তম বর্ণনা করিব, এই অহঙ্কার করিয়া যদি বর্ণি ( বর্ণনা করি )। চারিভক্ত, শ্রীনিত্যানন্দাদি চারিভক্ত ॥ ১১২ ॥

( ৩০ পা ) “পথে বড়.....দাসগণ ॥” এই ৩য় পয়ারের ভাবার্থ সরল। দানী, পথকর যে গ্রহণ করে।

কেহ বলেন, গোপীনাথ যে পরমমোহন তৎসম্বন্ধে একটি কিম্বদন্তি আছে। যে কালে রাম সীতার সহিত চিত্রকূট পর্ত্তে বাস করেন; সেই সময়ে একদা রাম সীতার সহিত চিত্রকূটের শোভা দর্শন করিতে করিতে হস্ত করিলে, সীতাদেবী বলিলেন, নাথ! আপনি কি জন্ত হাস্য করিলেন? শ্রীরাম বলিলেন, তাহা ভোমার শুনিবার প্রয়োজন নাই। অনন্তর জানকীর অতিশয় আগ্রহে পুনরায় শ্রীরাম বলিলেন, ইহার পর আমি যে অবতার কবিব, সে রূপ দর্শনে বিজগৎ মোহিত হইবে।

সীতাদেবী বলিলেন, প্রভো! আপনি আমাকে বন্দনা করিলেন, কারণ সম্মুখে এইতো জগন্মোহন রূপ দেখিতেছি ইহা অপেক্ষা আর কি রূপ হইতে পারে? অন্তএব রূপা করিয়া প্রকৃত তথ্য বলুন। শ্রীরাম বলিলেন, আমি তোমাকে সত্য কথা বলিয়াছি। সীতা কহিলেন, তবে আমাকে সেই রূপ দেখান। শ্রীরাম বলিলেন, তুমি সেই রূপ দেখিলে অধীরা হইবে। পতিব্রতার পতির রূপ ব্যতীত অন্যের রূপদর্শন অকর্তব্য। সীতা বলিলেন, সে কি, অশ্বেয় রূপ যে আমি দেখিব না? তাহা আপনাই ভিন্নরূপ। অন্তএব আমাকে উহা দেখান। তখন শ্রীরামচন্দ্র শর দ্বারা প্রস্তুত খুদিয়া এই গোপীনাথ মূর্ত্তি নির্মাণ করিলেন এবং তদর্শনে সীতা মোহ প্রাপ্ত হইলেন। এই হেতু গোপীনাথ পরম মোহম। এই কিম্বদন্তিটি সঙ্গত বোধ হয় না।

তাঁর, শ্রীগোপীনাথের। প্রভুঃ, শ্রীচৈতন্যের ॥ ৩ ॥

( ৩০ পা ) “নানারূপে.....বোলেন হাঁসিয়া ॥” এই ৪র্থ ও ৫ম পয়ার দ্বয়ের ভাবার্থ সরল। নানারূপে শ্রীতি কৈল অর্থাৎ শ্রীতি পূর্বক মানা প্রকারে প্রভুর সেবা করিল। বঞ্চন, যাপন। কথা, ক্ষীরচূরির রুস্তান্ত। সেইত আখ্যান, দৈবপুরীর নিকট বাহা শুনিয়াছিলেন, সেই ইতিহাস। ধরি, রাখিয়া ॥ ৪। ৫ ॥

( ৩১ পা ) “পুরী এই ছুঙ্ক.....নারে চালাইতে ॥” এই ৬ষ্ঠ হইতে ১২শ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। ভোক, ক্ষুধা। শোষ, তৃষ্ণা বা ক্ষুধাজন্ম গুণত। বসি,



বাস করি । আমার গ্রামেতে, এই গ্রামে বা আমার জগতে । বাট, পখা, তজ্জা, অল্প নিদ্রা । বাহুবলি লয় অর্থাৎ অল্প নিদ্রায় ইন্দ্রিয়গণের বহিব্যাপার থাকে না, কিন্তু অন্তর্ব্যাপার সমস্তই থাকে । কাঢ়, বাহির কর । মঠ, মন্দির । স্বপন, স্বান । বজ্র, শ্রীকৃষ্ণের প্রপৌত্র, অনি-  
কৃষ্ণের পুত্র বজ্রনাভ ॥ ৩-১২ ॥

( ৩১ পা ) “মহা মহা বলিষ্ঠ ..... পর্কত হৈল পূর্ণ ॥” এই ১৩ শ হইতে ১৬শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । যদি বল, গোবর্দ্ধন উপরি উঠিতে নিষেধ থাকায় পুরী কি প্রকারে উঠিলেন, তদু-  
ত্তর, শ্রীগোপালের আজ্ঞায় তদুপরি উঠিয়াছিলেন । ছানিয়া, ছাকিয়া । নব শত, নুতন এক শত ।

পঞ্চপবা ও তন্ত্র—১ । গোময়—“গন্ধদারঃ  
দ্রুমাধর্বাং নিত্যপুষ্টিং করীষিনীম্ । ঈধরীং সর্ক-  
ভূতানাং ত্র্যমিহোপস্বয়ে শিরম্ ॥” ২ । গোমুত্র-  
গায়ত্রী ষায়া । ৩ । হৃৎ—পূর্বমন্ত্র ষায়া । ৪ । য়ত—  
পূর্বমন্ত্র । ৫ । দধি—পূর্বমন্ত্র । কুশোদক দিব্যরও  
বিধি আছে । মন্ত্র যথা—দেবস্ত ত্বা সবিতুঃ  
ঐসবেষিনো বাহভ্যাং পুষো হস্তাত্যামাদদে ।  
পঞ্চামৃত যথা—১ । শর্করা ( চিনি ) গায়ত্রী ষায়া ।  
২ । হৃৎ—“আপ্যারম্ব সমেতু তে বিশ্বতঃ সোম  
বিধং ভবা বাজস্ত সজতে ॥” ৩ । য়ত—“তেজো-  
হসি শুক্রমস্যামৃতমসি ধামনামাসি প্রিরং দেবানা-  
মনাধুঃ দেবযজনমসি ॥” ৪ । দধি—“দধিক্রাবৌ  
২ কার্বে জিকোরখস্ত বাজিনঃ সুরভিনা মথা ক্রমোৎ  
প্রণতায়ুঃ বিতর্ষৎ ॥” ৫ । মধু—“মধুবাভা ঋতা-  
স্তুতে মধু ক্রমন্ত সিদ্ধবঃ মাধীর্নঃ সঙ্ঘোবধীঃ ।  
মধু নক্তমুতোষসো মধু দৌরস্ত নঃ পিতা মধুমান  
নো বনস্পতিঃ মধুমান্ অস্ত সুর্যো মাধীর্গাবো  
ভবন্ত নঃ ॥” ভবাহি—বিজুথস্বোত্তরে—

“ততঃ শশ্বভূতেনৈব স্তীরেণ দ্বাপয়েৎ ক্রমাৎ ।

দগ্না য়তেন মধুনা খণ্ডেন চ পৃথক পৃথক ॥

পঞ্চামৃতার্থোঃ স্পননং সদা নেচ্ছন্তি তৎপ্রিয়াঃ ।

কিন্তু তৈঃ কালদেশাদি বিশেষে কারয়ন্তি নঃ ॥

শশ্ব পঞ্চামৃত গ্রহণ করতঃ যথাক্রমে তিন

ভিন্ন রূপে স্নান করাইবে । শুক্লগণ সর্করা পঞ্চামৃত

মানের বিধি দেন না ; কিন্তু দেশকালভেদে

উহার ব্যবস্থা দিয়া থাকেন । উহার পরিমাণ

যথা ব্রহ্মপুরাণে—

“দেবানাং প্রভিমা যত্র যুতাত্মদন্ততো ভবেৎ ।

পলানি তন্ত দেয়ানি শ্রদ্ধয়া পঞ্চবিংশতিঃ ।

অষ্টোত্তরপলশতং স্নানে দেয়ঞ্চ সর্করা ।

যে সহস্রে পলানাঙ্ক মহাস্নানে চ সংখ্যায় ॥

দেবতাপ্রতিমা স্থলে শ্রদ্ধা সহকারে পঞ্চবিংশ-

পল যুতাদি মর্দন করাইতে হয় ; সক্ষম হইলে

অভ্যঙ্গস্নান সময়ে অষ্টোত্তরশতপল প্রদান করিবে ।

মহাস্নান সময়ে বিসহস্রেপল প্রমাণ দিবে । পাঁচ

রতিতে এক মাষ, ষোল মাষে সূবর্ণ, সূবর্ণ চতুষ্টিয়ে

এক পল ।

শঙ্খগন্ধোদকে, শঙ্খোদকে ও গঙ্গো-

দকে । দালি, দাউল ॥ ১৩-১৬ ॥

( ৩২ পা ) “কুস্তকারের ..... দিয়া

আচ্ছাদিল ॥” এই ১৭শ হইতে ২০শ

পয়াব পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । মুস্তাজন,

মাটীর হাঁড়ি । স্তূপ, রাশি । কড়ি, দধি

ও বেসম সংযোগে প্রস্তুত করা ব্রহ্মবাসি-

গণের খাদ্যবিশেষ । মাঠা, ছোল ।

শিখরিণী, সুদশাজ্ঞে যথা—

“অর্দ্ধাঢ়কং স্তুতিরপর্য্যুথিতস্যনয়ঃ ষণ্ডস্য

ষোড়শপলানি শশিপ্রভস্য ।

সর্পিঃ পলাং মধুপলাং মরিচং দ্বিকর্ষং শুভ্যাঃ

পলান্ধমপিচার্ধপলাং বীড়স্য ॥”

স্তুতির পর্যুথিত দধি অর্দ্ধাঢ়ক, চিনি ষোল

পল, য়ত এক পল, মধু এক পল, মরীচ দুই কর্ণ,

শুঠ দুই কৰ্ণ, বীড় লবণ দুই কৰ্ণ । ইহার বোগে  
শিখরিনী হয় ।

বিড়ার সঞ্চয়, পানের খিলি সমূহ ।  
টাটা, বাপ বা আগড় ॥ ১৭-২০ ॥

( ৩২।৩৩ পা ) “পুরী গোসাঞি.....  
কেহোত প্রাচীর ॥” এই ২১শ হইতে ২৫শ  
পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । পূর্ক অন্ন-  
কুট, শ্রীকৃষ্ণাবতার সময়ের গোবর্দ্ধন  
পূজার অন্নকুটই যেন প্রত্যক্ষ হইয়াছে ।  
মাক্ণিয়া, চাহিয়া । গব্যভোজন, দুধ  
পান । অন্ন লয়া, তণ্ডুলাদি খাদ্য দ্রব্য  
লইয়া । ভেট, উপহার ॥ ২১-২৫ ॥

( ৩৩ পা ) “এক এক ব্রজবাসী.....  
ভোগ বিবরণে ॥” এই ২৬শ হইতে ২৯শ  
পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । গৌড়  
হইতে, গৌড়দেশ হইতে । বৈরাগী,  
বিষয় বৈরাগ্যবিশিষ্ট । লেপ, লেপন  
কর । সেবার নির্ক্ক, বঁড় পূর্কক গোপা-  
লের সেবার নিমিত্ত ।

“শান্তিপুর আইলা শ্রীল অষ্টভেদের ধরে ।  
পুরীর প্রেম দেখি আচার্য্য আনন্দ অন্তরে ॥  
ঔর ঠাই মন্ত্র লৈল যতন করিয়া ।”

এই পয়ারে শ্রীঅষ্টভৈত শ্রীমাধবেশ্ব-  
পুরীর প্রেম দেখিয়া তাঁহার নিকট মন্ত্র  
গ্রহণ করাত্তে, অনুপযুক্ত কেবল কৌলিক  
গুরু (কুলগুরু) করিবার প্রথা নাই ।  
ভক্তিমান্ যোগ্যব্যক্তির নিকট মন্ত্র  
গ্রহণ করিবে । ইহা প্রতিপন্ন হইল ।  
এখানে একটি আশংকা হইতে পারে,  
হরিভক্তিবিলাগে উক্ত হইয়াছে—

“গুরুরগুরুছোমমন্ত্রসিদ্ধঃ প্রয়োগবিৎ ।  
তপস্বী সত্যবাদী চ গৃহযো গুরুকচ্যতে ॥”

যিনি পুরস্চরণাদি দ্বারা নিজমন্ত্র  
চৈতন্য করিয়াছেন, সকল প্রকার প্রয়োগ  
কুশল, সত্যবাদী অথচ গৃহস্থধর্মে স্থিত  
তিনিই গুরু হইবেন । এরূপ হইলে  
শ্রীঅষ্টভৈত সন্ন্যাসির নিকট দীক্ষা লইলেন  
কি প্রকারে ? তদুত্তর, সিদ্ধমন্ত্রগুরুর  
নিকট দীক্ষা লইতে পারেন অর্থাৎ যিনি  
যে মন্ত্র দ্বারা সিদ্ধ হইয়াছেন, তিনি  
সন্ন্যাসী হইলেও, তাঁহার নিকট হইতে  
ঐ মন্ত্র গ্রহণ করিলে দোষ হয় না ।  
জগমোহন, শ্রীমন্দিরের সম্মুখস্থ তদংশ  
স্থান বিশেষ । কাঁহা কাঁহা, কি কি  
দ্রব্য । গৌর্ধব, পরিপাটি । ভিয়ানে, পাক  
করিয়া । লাগাব, প্রদান করিব । গোপা-  
লের নিমিত্ত শ্রীগোপীনাথের ভোগ  
জানিতে যে ইচ্ছা করেন, ইহা তাঁহার  
সেবাবিষয়ক শ্রীতি কার্য্য ॥ ২৬-২৯ ॥

( ৩৩। ৩৪ পা ) “শয্যাভোগে.....  
মাধবপুরীতে চাহিয়া ॥” এই ৩০ং হইতে  
৩৩ং পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । শয্যা-  
ভোগ, শয়নের পূর্ককালীন ভোগ ।  
লেপি, লেপন করিয়া । দ্বার দিয়া,  
মন্দিরের দ্বার রুদ্ধ করিয়া । বোলে,  
অনুসন্ধান করে ॥ ৩০-৩৩ ॥

( ৩৪ পা ) “ক্ষীর লও এই ... ..  
গোপাল বৃন্তান্ত ॥” এই ৩৪ং হইতে ৩৭ং  
পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । লাগি,  
জন্য । আবেশে, প্রেমাবেশে । ঠিকরি,  
মুগ্ধয় ক্ষীরপাত্রের খোলা । প্রতিষ্ঠা,  
সুখ্যাতি । “প্রতিষ্ঠার স্বভাব” ইতি ।  
বিদিত, জ্ঞাত । লাগ লৈয়া, লয় হইয়া ।  
বিধাতা প্রতিষ্ঠার নির্মাণ কর্তা হেতু

সর্বত্র তাহার সুখ্যাতির ঘোষণা করেন অর্থাৎ যেখানে ভক্ত যাইবেন, সুখ্যাতিও সেখানে উপস্থিত হইবে। গোপাল রুত্তান্ত, গোপাল যে চন্দন চাহিয়াছেন সেই কথা ॥ ৩৪-৩৭ ॥

( ৩৫ পা ) \*গোপাল চন্দন ... .. আনিল ডাকিয়া ॥\* এই ৩৮২ হইতে ৪১ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। আশঙ্কা হইতে পারে, গোপাল চন্দন চাহিয়াছেন ভক্তগণ ইহা শুনিয়া আনন্দিত হওতঃ রাজপাত্রের ( রাজকর্মচারীর ) নিকট চন্দন প্রার্থনা করেন কেন? সে সময়ে তত্রত্য চন্দনবন উৎকলের রাজার আয়ত্ত থাকতে তদাজ্ঞা ব্যতীত অন্য কেহ চন্দন লইয়া দেশান্তরে যাইতে পারিত না। "এক বিপ্র" ইতি। চন্দনবহন নিমিত্ত এক ব্রাহ্মণ ও এক সেবক দিলেন; কিন্তু পুরীগোসাই তাহা-দিগকে নিবারণ করিয়া স্বয়ং চন্দন বহন করেন। ইহা পশ্চাৎ "হেন জন চন্দনের ভার বহি যায়" এই পয়ারে ব্যক্ত হইবে। তাঁহার সঙ্গে ছিলেন মাত্র। সখল সহিত, অর্ধের সহিত। ঘাটে, মাগুল লইবার স্থানে। দান, মাগুল। রাজলিখা, রাজার ছাড়। যদি বল, শ্রীগোপালের নিজের জন্ত চন্দন প্রার্থনা করতঃ শ্রীগোপীনাথে উহা দিতে বলেন কেন? ইহাতে বলিতেছেন, "স্বতন্ত্র ঈশ্বর" ইতি। তাঁহার আজ্ঞাপালনই আমাদের কর্তব্য, কিন্তু তাঁহার অভিপ্রায় জানি না; যে হেতু স্বতন্ত্র ঈশ্বর। এই দুই, পুরোক্ত ক্ষেত্র হইতে সঙ্গে সমাগত ব্রাহ্মণ ও সেবক।

বেতন, ক্ষেত্রে যে সখল পাইয়াছিলেন তাহা হইতে মাহিনা দেন। বাবৎ হৈল অন্ত, পুরী যে সকল চন্দন আনিয়াছিলেন, তাহা যে পর্য্যন্ত শেষ না হইল, তাবৎ-কাল তিনি রেমুণাতে থাকিলেন ॥ ৩৮-৪১ ॥

( ৩২, ৩৬ পা ) \*শ্রীশুকাল অন্তে... .. নাহি এ বিচার ॥\* ৪২২ হইতে ৪৪২ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। তিনবার স্বপ্নে, প্রথম কুঞ্জ হইতে গোপালমূর্ত্তি বাহির কর; দ্বিতীয় তাপশান্তির জন্ত চন্দন আন, তৃতীয় শ্রীগোপীনাথে চন্দন দাও। জঞ্জাল, উদেগ। পরাকাষ্ঠা, সীমা। বিরক্ত, নিস্পৃহ। মৌনী, রুখালাপ বর্জিত। গ্রাম্যবার্তা, বিষয়বার্তা। বুলে, চলে। মণেক, একমণ। জগাতি, জঙ্গল। কেহ বলেন, বিক্রয় দ্রব্যের কর আদায়ের স্থান ॥ ৪২-৪৪ ॥

( ৩৬ পা ) \*সঙ্গে এক বট..... শ্লোকের সহিতে ॥\* এই ৪৫২, ৪৬২ ও ৪৭২ পয়ারের ভাবার্থ সরল। বট, কড়ি। ষাঁর নামে সকল তাপের শান্তি হয়, সেই গোপালের তাপ ও তৎশান্তির জন্ত পুরীর নিকট চন্দন প্রার্থনা কিরূপে হইতে পারে? ইহাতে বলিতেছেন, "এই তার গাঢ়" পয়ার হইতে "হৈল দয়াবান্" পয়ার পর্য্যন্ত। পরীক্ষা করিয়া পুরীর প্রগাঢ় প্রেম লোকে দেখাইতে তাপশান্তি হলে চন্দন প্রার্থনা করেন। "অয়ীতি" শ্লোক। তার রূপায়, শ্রীরাধা রূপায়। নাহি চৌঠজন, শ্রীরাধাদি তিন জন্য ব্যতীত আর চতুর্থ জন নাই অর্থাৎ রুচ ও অধিরূচ ভেদে মহাভাব

দ্বিবিধ । অধিকৃত মহাভাবও মোদন ও মোহন নামে দ্বিবিধ । মোদন কেবল রাধিকাসুখেই প্রকাশ পায় । প্রবিলেব দশায় এই মোদনকে মোহন বলে । মোহন নামক ভাব এক শ্রীরাধাতেই উদয়, এই ভাব কোন অনির্কচনীয় গতিকে প্রাপ্ত হইলে, তাহাতে যে ভ্রম তুল্য কোন বিচিত্রতা হয়, তাহাকে দিব্যোন্মাদ বলে । ইহা শ্রীরাধাতেই সম্ভবে । উন্মাদবস্থায় শ্রীরাধা যাহা বলেন, তৎক্ৰপায় হৃদয়ে ঐ উন্মাদের সঞ্চারণ হওয়াতে পুরীর এই শ্লোক স্ফুটি হয়, শ্রীচৈতন্য শ্রীরাধাভাব অঙ্গীকার করায় এই শ্লোক আন্বাদন করেন । অতএব তিন জন ব্যতীত আর কেহ উহার অভিপ্রায় বুঝে না ॥ ৪৫-৪৭ ॥

( ৩৬ পা ) “অগ্নীতি ।” এই দ্বিতীয় শ্লোকের তাৎপর্য্য । শ্রীকৃষ্ণের মথুরা গমন জনিত মহাবিরহসমুদ্রে পতিতা শ্রীরাধার শাবল্যভাবের উদয় হইলে, তিনি শ্রীকৃষ্ণকে যাহা বলিয়াছিলেন, তাহা শ্রীমাধবেন্দ্রপুরী কৃত পদ্যে অনুবর্ণিত হইতেছে । প্রথমতঃ শ্রীরাধা স্বাপরাধ বশতঃ শ্রীকৃষ্ণ আগমন করিবেন না জানিয়া, পরমদৈন্যোদয়ে বলিতেছেন, “অগ্নি ।” অগ্নি শব্দটি কোমল সঙ্ঘোধন । হে “দীনদয়ার্দ্র” অর্থাৎ আমার ন্যায় দীনজনে যে তোমার নিরর্গল কৃপা তদ্বারা পরম স্নিহ্ব । অতএব হে তদগুণসম্পন্ন । যদিও আমি তোমাতে অপরাধিনী, তথাপি দয়ার্দ্রচিত্তহেতু তুমি এই দীনকে দর্শন দাও । অথবা,

ভব ও বিরহসমুদ্রে পতিতজনের প্রতি যে তোমার দয়া তদ্বারা উদ্বিগ্ণচিত্ত অর্থাৎ তাদৃশজনের দুঃখ বিনাশতৎপর । অতএব আমি অতি দীনা আমার ব্যাকুলতা অনুভব করিয়া কোথাও থাকিতে পার না ; সুতরাং দর্শন দাও । পুনরায় পুতনাবধাদি স্মরণ করতঃ শ্রীকৃষ্ণের নির্দয়ত্ব স্ফুটি হইলে শ্রীরাধা কহিতেছেন, “হে নাথ” অর্থাৎ নির্দয়রূপে তুমি স্ত্রীগণকে বধ কর । অতএব আমাদিগকে ত্যাগ তোমার কর্তব্য হইয়াছে । অথবা, দক্ষিণত্ব গুণোদয়ে শ্রীরাধা কহিলেন, “হে নাথ” অর্থাৎ তুমি সর্বজনরক্ষক ; সুতরাং তাদৃশস্বভাব ত্যাগ করতঃ আমাদিগকে মারিতে কেন মথুরা গমন করিলে ? দক্ষিণা যথা উক্তলে—

“অসহা মাননির্কঙ্কে নাগকে যুক্তবাদিনী ।

সামন্তিন্তেন ভেদ্যা চ দক্ষিণা পরিকীর্ণিতা ॥”

যে নায়িকা মানগ্রহণে অসহা ও নাগকের প্রতি মুক্তবাক্য প্রয়োগ করে এবং নায়কের স্তববাক্যে ঐসন্ন হয়, তাহাকে দক্ষিণা কহে । এখানে যুক্তবাক্য প্রয়োগ হইয়াছে । অথবা, শ্রীকৃষ্ণের পালনাদি গুণ শ্রীরাধায় স্ফুটি হওয়ায় কহিতেছেন, “হে নাথ” অর্থাৎ তুমি আমাদিগকে বহু প্রকারে রক্ষা করিয়াছ ; এক্ষণে কেন আমাদের ত্যাগ করিলে । অথবা, যিনি নাথ, তিনি অভীষ্টদানে সমর্থ । যিনি অভীষ্টদাতা, তিনি আমাদের অনভীষ্ট প্রদান করতঃ কোথায় না যাইতেছেন ? অথবা, অবহিখাভাবে কহিলেন, “হে নাথ” অর্থাৎ সস্বক পদের অনির্দেশ হেতু

তুমি কেবল আমার নাথ নহ, পরন্তু ব্রজবাসি ও মথুরাবাসিগণের নাথ। অতএব তাহাদের সুখ সম্পাদন কর। আমার অভিমানে তোমার কোন আশঙ্কা নাই। উত্তাপ প্রদান করা তোমার ধর্ম, স্মৃতরাং আমাদের ত্যাগে তোমার আর অপরাধ কি? ‘হায় হায় আমার অনাদরবাক্য দ্বারা আমার একমাত্র জীবন শ্রীকৃষ্ণ পুনরায় মথুরায় গমন করিলেন।’ বিরহবৈষণ্য হেতু ইহু স্মরণ করতঃ অসুয়াভাবে শ্রীরাধা কহিলেন, “হে মথুরানাথ” অর্থাৎ এক্ষণে তুমি মথুরানাগরীগণের নাথ। অতএব আমার অরক্ষণে তোমার কোন দোষ নাই। অথবা, ঈর্ষা বশতঃ কহিলেন, “হে মথুরানাথ” অর্থাৎ মথুরানাগরীগণ তোমার চিত্ত হরণ করিয়াছে। অতএব প্রাম্যকুলবালিকা ও পশুপালিকা আমাদের সহিত রমণ করিতে কেন তুমি আগমন করিবে? পূর্বে তুমি ব্রজনাথ ছিলে, এক্ষণে মথুরারমণীগণের রূপাদি শ্রবণ করতঃ তাহাদের উপভোগ করিতে গমন করতঃ মথুরানাথ হইয়াছ। তোমার স্বভাব অনবস্থিত; স্মৃতরাং ব্রজে কোন প্রয়োজনে আসিবে। শ্রীরাধা অসুয়াভাবে কহিতেছেন, যদিও মথুরানাগরী তোমায় অধীন করিয়াছে, তথাপি ক্রুত-জ্ঞতা অঙ্গীকার করিয়া একবার দর্শন দেওয়া সঙ্গত। এই অভিপ্রায়ে কহিলেন, “কদেতি।” অথবা, “হে সখি, শ্রীকৃষ্ণ অতিনির্দয়, কখনও তিনি আসি-বেন না। শ্রীকৃষ্ণ ব্যতীত কিরূপে আমি

প্রাণসকল ধারণ করিব।” এরূপ ঔৎসুক্যদয়ে শ্রীরাধা কহিলেন, “কদাবলোক্যসে।” অথবা, যদি বল, আমি (শ্রীকৃষ্ণ) তোমাদেরই সদা পালক, মথুরাস্থিত যাদবদির সুখ বিধান জন্য কয়েকদিন বাস করিব। তাহাতে সন্দেহ্যে কহিতেছেন, হে মথুরাজনপালক কবে তুমি আমাদের দেখা দিবে? যদি বল, সুহৃদগণের সুখবিধান করিয়াই আগমন করিব। ইহাতে ব্যাকুলভাবে শ্রীরাধা কহিলেন, “হে দয়িত” অর্থাৎ প্রাণতোষক, তোমার অদর্শনে মন অত্যন্ত অস্থির হইতেছে, এক্ষণে কি করি? দয়িত হেতু তছুপায় তুমিই বল। অথবা, যদি বল, তোমাদিগকে যখন পরিত্যাগ করিয়া আমি গমন করিয়াছি, তখন আমার নির্দয়তা অনুমান করতঃ আমার দুরাশা ত্যাগ করতঃ নিজ পতিকে ভজনা কর। শ্রীকৃষ্ণের এই অভিপ্রায় অনুমান করতঃ শ্রীরাধা কহিলেন, “হে দয়িত” অর্থাৎ হৃদয়নাথ, হৃদয় তোমাকেই নাথ রূপে জানে। অতএব সেই হৃদয়ের প্রতি কেন তুমি উদাসীন হইতেছ? যদি বল, আমাকে উদাসীন জানিয়া হৃদয়ের সৈর্য্য উৎপাদন কর। ইহাতে বলিতেছেন, “হৃদয়ং হৃদলোক কাতরমিতি।” অর্থাৎ হৃদয় কাতর হইয়াছে, তাহার ভদ্রাভঙ্গ বিচার নাই। ইহা জানিয়া যাহা উচিত হয়, তাহা বিধান কর। তোমার অদর্শনে প্রাণ স্থির হইতেছে না। এরূপ বুদ্ধি দ্বারা পরামর্শ করতঃ কিরূপে হৃদয়কে স্থির করিব।

ইহাই বলিতেছেন, 'জামাতীতি' অর্থাৎ হৃদয় অনবস্থা লাভ করিয়াছে। এতাদৃশী অবস্থাবিশিষ্টা হইয়া আমি কি করিব অর্থাৎ বাঁচিয়া থাকিব কি মরিয়া যাইব তাহা স্থির করিতে পারিতেছি না ॥ ২ ॥

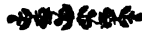
( ৩৬ পা ) "এই শ্লোক পড়িতে..... প্রেমনাট ॥" এই ৪৮৭ ও ৪৯৭ পয়ারের ভাবার্থ সরল। প্রেমোন্মাদ, প্রেম জনিত উন্মাদ। ইতি উতি, ইতস্ততঃ। ইহা উন্মাদের অনুভাব। না নিঃস্বরে বাণী, স্বরভেদ বুকাইল। স্বরভেদাদি বৈবর্ণ্য পর্য্যন্ত সাস্ত্রিক ভাব। নির্দেদাদি দৈন্য

পর্য্যন্ত ব্যক্তিকারীভাব। ঈষ্টানিষ্টের শ্রবণ ও দর্শন এবং বিরহাদিতে মোহের পূর্ক ও পর অবস্থা মদুশ বিচার শূন্য-তাকে জাড্য বলে। নিমেষরাহিত্য, তুষ্ণীভাব এবং বিশ্বরণাদি তাহার অশু-ভাব। উঘারিল, খুলিয়া গেল। প্রেম-নাট, প্রেমবিলাস ॥ ৪৮। ৪৯ ॥

( ৩৬৩৭ পা ) "লোকের সংঘট..... কৃষ্ণদাস ॥" ৫০৭, হইতে ৫২৭ পয়ার তিনটির ভাবার্থ সরল। বাহুড়িয়া, ফিরা-ইয়া। গোঙাইয়া, অতিবাহিত করিয়া। ছুঁহার, ভগবান্ ও ভক্তের ॥ ৫০-৫২ ॥

ইতি মধ্যলীলায়াং চতুর্থ পরিচ্ছেদে সুবোধিনী টিপ্পনী।

## পঞ্চম পরিচ্ছেদ ।



( ৩৭ পা ) "পদ্ম্যামিতী" এই প্রথম শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। এই পরিচ্ছেদে সাক্ষীগোপালের চরিত্র ও শ্রীনিত্যানন্দ কর্তৃক দণ্ডভঙ্গ বর্ণিত হইয়াছে। পূর্কের ন্যায় গ্রন্থকার শ্রীগোপালচরিত্র বর্ণন হেতু তৎকৃপা প্রার্থনার তাঁহাকে বন্দনা করিলেন ॥ ১ ॥

( ৩৭৩৮ পা ) "জয় জয় শ্রীচৈতন্য..... দিব কন্যাদান ॥" ১ম হইতে ৪র্থ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। "চলিতে চলিতে" ইতি। মহাপ্রভু রেমুণা হইতে যাজপুরে গমন করেন। যাজপুরে বৈতরণী নদীর

দশাশ্বমেধ নামক ঘাটে স্থান, ব্রাহ্মণ নগরে বরাহমুক্তি দর্শন, এবং নাভিগয়াতে বিরজাদেবীকে দর্শন করতঃ কটক যাত্রা করেন। রাজা প্রতাপরুদ্র যেখানে থাকিতেন, সেই স্থানে সাক্ষীগোপালকে লইয়া যাইতেন, এজন্য তখন সাক্ষি-গোপাল কটক নগরে ছিলেন। এক্ষণে ইনি সত্যবাদী গ্রামে আছেন। গোবিন্দ স্থানে, শ্রীগোবিন্দের বর্তমান পুরাতন মন্দিরের উত্তরদিকে শ্রীগোপালের মন্দির। শ্রীগোপালস্থানের পরিচয় হেতু শ্রীগোবিন্দস্থানের উল্লেখ করিয়াছেন, নচেৎ তৎকালে তথায় ছিল না ॥ ১-৪ ॥

( ৩৮ পা ) “ছোট বিপ্র.....জানিব নিশ্চয় ॥” এই ৫ম হইতে ৮ম পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। প্রদীপ, ঞ্জের্ত। ইহারে আমি দিল, ইহাকে আমি বাক দান করিলাম। গুরুবুদ্ধো, স্বশুরবুদ্ধে। জানিব, জানাইব ॥ ৫-৮ ॥

( ৩৯ পা ) ‘একদিন.....চাঁদ ধরিতে ॥’ এই ৯ম হইতে ১২শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। সাক্ষী বোলাইয়া, শ্রীগোপালকে সাক্ষী আনাইয়া। ন্যায়, উচিত বা নালিশ। ধর্ম যায়, কন্যাদান করিতেই হইবে, না দিলে ধর্ম নষ্ট হইবে। ন্যায় করি, বিবাদ করিয়া। লঘু বিপ্র, ছোট বিপ্র। বিবাহিতে বিবাহ করিতে ॥৯-১২॥

( ৩৯ পা ) “ঠেঙ্গা দেখি.....কর অঙ্গীকারে ॥” এই ১৩শ হইতে ১৬শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। নাহিক স্মরণ বলাতে মিথ্যা বলা হইলেও প্রাণ সঙ্কটে উহা দোষ হয় না, কেননা সত্য বলিলে কন্যা দিতে হইবে, তাহাতে শ্রী-পুত্রাদি বিষপানে প্রাণত্যাগ করিবে। তথাহি শ্রীভাগবতে অষ্টমে ১৯ অধ্যায়ে—

“শ্রীমু সর্গবিবাহে চ বৃত্তার্থে প্রাণসঙ্কটে।

গোত্রাক্ষণার্থে হিংসারং নানৃতং স্যাঙ্কু গ্পিতম্ ॥”

উৎসাহ পূর্বক শ্রীবলীকরণে, পরিহাসে, বয়ের প্রশংসা কথনে, প্রাণসঙ্কটে, গোত্রাক্ষণের হিতজন্য বৃত্তার্থে ও হিংসার মিথ্যাবাক্য দোষকর নহে। তথাহি শ্রুতিঃ—

“তস্মাৎ কাল এব দদ্যাৎ কালে

ন দদ্যাৎ তৎ সত্যানৃত্তে মিথুনী করোতি ॥”

সেই যেহু কালে দিব, কালে দিব না এরূপে সভামিথ্যার বোগ করিবে। তথাহি বাজবল্যঃ—

“বর্ণিনাং হি বধো যত্র তত্র সাক্ষানৃত্তং বধেৎ ॥”

বেথানে মহুবাগণের প্রাণ সঙ্কট হইবে সেখানে মিথ্যা সাক্ষ্য বলিবে। অতএব বড় বিপ্রের সত্যানৃত্ত বাক্য দোষাবহ নহে।

প্রাগলভ্য, ঔদ্ধত্য। ন্যায় ক্রিতিতে, উচিতকে অস্বাধা করিতে ॥ ১৩-১৬ ॥

( ৪০ পা ) .“তবে মুঞি.....তাহা যাইতে নারিব ॥” এই ১৭শ হইতে ২১শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। নহিব, হইবে না। লটপটী, গোলমেলে ॥১৭-২১॥

( ৪০ পা ) “বিপ্র কহে.....সেই স্থানে ॥” এই ২২শ পয়ারের ভাবার্থ। “প্রতিমা” ইতি। পরম ভক্ত ছোট বিপ্রের ভগবৎপ্রতিমায় শৈলাদিবুদ্ধি না থাকায় তাঁহাকে ব্রহ্মেশ্বরনন্দন বলিয়াছেন, কেন না ভক্তের তাঁহাতে তত্ত্বুঞ্জিই হইয়া থাকে; নচেৎ নারকী হয়। তথাহি ভগবদ্বাক্য—

“যো মাং সর্বেষু ভূতেষু সস্তম্যমানমীশ্বরম্।

হিয়ার্জাং ভক্ততে মেচ্যাস্তস্মন্যো ব জুহোতি সঃ ॥”

এইটি শিলাময়ী কিম্বা দারুণময়ী প্রতিমা এই যুক্তবুদ্ধি বশতঃ সর্বভূতে বর্তমান পরমায়া যে ঈশ্বর, আমাকে ত্যাগ করিয়া অর্থাৎ আমার সহিত প্রতিমার ঐক্যভাব না জানিয়া যে প্রতিমা ভজন করে অর্থাৎ লোকদৃষ্টিতে কেবল জলাময়ী অর্পণ করে, ভগ্নে যত শ্রদানের স্মার তাহা বিফল হয়।

উলটি, ফিরিয়া ॥ ২২ ॥

( ৪০৪১ পা ) “নুপুরের ধনি..... আনন্দ অন্তর ॥” এই ২৩শ হইতে ২৬শ পয়ারের ভাবার্থ সরল। সাক্ষি, রক্ষন করিয়া। ইবে, এক্ষণে। আইলু, আসিলাম। সাক্ষী, শ্রীগোপাল ॥ ২৩-২৬ ॥

( ৪১ পা ) “যদি বর দিবে.....আনন্দিত হয় ॥” এই ২৭শ হইতে ৩১শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। বুলি বলিয়া।

মাণিক্যাসিংহাসন, পূর্ন রাজার সিংহাসনের নাম ॥ ২৭ ॥

( ৪২ পা ) "সেই হৈতে.....দণ্ড যে ধরিল ॥" এই ৩২২ হইতে ৩৪২ পর্যায় পর্যন্ত ভাবার্থ ময়ল । ঠারঠারি, তাকাতাকি । ভুবনেশ্বর, কটকের দক্ষিণ পশ্চিম অংশে ; এই স্থানে ভুবনেশ্বর নামে অনাদিলিঙ্গ মহাদেব আছেন । ভার্গবিন্দী, পুর্ব তিন ক্রোশ উত্তরে অবস্থিত । এই নদীর তীরে শ্রীনিত্যানন্দ শ্রীচৈতন্যের দণ্ডভঙ্গ করায়, ইহাকে দণ্ডভাঙ্গা বলে ॥ ৩২-৩৪ ॥

( ৪২ পা ) "কপোতেশ্বর.....মহেশ দেখিয়া ॥" এই ৩৫২ পর্যায়ের ভাবার্থ । কি নিমিত্ত দণ্ডভঙ্গ করেন, তাহা শ্রীচৈতন্যভাগবতে আছে, ২য়, যথা,—

"দণ্ড হাতে করি হাসে নিত্যানন্দরায় ।  
দণ্ডের সহিত কথা কহেন নীলায় ॥  
অহে দণ্ড আমি যারে বহিয়ে ছদয়ে ।  
সে তোমারে বহিবেক এ তো যুক্তি নহে ॥  
এত বলি বলরাম পরম প্রচণ্ড ।  
ফেলিলেন দণ্ড ভাঙ্গি করি তিন খণ্ড ॥"

অথবা—ব্রহ্মচারী, গৃহী, বাণপ্রস্থ ও সন্ন্যাসী এই আশ্রম চতুষ্টয় সগুণ, সগুণ হইলে মায়ী পরভক্ত, তাহা হইলে কর্ণের অধীন এবং কর্মাধীন হইলে সংসারী । পরমহংসগণ আশ্রমাতীত ও নিগুণ । এই হেতু তাঁহাদের দণ্ড থাকে না । দণ্ডিগণ আশ্রমোচিত কর্ম না করিলে প্রত্যবায়ী হন । পরমহংস গুণাতীত বলিয়া বিধিনিষেধের কিঙ্কর নহেন । ভাগবতে ১১শ, ১৮অ, শ্লোক বলিয়াছেন—

"মৌনানীহানিলায়া দণ্ডা বাগ্ধেহচেভসাম্ ।

ন হেতে বদ্য সস্ত্যাক বেগুর্ভিন্ন ভবেদ যতিঃ ॥"

বাক্যের দণ্ড মৌন, বেহের দণ্ড কামাকর্ষ-ভ্যাগ, চিত্তের দণ্ড শ্রোণারাম, এই তিনটি দণ্ড সাধারণ নাই, হে উদ্ধব, সেইজন কেবল বাণের দণ্ডধারণে সন্ন্যাসী হন না ।

এ প্রমাণে দণ্ডাদি যতিচিহ্ন ধারণেই যতি হয়, তাহা নহে, কিন্তু তদ্বর্ষ-নিষ্ঠাতেই যতি হয়, এইটি পরম রসিক-জনে জানাইবার জন্ত দণ্ডভঙ্গ করেন । পূর্বে ত্রিদণ্ডের তিনখানি দণ্ড ধারণ করিতেন । শঙ্করাচার্যের সময় হইতে একদণ্ড হয় । বাক্, দেহ ও চিত্তের যখন গুণরুত্তি থাকে, তখন তাহাদের দণ্ডার্থ তৎস্মারক তিনখানি দণ্ড থাকে । পরমহংসগণের গুণরুত্তি না থাকায়, কখনই বাগাদির বিষয়োন্মুখতা হয় না, জজ্ঞ জাহারা দণ্ড ধারণ করেন না । অতএব সচ্চিদানন্দময় ভগবানের গুণ-সঙ্গ ও হইবার সম্ভাবনা নাই ; তাঁহার বাগাদির দণ্ড কি ? এই হেতু দণ্ড তিন খণ্ড করিয়া দেখাইলেন, ইহার বাক্, দেহ ও চিত্তের দণ্ডের প্রয়োজন নাই । মায়াদিকারের দণ্ড মায়ার প্রোতে ভাসিয়া যাউক । বাঁহার বাক্, দেহ ও চিত্ত সকলই সচ্চিদানন্দময়, তাঁহার আবার দণ্ড কেন ? এবং ইহাতে ইহাও দেখাইলেন, ভক্তিমাৰ্গে কোন আশ্রম বিশেষের প্রয়োজন নাই । অথবা, শ্রীক্ষেত্রে যাইয়া সার্কভৌমের নিকট যে ঐর্থ্যা প্রকাশ করিবেন, তাহাতে যতিচিহ্ন দণ্ডাদির প্রয়োজন নাই, এই হেতু শ্রীচৈতন্য দণ্ড ভাঙ্গান এবং সখ, রজঃ ও তম এই গুণ



ত্রয় খণ্ডনাভিপ্রায়ে তিনখণ্ড করেন ।  
অথবা—

“এহো কেনে দণ্ড ভাঙ্গে তেহো কেন ভাঙ্গায় ।  
ভাঙ্গাইয়া কেন ক্রুদ্ধ এহৌত দোষায় ॥  
দণ্ডভঙ্গলীলা এই পরম গভীর ।  
সেই বুঝে দৌহার পদে, যার ভক্তিদীর ॥৩৫॥”

( ৪২ পা ) “জগন্নাথের... ..প্রকাশিল ॥” এই ৩৬২ পয়ারের ভাবার্থ সরল । দেউল, শ্রীমন্দির । আঠারনালা, এই স্থানে নদীর উপরে যে সাঁকো আছে, তাহাতে আঠারটি ছিদ্র থাকায় ইহাকে আঠারনালা বলে । ইহাতে পার হইয়া পুরী যায় ॥ ৩৬ ॥

( ৪২ পা ) “নিত্যানন্দে প্রভু..... কর মোর দণ্ড ॥” এই ৩৭২ পয়ারের ভাবার্থ । এই পয়ারানুযায়ী স্বয়ং দণ্ড ভাঙ্গাতে শ্রীনিত্যানন্দের মিথ্যা কথা হইল এবং শ্রীচৈতন্যভাগবতোক্ত “দণ্ড হাতে করি হাসে” পয়ারে বলিয়াছেন, আমি ( শ্রীনিত্যানন্দ ) যাহাকে ( শ্রীচৈতন্যকে ) হৃদয়ে বহন করি, সে আবার তোমাকে বহন করেন, ইহা যুক্তিসঙ্গত নহে ; এই বলিয়া শ্রীনিত্যানন্দ দণ্ড ভঙ্গ করেন । অতএব উভয় গ্রন্থের সামঞ্জস্য কি ? ইহাতে বলিতেছেন, “প্রেমাবেশে পড়িলে” ইতি । শ্রীনিত্যানন্দ হৃদয়ে শ্রীচৈতন্য বাস করায় দণ্ড ভঙ্গ বিষয়ে দুই জনার ভরেই দণ্ডভঙ্গ হওয়াতে উহা মিথ্যা হইল না বা গ্রন্থ-দ্বয়ের অসামঞ্জস্য হইল না । তবে যে

উহা স্পষ্টরূপে না বলিয়া এইরূপে বলেন, তাহা প্রেমের স্বভাব বশতঃ অর্থাৎ শ্রীনিত্যানন্দ শ্রীচৈতন্যকে হৃদয়ে যে ধারণ করেন, তাহা প্রেমের কার্য্য । কিন্তু প্রেমিক প্রেমকে হৃদয় হইতে বাহির করেন না । যে হেতু তাহাতে প্রেম খর্ব্ব হয় বা থাকে না । তথাহি প্রেমসম্পূটে—

প্রেমা ঘোরসিকমোঃ স্থির দীপ এব  
হৃদেঋভাসয়তি নিশ্চলমেব ভাতি ।  
ঘারাদয়ং বদনভঙ্গ বহিষ্কৃতেশ্চ—  
দ্বির্দীপ্তি শীঘ্রমথবা লঘুতামুপৈতি ॥”

প্রেমরূপ স্থিরপ্রদীপ নায়ক ও নায়িকার হৃদয়রূপ গৃহকে প্রকাশ করে এবং নিশ্চলরূপে তথায় প্রকাশ পায় । কিন্তু মুখরূপ ঘর দিয়া যদি এই প্রেমপ্রদীপ বাহির হয়, তবে নির্দীপ হয় অথবা লঘুতাকে প্রাপ্ত হয় । অতএব এই দণ্ডভঙ্গলীলা প্রেমের কার্য্য ॥ ৩৭ ॥

( ৪২ পা ) “শুনি প্রভু মনে..... কৃষ্ণদাস ॥” এই ৩৮২ হইতে ৪০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । ব্যঞ্জি, প্রকাশ করতঃ । ভাঙ্গাইয়া কেনে ক্রুদ্ধ ইত্যাদি, কোধহলে শ্রীনিত্যানন্দাদির সঙ্গ ত্যাগ করিয়া অগ্রে জগন্নাথদর্শনে গমন, কেবল সার্কভৌমকে ক্রুপা করা । তাঁহারা সঙ্গে থাকিলে সার্কভৌমগৃহে গমন হয় না ; যে হেতু তাঁহারা ই স্নুহ করিতেন । মহাপ্রভুর এই অভিপ্রায় জানিয়া কিঞ্চিৎ কোধ উৎপাদনের জন্ম শ্রীনিত্যানন্দ সেই দিনেই দণ্ড ভঙ্গ করেন ॥৩৮-৪০॥

ইতি মধ্যলীলায়াং পঞ্চম পরিচ্ছেদে সুবোধিনী টিপ্পনী ।

## ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ ।



( ৪৩ পা ) ‘নৌমীতি ।’ এই প্রথম লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । এই ষষ্ঠ পরিচ্ছেদে সার্ক-ভৌমের ভক্তি বলিবেন । গ্রন্থকার পূর্ব্বের ন্যায় এই শ্লোকে মঙ্গলাচরণ করিয়া শ্রীচৈতন্যমহাপ্রভুকে প্রণাম করিলেন ॥ ১ ॥

( ৪৩ পা ) ‘জয় জয়ঃ. . . সাঙ্গিক বিকার ॥’ এই ১ম হইতে ৪র্থ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । মন্দিরে, গর্ভ মন্দিরের বাহির মন্দিরে । পড়িছা, মন্দিরের সেবক । শিষ্য পড়িছা ঘারে ; পড়িছাগণ মধ্যে সার্কভৌমের বাঁহারা শিষ্য ছিলেন, তদ্বারা । সাঙ্গিকবিকার, সাঙ্গিকভাব । তথ্যহি রসামৃতসিন্ধুতে—  
“রুক্ষসম্বন্ধিঃ সাক্ষাৎ কিঞ্চিৎ ব্যবধানতঃ ।  
ভাবৈশিষ্ট্যমিহাক্রান্তং সন্ধ্যমিত্যুচ্যতে বৃথৈঃ ॥  
সন্ধ্যাম্যং সমুৎপন্নং যে ভাবান্তেতু সাঙ্গিকাঃ ।  
নিগ্ধা দিগ্ধাস্তথা রুক্ষা ইত্যামী ত্রিবিধা মতাঃ ॥”

সাক্ষাৎ শ্রীকৃষ্ণসম্বন্ধি অথবা কিঞ্চিৎ ব্যবধান হেতু ভাবসমূহে চিত্ত আক্রান্ত হইলে পণ্ডিতগণ তাহাকে সন্ধ্য বলেন । সন্ধ্য হইতে উৎপন্ন যে সকল ভাব তাহাদিগকে সাঙ্গিক বলা যায় । এই সাঙ্গিক তিন প্রকার, নিগ্ধ, দিগ্ধ ও রুক্ষ ।

ঐ তিনটি মুখ্য ও গৌণ ভেদে সাঙ্গিক ভাব আট প্রকার—সুস্থ, স্বেদ, রোমাঞ্চ, স্বরভেদ, কম্প, বৈবর্ণ্য, অঙ্গ ও প্রলয় ॥১-৪॥

( ৪৩ পা ) “সুদীপ্ত সাঙ্গিক . . . . . বড় চমৎকার ॥” এই ৫ম পয়ারের

ভাবার্থ । যদিও সত্ত্বমূল প্রযুক্ত সমুদায় ভাব সাঙ্গিক, তথাপি সুস্থাদি সকল সত্ত্বমূল নিবন্ধন সাঙ্গিক বলিয়া প্রসিদ্ধ । সত্ত্বের তারতম্য প্রযুক্ত প্রাণ ও দেহে ক্ষোভের তারতম্য হয় ; এই হেতু সকল সাঙ্গিক ভাবেরই তারতম্য আছে । এই সাঙ্গিক উত্তরোত্তর বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া ধুমায়িতা, অলিতা, দীপ্তা ও উদীপ্তা এই চারি প্রকার হয় । উক্ত বৃদ্ধি বহুকাল ব্যাপিত, বহুঅঙ্গ ব্যাপিত ও স্বরূপের উৎকর্ষ, এই তিন প্রকার হয় এক সময়ে যদি পাঁচই অথবা সমুদায় ভাব উদ্ভিত হইয়া পরম উৎকর্ষ প্রাপ্ত হয়, তাহা উদীপ্ত । সুদীপ্তা ভাব যথা রসামৃতে—  
“উদীপ্তা এব সুদীপ্তা মহাভাবে ভবন্ত্যমী ।  
সর্ব্ব এব পরং কোটিং সাঙ্গিকা যত্র বিভ্রতি ॥”

সাঙ্গিক ভাবসকল মঙ্গলভাবে পরম উৎকর্ষতা ধারণ করে । এই হেতু উদীপ্তভাব মহাভাবে সুদীপ্তা হয় । সুখ ও দুঃখজনিত চেটাকে ও জ্ঞানশূন্যতাকে প্রলয় বলে । এই প্রলয়, উদীপ্ত সাঙ্গিকভাব এবং সুদীপ্তাভাব নিত্যসিদ্ধ (পারিষদ) ভুক্ত প্রকাশ পায় । যে মহাভাবে সাঙ্গিকভাব সকল উদীপ্ত হয়, তাহাকে রুচ্যভাব বলে । বাহা মুকুলমহিষীগণের অতি দুর্লভ এবং ব্রহ্মদেবীগণের একমাত্র বেত্ত সেই ভাবকে মহাভাব বলে ।

শ্রেষ্ঠ, অমৃততুল্য, স্বরূপসম্পত্তি সেই ভাব, মনকে স্বীয় স্বরূপকে লাভ করায় । যে মহাভাবে রুচ্যভাব অনুভাব হইতে কোন বৈশিষ্ট্যপ্রাপ্ত অনুভাব দৃষ্ট হয়,

তাহাকে অধিরূঢ় ভাব বলে । এখানে  
শ্রীচৈতন্যের অধিরূঢ় ভাব এবং সূদীপ্তা-  
ভাবাদি দেখিয়া সার্কর্ভৌম মনে করি-  
লেন। এই দৃষ্ট ভাবময়কল ভ্রঙ্গগোপীতেই  
সম্ভবে, ইহা মনুষ্যদেহে কিরূপে হইল ?  
ইহা অতি আশ্চর্য্যের বিষয় ॥ ৫ ॥

( ৪৩ পা ) “এত্ চিস্তি .....বার্ত্তা  
আরবার ॥” এই ৬ষ্ঠ হইতে ৮ম পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ মরল । উক্তরিল, উপস্থিত  
হইল । তৈছে, মুক্তিভাষ্যায় ॥ ৬-৮ ॥

( ৪৪ পা ) “মুকুন্দ কহে.....প্রভুর  
পদধরনি ॥” এই ৯ম হইতে ১৩শ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ মরল । ছুঃখহর্ষ, মোহা-  
নন্দা দর্শনে ছুঃখ, অনেকক্ষণ পর দর্শনে  
হর্ষ । মাখে, মজে ॥ ৯-১৩ ॥

( ৪৪ পা ) “সার্কর্ভৌম কহে.....  
কহিতে লাগিলা ॥” এই ১৪শ হইতে  
১৯শ পয়ারের ভাবার্থ মরল । পাখালি,  
ধৌত করিয়া । লাফরাব্যঞ্জন, চার  
পাঁচটি তরকারির মিশ্রিত ব্যঞ্জন । পিঠা  
পানা, ঘৃতসিক্ত পিষ্টকাদি । সমাধ্যায়ী,  
এক গুরুর পরম্পর ছাত্রকে সমাধ্যায়ী  
বলে । দৌহাকে, নীলাশ্বর চক্রবর্ত্তী ও  
জগন্নাথ মিশ্রকে ॥ ১৪ ১৯ ॥

( ৪৫ পা ) “সহজেই পুজ্য.....  
হয়েন যদ্যম ॥” এই ২০শ হইতে ২৪শ  
পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ মরল । উপকর্ত্তা,  
উপকারী । মাতৃষমা, মাসী । শয্যোধান,  
গাত্রোধানলীলা । ক্লক্ককর্ণামৃত্তে বর্ণিত  
হইয়াছে যথা—

“কলকণিতকঙ্কণং করনিকঙ্কণীভাষরং

কম প্রস্তুতকুঙ্কলং গলিতবর্ষকৃষ্ণং বিভোঃ ।

পুনঃ প্রকৃতিচাপলং প্রণয়িনীভূজাবস্রিতং  
মম ক্ষু রুত্ব মানসে মদনকেশিশয্যোখিতম্ ॥”  
যাহাতে কঙ্কণ মধুর শব্দ করিতেছে, পীতবসন  
করে অবরুদ্ধ হইতেছে, ক্লান্তিক্রম কুস্তল ইত্যন্তঃ  
প্রস্তুত হইতেছে, পুনঃ পুনঃ স্বভাববশে চপল  
এবং যাহা প্রণয়িনীর ভূজঘরে আবদ্ধ, সেই প্রাতঃ-  
কালীন মদনাবেশ বশতঃ শয্যোধানলীলা আমার  
মানসে নিয়ত ক্ষুণ্টি হউন ।

প্রকৃতিবিনীত,স্বভাব বিনয়যুক্ত ॥২০-২৪॥

( ৪৫ পা ) “গোপীনাথ কহে.....  
বিজের গোচর ॥” এই ২৫শ হইতে  
২৭শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ মরল । বাছা-  
পেক্ষা, গৌরবাপেক্ষা ; এই হেতু বড়  
সম্প্রদায় উপেক্ষা করিয়াছেন । যোগ-  
পটে, সন্ন্যাসিগণের বস্ত্র বিশেষ, সন্ন্যাসি-  
সিরা, ঐ বস্ত্র দ্বারা জানু ও পৃষ্ঠবন্ধন  
পূর্বক উল্লঙ্গানু হইয়া উপবেশন করিয়া  
থাকেন । সন্ন্যাসিগণ যে সম্প্রদায়ে  
সংস্কারিত হইয়া যোগপটে গ্রহণ করেন,  
নেই সম্প্রদায়েরই উপাদি প্রাপ্ত হইয়া  
থাকেন । ইহাতেই গীমা, ইনিই স্বয়ং  
ভগবান্ । বিজের গোচর, তত্ত্বজ্ঞব্যক্তিই  
জানেন ॥ ২৫-২৭ ॥

( ৪৫ পা ) শিষ্যগণ কহে.....  
জানিবারে ॥” এই ২৮শ পয়ারের  
ভাবার্থ । গোপীনাথচার্য্যের মুখে প্রভুর  
ঈশ্বরতত্ত্বের কথা শুনিয়া শিষ্যগণ (সার্ক-  
র্ভৌমের ছাত্রগণ) বলিলেন, আপনি  
কোন্ প্রমাণে ইহাকে ঈশ্বর বলিয়া স্থির  
করিয়াছেন ? গোপীনাথচার্য্য কহি-  
লেন, আশুবাক্যই ( প্রকৃত বাক্যার্থ-  
গোচর যথার্থ জানবানই আশু বা দিক্কা-  
স্থিত ) ইহার ঈশ্বরত্বের প্রমাণ । বিজ

লোকেরা ইহাকে ঈশ্বর বলিয়া থাকেন । যেহেতু ঋতি বলেন, “নাবেদ বিস্ময়তে তৎ ব্রহ্মত্বম্” সেই পরমেশ্বরকে অবৈদজ্ঞ পুরুষ অনুভব করিতে পারে না ? দাস্তিক শিষ্যগণ বলিলেন, ইহাকে ঈশ্বর বলিয়া অনুমান করিবার পূর্বে ঈশ্বরত্বসাধক লিঙ্গ জ্ঞানের প্রয়োজন ।

অহুমিত্তিরূপ তৎপরবর্তী জ্ঞান বিশেষের সাধনকে অহুমান বলা যায় । “ধূমোদগারী পর্কত অগ্নিবিশিষ্ট” ইত্যাদি স্থলে অগ্ন্যাদিজ্ঞান অহুমিতি এবং উক্ত অহুমিত্তির সাধনীত্বত ব্যাপ্তিজ্ঞান অর্থাৎ ধূমে বহ্নির ব্যাপ্তি আছে । এবিধ জ্ঞানই অহুমান । অহুমান শব্দের অর্থ পশ্চাৎ জ্ঞান । প্রথম লিঙ্গ পরামর্শ অর্থাৎ হেতুর (ধূমের জ্ঞান) । পরে দ্বিতীয় লিঙ্গ পরামর্শ বা লিঙ্গলিঙ্গীর ( হেতু সাধ্যের কিনা ধূমে বহ্নির ) ব্যাপ্তিজ্ঞান ( অব্যক্ত-চরিত পরম্পরাগত বা যোগপথরূপ সষকের জ্ঞান ) । এই জ্ঞানই অহুমান । তৃতীয় লিঙ্গ পরামর্শ বা পরামর্শ ( ব্যাপ্যম্ ) । তজ্জ্ঞ সাধারূপ অপ্রত্যক্ষ অর্থের জ্ঞান ( অহুমিতি ) ফল । পক্ষধর্মতা জ্ঞানকেই পরামর্শ বলা যায় । পক্ষধর্মতাজ্ঞান শব্দের অর্থ, ব্যাপ্তিবিশিষ্টবৈশিষ্ট্যজ্ঞান, অর্থাৎ সাধ্যের ( বহ্নির ), সহিত ব্যাপ্তিবিশিষ্ট হেতুর ( ধূমের ) পক্ষবৃত্তি জ্ঞান ( পর্কতে অবস্থিতের জ্ঞান ) । প্রথমতঃ রন্ধনশালাদিতে ব্যাপক ( বাহ্য ব্যাপ্য [হইতে অধিক স্থানে থাকে] বহ্নির সহিত ব্যাপ্য ( বাহ্য ব্যাপক [হইতে অল্প স্থানে থাকে] ধূমের ব্যাপ্তি; ( বাস্তবিক যোগপথ বা সামান্যধিকরণ্য অর্থাৎ এক আধারে স্থিতি ) গৃহীত ( ধূম বহ্নির ব্যাপ্য, এইরূপ অহুভববিশেষ বা ব্যাপ্তিজ্ঞান উৎপন্ন ) হয় । পরে কালাস্তরে পর্কতাক্রিতে ধূম দৃষ্ট হইলে, পূর্বে প্রত্যক্ষ ব্যাপ্তির স্মরণ হয় । পরে বহ্নির সহিত ব্যাপ্তিবিশিষ্ট ধূমের পর্কতাদি পক্ষে বিস্তার জ্ঞান জন্মে । এই জ্ঞানই পরামর্শ ।

পরিশেষে ভাদৃশ পরামর্শের সাহায্যেই পর্কতাক্রিতে বহ্নিবিশিষ্ট বলিয়া জ্ঞান হয় । এই শেষোক্ত জ্ঞানই অহুমিতি । লিঙ্গদর্শন তিন্ন লিঙ্গলিঙ্গীর সষকের জ্ঞান হয় না । লিঙ্গলিঙ্গীর সষক আবার পূর্বেই জ্ঞাত হওয়া চাই ; নতুবা অনহুত্ব লিঙ্গলিঙ্গী সষকের স্মরণ হইতে পারে না । লিঙ্গলিঙ্গিসষকের স্মরণ তিন্ন তজ্জ্ঞ পরামর্শ ও তজ্জ্ঞ অহুমিতিও অস্মিতে পারে না । সুতরাং ঈশ্বরত্বসাধকের লিঙ্গ জ্ঞান কি ?

গোপীনাথার্চ্য্য কহিলেন, অনুমান ঈশ্বরের প্রমাণ নহে ; সাবয়ত্বাদি লিঙ্গ দ্বারা বিশ্ব কারণ ঈশ্বরের অস্তিত্ব সাধিত হইতে পারিলেও ঈশ্বরত্ব সাধিত হইতে পারে না ।

দোষ বশতঃ যথাবৎ বস্তুগ্রহণে অসামর্থ্য ঘটিলে প্রত্যক্ষের ব্যতিচার ঘটে । ইঞ্জিয়দোষ যেরূপ প্রত্যক্ষের বাধক, তজ্জপ হেতুদোষ অহুমানের বাধক । যে দোষ বশতঃ অহুমিতি ও তাহার কারণ, এই উভয়ের অজ্ঞতরের জ্ঞানের বিরোধ বা বাধা উপস্থিত হয়, তাহার নাম হেতু-দোষ । এই হেতুদোষ বশতঃ অহুমান ভ্রান্ত হয় । বৃষ্টি দ্বারা অগ্নি নির্বাণিত হইলেও অনেক-ক্ষণ পর্যন্ত অধিক পরিমাণে ধূমোদগম হইতেছে দেখিয়া পর্কতে বহ্নির অহুমান করিলে, ঐ অহু-মান ভ্রান্ত হইয়া পড়ে । অন্ধকারগৃহে রন্ধকে সর্প দেখিয়া তাহাকে বিবাক্ত বলিয়া অহুমান । মকমরীচিকার জলে মৎস্যের অহুমান । ইত্যাদি অহুমান ভ্রান্ত হয় । অহুমান স্মরণ মূলতঃ শুদ্ধ নহে, অতএব তদ্বারা যে অহুমিতি তাহাও শুদ্ধ হইতে পারে না । মনে করুন, আমরা এই বিশ্ববাস্যের বিচিত্র কৌশল দেখিয়া অহুমান করিব, ইহা অবশ্য কোন জ্ঞানবান্ শিল্পী কর্তৃক রচিত হইয়াছে । এরূপ অহুমান আনামিগের কাণ্ড সাহুস্তে, কিন্তু আনামিগের বাক্যের সহিত

বিশ্বকার্যের কি কোন সাদৃশ্য আছে? আমরা ঘট ও পটাদি নির্মাণ করি। এই বিশ্ব কি ঘট পটাদির স্তায় বস্তুবিশেষ? ঘটাদির উৎপত্তি দেখিয়াছি বলিয়াই উহাকে কার্য্য বলে। বিশ্বের উৎপত্তি দেখি নাই, তবে উহাকে কার্য্য বলি কেন? অবশ্য এ সংসারে অনেক বস্তু আছে, বাহাদিগের উৎপত্তি আমরা দেখি নাই, অগ্চ আমাদিগের কার্য্যের সহিত সাদৃশ্যে উহাদিগের উৎপত্তি ও তৎকার্য্যের অনুমান করিয়া থাকি। কিন্তু বিশ্বকে কি সেইরূপে বা বিশ্বকার্য্যকে তদ্রূপে অনুমান করা হয়? পার্শ্ববিশিষ্ট সাদৃশ্যে বিশ্বশিল্পীর অনুমান মূলতঃ অশুদ্ধ। অস্ত্র ঘটাদির কারণ সাদৃশ্য, অস্ত্র বিশ্বের কারণও তাদৃশ্যই হইবে এ কথা কে বলিতে পারে? সাদৃশ্য ঘটনার বিসদৃশ কারণ তো অনেকই দৃষ্ট হয়। কোন স্থানে কোন একটি যন্ত্রাদি প্রত্যক্ষ করিলে মনে হয়, উহা অবশ্য কোন মানবের জ্ঞাননৈপুণ্য দ্বারা উৎপন্ন। কারণ মহুবা কর্তৃক ঐরূপ যন্ত্রাদি নির্মিত হইতে আমরা অনেক স্থানেই প্রত্যক্ষ করিয়াছি। কিন্তু কোন ব্যক্তি কর্তৃক এই বিশ্বের কোন অংশই উৎপাদিত হইতে দৃষ্ট হয় নাই। অতএব এই বিশ্বের জ্ঞানবান্ কর্তারও অনুমান হইতে পারে না। সাবরববস্ত্রমাত্রই কর্তৃসাপেক্ষ; বিশ্ব সাবরব, অতএব বিশ্বও কর্তৃসাপেক্ষ; এইরূপ ব্যাপ্তিসিদ্ধক গোণরূপ অনুমান প্রমাণ দ্বারা ঈশ্বরের অস্তিত্বমাত্রই সাধিত হইয়া থাকে, ঈশ্বর-তত্ত্ব সাধিত হইতে দেখা যায় না; ঈশ্বরের স্বরূপ নির্ণয় করা যায় না। ঈশ্বরের রূপা ব্যতিরেকে ঈশ্বরতত্ত্বের জ্ঞান হয় না, ঈশ্বরকে ঈশ্বর বলিয়া বুঝা যায় না।

ঈশ্বরতত্ত্বের অনুভব তাঁহার রূপা ব্যতীত সিদ্ধ হয় না। “অথাপীতি” শ্লোক দ্বারা তাহা প্রমাণ করিতেছেন ॥ ২৮ ॥

( ৪৫ পা “অথাপীতি।” এই দ্বিতীয় শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ

আছে। হে দেব, তত্ত্ব দ্বারা তোমার পাদপদ্মের রূপালেশ প্রাপ্ত হইয়া অনু-গৃহীত হইলেই তোমার অপার মহিমার তত্ত্ব বা লীলার তত্ত্ব জানিতে পারে। তোমার রূপা শূন্য হওতঃ একাকী বা মহশ্রজ্ঞানির গুরু হইয়াও শাস্ত্রাভ্যাস দ্বারা বিচার করতঃ ও যোগাভ্যাস দ্বারা অনুসন্ধান করিয়াও তোমার তত্ত্ব জানিতে পারে না। তথাহি মুণ্ডকোপনিষদে—

“নারমাস্মা প্রবচনেন লভ্যো

ন মেধয়া ন বহনা শ্রুতেন।

যমেবৈব বৃণতে তেন লভ্যন্তশ্চৈব

আস্মা বৃণতে তনুং স্বান্ ॥

ঈশ্বরতত্ত্ব, বেদশাস্ত্র প্রচুর অধ্যয়ন দ্বারা লভ্য নহেন, গ্রন্থার্থধারণশক্তি দ্বারা লভ্য নহেন ও পুনঃ পুনঃ শ্রবণ দ্বারাও লভ্য নহেন। তবে কিসে ঈশ্বরতত্ত্ব জানা যায়? ইহাতে বলিতেছেন, “যমিতি।” অর্থাৎ যিনি তত্ত্বমান্ হইয়া পরমে-শ্বরকে জানিতে ইচ্ছা করেন, তাঁহার রূপা দ্বারা তিনি তাঁহার তত্ত্ব জানিতে পারেন; অস্ত্র সাধনা দ্বারা তাঁহার তত্ত্ব অবগত হওয়া যায় না। স্তব-বান্ও সেই ভক্তের নিকট নিজতত্ত্ব প্রকাশ করেন ॥ ২ ॥

( ৪৬ পা ) “যদ্যপি.....নাই কিছু দোষ ॥” এই ২৯শ হইতে ৩১ং পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। উক্ত শিষ্য-বাক্যে সার্কভৌম্ মৌন থাকায় মৌন সম্মতি লক্ষণ স্মায়ে, তাহাতে তাহার সম্মতি বুঝিয়া গোপীনাথচার্য্য সার্কভৌমকে বলিলেন, “যদ্যপি” ইতি। ভট্টাচার্য্য, ভূমি জগদগুরু, শাস্ত্রজ্ঞ ও পণ্ডিতপ্রধান হইয়াও ঈশ্বরের অনুগ্রহ ব্যতিরেকে ঈশ্বরকে বিদিত হইতে পার না। ইহা

তোমার দোষ নহে । পাণ্ডিত্যাদি দ্বারা ঈশ্বরতত্ত্ব অনুভব করা যায় না । ইহা শাস্ত্রই বলিতেছেন । সার্কভৌম এতাবৎকাল নীরব ছিলেন । আর সঙ্ক করিতে না পারিয়া, কিঞ্চিৎ বিরক্তি সহকারে বলিলেন, আচার্য্য, যথেষ্ট হইয়াছে, সাবধানে কথা কও । আমি ঈশ্বরের রূপা ব্যক্তিরেকে ঈশ্বরকে জানিতে পারি নাই । তুমি যে ঈশ্বরের রূপা লাভ করিয়াছ, তাহার প্রমাণ কি ? আচার্য্য কহিলেন, “বস্তুবিষয়” ইতি । যে বস্তু যাদৃশ, তদ্বিষয়ে তাদৃশ জ্ঞানই বস্তুতত্ত্বজ্ঞান । বস্তুতত্ত্বজ্ঞানই রূপাতে প্রমাণ । যেমন ঘট দর্শনে স্তম্ভিকাত্ত্ব জ্ঞান ; তদ্রূপ ঈশ্বর দর্শনে ঈশ্বরতত্ত্বজ্ঞান । ইহাই তৎরূপার প্রমাণ । আমি যখন তাঁহাকে ঈশ্বর বলিয়া জানিয়াছি, তখন অবশ্য ঈশ্বরের রূপাও লাভ কবিয়াছি । শ্রীচৈতন্যের ঈশ্বরতত্ত্ব প্রমাণ দেখাইতেছেন, “ইহাঁর” ইতি । ইহাঁতে প্রলয়াখ্য সূক্ষীণ্ড ভাবরূপ ঈশ্বরের লক্ষণসকল পরিস্কুটই হইতেছে, এই যে মহাপ্রোমাবেশ ইহাঁর দর্শন করিয়াছ । ইহাই তাঁহার ঈশ্বরতত্ত্ব প্রমাণ । কেননা তাহা মনুষ্যদেহে হয় না । তথাপি যে তুমি ইহাঁকে ঈশ্বর বলিয়া বিদিত হইতে পার নাই, ইহা মায়ারই প্রভাব জানিবে । ইষ্টগোষ্ঠী, তত্ত্বনিশ্চয় নিমিত্ত সভা । ভট্টাচার্য্যহাসিয়া বলিলেন, আচার্য্য, রাগ করিও না, বিচারে দোষও গ্রহণ করিও না ; কারণ শাস্ত্রবিচারে কাহারও দোষ গ্রহণ করা উচিত হয় না । আমি যাহা কিছু বলিব, শাস্ত্রমতই বলিব ॥ ২৯-৩১ ॥

( ৪৬ পা ) “মহাভাগবত.....নাহিক বিচার ॥” এই ৩২৭ হইতে ৩৫৭ পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । শ্রীচৈতন্য যে পরম ভগবন্ত, তাহা আমি অস্বীকার করি না ; কিন্তু তাঁহাকে ঈশ্বর বলিয়াও স্বীকার করিতে পারি না । কলিযুগে ঈশ্বরের অবতার স্বীকৃত হয় না । কলিতে বিষ্ণুর অবতার নাই বলিয়াই, তাঁহাকে ‘ত্রিযুগ’ বলা হয় । আচার্য্য কিছু দুঃখিত হইয়া উক্ত বাক্য খণ্ডন করিলেন, “শাস্ত্রজ্ঞ” ইত্যাদি । ভট্টাচার্য্য, তুমি কেবল শাস্ত্রজ্ঞ বলিয়া অভিমান কর । কলিতে বিষ্ণুর অবতার মাত্র নিষিদ্ধ হয় নাই । কলিতে লীলাবতার হয় না বলিয়াই তাঁহাকে ‘ত্রিযুগ’ বলা হয় । শ্রীমদ্ভাগবত ও মহাভারত, শাস্ত্রের মধ্যে প্রধান । এই দুই প্রধান শাস্ত্রেই কলিতে যুগাবতার স্বীকৃত হইয়া থাকে । অবধান, জ্ঞান । তর্কগিষ্ঠ হৃদয় হেতু তোমার সে বিচার বুদ্ধি নাই । কলিতে যুগাবতার সম্বন্ধে শ্রীভাগবত ও মহাভারতের শ্লোক তিনটির দ্বারা পরে প্রমাণ করিতেছেন ॥ ৩২-৩৪ ॥

( ৪৬ পা ) “আসন্নিত্তি ।” “কৃষ্ণবর্ণ-মিত্তি ।” ও সূবর্ণবর্ণ ইতি ॥” তৃতীয়, চতুর্থ ও পঞ্চম শ্লোকের ভাবার্থ আদিলীলার ভাবার্থ ব্যাখ্যায় ৯৮, ১০৫, ও ১০৬ পৃষ্ঠায় দেখিবেন । মহাভারত ও শ্রীভাগবতশাস্ত্রের প্রমাণ দ্বারা গোপীনাথ শ্রীচৈতন্যাবতার প্রমাণিত করিলেন ॥ ৩-৫

( ৪৬ পা ) “তোমার আগে..... মায়ার প্রসাদ ॥” এই ৩৫৭ পয়ারের ভাবার্থ সরল । আগে, নিকট । উষর

ভুগিতে, ক্ষারভুগিতে । মায়ার প্রসাদ, মায়ারই মহিমা । ক্ষারভুগিতে যেমন মার ও গঙ্গের অভাব হেতু বীজের অঙ্কুর হয় না, তদ্রূপ তোমার হৃদয়ে উক্তি না থাকায় এবং রসশোষক বৈরাগ্যমূলক অধৈতবান্দ পাকার শাস্ত্রের প্রকৃত মর্শ্ব প্রকাশ পায় না । ক্ষেত্রপতির রূপায় যেমন ক্ষেত্রের উর্ধ্বরতা শক্তি হয় ; তদ্রূপ হৃদয় রূপ ক্ষেত্রপতি শ্রীচৈতন্যের যে দিন রূপা হইবে, সেই দিন তোমার শুক হৃদয় মার ও রসযুক্ত প্রেমরূপ সুফল প্রসব করিবে, শাস্ত্রের প্রকৃতমর্শ্ব তোমার হৃদয়ঙ্গম হইবে এবং আমার ন্যায় শ্রীচৈতন্যে ঈশ্বর বোধ হইবে ও তখন তুমিও শ্রীচৈতন্যের ঈশ্বরত্ব সাধন করিবে । সকল শাস্ত্র জাঙ্ঘল্যমান থাকিলেও যে তোমার শিষ্যগণ ঘোর কূতর্ক উত্থাপন করিতেছে, সে কেবল মায়ারই মহিমা । পর শ্লোক দ্বারা উহা প্রমাণ করিতেছেন ॥ ৩৫ ॥

( ৪৭ পা। “যচ্ছক্তয় ইতি ।” এই ষষ্ঠ শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । ঈশ্বরত্বনির্ণয়ে ঈশ্বরের মায়ায় যে সকলেই মোহিত হয়, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ।

যদি বল এই বিশ্বের কারণ যদি ঈশ্বর, তাহা হইলে কেহ তাঁহাকে অধৈত বলেন, কেহ বৈত বলেন, কেহ জগৎ হইতে অতিরিক্ত বলেন, কেহ স্বভাব বলেন ইত্যাদিরূপে তৎস্ববিদগণ কর্তৃক বোধিত হইলেও বিবাদ-সম্বাদকারিগণ তৎ-নিশ্চয়ে কেন পুনঃ পুনঃ মোহিত হন ? তদ্বত্তরে বলিতেছেন, “যচ্ছক্তয় ইতি ॥ অর্থাৎ তাঁহারই মায়ার উদ্বার মোহিত হন । তথাহি প্রথমে—

“নাস্তং গুণানামগুণত্ব

জগ্মুর্বোগেশ্বর যে ভবপাত্মমুখ্যঃ ॥”

তাঁহার কল্যাণকর গুণগণের অন্ত বোগীশ্বর ভব ও ব্রহ্মাদি দেবগণও প্রাপ্ত হন নাই । অতএব অস্ত্রে তাঁহার উৎসর্গে মায়ার মোহিত না হইবে কেন ? পরন্তু তাঁহার অপ্রাকৃত গুণ নির্ণয়ে অপরাধী হওতা মোহিত হইলেন ॥ ৩৬ ॥

( ৪৭ পা। ) “যুক্তমিতি ।” এই সপ্তম

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীকৃষ্ণ-মায়ায় মুগ্ধ হইয়া বাদিগণ যে নানা কথা বলে তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ।

যদিও বিসম্বাদে সমস্ত মত দ্বারা নিজমতকে অমুখ্য করিয়া শ্রীকৃষ্ণ সেই সেই মতকে প্রশংসা করিতেছেন, “যুক্তমিতি ।” বেদজ্ঞত্রাঙ্কণ যেরূপ বলেন, তাহা যুক্ত । যদি বল, সর্বমত যদি অযুক্ত নহে, তবে সকলেই যুক্তি দ্বারা অল্প মতসকলকে পরিভাগ করিয়া নিজ নিজ মতকে শ্রেষ্ঠরূপে প্রতিপাদন করতঃ নিজমত প্রচারে যত্ববান্ হইলেন কেন ? তদ্বত্তরে বলিতেছেন, “মায়ামিতি” । মায়ার অর্থাৎ অচিন্ত্যশক্তি । অসৎ-প্রকাশিকা অবিজ্ঞা অর্থ নহে । মনুপ্রদেশে স্বর্ঘ্য-কিরণ দ্বারা প্রতিফলিত জলভ্রমে, সেই স্থলে পরিচ্ছিন্ন হেতু যেমন পরিমাণের তারতম্য অস্থ-মিত হয়, তদ্রূপ মৎসবন্ধীর অচিন্ত্যশক্তিতে অষ্টাবিংশতি তত্ত্বের পক্ষ স্থাপনা করতঃ নানা বিবাদ করিয়া থাকেন । মরুতে জলই নাই ; সুতরাং তাহার পরিণামাদি বিবাদ ও হইতে পারে না । আসা হইতে বধন ভিন্ন তত্ত্ব নাই, তখন সেই সংখ্যা নিরূপণে বিবাদ কিরূপে হইবে ? তবে আমার মায়াতে মুগ্ধ হইয়া বাদিরা সকলই বলিতে পারে ॥ ৭ ॥

( ৪৭ পা। ) “তবে ভট্টাচার্য্য.....

না পারি ॥” এই ৩৬২ হইতে ৪০২ পর্যায় পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । বরাইহু শিক্ষা,

ইগ উপহাস বাক্য । দুঃখরোম, দুঃখ-  
জনিত ক্রোধ । ঐছে মতি কহ, ঐরূপ  
বাক্য বলিও না ॥ ৩৬-৪০ ॥

( ৪৮ পা ) “ভট্টাচার্য্য কহে.....অর্থ  
আচ্ছাদিয়া ॥” এই ৪১৫ ও ৪২৫ পয়া-  
রের ভাবার্থ । যাহার জ্ঞান আছে, “আসি  
বুঝি না,” সে বুঝিবার জন্ত পুনরায়  
জিজ্ঞাসা করে । যাহা বুঝ না, তাহা  
জিজ্ঞাসা কর ও চেষ্টা কর, ক্রমেই বুঝিবে ।  
মহাপ্রভু কহিলেন, কিছুই বুঝি না, কি  
জিজ্ঞাসা করিব ? সূত্রের অর্থ বরং কিছু  
কিছু বুঝিতে পারি, আপনার ব্যাখ্যানের  
কিছুই বুঝিতে পারি না । ইহা শুনিয়া  
ভট্টাচার্য্য কিঞ্চিৎ বিরক্ত হইলেন । তাঁহার  
সর্গজননসম্মত পাণ্ডিত্যের প্রতি আঘাত  
অসহ্য হইল । তিনি বলিলেন, আচ্ছা,  
তুমি সূত্রের অর্থ কি বুঝিয়াছ এবং সূত্রের  
সহিত ব্যাখ্যানের কি অসঙ্গতি দেখি-  
তেছ ? মহাপ্রভু বলিতে লাগিলেন,  
‘সূত্রের’ ইতি ॥ ৪১ । ৪২ ॥

( ৪৮ পা ) “সূত্রের মুখ্যার্থ.....হানি  
হয়ে ॥” এই ৪৩৫ হইতে ৪৭ পয়ার  
র্যাস্ত ভাবার্থ । সূত্রের লক্ষণ—

“লঘুনি সূচিতার্থানি স্বল্লাক্ষণপদানি চ ।

সর্গতঃ সারভূতানি স্বরাণ্যাহর্মনীষিণঃ ॥”

অনতিদীর্ঘ, অল্প অক্ষর ও অল্প পদযুক্ত অনেক  
র্থের সূচক ও সর্গতোভাবে সারভূত বাক্যকেই  
ভিতরের স্বর বলেন । সূত্রবোধ ব্যাখ্যান  
পক্ষে ।

“পদচ্ছেদঃ পদার্থোক্তিবিশ্রয়ো বাক্যযোগজন ।

আক্ষেপস্য সমাধানং ব্যাখ্যানং পঞ্চলক্ষণম্ ॥”

পদচ্ছেদ, প্রত্যেক পদের অর্থনির্দেশ, সমস্ত  
পদ সমাসবাক্য, বাক্যঘটক পদসমূহের অর্থ

সকলের পরস্পর সম্বন্ধ প্রদর্শন ও আশঙ্কার বা  
আপত্তির নিরসন, এই পাঁচটি ব্যাখ্যানের লক্ষণ ।  
ঐ ব্যাখ্যান আবার বৃত্তিতে সঙ্ক্ষেপে এবং ভাষ্যে  
সবিস্তারে আলোচিত হইয়া থাকে ।

“সূত্রার্থো বর্ণ্যতে যত্র পঠৈঃ সূত্রাহুসারিভিঃ ।

স্বপদানি চ বর্ণ্যন্তে ভাষ্যং ভাষ্যবিদো বিহুঃ ॥”

যে এত্বে সূত্রাহুসারি পদসমূহ দ্বারা সূত্রের  
অর্থ বর্ণিত হয় এবং স্বপ্রযুক্ত পদ সকলও ব্যাখ্যাত  
হয় তাহাকেই ভাষ্য বলা হয় ।

ভাষ্য সূত্রের অর্থ প্রকাশ করিবে ।  
আপনি যে ভাষ্য বলিতেছেন, তাহা  
সূত্রের মুখ্যার্থ প্রকাশ না করিয়া কল্পিত  
গৌণার্থ দ্বারা মুখ্যার্থকে আচ্ছাদন করি-  
তেছে । উপনিষদের মধ্যে মুখ্যার্থ,  
তাহাই বেদান্তসূত্রে বিচারিত হইয়াছে ।  
আপনার কথিত ভাষ্য ঐ মুখ্যার্থ ত্যাগ  
করিয়া গৌণার্থ কল্পনা করিতেছে ।  
উপনিষদুক্ত শব্দ সকলের অভিধারুতি  
পরিভাষ্য করিয়া লক্ষণারুতি দ্বারা অর্থ  
নির্ণয় করিতেছে । প্রমাণের মধ্যে বেদই  
প্রধান প্রমাণ । বেদ যাহা বলেন, তাহাই  
প্রমাণ । তাহার কারণ দেখাইতেছেন,  
জীবের অস্থি ও বিষ্ঠা সারগতঃ অপ-  
বিত্র । বেদ বলিতেছেন, শঙ্খ ও গোময়  
পবিত্র । বেদ বলাতেই শঙ্খ ও গোময়  
জীবের অস্থি ও বিষ্ঠা হইয়াও পবিত্র  
হইয়াছে । দৃষ্ট ও অদৃষ্টার্থক বেদ লৌকিক  
এবং অলৌকিক জানের নিদান ।  
আত্মার সম্বন্ধ, স্বরূপ, ঐহিক ও পারত্রিক  
গতি, দেহের সহিত সম্বন্ধ, পরমাত্মার  
সহিত সম্বন্ধ, সপ্তম ও নিষ্ঠূর্ণ ব্রহ্ম, ব্রহ্মের  
সহিত জগতের সম্বন্ধ, জগতের স্বরূপ,  
জীবের মুক্তি ও তৎসমাধনোপায় প্রভৃতি



সমস্ত জ্ঞানের আকর বেদ । যে বেদ এই সকল জ্ঞানের আকর, তাহা অবশ্য অন্য শাস্ত্র কর্তৃক প্রমাণিত না হইয়া নিজেই নিজের প্রমাণ হওয়াই উচিত । বেদ আপনি আপনাকে প্রকাশ করিয়াই আপনার প্রমাণ করেন । মুখ্যার্থই স্বতঃপ্রমাণ, অপ্রকাশ বেদের প্রাণ । মুখ্যার্থ ত্যাগ করিলে বেদের স্বতঃপ্রমাণের ও অপ্রকাশের হানি হয় । বেদে লক্ষণা দ্বীকার করিলে, লক্ষ্যার্থ প্রকাশক বেদকে প্রমাণ করিবার জন্ম প্রমাণান্তরের প্রয়োজন হয়, অনুমানাদির সাহায্য গ্রহণ করিতে হয় । ঋষিগণের যখন পরস্পর বিবাদ দৃষ্ট হয়, তখন ঋষিবাক্য দ্বারা তৎনির্ণয়ের সম্ভাবনা নাই । বেদ শব্দ নিত্য ও চিরদিনই অবিকৃতাবস্থায় রহিয়াছে ॥ ৪৩—৪৭ ॥

( ৪৮ পা ) “বামের……স্থাপন ॥” এই ৪৮ ও ৪৯ পয়ারের ভাবার্থ । বেদার্থনির্ণায়ক কৃষ্ণদ্বৈপায়নকৃত বেদান্ত-রূপ অপ্রকাশ সূর্যের মুখ্যার্থরূপ যে কিরণ, তাহা আপনার কথিত ভাষ্য-রূপ মেঘের লাক্ষণিক অর্ধ দ্বারা আচ্ছাদিত ; সুতরাং অপ্রকাশতারহিত ( পরপ্রকাশ্য ) হইয়া বুদ্ধিকে আচ্ছাদন করিতেছে । বেদে ও তদর্থনির্ণায়ক পুরাণাদিতে ব্রহ্মশব্দের মুখ্যার্থ অতিশয় বৃহৎ বস্তুই উক্ত হইয়াছেন । যিনি স্বয়ং বৃহৎ ও যিনি অন্যকে বৃহৎ করেন অর্থাৎ আশ্রয়স্বরূপে দাবণ করেন, তিনিই ব্রহ্ম শব্দের মুখ্যার্থ । ঐ অর্থে ব্রহ্মবস্তু মণ্ডিক বা বিশেষই হইতেছেন । শক্তি-

রহিত, ধর্ম্মরহিত, গুণরহিত, ও বিশেষ-রহিত বস্তু অতিশয় বৃহৎ বলিয়া নির্ণীত হইতে পারেন না । বস্তুর উৎকর্ষ ও অপকর্ষ, তদুৎকর্ষ ধর্ম্ম দ্বারা নির্ণীত হইয়া থাকে । ব্রহ্ম, বৃহৎ ও সর্বাশ্রয় হইলে, তাঁহাতে বৃহৎ ও সর্বাধারক রূপ ধর্ম্ম স্বীকার্য হইতেছে । এক্ষণে আশঙ্ক্য হইতে পারে যে, নির্গুণ শ্রুতিগণের গতি কি হইবে? তদুত্তর “যা যেতি” পদ শ্লোকের বলিতেছেন ॥ ৪৮। ৪৯ ॥

( ৪৮ পা ) “যা যেতি ।” এই অষ্টম শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

শ্রুতি সামান্যতঃ দুই প্রকার । ত্রৈগুণ্য-বিষয়িণী ও নির্গুণ্যবিষয়িণী । ত্রৈগুণ্যবিষয়িণী শ্রুতিসকল আবার তিন প্রকার । ১। তন্ত্রকক, ২। তন্ত্রহিমাপ্রদর্শক, ৩। পরমবস্তুর উদ্দেশক । তন্ত্রকক যথা—সৃষ্টাদিবোধিকা শ্রুতিগণ ব্রহ্মের সৃষ্টি, পালন ও সংহাররূপ তটস্থলক্ষণ অবলম্বন করিয়া তাঁহার লক্ষক করেন । তন্ত্রহিমাপ্রদর্শক যথা—যে শ্রুতিগণ ব্রহ্মের ঐশ্বর্যবর্ণন দ্বারা তাঁহার মহিমা প্রচার করেন, তাঁহারাই তন্ত্রহিমাপ্রদর্শক বেদ । যে শ্রুতিগণ ব্রহ্মের ত্রৈগুণ্যের নিষেধ দ্বারা পরমবস্তুর উদ্দেশ্যাত্র করেন, তাঁহারাই পরমবস্তুর উদ্দেশক বেদ । এই শেষোক্ত শ্রুতি আবার ত্রিবিধ । ১। গুণ নিষেধ দ্বারা পরমবস্তুর উদ্দেশক বেদ করেন । ২। গুণসামান্যিকরণ্য দ্বারা পরমবস্তুর উদ্দেশক বেদ করেন । নির্গুণ্য-বিষয়িণী শ্রুতিগণও দুই প্রকার । ১। নির্গুণ বেদ সকল বিশেষের ( গুণরহিত ও ধর্ম্মদিরহিত ) নির্দেশ করিয়া ব্রহ্মপর করেন । ২। প্রাকৃতগুণ-রহিত বেদগণ স্বরূপশক্তিবিষয়িণীর নির্দেশ করিয়া ভগবৎপর করেন । উদাহরণ যথা—

“যতো বা ইমানি ভূতানি” ইত্যাদি শ্রুতিগণ

সৃষ্টিাদি তটস্থলক্ষণ অবলম্বন করিয়া ব্রহ্মবস্তুকে লক্ষ্য করেন বলিয়া, ইঁহারা তন্ত্রলক্ষ্য বেদ। “ইন্দ্রো যাতোহবসিতস্ত রাজা” ইত্যাদি শ্রুতিগণ ব্রহ্মেণ ঐশ্বর্য্য বর্ণন দ্বারা তাঁহার মহিমা প্রচার করেন বলিয়া, ইঁহারা তন্ত্রহিমা প্রদর্শক বেদ। “অমৃতমগনু” ইত্যাদি শ্রুতিগণ ব্রহ্মের প্রাকৃত গুণের নিরাস দ্বারা পরমবস্তুর উদ্দেশ্য করেন বলিয়া, ইঁহারা পরমবস্তুর উদ্দেশ্যক বেদ। “সর্ব্বং ধর্ম্মিদং ব্রহ্ম” ইত্যাদি শ্রুতিগণ জগৎরূপা বহিরঙ্গা শক্তির ও জীবরূপা তটস্থশক্তির সহিত সামান্য-মিকরণ্য অর্থাৎ তাদাখ্যা দ্বারা পরমবস্তুর উদ্দেশ্য অর্থাৎ নাম করেন বলিয়া, ইঁহারা সামান্যমিকরণ্য দ্বারা পরমবস্তুর উদ্দেশ্যক হয়েন। “আনন্দো ব্রহ্ম” ইত্যাদি শ্রুতিগণ বিশেষ্য ব্রহ্মের নির্দেশ দ্বারা ব্রহ্মপরতা এবং “পরাস্য শক্তিবিবর্তনৈব জগতে” ইত্যাদি শ্রুতিগণ শক্তিবিশিষ্ট ভগবানের নির্দেশ দ্বারা ভগবৎপরতা হয়েন বলিয়া, ইঁহারা নিরৈশ্বর্য্য-গুণবিষয়ী দ্বিবিধা বেদ হয়েন। প্রথমোক্ত চারি প্রকার শ্রুতি বৈশ্বণ্যবিষয়ী এবং শেষোক্ত দুই প্রকার শ্রুতি নিরৈশ্বর্য্য-গুণবিষয়ী। এই ছয় প্রকার ভিন্ন আর কোন প্রকার শ্রুতি নাই। সমস্ত শ্রুতিই এই যদুবিধা শ্রুতি অন্তর্গত। অতএব সকল শ্রুতিরই সার্থকতা হইতেছে, কোন শ্রুতিই নিরর্থক হইতেছে না। ইতি সন্দর্ভ।

“ব্রহ্ম হৈতে জন্মে” ইত্যাদি পয়ারে সকল শ্রুতির সার্থকতা দেখাটতেছেন ॥৮॥

( ৪৮ পৃ ) “ব্রহ্ম হৈতে ... ..গন ॥” এই ৫০৫ ও ৫১২ পয়ারের ভাবার্থ। ব্রহ্ম শব্দ দ্বারা সর্ব্বশক্তি সমাধিত ক্রীডগবানই বোধিত হন। তিনি কখনই নির্কেশম হইতে পারেন না। তবে যে শ্রুতিতে ব্রহ্মকে নির্কেশম বলিতে দেখা যায়, তাহার তাৎপর্য্য বিশেষের নিষেধ নহে, প্রাকৃত বিশেষের (হস্তপদাদি বিশে-

ষণের) নিষেধ, ইহাই দেখাইতেছেন, “ব্রহ্ম হৈতে” ইতি। প্রথম প্রকার শ্রুতিতে, “যাঁহা হইতে এই সকল প্রাণি উৎপন্ন হইয়াছে, যদ্বারা এই সকল ভূত জীবন ধারণ করিতেছে, ও যাঁহাতে এই সকল ভূত লয় পাইতেছে,” এই প্রকার উক্তি দেখা যায়। ইহাতে ব্রহ্মের অপাদনত্ব, করণত্ব ও অধিকরণত্ব রূপ তিনটি অর্থাৎ ব্রহ্ম জগতের উপাদান, নিমিত্ত ও ব্যাপক হয়েন, ইহা জ্ঞাত হওয়া বাটতেছে। ইহাতে ব্রহ্মের সর্বিশেষ চিহ্ন দৃষ্ট হইতেছে। দ্বিতীয় প্রকার শ্রুতিতে, “ইন্দ্র (ঐশ্বর্য্যশালী) ব্রহ্ম স্বাবর ও জঙ্গমের রাজা (নিয়ন্তা)” এইরূপ কথিত হওয়ায় ব্রহ্মেব নিয়ন্তরূপ ঐশ্বর্য্য দ্বারা তাঁহার মহত্ব (বিশেষত্বই) প্রকাশ পাইতেছে। তৃতীয় প্রকার শ্রুতিতে, “ব্রহ্ম স্থূল নহেন, বক্ষু সূক্ষ্ম নহেন,” ইত্যাদি উক্তি দ্বারা ব্রহ্মেব প্রাকৃত স্থৌল্যাদি (স্থূলাদি) গুণের নিবাস দ্বারা তাঁহার উদ্দেশ্যাত্মকতা হইতেছে, বিশেষের নিষেধ করা হয় নাই। চতুর্থ প্রকার শ্রুতিতে, “এই সমস্তই ব্রহ্ম,” ইত্যাদি উক্তি দ্বারা বিশেষের মতিত একতা নির্দেশ করতঃ তাঁহার উদ্দেশ্য করিতেছে, বিশেষের (বিশেষণের) নিষেধ করেন নাই। পঞ্চম প্রকার শ্রুতিতে “ব্রহ্ম আনন্দ মাত্র,” ইহা বলিয়া কেবল বিশেষের নির্দেশ করিতেছে, বিশেষের নিষেধ করেন নাই। ষষ্ঠ প্রকার শ্রুতিতে স্পষ্টাক্ষরেই ব্রহ্মের শক্তিব নির্দেশ করিতেছে। ব্রহ্মের ত্রিপাদ ঐশ্বর্য্য এবং এক-

পাদঐশ্বর্য্য উভয়ই শক্তির বিলাস। শক্তি ব্যতিরেকে ব্রহ্মের ত্রিপাদ ঐশ্বর্য্যের প্রকাশ এবং পাদ ঐশ্বর্য্যের সৃষ্টিাদি কার্য্যের অসম্ভব হয়। অতএব ব্রহ্মের শক্তি অবশ্য স্বীকার্য্য। “ভগবান্ বহু হৈতে” ইত্যাদি। “ন ঐক্ষত বহুগ্যাং প্রজ্ঞায়েয়” ইতি শ্রুতিঃ। অর্থাৎ তিনি প্রাকৃত ঈক্ষণ করিলেন এবং বহু প্রজা হইব বলিয়া সঙ্গল করিলেন। সৃষ্টির পূর্বে যখন প্রকৃতির গুণের ক্ষোভ হয় নাই, তখন মহত্ত্বাদির জন্ম হয় নাই; তখন মনে করিলেন, ‘আগি বহু হইব।’ সেকালে প্রাকৃত মনের উৎপত্তি না হওয়ায় শ্রীভগবানের মন অপ্রাকৃত এবং নয়নের উৎপত্তি না হওয়ায়, যে নয়ন দ্বারা প্রকৃতিকে ঈক্ষণ করিলেন, সে নয়নও অপ্রাকৃত; ইহা স্থির হইতেছে। অতএব ব্রহ্মের মন ও নেত্র প্রকৃতির কার্য্য না হওয়ায়, উহা সচ্চিদানন্দ স্বরূপ। ব্রহ্ম শব্দে যে সর্লক্ষণমগ্নিত আকারাদি বিশিষ্ট শ্রীনিগ্রহ বোধিত হয়েন; তাহা “ব্রহ্মশব্দে কহে” ইতি। পর পরারে বলিতেছেন ॥ ৫০৫১ ॥

( ৪৮ পা ) “ব্রহ্মশব্দে কহে..... করয়ে নিশ্চয় ॥” এই ৫২২ পরারের ভাবার্থ। বিশেষ বিশেষ কারণ হইতে বিশেষ বিশেষ কার্য্যের উৎপত্তি হইয়া থাকে। সেই সেই কার্য্যের উৎপত্তির জন্য সেই সেই কারণের ধর্ম্মবিশেষ স্বীকার না করিয়া পারা যায় না। সকল উপাদান- কারণে ও সকল নিমিত্তকারণেই উক্ত প্রকার ধর্ম্ম স্বীকার্য্য। ঐ ধর্ম্মই শক্তি।

উহা কারণ হইতে ভিন্ন নহে। বিবর্ত- বাদেও ঝিনুকেই রৌপ্যের ক্ষুণ্ণিত অধিষ্ঠান হয়। ঝিনুকাদি ব্যতীত অঙ্গারে রৌপ্যের ক্ষুণ্ণিত হয় না। প্রস্তুত বিষয়ে ব্রহ্মকেই জগতের অধিষ্ঠান বলিয়া অঙ্গী- কার করা হয়, অঙ্গ কাহাকেও উহার অধিষ্ঠান বলিয়া স্বীকার করা হয় না। অতএব জগৎকার্য্যের সিদ্ধির জন্ত তদ- অধিষ্ঠানভূত ব্রহ্মের ধর্ম্ম বা শক্তি অবশ্য স্বীকার করিতে হইবে। শক্তি স্বীকারে ব্রহ্মের অদ্বয়ত্ব হানি হয় না। স্বয়ং- সিদ্ধ তাদৃশ ( সমান ) ও অতাদৃশ ( অস- মান ) তত্ত্বান্তরের অভাবই অদ্বয়। ব্রহ্ম নিজশক্তির একমাত্র সহায় বলিয়া ও ব্রহ্ম ব্যতীত ঐ সকলশক্তি অসিদ্ধ হয় বলিয়া, ব্রহ্মের সজাতীয়, বিজাতীয় ও স্বগত ত্রিবিধ ভেদেরই স্বভাব হইতেছে। ব্রহ্মের শক্তি ব্রহ্মসদৃশ স্বয়ংসিদ্ধ বস্তু হইতে ভিন্ন হইলে সজাতীয় ভেদ এবং উহা ব্রহ্ম হইতে অসমান স্বয়ংসিদ্ধবস্তু হইতে ভিন্ন হইলে বিজাতীয় ভেদ ও ঐ শক্তি ব্রহ্মের ধর্ম্ম না হইয়া ব্রহ্ম হইতে অতিরিক্ত বা ব্রহ্মের অনধীন স্বয়ংসিদ্ধ বস্তু হইতে ভিন্ন হইলে ব্রহ্মের স্বগত- ভেদের আপত্তি হইতে পারিত। জীব- শক্তি ব্রহ্মসদৃশ ও ময়াশক্তি ব্রহ্ম হইতে অসমান স্বয়ংসিদ্ধ বস্তু হইতে ভিন্ন না হওয়ায় এবং স্বরূপশক্তি ব্রহ্ম হইতে অতিরিক্ত না হওয়ায় ও ব্রহ্মের অধীন হওয়ায়, উহার স্বীকারে ব্রহ্মের সজাতীয় বিজাতীয় ও স্বগত ভেদ হইতেছে না। জীবশক্তি ব্রহ্মের তটস্থপ্রকাশ, অঘটন-

দৃটনাপটীয়সীবিচিত্রজগৎউৎপাদনকারিণী  
 মায়াশক্তি ত্রেক্সের অপ্রকাশ, আর অস্ত-  
 রঙ্গ স্বরূপশক্তি ত্রেক্সের স্বরূপপ্রকাশ ।  
 জীবশক্তি ত্রেক্সরূপ সূর্য্যের কিরণস্থানীয়া,  
 মায়াশক্তি তমঃস্থানীয়া, স্বরূপশক্তি  
 মণ্ডলস্থানীয়া । মায়াশক্তি ও জীবশক্তি  
 বিশ্বের উপাদান কারণ এবং স্বরূপশক্তি  
 নিমিত্তকারণ । অতএব উক্ত শক্তি তিন-  
 টির অস্বীকারে জীব ও জড়াত্মক জগ-  
 তের সৃষ্টি অসম্ভব হয় । শ্রীশঙ্করাচার্য্যও  
 শারীরকভাষ্যে বলিয়াছেন—

“শক্তিঞ্চ কারণ্য কার্যনিয়মনার্থা কল্যাণানা  
 ন্যান্যান্যাপ্যসতী কাণ্যং নিবচ্ছেৎ অমহাবিশেষাদ-  
 ন্যত্বা বিশেষাচ্চ । তস্মাৎ কারণস্যাত্মভূতা শক্তিঃ  
 শক্তেশ্চাত্মভূতং কার্যমিতি ।” ( ২।১। ৮ )

শক্তি কারণের ধর্ম্ম । উহা কারণে থাকিয়া  
 কার্যকে নিয়মিত করে । উহা কার্যকে নিয়ম  
 করিবার জন্ত কারণে কল্পিত হয় । উক্ত কার্য  
 ও কারণ হইতে ভিন্ন নহে এবং অসং ও নঃ ।  
 উহা যদি কার্য ও কারণ হইতে ভিন্ন এবং অসং  
 হইত, তবে কার্যকে নিয়মিত করিত না অর্থাৎ  
 বিশেষ বিশেষ কারণ হইতে বিশেষ বিশেষ কার্যের  
 উৎপত্তি হইবে একরূপ একটি নিয়ম হইত না ।

অতএব যেকোন বস্তুর ক্রিয়াসামর্থ্য-  
 রূপা শক্তি কার্যের পূর্বে এবং পরেও  
 মস্তাদির শক্তির ন্যায় বস্তুতে থাকেই,  
 কার্যকাল পাইয়া প্রকাশ হয়, তদ্রূপ  
 ত্রেক্সেরও শক্তি অবশ্য স্বীকার্য্য । শক্তির  
 অস্বীকারে বেদান্তের অনুবন্ধ অসম্ভব  
 হয় । বেদান্তের অনুবন্ধ চারিটি, অধি-  
 কারী, বিষয়, সম্বন্ধ ও প্রয়োজন । অনু-  
 বন্ধ চারিটিই শাস্ত্র প্রবৃত্তির চেতু ।

অধিকারির অনুবন্ধেই শাস্ত্রের আরম্ভ হয় ।

অধিকারী না থাকিলে কাহার জন্ত শাস্ত্র আরম্ভ  
 হইবে ? অতএব অধিকারী অবশ্য অপেক্ষিত ।  
 অভিলষিত বিষয় জানিবার জন্ত লোকে শাস্ত্রাভি-  
 শীলনে প্রবৃত্ত হয় । এই শাস্ত্র অমুশীলন করিলে,  
 এই বিষয় জানিতে পারিব বুদ্ধিগাই লোকে শাস্ত্রা-  
 মুশীলনে প্রবৃত্ত হয় । অতএব বিষয়রূপ অনুবন্ধ  
 অবশ্য অপেক্ষনীয় । শাস্ত্রীয় বিষয় জানিয়া কোন  
 প্রয়োজন সিদ্ধ হইবে, তাহা না জানিয়া বিবেচক  
 ব্যক্তির শাস্ত্রে প্রবৃত্তি হইতে পারে না । প্রয়ো-  
 জনের জ্ঞান ব্যতিরেকে প্রবৃত্তি সম্ভব হয় না ।  
 প্রয়োজন, প্রবৃত্তির হেতু বলিয়া, প্রয়োজন অবশ্য  
 অপেক্ষনীয় । সম্বন্ধ নামক অনুবন্ধ পূর্বেকৃত  
 বিষয় ও প্রয়োজনের সহিত শাস্ত্রের কিরূপ  
 সম্বন্ধ তাহাই প্রকাশ করেন । অতএব উহাও  
 অপেক্ষিত । এক জীবশক্তিরূপ অধিকারির অস্বী-  
 কারে উক্ত চারিটি অনুবন্ধই অসম্ভব হইয়া যায় ।  
 এই অনুবন্ধের সিদ্ধির জন্ত মায়াবাদিরাও কাল্পনিক  
 অধিকারীজীব স্বীকার করেন । তাঁহারা বলেন,  
 প্রথমতঃ ব্রহ্মচর্যাতির অমুষ্ঠান পূর্বেক শিক্ষা, ব্রহ্ম,  
 ব্যাকরণ, নিকরুত, ছন্দঃ ও জ্যোতিষ এই ছয়টি  
 শাস্ত্রের সহিত বেদ অধ্যয়ন করিতে হইবে । বেদ  
 গঠিত হইলে, আপাততঃ বেদার্থের অবগতি  
 হইবে । জন্মবন্ধের মোচনের জন্য কাম্যকর্ম্ম ও  
 নিবন্ধকর্ম্ম ত্যাগ করিতে হইবে । অন্তঃকরণের  
 মানিয়া দূরীকরণার্থ নিত্য, নৈমিত্তিক ও প্রায়শ্চিত্ত  
 এই ত্রিবিধ কর্ম্মের অমুষ্ঠান করিতে হইবে । পরে  
 নিত্য ও অনিত্যবস্তুর বিচার, ইহ ও পরকালের  
 ফলভোগে বৈরাগ্য, শমদমাদি সাধনসম্পত্তি ও  
 যুক্তির ইচ্ছা এই সাধনচতুষ্টয়সম্পন্ন হইয়া ব্রহ্ম  
 জিজ্ঞাসা করিতে হইবে । পরশ্রুতঃ অধিকারী  
 না থাকিলেও ব্রহ্মজিজ্ঞাসা বা শাস্ত্রাভিলাষনরূপ  
 ব্যবহারের সিদ্ধির জন্য উদ্ভিখিত গুণাবলী সম্বিত  
 অধিকারী জীব কল্পিত হইয়া থাকে । বস্তুতঃ  
 জীবরূপ অধিকারী সত্যই, কল্পিত নহেন । জীব  
 জন্মান্তরীয় কর্ম্ম দ্বারা বিগতচিত্ত ও ব্রহ্মানু হইয়া

সাধুসঙ্গের পরই ব্রহ্মজিজ্ঞাসার বা শাস্ত্রাহীননের অধিকারী হন। সাধুসঙ্গের পূর্বে উক্ত সাধন চতুষ্টয় দুর্লভ। সাধুসঙ্গের পরই ঐ সকল সাধন-সম্পত্তি লাভ হয়। সাধুসঙ্গের পর সাধুর ভাব অনুসারে জ্ঞান বা ভক্তি লাভ হইলে জ্ঞানী বা ভক্তিমান্ হয়।

বিবর্তবাদীর মতে, সর্গবিধ বিশেষণ রহিত নির্কিশেষ ব্রহ্ম বেদান্তশাস্ত্রের বিষয় হইতে পারে না। কারণ যঁাহার কোন বিশেষণ নাই, তিনি কখন শাস্ত্রের বিষয় হইতে পারেন না। জ্ঞাতি, গুণ, ক্রিয়া ও সংজ্ঞারহিত বস্তুই নির্কিশেষ। শাস্ত্র শব্দাত্মক। শব্দ কখনই জ্ঞাতি, গুণ, ক্রিয়া ও সংজ্ঞারহিত বস্তুর বাচক হইতে পারে না। শাস্ত্র জ্ঞাত্যাদিরহিত বস্তুর বাচক না হইতে পারিলেও, উহার লক্ষক হইক, একরূপও বলিতে পারা যায় না; কারণ লক্ষণা যে শব্দের শক্তি সেই শব্দই যদি ব্রহ্মের বাচক না হইল, তবে তাহার সেই শক্তিরূপা লক্ষণা দ্বাৰাই বা কি প্রকারে ব্রহ্মজ্ঞান সিদ্ধ হইতে পারিবে? বিশেষতঃ “যোহসৌ সৈকৈর্কৈর্দৈর্গীয়তে ॥” যিনি সকল বেদ কর্তৃক গীত হইয়েন। “সর্গে বেদা যৎ-পাদমামনন্তি।” বেদগণ যঁাহার স্বরূপ নির্দেশ করেন, ইত্যাদি ঞ্জতিগণ ব্রহ্মের বেদবাচ্যত্বই বলিয়া থাকেন। “যতো বাচা নিবর্তন্তে অপ্রাপ্য মনসা সহ” ইত্যাদি ঞ্জতিতে যে ব্রহ্মের অবাচ্যত্ব ও অজ্ঞেয়ত্ব উক্ত হইয়াছে, তাহা কেবল তাঁহার মহত্ব প্রযুক্ত। বেদ সকল ব্রহ্মের মহিমা সর্কতোভাবে কীর্তন করিতে পারে না বলিয়াই উহাদের অবাচ্যত্ব

উক্ত হইয়াছে। অতএব অনন্তশক্তিতে পরিপূর্ণ ব্রহ্ম শব্দে স্বয়ং ভগবানই বোধিত হইতেছেন। সর্গশক্তিসম্বন্ধিত পরব্রহ্ম নামক শ্রীভগবানই বেদান্তশাস্ত্রের বিষয়। শাস্ত্র প্রমাণ দ্বারা শ্রীকৃষ্ণই স্বয়ং ভগবান। “বেদের” ইতি। বেদের নিগূঢ় অর্থ মহসা বুদ্ধির বিষয় না হওয়ায়, পুরাণ-বাক্য দ্বারা ঐ বেদার্থকে নিশ্চয় করা হইয়া থাকে। বেদার্থকে নির্ণয় করেন বলিয়া, উহার নাম পুরাণ। গীতা দ্বারা স্বর্ণবলয় যেমন পুরাণ করা যায় না; তদ্রূপ পুরাণ ব্যতীত অন্য শাস্ত্র দ্বারা বেদার্থ পুরাণ হয় না। অতএব পুরাণ বেদের অকৃত্রিমভাষ্য। তন্মধ্যে শ্রীমদ্ভাগবত ব্রহ্মপুত্রাদির অকৃত্রিমভাষ্য। শ্রীমদ্ভাগবতে শ্রীকৃষ্ণকেই স্বয়ং ভগবান্ বলিয়া-ছেন। তাহা পরে দেখাইতেছেন ॥৫২॥

(৪৮ পা) “আহো ভাগ্যোতি।” এই নবম শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। ব্রহ্মণ্ডের বাচ্য স্বয়ং ভগবান্ এবং সেই স্বয়ং ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ। ইহাই এই শ্লোকদ্বারা প্রতিপাদন করিলেন ॥৯॥

(৪৯ পা) “অপাণি পাদ.....করহ নিশ্চয় ॥” এই ৫৩ ও ৫৪ পয়ারের ভাবার্থ। ভগবানের হস্তপাদাদি ইন্দ্রিয় সকলের মুখ্যার্থ প্রাকৃত ইন্দ্রিয়সমূহে নহে। “অপাণিপাদো জ্বনোগ্রহীতা পশ্যত্যচক্ষুঃ শৃণোত্যকর্ণঃ।” প্রভৃতি ঞ্জতিসকল ব্রহ্মের প্রাকৃত পাণিপাদাদির নিষেধ করিয়া গ্রহণচলনাদি কর্ম দ্বারা অপ্রাকৃত পাণিপাদাদির বিধান করিয়া-ছেন বলাই সম্ভব। নঞর্থ পর্যালোচনা

দ্বারাও উঁহাই স্থির হইয়া থাকে । তথাপি আচার্য্য ঐ সকল শ্রুতির মুখ্যার্থ ত্যাগ করিয়া লক্ষণা দ্বারা ব্রহ্মকে নির্বিশেষ বলিয়া ব্যাখ্যা করেন । যিনি মৈত্রেয়্য ও পূর্ণানন্দ বিগ্রহ, সেই ভগবানকে নিরাকার বলিয়া ব্যাখ্যা করা কি সাহসের কার্য্য নহে ? শ্রুতি ও স্মৃতি একবাক্যে ঐহার স্বাভাবিক শক্তিক্রয় স্বীকার করিয়া থাকেন, তাঁহাকে নিঃশক্তি বলিয়া নিশ্চয় করা কি দুর্বুদ্ধি নয় ? ॥ ৫৩।৫৪ ॥

( ৪৯ পা ) "ঈশ্বরশক্তিরিত্যাদি ।"  
এই দশম, একাদশ ও দ্বাদশ শ্লোকত্রয়ের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

এই শ্লোক তিনটির দ্বারা ব্রহ্মের অস্তরঙ্গা বহিরঙ্গা গুণশক্তির প্রতিপাদন করিতেছেন । ব্রহ্মের শক্তির অধীকারে তাঁহার ব্যাপকত্বাদির অগম্যতা হয় । অবিদ্যা কর্ম যাহার তাহাটী অবিদ্যাকর্মা । সেইটাই সংজ্ঞা যাহার তিনিই অবিদ্যাকর্মসংজ্ঞা অর্থাৎ অজ্ঞান কর্মা । যদিও এইটি বহিরঙ্গা মায়ী, তথাপি জীবকে আবরণ করিতে ইহার সামর্থ্য্য আছে । এইজন্য বলিতেছেন, "যা যেতি ।" ক্ষেত্রজ্ঞ নামক জীব, ঐ অবিদ্যা ( অজ্ঞান ) মায়ী দ্বারা আলিঙ্গিত হওতঃ সংসারের দুঃখ অল্পভব করে । জীবশক্তি ভগবান হইতে বিভেদ প্রাপ্ত হইয়া অবিদ্যা হেতু তাপ অল্পভব করে, ইহা প্রতিপন্ন হইল । অপর প্রকার দেখাইতেছেন, "ভয়েতি ।" জীবশক্তি মায়ীশক্তি দ্বারা সম্যক্ আবৃত হওতঃ ব্রহ্মাদিহাবর পর্য্যন্ত দেখে লণ্ড ও গুরুভাবে থাকেন । কিন্তু এইটি বৃহৎ জীব এইটি ক্ষুদ্র জীব একরূপভাবে তারতম্য হয় না । কেবল দেহাহরণারাই জীবকে বৃহৎ ও ক্ষুদ্র বলা হয় । বস্তুতঃ অণুই জীবের স্বরূপ । অচিন্ত্য জীবশক্তি দ্বারা চিহ্নপতা ও নির্বিকারভাৱিত প্রাকৃতিক জড়ত্ব ও বিকারিত্ব উৎপন্ন হয় ।

স্বরূপের বিরোধান হেতু জীব তারতম্যরূপে প্রকাশিত হয়, ইহাই প্রমাণ করিলেন । অন্তএব সমস্ত চিৎ ও অচিৎশক্তিবিশিষ্ট ভগবান ॥ ১০-১২ ॥

( ৪৯ পা ) "জ্ঞাদিনীতি ।" এই ত্রয়োদশ শ্লোকের তাৎপর্য্য আদিলীলার ভাবার্থ ব্যাখ্যায় ১৬৯ পত্রাঙ্কে দৃষ্টি করিবেন । পূর্বে শ্লোকে জীবশক্তি ও বহিরঙ্গাশক্তির প্রমাণ করিয়া এই শ্লোক দ্বারা একা স্বরূপশক্তি ত্রিবিধরূপে প্রকাশ পান, ইহাই প্রমাণিত করিলেন ।

যদি বল, জীবের ত্রিবিধা শক্তি দৃষ্ট হয় ? ইহাতে বলিতেছেন, "জ্ঞাদতাপকরীতি ।" অর্থাৎ জীবের যে গুণময়ী ত্রিবিধা শক্তি দেখা যায়, তাহা তোমাতে নাই । তাহার হেতু দেখাটীতেছেন, "গুণবর্জিতো ।" অর্থাৎ সব রঙ্গঃ ও তমোগুণ-রহিত । জ্ঞাদকরী অর্থাৎ মনের আনন্দদায়িনী শক্তি সাক্ষিকী । বিষয় বিরোধাদিতে দুঃখদায়িনী তামসী । তদুভয়মিশ্রা রাজসী । অন্তএব ইয়ে শ্রীভগবান হইতে সকলের সম্যক্ স্থিতি, সেই সকলের অধিষ্ঠানভূত ভগবানে ত্রিবিধা গুণময়ী শক্তি নাই । ইহাতে জীব যে ভগবান হইতে পারেন না, তাহাও প্রতিপন্ন হইল ॥ ১৩ ॥

( ৪৯ পা ) "সচ্চিদানন্দময়.....ঈশ্বর-  
রের মনে ।" এই ৫৫৯ হইতে ৫৭৫ পর্য্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ । ঈশ্বর সচ্চিদা-  
নন্দস্বরূপ । তাঁহার সদংশে সঙ্কিনী, চিদংশে সন্নিৎ ও আনন্দাংশে জ্ঞাদিনী নাম্নী স্বরূপশক্তি স্বীকৃত হইয়া থাকেন । একই পরমেশ্বর যেমন সৎ, চিৎ ও আনন্দ স্বরূপ, তদ্রূপ একই স্বরূপশক্তিই সঙ্কিনী সন্নিৎ ও জ্ঞাদিনী স্বরূপা । এই ত্রিরূপা-  
জ্ঞিকা স্বরূপশক্তি ভিন্ন পরমেশ্বরের আরও দুই প্রকার শক্তি স্বীকৃত হইলেন ।

একটির নাম মায়ামুক্তি ও অপরটির নাম জীবশক্তি। এই শক্তি কয়টি যে শ্রীভগবানের দাসী তাহা বলিতেছেন, “অন্তরঙ্গা” ইতি । স্বরূপাদি শক্তিদ্রয় ভক্ত-পর্যায়, অতএব এই তিন শক্তিই পরমেশ্বরে প্রোমভক্তি করিয়া থাকেন। পরমেশ্বরের ষড়্‌বিন্দু ঐখর্য ও ভদীয় ধাম পরিকরাদি তাঁহার স্বরূপ শক্তিরই বৈচিত্র্য। পরমেশ্বরের এই সকল শক্তি স্বীকার না কলা নিতান্ত সাহসের কার্য বলিতে হইবে। মায়ামাহার অদীন তিনিই পরমেশ্বর, যিনি মায়ার অদীন তিনিই জীব। ইহাই জীব ও ঈশ্বরে ভেদ। এইরূপ স্পষ্টভেদ সত্ত্বেও জীব ও ঈশ্বরে অভেদ বলা নিতান্ত মূঢ়তার কার্য। গীতাশাস্ত্রে জীবকে অন্তরঙ্গা ও বহিরঙ্গার মধ্যবর্ত্তিনী শক্তিরূপেই নির্দেশ করিয়াছেন। সেই ভগবদুক্তি অগ্রাহ্য করিয়া জীব ও ঈশ্বরে কল্পনা করা কি অসম্ভব হইতেছে না? পর শ্লোক দ্বারা এ বিষয়ের প্রমাণ করিতেছেন ॥৫৫-৫৭॥

( ৪৯ পা ) “অপরেয়মিতি ।” এই চতুর্দশ শ্লোকের ভাবার্থাদি আদির মগুদ পরিচ্ছেদে ষষ্ঠ শ্লোকে দেখিবেন। জীব-তত্ত্ব ঈশ্বরের শক্তি, এই শ্লোক দ্বারা প্রমাণ করিলেন। গীতাশাস্ত্রে জীবকে শক্তি বলায় বৃষ্টিতে হইবে, জীব আশ্রিত ও ঈশ্বর আশ্রয়। অতএব আশ্রিত ও আশ্রয়রূপ ভেদ থাকায় ঈশ্বরের সহিত জীবের অভেদস্থাপন করিতে পারেন ॥১৪॥

( ৫০ পা ) “ঈশ্বরের.....সর্বনাশ ॥” এই ৫৮ ও ৫৯ পরায়ের ভাবার্থ।

সচ্চিদানন্দময় শ্রীবিগ্রহকে সত্ত্বগুণের বিকার বলা কি সম্ভব হইয়াছে? যিনি পরমেশ্বরের শ্রীবিগ্রহকে মায়িক বলেন, তিনি কি পামণ্ডীর মধ্যে গণ্য হইবেন না? বৃহদৈশ্বরে উক্ত হইয়াছে—

“যো বেত্তি ভৌতিকং দেহং কৃষ্ণস্য পরমাশ্বনঃ ।  
স সর্বস্বাধিঃ কার্য্যঃ শ্রৌতস্মার্ত্তবিধানতঃ ।  
মুখং তস্যাবলোক্যাপি সচলঃ নানমাচরেৎ ।  
পশ্যেৎ সূর্য্যং স্পৃশেৎগাঞ্চ যুগং প্রাশ্য বিগুহ্যতি ॥”

সর্বশক্তিসমম্বিত ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণের দেহকে যে মায়িক বলিয়া জানে, বেদবিহিত ও স্মৃতি-বিহিত কর্ম্ম হইতে বিধিপূর্ব্বক তাহাকে বহিষ্কৃত করিয়া দিবে। উক্ত ব্যক্তির মুগ্ধদর্শন করিলে বস্তুর সহিত মান কবিবে। সূর্য্যকে দর্শন করতঃ গাভী স্পর্শ করতঃ ও স্তুত ভোজন করতঃ পবিত্রতা লাভ করিবে।

যমদণ্ডী, যমদণ্ড্য। নাস্তিক বৌদ্ধ-গণ হইতেও কাল্পনিক ব্যাখ্যায় আরও নাস্তিকতা প্রকাশ পায়, তাহা দেখাইতেছেন, “বেদ” ইত্যাদি। বৌদ্ধগণ অর্থাৎ মাহারা জগৎকে ক্ষণিক, আত্মাকে ক্ষণিক, প্রত্যক্ষ ও অনুমানের কেবল-মাত্র প্রামাণ্য স্বীকার করেন, তাহার বেদ না মানায় নাস্তিক। বেদাশ্রয়ে নাস্তিকবাদ, বেদ আশ্রয় করিয়া নাস্তিকের স্মায় কথা বলা। বৌদ্ধভেদে, বৌদ্ধ হইতে। বৌদ্ধমতে বিশ্ব অসৎ। শঙ্করাচার্য্য বলেন, বিশ্ব সৎও নহে, অসৎও নহে, সদনদৃবিলক্ষণ। সৎ বলিতে ভাব এবং অসৎ বলিতে অভাব। সৎ ও অসৎ বিলক্ষণা মায়ার অমত্বেই তাৎপর্য্য। মায়াপ্রতিবিন্দিত ঈশ্বর ও তাহার বৃষ্টি-রূপা অবিদ্যাতে প্রতিবিন্দিত জীবের

অন্যেই পর্য্যবসান হয়। সত্তা মাত্র ব্রহ্মেরও শূন্যতাই দেখা যায়। অতএব সূক্ষ্মবিচারে বৌদ্ধবাদ ও মায়াবাদ একই হইতেছে। সংসারাবদ্ধ জীবের বন্ধন মোচন নিমিত্ত বেদব্যাস বেদান্ত-সূত্র করিলেন, কিন্তু শঙ্করাচার্য্য কল্পিত অর্থ দ্বারা সূত্রের প্রকৃত অর্থকে আচ্ছাদন করিলেন এবং জীবই ব্রহ্ম এরূপ উপদেশ দিলেন। অতএব উহা শ্রবণ করিলে বন্ধন মোচন না হইয়া ‘আমি ব্রহ্ম’ চিন্তা দ্বারা অপরাধী হওতঃ নিরয়-গামী হইবে। যেমন কোন রাজভৃত্য নিজেকে রাজা বলিয়া পরিচয় দিলে, অপরাধী হওতঃ দণ্ড প্রাপ্ত হয়; তদ্রূপ জীব আপনাকে ব্রহ্ম ভাবনা করিলে অপরাধী হয়। যেমন সূর্য্যের রশ্মি সূর্য্য-মণ্ডলকে প্রকাশ করিতে পারে না; যেমন অগ্নিস্কুলিঙ্গ অগ্নিকে দক্ষ করিতে পারে না, তদ্রূপ জীব কখনই ব্রহ্ম হইতে পারে না। অতএব আচার্য্যের কল্পিতার্থ শ্রবণ করিলে সর্কনাশ হইয়া থাকে, কোনরূপ মঙ্গলের উদয় হয় না ॥৫৮।৫৯॥

( ৫০ পা ) “পরিণাম বাদ... .. অবিকার ॥” এই ৬০তম পরায়ের ভাবার্থ। বেদান্তসূত্র বৌদ্ধের সজাতবাদ এবং তार्কিকের আরম্ভবাদ খণ্ডন পূর্কক স্পষ্টাকারে পরিণামবাদ স্থাপন করিলেও, বিবর্তবাদী-আচার্য্য সূত্রকারকে জাঙ্ঘ মনে করিয়া “আঙ্ঘকৃতঃ পরিণামাৎ” ( ১৪।২৬ ) এই সূত্রোক্ত পরিণামের উপর দোষোক্তাবদ পূর্কক

“তদনন্তমায়ত্তপনখাদিত্যঃ” ( ২।১।১০ ) সূত্রের

ভাবো” ন হে কত ব্রহ্মণঃ পরিণামধর্ম্মং তদ্বিতক-  
থক্যং প্রতিপত্তুম্।”

অর্থাৎ একই ব্রহ্মের যুগপৎ পরিণাম ও অপরিণাম বলা আদৌ-যুক্তিযুক্ত হইতে পারে না, ইত্যাদি বাক্য দ্বারা বিবর্তবাদ স্থাপনের প্রয়াস পাইয়াছেন। তাঁহার উক্ত প্রয়াস কি ব্যর্থ হয় নাই? পরিণামবাদের কি সঙ্গতি হয় না, সাম-  
ঞ্জস্য হয় না? পরিণাম দ্বিবিধ, স্বরূপ-  
পরিণাম ও শক্তিবিক্ষেপলক্ষণ পরিণাম।  
তন্মধ্যে স্বরূপপরিণাম সাংখ্য-সিদ্ধান্ত।  
সাংখ্যেরা বলেন, ব্রহ্মানধিষ্ঠিত-স্বত্ত্ব-  
প্রকৃতির স্বরূপ পরিণাম হয়। শেষোক্ত  
পরিণামই বেদান্তসিদ্ধান্ত। বেদান্তমতে,  
সর্কশক্তি-বিশিষ্ট পরব্রহ্ম পুরুষোত্তম  
অচিন্ত্য নিজশক্তি বিক্ষেপ দ্বারা জগতের  
জন্মাদি সাধন করেন। যেমন আকাশ  
হইতে শব্দ এবং উর্ননাভি হইতে সূত্রের  
উৎপত্তি হইয়া থাকে; তদ্রূপ ভাস্প  
পুরুষোত্তম হইতে জগতের উৎপত্তি হইয়া  
থাকে। একই সর্কশক্তিমান্ পরব্রহ্ম  
পুরুষোত্তম কর্তৃক অধিষ্ঠিত তদীয় শক্তি-  
বিশেষ বিক্ষিপ্ত বা স্পন্দিত হইয়া উক্ত  
স্পন্দনের তারতম্যে বিচিত্র জগৎ  
আকারে পরিণত হইয়াছেন। যেমন  
মণি অবিকৃত অবস্থায় স্বর্ণমুহ প্রসব  
করে; তদ্রূপ অচিন্ত্যশক্তিযুক্ত পরব্রহ্ম  
পুরুষোত্তম স্বয়ং অবিকৃত থাকিয়াই  
স্বশক্তি বিক্ষেপ দ্বারা বিচিত্র জগৎরূপে  
পরিণত হইয়াছেন ॥ ৬০ ॥

( ৫০ পা ) “ব্যাসজাঙ্ঘ ... .. নখর-  
মাত্র কর ॥” এই ৬১ তম ও ৬২ তম



পন্নায়ের ভাবার্থ। আচার্য্য ব্যাগকে  
জ্ঞান বলিয়া নিজকল্পিত অর্থ বিবর্তবাদ  
স্থাপন করিয়াছেন; ইহাতে কি দোষ  
হয় নাই? আরও দোষ দেখাইতেছেন,  
“জীবের” ইতি। আচার্য্য বেদান্তের  
“ওদনত্বনারঙশঙ্খাদিভাঃ।”

এই সূত্রে এই জগতকে ব্রহ্মের গায়-  
শক্তি বলিয়াছেন। জীবের অজ্ঞান দ্বারা  
জগতসৃষ্টি হয় বলিয়া জগতকে মিথ্যা  
বলিয়াছেন। ইহা কি সঙ্গত? রজুতে  
সর্পজ্ঞান যেমন মিথ্যা, তদ্রূপ জগৎ  
মিথ্যা নহে কিন্তু ঘটের স্থায় নশ্বর।  
ঋতিম্বৃতি প্রভৃতি শাস্ত্রে আত্মার বিনাশ  
শুনা যায় না, কিন্তু দেহের বিনাশ চির-  
প্রসিদ্ধ। অতএব নশ্বরদেহে অবিনশ্বর  
আত্মার আরোপজ্ঞান মিথ্যা হয়।  
পরিন্দুশ্যমান জগত কিরূপে মিথ্যা হয়?  
“সদেব সৌম্যোদমগ্র আদীত্যাাদি।”  
ঋতিতে “ইদং” শব্দে জগৎ উক্ত হই-  
য়াছে। সৃষ্টির পূর্বে জগৎ ছিল। “তৎ  
সত্যমিত্যাচক্ষত।” ইত্যাদি ঋতিতেও  
জগতের সত্যত্বই অঙ্গীকৃত হয়; কিন্তু  
উহা নশ্বর। নশ্বর শব্দে অভাব নহে, জগ-  
তের অব্যক্তভাব। বিশ্বের অব্যক্তরূপ  
সিদ্ধ হইলে কিন্নকে রজতজ্ঞানের স্থায়  
জগৎ মিথ্যা নহে। পট যেমন উৎপত্তির  
পূর্বে সূত্ররূপেই অবস্থান করে, পরে  
ওতপ্রোতভাবে গঞ্জিত সূত্র হইতেই  
অভিব্যক্তি হয়, তদ্রূপ বিশ্বও সূত্ররূপে  
ব্রহ্ম স্বরূপেই অবস্থান করে, ব্রহ্ম সিস্কু  
হইলে, তাহা হইতে তাঁহার অভিব্যক্তি  
হয়। জগতের সূক্ষ্মতা প্রাপ্তই অব্যক্ত।

যদি বলেন, স্বর্গ হইতে উৎপন্ন কুণ্ডল যেমন  
স্ববর্ণায়ক, তদ্রূপ অবিনশ্বর ব্রহ্ম হইতে উৎপন্ন  
জগৎ অবিনশ্বর হউক; যেহেতু কার্য্যও কারণ  
উভয়েই ধর্মগত অভেদ এবং অক্ষর ব্রহ্ম হইতে  
ক্ষর বিশ্বের উৎপত্তি কিরূপে সম্ভবে? তাহার  
উত্তর এই, কার্য্য কারণধর্মের সর্বাংশরূপে  
অমুগত হইবে, এরূপ নিয়ম নাই। যেমন অগ্নি  
হইতে উৎপন্ন কার্য্যরূপ প্রভাদিতে দাহকত্বাদি  
ধর্ম দৃষ্ট হয় না। দীপাদির প্রভা যেমন দীপাদির  
প্রকাশবিস্তার; তদ্রূপ ব্রহ্মের শক্তিকৃত বিস্তার  
এই অখিল জগৎ। যদি এই বিশ্ব সৃষ্টির পূর্বে না  
থাকে, তবে তাহার উৎপত্তি হয় না। আকাশের  
পুষ্পের স্থায় মিথ্যা হয়। “সদেব সৌম্যোদমগ্র  
আদীত্যা” ও “আত্মা বা ইদমগ্র আসীত্যা” ইত্যাদি।  
ঋতিতে বিশ্বের অস্তিত্বই সিদ্ধ হয়। জগতের কারণ  
অবস্থা ব্রহ্মের সহিত তাদান্বিতাবে বর্তমান থাকে।  
বিস্তৃতরূপে কার্য্য অবস্থাতেই, এই বিশ্ব হয়।  
ইহা সৃষ্টির পূর্বে ছিল না, বা পরেও থাকিবে  
না, বিশ্বের নাশ হেতু কিন্নকে ভ্রম রজতজ্ঞানের  
স্থায় ব্রহ্মে মিথ্যা জগৎ সৃষ্টিমধ্যেই প্রকাশ পায়;  
এই প্রকার অমুমান মিথ্যা; যেহেতু উহা প্রমাণ-  
সিদ্ধ নহে। তাহার কারণ, যিনি অমুহৃত হইলে  
অল্প বিষয়ের ক্ষুণ্ণি হয় না, সেই ব্রহ্মে কিন্নকাদি  
নিকট বস্তুসকলের স্থায় অন্য বিষয়ের আরোপ  
কিরূপে হয়? ঋতিগণই বলিয়াছেন,—

“দখতি সক্রম্ননস্থমি য আত্মনি নিত্যস্থখে

ন পুনরুপাসতে পুরুষসারহরারবস্থানিতি।”

নিত্য স্থখরূপ আপনাতে বাঁহারা একবার  
মনোনিবেশ করিয়াছেন, তাঁহাদের কুণ্ডলিত স্থখে  
আর প্রবৃত্তি হয় না। অতএব অচ্যুতের স্বরূপ  
হইতে অচিন্ত্যশক্তি দ্বারা এই বিশ্ব প্রকাশ পায়।  
ত্রযামাত্র মৃত্তিকা ও নৌহাদির যে ভেদ ঘট-  
কুণ্ডলাদি, তাহার প্রকার দ্বারা ই সাদৃশ্যনিরূপণ  
করতঃ ব্রহ্মের অচিন্ত্যশক্তির পরিমাণ স্বীকার  
করা হয়। কিন্নকে রজতের ও রজুতে সর্পের

ভ্রমজ্ঞান দ্বারা সাদৃশ্য নিরূপণ করার কি দোষ হয় না ? ব্রহ্মে মিথ্যা অগতের অধিষ্ঠান অসম্ভব । ব্রহ্ম মিথ্যাসম্বন্ধরহিত, ইহা বলিবার জন্য ঐতিহ্যে “সত্যং জ্ঞানমানসং ব্রহ্ম” ইত্যাদি বাক্যে ব্রহ্মকে সত্য বলিরাছেন । এক্ষণে জিজ্ঞাস্য, মৃৎপিণ্ডাদিকর্তা দ্বারা যে ঘট উৎপন্ন হয়, সেই ঘট সং বা অসং ? ঘট অসং হইলে, প্রথমে পিষ্টপেষণ, দ্বিতীয়ে ক্রিয়ার পিণ্ডাদিকর্তা দ্বারা ও তৃত্যয়ের সম্বন্ধের, আকাশে পুষ্পধারণের দ্বারা অসম্ভবত্ব হেতু ঘটাদি উৎপন্ন হয় কি ? অর্থাৎ হয় না । অতএব অসং ঘটের উৎপত্তি কিরূপে সিদ্ধ হয় ? মৃৎপিণ্ডে ঘট অব্যক্তরূপে বর্তমান থাকে, কর্তা ও তন্নিষ্পন্ন ক্রিয়াযোগ দ্বারা যেমন ঘট উৎপন্ন হয়, তদ্রূপ পরম কারণ ভগবানে স্থিত বিশ্ব, ভগবানের স্বাভাবিক শক্তি ও তন্নিষ্পন্ন ক্রিয়াযোগ দ্বারা এই অসং উৎপন্ন হয় । অগতকে অসং বলার বেদান্তবিরুদ্ধ হইতেছে না কি ? ইহাতে বেদবিরুদ্ধ ও প্রকারান্তে অনীশ্বরবাদ প্রকাশ পাইতেছে না কি ? বেদবিরুদ্ধবাদী নিন্দনীয় । তথাহি পাশ্চ—

ঐতর্যঃ স্মৃতয়শ্চৈব যুক্তয়শ্চৈব পরম্ ।

বদন্তি তদ্বিরুদ্ধঃ যো বদন্তস্মিন চাধম ॥”

ঐতিগণ, স্মৃতিগণ ও যুক্তিসকল পরমেশ্বরকে বলেন । যে ব্যক্তি তদ্বিরুদ্ধ অর্থাৎ পরমেশ্বরকে মানে না, তাহা হইতে অধম আর নাই । তথাহি গীতার ( ১৬৮ )—

“অসত্যমপ্রতিষ্ঠিত্তে জগদাহরনীশ্বরম্ ।

অপরম্পরসমুৎতং কিমন্যং কামহেতুকম্ ॥”

অমরস্বভাব জনগণ এই অগতকে বিমূঢ়ের রজতাদি জ্ঞানবৎ ভ্রমলক্ষণ অসত্য, আকাশে পুষ্পবৎ অপ্রতিষ্ঠিত ( নির্দেশশূন্য ), ব্রহ্মে ঈশ্বর-জ্ঞান অজ্ঞানমাত্র কল্পিত হেতু ব্রহ্ম ঈশ্বরতিমানী হয়েন, সৃষ্টিবিষয়ে কেহই ঈশ্বর নাই স্মৃত্যং অসং অনীশ্বর, স্বভাবোৎপন্ন এবং স্বপ্রবৎ স্বেচ্ছা-হেতুক বলিরা বর্ণন করিরা থাকে । অতএব অগতকে অসং বলা কি যৌবাবহ মতে ?

“প্রযুক্তিক নিযুক্তিক জনাঃ স বিহগাহরাঃ ।

গীতার ( ১৬৭ ) এই শ্লোক দ্বারা তাহাদের সংস্কার দোষ উক্ত হইয়াছে ।

“এতাং দৃষ্টিমবষ্টভাঃ নষ্টান্মানোহরম্বুদ্ধয়ঃ ॥”

ইত্যাদি গীতার ( ১৬৯ ) এই শ্লোক দ্বারা তাহাদের গতিকো নিন্দা করিরাছেন । অগতকে অসং বলার উহা মারাবাদ হইয়াছে । ভগবানের ইচ্ছাতেই আচার্য্য ঐরূপ করিরাছেন । তথাহি পাশ্চাত্তরথণ্ডে দেবীর প্রতি শ্রীমহাদেবের বাক্য—

“বেদান্তে তু মহাশাস্ত্রে মারাবাদমবৈদিকম্ ।

মঠৈব বক্ষ্যতে দেবি অগতাং নাশকারণাং ॥”

হে দেবি, অগতের নাশ হেতু আমিই মহাশাস্ত্রে বেদান্তে বেদবিরুদ্ধ মারাবাদ বলিরাছি । অতএব সত্যস্বাভাবিক অচিন্ত্যশক্তিমান্ পরমেশ্বর তুচ্ছ ও মিথ্যা কার্য্য করেন না । তথাহি মাধবভাষ্য প্রমাণিতা ঐতি :—

“অধৈনমাহঃ সত্যকর্মেতি

সত্যং হেবেদং বিশ্বস্বজমিতি ॥”

অনন্তর বিজ্ঞগণ শ্রীভগবানকে সত্যকর্মা, সত্য ও এই সত্য বিশ্বের স্রষ্টা বলেন । তথাহি শ্রীভাগবতে ব্রহ্মাদি দেবগণের স্তবে—

“সত্যব্রতং সত্যপরং ত্রিসত্যং

সত্যস্য যোনিং নিহিতক সত্যে ।

সত্যাস্য সত্যমৃত, সত্যনেত্রং

সত্যাস্বকং স্বাং শরণং প্রপন্নাঃ ॥”

এই শ্লোকে শ্রীভগবানের সত্য সঙ্কল্প, সত্য-পরায়ণত্ব সৃষ্টিাদিলীলাদ্বয়ে সত্যত্ব, সত্য বিশ্বের কারণত্ব, বিশ্বের অন্তর্ধ্যামিরূপে স্থিতত্ব, সত্যের, সত্যতা হেতুত্ব, বাক্যের সত্যত্ব, দৃষ্টির সত্যত্ব, সত্যের প্রবর্তকত্ব ইত্যাদি উক্ত হইয়াছে । ইহা স্বীকার না করিলে অর্ধকুকুটার ন্যায় উপ-হাসাম্পদ হইতে হয় এবং ব্রহ্মাদি কর্তৃক স্তবের ঋয়গাভঙ্গ ও প্রেক্ষমভঙ্গ দোষ হয় ।

অতএব বিশ্ব মিথ্যা নহে, সত্যই ; ইহা স্থির হইল ॥ ৬১।৬২ ॥

(৫০ পা) “প্রণব যে ... মহাবাক্য।”

এই ৬৩তম ও ৬৪তম পয়ারের ভাবার্থ।  
অপর দোষ দেখাইতেছেন, “প্রণব”  
ইতি। ঐশ্বর্যভেদে যখন জীব ও ব্রহ্মের  
অভেদের স্থায় ভেদও স্পষ্টাক্ষরে উক্ত  
হইয়াছে, তখন সর্ববেদবীজভূত প্রণ-  
বের মহাবাক্য আচ্ছাদন করিয়া তত্ত্ব-  
মস্তাদি প্রাদেশিক চারিটি বাক্যের মহা-  
বাক্য অবধারণ করিয়া তখনে মারা-  
বশ জীবকে মারাধীশ পুরুষোত্তমের  
সহিত সর্বতোভাবে অভিন্ন বলিয়া  
নির্দেশ করা নিতান্ত গর্হিত কার্য হই-  
য়াছে। যে বাক্যে উপক্রমাদি ষড়্বিধ  
লিঙ্গ দ্বারা ঐশ্বর্যের তাৎপর্যের অর্থ বোধ  
হয়, তাহাকে মহাবাক্য বলে। প্রণব  
সকল বেদের বীজ। প্রণব হইতেই  
সকল বেদের আবির্ভাব। প্রণবেই সকল  
বেদের পর্য্যবসান। প্রণব বেদের অন্ত-  
রঙ্গ নাম ও ব্রহ্মের প্রতিমূর্তি। প্রণবকে  
ব্রহ্মের স্বরূপও বলা হয়। অতএব  
পরমেশ্বরের বাচক প্রণবই একমাত্র মহা-  
বাক্য। শঙ্করাচার্য্য প্রণবের মহাবাক্য  
আচ্ছাদন করিয়া সামাদিবেদ চতুষ্টয়োক  
তত্ত্বমস্তাদি প্রাদেশিক বাক্যকে মহা-  
বাক্য বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। তত্ত্ব-  
মস্তাদি বাক্যচতুষ্টয় জীব ও ব্রহ্মের ঐক্য  
বোধক। জীব ও ব্রহ্মের উক্ত প্রকার  
ঐক্য তত্ত্বমস্তাদি প্রাদেশিক বাক্যচতুষ্টয়  
তির বেদের অপর কোন বাক্য দ্বারা  
নির্দিষ্ট হয় নাই; কিন্তু বেদের সর্বত্রই  
ব্রহ্ম লক্ষিত হইয়াছেন। বেদার্থনির্ণায়ক  
বেদান্তশূত্র বা ইতিহাসপুরাণাদিতেও

সর্বত্র ব্রহ্ম উদ্দেশিত হইয়াছেন, কিন্তু  
জীব ও ব্রহ্মের ঐক্য নির্দিষ্ট হইয়েন নাই।  
অতএব তত্ত্বমস্তাদি বাক্যচতুষ্টয়ের সর্ব-  
বেদার্থে সমন্বয় না থাকায় এবং প্রণবের  
সর্ববেদার্থে সমন্বয় থাকায়, তত্ত্বমস্তাদি  
বাক্যচতুষ্টয়ের মহাবাক্য না হইয়া,  
একমাত্র প্রণবের মহাবাক্য হইয়াই  
সঙ্গত। এইরূপে তত্ত্বমস্তাদি বাক্য যদি  
মহাবাক্য না হইল, তবে তখনে মারাশ  
জীবকে মারাধীশ ঈশ্বরের সহিত অভিন্ন  
বলা কি নিতান্ত গর্হিত কার্য হইল  
না? আরও,—

“যদাশ্বকো ভগবান্ তদাস্মিক্য বক্তিঃ কিমাশ্বকো।  
ভগবান্ জ্ঞানাস্বকঃ ঐশ্বর্য্যাস্বকঃ শক্ত্যাস্বকশ্চেতি ॥”

এই ঐশ্বর্যভেদে উক্ত হইয়াছেন,—ভগবান  
যদাস্বক, তাহার প্রকাশও তদাস্মিক্য। ভগবান্  
কিমাশ্বক? জ্ঞানাস্বক, ঐশ্বর্য্যাস্বক ও শক্ত্যাস্বক  
ভগবান্। “অমেকং গোবিন্দং সক্তিগানন্দবিগ্রহম্ ॥”

প্রভৃতি ঐশ্বর্যভেদে সকলে ও তদর্থনির্ণায়ক  
স্বয়তি সকলে যখন ঐশ্বর্যভেদভঙ্গ্যতত্ত্ব  
ভূত জীববিগ্রহ ও স্বরূপশক্তি বিলাসভূত  
ধামাদি স্পষ্টাক্ষরেই অঙ্গীকৃত হইয়াছে,  
তখন উহাদের মায়িক বলয়, শারীরক-  
ভাষ্যকার কি অপরাধী হন নাই ॥৬৩৬৪॥

(৫০ পা) “এইমত ... শাস্ত্র কৈল ॥”

এই ৬৫তম হইতে ৬৭তম পয়ার তিনটির  
ভাবার্থ সহজ। এইমত, পূর্বোক্ত প্রকারে।  
কল্পনাভাষ্যে, শঙ্করাচার্য্য কৃত শারীরক  
ভাষ্যে। প্রতিকুল অর্থের নাম পূর্বপক্ষ।  
বিত্ততা, পরমতে মোবারোপ হইল,  
কর্তার তাৎপর্যার্থের অবিবর্তিত কার্য  
কল্পনা করিয়া মোবারোপা নিগ্রহ,

যাহাতে পরাক্রম হইতে পারে তাহাকে নিঃসন্দেহে  
বলে। "আচার্য্যেণ" ইতি। এই সকল  
আচরণে বস্তুতঃ আচার্য্যের কোন দোষ  
দেখা যায় না; কারণ সাময়িক প্রয়ো-  
জনানুসারে ভগবদাজ্ঞার আচার্য্য ঐরূপ  
কার্য্য করিয়াছেন। "স্বাগমৈরিতি" ও  
"মায়াবাদমিতি" পরশ্লোক দ্বারা তদ্বি-  
ষয়ের প্রমাণ করিতেছেন ॥ ৬৫—৬৭ ॥

(৫০ পা) "স্বাগমৈরিতি" ও  
"মায়াবাদমিতি"। পঞ্চদশ এবং ষোড়শ  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। কালানুসারে শ্রীভগবানের  
আজ্ঞায় শঙ্করাচার্য্য যে কল্পনা শাস্ত্র  
কলিতে প্রচার করিয়াছেন, তৎপ্রমাণ  
এই দুই শ্লোক ॥ ১৫।১৬ ॥

(৫০ পা) "শুনি ... .. গুণগণ।"  
এই ৬৮তম পর্যায়ের ভাবার্থ সরল।  
শুনি, মায়াবাদের উপর এইরূপ অশ্রুত-  
পূর্ব্ব দোষারোপ শ্রবণ করিয়া। "মুখে"  
ইতি। তাঁহার সুপ্রতিষ্ঠিত বিদ্যাগর্ভ  
খর্ব্ব হওয়ায় মুখ দিয়া একটি বাক্যও  
বহির্গত হইল না। ভট্টাচার্য্যকে বিন্মিত  
দেখিয়া প্রভু কহিলেন, ভট্টাচার্য্য।  
বিন্মিত হইবেন না, শ্রীভগবানে ভক্তিই  
পরম-পুরুষার্থ। শ্রীভগবানের এমনি  
অচিন্ত্য গুণ যে মুক্ত পুরুষগণও তাঁহাতে  
ভক্তি করিয়া থাকেন। পরশ্লোক দ্বারা  
এই বাক্যের প্রমাণ করিতেছেন ॥ ৬৮ ॥

(৫১ পা) "আত্মানাম ইতি।" এই  
সপ্তদশ শ্লোকের ভাবার্থ মথের চতুর্বিংশ  
পরিচ্ছেদে বলা হইবে, তদন্তত আমরা  
এখানে বলিলাম না। ঐ পরিচ্ছেদে

সবিশেষ সৃষ্টি করিবেন। ভগবানের  
অচিন্ত্যশক্তি এবং তাঁহার ভজনই পরম  
পুরুষার্থ, এই শ্লোক দ্বারা তাঁহারই দিগু-  
দরশন করাইলেন। মুক্তপুরুষগণও ভক্তি  
করেন তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৭ ॥

(৫১ পা) "শুনি ভট্টাচার্য্য ... ..  
অভিপ্রায়।" এই ৬৯তম ও ৭০তম  
পর্যায়ের ভাবার্থ সরল। শ্লোকটি শুনিয়া  
ভট্টাচার্য্য বাক্য বলিবার অবসর পাইয়া  
কহিলেন, "এই শ্লোকের" ইতি। প্রভু  
কহিলেন, আপনিই প্রথমে ব্যাখ্যা  
করুন। "শুনি" ইতি। ভট্টাচার্য্য বিন্মি-  
প্রায় পাণ্ডিত্য অভিমানকে পুনঃ প্রতি-  
ষ্ঠিত করিবার নিমিত্ত বন্ধ-পরিকর  
হওতঃ তর্কশাস্ত্রের ভিন্ন ভিন্ন মতবাদের  
উত্থাপন সহকারে উক্ত শ্লোকটিকে নর  
প্রকারে অর্থ করিলেন। প্রভু তাহা  
শুনিয়া ঈষৎ হাসিয়া বলিলেন, "ভট্টাচার্য্য  
ইত্যাদি। আপনি যে অর্থ করিলেন, সে  
আপনার অসাধারণ প্রত্যাশার মতের  
পরিচয় প্রদান করিল। কিন্তু আরও  
কিছু নিগূঢ় অভিপ্রায় আছে ॥ ৬৯।৭০ ॥

" (৫১ পা) "ভট্টাচার্য্য ... .. অতি-  
প্রায় লয়া ॥" এই ৭১তম পর্যায়ের  
ভাবার্থ সরল। ভট্টাচার্য্য মনে করিয়া-  
ছিলেন, তাঁহার ব্যাখ্যা শুনিয়া প্রভু  
বিন্মিত হইবেন। কিন্তু তাহা হইল না।  
প্রভুর কথা শুনিয়া ভট্টাচার্য্য স্বয়ংই  
অধিকতর বিন্মিত হইয়া প্রভুর ব্যাখ্যা  
শ্রবণে প্রাৰ্থনা করিতেছেন। তাঁর  
ভট্টাচার্য্যের। নব অর্থ মথ্যে নর প্রকার  
অর্থ মথ্যে। এক না দুই, একটি অর্থও

বলিলেন না। একাদশ পদ বধা—  
 ১ আঞ্জারামাঃ, ২ চ, ৩ মুনয়ঃ, ৪ নি-  
 গ্রাহাঃ ৫ অপি, ৬ উরুক্রমে, ৭ কুর্কৃষ্টি,  
 ৮ অহৈতুকীং, ৯ ভক্তিং, ১০ ইথছুত-  
 গুণঃ, ১১ হরিঃ। পৃথক্ পৃথক্ পদের  
 অর্থ করিয়া, সেই সেই পদের প্রধান  
 অর্থের সহিত আঞ্জারাম শব্দ মিলাইয়া  
 আঠার প্রকার অর্থ করিলেন।

কেহ বলেন, মহাপ্রভু সনাতনের নিকট যে  
 একষটি প্রকার অর্থ করেন, তাহা এই আঠার  
 প্রকার অর্থ হইতে অতিরিক্ত। ইহা হইতে  
 পারে না; যে হেতু তথায় উক্ত হইয়াছে—

“পূর্বে শুনিয়াছি, ভূমি সার্কভৌমস্থানে।  
 এ শ্লোকের আঠার অর্থ করিছ ব্যাখ্যানে ॥”

ইত্যাদি পরারাম্বাহারী সনাতন মহাপ্রভু-কৃত  
 আঠার প্রকার অর্থই শুনিতে চাহেন, কিন্তু মহা-  
 প্রভু ঐ আঠার প্রকার অর্থ করিতে যাইয়া  
 একষটি প্রকার অর্থ করেন। অতএব এই আঠার  
 প্রকার অর্থ, একষটি প্রকার অর্থের অন্তর্গত।  
 ঐ স্থলে বিশদরূপে ব্যাখ্যাত হইবেন ॥ ৭১ ॥

( ৫১ পা ) “ভগবান ... .. দুই কর  
 যুড়ি ॥ এই ৭২তম হইতে ৭৪তম পয়ার  
 পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। “ভগবান তাঁর  
 ভক্তি” এই স্থলে কোথাও “ভগবান তাঁর  
 শক্তি” পাঠ আছে। প্রভু কর্তৃক ব্যাখ্যাত  
 প্রত্যেক অর্থেই শ্রীভগবান্ ও তাঁহার  
 প্রতি ভক্তি আচরণ অবশ্য কর্তব্য অথবা  
 তাঁহার শক্তি ও গুণ সকলের অচিন্ত্য  
 প্রভাব দ্বারা জ্ঞান, যোগ সিদ্ধগণের ও  
 সাধকের চিত্ত আকর্ষিত হয়, ইহা উক্ত  
 হইল। ভগবানের ভক্তি বা শক্তি ও  
 গুণগণ স্বর্গাদি সাধ্য ও কর্মাদি সাধনের

স্বাভাবিক কারণ; ইহাই অচিন্ত্য  
 প্রভাব। এই বাক্যের প্রমাণ করিতে-  
 ছেন, “সনকাদি” ইতি। এইরূপ বহুবিধ  
 অর্থ ভট্টাচার্য্য শুনিয়া অত্যন্ত বিস্মিত  
 হইলেন। তিনি অলৌকিকী প্রতিভা  
 দ্বারা প্রভুকে শ্রীভগবান্ বুঝিয়া, পূর্কৃত  
 তাঁহার অবজ্ঞা হেতু নিজের অপরাধ  
 স্মরণ করিয়া মনে মনে ব্যথিত ও অনু-  
 তপ্ত হইলেন। পরক্ষণেই প্রকাশ্যভাবে  
 আত্মপ্রাণি করিতে করিতে প্রভুর শরণা-  
 পন্ন হইলেন। প্রভু তাঁহাকে অগ্রে  
 নিজের ঐশ্বর্য্যাত্মক চতুর্ভুজরূপ ও পশ্চাৎ  
 মধুর বংশীধর দ্বিভুজ স্বরূপ প্রদর্শন  
 করাইলেন অর্থাৎ উভয়রূপটি প্রভুর  
 স্বকীয় হওয়াতে ভট্টাচার্য্য অগ্রে পশ্চাৎ  
 দেখিলেন। দ্বিভুজস্বরূপ নিজরূপ হওয়ায়,  
 শ্রীকৃষ্ণই শ্রীচৈতন্য ইহা প্রতিপন্ন হইল,  
 নচেৎ দ্বিভুজ বংশীমুখ রূপটির অপসঙ্গ  
 হয়। ভট্টাচার্য্য তদর্শনে প্রণাম করতঃ  
 কৃতজ্ঞ হইয়া স্তব করিলেন ॥৭২—৭৪॥

( ৫১ পা ) “প্রভুর রূপায় ... ..  
 ভিন্কা করাইলা।” এই ৭৫তম হইতে  
 ৭৮তম পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। যদি  
 বল, মায়াদির ভগবৎস্বব করা কিরূপে  
 সম্ভবে? ইহাতে বলিতেছেন, “প্রভুর”  
 ইতি। প্রভুর রূপায় ভট্টাচার্য্যের সর্ক-  
 ত্বের ক্ষুষ্টি হওয়াতে, তিনি নাম ও  
 মাহাত্ম্যাত্মক শত সংখ্যক স্বরচিত শ্লোক  
 দ্বারা প্রভুর স্তব করিলেন। স্তব শুনিয়া  
 প্রভু তাঁহাকে আলিঙ্গন প্রদান করি-  
 লেন। আলিঙ্গন পাইয়া ভট্টাচার্য্য  
 প্রেমাবেশে অচেতন হইয়া ভূমিতলে

পতিত হইলেন এবং তাঁহার দেহে অক্ষ-  
কম্পাদি বিকার সকলের আবির্ভাব  
হইল। প্রভুর পদ্মহস্ত স্পর্শ পাইয়া  
সংজ্ঞালাভ করতঃ ভট্টাচার্য্য প্রভুর  
চরণে ধরিয়া বোধন করিতে লাগিলেন।  
তখন গোপীনাথচার্য্য প্রভুকে কহিলেন,  
“সেই” ইতি। “করণাময় প্রভো, তোমার  
অপার করুণা, তুমি সেই ভট্টাচার্য্যকে  
এইরূপ করিলে। প্রভু কহিলেন, “তচ্চ”  
ইতি। “তুমি শ্রীজগন্নাথের ভক্ত, তোমার  
সঙ্গের গুণে ইনি শ্রীজগন্নাথের রূপা  
পাইয়া এইরূপ হইলেন। পরে প্রভু  
ভট্টাচার্য্যকে স্থির করিলেন। দৈর্ঘ্য-  
লাভের পর ভট্টাচার্য্য বলিলেন, “প্রভো,  
আমি তর্কজড়, তুমি আমাকেও উদ্ধার  
করিলে। যিনি আমাকেও উদ্ধার  
করিতে পারেন, তাঁহার পক্ষে জগদুদ্ধার  
অসম্ভব। ॥ ৭৫—৭৮ ॥

(৫২ পা) “আর দিনে …… ভক্ষণ  
করিল ॥” এই ৭৯তম ও ৮০তম পয়ারের  
ভাবার্থ সরল। আর দিন, অশু দিন।  
অরুণোদয়কাল, সূর্য্য উদয়ের পূর্বে চারি  
দণ্ডকাল। ক্ষুট কহি, স্পষ্ট করিয়া।  
জাড়া, জড়তা ॥ ৭৯৮০ ॥

(৫২ পা) “শুকমিতি।” ও “নেতি”।  
এই অষ্টাদশ ও ঊনবিংশ শ্লোকের তাৎ-  
পর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। ব্রহ্মা  
কর্তৃক সংস্কৃত অগ্নিতে লক্ষ্মীদেবী  
স্বয়ং পাক করেন এবং ভগবান্ স্বয়ং  
ভোজন করেন। অতএব শ্রীজগন্নাথের  
উচ্ছিষ্ট মহাপ্রসাদ অন্ন শুদ্ধ, বহুকালের  
বাসি হোক বা দুর্গন্ধাদিযুক্ত হোক অথবা

বৈদিকাচার্য্য চাতুর্ব্য্য দ্বারা স্পৃষ্ট  
হইয়া দূরদেশ হইতে আনীত হোক, প্রাণ-  
মাত্রই (এখানে মাত্র শব্দে তৎক্ষণাৎই)  
মহাপ্রসাদ বুদ্ধি দ্বারা উহা ভোজন  
করিবে। শিষ্টগণ বলেন, শ্রীজগন্নাথ-  
দেবের প্রসাদ সম্বন্ধেই এই বিধি। এই  
মহাপ্রসাদ ভোজন বহুভাগ্যকে অপেক্ষা  
করে। যখন ভগবান্ বলিয়াছেন, মহা-  
প্রসাদভোজনে দেশকালাদির নিয়ম নাই,  
তখন ভোজন না করিলে প্রত্যব্যয়  
হয়। মহাপ্রসাদ বহুগুণসম্পন্ন বলিয়া  
মহাপ্রসাদ কৈবল্যস্বরূপ। উৎকলখণ্ডে  
উক্ত হইয়াছে—

মহাপ্রসাদ মস্তকে ধারণ করিলে পাপ  
বিনষ্ট হয়। ভোজন করিলে মন্যপানাদি  
জনিত মহাপাপ সকল নষ্ট হয়। ত্রাণে মানস  
পাপ, দর্শনে দর্শনজন্ম পাপ, আবাদে বাক্যজন্ম  
ও শ্রবণে শ্রবণজ পাপ, স্পর্শনে স্পর্শজ ও  
মিথ্যা-আলাপ জন্য পাপ, গাত্রলেপনে শরীর  
জন্য পাপ দগ্ধ হয়। সম্বন্ধ হইতে পারে,  
কৈবল্যস্বরূপ ও স্বয়ং লক্ষ্মী কর্তৃক পাচিত সুদর্শিত  
মহাপ্রসাদকে দুর্ভাগ্য কলির জীব কিল্পে প্রাপ্ত  
হইল? তহস্তর, কোন সূময়ে নারদ ষারকার  
গমন করিয়া শ্রবণ করিলেন, উদ্ধব শ্রীকৃষ্ণকে  
বলিতেছেন, হে প্রভো, “আপনার উচ্ছিষ্ট খাইয়া  
দাস আমরা আপনার মারাকে জর করিব।”  
মহাপ্রসাদের একরূপ গুণ গুনিয়া নারদ অত্যন্ত  
বিস্মিত হইলেন এবং উহার প্রাপ্তি লভ্য লোভ  
হইল। নারদ মনে করিলেন, মহাপ্রসাদের একরূপ  
মাহাত্ম্য মহাদেবকে জানান উচিত। অনন্তর  
নারদ কৈলাসধামে গমন করিয়া শিব-পার্বতীকে  
প্রণাম করতঃ মহাপ্রসাদের মাহাত্ম্য বর্ণন করিলে,  
মহাদেব কহিলেন, নারদ, এই দুর্গত মহাপ্রসাদ  
লক্ষ্মীর রূপা ব্যতীত পাইবার উপায় নাই। স্ত-  
.

এ। তুমি তাঁহার আরাধনা কর, তাহা হইলে মহাপ্রসাদ পাইবে কিম্বা মহাপ্রসাদের কিঞ্চিৎ আমার প্রদান করিও। একাই ভোজন করিও না। মহাদেবের মুখে প্রসাদ পাইবার উপায় জ্ঞাত হইয়া তাঁহার অমুমতি গ্রহণ করিয়া ও তাঁহাকে প্রণাম করতঃ লক্ষীর উপাসনায় নারদ গমন করিলেন। বছকালব্যাপী তপস্তা দ্বারা লক্ষ্মীদেবী সন্তুষ্ট হইয়া নারদকে বর দিতে আগমন করিয়া বলিলেন, “বৎস, বর গ্রহণ কর, কি নিমিত্ত আমার তপস্তা করিতেছ ?” নারদ কহিলেন, “দেবি, যদি প্রসন্ন হইয়া থাকেন, তবে আপনা কর্তৃক পাঠিত প্রভুর ভুক্তার মহাপ্রসাদ কিঞ্চিৎ প্রদান করিয়া আমার মনোভিলাষ পূর্ণ করুন।” দেবী কহিলেন, “নারদ, অতি দুর্লভ বস্তু প্রার্থনা করিয়াছ। প্রভুর পরিকর ব্যতীত ঐ মহাপ্রসাদ অন্য কেহ প্রাপ্ত হয় না। বিশেষ, প্রভুর আজ্ঞা ব্যতীত উহা প্রদান করিতে আমি সমর্থ নহি।” অনন্তর দেবী প্রভুর আদেশ গ্রহণ করতঃ কিঞ্চিৎ মহাপ্রসাদ আনিয়া নারদকে প্রদান করিলেন। নারদ উহার মধ্য হইতে কিয়দংশ মহাদেবের নিমিত্ত রাখিয়া ভোজন করিবামাত্র প্রেসোম্মত হইয়া নৃত্য করিতে লাগিলেন এবং তদবস্থায় কৈলাসে আগমন করতঃ মহাদেবকে ঐ মহাপ্রসাদ প্রদান করিলেন। মহাদেবও উহা ভোজন করতঃ প্রেসোম্মত হইয়া উদ্গত নৃত্য আরম্ভ করিলেন। পৃথিবী তার সহ করিতে না পারিয়া পার্শ্বতীর পরগাপন হইলেন। পার্শ্বতী উভয়ের নিকট আগমন করিয়া উভয়ের প্রেম দর্শনে অত্যন্ত আশ্চর্যাবিষ্ট হইলেন এবং তাদৃশ উৎপন্ন প্রেমের কারণ জিজ্ঞাসার জানিতে পারিলেন, মহাপ্রসাদ ভোজনই তাঁহার হেতু। সানন্দে মহাপ্রসাদ প্রার্থনা করিলে, যখন উহা প্রাপ্ত হইলেন না, তখন বলিলেন, দেব, আমার ভালবাসেন বলিয়া কি, আমার জন্য প্রসাদ রাখিতে বিনয়ন হইয়াছেন ? অথবা, অর্দ্ধাঙ্গিনী বলিয়া আনন্দের অংশ

প্রদানে অসমর্থ হইলেন ? ইহাতে আমি যেমন বঞ্চিত হইলাম, অভিশাপ বিতেছি, এই মহাপ্রসাদ যেন শৃগালকুকুরেরও ভুক্ত হয়। আর দুর্লভ থাকে না। শ্রীভগবানের ইচ্ছার এক্ষণ কাৰ্য্য হইল। পার্শ্ব সহ প্রকট হইয়া যেমন কলির জীবকে নিস্তার করিলেন, তদ্রূপ মায়ানাশক দুর্লভ মহাপ্রসাদকেও অভিশপ্ত করিয়া কলির জীবের জন্ত বৈকুণ্ঠ হইতে আনয়ন করিয়া দয়াল নামের সার্থকতা করিলেন। অতএব এমন দয়াল অবতারকে কোন মূঢ় না ভজে ? এই দুর্লভ মহাপ্রসাদকে প্রাপ্ত হইয়া কে অবজ্ঞা করে ? যে ভোজন না করে বা অবজ্ঞা করে অথবা বেদ-বিধির অপেক্ষা করে, সে মরণ্যম ॥ ১৮।১৯ ॥

( ৫২ প। ) “দেখি ... বিশ্বাস ॥”

এই ৮১তম ও ৮২তম পয়ারের ভাবার্থ সরল। মহাপ্রসাদে ভট্ট.চার্যের এতাদৃশ বিশ্বাস দর্শন করিয়া মহাপ্রভুর মন অত্যন্ত আনন্দিত হইল এবং তাঁহাকে আলিঙ্গন করিয়া বলিলেন,—

“মহাপ্রসাদে গোবিন্দে, নামত্রুণি বৈষ্ণবে।

শ্রমশূণ্যবতঃ রাজন্ বিশ্বাসো নৈব জায়তে ॥”

হে রাজন, অল্প পুণ্যবান্ ব্যক্তির মহাপ্রসাদে গোবিন্দে, শ্রীনেমে ও বৈষ্ণবে বিশ্বাস হয় না।

দুই জন ধরি, শ্রীচৈতন্য ও ভট্টাচার্য্য পরস্পরকে ধরিয়া। দৌহার, শ্রীচৈতন্য ও সার্কভৌম। “শ্বেদ” ইতি। উভয়ের নয়নের জলে উভয়েই অভিযুক্ত হইলেন। পরে মহাপ্রভু কহিলেন, আজি আগি অনায়াসে ত্রিভুবন জয় করিলাম, আজি আমি বৈকুণ্ঠে আরোহণ করিলাম অর্থাৎ সেই স্থানের মুখ অনুভব করিলাম অথবা ইহা দৈশ্বেত্যক্তি; আজি আমার সকল অস্তিত্ব পূর্ণ হইল। ইহার হেতু

দেখাইতেছেন, “সার্কভোমের” হাঁত । ভটাচার্য্যের মহাপ্রসাদে বিশ্বাস হইয়াছে । যদি বল, প্রসাদে বিশ্বাস হওয়াতে কি হইল ? তদন্তর “আজি” ইতি পর পয়ারে বলিতেছেন ॥ ৮১।৮২ ॥

( ৫২ পা ) “আজি……ভক্ষণ ॥” এই ৮০তম পয়ারের ভাবার্থ সরল । আজি তুমি অকপটে কৃষ্ণের আশ্রয় লইলে, তজ্জন্ত কৃষ্ণও অকপটে তোমার প্রতি সদয় হইলেন । শ্রীকৃষ্ণ তোমার প্রতি সদয় হওয়াতে, তাঁহার তত্ত্ব তোমাতে ক্ষুধিত হওয়ায় তোমার দেহাদি বন্ধন নাশ হইল । যে পর্য্যন্ত আত্মাতে দেহ-বুদ্ধি ও দেহে আত্মবুদ্ধি, সেই পর্য্যন্তই জীবের দেহবন্ধন । ঐ দেহবন্ধনের মূল অবিদ্যা । জীব যে পর্য্যন্ত অবিদ্যার অধিকারে থাকে, সেই পর্য্যন্ত কর্মকাণ্ডের অনুষ্ঠান না করিয়া প্রত্যবায়ী হয় । অবিদ্যার নিরূপ্তিতে কর্মকাণ্ডের অধিকারও নিরূপ্ত হইয়া যায়, সুতরাং তখন আর কর্মকাণ্ডের অনুষ্ঠান না করিলে প্রত্যবায়ী হইতে না । আজি তোমার দেহবন্ধন ছিন্ন হওয়াতে রজঃ-ও তমোগুণের নিরূপ্তি হইয়াছে । তোমার মন ভুক্তিমুক্তিস্পৃহাশূন্য হইয়া পবিত্র হওয়ায় কৃষ্ণপ্রাপ্তির যোগ্য হইয়াছে । আজি তুমি কর্মকাণ্ড উল্লঙ্ঘন করিয়া ভক্ত্যঙ্গ যাজন করিলে । আজি তুমি বেদধর্ম সঙ্ঘা বন্দনাদি লঙ্ঘন করিয়া মহাপ্রসাদ ভক্ষণ করিলে । শ্রীকৃষ্ণ বলিয়াছেন,—  
“বে বেধিকারে বা নিষ্ঠা ম গুণঃ পরিকীর্তিতঃ ।”  
অর্থাৎ আপন আপন অধিকারে নিষ্ঠাই গুণ ।

ভক্তির অঙ্গযাজনই জীবের প্রকৃত আপন সুধিকার । ভক্তির অঙ্গ মহাপ্রসাদ-ভোজন ত্যাগ করিলে দোষ, প্রসাদ ভক্ষণে গুণ । অতএব তুমি নিজের কর্তব্যের অনুষ্ঠান করিয়াছ । ইহাতে বেদোক্ত কর্মবিধির নাশ হইলেও বেদোক্ত ভক্ত্যঙ্গ-সাধনবিধির নাশ করা হয় নাই । অকপট ভজনে শ্রীকৃষ্ণের কৃপায় বেদোক্ত কর্মবিধি শিথিল হইয়া যায় ও দেহাদিবন্ধন নাশ হয় এবং ভগবানের তত্ত্ব ক্ষুধিত পায় ॥ ৮৩ ॥

( ৫৩ পা ) “যেমাগিতি” । এই বিংশ শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । ভগবানের গুণ অনন্তহেতু যিনি জ্ঞানের আগ্রহ পরিত্যাগ করিয়া শুদ্ধ-ভক্তি দ্বারা ভগবানকে ভজন করেন, তিনিই তাঁহাকে জানিতে পারেন, ইহা বলিতেছেন, “যেমাগিতি ।” “আজি সে খণ্ডিল” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক । শুদ্ধভক্তি আচরণে মায়ার সাগর হইতে উত্তীর্ণ হইলে তাঁহার দেহবন্ধন এবং বেদোক্ত কর্মবিধির অনুষ্ঠানও থাকে না । অহঙ্কারেরও নাশ হওয়াতে আমি সুল, আমি কৃষ্ণ, আমি কাম্বী, আমি জ্ঞানী, ইত্যাদি নষ্ট হইল । অতএব তখন আত্মা প্রেমাম্পদ ; তখন তাঁহার ভক্ত্যঙ্গ সাধনই অবশ্য কর্তব্য । অতএব বেদোক্ত ভক্ত্যঙ্গ যাজনে এবং বেদোক্ত কর্মবিধির ত্যাগে কোন দোষ হইল না ॥ ২০ ॥

( ৫৩ পা ) “এত কহি……সংকীর্তন ॥” এই ৮৪তম ও ৮৫তম পয়ারের ভাবার্থ সরল । অভিমান বিনাশের হেতু দেখা-



ইতেছেন, “চৈতন্যচরণ” ইতি । তার, সার্কভোমের ॥ ৮৪৮৫ ॥

( ৫৩ পা ) “হরের্নামেতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা আদির ৮৬ পৃষ্ঠায়, তাৎপর্য ভাবার্থব্যাক্যায় ৩০১ পৃষ্ঠায় দেখুন ॥ ২১ ॥

( ৫৩ পা ) “এই শ্লোকের... কণ্ঠ কৈল ।” এই ৮৬তম হইতে ৮৮তম পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । পূর্বে যে কহিল, দৈবরূপায় দৈবরতস্ব বোধ হয় ; পাণ্ডিত্যে নহে, ইত্যাদি কথা । দোহে, জগদানন্দ ও দামোদর । প্রসাদপত্নী, মহাপ্রসাদ ও ভট্টাচার্যালিখিত শ্লোকস্বয়-যুক্ত তালপত্নী ॥ ৮৬-৮৮ ॥

( ৫৪ পা ) “বৈরাগ্যেতি ।” এই দ্বাবিংশ ও ত্রয়োবিংশ শ্লোক দুইটির তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । বৈরাগ্য প্রপঞ্চ বস্তুতে আগক্তি শূন্য । বিদ্যা, শ্রীভগবত্বের অনুভব । ‘গাঢ়রূপে লীন হউক’ বলাতে, ইহাই বোধিত হইতেছে যে, আমার মন শ্রীচৈতন্য ব্যতীত যেন আর কাহাকেও প্রার্থনা করে না । অথবা, শ্রীরাধাকৃষ্ণ মিলিত তনু শ্রীচৈতন্যের শ্রীচরণ-সেবানন্দ ব্যতীত অন্য কোন আনন্দে আমার মন আকৃষ্ট না হয় । অতএব যদি কেহ প্রকৃত আনন্দ লাভ করিতে ইচ্ছা কর, তবে একমাত্র শ্রীচৈতন্য-চরণে আশ্রয় গ্রহণ কর ; তাহার রূপায় পরমানন্দ লাভ করিবে ॥ ২২।২৩ ॥

( ৫৪ ) “এই দুই শ্লোক... ফিরাইলা ।” এই ৮৯তম পয়ারের ভাবার্থ সরল । কীর্ত্তিবোধে, যশ প্রচারিত হয় । ঢঙ্কা-

বাদ্যাকার, ঢাকের শব্দের ন্যায় । ঢাকের শব্দ যেমন সকলেই শুনিতে পায়, তদ্রূপ মহাপ্রভুর রূপা ও সার্কভোমের ভক্তি সকলেই শুনিয়াছিল । একজন, একচিত্ত । শ্লোক, স্তুতি-শ্লোক । ব্রহ্মস্ববের, শ্রীভাগবতের দশমস্কন্ধে চতুর্দশাধ্যায়ে ব্রহ্মাকৃত স্ববের এক শ্লোক “তত্ত্ব ইতি ।” দুই অক্ষর পাঠ ফিরাইলা, দুই অক্ষর পরিবর্তন করিলেন । যথা “মুক্তিপদে” স্থানে “ভক্তিপদে” বলিলেন ॥ ৮৯ ॥

( ৫৪ পা ) “তত্ত্বেহু্যকম্পামিতি ।” এই চতুর্বিংশ শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

ব্রহ্মা কহিলেন, হে প্রভো ! অনাসক্ত হইয়া বিষয়ভোগ করতঃ যে ব্যক্তি নিখিল কার্যে তোমার করুণা অবলোকন করতঃ অর্থাৎ পিতা যেমন নিজ পুত্রকে কখন মিষ্টান্নভক্ষণ ও কখন নিষভক্ষণ করান এবং কখন আলিঙ্গন করিয়া চুষন করেন, কখন হস্ত দ্বারা গ্রহণ করেন ; এই সমস্ত কার্যে পিতার করুণা ভিন্ন অল্প কিছুই লক্ষ্য হয় না ; তদ্রূপ সুখ, দুঃখ, লাভালাভ, মানাপমান প্রভৃতি কার্য আমার হিতের জ্ঞান পিতার জ্ঞান প্রভূ করিতেছেন, আমি করিতেছি না ; ইত্যাদিরূপে তোমার করুণা অবলোকন করিয়া এবং কায়মনোবাক্যে তোমাকে নমস্কার করিয়া অর্থাৎ বালকের মঙ্গলের জন্য পিতা যেমন আচরণ করে, তদ্রূপ আমাদের মঙ্গলের জন্য তুমি এই সকল কর, এইরূপে পৃথুরাজার ন্যায় প্রত্যহ শ্রীভগবানকে নিবেদন করতঃ সুখ-দুঃখাদিতে ক্লিষ্ট না হইয়া তোমাতে আসক্তচিত্ত হওতঃ ভক্তিপথে বিচরণ করে, সে ভক্তিপদে দায়ভাগী হয় । “ভক্তিঞ্চ পদঞ্চ ভক্তিপদং তস্মিন্ ভক্তিপদে ।” ভক্তি ( প্রেম ) ও পদ ( সেবা ) বাহাতে, ভক্তি:

পদে। দায়ভাগ হয় অর্থাৎ ভ্রাতৃ-বন্টনের দ্বারা তুমি তাহার দায়িত্বরূপে বর্তমান থাক। অতএব তুমি মুক্তির কথা কি বলিব? এখানে বুদ্ধি ও চেষ্টাদির নিবেদন হইল। বুদ্ধি ও নিজ চেষ্টাদি রহিত জীবিত পুত্র যেমন পিতার সম্পত্তি লাভ করে; তদ্রূপ এখানেও বুদ্ধি অর্থাৎ শাস্ত্রাদির শুক বিচার এবং আত্মকৃত কর্মফল নিবারণে চেষ্টাদি রহিত হইয়া তোমাতে মন অর্পণ করিলে জীবিত অর্থাৎ ভক্তিমাগ্নিস্বিত্ত্বরূপ সম্পত্তি জীব লাভ করে। ঐশ্বর্য্যার্থ্যে ঐশ্বর্য্যগণও বলিয়াছেন—

“দূতর ইব শ্বসন্ত্যমুভূতো যদি তেহুবিধেত্যাদি।”

প্রাণধারী জীব যদি তোমার অমুভবী ভক্ত হয়, তবে, তাহাদিগের জীবন সার্থক, নচেৎ ভ্রাতার দ্বারা বৃথা নিশ্বাস বহন করিয়া, তাহাদের জীবন ধারণ করা মিথ্যা। অভক্তগণ বোরাক্কারারিত অনুর্য্যানামক লোকে গমন করে। ভক্তি লাভ করিলে অন্যামে ভগবৎপ্রাপ্তি হয় ॥ ২৪ ॥

( ৫৪ পা ) “প্রভু কহে.....করে ভক্তি ॥” এই ৯০তম পরারের ভাবার্থ। সার্কভৌমের পাঠিত শ্লোক শুনিয়া মহা-প্রভু কহিলেন, ঐ শ্লোকের “মুক্তিপদে” স্থানে “ভক্তিপদে” পাঠ করিলে কেন? ইহাতে তোমার অভিপ্রায় কি? ভট্টাচার্য্য কহিলেন, “ভক্তি নহে” ইতি ॥ যে ব্যক্তি তোমার রূপার প্রতি লক্ষ্য রাখিয়া জীবনধারণ করেন, তিনি অবশ্য দয়াধিকার স্বরূপে তোমাতে প্রেমই লাভ করিয়া থাকেন। অতএব প্রেমই প্রকৃত পুরুষার্থ, মুক্তি ফল নহে, এজন্য ‘মুক্তিপদে’ স্থলে ‘ভক্তিপদে’ পাঠ করিয়াছি। মুক্তি যে পুরুষার্থ নহে, তাহার কারণ দেখাইতেছেন, “ভগবন্তক্তি” ইতি। ঐশ্বর্য্যবানে বাহারা ভক্তি করে না,

ঐশ্বর্য্যবান তাহাদিগকে যে মুক্তি দান করেন, তাহা কেবল দণ্ড প্রদান করা; যেহেতু তাহারা সেবামুখে বঞ্চিত হয়। বাহাদের মুক্তিতে সেবানন্দ অনুভব হয় না, তাহাদের পুণ্য সম্পন্ন হয় না। সৎ বস্তুর ক্ষুণ্ণির অভাবে সমস্তই নিরর্থক হয়। সকলেই আনন্দ অনুসন্ধান করে, বাহাতে আনন্দ নাই, তাহা দণ্ড ব্যতীত আর কি হইতে পারে? এখানে মুক্তি বলিতে, ব্রহ্ম-সায়ুজ্য ও ভগবৎ বা ঐশ্বর্য্য-সায়ুজ্য। ভগবদপরাধী মলিনচিত্ত হুই প্রকার; ভগবদ্বহিমুখ ও ভগবদ্বেশী। ভগবদ্বেশী কে? তাহাই বলিতেছেন, “কৃষ্ণের” ইতি। ঐশ্বর্য্যের মূর্ত্তিকে সত্য নাহি মানে অর্থাৎ সচ্চিদানন্দঘন বলিয়া স্বীকার করে না। প্রাকৃত সত্ত্বের বিকার বলে এবং যেই নিন্দা অর্থাৎ শিশুপালাদির ন্যায় তাঁহার অপ্রাকৃত গুণ-লীলাদি প্রাকৃত করিয়া স্থাপন করে বা গুণকে দোষ বলিয়া কীর্তন করে ও যুদ্ধাধি করে, তাহারা ভগবদ্বেশী। এই ছুয়ের, যে জ্ঞানিগণ, ঐশ্বর্য্যেশ্বরীর সত্য করিয়া মানে না এবং প্রাকৃত বুদ্ধিতে যুদ্ধাদি ও নিন্দা করে, সেই শিশুপালাদির সায়ুজ্যমুক্তিই ফল বা দণ্ড। যে ঐশ্বর্য্যে ভক্তি করে, তাহার ফল মুক্তি নহে ॥ ৯০ ॥

( ৫৫ পা ) “যদ্যপি সে.....অকী-কার ॥” এই ৯১তম পরারের ভাবার্থ। যদি বল, সালোক্যাদি ভেদে মুক্তি পাঁচ প্রকার; কেহ কেহ সালোক্যাদি মুক্তি গ্রহণ করেন। অতএব ভক্তির ফল মুক্তি নহে কিরূপে? ইহাতে বলিতেছেন,

“যদ্যপি” ইতি । মালোক্য, সামীপ্য, সারূপ্য ও মাষ্টি এই চারি প্রকার মুক্তি যদি ভগবৎসেবার অনুকূল্য করে, তবে কোন কোন ভক্ত মালোক্যাদি চতুর্বিধ মুক্তি অঙ্গীকার করেন । মালোক্যাদি চারি প্রকার মুক্তি দ্বিবিধ । সুখৈশ্বর্য্যচতুবা অর্থাৎ সুখ ও ঐশ্বর্য্যপ্রাপ্তিই যাহার প্রধান উদ্দেশ্য । প্রেমৈকচতুরা অর্থাৎ প্রেমসেবাই যাহার প্রধান উদ্দেশ্য । অতএব ভক্তসেবার প্রতিকূলা সুখৈশ্বর্য্যচতুরা মালোক্যাদি চতুর্বিধা মুক্তি প্রার্থনা না করিয়া প্রেমৈকচতুরা মালোক্যাদি মুক্তি সেবার অনুকূলা বলিয়া গ্রহণ করে ॥৯১॥

( ৫১ ) “সায়ুজ্য শুনিত্তে...ধিকার ॥”

এই ৯২তম পর্ষায়ের ভাবার্থ । সেবার অনুকূলা মালোক্যাদিমুক্তি ভক্ত গ্রহণ করিলেও যাহাতে সেবাস্বখে বঞ্চিত হইতে হয়, এরূপ সায়ুজ্য গ্রহণ করেন না । সেবানন্দ নাই বলিয়া ঘৃণা করেন এবং সেব্যসেবক-ভাব বিলুপ্ত হইলে বলিয়া ভয় করেন । ভক্তগণ নরক প্রার্থনা করেন, তথাপি সায়ুজ্যমুক্তি চান না । কারণ নরকে ঘোরতর যাতনা ভোগ সময়ে ভগবৎস্মৃতির সম্ভাবনা থাকে, কিন্তু সায়ুজ্যে ঐ স্মৃতির সম্ভাবনা অতি মল্ল ! সায়ুজ্য দুইপ্রকার, ব্রহ্মসায়ুজ্য ও ঈশ্বরসায়ুজ্য । ঈশ্বরসায়ুজ্য প্রটস্কৃতি-লক্ষণ, এবং ব্রহ্মসায়ুজ্য সুস্মৃতির স্মার অনতিপ্রকটস্কৃতি-লক্ষণ, উভয়ের ইহাই ভেদ । সন্দেহ হইতে পারে ।

ব্রহ্মসায়ুজ্য হইতে ঈশ্বরসায়ুজ্য শ্রেষ্ঠ, যেহেতু, ঈশ্বরসায়ুজ্য-প্রাপ্ত শিশুপাল ও দস্তবক্র পুনরায়

সামীপ্য মুক্তিলাভ করিয়া শ্রীভগবানকে সাক্ষাৎ করিয়াছিল । অতএব শ্রীগ্রহে সায়ুজ্য-মুক্তিকে ধিকার দিতেছেন কেন ? শ্রীনারদ বলিয়াছেন,—

“বৈরাহুবন্ধতীত্রেণ ধ্যানেনাত্যন্তসাম্পত্তান্ ।

নীতৌ পুনর্হরেঃ পার্থং কথ্যত্বিষ্ণুপার্শদৌ ॥”

বৈরাহুবন্ধতীর ধ্যান দ্বারা ঈশ্বরসায়ুজ্য-প্রাপ্ত দস্তবক্র ও শিশুপাল পুনরায় বিষ্ণুপার্শদ হইয়াছিলেন । তদন্তর, দস্তবক্র, শিশুপাল, জয়, বিজয়রূপে পূর্বে বিষ্ণুপার্শদ থাকতে কচিং ভগবানের ইচ্ছা দ্বারা লীগার জন্ম কেবলমাত্র উভয়কেই সায়ুজ্য হইতে বহির্গত করিয়া শ্রীভগবান্ পার্শদস্বরূপে সংযোজন করেন এবং উহার সূখৈশ্বর্য্যচতুরা সামীপ্য মুক্তিলাভ করেন, প্রেমৈক-চতুরা সামীপ্য মুক্তি পান্ নাই । যেহেতু শ্রীকৃষ্ণ তাহাদের বৈরভাব ছিল, ভক্তিবাসনা ছিল না । শ্রীকৃষ্ণ লীলার্থ অবতীর্ণ হইলেই উহার তাহাতে বৈরভাবাগর হইবে । সার্বিকী ভক্তি দ্বারা চিত্তশুদ্ধ হইয়া ব্রহ্মসায়ুজ্য প্রাপ্ত হইলে ভক্তিবাসনা বশতঃ “মুক্তা অপি লীগার বিগ্রহং কৃত্বা ভগবন্তং ভজন্ত ॥” মুক্তগণও দেহ ধারণ করতঃ শ্রীভগবানকে ভজনা করেন ।” ইত্যাদি শ্রুতি বচন দ্বারা তাদৃশ মুক্তগণের মধ্যে কাহারও কচিং পুনরায় প্রেমভক্তি লাভ শ্রুতি হওয়া যায় ; কিন্তু ঈশ্বর সায়ুজ্যপ্রাপ্ত মুক্তগণের ভক্তিলাভের সম্ভাবনা না থাকায় উহাদের ধিকার দিতেছেন । যাহারা ব্রহ্মসায়ুজ্য লাভ করিয়া আর ভক্তিলাভ করিতে পারেন না, তাহাদের ব্রহ্মসায়ুজ্য অপেক্ষা ঈশ্বরসায়ুজ্য অন্য প্রকারে শ্রেষ্ঠ, কেন না, ভগবৎ-ইচ্ছায় ঈশ্বরসায়ুজ্য ব্যক্তিরও কখন ভগবৎসাক্ষাৎকার ঘটিতে পারে, কিন্তু ভক্তিবাসনা রহিত ব্রহ্মসায়ুজ্য ব্যক্তির উহার দর্শন দুর্ঘট । অতএব ঈশ্বরসায়ুজ্য হেয় বলিয়া ভক্তগণ উহাকে ধিকার প্রদান করেন ॥৯২ ॥

( ৫৫ পা ) “মালোক্যেতি ॥” এই পঞ্চবিংশ শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা

আদিলীলার ৫৪ পৃষ্ঠায় দৃষ্টি করিবেন ।  
‘ব্রহ্ম দৈত্বরসায়ুজ্য দুই ত প্রকার’ এই  
পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক । একত্র অর্থাৎ  
ব্রহ্মসায়ুজ্য ও দৈত্বরসায়ুজ্য ॥ ২৫ ॥

( ৫৫ পা ) ‘প্রভু কহে ... উল্লাস ।’  
এই ১৩ হইতে ১৫ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ  
সরল । প্রভু কহিলেন, ‘মুক্তিপদের ।’  
ইতি । মুক্তিপদ অর্থাৎ মুক্তি স্বীকার পদ  
বা চরণ, তাহাকে মুক্তিপদ বলে । এই  
ব্যাখ্যা অসঙ্গত নহে । শ্রীভাগবতে ১ম  
স্ক, বলিয়াছেন—

‘যেনাপবর্গরদলবুদ্ধির্ভেজে  
খণ্ডেস্ত্রধ্বজপাদমূলমতি ।’

অপবর্গ মুক্তি নাম যার, সেই খণ্ডেস্ত্রধ্বজ  
শ্রীভগবানের পাদমূণ ভজন করিয়াছিলেন ।

অতএব মুক্তি ভগবচ্চরণের নাম ।  
অন্যরূপ অর্থ বলিতেছেন, ‘নবম’ ইতি ।  
অথবা ভাগবতের ২য় স্কন্ধোক্ত ‘অত্র  
সর্গেত্যাদি’ শ্লোকে দশ পদার্থ বলিয়া-  
ছেন, তন্মধ্যে নবম পদার্থরূপ মুক্তির পদ  
অর্থাৎ দশম পদার্থরূপ আশ্রয় । এই  
দুই অর্থেই শ্রীভগবানকে বোধ করায় ।  
অতএব পাঠ পরিবর্তনের কোন প্রয়ো-  
জন দেখা যায় না । কাহে পাঠ ফিরি,  
কেন পাঠ ফিরাই অর্থাৎ ‘মুক্তিপদ না  
বলিয়া’ ‘ভক্তিপদ’ বলি কেন? ভট্টা-  
চার্য কহিলেন, ‘যদ্যপি’ ইতি । যদিও  
মুক্তিপদশব্দের কথিত অর্থও করা যাইতে  
পারে সত্য, কিন্তু মুক্তিশব্দের রূঢ়ি অর্থে  
সায়ুজ্য বোধ হয় । ঐ সায়ুজ্য ভক্তের  
স্বণ্য বস্তু । অতএব মুক্তি বলিতে মনে

ক্ষোভ ও ঘৃণা হয়, কিন্তু ভক্তি বলিতে  
হৃদয়ে আনন্দ হয় । অতএব পাঠ পরি-  
বর্তনই উচিত বোধ হইতেছে ॥ ১৩ ১৫ ॥

( ৫৫ পা ) ‘শুনিয়া হাসেন ... ..  
ব্রজেন্দ্র নন্দন ॥’ এই ১৬ পয়ারের  
ভাবার্থ । ভট্টাচার্যের কথা শুনিয়া প্রভু  
আনন্দিত হইয়া হাস্য করিতে লাগিলেন  
এবং তাহাকে গাঢ় আলিঙ্গন করিলেন ।  
ইহার হেতু বলিতেছেন, ‘যে ভট্টাচার্য’  
ইতি । যিনি নন্দদা মায়াবাদ পড়িতেন  
বা পড়াইতেন, তিনি এক্ষণে ভক্তি ভিন্ন  
অন্য উপদেশ দেন না বা গ্রহণ করেন  
না । অথবা, ভক্তিকথা ভিন্ন অন্য কথা  
মুখে আনেন না । হেন বাক্য শ্রুত্রে,  
ভক্তি সম্বন্ধীয় কথা বলেন । যদি বল,  
শ্রীচৈতন্যের যদি এত প্রভাব এবং  
তঁাহার কৃপায় সার্কভৌমের দৈদৃশী ভক্তি  
হয়, তবে অন্যান্য ক্ষেত্রবাসি নৈষ্ণবগণ  
ও সার্কভৌম পূর্বে তঁাহার শরণাপন্ন হন  
নাই কেন? তদুত্তর, তঁাহারা শ্রীচৈত-  
ন্যকে চিনিতে পারেন নাই, ইহাই  
সদৃষ্টান্তে বলিতেছেন, ‘লোহাকে’ ইতি ।  
যে পর্য্যন্ত স্পর্শ ( পরশ ) গণি লৌহকে  
স্বর্ণ না করে, সে পর্য্যন্ত স্পর্শমণিকে  
যেমন সহজে কেহ চিনিতে পারে না,  
তক্রপ যে পর্য্যন্ত সার্কভৌমের ভক্তি না  
হইয়াছিল, সে পর্য্যন্ত শ্রীচৈতন্য-মহিমা  
কেহ উপলব্ধি করিতে পারে নাই ।  
জহরী যেমন পরীক্ষা ব্যতীতও স্পর্শ-  
মণিকে চিনিতে পারে, তক্রপ কোন  
কোন ভক্ত শ্রীচৈতন্য-তত্ত্ব জানিতে  
পারিয়াছিলেন । শ্রীচম্পোদয়ে—

“জাতুংন শকোত্যাহ ন  
পুমান্ দর্শনাৎ স্পর্শরত্নম্ ।  
যাবৎ স্পর্শাজ্জনরতীতরাৎ  
লোহমাত্রং ন হেম ॥”

শ্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিলেও তাঁহার তত্ত্ব জানিতে পারে না। যেমন স্পর্শমণি যে পর্য্যন্ত লৌহকে স্পর্শনা করে, সেই অবধি তাহাকে দেখিলেও কেহ চিনিতে পারে না।

চৈতন্যরূপায় ভট্টাচার্য্যের বৈষ্ণবতা দেখিয়া ক্ষেত্রবাসি বৈষ্ণবগণ মহাপ্রভুকে সাক্ষাৎ ব্রজেন্দ্রনন্দন শ্রীকৃষ্ণ বলিয়াই তাঁহার শরণাপন্ন হইলেন ॥১৬॥

( ৫৫ পা ) “কাশীমিশ্র...কৃষ্ণদাস ॥”  
এই ১৭ ও ১৮ পয়ারের ভাবার্থ সরল।  
ভিক্ষা নির্দাহন, ভোজনকার্য্য সাধন।

আগে, পঞ্চদশ পরিচ্ছেদে। প্রভুর লীলা, মায়াবাদী সার্কভৌমকে ভক্ত করা। জ্ঞানকর্ম্মপাশ, জ্ঞান ও কর্ম্মরূপ বন্ধন। বিমোচন, সম্পূর্ণরূপে মুক্তিতাভ। গন্ধেহ হইতে পারে,—

শ্রদ্ধা করিয়া এই ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ শ্রবণ করিলে জ্ঞান ও কর্ম্মবন্ধন কিরূপে বিনাশ পাইবে? শুভ্রতর, “আত্মা অয়ে বা ত্রৈষ্টব্যঃ শ্রোতব্যঃ” ইত্যাদি শ্রুতি বাক্য দ্বারা যখন বেদান্তশ্রবণে জীবের জ্ঞান ও মোক্ষলাভ হয়, তখন এই পরিচ্ছেদ পুনঃ পুনঃ শ্রবণে জীবের জ্ঞানকৃত সাযুজ্য-বন্ধন ও কর্ম্মকৃত ভোগাদিবন্ধন কেন বিনাশ হইবে না?

অতএব এই লীলাশ্রবণে জ্ঞানির জ্ঞান ও কর্ম্মির কর্ম্ম নষ্ট হইয়া শুদ্ধা ভক্তির উদয় হইবে। ইহাতে যাহার ভক্তি না হইবে সে দুর্ভাগা ॥১৬।১৮॥

ইতি ষষ্ঠ পরিচ্ছেদে সুবোধিনী।

## সপ্তম পরিচ্ছেদ ।

—১৬১—

( ৫৬ পা ) “ধন্য তমিতি।” এই প্রথম শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। এই পরিচ্ছেদে গ্রন্থকার যাহা বলিবেন, তাহাই শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন। ষাঁহার অণীম দয়ার প্রভাবে প্রারব্ধজনিত দুষ্ট গলিত কুষ্ঠ পর্য্যন্ত বিনষ্ট হয়, তাঁহার কৃপা হইলে আমি (গ্রন্থকার) অনায়াসে তাঁহার লীলা বর্ণন করিতে সমর্থ হইব এবং এবম্বিধ দয়াবানু পুরুষ ব্যতীত আর

কাহাকে প্রণাম করিব। ষাঁহার করুণায় বাসুদেবের কুষ্ঠরোগ নষ্ট হইয়াছিল, তাঁহার কৃপা হইলে যন্ত্রণাদায়ক কুষ্ঠরূপ ভবরোগ হইতে অনায়াসে মুক্ত হইতে পারিব। অতএব এরূপ পুরুষই সর্গদা বন্দনীয় ॥ ১ ॥

( ৫৬ পা ) “জয় কর.....শ্রীহস্তে ধরিয়া ॥” এই ১ম ও ২য় পয়ারের ভাবার্থ সরল। এইমত, ষষ্ঠ পরিচ্ছেদে কথিত প্রকারে। সার্কভৌমের নিস্তার

করিল, সার্কভৌমকে] ভক্ত্যু করিলেন,  
“অহং ব্রহ্ম” আমিই ব্রহ্ম জানে অপরাধী  
হয়, সেই অপরাধজনক জ্ঞানের বিনাশ  
করিয়া ভক্তিতত্ত্ব জানাইলেন । ইচ্ছা  
উপজিল, ইচ্ছা হইল । “মাঘ শুক্লপক্ষে”  
ইতি । মাঘের শুক্লপক্ষে মহাপ্রভু সন্ন্যাস  
গ্রহণ । এ সম্বন্ধে কিছু মতভেদ দৃষ্ট হয় ।

কেহ বলেন, মাঘমাসের সংক্রান্তির দিনই  
সন্ন্যাসের দিন । কেহ বলেন, সংক্রান্তির পরদিনই  
সন্ন্যাসের দিন । শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয় আলোচনা  
করিলে জানা যায়, নবদ্বীপে শ্রীবাস আশ্বিনায়  
প্রভু, ভক্তগণের সহিত রাত্রে কীর্তন করিয়া শেষ  
রাত্রে কাটোয়া গমন করেন, প্রভাতে অষ্টৈতাদি  
ভক্তগণ মহাপ্রভুর দর্শন না পাইয়া অত্যন্ত দুঃখিত  
হইয়া তাঁহার অনুসন্ধান করেন এবং সন্ন্যাস  
গ্রহণের বিষয় অনুমান করেন । শ্রীচৈতন্যভাগ-  
বতাদিতে সংক্রান্তির দিন মহাপ্রভুর কাটোয়া  
গমন জানা যায় । অতএব সংক্রান্তির পরদিনই  
সন্ন্যাসগ্রহণ স্থির হইতেছে । মুরারিশুঙ্গের চৈতন্য-  
চরিতমৃত্তের তৃতীয়প্রকমে উক্ত হইয়াছে,

“ততঃ শুভে সংক্রমণে রবেঃ ক্ষণং  
কুস্তং শ্রবতে মকরাৎ মনীষী ।  
সন্ন্যাসমন্ত্রং প্রদদৌ মহাত্মা  
শ্রীকেশবাখ্যো হরয়ে বিধানবিৎ ॥”

স্বর্ঘ্য মকররাশি হইতে কুস্তরাশিতে প্রবেশ  
করিলে অর্থাৎ [মকরসংক্রান্তিতে বিধানজ্ঞ অর্থাৎ  
সংক্রান্তির পূণ্যকালোচিত কর্মজ্ঞ শ্রীকেশব-  
ভারতী সংক্রমণের পূণ্যকালে শ্রীচৈতন্যকে সন্ন্যাস-  
মন্ত্র প্রদান করেন । এই শ্লোক দ্বারা বোধিত  
হয়, সংক্রান্তির দিন পূণ্যকালে শ্রীচৈতন্য সন্ন্যাস  
গ্রহণ করেন । তথাহি চৈতন্যমঙ্গলে মধ্যখণ্ডে  
শ্রীলোচনদাস বলিয়াছেন—

“মুণ্ডন করিয়া প্রভু দেখি শুভক্ষণে ।  
সন্ন্যাস করয়ে শুভদিন সংত্র মনে ॥

মকর নেউটে কুস্ত আইসে হেন বেলে ।

সন্ন্যাসের মন্ত্র শুক্ল কহে হেনকালে ॥”

এই পরামর্শদ্বারা মকরসংক্রান্তিতে সংক্রমণের  
শুভদিন ও শুভক্ষণ অর্থাৎ পূণ্যকাল দর্শন করিয়া  
মহাপ্রভু কেশবভারতীর নিকট উপস্থিত হইলে,  
সেই পূণ্যকালে ভারতী সন্ন্যাসমন্ত্র বলেন ।  
চৈতন্যভাগবতে মধ্যে ২৬ অধ্যায়ে বলেন,

“শুন শুন নিত্যানন্দ্যুৎসবরূপ গোসাঁঞ ।

এ কথা ভাবিবে সবে পক্ষলন ঠাঞি ॥

এই সংক্রমণ উত্তরায়ণ দিবসে ।

নিশ্চয় চলিব আমি করিতে সন্ন্যাসে ॥”

এই পরামর্শদ্বারা উত্তরায়ণ দিবসে অর্থাৎ মাঘ  
মাস হইতে আষাঢ় মাস পর্যন্ত উত্তরায়ণ কাল,  
তাঁহার এই সংক্রমণে অর্থাৎ প্রথম সংক্রান্তিতে  
( মকরসংক্রান্তিতে ) মহাপ্রভুর কাটোয়া গমন,  
তাঁহার উক্তি দ্বারা স্থির হইতেছে । ‘চলিব’  
শব্দে প্রভুর ভাবি গমন বোধ করাইতেছে ।  
‘এই’ শব্দটি বর্তমান মাসোচিত কালকে বুঝাই-  
তেছে । অতএব এই পয়ারেও সংক্রান্তির দিন  
মহাপ্রভুর গমন প্রতিপন্ন হওয়াতে চৈতন্যচন্দ্রোদয়  
গ্রন্থের সহিত বিরোধ হয় নাই । সংক্রান্তিদিনের  
পূর্বরাত্রে শেষরাত্রে মহাপ্রভু বহির্গত হইয়া  
প্রেমাবেশে সংক্রান্তিদিন সন্ধ্যায় কাটোয়ার উপ-  
স্থিত হইলেন এবং পরদিন কেশ মুণ্ডন করিয়া  
পূণ্যকালে সন্ন্যাস গ্রহণ করেন । যদি বল,  
মুরারিকৃত শ্লোক ও লোচনকৃত পয়ারের সহিত  
চৈতন্যচন্দ্রোদয় ও ভাগবত বাক্যের কি সঙ্গতি  
হইবে ? তদন্তর একটু চিন্তা করিলে সকলবাক্যই  
সীমাংসিত হয় । মুরারিকৃত শ্লোকে কেশব-  
ভারতীকে বিধানজ্ঞ বলা হইয়াছে, লোচনকৃত  
পয়ারে শুভদিন সংক্রমণের শুভক্ষণে মহাপ্রভুর  
মন্ত্র গ্রহণ প্রতিপন্ন হইতেছে । এক্ষণে ঐ শুভ-  
ক্ষণটির সময় নিশ্চয় করিলে সকল বাক্যই সামঞ্জস্য  
হয় । স্বর্ঘ্য এক রাশি হইতে অস্ত রাশিতে গমন  
করিলে তাহাকে সংক্রমণ বলে । তথাহি তিথিতত্ত্বে

“কলাধরাঙ্কক মধ্যরাজগতে তদ্বিবসীরতিধেরভেদে তদ্বিবসীরশেষবামধরং পুণ্যং, তিথিতেদে তু তৎ-  
দিবসীর শেষবামধরং পরদিবসীরাজ্যামক পুণ্যম্ ।  
উত্তরদিনে পুণ্যকালেহপি পূর্কদিনাকরণ এব পর-  
দিনে তদ্বিহিতং কার্যম্ । তিথি ভেদাতেনমো-  
দাক্ষিণ্যরণে তদ্বিবসীরশেষবামধরম্ উত্তরারণে তু  
পরদিবসীরাজ্যামধরং পুণ্যম্ ॥”

সূর্যের দুই দণ্ড বিশেষ মধ্যরাজনিষ্ঠ সংক্রমণ  
হইলে, সেই দিনসম্বন্ধীয় তিথির অভেদে অর্থাৎ  
প্রাতঃকাল হইতে সংক্রমণকাল পর্যন্ত এক  
তিথি হইলে তৎদিবসীয় শেষ প্রহর পুণ্যকাল।  
তিথির ভেদে অর্থাৎ প্রাতঃকালাবধি সংক্রমণকাল  
পর্যন্ত দুইটি তিথি হইলে তৎদিবসীয় শেষ প্রহর  
ও পরদিনের প্রথম প্রহর পুণ্যকাল। উভয় দিনে  
পুণ্যকাল হইলে তদ্বিহিত কার্য পূর্কদিনে না  
করিয়া পরদিনে করাই সঙ্গত। ভেদ ও অভেদ  
তিথির মধ্যে দক্ষিণ্যরণে তৎদিবসীয় শেষ প্রহর  
পুণ্য এবং উত্তরারণে পরদিনে প্রথম প্রহর পুণ্য  
অর্থাৎ শুভক্ষণ।

“ককটাবস্থিতে ভানৌ দক্ষিণ্যরণমুচ্যতে ।

উত্তরারণমপ্যুক্তং মকরহুে দিবাকরে ॥”

শ্রাণ মাস হইতে পৌষ পর্যন্ত দক্ষিণ্যরণ,  
মাঘ হইতে আষাঢ় পর্যন্ত উত্তরারণ কাল।  
মহাপ্রভুর গমন দ্বারাই তিথির ভেদত্ব উপলক্ষিত  
হইতেছে। অতএব সংক্রমণের (সংক্রান্তির)  
দিন বহির্গত হইয়া পরদিন শুভক্ষণে সম্যাসমস্ত  
গ্রহণ করিয়াছেন, বলিলে আর কাহারও বাক্যের  
বিরোধ হয় না। আদিদীনার ভাবার্থব্যাখ্যায়  
২৫৪ পৃষ্ঠার ২ কলমে ৭ পঙ্ক্তিতে যে বলা  
হইয়াছে, উত্তরারণসংক্রান্তির দিন ইহার অর্থ  
উত্তরারণকালে প্রথম সংক্রান্তির দিন জানিবেন।  
১৪৩২শক স্থানে ১৪৩১শক হইবে।”

সম্যাসের পর ফাল্গুনাদি মাসে মহা-  
প্রভু কি করেন, তাহা পর পর্যায়ে বলি-  
তেছেন, “ফাল্গুন আসিয়া” ইত্যাদি ॥১।২॥

(৫৬ পা) “তোমা সবা ... দ্বিগুণ  
হয় দুঃখে ॥” এই ৩য় হইতে ৫ম পর্যায়ে  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। প্রাণাধিক, প্রাণ  
অপেক্ষাও প্রিয়তম। ভাগবতে (৯৫)  
ভগবান্ বলিয়াছেন,

(“নাহমাশ্বানমাশাপে মন্তকৈঃ সাধুভিক্ৰিনা।”)

আমার ভক্ত ব্যতীত আমি আমার  
দেহাদিকেও ইচ্ছা করি না অর্থাৎ দেহাদি  
হইতেও আমার ভক্ত প্রিয়। ভক্ত  
কিরূপ প্রাণাধিক, তাহা পর পর্যায়ে  
বলিতেছেন, “প্রাণ ছাড়া যায়” ইতি।  
ভক্ত-কৃত উপকার স্মরণ করাইতেছেন,  
“তুমি” ইতি। তুমি সব, তোমরা  
সকলে। উদ্দেশ্যে, অশ্বেষণে। সিদ্ধি-  
প্রাপ্তি সম্যাসিগণের দেহত্যাগকে সিদ্ধি-  
প্রাপ্তি বলে। এই ছল, বিখরূপের  
অশ্বেষণ করার চল করিয়া দক্ষিণদেশ  
উদ্ধার করিবেন। “একাকী” ইতি।  
কে ইহা সহয়, তোমার একাকী গমন  
কে সহ করিবে। না পড় হঠরস্বে,  
হঠাৎ কোন বিপদে না পড়। “প্রভু  
কহে” ইতি। মহাপ্রভু নর্তক ও  
শ্রীনিত্যানন্দ যে সুব্রধার তাহার প্রকার  
বলিতেছেন, “সম্যাস করি” ইত্যাদি।  
তোমা সবার গাঢ় স্নেহে. তোমরা স্নেহ  
করিয়া আমার হিত কর, তাহাতে  
আমার কর্তব্য ভঙ্গ হয়। “ক্রোধে” ইতি।  
আমায়, আমার সহিত। আমার  
সম্যাস ধর্ম দেখিয়া মুকুন্দ দুঃখী হয়।  
সেই সম্যাস ধর্ম কি, তাহা বলিতেছেন,  
“তিনবার শীতে” ইতি ॥৩-৫॥

(৫৭ পা) “আমি ত সম্যাসী ...

কিছু নয় বলিবে ॥” এই ৬ষ্ঠ হইতে ৯ম পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । শিক্ষাদণ্ড কথা অন্ত্যালীলার তৃতীয় পরিচ্ছেদে দেখুন । ইহার অগ্রেতে দামোদরের আগে । না জানি ব্যবহার, কিরূপে কাহার মহিত ব্যবহার করা উচিত, তাহা জানি না । ইহারে না ভায়, দামোদরের ভাল লাগে না । স্বতন্ত্র চরিত্র আমার, স্বাধীনভাবে আমার কোন কার্য করা । লোকাপেক্ষা নাহি ইহার, বাহাতে নিজ ধর্মের ক্ষতি হয়, দামোদরের তাদৃশ লোকাপেক্ষা নাই অর্থাৎ লৌকিক রক্ষা করিতে গিয়া ধর্ম বিনষ্ট করে না ; কৃষ্ণরূপাই তাহার ঐতু । আমি লোকাপেক্ষা, আমার কৃষ্ণরূপার অভাবে সম্পূর্ণ লোকাপেক্ষা আছে । তাতে, পূর্কোক্ত সব কারণে । “দোষারোপ” ইতি । ইহাদের যে যে গুণে মহাপ্রভু বশীভূত, দোষারোপ-ছলে সেই সেই গুণ কীর্তন করিয়া অয়ং অস্বাদন করিলেন । “চৈতন্যের” ইতি । অকথ্যকথন, যে ভক্তবাৎসল্য গুণের কথা কহিতে অশক্য । সেই ভক্তবাৎসল্য দেখাইতেছেন, “আপনে বৈরাগ্য” ইতি । আপনি যে বৈরাগ্য দুঃখ সহ করেন, তাহাতে নিজের কোন ক্লেশ বোধ হয় না ; কিন্তু তাঁহার বৈরাগ্য দেখিয়া ভক্তগণ ষার-পর-নাই দুঃখ পান । সেই ভক্তগণের দুঃখ তাঁর শক্যে অর্থাৎ যে শক্তিতে ঘোরতর কঠোর বৈরাগ্য দুঃখ অনায়াসে সহ করেন, সেই পরিপূর্ণশক্তি দ্বারা ভক্তদুঃখজনিত

খীর দুঃখ সহ করিতে পারেন না । এই ভক্তবাৎসল্য গুণের অসীম মহিমা । দুই হস্ত বদ্ধ নাম গণনে, পথে চলিবার সময় দক্ষিণ হস্তের অঙ্গুলীপর্কে নাম জপ করিবেন এবং বাম হস্তে তাহার সংখ্যা রাখিবেন, সুতরাং দুই হস্ত নাম গণনার বদ্ধ থাকিলে কোপীন বহির্দাস ও জলপাত্র কে বহন করিবে বা প্রেমে অচেতন হইলে উহার কে রক্ষা করিবে । যে তুমি ইচ্ছা কর, স্বতন্ত্র ভাবে কোন কার্য করিতে পারিবে না বলিয়া আমাদিগকে সঙ্গে লইতেছ না কিন্তু কৃষ্ণদাস সঙ্গে যাইলে তোমার স্বতন্ত্রতার হানি হইবে না ॥৬ ॥

( ৫৭ পা ) “তবে তার বাক্যে ... চলিল গৌরহরি ॥” এই ১০ম হইতে ১৩শ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । তাঁর বাক্যে, নিত্যানন্দের কথা । শুভে, মঙ্গলমত । লেউটি, ফিরিয়া । বিভঙ্গ, নষ্ট । ঠাকুর পাশ, জগন্নাথের নিকট ॥১০-১৩ ॥

( ৫৯ পা ) “ভট্টাচার্য সঙ্গে ... বজ্রময় ॥” এই ১৪শ হইতে ১৬শ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । আলালনাথ পথে, পুরীর নৈঋত কোণে আলালনাথ, এখানে চতুর্ভুজ মূর্তি আছে, এই পথে ॥১৮—১৬ ॥

( ৫৮ পা ) “বজ্রাদপীতি ।” এই দ্বিতীয় শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “মহানুভাবের স্বভাব ।” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২ ॥

( ৫৮ পা ) “নিত্যানন্দ প্রভু ... নাম সঙ্গীর্জন ॥ এই ১৭শ হইতে ২১শ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । তাৎপর্য,



সেই পর্য্যন্ত । তাহা, জালালনাথের মন্দিরে । বৈসে যত জন, সেই গ্রামে যত লোক বাস করে । আগে, ইহার পরে । অতিকাল হৈল, সময় অতিক্রম হইল । প্রেমাবেশে যে নাম সংকীর্ণন করেন, তাহা "কৃষ্ণ কৃষ্ণ" ইতি । পর শ্লোকে বলিতেছেন ॥ ১৭—২১ ॥

( ৫৯ পা ) "এই শ্লোক পঢ়ি ... তার হয় নাশ ॥" এই ২৩শ হইতে ২৬শ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । সেই লোক, বাহাকে দেখিয়া মহাপ্রভু হরি বলেন । তারে, যে লোক মহাপ্রভুর পশ্চাতে গমন করে । শক্তি সঞ্চারিয়া, কলিধর্ম প্রচারিকা শক্তি তাহাতে সঞ্চারিত করিয়া তাহাকে বিদায় করেন ; যে শক্তি প্রভাবে সে ব্যক্তি বাহাকে হরি বলিতে বলেন, সেই হরি বলিয়া নৃত্য করে ॥ ২৩—২৬ ॥

( ৬০ পা ) "প্রথমে কহিল ...

বিষয় তরঙ্গে ॥" এই ২৭শ হইতে ২৯শ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । প্রথমে কহিল ইত্যাদি, মহাপ্রভু বেক্রপ ভাবে গমন করিয়াছিলেন তক্রপ ভাবে । যাও , যাই । লৈবা, গ্রহণ করিবে ॥ ২৭-২৯ ॥

( ৬০ পা ) "যারে দেখে ..... করয়ে স্তবন ॥" এই ৩০শ হইতে ৩৩শ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । তার, উদ্ধার কর । বাধিবে, ব্যাঘাত দিবে । অনুভজি, পদদ্বারা গমন করিয়া । কিড়াবল কীটযুক্ত । আলিঙ্গিলা, আলিঙ্গন করিল । দুঃখ সঙ্গে, দুঃখের সহিত ॥ ৩০-৩৩ ॥

( ৬১ পা ) "কাহমিতি ।" এই তৃতীয় শ্লোকের তাৎপর্য ও টীকা এবং বাঙ্গলা আদি ১৩৫ পত্রাঙ্কে দেখুন ॥ ৩ ॥

( ৬১ পা ) "বহু স্তুতি ... কৃষ্ণ-দাস ॥" এই ৩৪শ হইতে ৩৭শ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । আছিলাও, ছিলাম । একান্ত, অনন্তভাবে ॥ ৩৪—৩৭ ॥

ইতি মধ্যলীলায়াং সপ্তম পরিচ্ছেদে সুবোধিনী ।

## অষ্টম পরিচ্ছেদ ।

—\*—\*—\*—

( ৬১ পা ) "সংহার্যোতি ।" এই প্রথম শ্লোকের তাৎপর্য । এই পরিচ্ছেদে তন্ত্রের মীমাংসা বর্ণিত হইবে । ইহাই শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন । ভক্তিবিষয় স্থির করতঃ ব্যাখ্যা বা প্রবণ

করিতে হইবে । এই শ্লোকটি সাক্ষরূপক অলঙ্কারে বর্ণিত । উহার লক্ষণ যথা, "অঙ্গিনো যদি সাক্ষর রূপং সাক্ষমেব তৎ । সমস্তবস্তবিসরমেবদেশবিবর্তি চ ॥" অঙ্গির সহিত অঙ্গের যে বর্ধন, তাহার নাম

সাদরূপকা অলঙ্কার। তাহা দুই প্রকার, সমস্ত বস্তু বিষয় ও একদেশ বিবর্তি।

এখানে গৌরাকরূপ সমুদ্রে অঙ্গী, রামানন্দ মেঘ, ভক্তিসিদ্ধান্ত জল, ভক্তিসিদ্ধান্ত প্রকাশরূপ বর্ষণ, বোধরূপ রত্ন, এই চারিটি অঙ্গ। অতএব সমস্ত বস্তু বিষয় সাদরূপ অলঙ্কার হইল। গৌররূপ সমুদ্রটি লুপ্তোপমা অলঙ্কার। যদি বল, সমুদ্রে সহ গৌরের কি ধর্ম সাদৃশ্যে উপমা? তদুত্তর,—

সমুদ্রের অগাধত্ব, গৌরের স্বয়ং-আশয়ের অগাধত্ব; সমুদ্র চূর্ণত্বা, মহাপ্রভুর আচ্ছা চূর্ণত্বা; সমুদ্রের স্রুধা, গৌরের রূপারূপ স্রুধা ইত্যাদি সমুদ্রের যে যে ধর্ম, গুণ ও রূপ আছে, মনোবিগণ সেই সেই ধর্মাদির উদ্ভাবনা করিয়া নাইবেন। সমুদ্রে জল, গৌরাকে ভক্তিসিদ্ধান্ত-রূপ জল। সমুদ্রে বর্ষণ, গৌরাকে ভক্তিসিদ্ধান্ত-প্রকাশ রূপ বর্ষণ। সমুদ্রে রত্ন, গৌরাকে বোধ-রূপ রত্ন। এই সকল শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। যদি বল, মহাপ্রভু স্বয়ং ভগবান্, স্রুতরাং চিন্ময় বস্তু; আর সমুদ্র জড় পদার্থ, অতএব উভয়ের উপমা কিরূপে হয়? তদুত্তর, উপমা হয় না সত্য, কিন্তু জড়বুদ্ধি প্রবেশের জন্য আংশিক উপমা দেওয়া যায়। সমুদ্রের সহিত গৌরাকের উপমা যে বাস্তবিক অসম্ভব, তাহা চিন্তা করিলেই বুঝা যায়। সমুদ্রের সীমা পকাশ্য কোটি যোজন, কিন্তু গৌরের আশর অসীম। সমুদ্রের অধঃস্থল বরং পাওয়া যায়, কিন্তু গৌরের আশর কেহই বোধ করিতে সমর্থ হয় না। সমুদ্র চূর্ণত্বা হইলেও, অনেক গুণন করিয়াছেন ওনা যায়, কিন্তু মহাপ্রভুর আচ্ছা লভ্বনে কাহারও সামর্থ্য হয় নাই। যদি কেহ চক্ষুণ করে, সে দণ্ডনীর হয়। স্রুধার গুণ অমর হওয়া, কিন্তু অমরত্বের নিত্যত্ব নাই, যতদিন বর্ষণ, ততদিনই অমরত্ব। তথাপি প্রতি,

“কর্মজিতঃ লোকঃ স্মীরতে ।”

কর্ম দ্বারা প্রাপ্ত স্বর্গাদি লোক কর্ম প্রাপ্ত হয়। অতএব স্বর্গের কর্মে অমরত্বের হানি; কিন্তু গৌরের রূপারূপ স্রুধায় অনন্ত জীবন অমর হয়, এই অমরত্ব নিত্য ইত্যাদি।

সমুদ্রে জল, গৌররূপ সমুদ্রে নিজবিষয়ক বা নিজভক্তিসিদ্ধান্ত সমুদ্ররূপ জল। মহাপ্রভু ভক্তির বিষয়ালম্বন হইয়াও আশ্রয়ালম্বন। অতএব “বভক্তিসিদ্ধান্তের” দুই অর্থই করা হইল। আর একটি সন্দেহ হইতে পারে, ভক্তির সিদ্ধান্ত একটি হওয়া উচিত, সিদ্ধান্তসমূহ কিরূপে হইতে পারে? তবে কি ভক্তিসিদ্ধান্তের সমূহ আছে? যে হেতু শ্লোকে “সিদ্ধান্তচর” বলিয়াছেন। তদুত্তর, ভক্তিসিদ্ধান্তের সমূহ না হইলেও প্রকারান্তরে সমূহ অর্থাৎ বহু প্রকার হয়। ভক্তিসন্দর্ভে—

“অতো নিগুণাপি বহুবৈধৈবাবগন্তব্যা ।”

ভক্তিযোগ নিগুণ লইলেও বহু প্রকারেই বোধ্য। যথা, ভক্তি ত্রিবিধা; আরোপসিদ্ধা, সঙ্গসিদ্ধা ও স্বরূপসিদ্ধা। ত্রিবিধা আবার সর্কৈতবা অর্কৈতবা ভেদে দ্বিবিধা। কর্মরূপা ও কর্মার্ণ-রূপা ভেদে আরোপসিদ্ধা দ্বিবিধা। কর্মার্ণ আবার ভগবৎপ্রাণনরূপা ও ভগবানের প্রতি ত্যাগরূপা ভেদে দ্বিবিধা। কর্মমিশ্রা, কর্মজ্ঞান-মিশ্রা ও জ্ঞানমিশ্রা ও ভেদে, সঙ্গসিদ্ধা ত্রিবিধা। কর্মমিশ্রা আবার তিন প্রকার,—সকামা, কৈবল্য-কামা, ভক্তিমাত্রকামা। সকামা আবার রাজসা ও তামসা ভেদে দ্বিবিধা। এই এক প্রকারে সমূহ। দ্বিতীয় প্রকার যথা, সাধুসঙ্গ হইতে আনক্তি পর্যন্ত সাধনভক্তির সমূহ, রতি হইতে মহাভাব পর্যন্ত সাধনভক্তির সমূহ ও শাস্ত ভক্তি হইতে মধুর ভক্তি পর্যন্ত সমূহ। এই সকল প্রকারে যে সমূহ, তাহা এই পরিচ্ছেদের প্রায় ফলেই প্রকাশ আছে। এই অভিপ্রায়েই “চর” শব্দের প্রয়োগ করিয়াছেন।

একণে বিবেচ্য, জলের কোন ধর্মের সহিত

ভক্তিবর্ধের সাদৃশ্য? জলের ধর্ম উচ্চ স্থানে থাকে না, ভক্তির ধর্ম অভিমাত্রক উচ্চ স্থানে থাকে না। জল যেমন নিম্নস্থানে থাকে, তদ্রূপ ভক্তিবর্ধ দৈন্তরূপ নীচ স্থানে থাকে। ইত্যাদি ধর্ম সাদৃশ্যে। শ্রীরামানন্দ রায় রূপ মেঘ, শ্রীগৌর-রূপ সমুদ্রে ভক্তিসিদ্ধান্ত সমূহ প্রকাশরূপ বর্ষণ করিয়েছেন, ইহাই বর্ষণের সাদৃশ্য। সমুদ্রে বর্ষণ উপলক্ষণে জগতে বর্ষণও বুঝিতে হইবে। কারণ, এই প্রসঙ্গ লিপিবদ্ধ হইলে জগতের জীবেরাও শ্রবণ করিবে। অতএব জগতের বর্ষণও অভিপ্রোক্ত হইতেছে। মেঘ মল্লভূমি ও উর্ধ্বরাজ্যে বিচার না করিয়াই বর্ষণ করেন, কিন্তু মল্লভূমিতে শস্যাদির বীজ অক্ষুরিত হয় না, উর্ধ্বরাজ্যে অক্ষুরিত হয়; তদ্রূপ বাহাদের জগতে নামাপরাধাদি আছে, তাহাদের হৃদয়রূপ মল্লভূমিতে ভক্তি অক্ষুরিত হয় না, বাহাদের তাহা নাহি, তাঁহাদের হৃদয়ে ভক্তির বীজ অক্ষুরিত হয়। অপরাধ থাকিলেও শ্রবণাদিকর্তব্যকালে অপরাধ ক্ষয় হইলে ভক্তির অক্ষুর হইবে। সমুদ্র রত্নাকর হইলেও উহার বৈষম্য দোষ আছে। ভাগ্যান্বেকে রত্ন দেন, ভাগ্যহীনকে দেন না। শ্রীতুলসীদাস বলিয়াছেন, “ভাগ্যহীনজন সমুদ্রে ডুবে বাঁহা রত্নকে চেরি। কর লগে বুল উঠে উহ করম্কে ফেরি ॥”

সমুদ্রে ভাগ্যান্বেকে যে রত্ন দেন, তাহাও সমুদ্রে না গেলে দেন না অর্থাৎ কাহারও দেশে, গ্রামে বা গৃহে যাইয়া দেন না। গৌর সমুদ্রে বৈষম্য দোষ নাই। ভক্তিরত্ন ভাগ্যান্বে ও ভাগ্যহীন সকলকেই প্রদান করেন এবং দেশে, গ্রামে বা গৃহে গমন করিয়া দেন। এই হেতু কোন পদকর্ত্তা বলেন—

“দেখ দেখ অপরূপ গৌরাজ নিতাই।

অখিল জীবের ভাগ্যে, অবনি বিহরে গো,

পতিতপাশন ছনো ভাই ॥ ৩ ॥

যারে দেশে নিজঠামে, বাচিয়া বিলাস প্রেমে,

উত্তম অধম নাহি জান।

এ তিন কুবেরের লোক, নাহি অরা মুক্ত্য শোক,  
প্রেম-অনৃত বারি পানে ॥

কলপ বিরিখ নিম্ন, না বাচরে এক বিন্দু,

হি হি কিরে তাহাতে উপমা।

পতিত দেখিরা কাদে, দেহে স্থির নাহি বাঁধে,

বিলাস অমুণ্য ভক্তি প্রেমা ॥

এমন দয়াল ছুই, না ভজয়ে হেন পহ,

নে ছারের জীবনে কি আশ।

সন্ন্যাসী বিপ্র হইলেহ, অহুরে গণন সেহ,

অনন্তদাসের এই ভাষা ॥”

সমুদ্রে যেমন মেঘ বর্ষণ করিলে রত্ন শক্তি-ফলিত হয়, তদ্রূপ গৌররূপ সমুদ্রেও বোধরত্ন প্রতিফলিত হইতেছে। সমুদ্রহ রত্ন প্রাকৃত ও সামাজ্য, এ রত্ন অপ্রাকৃত ও অসামাজ্য। তথাহি রসামুতে দক্ষিণে,—

“বথা বৈশেব সলিলৈঃ পরিপূৰ্ণা বলহকান্।

রত্নানয়ো ভবত্যোত্তিবৃষ্টৈস্তরেব বারিধিঃ ॥”

রত্নাকর নিজরত্ন দ্বারা যেমন মেঘগণকে পূর্ণ করিয়া পরে মেঘগণ কর্তৃক বর্ষিত জলের সহিত আপনাকে সমুদ্ররূপে বিধান করে; তদ্রূপ শ্রীগৌরাজও আপনার ভক্তিসিদ্ধান্তসমূহ জল রামানন্দ মেঘে সঞ্চার করিয়া তাহাকে পূর্ণ করতঃ রামানন্দরূপ মেঘ কর্তৃক বর্ষিত সিদ্ধান্তরূপ জলের সহিত আপনাকে বোধরূপ রত্নালয়ক বিধান করিয়াছেন।

ভক্তমুখে ভক্তিতত্ত্ব অতি সুমধুর বলিয়া রামানন্দ রায়ে শ্রীগৌরাজ শক্তি সঞ্চার করেন ও ভক্তির রহস্যসিদ্ধান্ত প্রকাশ করিলেন ॥ ১ ॥

( ৬২ পা ) “জয় জয় ... .. পদ্ম-

ভূঙ্গ ॥” এই ১ ও ২ পয়ারের ভাবার্থ

সরল। জয় শব্দের সর্গত্বেই উৎকর্ষ অর্থ।

প্রথমে দুইবার জয় শব্দের হর্ষ অর্থ

জানিয়েন। যথা, ‘হর্ষে শোকোত্তথা

দৈশ্চে পুন্নরক্তির্ন ভুবাতে।" হর্ষ, শোক ও দৈশ্চে পুন্নরক্তি দোকঃ হয় না। পূর্ন-রীতে, পূর্ন পরিচ্ছেদে গমনের বেরীতি বর্ণন করা হইয়াছে, সেই নিয়মে। আগে, কুর্নক্ষেত্রের অগ্রে গমন করিলেন। কথোদিনে, কয়েক দিনের পর। দণ্ডবৎনতি, অষ্টাঙ্গে প্রণাম। যথা,—

পঙ্খাং করাভ্যাং লামুভ্যাং উরসা শিরসা সৃশা।  
বচসা মনসা চৈব প্রণামোহষ্টাঙ্গে দৈরিতঃ ॥"

পদধর, করধর, লামুধর, বক্ষঃ, মণ্ডক, নয়ন, বাক্য ও মনের দ্বারা যে প্রণাম, তাহা অষ্টাঙ্গে করধর, লামুধর, মণ্ডক, নয়ন ও বাক্য দ্বারা প্রণামকে পঞ্চাঙ্গ বলে। প্রণাম বিধি যথা,—

"গরুড়ং দক্ষিণে কৃথা কুর্ধ্যাত্তৎপৃষ্ঠতো বৃথঃ।  
অবশ্রুঞ্চ প্রণামাংস্ত্রীন্ শক্তশ্চেদধিকাম্বিকান্ ॥"

যুধী ব্যক্তি প্রগতি সময়ে ভগবানের সম্মুখস্থ গরুড়কে দক্ষিণে রাখিয়া প্রণাম করিবে। তিনবার প্রণাম কর্তব্য, সক্ষম হইলে তদপেক্ষা অধিকবার করিলেও ক্ষতি নাই। নারদপঞ্চরাত্র বলেন, নয়ন ও ভোজন ব্যতীত অস্ত্র সময়ে হরি ও গুরুকে আটচল্লিশ বা ছত্রিশবার, আঠার বা নয় বার প্রণাম করিবে। প্রণামে নিবেদ যথা,—

"জন্মপ্রভৃতি বৎকিঞ্চিৎ পুমান বৈ ধর্ষমাচরেৎ।

সর্বং তন্নিফলং যাস্তি একহস্তাভিবাদনাৎ ॥

বস্ত্রপ্রাবৃতদেহস্ত যো নয়ঃ প্রণমেত মাম্।

বিদ্বী স দায়তে মুর্খঃ সপ্তজন্মানি ভামিনি ॥

অগ্রে পৃষ্ঠে তথা বামে-সমীপে গর্ভমলিরে।

জপহোমনমঙ্কারান কুর্ধ্যাৎ কেশবালরে ॥

সকৃদ্ভূমৌ নিপতিতো ন শক্তঃ প্রণেমস্থহঃ।

উখারোথান কর্তব্যং দণ্ডবৎ প্রণিপাতনম্ ॥"

এক হস্ত দ্বারা ঐচ্ছুক প্রণাম করিলে, আজন্ম সঞ্চিত ধর্ষাচরণ বিফল হয়। কেহ সর্বাঙ্গে বস্ত্রাবৃত করিয়া আমাকে (ঐচ্ছুক) প্রণাম করিলে, সপ্তজন্ম পর্যন্ত খেতকুটী ও বৃষ্ণ হয়।

ঐচ্ছুর সম্মুখে, পশ্চাতে, ঐচ্ছুক দক্ষিণদিকে রাখিয়া, নিকটে ও নিতালয় ব্যতীত অস্ত্র মন্দির মধ্যে অগ্নি, হোম ও বন্দনা করিতে নাই। সক্ষম হইলে একবার মাত্র ভূতলে পতিত হইয়া পুনঃ পুনঃ প্রণতি করিবে না, প্রতিবার গাত্রোথান করিয়া প্রণাম করিবে।

স্তুতি, স্তব। প্রাক্সাদেশ, প্রাক্সাদের ঈশ্বর। পদ্মামুখ-পদ্মভূঙ্গ, পদ্মা অর্থাৎ লক্ষ্মী, তাঁহার মুখ পদ্মভূলা, তাহাতে যিনি ভূঙ্গ অর্থাৎ ভ্রমর বা অতিশয় আসক্ত ॥ ১।২ ॥

( ৩২ পা ) "উগ্রোহসীতি।" এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

প্রাক্সাদ অগতকে উপদেশ দিতেছেন, হে ঈর্ষগর্ষাদি মহুষণগণ; আমার পিতা ও পুত্রের সাক্ষ্য দিতেছি, যদি কেহ শ্রীভগবানের ভক্ত হও, তবে আমার মত সর্ববিপদে শ্রীভগবানের ক্রোড় প্রাপ্ত হইয়া অনন্তজীবন শীতল করিবে। আর যদি ভক্তবেধী হও, তবে আমার পিতা কর্তৃক দৃষ্ট পথের পথিক হইয়া জীবন হারাইবে। ভগবান্ হই পথই প্রকট দেখাইতেছেন। বে পথে তোমার ইচ্ছা হয়, সেই পথে গমন করিতে পার। ফলতঃ শ্রীনৃসিংহদেবের ভক্ত হও, আমার পিতার অনুসরণ করিও না। উহা পথ নহে। আমার মত অহ্বননন্দনের প্রতি বাঁহার এতাদৃশী দয়া, তাঁহাকে না ভজিয়া, কাহাকে ভজন করিবে ॥ ২ ॥

( ৩২ পা ) "এইমত ... রাত্রি দিবসে ॥" এই ৩য় পর্যায়ের ভাবার্থ। এইমত, পূর্বোক্ত শ্লোকমত অনেক শ্লোক পাঠ করিয়া স্তব করেন। "নৃসিংহ-সেবক" ইতি। স্তুতির পর নৃসিংহের পূজারি ঐচ্ছুক মালা প্রসাদ আনিয়া

দেন। পূর্ববৎ, কুর্ন্বন্ধে কুর্ন্ব নামক  
বৈষ্ণব ব্রাহ্মণ যেমন নিমন্ত্রণ করিয়া-  
ছিলেন, তদ্রূপ কোন বৈষ্ণব ব্রাহ্মণ  
প্রভুকে নিমন্ত্রণ করেন। সেই রাত্রি  
নৃসিংহক্ষেত্রে থাকিয়া পরদিন কোন  
সময়ে, কি ভাবে প্রভু গমন করেন ;  
তাঁহা বিশদ করিয়া বলিতেছেন,  
“প্রভাতে” ইতি। প্রভু প্রভাতে উঠিয়া  
প্রোমাবেশে গমন করেন। একরূপ প্রোমা  
বেশ হয় যে, দিক (উত্তরাদি) বিদিক  
(ঈশানাদি কোন) রাত্র ও দিবস বোধ  
ছিল না।

সন্দেহ হইতে পারে, যখন দিগ্বিদিক জ্ঞান  
নাই, তখন লক্ষ্যদিকে গমন করেন কিরূপে ?  
অথবা দিবারাত্র জ্ঞান না থাকায় দিবারাত্রের  
সময়োচিত কৃত্য হয় কিরূপে ? তদুত্তর, কৃষ্ণপ্রেম  
সচ্ছিবানন্দ ও বিভূ ; মেঘে জ্ঞান ডুবিলেও  
প্রেমের জ্ঞান ডুবে না। প্রোমাবেশে তত্ত্ব জ্ঞান-  
হারা হইলেও অসুচিত ক্রিয়াদি কিছুই করেন না,  
কিন্তু প্রেমই ঔঁহাদিগকে কর্তব্য কর্ষ করান।  
অতএব এখানে প্রেমই লক্ষ্যদিকে লইয়া বাইতে-  
ছেন ও সময়োচিত কর্ষ করাইতেছেন ॥ ৩৭

( ৬২ পা ) “পূর্ববৎ ..... বাজায় ॥”  
এই চতুর্থ ও ৫ম পয়ারের ভাবার্থ।  
পূর্ববৎ, পূর্বে যেমন হরিনাম দিয়া লোক  
সকলকে বৈষ্ণব করিতে করিতে গমন  
করেন, সেরূপে গমন করিতেছেন। কথো-  
দিনে, কতিপয় দিনে। গোদাবরীতীরে,  
গোদাবরী নান্নী নদীর তীরে। চলি  
আইলা, উপস্থিত হইলেন। হৈল যমুনা  
স্মরণ, যমুনা মনে পড়িল। স্মৃতি হৈল,  
স্মরণ হইল। সেই বনে, গোদাবরীর

পার্শ্ব বনে। যমুনা ও হৃদ্যবন স্মরণ-  
জনিত প্রেমানন্দে কিছু সময় গ্রাম ও  
নর্ভন করেন। কৈল তাহা স্মান অর্থাৎ  
গোদাবরীর অপর পারে স্মান করেন।  
ঘাট ছাড়ি, স্মানঘাট ত্যাগ করিয়া।  
কথোদুরে, কিছু দূরে। জল সন্নিধানে,  
জলের নিকটে।

ঐ স্থানে উপবেশন করিয়া নাম গকীর্তনের  
অভিপ্রায় এই যে, মহাপ্রভু সর্বজ্ঞ হেতু—রামানন্দ  
রায়ের সহিত এখানেই দেখা হইবে জানিয়া—  
রায়ের প্রতীক্ষা করেন। যুদ্ধ ও সর্বজ্ঞ হইট  
এক সময়ে মহাপ্রভুতে থাকায় নরলীলার কোন-  
রূপ অনিষ্ট হয় নাই।

হেনকালে, যে সময়ে মহাপ্রভু কীর্তন  
করিতেছেন, সেই সময়ে। বাজনা  
বাজায়, বাদ্যের সহিত স্মান বড় লোকের  
মর্খ্যাদাসূচক বলিয়া রামানন্দ বাদ্যের  
সহিত স্মান করিবার জন্ত নদীতীরে  
আসিলেন ॥ ৪১ ॥

( ৬২ পা ) “ তাঁর সঙ্গে ... সন্ন্যাসি  
দেখিয়া ॥” এই ৬ষ্ঠ পয়ারের ভাবার্থ।  
তাঁর সঙ্গে, রামানন্দ রায়ের সঙ্গে।  
বৈদিক ব্রাহ্মণ, বেদজ্ঞ ও বেদাচারবান্  
ব্রাহ্মণ। তেঁহ, রামানন্দ রায়। স্মানাদি  
তর্পণ, ঐকান্তিক ভক্তের ভক্তিশাস্ত্রের  
বিধি অনুসারে স্মান ও তর্পণ করিলেন।  
আদি পদে আচমন বুঝিতে হইবে।

সঙ্কপমান বধা,—

জলাশয়ে গমন করতঃ হস্ত পদ ধৌত করিয়া  
আচমন পূর্বক সঙ্কপ করিবে। “অম্বুকে যাসি  
অম্বুকে পদে অম্বুকাং তিথৌ অম্বুকে বাসরে অম্বুকে  
দেবশর্পা বা দাগঃ শ্রীকৃষ্ণপ্রীতয়ে দাসবধঃ

করিবে।" পরে গঙ্গাদি স্মরণ করতঃ তীর্থকে  
অর্ঘ্য দিবে। "ইদমর্থাৎ তীর্থায় স্মরণমি।" পরে—

"সাগরবননির্বোধে দণ্ডহতা সুরাস্তক ।

জগৎশ্রীকৃষ্ণগম্বাদিন্ ননামি ষাৎ সুরেশ্বর ॥"

এই মন্ত্র বলিয়া তীর্থপতিকে প্রণাম করিয়া,—

"দেব দেব জগন্নাথ শম্ভুচক্রগদাধর ।

দেহি যিকো মনাজ্জাং তব তীর্থনিবেবনে ॥"

এই মন্ত্রে অমুক্তা প্রার্থনা করিয়া "নমো  
নারায়ণায়" মন্ত্র দ্বারা সাতবার অভিসম্মিত হস্ততল  
গত জল চারি, পুটে বা সাতবার মন্তকে দিয়া—

"অধক্রান্তে রথক্রান্তে বিষ্ণুক্রান্তে বসুন্ধরে ।

মুক্তিকে হর মে পাপং বদ্রা হৃদ্বতং কৃতম্ ॥"

এই মন্ত্রে মুক্তিকা লইয়া মন্তকান্বিতে লেপন  
করিবে। পরে তীর্থজলে প্রবেশ করিয়া প্রবাহাভি-  
মুখে ও স্থিরজলে স্থায়াভিমুখে শ্রীকৃষ্ণের ধ্যান  
করিয়া কৃষ্ণনাম করিতে করিতে দ্বান করিবে।  
বিশেষ দ্বান শুকর নিষ্কট জানিবেন। পরে মূল-  
মন্ত্র উচ্চারণ সহকারে কুন্তুমুত্রাযোগে তিনবার  
মন্তকে জল দিয়া দেবাদি তর্পণ করিবে। সামাজ্য  
তর্পণ যথা,—

ব্রহ্মাদিরো যে দেবাত্তান্ দেবান্ তর্পরামি,  
ভূর্দেবাত্তর্পরামি, ভুবদেবাত্তর্পরামি, স্বদেবাত্তর্পরামি,  
ভূত্বংস্বদেবাত্তর্পরামি, কৃষ্ণকৈবল্যনামো  
বে ঋষয়স্তান্বীন্ তর্পরামি, কৃষ্ণবীঃ তর্পরামি,  
ভূবর্ষবীঃ তর্পরামি, স্বর্ষবীঃ তর্পরামি, সোমঃ  
পিতৃমাতৃমোক্ষিরোহিমিষাত্তাঃ কবা বাহনানামো যে  
পিতরস্তান্ পিতৃঃ তর্পরামি ইত্যাদিরূপ মন্ত্রে তর্পণ  
করিবে। পরে বস্ত্র ভাগ করিয়া জলে শ্রীভগ-  
বানের পূজা করিবেন। বীথ ইষ্টমন্ত্র দ্বারা অলঙ্কার  
করিয়া জলমধ্যে পদ্ম ভাবনা করতঃ পীঠ মন্ত্রো-  
চ্চারণ সহকারে এক একবার তর্পণ করিবে।  
পরে ঐ পদ্ম মধ্যে শ্রীকৃষ্ণের আবাহন পূর্বক ছুর  
অর্ধে বড়ল ভাস করতঃ মনঃ করিত গঙ্গাদি পঞ্চ  
উপচারযোগে সন্মিলে তর্পণ করিয়া বেহুমুত্রা  
প্রদর্শন করিবেন। কৃতী ব্যক্তি সেই জলকে

অমৃত চিন্তা করিয়া তরুণরি নিজ ইষ্টমন্ত্র জপ  
করতঃ কৃষ্ণের মন্তক দেশে এক পত আটবার  
তর্পণ করিবেন। পরে আবরণ তর্পণ ও বিসর্জনাদি  
করিবেন। বিশেষ দেবাদিতর্পণ শুকর নিষ্কট  
জানিবেন। বাহ্যভ্যন্তরে লেখা হইল না। বৈষ্ণবা-  
চমন যথা,—

"কেশবার নমঃ, নারায়ণায় নমঃ, মাধবার  
নমঃ।" এই তিনমন্ত্রে জল পান করিবে।  
"গোবিন্দায় নমঃ" ও "বিষ্ণবে নমঃ" এই মন্ত্রদ্বয়ে  
দক্ষিণ ও বামহস্ত ধৌত করিবে। "মধুসূদনায়  
নমঃ" বলিয়া উপরের ওষ্ঠ, "ত্রিবিক্রমায় নমঃ"  
বলিয়া নিম্নের ওষ্ঠ অমুঠমূল দ্বারা আর্চন করিবে।  
"বামনায় নমঃ" ও "শ্রীধরায় নমঃ" মন্ত্রে উপর  
ও নীচের ওষ্ঠ অমুঠ মূল দ্বারা উচ্চাৰ্চন করিবে।  
"দ্ববীকেশায় নমঃ" মন্ত্রে হস্তদ্বয় ধৌত করিবে।  
"পদ্মনাভায় নমঃ" মন্ত্রে পদদ্বয় ধৌত করিবে।  
"দামোদরায় নমঃ" মন্ত্রে মন্তকে জল প্রোক্ষণ  
করিবে। "বাসুদেবায় নমঃ" মন্ত্রে তর্জনী, মধ্যমা  
ও অনামা অঙ্গুলির অগ্রভাগ দ্বারা মূখ স্পর্শ  
করিবে। "সকর্ষণায় নমঃ" ও "প্রহ্লাদায় নমঃ"  
মন্ত্রদ্বয় দ্বারা দক্ষিণ ও বামনাসাপুটে অমুঠ ও  
তর্জনী অঙ্গুলি দ্বারা স্পর্শ করিবে। "অনিকঙ্কড়ায়  
নমঃ" ও "পুরুষোত্তমায় নমঃ" মন্ত্রে দক্ষিণ ও  
বামনেত্র অমুঠ ও মধ্যমী অঙ্গুলি দ্বারা স্পর্শ  
করিবে। "অধোকঙ্কড়ায় নমঃ" ও "নৃসিংহায় নমঃ"  
মন্ত্রে দক্ষিণ ও বাম কর্ণ অমুঠ ও অনামিকা অঙ্গুলি  
দ্বারা স্পর্শ করিবে। "অচ্যুতায় নমঃ" মন্ত্রে নাভি-  
দেশ অমুঠ ও কনিষ্ঠা অঙ্গুলি দ্বারা স্পর্শ করিবে।  
"জনার্দিনায় নমঃ" মন্ত্রে করতল দ্বারা বক্ষঃ স্পর্শ  
করিবে। "উপেন্দ্রায় নমঃ" মন্ত্রে সর্কাসুগুণির অগ্র  
দ্বারা মন্তক স্পর্শ করিবে। "হরয়ে নমঃ" ও  
"কৃষ্ণায় নমঃ" মন্ত্রে দক্ষিণ ও বামবাহ সর্কাসু-  
গুণির অগ্র দ্বারা স্পর্শ করিবে। রামানন্দ রায়  
তত্ত্বিশাস্ত্রোক্ত বিধি ব্যতীত অস্ত্র বর্ণপ্রমথর্ষের  
বিধিবস্ত্র দ্বান ও তর্পণাদি করেন নাই। রায়

রসিকতরু হইলেও তজ্জিশাক্তোক্ত বিধি আচরণ করিতেন, ইহা সিদ্ধ হইল। অন্যথা “যক্ষাধিধি নান” এই পরায় মিথ্যা হয়। অতএব তজ্জিশাক্তোক্ত বিধি সকলের অবশ্য আচরণীয়।

উঁরে দেখি, রামানন্দকে দেখিয়া।  
গিলিতে, মিসন করিতে। উঠি ধায়,  
উঠিয়া ধাবিত হয়। তথাপি, যদিও  
মহাপ্রভুর অতিশয় মিলনের উৎকর্ষা  
হইয়াছে, তাহা হইলেও মনে পৈর্য্যাব-  
লম্বন করিয়া অবস্থিতি করিলেন।  
আইলা, আগিলেন। অপূর্ক, প্রাবীন ॥৩॥

(৩২ পা) “সূর্য্যশত ..... কৃষ্ণবর্ণ ॥”  
এই ৭ম হইতে ৯ম পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ।  
রামানন্দ প্রভুকে কিরূপ দেখিতেছেন,  
তাহা বলিতেছেন, “সূর্য্যশত” ইতি। সূর্য্য-  
শত-সমকান্তি, শত শত সূর্য্যতুলা অঙ্গের  
কান্তি। অরুণ বসন, লালবর্ণের বস্ত্র।  
সুবলিত, যে অঙ্গ যেমন গঠন হইলে  
সর্ব্ব সুন্দর হয়, সেই অঙ্গ সেইরূপে  
গঠিত। অপূর্ক দর্শনই চমৎকারের হেতু।  
“উঠি প্রভু ৷” প্রভু গাত্রোপান করিয়া  
রায়কে বলিতেছেন, উঠ উঠ, কৃষ্ণ কৃষ্ণ  
বল। রায়কে আলিঙ্গন করিবার জন্য  
উৎকর্ষায় উঠিতে হুঁরা করিতেছেন।  
“তথাপি” ইতি। রায়কে জানিয়াও  
প্রভু জিজ্ঞাসা করিলেন, তোমার নাম  
কি রামানন্দ? রায় কহিলেন, “সেই  
হঙ” অর্থাৎ হাঁ, আমারই নাম রামানন্দ  
রায়। দাস শূদ্র মন্দ অর্থাৎ আমি শূদ্র  
দাস, শূদ্র দাসও ভাল হয়, আমি তাহাও  
নহি, তদপেক্ষাও মন্দ। ইহা দৈন্তোক্তি  
জানিবেন। প্রেমাবেশে, প্রেমের আবেশে

দুই জনই আনন্দে জ্ঞানহারা হইলেন।  
“স্বাভাবিক প্রেম” ইতি। “দুই জন” পর-  
স্পর স্পর্শ প্রাপ্ত হইয়া উভয়ের হৃদয়ে  
স্বাভাবিক অর্থাৎ সহপ্রেম, বাহা  
কোন দিন সাধনে লাভ করেন নাই,  
যাহা উভয়ের নিত্যই বিরাজমান, কলতঃ  
স্বতঃসিদ্ধপ্রেম হৃদয়ে উভয়ের অতি-  
ব্যক্ত হইল। দুই জন দুই জনকে আলি-  
ঙ্গন করিয়া উভয়ের আনন্দসাগরে জ্ঞান  
ভুবিয়া গেলে অচেতন হইয়া ভূমিতে  
পতিত হইলেন। ইহাতে প্রলয়নামক  
মাণ্ডিকভাব প্রকাশ পাইল। “সুস্ত স্বেদ”  
ইতি। গদগদকৃষ্ণবর্ণ অর্থাৎ স্বরভঙ্গ  
নামক মাণ্ডিকভাব। অষ্টমাণ্ডিক এক-  
কালে উদ্ভিত হওয়াতে সুদীপ্ত মাণ্ডিক  
হইয়াছে ॥ ৭—৯ ॥

(৩২।৩৩ পা) “দেখিয়া ... ..  
লাগিলা ॥” এই ১০ম পয়ারের ভাবার্থ  
সরল। দেখিয়া, প্রভু ও রামানন্দের  
ভাবাদি দেখিয়া। ব্রাহ্মগণের চমৎ-  
কারিতা এবং পরস্পরের বিচার “এইত  
সন্ন্যাসী” পর পয়ারে বলিতেছেন। এই  
সন্ন্যাসির সঙ্গে ব্রহ্ম তুল্য কান্তি প্রকাশ  
পাইতেছে, ইনি শূদ্রকে আলিঙ্গন করিয়া  
রোদন করেন কেন? ইহাই ব্রাহ্মগ-  
ণের আশ্চর্য্যতা। “এই” ইতি। আমা-  
দের এই মহারাজ রায় রামানন্দ মহা  
পণ্ডিত ও গম্ভীর। ইনিও সন্ন্যাসির  
স্পর্শে মত্ত হইয়া অস্থির হইয়াছেন।  
ইহার প্রতি কারণ কি বৃষ্টিতে পানি-  
তেছি না। বিচার করিতে লাগিলেন।  
“এইমত” ইতি। ব্রাহ্মগণের ভক্তি-

তত্ত্বের বোধ না থাকায়, তাঁহারা এই প্রকারে মনে মনে ভাবিতেছেন, কিন্তু কিছুই স্থির করিতে পারিতেছেন না। পয়ারের শেষে মন শব্দ রহিয়াছে, তাহার অর্থ মনে। বিজ্ঞাতীয় লোক অর্থাৎ তাঁহারা ভক্তিতত্ত্ব জানেন না, বলিয়া বিজ্ঞাতীয়। কৈল সম্বরণ, ভাব সম্বরণ করিলেন; স্বভাবতই হৃদয়ে চেতন উঠিতেছিল, সেই সময়ে ভাব সম্বরণ করেন; জানিতে হইবে, নচেৎ অচেতনে স্বজাতীয় বিজ্ঞাতীয় লোক জানা যায় না। সুস্থ, স্বভাবস্থ ॥ ১০ ॥

( ৬৩ পা ) “সার্কভৌমঃ... গনুয্য-জনম ॥” এই ১১শ ও ১২শ পয়ারের ভাবার্থ। মিলিতে তোমারে, তোমার সহিত মিলিবার জন্ম। করিল যতন, বচয়ত্র করিয়া বলিয়া দিয়াছেন। তোমা মিলিবাক্যে, তোমার সহিত মিলন করিতে। এথা, গোদাবরীতীরে। করেন ভূতাজ্ঞান, আমাকে দাস বলিয়া জানেন। পরোক্ষও, অসাক্ষাতেও। মোর হিতে, আমার হিত বিষয়ে। গাবধান, বিচক্ষণ ॥ ১১।১২ ॥

( ৬৩ পা ) “সার্কভৌমে... তার ঘর ॥” এই ১৩ ও ১৪ পয়ারের ভাবার্থ। সার্কভৌমের প্রতি যে আপনার রূপা হইয়াছে, তাহার এই চিহ্ন ( লক্ষণ )। যদি বল, সেই লক্ষণ কি? তাহা “অস্পৃশ্য” ইতি পর পয়ারে বলিবেন। ভট্টাচার্যের প্রতি যে আপনার রূপা হইয়াছে, সেই রূপার অধীন হইয়া অর্থাৎ রূপাপাত্রের বাক্যানুরোধে, অস্পৃশ্য

আমি, আমাকেও আপনি স্পর্শ করিলেন। আমি ( রামানন্দ ) যে স্পর্শ-যোগ্য নহি, তাহার কারণ বলিতেছি। “কাঁহা তুগি” ইতি। শূদ্রাধম অর্থাৎ অশু শূদ্র রাজারও কোনদিন বিষয় ত্যাগ হইতে পারে, কিন্তু আমি তাঁহাদের অপেক্ষাও হীন, আমার বিষয়ত্যাগ ও আপনার দর্শন বা স্পর্শন অসম্ভব। “মোর” ইতি। আমাকে দেখিতে আপনাকে বেদ নিষেধ করেন অর্থাৎ শূদ্র-দর্শন সম্মুখির নিষেধ। দর্শনের কথা দূরে থাকুক, আপনি আমাকে স্পর্শ করিলেন। তাহাতে বেদবাক্যকে ভয় বা আমাকে ঘৃণাও করিলেন না। ফলতঃ মহাপ্রভু বেদবাক্য লঙ্ঘন করেন নাই। বর্ণাশ্রমধর্ম সম্বন্ধের বাক্য লঙ্ঘন হইলেও ভক্তিসম্বন্ধীয় বেদবাক্য লঙ্ঘন হয় নাই; পরন্তু তাহার পালনই হইয়াছে। ভক্তকে দর্শন বা স্পর্শন করিতে বেদ কোথাও নিষেধ করে নাই। “তোমার” ইতি। নিন্দ্যকর্ম, নিন্দনীয় কর্ম। এখানে রামকে মহাপ্রভুর স্পর্শন, নিন্দনীয় কার্য্য নহে। ইহা দৈন্যোক্তি। কোন কোন স্থানে ঈশ্বরের রূপা ঈশ্বরকে নিন্দনীয় কার্য্য করাইলেও, সেই রূপা তাঁহার ভূষণরূপ; দোষাবহ নহে। কারণ, তাদৃশ কার্য্যে জীভগবানের বা রূপার স্বাতন্ত্র্যই প্রকাশ পায়। ইহা, এইস্থানে। তেজি সে, সেই হেতু। “মহান্ত” ইতি। মহান্ত-গণের স্বভাবই এই যে, তাঁহারা পামর উদ্ধারের জন্ম পায়রগৃহে গমন করেন।



মহাস্তম্ভগণ নিজকার্যসাধনে তথায় গমন করেন না। মহাস্তম্ভ শব্দের অর্থ ভগবান্ ও তাঁহার ভক্ত। জীব-নিস্তার করা ভগবানের স্বভাব; ঐ স্বভাব ভক্তেও সঞ্চারিত হয়। উভয়ের স্বভাব এক বলিয়াই ভগবানের স্বভাববর্ণন-প্রসঙ্গে মহাস্তম্ভ শব্দ প্রয়োগ করিলেন ॥ ১৩১৪ ॥

( ৬৩ পা ) “মহদ্বিচলনমিতি।” এই শ্লোকের তাৎপর্য। “মহাস্তম্ভস্বভাব” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক বামানন্দ রায় মহাপ্রভুকে বলেন।

শ্রীমদ মহারাজ গর্গমুনিকে বলিতেছেন, হে ভগবান্, অর্থাৎ ষট্‌ঋণ্য পূর্ণ অর্থে ভগবান্ নহে। তথাহি বিষ্ণুপুরাণে,—

“উৎপত্তিঃ প্রসন্নকৈব ভূতানামাগতিং গতিম্।  
বেত্তি বিদ্যামনিষ্ঠাঞ্চ স বাচ্যো ভগবানিতি ॥”

জগতের উৎপত্তি, লয় ও প্রাণিগণের জন্ম, মৃত্যু, বিষ্ঠা ও ঋবিষ্ঠা এই ছয়টিকে যিনি জানেন, তাহাকেও ভগবান্ বলা যায়। ত্রীকৃষ্ণসেবা ও তদ্রীতা ষাঁরা মহৎগণের হৃদয় পূর্ণ; সুতরাং পূর্ণের অস্তিত্ব গমনের কারণ অর্থাৎ স্বার্থ থাকিতে পারে না। অতএব গৃহস্থ পামরগণের গৃহে পামর-উদ্ধার জন্তই গমন করেন। যদি বল, মঙ্গলের প্রয়োজন গৃহস্থগণের, সুতরাং তাহারাই সাধুর আশ্রমে যাইয়া মঙ্গল গ্রহণ করেন না কেন? তদন্তর, “দীনচেতসামিতি।” অর্থাৎ গৃহিগণ ঐহিক ও পারলৌকিক পুত্র ও কলত্রাদিরূপ শুম্ভলে আবদ্ধ থাকায় গৃহত্যাগ করিয়া তাহার সাধুর আশ্রমে যাইতে পারে না। সেই হেতু সাধুগণই তাহাদের গৃহে যাইয়া তাহাদের মঙ্গল সাধন করেন। অতএব আপনার জায় সাধুর আমার গৃহে আগমন উচিতই হইতেছে ॥ ৩ ॥

( ৬৩ পা ) “আমার সঙ্গে...তোমার দর্শন ॥” এই ১৫ হইতে ১৭ পয়ার

পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। সহশ্রেণক, অনেক। পর পয়ারে দ্রবীভূত মনের অনুভাব অর্থাৎ চিহ্ন বলিতেছেন. “কৃষ্ণ কৃষ্ণ” ইতি। আকৃতে, আকারে। প্রকৃতে, স্বভাবে। আনের কা কথা, অস্তের কথা কি বলিব। মায়াবাদী, বিবর্তবাদী অর্থাৎ জীবই ব্রহ্ম, জগৎমিথ্যা, এরূপ বাদী। এইটি মহাপ্রভুর দৈশ্চোক্তি। এই জানি, আমাকে মায়াবাদী জানিয়া। হৃদয়শোধিতে অর্থাৎ মায়াবাদকে ত্যাগ করিয়া ভক্তিতত্ত্ব জানাইতে। তারে, বৈদিক ব্রাহ্মণকে ॥ ১৫-১৭ ॥

( ৬৪ পা ) “রায় কহে... বিষ্ণু-ভক্তি হয় ॥” এই ১৮ হইতে ২০ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ। শোধিতে, পবিত্র করিতে। করহ মার্জন, পবিত্র কর। তবু, তথাপি। সেই বিপ্র, বৈষ্ণব বৈদিক ব্রাহ্মণ। রহঃস্থানে, নিষ্কল-স্থানে। “প্রভু কহে পড় শ্লোক” ইতি। মহাপ্রভু বামানন্দ রায়কে বলিতেছেন, সাধ্যের অর্থাৎ উপায়রূপ পুরুষার্থের; নির্ণয় অর্থাৎ নিশ্চয়াক্রম; শ্লোক পড় অর্থাৎ পাঠ কর। শ্লোক পাঠ কর বলিবার তাৎপর্য এই যে, প্রমাণ সহিত পুরুষার্থ বল।

ধর্ম ও অর্থ এই দুইটি উপায়রূপ পুরুষার্থ এবং কাম ও মোক্ষ এই দুইটি ফলরূপ পুরুষার্থ। ইহার মধ্যে মহাপ্রভু ফলরূপ পুরুষার্থের প্রম্ন করেন নাই; আবার উপায়রূপ পুরুষার্থের মধ্যে অর্থরূপ পুরুষার্থ জিজ্ঞাসা করেন নাই। কেবল ধর্মরূপ পুরুষার্থ কি, তাহা প্রম্ন করিয়াছেন। যদি বল, তাহা কিরূপে জানা গেল? তদন্তর, ধর্মরূপ পুরুষার্থ প্রম্নের উত্তর হওয়াতে, ধর্মরূপ

পুরুষার্থের প্রার্থই সিদ্ধ হইতেছে । অতএব পুরুষের প্রয়োজন বাহাতে নির্ণীত হইয়াছে, এরূপ একটি শ্লোক মহাপ্রভু পাঠ করিতে বলিলেন ।

রামানন্দ রায় বলিতেছেন, স্বধর্ম-আচরণে (অনুষ্ঠানে) বিষ্ণুতে ভক্তি হয় । অতএব স্বধর্ম-মাচরণই উপায়-রূপ পুরুষার্থ ।

স্বধর্ম অর্থাৎ ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শূদ্র এই চারিজননের বর্ণোচিতধর্ম এবং গৃহস্থ, ব্রহ্মচর্য, বাণপ্রস্থ ও সন্ন্যাস এই চারি আশ্রমের আশ্রমোচিতধর্ম অর্থাৎ ব্রাহ্মণের বেদাধ্যয়নাদি ও গৃহস্থের গৃহপালনাদি প্রভৃতি । উক্ত স্বধর্ম্যানুষ্ঠানই পুরুষের প্রয়োজন অর্থাৎ সাধ্য । স্বধর্মাচরণই বিষ্ণুভক্তি । ইহাকে আরোপসিদ্ধা ভক্তি বলে । বর্ণাশ্রমধর্ম পুরুষের একটি প্রয়োজন হইলেও উহা বিষ্ণুভক্তি নহে । তবে যে ভক্তি বলিয়াছেন, তাহা বর্ণাশ্রমধর্মে ভক্তির আরোপমাত্র । সন্দেহ হইতে পারে, স্বধর্মাচরণ যদি ভক্তি না হয়, তবে স্বধর্মে ভক্তির আরোপ করেন কেন ? তদন্তর, ধার্মিক পুরুষেরই ভক্তি প্রাপ্তির সম্ভাবনা । অতএব ভক্তিপ্রাপ্তির সম্ভাবনায় ভক্তির আরোপ করা হইয়াছে । ভক্তি কেবল ভক্তসঙ্গেই হইয়া থাকে । ভক্তসঙ্গ ব্যতীত স্বধর্ম বা অথ কোনরূপ পুণ্য দ্বারা ভক্তিপ্রাপ্তি যে যে বচনে পাওয়া যায়, তাহা কেবল, ভক্তিপ্রাপ্তির সম্ভাবনায় পরম্পররূপে কখন কখন ভক্তিপ্রাপ্তির কারণ বুঝিতে হইবে, নিশ্চয় কারণ নহে । ভক্তসঙ্গেই ভক্তিপ্রাপ্তির নিশ্চয় কারণ । ফলতঃ স্বধর্মাচরণ আরোপসিদ্ধা ভক্তি । এই প্রক্লান্তরে অধিকারিণ ভেদও দেখান হইতেছে জানিবেন । ১৮—২০ ॥

( ৬৪ পা ) “বর্ণাশ্রমেতি ।” এই চতুর্থ শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । স্বধর্ম্যানুষ্ঠানই বিষ্ণুভক্তি তৎ-প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫ ॥

( ৬৪ পা ) “প্রভু কহে... সাধ্য যার ॥” এই ২১শ পয়ারের ভাবার্থ । প্রভু বলিলেন, রায়, তুমি যে সাধ্য বলিলে, তাহা একটি সাধ্য বটে ।

বিষ্ণুর আরাধনা বা বিষ্ণুভক্তিই সাধ্য বস্তু, ইহা সত্য, এবং অজাতশক-ব্যক্তির বর্ণাশ্রমাচার পালন করিতে করিতে সত্বগুণের বৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গেই চিত্তমাণিন্যকর রজঃ ও তমোগুণের নাশের পর মহৎসঙ্গাদি দ্বারা ভক্তিলভের সম্ভাবনা আছে, ইহাও স্থির ; কিন্তু বর্ণাশ্রমাচার, সাধ্য-ভক্তির সাক্ষ্য সাধন না হইয়া, পরম্পরায় সাধন হইতেছে । সুতরাং উহাকে অন্তরঙ্গ সাধন না বলিয়া, বাহ ( বহিরঙ্গ ) সাধনই বলা হয় । অতএব উক্ত শ্লোক দ্বারা সাধ্যের নির্ণয় না হইয়া সাধনের নির্ণয় হইল । সাধনের নির্ণয়ে সাধ্যের নির্ণয় স্বীকার করিয়া লইলেও, অভীষ্টসিদ্ধি হইতেছে না, কারণ উক্ত বিষ্ণুপুরাণের শ্লোক দ্বারা যে সাধনের নির্ণয় হইল, তাহাও বহিরঙ্গ সাধন-মাত্র অর্থাৎ সামান্য সাধ্য । যেহেতু স্বধর্মাট শ্রেষ্ঠ ধর্ম নহে ও স্বরূপসিদ্ধা ভক্তিও নহে ।

এই সাধ্যের আগে কহ অর্থাৎ ইহা হইতে শ্রেষ্ঠ সাধ্য যাহা, তাহার প্রমাণ সহিত শ্লোক পাঠ করম । ইহা কর্মমিশ্রা আরোপসিদ্ধা ভক্তি ।

রায় কহিলেন, ত্রীকৃষ্ণে কর্মার্ণব নাম্যসার অর্থাৎ পূর্নোক্ত সাধ্য হইতে শ্রেষ্ঠ । বর্ণাশ্রমাচারকারি হইতে কৃষ্ণে কর্মার্ণবকারী ব্যক্তি শ্রেষ্ঠ ।

প্রথমতঃ কর্ম দুই প্রকার ; শাস্ত্রতঃ ও স্বভাবতঃ । স্বভাবতঃ কর্ম আবার বিবিধ ; পুণ্যকর্ম ও পাপকর্ম । তন্মধ্যে পাপকর্মের ফল নিজে গ্রহণ করিয়া, আর সকল কর্মফল ত্রীকৃষ্ণকে অর্পণ করার নামই কর্মার্ণবরূপ সাধ্য । ইহাও

উপায়রূপ পুঙ্খবার্থ এবং আরোপসিদ্ধা ভক্তি ।  
কর্মাৰ্পণরূপ সাধ্য দ্বিবিধ, সঠিকতব ও অঠিকতব ।  
কর্মহিত্র-নিবারণে শ্রীকৃষ্ণে যে কর্মাৰ্পণ, তাহা  
সঠিকতব এবং শ্রীকৃষ্ণের প্রীতির হৃত্ত সে কর্মফল  
ত্যাগ, তাহা অঠিকতব । রায় মহাশয় অঠিকতব  
কর্মফল ত্যাগকেই সাধ্য বলিতেছেন । কারণ,  
ইহা হইতেই ভক্তিপ্রাপ্তির অধিক সম্ভাবনা  
আছে । কর্মাৰ্পণসাধ্য যদিও ভক্তিপ্রাপ্তির  
নিশ্চয় কারণ নহে, তথাপি ভক্তিলাভের অধিক  
সম্ভাবনা থাকায়, ইহাকে একটি সাধ্য স্থির করা  
হইয়াছে । অতএব শ্রীকৃষ্ণে কর্মফল ত্যাগ সাধ্যটি  
কর্মাৰ্পণরূপা আরোপসিদ্ধা ভক্তিই হইতেছে ॥২১॥

( ৬৪ পা ) “যৎকরোষীতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । গীতার এই শ্লোকটি পাঠ করি-  
বার, রায়ের অভিপ্রায় এই,—

শ্রীভগবানের আজ্ঞাবোধে বা কর্তব্যবোধে  
বিষ্ণুপুরাণোক্ত বর্ণাশ্রমাচার-পরিপালন সাধ্যভক্তির  
বহিরঙ্গ সাধন । কারণ, উহা ফলকামনারহিত  
বলিয়া উক্ত হইলেও ফলের প্রতি আগ্রহরহিত  
না হওয়ার, উহা সুকাম তুলা, সূত্ররং কঠোর ;  
কিন্তু গীতোক্ত কর্ম বা কর্মযোগ সাধ্যভক্তির-  
অন্তরঙ্গ সাধন, কারণ, উহা ফলের প্রতি দৃষ্টিরহিত,  
আগ্রহরহিত হওয়ার নিষ্কাম, অতএব হৃত্ত । উক্ত  
কর্মের ফল, কর্মের সহিত প্রিয় ভগবানে  
অর্পিত হওয়ার, উহা সাধ্যভক্তির অন্তরঙ্গ সাধন  
হওয়াই সম্ভব ॥ ৫ ॥

( ৬৪ পা ) “প্রভু কহে... ভক্তি  
সাধ্যসার ॥” এই ২২শ পয়ারের ভাবার্থ ।  
প্রভু বলিলেন, শ্রীকৃষ্ণে কর্মাৰ্পণ সাধ্যটি  
একটি সাধ্য হইলেও, উহা কর্মাৰ্পণরূপা  
আরোপসিদ্ধা ভক্তি হওয়ার, উহাও  
বাহ্য মধ্যে গণ্য হইতেছে ।

কর্মাৰ্পণ দুই প্রকার ; ভগবৎপ্রীণনরূপা

কর্মাৰ্পণ ও শ্রীকৃষ্ণে কর্মফলত্যাগরূপকর্মাৰ্পণ ।  
ভক্তির অন্তরঙ্গসাধন ভক্তিই হওয়া উচিত ।  
কৃষ্ণাৰ্পিত কর্মও কর্মই, ভক্তি নহে । কি ভগ-  
বানের আজ্ঞাবোধে বা কর্তব্যবোধে অনুষ্ঠিত কর্ম-  
ফলের প্রতি দৃষ্টিযুক্ত বর্ণাশ্রম-আচার পালনরূপ  
কঠোর সকাম কর্ম ; কি ফলের প্রতি লক্ষ্যরহিত  
কৃষ্ণাৰ্পিত হৃত্ত নিষ্কাম কর্মযোগ উভয়ই কর্ম,  
উভয়ই আরোপসিদ্ধা ভক্তি ; শুদ্ধা ভক্তি নহে ।  
উক্ত উভয়বিধ কর্ম, ভক্তির স্তায় চিত্তগুণিকর  
হওয়ার, ভক্তির আকারে দৃষ্ট হয় । অতএব ভক্তি  
না হইয়াও, ভক্তিব্যেব আরোপ হেতু ভক্তি নামে  
কথিত হয় বলিয়াই, উহাদিগকে আরোপসিদ্ধা  
ভক্তি বলা হয় । আরোপসিদ্ধা ভক্তি কখনই  
পরমপুঙ্খবার্থের অন্তরঙ্গ সাধন হইতে পারে না ।  
কর্ম সকল ভগবানে অর্পণ করাতে নিষ্কাম স্বধর্ম-  
পর হইলেও বাহ্য মধ্যে গণ্য হইতেছেন । কারণ  
কর্তব্যজ্ঞান এখনও ইহাদের অন্তরে বদ্ধমূল রহি-  
য়াছে । যতক্ষণ পর্যন্ত ‘আমার কর্তব্য আমি  
পালন করিতেছি,’ এই জ্ঞান রহিয়াছে, ততক্ষণ  
পর্যন্ত প্রেম অর্থাৎ বিতুচ্ছা ভক্তি বা তৎফল  
লাভের আশা সূদূরবর্তিনী । ইহারা সাযুজ্যমুক্তি  
পর্যন্তেরই অধিকারী । তবে সকাম স্বধর্মপর হইতে  
ইহাদিগের এইমাত্র অধিক লাভ যে, ইহাদের মুক্তি  
অপেক্ষাকৃত সম্বরেই হইয়া থাকে । যথা,—

“লভস্তি যতঃ সতো মুক্তিং জ্ঞানপরঃ হি যে ।”

“যাহারা কামনার অক্ষিৎকরতা বুঝিয়া  
নিষ্কাম স্বধর্মে যত্ববান্ হইলেন, তাহারা সত্তাই মুক্তি  
লাভ করেন ।

অতএব ইহা অপেক্ষা যাহা অন্তরঙ্গ  
সাধন তাহা বল ।

রায় কহিলেন, “স্বধর্মত্যাগ” ইতি ।  
স্বধর্মত্যাগরূপ যে ভক্তি, তাহাই শ্রেষ্ঠ  
সাধ্য ।

কর্মত্যাগ দুই প্রকারে হইতে পারে, এক

কর্ম্মাধিকার নিরস্ত হইলে কর্ম্মত্যাগ; অপর  
অনধিকারে কর্ম্মত্যাগ। কর্ম্ম আর ধর্ম্ম এক  
কথা। উক্ত ছই প্রকার কর্ম্ম ত্যাগ পূর্ব্বক ভক্তি  
করা যাইতে পারে। যদি বল, তন্মধ্যে এই পরায়ে  
রার কোন ভক্তিকে সাধ্যসার বলিতেছেন? উক্ত  
ভক্তির, কর্ম্মত্যাগের অনধিকারে কর্ম্মত্যাগপূর্ব্বক  
ভক্তিকেই শ্রেষ্ঠ সাধ্য বলিতেছেন। তাহার প্রতি  
কারণ এই যে, অধিকারী ব্যক্তি কর্ম্মত্যাগ পূর্ব্বক  
যদি ভক্তি করেন, তবে স্বরূপসিদ্ধা ভক্তি হয়।  
তাহাকে মহাপ্রভু বাছ বলিতে পারেন না এবং  
তাহার উপরে সঙ্গসিদ্ধা ভক্তিও বলা হইতে পারে  
না। ইহার পরে প্রেমের উত্তরে সঙ্গসিদ্ধা ভক্তিই  
বলিয়াছেন। সুতরাং অনধিকারে কর্ম্মত্যাগপূর্ব্বক  
ভক্তিই এখানে সাধ্যসার। এই সিদ্ধান্তে সন্দেহ  
হইতে পারে, অনধিকারিক কর্ম্মত্যাগের বিধি শাস্ত্র  
মিতে পারেন না। কারণ, বিধি মিলে অনধি-  
কারীও থাকে না। উক্তের, অনধিকারে বিধি  
দেন নাই; তবে কি না, অজ্ঞত নিবন্ধন অর্থাৎ  
শাস্ত্রাদি না জানিয়া রাগবশতঃ কর্ম্মত্যাগপূর্ব্বক  
শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করিলে, সেই ভক্তি পূর্ব্বোক্ত সাধ্য  
হইতে শ্রেষ্ঠ সাধ্য হইবার বাধক নাই। উক্ত  
প্রকার সাধ্যের সাধকই অনেক পাওয়া যায়।  
তথা শ্রীহরিভক্তিবিন্যাসে,—

“মৎকর্ম্মকুর্স্বতাং পুংসাং  
ক্রিয়ালোপো ভবেৎ যদি।  
তেষাং কর্ম্মাণি কুর্স্বন্তি  
তিস্রকোট্যো মহর্ষয়ঃ ॥”

জগবান্ বলিতেছেন, যাহারা আমার ভজন  
করে, তাহাদের যদি ক্রিয়ালোপ হয় অর্থাৎ বর্ণা-  
শ্রমোচিত ধর্ম্ম নষ্ট হয়, তবে তাহাদের প্রতিনিধি  
হইয়া তিনকোটি মহর্ষিগণ তাহাদের কর্ম্ম বা ক্রিয়া  
করিয়া দেন। এই শ্লোকের প্রমাণ হইতেছে যে,  
যাহারা অনধিকারে কর্ম্মত্যাগ করেন, মহর্ষিগণ  
তাহাদের প্রতিনিধি হইয়া কর্ম্ম করিয়া দেন।  
কারণ, কর্ম্ম-নিবৃত্ত্যাধিকারে কর্ম্মের প্রতিনিধির  
প্রয়োজন নাই। তথাহি ভাগবতে,—

“ত্যক্ত্বা স্বধর্ম্মং চরণাঘ্রুজং হরে-  
ভঙ্গমপক্ষেঃ হৃৎ পতেত্ততো যদি।  
যত্র ক বাতন্ত্রমভূদন্ত কিং  
কোবার্থ আশৌ ভক্ততাং স্বধর্ম্মতঃ ॥”

স্বধর্ম্ম ত্যাগপূর্ব্বক যে ব্যক্তি শ্রীকৃষ্ণের ভজন  
করেন, তার যদি ভজনের অপরিপাকে যত্ন হয়  
বা সে পথ হইতে ভ্রষ্ট হয়, তাহাতে কি তাহার  
অমঙ্গল হইবে? কখনই না, অর্থাৎ অশংকনাদি  
হইলেও, তাহার ভক্তিবাসনা নষ্ট হইবে না;  
সুতরাং অমঙ্গল হইল না। আর স্বধর্ম্ম-অমুষ্ঠান  
করিয়া কে কবে পুরুষার্থ লাভ করিয়াছে? অর্থাৎ  
করে নাই। অধিকারে কর্ম্মত্যাগ পূর্ব্বক হরি-  
ভজনে অমঙ্গলের আশঙ্কাই আসিতে পারে না।  
এই সকল বিচারে নিস্পন্ন হইতেছে, যে অনধি-  
কারী ব্যক্তিও কর্ম্মত্যাগ করিয়া কৃষ্ণভজন করিলে  
তাহাও এক প্রকার সাধ্য। উক্ত সাধ্যের প্রমাণ-  
স্বয়ং “আজ্ঞারৈবেতি” ও “স্বধর্ম্মানিতি।” বাহা  
নিম্নে উদ্ধৃত করিয়াছেন, তাহাতেও এক শ্লোকে  
বিচারপূর্ব্বক কর্ম্মত্যাগ প্রমাণিত হইতেছে।  
কর্ম্ম নিকর্ষে কর্ম্মত্যাগ হইলে বিচার বা কৃষ্ণের  
আজ্ঞার অপেক্ষা নাই। এই হেতুই রার মহাশয়  
স্বধর্ম্মত্যাগ পূর্ব্বক ভক্তিকে সাধ্যসার বলিয়াছেন।  
প্রজ্ঞাবশতঃ স্বধর্ম্মত্যাগ হইলেও স্বরূপ ত্যাগ হয়  
না বলিয়া, ইহা কর্ম্মমিশ্রা সঙ্গসিদ্ধাভক্তি ॥ ২২ ॥

( ৬৪১৬৫ পা ) “আজ্ঞারৈবেতি” ও  
“স্বধর্ম্মানিতি” এই যষ্ঠ ও সপ্তম শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
স্বধর্ম্মত্যাগ প্রমাণ এই শ্লোক দুইটি।  
এই শ্লোক পাঠ করিবার অভিপ্রায় এই,  
সাধকের দৃঢ় শ্রদ্ধা না হওয়া পর্যন্ত স্বধর্ম্ম-  
চরণ ও আচরিত স্বধর্ম্মের ফলাপণই কর্তব্য।  
পরে যখন দৃঢ় শ্রদ্ধা জন্মে, তখন শ্রীভগবাসে  
পর্যাপন্ন হইয়া তদুপদিষ্ট কর্ম্মও ত্যাগ করিয়া  
থাকেন ॥ ৬.৭ ॥

( ৬১ পা ) "প্রভু কহে...সাধ্যসার ।"  
এই ২৩শ পয়ায়ের ভাবার্থ । প্রভু কহিলেন, কর্ম বা স্বপ্নের ফল শ্রীকৃষ্ণে অর্পিত হইলেও ফলার্পণ দ্বারা শরণাপত্তি হয়, উহা শুদ্ধা নহে । কারণ, উহা সঙ্গসিদ্ধা ।

জ্ঞানকর্মাদিসঙ্গ দ্বারা ভক্তি সিদ্ধ হইতে পারিলেও উহা সাক্ষাৎ ভক্তি নহে । শরণাপত্তিতে দুঃখনিবারণের তাৎপর্য থাকায়, সাধক দুঃখনিবারণার্থে ভগবানের শরণাপন্ন হয়েন বলিয়া, উহা উত্তমা ভক্তির মধ্যে গণ্য হইতে পারে না । জ্ঞান ও কর্মের আবরণরহিত, অল্প কামনাশূন্য ভক্তিকেই উত্তমা ভক্তি বলা যায় । শরণাপত্তি প্রকারান্তে জ্ঞান ও কর্মের আবরণ শূন্য হইতে পারিলেও দুঃখনাশে তাৎপর্য থাকায় অল্প কামনারহিত হইতে পারে না । ইহারা ভক্তমধ্যে গণ্য হইলেও, ইহাদের ভক্তির সহিত কিঞ্চিৎ কর্মের মিশ্রণ থাকায়, ইহারাও বাহ্য বলিয়া পরিভাষ্য হয়েন ।

অতএব ইহা অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ বল ।

রায় কহিলেন, কর্মমিশ্রা সঙ্গসিদ্ধা ভক্তির দুঃখনিবারণে তাৎপর্য থাকায়, ইহা উত্তমা ভক্তি মধ্যে গণ্য না হইলে, তদপেক্ষা জ্ঞানমিশ্রা ভক্তিই শ্রেষ্ঠা । কারণ, উহার দুঃখনিবারণে তাৎপর্য দৃষ্ট হয় না । যেহেতু জ্ঞানমার্গে ব্রহ্মস্বরূপ-সম্প্রাপ্ত-ব্যক্তির ক্লেশ ও কর্মফলের কামনা দৃষ্ট হয় না । অতএব ইহাই অন্তরঙ্গ সাধন ॥ ২৩ ॥

( ৬২ পা ) "ব্রহ্মভূত" ইতি । এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । জ্ঞানমিশ্রাভক্তির প্রমাণ এই শ্লোক । ইহার অভিপ্রায় এই,—

জ্ঞানমার্গে ব্রহ্ম ও দুঃখ বাস্তব নহে । ক্লেশ-কর্মাদি বিপাকের কামনা না থাকায়, শুদ্ধচিত্ত ব্যক্তি ব্রহ্ম ব্যতীত অল্প বস্তুর জন্য শোক ও কামনা না করায় ইনিই শ্রেষ্ঠ হইতেছেন । জ্ঞানমিশ্রা ভক্তি দ্বারাই পরা ( উত্তমা ) ভক্তির লাভ হয় । অতএব জ্ঞানমিশ্রা ভক্তি পূর্বোক্ত উপায়রূপ পুরুষার্থ সকল হইতে শ্রেষ্ঠ উপায় । যে হেতু পূর্বোক্ত ভক্তি সকলের অমুঠানে এই ভক্তির উদয় হয় । অতএব জ্ঞানমিশ্রা ভক্তিই উত্তমা ভক্তির সাক্ষাৎ সাধন বা শ্রেষ্ঠ সাধ্য ॥ ৮ ॥

( ৬১ পা ) "প্রভু কহে...সাধ্যসার ॥", এই ২৪শ পয়ায়ের ভাবার্থ । প্রভু কহিলেন, জ্ঞানমিশ্রাভক্তি একটি সাধ্য মধ্যে গণ্য হইতে পারিলেও জ্ঞানমিশ্রা হওয়াতে, উহা জ্ঞানমিশ্রা-সঙ্গসিদ্ধা হইতেছে, স্বরূপসিদ্ধা হইতেছে না ।

জ্ঞানমিশ্রা ভক্তের সর্বত্রই বৈরাগ্য । কেবল ভগবানের ভক্তির মহিমাদি জ্ঞানে কিছু আসক্তি দেখা যায় । ইহাতে দুঃখনিবারণে তাৎপর্য না থাকিলেও জ্ঞানের আবরণ থাকায়, উত্তমা ভক্তির মধ্যে ইহা গণ্য হইতে পারে না । বিশেষ, কিঞ্চিৎ ভক্তি না থাকিলে কৈবল্য সিদ্ধ হয় না বলিয়া ভক্তির কিঞ্চিৎ মিশ্রণ দেখা যাইতেছে । এই জ্ঞানমিশ্রা ভক্তিতে কৈবল্য কামনা দৃষ্ট হইয়া থাকে । অতএব উহা কৈবল্যকাম্যপর নামা জ্ঞানমিশ্রা সঙ্গসিদ্ধা ভক্তি বলিয়া কথিত হইতেছে । জ্ঞানমিশ্রা ভক্তিতে জ্ঞানই অঙ্গী, ভক্তি উহার অঙ্গমাত্র । অঙ্গী জ্ঞান, অঙ্গভক্তির সাহায্যে ব্রহ্মসাক্ষাৎকার দ্বারা ভক্তির ফল মোক্ষসাধন করিতে পারিলেও ভগবৎ সাক্ষাৎকার দ্বারা প্রেমরূপ পরম পুরুষার্থ প্রদান করিতে পারে না ।

অতএব জ্ঞানমিশ্রা ভক্তিকেও বাহ্য (বহিরঙ্গ) সাধন জানিয়া উহার পর যাহা, তাহা পাঠ কর, অর্থাৎ ইহা হইতে শ্রেষ্ঠ সাধ্য বল ।

রায় কহিলেন, জ্ঞানমিশ্রা ভক্তি যখন উত্তমা ভক্তি নহে, তখন জ্ঞানশূন্য ভক্তিই সকলের শ্রেষ্ঠ সাধ্য। অম্মকামনাশূন্য ও জ্ঞানকর্মাদির আবরণরহিত শ্রবণ-কীর্তনাদিরূপা ভক্তিমাত্রকামা সঙ্গসিন্ধা ভক্তিই শ্রেষ্ঠা।

ইহা হই প্রকার কর্মমিশ্রা ও কর্মজ্ঞানমিশ্রা। শ্রদ্ধাপূর্বক কৃষ্ণের গুণকীর্তন, তৎকথার শ্রদ্ধা, পূজায় নিষ্ঠা, স্তবাদি পাঠ, শ্রীকৃষ্ণভজন নিমিত্ত তদ্বিরোধী অর্থের ত্যাগ, শ্রীকৃষ্ণোদ্দেশে চন্দন-লেপনাদির ভোগ ও পুত্রোপলানাদির সুখত্যাগ, ভক্তির কারণ যশ, বজ্র, দান জপ ও ব্রতাদি বৈদিক কর্মের অমুষ্ঠানাদিকে কর্মমিশ্রা ভক্তিমাত্র-কামা বলে। শ্রদ্ধাপূর্বক নিষ্কাম ভাগবতোক্ত বধর্ম দ্বারা ও পঞ্চরাত্রাদি বৈষ্ণবের অমুষ্ঠেয় কর্ম দ্বারা কৃষ্ণসেবার অমুষ্ঠান করা, প্রাণিগণকে পীড়াদান ত্যাগ, শ্রীকৃষ্ণপূজা, প্রাণিসকলে অন্ত-র্যামিরূপে কৃষ্ণের ভাবনা, দৈর্ঘ্য, নৈরোগ্য দ্বারা অহিংসা, অস্তের ও ব্রহ্মচর্যাদিব্রত ধারণ, উচি, সন্তোষ, তপস্তাদির অমুষ্ঠান, অভিমানশূন্য হওয়া, আত্মা ও অনাআবিবেক শাস্ত্র শ্রবণাদি করা প্রভৃ-তিক্তে কর্মজ্ঞানমিশ্রা ভক্তিমাত্রকামা বলে ৷২৪৷

( ৬৫ পা ) “জ্ঞানে প্রয়াসমিতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্যা শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। জ্ঞানশূন্য ভক্তিবিসয়ক প্রমাণ এই শ্লোক ।

যাহারা শ্রীকৃষ্ণ কেবলমাত্র ভক্তি প্রার্থনা করেন, তাহারা শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপস্বার্থের মহিমা বিচারে কিছুমাত্র চেষ্টা না করিয়া শ্রীকৃষ্ণের ভক্ত পার্শ্বসর্সদা থাকিয়া শ্রীকৃষ্ণ-কথা শ্রবণ করেন। ভক্তমুখ হইতে ভক্তিশাস্ত্রমত বিধি শ্রবণ করিয়া শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করিবার জন্য দেহাদি দ্বারা প্রণামাদি বা শ্রবণসময়ে অঙ্গলিবন্ধনাদি করে ও বাক্যের দ্বারা শুভবপাঠাদি বা বিধির অঙ্গসোদন

করে এবং মনের দ্বারা কৃষ্ণচিন্তনাদি করে। যে অজিত, তুমি শ্রায়ই তাহার বশীভূত হও। প্রায় শব্দ দ্বারা প্রেমভক্তি অপেক্ষিত হইতেছে ৷২৯৷

( ৬৬ পা ) “প্রভু কহে.....সাধ্য সার ॥” এই ২৫ পয়ারের ভাবার্থ। প্রভু কহিলেন, রায়, তুমি যে ভক্তিমাত্র-কামা ভক্তির কথা বলিলে, উহা যদি অন্যকামনারহিত স্বরূপসিন্ধা দ্বারা সাক্ষাৎরূপা হয়, তবে উহা নিগুণা স্বরূপসিন্ধা ভক্তি। ইহা সর্গশ্রেষ্ঠা, কিন্তু ইহাও সাধ্য নহে, পরন্তু সাধনভক্তি। এতাদৃশী ভক্তি করণাদি দ্বারা সেবনমাত্র বলিয়া স্বরূপসিন্ধা। এরূপ ভক্তকে গালোক্যাদি মুক্তি প্রদান করিলেও সেবা ব্যতীত উহা গ্রহণ করেন না। যদি গ্রহণ করেন, তবে শ্রীকৃষ্ণসেবার জন্যই গ্রহণ করেন, নিজের জন্য নহে।

স্বরূপসিন্ধা ভক্তি দ্বিবিধা, বৈদী ও রাগাধুগা। বৈদীভক্তি শুদ্ধা বটে, বেহেতু ঐ বৈদী আচরণে রাগাধুগা ভক্তি উৎপন্ন হয়। ভক্তিশাস্ত্রোক্ত বিধি দ্বারা প্রবর্তিতা ভক্তিই বৈদীভক্তি। ঐ বিধি হই প্রকার; একটি প্রবৃত্তিহেতু, অপরটি বিধির অমুক্রম কর্তব্য ও অকর্তব্য সকলের জ্ঞানহেতু। একমনে হরির গুণ সর্সদা কীর্তন, ধ্যান ও পূজা করিবে; ইহা প্রবৃত্তিহেতু। দ্বিতীয় জ্ঞানহেতুটি অর্চন-ব্রতাদিগত। শরণাপত্তি ( অনন্যগতি ) শ্রীকৃষ্ণসেবাদি সংসেবা, শ্রবণ, কীর্তন ও পূজাদি ভেদে বৈদীভক্তির বহু ভেদ দৃষ্ট হয়। বৈদীভক্তি বিধির মুখ্যপেশী। স্তত্রাং উহা হর্সলা। যাহা সতন্ত্ররূপে প্রবর্তিত হয়, তাহা প্রবলা।

অতএব স্বতন্ত্ররূপে প্রবর্তিত প্রবলা ভক্তি যাহা, তাহা বল।

রায় কহিলেন, প্রেমভক্তিই সকলের

শ্রেষ্ঠ সাধ্য ও স্বতন্ত্ররূপে প্রাবর্তিতা প্রাবলা । যেহেতু প্রেমভক্তি শাস্ত্রোক্ত বিধির মুখাপেক্ষী নহে ।

ইহা দুই প্রকার ; রাগাশ্রিকা ও রাগামুগা । বিষয়গণের স্বাভাবিকী বিষয়সংসর্গেচ্ছা অতিশয়ময়ী যে প্রেমা, তাহা যেমন রাগ ; তজ্জপ ভক্তগণের শ্রীকৃষ্ণে স্বাভাবিকী সংসর্গেচ্ছা অতিশয়ময়ী যে প্রেমা, তাহা রাগ নামে উক্ত হয় । বিশেষণ ভেদে সেই রাগ বহু প্রকারে দৃষ্ট হয় । যথা ভাগবতে,—

“যেযামহং প্রিয় আত্মা স্মৃতশ্চ সখা

শুকঃ সূহৃদৌ দৈবমিষ্টমিত্যাদৌ ।”

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, আমি সনকাদির পূরব্রহ্মরূপ, অচ্যুতাদির মধ্যে কাহার ভ্রাতা, কাহার মাতুলের, কাহার বৈবাহিক, শ্রীদামাদির সখা, ব্রজেশ্বরাদির পুত্র, প্রেমসীগণের প্রিয় ইত্যাদিরূপে দারুকাদির দেবতা ও ইষ্ট । এইরূপে রাগ বহু প্রকার । সন্দেহ হইতে পারে, শ্রীমতি মেহিনীর প্রতি মহাদেবের যে ভাব, তাহাও রাগ হউক । অদ্বৈত, অনুল্লেখ্যবশতঃ উহাকে রাগ বলিয়া স্বীকার করা হয় না, যেহেতু দ্বারা দ্বারা মোহিত হইয়া মহাদেবের ঐরূপ ভাব হয় । এইরূপে আমি প্রিয়া, আমি পিতা ইত্যাদি সেই সেই অভিমানে লক্ষণ ভাববিশেষ দ্বারা স্বাভাবিক রাগের শ্রেষ্ঠত্ব প্রতিপাদন হইলে, সেই সেই রাগ কর্তৃক প্রেরিতা শ্রবণকীর্তনাদি প্রায়ঃ নবধা যে ভক্তি ; তাঁহাদের সেই ভক্তিকে রাগাশ্রিকা ভক্তি বলে । যে কৃতি রাগাশ্রিকার অনুগমন করে, তাহা রাগামুগা । কৃতিমাত্র প্রবৃত্তি দ্বারা প্রেমভক্তি লাভ হয়, কিন্তু বিধি বুদ্ধিকে অন্যত্র প্রেরণ করে বলিয়া, উহার প্রেমভক্তিতে প্রবৃত্তি দেখা যায় না । অতএব প্রেমভক্তিতে বৈধী আদরণীয় না হওয়ার, বৈধী হইতে প্রেমভক্তি শ্রেষ্ঠা ।

সন্দেহ হইতে পারে, ধর্মশাস্ত্রোক্ত বিধি ত্যাগ করিতে বলিতেছেন । তাহাতে “চৌদনালক্ষণে-

হর্ষো ধর্ম ।” প্রেরণালক্ষণ প্রেরোক্তনই ধর্ম । এই বাক্যে পূর্বসীমাংগার বিধির দ্বারা ই বিধির অপূর্বত্ব শ্রবণ করা যায় ।

“অপ্রাপ্তপ্রাপকবিধিরপূর্ববিধিঃ ।”

অপ্রাপ্তিতে বাহা প্রাপক, তাহা অপূর্ব বিধি । অনুল্লভৃত বস্তুর অহুল্লভৃত হওয়াতে প্রেরণালক্ষণ বিধি শ্রেষ্ঠ । আরও—

“শ্রুতিস্মৃতিপূরণোক্ত পঞ্চরাত্রবিধিং বিনা ।”

ইত্যাদি বামলেও শ্রুতাস্ত্র ক্রমবিধি ব্যতীত অন্যবিধির দোষ শ্রবণ করা যায় । আরও কথিত আছে,—

“তথা শ্রুতিস্মৃতি মমৈবাজ্ঞে যন্তে উল্লভ্যা বর্ততে ।

আজ্ঞাচ্ছেদী মমদেষৌ মন্তুক্তোহপি ন বৈষ্ণবঃ ॥”

বেদ ও পুরাণে মহত্ব যে বিধি আছে, তাহাকে যে ব্যক্তি লঙ্ঘন করে, সেই আজ্ঞাচ্ছেদী ব্যক্তি আমার দেবী ও আমার ভক্ত হইলেও সে বৈষ্ণব নহে । অতএব শ্রুতিস্মৃতি প্রভৃতিতে কথিত আবশ্যক ও নিষেধের বিধিকে লঙ্ঘন বৈষ্ণবত্বের বাধক হইতেছে অর্থাৎ ধর্মশাস্ত্রোক্ত বিধি না মানিলে, সে বৈষ্ণব নহে । অতএব প্রেরণালক্ষণ বিধি আদরণীয় নহে, কিরূপে সম্ভবে ? আর নিয়মপেক্ষ বিধি দ্বারা ই বা কিরূপে প্রেমভক্তি সিদ্ধ হয় ? তদন্তর, শ্রীকৃষ্ণের নামগুণাদিসকলের বস্তুরক্তি সিদ্ধ ; ধর্মের ন্যায় ভক্তির প্রেরণা সাপেক্ষত্ব নাই । অতএব জ্ঞানাদি ব্যতীতও ভক্তির ফল লাভ বহুস্থানে শুনা যায় । যাহার প্রেমভক্তিতে স্বাভাবিকী প্রবৃত্তি নাই, তাহার প্রবৃত্তির প্রেরণাজন্যই বিধি । ক্রমবিধি ও তদ্বিষয় । সেই নানা বিবেচনাবিশিষ্ট বিধিতে কৃতিমাত্রের প্রবৃত্তি না থাকার, উহা রাগাশ্রিকা ভক্তির সন্দেহ জানেনা । অষ্টমার্গে প্রবেশ এবং ক্রমশঃ চিন্তের একাগ্রতার জন্য মর্যাদারূপ সেই বিধি নির্মিত হইয়াছে । ইহা স্বীকার না করিলে, প্রেমভক্তির সর্বদা শ্রীকৃষ্ণাশ্রুতাকর-তাদৃশ কৃতির, অত্যবশ্যতঃ বিধির মর্যাদার হানি হয় ।

নিরপেক্ষ ভক্তিশাস্ত্রোক্তবিধির রুচিই শ্রীকৃষ্ণের মনোরম রাগাঙ্কিকা ক্রমবিশেষে অভিনিবেশ করায়। এমন কি, হ্রস্বভিসন্ধি দ্বারা রাগাঙ্কিকা ভক্তগণের অম্লকরণ করিলেও তাদৃশ প্রাপ্তি তুলা যায়। পূতনা যেমন ধাত্রীদেব অম্লকরণ করিয়া ধাতৃগতি প্রাপ্ত হইয়াছিল। অতএব ধর্মশাস্ত্রোক্ত বিধি ত্যাগ করিয়া তদীয় রুচিবিশিষ্ট প্রেমভক্তির অম্লঠান দ্বারা ভক্তগণ উত্তমা গতি না পাইবেন কেন? অর্থাৎ প্রাপ্ত হইবেন। গোতমীয়ে, “ন জপো নার্কনং নৈব ধ্যানং নাপি বিধিক্রমঃ। কেবলং সততং কৃষ্ণচরণান্তোজ্জাবিনান্ ॥”

সর্বদা একমাত্র শ্রীকৃষ্ণের পাদপদ্ম চিন্তাশালি জনের জপ, পূজা, ধ্যান ও বিধিক্রম নাই। আব-শ্যক ও নিবেশ বিধির উল্লেখন দুই প্রকার; ধর্মশাস্ত্রোক্ত ও ভক্তিশাস্ত্রোক্ত। ভগবন্তুক্তি বিশ্বাস পূর্বক ধর্মশাস্ত্রোক্ত আবশ্যক ও নিবেশ বিধি ত্যাগ করিলে বৈষ্ণবভাব হইতে ভ্রষ্ট হয় না। যে হেতু ভক্তিশাস্ত্রোক্ত বিধিও একটি বিধি। ভক্তিশাস্ত্রোক্ত বিধি অবশ্য পালনীয়, উহার আচরণে কোন অনিষ্ট হয় না। ভক্তিশাস্ত্রোক্ত বৈদী মিলিত রাগামুগা ভক্তির অম্লঠান কর্তব্য বলিয়া, মহাপ্রভু বৈদীর শুদ্ধতা স্বীকার করিলেন। তাদৃশ রুচি উৎপন্ন হইলে বৈদী অপেক্ষা প্রেমভক্তি শ্রেষ্ঠ। যতদিন তাদৃশ রুচি উৎপন্ন না হয়, ততদিন পর্যন্ত ভক্তিশাস্ত্রোক্ত বিধি অবশ্য পালনীয়। ইতি ভক্তিসন্দর্ভ। অতএব ভাবমার্গের সর্বাপেক্ষা বলবন্ত সিদ্ধান্তিত হইল। এক্ষণে স্বধর্মোচরণ হইতে পর পর কথিত মাধ্য শ্রেষ্ঠ জানিবেন ॥২৫॥

( ৬৬ পা ) “নানোপচারেতি।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। প্রেমভক্তিবিসয়ক প্রমাণ এই শ্লোক। এই শ্লোকের অভিপ্রায় এই,—

বৈদীভক্তি উৎপত্তির পর প্রেমভক্তি উৎপন্ন হয়। বিধিবহিত পূজাদি হইতেও প্রেমভক্তির সৌভাগ্য অধিক। শ্রীকৃষ্ণের উপচার রুত নানা

পূজা পৃথক পৃথক আছে, কিন্তু প্রেম-উপচারে পূজায় ভক্তের হৃদয় আনন্দে বিগলিত হয়। যেহেতু প্রেমে মগ্নতাত্পর আছে। পূজাদিতে শ্রীকৃষ্ণের সন্তোষ হেতু প্রেমই উহার ফল। যতদিন প্রেম উৎপন্ন না হয়, ততদিনই পূজার অম্ল-ঠান; কিন্তু প্রেম লাভ হইলে, আর নানা পূজা-মুঠানের প্রয়োজন হয় না; যেমন সুখায় ভক্ষ্য-পেয় সুখদায়ক হয় ॥ ১০ ॥

( ৬৬ পা ) “কৃষ্ণভক্তীতি।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। এই শ্লোকের অভিপ্রায় এই,—

যদি বল, প্রেম অতি দুর্লভ পদার্থ, তাহাকে কিরূপে লাভ করা যাইতে পারে? শুভ্রতর, সদা-নন্দ শ্রীকৃষ্ণের ভজনরূপ নির্গাম দ্বারা সম্পাদিত সত্তা যে বুদ্ধি, তাহা ক্রয় করিলেই প্রেমলাভ হইবে। এই বুদ্ধির প্রয়োজন কর্তা শ্রীকৃষ্ণ। অতএব ভক্তগণের যে ইহাতে স্ব-স্বধিকামনা নাই, ইহাও প্রতিপন্ন হইল। তাদৃশ বুদ্ধি ক্রয়ের মূল্য বলিতেছেন, প্রেমময় লোভই সেই বুদ্ধির মূল্য। তথাহি রসায়তে;—

“তেষাং ভাবাপ্তয়ে লুক্কো ভবেদ্রাধিকারবান্ ॥”

ব্রজবাসিগণের কোন ভাব প্রাপ্তিবিশয়ে লোভ উৎপন্ন হইলে সেই সেই ভাবে অধিকারী হয়। “মূল্যমপি” এই অপি শব্দে বোধিত হয়, যেমন তাদৃশ বুদ্ধি দুর্লভ, মূল্যও তদ্রূপ দুর্লভ। কেননা, কোটিজন্মসুকৃতি দ্বারা উহা লাভ হয় না ॥ ১১ ॥

( ৬৬ পা ) “প্রভু কহে... ..সর্ব মাধ্যমার ॥” এই ২৬ পয়সারের ভাবার্থ। প্রভু কহিলেন, প্রেমভক্তি মাধ্যম সার তাহাতে আর সন্দেহ নাই, কিন্তু তুমি যে প্রেম বলিলে, উহা সম্বন্ধবর্জিত শাস্ত্র প্রেম। ইহা অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ কি?

প্রেমভক্তিতে বায়টি রস আছে। অন্যথ্যে সাতটি গৌণ রস ও পাঁচটি মূখ্য রস। উনবিংশ



পরিচ্ছেদে সবিশেষ দৃষ্টি করিবেন । মহাপ্রভু প্রেম-  
ভক্তির মধ্যস্থ মূখ্য রসের তারতম্য প্রদর্শনার্থ  
রায়কে অগ্রসর হইতে বলিতেছেন । এই হেতু  
ইহা হইতে শ্রেষ্ঠ কি, তাহা মহাপ্রভু প্রশ্ন করেন ।  
তথাহি শ্রীগ্রন্থে উনবিংশে,—

“শাস্তরতি দাসরতি সখ্যরতি আর ।

বাৎসল্যরতি মধুররতি পঞ্চ প্রকার ॥”

শাস্ত ও দাস্যরতি আশ্রয়ভক্তিময়রস । বাৎসল্য  
ও সখ্যরতি আশ্রয়ভক্তিময়রস । শাস্তপ্রেম জ্ঞান-  
ভক্তিময় রস । কৃষ্ণ ও কৃষ্ণভক্তের রূপায় জ্ঞানি-  
গণ যে রতি লাভ করে, তাহাকে শাস্তরতি বলে ।  
তথাহি রসামৃতে,—

“শাস্তাঃ স্ন্যাঃ কৃষ্ণতৎপ্রেষ্ঠ বাকগোচর রতিঃ গতাঃ ।”

ঐ রসে শ্রীকৃষ্ণ পরব্রহ্মরূপে বা চতুর্ভূজরূপে  
কৃষ্টি প্রাপ্ত হইলেন । ইহাদের অমুভাব, বিভাবাদি  
ভাব উনবিংশ পরিচ্ছেদে দেখিবেন । অতএব  
ইহা শ্রেষ্ঠ প্রেম নহে, ইহা হইতেও শ্রেষ্ঠ প্রেম  
যাহা, তাহা বল । রায় মহাশয় এখানে শাস্তরতির  
কথাই বলিয়াছেন, যেহেতু প্রেমের উত্তরে পরে  
দাস্তরতির কথা বলিবেন ।

রায় কহিলেন, দাস্তভক্তিরই প্রধান ।  
যেহেতু, ইহাতে শ্রীকৃষ্ণ প্রভুস্বরূপে স্কৃষ্টি  
পান ।

দাসভক্তগণ শ্রীকৃষ্ণের অমুশীলনস্বরূপে দ্বিবিধ,  
ঐর্ষ্যৈকজ্ঞানময়ত্ব ও মাধুর্যৈকজ্ঞানময়ত্ব । পুন-  
রায় তাঁহারা অঙ্গসেবক, পার্শ্ব ও প্রেয্য ভেদে  
তিন প্রকার । পুরাণিতে পার্শ্বাদি দাসভক্তগণ  
ঐর্ষ্যৈকজ্ঞানময় । ব্রজে পার্শ্বাদি দাসভক্তগণ  
মাধুর্যৈকজ্ঞানময় ; ইহাদের শ্রীতিভক্তি । অত-  
এব ইহাঁরাই শ্রেষ্ঠ । দাস্তভক্তিময় রসের আলম্বন-  
বিভাবাদি উনবিংশ পরিচ্ছেদে দৃষ্টি করিবেন ॥ ২৬ ॥

( ৬৬ পা ) “যন্নাস্তেতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । দাস্তভক্তি যে শ্রেষ্ঠ, তাহা  
এই শ্লোকে প্রতিপন্ন করিলেন । দাস-

ভক্তগণের অলভ্য কিছু থাকে না বলিয়া,  
উহা শ্রেষ্ঠ । যে রস প্রাপ্ত হইলে সক-  
লই পাওয়া যায় ॥ ১২ ॥

( ৬৭ পা ) “ভবন্তমিতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । দাস্যভাবে কিছু অলভ্য থাকে  
না বলিয়া, ভক্তগণ উহা প্রার্থনা করেন ।  
অতএব উহা শ্রেষ্ঠ । এই শ্লোকেও  
ইহাই প্রতিপন্ন হইল ॥ ১৩ ॥

( ৬৭ পা ) “প্রভু কহে... ..সর্গ  
সাধ্যসার ॥” এই ২৭ পয়ারের ভাবার্থ ।  
প্রভু কহিলেন, দাস্যভক্তিময় রস শ্রেষ্ঠ  
হইলেও, এই রসে শ্রীকৃষ্ণ প্রভুস্বরূপে  
স্কৃষ্টি পান বলিয়া, উহা সর্বোৎকৃষ্ট  
নহে । যেহেতু উহা গৌরবভাবময় রস ।  
গৌরবভাবে দাসভক্তের চিত্ত সঙ্কুচিত  
হয়, যথারূপে ইষ্টগ্রহণ করিতে পারে  
না । ব্রজস্থ পার্শ্বাদি দাসভক্তের রস  
শ্রীতিময় হইলেও, ইহাতে পূর্ণরূপে  
প্রকাশ পান না । অতএব ইহা হইতে  
শ্রেষ্ঠ রস যাহা, তাহা বল ।

রায় কহিলেন, গৌরবভাবময় দাস্যরতি  
হইতে বিশ্বাসভাবময় সখ্যরতি শ্রেষ্ঠ ।

শ্রীতিভক্তি দ্বিবিধা; গৌরবমিশ্রাশ্রীতি ও  
গুহ্মাশ্রীতি । ব্রজস্থ দাসগণের গৌরবমিশ্রাশ্রীতি ।  
সখ্যগণের গুহ্মাশ্রীতি । সখ্যগণের চিত্তে গৌরব-  
ভাব না থাকার এবং তাঁহাদের গুহ্মাশ্রীতি সর্কার  
না হওয়ার পূর্ণরূপে বা স্বভাববিশেষ দ্বারা উহাদের  
শ্রীতি প্রতিকণই বিকাশিত হয় । সখ্যগণের  
সম্বন্ধে শ্রীকৃষ্ণের রূপ, গুণ, লীলামাধুর্যের যেরূপ  
অসাধারণী স্কৃষ্টি হয়, দাসভক্তে সেরূপ স্কৃষ্টি হয়  
না । অতএব সখ্যরতি শ্রেষ্ঠ । বৈকীম্বর রসে  
শ্রীকৃষ্ণ-বিভাবরূপে স্কৃষ্টি পান । বৈকীম্বর রস

দুই প্রকার, স্বল্প ও সখ্য। রায় মহাশয় এখানে ব্রজহ সখ্যর কথাই বলিলেন। সখ্যরতির আলম্বন বিভাবাদি উনবিংশ পরিচ্ছেদে দ্রষ্টব্য ॥২৭॥

( ৬৭ পা ) "ইধমিতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। সখ্য-প্রেম যে শ্রেষ্ঠ, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক। এই শ্লোকের অভিপ্রায় এই,—

ভগবান্ ব্রহ্মস্বরূপে, পরদেবতা ( প্রভূস্বরূপে ) ও সখ্যরূপে যে প্রকাশ পান, তন্মধ্যে সখ্যরূপে প্রকাশই পূর্ণ। শ্রীকৃষ্ণের কৃষ্ণাবিশেষ-অবলম্বন সখ্যগণের নিকট পরম মধুরভারূপে শ্রীকৃষ্ণ প্রকাশ পান। অতএব উহা শ্রেষ্ঠ ॥ ১৪ ॥

( ৬৭ পা ) "প্রভু কহে... .. সর্ক সাধ্যসার। এই ২৮ পয়ারের ভাবার্থ। প্রভু কহিলেন, শুদ্ধপ্রীতিময় সখ্যপ্রেম যে উৎকৃষ্ট তাহাতে আর সন্দেহ নাই। ঐ রসে শ্রীকৃষ্ণ কখন চতুর্ভুজরূপে, কখন দ্বিভুজ নরাকাররূপে প্রতীত করেন। অর্ধজুন চতুর্ভুজরূপ দেখিয়া বলিয়াছিলেন, হে জনার্দন, তোমার নরাকার দ্বিভুজরূপই সাম্য; সুতরাং দ্বিভুজরূপই শ্রেষ্ঠ। শুদ্ধ প্রীতিময় সখ্যপ্রেম উৎকৃষ্ট হইলেও শুদ্ধ প্রীতির পরিপাক অবস্থা যদি থাকে, তাহা বর্ণন কর।

রায় কহিলেন, শুদ্ধপ্রীতিপ্রচুর-বিখাগ-ভাবময় সখ্যপ্রেম হইতে অনু-প্রাছভাবময় বাৎসল্যপ্রেম শ্রেষ্ঠ। ইহাতে শ্রীকৃষ্ণ লাল্যস্বরূপে স্ফুর্তি পান। পিত্রাদি-গুরুগণই এই রসের আশ্রয়।

এই রস দুই প্রকার; উক্ত্যাদিমিশ্র ও শুদ্ধ। বহুদেব, লেবকী ও কুতী প্রভৃতি উক্ত্যাদিমিশ্র। ইন্দ, যশোদা ও তৎসমভাবাপন্ন অন্য গোপ-গোপীগণ ও কৃষ্ণ। রায় মহাশয়, এখানে নন্দ-

যশোদার বাৎসল্যপ্রেমের উল্লেখ করিলেন। যেহেতু পর শ্লোক দুইটি দ্বারা নন্দযশোদারির বাৎসল্যরতিকে প্রমাণিত করিবেন ॥২৮॥

( ৬৭ পা ) "নন্দরিতি । এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। বাৎসল্য প্রেম সর্কশ্রেষ্ঠ, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক। ইহাতে শ্রীকৃষ্ণ লাল্যরূপে বন্দী-ভূত হইলেন এবং স্তম্ভপানাদি করেন ॥১৫॥

( ৬৭ পা ) "নেমমিতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। এই শ্লোকও বাৎসল্যপ্রেম পর।

"নন্দ: কিমকরোদিতি।" শ্লোকের তাত্ত্বিক-সিদ্ধান্ত বলিতেছেন, "নেমমিতি।" মহাভক্তিরূপ প্রেমপরিপাক প্রসাদ যশোদা যাহা পাইলেন, ভক্তাদিগুরু ব্রহ্মা, বৈষ্ণবগণের পৃষ্টান্তস্বরূপ মহা-দেব, বন্ধুহিতা নিত্যপ্রিয়া লক্ষ্মীও ঐ প্রসাদ পান নাই। সখ্যভক্তিরসবিশিষ্টা লক্ষ্মী ও দাস্তভক্তি-ময় ব্রহ্মা এবং মহাদেব যখন ঐ প্রসাদ প্রাপ্ত করেন নাই, তখন উহা যে শ্রেষ্ঠ প্রসাদ, তাহাতে আর কোন সন্দেহ নাই। যশোদাই কৃষ্ণকে বন্ধন করেন, ব্রহ্মাদি কেহই পারেন নাই; এই প্রসাদ। যশোদা বাৎসল্য প্রেমে ঐ প্রসাদ লাভ করার দাস্ত ও সখ্য হইতে বাৎসল্যরস শ্রেষ্ঠ হইতেছে। অতএব অনুগ্রাহ্যভাবময় বাৎসল্য প্রেমই শ্রেষ্ঠ। এই রসের আলম্বন বিভাবাদি উনবিংশ পরিচ্ছেদে দেখিবেন ॥ ১৬ ॥

( ৬৭ পা ) "প্রভু কহে... .. সর্ক সাধ্যসার ॥" এই ২৯ পয়ারের ভাবার্থ। প্রভু কহিলেন, এহোত্তর অর্থাৎ বাৎসল্য প্রেম সর্কোৎকৃষ্ট। আগে কহ আর অর্থাৎ এই প্রেমের যদি আর কিছু পরি-পাক অবস্থা থাকে, তবে তাহা বল।

রায় কহিলেন, অনুগ্রাহ্যভাবময়

বাৎসল্যপ্রেম হইতে স্বসুখতাৎপর্যরহিত সন্তোগ ভাবময় কান্তাপ্রেমই সর্বোৎকৃষ্ট । ইহাতে শ্রীকৃষ্ণ কান্তরূপে স্ফুর্তি পান । কান্তাগণই এই রসের আশ্রয় ।

কান্তাগণ তিন প্রকার ; সামাচ্ছা, স্বীয়া ও পরকীয়া । সৈরিদ্ধী প্রভৃতি সামাচ্ছা । পট্ট-সহীগণ স্বীয়া, তন্মধ্যে কাম্বীগী ও সত্যভামা মুখ্যা । শ্রীব্রজদেবীগণ পরকীয়া, ইহারাই সর্বশ্রেষ্ঠা কান্তা । এই রসের আলষনাদি উনবিংশ পরিচ্ছেদে দেখিবেন । ললিতা বিশাখা প্রভৃতি ব্রজদেবীগণ ত্রিবিধা ; মুগ্ধা, মধা ও অগল্ভা । মুগ্ধাদিগণ মধ্যে কেহ নবযৌবন, কেহ স্পষ্টযৌবন, কেহ সমাগ্যযৌবন ; তন্তুজ্ঞপে বয়সভেদাদি দ্বারা তাঁহাদের চেষ্ঠাও বিভিন্ন । দীরা, অদীরা ও দীরাদীরা ভেদে স্বভাব তিন প্রকার । প্রেমের ভারতম্য বশতঃ কেহ শ্রেষ্ঠা, কেহ সমা, কেহ লঘী । দীলার অবস্থা ভেদে কেহ অভিসারিকা, কেহ বাসকসজ্জা, কেহ উৎকণ্ঠিতা, ষণ্ডিতা, বিপ্রলক্ষা, কলহাস্তরিতা, প্রোষিততর্কণ ও স্বাধীনতর্কণ । উহাদের ভাবের চারি প্রকার ভেদ দেখা যায় ; সাদৃশ্য, কিঞ্চিৎসাদৃশ্য, অক্ষুট-সাদৃশ্য ও বিরোধিত্ব । উহার প্রত্যেকটি আবার চারি প্রকার ; সখী, স্নহৎ, তটহা, ও প্রাতি-পক্ষিকী । ইতি শ্রীভিগন্দর্ভ । জিজ্ঞাসা থাকিলে সন্দর্ভ দেখিবেন । গ্রন্থবাহুল্যভয়ে বিস্তার করা হইল না । রায় মহাশয় প্রঙ্গের উত্তরে পরকীয়া ভাবাপন্ন-কান্তাগণের কথা বলেন । যেহেতু “নায়মিতি” শ্লোক দ্বারা ব্রজদেবীগণের কান্তা-প্রেমের সর্বশ্রেষ্ঠত্ব প্রতিপাদন করিতেছেন । অতএব কান্তাপ্রেমই সর্বোৎকৃষ্ট ॥ ১৯ ॥

( ৬৮ পা ) “নায়মিতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ॥ সর্বোৎকৃষ্ট কান্তাপ্রেম প্রমাণ পব এই শ্লোক । ইহান্ন অভিপ্রায় এই,

রাসোৎসবে শ্রীকৃষ্ণ হইতে ভূজাঙ্গিনরূপ প্রসাদ, ব্রজদেবীগণ যে প্রাপ্ত হন, সেই প্রসাদ বীরাভাবাপন্ন লক্ষ্মীদেবী প্রাপ্ত হন নাই । কারণ, লক্ষ্মীদেবী রাসে প্রবেশ করিতে পারেন নাই । ভূজাঙ্গিনরূপ প্রসাদটি প্রেমের পরিপাক, অবস্থা । অতএব কান্তাভাব সর্বোৎকৃষ্ট রস ॥ ১৭ ॥

( ৬৮ পা ) “তামামিতি ।” এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৭৩ পৃষ্ঠায় দেখিবেন । এই শ্লোকের অভিপ্রায়, ব্রজদেবীনিষ্ঠ কান্তাপ্রেম সর্বশ্রেষ্ঠ বলিয়া শ্রীকৃষ্ণ বীরা কান্তাগণকে ত্যাগ করিয়াও ব্রজদেবীর নিকট গমন করেন । “শৌরিঃ” অর্থাৎ প্রাকৃত-জন্মরহিত শ্রীকৃষ্ণ শূরবংশে ( ক্ষত্রিয়বংশে ) প্রকট হইয়াও কান্তাভাবাপন্ন ক্ষত্রিয়রমণীগণকে ত্যাগ করিয়া ব্রজপ্রেমে মুগ্ধ হওতঃ “তামাম্” অর্থাৎ ব্রজদেবীগণের মধ্যে অপূর্বরূপে প্রকট হইয়া ছিলেন । যেহেতু ব্রজদেবীনিষ্ঠ কান্তাপ্রেমের রস অপূর্ব ও সর্বোৎকৃষ্ট । “গোপ্যস্তপঃ কিমচরন্” ইত্যাদি শ্লোকেও ব্রজদেবীগণের প্রেমের বিশেষত্ব কথিত আছে । অতএব ইহাদের প্রেমই সর্বাধিক । “স্মরমানমুখাঘ্ৰজঃ” অর্থাৎ সহাস্তমুখপন্ন । ব্রজদেবীগণকে যে ত্যাগ করেন, তাহা ত্যাগ নহে, পরিহাসমাত্র ; ইহা জানাইতে এবং তাঁহাদের আমার প্রতি প্রসন্ন হউন, এই অভিপ্রায়ে শ্রীকৃষ্ণ হাস্য করেন । ব্রজদেবীগণকে ত্যাগ করায় শ্রীকৃষ্ণের চিন্ত সঙ্কুচিত হয় বলিয়া, তাঁহাদের প্রসন্নতা লাভে, মন্তক পর্য্যন্ত পীতবস্ত্র ধারণ ( আবরণ ) করেন । ইহাই “পীতাম্বরধর” শব্দের অভিপ্রায় । “শ্রবী” শব্দের অভিপ্রায় এই,— ব্রজদেবীগণ ব্যতীত অশ্রু রমণী শ্রীকৃষ্ণের রুচিকর নহে, ইহা জানাইতে, ব্রজদেবী কর্তৃক প্রণীত বনমালা ধারণ করেন । শ্রীকৃষ্ণ ব্রজদেবীগণের প্রতি যেরূপ আচরণ করেন, অন্ত কান্তাগণের প্রতি সেরূপ আচরণ করেন না । অতএব ব্রজদেবীনিষ্ঠ কান্তাপ্রেম সর্বশ্রেষ্ঠ ॥ ১৮ ॥

( ৬৮ পা ) “কৃষ্ণপ্রাপ্তির... ..তার-  
তম ॥” এই ৩০ পয়ারের ভাবার্থ।

যদি বল, কান্ত্যাত্মক সর্কোৎকৃষ্ট হইলে, অত্যান্য  
ভাব সাধনে কি শ্রীকৃষ্ণপ্রাপ্তি হয় না, বা অপর  
ভাবগণ কি শ্রেষ্ঠ নহে? তদ্বত্তরে বলিতেছেন,  
“কৃষ্ণপ্রাপ্তির।” ইতি।

কৃষ্ণ-প্রাপ্তির সাধন বহুপ্রকার; অত-  
এব সাধন অনুসারে কৃষ্ণপ্রাপ্তির তার-  
তম্যও বহু প্রকার। যাহার যে ভাবে  
নিষ্ঠা, তাঁহার সম্বন্ধে, তাঁহার সেই ভাবই  
সর্কোৎকৃষ্ট, কিন্তু তটস্থ (নিরপেক্ষ)  
হইয়া বিচার করিলে, ভাব সকলের  
তারতম্য স্বীকার না করিয়া পারা যায়  
না ॥ তদনুসারে কান্ত্যাত্মকসর্কোৎকৃষ্ট  
বলিতে হয় ॥ ৩০ ॥

( ৬৮ পা ) “যথোত্তরমিতি।” এই  
শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৪০  
পৃষ্ঠায় ও তাৎপর্য্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ১৬১  
পৃষ্ঠায় দেখিবেন। বিচারে শৃঙ্গাররস-  
ময় কান্ত্যাত্মক যে শ্রেষ্ঠ, রায় তাহা এই  
শ্লোকে প্রমাণ করিলেন ॥ ১৯ ॥

( ৬৮ পা ) “পূর্ক পূর্ক... .. কহে  
ভাগবতে ॥” এই ৩১ ও ৩২ পয়ারের  
ভাবার্থ। “যথোত্তরমিতি।” শ্লোকের  
অর্থ করিতেছেন. “পূর্ক পূর্ক” ইতি।  
পূর্ক পূর্ক রসের, শাস্তদাস্যাদিরসের।  
পরে পরে, দাস্যদাস্যাদিরসে। গুণ ও  
আস্বাদনের আধিক্যবশতঃ কান্ত্যাত্মক  
শাস্তাদি সকল প্রেম ইহিতে শ্রেষ্ঠ।  
যেমন আকাশের শব্দগুণ বায়ুতে।  
আকাশ ও বায়ুর শব্দ ও স্পর্শগুণ  
ভেদে। আকাশ, বায়ু ও তেজের শব্দ

স্পর্শ ও রূপগুণ জলে। আকাশ, বায়ু,  
তেজ ও জলের শব্দ, স্পর্শ, রূপ ও রস  
গুণ পৃথিবীতে দৃষ্ট হয়; তদ্রূপ শাস্তের  
কৃষ্ণনিষ্ঠাগুণ দাস্যে। শাস্ত ও দাস্যের  
নিষ্ঠা ও সেবাগুণ সখে। শাস্ত, দাস্য  
ও সখের নিষ্ঠা, সেবা ও অসঙ্কোচ গুণ  
বাৎসল্যে। শাস্ত, দাস্য, সখ্য বাৎ-  
সল্যের নিষ্ঠা, সেবা, অসঙ্কোচ ও সমতা-  
ধিক্যগুণ কান্ত্যাত্মক দৃষ্ট হইয়া থাকে।  
আরও কান্ত্যাত্মক নিজস্ব দ্বারা সেবা-  
রূপ গুণটি অধিক দেখা যায়; এই গুণটি  
শাস্তাদিতে নাই।

গুণের আধিক্য হেতু প্রতি রসে পর পর  
আস্বাদনেরও আধিক্য হয়। মধুররস সর্কোৎকৃষ্ট  
আকর (খনি) বলিয়া, উহা সর্কোৎকৃষ্ট  
মধুররসে স্বামীভাব উত্তরোত্তর বৃদ্ধি পাইয়া  
ভাবাবস্থা পর্য্যন্ত প্রাপ্ত হয়। অতএব এই  
সীমাস্ত-প্রাপ্ত কান্ত্যাত্মক দ্বারাই পরিপূর্ণরূপে  
কৃষ্ণপ্রাপ্তি স্বীকৃত হইয়া থাকে। এই জন্যই  
শ্রীকৃষ্ণ একমাত্র কান্ত্যাত্মকই বশতঃ স্বীকার  
করিয়া থাকেন। এ সম্বন্ধে শ্রীভাগবতেও যথেষ্ট  
প্রমাণ আছে এবং কান্ত্যাত্মক সর্কোৎকৃষ্ট  
স্বীকার করিয়াছেন; তাহা পরশ্লোক দ্বারা প্রমাণ  
করিতেছেন ॥ ৩১/৩২ ॥

( ৬৯ পা ) “ময়ি ভক্তিগীতি।” এই  
শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৩৮  
পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য্য ভাবার্থ ব্যাখ্যায়  
১৪২ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। কান্ত্যাত্মক  
সর্কোৎকৃষ্ট এবং শ্রীকৃষ্ণ একমাত্র এই  
প্রেমেরই অধীন; ভাগবতোক্ত এই  
শ্লোক দ্বারা তাহার প্রমাণ করিলেন ॥ ২০

( ৬৮ পা ) “কৃষ্ণের ... .. ভেদে  
তৈছে ॥” এই ৩৩ পয়ারের ভাবার্থ

সরল । রায় মহাশয়, অল্প প্রকারে  
কাস্তাপ্রেমের সর্বোৎকৃষ্টতা প্রতিপাদন  
করিতেছেন, “কৃষ্ণের” ইতি । কৃষ্ণের  
প্রতিজ্ঞা কি, তাহা বলিতেছেন, “সে  
আমারে” ইতি । পূর্ক হইতে, কুরু-  
ক্ষেত্রের যুদ্ধ সময় হইতে । পর শ্লোকে  
কৃষ্ণের প্রতিজ্ঞা প্রমাণ করিতেছেন ॥ ৩ ॥

( ৬৮ পা ) “যে যথেন্তি ।” এই  
শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৩৭  
পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য ভাবার্থ ব্যাখ্যায়  
১৪০ পৃষ্ঠায় দেখিবেন । শ্রীকৃষ্ণ এই  
শ্লোক বলিয়া যুদ্ধকালে অর্জুনের নিকট  
প্রতিজ্ঞা করেন ॥ ২১ ॥

( ৬৮ পা ) “এই প্রেমার ... ..  
ভাগবতে ॥” এই ৩৪ পয়ারের ভাবার্থ ।  
এই প্রেমার, কাস্তাপ্রেমের ।

অল্প সাধনামুরূপ ভজন শ্রীকৃষ্ণ করিতে  
পারেন, কিন্তু কাস্তাপ্রেম সর্বোৎকৃষ্ট বলিয়া ব্রহ-  
দেবীনিষ্ঠকাস্তাপ্রেমের অমুরূপ ভজন না হওয়াতে  
শ্রীকৃষ্ণ ঋণী হইলেন । ভাগবতে শ্রীকৃষ্ণ ঋণই এ  
কথা স্বীকার করিয়াছেন । অমুরূপভজন, গোপী-  
গণ যেমন সকল ত্যাগ করিয়া কৃষ্ণনিষ্ঠ হইলেন ;  
শ্রীকৃষ্ণ উরূপ সকল ত্যাগ করিয়া এক সংখ্যক  
গোপীনিষ্ঠ হন নাই ॥ ৩৪ ॥

( ৬৮ পা ) “ন পারয় ইতি ।” এই  
শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৫২  
পৃষ্ঠায় দেখিবেন । “এই প্রেমার” পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক ।

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, যে গোপীগণ, তোমাদের  
প্রেমের অমুরূপ ভজন আমি বহুকালেও করিতে  
পারিব না । কামমরুরূপে প্রতীয়মান হইলেও  
বস্তুতঃ নির্মাণপ্রেমবিশেষমরুরূপ ধারা নির্মাণ যে,  
ঋণিবদিকা তোমাদের চিত্তের একাগ্রতা এবং

কুলবধূগণ যাঁহা ত্যাগ করিতে পারে না ; সেই  
দুর্জয় গৃহশৃঙ্খল অর্থাৎ গৃহসংস্কৃতী ঐহিক,  
পারলৌকিক সুখকর লোক ও ধর্মমতাদিকে  
তোমরা নিঃশেষে ছেদন করিয়া পরম অমুরূপ  
ধারা আমাতে আত্মনিবেশন করিয়াছ । এই  
অসাধারণ সাধুকর্মের, সদৃশ প্রত্যুপকার করিতে  
আমি সমর্থ হইব না । “ভজনামুরূপ ভজন করিব”  
আমার এই প্রতিজ্ঞাকে তোমাদের প্রেম ভঙ্গ  
করিল । আমার চিত্ত বহুতে প্রেমবৃত্ত-ধাকার,  
একনিষ্ঠ হয় নাই ; তজ্জন্য তোমাদের প্রেমের  
অমুরূপ ভজন হইল না । অতএব এই প্রেমার  
নিকট আমি ঋণী রহিলাম । কোন পনকর্তা বলেন,  
“ওন, রাই বিনোদিনী, আমি সে তোমার ঋণী,  
তুয়া ঋণ নারিছ শোধিতে ।

শুধিতে তোমার ধার, মনে করি কতবার,  
পুনঃ আরবার হ’ল জনমিতে ॥  
কলমে পুরিয়া কাপী, কলিলা কাগজ করি,  
ধত দিহু নিজ হাতে লিখিয়া ।  
ধত রইল তব হাতে, ধাতক কৈলা নন্দমুতে,  
ধালাস হব তুয়া গুণ গাঠিয়া ॥  
ধত ছাড়াইতে যদি, ধন নাহি দেয় বিধি,  
যাজ লাগি কি বুদ্ধি করিব ।  
জয় রাধে শ্রীরাধে বলি, লোটায় মাখিব ধূলি,  
ইহা বই আর না পারিব ॥ ইত্যাদি ॥”

এই কাস্তাপ্রমে কাম, কর্ম, লোক ও ধর্মাদি  
শাস্তাদির কোন অপেক্ষা নাই । যেহেতু, উহা  
নিরূপাধিক অর্থাৎ স্নহুখতাৎপর্যরহিত । অতএব  
ব্রহদেবীনিষ্ঠকাস্তাপ্রেমের নিকট শ্রীকৃষ্ণ ঋণী  
এবং উহা নিরূপাধিক হওয়াতে, এই প্রেমই  
সর্বশ্রেষ্ঠ, ইহা সিদ্ধ হইল ॥ ২২ ॥

( ৬৯ পা ) “যদ্যপি ... .. মাধুর্য ॥”  
এই ৩৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল । রায়  
মহাশয় তাদৃশ গোপীগণের শ্রেষ্ঠত্ব প্রতি-  
পন্ন করিতেছেন, “যদ্যপি” ইতি । ধূর্য,

আশ্রয়। যদিও শ্রীকৃষ্ণ অপরিণীত গৌন্দর্য্য ও মাধুর্য্যের আশ্রয়, তথাপি ভাবের অধিকারিণী ব্রজদেবীগণের গণ্ডে তাঁহার মধুরতা অধিকতররূপে প্রকাশ পায় ॥৩৫॥

( ৩১ পা ) তত্রাতীতি ।\* এই শ্লোকের তাৎপর্য্য। “যদ্যপি” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ।

দেবকীমুত বলিতে যশোদাপুত্র শ্রীকৃষ্ণ ; তথাহি বৃষ্ণিকুপুরাণে,—

“যে নারী নন্দভাৰ্য্যা যশোদাদেবকীতি চ ।

অতঃ সধ্যমতুস্তা দেবক্যা শৌরিজায়মা ॥”

যশোদা ও দেবকী নামে নন্দপত্নীর দুইটা নাম। এই হেতু বসুদেবপত্নী দেবকীর সহিত যশোদার সখ্য ভাব হয়। শ্রীকৃষ্ণ সৰ্বসৌন্দর্য্য ও ও সৰ্বশোভাসম্পন্ন হইলেও রাসমণ্ডলে গোপীগণ দ্বারা অধিকতররূপে শোভা পাইতে লাগিলেন। মণ্ডলমধ্যস্থ শ্রীকৃষ্ণকে এক জানিবেন। অন্য মুক্তি সকল তাঁহার প্রকাশ। এক শ্রীকৃষ্ণই শ্রীরাধাকে সঙ্গে লইয়া বেণুদান পূৰ্ব্বক ভ্রমণ করিতে করিতে সৰ্বরাসমণ্ডলকে মণ্ডন করিয়া ছিলেন। শ্রীকৃষ্ণ সৰ্বসৌন্দর্য্য মাধুর্য্যের আশ্রয় হইলেও, গোপীগণ দ্বারা তাঁহার শোভাতিশয় সাধন করিতেছেন, “মধ্যে” ইতি। স্বর্ণময়মণিগণের মধ্যে যেমন ইন্দ্রনীলমণি অত্যধিকরূপে শোভা পায়, তজ্ঞ স্বর্ণময়মণি স্বরূপা গোপীগণ মধ্যে শ্রীকৃষ্ণ অত্যধিকরূপে শোভা পান। গোপীগণের অঙ্গকাঙ্ক্ষির ছটার সম্পর্ক বশতঃ শ্রীকৃষ্ণ অনতিশ্রামল মরকতমণির বর্ণতা প্রাপ্ত হন বলিয়া, মহামরকত বলিলেন। গোপীগণ দ্বারা শ্রীকৃষ্ণের সৰ্বসৌন্দর্য্য মাধুর্য্যের বৃদ্ধি হয় বলিয়া গোপীগণ সৰ্বশ্রেষ্ঠ। তন্নিষ্ঠ কাঙ্ক্ষাপ্রেমও সৰ্ব শ্রেষ্ঠ ॥ ২৩ ॥

( ৩১ পা ) “প্রভু কহে ... ..

বাখানি ॥” এই ৩৬ পয়ারের ভাবার্থ। প্রভু কহিলেন, ব্রজদেবীনিষ্ঠকাঙ্ক্ষাপ্রেমই

যে শ্রেষ্ঠ মাধ্য, ইহা নিশ্চয়। ইহার পর যদি আরও কিছু থাকে, কৃপা করিয়া তাহাও বল। রায় কহিলেন, ইহার পরও প্রেম করেন, এমন লোক পৃথিবীতে আছেন, এতদিন আমি জানিতাম না। ইহার মধ্যে, ব্রজদেবীগণের মধ্যে। শ্রীরাধার প্রেমই মাধুর্য্য শিরোমণি (শ্রেষ্ঠ), ইহা সৰ্বশাস্ত্র সম্মত।

থক্বেদে উক্ত হইয়াছে,—

“রাধয়া মাধবো দেবো মাধবেনৈব রাধিকা

বিভ্রাজন্তে জনেধা ॥”

শ্রীমাধব শ্রীরাধার সহিত ও শ্রীরাধা শ্রীমাধবের সহিত সকল লোকেই বিরাজিত আছেন ॥ ৩৬ ॥

( ৩১ পা ) “যথা রাধাপ্রিয়েতি ।”

এই শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৫৫ পৃষ্ঠায় দেখুন। ব্রজদেবীগণের মধ্যে শ্রীরাধাই শ্রেষ্ঠা তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥২৪

( ৩১ পা ) “অনয়েতি ।” এই শ্লোকের

টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৪৪ পৃষ্ঠায় দেখুন। ব্রজদেবীগণের মধ্যে শ্রীরাধাপ্রেমই মাধ্যশিরোমণি, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥২৫॥

( ৩১ পা ) “প্রভু, কহে ... .. বিলাপ করিঞা ॥” এই ৩৭ ও ৩৮ পয়ারের ভাবার্থ। প্রভু কহিলেন, রায় আরও বল, ইহা শুনিয়া আগার বিশেষ স্নেহোদয় হইতেছে। তোমার মুখে অপূৰ্ব্ব অমৃতময় নদী অর্থাৎ অপ্রাকৃত রস প্রবাহিত হইতেছে। শ্রীকৃষ্ণ গোপীগণের ভয়ে শ্রীরাধাকে সৰ্ব সমক্ষে লইতে না পারিয়া গোপনে লইয়া যান। ইহাতে জানা গেল, শ্রীকৃষ্ণের অত গোপীতে অপেক্ষা আছে ; স্নেহাপেক্ষা থাকিলে প্রেমের

গাঢ়তা প্রকাশ পায় না। রাধা লাগি, রাধার জন্ম। গোপীরে, গোপীগণকে। গাঢ় অনুরাগ, গাঢ় প্রেম। অতএব এই বিষয়ের মীমাংসা কি বল? রায় কহিলেন, ত্রিজগতে রাধাপ্রেমের উপমা নাই। শ্রীকৃষ্ণ অত্র গোপীর অপেক্ষায় শ্রীরাধাকে লইয়া যান নাই। শ্রীরাধাই মান করিয়া রাস ত্যাগ করেন। শ্রীরাধা রাস ত্যাগ করিলে, পশ্চাৎ শ্রীকৃষ্ণও রাসমণ্ডল ছাড়িয়া শ্রীরাধার অন্বেষণার্থ গমন করেন।

শ্রীকৃষ্ণের কান্তাগণ সাধারণী, সমঞ্জস ও সমর্থ ভেদে ত্রিবিধ। ইহাদের কান্তাভাব স্থায়ী। সাধারণীর কান্তাভাব সন্তোষেচ্ছানিদান। সমঞ্জসার কান্তাভাব কচিংভেদিত-সন্তোষেচ্ছা। সমর্থার কান্তাভাব স্বরূপাভিন্ন-সন্তোষেচ্ছা। সন্তোষেচ্ছা যে কান্তাভাবের মূল তাহাকেই সন্তোষেচ্ছানিদান-কান্তাভাব বলে। সন্তোষেচ্ছা যে কান্তাভাবে কখন কখন ভিন্নরূপে প্রকাশ পায়, তাহার নাম কচিং সন্তোষেচ্ছা। যে কান্তাভাবে সন্তোষেচ্ছা নিতাই স্বরূপের সহিত অভেদে প্রকাশ পায়, তাহার নাম স্বরূপাভিন্ন-সন্তোষেচ্ছা কান্তাভাব। কুন্ডাদি সাধারণী বা সামান্যাকান্তা; মহিবীগণ সমঞ্জসা কান্তা ও ব্রজদেবীগণ সমর্থাকান্তা। সাধারণীকান্তাগণের বলবতী সন্তোষেচ্ছা, সকল সময়েই কৃষ্ণসুখতাৎপর্যময় প্রেম হইতে ভিন্ন আকারে কৃষ্ণাঙ্গ-সঙ্গজন্য অসুখবাসনারূপে প্রকাশ পাইয়া থাকে। সাধারণী কান্তাগণ পরূপতঃ অসুখ-তাৎপর্যবর্জিত হইলেও তাঁহাদের প্রেম কৃষ্ণসঙ্গজন্য অসুখ-বাসনার আকারে আকরিত হইয়া প্রকাশ পাওয়াতে উহার কৃষ্ণসুখতাৎপর্যময় স্বরূপের প্রকাশ থাকে না, অসুখ-তাৎপর্যময় রূপান্তরই লক্ষিত হয়। সমঞ্জসা কান্তাগণের ঐ সন্তোষেচ্ছা কখন কৃষ্ণাঙ্গ সঙ্গজন্য অসুখবাসনার

আকারে উৎখিত হইয়া সাধারণীর ন্যায় স্বরূপ হইতে ভিন্নরূপে এবং কখন কেবল কৃষ্ণসুখতাৎপর্যময় প্রেমের সহিত একীভূত হইয়া উক্ত প্রেমের অন্তর্ভূত হইয়া সমর্থার ন্যায় স্বরূপাভিন্নরূপেই প্রকাশ পায়। সমর্থ ব্রজদেবীগণের সন্তোষেচ্ছা সর্বদা কৃষ্ণসুখতাৎপর্যময়ী। তাঁহাদের সন্তোষেচ্ছা কখনই কৃষ্ণাঙ্গসঙ্গজন্য অসুখবাসনারূপে উৎখিত হয় না। ব্রজদেবীগণের কৃষ্ণসুখ ভিন্ন নিজসুখের অঙ্গসঙ্গানই থাকে না। তাঁহাদের নিজসুখের অঙ্গসঙ্গান না থাকাতাই, তাঁহাদের সন্তোষেচ্ছা শুদ্ধ এবং কৃষ্ণসুখতাৎপর্যে পর্যাবসিত হইয়া কৃষ্ণসুখতাৎপর্যের সহিত সম্পূর্ণ একীভূত হইয়া যায়। তজ্জন্য ব্রজদেবীগণের কান্তাভাবকে শ্রেষ্ঠ বলা যায়। সাধারণ ব্রজদেবীগণের প্রেম হইতে আবার শ্রীরাধাপ্রেমের বিশেষ উৎকর্ষ আছে। সাধারণ ব্রজদেবীগণ শ্রীকৃষ্ণকে ও অঙ্গসঙ্গ পাইয়া আর কোনদিকে চান না, আনন্দে বিভোর হইয়া যান। শ্রীরাধা কিন্তু সেরূপ বিভোর হন না। এই হেতু শ্রীকৃষ্ণ গোপীগণকে সাক্ষাৎ ত্যাগ করিয়া শ্রীরাধার অন্বেষণে গমন করিলেন ॥ ৩৭।৩৮ ॥

( ৬৯ পা ) “কংসারিরিতি।” এই শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৫৬ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। “শতকোটি” ইতি পর পরায়ের এই শ্লোকার্থের তাৎপর্যার্থ দেখিবেন ॥ ২৬ ॥

( ৬৯ পা ) “ইতস্ততস্তামিতি।” এই শ্লোকের তাৎপর্য পর পরায়ের প্রকাশ আছে। “রাধা চাহি বনে” ইতি পূর্ব পরায় প্রমাণ শ্লোক ॥ ২৭ ॥

( ৭০ পা ) “এই দুই... বামতা ॥” এই ৩৯ পরায়ের ভাবার্থ। এই দুই শ্লোকের পূর্বোক্ত দুই শ্লোকের। “কংসারিরিতি।” শ্লোকের অর্থ বলিতেছেন,

‘শতকোটি’ ইতি । শ্রীকৃষ্ণ শতকোটি গোপীগণে শতকোটি প্রকাশ মূর্তি ধারণ করিয়া রাস বিলাস করেন । রাধাপাশ, রাধার নিকট অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং শ্রীরাধার সহিত গোপীগণের মণ্ডল মধ্যে থাকিয়া প্রতি গোপীর নিকট এক এক মূর্তি প্রকাশ করেন । ইহাই প্রকাশমূর্তি ।

কেহ বলেন, “গোপীবর্ষপণ ইব” গোপীগণের দেহ দর্পণের স্থায় ; অতএব গোপীমণ্ডলের মধ্যে শ্রীরাধার সহিত শ্রীকৃষ্ণ বর্তমান থাকায়, উহাদের দেহে শ্রীকৃষ্ণের প্রতিমূর্তি যে দেখা যায়, তাহাই প্রকাশ । দর্পণতুল্য গোপীদেহে শ্রীরাধাকৃষ্ণের উভয় মূর্তিই প্রাকৃতিক হইলেও শ্রীরাধা একমাত্র শ্রীকৃষ্ণেরই প্রতিমূর্তি দর্শন করেন ; নিজের প্রতিমূর্তি দেখিতে পান নাই । যেহেতু শ্রীরাধার নিজস্বস্বাক্ষানের অবসর ছিল না ।

সাধারণ প্রেম, বিশেষ ভাববহিত প্রেম । সমতা, সমভাব । বাসতা, প্রতিকূল । “শতকোটি” ইত্যাদি পরায়ের ব্রজদেবীগণের প্রেম হইতে শ্রীরাধাপ্রেমের শ্রেষ্ঠত্ব বলিতেছেন,—

সাধারণ ব্রজদেবীগণ রাসে শ্রীকৃষ্ণকে পাইয়া আর কোনদিকে চাহিলেন না, আনন্দে বিভোর হইয়া গেলেন । শ্রীরাধা কিন্তু সেরূপ বিভোর না হইয়া দেখিলেন, প্রত্যেক গোপীর পার্শ্বেই এক এক কৃষ্ণ ; ঠিক সেইরূপ সাধারণভাবে তাঁহার পার্শ্বেও এক কৃষ্ণ রহিয়াছেন । ইহাই দেখিয়া শ্রীরাধার কুটিলস্বভাবগ্ন প্রেম বাসতা (মান) হইল । শ্রীরাধাপ্রেমকে কুটিল বলেন কেন, তাহা “অহেরিবতি ।” পরশ্লোকে প্রমাণ করিবেন । শ্রীভাগবতেও বলিয়াছেন,—

“তাসাং তৎসৌভগমমং বীক্ষ্য মানস কেশবঃ ।

প্রথমায় প্রসাদায় তত্রৈবাস্তরধীমত ॥”

গোপীগণের সৌভাগ্যজনিত সকারীত্বকে যে

গর্ভ ; তাহার প্রশমনের জন্য শ্রীকৃষ্ণ মণ্ডল ত্যাগ করেন । অল্পযুক্তপ্রভৃতি দ্বারা গর্ভ প্রশান্ত হয় না বলিয়া, অস্তর্ধান করেন । সকল গোপীকে শ্রীকৃষ্ণ সাধারণরূপে বিহার করিতেছেন দেখিয়া, সর্বশ্রেষ্ঠতমা শ্রীরাধার দর্শনা সহসা উৎপন্ন হয় ! তদ্বারা তিনি কথায়িতনয়না ও মানসী হইলেন এবং রাসমণ্ডল ত্যাগ করেন । প্রথম দর্শন মান প্রশান্ত হয় বাগদা, শ্রীকৃষ্ণ রাবার মন মানের প্রাক্ত সম্মান প্রশর্শন জন্য বা অমুখ্যের দ্বারা মানপ্রশমন জন্য শ্রীরাধার পশ্চাৎ মণ্ডল হইতে সহসা অস্তর্ধান করেন । একা শ্রীরাধার সহিত দীর্ঘা-গালসাই অস্তর্ধানের মূল কারণ । শ্রীকৃষ্ণের ইচ্ছাবশতঃ বোণমায়াই ঐ অস্তর্ধান ক্রিয়াটি সম্পাদন করেন । সযুক্তিবাক্য, সাধনাবাক্য, দান, নতি ও উপেক্ষা দ্বারা সন্তোষ মান উপশম হয় । কিঞ্চিৎ প্রতীকার করা নির্হেতুক মান উপশম হয় ॥ ৩৯ ॥

( ৭০ পা ) “অহেরিবতি ।”

শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীরাধাপ্রেম যে কুটিলস্বভাবগ্ন তাহা এই শ্লোকে প্রতিপন্ন করিলেন ।

সর্পগতি যেমন সরলা নহে, ওজপ প্রেমের স্বভাবও সরল নহে বলিয়া, কারণ ও অকারণেও নায়ক ও নায়িকার মান উৎপন্ন হয় । বিশ্রান্তস্বপ্ন রসবিশেষেই গর্ভ ও মান প্রকাশ পায় ।

“বাতীষ্টাল্পেষবিক্ষাদিনিরোধী মান উৎপন্ন ।”

বাতীষ্ট আলিঙ্গন ও দর্শনাদির দ্বারা নিরোধকারী, তাহাই মান । বাতীষ্ট শ্রীকৃষ্ণের আলিঙ্গন ও দর্শনাদি না করায় নিরোধ মান লক্ষিত হইতেছে । অতএব প্রেমের কুটিলস্বভাব নহে, পরস্তু রসবিশেষ হেতু গুণই ॥ ২৮ ॥

( ৭০ পা ) “ক্রোধ করি ... দ্বিবাধিকার গুণ ॥” এই ৪০ ও ৪১ পরায়ের ভাবার্থ । রত্নাখ্যভাবের সকারীত্ব



ক্রোধ, ভাবকে বর্জিত করে বলিয়া, ভাববৃদ্ধির জন্ম শ্রীরাধার ক্রোধ উৎপন্ন হয় । ইহা প্রণয়জনিত ক্রোধ ।

শ্রীরাধা মানিনী হইয়া রাস ছাড়িয়া গেলেন । তিনি রাস ছাড়িয়া গেলে, চন্দ্রহারের সূত্র ছিঁড়িয়া গেল, চন্দ্র সকল ইতস্ততঃ ছড়াইয়া পড়িল । শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণ অভিন্নাত্মা । শ্রীরাধা চলিয়া গেলেই, শ্রীরাধাকে শ্রীকৃষ্ণ না দেখিয়া, অত্যন্ত ব্যাকুল হইলেন এবং তিনিও চলিয়া গেলেন, রাস-মণ্ডল ভাঙ্গিয়া গেল । “কংসারিরিতি” শ্লোকের “সংসারবাসনাবন্ধগুণ্ণামিতি ।” ইহার ব্যাখ্যা করিতেছেন “সম্যক” ইতি ।

একা, একমাত্র । রাধিকাসুখলা, রাধিকাই পরমাত্মা । তাহা বিনু শ্রীরাধা ব্যতীত ।

শ্রীরাধা রাস ত্যাগ করিলে মধ্যমণির অভাবে মণির মালা শোভাচ্যুত হইল । শ্রীকৃষ্ণের রাস আর ভাল লাগিল না, তিনিও শ্রীরাধার অনুসরণ করিলেন । “ইতস্ততস্তামিতি ।” শ্লোকের অর্থ করিতেছেন “ইতস্তত ভ্রমি” ইতি ।

ভ্রমি, ভ্রমণ করিয়া । খিন্ন দুঃখিত । যখন শতকোটি গোপীতেও শ্রীকৃষ্ণের কামাভিলাষ তৃপ্তিলাভ করিতে পারিল না, যখন কামবাণে বিদ্ধ হওতঃ দুঃখিত হইয়া কেবল শ্রীরাধার অঙ্ক বিষাদ করেন, যখন একা শ্রীরাধাতেই শ্রীকৃষ্ণের কামাভিলাষ পরিতৃপ্ত হয়, যখন একা শ্রীরাধার সহিত বিলাসাত্মিনীরাে শ্রীকৃষ্ণ অন্য গোপীগণকে সাক্ষাৎ ত্যাগ করেন; তখন এই সকল কাণ্ড দর্শনে শ্রীরাধার প্রেম যে সর্বশ্রেষ্ঠ, স্মরণ তাহা অস্মরিত হইতেছে ॥৪০।৪১॥

( ৭০ পা ) “প্রভু কহে... নিরুপিতে নারে ॥” এই ৪২ ও ৪৩ পয়ারের ভাবার্থ সরল । তোমা স্থানে, তোমার নিকটে । রসবস্তৃত্ব, রসবস্তুর বাধার্থ্য ।

হৈল জানে, জানিলাম । ইহা, কৃষ্ণস্বরূপ রাধাস্বরূপ, রসতত্ত্ব ও প্রেমতত্ত্ব । প্রভু প্রীত হইয়া কহিলেন, ইহা শুনিবার জন্মই তোমার নিকট আসিয়াছি । এখন আমি সাধ্যসাধনের তত্ত্ব জানিলাম, কিন্তু আরও কিছু অভিলাষ হইতেছে । কৃপা করিয়া কৃষ্ণের স্বরূপ, রাধার স্বরূপ, রস কোন তত্ত্ব, প্রেমই বা কোন তত্ত্ব, তাহা বল । এই সকল বিষয় তোমার নিকট ভিন্ন অন্য কাহারও নিকট শুনিবার সম্ভাবনা নাই । তুমি ভিন্ন অপর কেহই এই তত্ত্ব নিরূপণ করিতে সমর্থ নহে ।

সন্দেহ হইতে পারে, প্রভু রায়কে চারিটি প্রশ্ন করেন; কিন্তু রায় মহাশয় প্রশ্নের দুইটি উত্তর প্রদান করেন অর্থাৎ কৃষ্ণস্বরূপ ও রাধাস্বরূপ বলেন । কৃষ্ণস্বরূপ, রাধাস্বরূপ রসতত্ত্ব ও প্রেমতত্ত্ব এই চারিটি প্রশ্নের চারিটি উত্তর না দিলেন কেন? তদন্তর, রায় রামানন্দ প্রভৃকৃত চারিটি প্রশ্নের চারিটি উত্তরই প্রদান করেন । কৃষ্ণস্বরূপ নির্ণয় করিতে কৃষ্ণস্বরূপ ও রসতত্ত্ব এবং রাধাস্বরূপ নির্ণয়ে রাধাস্বরূপ ও প্রেমতত্ত্ব বলা হইয়াছে । তত্ত্বস্থলে দৃষ্টি করিবেন ॥ ৪২:৪৩

( ৭০ পা ) “রায় কহে ... .. সেই গুরু হয় ॥” এই ৪৪ হইতে ৪৬ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সম্বল । বাণী, বাক্য । নাট নৃত্য । তবে, একমাত্র । প্রভুর কথা শুনিয়া রায় কহিলেন, প্রভো, আমিও কিছুই জানি না, আপনি যাহা বলাইলেন, তাহাই বলিলাম । লোকে যেমন গুরু পক্ষিকে পাঠ পড়াইয়া, তাহার মুখ হইতে ঐ পাঠ শ্রবণ করিয়া সুখ পায়, আপনিও তেমনি আমার অন্তরে প্রবেশ পূর্বক আমাকে বলাইয়া শুনিতেছেন,

এবং শুনিয়া আনন্দ অনুভব করিতে-  
ছেন। বস্তুতঃ আমি ভাল কি মন্দ  
বলিতেছি, তাহার কিছুই জানি না।

প্রভু দৈন্য পূর্বক বলিতেছেন, আমি  
মায়াবাদী সন্ন্যাসী, ভক্তিতত্ত্বের কিছুই  
জানি না। মায়াবাদে আমার চিত্ত  
মলিন হইয়া গিয়াছে। সার্কভোমের  
সঙ্গুণে ঐ মন কিছু নির্মল হইলে,  
আমি তাঁহাকে ভক্তিতত্ত্ব জিজ্ঞাসা করায়  
তিনি বলেন, ভক্তিতত্ত্ব আমিও জানি না,  
একমাত্র রামানন্দ জানে, সেও এখানে  
নাই। তাঁহার মুখে তোমার মহিমা  
শুনিয়াই এখানে আসিয়াছি। তুমি  
আমাকে সন্ন্যাসী বলিয়া স্তুতি কবিতেছ,  
কিন্তু বিপ্র, সন্ন্যাসীই বা শূদ্র হউন, যিনি  
কৃষ্ণতত্ত্ববেত্তা তিনি গুরু তুল্য। কৃষ্ণস্বরূপ  
ও রাধাস্বরূপাদিতত্ত্ব-প্রকাশ জন্যই প্রভু  
দৈন্যভাব অবলম্বন করেন ॥ ৪৪—৪৬ ॥

( ৭০ প। ) “সন্ন্যাসী... ..তাহা  
উচ্চারী ॥” এই ৪৭ ও ৪৮ পয়ারের  
ভাবার্থ সরল। প্রভু কহিলেন, আমি  
সন্ন্যাসী বলিয়া বর্ণনা করিও না।  
শ্রীকৃষ্ণের, শ্রীরাধার তত্ত্ব কহিয়া আমাকে  
পূর্ণ মনোরথ বর।

সন্দেহ হইতে পারে, রামানন্দ তাঁহার সম্মুখে  
বাচালতা প্রকাশ করেন কেন? তত্ত্বের গ্রন্থকার  
বলিতেছেন, “যত্নপি” ইত্যাদি। যদিও রায় মহা-  
শয় মহাভক্ত, যদিও তাঁহার মনকে শ্রীকৃষ্ণের মারা  
আচ্ছাদন করিতে পারেন না অর্থাৎ মহাপ্রভুকে  
নামান্ত্র মহুয্য বা একজন ভক্ত বলিয়া বা সন্ন্যাসী  
বলিয়া, প্রতীত করাইতে পারেন না, তথাপি  
প্রভুর ইচ্ছা পরম প্রবলা অর্থাৎ লীলার স্তম্ভ যেমন  
কৃষ্ণের ইচ্ছা নিজের পারিপদগণকেও মোহিত

করে, তদ্রূপ লীলার জন্য তাঁহারই পরম প্রবলা  
ইচ্ছা রায়কে মোহিত করিয়া বাচালতা প্রকাশ  
করাইতেছে। “এই মহারাজ মহাপণ্ডিত গভীর”  
এই পূর্ব পয়ারে ব্রাহ্মণগণবাক্যে রায় মহাশয়  
যে বাচাল নহেন, তাহা প্রতিপন্ন হইয়াছে। যদিও  
রায় বুঝিতেছেন, যে আমি তাঁহার সম্মুখে বাচালতা  
প্রকাশ করিতেছি, তিনি (ইনি) স্বয়ং ভগবান,  
তথাপি তাঁহারই মায়ায় মোহিত হইয়া ও তৎ-  
কর্তৃক প্রেরিত হইয়া বলিলেন, আমি নট, তুমি  
স্বরধার; তুমি আমাকে যেমন নাচাইতেছ,  
আমিও তদ্রূপ নাচিতেছি; আমার জিহ্বা বীণাযন্ত্র,  
তুমি বীণাধারী, তোমার বাহা শুনিতে ইচ্ছা হই-  
তেছে, আমিও তাহাই উচ্চারণ করিতেছি। তুমি  
কৃষ্ণস্বরূপ যেরূপ বলাইবে, আমি সেই রূপই  
বলিব ॥ ৪৭।৪৮ ॥

( ৭০ প। ) “ঈশ্বর পরম ... সর্ক-  
রস পূর্ণ ॥” এই ৪৯ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল। রায় রামানন্দ কৃষ্ণের স্বরূপ  
বলিতেছেন, “ঈশ্বর” ইত্যাদি। আধার,  
‘আশ্রয় ॥ ৪৯ ॥

( ৭১ প। ) “ঈশ্বর ইতি।” এই  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ২৫  
পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ৭১  
পৃষ্ঠায় দেখিবেন। “ঈশ্বর পরম” ইত্যাদি  
পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২৯ ॥

( ৭১ প। ) “রুন্দাবনে... ..মঙ্গল-  
মদন ॥” এই ৫০ পয়ারের ভাবার্থ।  
সর্কেশ্বর সর্কশক্তি ও সর্করস পূর্ণ শ্রীকৃষ্ণ  
শ্রীরুন্দাবনে বিরাজিত অপ্রাকৃত নবীন  
মদন। তিনি অন্য প্রাকৃত ও অপ্রাকৃত  
মদন সকলের মূলশ্রয়। তিনি শ্রীরুন্দা-  
বনে বিরাজিত হইয়া নিত্যনূতনরূপে  
অনুভূত হইয়া থাকেন। তিনি কোটি-

কন্দর্প-লাবণ্য এবং প্রাকৃতপ্রাকৃত কন্দর্প সকলের মূলস্থানীয় । শাস্ত্রকারগণ এই জন্যই কামবীজ ও কামগায়ত্রী দ্বারা তাঁহার উপাসনার বিধান করিয়াছেন । তিনি পুরুষ ও স্ত্রী, স্বাবর ও জঙ্গম সকলেরই চিত্ত আকর্ষণ করেন । তিনি সাক্ষাৎ কামকেও মোহিত করেন ॥৫০॥

(৭১ পা) "তাসামিতি ।" শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৭৩ পৃষ্ঠায় দেখুন । শ্রীকৃষ্ণ যে, সাক্ষাৎ কামকেও মোহিত করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥৩০॥

(৭১ পা) "নানা ভক্তে... আশ্রয় ॥" এই ৫১ পয়ারের ভাবার্থ সরল । নানা ভক্তের আশ্রয়দায়ক শাস্ত্রাদিভেদে বলিষদ । শ্রীকৃষ্ণ ঐ সকল রসের বিষয় ও আশ্রয় । শ্রীকৃষ্ণ রসের আশ্রয়, কিরূপে, তাহা পর শ্লোকে সপ্রমাণ করিতেছেন ॥ ৫১ ॥

(৭১.পা) "অখিলরসেতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । "রসায়ুত্তের বিষয় আশ্রয়" এই পয়ার প্রমাণ "অখিলরসায়ুত্তমুর্ধিঃ ।" অর্থাৎ অখিল রস সকল সম্বন্ধে তাড়শ পরমাত্মক মূর্ত্তি দাতার তিনিই শ্রীকৃষ্ণ । "কর্ত্ত্বা নানাবসেব আশ্রয় হওয়াতে রস-তত্ত্ব নিগর হইল ।" শ্রীকৃষ্ণ যেমন সাক্ষাৎকাম, রসও তদ্রূপ সচ্ছিদানন্দ ॥৩১॥

(৭২ পা) "শৃঙ্গার... সর্কচিত্তহর ॥" এই ৫২ পয়ারের ভাবার্থ । শ্রীকৃষ্ণের শৃঙ্গাররসরূপ মূর্ত্তি । আত্ম ( নিজের ) পর্যায়ে সকলের চিত্তহরণ করেন । এখানে রস কোন তত্ত্ব; এই প্রসঙ্গ উত্তর দিলেন,

শৃঙ্গাররসই রসের তত্ত্ব । শ্রীকৃষ্ণ শৃঙ্গার-রসরাজ মূর্ত্তিধারী বলিয়াই নিজরূপে নিজে মোহিত হন ॥ ৫২ ॥

(৭২ পা) "বিশ্বেমামিতি ।" এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৫৬ পৃষ্ঠায় দেখুন । শৃঙ্গাররসরাজমূর্ত্তিধর প্রমাণ "শৃঙ্গার মূর্ত্তিমান" ইতি ॥৩২॥

(৭২ পা) "লক্ষ্মীকান্ত... মন ॥" এই ৫৩ পয়ারের ভাবার্থ সরল । শ্রীকৃষ্ণের মূর্ত্তি নারায়ণাদি অবতারের মন হরণ করেন ॥ ৫৩ ॥

(৭২ পা) "দ্বিজাত্মজ্জৈতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীকৃষ্ণমূর্ত্তি নারায়ণাদি পুরুষাবতারের মন হরণ করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ।

দ্বায়কাস্থ মৃত ব্রাহ্মণবালকগণকে আনয়ন কর্ত্ত্বা শ্রীকৃষ্ণ ও অর্জুন ভূষাপুঙ্কবের নিকট গমন করেন । কোথায় গমন করেন, তাহা ভাগবতে পূর্ব্বোক্ত অধ্যায়ে,—

"ততঃ প্রবিষ্টঃ সলিলং নভঃশতা

বলীয়সৈজঘ্ হৃদশ্চ ভূষণমিত্যাধি ।"

সপ্তশ্লোকে বর্ণন করিয়াছেন । উহা সজ্জেকে বলা হইতেছে । প্রয়োজন হইলে ঐ স্থলের তোষণী দেখিবেন । শ্রীকৃষ্ণার্জুন নভঃশ হইতে সলিলরূপা বিরজানদীতে প্রবেশ করিয়া সর্ক-লোকান্ত পুরী দর্শন করিলেন । মৃত্যুঞ্জয়তন্ত্রে উক্ত হইয়াছে, ব্রহ্মাণ্ডের উপরি সত্যলোক, তদুপরি বিম্বলোক, তদুপরি অহঙ্কাররূপ আবরণহ রূপ-লোক, তদুপরি মহত্ত্বাবরণহ মহাবিম্বলোক, তদুপরি প্রকৃত্যাবরণহ মহাদেবীলোক, তদুপরি পর-ব্যোমহ মহাবৈকুণ্ঠনাথের কারণার্ণবের অন্তর্গত মহাকালরূপ ভবন । ইহা অর্জুন দেখিয়াছিলেন ।

হরিবংশে ইহাকে মুক্তধাম বলে । পুষ্টি, শ্রী, কীর্ত্তি প্রভৃতি অর্থাৎ বিভূতি সকল ঐ ধামই পুরুষকে সর্ষদা সেবা করিতেছেন । গোবর্দ্ধনপূজায় যেমন শ্রীকৃষ্ণ লীলাকৌতুক জন্য ব্রজজন সহ নিজাংশ মূর্ত্তিকে প্রণাম করেন, তদ্রূপ এই পুরুষকেও প্রণাম করেন । গোবর্দ্ধনপূজাগ্রাহী পুরুষ হইতেও এই পুরুষ আত্মমহৎ প্রকাশক বলিয়া, ইহাকে ভূমা পুরুষ বলা হইল । ঐ ভূমাপুরুষ শ্রীকৃষ্ণার্জুনকে বলিলেন, আপনাদের দর্শন জন্য, মৃত ব্রাহ্মণবালকগণকে এখানে আনয়ন করিয়াছি । শ্রীহরিবংশে ও শ্রীকৃষ্ণ বলিয়াছেন,—

“মদর্শনার্থং তে বালা কৃতান্তেন মহাশ্বনা ।

বিপ্রার্থমেঘাতে কৃষ্ণো মৎসমীপং ন চান্যথা ॥”

বিপ্রের জন্য শ্রীকৃষ্ণ নিশ্চয়ই আমার নিকট আসিবেন, ইহা অন্যথা হইবে না জানিয়া, আমার দর্শনের জন্য মহাশ্বা ভূমাপুরুষ মৃত ব্রাহ্মণবালকগণকে হরণ করেন । ইহা আশ্চর্য্য নহে । যে হেতু শ্রীকৃষ্ণের মহাশ্যালীলার উপযোগী শৃঙ্গারসরাজ অদ্বুতরূপ দর্শন করিবার জন্যই ভূমাপুরুষ ঐরূপ কাৰ্য্য করেন । অতএব ভূমাপুরুষ হইতে শ্রীকৃষ্ণের শক্তি ও দৌন্দর্য্যাদি গুণ যে অধিক, তাহার প্রাপ্তি হইল । শ্রীকৃষ্ণের মূর্ত্তিতে যে, ভূমাপুরুষ আকৃষ্ট হন, তাহাও প্রতীপন্ন হইল । এই ভূমাপুরুষই নারায়ণাদি-অবতার । শ্রীকৃষ্ণমূর্ত্তি তদবতারের, স্মরণং মন হরণ করেন ॥ ৩৩ ॥

( ৭২ পা ) “লক্ষ্মী... আকর্ষণং ॥”

এই ৫৪ পয়ারের ভাবার্থ সরল । শৃঙ্গারসরাজমূর্ত্তি নারায়ণাদি-অবতারের চিত্ত হরণ করেন, ইহা বলিয়া, লক্ষ্মী প্রভৃতি শ্রেষ্ঠা রমণীগণকেও আকর্ষণ করেন ; ইহা বলিতেছেন, “লক্ষ্মী আদি” ইতি ॥ ৫৪ ॥

( ৭২ পা ) “কন্মোক্তি” ইহার তাৎপর্য্য । শৃঙ্গারসরাজমূর্ত্তি লক্ষ্মীরও মন হরণ করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ।

নাগপত্নীগণ কহিলেন, হে কৃষ্ণ, তোমার নারায়ণরূপের ললনা লক্ষ্মী পরম সুকোমলা হইয়াও, যে শৃঙ্গারসরাজময় গোপালরূপের প্রাণিকামনার, তদ্বিধ-পরমপতি নারায়ণের সঙ্গময় সেই সেই ভোগসকল তাগ করিয়া বন্ধনিয়মা হইয়া তপ আচরণ করেন ; কিন্তু তাহাতেও তোমার এই রূপ প্রাপ্ত হন নাই । লক্ষ্মীর কৃষ্ণপ্রাপ্ত স্বীকার করিলে, এই শ্লোক অপ্রাসঙ্গ হয় । স্ত্রীত্ব হেতু স্বপতির আরাধনাই তপ । এই লক্ষ্মী নারায়ণের প্রেমসীরূপা, গোপনামারূপা নহে । অতএব গোপীগণের ন্যায় লক্ষ্মীর তাদৃশ ভাব না থাকায়, ইনি শ্রীকৃষ্ণকে পান নাই । শ্রীকৃষ্ণের শৃঙ্গারসরাজমূর্ত্তি দ্বারা লক্ষ্মী আকর্ষিত হইয়া, শ্রীকৃষ্ণপ্রাণিকামনার, তিনি তাঁহার আরাধনা করেন, ইহা সিদ্ধান্তিত হইল । লক্ষ্মী ও নারায়ণ যখন কৃষ্ণমাধুর্য্যে আকর্ষিত হন, তখন অন্যের কথা কি ? ॥ ৩৪ ॥

( ৭২ পা ) “আপনার...আলিঙ্গন ॥”

এই ৫৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল । সর্কচিত্তহর অর্থাৎ কৃষ্ণমাধুর্য্যে লক্ষ্মী ও নারায়ণ প্রভৃতি সকলের চিত্তহরণ করেন । ইহা বলিয়া, নিজমাধুর্য্যে নিজেই আকর্ষিত হইয়া নিজেকে নিজে, আলিঙ্গন করিতে উদ্যত হইয়েন, তাহা বলিতেছেন, “আপনার” ইতি ॥ ৫৫ ॥

( ৭২ পা ) “অপরিকলিত্তেতি ।”

এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৪৮ পৃষ্ঠায় দেখুন । “আপনার মাধুর্য্যে” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৫ ॥

( ৭২ পা ) “সঙ্ক্ষেপে.....উপরে ॥”

এই ৫৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল । রায় কহিলেন, প্রভো, সঙ্ক্ষেপে কৃষ্ণের স্বরূপ ও রসতত্ত্ব বলিলাম, এক্ষণে রাধাতত্ত্ব ( প্রেমতত্ত্ব ) এবং তাঁহার স্বরূপ বলি শ্রবণ করুন ।

শ্রীকৃষ্ণের শক্তি অনন্ত । ঐ অনন্ত শক্তি সকল সাধারণতঃ তিন ভাগে বিভক্ত । চিহ্নক্তি, মায়া শক্তি ও জীবশক্তি । চিহ্নক্তির নাম অন্তরঙ্গা শক্তি, মায়াশক্তির নাম বহিরঙ্গা এবং জীবশক্তির নাম তটস্থা শক্তি । অন্তরঙ্গাশক্তিই স্বরূপশক্তি ও সর্বশক্তির প্রধান ॥ ৬৬ ॥

( ৭৩ পা ) “বিষ্ণুশক্তিরিতি ।” এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৮৮ পৃষ্ঠায় দেখুন । শ্রীকৃষ্ণের সাধারণতঃ তিন শক্তির পর প্রমাণ এই শ্লোক । বিষ্ণুশক্তি বলিতে অন্তরঙ্গা শক্তি ॥ ৩৬ ॥

( ৭৩ পা ) “সৎ চিৎ... করি মানি ॥” এই ৫৭পয়ারের ভাবার্থ সরল । শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপ সচ্চিদানন্দময় ; তদীয় স্বরূপশক্তিও ত্রিরূপাঙ্গিকা ।

ঐ সচ্চিদানন্দময়ী ত্রিরূপাঙ্গিকা স্বরূপশক্তি স্বরূপতঃ শ্রীকৃষ্ণের শ্রীমূর্ত্তিপুরুষিণী এবং অধিষ্ঠাতৃ-রূপতঃ সন্ধিনী, সখিৎ ও ফ্লাদিনী । সন্ধিনী প্রধানা অধিষ্ঠাত্রী ধামাদি ও গুরুবর্গ ; সখিৎ প্রধানা অধিষ্ঠাত্রী জ্ঞান ও সখিবর্গ ; ফ্লাদিনী প্রধানা অধিষ্ঠাত্রী ভক্তি ও কান্তাবর্গ । শান্ত ও দাসগণ কেহ সন্ধিনী প্রধান ও কেহ সখিৎপ্রধানের মধ্যে নিবিষ্ট ॥ ৫৭ ॥

( ৭৩ পা ) “ফ্লাদিনীতি ।” এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৪১পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ১৩৯ পৃষ্ঠায় দেখুন । “স্বরূপশক্তি হয়” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৭ ॥

( ৭৩ পা ) “কৃষ্ণকে আফ্লাদে...রাধা ঠাকুরাণী ॥” এই ৫৮ ও ৫৯ পয়ারের ভাবার্থ সরল । ফ্লাদিনী শ্রীকৃষ্ণকে আফ্লাদ প্রদান করেন । শ্রীকৃষ্ণ ফ্লাদিনীর দ্বারাই সুখ আশ্বাদন করিয়া

ধাকেন । শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং আনন্দস্বরূপ হইয়াও নিজানন্দের অধিষ্ঠাত্রী ফ্লাদিনী-শক্তি দ্বারা নিজের আনন্দ অনুভব করেন । এই ফ্লাদিনী শ্রীকৃষ্ণের ভক্ত-গণকেও আনন্দ প্রদান করেন । প্রভু কৃত “প্রেম কোন তত্ব” এই প্রশ্নের উত্তর দিতেছেন, “ফ্লাদিনীর” ইতি । ফ্লাদিনীর সারাংশই প্রেম । সারাংশ শব্দের অর্থ আনুকূল্যাভিলাষ । ঐ আনুকূল্যাভিলাষাত্মক প্রেমকে আনন্দ চিন্ময়রসও বলা যায় । ঐ রসাত্মক প্রেমের সার মহাভাব । শ্রীরাধাই মহাভাব স্বরূপিণী । ইনিই কান্তাবর্গের অংশিনী ॥ ৫৮।৫৯ ॥

( ৭৩ পা ) “তয়োরিতি ।” এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৪২ পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ১৭২ পৃষ্ঠায় দেখুন । “প্রেমের পরম” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৮ ॥

( ৭৩ পা ) “প্রেমের...বিদিত ॥” এই ৬০ পয়ারের ভাবার্থ সরল । বিভা-বিত, বিশেষরূপে উৎপাদিত । আনন্দা-ধিষ্ঠাত্রী মহাভাব স্বরূপিণী শ্রীরাধার দেহ কৃষ্ণপ্রেমের স্বরূপ এবং তাৎপর্য্য শ্রেণ দ্বারা বিভাবিত । অতএব শ্রীরাধা কান্তা-গণের শ্রেষ্ঠা বলিয়া বিদিত ॥ ৬০ ॥

( ৭৩ পা ) “আনন্দচিন্ময়েতি ।” এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৪৩ পৃষ্ঠায় দেখুন । “প্রেমে বিভাবিত” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক । আনন্দচিন্ময়-রস দ্বারা শ্রীকৃষ্ণ উপাসিত হন । আনন্দ-চিন্ময়রসাত্মক প্রেমে শ্রীরাধা বিভাবিত হয়েন । ইহাই প্রেমের তত্ব ॥ ৩৯ ॥ ...

( ৭০ প্য ) “সেই মহাভাব……কায়-  
বাহুরূপ ।” এই ৬১ পয়ারের ভাবার্থ ।  
মহাভাবরূপা শ্রীরাধা চিন্তামণিসার  
সদৃশী ।

চিন্তামণিসার বলাতে ইহাই বোধিত হইতেছে,  
যেমন চিন্তামণির নিকট যে বাহা প্রার্থনা করে,  
সে তাহাই পায়; তদ্রূপ শ্রীরাধার নিকট যে বাহা  
প্রার্থনা করে, সে তাহাই পায় এবং প্রার্থনার  
অতিরিক্ত বিষয়ও পায়। শ্রীকৃষ্ণের বাহ্যপূরণই  
তাহার কার্য। লক্ষীগণ তাঁহার নিলাসমূর্তি,  
মহিবীগণ তাঁহার প্রতিবিম্ব ও ললিতাদি গোপী-  
গণ তাঁহার কায়বাহ। বহুকান্তা বিনা রসের  
উল্লাস না হওয়াতে, শ্রীরাধা সকলকান্তার  
আকারে বিরাজ করেন। শ্রীরাধা নানামূর্তি ধারণ  
পূর্বক শ্রীকৃষ্ণকে দীলারস আশ্বাদন করাইয়া  
থাকেন। অগ্নি ও অগ্নিশখার যেমন ভেদ নাই,  
তদ্রূপ শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণে ভেদ নাই। শ্রীরাধা  
ও শ্রীকৃষ্ণ একাত্মা; দীলারস আশ্বাদনের জন্ম  
রূপভেদ মাত্র ॥ ৬১ ॥

( ৭৩ প্য ) “রাধা প্রাতি……শাড়ী  
পরিধান ॥” এই ৬২ পয়ারের ভাবার্থ ।  
শ্রীরাধার দেহ যে, প্রেমের স্বরূপ ও প্রেম  
দ্বারা বিভাবিত, তাহা দেখাইতেছেন,  
“রাধা প্রাতি” ইত্যাদি। উৎকর্ষন, শরী-  
রের মলনাশক দ্রব্য, ইহাতে শরীর  
কোমল ও সুস্থ হয়। অঙ্গে উৎকর্ষন  
লেপনে যেমন শরীরের মল নষ্ট হয় এবং  
শরীর উজ্জ্বল, কোমল ও সুন্দর হয়,  
তদ্রূপ শ্রীকৃষ্ণের স্নেহই রাধার উৎকর্ষন।  
শ্রীকৃষ্ণস্নেহরূপ উৎকর্ষনে আরও একটি  
সুগন্ধি দিতেছেন, “তাতে অতি সুগন্ধি”  
ইতি। তাতে অর্থাৎ কৃষ্ণস্নেহরূপ উৎকর্ষনে  
সখীগণের প্রণয়রূপ সংগন্ধ কুমুমাদির

মিশ্রাণে অতি সুগন্ধি উৎকর্ষন হইল।  
উক্ত উৎকর্ষন দ্বারাই রাধার দেহ সুগন্ধ ও  
উজ্জ্বল হয়। চিন্তদ্রবকারী গাঢ় প্রেমকে  
স্নেহ বলে। “কারুণ্যামৃত” ইতি।  
প্রাতঃকালে নদীর প্রবাহে স্নান কর্তব্য  
হেতু শ্রীরাধার প্রাতঃস্নান বলিতেছেন,  
করুণতারূপ জলের তরঙ্গ দ্বারা রাধার  
প্রাতঃস্নান। বয়ঃসন্ধিতে বাল্যচাপল্যের  
নিরুত্তি হওয়ায় প্রথমতঃ করুণার আবি-  
ষ্কার হয়। করুণার তরঙ্গে বাল্যচাপল্য  
নিরুত্ত হয় বলিয়া, কারুণ্যামৃতধারায়  
স্নান বলিলেন। মধ্যাহ্নে দাসীগণ কর্তৃক  
অর্পিত জলধারা দ্বারা সুকুমারী নারী-  
গণের স্নান কর্তব্যতা হেতু মধ্যাহ্ন-  
স্নান বলিতেছেন, যৌবনরূপ জলধারায়  
মধ্যাহ্ন স্নান। সখীগণই শ্রীরাধাকে কৃষ্ণ-  
দর্শন করাইয়া যুবতীভাব প্রাপ্ত করান  
বলিয়া কারুণ্যামৃতধারা বলিলেন।  
সায়াহ্নে নিদ্রাঘতাপ বিনাশ জন্ম জলে  
অবগাহন স্নানের প্রয়োজন হেতু সায়াহ্ন  
স্নান বলিতেছেন, লাবণ্যরূপ জলে  
রাধার সায়াহ্নস্নান। ত্রিকালীন স্নানে  
ইহা বোধিত হয়, শ্রীরাধার দেহ করুণা,  
যৌবন ও সৌন্দর্যের মূল্যশ্রয়, বাহা  
লক্ষ্মীদেবীকেও স্নানিযুক্ত করে। শ্রীরাধার  
পরিধেয় বস্ত্র বলিতেছেন, “নিজ” ইতি।  
নিজের লজ্জারূপ শ্যাগবর্ণ অর্থাৎ শৃঙ্গার-  
রসরূপ পটু নির্মিত সাটী (পরিধান বস্ত্র)  
ইহাতে শ্রীরাধা যে পরমা লজ্জাবতী,  
তাহা বলা হইল ॥ ৬২ ॥

( ৭৩ প্য ) “কৃষ্ণ অমুরাগে……পট-  
বাস ॥” এই ৬৩ ও ৬৪ পয়ারের ভাবার্থ।

বাহাতে সন্দেহ অনুভূত শ্রীকৃষ্ণের রূপাদি প্রতিক্ষেপে নূতন নূতনরূপে প্রতীয়মান হয় ; সেই কৃষ্ণানুরাগ শ্রীরাধার রক্তবর্ণ ওড়না । শ্রীরাধা প্রায়মানরূপ কঞ্চুলিকা দ্বারা নিজ-স্তনযুগলকে আবৃত রাখিয়া-ছেন । সৌন্দর্য্যরূপ কুক্কুগ, সখীপ্রণয়রূপ চন্দন ও স্মিতকান্তিরূপ কর্পূর, এই তিনটি শ্রীরাধার অঙ্গের বিলেপন । শৃঙ্গাররস-রূপ যে কস্তুরী, তদ্বারা রাধার কলেবর বিচিত্রিত হইয়াছে । প্রচ্ছন্নমানই রাধার কেশবিভাস । ধীরাদীরাত্ররূপ গুণ রাধার পটুবাগ ( সুগন্ধিচূর্ণ ) ॥ ৬৩।৬৪ ॥

( ৭৩ পা ) “রাগ তাম্বুল...পূরিত ॥” এই ৬৫ ও ৬৬ পয়ারের ভাবার্থ । রাগ-রূপ তাম্বুলের রাগে রাধার অধর উজ্জ্বল । কম্প, অশ্রু, পুলক, স্তম্ভ, স্বেদ, অক্ষুটধ্বনি, রক্ততা, উন্মাদ ও জড়তা এই নয়টি উত্তম রত্ন ও হর্ষাদি তেত্রিশটি সঞ্চারীভাব এবং কিলকিকিতাদি বিংশতি অলঙ্কারই রাধার অঙ্গের অলঙ্কার । ভাবভূষণ, ভাবরূপভূষণ । ভরি, ধারণ করিয়াছিলাম ।

কিলকিকিতাদি বিংশতি অলঙ্কার যথা,—ভাব, হাব ও হেলা এই তিনটি অঙ্গজ । শোভা, কান্তি, দীপ্ত, মাধুর্য্য, প্রগল্ভতা, ঔদার্য্য ও ধৈর্য্য এই সাতটি অঙ্গজনিত । লীলা, বিলাস, বিচ্ছিত্তি, বিলম্ব, কিলকিকিত, মোটায়িত, কুট্টমিত, বিলোক, ললিত ও বিরক্ত এই দশটি স্বভাবজনিত অলঙ্কার । এই ভাবসকল শৃঙ্গাররসে রতি নামক স্থায়ীভাবে প্রকাশ পায় । ভাব যথা উজ্জ্বলে,—

“নির্ঝরকারাঙ্ঘকে চিন্তে ভাবঃ প্রথম বিক্রিয়া ।”

চিন্তের প্রথম বিকারকে ভাব বলে । হাব যথা তটৈব,—

শ্রীবারেচকসংযুক্তো জনেন্দ্রাদিবিকাশকঃ ।  
 ভাবাদীষৎপ্রকাশো যঃ স হাব ইতি কথ্যতে ॥”  
 শ্রীবা বক্রকরণ, জনেন্দ্রাদির বিকাশকারী এবং ভাব হইতে যাহা ঈষৎ প্রকাশক, তাহা হাব । হেলা যথা,—

“হাব এব ভবেচ্ছলা বাক্তঃ শৃঙ্গারসূচকঃ ।”  
 হাব যদি স্পষ্টরূপে শৃঙ্গারসূচক হয়, তবে তাহাকে হেলা বলে । শোভা যথা,—  
 “স শোভা রূপভোগাদৈর্ঘ্যং স্মাদম্বিতভূষণম্ ।”  
 রূপ ও ভোগাদিজনিত অম্বিতভূষণই শোভা । কাণ্ড যথা,—

“শোভৈব কান্তিরাখ্যাতা মন্থথাপ্যায়নোচ্ছলা ।”  
 মন্থথের পুষ্টিজনিত উজ্জ্বল শোভাকে কান্তি বলে । দীপ্ত যথা,—

“কান্তিরেব বয়োভোগদেশকালগুণাদিভিঃ ।”  
 উদীপিতাতা বস্তায়ং শ্রোত্রা চেদীপ্তরূচ্যতে ॥”  
 যৌবন, দেশ, কাল, ভোগ ও গুণাদি হেতু উদীপ্ত ও বস্তুত কান্তিকে দীপ্ত বলে । মাধুর্য্য যথা,  
 “মাধুর্য্যং নাম চেষ্টানাম সর্সাবস্থায় চাক্ততা ।”  
 সর্সাবস্থায় চেষ্টার চাক্ততাকে মাধুর্য্য বলে । প্রগল্ভতা যথা,—

“ানঃশঙ্কত্বং প্রায়োগেযু বৃথৈরুক্তা প্রগল্ভতা ।”  
 সম্ভোগে লিঃশঙ্কের নাম প্রগল্ভতা । ঔদার্য্য যথা,

“ঔদার্য্যং বিনয়ং প্রাহঃ সর্সাবস্থায়গতং বৃথাঃ ।”  
 সর্সাবস্থা গত বিনয়কে ঔদার্য্য বলে । ধৈর্য্য যথা,  
 “হিরা চিন্তোন্নতির্থা তু তটৈর্ঘামিত কীর্ত্যতে ।”

চিন্তোন্নতির স্থিরতাকে ধৈর্য্য বলে । লীলা যথা,  
 “প্রমায়করণং লীলা রম্যৈর্বেশক্রিয়াদিভিঃ ।”

রমণীয় বেশ ও ক্রিয়াদি দ্বারা প্রিয়ের অনু-  
 করণকে লীলা বলে । গতি, স্থান, আসন, মুখ ও নেত্রাদি কর্মসকলের শ্রিয় সঙ্গম জন্য যে তৎ-  
 কালিকবৈশিষ্ট তাহাকে বিলাস বলে । বিচ্ছিত্তি যথা,  
 “আকল্প করনান্নাপি বিচ্ছিত্তঃ কান্তিপোষকঃ ।”

বেশ রচনা অল্প হইলেও, যাহা দেহের কান্তি পোষণ করে, তাহা বিচ্ছিত্তি । কান্ত শ্রীপ্তিকালে

মদনাবেশ বশতঃ অস্থানে ভূষণাদির বিভ্রাসকে  
বিভ্রম বলে। গর্ক, অভিল্যুধ, রোদন, ঈষৎহাস্ত,  
অশ্রু, ভয়, ক্রোধ ও হর্ষ এই সকলের সম্বন্ধী-  
করণকে কিলকিঞ্চিত বলে। কান্তের স্মরণ ও  
বার্তাদি শ্রবণে কান্তবিষয়ক ভাবের ভাবনা লজ্জ  
দ্বারা অভিশাষের প্রকাশকে মোট্টামিত বলে।  
কান্ত শুন ও অধরাদি গ্রহণ করিলে, অন্তরে স্ত্রীতি  
হইলেও সমস্ত বশতঃ বাণিতের দ্বায় বাহে ক্রোধ  
প্রকাশকে কুট্টমিত বলে। কান্ত ও তদর্পিত বস্ত  
অভীষ্ট হইলেও, তাহাতে গর্ক ও মান হেতু অনা-  
দরকে বিবেক বলে। যাহাতে অঙ্গপ্রত্যঙ্গের  
ভঙ্গি সুকুমারতা এবং জ্বিলাদের মনোহরতা  
প্রকাশ পায়, তাহাকে ললিত বলে। লজ্জা, মান,  
ঈর্ষাদি দ্বারা যে স্থানে বিবক্ষিত বিষয় প্রকাশিত  
হয় না, তাহা বিকৃত।

মধুরত্বাদি চতুর্বিধ গুণগ্রাম রাধার  
পুষ্পমালা ॥ ৬১।৬৩ ॥

( ৭৩ পা ) 'সৌভাগ্যতিলক...আশ-  
পাশ ॥ এই ৬৭ ও ৬৮ পয়ারের ভাবার্থ।  
শ্রীরাধা সৌভাগ্যরূপ তিলকে উজ্জ্বলা।  
প্রেমবৈচিত্র্য যাহার হারের মধ্যমণি।  
তরল, হার। প্রিয়তমের নিকটে থাকিয়া  
প্রেমের উৎকর্ষতা বশতঃ প্রিয়মহ বিচ্ছেদ  
ভয়ে পীড়ার অনুভবকে প্রেমবৈচিত্র্য  
বলে। যৌবনরূপ প্রিয়সখীর স্বক্বেদশে  
শ্রীরাধা আপনার লীলারূপ করপদ্ম অর্পণ  
করিয়াছেন। কৃষ্ণলীলামনোরত্তিরূপা সখী  
শ্রীরাধার চারিপাশে রহিয়াছেন ॥ ৬৭।৬৮ ॥

( ৭৪ পা ) 'নিজাঙ্গ...কলেবর ॥'  
এই ৬৯ হইতে ৭১ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ।  
শ্রীরাধা কীর্তিস্বরূপ অন্তঃপুর মধ্যে গর্ক-  
রূপ পর্যাক্ষে আনন্দে শয়ন করিয়া সর্কদা  
কৃষ্ণগঙ্গ চিন্তা করেন। শ্রীকৃষ্ণের নাম

ও যশঃ শ্রবণই রাধার সুন্দর কর্ণভূষণ।  
শ্রীকৃষ্ণের নাম, গুণ ও যশের প্রবাহই  
রাধার মুখে বাক্যরূপে প্রবাহিত হয়।  
বিশেষগুণযুক্তা শ্রীরাধা শ্রীকৃষ্ণকে শৃঙ্গার-  
রস দ্বারা কন্দর্পমত্ততারূপ মধু পরিবেশন  
পূর্নক পান করাইতেছেন। রাধা শ্রীকৃষ্ণের  
বিশুদ্ধ প্রেমরূপ রত্নের আকর ও অনু-  
পম গুণদ্বারা পূর্ণ কলেবর ॥ ৬৯।১১ ॥

( ৭৪ পা ) 'কা কৃষ্ণস্মৃতি।' এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। 'কৃষ্ণের বিশুদ্ধ' এই পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক।

শ্রীরাধা কৃষ্ণপ্রণয়ের উৎপত্তি স্থান বলতে  
তিনি যে, প্রেমরত্নের আকর, তাহা অতিপদ  
হইল। অল্পপম গুণ, যে গুণের উপমা নাই;  
যাহা শ্রেষ্ঠ ব্যক্তিগণ প্রার্থনা করেন ॥ ৪০ ॥

( ৭৪ ) 'যাহার...জীব ছার ॥'  
এই ৭২ পয়ারের ভাবার্থ। শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি-  
গণ রাধার অনুপম গুণ প্রার্থনা "করেন,  
তাহা দেখাইতেছেন, "যাহার" ইতি।  
সত্যভামাদি সহিষীগণ যাহার সৌভাগ্য-  
গুণ ইচ্ছা করেন, ব্রজরামাগণ যাহার  
নিকট কলাবিলাস শিক্ষা করেন, লক্ষ্মী  
ও পার্কীতী যাহার সৌন্দর্য্যাদি গুণ কামনা  
করেন, অরুন্ধতী যাহার পাতিব্রতধর্ম  
ইচ্ছা করেন, তিনিই অনুপমগুণ। স্বয়ং  
শ্রীকৃষ্ণই যাহার গুণগণের সীমা পান  
না, ছার জীব কি করিয়া সেই রাধার  
গুণের ইয়ত্তা করিবেন ॥ ৭২ ॥

( ৭৪ পা ) 'প্রভু কহে...চরিত ॥'  
এই ৭৩ পয়ারের ভাবার্থ সরল। প্রভু  
কহিলেন, কৃষ্ণতত্ত্ব, রাধাতত্ত্ব, রগতত্ত্ব ও



প্রেমভক্ত জানিলাম । এক্ষণে উভয়ের বিলাসমহত্ত্ব বল । রায় কহিলেন, শ্রীকৃষ্ণ বিদক্ষ, কেলিনিপুণ ও নিশ্চিত্ত ধীরললিতাখ্য নায়ক । সর্বদা কামক্রীড়াই তাঁহার কার্য্য ॥ ৭৩ ॥

( ৭৪ পা ) “বিদক্ষ ইতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । এই শ্লোকে ধীরললিত নায়কের লক্ষণ বলিলেন ॥ ৪১ ॥

( ৭৪ পা ) “রাত্রিদিনে... ..ক্রীড়ারঙ্গে ॥” এই ৭৪ পয়ারের ভাবার্থ সরল । ধীরললিত নায়কের কার্য্য বলিতেছেন, “রাত্রি” ঠতি । শ্রীকৃষ্ণ রাত্রিদিন রাধার সহিত কুঞ্জমধ্যে বিহার করেন । এরূপ ক্রীড়াতেই তাঁহার কৈশোর বয়স সফল হয় ॥ ৭৪ ॥

( ৭৪ পা ) “বাচা স্মৃতিতেতি ।” এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৪৫ পৃষ্ঠায় দেখুন । শ্রীরাধার সহিত শ্রীকৃষ্ণ সর্বদা বিহার করেন তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ।

শ্রীকৃষ্ণে প্রকটরূপেই ধীরললিতত্বগুণ দেখা যায় । নাট্যশাস্ত্রজেরা ধীরললিতত্ববিষয়ে প্রায় কল্পকেই উদাহরণ দেন ॥ ৪২ ॥

( ৭১ পা ) “প্রভু কহে... ..আছাদিল ॥” এই ৭৫ পয়ারের ভাবার্থ । প্রভু কহিলেন, ইহাই শ্রীকৃষ্ণের প্রেমবিলাস সত্য, কিন্তু আরও যদি কিছু বলিবার থাকে, তাহা বল । রায় বলিলেন, ইহার পর আর বুদ্ধির গতি হয় না । উক্ত প্রেমবিলাসের বিবর্ত্ত বলিয়া যে এক সামগ্ৰী আছে, তাহা গুনিয়া তোমার সুখ হইবে

কি না জানি না ; কারণ উহা শক্তি ও শক্তিমানের অদ্বৈত ভাব ।

প্রেমবিলাস শব্দের অর্থ প্রেমবৈচিত্র্য বা প্রেমের বহির্বিলাস । বিলাস শব্দের অর্থ সমবায়িকারণের বিসদৃশকার্যের উৎপত্তি বা অন্যথাখ্যাতি অর্থাৎ তত্ত্বতঃ পৃথক্ না হইয়া অন্যরূপে প্রকাশ পাওয়া । বাহ্য কার্যের সহিত সমবেত হয়, তাহা সমবায়িকারণ । প্রেমবিলাসরূপ কার্যের সমবায়িকারণ শক্তিমান শ্রীকৃষ্ণ ও তাঁহার স্বরূপ-শক্তি শ্রীরাধার ক্রিয়াদি, এতদ্ব্যতিরিক্ত অন্তর্মুখতাই বিসদৃশকার্যের উৎপত্তি । অন্তএব প্রেমবিলাস-বিবর্ত্ত শব্দের অর্থ বহির্বিলাসের পুনরায় অন্ত-মুখতা । প্রেম প্রথমতঃ বহির্বিলাসে শ্রীপুরুষ ভেদভাবে প্রকাশিত হইয়া, পুনরায় অন্তর্মুখতার তদ্রূপের পঠৈর্য্যপ্রতিপাদক করেন । প্রেম স্বরূপে অবস্থিত হইয়াই যখন বিপ্রলম্বে বিরাগাভাসরূপে প্রদীয়মান হন, তখন প্রথমে শক্তি ও শক্তিমান ভিন্নভাবে প্রকাশিত পাইয়া আবার অভিন্নভাবেই প্রকাশ পান । প্রেমের যে অবস্থায় এইরূপ বৈপরীত্য ঘটে, সেই অবস্থাকেই প্রেমবিলাসবিবর্ত্ত বলে । অথবা মহাভাব রস দ্বারা উভয়ের যে অভিন্নতাব প্রকাশ, তাহা প্রেমবিলাস-বিবর্ত্ত । কেহ বলেন, সম্ভোগাত্মক বিলাসে উভয়ের যে ঐক্যতাব, তাহাই প্রেমবিলাসবিবর্ত্ত । তথাহি লগ্নাপবরভে,

“মিলিতমিদং কিল তচ্চুগুগলং

পুনরাপ ন কক্ষন ভেদম্ ।

বিষমশরাগুগকীলিতমেব ।

সবি গলিতচিরন্তনখেদম্ ॥”

মদনিকা কহিলেন, বিলাসে উভয় তত্ত্ব একরূপে মিলিত হইল যেন, উভয়ের কিঙ্কিমাত্র ভেদ লক্ষিত হয় নাই ; কন্দর্পের শর দ্বারা যেন কীলিত হইয়া রহিল ; ইহাতে উভয়ের চিরন্তন খেদ নষ্ট হইল । রায় প্রেমবিলাসবিবর্ত্তের একটি পদ গান করিলেন । ঐ গীতটি অচিৎ রক্তময় বলিয়া, প্রভু

প্রেমাবেশে হস্ত ধারা রায়ের মুখ আচ্ছাদন করিলেন। এই পরিচ্ছেদের শেষে "চৈতন্যের গুণতত্ত্ব জানি ইহা হইতে।" এই পয়ারাশুধারী প্রেম-বিলাসবিবর্ত্ত মুষ্টিটাই শ্রীচৈতন্য ইহা প্রতিপন্ন হইতেছে। "তদ্বয়ং চৈক্যামাশ্রমিত্যাদি। শ্লোকে শ্রীরাধাকৃষ্ণের ঐক্য মুষ্টিই শ্রীচৈতন্য, ইহা গ্রহণকার বলিয়াছেন। নিজতত্ত্ব প্রকাশ হইতেছে দেখিয়া রায়ের মুখ আচ্ছাদন করেন। কেহ বলেন, সমুদ্ভিন্ন শৃঙ্গারমুষ্টিই শ্রীচৈতন্য। রায়ের গীত পরে বলিতেছেন ॥ ৭৫ ॥

( ৭৫ পা ) "পহিলহি.....গেল ॥"

এই ৭৬ পয়ারের ভাবার্থ। রায়ের গীত যথা, "পহিলহি" ইত্যাদি।

কোন দিন মানাবসানে শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণ মিলিত হইয়া গমন করিলে, মানভঙ্গবিষয়ে শ্রীকৃষ্ণের সংশয় হয়। তাহাতে শ্রীকৃষ্ণ মনে করেন, আগত কলা কোন নিপুণা দূতীকে পাঠাইয়া শ্রীরাধার মান প্রসাদন করিব। ঐ রাত্রে শ্রীরাধা স্বপ্নে দেখেন, শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক প্রেরিতা দূতী আসিয়া কৃষ্ণের কথিত অনুনয় বাক্য বলিতেছেন। ইহা শুনিয়া শ্রীরাধা বলিতেছেন, "পহিলহি" ইতি।

পহিলহি, প্রথমে। রাগ, পূর্করাগ। নয়নভঙ্গ, নয়নভঙ্গী] হেতু। ভেল, হইয়াছে।

পূর্করাগ যথা—

রতির্থা সঙ্গমাৎ পূর্কং দর্শনশ্রবণাদিভা।

তুয়োক্রমীলতি প্রাট্ঠঃ পূর্করাগঃ স উচ্যতে ॥

যে রতি সঙ্গমের পূর্কং দর্শন ও শ্রবণাদি দ্বারা উৎপন্ন হইয়া নায়ক ও নায়িকার উন্মীলন অর্থাৎ বিভাবাদির মিশ্রণে আশ্বাসময়ী হয়, তাহাই পূর্করাগ। রসশাস্ত্রকারেরা বলেন,—

চক্ররাগঃ প্রথমং চিন্তাসঙ্গস্তোহং সঙ্গরঃ ।"

নয়নভঙ্গী দ্বারা প্রথমে চক্ররাগ উৎপন্ন হয়, পরে সঙ্গ নিমিত্ত চিন্তা, পরে মিলন বিষয়ে সঙ্গ

হয়। সন্দেহ হইতে পারে, প্রথমে মাধবের পূর্করাগ উৎপন্ন হয়, তাহাতে রাধার পূর্করাগ পূর্কং বর্ণিত হয় কেন? বাহার প্রথমে রাগ হয়, তাহারই বর্ণন অগ্রে হওয়া উচিত। তদন্তর, যদিও মাধবের রাগ প্রথম উৎপন্ন হয়, তথাপি রাধার রাগ বর্ণিত হইলে চাক্তার আধিক্য হয়। কারণ, যদিও বয়ঃসন্ধির আরম্ভে ভাবের প্রথম বিক্রমার পর স্ত্রী ও পুরুষের পরস্পর অধেষণ সম্ভব হয়, তাহা হইলেও লজ্জা, ধৈর্য ও কুলাচারাদি দ্বারা আবৃত্তা স্ত্রীর পুরুষের প্রতি সহসা পূর্করাগ প্রকট হয় না। ধৈর্য ও লজ্জাদি পুরুষের আবরণক না হওয়ার, প্রথম চিন্তের বিক্রম্যতেই প্রায় পুরুষ দ্বারা স্ত্রীগণ অধেষিত হওয়ার পুরুষের পূর্করাগ প্রকট হয়। স্ত্রীগণের প্রেমের আধিক্য থাকার প্রেম হইতে লজ্জাদির নিবারণ হয়। অতএব শ্রীরাধার পূর্করাগই প্রথমে বর্ণিত হওয়া উচিত। অথবা, ভক্তিশাস্ত্রে ভক্তিকেই রস বলে; যেহেতু ঐ রস ভক্তকে আশ্রয় করিয়া প্রকাশ পায়। ভগবানের রাগ ভক্তরাগের পশ্চাৎ জন্মায়। ব্রজদেবীগণ ভক্তের অবধি স্থান বলিয়া, তাঁহাদের প্রথম পূর্করাগ হওয়া উচিত।

অনুদিন বাঢ়ল, প্রতিদিনই রুক্ষি পাঠিতে লাগিল। অবধি, শেষ। না গেল, প্রাপ্ত হইলাম না অর্থাৎ হে সখি, প্রথমে নয়নভঙ্গী দ্বারা লালসা, উদ্বেগ, জাগর্য্যা, তানব, জড়তা, ব্যগ্রতা, ব্যাধি, উন্মাদ ও মোহাদিময় পূর্করাগ প্রকাশিত হইয়া উত্তরোত্তর পরিপাকে ভাবের পরাকাষ্ঠা মহাভাবে পরিণত হইল ॥ ৭৬ ॥

( ৭৫ পা ) "না সো:.....বিচুরল

জানি ॥" এই ৭৭ পয়ারের ভাবার্থ। যদি বল, প্রেম যখন মহাভাবে পরিণত হইল, তখন তাঁহার অবধি পাওয়া গেল।

“তাঁহার অবধি পাইলাম না” এরূপ কথা শ্রীরাধা বলেন কেন? তদুত্তর, শ্রীরাধা যে উহার অবধি পান নাই, তাহার কারণ বলিতেছেন, “না সো” ইতি। সো, তিনি অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ। রমণ, পতি। হাম, আমি। রমণী, পত্নী। হে সখি, সেই অবস্থায় আমাদের স্ত্রী ও পুরুষ ভেদভাব না থাকায়, তদবস্থায় অবধি প্রাপ্ত হই নাই। যখন আমাদের ভেদভাব রহিল না, আমাদের অভেদভাব জানিয়া, তখন মনোভব (কন্দর্প) উভয়ের মন পেষণ করিয়া একীভূত করিল।

তাগবন্তের “অম্মাভুন্তেতি” প্রথম শ্লোকের ব্যাখ্যায় কৃষ্ণসন্দর্ভে জীবগোশ্বামী বলিয়াছেন,—

“পরম্পরং বিলাসাদিতিরনবরতম মহাভাবরসেন বা পরম্পরমভিন্নতাং গন্তরোরৈক্যম্ ॥”

শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণ পরম্পর সর্বদা বিলাসাদি দ্বারা বা মহাভাবরসের দ্বারা পরম্পর অভিন্নতাকে প্রাপ্ত হইয়া উভয়ে একীভূত হইয়াছিলেন। লোচন দাস বলিয়াছেন,—

“নিধুবনে মাতল, তহু তহু মিলল,  
টুটল চিরস্তন খেদ।

মনসিজ বিশিধ, খিল যহু লাগল,  
তহু তহু লখই না ভেদ ॥”

সো সব, সেই সমস্ত। প্রেম কাহিনী, প্রেমের কার্য্য। কানুঠামে, শ্রীকৃষ্ণের নিকট। কহবি, বলিবে। বিছুরল, ভুলিয়াছেন। জানি, জানিয়া অর্থাৎ এ সব কথা শ্রীকৃষ্ণ ভুলিয়া গিয়াছেন জানিয়া, তোমায় বলিতেছি, তুমি তাঁহার নিকট এ সব বলিবে ॥ ৭৭ ॥

(৭২ পৃা) “না খোজলু... ..এছন রীতি। এই ৮ পয়ানের ভাবার্থ।

যদি বল; তোমাদের এরূপ মিলন কে ঘটাইল? তদুত্তরে বলিতেছেন, “না” ইতি। না খোজলু অর্থাৎ আমাদের রাগাবস্থায় মিলনের জন্য দৃষ্টী অথবা অস্ত্র কাহাকেও অশেষণ করিতে হয় নাই। মদত, মধ্যস্থ। পাঁচবাণ, কাম অর্থাৎ সেকালে আমাদের মনের একতা সম্পাদন কর্তা মধ্যস্থ হইয়া, উভয়ের মিলন ঘটাইয়াছিল।

এই কাম, প্রাকৃত কাম নহে, পরম প্রেম। উহা কাম হইলেও তদ্বরূপ। অস্ত্রখা তদ্বপনের বৈষম্যাপত্তি হয়। এক্ষণে জিজ্ঞাস্য, এই স্বাভাবিক প্রেমের হেতু কে? তদুত্তর, যোগমায়া। গ্রহকার বলিয়াছেন,—

“মো বিষয়ে গোপীগণের উপপত্তি ভাবে।

যোগমায়া করিবেন আপন প্রভাবে ॥” ইত্যাদি।

“যোগযুক্তা মায়া যোগমায়া”—পরার্থাটীত্যা-শক্তি। শ্রীকৃষ্ণ অচিন্ত্যশক্তির আশ্রয় হওয়াতে, তাঁহার নিজ-পাদপদ্মের প্রেমসম্পত্তিবিস্তাররূপ সত্যস্বভাব প্রকাশ পাইতেছে। অতএব হে সখি, শ্রীকৃষ্ণের তাদৃশ স্বভাবই আমাদের মিলনহেতু। অথবা, “যোগায় মায়ঃ শব্দো যুক্তাঃ সা যোগমায়া” বংশী। এই অর্থে প্রিয়সখী বংশীই আমাদের মিলনের কারণ। ইত্যাদিরূপে মনীষিগণ সংলগ্ন করিয়া লইবেন।

অব, এইক্ষণে। সোই, শ্রীকৃষ্ণ বা নিজ-পাদপদ্মের প্রেমসম্পত্তিবিস্তাররূপ সত্যস্বভাব। বিরাগ, প্রেমশূন্য বা তাদৃশ স্বভাবের ব্যতিক্রম। তহু, তুমি। ভেলি, হইলি। সুপুরুষ প্রেমক, সুপুরুষের প্রেমের। হে সখি, এক্ষণে শ্রীকৃষ্ণের বিরাগাবস্থায় তোমাকে দৃষ্টী হইতে হইল। সুপুরুষের প্রেমের রীতি, এই-

রূপই বটে অর্থাৎ মিলন বিষয়ে কপটতা প্রকাশ করা প্রেমের ধর্ম ॥ ৭৮ ॥

( ৭৫ পা ) “রাধয়া ইতি” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য । “পহিলহি” এই পয়ারে শ্রীরাধাকৃষ্ণের যে প্রেমবিল্যাস-বিবর্ত উক্ত হইয়াছে, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ।

কোন কুলে পরম্পরের মাধুর্য্য-আস্বাদনে নিমগ্ন ও উদীপ্তসাম্বিকভাবে অলঙ্কৃত শ্রীরাধাকৃষ্ণের অমৃত মহাভাবমাধুরী অনুমান করিয়া বৃন্দাদেবী শ্রীকৃষ্ণকে এই শ্লোক বলেন । শৃঙ্গার-রসই শিরী এবং শরীর কণ্ঠেতে পটু ; ইহা বলাতে উভয়ের রতি সুস্পষ্ট হইল । “শ্রীরাধা ও তোমার” এই সূচনা দ্বারা উভয়ের ঔপন্যাসিক বশতঃ শোকধরনিন্দার অনবকাশ প্রযুক্ত তোমাদের প্রেম সূচিত হইতেছে । পরম্পরের চিত্তই জড় ( গালা ), প্রেমরূপ তাপে দ্রবীভূত হয়, এই বাক্যে মেহ প্রকাশ পাইতেছে । প্রেম দ্বারা চিত্ত দ্রবীভূত হইয়া একীভাবরূপে মিলিত হয় বলাতে, প্রণয় সূচিত হইতেছে । প্রণয় ক্রমেক্রমে বর্ধিত হইয়া স্বাম্যভাবে প্রকাশ করার মান সূচিত হইতেছে । উভয়ের তেজস্বয় বৈরুপে নির্দ্বন্দ্বিত হয়, সেইরূপে একত্বীকরণ হেতু, উভয়ের অসখ্য প্রকাশ পাইতেছে । গোবর্দ্ধনপর্কতাদি নিকুল সকলে তুমি কুলরপতি, এই স্বোধানে “তুমি মহাগজেন্দ্রে তুলা লীলাশালী” ইহা বোধিত হইতেছে এবং তোমার অক্ষয় চরণধরের পর্কত-গহ্বর কুঞ্জাদিতে পরম্পর মিলন নিমিত্ত রাত্রিদিন অভিযাত্রকারি যে তোমরা দুইজন যুবক ও যুবতী, তোমাদের কষ্টও সুখজনক বলিয়া রাগ সূচিত হইতেছে । নিত্যান্তমত্বরূপে ভাগমান রাগই হিঙ্গুলরাশি, এতদ্বারা স্নেহরাগ প্রকাশ পাইতেছে । হিঙ্গুলের ভাষ রক্তবর্ণ রক্তের অন্তর্কর্ষি হিঙ্গুলাকারণ উভয়চিত্তের মহাভাবকারণ, অমুরাগোৎকর্ষের

স্বসংবেদ্য, ব্রজাওহ তক্তজননের অন্তঃকরণে বিশ্বাসপ্রাপ্তির অস্ত মহাভাবের ক্রিয়াক্রান্ত ( ভেদ ভাব ) অনুভবনীয় ; এতদ্বারা যাবদাশ্রয়বৃত্তি উক্ত হইল । এইরূপে উত্তরোত্তর উদাহরণ সকলে মহাভাবের চিহ্নসকল কখন পৃথক পৃথকরূপে কখন সম্পূর্ণরূপে বোধিত হয় । মহাভাবে পরম্পরের অভিন্নত্ব হেতু, এই মহাভাবে অন্যের অপ্রবেশ বশতঃ ইহার স্বসংবেদ্য দশা বলিলেন ॥ ৩৩ ॥

( ৭৫ পা ) “প্রভু কহে... .. হইয় গোচর ॥” এই ৭৯ ও ৮০ পয়ারের ভাবার্থ সরল । “প্রভু” ইতি । সাধ্য বস্তুর ( প্রেমের ) ইহাই অবধি বটে । আমি তোমার প্রমাদে প্রেমাবিলাস-বিবর্তকেই সাধ্যবস্তুর অবধি বলিয়া জ্ঞানিলাম । সাধন ব্যতীত সাধ্যবস্তুর লাভ হয় না । অতএব তাদৃশ সাধ্য-বস্তুর লাভের উপায় যাহা, তাহাই বল । “অত্যন্ত রহস্য” ইতি । প্রেম সাধনের রহস্য অতি গূঢ় । যদি বল, গূঢ় কিম্বা ? তদুত্তর, “রাধাকৃষ্ণের” ইত্যাদি শ্রীরাধাকৃষ্ণের গূঢ়তর লীলা দাগ্যবাৎসল্যাদি ভাবের অগম্য ॥ ৭৯৮০ ॥

( ৭৫ পা ) “সখে এক... ..নাহিক উপায় ॥” এই ৮১ ও ৮২ পয়ারের ভাবার্থ । সবে এক, কেবল একমাত্র । ইহা, এই রাধাকৃষ্ণলীলায় । সখী লীলা-বিস্তারিণী অর্থাৎ সখীগণই লীলা বিস্তার করিয়া সখীগণই আশ্বাদন করেন । সখীগণ কিরূপে লীলারস আশ্বাদন করেন, তাহা “সখীর স্বভাব” ইত্যাদি পয়ারে ব্যক্ত হইবে । এই লীলায় এক সখী ব্যতীত অন্যের গতি ( প্রবেশ ) হয় না । যিনি সখীভাবে সখীর অনু-

পশু হইয়া উজ্জন করেন, তিনিই শ্রীরাধা-  
কৃষ্ণের কৃষ্ণসেবারূপ সাধ্যবস্তু লাভ  
করেন ।

তথাহি ব্রহ্মসংহিতায় ৫৫ শ্লোকে,—

“যং ক্রোধকামসহজপ্রণয়াদভীক্তি-  
বাৎসল্যমোহগুরুগৌরবসেবাভাটবঃ ।

সক্ষিণ্য তস্ত সদ্গুণীঃ তনুমাপুরতে  
গোবিন্দমাদি পুরুষং তমহং ভজামি ॥”

শ্রীকৃষ্ণের প্রতি ক্রোধভাব, কামভাব, সখ্য-  
ভাব, ভীতিভাব, বাৎসল্যভাব, মোহভাব, গৌরব-  
ভাব ও সেবাভাব; এই সকলের মধ্যে ভক্তগণ  
যে কোন ভাবে ভজনা করিলে, তিনি নিজের  
ভজনাত্মরূপ দেহ পান অর্থাৎ যিনি ভক্তকে তাঁহার  
ভাবনাত্মরূপ দেহ দেন, সেই আদিপুরুষ গোবি-  
ন্দকে ভজনা করি। অতএব সখীর অমুগত  
ভজনে সখী হয়। সখী যথা,—

“প্রেমলীলাবিহারপাৎ সমাধিত্তারিকা সখী ॥”

প্রেম লীলা ও বিহারাদির বিস্তারকারিণীকে  
সখী বলে। সখীর ভেদ উজ্জ্বলে দেখিবেন।  
কেহ বলেন, সখীগণের ভাব বাহাদের হইয়াছে,  
তাহারা আপনাকে রাগামুগা সখী বলিতে পারেন ;  
নচেৎ তাদৃশভাব বাহাদের উৎপন্ন হয় নাই,  
তাহারা আপনাকে সখী বলিয়া মানিলে “জহং  
গ্রাহোপাসনা” হয়। যেহেতু গোপীগণ শ্রীকৃষ্ণের  
হ্লাদিনীশক্তির কার্যাত্মরূপ। অতএব আমি  
কৃষ্ণ বলিলেও যে দোষ, আর আমি গোপী বলি-  
লেও সেই দোষ। তাদৃশ ভাব যদি সয়ং গ্রহা-  
বিষ্টের ছায় গোপী অভিমান করার, তবে কোন  
দোষ হয় না। পরন্তু গুণই সম্পাদন করে। যেমন  
ভাবশূন্য রাজা আপনাকে বিষ্ণু বলিয়া অভিমান  
করার নরকগামী হন, কিন্তু গ্রহাবিষ্টের ন্যায় ভাবা-  
বিষ্ট প্রহ্লাদ মহাশয় “আমি কৃষ্ণ” বলার সাধুগণের  
শিরোভূষণ করেন। অতএব আমি কবে সখী-  
গণের অমুগত হইরা রাধাকৃষ্ণের কৃষ্ণসেবা পাইব,

এরূপ লোভ করিলে এবং গুরুকৃষ্ণের কৃপা  
হইলে ভাগ্যদ্বারে সখীভাব পাইতে পারে ;  
নচেৎ উহা হইবার নহে। জাতরতি ভক্তের ঐ  
ভাব ঘটে। অজাতরতি সাধকের কেবল উহার  
প্রার্থনাই কর্তব্য। এই সাধকের জন্য নরোত্তম  
ঠাকুর বলিয়াছেন,—

“কবে যুবতীহুপুরে, আহিরীপোপের ঘরে,  
তনয়া হইরা জনমিব ॥” ইত্যাদি ।

গ্রহকারণ বলিয়াছেন,—

“অধিকারী নহে, চাহে ধর্ম আচরিতে ।

অচিরে বিনাশ পায় নাচিতে গাইতে ॥”

অতএব অজাতরতি সাধকের সখীভাব প্রকাশ  
নিজের সর্কনাশ করা। ইহাতে প্রতিশয় হইল,  
রাগমার্গে জাতরতি ভক্তেরই সখীভাব লাভ হয়,  
অন্যের হয় না। যতদিন জাতরতি উৎপন্ন না  
হয়, ততদিন অন্য সাধনানুষ্ঠান দ্বারা ঐ রতির  
জন্য সাধন করিবেন ॥ ৮১।৮২ ॥

( ৭৩ পা ) “বিভুরপীতি ।” শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
“সখী বিষ্ণু” এই পয়ার প্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ৪৪ ॥

( ৭৩ পা ) “সখীর স্বভাব.....কোটি  
সুখ পায় ॥” এই ৮৩ ও ৮৪ পয়ারের  
ভাবার্থ সরল। সখীগণ কর্তৃক লীলা  
বিস্তার বলিতেছেন, “সখীর” ইতি।  
সখীগণের অকথ্য ( অশ্চর্য্য ) স্বভাব  
এই যে, তাঁহাদের শ্রীকৃষ্ণের সহিত নিজ-  
লীলায় মন নাই। তাঁহারা শ্রীকৃষ্ণের  
সহিত শ্রীরাধার লীলা করাইয়া যে সুখ  
লাভ করেন, তাহা নিজলীলার সুখ  
হইতে কোটিগুণ অধিক। শ্রীরাধার  
স্বরূপ বলিতেছেন. “রাধার” ইতি।  
শ্রীরাধা শ্রীকৃষ্ণশ্রেম-লতা স্বরূপ। সখী-

গণের স্বরূপ বলিতেছেন, “সখীগণ” ইতি । সখীগণ ঐ রাধারূপা প্রেমকল্প-লতার কেহ পল্লব, কেহ পুষ্প; অতএব শ্রীকৃষ্ণলীলামৃত দ্বারা যদি ঐ লতাকে সেচন করা হয়, নিজসুখ হইতে পল্লবদির কোটিগুণ সুখ হয়। ইহাই সখীগণের লীলা আশ্বাদনের প্রকার ॥৮৩৮৪॥

( ৭৬ পা ) “সখ্য ইতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। সখীগণের শ্রীকৃষ্ণের সহিত নিজলীলায় মন নাই, কিন্তু শ্রীরাধার লীলা করাইয়া, তাঁহারা কোটিগুণ সুখ অনুভব করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥৪৫॥

( ৭৬ পা ) “যদ্যপি...কাম নাম ॥” এই ৮৫ ও ৮৬ পয়ারের ভাবার্থ । কৃষ্ণে প্রেরি, কৃষ্ণের নিকট প্রেরণ করিয়া । আনন্দকৃষ্ণ সঙ্গ হইতে ইত্যাদি, শ্রীরাধা স্বয়ং কৃষ্ণের সহিত লীলা করিয়া কৃষ্ণের ২.খ সম্পাদন করতঃ যে আনন্দ লাভ করেন, সখী দ্বারা কৃষ্ণসুখ সম্পাদন করিয়া নিজাপেক্ষা কোটিগুণ সুখ অনুভব করেন। অত্যাশ্চ (এইরূপ পরস্পর) বিশুদ্ধ প্রেমে রসের পোষণ হয়। শ্রীকৃষ্ণ তাদৃশ প্রেম দেখিয়া তুষ্ট হন। যদি বল, গোপীর কামক্রীড়া থাকায়, উহাকে কামই বলা ইউক? ততুত্তর, “সহজে” ইতি।

যখন আপনা হইতে পরিবারে, পরিবার হইতে প্রতিবেশীমণ্ডলে, প্রতিবেশীমণ্ডল হইতে গ্রামে, গ্রাম হইতে দেশে, দেশ হইতে ভূমণ্ডলে প্রেম প্রস্তুত হইলে প্রাকৃত প্রেম পূজ্য হইয়া থাকে, ভগবৎপ্রেমও শাস্ত হইতে দান্তে, দান্ত হইতে

সখ্যে, সখ্য হইতে বাৎসল্যে, বাৎসল্য হইতে কান্ত্যভাবে প্রস্তুত হইয়া পূজ্য হইয়া থাকে, তখন বৈবরিক প্রেমের স্থান, ভগবৎপ্রেমও বিবর ও আশ্রয়ের মহত্ব অনুসারে পূজ্য না হইবে কেন? গোপীপ্রেমে সেই মহত্ব সীমান্তপ্রাপ্ত হইয়াছে। মহত্বের সীমান্তপ্রাপ্ত গোপীপ্রেম যতাবতঃ অপ্রাকৃত। “অপ্রাকৃত হইলেও প্রাকৃত কামক্রীড়ার সহিত সাম্য বশতঃই গোপীপ্রেমকে কাম বলা হয় ॥ ৮৫৮৬ ॥

( ৭৭ পা ) “প্রোমৈবেতি ।” এই শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৫০ পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য্য ভাবার্থ ব্যাখ্যায় ১৯৪ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। “কামক্রীড়া” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪৬ ॥

( ৭৭ পা ) “নিজেশ্রিয়... ...সঙ্গম বিহার ॥” এই ৮৭ পয়ারের ভাবার্থ। কামের নিজেশ্রিয়-সুখেই তাৎপর্য্য; আর গোপীপ্রেমের কৃষ্ণসুখেই তাৎপর্য্য। গোপীগণের নিজেশ্রিয়-সুখে বাঞ্ছা দৃষ্ট হয় না। তাঁহারা শ্রীকৃষ্ণের সুখের নিমিত্তই তাঁহার সহিত বিহার করিয়া থাকেন।

পরকীয়াতাব কুলবধুগণকে পরম মর্যাদাস্বরূপ স্বজন ও আর্ধ্যপথ হইতে ভ্রষ্ট করিয়া অত্যন্ত দুঃখ প্রদান করে। অতএব গোপীগণ যখন স্বজন ও আর্ধ্যপথ ত্যাগ করিয়া দুঃখের পরম কাঠাকে সুখ বলিয়া শ্রীকৃষ্ণের সহিত সখ্য করিয়াছেন, তখন গোপীপ্রেম যে শ্রীকৃষ্ণসুখ জন্যই তাহাতে আর সন্দেহ নাই। অতের কথা দূরে থাকুক, এ প্রেম মহিবীগণেও সম্ভব হয় না। অতএব উহা অপ্রাকৃত ॥ ৮৭ ॥

( ৭৭ পা ) “যন্তে সুজ্ঞাত্তেতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৫০

পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ১২৭ পৃষ্ঠায় দেখুন। “কৃষ্ণে সুখ” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪৮ ॥

( ৭৭ পা ) “সেই... ..ব্রজেশ্ব-  
নন্দন ॥” এই ৮৮ ও ৮৯ পয়ারের  
ভাবার্থ। ঈদৃশ গোপীভাবরূপ অমুতে  
যাহার লোভ হয়, তিনি লোকধর্ম ও  
বেদধর্ম ত্যাগ করিয়া শ্রীকৃষ্ণকে ভজন  
করেন। যিনি রাগানুগামার্গে শ্রীকৃষ্ণের  
ভজন করেন, তিনিই ব্রজে ব্রজেশ্ব-  
নন্দকে প্রাপ্ত হইলেন। যাহার গোপী-  
ভাবে প্রগাঢ় লোভ হয় নাই, তিনি বেদ-  
ধর্ম ত্যাগ করিতে পারেন না। কেহ  
কেহ দৈন্যবশতঃ আপনাকে তাদৃশ  
অধিকারী বোধ না করিয়া যে কর্ম-  
কাণ্ডের অনুষ্ঠান করেন, তাহা ভক্তি-  
শাস্ত্রবিহিত জানিতে হইবে। যেহেতু  
ঐরূপ কর্মের অনুষ্ঠানে লোভ রুদ্ধিই  
পাইয়া থাকে ॥ ৮৮।৮৯ ॥

( ৭৭ পা ) “ব্রজলোকের...ব্রজেশ্ব-  
নন্দন ॥” এই ৯০ পয়ারের ভাবার্থ।  
ব্রজলোকের; ব্রজের লোক যথা, সখ্য-  
ভাবের ভক্ত সুবলাদি, বাৎসল্যের ভক্ত  
শ্রীনন্দাদি ও মধুরের ভক্ত শ্রীরাধাদি।  
ইহাদের কোন একটি ভাব লইয়া ভজনই  
রাগানুগামার্গের ভজন; তন্মধ্যে গোপী-  
ভাবই শ্রেষ্ঠ। এরূপ ভজনকারী ব্যক্তিই  
অন্তে ভাবযোগ্য দেহ লাভ করিয়া,  
ব্রজে ব্রজেশ্বনন্দন শ্রীকৃষ্ণকে প্রাপ্ত  
হইলেন। ভাবসিক্ত হইলে তরুণযুক্ত দেহে  
আবেশ হয়, প্রেমের পরিপাকে দেহ  
প্রাপ্ত হইয়া অতীষ্ট সেবা করিতে প্রবৃত্ত

হয়। ভাবযোগ্য দেহে শ্রীকৃষ্ণ লাভ  
হয়, তাহার প্রমাণ দিতেছেন, “তাহাতে”  
ইতি। শ্রুতিচরী দেবীগণ রাগানুগামার্গে  
ভজন করিয়া ভাবযোগ্য গোপীদেহ  
পাইয়া ব্রজে শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করেন ॥৯০॥

( ৭৭ পা ) “নিভৃতমরুদিতি।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। শ্রুতিগণ যে রাগানুগামার্গে ভজন  
করিয়া ভাবযোগ্য দেহ ও শ্রীকৃষ্ণসেবা  
পান, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক। অতএব  
রাগমার্গ ব্যতীত ব্রজে কৃষ্ণপ্রাপ্তি হয় না।

বৃহদামনে উক্ত হইয়াছে—

“ব্রহ্মানন্দময়ো লোকো ব্যাপী বৈকুণ্ঠগঞ্জিতঃ।  
তলোকবাগী তজবৈঃ স্ততো বেদৈঃ পরাংপরঃ ॥”  
চিরং স্তত্যা তত স্বষ্টরপরোক্ষং প্রাহ তান্ গিরা।  
তুষ্টিশ্চ ত্রত, ভো প্রাজ্ঞা বরং যন্ননসেপ্সিতস্ ॥

শ্রুতয় উচুঃ—

কন্দর্পকোটিগাংগো স্বসি দৃষ্টে মনাংসি নঃ।  
কামিনীভাবমাশাঙ্ক স্মরকুকা ন সংশয়ঃ ॥  
যথা স্বলোকবাসিন্যঃ কামভবেন গোপিকাঃ।  
ভজন্তি রমণং কৃশা চিকীর্ষাজনি নস্তথা ॥” ইত্যাদি  
অর্থাৎ সর্বব্যাপক ব্রহ্মানন্দময় বৈকুণ্ঠে বেদ-  
গণ বহুকালব্যাপী স্তব করিলে, ভগবান্ বলিলেন,  
তোমরা বর গ্রহণ কর। শ্রুতিগণ কহিলেন, হে  
প্রভো! কন্দর্পকোটিগাংগায়ুক্ত তোমাকে দর্শন  
করিয়া, আমাদের চিত্ত রমণীভাবকে প্রাপ্ত হইয়া  
কামমোহিত হইল। তোমার লোকবাসিনী  
গোপীগণ যেমন তোমাকে পতিরূপে ভজন করে,  
ভজনভাবে তোমাকে ভজনা করিতে আমাদের  
বাসনা হইতেছে। শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, আগামী  
স্মরণকালে তোমরা গোপী হইবে। পল্পুরাণে  
পরমমুখ্যা গায়ত্রীও গোপীদেহ প্রাপ্তি উক্ত হই-  
য়াছে। অতএব রাগমার্গে শ্রুতিপদের ভজন  
সিদ্ধান্ত হইল ॥ ৪৮ ॥

( ৭৭ পা ) "নমদৃশ... কৃষ্ণচন্দ্র ॥"

এই ৯১ পয়ারের ভাবার্থ। সেইভাবে, গোপীভাবে। সমা, গোপীগণের স্মার দেহপ্রাপ্তি। কৃষ্ণসঙ্গানন্দ, কৃষ্ণের সঙ্গ জন্ম আনন্দ অর্থাৎ স্পর্শমাধুর্য। পূর্বে শ্লোকোক্ত "সমাঃ নমদৃশো ইহার অর্থ করিলেন। বিধিমার্গে ভজন করিয়া ব্রজে শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করা যায় না ॥ ৯১ ॥

( ৭৮ পা ) "নায়মিতি ।" শ্লোকের

ভাবার্থ শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। "বিধিমার্গে নাহি" ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক। "ইহভক্তিগত্যং" অর্থাৎ শ্রীমশোদায় ইহা উপলক্ষিত, বাৎসল্য, মথ্য, কান্ত্যভাবাশ্রয় ব্রজশ্লোকের যে শ্রীকৃষ্ণ ভক্তি; সেই ভক্তিবিশিষ্ট ব্যক্তির মথ্যে শ্রীকৃষ্ণ সুখলভ্য। ব্রজশ্লোকের যে ভক্তি, তদ্বিশিষ্ট বলিলেই, রাগানুগা-মার্গে বুঝাইতেছে ॥ ৯২ ॥

( ৭৮ পা ) "গতএন... ব্রজেন্দ্র-

নন্দন ॥" এই ৯২ ও ৯৩ পয়ারের ভাবার্থ। অতএব, বিধিমার্গে কৃষ্ণকে পাওয়া যায় না, এই হেতু। এখানে জাতরতি ভক্তের ভাবগিদের এবং রাগ-মার্গে প্রবেশের কথা বলিতেছেন, "গোপীভাব করি" ইত্যাদি।

দিন গোপীভাব গ্রহণ করিয়া রাত্রিদিন শ্রীরাধাকৃষ্ণের বিহার চিন্তা করেন, যিনি নিজের শিরদেহ ভাবনাস্তর ঐ দেহে অবস্থিত হইয়া শ্রীরাধা-কৃষ্ণের সেবা করেন, তিনিই সখীভাবে শ্রীরাধা-কৃষ্ণের চরণ লাভ করেন। যেমন ছুঁসিনাস্রয় প্রকৃষের পাপ করিতে ইচ্ছা না থাকিলেও, তাহার বাসনা তাহাকে পাশে নিযুক্ত করে; তজপ সাধক দৈন্যবশতঃ আপনাকে অনধিকারী বোধ

করিলেও, ভাব বলপূর্বক তাহাকে গোপী ভাব-বিষ্ট করে। সূর্য্যকান্ত-মণি যেমন সূর্য্যের অনুগত হইয়া তেজঃ ধারণ করতঃ দাহাদিকার্য্য করে; তজপ সাধক গোপীর অনুগত হইয়া তাঁহার ভাব ধারণ করতঃ শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করেন। অতএব গোপীর অনুগতি ব্যতিরেকে কেবল ঐশ্বর্য্যজ্ঞানে ভজন করিলে ব্রজে শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করা যায় না। স্বয়ং লক্ষ্মীদেবী তাহার দৃষ্টান্ত। লক্ষ্মীদেবী ঐশ্বর্য্য-জ্ঞানে ভজন করিয়াও গোপীর অনুগতি ব্যতিরেকে শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করিতে পারেন নাই। ফলকথা, গোপীভিন্ন গোপীশ্রেম আছে কেহ দিতে পারে না ॥ ৯২-৯৩ ॥

( ৭৮ পা ) "নায়মিতি ।" শ্লোকের

টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ৬৮পৃষ্ঠায় দেখি-বেন। "তথাপি না পাইল" এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫০ ॥

( ৭৮ পা ) "এত শুনি... কথ্য

পরস্পরে ॥" এই ৯৪ হইতে ৯৬তম পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ মরণ। এত শুনি, পূর্নোক্ত সাধন প্রকার শুনিয়া। তারে, রায়কে। গলাগলি ক্রন্দনটী শ্রেণের ক্রন্দন। জ্ঞানের তুমি মীমা অর্থাৎ তুমি রসজ্ঞ। জীব, বাঁচিব। গোষ্ঠী, সভা ॥ ৯৪-৯৬ ॥

( ৭৮ পা ) "প্রভু কহে... মুক্ত

শিরোমণি ।" এই ৯৭ ও ৯৮ পয়ারের ভাবার্থ। প্রভু কহিলেন, আঠার প্রকার বিদ্যার মধ্যে কোন বিদ্যা শ্রেষ্ঠ ?

আঠার প্রকার বিদ্যা যথা, বিষ্ণুপুরাণে,—

"অঙ্গানি বেদাশ্চত্বারো মীমাংসা স্মারবিস্তরঃ ।

ধর্ম্মশাস্ত্রঃ পুরাণঞ্চ বিদ্যা স্বেতে চতুর্দশঃ ॥

আয়ুর্কেন্দো ধর্ম্মকেন্দো গন্ধর্ষশ্চৈতি তে ত্রয়ঃ ।

অর্থশাস্ত্রঃ চতুর্থঞ্চ বিদ্যা হ্যষ্টাদশৈব তাঃ ॥"



শিক্ষা, কল্প, ব্যাকরণ, নিকরুত, জ্যোতিষ, ছন্দ, ঋক্, যজুঃ, সাম ও অথর্কবেদ, মীমাংসা, শ্রায়, ধর্মশাস্ত্র, পুরাণ, আয়ুর্বেদ, ধর্মুর্বেদ; গর্কর্কবেদ ও অর্থশাস্ত্র ।

রায় কহিলেন, শাস্ত্রজ্ঞান ব্যতীত যথাযথ ভক্তিস্বরূপ জানা যায় না বলিয়া, কৃষ্ণভক্তিপ্রতিপাদকশাস্ত্র অভ্যাগই যথার্থ বিদ্যা ।

তথাহি শ্রুতিঃ,—

“বজ্রজ্ঞাতে ভবেজ্ঞাতম্ ।”

যে কৃষ্ণভক্তি জানিলে সমস্ত জানা যায়, তাহাই প্রকৃতবিদ্যা ।

প্রভু কহিলেন, দানাদিপ্রভবা কীর্ত্তি-গণ মধ্যে জীবের কোন কীর্ত্তি শ্রেষ্ঠ ? রায় কহিলেন, কৃষ্ণভক্ত বলিয়া জীবের খ্যাতিই শ্রেষ্ঠ ।

কেন না, দানাদিপ্রভবা কীর্ত্তিতে জীবের অহঙ্কার উৎপন্ন হয় এবং তজ্জন্ম স্থানভ্রষ্টও হয়; যথা, হরিশ্চন্দ্রাদি রাজাগণ । কৃষ্ণভক্তকীর্ত্তিতে দৈন্য-ভাব থাকায়, অপরূপ অহঙ্কার উৎপন্নই হইতে পারে না এবং ভক্তস্থান হইতে জীব ভ্রষ্ট হয় না । অতএব কৃষ্ণভক্ত বলিয়া খ্যাতিই শ্রেষ্ঠ কীর্ত্তি ।

প্রভু কহিলেন, জীবের ঋদ্ধি, সিদ্ধি প্রভৃতি অনেক সম্পত্তি আছে, তন্মধ্যে কোন সম্পত্তি প্রধান ? রায় কহিলেন, সাধারূপে প্রেমই জীবের প্রধান সম্পত্তি । যে হেতু জীবের উহা নিজ ধন ।

আরও, “আত্মারামাশ্চ মুনয় ইতি ।” শ্লোক-মুয়ারী, জীব অল্প সম্পত্তি পাইলেও, জীব যখন প্রেমে লোভ করেন, তখন প্রেমই প্রধান সম্পত্তি । বাহ্য লাভ করিলে অজ্ঞানজ্ঞান থাকে, তাহা কখনই শ্রেষ্ঠ সম্পত্তি মধ্যে গণ্য হইতে পারে না; বাহ্য লাভে সমস্ত আকাঙ্ক্ষা নিবৃত্তি পায়, তাহাই প্রধান সম্পত্তি । প্রেমগাভে কোনও আকাঙ্ক্ষাই

দেখা যায় না । অতএব তাদৃশ প্রেমই প্রধান সম্পত্তি ।

প্রভু কহিলেন, জীবের বহু দুঃখ, তন্মধ্যে কোন দুঃখ শ্রেষ্ঠতর ? রায় কহিলেন, কৃষ্ণভক্ত বিরহই গুরুতর দুঃখ ।

যে হেতু, সংসারের মধ্যে যাহারা একবার কৃষ্ণ ভক্তের সঙ্গ লাভ করিয়া আনন্দ অমুভব করিয়াছেন, তাহাদের সে সঙ্গবিরহে যে দুঃখ হয়, তাহার তুলনায় সাংসারিকাদি দুঃখ নহে । ভক্তসঙ্গে আধ্যাত্মিকাদি সমস্ত দুঃখই বিনাশ পায় । কেহ যেমন প্রথমে স্নেহ অমুভব করিয়া পরে দুঃখ পাইলে, তাহার পক্ষে উহা গুরুতর হয়; উজ্জপ ভক্তসঙ্গে তাপত্রয়ের বিনাশে আনন্দামুভব হইয়া, তদ্বিরহে দুঃখলাভে অধিকতর দুঃখ হয় । অতএব ভক্তবিরহই গুরুতর দুঃখ ।

প্রভু কহিলেন, যোগী, জ্ঞানী, ভক্ত ইহারা সকলেই মুক্ত; তন্মধ্যে শ্রেষ্ঠ কে ? রায় কহিলেন, কৃষ্ণপ্রেমভক্তই মুক্ত শ্রেষ্ঠ ।

কেন না, আত্যন্তিক দুঃখনিবৃত্তিকে মুক্তি বলে । কৃষ্ণভক্তেরই অত্যন্তদুঃখনিবৃত্তি হয় । জ্ঞানিগণ নির্বিশেষে ব্রহ্মানন্দ অর্থাৎ তরল আনন্দ অমুভব করেন; গাঢ় আনন্দ অমুভব করেন না । জ্ঞানিগণেরও ব্রহ্মানন্দের পর প্রেমানন্দে লোভ দেখা যায়; অতএব ইহারা মুক্তশ্রেষ্ঠ নহেন । যোগিগণ চিহ্নক্ৰি অংশ বিশিষ্ট মায়াশক্তি প্রচুর পরমাত্মার আনন্দ অমুভব করেন । ইহাদেরও প্রেমে লোভ দেখা যায় । অতএব ইহারাও মুক্ত শ্রেষ্ঠ নহে । উহাদের নিজস্বই তাৎপর্য দেখা যায় । ভক্তগণ সর্কশক্তি পরিপূর্ণ নিবিড় ভগবদানন্দ অমুভব করেন । ইহারা ভগবৎপ্রীতি ব্যতীত অস্ত্র লোভ করেন না বলিয়া, ইহারা মুক্তশ্রেষ্ঠ । “ভক্ত্যা জানাতি চাব্যয়মিত্যাদি ।” ভক্তি দ্বারা শ্রীকৃষ্ণকে জানা যায়, এই শ্রুতি বাক্য

দ্বারা বোধিত হয়, ভক্তিই শ্রীকৃষ্ণকে সাক্ষাৎ করা-  
ইয়া পরমানন্দ প্রাপ্তি এবং অত্যন্ত দুঃখনিবৃত্তি  
করায়। অতএব তত্বেই মুক্তশ্রেষ্ঠ ॥ ৯৭।৯৮ ॥

( ৭৯ পা ) \*গান মধ্যে... ..কর্ণ  
রসায়ণ ॥” এই ৯৯ ও ১০০ পয়ারের  
ভাবার্থ। প্রভু কহিলেন, কোন গান  
করা জীবের নিজধর্ম? রায় কহিলেন,  
যে গানের মর্ম রাধাকৃষ্ণের প্রেমময়  
লীলা, তাহাই শ্রেষ্ঠ। যেহেতু, তাদৃশ  
গান সেই লীলায় জীবের লোভ উৎ-  
পাদন করে। প্রভু কহিলেন, মঙ্গলের  
মধ্যে জীবের কোন শ্রেয়ঃ প্রধান? রায়  
কহিলেন, কৃষ্ণভক্তসঙ্গ জীবের সকল  
অনর্থেকে নষ্ট করিয়া দিয়া, ভক্তি প্রদান  
করে, তজ্জন্ম কৃষ্ণভক্ত সঙ্গই জীবের  
প্রধান মঙ্গল। প্রভু কহিলেন, স্মরণের  
মধ্যে জীবের কোন স্মরণ সর্বদা কর্তব্য?  
রায় কহিলেন, শ্রীকৃষ্ণের নাম, গুণ ও  
লীলা স্মরণই জীবের প্রধান কর্তব্য।  
কারণ ঐ স্মরণ অভয় ও অভীষ্টপন্থ  
প্রদান করে। প্রভু কহিলেন, ধ্যানের  
মধ্যে কোন ধ্যান উত্তম? রায় কহিলেন,  
রাধাকৃষ্ণের পাদপদ্ম ধ্যানই উত্তম। যে  
হেতু, শ্রুতি বলেন, রাধাকৃষ্ণই পরম  
দেবতা, তাঁহার ধ্যানই শ্রেষ্ঠ। প্রভু  
কহিলেন, বাসস্থানের মধ্যে কোন বাস-  
স্থান উৎকৃষ্ট? রায় কহিলেন, যেখানে  
নিত্যরাসলীলা হয়, সেই শ্রীরূদ্দাবনই  
শ্রেষ্ঠ বাসস্থান। ব্রহ্মাও বৃক্ষলতা হইয়া,  
ঐ স্থানে বাস করিতে প্রার্থনা করেন।  
প্রভু কহিলেন, শ্রোতব্যের শ্রেষ্ঠ কি?  
রায় কহিলেন, রাধাকৃষ্ণের প্রেমপীণাই

শ্রেষ্ঠ শ্রোতব্য। যেহেতু, ঐ লীলা শ্রবণ  
করিতে করিতে তাদৃশ প্রেমে লোভ  
হইবে এবং রাগানুগামার্গে বিচরণ  
করিবে ॥ ৯৯।১০০ ॥

( ৭৯ পা ) “উপাস্তোর...ভাগ্যান্।”  
এই ১০১ পয়ারের ভাবার্থ। প্রভু কহি-  
লেন, উপাস্তোর মধ্যে শ্রেষ্ঠ কি? রায়  
কহিলেন, যুগল রাধাকৃষ্ণনামই প্রধান  
উপাস্ত।

শ্রুতি বলেন,—

“যো ধ্যায়তি রসরতি ভজতি  
সোহমৃতো ভবতীতি।”

যিনি রাধাকৃষ্ণকে ধ্যান করেন, তাঁহার পঞ্চ-  
পদী নাম উপাসনা দ্বারা তাঁহাকে স্মৃতি করেন এবং  
ভজন করেন, তিনি অমৃত হয়েন। অতএব নাম  
উপাসনার তাঁহার স্মৃতি হয়েন বলিয়া, নামই  
প্রধান উপাস্ত বা নাম ও নামী অভেদ বশতঃ নাম  
প্রধান উপাস্ত।

প্রভু কহিলেন, মুক্তীচ্ছা ও ভক্তীচ্ছা,  
এই উভয় ব্যক্তির গতি কীদৃশী? দৃষ্টা-  
ন্তের সহিত রায় কহিলেন, স্থাবর সদৃশী  
ও দেব সদৃশী গতি।

জীব যেমন স্থাবর (বৃক্ষ পর্বতাদি) দেখে  
আবিষ্ট হইয়া মোহগ্রস্ত বশতঃ কোন আনন্দাদি  
অমুভব করিতে পারে না, তজ্জন সামুদ্র্যাপ্রাপ্ত  
জীব নির্নিশেষ ব্রহ্মে লীন হওতঃ কোনরূপ আনন্দ  
অমুভব করিতে না পারায়, স্থাবরসদৃশী গতি বলি-  
লেন। দেবদেহাবিষ্ট জীব যেমন নানা বিষয়ের  
সুখ আন্বাদন করে; তজ্জন ঐহারা ভক্তিপ্রাপ্ত  
হয়েন, তাঁহার নিরন্তর পরব্রহ্ম শ্রীকৃষ্ণের বৈচিত্রী-  
ময় লীলারস আন্বাদন করতঃ আনন্দ অমুভব  
করেন, অতএব ভক্তিচ্ছাই শ্রেষ্ঠ। দৃষ্টান্তের  
সহিত মুক্তীচ্ছা ও ভক্তীচ্ছা ব্যক্তির আনন্দ রস  
আন্বাদনের তাৎপর্য্য দেখাইতেছেন, ।

“অরসজ্ঞ” ইতি । অরসজ্ঞ কাক যেমন সুপক কিঞ্চিং মধুর রসযুক্ত নিম্বফল আশ্বাদন করে, শুক্রপ হস্ত-ভাগ্য জ্ঞানীও শুকজ্ঞানের আলোচনা দ্বারা তরল ব্রহ্মানন্দ অনুভব করে । রসজ্ঞ কোকিল যেমন সরস আশ্র-মুকুল আশ্বাদন করে ; তদ্রূপ ভাগ্য-বান্ ব্যক্তি সরস আশ্রমুকুলরূপ ক্লেশপ্রোমামৃত আশ্বাদন করেন । নয়ন কোণে ঈষৎ ঈক্ষণ ও নির্নিমেম ঈক্ষণের যেক্রপ ভেদ, তদ্রূপ ব্রহ্মানন্দ ও ভগবদা-নন্দের ভেদ জানিবেন ॥ ১০১ ॥

( ৭৯ পা ) “এইমত.....প্রকাশে হৃদয় ॥” এই ১০২ ও ১০৩ পয়ারের ভাবার্থ সরল । এইমত, প্রামোক্তর গোষ্ঠীতে । ছুইজন, মহাপ্রভু ও রামা-নন্দ । বিহানে, প্রভাতে । প্রকাশন, প্রকাশ । প্রকাশে হৃদয়, হৃদয়ে প্রকাশ করে ॥ ১০২।১০৩ ॥

( ৭৯ পা ) “জন্মাদ্যমোতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “ব্রহ্মারে বেদ 'বৈছে” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ শ্লোকোক্ত “তেনে ব্রহ্ম হৃদা য আদিকবয়ে” ইতি ॥ ৫১ ॥

( ৮১ পা ) “এক সংশয়... ইষ্টদেব স্ফুর্তি ॥” এই ১০৪ ও ১০৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল । প্রভুকে দর্শন করিয়া প্রভু সম্বন্ধে রায়ের যে সন্দেহ হয়, তাহা বলিতেছেন, “পহিলে” ইতি । পহিলে, প্রথমে । তোমা, তোমাকে । দেখো, দেখি । পঞ্চালিকা, প্রতিমা । “তার” ইতি । ঐ অঙ্গকাস্তি দ্বারা তোমার

শ্যামরূপ আচ্ছাদিত । তাহাতে, প্রতি-মার অঙ্গকাস্তি দ্বারা অঙ্গ ঢাকা হই-লেও । এই সব দেখিয়া আমার চিত্ত ঘোরতর সংশয়ে আকুল হইতেছে । তাঁহা তাঁহা, স্থাবরঙ্গঙ্গমাদিতে । তার মূর্তি, প্রেমের মূর্তি ॥ ১০৪।১০৫ ॥

( ৮১ পা ) “সর্বভূতোষিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

মহাভাগবত স্থাবরঙ্গঙ্গমে আপনার অভীষ্ট দেবের মূর্তি অমুভব করেন ; এই শ্লোকে তাহাই প্রমাণ করিলেন । শ্রীকৃষ্ণদর্শনে যখন ; অত্যন্ত উৎকণ্ঠা হয়, তখন সর্বত্র ভগবানের স্ফুর্তি হয় ॥ ৫২ ॥

( ৮১ পা ) “বনলতাস্তরব ইতি ॥” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । মহাভাগবতগণ নিজচিত্তে স্ফুরিত অভীষ্টমূর্ত্তি স্থাববাদিতে অনু-ভব করেন ; তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫৩ ॥

( ৮১ পা ) “শ্রীরাপাকৃষ্ণ...ব্যবহান ॥” এই ১০৬ ও ১ ৭ পয়ারের ভাবার্থ সরল । ছাড় ভারিভুরি অর্থাৎ যাহার সঙ্গে নিজ-শক্তি রাধা রহিয়াছে বা যিনি রাধাভাব-কাস্তি দ্বারা যুক্ত, সেই শ্রীমঙ্গির আবার সম্যগ কি ? অতএব এই কপটবেশ ত্যাগ করিয়া, নিজস্বরূপ দেখাও । আর নিজরূপ গোপন করিও না । ইহা রায়ের প্রথময় বাক্য । আগে, সম্মুখে । প্রভুর অবতার সম্বন্ধে রায় দুইটি কারণ বলি-তেছেন, “নিজ গুঢ়” ইতি ॥ ১০৬।১০৭ ॥

( ৮১ পা ) “তবে প্রভু... করি আশ্বাদন ॥” এই ১০৮ ও ১০৯ পয়ারের

ভাবার্থ সরল । দেখাইল, নিজতত্ত্ব অনুভব করাইল । রসরাজ, শৃঙ্গাররস অর্থাৎ অখিল রসামৃতমূর্তি শ্রীকৃষ্ণ । মহাভাব, ভাবের উৎকৃষ্ট শ্রীরাধা ।

যেমন স্থায়ীভাব বিভাবাদিতে মিশিত হইয়া রসরূপে পরিণত হয়, তদ্রূপ রসরাজ ও মহাভাব লীলা না করিলে দুই একরূপে প্রকাশ পান । এই তেতু বলিলেন, “রসরাজ মহাভাব দুই একরূপ ।” লীলার সময়ে রসরাজ শ্রীকৃষ্ণ ও মহাভাব শ্রীরাধা ভিন্নরূপে প্রকাশ পান । রসরাজ ও মহাভাবের একত্র মিলনই শ্রীচৈতন্যের স্বরূপ । যুক্তিত, ইচ্ছা সঞ্চারীভাব । তোমার গোচরে, তোমার অন্তঃকরের বিষয় । “গৌব অন্ধ” ইতি । কেচ বলেন, ইহাতে মহাপ্রভুর “আমি রক্ষা” বলিয়া অভিমান আছে । অরণ্য ( গোপেন্দ্রনৃত বিনা না স্পর্শে অন্য জন ) ইহার সঙ্গতি হয় না ।

উঁচর, শ্রীবাধাব । আত্মমন, দেহ ও মন ॥ ১০৮।১০৯ ॥

( ৮২ পা ) “তোমার ঠাকুর...প্রভু রামনাম ॥” এই ১১০ ও ১১১ পয়ারের ভাবার্থ সরল । ঠাকুর, নিকট । প্রভু কহিলেন, বায়, তোমার নিকট আমার কোন কর্ম গুণ নহে । তাহাব কাবণ বলিতেছেন, “লুকাইলে” ইতি । তুমি ভক্ত, ভক্তের নিকট নিজতত্ত্ব গোপন করিলেও ভক্ত প্রেমবলে সব জানিতে পারে । অতএব এ সব তুমি গোপন করিবে । গোপন রাখিবার কারণ বলিতেছেন, “আমার” ইতি । আমি নিজ-সাধুর্যা আশ্বাদন করিতে রাখার ভাব গ্রহণ করিয়াছি, ইহা আমার পাগলের কার্য্য বলিয়া লোকে উপহাস করিবে ; এইহেতু গোপন রাখিতে বলি । দ্বিতীয়

ইতি মধ্যলীলাম্ অষ্টমে সুবোধিনী ।

বাতুল, তুমি আবার ইহার অনুমজ্ঞান করিয়া বাহির করাতে দ্বিতীয় বাতুল হইলে । অতএব উভয়ে সমান । না পাইলে পার, অস্ত পাওয়া গেল না ।

“তামা কাঁমা” ইতি । যেমন তামা, কাঁমা, রূপা প্রভৃতির উত্তরোত্তর উৎকর্ষ, তদ্রূপ প্রভু ও রায়ের প্রশ্ন ও উত্তরে বর্ণাশ্রমধর্ম আরম্ভ করিয়া সাধ্যবস্তুর উৎকর্ষ মহাভাবে পর্য্যবসিত করিলেন অর্থাৎ যেমন কোন খনিখুঁড়িতে খুঁড়িতে

তামা, কাঁমা, রূপা, সোণা পরে চিন্তা-মণি লাভ হয়, তদ্রূপ এই সাধ্যবস্তুর প্রমোত্তরে চিন্তামণিরূপ শ্রেষ্ঠ সাধ্যবস্তুর মহাভাবের প্রাপ্তি হইল ॥ ১১০।১১১ ॥

( ৮২ পা ) “আর দিন...দুঃখদাস ।”

এই ১১২ হইতে ১১৫ পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । হনুমান, হনুমানের মূর্তি প্রিয়োগ, গমন । বিছাপুর, বিদ্যানগর । গ্রন্থকার বলিতেছেন, রামানন্দ মিলন সঙ্ক্ষেপে বর্ণন করিলাম । যদি বল, বিস্তার করিলে না কেন ? তাহাতে বলিতেছেন, “বিস্তারি” ইতি । মহাশয় বদন যখন উহা বিস্তার করিতে পারেন না, তখন আমি কিরূপে পারিব ? খণ্ড, চিনি । এক্ষণে জিজ্ঞাস্য হইতে পারে, এই পরম নিগূঢ় বিষয়, কে জানিতে পারে ? তাহাতে বলিতেছেন, “শ্রীচৈতন্য ইতি ।” শ্রীচৈতন্য নিত্যানন্দ ও অধৈ-তের চরণ সাঁহার সর্ব্বশ্ব অর্থাৎ উহাঁদের চরণ বা ভজন ব্যতীত যিনি অন্য কিছু জানেন না, তিনি ঐ তত্ত্ব জানিতে সক্ষম, অসম্ভব সক্ষম নহে ॥ ১১২-১১৫ ॥

## নবম পরিচ্ছেদ ।

—\*—\*—\*—

( ৮৩ পা ) “নানামতেতি ।” গ্রন্থ-  
কার পূর্বের স্থায় এই শ্লোক দ্বারা মঙ্গলা-  
চরণ করিয়া, এই পরিচ্ছেদে কথিত বিষয়  
ইহার অর্থে প্রকাশ করিলেন ॥ ১ ॥

( ৮৩ পা ) “জয় জয় ... .. নৈশ্বব  
কবি ।” এই ১ম ও ২য় পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । বিলক্ষণ, আশ্চর্য্য । সেই সব,  
যে সব তীর্থে গমন করেন । সেই ছলে,  
তীর্থে গমন চল করিয়া । প্রভুর তীর্থ-  
যাত্রায় তীর্থক্রম বলিতে গ্রন্থকার সক্ষম  
নহেন, তাহার কারণ বলিতেছেন,  
“দক্ষিণ” ইতি । দক্ষিণ ও বামদিকে যত  
তীর্থ আছে, তাহাতে গমনের ফেরাফেরি  
অর্থাৎ নিকটস্থ তীর্থে উল্লঙ্ঘন করিয়া  
অগ্রে দূরস্থ তীর্থে কখন গমন, কখন বা  
এক তীর্থে দুইবার গমন, ইত্যাদিরূপে  
তীর্থে প্রভুর গমনাগমন হওয়াতে তীর্থ-  
ক্রম বলিতে পারি না । এই হেতু ক্রম  
না লিখিয়া নামগাত্র বর্ণন করিব ।  
পূর্ববৎ, পূর্ব পরিচ্ছেদের প্রভুর গমন  
যে রূপ ভাবে বর্ণন করিয়াছি, তদ্রূপ  
ভাবে পথগমন সময়ে হরি বলিয়া  
সকলকে বৈশ্বব করেন । তাহার অশু  
গ্রামের লোককে বৈশ্বব করেন ॥ ১।২ ॥

( ৮৩ পা ) “দক্ষিণ ... .. পাহিমাং”  
ইতি ॥ ৩য় ও ৪র্থ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । পাষণ্ডী, বৌদ্ধ জৈন প্রভৃতি ।  
সেই সব লোক, কুর্মা, জ্ঞানী ও পাষণ্ডী ।

রাম উপাসক সব, যে সকল ব্যক্তি রাম  
উপাসক । তত্ত্ববাদী, মাধ্বাচার্য্য সম্প্র-  
দায় । বৈশ্বব, রামানুজ সম্প্রদায় ॥ ৩।৪ ॥

( ৮৩ পা ) “এই শ্লোক ... .. গৌর-  
হরি ॥” এই ৫ম ও ৬ষ্ঠ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । এই শ্লোক “রাম রাঘব” শ্লোক ।  
গৌতমী গঙ্গা, ইহাতে স্থান করিয়া ইন্দ্র  
ও চন্দ্রের গুরুপত্নীতে গমন হেতু পাপ  
বিনষ্ট হয় । তাঁহা মল্লিকাধ্বজ তীর্থে ।  
তাঁহা, সিদ্ধবটে । তার ঘরে, বিপ্র  
ঘরে ॥ ৫।৬ ॥

( ৮৩।৮৪ পা ) “স্বন্দক্ষেত্র ... ..  
করিয়ে সঞ্চয় ॥” এই ৭ম ও ৮ম পয়ারের  
ভাবার্থ সরল । স্বন্দ, কার্তিক । সেই  
বিপ্র, পূর্বে সিদ্ধবটে যে বিপ্র ঘরে ভিক্ষা  
করিয়াছিলেন । মহাপ্রভুর দর্শন প্রভাব  
কি তাহা বলিতেছেন, “তোমা দেখি”  
ইতি । আজন্মস্বভাব, জন্মাবধি যে  
স্বভাব ; তাহা কি, বলিতেছেন, “বাল্যা-  
বধি” ইতি । অপর স্বভাব বলিতেছেন,  
“বাল্যকাল” ইতি । সঞ্চয়, সংগ্রহ ॥ ৭.৯ ॥

( ৮৪ পা ) “রমন্ত ইতি ।” শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । রাম-  
নাম মহিমানুচক এই শ্লোক ॥ ২ ॥

( ৮৪ পা ) “কুশিরিতি ।” শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । কুশ-  
নাম মহিমানুচক এই শ্লোক ॥ ৩ ॥

( ৮৪ পা “পরং ব্রহ্ম ... .. পাইল ॥”

এই ৯ম পয়ারের ভাবার্থ সরল । দুই নাম, রামনাম ও কৃষ্ণনাম । আর শাস্ত্রে, অশ্বশাস্ত্রে অর্থাৎ পদ্মপুরাণে ও ব্রহ্মাণ্ড-পুবাণে । বিশেষ পাইল, রামনাম হইতে কৃষ্ণনামের মহিমার বিশেষ পাইলাম । তাহা শ্লোক দুইটিতে বলিতেছেন ॥ ৯ ॥

( ৮৪ পা ) “রামেতি ॥” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । রামনাম পাঠের ফল কি, তাহা এই শ্লোকে বলা হইল ॥ ৪ ॥

( ৮৪ পা ) “সহস্রনাম্মিতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । রামনাম হইতে কৃষ্ণনামের ফল যে বিশেষ তাহা এই শ্লোকে প্রতিপন্ন হইল ॥ ৫ ॥

( ৮৪ পা ) “এই বাক্যে.....হৈল সব দেশ ॥” এই ১০ম ও ১১শ পয়ারের ভাবার্থ সরল । এই বাক্যে, সহস্রনাম্মিতি বাক্যে । তথাপি, কৃষ্ণনামের অপার মহিমা হইলেও । যদি বল, তবে কৃষ্ণনাম না লইয়া রামনাম গ্রহণ কর কেন ? তাহাতে বলিতেছেন, “শুন হেতু তার” ইত্যাদি । তাহার মহিমা, কৃষ্ণনামের মহিমা । লাগিল, স্মরণ হইল । নির্দারিল, স্থির করিল । যখন তোমার দর্শনে, আমার ইষ্টদেব রামের নাম না বলিয়া কৃষ্ণনাম বলিতেছি, তখন তুমিই সেই শ্রীকৃষ্ণ ইহা স্থির করিলাম । নচেৎ একরূপ হইতে পারে না । বৃদ্ধকাশী, ইহা একটা তীর্থস্থান ।

মাজাজদেশের উত্তর আর্কটের কালহস্তী নামক স্থানই বৃদ্ধকাশী । ইহা স্নবর্ণমুখী নদীর

দক্ষিণতীরে অবস্থিত । ষ্টেট রেলওয়ের ত্রিফলপি-নেম্বর স্টেশন হইতে এক মাইল দূরে । বৃদ্ধকাশী দ্বিতীয় বারাণসী মদূশ । এখানে শিবমন্দির আছে । মহাদেবের পাঞ্চভৌতিকমূর্ত্তির অষ্টতম অনাদি বায়ুমূর্ত্তি এখানে বিরাজমান । প্রবাদ আছে, পূর্বে ব্রহ্মা এই স্থানে তপস্বী করিতে আসিবার সময় কৈলাসের শৃঙ্গের একাংশ আনয়ন করেন এবং তিনি স্বয়ং এই স্থানের মূল স্থাপন করেন । এক নাগ নিজের মনি মহাদেবের মস্তকে রাখিয়া আরাধনা করিত এবং এক হস্তী জলাভিষেক দ্বারা তাঁহার আরাধনা করিত । কোন দিন কোন কারণ বশতঃ নাগ ও হস্তী উভয়ে উভয়কে আঘাত করিলে উভয়েই প্রাণত্যাগ করে । মহাদেব পূর্বে হইতে তাহাদের উপর সন্তুষ্ট ছিলেন, এই ঘটনায় মহাদেব তাহাদের পুনরায় জীবন দান করিয়া আপন আশ্রয় তাহাদের নামে অভিহিত করেন । তদবধি এই দেবালয়ের নাম কালহস্তী হইয়াছে । কাল অর্থে সর্প, হস্তীর অপভ্রংশ হস্তী । কালহস্তী একটি নগর । ইহার দক্ষিণদিকে পাহা-রেব পার্শ্বে আর একটি শিবালয় আছে ; সেই মূর্ত্তির নাম মণিকুণ্ডেশ্বরস্বামী । বৃদ্ধকাশীর বর্ত-মান নাম পছুরোগগোপুরম্ । এইটি বৌদ্ধদিগের স্থান । তাহা হৈতে, বৃদ্ধকাশী হইতে ॥ ১০।১১ ॥

( ৮৫ পা ) “তার্কিক ... .. খণ্ড খণ্ড কৈল ॥” এই ১২শ ও ১৩ পয়ারের ভাবার্থ সরল । তবে, তার্কিকাদিগণ । উদ্গ্রাহে, বিচারে । ছুঁমি, দোম প্রাদান করতঃ । খণ্ড খণ্ড, তার্কিকাদিগণের মত সকলকে পরাজয় করেন । হারি হারি, বিচারে পরাজয় হইয়া । নিজমন-মতে, নিজের নূতন মতে । অসম্ভাষ্য, মন্তাবণের যোগ্য নহে ॥ ১২।১৩ ॥

( ৮৫ পা ) “দার্শনিক ... .. উঠে হরি বলি ॥” এই ১৪শ ও ১৫শ পয়ারের

ভাবার্থ মরণ । বোদ্ধ মকলে মিমিয়া যে কুমন্ত্রা কবেন, তাহা পর পনাবে লশিত্বেচেন, “গপবিহ্র” ইত্যাদি । অমেধ্য, গপবিহ্র । বাজিয়া, শব্দ করিয়া । তেরছে, বকড়াবে । জীয়াহ, বাঁচাও । গুরুকর্ণে, গুরুর কর্ণে । তবৈ, উচ্চ করিয়া নাম শুনাইলে ॥ ১৩১৫ ॥

( ৮৫ পা ) “কুব কহি ... .. চমৎকার হৈল ॥” এই ১৬শ পরায়ের ভাবার্থ মরণ । পালা নরসিংহ, অষ্ট মূর্তিট কুন্ডানদীর দক্ষিণ তীরে ও কুববিজনার অন্তর্গত মঙ্গল গিরিতে অবস্থিত ।

পাহাড়ের গায়েব মধ্যস্থল পাবব কাটিয়া নরসিংহ স্মার মন্দির প্রস্তুত হইয়াছে । স্ত্রীমূর্তি গাহাড়ের গায়ে অঙ্কিত আছে । কেবল সিংহা-কৃত মূর্তী পিতলে প্রস্তুত । স্ত্রীমূর্তি প্রকট বিষয়ে পৌনোপিক বিবরণ এত;—কোন সময়ে এক ঋষি-পুত্র পিতাব ভয়ে হস্তীকপ ধারণ করিয়া, ঐ স্থানে বিষ্ণুর তপশ্চা করেন; পরে বিষ্ণু বর প্রদান কারণে প্রত্যক্ষ হইলে, ঋষিপুত্র তাঁহাকে ঐ স্থানে মগ্নরীবে অবস্থান করিতে অমুদোষ করেন । বিষ্ণু কহিলেন, তোমার এই হস্তীদেহ পর্কিতে পারণও হইলে, আমি অবাস্তি করিব । আশ্চর্য্য, ভগবানের ভক্তদেহে অবস্থান কি এতই সুখকর ? তখন ঋষিবর শরীর ভাগ করিলে উহা পর্কিতে পারণও হয় । তদবধি ঐ পাহাড়টি দেখিলে, হস্তীর অবয়ব বর্ণনা অল্প মত হয় । কিছুকাল পরে, অম্বররাজ ননুট উক্ত পর্কিতেব গাশ্চাতে পার্কিয়া, লক্ষার তপশ্চা করিয়া, তরীয বরে প্রবল হইয়া, ইন্দের প্রাতঃসন্দী হইলে, হস্ত্র বিষ্ণুব সাহায্য প্রার্থনা করেন । বিষ্ণু ফেন নিক্ষেপ পুঙ্ক উক্ত অম্বরকে বদ ও পুঙ্ক প্রাতঃশ্রুত বিষয় স্মরণ করিয়া ঐ পর্কিতে অবস্থান করিয়াছিলেন । এই ঘটনা ত্রেতাযুগে হয় । ত্রেতাযুগে মুক্তাদি ষাগরে ধর্ম্মাদি

এক এই কালতে ঐ পর্কিত মন্ত্রাদি নামে আভিহিত হইয়াছে । এখানে পানীয়ট ভগবানের প্রদান উপাদেয় । যুগভেদে পানীয়ও ভিন্ন ভিন্ন হইয়াছে । ত্রেতায় সূত, দ্বাপরে দুগ্ধ পান করিতেন এক্ষণে গুড়ের সরবৎ পান করেন, ইহাকে পানা বহে । অতএব পানানরসিংহ নাম হইয়াছে ॥ ১৬ ॥

( ৮৬ পা ) “শিবকাঞ্চী ... .. শরীর মন্দন ॥” এই ১৭শ পরায়ের ভাবার্থ মরণ । ভাগি, আগমন করিয়া । কাবেরীর তীরে, কাবেরী নদীর তীরে । শিব কাঞ্চী, বৈহার বর্তমান নাম কনুজীভরম্ ।

কাঞ্চীপুরী বই ভাগে বিস্তৃত । উত্তর ভাগের ভাগের নামাশিবকাঞ্চী এবং দক্ষিণ ভাগের নাম বিষ্ণুকাঞ্চী । প্রভু শিবকাঞ্চীতে শিব দর্শন করেন । এই মূর্তি একাধর নামে বিখ্যাত । হাতুহুস ববা, ফেন সময়ে পান্যদেবী কোতুক করিয়ার ছলে গাশ্চাত হইতে হত দ্বাধা মহাদেবের চক্ষু আবরণ করায় বিষ্ণুসংসার পক্ষ কারময় হইয়া য.য । তদব-রাধে মহাদেবের আদেশে দেবী মন্ত্রাণোচে গায়িয়া একাধর নাথের মন্দির প্রাঙ্গনে কম্পানদী নামক তাখে ছয় মাস কামাক্ষাদেবীরূপে তপশ্চা করিগে মহাদেব পুনঃ গ্রহণ করেন । তদবধি দেবী পৃথক মন্দিরে বিরাজতা । ফাল্গুন মাসের দশম দিবসে দেবীর ভোগমুক্তিকে একাধর নাথের ভোগ-মূর্তির সহিত রাত্রিকবে এপথরে রাখা হয় । এখানে অনেকগুলি বিষ্ণু আছে । প্রবাদ আছে, কোন সময়ে একাধর নাথ একমুটি বালুকা ছড়ান, তাহাতে যতগুলি বালুকাববা ছিল, ততগুলি লিঙ্গমূর্তি হয় । বিষ্ণুকাঞ্চীতে প্রভু লক্ষী নারায়ণ দর্শন করেন । এখানে বরদারাজ স্বামির ( বিষ্ণুর ) মন্দির সম্বন্ধে এক ইতিহাস আছে । কোন সময়ে সরস্বতী দেবী ব্রহ্মার উপর অস-স্তট হইয়েন । কাঞ্চীপুরে বজ্র করিলে শত বজ্রের

কললাভ হয় বলিয়া, ব্রহ্মা অখমেষযজ্ঞ করিবার মানসে ঐ স্থানে যজ্ঞস্থল নির্মাণ করেন। উহার উত্তরদ্বার নরনারায়ণন, পশ্চিমদ্বার বিরিকিপুর, দক্ষিণদ্বার চিকালিপুত্র, পূর্বদ্বার মহাবল্লীপুর। দেবী সরস্বতী নারদের মুখে ব্রহ্মার যজ্ঞকথা শ্রবণ করিয়া অত্যন্ত কুপিতা হইলেন এবং তিনি নদীরূপা হইয়া যজ্ঞস্থল ভাঙ্গাইতে আগমন করেন। ব্রহ্মা ইহা জানিয়া বিষ্ণুর শরণাপন্ন হইলে, বিষ্ণু আসিয়া নদী রোধ করিলে, অন্তঃসলিলা হইয়া নদী বহিতে লাগিল। বিষ্ণু তখন অনন্তোপায় হইয়া উলঙ্গাবস্থায় এদোক্কারি নামক স্থানে নদীর সম্মুখে পতিত হইলে, দেবী লজ্জায় অধোমুখী হইয়া পূর্ণাভি প্রায় ত্যাগ করেন। যজ্ঞাঘিতে বরদাতা বিষ্ণুই বরদারাজ নামে অভিহিত হইলেন। প্রভু ত্রিকাল-হস্তীতে ও পক্ষতীর্থে মহাদেব, পরে বৃদ্ধকালতীর্থে শ্বেতবরাহ দর্শন করেন। শিৱালীভৈরবী দেবী, ভোজোরের অন্তর্গত শিৱালী নামক স্থানে অবস্থিত। কোন সময়ে তনজান নামক এক রাক্ষস এইস্থানে দৌরাত্ম্য করিত। বিষ্ণু উহাকে নিহত করিলে, রাক্ষস প্রার্থনা করে, তাহার নামে এই নগরটি অভিহিত হয়। তদবধি উহা তঞ্জাপুর নামে বিখ্যাত। এক্ষণে উহার নাম ভোজোর ॥ ১৭ ॥

( ৮৬ পা ) “গো সমাজ.....মহা-  
প্রভুর মন ॥” এই ১৮শ হইতে ২১শ পর্য্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ সরল। কুম্ভকর্ণ-  
কপালের, কুম্ভকর্ণের মস্তকের খুলিতে  
এক সরোবর হইয়াছিল। এক্ষণে ইহার  
নাম কাশ্বকানম্। পাপনাশনে, কৃষ্ণা-  
নদীর শাখা নদীর তীরে। মানিলকৃতার্থ.  
আপনাকে কৃতার্থ বোধ করিল। চাতু-  
র্দ্দাস্য, বর্ষার চারিমাস। ইহা একটি  
ব্রত বিশেষ।

আষাঢ় মাসের শুক্লাষাঢ়নী বা পৌর্ণমাসী  
অথবা সংক্রান্তি হইতে কা্তিক মাসের শুক্লাষাঢ়নী

বা পৌর্ণমাসী অথবা সংক্রান্তি পর্য্যন্ত এই ব্রত  
করিবে। শ্রাবণে শাক, ভাজে দধি, আখিনে দুগ্ধ  
ও কা্তিকে আমিষা ত্যাগ করিবে। ঐ ব্রত মধ্যে  
কেবল রাত্র-ভোজনে তীর্থযাত্রার ফল হয়। পক্ষ-  
গব্য ভোজনে চান্দ্রায়ণ ব্রতের ফল ইত্যাদি, হরি-  
ভক্তিবিলাসে অস্তান্ত বিষয় দেখিবেন বা শুক্লর  
নিকট জ্ঞাত হইবেন।

হৈল উপসন্ন, উপস্থিত হইল। কৃপায়  
কৃপাপূর্বক। তার ঘরে, বেঙ্গটভট্টের  
ঘরে। আবর্তন, আবৃত্তি পাঠ। অষ্টা-  
দশাধ্যায়, গীতার আঠারঅধ্যায়। তাহা,  
নিন্দা বা হাস্য। যাবৎপঠন, যে পর্য্যন্ত  
পাঠ করেন ॥ ১৮-২১ ॥

( ৮৬৮৭ পা ) “মহাপ্রভু পুছিল...  
করিলা অপার ॥” এই ২২শ হইতে ২৪শ  
পর্য্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ সরল। তারে,  
বৈষ্ণবব্রাহ্মণকে। ভোত্র, চাবুক। যাবৎ  
পঢ়ো, যে পর্য্যন্ত পাঠ করি। তাঁর,  
শ্রীকৃষ্ণের। এই লাগি, শ্রীকৃষ্ণের দরশন  
পাই বলিয়া। তাহা হইতে, অর্জুনের  
রথে শ্রীকৃষ্ণ দরশন হইতে। কৃষ্ণক্ষুর্ভ্যে,  
কৃষ্ণক্ষুর্ভি দ্বারা। এই লাগি, শ্রীকৃষ্ণের  
সঙ্গ জন্ম। ২২-২৪ ॥

( ৮৭ পা ) “কম্যোতি ॥” এই মঠ  
শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধোর অষ্টমে  
৭২ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। “এই লাগি সুখ  
ভোগ” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ “যদ্বাঙ্গয়া  
শ্রীর্লনেত্যাদি ॥ ৬ ॥

( ৮৭ পা ) “ভট্ট কহে.....কৃষ্ণের  
সঙ্গম ॥ এই ২৫শ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল। “লাঙ্গী হয় কেনে” এই পূর্ব  
পয়ারে মহাপ্রভু পরিহাস বাক্য দ্বারা



লক্ষ্মীর যে কুলটা দোষ দেখাইয়াছেন, ঐ দোষ নিরাস পূর্ণক ভট্ট বলিতেছেন, “কৃষ্ণ” ইত্যাদি। কৃষ্ণ এবং নারায়ণ একই স্বরূপ হইলেও, কৃষ্ণে বৈদক্ষ্যাদি গুণ বিশেষ থাকায়, লক্ষ্মীদেবী কৃষ্ণসঙ্গম প্রার্থনায় তপস্যা করেন। এইরূপ করাতেও কোন দোষ দেখা যায় না। কারণ শ্রীকৃষ্ণ ও শ্রীনারায়ণ অভিন্ন ॥২৫॥

( ৮৭ পা ) “সিদ্ধাস্তত” ইতি। এই সপ্তম শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। শ্রীকৃষ্ণ ও শ্রীনারায়ণ যে স্বরূপতঃ অভিন্ন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক। প্রেমময়-রসের একরূপ স্বভাব যে, শ্রীকৃষ্ণকে সর্বোৎকৃষ্টরূপে দর্শন করায়। অতএব লক্ষ্মী-দেবীও শ্রীকৃষ্ণসঙ্গজ্ঞ তপস্যা করেন ॥৭॥

( ৮৭ পা ) “কৃষ্ণসঙ্গে.....শাস্ত্রে শুনি ॥” এই ২৬শ পয়ারের ভাবার্থ সরল। শ্রীকৃষ্ণ ও শ্রীনারায়ণ স্বরূপতঃ অভিন্ন হইলে লক্ষ্মীর কৃষ্ণসঙ্গে পতিব্রতা ধর্ম কখন নষ্ট হয় না। অথবা তাপনী-শ্রুতিতে উক্ত হইয়াছে—

“যোহসৌ সর্বেষু কৃত্ত্বাভিষ্ট তৃতানি বিবধাতি  
স বো হি স্বামী ভবতি ॥”

যিনি স্বাবরজন্মে আবিষ্ট হইয়া প্রাণীসকলকে ধারণ করেন, সেই গোবিন্দই তোমাদের ( লক্ষ্মী-পণের ) স্বামী ।

অতএব কৃষ্ণসঙ্গে লক্ষ্মীর পতিব্রতা-ধর্ম যায় না ; বরং বিশেষ লাভ আছে। আর পরমরসকদম্বরবিলাস প্রাপ্ত হওয়া যায়। নারায়ণরূপে ঐ বিলাস হয় না। বিনোদিনী, ক্রীড়াকামিনী। ইহাতে, শ্রীকৃষ্ণ অভিলাষে ॥ ২৬ ॥

( ৮৭ পা ) “নায়মিতি।” এই অষ্টম শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের অষ্টমে ৬৮ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। “রাসনা পাইলা লক্ষ্মী” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥৮॥

( ৮৮ পা ) “লক্ষ্মী কেনে.....শ্রুতি-গণ ॥” এই ২৭শ পয়ারের ভাবার্থ সরল। প্রভু কহিলেন, লক্ষ্মী তপস্যা করিয়াও শ্রীকৃষ্ণকে পান নাই; কিন্তু শ্রুতিগণ পাইলেন, ইহার কারণ কি ? ॥ ২৭ ॥

( ৮৮ পা ) “নিভূতেতি।” এই নবম শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের অষ্টমে ৭৭ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। “তপ করি কৈছে” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৯ ॥

( ৮৮ পা ) “শ্রুতি পায়...ব্রজেশ্ব-নন্দন ॥” এই ২৮শ ও ২৯শ পয়ারের ভাবার্থ সরল। ইহা, শ্রুতি শ্রীকৃষ্ণকে পান, লক্ষ্মী পান না কেন, এ বিষয়ে। কোটি-সমুদ্রগম্ভীর, কোটি সমুদ্র হইতেও গম্ভীর। লীলামর্শ্ব, লীলার তত্ত্ব। জিনি, খেলাতে শ্রীকৃষ্ণকে জয় করিয়া। তথাহি ভাগবতে দশমে—

“উবাহ ভগবান্ কৃষ্ণঃ শ্রীদামানং পরাজিতঃ ।

খেলায় পরাজিত হইয়া শ্রীকৃষ্ণ শ্রীদামকে বধন করেন ।

ঐশ্বর্য্য জ্ঞান নাহি, স্বয়ং ভগবান্ অবতীর্ণ হইয়াছেন, ইহা বলিয়া ব্রজ-লোক কৃষ্ণকে জানেন না। নিজ সম্বন্ধ মনন অর্থাৎ আমার সখা, আমার পুত্র ইত্যাদিরূপ অতিমান করেন ॥ ২৮।২৯ ॥

( ৮৮ পা ) “নায়মিতি।” এই দশম শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের অষ্টমে ৭৮ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। অকলৌকে

অনুগতি ভিন্ন ব্রজে কৃষ্ণপ্রাপ্তি হয় না, এই শ্লোক দ্বারা ইহাই প্রমাণ করিলেন । ঋতিগণ ব্রজদেবীগণের অনুগত হইয়া শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করিলেন ; লক্ষ্মী ব্রজদেবীগণের অনুগত না হইয়াই শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করিতে ইচ্ছা করিলেন, এই হেতু তিনি লাভ করিতে পারিলেন না ॥১০॥

(৮৮ পা) "ঋতিগণ...তঁহ মন ॥" এই ৩০৭ হইতে ৩২৭ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । ব্রজেশ্বরীসুত, শ্রীকৃষ্ণ । দেবী, লক্ষ্মী । অন্যদেহে, গোপীদেহ ব্যতীত অপর দেহে । তাঁহার, নারায়ণের । সর্বোপরি কক্ষা, সকল সাধনের শ্রেষ্ঠ স্থানে অবস্থিত নারায়ণের ভজন । এই অর্থাৎ নারায়ণভজনই সর্বশ্রেষ্ঠ । পরিহাসদ্বারে, উপহাসবাক্য দ্বারা । পরিহাসদ্বারে, প্রভু কি কথা বলেন, তাহাই বলিতেছেন, "স্বয়ং" ইত্যাদি । শ্রীনারায়ণ শ্রীকৃষ্ণের বিলাসমূর্ত্তি হওয়াতেই শ্রীকৃষ্ণ, লক্ষ্মী প্রভৃতির মন হরণ করেন ॥ ৩০-৩২ ॥

(৮৮ পা) "এতে চাংশেতি ।" এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির দ্বিতীয়ে ২২ পৃষ্ঠায় দেখিবেন । ইহার তাৎপর্য্য ভাবার্থব্যাখ্যার ৫৭ পৃষ্ঠায় দেখিবেন । "কৃষ্ণের বিলাস" ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১১ ॥

(৮৮ পা) "নারায়ণ... স্বয়ং ভগবান্ ॥" এই ৩০৭ পয়ারের ভাবার্থ সরল । শ্রীকৃষ্ণ যে স্বয়ং ভগবান, তৎসম্বন্ধে অন্য মূর্ত্তি দেখাইতেছেন, "নারায়ণ" ইতি । নারায়ণ ও কৃষ্ণ ভাব্যন্তঃ

অভিন্ন হইলেও শ্রীনারায়ণ হইতে শ্রীকৃষ্ণের অসাধারণ বেণু মাধুর্য্যাদি গুণ । ঐ অসাধারণ গুণ থাকাতোই শ্রীকৃষ্ণ লক্ষ্মীর মন হরণ করেন । যে পড়িলে শ্লোক অর্থাৎ "সিদ্ধান্ততত্তেদং ইতি ।" এই শ্লোক যে বলিলে । সেই শ্লোকে, তোমার কথিত "সিদ্ধান্ততত্তেতি" শ্লোকে শ্রীকৃষ্ণ যে স্বয়ং ভগবান্ তাহার প্রাপ্তি হয় ॥ ৩৩ ॥

(৮৮ পা) "সিদ্ধান্ততত্তেতি ।" এই শ্লোক বলিয়া ভট্টের কথিত শ্লোককে স্মরণ করাইলেন । পর পয়ার দ্বারা এই শ্লোকের অর্থ করতঃ এই শ্লোকোক্ত শ্রীকৃষ্ণের ভগবৎ স্থাপন করিতেছেন ॥২২॥

(৮৮ পা) "স্বয়ং... অনুরাগে ॥" এই ৩৪৭ পয়ারের ভাবার্থ সরল । শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং ভগবান্ বলিয়া লক্ষ্মীর মন হরণ করেন । নারায়ণ স্বয়ং ভগবান্ না হওয়াতে গোপীগণের মন হরণ করিতে পারেন না, কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ গোপীদের মন হরণ করিতে সমর্থ । নারায়ণের কথা দূরে থাকুক, স্বয়ং শ্রীকৃষ্ণও চতুর্ভুজ-মূর্ত্তি ধারণ করিয়া গোপীগণের অনুরাগ ভাজন হইতে পারেন নাই ॥ ৩৪ ॥

(৮৯ পা) "গোপীনামিতি ।" এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির সপ্তদশে ১৪২ পৃষ্ঠায় দেখিবেন । "চতুর্ভুজ-মূর্ত্তি দেখায়" । এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৩ ॥

(৮৯ পা) "এত কহি... নানাকার-রূপ ॥" এই ৩৫৭ পয়ারের ভাবার্থ সরল । এত কহি, "স্বয়ং ভগবান্" এই

পূর্ব পয়ার হইতে “সেই কৃষ্ণে” পয়ার পর্যন্ত সিদ্ধান্ত বাক্য বলিয়া। তার. বেকটভটের। যাতে, যে সিদ্ধান্তে। কৃষ্ণসঙ্গাস্বাদ, কৃষ্ণসঙ্গ জন্ত রসের আশ্বাদন। গোপীদ্বারে, গোপীরূপে। ঈশ্বরত্বে যেমন কৃষ্ণ ও নারায়ণ অভেদ, তরূপ গোপী ও লক্ষ্মী তদ্ব্যতঃ অভেদ। সর্বলক্ষ্মীময়ী জীরাধা ক্রীকৃষ্ণলীলার সহায়কারিণী। অতএব জীরাধাই জীলক্ষ্মী হওয়াতে, লক্ষ্মী গোপীরূপে কৃষ্ণসঙ্গাস্বাদ করিলে কোন দোষ হয় না। অথবা, ভট্টকে আনন্দ দিবার জন্য ঐ কথা বলেন। গোপী ও লক্ষ্মীর যে অভেদ, তাহা সৃষ্টান্তে বলিতেছেন, “একই” ইতি ॥৩৫॥

(৮৯ পা) “মনির্ষথেতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “একই ঈশ্বর ভক্তের” ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৪ ॥

(৮৯ পা) “ভট্ট কহে... ...শ্রীশচীনন্দন ॥” এই ৩৩৭ ও ৩৭২ পয়ারের ভাবার্থ সরল। তাঁর রূপায়, লক্ষ্মীনারায়ণের রূপায়। জীরঙ্গ, জীরঙ্গনাথ। এই রঙ্গলীলা, এইরূপে মনোহরলীলা ॥৩৬।৩৭॥

(৮৯ পা) “ঋষভপর্যন্ত ... হরষিত হঞা ॥” এই ৩৮২ পয়ারের ভাবার্থ সরল। চলি আইলা, গমন করিলেন। ঋষভ পর্যন্ত, নীলপর্যন্তের শব্দবিশেষ; ইহা মাতুরার নিকট। ইহার বর্তমান নাম পালনিহিল। এখানে জীনারায়ণ মুক্তি আছেন। পরমানন্দপুরী, ইনি মাধবেন্দ্রপুরীর শিষ্য। তাঁহা, ঋষভ পর্যন্তে। পাল, নিকট। তারে, মহা-

প্রভুকে। সেই বিপ্রঘরে, যে বিপ্রের ঘরে পরমানন্দপুরী ছিলেন। তাঁর ঠাকুর, পরমানন্দপুরীর নিকট ॥ ৩৮ ॥

(৯০ পা) “পরমানন্দপুরী ..... কহে নিরন্তর ॥” এই ৩৯২ হইতে ৪১২ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। শ্রীশৈল, মলয় পর্বতের বা পশ্চিমঘাটের অংশ। যখন মহাপ্রভু শ্রীশৈলে আসেন, তখন হরপার্বতী ব্রাহ্মণবেশে ঐ স্থানে বাস করেন। তাঁহা, শ্রীশৈলে। দুর্হার, শিব-দুর্গার। নিভুতে, গোপনে। তাঁর মনে, শিবের সহিত। ইষ্টগোষ্ঠী, পরমার্থতত্ত্ব-নির্ণয়ের সভা। দক্ষিণ মথুরা, বর্তমান মাতুরাই দক্ষিণ মথুরা। সেই বিপ্র, দক্ষিণ মথুরায় যে বিপ্রের সহিত দেখা হয়। কৃতমালায়, কৃতমালাদীতে স্থান ও মীনাক্ষীদেবীকে প্রভু দর্শন করেন। ভিক্ষা কি দিবেক, ভোজন কি করাইবে। ইহার কারণ বলিতেছেন, “বিপ্র পাক নাহি করে।” তারে, বিপ্রকে। বিপ্র পাক করেন নাই কেন? তাহার হেতু বলিতেছেন, “বিপ্র কহে” ইত্যাদি। জীরামের ভাবে আবিষ্ট থাকিতে বিপ্র পাক করেন নাই এবং সেই ভাবে আবিষ্ট হইয়া বলিতেছেন, “প্রভু মোর” ইত্যাদি। প্রয়োজন, আরম্ভন। নির্কির, নির্কোদযুক্ত। ছতাপ, খেদ। গীতার আকৃতি মারা অর্থাৎ মারানীতা ॥৩৯-৪১॥

(৯০ পা) “গীতারাদিত ইতি ॥” এই শ্লোক দুইটির তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “গীতার আকৃতি মারা” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥৩৫।১৬ ॥

( ৯১ পা ) “বিশ্বাস করহ... ..দিলে দরশন ॥” এই ৪২৫ হইতে ৪৪৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল । তারে, বিপ্রকে । ধনুতীর্থ, লক্ষ্মণের অগ্রভাগ দ্বারা সমুদ্রের বন্ধন বিচ্ছিন্ন হওয়ায় ধনুতীর্থের উৎপত্তি হয় । রামেশ্বর, স্ত্রীরামের প্রতিষ্ঠিত শিবলিঙ্গের নাম । তার মধ্যে, কুর্শ্ম-পুরাণের ব্যাখ্যার মধ্যে । সেই পত্নী, যে পত্নীতে “গীতয়ারাধিতঃ” শ্লোক লিখন আছে ॥ ৪২-৪৪ ॥

( ৯১।৯২ পা ) “মহাভূঃখ হৈতে... .. স্থায় নাহি বাসি ॥” এই ৪৫ ও ৪৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল । সে দিনে, যে দিনে আপনি প্রথম আসিয়াছিলেন । পাণ্ডু-দেশ তান্ত্রপর্ণী, তান্ত্রপর্ণী নদীর তীরবর্তী পাণ্ডুদেশ । মঞ্জার দেশেতে, মালবার দেশে । সরল বিপ্রের, মহাপ্রভুর সঙ্গী কৃষ্ণদাসের । তাহার উদ্দেশে, কৃষ্ণদাসের অনুসন্ধানে । ন্যায় নাহি বাসি, উচিত বলিয়া বোধ করি না ॥ ৪১।৪৬ ॥

( ৯২ পা ) “শুনি সব... .. পরম সাধন ॥” এই ৪৭ হইতে ৫০ পর্য্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ সরল । ধাঞা, দৌড়িয়া । তাঁহা গোষ্ঠী হৈল, পয়স্বিনী-নদীর তীরে আদিকেশবমন্দিরে সভা হইল । অনন্ত পদ্মনাত, এখানে অনন্তেশ্বর নামে শিব এবং পদ্মনাত নামে বিষ্ণু-মূর্ত্তি আছেন । পরোক্ষী, নদীবিশেষ । এখানে মাধ্বাচার্য্য-প্রতিষ্ঠিত একটি দেব-স্থান আছে । সিংহারিমঠ, শঙ্করাচার্য্য দিগ্বিদ্যে বাহির হইয়া এইস্থানে এক চকের সম্মুখে সরস্বতীকে স্থাপন করিয়া

মঠ নির্মাণ করেন । তত্ত্বাবধী, বাঁহারা সকল বস্তুকেই গত্য বলিয়া স্বীকার করে । উড়ুপকৃষ্ণ, মাধ্বাচার্য্য কৰ্ত্তৃক স্থাপিত বালগোপালমূর্ত্তি । “গোপীচন্দন ভিতরে” ইত্যাদি ।

কোন সময়ে এক সওদাগর দ্বারকা হইতে কাহাজে করিয়া আসিতেছিলেন, এই স্থানে তাহার পোত জলমগ্ন হয় । সেই পোতে অনেক গোপী-চন্দন ছিল, তন্মধ্যে এক গোপালমূর্ত্তি ছিলেন । ঐ মূর্ত্তি মাধ্বাচার্য্যকে স্বপ্নে আদেশ করেন, তুমি এইস্থান হইতে আমাকে লইয়া যাও । মাধ্বাচার্য্য ঐ মূর্ত্তি আনয়ন করেন ; ইনিই নর্ত্তক গোপাল ।

বর্ণাশ্রমধর্ম্ম কৃষ্ণে সমর্পণ অর্থাৎ বর্ণা-শ্রমোচিতধর্ম্ম আচরণ এবং স্ত্রীকৃষ্ণের উদ্দেশে সেই ধর্ম্মের ত্যাগ । কৃষ্ণপ্রেম-সেবাফলের, কৃষ্ণপ্রেম ও কৃষ্ণসেবারূপ ফলের ॥ ৪৭-৫০ ॥

( ৯২ পা ) “শ্রবণমিতি ।” এই সপ্ত-দশ শ্লোকের তাৎপর্য্য, শ্রবণকীর্ত্তনাদি যে, স্ত্রীকৃষ্ণপ্রেমলাভের প্রধান উপায় এই শ্লোকে তাহা প্রতিপন্ন করিতেছেন । শাস্ত্র স্ত্রীভাগবতশাস্ত্র । শ্রবণাদিই যে প্রেমের শ্রেষ্ঠ সাধন, তাহা স্ত্রীকীর্ত্তন গোস্থায়ী দেখাইতেছেন ।

স্ত্রীকৃষ্ণের নাম, রূপ, গুণ, পরিকর ও লীলা-ময় শব্দসকলের কর্ণস্পর্শের নাম শ্রবণ । শ্রবণ-পাদি নয়টি লক্ষণ বাঁহায়, তাহাই ভগবৎবিদ্যিকা তত্ত্ব । শ্রবণকীর্ত্তনাদি তত্ত্বের আচরণকারিই অধ্যয়ন উত্তম । তত্ত্ব কি, তথাপি তত্ত্বঃ—

“তত্ত্বরত্ন রতনং তদিত্যমুত্তমুপাধি নৈরুত্তমো-  
মুখিন্ মনঃ কল্পনমৈতদেব নৈকর্মা ॥”

তত্ত্বই স্ত্রীকৃষ্ণের ভজন, ইহলোক ও পরলোক  
স্বর্গীয় কাঞ্চনী সিন্ধু পূর্বক স্ত্রীকৃষ্ণে ভজনে যে

অর্পণ, তাহাই ভজন ও ভক্তি। এই নবলক্ষণে সমুচ্চয়ের আবশ্যক নাই। এই নববিধা ভক্তির মধ্যে একক অর্থাৎ শ্রবণাদির কোন একটি সাধন করিলে সাধ্যবস্তুর প্রেমের লাভ হয়। ভিন্ন প্রকৃতি ও রুচিবশতঃ কোন স্থানে অল্প অল্পের মিশ্রণও দেখা যায়। এখানে নবলক্ষণ শব্দ সামান্য উক্তি দ্বারা ভক্ত্যঙ্গের অন্তর্ধান কর্তব্য জানিবেন। রসানুভোক্ত গুরুপাদিশ্রমাদি চতুঃষষ্টি ভক্ত্যঙ্গ ইহার মধ্যে অন্তর্ভাবিত আছে। নামাদিশ্রবণ ভক্ত্যঙ্গের ক্রম। যদিও নামরূপাদির মধ্যে যে কোন একটিরই হটক বা বিপর্যয়রূপে হটক উহার অন্তর্ধান করিলে সিদ্ধ হয়, তথাপি প্রথমে অন্তঃকরণভক্তির অল্প নামশ্রবণ আবশ্যিক। অন্তঃকরণ শুদ্ধ হইলে রূপশ্রবণে রূপের উদয় যোগ্য হয়। রূপ সম্যক্রূপে উদ্ভিত হইলে গুণের ক্ষুণ্ণি হয়। গুণ সম্যক্রূপে ক্ষুণ্ণিত হইলে পরিকর-বৈশিষ্ট্যে গুণের বৈশিষ্ট্য সম্পাদিত হয়। অনন্তর নাম, রূপ, গুণ ও পরিকর সম্যক্রূপে ক্ষুণ্ণিত হইলে স্তম্বরূপে লীলার ক্ষুণ্ণি হয়। এই অভি-প্রায়ে সাধনের ক্রম লিখিত হইল। মহৎগুণের সূত্র হইতে যদি নাম শ্রবণ হয়, তবে নামাদিশ্রবণের অধিকতর সাহায্য এবং শ্রবণবিষয়ে জাত-রুচিগণের পরম সূত্র প্রদ হয়। মহৎগুণের সূত্র হইতে শ্রবণ দুই প্রকার, মহৎ কর্তৃক প্রকাশিত প্রবন্ধের শ্রবণ ও মহৎ কর্তৃক কীর্ত্যমান বিষয়ের শ্রবণ। তাদৃশ প্রভাবময় শব্দাত্মক ও পরমরস-ময় শ্রীভাগবতের শ্রবণই অতীব শ্রেষ্ঠ। কেন না, প্রকাশিত প্রবন্ধময় ভাগবত নারায়ণ কর্তৃক বিরচিত এবং শুকদেব কর্তৃক কীর্তিত হওয়ার, উহার শ্রবণ শ্রেষ্ঠ। পূর্ণ ও তদবশ্য হেতু শ্রীকৃষ্ণ-নামাদির শ্রবণ, পরম ভাগ্য বশতঃই সম্পন্ন হয়। কীর্তনাদিতেও এইরূপ জানিতে হইবে। নাম রূপাদির উক্ত ভাবকে কীর্তন বলা হয়। যস্ততি বালাঃশব্দঃ কীর্তন কর, তাহাও ভক্তদেয়্যি নবভ-বের পূর্ক কীর্তিত; ইহাই অহরহান পূর্ক-কীর্তন

করিবে। শ্রবণ ব্যতীত, শ্রীকৃষ্ণের নামরূপাদি জানা যায় না বলিয়া, কীর্তনের অগ্রে শ্রবণ নির্দেশ করিয়াছেন। বিশেষ, যদি সাক্ষাৎ মহৎরূত কীর্ত-নের শ্রবণভাগ্য না হয়, তবে শব্দ পৃথক কীর্তন করিবে, কীর্তন করিতে করিতে শ্রবণভাগ্য হইবে। "তদ্ব্যধিসর্গোজনতাবিপ্লব" ইত্যাদি শ্লোকে টীকা-কায়ও বলিয়াছেন, নাম শ্রবণ করিয়া গ্রহণ করিবে; শ্রবণ যদি না হয়, তবে শব্দই গান করিবে। পূর্ববৎ কীর্তনেও নাম, রূপ ও গুণাদির ক্রম জানিবেন। লঙ্কারহিত হইয়া উচ্চৈঃশব্দে গানই নামকীর্তন; ইহাই শ্রেষ্ঠ। এই কীর্তনাত্মা ভক্তি দীনজনের বিষয়পাররূপা ও করুণাময়ী। ইহা শ্রীকৃষ্ণকপরতাসম্পাদনার্থা। কলিতে তপঃ, যোগ, বিজ্ঞা ও যজ্ঞাদিক্রিয়া সাক্ষ না হওয়ার, কলির লোক স্বভাবতঃই দীন। এই দীন লোকে নামকীর্তন আবিভূত হইয়া সত্যাদিযুগত সর্বসাধনের ফল, দীনগণকে প্রদান করতঃ কৃতার্থ করিলেন; যে কীর্তনে ভগবান বিশেষরূপে সন্তুষ্ট হইলেন। কীর্তনাদি ভক্তিমায়ে দেশকাল-দিয় নিয়ম নাই। কীর্তনাত্মা ভক্তিতে দশটি অপরাধ পরিত্যাগ করিবে। দশাপরাধ বথা,— সাধুনিন্দা, বিষ্ণু ও শিব নামের পৃথক মনন, শুককে অবজ্ঞা, শাস্ত্রনিন্দা, নামে অর্থাবাদ, কল্পনা, নামবলে পাপে প্রবৃত্তি, অল্প শুভকর্মের সহিত নামের সাম্য মনন, বিমুখজনে নমোপদেশ, নাম শ্রবণে অশ্রীতি। অবিশ্রান্তভাবে নাম করিলে দশবিধ নামাপরাধ হইতে মুক্ত হয়। অথবা, কৃষ্ণরূপার অপরাধের ভোগ নষ্ট হয়। এই কীর্তনে দৈন্য, নিজাভীষ্টমত বিজ্ঞপ্তি ও ত্বাদি পাঠ অন্তর্ভাবিত। কীর্তনাদির পর পরগাপ্তি প্রভৃতি দ্বারা অন্তঃকরণ শুদ্ধ হইলে নির্বিঘ্নমান ব্যক্তি নামাদিকীর্তন ত্যাগ না করিয়া শ্রবণ করিবে। বৎকিঞ্চিৎ মনেঃ দ্বারা নামরূপা-দির অহরহানই শ্রবণ। নামাদি সযত্নে শ্রবণ বহ-বিধ। পূর্ববৎ ক্রমোপাসনা রীতি দ্বারা স্তম্বরূপা-গুণ, পরিকররূপে ও লীলার স্তম্বরূপ জানিবেন।

স্বরূপ সানাতন্য পঞ্চবিধ । ১। মনোহারী বৎকিকিং  
 অমুসন্ধানই স্বরূপ, ২। সকল স্থান হইতে চিত্তকে  
 আকর্ষণ করিয়া সামান্যাকারে রূপাদিতে মন ধার-  
 ণাই ধারণা, ৩। বিশেষরূপে রূপাদির চিন্তন ধ্যান,  
 ৪। অমৃতধারার জ্ঞান মনের অনবচ্ছিন্নতা এবাহু-  
 ত্বত্তি, ৫। ধোয় বস্তুর কেবল ক্ষুরণই সমাধি। ইহা  
 শান্তত্বের হয়। দাসাদিভক্তের সমাধিতে লীলাদি-  
 যুক্ত শ্রীকৃষ্ণ ক্ষুদ্রি পান। অনন্তর ক্রটি ও শক্তি  
 হইলে স্বরূপ ভ্যাগ না করিয়া পাদসেবা করিবে।  
 কাল ও দেশাদিতে যথোচিত পরিচর্য্যাই পাদসেবন।  
 পাদসেবার পাদশয্য দ্বারা ভক্তিই নির্দিষ্ট হইতেছে।  
 অতএব সেবার সাদরত্ব বিধান হইল। ইহাতে  
 শ্রীমুর্তিদর্শন, স্পর্শন, পরিক্রম, অমুভ্রজন, সাধুসঙ্গ,  
 তুলসীসেবা, ভগবদ্ভক্তি, গঙ্গা, পুরুষোত্তম, দ্বারকা  
 যথুগাদি, তদীর তীর্থস্থানে গমনাদি পর্য্যন্ত ভক্তাদ-  
 সকল অন্তর্ভাবিত। অনন্তর অর্চনমার্গে শ্রদ্ধা উৎ-  
 পন্ন হইলে, মন্ত্রগুরুকে আশ্রয় করিবে এবং তাঁহার  
 নিকট অর্চনমার্গ বিশেষরূপে জানিবে। কারণ,  
 প্রদত্ত মন্ত্রদেবতার অমুরূপ ভক্তনোপদেশ প্রদান  
 করিতে মন্ত্রদাতা গুরুই সমর্থ। অসমর্থ হইলে  
 অস্ত্রের নিকট জানিবে। আগমোক্ত আবাহনাদি  
 ক্রম বাহার, তাহাই অর্চন নামে কথিত হয়।  
 যদিও ভার্গবভ্রমতে পঞ্চরাত্রাদিতে কথিত অর্চনের  
 ন্যায়, অর্চনমার্গের আবশ্যক নাই, অর্চন ব্যতীতও  
 শরণাপত্তি প্রভৃতির একটি অমুঠানে পুরুষার্থ সিদ্ধ  
 হয়; তথাপি দীক্ষা বিধান দ্বারা শ্রীভগবানের  
 সহিত বিশেষসম্বন্ধবিশিষ্ট গুরুর চরণ আশ্রয় করা  
 অবশ্য কর্তব্য; ইহা শ্রীনারদাদি কর্তৃক প্রদর্শিত  
 পথের অমুসরণকারী ব্যক্তিগণ দেখাইয়াছেন।  
 “দিব্যং জ্ঞানং যতো দদ্যাৎ কুর্য্যৎ পাপস্য সজ্জনম্ ।  
 তস্মাদীক্বেতি সা প্রোক্তা দেশিষ্টকণ্ডকোবিষ্টৈঃ ॥”  
 যে মন্ত্র দিব্য জ্ঞানকে প্রদান করে এবং পাপকে  
 ক্ষয় করে, তদ্ব্যজ্ঞগণ তাহাকে দীক্ষা বলেন। মল-  
 লোকসুকরণ দীক্ষা গ্রহণ করিয়া অবশ্য অর্চন  
 করিবে। বীক্ষিতগণ যথো বাহার্য্য দ্বারা বৃহৎ

তাঁহাদের অর্চনমার্গই শ্রেষ্ঠ সাধন। বহুদেবকে  
 সুনিগণ বলিয়াছেন—  
 “অয়ং স্বতন্ত্রমঃ পদা বিকান্তে গৃহমেধিনঃ ।  
 যচ্ছুর্য্যাপ্তবিন্দেন তুক্রেনোভ্যেত পুরুষঃ ॥”  
 শ্রদ্ধা পূর্ব্বক নিজবিন্দু দ্বারা কৃষ্ণের অর্চনই  
 গৃহস্থগণের মঙ্গলকর পথ। বিন্দু থাকিতে বিন্দু  
 দ্বারা অর্চন না করিয়া নিকিঞ্চনের ন্যায় কেবল  
 স্বরণাদি নিষ্ঠা করিলে, তাহাদের বিত্তশাঠ্য প্রতি-  
 পত্তি হয় এবং অন্য দ্বারা বাহার্য্য অর্চনাদি করার,  
 তাহারা ভগবানে অশ্রদ্ধাময় যেতু অতি নীচ।  
 গার্হস্থ্যধর্মের দেবতাভাগরূপ শাখাপল্লবাদি সেক-  
 স্থানীয় মূলসেকরূপ শ্রীকৃষ্ণের অর্চন। উহা না  
 করিলে মহাবোধ হয় এবং নরকে পত্তন হয়। তথা  
 বিমুখধর্মোক্তরে—  
 “এককালং বিকালং বা ত্রিকালং পূজয়েচ্ছরিন্ ।  
 অপূজ্য ভোজনং কুর্ত্তন্নরকানি ভ্রজেন্নরঃ ॥”  
 অর্থাৎ শ্রীহরিকে পূজা না করিয়া ভোজন করিলে  
 নরকে যায়। অর্চনমার্গে বিধি অবশ্য অপেক্ষণীয়।  
 যদি বল, মন্ত্র ভগবদ্ব্যমুক্ত। তন্মধ্যে নমঃ শব্দাদি  
 দ্বারা অলঙ্কৃত মন্ত্র বিবিধ। একটি শ্রীভগবান্ ও  
 ঋষিগণ কর্তৃক সমর্পিত শক্তি বিশেষ, অপরটি  
 শ্রীভগবানের সহিত আশ্রয়সম্বন্ধ বিশেষ প্রতিপাদক।  
 তন্মধ্যে কেবল নিরপেক্ষ শ্রীভগবানের নাম পরম  
 পুরুষার্থ প্রেম পর্য্যন্ত প্রদানে সমর্থ। অতএব  
 নামের অধিক সামর্থ্য দেখা বাইতেছে, সুতরাং  
 দীক্ষাদি অপেক্ষার প্রয়োজন কি? অর্থাৎ নাম  
 করিলেই যখন প্রেম লাভ হয়, তখন দীক্ষাপ্রহ-  
 ণের প্রয়োজন কি? তদন্তর, যদিও ব্রহ্মপত্তঃ সম্বন্ধ  
 নাই, তাহা হইলেও প্রায় স্বতাবতঃ দেহাদিসম্বন্ধ  
 দ্বারা কন্বর্ষ্যলীল বিকিণ্ডচিত্ত মনুষ্যগণের বিকিণ্ড-  
 চিত্তের সঙ্কোচের জন্য শ্রীমৎ-ঋষিগণ এই অর্চন-  
 মার্গে দীক্ষা গ্রহণের মর্ধ্যাদা স্থাপন করিয়াছেন।  
 অতএব সেই মর্ধ্যাদামুদয় করিলে প্রায়শ্চিত্ত  
 করিতে হয়। অতএব উক্তের পামর্ধ্যাদা স্বীকার  
 ও অপেক্ষা করিলেই পাপোপশয় সাধ্য।

হুসিদ্ধ ও আর বিচার নাই । এই অর্চন বিবিধ কেবলার্চন ও কৰ্ম্মশিপ্রার্চন । অর্চনের অঙ্গ-সকল আগবাড়িতে বা গুরুর নিকট জানিবেন । শ্রীকৃষ্ণজন্মাষ্টমী, কাঙ্ক্ষিকাদিব্রত ও একাদশীব্রতাদি এই অর্চনে অন্তর্ভাবিত । এই মার্গে যে অপরাধ আছে, তাহা তাগ করিবেন । অপরাধ যথা, বরাহ পুরাণে ;—পাছকা লইয়া ভগবদগৃহে গমন, যানে আরোহণ করিয়া মন্দিরে গমন, দেবতার উৎসবদির অনাদর, দেবতার অগ্রে প্রণাম না করা, উচ্ছিন্ন ও অশোচ অবস্থায় ভগবানের বন্দনাদি, একহস্তধারা প্রণাম, প্রদক্ষিণ কালে দেবতার সম্মুখে আসিয়া যে রীতিতে প্রদক্ষিণ করা হইতেছিল, সেই রীতির পরিবর্তন না করিয়া প্রদক্ষিণ করা, দেবতার অগ্রে পাদপ্রসারণ, তদগ্রে কটিবন্ধন, তদগ্রে শয়ন, তদগ্রে ভক্ষণ, তদগ্রে মিথ্যাকথা বলা, তদগ্রে উচ্চকথন, তদগ্রে পরস্পর অন্য বিষয় আলাপন, তদগ্রে রোমনাদি, তদগ্রে কাহারও নিগ্রহ বা অমুগ্রহ করা, তদগ্রে নিষ্ঠুর কুরবাক্য বলা, তদগ্রে কথল দ্বারা গাত্র আঘাত, তদগ্রে পরনিন্দা, তদগ্রে পরস্তুতি, তদগ্রে অশ্লীলবাক্য বলা, তদগ্রে স্বেধোবাযুত্যাগ, সামর্থ্যসঙ্গে মুখ্য উপচার না দিয়া গৌণ উপচার প্রদান, অনিবেদিত বস্ত্র ভক্ষণ, যে সময়ের যে কলাদি তাহা না দেওয়া, ভুক্ত বা ব্যবহৃত ব্যক্তাদির অবশেষ সমর্পণ, দেবতাকে পশ্চাতে রাখিয়া উপবেশন, দেবতার অগ্রে অস্ত্র ব্যক্তিকে অভিমান, গুরু কোন প্রসন্ন করিলে উত্তর না দেওয়া, নিজের প্রশংসাকরণ, দেবতার নিন্দন, রাজান্নভক্ষণ, অন্নকার গৃহে শ্রীমূর্ত্তিম্পর্শন অনিয়মে বিগ্রহ সন্নীপে গমন, বাঘ্য ব্যতীত মন্দিরের দারোদ্ঘাটন, কুকুরাদি কতৃক দূষিত ভক্ষ্য বস্তুর সংগ্রহ, পূজাকালে কথা বলা, পূজাকালে মূত্র পূত্রীবাধি ত্যাগার্থ গমন, গন্ধমালাদি প্রদান না করিয়া ধূপদ্বান, শ্মশ্রুনিবিদ্ধ পুষ্পাদি উপহার দ্বারা পূজা, কল্পধাক্স না করিয়া, শ্রীসংস্পর্শ পূর্ব শুচি না হইয়া, কুলবলা শ্রী, দীপ ও মৃতদেহ স্পর্শ করিয়া

রক্ত, নীল, অধোত ও অন্যের বস্ত্র পরিধান করিয়া, শব দর্শন করিয়া, কুকু হইয়া, শ্মশান ভ্রমণ করিয়া, ভুক্তারের অপরিপাক অবস্থায়, কুসুম ফুল, কুম্বশাক ও ভিলকক বা হিজ ভোজন করিয়া, তৈলমর্দন করিয়া, শ্রীবিগ্রহের স্পর্শ বা তাঁহার কোন কাৰ্য্য করা ; দেবতার সম্মুখে তাৎপুলচর্কণ, এরু-ভাদি নিবিদ্ধপত্রস্থ পুষ্প দ্বারা অর্চন, আস্থরকালে পূজন, কাষ্ঠাসনে বা ভূমিতে বসিয়া দেবতার পূজা, দেবতাকে স্নান করাইবার সময় বামহস্ত দ্বারা দেবতাস্পর্শ, শুষ্ক বা বাচিত পুষ্প দ্বারা পূজা, পূজাকালে ধুতু ফেলা, পূজা বিষয়ে বা পূজাকালে আশ্মপ্লাধা, বক্রভাবে ভিলক করা, পাদপ্রক্ষালন না করিয়া মন্দিরে গমন, অটবঞ্চব কর্তৃক পক বস্ত্র নিবেদন, অটবঞ্চবের সম্মুখে পূজন, নখস্পৃষ্ট জল দ্বারা স্নান করান, ঘর্ষাক্ত কলেবরে পূজন, নির্মালা লজ্বন ও ভগবানের নাম লইয়া শপথাদি করণ ইত্যাদি অনেক অপরাধ শাস্ত্রদৃষ্টে জানা যায় । ব্যাসদেব এই সকল অপরাধের প্রায়শ্চিত্ত নির্ণয় করিয়াছেন,—

“অহন্যহনি যো মর্ত্যো গীতাধ্যায়ং পঠেত্তু বৈ ।  
 ষাত্রিংশদপরাধাংশু ক্ষমতে তস্য কেশব ॥”

যে প্রতিদিন গীতার এক অধ্যায় পাঠ করে, কেশব তাহার ষাত্রিংশ অপরাধ ক্ষমা করেন । এই পূজামার্গে মানসপূজাও বিহিত আছে । ব্রহ্মবৈবর্ত্তে উক্ত হইয়াছে, প্রতিষ্ঠানপূরে এক দরিদ্র সরল বিপ্র বাস করিতেন । তিনি দেহকে কৰ্ম্মাধীন জানিয়া নিরপেক্ষভাবে অবস্থান করিতেন । কোন দিন তিনি ব্রাহ্মণসভায় বৈষ্ণবধর্ম্ম শ্রবণ করেন । মনের দ্বারাও বৈষ্ণবধর্ম্মআচরণে সিক হয়, ইহা জানিয়া, সেইদিন হইতে ঐ ধর্ম্ম আচরণ করিতে আরম্ভ করিলেন । অনন্তর প্রত্যহ গোদাবরীতে স্নান করিয়া নিত্যকর্ম্ম সমাপন করতঃ শান্তমতি হইয়া প্রাণারামাদি পূর্বক স্থিরচিত্ত হওতঃ মনের দ্বারা অভিন্ন শ্রীমূর্ত্তি স্থাপন করতঃ ভগবদঙ্গিরসার্কর পূর্বক শ্রীমূর্ত্তিকে প্রণাম করিয়া

সৌবর্ণঘটে গজাদি তীর্থ সকলের জল আহরণ পূরক নানা পরিচর্যায় ত্রয ধারা দানাদি হইতে আরাঙ্কিক পর্য্যন্ত মহারাজের ন্যায় উপচার ধারা পূজা সমাপন করিয়া প্রতিদিন অতিস্থখে কাল-যাপন করিতেন। এইরূপে বহুদিন গত হইলে কোনদিন শ্রীভগবানের ভোজন জন্য ঘৃণ্তের সহিত পরমাশ নিশ্চায় করিয়া সৌবর্ণপাঞ্জে রাখিলেন, পরে উত্তম্ব বিবেচনা করিয়া তন্মধ্যে অঙ্গুলিঘর প্রবেশ করাতাই উহা দগ্ধ হইল এবং সখেদে বলিলেন, এরূপ উত্তম্ব বস্ত ভগবানে অর্পণ করিতেছিলাম ? এই ছুখে তাঁহার সমাধিভঙ্গ হইলে বাহুও দগ্ধা-ঙ্গুলির যন্ত্রণায় পীড়িত হইলেন। বৈকুণ্ঠ শ্রী-প্রভৃতির সহিত উপবিষ্ট বৈকুণ্ঠনাথ ঐ ভক্ত বিপ্লবের অবস্থা জানিয়া হাস্য করিলেন। শ্রী প্রভৃতি প্রিয়ার-গণ হাস্যের কারণ জিজ্ঞাসিলে, বৈকুণ্ঠনাথ তাঁহা-দিগকে সঙ্গে লইয়া ঐ ভক্ত সম্মুখে উপস্থিত হইয়া হাসির কারণ দেখাইলেন এবং ভক্তকে যোগাস্থান প্রদান করিলেন। বন্দন যদিও অর্চনের অঙ্গরূপ, তথাপি কীর্তন, স্মরণের ন্যায় স্বাতন্ত্র্যভাবে বলি-বার অভিপ্রায়ে পৃথক্ বিধান করিয়াছেন। নম-স্কারই বন্দন। একহস্তে, বস্ত্রাবৃতদেহে, ভগবানের সম্মুখে, পশ্চাতে, বামভাগে ও গর্ভমন্দিরে প্রণা-মাদি রূপ অপরাধ বন্দনে ত্যাগ করিবে। তাঁহার আমি দাস, এই অভিমানই দাস্য। ইহাতে শ্রী-কৃষ্ণের ভজন প্রয়াস। বদ্ধভাবে তাঁহার হিত-চিত্তাই সখ্য। দেহাদি হইতে শুদ্ধ আশ্র পর্বস্তের সর্বভোভাবে শ্রীকৃষ্ণে অর্পণই আশ্রনিবেদন। ইহা গো বিক্রয়ের ন্যায়। যেমন বিক্রেতা বিক্রীত গরুর কোন চেষ্টা করে না, ক্রেতাই উহার মল-লাদি সাধন করে, গরুও বিক্রেতার কোন কার্য করে না; তরূপ ভগবানে আশ্র-সমর্পণ করিলে নিজের জন্য কোন চেষ্টা করিবে না। প্রয়োজন হইলে, অন্য বিবর ভক্তিসম্বর্ডে দেখিবেন ॥ ১৭ ॥

(১৩ পা) "শ্রবণ ... সীমা ।" এই পয়ারের ভাবার্থ "শ্রবণ কীর্তনমিতি ।"

প্রমাণ বশতঃ নামাদির শ্রবণকীর্তন হইতে কৃষ্ণপ্রেম হয়। পুরুষার্থের সীমা, পুরুষের প্রয়োজন সকলের অবধি। শ্রীকৃষ্ণে প্রেম হইলে পুরুষের কি অবস্থা হয়, তাহা পর শ্লোকে বলিতেছেন ॥ ৫১ ॥

(১৩ পা) "এবমিতি ।" এই শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির শব্দমে ৮৩ পৃষ্ঠায় দেখুন। শ্রবণ-কীর্তনাদিরূপ ব্রতধারী ব্যক্তিব যে কি অন্তত অবস্থা হয়, তাহা এই শ্লোকে প্রতিপন্ন করিলেন ॥ ১৮ ॥

(১৩ পা) "কর্মত্যাগ.....কভু নহে ॥" এই ৫২৯ পয়ারের ভাবার্থ। তত্ত্ববাদিকে প্রভু বলিতেছেন, আপনি যে বর্ণাশ্রমধর্ম ও বর্ণাশ্রমোচিত কর্মের কৃষ্ণে অর্পণকে শ্রেষ্ঠসাধন বলিয়া নির্ণয় করিলেন, তাহা কিরূপে হইতে পারে? সর্লশাস্ত্রে ( শ্রী-ভাগবতাদি শাস্ত্রে ) নিন্দনীয় কর্মকে ত্যাগ করিতে বলিয়াছেন। "ত্যাগের হেতু বলিতেছেন, "কর্ম" ইতি। কর্ম হইতে ভোগাদি প্রাপ্ত হওয়ার কৃষ্ণের প্রেমভক্তি কখন পাওয়া যায় না। কর্ম-ত্যাগ দুই প্রকারে হয়, এক ভক্তিকাম-নায়, অপর ভগবদাজায় ॥ ৫২ ॥

(১৩ পা) "আজ্ঞায়ৈবেতি ।" এবং "সর্লধর্ম্মানিতি ।" এই শ্লোকে দুইটির টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ৩৪ পৃষ্ঠায় দেখুন। ভগবান্ কর্তৃক উপদিষ্ট কর্মের গুণ দোষ জানিয়া ভক্তি কামনার কর্মের ত্যাগ প্রথম শ্লোক ধারা প্রতিপন্ন করিলেন এবং ভগবদাজায় কর্মত্যাগ দ্বিতীয় শ্লোক ধারা প্রতিপন্ন করিলেন। কর্মত্যাগি সর্বদা প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৯২০ ॥



(৯৩ পা) “ভাবদিত্তি ।” এই একবিংশ শ্লোকের তাৎপর্য, শাস্ত্র যে কর্মকে নিন্দা করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক । যদি বল, কেবল কর্ম, জ্ঞান ও ভক্তির সম্বন্ধে নিত্য-নৈমিত্তিক কর্মের ব্যবস্থা করা হইয়াছে, অতএব কর্ম সকলেরই প্রয়োজনীয় । উহাকে সাক্ষর্য্য করিলে কিরূপে ভক্তি প্রবর্তিত হয় ? তদন্তর ভক্তিতে কর্ম-দিকারিতা নিষেধ করিতে এই শ্লোক বলিতেছেন । ভক্তিতে দৃঢ় শ্রদ্ধা উৎপন্ন না হওয়া পর্য্যন্ত কর্মে অধিকার । শ্রী-কৃষ্ণে শরণাপত্তিই শ্রদ্ধার চিহ্ন । শ্রীকৃষ্ণে অশরণ ব্যক্তির কর্মত্যাগ ভয়জনক এবং শরণাপন্ন ব্যক্তির কর্মত্যাগ অভয়জনক, ইহা শাস্ত্র বলেন । জিজ্ঞাস্য থাকিলে ভক্তিসম্বর্ড দেখুন ॥ ২১ ॥

(৯৩ পা) “পঞ্চবিধ ... সম ॥” এই ৩৩ পয়ারের ভাবার্থ । পঞ্চবিধ মুক্তিকে পুরুষার্থ নির্গম করিয়াছেন ; তদন্তরে প্রভু বলিতেছেন, “পঞ্চবিধ” ইতি । ভক্তগণ এই পঞ্চবিধ মুক্তিকে সুচ্ছজ্ঞান ও নরকতুল্য দর্শন করেন । পরপর শ্লোক তিনটিতে ইহার প্রমাণ করিতেছেন ॥ ৩৩ ॥

(৯৩ পা) “সালোক্যোত্তি ।” এই শ্লোকের গীকা ও বাদসা আদির চতুর্থে ৫৪ পৃষ্ঠায় দেখিষেন । ভক্তগণ পঞ্চবিধ মুক্তি ত্যাগ করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২২ ॥

(৯৩ পা) “বো হুত্যানিত্তি ।” এই ত্রয়োবিংশ শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । ভক্তগণ পঞ্চবিধ মুক্তিকে

তুচ্ছ জ্ঞান করেন, এই শ্লোকদ্বারা তাহাই প্রমাণ করিলেন ॥ ২৩ ॥

(৯৪ পা) “নারায়ণপরা ইতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । ভক্তগণ পঞ্চবিধ মুক্তিকে নরকের তুল্য দেখেন, এই শ্লোক দ্বারা তাহাই প্রমাণ করিলেন । নরক তুল্য কষ্টদায়ক স্থান না থাকায় মুক্তির সহিত উহার উপমা দিলেন । মুক্তিতে সেবা সুখ না থাকায় ভক্ত সম্বন্ধে উহা অত্যন্ত কষ্টকর ॥ ২৪ ॥

(৯৪ পা) “কর্ম মুক্তি...সম্প্রদায় সম্বন্ধ ॥” এই ৫৪ পয়ারের ভাবার্থ সরল । তদ্বাদিকে প্রভু কহিতেছেন, “কর্ম” ইতি । সেই দুই অর্থাৎ মুক্তিকে সাধ্য এবং কর্মকে উহার সাধন বলিয়া স্থাপনা করে । প্রভু নিজের দৈন্যতা দেখাইয়া ঐ দুইকে সাধ্য সাধন স্থাপনের অভিপ্রায় বলিতেছেন, “সন্ন্যাসী” ইত্যাদি । তেত্রিঃ সন্ন্যাসী বলিয়া । সন্ন্যাসি-মুখে এরূপ বৈক্যবসিদ্ধান্ত শুনিয়া তদ্বাদী বিস্মিত হন । নির্মল, অভিলষিত প্রাপ্তিবিশয়ে বাবেবারে বড় । আচরিয়ে, আচরণ করি । সম্প্রদায় সম্বন্ধ, সেই সম্প্রদায়ের সহিত সম্বন্ধ থাকায় ॥ ৫৪ ॥

(৯৪ পা) “প্রভু কহে ... আনন্দ ॥” এই ৫৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল । প্রভু কহিলেন, কর্মী ও জ্ঞানী উভয়েই শ্রদ্ধা-ভক্তিরহিত । তোমার সম্প্রদায় অর্থাৎ তোমার দলে । জ্ঞানীগণ শ্রীমুর্তির সত্য স্বীকার করে না, তোমরা স্বীকার কর, ইহাই তোমাদের বিশেষ গুণ । এই মত,

এইরূপ বিচার দ্বারা । তার ঘরের, তত্ত্ব-  
বাদিগণের । গর্ক অর্থাৎ আমরা যাহাকে  
সাধ্য সাধন নিশ্চয় করিয়াছি তাহাই  
শ্রেষ্ঠ, এরূপ মনন ।

এখানে কেহ বলেন, এই প্রকরণ আলোচনা  
করিলে বুঝা যায়, মাধবসম্প্রদায়ের সহিত প্রভুর  
কোন সন্ধ নাহি, অথচ তিনি গুরুগোরব করি-  
তেন । পূর্বাচার্যের মতে যে প্রভু, দোষারোপ  
করেন, ইহাও সম্ভব নহে । প্রভুর যে গুরুপ্রণালী  
দেখা যায়, উহা কল্পিত । মধ্বের নাম আনন্দ  
তীর্থ, ইনি শঙ্করাচার্যের শিষ্য । অতএব ব্রহ্ম  
সম্প্রদায়ভুক্ত । মাধবেশ্বর মধ্বসম্প্রদায় ভিন্ন ব্রহ্ম-  
সম্প্রদায়ে মন্ত্র গ্রহণ করিয়া ভিন্ন সম্প্রদায়ী হইলেন ।  
এই হেতু কবিকর্ণপুর চৈতন্যকল্পতরুর মূলস্থানে  
মাধবেশ্বরকে বলিয়াছেন । অতএব মহাপ্রভু ব্রহ্ম-  
সম্প্রদায়ভুক্ত । এই হেতু তিনি শ্রীভাগবতোক্ত  
তত্ত্বতত্ত্ব সিদ্ধান্ত প্রচার করেন ।

ইহা অসঙ্গত । কেন না, প্রেমেররত্নাবলী  
গ্রন্থে প্রথম প্রেমের ৮ শ্লোকের টীকায় উক্ত  
হইয়াছে—

“যদ্যপি শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যঈশ্বরস্তথাপি তদ্ব্যতঃ  
সর্বোত্তমং বীক্ষ্য তদন্বয়ে দীক্ষ্য স্বীচকার লোক-  
সংগ্রহেচ্ছুরিত্যাদি ।”

যদিও শ্রীচৈতন্য ঈশ্বর, তথাপি লোকসংগ্রহ  
নিমিত্ত মধ্বাচার্য্য প্রণীত মতই সর্বোত্তম বিবেচনার  
দীক্ষা স্বীকার করতঃ উপদেশ দেন । ইহাতে  
মধ্বাচার্য্যের সহিত প্রভুর সন্ধ দেখা যাইতেছে ।  
যদি মধ্বের সহিত প্রভুর কোন সন্ধ না থাকে,  
তবে গুরু গোরব করেন কেন ? যাহার লিখিত  
গোবিন্দভাষ্যাদি স্বীকার করা হইতেছে, প্রেমের  
রত্নাবলীতে তাঁহার লিখিত প্রভুর গুরুপ্রণালীকে  
কল্পিত বলা হয় কেন ? অতএব গুরু প্রণালী  
প্রমাণ রহিত নহে । প্রভুর গুরুপ্রণালী আদির  
ভাবার্থব্যাখ্যার ২৪৫ পৃষ্ঠার দেখিবেন । মধ্বা-  
চার্য্য বেদাধিকরণ্য বাহরায়ণের শিষ্য, শঙ্করের

শিষ্য নহে । ব্রহ্ম-সম্প্রদায় বলিতে অষ্টভৈতবাদ  
বোধ হয় এবং মধ্বাচার্য্য শঙ্করের শিষ্য হইলে  
অষ্টভৈতবাদী হইতেন ; কিন্তু মধ্বসম্প্রদায় ঐত্ববাদী,  
ইহা মাধ্বভাষ্যেই প্রমাণিত হয় এবং মহাপ্রভু  
ঐত্ববাদ পক্ষই অবলম্বন করেন । কবিরাজ ও  
কবিকর্ণপুর যে মাধবেশ্বরকে চৈতন্যবৃক্ষের মূল  
স্থানে বলিয়াছেন, তাহার কারণ এই, মাধ্ব-  
সম্প্রদায় মধ্যে গোপীপ্রেম মাধবেশ্বরে প্রথম  
প্রকাশ পায় ।

মাধ্বসম্প্রদায় মধ্যে তত্ত্ববাদীগণ যে  
সাধ্য ও সাধনকে মধ্ব কর্তৃক প্রাথমিক  
মনে করিয়া গর্ক করিতেন, মহাপ্রভু সেই  
গর্ককে চূর্ণ করতঃ প্রকৃত সাধ্য ও সাধন  
নির্ণয় করিলেন । পঞ্চাঙ্গসরাসরোবর,  
ইহা একটি তীর্থ ।

স্বর্গের অপরা বর্ণা, সৌরভেরী, সমীচী, বৃষ্ণা  
ও লতা এই কয় সখী মিলিত হইয়া অচ্যুত ঋষির  
তপোভঙ্গে উদ্যত হইলে, ঋষির পাঁচজনকে  
শাপ প্রদান করেন, তোমরা কুন্তীর হইয়া অলে  
বাস কর । তখন তাহার ঋষিচরণ ধারণ করিয়া  
শাপ মোচন জন্য প্রার্থনা করিলে তিনি বলিলেন,  
জল হইতে তোমাদের কেহ উত্তোলন করে, তবে  
শাপ মুক্ত হইবে । পরে নারদের সহিত সাক্ষাৎ  
হওয়ার, তিনি বলিলেন, অর্জুন তীর্থযাত্রার আগ-  
মন করিয়া তোমাদিগকে জল হইতে তুলিবেন ।  
পরে বর্ণা প্রকৃতি পাঁচজন পাঁচসরোবরে কুন্তীর  
হইয়া বাস করেন । ইহাই পঞ্চাঙ্গ নামে খ্যাত ।

গোকর্ণ স্থানে গোকর্ণ শিব দেখেন ।  
ঐশ্যয়ানী, একটি তীর্থ । কোলাপুর,  
বোম্বাইয়ের অন্তর্গত রত্নগিরির দক্ষিণ  
পূর্ক কোণে অবস্থিত । পাণ্ডুর, বোম্বাই  
বিভাগের অন্তর্গত সোলাপুরের নিকট  
ভীমা নদীর ধারে । এখানে বিঠলৈ-  
শ্বরের মন্দির আছে ৷ ৫৫ ৷

( ১৪ । ১৫ পা ) “প্রেমাবেশে.....  
এতেক কহিলা ॥” এই ৫৬ ও ৫৭ পয়ারের  
ভাবার্থ সরল । আমার গোসাঞের,  
মাধবেশ্বরপুরীর । গন্ধ, সঞ্চক । সিদ্ধি-  
প্রাপ্তি, প্রাকৃত দেহত্যাগ । প্রস্তাবে,  
কথায় কথায় ॥ ৫৬।৫৭ ॥

( ১৫ পা ) “প্রভু কহে.....করিলে  
বিশ্রাম ॥” এই ৫৮ ও ৪৯ পায়ারের  
ভাবার্থ সরল । ভৌহা, তিনি । ভীমরথি,  
ভীমানদী । তাপীনদী, বর্তমান নাম  
তাণ্ডী, হাইদ্রাবাদের উত্তর পশ্চিম ।  
নির্ঝিন্দা, উজ্জয়িনী নগরীর কিঞ্চিৎ দূরে  
এই নদী প্রবাহিতা, ইহা বিদ্যাগিরি  
হইতে নিঃসৃত । অতিরিক্ত, অতি পুরা-  
তন ॥ ৫৮ । ৫৯ ॥

( ১৫ । ১৬ পা ) নাসিক ত্র্যম্বক.....  
পাইলা গৌরহরি ॥” এই ৬০ হইতে ৬২  
পর্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ সরল । নাসিক  
ত্র্যম্বক, মহাদেব ; সম্প্রতি আহাম্মদ  
নগরের উত্তর পশ্চিম গোদাবরীর উৎ-  
পত্তি স্থানে নাসিক নগর অবস্থিত ।  
সগুগোদাবরী, দক্ষবাটিকার দক্ষরাজের  
মন্দিরের পূর্বভাগে যে বৃহৎ সরোবর  
আছে, তাহা সগুগোদাবরী । ক্ষুদ্র  
পুরাণে উক্ত হইয়াছে ;—

ইতি নবম পরিচ্ছেদে স্তবোধিনী ॥ ৯ ॥

দক্ষবাটিকার বসিষ্ঠাদি সপ্তর্ষি শিবলিঙ্গ স্থাপন  
করিয়া, উহার অভিব্যেকের জন্য সগুগোদাবরী  
তীর্থ আনয়ন করিতে বান । পশ্চিমদিকে দৈত্যদিগের  
সহিত তাঁহাদের বিবাদ উপস্থিত হইলে, সপ্তর্ষি  
গোদাবরীকে অন্তর্বাহিনী করিয়া ঐ স্থানে আনয়ন  
করেন । ইহাতেই দক্ষবাটিকার গৌরব বৃদ্ধি হয় ।  
এখানে সগুগোদাবরী তীর্থ আছে ।

দুই জনার, মহামহাপ্রভুর ও রামা-  
নন্দের । সমাধান, শেষ- ॥ ৬০—৬২ ॥

( ১৬ পা ) “আলাল নাথ .....নিজ-  
ঘরে গেলা ॥” এই ৬৩ ও ৬৪ পয়ারের  
ভাবার্থ সরল । কৃষ্ণদাসে, সঙ্গী ব্রাহ্মণকে ।  
ধেহো, অবধি । পাণ্ডাপাল, পাণ্ডাগণ ।  
“মালা প্রসাদ ॥” ইতি । ঐজগন্নাথ  
প্রসন্ন হইয়া এই মালা প্রসাদ আমাকে  
দিলেন, এই বোধে প্রভু স্মৃতির হইলেন ।  
কাশীমিশ্র, জগন্নাথের প্রধান সেবক  
ও প্রতাপরুদ্ররাজার গুরু । পড়িছা,  
তত্ত্বাবধারণক ॥ ৬৩।৬৪ ॥

( ১৭ পা ) “মোর ঘরে.....কৃষ্ণ-  
দাস ॥” এই ৬৫ ও ৬৬ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । ভট্ট, সার্কভৌম । মাৎসর্য্য,  
অন্যের শুভে বিদেষ । যতেক বিচারে,  
যত বিচার করে ॥ ৬৫।৬৬ ॥

## দশম পরিচ্ছেদ ।

( ১৭ পা ) “তৎ বন্দ ইতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । প্রহরকার এই পরিচ্ছেদে বাহা  
বলিবেন, তাহা শ্লোকার্থে প্রকাশ করি-

লেন । প্রচুর বর্ষণ দ্বারা কোন শস্যের  
উপকার হয়, কোন শস্যের অপকার হয়  
বলিয়া প্রহরকার সম্বন্ধে বর্ণনা বলি-  
লেন । ইহাতে নিজ দর্শনরূপ প্রচুর

বর্ণন হইলেও শস্যের অপকারের কোন সম্ভাবনা নাই। শস্য কি? শুক্লগণই শস্য। ইত্যাদিরূপে মনীষিগণ লয় করিয়া লইবেন ॥ ১ ॥

(৯৮ পা) “জয় জয় ... সংসারিক-জন ॥” এই ১ম হইতে ৩য় পরায় পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। দক্ষিণে, দক্ষিণদেশে। রহয়ে, থাকেন। সেই ছলে, তীর্থজমণ ছলে ॥ ১-৩ ॥

(৯৮ পা) “ভবদ্বিধেতি ।” এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গালা আদির প্রথমে ১২ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। “মহা-স্তের এই এক লীলা” ইত্যাদি পরায় প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২ ॥

(৯৮ পা) “বৈষ্ণবের .... কৈল আলিঙ্গন ॥” এই ৪র্থ হইতে ৭ম পর্য্যন্ত পরায়ের ভাবার্থ সরল। এই হয় স্বভাব নিশ্চল অর্থাৎ তীর্থজমণছলে তীর্থকে পবিত্র এবং লোকসকলকে নিস্তার করেন, ইহা বৈষ্ণবের নিশ্চিত স্বভাব। তিঁহো, মহাপ্রভু। তবহিঁ, সেই সময়। তাঁহা, জগন্নাথের মন্দিরে ॥ ৪-৭ ॥

(৯৯ পা) “দর্শন করি ..... ইহার সংহতি ।” এই ৮ম হইতে ১০ম পরায় পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। তাঁরে, মহাপ্রভুকে। তাঁরে, কাশীমিশ্রকে। তাহা, কাশীমিশ্রের বরে। হাঁকানে, ডাকে। মহাসোয়ার, পাচক প্রধান। ধ্যান, ধ্যান করে ॥ ৮-১০ ॥

(৯৯ পা) “এই সব বৈষ্ণব ... সনে নাহি দার ॥” এই ১১শ হইতে ১৩শ পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। এই

সব বৈষ্ণব, ভট্টাচার্য কর্তৃক কথিত বৈষ্ণব। বেই যবে ইচ্ছা, বধন বে ইচ্ছা। তার পুত্র, ভবানন্দের পুত্র। সবলোকে, অন্য বৈষ্ণবগণকে। কালা-ক্লকদাসে, দক্ষিণজমণকালীন নিজ সঙ্গী ব্রাহ্মণকে। দায়, সঙ্ঘ ॥ ১১-১৩ ॥

(১০০ পা) “এত শুনি... ... করিল প্রমাণ ॥” এই ১৫শ হইতে ১৮শ পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। এত শুনি, মহাপ্রভুর বাক্য শুনিয়া। আইকে, শচী-মাতাকে। কহক, বলুক। তাঁহা আসি, নবদ্বীপে আসিয়া। আইর মন্দিরে, শচী-মাতার গৃহে। তিঁহো, পরমানন্দপুরী। তথাই, শচীমাতার গৃহে ॥ ১৫-১৮ ॥

(১০১ পা) “সত্বরে আগিয়া ... পড়িতে লাগিল ॥” এই ১৯শ হইতে ২২শ পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। তাঁহারে, পরমা-নন্দপুরীকে। মর্ষ, প্রিয়। আশ্রিয়াছে, আশ্রয় করিয়াছে ॥ ১৯-২২ ॥

(১০১ পা) “হেলোক্লিতেতি ।” এই তৃতীয় শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। মহাপ্রভুর জীচরণ ধারণ করিয়া দামোদর যে শ্লোক পাঠ করেন, তাহা এই শ্লোক ॥ ৩ ॥

(১০২ পা) “উঠাইয়া ... শাস্ত্র পরমাণ ॥” এই ২৩শ হইতে ২৬শ পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। কুপারকু, কুপারপ দড়ি। বেদপত্রতন্ত্র, বেদের অধীন। লজিব, লজেন করিব ॥ ২০-২৬ ॥

(১০৩ পা) “স শুক্রবাণিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে আছে। “গুরু আজ্ঞা বলবান্” ইতি পরায়প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪ ॥

(১০৩ পা) 'তবে মহাপ্রভু .....এই-  
ত কারণ ॥' এই ২৭শ হইতে ৩০শ  
পর্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ সরল । তবে,  
গুরুআজ্ঞা লজ্জনীয় নহে বলিয়া । তারে,  
গোবিন্দকে ।০ তরি, উদ্ধার হই । নতি,  
প্রণাম । চলচল, চল ও অচল । সত্য  
কহ, সত্যকথা বলিয়াছেন । ইহাঁ সহ,  
মহাপ্রভু সহ । ন্যায়, বিচার । বাখানি,  
বলেন । চর্ম্ম ঘুচাইয়া ইত্যাদি, যখন  
ইহাঁর ইচ্ছায় আমার চর্মাশ্বরের প্ররুত্তির  
নিরুত্তি হইয়াছে এবং দস্ত ত্যাগ পূর্বক  
চিত্ত শুদ্ধ হইল, তখন ইহাতে আমি  
ইহার ব্যাপ্য এবং ইনি আমার ব্যাপক,  
যেহেতু আমি ইহাঁর ইচ্ছার অধীন ॥২৭-৩০

(১০৪ পা) "সুবর্ণ বর্ণ ইতি ।"  
এই শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা আদি  
লীলার ৩০ পৃষ্ঠায় দেখিবেন । ব্রহ্মানন্দ  
ভারতী ব্যাপ্যব্যাপক ন্যায় দ্বারা প্রভুর  
সচল ব্রহ্মত্ব স্থাপন করিয়া, পুনরায়  
শাস্ত্রীয় প্রমাণ দ্বারা প্রভু যে স্বয়ং তাহা  
এই শ্লোকে প্রতিপন্ন করিতেছেন ॥ ৫ ॥

(১০৪ পা) "এই সব নামের.....  
হৈল আমার ॥" এই ৩১ শং পয়ারের  
ভাবার্থ সরল । এই সব নামের, সুবর্ণ-  
বর্ণ এই শ্লোকস্থ নাম সকলের । ইহো,  
মহাপ্রভুর । নিজাস্পদ, নামের নিজ  
স্থান অর্থাৎ বিষয় । চন্দনাক্ত প্রসাদ,  
চন্দন দ্বারা লিপ্ত জগন্নাথের প্রসাদি

ডোর । দিভুকে, 'দুই বাছতে । শিষ্য  
সত্য পরাক্রম, গুরুর সহিত শিষ্য  
বিচার করিলে শিষ্যেরই পরাক্রম হয়,  
ইহা সত্য । এহো নহে, তুমি বাহা  
বলিলে শিষ্যের পরাক্রম হয়, ইহা নহে ।  
অন্যেহেতু হয়, পরাক্রমের অন্য কারণ  
আছে । অন্য কারণ কি, তাহা বলিতে-  
ছেন, "ভক্তঠাই" ইত্যাদি । আপন  
প্রভাব অর্থাৎ তোমার প্রভাব । প্রভাব  
কি, তাহা বলিতেছেন, "আজ্ঞাম্" ইত্যা-  
দি । নিরাকার, নির্নিশেষ । তক্রপ,  
কৃষ্ণরাগ । সতুষ, দেখিয়াও দর্শনে  
সাধ মিটে না ॥৩১॥

(১০৪ পা) "অদ্বৈতবীথীতি ।" এই  
শ্লোকের ভাবার্থ শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
এই শ্লোকে বিশ্বমঙ্গল নিজের দশা বলি-  
য়াছেন । যেমন বিশ্বমঙ্গল নির্বিশেষের  
উপাসক হইয়াও কৃষ্ণমাধুর্য্যে আকৃষ্ট  
হওতঃ কৃষ্ণের উপাসনায় প্ররুত্ত হইয়েন,  
তক্রপ ব্রহ্মানন্দ ভারতীও মহাপ্রভুকে  
শ্রীকৃষ্ণরূপে অনুভব করতঃ এবং তৎ-  
মাধুর্য্যে আকৃষ্ট হওতঃ তন্তুজনে প্ররুত্ত  
হইয়েন ॥ ৬ ॥

(১০৪ পা) "প্রভু কহে ..... কৃষ্ণ-  
দাস ॥" এই ৩২ ও ৩৩ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । ইহাঁর রূপাতে অর্থাৎ মহাপ্রভু-  
রূপী কৃষ্ণের রূপাতে । ইহার, কৃষ্ণের ।  
নিজস্থানে, নিজের নিকট ॥ ৩২, ৩৩ ॥

## একাদশ পরিচ্ছেদ ।

( ১০৫ পা ) “অত্যাধুগমিত্তি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। এই পরিচ্ছেদে জীজগন্নাথ মন্দিরে ভক্তগণের সহিত মহাপ্রভুর উদ্ভগু মৃত্যু বর্ণিত হইবে, ইহাই শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন। এক সময়ে উভয়-পদকে উৎক্ষেপণ পূর্ব্বক উর্দ্ধে দণ্ডের স্থায় শরীর ধারণই উদ্ভগু মৃত্যু। মৃত্যে কি অলঙ্কার পরিধান করেন, তাহা বলিতেছেন, ‘নানা ভাবেতি ।’ অর্থাৎ সাত্ত্বিকাদি নানা ভাবই অলঙ্কার। অলঙ্কারে যেমন সৌন্দর্য্য বৃদ্ধি হয়, তদ্রূপ নানাভাবধারণে মহাপ্রভু অধিকতর সুন্দর হইলেন। গৌরাক্ষকে চন্দ্র বলায়, বোধিত হইতেছে, পূর্ণচন্দ্র উদয় হইলে সমুদ্র যেমন অতিশয় তরঙ্গিত ও উচ্ছলিত হইয়া তীরস্থ স্থানসমূহকে নিমজ্জিত করে, তদ্রূপ গৌরচন্দ্র উদ্ভিত হইয়া নিজমাধুর্য্য দ্বারা প্রেম-সমুদ্রকে তরঙ্গায়িত ও উচ্ছলিত করিয়া তন্मध्ये বিধকে মগ্ন করেন। “চক্রে” এই আত্মনে পদ ক্রিয়া দ্বারা বোধিত হইতেছে, মহাপ্রভুও আনন্দিত হইলেন ॥ ১ ॥

( ১০৫ পা ) “জয় জয়...বিষের ভক্ষণ ।” এই ১ম ও ২য় পয়ারের ভাবার্থ সরল। এই প্রতাপরুদ্র অর্থাৎ বিনি নীলাচলের রাজা ও জগন্নাথের সেবক, সেই এই

প্রতাপরুদ্র। একরূপ কথা বলিবার তাৎপর্য্য, মহাপ্রভুর রূপাধুগমিত্তি শ্লোকার্থে “এই” শব্দ প্রয়োগ করেন। তোমা, তোমার সহিত। “গম্যাসী” ইতি। বিষের ভক্ষণ সম রাজার ও জীর দর্শন, যেহেতু আমি বিরক্ত সন্ন্যাসী। অতএব বিরক্ত ব্যক্তির যে রাজা ও জী দর্শন একেবারে নিষিদ্ধ, তাহা প্রতিপন্ন হইল। বিষপান করিলে যন্ত্রণার সহিত দেহ পতন হয় এবং আত্মহত্যাভ্যন্তিত পাপে লিপ্ত হইয়া নরকভোগ করিতে হয়, তদ্রূপ রাজা ও জীকে দর্শন করিলে তৎসংসর্গে নানা-বিধ দুর্লভ্যসনা আসিয়া চিত্তকে মলিন করে ও নানা অশান্তিভোগ করাইয়া নরকে গমন করায়। অতএব উহা বিষপান তুল্য ॥ ১১২ ॥

( ১০৫ পা ) “নিষ্কিঞ্চনস্যোতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। ভবসমুদ্রতরণেচ্ছুক ও ভক্তনে প্রবৃত্তব্যক্তির পক্ষে বিষয়ী ও জী দর্শন যে মহা অকল্যাণকর, তাহা এই শ্লোকে প্রমাণ করিলেন। বিষ পান করিলে কোন ঐষধাদির সাহায্যে বাঁচিবার উপায় আছে, কিন্তু বিষয়ী ও জীর সংসর্গে পুনঃ দুর্লভ্যসনা হইলে উহা সমস্ত নিবৃত্ত হয় না। এই হেতু, উহা দোষাকর ॥ ২ ॥

( ১০৫ পা ) "সার্কভৌম...বিকার ॥" এই ৩য় পরায়ের ভাবার্থ সরল । তথাপি, যদিও রাজা জগন্নাথসেবক এবং শ্রেষ্ঠ-ভক্ত তাহা হইলেও । কাল সর্পাকার অর্থাৎ প্রাণনাশক সর্প দর্শন করিলে যেমন ভয় হয়, তক্রূপ রাজদরশন । আরও কাঠ দ্বারা নির্মিত স্ত্রীমূর্তিকে স্পর্শ করিলে যেমন মনোবিকার হয়, তক্রূপ রাজদরশনে মনোবিকার হইতে পারে, অতএব উহা পরিত্যজ্য ॥ ৩ ॥

( ১০৫ পা ) "আকারাদিতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । "কাঠনারী স্পর্শে" পরায় প্রমাণ এই শ্লোক । অতএব স্ত্রী ও বিষয়ির দর্শন বিব্রত ব্যক্তির সর্কধা পরিত্যজ্য ॥ ৩ ॥

( ১০৬ পা ) "এছে বাত...অঙ্গী-কার ॥" এই ৪র্থ হইতে ৬ষ্ঠ পর্য্যন্ত পরায়ের ভাবার্থ সরল । গজপতি, রাজ-বংশের উপাধি । মহাপ্রোমাবেশে, মহা প্রোমে আবিষ্ট হওতঃ । পিরিতি বিশেষে, বিশেষ স্ত্রীতি পূর্নক । রাজা স্ত্রীতি পূর্নক কি বলিলেন, তাহা বলিতেছেন, "তোমার যে" ইত্যাদি । খাও সে বর্ডন, সে বৃত্তি ভোগ কর । সেবে, সেবা করে । এই গুণে অর্থাৎ তোমাতে স্ত্রীতি করা গুণে । এই বাক্যে প্রভু যে প্রতাপরুদ্রকে অঙ্গীকার করিবেন, তাহার আভাস জানা গেল ॥ ৪ ॥

( ১০৬ পা ) "নমেতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । মহাপ্রোমে সে বলিলেন, "এই গুণে রুক

ইত্যাদি ।" রুক অঙ্গীকার করিবেন কেন ? তাহা এই শ্লোকে প্রতিপন্ন করিতেছেন, "যাহারা আমার ভক্তের ভক্ত হয়, তাহার আমার প্রিয়তম ও ভক্তশ্রেষ্ঠ । অতএব রামানন্দ, তুমি ভক্ত, তোমাতে প্রতাপরুদ্র স্ত্রীতি করায় সে ভক্ততম ; এই হেতু রুক তাহাকে স্বীকার করিবেন । পরশ্লোকেও ইহার সমর্থন করিতেছেন ॥ ৪ ॥

( ১০৬ পা ) "আদর ইতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । ভগবন্তকে আদর না করিলে ভগবানের সন্তোষ হয় না এবং ভক্তি-লাভেরও কোন সম্ভাবনা থাকে না । ইহাই এই শ্লোকে বলিলেন ॥ ৫ ॥

( ১০৬ পা ) "আরাধনানামিতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীভগবানের অর্চন হইতে যে ভক্তের পূজা প্রশস্ততর, তাহা এই শ্লোকে প্রতিপন্ন করিলেন ॥ ৬ ॥

( ১০৭ পা ) "হুরাপেতি ।" এই সপ্তম শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । ভগবন্তক পূজা যে ভাগ্যকে অপেক্ষা করে এবং উহা দুর্লভ, তাহা এই শ্লোকে প্রমাণ করিলেন ॥ ৭ ॥

( ১০৭ পা ) "পুরী ভারতী...অব-ভার ॥" এই ৭ম হইতে ৯ম পর্য্যন্ত পরায়ের ভাবার্থ সরল । চরণাভিবন্দ, চরণবন্দন । কমললোচন, শ্রীজগন্নাথ । এছে, ঐ স্থান হইতে অর্থাৎ শ্রীজগন্নাথ মন্দির হইতে । প্রভুপাদে, প্রভুর স্ত্রী-চরণে ॥ ৭-৯ ॥

(১০৭ পা) "অদর্শনীয়ানিতি।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। "পাপী নাচ উদ্ধারিতে" ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ৮।

(১০৮ পা) "তাঁর প্রতিজ্ঞা ... .. গৌরব করিয়া।" এই ১০শ হইতে ১৫শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। রূপাধন, রূপারূপ সম্পত্তি। অকারণ, নিষ্কয়োজন। দেব, রাজার প্রতি ভট্টাচার্যের সম্বোধন সূচক বাক্য। যঁাহাকে অর্থাৎ মহাপ্রভুকে। করিতে পঠন, পাঠ করিতে করিতে। একলে, একাকী। অনবলনে, স্নানযাত্রার পর কৃষ্ণাচতুর্দশী পর্যন্ত অঙ্গরাগ হয়, সে সময়ে দর্শনের অবকাশ থাকে না অর্থাৎ কেহ দর্শন পায় না। আশীর্বাদি, আশীর্বাদ করিয়া। আমাতে, আমাকে। অটালী অটালিকা। সবা, সকলকে। গৌরব, সম্মান করিয়া ৥ ১০-১৫ ॥

(১০৯ পা) "আদৌ মালা ... কলি-হত জন ॥" এই ১৬ শ হইতে ১৯শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। আদৌ, প্রথমে। তাঁরে, শ্রীমদৈতকে। তারে, গোবিন্দকে। তাঁর, মহাপ্রভুর ॥ ১৬-১৯ ॥

(১০৯ পা) "কৃষ্ণবর্ণমিতি।" এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গালা আদির ৩০ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। ইহার তাৎপর্য ভাবার্থ ব্যাখ্যায় ১০৬ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। "সকীর্জন যজ্ঞে" ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক। কলিতে সকীর্জন দ্বারা ভগবানের উপাসনাই শ্রেষ্ঠ, ইহা প্রতিপন্ন করিলেন ॥ ৯ ॥

(১০৯ পা) "রাজা কহে.....ঈশ্বর না মানে ॥" এই ২০শ পয়ারের ভাবার্থ সরল। বিতুষ, বিমুখ। যারে, বাহাকে। তাঁহারে, শ্রীচৈতন্যকে। কৃষ্ণ করি লৈতে পারে, কৃষ্ণ বলিয়া অনুভব করিতে পারে। পণ্ডিত নহে কেন, পণ্ডিত হউক না কেন। মানে, স্বীকার করে ॥ ২০ ॥

(১০৯ পা) "অধাপীতি।" এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গালা মধ্যের ষষ্ঠে ৪৫ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। "তাঁর রূপা নাহি ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ১০ ॥

(১০৯ পা) "রাজা কহে.....বেদ-লোকধর্ম ॥" এই ২১শ হইতে ২৩শ পর্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ সরল। আগে তাঁরে মিলি, প্রথমে শ্রীচৈতন্যের সহিত মিলিত হইয়া। তাঁরে আগে, মহাপ্রভুকে সম্মুখে লইয়া। দেখিব, দেখিব। পান, পানীয়। পরোক্ষ, অসাক্ষাৎ অর্থাৎ ঋষিগণের মুখে বাহা বলিয়াছেন, তাহা কুর্মান্দ। সাক্ষাৎ আজ্ঞা, যাহা নিজে শ্রীমুখে বলিয়াছেন অর্থাৎ প্রসাদভঙ্গণ ভক্তির অঙ্গ। অতএব কুর্মান্দের অনুরোধে ভক্ত্যঙ্গ ভ্যাগ অনুচিত। আরও ইহা হইতে বিশেষ বলিতেছেন, "বিশেষে শ্রীহস্তে" ইত্যাদি। উপোষণ, উপবাস। কৃষ্ণাশ্রয়ে, কৃষ্ণের শরণাপত্তিতে। বেদ-লোকধর্ম, বেদোক্ত কর্মকাণ্ড ও ত্রীপুরাণের ভরণ-পোষণাদি রূপ ধর্ম।

নরোত্তম ঠাকুরও বলিয়াছেন,—  
"জানকাণ্ড কর্মকাণ্ড, কেবল বিষের ভাণ্ড,  
অমৃত বলিয়া বোনা খাণ্ড ॥ ইত্যাদি ॥"

শ্রীকৃষ্ণ রূপা করিয়া যদি মানবের হৃদয়ে ভক্তি প্রেরণ করেন, তবে ঐ মানব



ভক্ত্যঙ্গযাজনে বেদ ও লোকধর্মরূপ  
কর্মান্বয়ের হানি করিলেও কোন দোষ হয়  
না, তৎপ্রমাণ শ্লোক পরে বলিতেছেন।  
ভক্ত্যঙ্গ যাজন না করিয়া কর্মান্বয়ের হানি  
বড় দোষাবহ ॥ ২১—২৩ ॥

( ১১০ পা ) ‘বদেতি।’ এই একাদশ  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। ‘যারে রূপা করি’ ইত্যাদি  
পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক। মহৎগণ কর্তৃক  
বর্ণিত শ্রীকৃষ্ণকথা শ্রবণ দ্বারা চিত্ত শুদ্ধ  
হইলে শ্রীকৃষ্ণ যখন রূপা করেন, তখন  
সেই ব্যক্তি লৌকিক ব্যবহারে ও কর্ম-  
কাণ্ডে পরিনিষ্টিতা মতি ত্যাগ করিবে।  
চিত্ত শুদ্ধ না হইলে ত্যাগ করিবে না ॥ ১১ ॥

( ১১০ পা ) ‘তবে রাজা.....চন্দন  
দিল ॥’ এই ২৪শ হইতে ২৬শ পয়ার  
পর্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ সরল। নহে  
যেন বাদ, ইহাতে যেন কোন বাধা না  
হয়। আজ্ঞা ধরিহ, আজ্ঞা প্রতিপালন  
করিবে। আজ্ঞা নহে, আজ্ঞা না করি-  
লেও। বৈষ্ণব মিলনে, বৈষ্ণবের সহিত  
মিলিত হইবার জন্য। বৈষ্ণব মিলিলা,  
গৌড়ীয় বৈষ্ণবের সহিত মিলিত হইলেন।  
আচার্য্যেরে, অদ্বৈতকে। ‘মিশ্রের’ ইতি।  
যদি বল, মিশ্রের আবাসে অসংখ্য  
বৈষ্ণবের সমাবেশ কিরূপে হয়? তদুত্তর,  
অবিচিন্ত্য শক্তিপ্রভাবে অল্প স্থানেই  
সকলের সমাবেশ হইল। সবায়, সকল  
ভক্তগণকে ॥ ২৪—২৬ ॥

( ১১১ পা ) ‘ভট্টাচার্য্য.....শ্লোক  
পড়িয়া ॥’ এই ২৭শ হইতে ৩০শ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। তারে, বাসু-

দেবকে। পুনর্জন্ম, অর্থাৎ আমার পূর্বে  
মুকুন্দের তোমার চরণ প্রাপ্তিরূপ দ্বিতীয়  
জন্ম হওয়ার, মুকুন্দ আমার জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা  
হইল। দুই পুস্তক, ব্রহ্মসংহিতা ও কৃষ্ণ  
কর্ণামৃত। ২৭—৩০ ॥

( ১১১ পা ) ‘নিমজ্জত ইতি।’ এই  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। মহাপ্রভুর সহিত শিবানন্দের  
এই প্রথম সাক্ষাৎ হইলে, শিবানন্দ মহা-  
প্রভুকে এই শ্লোক বলেন। ‘শ্লোক  
পড়িয়া’ তাহা এই শ্লোক ॥ ১২ ॥

( ১১১ পা ) ‘প্রথমেই.....আনন্দে  
মিলিলা ॥’ এই ৩১শ হইতে ৩৩শ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। তুণ দুই গুচ্ছ  
অর্থাৎ দৃষ্টি তুণধারণে বোধিত হয়।  
আমি তুণ ভোজী পশুতুল্য অতি নীচ ও  
হিতাহিত বোধ রহিত। পাছে ভাগে,  
পশ্চাতে পালায়। নিতে, আনয়ন  
করিতে। প্রান্তে, একধারে। তুরিতে,  
শীঘ্র। ছার, অস্পৃশ্য। টোটা, জঙ্গল  
বা বাগিচা। গোঙাও, সময় অতি-  
বাহিত করি ॥ ৩১—৩৩ ॥

( ১১২ পা ) ‘প্রভুপাদে ... পরম  
পাবন ॥’ এই ৩৪শ হইতে ৩৬শ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। প্রভুপাদে, প্রভুর  
শ্রীচরণে। দুইজন পড়িছা। চূড়া,  
শ্রীমন্দিরের চূড়া। ‘প্রভু কহে তোমা  
স্পর্শি’—এই পয়ারে সন্দেহ হইতে পারে,  
মহাপ্রভু যখন হরিদাসকে স্পর্শ করিয়া  
পবিত্র হইবেন, এরূপ কথা বলেন কেন?  
তদুত্তর, হরিদাসে পবিত্র ধর্ম থাকাতাই  
মহাপ্রভু স্পর্শ করিতে অভিলাষী হইয়েন।

সেই পবিত্র ধর্ম কি, তাহা “ক্ষণে ক্ষণে” ইত্যাদি পরায়ের বলিতেছেন ॥ ৩৪—৩৬ ॥

( ১১৩ পা ) ‘অহোবতেতি।’ এই ত্রয়োদশ শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। ‘ক্ষণে ক্ষণে’ ইত্যাদি পরায়ের প্রমাণ এই শ্লোক। তপঃ প্রভৃতি সকলি তোমার নাম কীর্তনের অন্তর্ভূত থাকায় তোমাতে পবিত্রধর্ম রহিয়াছে। ঐ ধর্ম আমাতে নাই, মহাপ্রভুর এই বাক্যটি ভক্তের সম্মানসূচক। যে ব্যক্তির মুখে শ্রীভগবানের নাম থাকে, তিনি স্বপচ হইলেও যখন পবিত্র, তখন বলনামকীর্তনকারী হরিদাসে পবিত্রতা না থাকিবে কেন? অতএব এই শ্লোক দ্বারা হরিদাসের পবিত্রতা প্রমাণ করিলেন ॥ ১০ ॥

( ১১৩ পা ) “এত বলি...মাল্যচন্দন ॥” এই ৩৭২ হইতে ৪০২ পর্যায় ভাবার্থ সরল। তারে, হরিদাসকে। সেই গৃহে, ‘আমার নিকটে এই পুষ্পের’ ইত্যাদি পরায়ের মহাপ্রভু কর্তৃক প্রার্থিত গৃহ। উর্দ্ধ হস্তে, হস্ত উত্তোলন করিয়া। তোমাপেক্ষা, তোমার অপেক্ষা। ৩৭—৪০ ॥

( ১১৪ পা ) ‘চারিদিকে ... কৃষ্ণদাস ॥’ এই ৪১২ হইতে ৪৪২ পর্যায় ভাবার্থ সরল। আছাড়ের কালে ভাবাবেশে পতনের সময়ে। বুলে, জমণ করে। করে সিনানে, স্নান করে। সমাপি, সমাপ্ত করিয়া। পুষ্পাঞ্জলি, ফুলের বেশ ॥ ৪১—৪৪ ॥

ইতি একাদশ পরিচ্ছেদে সুবোধিনী ॥ ১১ ॥

## দ্বাদশ পরিচ্ছেদ ।



( ১১৫ পা ) ‘শ্রীশুণ্ডিতেতি।’ এই প্রথম শ্লোকের তাৎপর্য্য, শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। প্রমুকার যাহা বলিবেন, তাহা শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন ॥ ১ ॥

( ১১৫ পা ) ‘জয় জয় ... প্রেম পরতন্ত্র ॥’ এই ১ম হইতে ৬ষ্ঠ পর্যায় পরায়ের ভাবার্থ সরল। তারে মিলিতে, মহাপ্রভুর সহিত মিলন করিতে। তু

সবারে, ভক্তসকলকে। সে সব, সেই ভক্তসকল। মিলো, পাইব। যাউ, যাক। সবাকায়, সকলের কথামত। তাঁর স্নেহে, প্রতাপরুজের স্নেহে। প্রেমপরতন্ত্র, প্রেমের অধীন ॥ ১—৬ ॥

( ১১৬ পা ) ‘নিভ্যানন্দ কহে..... আশা ধরি ॥’ এই ৭ম পরায়ের ভাবার্থ সরল। এহে হয় কোন জন, এমন কে

ব্যক্তি আছে । ইষ্ট, অনুরাগের বিষয় ।  
যান্ত্রিক ব্রাহ্মণী, শ্রীভাগবতে ১০ স্কন্ধ  
২৩ অ, উক্ত আছে—

একদা শ্রীকৃষ্ণ গোচারণ করিতেছেন, এমন  
সময়ে গোপগণ কৃষ্ণের নিকট অন্ন প্রার্থনা করিলে,  
শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, নিকটবর্তীস্থানে ব্রাহ্মণগণ আদি-  
রস যাগ করিতেছেন, ঐ স্থানে যাইয়া আমাদের  
নাম করিয়া অন্ন প্রার্থনা কর । অনন্তর ব্রাহ্মণ-  
গণের নিকট অন্ন প্রার্থনা করিয়া অন্ন না পাইলে  
শ্রীকৃষ্ণের নিকট পুনরাগমন করিয়া সমস্ত বৃত্তান্ত  
জানাইলেন । পুনরায় শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক উপদিষ্ট  
হইয়া ব্রাহ্মণ-পত্নীগণের নিকট অন্ন প্রার্থনা করিলে,  
বিপ্রপত্নীগণ পতি পুত্রাদির বাধা গণনা না করিয়া  
বহুগুণসম্পন্ন অন্নাদির সহিত শ্রীরামকৃষ্ণের নিকট  
উপস্থিত হইলেন । ভ্রমধ্যে কোন বিপ্রপত্নী স্বামি  
কর্তৃক রুদ্ধ হইয়া যথাক্রমে শ্রীকৃষ্ণমूर्তি দ্বয়ে  
আলিঙ্গন করিয়া দেহ ভ্যাগ করেন ।

পতি আগে, পতির সম্মুখে । তাহা পাত্রা,  
বহির্বাণ পাইয়া ॥ ৭ ॥

( ১১৬ পা ) “প্রভু কহে...ভক্ত  
গজপতি ॥” এই ৮ম হইতে ১১ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । তুমি সব, তোমরা  
সকলে । সাধিবে তাঁহারে, যাহাতে  
প্রভুর সন্তোষ হয়, এরূপ কার্য্য করিবে ।  
দুইজন, প্রতাপ রুদ্ধ ও রামানন্দ । মগি-  
বিন্দু, কালির বিন্দু ॥ ৮—১১ ॥

( ১১৬ পা ) “প্রভু কহে...চৈলা  
একজন ॥” এই ১২শ হইতে ১৪শ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । তারে দেখি,  
রাজপুত্রকে দেখিয়া । সর্বজন, সকল  
লোকের ॥ ১২—১৪ ॥

( ১১৭ পা ) “এইমত... করিলে  
শোধন ॥” এই ১৫শ হইতে ১৮শ পর্যন্ত

ভাবার্থ সরল ॥” তাঁহা তাঁহা, যেখানে  
যেখানে নিমজ্ঞ হয় । আমি সব, আসরা  
সকলে । সম্মার্কণী, বাঁটা । শত শত,  
ইহা অসংখ্য শব্দ বাচি । মার্জি, মার্জন  
করতঃ । চারিভিত, চতুর্দিকের দেয়াল ।  
শ্রীজগমোহন, গর্ভমন্দিরের সম্মুখস্থ দর-  
দালান । প্রাঙ্গণ, উঠান ॥ ১৫—১৮ ॥

( ১১৮ পা ) “ভূণ ধূলি...তথাপি  
করে রোষ ॥” এই ১৯শ হইতে ২৪শ  
পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । বির্কর,  
কাঁকর । ঝাটি, বেটনধূলি । কালা-  
পেঙ্গা করি, প্রাকালগের সময় অপেক্ষা  
করিয়া । উর্দ্ধঅধোভিত্তি, দেয়ালের  
উপর ও নিম্নদেশ । খাপরা, ভগ্ন ঘটের  
অংশ । প্রণালিকা, জল যাইবার পথ ।  
ভারতী, ব্রহ্মানন্দ । পুরী, পরমানন্দ ।  
ইহাঁ বিনু, ভারতী ও পুরী ব্যতীত ।  
দোয়, দোত করে । মন না মিলিলে,  
মনোমত না হইলে । পবিত্র ভৎসন,  
প্রশংসাক্ষলে তিরস্কার ॥ ১৯—২৪ ॥

( ১১৯ পা ) “স্বরূপ গোসাঞি...  
সন্তোষ হইল ॥” এই ২৫শ হইতে ৩০শ  
পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । ফৈজতি,  
লাঞ্জনা । ঢেকা মারি, ধাক্কা মারিয়া ।  
বিকলে, ব্যাকুল হইয়া । জলছাটি, জলের  
ছিটা । সরোবরে, ইন্দ্রদ্যুম্ন নামক সরো-  
বরে ॥ ২৫—৩০ ॥

( ১২০ পা ) “পুরী গোসাঞি...লাগিল  
তথাই ॥” এই ৩১শ হইতে ৩৬শ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । পিণ্ডোপরি,  
পিড়ার উপর । দেয়াল, প্রদান করান ।  
ক্রীড়া কল, প্রণয়বৃত্ত বিবাদ ॥ ৩১—৩৬ ॥

(১২১ পা) “অদ্বৈত কহে...বড় অনাচার ॥” এই ৩৭৭ পয়ায়ের ভাবার্থ । শ্রীনিত্যানন্দ সহ শ্রীঅদ্বৈতের প্রণয় বিবাদ বলিতে প্রথমে অদ্বৈতবাক্য বলিতেছেন, “অবধূতের” ইত্যাদি । অবধূতের সঙ্গে অর্থাৎ বর্ণ ও আশ্রমচিহ্ন রহিত ব্যক্তি সহ ভোজনে জানি না কোন্ গতি হইবে অর্থাৎ সঙ্গদোষে বর্ণাশ্রমধর্ম নষ্ট হওয়ায় পরলোকে যাতনা ভোগ করিতে হইবে । স্তুতিপক্ষে জীব মায়াধিকারে বদ্ধ হইয়া বর্ণাশ্রমধর্মের অবস্থিত কবেন ; মায়াভীত পরমেশ্বর শ্রী-বলরাম বা নিত্যানন্দ বর্ণাশ্রমধর্মবর্জিত, সেই মহাপুরুষের সহিত এক পংক্তিতে ভোজন করা পুণ্যরাশিকে অপেক্ষা করে, কিন্তু আমি ভোজন করিলাম, না জানি ইহাতে কোন্ গতি হইবে অর্থাৎ ইহার সহিত ভোজন করায় কোন্ অনির্ধর্মণীয় মঙ্গলকর আনন্দ প্রাপ্তি হইবে । নিন্দাপক্ষে ; যদি বল, অবধূতের সহিত ভোজনে যদি দোষ, তবে মহাপ্রভু ভোজন করেন কেন ? ইহাতে বলিতেছেন, “প্রভু ত” ইত্যাদি । প্রভু অনাসক্ত ও নির্লেপ বলিয়া ইহার দোষ হয় না । কেননা “নারেতি ।” অর্থাৎ সন্ন্যাসী অন্নদোষে লিপ্ত হয়েন না । ইহা শাস্ত্রবাক্য । স্তুতিপক্ষে, প্রভূর্ত সন্ন্যাসী অর্থাৎ প্রভু সর্গসঙ্গরহিত শ্রীভগবান্ । তাঁহার উদরের মধ্যে সকল থাকায় উহার ভোজনে কোন দোষ হয় না । নিন্দাপক্ষে, যদি বল, প্রভুর দোষ না হইলে, তোমার দোষ হয় কেন ? ইহাতে বলিতেছেন,

“আমিত” ইত্যাদি । অর্থাৎ মহাপ্রভু সন্ন্যাসী বলিয়া তাহার দোষ নাই, কিন্তু আমি গৃহস্থ ব্রাহ্মণ, আমার অন্নদোষ আছে । যাহার জন্ম-কুলাদি জানা নাই, তাহার সহিত ভোজন, আমার পক্ষে মহাদোষকর । স্তুতিপক্ষে, আমি গৃহস্থ ব্রাহ্মণ অর্থাৎ অভিমানী সংসারী ও বদ্ধজীব । ঈশ্বরের সহিত সমান স্থানে অবস্থান করিলে জীবের নরক প্রাপ্তি হয় । অতএব আমি তাদৃশ জীব, ইহার সহিত সমান অবস্থান করা, আমার পক্ষে মহাদোষ । ইনি পরমেশ্বর হেতু জীবের স্থায় গুণকৃত জন্মাদি না থাকায়, ইহার জন্মাদি জানি না বা কেহই জানেন না । বড় অনাচার, স্তুতিপক্ষে ; সদাচার বিরুদ্ধ ॥ ৩৭ ॥

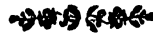
( ১২১ পা ) “নিত্যানন্দ কহে...স্বর্গ মর্ত্য ভরি ॥” এই ৩৮৭ পয়ায়ের ভাবার্থ । নিত্যানন্দবাক্য বলিতেছেন, “অদ্বৈত” ইত্যাদি । অদ্বৈত আচার্য, অদ্বৈতবাদের গুরু । স্তুতিপক্ষে, হরির সহিত অভেদ হেতু অদ্বৈত এবং স্তুতির উপদেশী বলিয়া আচার্য । অদ্বৈতসিদ্ধান্তে ইত্যাদি অর্থাৎ জীবে ও ঈশ্বরে অভেদ স্বীকার করিলে গুণভক্তি বাধ হয় । স্তুতিপক্ষে, হরিতে ও তোমাতে অভেদ সিদ্ধান্ত স্থির থাকায় গুণভক্তির কার্য তোমাতে বাধ হয় ; যেহেতু ঈশ্বর কখন আপনার ভজন আপনি করিতে পারে না । একবস্ত্র বিনা, একব্রহ্ম ব্যতীত । স্তুতিপক্ষে একমাত্র শ্রীকৃষ্ণ ব্যতীত । ব্যাকস্তুতি, নিন্দাচ্ছলে স্তুতি । যেন গালাগালি, গলাগালির মত ॥ ৩৮ ॥

( ১২১ পা ) 'তবে মহাপ্রভু...কৃষ্ণ-  
দাস ॥' এই ৩৯ হইতে ৪২৭ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । পরিবেশক, পরি-  
বেশনকারী । আর দিন, রথের পূর্ক-  
দিন । মেত্রোৎসব, রথদ্বিতীয়ার পূর্ক-  
দিন প্রতিপদে জগন্নাথের চক্ষুদান হয়,

একশ্রু ইহাকে নেত্রোৎসব বলে । পক্ষ-  
দিন, পোনের দিন । মর্যাদা লঙ্ঘন,  
ভোগমণ্ডপে অশ্রু কাহারও যাইতে অধি-  
কার নাই, মহাপ্রভু দর্শনোৎকর্ষায় সে  
নিয়ম ভঙ্গ করিয়া ভোগমণ্ডপে প্রবেশ  
করেন । পাশরীলা ফুলিলা ॥ ১৯—৪২ ॥

ইতি ষাটশ পরিচ্ছেদে স্তবোধিমী ।

## ত্রয়োদশ পরিচ্ছেদ ।



( ১২২ পা ) "স জীয়াদিত্তি ।" প্রথম  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । এই পরিচ্ছেদে যাহা উক্ত  
হইবে, তাহা শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন ।  
রথাগ্রে মহাপ্রভুর নৃত্য বর্ণিত হইবে ॥১॥

( ১২২ পা ) "জয় জয়...কিছুই না  
শুনি ॥" এই ১ম হইতে ৩য় পয়ার পর্য্যন্ত  
বর্ণনা করিলেন । গণসঙ্গে, ভক্ত সকলের  
সঙ্গে । পাতুবিজয় ; পহাণ্ডি শব্দের  
অপভ্রংশ পাতু, বিজয় অর্থে যাত্রা, উৎ-  
কলদেশে হাত ধরিয়া পায় পায় হাঁটনের  
নাম পহাণ্ডি, শ্রীজগন্নাথদেবকে পটুড়ুরি  
ধরিয়া ক্রমে ক্রমে লইয়া যাওয়ার নামই  
পাতুবিজয় । দয়িতাগণ, প্রিয় ভক্তগণ  
বা রক্ষক । তুলি সব, গদি সকল ।  
পাতি, পাতিয়া । মনিম শব্দে কেহ অর্থ  
করেন মহাশয় । কেহ বলেন, শ্রীকৃষ্ণা-  
নুভবতারে মাতা বশোদা । শ্রীকৃষ্ণের অদ-

বন্ধনকালীন বলিয়াছিলেন, 'মণিমাংস্তব  
জান্থথোরু" অর্থাৎ মণিমানু দেব তোমার  
জানু ও উরুদেশ রক্ষা করুন । এই হেতু  
জগন্নাথদেবের অদ্য পাতুবিজয়দর্শন  
করিয়া এবং তাঁহার পদবেদনা অনুভব  
করতঃ মহাপ্রভু বলিতেছেন, মণিমান  
দেব ইহাঁর জানুদ্বয়কে রক্ষা করুন, যেন  
ইহার পদবেদনা না হয় । মণিমানু  
শব্দের অপভ্রংশ মণিমা । এই বাক্য  
বাৎসল্যসূচক হইলেও বাৎসল্যের গুণ  
মধুরে থাকে বলিয়া মধুরভাবাপন্ন মহা-  
প্রভু ঐ কথা বলেন । তথাহি অষ্টমে,  
"শান্ত, দাস্য, লব্য, বাৎসল্যের গুণ মধুরেতে বৈসে ॥"  
আকাশাদি গুণ যেন পর পর তুতে ॥ ১—৩ ॥

( ১২৩ পা ) 'তবে প্রভাপরুজ ...  
তাঁহো করেন নর্ভন ॥' এই ৪র্থ হইতে  
১১শ পয়ারের ভাবার্থ সরল । 'তুচ্ছ  
সেবা' ইতি । রাজা হইয়াও নীচব্যক্তির

যে কার্য্য মার্জনাদি, তাহা করেন । অত-  
এব উত্তম-হইয়া তুচ্ছ সেবা করেন বলিয়া  
সুখ পাইল, তুচ্ছ সেবা দ্বারা রাজার দৈশ্ব  
দেখিয়া মহাপ্রভু সুখী হইলেন ; যেহেতু  
ভক্তির সহচারিত্ব দৈন্য, যেখানে  
ভক্তি সেখানেই দৈন্য । দৈশ্বের অভাবে  
ভক্তির অভাব । ঘাঘর কিকিনী, কিকি-  
নীতে অব্যক্ত শব্দ হইতে লাগিল ।  
কণিত, শব্দ । নিভূতে, পরদার আড়ালে ।  
গোড়, বলবান ব্যক্তি । কারো বলে,  
কাহার ক্ষমতায় । মার্জিতিক, মৃদঙ্গ বাদ্য-  
কর । গায়ন, গায়ক । বাটিয়া, পৃথক্  
করিয়া । পালিগান, গানের দোয়ার ॥৪-১১॥

(১২৪ পা) 'গোবিন্দ ঘোষ ... ভাগ্যের  
নাহি সীমা ॥' এই ১২শ হইতে ১৫শ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । খণ্ডের, শ্রীখণ্ডের ।  
দুই পার্শ্বে, রথের দুই পাশে । দুই, দুই  
সম্প্রদায় । পাছে, রথের পশ্চাতে । শ্রী-  
বৈষ্ণবঘটামেঘে, বৈষ্ণবসমূহ রূপ মেঘে ।  
আমাদের দয়ায়, আমাতে অধিক দয়া  
আছে বলিয়া । লখিতে, দেখিতে ॥১২-১৫॥

(১২৪ পা) 'মার্জিতৌম ... জগ-  
ন্নাথ এই ১৬শ হইতে ২০শ পয়ার পর্যন্ত  
ভাবার্থ সরল । ঠারঠারি ইঞ্জিত । চৈত-  
ন্যের চুরি অর্থাৎ সকল সম্প্রদায়ে শ্রীচৈত-  
ন্যের যে প্রকাশ মূর্ত্তি । যদি বল, এই  
প্রকাশের তত্ত্ব অন্যে জানে না কেন ?  
তাহাতে বলিতেছেন, 'যারে তাঁরে'  
ইতি । যদি বল, রাজা ঐ তত্ত্ব কিরূপে  
জানিল ? তদুত্তর, 'রাজার তুচ্ছ' ইতি ।  
রাজারে, রাজার প্রতি । প্রভুর ইচ্ছা-  
নুসারী লীলাশক্তি কিরূপভাবে কার্য্য

সম্পন্ন করেন, তাহা সদৃষ্টান্তে বলিতে-  
ছেন, 'পূর্বে যৈছে ।' ইতি ॥ ১৬—২০ ॥

(১২৫ পা) 'নম ইতি ।' এই শ্লোকের  
ভাৎপর্য্য শ্লোকার্ধে প্রকাশ আছে । জগ-  
ন্নাথকে দর্শন করিয়া মহাপ্রভু উর্দ্ধমুখে  
যে সকল শ্লোক দ্বারা স্তব করেন, তন্মধ্যে  
এই একটি শ্লোক ॥ ২ ॥

(১২৫ পা) 'জয়তীতি ।' মহাপ্রভু  
কর্তৃক স্তব সকলের মধ্যে এইটি দ্বিতীয়  
শ্লোক ॥ ৩ ॥

(১২৫ পা) 'জয়তীতি ।' মহাপ্রভু  
স্তব সকলের মধ্যে একটি তৃতীয়  
শ্লোক ॥ ৪ ॥

(১২৬ পা) 'নাহমিতি ।' কৃত স্তবের  
মধ্যে এইটি চতুর্থ শ্লোক ॥ ৫ ॥

(১২৬ পা) 'এত পঢ়ি ... শ্রীমুখে  
হৈল ত্রাস ॥' এই ২১শ হইতে ২৫শ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । এত পঢ়ি, পূর্কোক্ত  
চারি শ্লোক পাঠ করিয়া । ভগবান্,  
শ্রীজগন্নাথকে । অলাভ আকার অর্থাৎ  
জলৎকাষ্ঠ বেগে ঘুরাইলে যেমন অনল-  
শিখা চক্রের ন্যায় প্রতীত হইয়া সকল-  
দিকেই একদা দৃষ্ট হয়, তক্রূপ মহাপ্রভুও  
চক্রাকারে নৃত্য করিয়া যুগপৎ সকল-  
দিকেই দৃষ্ট হইয়াছিলেন । ইহা ঘূর্ণা  
নামক অসুভাব । সগাগর মহী-শৈল,  
সাগর ও পর্কতের সহিত পৃথিবী । হস্তে  
তারে স্পর্শি, শ্রীবাগকে হস্ত দ্বারা স্পর্শ  
করিয়া । অন্য আছ, অন্তর্জনের কথা  
ধাকুক । দুই জনার, সুভদ্রা ও বল-  
রামের ॥ ২১—২৫ ॥

(১২৭ পা) 'উদগু নৃত্যে.....করি

উচ্চৈঃশ্বরে ॥” এই ২৬শ হইতে ৩২৫ পর্যায় পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । অষ্ট সাপ্তিক ভাব বলিতেছেন, “মাংসত্রণ ॥” ইত্যাদি। মাংসত্রণ, প্রত্যেক গোমকুপ স্থানে মাংস উচ্চ হইয়া ত্রণাকৃতি হয়, ইহা পুলক । একেক দণ্ডের কম্প, ইহা কম্প । সর্সাদ্বে প্রস্বের, ইহা স্বেদ । জঙ্গগগ, ইহা স্বর ভেদ । দেহ কাঙ্টি, ইহা বৈবর্গ্য । মল্লিকা পুষ্প গম, শ্বেতবর্ণ । ভূমিতে লোটায়, ইহা লোটন নামক অনুভাব । মৃতি, মরণের পূর্সাবস্থা । শ্বাস হয় হীন, ইহা মৃতি নামক সঞ্চারী ভাবের অনুভাব । মুখে পড়ে কেন, ইহা অপস্মার নামক সঞ্চারী ভাবের ক্রিয়া । জলযন্ত্র, ফোয়ারা । ভাব বিশেষে অর্থাৎ বহুকাল পরে কুরুক্ষেত্রে শ্রীকৃষ্ণদর্শন করিয়া শ্রীরাধার যে ভাব হয়, তাদৃশ ভাবে । হৃদয় জানিয়া, মনোগত ভাব বুঝিয়া । গীতের অভিনয়, হস্ত চালনা দ্বারা গানের ভাব প্রকাশ করা ॥ ২৬—৩২ ॥

( ১২৭ পা ) “যঃ কৌমারহরেতি ।” এই শ্লোকের গীকা ও বাঙ্গালা মধ্যের ৩ পৃষ্ঠায় দেখিবেন এবং তাৎপর্য্য ভাবার্থ ব্যাখ্যায় ৫ পৃষ্ঠায় দেখিবেন ॥ ৬ ॥

( ১২৭ পা ) “এই শ্লোক.....করেন পঠন ॥” এই ৩০৫ হইতে ৩৭৫ পর্যায় পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । এই শ্লোক, যঃ কৌমারেতি শ্লোক । পূর্বে, প্রথম পরিচ্ছেদে । পুষ্পারণ্য, পুষ্পের উদ্যান । বার অর্থ, যে শ্লোকের অর্থ ॥ ৩০—৩৭ ॥

( ১২৮ পা ) “আহুশ্চেতি ।” এই শ্লোকের গীকা ও বাঙ্গালা মধ্যের ৫ পৃষ্ঠায়

দেখিবেন এবং তাৎপর্য্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ৬ পৃষ্ঠায় দেখিবেন । গ্রন্থকার “অন্যের যে অশ্র মন” ইত্যাদি পর্যায় ইহার অর্থ করিতেছেন ॥ ৭ ॥

( ১২৮ পা ) “অন্যের যে.....রহে জীবন ॥” এই ৩৮৫ ও ৩৯৫ পরায়ের ভাবার্থ । “আহুশ্চেতি” শ্লোকের অর্থ করিতেছেন “অন্যের যে” ইতি । বাহারা তোমার চরণ চিন্তা করিতে পারে, তাহাদের ( অন্যের ) মন অন্য স্থানে থাকিতে পারে ; কিন্তু তোমার চরণ চিন্তা আমাদের অসামর্থ্য বলিয়া, মুরলীবিলাসযুক্ত বিপিনবিহারীশ্যাম রুদ্দাবনে আমার মন আগত । অতএব রুদ্দাবন ও আমার মনকে এক করিয়া জানি অর্থাৎ রুদ্দাবন হইতে আমার মনকে পৃথক করা যায় না । তাহা, রুদ্দাবনে । সেই রুদ্দাবনে যদি তোমার পদধরকে উদয় করাও অর্থাৎ গমন কর, তবে বুঝিব, তোমার পূর্ণ রূপা হইয়াছে, নচেৎ জ্ঞানোপদেশে পূর্ণ রূপা প্রকাশ পায় না । যদি বল, তোমরা এখানে আগমন কর না কেন ? এখানে রুদ্দাবন নির্মাণ করাইয়া তোমাদের সহিত বিহার করিব । তত্বতরে বলিতেছেন, আমরা পরগৃহিণী, আমরা স্বাধীনা নহি, এবং গৃহও ত্যাগ করিতে পারি না । “প্রাণনাথ” অর্থাৎ তুমি প্রাণপ্রিয়, আমাদের প্রিয় কার্য্য করা তোমার কর্তব্য । সদন, গৃহ । আমাদের গৃহ ; সেই গৃহ কিরূপে ত্যাগ করিব ? একে গৃহত্যাগ অসম্ভব, তাহাতে আবার সেখানে তাদৃশ সুখজনক তোমার

মিলন। এই উভয়টি অন্যত্র সম্ভবে না। অতএব বুদ্ধাবনে তোমার মিলন না পাইলে আমাদের জীবন থাকিবে না, এই হেতু সেখানে যাইতে প্রার্থনা করিতেছি ॥৩৮৩৯ ॥

( ১২৮ পা ) পূর্বে উদ্ধব.....না করিচারে ॥ এই ৪৯ ও ৪১৯ পয়ারের ভাবার্থ। উদ্ধব দ্বাবে, উদ্ধবের মুখে। এবে, এক্ষণে। সাক্ষাৎ, সম্মুখে। আমারে আমাকে। শ্রীকৃন্দাবনে তোমার মিলন ব্যতীত আমবা জীবন ধারণ করিতে সমর্থ হইব না বলিয়া, আমাদের জীবন রক্ষার জন্য পূর্বে উদ্ধবের মুখে এবং এক্ষণে সম্মুখে গায়া ও মোহনাশক যোগ ও জ্ঞানের উপায় কহিতেছ; ইহা তোমার উচিত হয় না। যদি বল, জ্ঞান ও যোগ উপদেশ দেওয়া আমার উচিত নহে কেন? তাহাতে বলিতেছেন, “তুমি” ইতি। যাহার চিত্ত লীলা ও বিলাসে মাথা, তাহাকে বিদগ্ধ বলে। যোগী ও জ্ঞানিরই যোগ জ্ঞানোপদেশ শোভা পায়, তুমি বিদগ্ধ নায়ক ও রূপাময় অর্থাৎ পবনুঃখমোচন স্বভাব; তোমার ঐরূপ উপদেশ প্রদান অনুচিত। বিশেষ, তুমি আমার হৃদয় জাত আছ। বরং প্রাণ ত্যাগ করে, তথাপি সিংহ যেমন মাংস ব্যতীত তৃণ ভোজন করে না, তদ্রূপ আমিও তোমার প্রেম ব্যতীত অন্য উপদেশ বা অন্য আনন্দ প্রার্থনা করি না। তথাহি ব্রজবিলাসে,—

“সিংহ সদা আমিষ কৃচি-মানে।  
তৃণ ন ভঠৈ পুনি ভট্টৈ পরাণে ॥”

যদি বল, তোমার হৃদয় আমি জাত নহি, তাহাতে শ্রীরাধা নিজ-হৃদয়ের ভাব প্রকাশ করিতেছেন, “চিত্তকাঢ়ি” ইতি। কাঢ়ি, ফিরাইয়া। আমি ক্ষণকালের জন্ম তোমা হইতে চিত্ত ফিরাইয়া বিষয়ে লাগাইতে বহু চেষ্টা করিলেও তোমা হইতে কিছুতেই চিত্ত ফিরে না, যে দিকে দৃষ্টি করি, সেই বিষয়ই তোমাকে স্মরণ করিয়া দেয়। ভ্রমর যেমন পদ্মের লোভী রক্তপদ্ম ও কুমুদ যেমন সূর্য্য ও চন্দ্রের লোভী, আমিও তদ্রূপ তোমাব বদন-চন্দ্রের চাতকিনী। তথাহি ব্রজবিলাস,—

“অলি লোভী পদ্মরূপদরককে !

কোকি কোকনদ-দ্রাতি দিনকরকে ॥

বদন-ইলুকে কুমুদ চকোরা।

তনঘন ছবিকে চাতক মোরা ॥”

অতএব যাহার চিত্ত তোমা ব্যতীত জানে না, তারে ( তাহাকে ) তত্ত্বজ্ঞান শিক্ষা দাও, এরূপ নিকপট মেঘ প্রকাশের প্রয়োজন কি? এরূপ কার্য্যে, লোক উপহাস করে। উপহাসের দুইটি কারণ, প্রথম বিদগ্ধনায়কের তত্ত্বজ্ঞানোপদেশ উপহাসাস্পদ। দ্বিতীয় তত্ত্বজ্ঞানোপদেশের অনধিকারিণী আমি, আমার প্রতি উপদেশ। অতএব স্থানাস্থান ( অধিকারী ও অনধিকারী ) বিচার কর না? উহা বিচার করিয়া শিক্ষা দেওয়াই উচিত ॥ ৪০।৪১ ॥

( ১৮ পা ) “নহে গোপী...লহ তার পার ॥” এই ৪২৯ ও ৪৩৯ পয়ারের ভাবার্থ। যদি বল, আমি স্থানাস্থান বিচার করিয়াই তত্ত্বজ্ঞান শিক্ষা দিতেছি, যেহেতু



তোমরা স্মৃত্তুরা, ধ্যানে সমর্থ হইবে। ইহাতে বলিতেছেন, “যোগেশ্বরৈরিত্যাদি” অর্থাৎ “নহে গোপী” ইতি। গম্ভীর বুদ্ধি বিশিষ্ট যোগেশ্বরগণ তোমার ধ্যান করিতে সমর্থ, কিন্তু গোপীগণ যোগেশ্বর নহে। সুতরাং তোমার পাদপদ্ম ধ্যান করিয়া সন্তোষ পাইবে না। যদি গোপীগণ যোগেশ্বর হইত, তবে ধ্যান করিয়া সন্তোষ লাভ করিত। যাহারা কৃষ্ণের মাধুর্যামৃত পান করিয়াছে, তাহাদের চিত্ত, জ্ঞান ও যোগরূপ নিম্নফলে আকৃষ্ট হইবে কেন? যদি বল, তোমরা যোগেশ্বর না হও, কিন্তু সংসার-কুপে পতিতা; আমার পাদপদ্ম-ধ্যান ব্যতীত সংসার-কুপ হইতে কিরূপে উদ্ধার লাভ করিবে? তাহাতে বলিতেছেন, “সংসার-কুপেত্যাদি” অর্থাৎ “দেহম্বুতি” ইতি। যাহারা সংসারকুপে পতিত, তাহারা তোমার পাদপদ্ম ধ্যান করুক, কিন্তু আমরা সংসারকুপে পতিতা নহি; কেন না, যাহারা নিজের দেহের অনুসন্ধান রাখে না, তাহাদের সংসার কোথায়? যে তোমার চরণ ধ্যান করিয়া সংসার হইতে উদ্ধার পাইবে? অর্থাৎ সংসার আছে কি না তাহাও আমাদের অনুসন্ধান নাই। অতএব আমাদের সংসারও নাই, সুতরাং তাহা হইতে উদ্ধারও হইতে চাহি না। যদি বল, সংসার হইতে যদি উদ্ধার হইতে না চাও, তবে কি নিমিত্ত এত কাতরতা প্রকাশ করিতেছ? তাহাতে বলিতেছেন, “বিরহ” ইতি। আমরা বিরহরূপ সমুদ্রে পতিতা,

উহা হইতে উদ্ধার জন্ম এত কাতর হইতেছি। যদি বল, সম্ভরণ দ্বারা উত্তীর্ণ হও না কেন? তাহাতে বলিতেছেন, “কাম” ইতি। তিমিঙ্গিল, বৃহৎ জলজন্তু বিশেষ। বিরহসমুদ্র হইতে সম্ভরণ দ্বারা উত্তীর্ণ হইবার আমাদের উপায় নাই, যেহেতু কাম (প্রেম) রূপ তিমিঙ্গিল আমাদের গ্রাস করিয়াছে। অতএব গোপীগণে তার পার (বিরহসমুদ্রের পারে) উত্তোলন কর ॥ ৪২।৪৩ ॥

(১২৮ পা) “বৃন্দাবন..... দুর্দৈব বিলাস ॥” এই ৪৪৯ ও ৪৫৯ পয়ারের ভাবার্থ। বিরহসমুদ্রের পারে লইবার উপায় বলিতেছেন, “বৃন্দাবন” ইতি। বৃন্দাবনে গমন করতঃ গোবর্দ্ধন পর্লতে দানলীলা, যমুনাভীরস্থ বনে বিহারাদি ও কুঞ্জগধ্যে রাসাদিলীলার যদি অনুষ্ঠান কর, তবেই বিরহ-সমুদ্র হইতে পার হই। ব্রজে আগমন জন্ম শ্রীকৃষ্ণের আসক্তি বৃদ্ধির নিমিত্ত শ্রীকৃষ্ণকে ব্রজাদি স্মরণ করাইতেছেন, “সেই ব্রজ” ইতি। বড় চিত্র (আশ্চর্য্য) পরম আনন্দময় সেই ব্রজাদি কিরূপে পাশরিলে (ভুলিলে)। ব্রজাদি বিস্মরণ হওয়াতে তোমার কৃত-স্বভা প্রকাশ পায় নাই; কেন না “বিদগ্ধ” ইতি। মূঢ়, কোমলচেতা। সদগুণ, সদগুণাঙ্ঘিত। স্নিগ্ধ, প্রেমিক। করুণ, দয়ালু। এই সব গুণ তোমাতে থাকায় তোমার কৃতস্বভা দোষ হইতে পারে না, তবে যে তোমার ব্রজজনকে ভাল লাগে না, তাহা তোমার দোষ নহে, কেবল আমাদেরই দুর্দৈবের খেলা অর্থাৎ আমা-

দেবই দুর্ভাগ্যবশতঃ তুমি ব্রজে গমন  
করিতেছ না ॥ ৪৪।৪৫ ॥

(১২৮ পা) "না গণি.....করাও  
নিজপদ ॥" এই ৪৩৭ হইতে ৪৮২ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ। আমরা নিজদুঃখ গণনা  
করি না, কিন্তু শ্রীকৃষ্ণদেবের দুঃখময় মুখ  
দর্শন করিয়া ব্রজবাসির হৃদয় বিদীর্ণ হয়।  
মাতা যশোদার দুঃখ শ্রবণ করিয়া যদি  
কৃষ্ণ ব্রজে আগমন করেন, এই হেতু  
যশোদার দুঃখ বলেন। অথবা কৃষ্ণের  
প্রতি ব্রজজনের অনুরাগ বর্ণন করেন।  
হয়, ব্রজবাসিগণকে বিনাশ কব, যদি তাহা  
না পার, ব্রজে আগমন করিয়া দর্শন  
দানে তাহাদিগকে বাঁচাও। নচেৎ  
বিরহদুঃখ সহিবার জ্ঞান কেন ব্রজজনে  
জীবিত রাখিয়াছ। যদি বল, বিরহদুঃখ  
সহ করিবার প্রয়োজন কি? এখানে  
আগমন কর, তাহা হইলে ঐ দুঃখ  
থাকিবে না। ইহাতে বলিতেছেন,  
"তোমার" ইতি। অন্য বেশ (রাজবেশ)  
অন্যসঙ্গ (বাদবাদের সহিত মিলন)  
অন্যদেশ (দ্বারকাদি) বাস, ইহা ব্রজ-  
জনের কখন ভাল লাগে না। অতএব  
উহার। এখানে আসিলেও তাহাদের  
তাদৃশ দুঃখ ঘুচিবে না। আরও বিশেষ  
"গেহংজুয়ামিতি।" অর্থাৎ "ব্রজভূমি"  
ইতি। ব্রজজন ব্রজসেবাকারিণী বলিয়া  
ব্রজভূমি ত্যাগ করিতে পারে না, অথচ  
তোমায় না দেখিয়াও থাকিতে পারে  
না। যদি বল, ব্রজজন আমায় না  
দেখিয়া থাকিতে পারে না কেন?  
তাহাতে বলিতেছেন, "তুমি ব্রজের" ইতি।

যদি বল, কিরূপে তোমাদের বাঁচাইব?  
তাহাতে বলিতেছেন, "মনস্ক্রিয়াদিভিঃ"  
অর্থাৎ "ব্রজে" ইতি। তুমি ব্রজে আগ-  
মন করিলেই আমরা বাঁচিব। "মনে  
বনে এক করি জানি" এই পূর্ব পয়ারা-  
নুসারে এখানে মন বলিতে ব্রজ বুঝিতে  
হইবে ॥ ৪৩-৪৮ ॥

(১২৯ পা) "শুনিয়া... ..জীবনের  
জীবন ॥" এই ৪৯৭ ও ৫০৭ পয়ারের  
ভাবার্থ। রাধিকা বাণী, "অন্যে য  
অন্য" ইত্যাদি পয়ারোক্ত শ্রীরাধার  
বাক্য। মনে আনি, স্মরণ করিয়া।  
ব্রজলোকের প্রেম, যে প্রেম কৃষ্ণনিষ্ঠ  
অর্থাৎ কৃষ্ণসুখ ভিন্ন আর কিছু চায় না।  
তার, শ্রীরাধার। বুঁরো, ক্রন্দন করি।  
যদি বল, কাহার জন্য ক্রন্দন কর?  
তাহাতে বলিতেছেন, "ব্রজবাসী" ইতি।  
তার মধ্যে, পিতা, মাতা ও সখাগণের  
মধ্যে। শ্রীরাধাকে জীবনের জীবন  
বলাতে, গোপীগণ মধ্যে শ্রীরাধা যে প্রিয়-  
তমা তাহা বলা হইল ॥ ৪৯।৫০ ॥

(১২৯ পা) "তোমা সবার ...তুঁহে  
রাখে প্রাণ ॥" এই ৫১৭ ও ৫২৭ পয়া-  
রের ভাবার্থ। যদি বল, ক্রন্দন কর  
কেন? তাহাতে বলিতেছেন, "তোমা"  
ইতি। তোমরা সকলের প্রেমে আমি  
বশীভূত বলিয়া তোমাদের জন্য আমি  
ক্রন্দন করি। অতএব আমি তোমাদের  
অধীন। যদি বল, তুমি যদি আমাদের  
অধীন, তবে আমাদের ত্যাগ করিয়া  
দূরদেশে আছ কেন? তাহাতে বলি-  
তেছেন, "তোমা" ইতি। তুঁহে, তুমি-

দৃষ্ট । আমার প্রবল দুর্দৃষ্টই আমাকে  
দূরদেশে আনিয়াছে এবং তোমাদের সঙ্গ  
ত্যাগ করাইয়াছে । যদি বল, তুমি যদি  
আমাদের প্রেমে এত অধীন এবং  
তোমার ছুঁদেব যদি আমাদেরিগকে ছাড়া-  
ইয়া দূরদেশে লইয়া আসিয়াছে, তবে  
কি রূপে জীবিত আছে ? যেহেতু অকৈ-  
তব প্রেমের বিরহে কেহ বাঁচে না ।  
তাহাতে বলিতেছেন, “প্রিয়া” ইতি ।  
কান্তসঙ্গহীনা কান্তা এবং কান্তা সঙ্গ  
ব্যতীত কান্ত বাঁচিতে পারে না সত্য,  
কিন্তু “মোর” ইতি । পতি মনে মনে  
বিচার করেন, যদি প্রিয়া বিরহে আমি  
প্রাণ ত্যাগ করি, তাহা শুনিয়া আর  
শ্রেয়সী বাঁচিবেন না । পত্নীও মনে  
করেন, যদি প্রিয়বিরহে আমি মরি, তবে  
প্রাণপতি জীবন ধারণ করিতে পারিবেন  
না । এই ভয়ে (পরস্পরের মরণ ভয়ে)  
দৌহে (পতি ও পত্নী) প্রাণ রক্ষা  
করে ॥ ৫১।৫২ ॥

( ১২২ পা ) “সেই সতী... ..আমা  
ক্ষুর্তি ॥” এই ৫৩ ও ৫৪ পয়ারের  
ভাবার্থ । বিয়োগে, (বিরহে) যে প্রিয়ের  
হিত কামনা করে, সেই প্রেমবতী সতী ।  
যে প্রিয়ার হিত অনুসন্ধান করে, সে  
প্রেমবান্ পতি । পতি ও পত্নী যদি  
নিজদুঃখ গণনা না করিয়া প্রিয়জনের  
সুখ কামনা করে, তবে উভয়ে শীঘ্র  
মিলিত হয় । যদি বল, আমার হিতা-  
নুসন্ধান কি কর ? তাহাতে বলিতে-  
ছেন, “রাখিতে” ইতি । নিতি নিতি,  
প্রত্যহ । তোমার জন্য আমি নারায়ণ

সেবা করি, তজ্জন্য তাঁহার শক্তি আমাতে  
সঞ্চারিত হয়, সেই শক্তিতে প্রত্যহ  
তোমার নিকট গমন করিয়া তোমার  
সহিত ক্রীড়া করি । ক্রীড়ান্তে যত্নপূরী  
যাই । ক্রীড়ার সময় আমার ক্ষুর্তি  
করিয়া মান ॥ ৫৩ ৫৪ ॥

( ১২২ পা ) “মোর ভাগ্যে...জামিহ  
নিশ্চয় ॥” এই ৫৫ ও ৫৬ পয়ারের  
ভাবার্থ । মো বিষয়ে, আমার সম্বন্ধে ।  
শ্রীরাধার প্রেম যে পরম প্রবল, তাহা  
বলিতেছেন, “লুকাইয়া” ইতি । তোমার  
প্রেম আমাকে গোপনভাবে আনয়ন  
করে, কিছুদিন পরে প্রকাশ্যভাবে আন-  
য়ন করিবে । যদি বল, এখনই ব্রজে  
আইস না কেন ? এক্ষণে যাইতে পারি  
না, তদ্বিষয়ে কারণ বলিতেছেন, “যাদ-  
বের” ইতি । প্রতিপক্ষ, শত্রু ॥ ৫৫।৫৬ ॥

( ১২২ পা ) “সেই শক্রগণ...প্রতীত  
হইল ॥” এই ৫৭ হইতে ৫৯ পয়ার পর্য্যন্ত  
ভাবার্থ । যদি বল, শত্রু বিনাশ জন্ম  
যখন যত্নপূরে বাস ও রাজ্যভোগ করি-  
তেছ, তখন যাদবের প্রতিই তোমার  
প্রেম প্রকাশ পাইতেছে । ইহাতে বলি-  
তেছেন, “সেই” ইতি । কেবল ব্রজ-  
জনের হিতার্থ শত্রুবিনাশ করিতে যাদ-  
বের সহিত বাস, এবং অনাসক্ত হইয়া  
রাজ্যভোগ করিতেছি । যদি বল, শত্রু-  
বিনাশ জন্যই যদি যত্নপূরে বাস হয়,  
তবে রাজ্যভোগ কর কেন ? ইহাতে  
বলিতেছেন, “যে বা” ইতি । রাজ্যাদি  
ভোগ যাদবের সম্বোধন জন্য, নিজের  
নিমিত্ত নহে । প্রেমগুণে, প্রেমের গুণে

বা প্রেমরূপ রঞ্জুতে । দিন দশ বিশে,  
ত্রিশ দিনে । বিলাসিব রাত্রিদিবসে,  
দিবারাত্র বিলাস করিব ।

কেহ বলেন, দিবারাত্র বিলাস করিলে আর  
পরকীয়া ভাব থাকিবে না । ইহাকে সমৃদ্ধিমান  
শুকার বলে । এই সন্তোগে আর বিরহের সস্তা-  
বনা নাই, ইহাতেই মধুর রস উৎকর্ষের পরাকাষ্ঠা  
নাভ করে । স্বকীয়াভাব ব্যতীত দিবারাত্র নির-  
ন্তব বিলাসসম্পন্ন হয় না । কেহ বলেন, উজ্জলে  
সমৃদ্ধিমান সন্তোগের লক্ষণ উক্ত হইয়াছে,—

“দূর ভালোকসৌখ্যনোঃ পারতন্ত্র্যাধ্বিয়ুক্তয়োঃ ।

উপভোগান্তিরেকো যঃ কীর্তীতে স সমৃদ্ধিমান ॥”

মুখ্যসন্তোগ চারি প্রকার, সজ্জিগু, সক্ষীর্ণ-  
সম্পন্ন ও সমৃদ্ধিমান । সুদূর প্রবাস বশতঃ বিরহী  
নায়ক ও নায়িকার পরাধীনত্ব প্রযুক্ত উভয়ের  
দুর্লভ দর্শনের যে উপভোগের আধিক্য, তাহার  
নাম সমৃদ্ধিমান । ইহার আনন্দচন্দ্রিকা টীকায়  
উক্ত হইয়াছে,—

“এবঞ্চ সুদূরপ্রবাসান্তে দাম্পত্যে সতাপার-  
তন্ত্র্যা এব সমৃদ্ধিমান সজ্জিগু-সক্ষীর্ণ-সম্পন্নো এবৌপ-  
পত্যে ইতি ব্যাখ্যা প্রসিদ্ধিনৈব গ্রন্থকৃদাশয় স্পর্শ-  
নীতি বুদ্ধ্যন্তে । পারতন্ত্র্যাভাব এব দাম্পত্য এব  
সমৃদ্ধিমানিতি যদি তেভ্যামাশয়ন্তহি ‘সখ্যস্তা মিলিতা  
নিদর্গমধুরপ্রেমাভিরামীকৃত্য যামীয়ং সমগংস্ত  
সংসুববতী খঞ্জশ্চ গোষ্ঠেশ্বরী । বৃন্দারণ্য নিকুঞ্জ-  
ধাম্নি ভবতা সঙ্কোচপায়ং রক্তবান্ সংবৃত্তঃ কিমতঃ  
পরং প্রিয়তরং কর্তব্যমত্রান্তি মে ॥” ইতি স্পষ্টমেব  
পারতন্ত্র্যাভাব দাম্পত্যনিরূপকং পঞ্চমম্বাহৃত্য “দগ্ধং  
হস্তেতি,” “তবাত্র পরিমৃগাতেতি” উপপত্ত্যপার-  
তন্ত্রময়ং পদ্যময়ং কথমুদাহরণে নোপন্যস্তমিতি ।”

সুদূর প্রবাসের পর স্বাধীন স্বকীয়া ভাব  
হইলে, তাহাতে সমৃদ্ধিমান সন্তোগ হয় এবং পরা-  
ধীন পরকীয়াভাবে সজ্জিগু, সক্ষীর্ণ ও সম্পন্ন  
সন্তোগ হয়, এরূপ ব্যাখ্যা গ্রন্থকারের আশয় নহে ।  
স্বাধীনত্বাপর স্বকীয়া প্রেমেরই সমৃদ্ধিমান হয়,

ইহা যদি গ্রন্থকর্তার আশয় হয় ; তবে, ললিত-  
মাধবে দশমাকে ৩৪ শ্লোকোক্ত স্পষ্ট স্বাধীন  
স্বকীয়াভাব নিরূপক “সখ্যস্তান্তি” পদ্যকে  
সমৃদ্ধিমান সন্তোগের উদাহরণ না দিয়া, ললিতমাধ-  
বোক্ত পরাধীন পরকীয়া ভাবময় “দগ্ধমিতি” ও  
“তবাত্রেতি” পদ্য দুইটা দ্বারা উদাহরণ করিতে  
এই শ্লোকটি দুইটি লেখেন কেন ? কোন জিজ্ঞাসা  
থাকিলে উজ্জল দেখিবেন । অতএব পরকীয়াতে  
সমৃদ্ধিমান সন্তোগ হয় । ইহাতে বিচ্ছেদ দেখা  
যায় না ।

তারে, শ্রীরাধাকে । কৃষ্ণ-প্রাপ্তি  
প্রতীত হইল, শীঘ্রই কৃষ্ণ ব্রজে যাইবেন,  
ইহা নিশ্চয় হইল । ৫৭—৫৯ ॥

( ১২৯ প্য ) “ময়ীতি ।” এই শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৩৮ পৃষ্ঠায় দেখি-  
বেন । ইহার তাৎপর্য্য ভাবার্থ ব্যাখ্যায়  
১৪২ পৃষ্ঠায় দেখিবেন ॥ ৮ ॥

( ১২৯ প্য ) “এই সব... ..দিব্য  
পরিমল ॥” এই ৬০ ও ৬১ পয়ারের  
ভাবার্থ সরল । এই সব অর্থ, পূর্বোক্ত  
অর্থ সকল । চাণ্ডা, দর্শন করিয়া ।  
“স্বরূপের ইন্দ্রিয়” ইতি । স্বরূপের ইন্দ্রিয়  
প্রভুর ইন্দ্রিয়ের অধীন হইয়া কার্য্য করে ।  
তজ্জনীতে ভূমি লেখে, ইহা চিন্তা নামক  
সঞ্চারী ভাব । “যবে যেই রস” ইতি ।  
প্রভুর যখন যে ভাব উখিত হয়, স্বরূপ  
তাদৃশ রসানুযায়ী গান করিয়া, সেই  
রসকে প্রত্যক্ষরূপে আনন্দন করান ।  
পরিমল, গন্ধ ॥ ৬০।৬১ ॥

( ১৩০ প্য ) “প্রভুর হৃদয়ে.....  
আছিল অন্য স্থানে ॥” এই ৬২ হইতে  
৬৫ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । উদ্ভাদ  
বকাবানু, উদ্ভাদরূপ ঝড় বাতাস । উপ-

জিল, আরম্ভ হইল। নানা ভাবরূপ সৈন্যে যে যুদ্ধ করেন, সেই নানাভাব কি, তাহা বলিতেছেন, “ভাবোদয়” ইত্যাদি। সঞ্চারী, সঞ্চারীভাব। যিনি হান্সাদি ও ক্রোধাদি ভাবকে নিজের অধীন করিয়া সুরাজার স্মরণ বিরাজমান থাকেন, তাহাকে স্থায়ীভাব বলে। ভাব পুষ্পক্রম, ভাবরূপ পুষ্পরক্ষ ॥ ৬২—৬৫ ॥

( ১৩০ পা ) “যদ্যপি রাজার... তাহা কৈল সমর্পণ ॥” এই ৬৩ হইতে ৬৯ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। হাড়ির সেবন, নীচ কাজ অর্থাৎ পথ সন্মার্জন। অবসর, সময়। যাই, গমন করিয়া। বলগণ্ডি স্থান, প্রবাদ আছে,—

যে পথে বলপূর্ব্বক কর গ্রহণ করা হইত, তাহা বলগণ্ডি। চন্দন পুষ্করীর পথ হইতে শ্রদ্ধা নদীর পশ্চিম তীর পর্য্যন্ত যে পথ, তাহা বলগণ্ডি। পূর্ব্বে যে সময়ে গুণ্ডিচা মন্দির যাইতে মধ্যে শ্রদ্ধা-নদী ছিল, সে সময় ছন্নখানি রথ হইত, তিনখানি

মন্দির হইতে শ্রদ্ধানদীর তীর পর্য্যন্ত যাইত। পরে নদী পার হইয়া অপর তিনখানি রথে তিন মূর্ত্তি আরোহণ করিতেন এবং গুণ্ডিচা মন্দিরে যাই-তেন। সম্ভ্রতি শ্রদ্ধানদী মজিয়া গিয়াছে, রথ এক্ষণে সোজান্নাজ গুণ্ডিচা মন্দিরে যায়।

রথ রাখি, রথের গতি স্থগিত করিয়া। তাহা, বলগণ্ডি স্থানে ॥ ৬৬—৬৯ ॥

( ১৩১ পা ) “আগে পাছে... করি-  
য়াছেন বর্ণন ॥” এই ৭০ ও ৭১ পয়ারের ভাবার্থ সরল। আরামে, বাগানে ॥ ৭০-৭১

( ১৩১ পা ) “রথারূঢ়স্যেতি।” এই নবম শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। যে শ্লোক দ্বারা রূপগোষ্ঠাস্বামী রথারূঢ়ে মহাপ্রভুর নৃত্যবর্ণন করেন, তাহা এই শ্লোক ॥৯॥

( ১৩১ পা ) “ইহা বেই... কৃষ্ণদাস ॥” এই ৭২ পয়ারের ভাবার্থ সরল। ইহা, রথারূঢ়ে মহাপ্রভুর নর্ত্তন লীলা। তার, যে শ্রবণ করে ॥ ৭২ ॥

ইতি অগোদশ পরিচ্ছেদে স্তবোধিনী ॥ ১৩ ॥

## চতুর্দশ পরিচ্ছেদ ।

•••••

( ১৩১ পা ) “গৌর” ইতি। এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। এই পরিচ্ছেদে গ্রন্থকার বাহা বলিবেন, তাহা শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন। নিজভক্তগণ সহ মহাপ্রভু লক্ষ্মী-বিজয়োৎসব দর্শন ও স্বরূপের মুখ হইতে

গোপীর প্রেমরসের উল্লাস শ্রবণ করেন, ইহাই এই পরিচ্ছেদে বলা হইবে ॥১॥

( ১৩২ পা ) “জয় জয়... নেন্ত্রে জলধার ॥” এই ১ম হইতে ৩য় পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। “জয়শ্রোতাগণ” ইতি। গৌরাক বাহাদের প্রাণ এবং

গৌরপদ ধন ( সম্পত্তি ) সেই শ্রোতাগণ পরম উৎকর্ষতা লাভ করেন । এইমত, পূর্ক পরিচ্ছেদোক্ত । হেনকালে, যে সময়ে মহাপ্রভু প্রেমের আবেশে ছিলেন । সেই দেশ, সেই স্থানে অর্থাৎ মহাপ্রভু যেখানে শয়ন করিয়াছেন । ‘জয়তি তে হৃদিকং’ অধ্যায় অর্থাৎ শ্রীভাগবতোক্ত রাসপঞ্চাধ্যায়ীর গোপী গীতের অধ্যায় । তব কথামৃত, এইটি ঐ অধ্যায়ের নবম শ্লোক । দুইজন্যর, প্রভু ও রাজার ॥১-৩॥

( ১৫২ পা ) ‘তবেতি ।’ এই দ্বিতীয় শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

গোপীগণ কহিলেন, তোমার কথাই অমৃত-স্বরূপ । ঐ কথা, তোমার বিরহরূপ তাপে খিন্ন ব্যক্তিগণকে রক্ষা করে ; এমন কি, আধ্যাত্মিকাদি ত্রিতাপবিশিষ্ট সংসারি জনগণের মৃত্যু পর্য্যন্ত হৃদশ্রী হইতে রক্ষা করে বা ত্রিতাপকে নাশ করিয়া জীবের স্বরূপানন্দকে প্রকাশ করে । অতএব তোমার কথামৃত, প্রসিদ্ধ অমৃত হইতেও শ্রেষ্ঠ ও জীবনরূপ । ব্রহ্মা, শিব, চতুঃসনাদি আশ্চার্য্যমগণ দেবভোগ্য অমৃতকে ঘৃণা করতঃ তোমার কথা-মৃতকে ( পান করে ) স্তব করেন । ‘ঐড়িতঃ’ ইহা বর্ধমান ‘কু’ প্রত্যয় অর্থাৎ এখনও স্তব করেন । তোমার কথা সংসারের পাপ ও পুণ্য-নাশক এবং শ্রবণমাত্রই সর্কার্থ সাধক । অতএব তোমার কথা সর্কার্থপেক্ষা শ্রেষ্ঠ ও ব্যাপক । তোমার একরূপ কথা যিনি গ্রহণ করেন, অক্ষয় ধন-দাতা বলিয়া তিনি বহুদাতা বা ধন্য হয়েন । অথবা, যিনি তোমার কথারূপ কীর্ত্তন মুমুকুগণকে প্রদান করেন, তিনি সর্কার্থপেক্ষা সর্কার্থদাতা ও মহাদানদাতা । কিধা, ভূরিদা, অর্থাৎ ( ভূরি ) বহুলদাতৃথেকে ( দা ) ধণ্ডন করেন । অথবা, ভূরিদা অর্থাৎ এত দান করেন, যে তাহাকে সর্কার্থ প্রদান

করিলেও তাহা পরিশোধ করা যায় না । অথবা, ভূরিদা = অজ্ঞানা ইতি ভূরিদাজনা অর্থাৎ বাহার নামকে নিরূপণ করেন, তাহার বহুদাতা ও পুন-র্জন্মরহিত হয়েন বা সর্কার্থজ্ঞ ও সর্কার্থদক্ষিণাদির যে ফল, তাহা লাভ করেন । অথবা, যিনি জন্মান্তরে বহুদান করিয়াছেন, তিনিই এ জন্মে তোমার নাম গ্রহণ করেন ॥ ২ ॥

( ১৫২ পা ) ‘ভূরিদা.....যার নাহি নাহি অন্ত ॥’ এই ৪র্থ হইতে ৬ষ্ঠ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । পূর্কসেবা, রথাগ্রে ঝাঁট দেওয়া । রূপা উপজিল, রূপা হইয়া-ছিল । অনুসন্ধান বিনু, সেই এই প্রতাপরুদ্ভ ইহা না জানিয়াও । নি-সকড়ি, অন্নাদি ব্যতীত যে প্রসাদ ॥৬-৬॥

( ১৩৩ পা ) ‘ছেনাপানা .... প্রভুর মন ধায় ॥’ এই ৭ম ও ৮ম পয়ারের ভাবার্থ সরল । ছেনাপানা, ছেনা ও সরবৎ । পৈড়, ডাব । কদলক, কলা । বীজতাল, তালশাঁস । নারস্ব হইতে কমলা পর্য্যন্ত লেমুজাতি । বীজপুর, দাড়িম । হরিবল্লভ ও সেবতি মিষ্টান্ন-বিশেষ । মরিচা লাড়ু, ঝালের লাড়ু । পদ্মচিনি, পদ্মমধুর সারে নির্মিত চিনি । চন্দ্রকাস্তি, বিড়ি কলাইয়ের রুটি । বিয়ড়ি কদমা, বিড়ি কলাইচূর্ণ মিশ্রিত কদমা । তক্র, ছোল । কোলি, বদরী ( কুল ) কেয়াপত্র জ্রোদি, কেয়াফুলের পাতার দোনা ॥ ৭৮ ॥

( ১৩৩ পা ) ‘পাঁতি পাঁতি...লোকে চমৎকার ॥’ এই ৯ম হইতে ১২শ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । পাঁতি পাঁতি করি, একটি একটি করিয়া । আকর্ষ পুরিয়া, উদর পরিপূর্ণ করিয়া । উবরিল

খায় সহস্রেক জন, সহস্রজন খাইতে  
পারে, একরূপ প্রসাদ থাকিল। তাঁরে,  
কান্দালদিগকে। ষোটন, যুড়িলেন ॥৯-১২

( ১৩৪ পা ) “জয় গৌরচন্দ্র...হইলা  
আপনে ॥” এই ১৩শ হইতে ১৬শ পর্য্যন্ত  
ভাবার্থ সরল। আইটোটা, জুঁই ফুলের  
বাগান। নব দিন, রথযাত্রার দিন হইতে  
দশমী পর্য্যন্ত নয় দিন ॥ ১৩-১৬ ॥

( ১৩৪ পা ) “নানোদ্যান... জলেত  
ভানিয়া ॥” এই ১৭শ হইতে ২০শ পর্য্যন্ত  
পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। জলমগ্নকুবাদ্য,  
হস্ততলকে ভেকের ন্যায় করিয়া জলের  
উপরি আঘাত করিয়া বাদ্য। গুপ্ত,  
মুরারি। দন্ত, বাসুদেব। করহ বর্জন,  
নিষেধ কর ॥ ১৭-২০ ॥

( ১৩৫ পা ) “এই মত...লয় কি  
কারণে ॥” এই ২১শ হইতে ২৭শ পর্য্যন্ত  
পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। বৃক্ষ বলি, বৃক্ষ  
সমূহ। পুষ্পারাম, ফুলের বাগান।  
চিত্রবস্ত্র, রঞ্জিলা কাপড়। সুন্দরচল,  
যে স্থানে গুণ্ডিচা মন্দির। রসবিশেষ  
শ্রবণ জন্ম প্রভু স্বরূপকে বলিলেন,  
“বদ্যপি” ইতি।

জগন্নাথদেবের এই গীণা অবশ্য দ্বারকালীলা।  
শ্রীকৃষ্ণ দ্বারকায় বিহার করিতে করিতে বৎসরের  
মধ্যে একবার শ্রীকৃষ্ণাবনের তুল্য উপবন সকল  
দর্শন করিবার জন্ত রথযাত্রায় স্থানান্তরে গমন  
করেন। গমনাগমনে পথে কয়েকদিন ঐ সকল  
উপবনেই বিহার করেন। বিহারকালে লক্ষ্মীদেবীকে  
সঙ্গে লয়ন না, ইহার কারণ কি ? ২১-২৭ ॥

( ১৩৬ পা ) “স্বরূপ কহে... সৈন্য  
সাক্ষীয়া ॥” এই ২৮শ হইতে ৩২শ  
পর্য্যন্ত ভাবার্থ। লক্ষ্মীদেবীকে

সঙ্গে না লইবার কারণ বলিতেছেন,  
“স্বরূপ” ইতি।

স্বরূপ কহিলেন, কারণত স্পষ্টই প্রতীয়মান  
হইতেছে। উপবন-বিহার অবশ্য কৃষ্ণাবনবিহার।  
কৃষ্ণাবনবিহারে লক্ষ্মীদেবীর অধিকার নাই। এই  
হেতু লক্ষ্মীদেবীকে সঙ্গে লন নাই। “প্রভু কহে”  
ইতি। প্রভু কহিলেন, কৃষ্ণাবনবিহারে লক্ষ্মীদেবীর  
অধিকার নাই সত্য, কিন্তু এই উপবনবিহারটি  
প্রকাশবিহার, গুপ্তবিহার নহে, যেহেতু সঙ্গে  
সুভদ্রা ও বলরাম। অতএব লক্ষ্মীদেবীকে সঙ্গে  
লওয়ায় ঘোষ কি ? যদি বল, জগন্নাথের  
অন্তরে কৃষ্ণাবনবিহার বিস্তৃত হওয়ার, তৎকালে  
ঐশ্বর্যের অধিষ্ঠাত্রী লক্ষ্মীদেবীর সঙ্গে শোভা পায়  
না; তাহা হইলে তাহাতে দেবীর ঘোষ হয়  
কেন ? জগন্নাথের অন্তরে যাহাই থাকুক, তাহাতো  
অন্যে জানিতে পারেন না, প্রকাশে উপবন-  
বিহারমাত্র, তাহাতে দেবীর রাগের কারণ কি ?  
“স্বরূপ” ইতি। স্বরূপ কহিলেন, প্রেমবতীর  
সভাবই ঈদৃশ। তাহার কান্তের ঔদাস্তলেশ বা  
আভাস দেখিলেও ক্রোধ করেন। যথার্থ্যপক্ষে  
ঔদাস্ত না হইয়া ঔদাস্তের স্মার প্রতীয়মান ঔদাস্ত-  
ভাস। সম্পূট, ডিবা। তারে, ভৃত্যগণকে।  
“দামোদর” ইতি। প্রভুকে হস্ত করিতে দেখিয়া  
স্বরূপ কহিলেন, প্রভো, হাসিবার কথা বটে, ইহা  
মান নয়, প্রচণ্ড রৌদ্ররস।

তথাহি রসামৃতে উত্তরে চতুর্থে,—

“নীতা ক্রোধরতি: পুষ্টিং বিভাব্যৈর্নান্জোঁচৈটৈ: ।  
হৃদি ভক্তজনস্যাসৌ রৌদ্রভক্তিরসো ভবেৎ ॥”

ক্রোধরতি নিজোঁচিত বিভাবাদি দ্বারা পুষ্টি  
প্রাপ্ত হইলে রৌদ্র ভক্তিরস হয়।

ঐছে ( এই ) প্রকার মান আমি আর কখন  
দেখি নাই বা শুনিতেও পাই নাই। দ্বারকায়  
সত্যজ্ঞানদেবীর মানের কথা শুনা যায়, সেও একরূপ  
নহে। সে মান কিরূপ তাহা বলিতেছেন,  
“মানিনী” ইতি। সত্যজ্ঞানদেবী: শব্দন মানিনী

হইতেন, তখন তিনি ভূষণাদি ত্যাগ করিয়া মলিন-বসনে অধোমুখে ভূমিশিখন করিতেন। হরিবংশে সত্যভামার ঈর্ষামান বর্ণনার সময় তাঁহাকে রোষ-বতী না বলিয়া রোষবতীর স্তায় বর্ণিয়াছেন,—  
 “কষিতামিব তাং দেবীং মেহাৎ সঙ্কল্পমরিব।  
 ভীতভীতোহতি শনকৈর্বিবেশ যত্নন্দনঃ ॥  
 রূপযৌবন-সম্পন্ন। স্বসৌভাগ্যোঃ গর্বিতা।  
 অভিমানবতী দেবী ঐর্ষ্যবোধ্যবশং গতা ॥”

একদা নারদ স্বর্গ হইতে একটি পারিজাত পুষ্প আনিয়া শ্রীকৃষ্ণকে দেন। শ্রীকৃষ্ণ উহা কৃষ্ণীদেবীকে প্রদান করেন। রূপযৌবনসম্পন্ন সত্যভামাদেবী শ্রীকৃষ্ণকৃত আদর হেতু অতিশয় গর্বিতা ছিলেন। তিনি নিজেকে শ্রীকৃষ্ণপ্রিয়-গণের প্রধানা মনে করিতেন। পূর্কোক্ত ঘটনা শ্রবণ করিয়া তাঁহার কৃষ্ণীদেবীর প্রতি ঈর্ষা জন্মিল। তিনি ঐ ঈর্ষার বশীভূত হইয়া মর্দিনী হইলেন। শ্রীকৃষ্ণও তাঁহার প্রতি মেহযুক্ত ছিলেন। অতএব তাঁহাকে রোষবতীর স্তায় দেখিয়া, পাছে তাঁহার স্নেহের শৈথিল্য হয়, ভাবিয়া অতিশয় ভীত হইলেন এবং ধীরে ধীরে তাঁহার মন্দিরে প্রবেশ করেন। ইহাতে বুঝা যায়, বেহাঙ্গী কৃতাপরাধ নারকের, নারিকাকে ভয় হয় এবং প্রণয়িনী নারিকার কৃতাপরাধ নারকের প্রতি ঈর্ষাজনিত মান উৎপন্ন হয়। তাহাতে নারিকাকে রোষবতীর স্তায় দেখা যায়। ইহার নাম ঈর্ষামান। ইহা সহেতু অর্থাৎ কান্তের অপরাধ বা অপরাধাভাসই এই মানের হেতু। এই সহেতু মান সত্যভামাদি মহিষীবর্গে এবং চন্দ্রাবল্যাদি গোপীগণেও দৃষ্ট হইয়া থাকে। এতদ্ব্যতীত আর এক প্রকার মান আছে। ইহার নাম প্রণয়মান। ঐ মান কারণশূন্য, কান্তের অপরাধ বা অপরাধাভাসরূপ কারণের অপেক্ষা করে না। উহা প্রণয়াদিক্যে বতঃই উদ্ভিত হয়। উহা প্রণয়েরই বিলাস। ঐ মানকে ঈর্ষা প্রকল্পদেবীতেই দৃষ্ট হয়, অন্যত্র দৃষ্ট হয় না। প্রকল্পদেবীদেবীর সহেতুক মানই মহিষী-প্রণয়মানের সহেতুক মানের নাম।

গণের সহেতুক মানের ন্যায় নহে। প্রকল্পদেবীগণের সহেতুক মানও অন্যত্র দৃষ্ট এবং রসের নিধান।

এিহাে অর্থাৎ লক্ষ্মীদেবী কি না মানিনী হইয়া নিঃস্বার্থ প্রকাশ করতঃ নৈমন্ত্যনামস্ত লইয়া জগন্নাথকে আক্রমণ করিতে যাইতেছেন ॥ ২৮-৩২ ॥

( ১৩৩ প। ) “প্রভু কহে... ...দিগ-দরশন ॥” এই ৩৩ পয়ারের ভাবার্থ।

প্রভু কহিলেন, ব্রজের মান কি প্রকার? স্বরূপ বলিলেন, গোপীমান নদী শতধার অর্থাৎ মহিষীগণের মানের মূল, অন্নের সৌভাগ্যসহনে অসহিমুতা। আর গোপীগণের মানের মূল, কান্তের অসুখা শঙ্কা।

নদী যেমন বাধা প্রাপ্ত হইয়া শতধারার প্রবাহিত, হয় তদ্রূপ কান্তের অসুখ আশঙ্কায় গোপীগণের প্রেমপ্রবাহ মানরূপ বাধা দ্বারা বাধিত হইয়া শতধারার প্রবাহিত হয়।

গোপীগণের প্রেম, মানের আকারে প্রকাশিত হইয়া প্রেমদীকে প্রিয়ের পূজ্য করার, প্রেমের অমুভব ও পরিমাণ করার এবং স্বয়ং প্রিয়রূপে অমুভূত হয়। এই জন্য অলঙ্কারশাস্ত্রে বলেন,—

“মানান্তে প্রেমসাঁ যেন যং প্রিয়ঞ্ছেন মন্যতে  
 মমুতে বা মিনীতে বা প্রেমমানঃ স কথ্যতে ।  
 মহাভাবাকৃতঃ কোহসাবমুমান ইতি স্মৃত-  
 নুঃস্তোহপি ন পুংলকো মানশব্দঃ প্রহযতি ॥”

যে মানহেতু প্রেমদী প্রিয় বস্তুক পূজিত হইল, বাহা স্বয়ং প্রিয়রূপে অমুভূত হয়, বাহা হইতে প্রেমের অমুভব বা পরিমাণ করা যায়, তাহাকে প্রেমমান বলে। মহাভাবাকার “কোহ-সৌ অমুমানঃ” এইরূপ পুংলিঙ্গ “মান” শব্দের প্রয়োগ করিয়াছেন, অতএব অন্যট প্রত্যয়ান্ত বা ধাতু হইতে নিস্পন্ন হইলেও, মান শব্দের পুংলিঙ্গ প্রয়োগ দোষাবহ হয় না। মন ধাতুর উত্তর ষৎ প্রত্যয় স্মরণে মান শব্দ নিস্পন্ন হয়।



বলেন, ঈর্ষান্বিত বা প্রণয়জনিত কোপই মান ।  
বস্তুতঃ মান ও কোপ স্বভাব বস্তু । মান প্রণয়  
নামক প্রেমেরই বিলাস বিশেষ । প্রেম কুটিল-  
স্বভাব বলিয়াই বৃদ্ধির অবস্থায় কখন ঈর্ষারূপ  
কারণ হইতে কখন বা কারণশূন্যভাবে স্বভাবই  
মানাকারে উথিত হয় । যখন উহা ঈর্ষারূপ  
কারণ হইতে উথিত হয়, তখন উহাকে সহেতুক,  
এবং যখন উহা অকারণে উথিত হয়, তখন  
উহাকে নিহেতুক মান বলে । কোপ কটু ও  
সস্তাপজনক এবং মান মধুর ও স্নিগ্ধতা সম্পাদক ।  
এইরূপ স্পষ্টভেদলক্ষণ সবেও মান ক্রিয়া বিশেষ  
সাম্যে কোপের আকারে দৃষ্ট হয় বলিয়া মানকে  
কোপ বলে । বস্তুতঃ মান, কোপ নহে, কোপা-  
ভাস মাত্র ।

গোপীগণের স্বভাবভেদে তাঁহাদের  
প্রেমেরও রুত্তিভেদ হয় । ঐ প্রেমরুত্তির  
ভেদ অনুসারেই মাতনরও প্রকারভেদ  
হয় । অসংখ্য গোপীর অসংখ্য স্বভাব  
ভেদে অসংখ্য প্রেমরুত্তির প্রকাশ, তাহা  
হইতে অসংখ্য মানের উদ্ভব হয় । অত-  
এব উহা না যায় কখন অর্থাৎ বর্ণনা করা  
যায় না । এক দুই ভেদে অর্থাৎ উহার  
বর্ণন অসম্ভব বলিয়াই দুই একটি মাত্র  
বর্ণন করিব ॥ ৩৩ ॥

( ১৩৬ পা ) ‘মানে কেহো.....কছু  
বা উদাস ॥’ এই ৩৪৭ হইতে ৩৭৭  
পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ । এই তিন ভেদে  
অর্থাৎ মানবতী নায়িকা কেহ ধীরা, কেহ  
অধীরা, কেহ ধীরাধীরা ভেদে তিন  
প্রকার । ধীরা নায়িকার লক্ষণ বলিতে-  
ছেন, ‘ধীরা কান্ত-দুরে’ ইত্যাদি ।  
প্রত্যুখান, অভ্যর্থনা । যদি, হৃদয়ে ।  
স্বাধিকৃত, আলিঙ্গন করিতে । ভোষণ,

তৃপ্ত করণ । প্রিয় নিরগন, প্রিয়কে  
প্রত্যুখান । অধীরা নায়িকার লক্ষণ  
বলিতেছেন, ‘অধীরা নির্ভূরবাক্যে’  
ইত্যাদি । ‘কর্ণেংপলে, কর্ণস্থিত পদ্ম  
দ্বারা । তাড়ে, তাড়না করে । ধীরা-  
ধীরা নায়িকার লক্ষণ বলিতেছেন, ‘বক্র-  
বাক্যে’ ইত্যাদি ॥ ৩৪-৩৭ ॥

( ১৩৬ পা ) ‘মুঞ্চা মধ্যা... পমরম  
মস্তোষ ॥’ এই ৩৮৭ হইতে ৪০৭ পয়ার  
পর্য্যন্ত ভাবার্থ । বয়স ভেদে নায়িকা  
তিন প্রকার ; মুঞ্চা, মধ্যা ও প্রগল্ভা ।  
মুঞ্চা যথা উজ্জ্বলে,—

‘মুঞ্চা নববয়ঃ কামা রতো বামা সখীবশা ।

রতিচেষ্টাস্বতীত্রীড়চাকুগুটপ্রযত্নভাক ॥

কৃতাপরাধে দরিতে বাস্পকঙ্কালোকনা ।

প্রিয়প্রিয়োক্তো চাশঙ্ক্য মানে চ বিমুখী সদা ॥’

নবীনযৌবনা, ঈষৎকামবতী, রতিবিষয়ে বামা,  
সখীগণের অধীনা, রতিচেষ্টায় লজ্জাশীলা অথচ  
তদ্বিষয়ে গোপনে যত্নবতী । সাপরাধ প্রিয়তমের  
প্রতি সলজ্জদৃষ্টি সঞ্চারিণী, প্রিয় ও অপ্রিয় বচনে  
অশক্ত এবং মানবিষয়ে সর্বদা পরামুখী ।

মধ্যা যথা উজ্জ্বলে,—

‘সমানলজ্জামদনা প্রোক্তান্তারুণ্যালিনী ।

কিঞ্চিৎ প্রগল্ভবচনা মোহান্তস্বরতক্ষমা ।

মধ্যা স্তাৎ কোমলা কাপি মানে কুত্রাপি ককর্শা ॥

যাঁহার কাম ও লজ্জা সমান, যিনি নবযৌবনা,  
যিনি কিঞ্চিৎ প্রগল্ভবচনা, মোহ পর্য্যন্ত স্বরতক্ষমা,  
মানে কখন কোমলা কখন ককর্শা, তিনিই মধ্যা ।

প্রগল্ভা যথা উজ্জ্বলে,—

‘প্রগল্ভা পূর্ণভারুণ্যা মবাস্যাকরতোংসুকা ।

তুরিভাবোদগমতিভজা রসেনাক্রান্তমনতা ।

অভিপ্রোক্তোক্তচেষ্টোসৌমানে চান্তান্তকর্শা ॥’

যিনি পূর্ণ-যৌবনা, মদ্যাক, বিপদীক সত্যোপেক্ষা-

পাদিনী, প্রচুর ভাষোদগমে অভিজ্ঞা, রস দ্বারা কান্তকে নিজামন্তকরণে সমর্থ্য, বাহার উক্তি ও চেষ্টা শ্রোত্র ভাবাপন্ন, ও যিনি যানে অভিশয় কর্ণা, তিনি প্রগলভা ।

মধ্যা প্রগলভা, মধ্যা ও প্রগলভা ।

ধীরাদি বিভেদ যথা,—

ধীরমধ্যা, অধীরমধ্যা, ধীরাধীরমধ্যা, ধীর প্রগলভা, অধীর প্রগলভা ও ধীরাধীরপ্রগলভা । ধীরমধ্যা হইতে ধীরপ্রগলভা পর্যন্ত নাগিকার লক্ষণ মধ্যের ভাবার্থ ব্যাখ্যায় ৩২।৩৩ পৃষ্ঠায় দেখিবেন । “সম্ভর্ষ্য নিষ্ঠুং রোষাদধীরা তড়য়েৎ প্রিয়ম্ । যে কান্তা ক্রোধ বশতঃ নিষ্ঠুররূপে কান্তকে তাড়না করে, তাহাকে অধীর প্রগলভা বলে। ধীরাধীরার যে সকল গুণ ধীরাধীরপ্রগলভারও সেই সকল গুণ ।

তার মধ্যে, পুর্বোক্ত নাগিকাগণের মধ্যে । সবার স্বভাব তিন ভেদ অর্থাৎ নায়কের প্রেম, রূপ ও গুণাদির আধিক্য সাম্য এবং লঘুতা বশতঃ অধিকা, সমা ও লঘু এই তিন প্রকার ভেদ । পুনরায় প্রত্যেকের প্রথরা, মধ্যা (সমা) ও মুদী (মুহু) এই ত্রিবিধ ভেদ হয় ।

তন্মধ্যে যিনি সদন্ত বাক্য প্রয়োগ করেন এবং বাহার বাক্য কেহ খণ্ডন করিতে পারে না, তাহাকে প্রথরা কহে । ইহার ন্যূন হইলে মুদী । সমতা হইলে মধ্যা কহে ।

সেই সেই স্বভাবে অর্থাৎ সকলেই নিজ নিজ স্বভাবে অনুসারে শ্রীকৃষ্ণপ্রেমের বর্জন করিয়া তাঁহার সন্তোষ বিধান করেন । “একথা” ইতি । ইহা গুনিয়া প্রভু অপার আনন্দ অনুভব করতঃ “কহ কহ” বলিয়া আরও অধিক গুনিবার জন্য আশ্রয় প্রকাশ করিলেন । স্বরূপ কহি-

লেন, শ্রীকৃষ্ণ রসিকশেখর, গোপীগণও শুদ্ধ প্রেমরসগুণে প্রাবীণা (প্রধানা) । গোপীপ্রেমে রাসাভাস দোষের সম্বন্ধও নাই । এই হেতু কৃষ্ণের পরম সন্তোষ হয় । রাসাভাসদোষ বধা সাহিত্যদর্পণে ও পরিচ্ছেদে,—

“অনৌচিত্যপ্রবৃত্তত্বে আভাসো রসভাবমোঃ ।”

রস অল্পচিতরূপে প্রবৃত্ত হইলেই তাহাকে রাসাভাস বলা যায় অর্থাৎ যে রসের যে ভাবে প্রবৃত্তি হওয়া উচিত, সেই রস যদি সেইভাবে প্রবৃত্ত না হয়, তবেই তাহাকে রাসাভাস বলা যায় । শৃঙ্গার রসের স্থায়িত্ব বা রতি, যদি উপপত্তি-বিষয়িনী, মুনিপত্নী-বিষয়িনী ও গুণপত্নী-বিষয়িনী হয়, অথবা যদি নায়ক ও নায়িকার সমান অহুরাগ না থাকে, কিম্বা ঐ রতি যদি বহু নায়কনিষ্ঠ বা নীচগত হয়, তবে ঐ রস রাসাভাস বলিয়া গণ্য হয় । শ্রুতি প্রভৃতি শাস্ত্রে জানা যায়, গোপীগণ শ্রীকৃষ্ণের নিত্য স্ত্রী, তাহাদের কেবল কৃষ্ণনিষ্ঠ পার্ভাবিক প্রেম এবং শ্রীকৃষ্ণ ও গোপীগণ উভয়ের প্রতি উভয়ের তুল্যাহুরাগ, ইত্যাদি সব কারণে, গোপীপ্রেম রাসাভাস দোষরহিত ।

পরশ্লোকে ইহার প্রমাণ করিতে-  
ছেন ॥ ৩৮-৪০ ॥

(১৩৭ পা) “এবমিতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য । “গোপিকার প্রেমে নাহি” এই পয়্যের প্রমাণ এই শ্লোক ।

শ্রীকৃষ্ণ সত্যকাম, তাঁহার কামের অর্থাৎ সফলতার কথনই ব্যভিচার হয় না । এই জন্ত তিনি অহুরাগিনী অবলাগণের সহিত বিহার করেন । তিনি বিহারকালে সেই অহুরাগিনী অবলাগণের সুরভসধনী হাবভাবাদি নিজ অন্তরে অবরোধ করিয়াছিলেন অর্থাৎ তাঁহাদের হাবভাবাদি দ্বারা এতই আকৃষ্ট হইতেন যে, তাঁহাদিগকে ত্যাগ করিতে সমর্থ হইতেন নাই । অবলাগণ তাঁহাতে অহুরাগিনী, অতএব তিনি কেমন করিয়া তাঁহা-

দিগকে ত্যাগ করিবেন ? অহুরাগিনী অবলা-  
গণকে ত্যাগ করিতে পারিবেন না বলিয়াই, তাঁহা-  
দের সহিত শরৎকালীন রসসকলের আশ্রয়ভূত  
রাত্রিসকল ব্যাপিরা বিহার করিতে লাগিলেন ।  
শরৎ শক্কে যেমন শরৎ ঋতুকে বুঝায়, তেমনি বৎ-  
সরাস্বক কালকেও বুঝায় । অতএব শরৎকালীন  
রস সকলের আশ্রয়ভূত রাত্রি সকল ব্যাপিরা বিহার  
বলিতে অনন্তকাল ব্যাপিরা বিহারই বুঝিতে হয় ।  
কাব্যমধ্যে কথ্যগান অর্থাৎ কবিগণ বাহা উৎকৃষ্ট  
বোধে গ্রন্থমধ্যে নিবিষ্ট করিয়াছেন । রস সকলের  
আশ্রয়ভূত এবং চন্দ্রকিরণে সমুজ্জ্বল বলিতে রসা-  
ভাসাদি দোষবর্জিত এবং উদ্দীপনায়িত । গোপী-  
গণের রতি, উপপত্তিবিষয়িনী নহে । কারণ উহা  
তাদৃশী হইলে, রস সকলের আশ্রয়ভূত বলিতেন  
না । যিনি রসাস্বাদনে পরম প্রবীণ, যিনি রসের  
সার আশ্বাদন করেন, তিনি রসিকশেখর । শ্রীকৃষ্ণ  
রসিকশেখর, অতএব তিনি যে রসাতাস আশ্বাদন  
করেন চাই, তিনি যে রসের সার আশ্বাদন করিল-  
ছেন, ইহা স্থির । শ্রীকৃষ্ণ রসের সার আশ্বাদন  
করেন, ইহা স্থির হইলে, তিনি ঐ রস কোথায়  
আশ্বাদন করেন, ইহাও নির্ণয় করিতে হয় ।  
প্রাকটলীলায় শ্রীকৃষ্ণের রসাস্বাদন জগতেই হইয়া  
থাকে, কিন্তু সমস্ত জগতই ঐশ্বর্যজ্ঞান দ্বারা  
মিশ্রিত । জগতের সকল ভক্তই বিধিমাগের  
পথিক । বিধিমাগের পথিকগণ শ্রীকৃষ্ণকে ঈশ্বর  
বুদ্ধিতেই ভজন করেন । ঈশ্বরজ্ঞানে ভক্তের  
সঙ্কোচ-গৌরবাদি স্বাভাবিক । সঙ্কোচ-গৌরবাদি  
হইতে প্রেমের শৈথিল্য ঘটে । শিথিল প্রেমে  
শ্রীকৃষ্ণের সন্তোষ হয় না । যে ভক্ত আপনাকে  
হীন ও ভজনীর বস্তুকে ঈশ্বর বলিয়া জ্ঞান করেন,  
তাঁহার প্রেমে শ্রীকৃষ্ণ বশীভূত বা প্রীত হয়েন না ।  
যিনি যে ভাবে ভজন করেন, শ্রীকৃষ্ণ তাঁহাকে সেই  
ভাবেই অঙ্গীকার করেন । ঐশ্বর্যজ্ঞানরহিত  
ভক্তি কৃত্তিক । রাগমাগের পথিকগণ

করেন । পুত্রাদি বুদ্ধিতে সঙ্কোচগৌরবাদি থাকে  
না । অতএব প্রেমের গাঢ়তা অন্বে । এই  
প্রেমেই শ্রীকৃষ্ণের সন্তোষ হয় । এই প্রেম বৈকু-  
ণ্ঠাদিরও দুর্লভ । এই শুদ্ধ প্রেম করুণাময় শ্রীভগ-  
বানের রূপায় যখন প্রপঞ্চে প্রকট হয়, তখনই  
তিনি জগতে উক্ত রসসার আশ্বাদন করেন ।  
মধ্য ভক্তগণ শ্রীকৃষ্ণকে সমজ্ঞানে এবং বাৎসল্য  
ভক্তগণ হীনজ্ঞানে তাঁহাকে রসসার আশ্বাদন করা-  
ইয়া থাকেন । মধুর ভক্তগণ শুদ্ধমার্ধ্য্য বশতঃ  
সন্তোষবশায় শ্রীকৃষ্ণকে নিজের সমজ্ঞানে এবং  
বিরহে আপনা হইতে হীনজ্ঞানে সেবা করিয়া  
তাঁহাকে রসসার আশ্বাদন করান । মধুররসের  
আবার স্বকীয় ও পরকীয় এই দুইভাবে অবয়ব  
সন্নিবেশ স্বীকৃত হয় । তন্মধ্যে পরকীয়ভাবেই  
রসের অতিশয় উল্লাস হয় । শ্রীবৃন্দাবনই ঐ পর-  
কীয়ভাবে একমাত্র স্থান । এই পরকীয়ভাবে  
নিয়ত বর্দ্ধনশীল বলিয়া ইহার অবধি নির্দেশ করা  
যায় না । ইহা কেবল শুদ্ধপ্রেমরসপ্রবীণ ব্রজ-  
বধুগণেই দৃষ্ট হয় । ব্রজ-বধুগণের মধ্যে আবার  
একমাত্র শ্রীরাধাতেই এই ভাব সীমাস্ত প্রাপ্ত হই-  
য়াছে । ব্রজ-বধুগণ পরকীয়ভাবে শ্রীকৃষ্ণকে  
ভজন করেন এবং শ্রীকৃষ্ণও তাঁহাদিগকে ভক্ত্যাবেই  
অঙ্গীকার করেন । উহা তাঁহাদিগের স্বাভাবিক  
দাম্পত্যেরই আবরক ভাববিশেষ । উহা দাম্পত্য  
হইতে পৃথক্ নহে, দাম্পত্যেরই পরিপাক বিশেষ ।  
উপপত্তি বিষয়ক মধুর রস আবার রসাতাস বলি-  
য়াই গণ্য হইয়া থাকে । অথচ ব্রজসুন্দরীগণের  
সহিত শ্রীকৃষ্ণের পরকীয় ভাবেই মধুর রসের পর-  
মোৎকর্ষ অঙ্গীকৃত হয় । অতএব ঔপন্য ভাবে  
যে লঘুত্ব, তাহা, প্রাকৃত নায়কপদ, শ্রীকৃষ্ণের  
নহে । ঔপন্য ভাবে লঘুত্ব বৈ শ্রীকৃষ্ণের  
নহে, একপদ সিদ্ধান্ত করিবার পক্ষে বিশেষ বল  
আছে । যিনি সর্বাধিকারের মূল, তাঁহাতে কি  
কখন লঘুত্ব সম্ভব হয় ? বিশেষতঃ তাদৃশ শ্রীকৃষ্ণ

অবতার মিথ্যা হইয়া যায়। শ্রীকৃষ্ণ গোপীগণের নিত্যপতি। এবং গোপীগণ শ্রীকৃষ্ণের নিত্যকান্তা হইলেও, শ্রীকৃষ্ণে গোপীগণের ঔপন্যস্ত্যভাব এবং গোপীগণে শ্রীকৃষ্ণের পরকীয়াতাব অসম্ভব নহে; অষ্টদশটনাপটায়গী শ্রীকৃষ্ণের যোগমায়া অস-  
ম্ভবকও সম্ভব করিতে পারেন। শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক প্রযোজিতা যোগমায়া তাঁহারই ইচ্ছানুসারে স্বাভা-  
বিক দাম্পত্যকে আবরণ পূর্বক ঔপন্যস্ত্যের প্রক-  
টনরূপ অষ্টদশটনা করিয়া থাকেন। অতএব ঐ শুদ্ধপ্রেম রসাতলাস দোষ রহিত ॥ ৩ ॥

( ১৩৭ পা ) “বামা এক ..... জানন্দ সাগর ॥” এই ৪১৭ ও ৪২৭ পয়ারের ভাবার্থ সরল। শুদ্ধ-প্রেম-রস-প্রাবীণ গোপীগণ আবার দক্ষিণা ও বামা ভেদে দ্বিবিধা।

বামা যথা—

“মানগ্রহে সদোদযুক্তা তর্জিণিল্যে চ কোপনা।  
অভেত্তা নায়কে প্রায়ঃ-কুরা বামেতি কীর্ত্যতে ॥”

যিনি মানগ্রহণ জন্ত সর্বদা উত্তমশালিনী, সেট মানের শৈথিল্যে কোপনা করেন; মায়ক যাহার মান প্রসাদন করিতে অসমর্থ এবং প্রায়ই কঠিনার জ্ঞান প্রতীরমানা, তিনি বামা।

দক্ষিণা যথা—

যিনি মান নির্বন্ধে অসমর্থ, যুক্তবচন প্রয়োগ-  
কারিণী ও নায়কবাক্যে শীঘ্রই প্রসন্ন, তিনি দক্ষিণা।

নানাভাবে, বামাদক্ষিণাদি নানাবিধ ভাবে। রত্নখনি, প্রেমসরসের উৎপত্তিস্থান। বয়সে মধ্যমা, পূর্ণ যৌবনা। বামে, বাম্য প্রার্থ্য প্রভৃতি ভাব প্রেমবিলাস হেতু শ্রীকৃষ্ণের পরমানন্দ উপস্থিত হয়; কামার্ন্ত শ্লোকের তাহা অনুভবের বিষয় হয় না ॥ ৪১১৪২ ॥

( ১৩৭ পা ) “অহেরিবতি ।” এই শ্লোকের ভাব ও বাসলা সখ্যের ৭০

পৃষ্ঠায় দেখিবেন। “বাম্য স্বভাবে” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪ ॥

( ১৩৭ পা ) “এত শুনি... ..মূল কারণ ॥” এই ৪৩৭ হইতে ৪৬৭ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। এত শুনি, এই সব শুনিয়া। শ্রীরাধাপ্রেমকে অধিকৃত মহাভাব বলা যায়। দশবানু হেম, দশ-  
বার অগ্নিতে দক্ষ নির্মূল সুবর্ণের তুল্য। এই উপমায়া, গোপীপ্রেম যে একবারেই কামশূন্য তাহা স্থির হইল। “কৃষ্ণ” ইতি। শ্রীরাধা যদি হঠাৎ শ্রীকৃষ্ণের দর্শন লাভ করেন, তবে বিবিধ ভাবরূপ বিভ্রমণে বিভ্রমিতা হইয়া থাকেন। বিবিধ ভাব-  
বিভ্রমণ কি, তাহা বলিতেছেন, “অষ্ট মাত্বিক” ইত্যাদি।” সহজ প্রেম, স্বাভা-  
বিক প্রেম। কিলকিঞ্চিত ভাব বলিতে-  
ছেন, “রাধা দেখি” ইতি। বর্জেন গমন, শ্রীরাধার গমন নিবারণ করে। হর্ষ সঞ্চারী, হর্ষ নামক সঞ্চারী ভাব ॥ ৪৩-৪৬ ॥

( ১৩৮ পা ) “গর্ভাভিলাষেতি ।” এই পঞ্চম শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। কিলকিঞ্চিত ভাব কাহাকে বলে, তাহা শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন ॥ ৫ ॥

( ১৩৮ পা ) “আর সাত ভাব.....  
কোটিগুণ ॥ এই ৪৭৭ ও ৪৮৭ পয়ারের ভাবার্থ। আর সাত ভাব অর্থাৎ প্রথমে হর্ষ হয়, তাহাতে হাস্ত, রোদন, কোধ, অভিলাষ, ভয়, অশ্রুয়া ও গর্ভ এই সাত ভাব। যাহার, যে ভাবের। পূর্বোক্ত অষ্টভাব একত্র মিলনে কিরূপ হয়, তাহা দৃষ্টান্তের সহিত বলিতেছেন, “দধিধণ্ড”

ইত্যাদি । রাধাস্তনয়ন, শ্রীরাধার মুখ  
ও নয়ন ॥ ৪৭।৪৮ ॥

( ১৩৮ পা ) “অস্তঃস্মরতয়েতি ॥”  
এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “দানঘাটি পথে যবে” এই  
পূর্ন পয়ারানুযায়ী এই শ্লোক । কিল-  
কিঞ্চিত্ত ভাব সকল শ্রীরাধার কোন  
কোন অঙ্গের ভূষণ, তাহা এই শ্লোকের  
অর্থে প্রকাশ করিলেন ॥ ৬ ॥

( ১৩৮ পা ) বাস্পব্যাকুলেতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । শ্রীরাধার কিলকিঞ্চিত্ত ভাব  
দর্শনে সঙ্গম হইতে কোটিগুণ আনন্দিত  
হয়েন তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৭ ॥

( ১৩৯ পা ) “এত শুনি... ..বিলাস  
ভূষণ ॥” এই ৪৯২ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । বিলাসাদি ভাবভূষার, বিলা-  
সাদি ভাবরূপ অলঙ্কারের । বিলক্ষণ,  
অপেক্ষাকৃত বিশেষ ॥ ৪৯ ॥

( ১৩৯ পা ) “গতিস্মানেতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । বিলাস ভাব কাহাকে বলে,  
তাহা এই শ্লোকের অর্থে প্রকাশ করি-  
লেন ॥ ৮ ॥

( ১৩৯ পা ) “লজ্জা হর্ন... ..চঞ্চল  
করয় ॥” এই ৫০২ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । এত ভাব, লজ্জা, হইতে ভয়  
পর্য্যন্ত । রাধা চঞ্চল করয়; রাধাকে  
চঞ্চল করে ॥ ৫০ ॥

( ১৩৯ পা ) “পূর” ইতি । এই নবম  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে ।

শ্রীরাধা যে চঞ্চলিত হয়েন, তৎপ্রমাণ  
এই শ্লোক ॥ ৯ ॥

( ১৩৯ পা ) “কৃষ্ণ আগে...ললিতা-  
লঙ্কার ॥” এই ৫১২ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । তিন অঙ্গ, গ্রীবা, কটি ও জ্ঞানু ।  
ভঙ্গ, ভঙ্গি করিয়া । ললিতালঙ্কার,  
ললিত নামক ভূষণ ॥ ৫১ ॥

( ১৪০ পা ) “বিছ্যসেতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । ললিত নামক ভূষণ পর এই  
শ্লোক ॥ ১০ ॥

( ১৪০ পা ) “ললিত... ..সতৃষ্ণ ॥”  
এই ৫২২ পয়ারের ভাবার্থ সরল । ললিত  
ভূষিত, ললিত ভাবে যুক্ত ॥ ৫২ ॥

( ১৪০ পা ) “হ্রিয়েতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “ললিত ভূষিত” পয়ার প্রমাণ  
এই শ্লোক ॥ ১১ ॥

( ১৪০ পা ) “লোভে কৃষ্ণ... ..ভাব  
বিভূষণ ॥ এই ৫৩২ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । শ্রীরাধার কুটুমিত ভাব বর্ণন  
করিতেছেন, “লোভে” ইতি । কঞ্চুক,  
কাঁচুলি । ভিতরে, অন্তরে । সুখ, প্রীতি ।  
ভাব-বিভূষণ, ভাবরূপ অলঙ্কার ॥ ৫৩ ॥

( ১৪০ পা ) “স্তনেতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । কুটুমিত ভাব প্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ১২ ॥

( ১৪০ পা ) “কৃষ্ণ বাহ্য... ..স্তৎসন ।”  
এই ৫৪২ পয়ারের ভাবার্থ সরল । কুট-  
মিত ভাবে শ্রীরাধা কিরণে ব্যবহার  
হইলে

(১৪০ পা) "পাগিরোধমিতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । "কৃষ্ণবংশী" ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৩ ॥

(১৪১ পা) "এই মত.....করায় বিনতি ॥" এই ৫৫৭ হইতে ৫৭৭ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । সহস্রবদন, অনন্ত । রুন্দাবনসম্পদ, রুন্দাবনের সম্পত্তি । কিশ-লয়, নব পত্র । আসোয়াথ, অস্বাস্থ্য । পুষ্পবাড়ি, গুণ্ডিচা মন্দির ॥ ৫৫-৫৭ ॥

(১৪১ পা) "রথের উপরে...প্রিয়-সখী কাজ ॥" এই ৫৮৭ হইতে ৬০তম পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । আউটে, আবর্তন করে । "দধি মধো" স্থানে "দধি মধে" পাঠ হইবে অর্থাৎ গথন করে । ঠাকুরাণী, লক্ষ্মীদেবী । ভায়, ক্ষুণ্ণি পায় । ঈশ্বর প্রভাব, ঐশ্বর্যজ্ঞানে ঈশ্বরের প্রভাব অনুভব হয় । ষাঁহা, স্ত্রীরুন্দাবনে । না মাগে অন্ন ধনে অর্থাৎ এত সম্পত্তি থাকিতে দুঃখ ব্যতীত অন্ন কিছু তাঁহারা প্রার্থনা করেন না । নৃত্য পরভীত অর্থাৎ গোপীগণের সহজ গমন

দেখিলে, বিশ্বাস হয় যেন নৃত্য করিতে-ছেন । কৃষ্ণবংশী, কৃষ্ণের বংশী ॥ ৫৮-৬০ ॥

(১৪২ পা) "শ্রিয়ঃ কান্ত ইতি ।" এবং "চিন্তামণিরিতি ।" এই চতুর্দশ ও পঞ্চদশ শ্লোকদ্বয়ের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । "চিন্তামণিময় ভূমি" এই পয়ার হইতে "কৃষ্ণবংশী করে ষাঁহা" এই পর্য্যন্ত পয়ার প্রমাণ এই দুইটি শ্লোক ॥ ১৪ ১৫ ॥

(১৪২ পা) "শুনি প্রেমাবেশে.... কীর্তন নর্তন ॥" এই ৬১তম হইতে ৬৪-তম পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । শুনি, রুন্দাবনের সম্পত্তি শুনিয়া । সেই মূর্তি, রাধা মূর্তি । নিত্যানন্দ দূরে দেখি, নিত্যানন্দকে দূরে দেখিয়া । ভঙ্গী করি, ইঙ্গিত করিয়া । অষ্টদিনে, রথযাত্রার অষ্টদিবসে । ভিতর বিজয়, স্ত্রীমন্দিরে গমন । পূর্ববৎ, প্রথম রথযাত্রায় যেরূপ করিয়াছেন ॥ ৬১-৬৪ ॥

(১৪৩ পা) "জগন্নাথের... ..কৃষ্ণ-দাস ॥" এই ৬১ হইতে ৬৭ পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । টুটি গেল, ছিঁড়িয়া গেল ॥ ৬৫।৬৭

ইতি চতুর্দশ পরিচ্ছেদে সুবোধিনী ॥ ১৪ ॥

## পঞ্চদশ পরিচ্ছেদ ।

—\*—\*—\*—\*—

(১৪৩ পা) "নার্কভোমেতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । এই পরিচ্ছেদে ভক্তগণকে পৌড়ে বিদায়, নার্কভোম-গৃহে প্রস্থ

ভোজন বিলাস ও অমোঘের প্রতি প্রচুর কৃপা বর্ণিত হইবে ॥ ১ ॥

(১৪৩ পা) "জয় জয়... ..আচার্য্য পুত্রিল ।" এই ১ম হইতে ৩য় পর্য্যন্ত

পর্যায়ের ভাবার্থ সরল । এই মত, পূর্ন পরিচ্ছেদের কথিত মত । আচার্য্য পূজিল, অদ্বৈতকে পূজা করিল ॥ ১-৩ ॥

( ১৪৪ পা ) “রাধে কৃষ্ণেতি ।” এই শ্লোকের অভিপ্রায় এই, অদ্বৈত জীবের ন্যায় বিভিন্নাংশ নহে, পরন্তু স্বাংশ ইহা জানাইতে এবং শক্তি ও শক্তিমানের অভেদ, ইহা প্রতিপন্ন করিতে এই শ্লোক বলেন । এই শ্লোক বলিয়া পূজা করেন ॥

( ১৪৪ পা ) “যোহসি.....করে নিমন্ত্রণ ॥” এই ৪র্থ পর্যায়ের ভাবার্থ । মুখবাদ্য করি অর্থাৎ অদ্বৈত সদাশিব তত্ত্ব বলিয়া মুখ বাদ্য করেন, ইহা শিবের সম্ভাষকর । হাশে আচার্য্যেরে, অদ্বৈতের দিকে তাকাইয়া হাশেন । আচার্য্যের নিমন্ত্রণ, ইহা আশ্চর্য্য কথা । সেই কথা কি, বলিতেছেন,—

চৈতন্যভাগবতে অস্তে ১৭ অধ্যায়ে,—

একদিন অদ্বৈত মহাপ্রভুকে নিমন্ত্রণ করিলেন । পরে রঞ্জন করিতে করিতে মনে করিলেন, প্রভুর সঙ্গে অনেক সন্ন্যাসী আগমন করেন, তাহাদের ভোজনার্থ প্রভু অতিশয় ব্যস্ত হইলেন, তাহাতে তাহার ভোজন ভাল হয় না, যদি একাকী পাই, তবে মনের সাধে ভাল করিয়া ভোজন করাই । এমন সময় প্রভু একাকী সেখানে আসিলেন । পরে অতিশয় ঝড় বৃষ্টি আরম্ভ হওয়াতে আর কেহই আসিতে পারিলেন না । তখন অদ্বৈত নিজের অতীষ্ট সিদ্ধি জানিয়া ইন্দ্রকে স্তুতি করতঃ প্রভুকে নিমন্ত্রিতমত ভোজন করান ।

আচার্য্যের রঞ্জন যথা তদ্বৈত,—

একদিন অদ্বৈত মহাপ্রভুর বাসায় উপস্থিত হইলে প্রভু জিজ্ঞাসা করিলেন, আপনি কোথা হইতে আসিতেছেন? অদ্বৈত বলিলেন, জগন্নাথ

দর্শন করিয়া । প্রভু কহিলেন, কিরূপে দর্শন করিলেন? অদ্বৈত কহিলেন, দর্শন করিয়া প্রদক্ষিণ করিলাম । প্রভু কহিলেন, আপনার হার হইল । যেহেতু দর্শন সময়ে পরিক্রমণ করিলে শ্রীমুক্তির দিকে পৃষ্ঠ দিতে হয়, তখন দর্শন হয় না ; এই হেতু আমি একদৃষ্টে তাকাইয়া থাকি । আচার্য্য কহিলেন, একথা বলিবার তুমিই অধিকারী, অন্ত কেহ নহে । অতএব এ বিষয়ে তোমার নিকট সকলেরই হার ॥৪৪ ॥

( ১৪৪ পা ) “কেহো... ..গৌরঙ্গ সুন্দর ॥” এই ৫ম হইতে ৯ম পর্য্যন্ত পর্যায়ের ভাবার্থ সরল । কেহো ঘরভাত অর্থাৎ গৃহে রঞ্জন করিয়া অন্ন দেন । গোপভাবগুণ, গোপনীয়গোপভাব । আবেশে বিলাইলা, শ্রীকৃষ্ণের জন্মোপলক্ষে নন্দ-গোপের আবেশে ধনাদি প্রদান করেন । পিতা মাতা জ্ঞানে অর্থাৎ প্রভু শচীনন্দন হইলেও অন্তরে শ্রীকৃষ্ণাভিমান বশতঃ পিতা মাতা বুদ্ধিতে নন্দবেশধারী কানাই খুটিয়াকে ও বশোদা বৈশধারী জগন্নাথ মাহিতীকে প্রণাম করেন ॥ ৫-৯ ॥

( ১৪৫ পা ) “বিজয়াদশমী... ..অন্ন সমর্পিল ॥” এই ১০ম হইতে ১৬শ পর্যায় পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । লক্ষাবিজয় দিনে অর্থাৎ পুরাণান্তরের মতে বিজয়াদশমী দিনে, শ্রীরামচন্দ্র রাবণকে বধ করিয়া লক্ষা জয় করেন, এই উৎসব জগন্নাথ-বল্লভ নামক উদ্যান মধ্যে হয় । গড়, পরিখা । জগন্নাথ হইলে, নীতাকে হরণ করে । রাগবাত্মা, আশ্বিনী পূর্ণিমা । দীপাবলী, কানীপূজার নামে দীপদান । অন্নর্পণ, পাত্রাণ্ড বিহার

।। করিলা । কৈল আমি নিজধর্ম নাশ,  
ইহা দৈন্যমূচক-বাক্য । ভ্রষ্ট, ভাঙ্গা ।  
।ন কথায়, মনে মনে নিমাইয়ের আহা-  
রের কথায় ॥১০-১৬ ॥

( ১৪৬ পা ) “এইমত... ..সবার  
পালন করিয়া ॥” এই ১৭শ হইতে ২৩শ  
পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । তার প্রেমে,  
শচীদেবীর বাৎসল্য প্রেমে । আনি,  
আকর্ষণ করিয়া । সংস্কারি, পবিত্র  
করতঃ । শস্য, নারিকেলের মধ্যবর্তী  
শাঁস । ভাজন, পাত্র । ভাসে, উচ্চ-  
সিত হয় । ফল, নারিকেল । ছড়ুম,  
মুড়ি, ইহা চাউল হইতে প্রস্তুত হয় ।  
ওদন, অন্ন । যে আইগে, যে ধন উপ-  
স্থিত হয় । সরখেল, তত্ত্বাবধারক ।  
সমাধানে, তত্ত্বাবধারণে । পালন, রক্ষণা-  
বেক্ষণ ॥ ১৭-২৩ ॥

( ১৪৭ পা ) “কুলীনগ্রামিরে... কৃষ্ণ  
প্রেমোদয় ॥” এই ২৪ হইতে ২৬শ পর্য্যন্ত  
ভাবার্থ সরল । কুলীনগ্রামিরে, কুলীন  
গ্রামবাসিকে । বংশের হাত, বংশের  
হাতে । আনুষঙ্গ, একের প্রসঙ্গে  
অন্যের সিদ্ধিকে আনুষঙ্গ বলে ॥২৪-২৬॥

( ১৪৭ পা ) “আকৃষ্ণীতি ।” এই  
শ্লোকের ভাৎপর্য্য শ্লোকার্ধে প্রকাশ  
আছে । “এক কৃষ্ণ নামে” ইত্যাদি  
পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ।

বদি বল, দশাক্ষরাদি শ্রীকৃষ্ণমন্ত্রও মহাপাপকে  
বিনাশ করে ও বোককে দান করে । অতএব  
মন্ত্র হইতে নামের বিশেষ কি ? তদন্তর, মন্ত্র  
হইতে নামের কিঞ্চিৎ বৈশিষ্ট্য আছে, ইহা বলিতে  
ছেন, “সৌদীক্ষসিত্যাদি ॥” ৩র্থঃ ও ৩য়ঃ শ্লোক

হইতে সক্ষম পূর্ব্বক মন্ত্রগ্রহণ দীক্ষা, তাহার যেমন  
অপেক্ষা আছে, নামের তদ্রূপ অপেক্ষা নাই ।  
নামে চিত্তভাঙ্গর জ্ঞান নিত্যনৈমিত্তিকাদি কর্ম্মের  
অমুষ্ঠান নাই । .এব শব্দ দ্বারা দেহভুক্ত্যাদির  
অপেক্ষাও নিরাস হইয়াছে । তথাহি—

নোচ্ছিষ্টাদৌ নিষেধান্তি হরেন্নামানি লুক্কঃ ।”

উচ্ছিষ্টাদিতে নামলুক্ক ব্যক্তির হারিনাম গ্রহণে  
নিষেধ নাই । দশাক্ষরাদি মন্ত্রাদিতে দীক্ষাদির  
অপেক্ষা আছে, নামে উহা নাই ; ইহাই বিশেষ ।  
বস্তুতঃ মন্ত্রসকল নামাত্মক হেতু নাম ও মন্ত্র, ফল  
প্রদানে উভয়ে সমান, কিন্তু এই পশুকর্ত্তার, নামে  
পরম ঐকান্তিক প্রোচ শ্রদ্ধা বশতঃ নামের একরূপ  
বৈশিষ্ট্য বলিয়াছেন । বদি বল, শুষ্ককরণ না  
করিয়া দীক্ষা গ্রহণে সর্ব্ব ফল লাভ হয় না, কিন্তু  
শ্বতন্ত্ররূপে নাম গ্রহণ করিলে সর্ব্ব ফল সিদ্ধ হয় ।  
অতএব নামই শ্রেষ্ঠ । দীক্ষার প্রয়োজন কি ?  
তদন্তর, তন্ম উক্ত হইয়াছে,—

“দেবি দীক্ষাবিহীনস্ত ন সিদ্ধি র্চ চ সঙ্গতিঃ ।

তস্মাৎ সর্ব্বং প্রযত্নেন শুষ্কণা দীক্ষিতো ভবেৎ ॥

তথাহদীক্ষিতলোকানাং অন্নং বিম্মত্রবক্ষলম্ ।

অদীক্ষিতঃ কৃতং শ্রাদ্ধং গৃহীত্বা পিতরস্তথা ।

নরকে চ পতন্ত্যতি বাবদিত্রাশ্চতুর্দশ ॥

সহস্রৈরুপচারৈশ্চ ভক্তিয়ুক্তো যজ্ঞে বদি ।

তথাপ্যদীক্ষিতস্ত্যার্চ্ছা দেবা গৃহস্তি নৈব হি ॥”

হে দেবি ! অদীক্ষিত ব্যক্তি সিদ্ধি ও সঙ্গতি  
প্রাপ্ত হয় না । অতএব অতি বস্ত্রের সহিত শুষ্ক  
কর্ত্ত্বক দীক্ষিত হইবে । অদীক্ষিত ব্যক্তির অন্ন ও  
জল বিষ্ঠা ও মূত্র তুল্য । পিতৃগণ অদীক্ষিত কৃত  
শ্রাদ্ধ গ্রহণ করিলে চতুর্দশ ইঞ্জের অবস্থান কাল  
পর্য্যন্ত নরকে পতিত থাকেন । ভক্তিয়ুক্ত হইয়া  
সহস্র সহস্র উপচার দ্বারা বদি পূজা করেন, তথাপি  
অদীক্ষিতের পূজা দেবতাগণ গ্রহণ করেন না ।  
অতএব “সদ্বৈরোয়াহিতদীক্ষঃ সর্ব্বকর্মাণি সাধ-  
য়েৎ ॥” সদ্বৈরুর নিকট হইতে দীক্ষিত হইয়া  
সর্ব্ব কার্য সাধন করিবে । তদন্তরঃ দীক্ষার নিত্য



শ্রবণ করা যায় । “৩ম.দ্ব গুরুং প্রপত্তেত” ইত্যাদি ভগবদ্বাক্যে দীক্ষার আবশ্যকত্ব সিদ্ধ হয় । আরও নামে গুরু-পাঠপথে ভক্তির উৎপাদকত্ব স্রুত হওয়া যায় । অতএব দীক্ষা গ্রহণ পূর্বক নাম-গ্রহণাদিতে ফলাধিক্য প্রতীত হয় । শ্রীরাধা-কৃষ্ণের লীলাদর্শনকল্প ললিতার নিকট নারদের দীক্ষা এবং ব্রহ্মা, বেদব্যাস ও ঞ্জবদ্বিরও মন্ত্র গ্রহণ শ্রবণ করা যায় । তত্ববিদগণ মন্ত্রেরও বৈশিষ্ট্য বলিয়াছেন, মন্ত্রৈকান্তি ব্যক্তির মন্ত্র গ্রহণে কালাদি নিয়ম নাই । “উপাচ রামার্চনচঞ্জিকায়—

“অণুচির্কা গুচির্কাপি গচ্ছন্তিষ্ঠন স্বপন্নপি ।

মন্ত্রৈকশরণো বিদ্বান্ মনসৈব সদাভ্যাসেৎ ॥”

মন্ত্রৈকশরণ বিদ্বান্ বাস্তু গুচি ও অণুচি অব-স্থায় বা গমনাদি সকল সময়েই মন দ্বারা মন্ত্র অভ্যাস করিবে । কিন্তু দীক্ষার পুরস্চর্যাদি অপেক্ষা আছে, নামে তাহা নাই । অথবা, শ্রীকৃষ্ণ নামাত্মক এই মন্ত্র অর্থাৎ শ্রীশ্চ কৃষ্ণশ্চ শ্রীকৃষ্ণো ভয়োর্নামেতোবন্ম ।” রাখাকৃষ্ণ নামরূপ মন্ত্র রসনা স্পর্শমাত্রেই ফল প্রদান করে, অভ্যাস বা সুস্বরা-দির অপেক্ষা করে না । এব শব্দ দ্বারা ফণামু-সঙ্কান রহিত হইলেও অজ্ঞানবশতঃ অমৃত ভোজ-নের ন্যায় নামাত্মক এই মন্ত্র নিজফল প্রদান করে । মন্ত্রপদে সমস্ত শ্রীকৃষ্ণমন্ত্র জানিবেন । ফল প্রকার বলিতেছেন, “প্রাক্ষীতি ॥ ৩ ॥

( ১৪৭ পা ) “অতএব যার.....মহা-সিদ্ধ জ্ঞানে ॥” এই ২৭শ হইতে ৩০২ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । এক কৃষ্ণ-নাম অর্থাৎ যাহার মুখে একবার কৃষ্ণ নাম শ্রবণ করিবে । উচ্চ টঙ্কীতে, উচ্চ গৃহে । আড়ানি, রুহৎ ব্যঞ্জন পাখা । মহাবিদগ্ন, অতীব রসজ্ঞ । বাস্ত, কথা । মহাসিদ্ধ জ্ঞানে, মহাসিদ্ধ পুরুষ বলিয়া বোধ হইল ॥ ২৭-৩০ ॥

( ১৪৮ পা ) “রঘুনন্দন.....করাই

মরণ ॥” এই ৩১৭ হইতে ৩৪২ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । দারুজলরূপে অর্থাৎ দারুরূপে জগন্নাথদেব ও জলরূপে গঙ্গা । তথাহি—

“যোহসৌ নিরঞ্জনো দেবশ্চিৎস্বরূপো জনাৰ্দ্দিনঃ ।

স এব ভবরূপেণ গঙ্গাশ্চো নাত্র সংশয়ঃ ॥”

নিরঞ্জন, চিন্ময়দেব জনাৰ্দ্দিনই জলরূপা গঙ্গা হইয়াছেন ।

লোভাইল, লোভ দেখাইলাম । কি লোভ দেখান, তাহা বলিতেছেন, “পরম” ইতি । পরম গধুর, অতিশয় মাধুর্য্যশালী । গুণ্ড, হে মুরারিগুণ্ড ॥ ৩১-৩৪ ॥

( ১৪৯ পা ) “এইমত... ..দূর করে সব ॥” এই ৩৫২ হইতে ৩৮২ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । তুমিত প্রহ্লাদ, এই কথা বলিবার অভিপ্রায় এই, প্রহ্লাদ নৃসিংহ দেবের নিকট যেমন সকল জীবের মুক্তি প্রার্থনা করিয়াছিলেন, তক্রূপ তুমিও সকল জীবের মুক্তি প্রার্থনা করিতেছ । অথবা তুমি প্রহ্লাদ বলিয়াই একরূপ প্রার্থনা করিতেছ, অতএব ইহা তোমার পক্ষে আশ্চর্য্য নহে । প্রহ্লাদের প্রার্থনা শ্রীভাগবতে সপ্তম স্কন্ধে নবমাধ্যায়ে দেখুন । অনকৃত্য, অন্য কার্য্য । কেনে ভুঞ্জাইবে পাপফল অর্থাৎ তুমি যে জীবের পাপ গ্রহণ করিয়া নরকভোগ করিতে ও তাহাদের উদ্ধার প্রার্থনা করিতেছ; তোমার প্রার্থনাত্তেই কৃষ্ণ উদ্ধার করিতে পারেন; তোমাকে কি জন্ত পাপের ফল ভোগ করাইবেন ॥ ৩৫-৩৮ ॥

( ১৪৯ পা ) “বস্তিতি ॥” এই চতু-স্কন্ধের ভাবার্থ স্কন্ধার্থে প্রকা-

আছে। “বৈষ্ণবের পাপ কৃষ্ণ” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪ ॥

(১৫০ প্য) “তোমার... ..কিবা বনে” এই ৩৯ ও ৪০ পয়ারের ভাবার্থ সরল। গড়খাট, পরিখা। রাই পূর্ণ, সর্ষপ পূর্ণ। কোটি কামধেনুপতির ৩র্থ ৭ যিনি কে টি কামধেনুর অধিপতি, তাঁহার যেমন একটি ছাগী নষ্ট হইলে কোন ক্ষতি হয় না, তদ্রূপ ষড়ৈশ্বর্যপতি ঙ্কৃষ্ণের মায়ানাশে কোন ক্ষতি বোধ নাই ॥ ৩৯।৪০

(১৫০ প্য) “জয় জয়েতি।” এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “ষড়ৈশ্বর্যপতি কৃষ্ণের” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোকোক্ত “জহাজাগ জিত দোমগৃভীতগুণামিতি।” ময়া বিনাশ হইলে পরমেশ্বরের কিছুই ক্ষতি হয় না, ইহা প্রতিপন্ন হইল ॥৫

(১৫০ প্য) “এই মত... ..স্বরূপ দামোদর ॥” এই ৪১ হইতে ৪৪ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। যমেশ্বরে, যমে-শ্বর নামক উদ্যান, এখানে যমেশ্বর নামক শিবলিঙ্গ আছে। মাস ভরি, মাসাবদি। নিজছায়া সঙ্গে, ছায়ামাত্র সঙ্গে অর্থাৎ একাকী ॥ ৪১—৪৪ ॥

(১৫১ প্য) “প্রভুর ইঙ্গিত ..পৃথক্ ধরিল ॥” এই ৪৫ হইতে ৪৮ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। আহারি, সঞ্চয় করিয়া। উভারিল, রাশিকৃত করিলেন। বড়িঘোল, ঘোলে বড়া ফেলা। দুক্ষ-তুনি, দুক্ষ পক্ষ অলাবু (লাউ)। বেশারি, ঘট ওরকারি। সাকরা, আনাইজ।

অষ্টমাসমুদ্রাসূপ, ভাজা কলাই ও ভাজা মুগের দাউল। মধুরান্ন, মিষ্টযুক্ত অন্ন। কাজি বড়া, কাঁজি মিশ্রিত বড়া। দুধলকুলকী, চমিপিঠা। তাহা, পর-মানে। রসালা, ফিরাদি মিশ্রিত। মথিত দধি, ঘোল। বারি, গাড়া। অমৃত গুটিকা, ছেনা বড়া ॥ ৪৫-৪৮ ॥

(১৫২ প্য) “হেনকালে.....আখা-দয় ॥” এই ৪৯ হইতে ৫১ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। হেনকালে, যে সময়ে আহারীয় বস্তু প্রস্তুত হইল। সৌরভ্য, সুগন্ধ। আসন পীঠ, আসন ও পীড়ি। যে খাইবে অর্থাৎ যিনি এই সকল অন্ন ব্যঞ্জনাদি খাইবেন, তাহার শক্তি প্রভাবে এই সব রন্ধন নিস্পন্ন হইয়াছে ॥৪৯।৫১ ॥

(১৫২ প্য) “তয়োপযুক্তোতি।” এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “কৃষ্ণের সকল শেষ” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক। পরোক্ষ পূজাদিতে ও সাধক ভক্তগণ ভগবন্নির্ম্মালা ও বস্ত্রা-লঙ্কারাদি উপভোগ করিয়া কার্য্যকারণ-রূপা প্রকৃতিকে জয় করেন। সাধক ভক্তগণ মায়াকে ত্যাগ করিতে না পানিয়া ময়া-বিনাশকারী শ্রীকৃষ্ণ প্রসাদ প্রার্থনা করেন। তাঁহার ময়া ভয়ে ভীত নহেন, যে হেতু সর্বত্রই তাঁহাদের ভূলাদৃষ্টি ॥ ৬ ॥

(১৫২ প্য) “তথাপি... ..বার-স্বারে ॥” এই ৫২ হইতে ৫৪ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। তথাপি, শ্রীকৃষ্ণ প্রসাদ হইলেও। জানি খাও যতক যুয়া?, তুমি যাহা খাও, তাহ যত হওয়া

উচিত, তাহা আমি জানি। প্রভু বাহা  
খান, তাহা সার্কভৌম নির্ণয় করিতে-  
ছেন "নীলাচলে" ইত্যাদি। অষ্টাদশ  
মাতা, দেবকী প্রভৃতি। তার লেখে,  
সেই সব অঙ্গের তুলনায়। উলটি, ঘাড়  
ফিরাইয়া। রাড়ী, বিধবা ॥ ৫২-৫৪ ॥

(১৫৩ পা) "দৌহার.....ত্যজিতে  
উচিত ॥" এই ৫৫ হইতে ৫৭ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। দৌহার, সার্ক-  
ভৌম ও ঠাহার মাতার। দুই নহে যোগ্য,  
অমোঘকে বিনাশ করা এবং নিজ  
দেহকে ত্যাগ করা উচিত হয় না, যে  
হেতু দুই শরীর ব্রাহ্মণ অর্থাৎ দুইটি  
ব্রাহ্মণের শরীর। অতএব ব্রহ্মহত্যা  
হইবে ॥ ৫৫-৫৭ ॥

(১৫৩ পা) "সন্তুষ্টেতি ।" এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। "পতিত হইলে" এই পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক। পাতিত্য দোষে  
দূষিত পতিকে ভঙ্গনা করিবে না।  
ইহাই এই শ্লোকে প্রমাণ করিলেন।  
যাজ্ঞবল্ক্যও বলিয়াছেন,—

"আত্মকে সস্ত্রীক্যোহি মহাপাতকদূষিতঃ ।"

মহাপাতকদূষিত পতিকে শুদ্ধিকাল পর্য্যন্ত  
প্রতীক্ষা করিবে ॥ ৭ ॥

(১৫৩ পা) "সেই রাত্রে.....বচন ।"  
এই ৫৮ পয়ারের ভাবার্থ সরল। বিস্ম-  
চিকা, আশায় প্রভুর প্রতি অনাদরই  
অমোঘের রোগের কারণ ॥ ৫৮ ॥

(১৫৩ পা) "মহত্তেতি ।" এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। সার্কভৌম যে শাস্ত্র বাক্য  
দুইটি পাঠ করেন, তন্মধ্যে এই একটি  
শ্লোক। অভিপ্রায় এই, কষ্টের সহিত  
যে অমোঘকে ত্যাগ করিতে হইত, দৈব-  
বশতঃ বিস্মচিকা রোগ তাহার প্রাণ  
নাশ করিয়া অনায়াসে ত্যাগ করা-  
ইবে ॥ ৮ ॥

(১৫৪ পা) "আয়ুরিতি ।" এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। সার্কভৌমোক্ত শ্লোকদ্বয়ের  
মধ্যে এইটি দ্বিতীয় শ্লোক ॥ ৯ ॥

(১৫৪ পা) "গোপীনাথার্চার্য্য.....  
প্রসাদ ॥" এই ৫৯ হইতে ৬৩ পয়ার  
পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। দুইজনে, সার্ক-  
ভৌম এবং ঠাহার পত্নী। মাৎসর্য্য  
চণ্ডাল, পরের মঙ্গল অসহনরূপ চণ্ডাল  
অর্থাৎ চণ্ডালের যেমন হিতাহিত বোধ  
ধাকে না, তদ্রূপ মাৎসর্য্য উদয় হইলে  
কোন হিতাহিত বোধ ধাকে না। ইহা  
হৃদয়ে। যাহাতে পালক, যে পালক  
হয়, তাহার পাল্য বস্তুকে পালন করাই  
কর্তব্য, নষ্ট করা উচিত নয় ॥ ৫৯-৬৩ ॥

(১৫৫ পা) "ভট কহে....কৃষ্ণদাস ॥  
এই ৬৪ ও ৬৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল  
আসিছে। আসিতেছি। চিহ্ন, আশ্চর্য্য  
ভক্ত সম্বন্ধে, সার্কভৌম ও ঠাহার পত্নী  
সম্বন্ধে ॥ ৬৪ ও ৬৫ ॥

## ষোড়শ পরিচ্ছেদ ।

( ১৫৫ পা ) “গৌড়দ্বারমিতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । গ্রন্থকার পূর্বের ন্যায় পরিচ্ছেদোক্ত বিষয় শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন ।

মেঘের সহিত গৌরাদকে, অমৃতবর্ণের সহিত গৌরাজনদর্শনকে, উত্তানের সহিত গৌরদেশকে, অনলের সহিত সংসারকে ও লতার সহিত মনুষ্যগণকে উপমা দিলেন । মেঘ যেমন বায়ুর উপরে থাকে, গৌরমেঘ তজ্জপ নিজ-মহিমার উপর থাকেন । বায়ুর স্তায় গৌর-মহিমা সর্বগামী । অমৃতবর্ণে যেমন দধি লতাদি পুনর্জীবিত হয়, তজ্জপ গৌরাদের কৃপাদৃষ্টি দ্বারা আধ্যাত্মিকাদি তাপে দধি জীব পুনর্জীবন লাভ করে অর্থাৎ জিতাপ বিনষ্ট হয় । অনলে যেমন অসহ্য উত্তাপ আছে, সংসারে তজ্জপ আধ্যাত্মিকাদি তাপ আছে । তাপে যেমন সহজেই লতাগণ দধি হয়, তজ্জপ সংসার তাপ দ্বারা সহজেই মনুষ্যগণ দধি হয় । ইত্যাদি রূপে মনীষিগণ সংলগ্ন করিয়া লইবেন ॥১॥

( ১৫৫ পা ) “জয় জয়... ..:দয় বাসাস্থান ॥” এই ১ম হইতে ৫ম পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । বিমন, বিঘ্নী । তাঁহারে, মহাপ্রভুকে । নহে নিবারণ, নিবেদন করিতে কাহারও সামর্থ্য নাই । প্রেমভক্তি প্রকাশিতে, প্রেমভক্তি প্রচার করিতে । যদি বল, প্রেমভক্তি প্রচারার্থ নিত্যানন্দ প্রভুকে গৌড়ে থাকিতে, মহাপ্রভু আজ্ঞা করেন, নিত্যানন্দ প্রভু সেই আজ্ঞা লক্ষন করিয়া নীলাচলে

গমন করেন কেন ? তাহাতে গ্রন্থকার বলিতেছেন, “তথাপি চলিলা” ইত্যাদি অর্থাৎ মহাপ্রভুকে দেখিতে গমন করেন । যদি বল, মহাপ্রভু পূর্বে স্ত্রীনিত্যানন্দের নিকট প্রতিজ্ঞা করেন, ‘আমি তোমার কীর্তনে নাচিব’ অতএব মহাপ্রভুকে দেখিতে নিত্যানন্দ প্রভু যান কেন ? তাহাতে বলিতেছেন, “নিত্যানন্দ প্রেম-চেষ্টা” ইতি । ষাটি সমাধান, পথকর প্রদান । উড়িয়া পথের, উড়িয়া দেশের পথের ॥ ১৫ ॥

( ১৫৬ পা ) “সে বৎসর.....আপন ভবন ॥” এই ৬ষ্ঠ হইতে ১০ম পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । সব ঠাকুরাণী, সকল ভক্তের স্ত্রীগণ । অচ্যুতজননী, মীতাঠাকুরাণী । ঘাটিয়াস, পথরক্ষক । প্রবোধে, পথরক্ষকগণ পথিকের প্রতি অত্যাচার করিয়া অর্থাৎ লইত, শিবানন্দ তাহাদিগকে স্তম্ভিত্বাক্যে বুকাইয়া সকলের বাসা দিতেন । আশুবাড়ি, অগ্রসর করিয়া ॥ ৬-১০ ॥

( ১৫৭ পা ) “বাপীনাথ.....প্রভু শিক্ষাইল ॥” এই ১১শ হইতে ১৬শ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । বাপী-তীরে, নরেন্দ্র সরোবর তীরে । ভক্ত্যে ভক্তিতে । তজ্জা, প্রহেলিকা বাক্য ॥১১১৬॥

( ১৫৮ পা ) “যাহার দর্শনে.....বহু জন্ম ॥” এই ১৭শ হইতে ২৩শ পয়ার

পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । বৈষ্ণবের তার-  
তম্য বলিতেছেন, “যাহার” ইত্যাদি  
অর্থ, ৯ ষাঁহার মুখে একবার কৃষ্ণনাম  
শুনা যায়, তিনি বৈষ্ণব । ষাঁহার মুখে  
নিরন্তর কৃষ্ণনাম শুনা যায়, তিনি বৈষ্ণব-  
তর । ষাঁহাকে দর্শন করিলে নিজের  
মুখে কৃষ্ণনাম উচ্চারিত হয়, তিনি  
বৈষ্ণবতম । ওড়নষষ্ঠী, অগ্রহায়ণ মাসের  
শুক্লা ষষ্ঠী, এই দিনে জগন্নাথকে নূতন  
শীতবস্ত্র দেওয়া হয় । মাড়ুরা, মাড়যুক্ত ।  
সম্বরণ, সম্বণযুক্ত । হঠে, ছলনায় । কড়ার  
চন্দন, শ্রীজগন্নাথের অঙ্গের নির্মালায়  
চন্দন । ডোর, ডুরি । ভবানীপুর, পুরী  
হইতে ছয়ক্রোশ ব্যবধান । “রামানন্দ”  
ইতি । রামানন্দ রায় পদত্রজে গমন  
করিতে অসমর্থ বলিয়া মহাপ্রভুর সঙ্গে  
না আসিয়া পশ্চাৎ দোলায় চাপিয়া  
আসেন । তথাই, ভবানীপুরে । প্রণয়-  
নিহ্বল, প্রাণয়ে বিবশ ॥ ১৭-২৩ ॥

( ১৫৯ পা ) “তার ভক্তি... মহা-  
প্রসাদ আইল ॥” এই ২৪ হইতে ২৭  
পর্যায় পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । তার ভক্তি,  
রাজার ভক্তি । প্রভুরূপাশ্রিতে, প্রভুর  
রূপা ও নিজের অশ্রিতে । উত্তরিবা,  
উপস্থিত হইবে । চতুর্দারে, চৌদার  
নামক গ্রামে ॥ ২৪-২৭ ॥

( ১৫৯ পা ) “রাজার আঙ্কায়...  
প্রতিজ্ঞা রাখিলা ॥” এই ২৮ হইতে  
৩১ পর্যায় পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । ক্ষেত্র  
সন্ধ্যাস, সমস্ত অসক্তি ত্যাগ করিয়া  
বাবঙ্কীবন ক্ষেত্রবাস । ইহা, নীলাচল ।  
স্বপ্নাদ, তোমার চরণ । একেখর

একাকী । তোমা লাগি, তোমার সঙ্গে ।  
সেই সিদ্ধ হইল অর্থাৎ তোমার ইচ্ছা,  
প্রতিজ্ঞা সেবা ও ক্ষেত্র ত্যাগ করিবে ;  
কটক পর্যায় আগমনে তাহা সিদ্ধ হই-  
য়াছে । লঞা যেতে, লইয়া যাইতে ।  
ভক্তরূপাবশে, ভক্তের প্রতি রূপা পর-  
বশ হইয়া ॥ ২৮-৩১ ॥

( ১৬০ পা ) “স্বনিগমমিতি ॥” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । ভগবান্ ভক্তের প্রতি রূপা  
পরবশ হইয়া যে ভক্তের প্রতিজ্ঞা রক্ষা  
করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ।

কুরুক্ষেত্র যুদ্ধে শ্রীকৃষ্ণ প্রতিজ্ঞা করেন, যে  
আমি এই যুদ্ধে অস্ত্রধারণ না করিয়া সাহায্যমাত্র  
করিব । ভীষ্ম প্রতিজ্ঞা করেন, আমি শ্রীকৃষ্ণকে  
অস্ত্র ধারণ করাইব । একদা ভীষ্ম বাণে বাণে  
অর্জুনকে আচ্ছন্ন করিলে, শ্রীকৃষ্ণ হৃদর্শন চক্র  
ধারণ করিয়া ভীষ্মের অভিমুখে ধাবিত হন । যেমন  
স্বীয় প্রতিজ্ঞা ত্যাগ করিয়া ভীষ্মের প্রতিজ্ঞা রক্ষা  
করিয়াছেন, তদ্রূপ মহাপ্রভুও গদাধরের বিচ্ছেদ  
দুঃখ সহ করিয়াও তাঁহার প্রতিজ্ঞা শ্রীক্ষেত্রবাস ও  
গোপীনাথ সেবা ইহা রক্ষা করিলেন ॥ ২ ॥

( ১৬০ পা ) “এইমত.....তাহার  
বর্ণন ॥” এই ৩২ ও ৩৩ পর্যায়ের ভাবার্থ  
সরল । এইমত, যেরূপে ভীষ্ম প্রতিজ্ঞা  
রক্ষা করেন, তদ্রূপে । “প্রেমের বিবর্ত্ত”  
স্থানে “প্রেমের বৃত্তান্ত” পাঠ হইবে ।  
“এইমত চলি প্রভু” ইতি । পর্যায়ে উক্ত  
হইল,—

প্রভু রেমুণা আসিয়া রায়কে বিদায়  
দিলেন । প্রথম পরিচ্ছেদে সূত্র মধ্যে  
উক্ত হইয়াছে, রায় তদ্রূপ পর্যায়  
গমন করেন । বালেধরের আড়াই

ক্রোশ পশ্চিমে রেমুণা ও পনর ক্রোশ দক্ষিণে ভদ্রক । অতএব উভয় বাকের সামঞ্জস্য কি ? তদন্তর, উহা সে সময়ে ভদ্রক জিলার অন্তর্ভুক্ত থাকায় ভদ্রক পর্য্যন্ত বলেন ॥ ৩২। ৩৩ ॥

( ১৬১ পা ) “তবে ওড়দেশ.....এই মত হয় ॥” এই ৩৪ হইতে ৩৯ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । ওড়দেশ, উৎকল দেশ । পাইতুঁ, পাইতাম ॥ ৩৪-৩৯ ॥

( ১৬২ পা ) “যন্নামেতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থ প্রকাশ আছে । “তোমার দর্শন” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোকোক্ত “কৃতঃ পুনস্তে” ইত্যাদি । যেমন ব্রাহ্মণকূলে জন্মগ্রহণমাত্র সবন যাগের যোগ্যতা লাভ করে, তদ্রূপ চণ্ডালাদি নীচজাতি ভগবদ্রাম শ্রবণকীর্তনাদি করিয়া সবন যাগের যোগ্যতা লাভ করে । বাহারা ভগবানের সাক্ষাৎ দর্শন পাইয়াছে, তাহাদের আর কথা কি ? ॥ ৩ ॥

( ১৬২ পা ) “তবে মহাপ্রভু.....ইহা না লিখিল ॥” এই ৪০ হইতে ৪৫ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । ক্রুপাশাটি, ক্রুপা করিয়া স্থায় নিশ্চাল্য বস্ত্র নাবিককে দেন । ইহা, এই পরিচ্ছেদে ॥ ৪০—৪৫ ॥

( ১৬৩ পা ) পুনরপি প্রভু...রাখিতে পারে ॥” এই ৪৬ হইতে ৫০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । বদান্য ব্রাহ্মণ্য, ব্রাহ্মণ সকল বহু ধনপ্রদ । উপজীব্য, জীবিকা

সম্পাদন কর্তা । মর্কট বৈরাগ্য মর্কটের ন্যায় বৈরাগ্য—

অর্থাৎ বানর একপ কামার্ত যে, স্ত্রী নিকটে না থাকিলে কখন কখন অযাভাবিক ( পুরুষ ) উপগত হয় । একপ ক্রোধাক যে, রাজ্যাদি কিছু না থাকিলেও যুদ্ধ কারতে প্রবৃত্ত হইয়া অস্ত্র বানরের প্রাণ নষ্ট করে ও নিজের প্রাণ হারায় । এতদূর লুক্ক যে, কিছুপে পরের দ্রব্য অপহরণ করিব, এই আভিসাঙ্কতে সর্বদা ফেরে । বনে বাস করে তথাপি গৃহ প্রস্তুত করে না । এইরূপ বানরের জ্ঞান যাহারা কাম, ক্রোধ ও লোভের সর্বদা বশবর্ত্তি হইয়া বিরক্তের জ্ঞান বাহ বেশা- দিতে বিচরণ করে, তাহাদের সেই বৈরাগ্যকে মর্কট বৈরাগ্য বলে ।

যথাযোগ্য, যথা সম্ভব । অন্তরনিষ্ঠা, অন্তরে কৃষ্ণনিষ্ঠ হও ॥ ৪৬-৫০ ॥

( ১৬৪ পা ) “এত কহি.....আইনু গঙ্গাতীর ॥” এই ৫১ হইতে ৫৭ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ অতিশয় সরল । যথায়ুক্ত, শাস্ত্র বিহিত । আবরণে, লোকদ্বারা রক্ষা করণ বিষয়ে । ব্যবহারে, রাজ-নৈতিক কার্যে । রাজমন্ত্রী হয় রাজ-পাত্র, রূপ রাজমন্ত্রী ও সনাতন রাজ-প্রতিনিধি । প্রহেলী, বচনচাতুরী । সনাতন যে প্রহেলী বলেন, তাহা বলিতেছেন, “বাহা সঙ্গে” ইত্যাদি । পরিপাটী, উত্তম রীতি । অবধান, মনোযোগ ॥ ৫১—৫৭ ॥

( ১৬৫ পা ) “ভক্তগণে.....কৃষ্ণদাস ॥” এই ৫৮ হইতে ৬০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । সবে, সাকল্যে ॥ ৫৮-৬০ ॥

## সপ্তদশ পরিচ্ছেদ ।

(১৬৫ পা) "গচ্ছন্নিত্তি" ইহার তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। এই পরিচ্ছেদের কথিতবিষয় শ্লোকার্থে প্রকাশিত হইল।

শ্রীকৃষ্ণের জ্ঞান তাঁহার বৃন্দাবনধামও সর্বা-ব্যাপী। মহাপ্রভু যে স্থানে গমন করেন, সেই স্থানই বৃন্দাবন। নটেন ব্যাঙ্গাদি আভাবিক বৈর-রহিত হইবে কেন? পরমাত্মা সকলের প্রিয়। মহাপ্রভু পরমাত্মরূপে জীব জগতের প্রকাশ পান। অতএব পরম প্রিয় পরমাত্মা মহাপ্রভুকে বাহিরে দর্শন করিয়া ব্যাঙ্গাদি পশুপশু মহাপ্রভুর অঙ্গগমন করে এবং পরমাত্মা সকল জীবের নিয়ন্তা বলিয়া মহাপ্রভু ব্যাঙ্গাদি পশুপশুকে প্রেমোন্মত্ত ও কৃষ্ণ-মত্ত জ্ঞাপক করেন। যে হেতু ভগবান্ ব্যতীত অন্য কেহ প্রেম দিতে পারে না ॥ ১ ॥

(১৬৬ পা) "জয় জয়...করি ভিক্ষা-টন" এই ১ম হইতে ৪র্থ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। কৈল মতি, ইচ্ছা করিল। "দিবেদন" স্থানে "নিবেদন" পাঠ হইবে। পাত্র, কমণ্ডলু। ভোজ্যার ব্রাহ্মণ, স্বাশ্র-মোচিতাচার-পরায়ণ ব্রাহ্মণ অর্থাৎ যাহার হস্তে রক্ষিত অন্নাদি ভোজন করা যাইতে পারে। সুস্নিগ্ধ, প্রেমবান্। সেবা ভিক্ষা-কৃত্য, সেবার জন্য ভিক্ষাকার্য্য। বস্ত্রাশু-ভোজন, বস্ত্র ও জলপাত্র। ভিক্ষাটন, ভিক্ষার জন্য জমণ ॥ ১-৪ ॥

(১৬৭ পা) "তাহার বচন...পড়ে" এই ৫ম হইতে ৭ম পয়ার ভাবার্থ

সরল। পূর্ব্বরাজে, রাজির প্রথম ভাগে। মাইলা, মারিলেন ॥ ৫-৭ ॥

(১৬৮ পা) "ধন্যাঃ স্মৃতি" শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

শ্রীরাধার ভাবাবেশে মহাপ্রভু হরিনীগণের সঙ্গে হস্ত বুলাইয়া এই শ্লোক পড়েন। হরিনীগণ স্বীয় পতির সহিত মিলিয়া শ্রীকৃষ্ণ সেবা করায়, ইহারা খত। আমাদের পতি গোপগণ অতি ক্ষুদ্র, সাক্ষাৎ কৃষ্ণসেবা সহ্য করিতে না পারায় আমরা অধস্ত। বিপক্ষ ব্যতীত রসপুষ্টি হয় না বলিয়া শ্রীকৃষ্ণের ইচ্ছাতেই ঐ গোপগণ কৃষ্ণসেবা সহ্য করিতে পারিতেন না। স্বরূপতঃ তাঁহারা পার্শ্ব-ভক্ত ॥ ২ ॥

(১৬৭ পা) "হেনকালে...পড়িল" এই ৮ম পয়ারের ভাবার্থ সরল। হেন-কালে, যে সময়ে শ্লোক পড়েন। দেখি, ব্যাঙ্গও মৃগের মিত্র ভাব দেখিয়া ॥ ৮ ॥

(১৬৭ পা) "যজ্ঞেতি" শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। মহা-প্রভু যে বৃন্দাবনের গুণবর্ণনশ্লোক পড়েন, তাহা এই শ্লোক। বৃন্দাবনের গুণ কি, তাহা এই শ্লোকের অর্থে কিঞ্চিৎ বর্ণনা করিয়াছেন। বৃন্দাবনে প্রাকৃত কোথ লোভাদির অবস্থান নাই। মহাপ্রভুর গমন স্থান বৃন্দাবন হওয়াতে, বনস্থলীও সুত্তরাৎ বৃন্দাবন হইয়াছেন। অতএব বৈরভাবযুক্ত ব্যাঙ্গ ও মৃগাদির মিত্র ভাব জন্মিত হইল ॥ ৩ ॥

( ১৬৭ পা ) “কৃষ্ণ কৃষ্ণ.....হইল  
বৈষ্ণবে ॥” এই ১ম হইতে ১১শ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । বুলি, বলিয়া ॥৯-১১॥

( ১৬৮ পা ) “গৌড় বঙ্গ... ..করে  
নিমন্ত্রণ ॥” এই ১২শ ও ১৩শ পয়ারের  
ভাবার্থ সরল । ঝারিখণ্ড, বনপ্রদেশ  
অর্থাৎ ছোটনাগপুর হইয়া গমন করেন ।  
ভিল্ল, পার্শ্বভীম মনুষ্যজাতি । যে গ্রামে  
রহে অর্থাৎ মহাপ্রভু যে গ্রামে থাকেন,  
নেই গ্রামের যিনি ব্রাহ্মণ, তিনিই প্রভুকে  
নিমন্ত্রণ করেন ।

সন্দেহ হইতে পারে, যে গ্রামে ব্রাহ্মণ নাই,  
সেখানে মহাপ্রভু কি করিতেন এবং ভট্টাচার্য্য  
কিভাবে শূদ্রের নিকট ভিক্ষা গ্রহণ করিতেন ? যে  
হেতু শূদ্রগ্রহণে পতিত হয় ।

তদুত্তরে গ্রন্থকার বলিতেছেন, “যাহা  
বিপ্র নাহি” ইত্যাদি ।

যেখানে ব্রাহ্মণ নাই, সেখানে মহাজন ( সাধু )  
শূদ্রগণ আসিয়া ভট্টাচার্য্যকে নিমন্ত্রণ করতঃ মহা-  
প্রভুকে ভিক্ষা দিতেন । মনু বলিয়াছেন, “বিশ্ব-  
দাত্ত্ব প্রতিগ্রহঃ” বিশ্বদ্ব ব্যক্তি হইতে প্রতিগ্রহ  
করিবে । অতএব ঐ শূদ্রগণ যখন মহাজন, তখন  
উহার বিশ্বদ্ব । অথবা, শুদ্ধিত্ব বলেন, “অযা-  
চিতোপপন্নো হু নাস্তি দোষ প্রতিগ্রহে ।” অযা-  
চিত ভাবে দান উপস্থিত হইলে, তাহা গ্রহণে  
কোন দোষ নাই । “সাধুতঃ প্রতিগৃহীরাৎ” সাধু-  
গণ হইতে দান গ্রহণ করিবে ; এই শ্লোক বশতঃ  
সাধু শূদ্রগণ অযাচিত ভাবে ভট্টাচার্য্যকে ভিক্ষা  
দিতেন বলিয়া কোন দোষ হইতে পারে না ।  
পরায়োক্ত “আসি সবে” এই বাক্যে অযাচিত ভাব  
প্রকাশ পাইতেছে । অথবা, স্বতি বলেন, “ব্রাহ্ম-  
ণ্য করস্পর্শাৎ সর্বাং ব্যক্তি পবিত্রতামিতি ।”  
ব্রাহ্মণের করস্পর্শে সর্বাং ব্যক্তি পবিত্র হইবে, সকল বস্তুই পবিত্র

হয় । অতএব বলভদ্রের করস্পর্শে ততুলাদি পবিত্র  
হইত, সুতরাং উহা গ্রহণে মহাপ্রভুর কোন দোষ  
হয় না । অথবা, “নাম্নাদোষণে মনুসী” এই শ্লোক  
বশতঃ সন্ন্যাসীর যখন আদি দোষ সম্ভব হয় না,  
তখন স্বয়ং ভগবান্ মহাপ্রভুর কিরূপে দোষ হইতে  
পারে । অথবা, যেমন বিবাহ হইলে ক্রীলোকের  
গোত্রান্তর হয়, তদ্রূপ মহাব্য বিষ্ণুমন্ত্রে দীক্ষিত  
হইলে গোত্রান্তরিত হয় অর্থাৎ শুদ্ধতা লাভ করে ।  
অতএব মহাজন ( পবিত্র বৈষ্ণব ) শূদ্রের নিকট  
মহাপ্রভুর ভিক্ষা দোষকর নহে । অথবা, চৈতন্য-  
চন্দ্রোদয়ে ২ অঙ্কে উক্ত হইরাছে,—কাশীমিশ্র  
মহাপ্রভুকে ভিক্ষা দিবার জন্ত, কয়েকটি ব্রাহ্মণ  
পুরী হইতে বনপথে প্রভুর অজ্ঞাতে প্রভুর সহিত  
প্রেরণ করেন, তাহারাই ভিক্ষা দিতেন ॥১২১৩॥

( ১৬৮ পা ) “ভট্টাচার্য্য..... ..স্বয়ং  
ভগবান্ ॥” এই ১৪ হইতে ১৭ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । অন্ন, আহারীয়  
বস্তু । সংহতি, সঞ্চয় করিয়া । তার  
বিপ্র, বলভদ্রের ছৃত্য ব্রাহ্মণ । শীতের  
প্রারম্ভে মহাপ্রভু বনপথে বৃন্দাবন গমন  
করেন বলিয়া ঝরণার গরম জলে স্নান  
করেন ॥ ১৪-১৭ ॥

( ১৬৯ পা ) “মুকমিতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । বলভদ্র এই শ্লোক বলিয়া প্রভুর  
স্তব করেন । কৃষ্ণের কৃপায় সমস্ত অসীষ্ট  
শুদ্ধ হয় । অতএব আমার স্থায় অধম  
কান্ড ও গরুড় সমান হয় ॥ ৪ ॥

( ১৬৯ পা ) “এইমত.....দেখিলে  
তাহাতে ॥” এই ১৮ হইতে ২০ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । এইমত, “মুক-  
মিতি ।” শ্লোকানুযায়ী । অন্য না  
মানিবে, অন্যের নিমন্ত্রণ স্বীকার করিবে



না। দুই ভূত্যবশ, তপনমিত্র ও চন্দ্র  
শেখরের অধীন ॥ ১৮-২৩ ॥

(১৭০ পা) “নিরন্তর.....স্বরূপ  
বিভেদ ॥” এই ২৪ হইতে ২৮ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। নেত্রযুগে, দুই  
চক্ষুতে। সিংহের গজ্জন, সিংহ সদৃশ  
গজ্জন। প্রকাশানন্দ মহাপ্রভুকে নিন্দা  
করিলে ও বাকুদেবী সরস্বতী নিজপতিকে  
নিন্দা করিতে পারেন না বলিয়া নিন্দা-  
ছলে স্তব করেন। লোক প্রতারক,  
লোক সকলকে প্রতারণা করে। স্ততি-  
পক্ষে, লোক সকলকে প্রকৃষ্টরূপে ভক্তি-  
দান করিয়া ভ্রাণ করেন। মোহনবিজ্ঞা,  
মোহিত করিবার বিদ্যা। স্ততিপক্ষে  
হলাদিনী শক্তি। মোহে, মোহিত হয়।  
মহা ঐশ্বর্যশালী, মহা ভেঙ্কী প্রদর্শক।  
স্ততিপক্ষে, ঐশ্বর্য শব্দে মহৈশ্বর্য্য সুতরাং  
মহা ঐশ্বর্য্যশালী। বিকারে, বিক্রয়  
হইবে। “ভাবকালী, ভাবুকতা। স্ততি-  
পক্ষে, মহা ঐশ্বর্য্যশালী পুরুষের ভাবু-  
কতা গোপন থাকিবে না। উচ্ছৃঙ্খল,  
স্বৈচ্ছাচারী। স্ততিপক্ষে, ভগবান্  
কাহারও অধীন নহেন বলিয়া স্বাধীন।  
দুইলোক নাশ, ইহকাল ও পরকাল নষ্ট  
হয়। স্ততিপক্ষে, ভগবানের সঙ্গ করিলে  
ইহকাল ও পরকালের ভোগ্য লোক নষ্ট  
হইয়া নিত্যধাম প্রাপ্তি হয়। তিন ভেদে  
নাম, বিগ্রহ দেহ স্বরূপ ভেদে। দেহ  
দেহী ইত্যাদি কৃষ্ণের নাম, দেহ ও স্বরূপ  
এই তিন ভেদই তব অর্থাৎ চিদানন্দ  
স্বরূপ। অতএব এই তিনটি ভেদে।  
কৃষ্ণের নাম, নাম ও দেহ স্বরূপ এবং স্বরূপ

চিৎ; এই হেতু জীবের নাম, দেহ ও  
স্বরূপের ভেদ আছে ॥ ২৪-২৮ ॥

(১৭০ পা) “নামৈতি।” পঞ্চম  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। “দেহ দেহী” এই পয়ার প্রমাণ  
এই শ্লোক ॥ ৫ ॥

(১৭০ পা) “অতএব.... চিদানন্দ ॥”  
এই ২৯ পয়ারের ভাবার্থ সরল। বিলাস,  
স্বরূপ। নামাদি তিনটি স্বপ্রকাশ হেতু  
প্রাকৃত ইন্দ্রিয়ের গ্রাহ্য নহে, ইহা চিদা-  
নন্দ স্বরূপ ॥ ২৯ ॥

(১৭১ পা) “অতঃ শ্রীকৃষ্ণৈতি।”  
এই ষষ্ঠ শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে  
প্রকাশ আছে। “অতএব কৃষ্ণের” এই  
পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক।

যদি বল, কৃষ্ণনাম যদি প্রাকৃত ইন্দ্রিয়ের গ্রাহ্য  
নহে, তবে জিহ্বাদিতে কিরূপে ক্ষুরিত হয়?  
তদন্তর, “সেবোম্মুখে” ইতি। নাম স্বপ্রকাশ  
বলিয়া নাম গ্রহণে রসনাদি উন্মুখ হইলে নাম স্বয়ং  
প্রকাশিত হয়। যখন যুগদেহ ভ্যাগ সময়ে রাজা  
ভরত “নারায়ণায় নমঃ” ইত্যাদি নাম কীর্তন ও  
কুস্তীর কর্তৃক গিলিত গজেন্দ্র শ্রীকৃষ্ণের স্ততি করি-  
রাছেন, তখন অবশ্যই বীকার-করিতে হইবে,  
নামাদি স্বপ্রকাশ ও চিদানন্দ স্বরূপ। ইহা বীকার  
না করিলে যুগ ও গজাদির মুখে নামের উচ্চারণ  
সম্ভবে না ॥ ৩ ॥

(১৭১ পা) “ব্রহ্মানন্দ.....নিজ  
বশ ॥” এই ৩০ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল। নিজবশ অর্থাৎ কৃষ্ণের মীলারস  
ব্রহ্মজ্ঞানিকে আকর্ষণ করিয়া নিজের  
অধীন করে। ৩০ ॥

(১৭১ পা) “অনুশেতি।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ

আছে। “ব্রহ্মানন্দ হইতে” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক। ব্রহ্মানন্দ হইতে শ্রীকৃষ্ণের লীলারসে পরিপূর্ণরূপে আনন্দ অনুভব হয় বলিয়া। শ্রীকৃষ্ণের মনোহর লীলারস দ্বারা ব্রহ্মজ্ঞানী গুরুদেব আকৃষ্ট হইয়েন ॥ ৭ ॥

( ১৭১ প্য ) “ব্রহ্মানন্দ.....মন ॥” এই ৩১৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল। শ্রীকৃষ্ণের লীলা যেমন ব্রহ্মজ্ঞানিকে আকর্ষণ করে, তদ্রূপ তাঁহার গুণ ও আত্মারামগণকে আকর্ষণ করে ॥ ৩১ ॥

( ১৭১ প্য ) “আত্মারামা” ইতি। এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ৫ পৃষ্ঠায় দেখুন। “ব্রহ্মানন্দ হইতে” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৮ ॥

( ১৭১ প্য ) “এহো সব.....গক্ষে ॥” এই ৩২৫ পয়ারের ভাবার্থ। কৃষ্ণচরণ সম্বন্ধে অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণের লীলা ও গুণাদি আত্মারামগণকে আকর্ষণ করে, সে সকল কথা দূরে থাকুক ; তাঁহার চরণের তুলসীর বৎকিঞ্চিৎ সম্বন্ধ মাত্র লাভ করিয়া বাবুও আত্মারামগণের মন হরণ করে। ইহাতে প্রতিপন্ন হইতেছে, শ্রীকৃষ্ণের ভক্ত সঙ্গ লক্ষ ব্যক্তিরও ভজনানন্দ ব্রহ্মানন্দ হইতে শ্রেষ্ঠ। যে হেতু ভক্ত (তুলসী) সঙ্গ লক্ষ ব্যক্তি ( বাবু ) আত্মারামের মন হরণে সমর্থ ॥ ৩২ ॥

( ১৭১ প্য ) “তস্যোতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “এহো সব” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক। ব্রহ্মানন্দ হইতে ভক্তগণের সেবানন্দ শ্রেষ্ঠ, ইহা সমর্থন করিয়েনো ১।

( ১৭২ প্য ) “অতএব... ..বলে বাহ তুলি ॥” এই ৩৩ হইতে ৩৬ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। অতএব ব্রহ্মানন্দ হইতে কৃষ্ণসেবানন্দ শ্রেষ্ঠ বলিয়া। তিন জনায়, তপনমিশ্র, চন্দ্রশেখর ও দুঃখিত বিপ্রকে। বেণী, যমুনা ও গঙ্গার মিলিত স্থানকে বেণী বলে। মাধব, বেণীঘাটের নিকটস্থ বিষ্ণুমূর্তি। ভট্টাচার্য্য, বলভদ্র। বিশ্রাম্ভিঘাট অর্থাৎ বিশ্রামঘাট নামে খ্যাত যমুনার ঘাট ; শ্রীকৃষ্ণ কংসবধের পর এই ঘাটে বিশ্রাম করেন। জন্মস্থান, শ্রীকৃষ্ণের জন্ম স্থান ॥ ৩৩-৩৬ ॥

( ১৭২ প্য ) “লোক হরি... ..মোর শিক্ষা ॥” এই ৩৭ হইতে ৪০ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। গোপাল প্রকট সেবা, গোপালকে প্রকাশ ও সেবা প্রকাশ, ইহা চতুর্থ পরিচ্ছেদে দেখুন। তাঁহা, পুরী। শিক্ষা, গুরুর আচরিত ধর্ম প্রাবর্তিত করা রূপ শিক্ষা ॥ ৩৭-৪০ ॥

( ১৭৩ প্য ) “যদ্যদেতি ।” এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ২৮ পৃষ্ঠায় দেখুন। ইহার তাৎপর্য্য ভাবার্থ ব্যাখ্যার ৯৪ পৃষ্ঠায় দেখুন। “পুরী গোমাকিঃ” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১০ ॥

( ১৭৩ প্য ) “যদ্যপি... ..ধর্মসার ॥” এই ৪১ ও ৪২ পয়ারের ভাবার্থ সরল। ধর্ম সার, শ্রেষ্ঠ ধর্ম ॥ ৪১৪২ ॥

( ১৭৩ প্য ) “তর্ক ইতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “ঐতি ন্যতি বত” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক।

শ্লোকের অর্থার্থে সর্বত্র পাঠ্যইবার স্থান লক্ষ্যঃ

যে বস্তু বুদ্ধি দেখাইতে পারে। সেই জরী হয় ।  
 ক্রতিগণ পৃথক পৃথক অধিকারিকে পৃথক পৃথক  
 উপদেশ দেওয়ার প্রথমতঃ বিকল্পের জ্ঞান প্রতীত-  
 মান হয়, বস্তুতঃ বিকল্প নহে । ঋষিগণও পৃথক  
 পৃথক অধিকারির জন্য পৃথক পৃথক কর্তব্য বলার  
 উহাও প্রথমতঃ বিভিন্ন মত বলিয়া প্রতীত হয় ।  
 অতএব নিজবুদ্ধি বলে কেহই শাস্ত্রার্থ অবগত  
 হইয়া ধর্মতত্ত্ব নিশ্চয় করিতে না পারায়, তাহাদের  
 সম্বন্ধে ধর্মতত্ত্ব গোপন স্থানে নিহিত রহিয়াছেন ।  
 এই হেতু পূর্বভন বেদার্থবেত্তা বিগুহচেতা সাধু-  
 গণের অনুসরণ করা কর্তব্য ॥ ১১ ॥

( ১৭৩ পা ) “তবে সেই... ..জ্ঞকার  
 করিয়া ॥” এই ৪৩ ও ৪৪ পয়ারের  
 ভাবার্থ সরল । লক্ষ সংখ্য লোক, লক্ষ  
 লক্ষ লোক । চর্কিশঘাট, মথুরার নিকট  
 অঙ্কচন্দ্রাকৃতি যমুনার চর্কিশ ঘাটে চর্কিশ  
 তীর্থ । যথা .

১। অবিমুক্ত, ২। বিশ্রান্তি, ৩। সংসার-  
 মোচন, ৪। প্রয়াগ, ৫। কনখল, ৬। তিল্লুক,  
 ৭। সূর্য্য, ৮। বটশামী, ৯। জব, ১০। ঋষি,  
 ১১। মোক্ষ, ১২। রোষ, ১৩। নব, ১৪। ধারা-  
 পতন, ১৫। সংঘমন, ১৬। নাগ, ১৭। ঘট-  
 তরণ, ১৮। ব্রহ্মলোক, ১৯। সোম, ২০। সর-  
 স্বতী, ২১। চক্র, ২২। দশাশ্বমেধ, ২৩। বিদ্র-  
 রাঙ্গ, ২৪। কোটি ।

অয়ন্তু প্রভৃতি শিবলিঙ্গ । কুমুদ.  
 কুমুদ বন । বহুলা, বহুলা পর্লত ।  
 তাঁহা তাঁহা, ভক্ততা কুণ্ডে । গাভীঘটা.  
 গোসমূহ ॥ ৪৩৪৪ ॥

( ১৭৪ পা ) “গাভী দেখি ... ..লোক  
 পড়ে ॥” এই ৪৫ হইতে ৪৮ পয়ার পর্য্যন্ত  
 ভাবার্থ সরল । বাৎসল্যে গাভীগণ  
 চাটে অর্থাৎ ভ্রজের পক্ষপক্ষীগণ কুকনিষ্ঠ  
 এই কুক জারার বাৎসল্যে মহাপ্রভুর

অঙ্গ চাটিয়াছিল । অথবা “পশুঃ পশুভি  
 গচ্ছেন” অর্থাৎ পশু গচ্ছ দ্বারা দেখে, এই  
 স্তায় বশতঃ গোগণ মহাপ্রভুর অঙ্গগঞ্চে  
 চিনিতে পারেন, ইনিই শ্রীকৃষ্ণ । সেই  
 কৃষ্ণ এরূপ মূর্ত্তি কিরূপে প্রাপ্ত হইলেন  
 এবং কৃষ্ণের এই মূর্ত্তিতে কি রস আছে,  
 ইহা আস্থাদন জ্ঞান মহাপ্রভুর অঙ্গ লেহন  
 করেন । বাট, পথ । দিল পরশন, নিত্য-  
 নীলার পরিকর অপ্রকটভাবে থাকিলেও  
 প্রভুর সম্মুখে প্রকট হইলেন । গুণ-  
 শ্লোক গুণ বর্ণন শ্লোক । পড়ে, পাঠ  
 করে ॥ ৪৫-৪৮ ॥

( ১৭৪ পা ) “সৌন্দর্য্যমিতি ।” এই  
 শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
 আছে । কৃষ্ণের গুণ বর্ণন এই শ্লোক ॥ ১২ ॥

( ১৭৪ পা ) “শুকমুখে... ..বর্ণন ॥”  
 এই ৪৯ পয়ারের ভাবার্থ সরল । কৃষ্ণের  
 বর্ণন, কৃষ্ণের গুণ বর্ণন । রাধিকা বর্ণন.  
 রাধার গুণ বর্ণন ॥ ৪৯ ॥

( ১৭৫ পা ) “শ্রীরাধিকায় ইতি ।”  
 এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
 আছে । শ্রীমতি রাধিকার গুণ বর্ণন এই  
 শ্লোক ॥ ১৩ ॥

( ১৭৫ পা ) “পুনঃ ... ..পঠন ॥”  
 এই ৫০ পয়ারের ভাবার্থ সরল । আর  
 শ্লোক, শ্রীকৃষ্ণ যে মদনমোহন তৎপ্রমাণ  
 অস্ত শ্লোক ॥ ৫০ ॥

( ১৭৫ পা ) “বংশীধারীতি ।” এই  
 শ্লোকের তাৎপর্য্য ॥ শ্লোকার্থে প্রকাশ  
 আছে । শ্রীকৃষ্ণ যে মদনমোহন তৎ-  
 প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৪ ॥

( ১৭৫ পা ) “রাধা ... ..ইতি ।”

এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীকৃষ্ণ যে মদনমোহন তৎ প্রমাণ শ্লোক শুক যে বলেন, তাহা শুনিয়া শারী যে পরিহাস পূর্বক শ্লোক বলেন, তাহা এই শ্লোক । শ্রীরাধা সন্দেহ না থাকিলে কৃষ্ণের শোভা হয় না ॥১৫॥

( ১৭৫ পা ) “এত শূনি... করেন অভ্যাগে ॥” এই ৫৩ হইতে ৫৫ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । উল্লাস, প্রেম জনিত আনন্দ । যদি বল, মহাপ্রভুর প্রেম উথলিয়া উঠায় কি, প্রেম বেশী হইয়াছিল, পূর্বে কম ছিল ? তত্ত্বত্তর, যেমন অগ্নিতাপে উচ্ছলিত ছুষ্কের পরি-  
মান বৃদ্ধি না হইলেও অধিক পরিমিতের স্থায় প্রতীতি হয়, তদ্রূপ উদ্দীপনাদি দর্শনে প্রেমও উচ্ছলিত হইয়া বর্দ্ধমান-

রূপে প্রতীত হয় । নির্ঝাঁহ, সম্পন্ন । অভ্যাগে, যেমন গমনে প্রস্তুত ব্যক্তি অশ্রু চিত্তায় আনিষ্ট হইয়া গমনে মনঃ সংযোগ না থাকিলেও পূর্ব অভ্যাগ বশতঃ পথে গমন করে, তদ্রূপ মহাপ্রভু প্রেমাভিষ্ট হইয়া শরীরাদিতে অনুসন্ধান না থাকিলেও পূর্বাভ্যাগ বশতঃ স্থান ও ভিকাদি সম্পন্ন করিতেন ॥ ৫৩ ৫৫ ॥

( ১৭৬ পা ) “এই মত... কৃষ্ণদাস ॥” এই ৫৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল । বার-  
বন, যথা,

১। মধুবন, ২। ভাগবন, ৩। কুমুদবন,  
৪। কাম্যকবন, ৫। বহলাবন, ৬। ভদ্রবন,  
৭। খদিরবন, ৮। মহাবন, ৯। লোহজঙ্ঘ-  
বন, ১০। বিষবন, ১১। ভাগুরীবন, ১২।  
বৃন্দাবন ।

পাথারে, সাগরে ॥ ৫৬ ॥

ইতি মধ্যলীলায়াং ষোড়শ পরিচ্ছেদে সুবোধিনী ॥ ১৭ ॥

## অষ্টাদশ পরিচ্ছেদ ।

— — — — —

( ১৭৬ পা ) “বৃন্দাবন” ইতি । এই এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । এই পরিচ্ছেদোক্তবিষয় শ্লোকার্থে প্রকাশিত হইল ॥ ১ ॥

( ১৭৬ পা ) “জয় জয়.....প্রিয়ার সরসী ॥” এই ১ম ও ২য় পয়ারের ভাবার্থ সরল । আরিট গ্রাম, অরিত শব্দের অপ-  
ভ্রংশ, এখানে বলরাম কংসের আভূষণকে

বিনাশ করেন । রাধাকুণ্ডবার্তা, রাধা-  
কুণ্ডের কথা ; রাধাকুণ্ড আরিট গ্রামের  
দক্ষিণে । সেই ব্রহ্মণ, সনৌড়িয়া ব্রাহ্মণ ।  
প্রিয়ার সরসী, রাধাকুণ্ড ॥ ১ । ২ ॥

( ১৭৬ পা ) “যথেন্তি ।” শ্লোকের টীকা  
ও বাদলা আদির ৫৬ পৃষ্ঠায় দেখুন ‘তৈছে  
রাধাকুণ্ড’ পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২ ॥

( ১৭৭ পা ) “যেই কুণ্ডে... সরসীয়া ॥”

এই ৩য় পয়ারের ভাবার্থ সরল । তারে,  
যে স্নান করে, তাহাকে ॥ ৩ ॥

( ১৭৭ পা ) “শ্রীরাধেবেতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “যেই কুণ্ডে নিত্য” এই পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩ ॥

( ১৭৭ পা ) “এইমত...ভদীউঠাইলা ॥”  
এই ৪র্থ হইতে ৬ষ্ঠ পয়ার ভাবার্থ সরল ।  
স্মরণিয়া, স্মরণ করিয়া । স্তম্ভনসরো-  
বর, কুম্ভ সরোবর, ইহা রাধাকুণ্ডের  
নৈঋতকোণে ও গোবর্দ্ধনের পূর্বভাগে ।  
একশীলা, গোবর্দ্ধনের শিলাখণ্ড । গোব-  
র্দ্ধন গ্রাম, গোবর্দ্ধনোপরি মানস গঙ্গার  
তীরে । হরিদেব, বজ্রনাভকর্তৃক স্থাপিত  
মূর্তি । মথুরা পদ্মের, পদ্মাকৃতি মথুর-  
মণ্ডলের । যার, হরিদেবের । ব্রহ্মাকুণ্ড,  
গোবর্দ্ধন তীরস্থ । জানি, প্রভুর মনো-  
ভাব জানিয়া ॥ ৪-৬ ॥

( ১৭৭ পা ) “অনারুরুক্ষব” ইতি ।  
এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । মহাপ্রভু গোবর্দ্ধনে আরোহণ  
করিবেন না জানিয়া, গোপালদেব স্নেহ  
ভয়ের যে চল করেন, তাহার কারণ এই  
শ্লোকে বলিলেন । রাধাকান্তি দ্বারা  
আছাদিত নিজেকে নিজে দর্শন দিবার  
অন্ত স্নেহ ভয়ের ভদী উঠান । যদিবল,  
শ্রীকৃষ্ণই শ্রীচৈতন্য হইলে, তাঁহার ভক্তা-  
তিমান হইবে কেন ? তদুত্তর, নিত্যসীলার  
রাধায় সহিত নিত্য সংযোগ থাকিলেও  
যেমন একট প্রকাশে কখন বিরহ-স্বপ্ন  
হয়, তদ্রূপ প্রকাশবিশেষে স্বরূপাতিমান  
থাকিলেও কখন প্রকাশবিশেষে ভক্ত  
ভিৎসিত হয় ॥ ৪ ॥

( ১৭৮ পা ) “অরকুট...শ্লোক পড়িয়া ॥”  
এই ৭ ও ৮ পয়ারের ভাবার্থ সরল ।  
তুড়ুকধারী, অস্বারোহী যবনসেনা । ভাগ,  
পলায়ন কর । কালযবন, দুষ্ট যবন ।  
উজাড়, শূন্য । মানসগঙ্গা, গোবর্দ্ধন  
হইতে নিঃসৃত । এই শ্লোক, হস্তায়েতি  
শ্লোক ॥ ৭।৮ ॥

( ১৭৮ পা ) “হস্তায়েতি ।” শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । মহা-  
প্রভু প্রেমাবিষ্ট হওতঃ নৃত্য করিতে  
করিতে এই শ্লোক পাঠ করেন । ইহার  
অভিপ্রায় এই, গোবর্দ্ধন শ্রেষ্ঠভক্ত, ইহার  
দর্শনে আমার অভীষ্ট সিদ্ধ হইবে অর্থাৎ  
শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করিব । অথবা গোবর্দ্ধ-  
নের গুণ স্মরণ করিয়া এই শ্লোক পড়েন  
বা শ্রীকৃষ্ণের বিহারস্থান বলিয়া প্রেমের  
উদ্দীপক হইয়ন ॥ ৫ ॥

( ১৭৮ পা ) “গোবিন্দকুণ্ডাদি...দিন  
শেষ ॥” এই ৯ম পয়ারের ভাবার্থ সরল ।  
এই শ্লোক, “বাম” ইতি পর শ্লোক ॥ ৯ ॥

( ১৭৮ পা ) “বাম ইতি ।” এই শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
গোপালের গোবর্দ্ধ্য দেখিয়া মহাপ্রভু  
এই শ্লোক পাঠ করেন ॥ ৬ ॥

( ১৭৮ পা ) “এইমত...মথুরা রহিয়া ॥”  
এই ১০ ও ১১ পয়ারের ভাবার্থ সরল ।  
এইরূপে, যেরূপে মহাপ্রভুকে দর্শন  
দেন ॥ ১০।১১ ॥

( ১৭৯ পা ) “সজ্জত...পোসাগ্রি ॥”  
এই ১২ হইতে ১৫ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ  
সরল । নন্দীধর, নন্দীধর নামক পুরুত,  
এখানে নন্দীধর নামে শিবলিঙ্গ আছেন,

এখানে নন্দ মহাশয়ের বসতি । গোফা, ভজনার্থ নির্জন গহ্বর ॥ ১২-১৫ ॥

( ১৭৯ পা ) “যদিতি ।” এই সপ্তম শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৫০ পৃষ্ঠায় দেখিবেন । ইহার তাৎপর্য ভাবার্থ ব্যাখ্যায় ১৯৭ পৃষ্ঠায় দেখিবেন ॥ ৭ ॥

( ১৭৯ পা ) “তবে...আসিয়া ॥” এই ১৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল । জীবন,বেল-বন । লৌহবন, লৌহজবন ॥ ১৬ ॥

( ১৮০ পা ) “আর দিন...বলে হরি হরি ॥” এই ১৭ হইতে ২০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । অক্রুরে, অক্রুরতীর্ধের নিকট গ্রামে । তেতুলী-তলা, আমলী-তলা । একান্তে, এক পাশে । পর-তেক, প্রত্যক্ষ ॥ ১৭-২০ ॥

( ১৮০ পা ) “প্রভুসঙ্গে...রাত্রৈযাঞা ॥” এই ২১ হইতে ২৪ পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । ফণিরতুল্যলে, ফণিতে রত্ন স্থলে । নিজা-জ্ঞানে, নিজের অজ্ঞান বশতঃ ॥ ২১-২৪ ॥

( ১৮১ পা ) “প্রাতঃকালে...ক্ষুলি-ঙ্গের কণ ॥” এই ২৫ হইতে ২৮ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । ভব্যালোক, বুদ্ধি-মান্ব ব্যক্তি । স্থাপু, শাখাপল্লব হীন বৃক্ষ । স্বলদগ্নি, স্বলন্ত অগ্নি ॥ ২৫-২৮ ॥

( ১৮১ পা ) “জ্ঞাদিন্যোতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্ধে প্রকাশ আছে । “বৈড়ৈর্ধর্ষ্য পূর্ণ” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৮ ॥

( ১৮১ পা ) “বস্তুতি ॥” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্ধে প্রকাশ আছে । “বৈ যুগ” ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৯ ॥

( ১৮১ পা ) “লোকে কহে... ১১১

যায় কখন ॥” এই ৩০ ও ৩১ পয়ারের ভাবার্থ সরল । জীব মতি, জীববুদ্ধি ।

তারে,ত্রাণ করে । পাবন, পবিত্র ॥ ৩০।৩১

( ১৮২ পা ) “বন্দ্যামেতি ॥” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১৩২ পৃষ্ঠায় দেখুন । “তোমার নাম” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১০ ॥

( ১৮২ পা ) “এই মত...দর্শন করিল ॥” এই ৩৩ ও ৩৪ পয়ারের ভাবার্থ । এইমত, পূর্ব কথিত মত ।

তটস্থ লক্ষণ যথা,—

“বরুপান্তর্গতং সৎ যন্নক্যম্ ইতরব্যাবর্তয়তি  
তটস্থলক্ষণম্ ॥”

যে লক্ষ্যবিশয় বরণের অন্তর্গত হইয়া অন্তকে ব্যাবর্তন ( নিযুক্ত ) করে, তাহা তটস্থ-লক্ষণ । যেমন গরুর অলঙ্কারাদি ।

এখানে মহিমা স্বরূপের অন্তর্গত হইয়া জগৎত্রাণরূপ কার্য্যকে নিরাকরণ করায়, মহিমা তোমার তটস্থ লক্ষণ । -  
স্বরূপলক্ষণ যথা,—

“তদভিন্নমে নতি তবোধকম্ ॥”

লক্ষ্য বস্তু হইতে অভিন্ন হইয়া, যাহা লক্ষ্য বস্তুর জ্ঞাপক হয়, তাহা স্বরূপলক্ষণ । যেমন গোকর পুঙ্গাদি ।

শ্রামকান্তি আচ্ছাদিত হইলেও তোমার স্বরূপভূত আকৃতি ও প্রকৃতি তোমাকে ক্রম বলিয়া জানাইতেছে । অন্তএব স্বরূপলক্ষণে তুমি ব্রহ্মজ্ঞানস্বরূপ । সেই সব লোকে, বাঁহারা এইরূপ কথা-বলিল তাঁহাদিগকে । “এই ঘাটে” ইত্যাদি ।

অক্রুর বধন বৃন্দাবন হইতে শ্রীকৃষ্ণ ও বল-রামকে রথে লইয়া মথুরায় বাস, তখন এই ঘাটে লক্ষণ দান করিবার পুত্র মলে-বিশয় হইয়া

ক বলরামের সহিত বৈকুণ্ঠ দর্শন করেন। তদবধি ইহার নাম অক্রুরভীর্ষ হয়। তাগবতে ১০ঙ্ ৩৯ম দেখুন।

“ব্রহ্মবাণীলোক” ইত্যাদি।

বে সময়ে বরণের ভূতা বরণলোকে নন্দ মহা-শরকে লইয়া যায়। শ্রীকৃষ্ণ পিতাকে আনিবার জন্য বরণলোকে গমন করিলে, সপরিষ্কর বরণ শ্রীকৃষ্ণকে স্ত্যাদি করেন। পরে শ্রীকৃষ্ণ পিতাকে লইয়া আসিলে, সরণ জদর নন্দরাজ বরণ কর্তৃক শ্রীকৃষ্ণের স্তবাদি বৃত্তান্ত স্ত্যাদিগণের নিকট প্রকাশ করিলে, গোপগণ কৃষ্ণলোক দর্শন করিতে অভিলাষ করেন। তাহাতে শ্রীকৃষ্ণ এই ঘাটে সকলকে নিমন্ত্রণ হইতে বলেন। পরে তাঁহার সপরিষ্কর শ্রীকৃষ্ণের সহিত গোলোক দর্শন করেন। তাগবতে ১০ঙ্ ২৮ম দেখুন ॥ ৩৩।৩৪ ॥

( ৮২ পা ) “এত বলি... ..চলিলা লইয়া।” এই ৩৫ হইতে ৩৮ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। কাম্বি, ক্রন্দন করিয়া। ফুকার, চিৎকার। কাঢ়িয়ে, বাহির করি। সোরাঙ্কেত্র, বৃন্দাবনের পূর্বাংশে। গড়বড়ি, ভীড়। মোর মাথা খায়, আমাকে উদ্বেগ দেয় ॥ ৩৫-৩৮ ॥

( ১৮৩ পা ) “প্রেমী কৃষ্ণদাস... .. মহাস্তম্ব হৈল।” এই ৩৯ হইতে ৪৫ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। সেই ত ব্রাহ্মণ, সনৌড়িয়া ব্রাহ্মণ। আসোয়ার, অশ্বারোহী। সুবর্ণ, মোহর। বাটোয়াড়, পঞ্চদশ্য। মারি ডারিয়াছে, মারিয়া ফেলিয়াছে। পঞ্চজন, বলভদ্র, তাঁহার ভূতা, সনৌড়িয়া ব্রাহ্মণ, রাজপুত্র কৃষ্ণদাস ও মাধুর বিপ্র। দড়, চটপটিয়া। দিকদারি, সেনাশ্রম। অবহি, এধনি। কহিত, জ্ঞান। তুরকি, অশ্বারোহী।

ফুকারি, ডাকি। পিড়া, ঘোটকের পৃষ্ঠের আসন। মুগী ব্যাধিতে অর্ধাৎ হরিণ-নয়না শ্রীরাধার প্রেমজনিত যে ব্যাধি তাহাতে। কালাবস্ত্র, কালা বর্ণের বস্ত্র, ইহা মুসলমানের অতি পবিত্র। পীর, সিদ্ধ পুরুষ। স্বশাস্ত্র, কোরাণ। তারি, সেই কাল বস্ত্রধারী মুসলমানের ॥ ৩৯—৪৫ ॥

( ১৮৪ ) “প্রভু কহে.....নির্ণয় করিয়া।” এই ৪৬ ও ৪৭ পয়ারের ভাবার্থ। প্রভু তাহাকে নিরন্তর করিয়া বলিতে লাগিলেন, “তব শাস্ত্র” ইত্যাদি।

শাস্ত্র সকল একবাক্যে পুরুষের সর্বেশ্বরত্ব ও তাহাকেই জীবের পরা গতি বলিয়া প্রতিপাদন করিলেও, অজ্ঞ জীবের সৌভাগ্য উদয় না হওয়া পর্য্যন্ত উহা স্বয়ম্ভব হয় না। বাহার সংসার ক্ষয়োন্মুখ হয় নাই, তিনি উহা দেখেন না বা বুঝেন না, দেখিয়াও দেখেন না, বুঝিয়াও বুঝেন না। এই হেতুই পুরুষের সর্বেশ্বরত্ব লইয়া বিবাদ। ঐ বিবাদ ব্যর্থ হইলেও, উহার নিবৃত্তি হয় না। উহা চিরকাল চলিয়া আসিতেছে এবং ভবিষ্যতেও চলিবে বলিয়া অনুমান করা যায়। পুরুষের সর্বেশ্বরত্ব লইয়া বিবাদ, যে নিতান্ত নিষ্ফল, তাহা অনিশ্চিত। জীবের নিজের সত্তা-জ্ঞান স্বাভাবিক। নাস্তিকেরও নিজ সত্তার জ্ঞান আছে। নাস্তিকগণও যখন নিজের সত্তার অপলাপ করিতে সাহসী হয় না, তখন পুরুষের সর্বেশ্বরত্ব বা অসর্বেশ্বরত্ব লইয়াই প্রকৃত আতিকতা বা নাস্তিকতা বলাই বোধ হয় সম্ভব হইতেছে। ঐ অপলাপের ফল কি? পুরুষের সর্বেশ্বরত্ব অস্বীকার করিয়া কি কেহ কখন ঐ উদ্দেশ্য সকল করিতে পারিয়াছেন? কর্ণকেই সকল স্বপ্ন হ্রাসের মূল ভাবিয়া, পুরুষের শ্রেষ্ঠত্ব কর্ণে অনিশ্চিত করিয়া, বাহ্যিক কেবল ঐহিক

কর্মের পক্ষপাতী হন, তাঁহারা কি তদপেক্ষা  
 ক্ষমদর্শী পারলৌকিক কর্মের শ্রেষ্ঠত্বাদির নিকট  
 পরাজিত হন না? আবার বাহ্যিক সার্বভৌম  
 পদরূপ ফল, বাহ্যিক একরূপ ঐহিককর্মের ও  
 পারমার্থোপায়রূপ ফল বাহ্যিক একরূপ পারলৌকিক  
 কর্মের বিনাশাদি দোষ দেখাইয়া পূর্বাপেক্ষা  
 অধিকতর সংস্কারশালী হইয়া কর্মসাধিকা কারণ-  
 রূপা প্রকৃতির শ্রেষ্ঠত্ব প্রতিপাদন করেন, তাঁহারা  
 কি কর্মবাদী হইতে শ্রেষ্ঠ নহেন? এইরূপে  
 প্রকৃতির শ্রেষ্ঠত্বাদিগণ কর্মবাদী হইতে গৌর-  
 বাহিত হইলেও তিনি কি কখন নিজাতীষ্ট সাধনে  
 কৃতকার্য হইয়াছেন নদিয়া সিদ্ধান্তিত হন? প্রকৃতি  
 কর্তা, পুরুষ অকর্তা হইয়াও প্রকৃতির  
 মঙ্গল বশতঃ পুরুষে কর্তৃত্বের আরোপে প্রকৃতিকৃত  
 কর্মের পুরুষ ফলভাগী হইবেন, এবং প্রকৃতি ও  
 পুরুষের বিবেক অভ্যাস দ্বারা আপনাকে অকর্তা  
 স্থির করিতে পারিলেই উক্ত ফলভোগের অঙ্গান  
 হয়. ইহা অংশতঃ সত্য হইলেও, কেবল তাদৃশ  
 অভ্যাস দ্বারা কি কেহ কখন প্রকৃতির মঙ্গল হইতে  
 বিমুক্তি লাভ করিয়াছেন? অর্থাৎ করেন নাই।  
 প্রকৃতি কি তাদৃশ অভ্যাসকারিকেও পুনঃ পুনঃ  
 বলপূর্বক নিজমঙ্গল করান না? ফলতঃ এই  
 একমাত্র কারণ বশতঃ অর্থাৎ আপনা হইতে  
 প্রকৃতির বল অত্যন্ত অধিক দেখিয়াই কি  
 অপেক্ষাকৃত ক্ষমদর্শী জ্ঞানিগণ প্রকৃতির সত্যত্ব  
 মিথ্যা করিতে বাধ্য হইয়া মারাবাদী হন নাই? এইরূপে  
 পর পর ক্ষমবুদ্ধি লোকগণ পূর্ব পূর্ব  
 মতের ধ্বংস পূর্বক নিজমত সংস্থাপনে চেষ্টা  
 পাইলেও পুরুষের সর্বোত্তম অপলাপ হেতু কোন  
 মতই সুপ্রতিষ্ঠিত হইল না, কেহই কৃতকার্য  
 হইতে পারিলেন না। লাভের মধ্যে তাঁহারা  
 মোক্ষপথের বাধারূপ কিছু কিছু বিতৃষ্ণিত লইয়া  
 অর্থাৎ কর্মবাদী অধিকারিক পদ প্রাপ্ত হইয়া  
 প্রকৃতির কর্তৃত্ববাদী আত্মপ্রত্যয়াদি প্রাপ্ত  
 হইয়া এবং মারাবাদী নৈবদ্রব্ধস্বভাব প্রাপ্ত হইয়া

মোহিত হইলেন। অধিকন্তু উক্ত ত্রিবিধ মতের  
 দেশব্যাপী বিবরণ ফল প্রচ্ছন্নভাবে সকল  
 সম্প্রদায়ের মধ্যেই প্রবেশ করিল। কেহ কর্ম-  
 বাদির কর্মজালে মোহিত হইয়া পুনঃ পুনঃ  
 সংসারে গতাগতি করিতে লাগিলেন। কেহ  
 প্রকৃতি কর্তৃত্ববাদির অল্পগত হইয়া যথেষ্টাচার  
 বশতঃ আত্মরিক তাব প্রাপ্ত হইলেন। কেহ  
 মারাবাদির উল্লেখ্যে মোহিত হইয়া শূন্যময়  
 সংসারে আপনাকেই দেখিতে লাগিলেন।  
 বিবেককর কর্মের জাল ছেদন করিবেন কি,  
 তাহার আপনার কর্ম আপনাকেই চঞ্চল করিয়া  
 তুলিল। প্রকৃতির কর্তৃত্ব ও আপনার অসঙ্গত  
 ভাবিতে ভাবিতে প্রকৃতির বলে অসঙ্গতকর্তাকে  
 অকর্মকর্তা করিয়া ফেলিল। সংসারকে স্বপ্ন  
 বা ইন্দ্রজাল ভাবিতে গিয়া কারাগৃহে আবদ্ধ হীন  
 পুরুষ আপনাকেই মুক্ত ও ঐশ্বর্যশালী ভাবিয়া  
 যেরূপ উপহাসাস্পদ হয়, তজ্জন্ম পদে পদে  
 উপহাসাস্পদ হইতে হইল। পুরুষের সর্ব-  
 স্বত্বের মিথ্যা করিয়া জীবের কিছুই লাভ  
 হইল না, সত্যমাত্রই অবশিষ্ট রহিল। বস্তুতঃ  
 পুরুষ সর্বোত্তম। সেই সর্বোত্তম কি, তাহা বলিতে-  
 ছেন, “স্বৈচ্ছন্দ্য পূর্ণ” ইত্যাদি। স্বাভাব্য কলেবর  
 স্থানবর্ণ। ঐ কলেবর সচ্চিদানন্দায়ক। তিনি  
 পূর্ণব্রহ্ম, সকলের আত্মা, সর্বগত, নিত্য, ও  
 সকলের আদি। তিনি সৃষ্টি, স্থিতি ও  
 প্রলয়ের কর্তা। তিনি কার্য ও কারণ জগতের  
 আশ্রয়। তিনি সর্বসাধা, সর্বশ্রেষ্ঠ ও কারণেরও  
 কারণ। তাঁহাতে ভক্তি করিলেই জীবের সংসার  
 ক্ষয় হয়। তাঁহার চরণে প্রীতিই সকল পুরুষার্থের  
 সার। মোক্ষানন্দ ঐ প্রেমানন্দের বর্ণনামাত্র।  
 তাঁহার চরণ-সেবাতেই পূর্ণানন্দের লাভ হয়।  
 শাস্ত্র সকল অত্রী কর্ম, যোগ ও জ্ঞান ব্যাপন  
 করিয়া, পরে ঐ সকল ধ্বংস পূর্বক, সর্বোত্তম  
 পুরুষের ভজনই শেষে নিরূপণ করিয়াছেন।  
 পূর্বাণের বিধি, পূর্ব ও পর বিধি।



পর, পরবিধি ১৪৩।৪৭।

( ১৮৪ পা ) “স্নেহ কহে... ..চলি  
আইলা।” এই ৪৮ হইতে ৫১ পর্যন্ত  
ভাবার্থ সরল। লৈতে, শাস্ত্রার্থ  
বোধ করিতে। ॥ ৪৮-৫১ ॥

( ১৮৫ পা ) “যেই যেই.....কৃষ্ণ-

ইতি মধ্যলীলার ঐক্য পরিচ্ছেদে সুবোধিনী ॥ ১৮ ॥

দাস।” এই ৫২ হইতে ৫৪ পর্যন্ত  
ভাবার্থ সরল। ত্রিবেণী, যেখানে  
গঙ্গা, যমুনা ও সরস্বতী নদী মিলিত  
হইয়াছেন। মকরস্থান, মাঘের স্থান।  
মুর্খরাজ, অতিশয় মুর্খ। মুণ্ডে, মস্তকে।  
পাড়ে, ফেলেন ॥ ৫২-৫৪ ॥

## উনবিংশ পরিচ্ছেদ ।



( ১৮৫ পা ) “স্বন্দাবনীয়াসিতি ।”

এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। গ্রন্থকার এই পরিচ্ছেদোক্ত  
বিষয় শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন।  
শ্রীচৈতন্য, শ্রীরূপে যে, স্বন্দাবনের রস-  
কেলিবর্তী, প্রচারিকা শক্তি সঞ্চার  
করেন, তাহা এই পরিচ্ছেদে বলা হইবে।  
প্রাকৃত লোক সৃষ্টি বিষয়ে ব্রহ্মাতে  
প্রাকৃত সৃষ্টিশক্তি সঞ্চার করেন এবং  
অপ্রাকৃত রসকেলিবর্তী প্রচারে শ্রীরূপে  
অপ্রাকৃত স্বরূপশক্তি সঞ্চার করেন,  
ইহাই বিশেষ । ১ ।

( ১৮৬ পা ) “জয় জয় ...ব্যবহার ॥”

এই ১ম হইতে ৩য় পর্যন্ত ভাবার্থ সরল।  
কাত্তকে মিলিয়া, প্রভুর সহিত মিলিয়া।  
বলিল, বরণ করিল। পুরস্চরণ, মন্ত্রের  
চৈতন্যকরণ, নিরম পূর্বক মন্ত্র জপকরণ।  
তথাপি—

“তত্ত্ব যেষ্টদেবতামন্ত্রসিদ্ধার্থং তদেবতাপূজা-  
পূর্বকং তন্নররূপহোমতর্পণাভিবেকব্রাহ্মণ  
ভোজনরূপপঞ্চাঙ্গকসাধনম্ ॥”

নিজ ইষ্টদেবতার মন্ত্রসিদ্ধির জন্ত সেই দেবতার  
পূজা পূর্বক সেই মন্ত্রের জপ, হোম, তর্পণ, অভি-  
বেক ও ব্রাহ্মণ ভোজনরূপ পঞ্চাঙ্গ সাধন বাহ্যিক,  
তাহাই পুরস্চরণ।

ব্রাহ্মণ দ্বারা পুরস্চরণ করাইবার হেতু বলিতে-  
ছেন, “অচিরাত্তে” ইতি। ইহাতে প্রতিপন্ন  
হইল যে, কৃষ্ণমন্ত্র-উপাসনাতেও চৈতন্যচরণ পাওয়া  
যায়।

তার, যে খন আনিলেন। এক  
চৌঠি, অর্ধেকের চতুর্থাংশের একাংশ।  
দণ্ড বন্ধ লাগি, রাজদ্বারে দণ্ড ও বন্ধন  
মোচন জন্ত। ভাল ভাল বিপ্র, বিশ্বস্ত  
ব্রাহ্মণ। স্থাপ্য, গচ্ছিত। রহে মুদি  
ঘরে, বণিকের গৃহে যে দশ হাজার টাকা  
থাকিল, সনাতন তাহা ব্যয় করেন।  
নীলাম্বি, নীলাম্বর ॥ ১৮৬ ॥

( ১৮৬ পা ) "হেথা সনাতন... সর্ককার্য্য নাশ ॥" এই ৪ হইতে ৭ পর্য্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ সরল । হেথা, রাম-কেলিতে । সে মোর বন্ধন অর্থাৎ গৌড়ের রাজার প্রীতিতে আবদ্ধ হইয়া এ স্থান ছাড়িতে পারি না । সঙ্গে একজন, একজন রক্ষক সঙ্গে করিয়া । সে সভাতে, সনাতনের সভায় । কার্য্য-কাম, কাজকর্ম্ম । "তোর বড়" অর্থাৎ তোর বড় ভাই ( শ্রী প ) দস্যুর স্থায় সর্কস্থ লুঠন করিয়া পলায়ন করিয়াছে । "হেথা অর্থাৎ তুমি অস্থখের ভাণ করিয়া সমস্ত রাজকর্ম্ম নষ্ট করিতেছ ॥ ৪-৭ ॥

( ১৮৬ পা ) "সনাতন... গড়াগড়ি যায় ॥" এই ৮ হইতে ১১ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । পলাইবা, আমার রাজ্যের সমস্ত রহস্য সনাতন জানে, সুতরাং যদি কোন বিপক্ষ রাজার সহিত যোগ দিয়া বিপদ ঘটায়, এই অভিপ্রায়ে বন্ধন করেন । উড়িয়া মারিতে, উড়িয়া দেশ জয় করিতে । দেবে দুঃখ অর্থাৎ উড়িয়াগণ দেবতার ভক্ত, তাহাদিগকে মারিলে দেবতাকে দুঃখ দেওয়া হয় । অথবা দেবতার মন্দিরাদি নষ্ট করিবে বা দেবসেবার অনিষ্ট করিবে ; অতএব তোমার উড়িয়ায় পমন কেবল দেবতার দুঃখ দেওয়া । বাঙ্কি রাশি, কারাগৃহে বদ্ধ করিয়া । সেই দুই চর, প্রভুর সম্বাদ জানিবার জন্ত রূপগোষ্ঠারী কর্তৃক প্রেরিত চর । ছুটি, শীত্র । মাধব, বেণীমাধব ॥ ৮-১১ ॥

( ১৮৭ পা ) "পলায়না... তোমার

দুইজন ॥" এই ১২ হইতে ১৪ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । দুই গুচ্ছ তৃণ মধ্যে ধারণঃ দৈন্তশূচক । নানা শ্লোক, দৈন্তশূচক নানা শ্লোক । উঠে পড়ে অর্থাৎ প্রণাম করে বা প্রভুদর্শন জন্ত উঠেন এবং প্রভুর করুণা দেখিয়া ভূমে পতিত হন ॥ ১২-১৪ ॥

( ১৮৭ পা ) "ন মে প্রিয় ইতি ॥" এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

শ্রীকৃষ্ণ যখন তোমাদিগকে বিষয়রূপ রূপ হইতে উদ্ধার করিয়াছেন এবং তোমরা উহা ভ্যাগ করিয়াছ, তখন তোমাদের প্রতি তাঁহার কৃপা হইয়াছে । তাঁহার কৃপার ভক্তিদেবীরও কৃপা হইয়াছে । বেহেতু শত্রু বলেন,—

"বিষয়াবিষ্টচিত্তস্ত বিষ্ণুবেশ স্মরতঃ ।

বাকনী দিগ্গতঃ বস্ত্র ব্রহ্মৈশ্রীং কিমাপুরাং ॥"

বিষয়ে আসক্ত চিত্ত ব্যক্তির বিষ্ণুর প্রতি আবেশ স্মরণাপন্ন হত । পূর্বদিকে গমন করিলে কি পশ্চিম দিকস্থ বস্তুর লাভ হয় ? অতএব ভক্তিতে রুচি উৎপন্ন হইলে ভক্তির-রূপার বিষয়ে বৈরাগ্য হয় । ঐহাদের প্রতি ভক্তিদেবীর কৃপা হয়, তাঁহার শপথ হইলেও শ্রীকৃষ্ণের অতি প্রিয়-পাত্র হইয়েন । তোমরা যখন শ্রীকৃষ্ণের প্রিয় ও কৃপাপাত্র, তখন আমারও প্রিয়পাত্র । অতএব আমার নিকট আইস । কাহাকে কখন শ্রীকৃষ্ণ কৃপা করেন, তাহা বর্ণন করা যায় না । শ্রীকৃষ্ণের নিকট উচ্চ ও নীচ ব্যক্তি নাই । এই শ্লোকে ইহাই প্রতিপন্ন হইল ॥ ২ ॥

( ১৮৭ পা ) "এত পঢ়ি... শ্লোক পঢ়ি ॥" এই ১৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল । এত পঢ়ি, পুরোক্ত শ্লোক পাঠ করিয়া । দু'বা, শ্রীকৃষ্ণ ও শ্রীবল্লভকে ।

প্রভু রূপা অর্থাৎ প্রভুর শ্রীচরণ ও আলিঙ্গনরূপ রূপা ॥ ১৫ ॥

(১৮৭ পা) "নম ইতি ।" এই তৃতীয় শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীরূপ ও বল্লভ যে নানা শ্লোক পাঠ করেন, তন্মধ্যে এই এক শ্লোক ।

আমরা তোমাকে প্রণাম করি । তুমি কিরূপ, না মহাবদান্ত অর্থাৎ দাতার শিরোমণি । কল্পবৃক্ষ ও কামধেনু দাতা হইলেও তাহাদের নিকট প্রার্থনা না করিলে প্রার্থিত বস্তু পাওয়া যায় না, কিন্তু তুমি বিষয়কীটস্বরূপ আমাদের বিষয় ছাড়াইয়া অবাচিতরূপে রূপা করিলে । অতএব প্রার্থনা না করাতেই রূপা কর বলিয়া তুমি মহাবদান্ত । যদি বল, আমি কি প্রদান করি ? তাহাতে বলিতেছেন, "কৃষ্ণপ্রেম প্রদায়" অর্থাৎ সর্বোৎকৃষ্ট সম্পত্তি যে কৃষ্ণপ্রেম, তাহা প্রদান কর । এমন কি, তোমার নাম, শ্রীকৃষ্ণকে সম্যক্রূপে অমুভব করার । তোমার অঙ্গকান্তি পীতবর্ণ ও তুমিই শ্রীকৃষ্ণ ॥ ৩ ॥

(১৮৮ পা) "যোহজ্ঞানমন্তমিতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । মহাপ্রভু যে দাতার শিরোমণি, তাহা পূর্ব শ্লোকে বলিয়াছেন । এক্ষণে এই শ্লোক দ্বারা সেই রূপালুতা গুণকে প্রকাশ করিতেছেন । অথবা, নানা শ্লোক মধ্যে ইহা একটি শ্লোক ॥ ৪ ॥

(১৮৮ পা) "তবে মহাপ্রভু... .. সর্বোত্তম ॥" এই ১৬ হইতে ২০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । তারে, শ্রীরূপকে উদ্ধার, উদ্ধার কর । "আড়াইল গ্রামে" এই স্থানে কোন গ্রামে "আখুলি গ্রামে" এই পাঠ আছে (?) । ভট্টের বিন্দয়

অর্থাৎ ইহারা পরম পবিত্র ব্রাহ্মণ-বংশে জন্মগ্রহণ করিয়া জাত্যাভিমান ত্যাগ পূর্বক এত দৈন্য করিতেছে ।

যেখানে ভক্তিদেবী যে পরিমাণে প্রকট হইল, সেখানে তাঁহার সহকারী দৈগ্ধ ও তাদৃশই প্রকট হইয়া থাকেন । যখন ইহাতে দৈন্তের পরাকাষ্ঠা দেখা বাইতেছে, তখন নিশ্চয়ই ভক্তির পূর্ণ রূপা হইয়াছে ।

এই চিন্তায় বল্লভ ভট্টের মন বিস্মিত হইল । প্রভুর হর্ষমন অর্থাৎ ভট্টের চমৎকারকারী রূপ ও অনুপমের প্রেম-ভক্তি দেখিয়া প্রভুর মনে হর্ষের উদয় হইল । তাঁর বিবরণ অর্থাৎ ইহার শ্লোচের দাসত্ব করিয়াছে ।

(১৮৮ পা) "অহোবতেতি ।" এই শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১১০ পৃষ্ঠায় দেখুন । "ইহার মুখে" এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫ ॥

(১৮৮ পা) "শুনি... ..লাগিলা ॥" এই ২১ পয়ারের ভাবার্থ সরল । শুনি, পূর্বোক্ত শ্লোক শুনিয়া । তারে, বল্লভ ভট্টকে ॥ ২১ ॥

(১৮৮ পা) "শুচিরিতি ।" এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । মহাপ্রভু প্রেমাবিষ্ট হইয়া যে সব শ্লোক পড়েন, তন্মধ্যে এই একটি ও পরে আর একটি বলিবেন ॥ ৬ ॥

(১৮৯ পা) "ভগবন্তক্তিদীন্যোতি ।" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ॥ ৭ ॥

(১৮৯ পা) "প্রভুর... ..ঘনদে লইয়া ॥" এই ২২ হইতে ২৪ পয়ার

পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। ভক্তিগার, প্রেম। উদ্ভট, প্রবলতর। ভয়ে ভউ অর্থাৎ মহাপ্রভু যমুনায় পুনরায় পতিত হন এই ভয়ে। মধ্যাহ্ন, মধ্যাহ্নকালীন স্নানাদি ॥

( ১৮৯ পা ) “আনন্দিত.....হৈল ॥”

এই ২৫ হইতে ২৮ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। দিব্যাসন, উত্তম আসন। প্রভুর চরণে, প্রভুর সমীপে। তিরোহিতা, ত্রিহৃতদেশীয়। শুনি, শ্লোক শুনিয়া ॥২৮॥

( ১৯০ পা ) “শ্রুতিমিতি।” এই

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। রঘুপতি মহাশয় এই শ্লোক পড়েন, ইহা শুনিয়া মহাপ্রভুর মহা প্রেমের আবেশ হয়।

বৈদিকগণ বেদকে, কৰ্ম্মিগণ মহ প্রভুতি কতৃক প্রণীত স্মৃতিকে ও ভবভয়ে ভীত ব্যক্তিগণ মহাভারতকে যদি ভজনা করেন, তবে ঔহার উহা করুন, কিন্তু আমি ভবভয়-হরণ-বিষয়ে নন্দ মহাশয়কে প্রণাম করি। যাঁহার প্রাঙ্গণে পরং-ব্রহ্ম রহিয়াছেন। ত্রীনন্দকে প্রণাম দ্বারা যদি ত্রীনন্দনের কৃপা হয়, তবে ঔহার দাস হইয়া সাক্ষাৎরূপে শ্রীকৃষ্ণকে ভজনা করিব ॥ ৮ ॥

( ১৯০ পা ) “রঘুপতি.....কহিল ॥”

এই ২৯ পয়ারের ভাবার্থ সরল। নম-স্কার কৈল, পূর্বোক্ত শ্লোক পাঠ করিয়া প্রণাম করেন ॥ ২৯ ॥

( ১৯০ পা ) “কম্প্রভীতি।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। প্রভুবাক্যে উপাধ্যায় এই শ্লোক বলেন ॥ ১ ॥

( ১৯০ পা ) “প্রভু কহে.....গদগদ স্বরে।” এই ৩০ হইতে ৩২ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। আলুয়াইলা,

অবশ হইতে লাগিল। নির্দার, নিশ্চয়। শ্রেষ্ঠ কহ কায়, কাহাকে শ্রেষ্ঠ বলিয়া স্বীকার কর। পরং, সর্বোৎকৃষ্টে। বাসস্থান, অযোধ্যা প্রভৃতি শ্রামরূপের বাসস্থান। বরা, শ্রেষ্ঠ। ধোয়ং, ধ্যানের যোগ্য। কায়, কোন রসকে ॥৩০-৩২ ॥

( ১৯০ পা ) “শ্রামমেবতি।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। মহাপ্রভু গদগদস্বরে এই শ্লোক পাঠ করেন ॥ ১০ ॥

( ১৯০ পা ) “প্রোমানবেশে... .. কন্বিলা গমন ॥” এই ৩৩ ও ৩৪ পয়ারের ভাবার্থ সরল। তারে, উপাধ্যায়কে। প্রভুর নিমন্ত্রণ ভউ নিষেধ করেন কেন, তাহা বলিতেছেন, “প্রোমান্বাদে” ইতি। চালাব, লইয়া যাইব ॥ ৩৩৩৪ ॥

( ১৯১ পা ) “গঙ্গাপথে.....প্রচুর ॥”

এই ৩৫ ও ৩৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল। মহাপ্রভু শ্রীকৃষ্ণে শক্তি সঞ্চার করতঃ যে শিক্ষা দেন, তাহা কি বলিতেছেন, “কৃষ্ণ-তত্ত্ব” ইত্যাদি। প্রান্ত, সীমা। প্রবীণ, অভিজ্ঞ। দুঁহার, মহাপ্রভু ও রূপের। গ্রন্থে, চৈতন্যচন্দ্রোদয় নাটকে ॥ ৩৫৩৬ ॥

( ১৯১ পা ) “কালেনেতি।” “যঃ

প্রাগেবেতি।” ও “প্রিয়স্বরূপ ইতি।” এই পর পর একাদশ, দ্বাদশ ও ত্রয়োদশ শ্লোক তিনটির তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ॥ ১১-১৩ ॥

( ১৯২ পা ) “এইমত.....মঙ্গলা-চরণে ॥” এই ৩৭ হইতে ৪০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। এইমত, পূর্বোক্ত শ্লোকানুযায়ী। স্যাম কৃপা পৌরবপাঙ্গ

অর্থাৎ রূপ সনাতন বড় ভক্তের রূপা-  
পাত্র ও ছোট ভক্তের গৌরবের পাত্র।  
জ্বলন্তিকা, একান্ত ভোজন। মাধুকরী,  
মধুকরের রীতি অর্থাৎ মধুকর যেমন  
পুষ্পকে ক্লেষণ না দিয়া তাহা হইতে  
বিন্দু বিন্দু মধু গ্রহণ করিয়া জীবিকা  
নির্বাহ করে, তক্রূপ সন্ন্যাসী অধিক  
গ্রহণে গৃহস্থকে ক্লেষণ না দিয়া এক এক  
গ্রাস মাত্র গ্রহণ করেন। ভোগ, শারী-  
রিক সুখাদি। আশঙ্কা হইতে পারে,  
প্রধান রাজকর্মচারী মহাভোগী রূপ ও  
সনাতন একেবারে কিরূপে ভোগ ত্যাগ  
করেন? তাহাতে বলিতেছেন, “চৈত-  
ন্যের রূপা” ইতি ॥ ৩৭-৪০ ॥

(১৯২ পা) “হৃদি যস্যোতি।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। ভক্তিরসামৃত সিদ্ধুব মঙ্গলা-  
চরণে শ্রীরূপ গোস্বামী যে শ্রীচৈতন্যের  
রূপার বিষয় লিখিয়াছেন, তাহা এই  
শ্লোক ॥ ১৪ ॥

(১৯২ পা) “এই মত... এক  
বিন্দু ॥” এই ৪১ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল। “লোকভীড় ভয়ে” ইতি পূর্ক  
বাক্যের উপসংহার করিতেছেন, “এই-  
মত” ইত্যাদি। চাঞ্চাইতে অল্প মাত্রায়  
আত্মদান করাইতে। মহাপ্রভু শ্রীরূপের  
শব্দয়ে সর্বতত্ত্ব বর্ণনশক্তি সঞ্চার করিলে-  
ও লৌকিক লীলাচরিত্রে বাহিরে  
কিঞ্চিৎ শিক্ষা দেন ॥ ৪১ ॥

(১৯২ পা) “এইত.....বিচারি।”  
এই ৪২ পয়ারের ভাবার্থ। এই ব্রহ্মাণ্ডে

অসংখ্য জীব বাস করে। প্রত্যেক  
জীবই চৌরাশীলক্ষ বোনিতে জন্ম  
করে।

তথাহি বৃহৎসুপরাণে—

“জলজা নবলক্ষাণি স্থাবরা লক্ষবিংশতিঃ।

কুমরো রুদ্রসংখ্যকাঃ পক্ষিগাং দশলক্ষকম্ ॥

ত্রিংশলক্ষাণি পশবশ্চতুর্লক্ষাণি মাছুষাঃ।

সর্বযোনিং পরিত্যজ্য ব্রহ্মযোনিং ততোহভ্যাগাৎ ॥”

জীব নয় লক্ষবার জলজ যোনিতে, কুড়ি-  
লক্ষবার; স্থাবর যোনিতে, এগার লক্ষ বার;  
কুমি যোনিতে, দশলক্ষবার; পক্ষিযোনিতে, ত্রিশ-  
লক্ষবার; পশুযোনিতে ও চারি লক্ষবার; মনুষ্য  
যোনিতে জন্ম করে। পরে সাধন বলে সর্বযোনি  
ত্যাগ করিয়া ব্রহ্ম প্রাপ্ত হয়।

যদি বল, জীবের স্বরূপ কি?  
তাহাতে বলিতেছেন, “কেশাঞ্জ” ইতি।  
ঐ জীবের স্বরূপ কেশাঞ্জের শতাংশের  
শত ভাগের এক ভাগ যেরূপ সূক্ষ্ম  
তক্রূপ সূক্ষ্ম।

ঈশ্বর বিভূতিং; জীব অহুচিৎ। জীব অহু  
না হইয়া যদি বিভূ হইত, তবে নিরম্য ও নিরম্ভ-  
ভাব থাকিত না। ঈশ্বর কারণ, জীব কার্য্য।  
কারণ যেরূপ কার্য্যের নিয়ন্তা হয়, ঈশ্বরও তক্রূপ  
জীবের নিয়ন্তা অর্থাৎ প্রবর্তক। জীব কার্য্য  
হইলেও, জীবের স্বরূপতঃ উৎপত্তি নাই। জীব  
অনাদি ঈশ্বরের শক্তি। যেমন বায়ুর সহযোগে  
জল হইতে বৃহৎ হয়, তক্রূপ পুরুষের সহযোগে  
প্রকৃতি হইতে জীবের প্রাণাদি উপাদি সকল  
উৎপন্ন হয়। সমুদ্রে যেমন নদী সকল বা মধুরসে  
অপর সকল রস লীন হয়, তক্রূপ প্রাণের পুরুষই  
উহা লীন হয়। নাম ও রূপের সহিত উপাদির  
উৎপত্তিতেই জীবের লব্ধি জানিতে হইবে।  
উপাদিতে অতিমান ও অতিনিবেশ হইয়াই  
উপাদির উৎপত্তিতে জীবের উৎপত্তি হয়। উপাদি

নাশেই জীবের নাশ বীকৃত হয়। ঐ জীব অতি  
সূক্ষ্ম পদার্থ ৯৪২।

( ১৯২ পা ) “কেশাগ্রোতি ।” এই  
পঞ্চদশ শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে  
প্রকাশ আছে। “কেশাগ্রশতাংশ” পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক। জীবের স্বরূপ যে  
সূক্ষ্ম, তাহা এই শ্লোকে প্রতিপন্ন  
হইল ১১৫।

( ১৯৩ পা ) “বালাগ্রোতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। এই শ্লোক দ্বারাও জীবের  
সূক্ষ্মত্ব প্রমাণিত করিলেন ৯৬ ॥

( ১৯৩ পা ) “সূক্ষ্মাণামিতি ।” ইহার  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
জীবের স্বরূপ যে সূক্ষ্ম, তাহা ভগবদ্বাক্যে  
প্রমাণিত হইল।

শ্রীভগবান্ উক্তবকে বলিলেন, হে উদ্ভব!  
সূক্ষ্ম পদার্থ সকলের মধ্যে নিরতিশয় সূক্ষ্ম পদার্থ  
যে জীব, তাহা আমি অর্থাৎ উহা আমার চিৎ  
বিভূতি। জীবের সূক্ষ্মত্ব আমার অধীন। শ্রুতিও  
বলেন,—

“এবোহুস্মরায়া চেতনা বেদিতব্যো অগ্নিন্  
প্রাণঃ পঞ্চধা সধিবশেতি ।”

এই অণুস্বরূপ জীব চিত্ত দ্বারা জ্ঞাতব্য, এই  
জীবে প্রাণ পঞ্চ প্রকারে প্রবেশ করে ৯৭ ॥

( ১৯৩ পা ) “অপরিমিতা ইতি ।”  
এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে ।

সন্দেহ হইতে পারে, পূর্বে শ্লোকদ্বারা ভগ-  
বান্দি যদি জীব করেন, এবং ঐ জীব যদি সর্বগত  
বিত্ত্ব করেন, তাহা হইলে শাস্ত্রে যে উক্ত হইয়াছে  
জীবগণ নিরাক্ত, এই নিয়ম থাকে না। এরূপ  
কথা যদিও পাই না, কারণ ভগবান্ হইতেই

জীবের প্রকাশ শুনা যায়। ইহা বলিতেছেন,  
“অজনি চ যস্ময়মিত্যাদি।” শ্রুতি বলেন, “অন্তঃ  
প্রবিষ্টঃ শাস্তা জনানামিতি।” ভগবান্ অন্তর  
মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া জীবগণের শাস্তা করেন ও জীব  
তাঁহার শাস্তত্ব হয়। অতএব ভগবান্ নিজাধীন  
বিভিন্নাংশ জীকে নিজস্বরূপ বলিয়া স্বীকার  
করিয়া তাঁহার নিয়ামক করেন। জীব ও ভগ-  
বানের শাস্ত ও শাসকত্ব সিদ্ধ হইল, তাহাতে  
জীবের সেবকত্ব ভাবও সুতরাং সিদ্ধ হইতেছে।  
অতএব ভগবানের প্রতি জীবের তক্তি আচরণই,  
তাঁহার ধর্ম, ইহাও সিদ্ধ হইল ৯৮ ॥

( ১৯৩ পা ) “তার মধ্যে.....জ্ঞানি  
শ্রেষ্ঠ ॥” এই ৪৩ ও ৪৪ পয়ারের ভাবার্থ  
মরল। তার মধ্যে, উৎপন্ন জীবগণের  
মধ্যে। ঐ জীবগণ স্থাবর ও জঙ্গম  
ভেদে দ্বিবিধ। জঙ্গম আবার (তির্য্যক)  
খেচর, জলচর ও কূচর ভেদে ত্রিবিধ।  
তার মধ্যে, কূচরের মধ্যে মনুষ্যের ভাগ  
অতিশয় অল্প। তার মধ্যে, ঐ অল্প  
মনুষ্যের মধ্যে বৌদ্ধ ও স্ত্রীশ্রীদিই  
অনেক, বেদনিষ্ঠের ভাগ অল্প। বেদ-  
নিষ্ঠের মধ্যে আবার মুখে বেদ মানে  
অর্থাৎ মৌখিক বেদনিষ্ঠই অধিক, ইহারা  
বেদ নিষিদ্ধ পাপ করে, ধর্ম মানে না,  
অথচ মুখে বেদের কথা বলে। ধর্মচারি  
মধ্যে অর্থাৎ প্রকৃত বেদনিষ্ঠের মধ্যে  
আবার কর্মনিষ্ঠের ভাগই অধিক।  
জ্ঞাননিষ্ঠের ভাগ অল্প ৯৩, ৪৪ ॥

( ১৯৪ পা ) “কোটি জ্ঞানি.....  
অশান্ত ॥” এই ৪৫ পয়ারের ভাবার্থ।  
কোটি কোটি জ্ঞানির মধ্যে একজন মুক্ত  
হয়। কোটি মুক্তের মধ্যে প্রকৃত কৃষ্ণ-  
তত্ত্ব মূর্ত্ত। প্রকৃত কৃষ্ণতত্ত্ব নিকামি,

অতএব শাস্ত । ভুক্তি-মুক্তি-সিদ্ধ-কামী  
লোক সকল অশাস্ত ।

কৃষ্ণভক্তের সংসারভর থাকে না । শ্রীকৃষ্ণ-  
কেই একমাত্র ত্রাতা জানিয়া তাঁহাতে ভক্তি  
করিয়া থাকেন । শ্রীকৃষ্ণ ভক্তপালক, অভক্তকে  
রক্ষা করেন না ; এই হেতুই অভক্তের সংসারভর  
উৎপন্ন হয় । শ্রীকৃষ্ণের শরণাগত ভক্তের কোন  
ভয়ই উৎপন্ন হয় না ॥ ৪৫ ॥

( ১২৪ পা ) “মুক্তানামিতি ।” এই  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “কোটিমুক্ত মধ্যে” এই পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক ।

প্রশান্তাঙ্গা অর্থাৎ রাগাদি দ্বারা অকুলযিত  
চিত্ত বা প্রকৃষ্টভাবে শ্রীভগবানে নিষ্ঠায়ুক্ত মনা  
অথবা প্রকৃষ্টানন্দরূপ বা সর্বোপভবরহিত । মুক্ত-  
গণের মধ্যে যাহারা সিদ্ধ, সেই কোটি সিদ্ধগণের  
মধ্যে নারায়ণই পরম ভজনীয় যাহার, এরূপ  
ব্যক্তি সূহর্লভ । অথবা, প্রাকৃত শরীর বিশিষ্ট  
হইলেও সেই দেহাভিমানশূন্য অতএব মুক্ত, এবং  
শ্রীকৃষ্ণ-সেবিতাচারী কোটি কোটি পুরুষের মধ্যে  
শ্রীকৃষ্ণ-সেবিতাচারী ব্যক্তি সূহর্লভ ॥ ১২ ॥

( ১২৪ পা ) “ব্রহ্মাণ্ড ... উপশাখার  
গর্ভ ॥” এই ৪৬ হইতে ৪৯ পয়ার পর্য্যন্ত  
ভাবার্থ সরল । গুরু কৃষ্ণ প্রসাদে, কৃষ্ণ  
রূপায় উপযুক্ত গুরুর লাভ হয় এবং  
গুরু-রূপায় কৃষ্ণ রূপা হয়, তাহাতে  
ভক্তিলতার বীজ প্রাপ্তি হয় । সেই বীজ,  
ভক্তিলতার বীজ । শ্রবণ কীর্তন জল,  
শ্রবণকীর্তনাদিরূপ জল । ব্রহ্মলোক,  
সত্যলোক । তদুপরি, পরব্যোমের  
উপরি । কৃষ্ণচরণ কল্পরক্ষ, কৃষ্ণচরণরূপ  
কল্পরক্ষ । তাঁহা বিস্তারিত হয়, ব্রহ্মাবনে  
শাখাপ্রসঙ্গাদি, বিস্তারিত হয় । ইহা,

এই সংসারে থাকিয়া । যতদিন লতা  
কল্পরক্ষকে আশ্রয় না করে, ততদিন যত্ন-  
সহকারে লতাকে আবরণ করিয়া রাখা,  
মালীর প্রধান কর্তব্য, সেই কর্তব্য কি  
তাহা বলিতেছেন, “যদি বৈষ্ণব” ইতি ।

বৈষ্ণবাপরাধরূপ হাতীমাতা ( মত্ত হস্তী )  
উখিত হইয়া লতার মূল উচ্ছেদ করিলে লতা  
শুকায়িয়া যায় । বৈষ্ণবেরা সংসারকে চিদানন্দময়  
বোধ না করিলেও, কল্পনাময় বোধ করেন না ;  
অতএব তিনি সংসারে বশ্তঃ আসক্ত না হইলেও  
কার্যতঃ আসক্তের জ্ঞান থাকায়, তদর্শনে তাঁহা-  
দিগের প্রতি দোষদৃষ্টি হইলেই বৈষ্ণবাপরাধ ঘটে ।  
এই অপরাধ যাহাতে না ঘটে, তদ্বিধয়ে সতর্ক  
থাকাই উচিত । কেন না কৃষ্ণভক্তের নিকট  
অপরাধ হটলে, সেই অপরাধ প্রবল হইয়া ভক্তি-  
বীজকে নষ্ট করে । তাতে মাঝী ইত্যাদি, মালী  
যেমন আবরণ করিয়া হস্তী হইতে লতাকে রক্ষা  
করে, তদ্রূপ সাধক যত্নপূর্বক মহাপরাধ হইতে  
ভক্তিলতাকে রক্ষা করিবে । বৈষ্ণবাপরাধ বলিতে  
অল্প দশবিধ নামাপরাধ উপলক্ষিত হয় । বৈষ্ণবা-  
পরাধের জ্ঞান ভোগবাহাদি উপশাখার প্রতিও  
দৃষ্টি রাখা কর্তব্য ।

নিমিক্রাচার কুটিনাটি, শাস্ত্র নিমিক্র  
কার্যে চিন্তের অতিশয় আবেশ । লাভ,  
ধনাদিলাভ । প্রতিষ্ঠা, বশঃপ্রিয়তা ।  
ইহারা, উপশাখা ॥ ৪৬-৪৯ ॥

( ১২৪ পা ) “সেকজল ... পুরুবার্ধ ॥”  
এই ৫০ হইতে ৫২ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ  
সরল ।

যদি উপশাখা জন্মায় তবে সেক জল পাইয়া  
উপশাখাই বৃদ্ধি পায়, মূল শাখা আর বৃদ্ধি পায়  
না । অতএব উপশাখা জন্মিলেই সেক করা  
কেনিবে । ভক্তিলতা কল্পরক্ষকে আশ্রয় করিলে,

মানী তদবলম্বনে অনার্যসেই বস্তুরূপে আরোহণ করিয়া স্রুপক প্রেমকল পাড়িয়া আশ্রয়ান করেন । একবার কল্পবৃক্ষ লাভ হইলে, ঐ বৃক্ষের সাক্ষাৎ সেবন তিন্ন মালীর আর কোন কর্তব্য থাকে না । কল্পবৃক্ষের সেবা দ্বারা প্রেমকলের আশ্রয়ান হইয়া থাকে । প্রেমই পরম পুরুষার্থ । ধর্ম্মাদি অপর পুরুষার্থসকল, প্রেমের তুলনার অতি তুচ্ছ ॥৫০।৫২॥

( ১৯৪ পা ) “ঋদ্ধেতি ।” এই বিংশ শ্লোকের ভাৎপর্য্য শ্লোকার্ধে প্রকাশ আছে । “যার আগে তুণ” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২০ ॥

( ১৯৫ পা ) “শুদ্ধভক্তি.....লক্ষণ কয় ॥” এই ৫৩ পদ্যের ভাবার্থ । ঐ প্রেম, শুদ্ধভক্তি হইতে আবির্ভূত হয় । অতএব সেই শুদ্ধভক্তির লক্ষণ বলিতেছেন, “অন্য বাঞ্জী” ইত্যাদি । তথাহি রসায়নে—

“অগ্ন্যভিলাষিতাশূন্যং জ্ঞানকর্মাধ্যানাবৃতম্ ।  
আহুকুল্যেণ কৃষ্ণাহুশীলনং ভক্তিকল্পম ॥”

নষ্টকর্ম্মা-মাধুর্য্য পূর্ণ, স্বীয় অত্যাশ্রয়া লীলা দ্বারা চর্য্যচর বিশ্বের আকর্ষণকারী, পরম প্রেমাস্পদ, স্বয়ং ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণের নিমিত্ত বা শ্রীকৃষ্ণসম্বন্ধি আহুকূল্যমর অহুশীলনই ভক্তি বা ভক্তির স্বরূপলক্ষণ । যে বস্ত্ব বাহ্যে, তাহাই তাহার স্বরূপ । স্বরূপের পরিচায়ক যে লক্ষণ, অর্থাৎ যে লক্ষণ স্বরূপের পরিচয় প্রদান করে, তাহাই স্বরূপলক্ষণ বা মুখ্যবিশেষণ । অহুশীলন শব্দটি শীল ধাতু হইতে উৎপন্ন । ক্রিয়া শব্দ দ্বারা যেমন কৃ ধাতুর অর্থমাত্রই উক্ত হয় ; অহুশীলন শব্দ দ্বারা তদ্রূপ শীল ধাতুর অর্থমাত্রই উক্ত হইয়া থাকে । শীল ধাতুর অর্থ শীলন । ঐ শীলন বিবিধ ; প্রবৃত্ত্যাত্মক ‘শারীর, মানস, বাচিক চেষ্টা ও শ্রীতিবিধি’াত্মক ‘প্রসিক মানসভাব ও নিবৃত্ত্যাত্মক ‘শারীর, মানস, বাচিকচেষ্টা ও শ্রীতিবিধি’

দাত্মক প্রসিক মানসভাব । মানসভাব, মনোবৃত্তি । প্রাসিক মানসভাব, স্থায়ী ও সকারী ভাবসকল । শ্রীতিবিধিদাত্মক, রাগদ্বৈষায়ক । বাচিক চেষ্টা, কীর্তন । মানসচেষ্টা, স্বয়ং শারীর চেষ্টা, শ্রবণাদি । নিবৃত্ত্যাত্মক চেষ্টা, ভাগ চেষ্টা । প্রবৃত্ত্যাত্মক চেষ্টা, গ্রহণ চেষ্টা । আহুকূল্যমর, কটিকর । অতএব সাক্ষাৎ শ্রীকৃষ্ণের নিমিত্ত বা তৎসম্বন্ধি বলিয়া পরম্পরায় শ্রীকৃষ্ণজন্য যে কিছু শারীরবি চেষ্টা ও ভাব, তাহা যদি শ্রীকৃষ্ণের অকটিকর না হইয়া কটিকর হয়, তাহা হইলে, তাহা ভক্তি বলিয়া পরিচিত হইয়া থাকে । অকটিকর চেষ্টার বা ভাবের ভক্তিও সিদ্ধ হয় না । ঐ ভক্তি সোপাধিকী ও নিরুপাধিকী ভেদে বিবিধ । ভক্তির উপাধি দুইটি ; একটি অগ্ন্যভিলাষ, অপরটি অগ্ন্যমিশ্রণ, উপাধিবিশিষ্টা-ভক্তির নাম সোপাধিকী বা গোণীভক্তি এবং উপাধিশূন্যা ভক্তির নাম নিরুপাধিকী বা মুখ্য ভক্তি । মূলোক্ত উত্তমা শব্দের অর্থ মুখ্য । অতএব পূর্কোক্ত অহুশীলন যদি অন্যাভিলাষ শূন্য ও অন্যমিশ্রণ শূন্য হয়, তবে তাহাকে উত্তমা ভক্তি বলা যায় । এইটি ভক্তির তটস্থলক্ষণ বা গোণ বিশেষণ । অন্যাভিলাষ, ভোগবাসনা ও মোক্ষবাসনা প্রভৃতি । অন্যমিশ্রণ, জ্ঞানকর্ম্মাদির আবরণ । জ্ঞানকর্ম্মাদি, জীব ও ব্রহ্মের ঐক্যজ্ঞান, স্মৃতিশাস্ত্রোক্ত নিত্য নৈমিত্তিকাদি কর্ম্ম, বৈরাগ্য, সাংখ্য, অষ্টাঙ্গযোগ প্রভৃতি । অতএব পূর্কোক্ত অহুশীলন যদি ভুক্তিমুক্তি-কামনা-রহিত হইয়া কেবল শ্রবণ-কীর্তনাদিমর হয়, তবে তাহাকে উত্তমা ভক্তি বলা যায় । এই উত্তমা ভক্তি নির্ভাণ, শুদ্ধ, কেবলা, মুখ্যা, অনন্যা, অকিঞ্চনা, ও স্বরূপসিদ্ধা প্রভৃতি নামে অভিহিত হইয়া থাকেন । জ্ঞানাদির মিশ্রণ ও ভক্তি তিন্ন অন্য অভিলাষের সম্পর্ক ঋ থাকতেই ভক্তির উত্তমত্ব না শুদ্ধত্ব । ইতি লক্ষণ ।

অতএব এই শুদ্ধভক্তি হইতে প্রেম হয় । স্বয়ং, বলেন ॥ ৫০ ॥



( ১৯৫ পা ) “সর্কোপাদীতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। নারদ পঞ্চরাত্নোক্ত এই শ্লোক দ্বারা প্রমাণ করিলেন, কেবল শুদ্ধাভক্তি হইতেই প্রেম উৎপন্ন হয়। তৎপরত্ব শব্দের অর্থ আনুকূল্য। সর্কোপাদি-বিনিমুক্ত বলিতে অন্য-অভিলাষ শূন্য, সেবন বলিতে অনুশীলন, নির্মূল বলিতে জ্ঞান-কর্মাদি শূ-ন্য, জ্ববীকর্ণ বলিতে শারীর, মানস ও বাচিক চেষ্টা দ্বারা ; অন্য অর্থ নহে ॥ ২১ ॥

( ১৯৫ পা ) “নদগুণেতি ।” এই দ্বাবিংশ ও ত্রয়োবিংশ শ্লোক দুইটির দীকা ও বাঙ্গলা আদির ৫৪ পৃষ্ঠায় দেখিবেন। ইহার তাৎপর্য ভাবার্থ ব্যাখ্যায় ২০৩ পৃষ্ঠায় দেখুন। শ্লোকোক্ত অহৈতুকী বলিতে অন্যান্যভিলাষশূন্য। অব্যবহিতা বলিতে জ্ঞান-কর্মাদি-শূন্য। নিগুণ ভক্তিযোগ বলিতে উত্তমা ভক্তি। ভাগবতোক্ত এই শ্লোক দ্বারা শুদ্ধাভক্তি হইতে প্রেম হয়, ইহা প্রমাণ করিলেন ॥ ২২।২৩ ॥

( ১৯৫ পা ) “স এবতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য। ভাগবতোক্ত এই শ্লোক দ্বারাও শুদ্ধাভক্তি হইতে প্রেম হয়, ইহা প্রতিপন্ন করিলেন।

নিগুণ ভক্তিযোগ আত্যন্তিক অর্থাৎ সর্ব কলের অন্তিম ফল পঞ্চমপুরুষার্থ প্রেমরূপে পরিণত হয়। ইহাই প্রকৃত মুক্তি। যেখানে আত্যন্তিক শব্দে সাধুরা মুক্তি হয়, সেখানে উহা আত্যন্তিকের দ্বিতীয় বস্তুরূপে প্রসিদ্ধ। তদা

ভক্তিতে ফল কামনা না থাকায়, এখানে আত্য-  
ন্তিক বলিতে প্রেমই। যদি এরূপ বল, প্রেম  
মুক্তি নহে, সন্ধাদিশুণত্রয়কে নাশ পূর্বক ভগ-  
বৎসাক্ষাৎকারই মুক্তি ; তদন্তর, ভগবৎসেবার  
অমুকুল সালোক্যাদি ও ভগবৎসাক্ষাৎকার-প্রাপ্ত-  
পুরুষগণ স্বভাবতঃই শুদ্ধাভক্তি আচরণ করিয়া  
প্রেম লাভ করেন, ইহা প্রসিদ্ধ। ইহা বলি-  
তেছেন, “যেনেতি।” অর্থাৎ তাঁহারা শুদ্ধা  
ভক্তিকে কখন ভাগ না করিয়া, প্রেম দ্বারা  
আমার সাক্ষাৎকার জন্য বিশেষরূপে সমর্থ হয়,  
অর্থাৎ প্রেমময় লীলা দেখেন। তাঁহাদের ন্যায়  
অন্যের, আমার সাক্ষাৎকার হয় না অর্থাৎ শুদ্ধা  
ভক্তি আচরণ ব্যতীত আমার দর্শন দুর্লভ।  
অথবা, ভগবৎসেবার প্রতিকূল সালোক্যাদি-  
প্রাপ্তপুরুষগণের প্রেম না থাকায় আমার প্রেম-  
বিশেষপ্রাপ্তিজন্য শুদ্ধাভক্তিকে কখন তাঁহারা  
ভাগ করেন না ॥ ২৪ ॥

( ১৯৫ পা ) “ভুক্তি.....না হয় ।  
এই ৫৪ পয়ারের ভাবার্থ সরল। ভুক্তি-  
মুক্তি বাঙ্গা, ভোগ ও মোক্ষ বাসনা।  
সাধন করিলে, ভক্তি আচরণ করিলে  
ইহাতেও প্রতিপন্ন করিলেন, শুদ্ধাভক্তি  
ব্যতীত প্রেম হয় না ॥ ৫৪ ॥

( ১৯৫ পা ) “ভুক্তি-মুক্তিরিতি ।”  
এই শ্লোকের তাৎপর্য। “ভুক্তিমুক্তি”  
পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক। ভোগ ও  
মোক্ষবাসনা হৃদয়ে থাকিলে ভক্তি  
আচরণে প্রেম হয় না কেন? তাহা  
এই শ্লোকে বলিতেছেন।

শুদ্ধাভক্তি আচরণকারির ভোগ ও মোক্ষ-  
কামনা লভ্য নহে। কারণ, ভোগবাধনামুক্ত  
ভক্তির নাম সর্কোপাদী ভক্তি। মোক্ষবাসনামুক্ত  
ভক্তির নাম নিগুণ ভক্তি। সর্কোপাদী ভক্তি হয়

রাজস, না হয় ভাসন বলিয়া, উহাকে সত্ত্ব ভক্তিও বলা হইয়া থাকে। আর্ন্ত ও অর্থাৎ ব্যক্তিগণ উহার অধিকারী এবং ইন্দ্রগাদি ভোগ উহার ফল। ঐ সকামা ভক্তি সাধিকী হইলে, মোক্ষবাসনায়ুক্ত হইয়া থাকে। তখন আর উহাকে সকামা না বলিয়া নিষ্কামা বলা হয়। মুহুর্ৎগুক্তিগণই উহার অধিকারী। এই মোক্ষ-বাসনায়ুক্ত নিষ্কামা ভক্তি প্রায়ই জ্ঞানযোগ বা কর্মদ্বারা মিশ্রিত হয়। কর্ম দ্বারা মিশ্রিত হইলে, ইহাকে কর্মমিশ্রা। যোগ দ্বারা মিশ্রিত হইলে, ইহাকে যোগমিশ্রা এবং জ্ঞান দ্বারা মিশ্রিত হইলে, ইহাকে জ্ঞানমিশ্রা ভক্তি বলা যায়। কর্মমিশ্রা ভক্তির ফল চিত্তশুদ্ধি, যোগমিশ্রা ভক্তির ফল পরমাত্ম সাক্ষাৎকারের পর ক্রমমুক্তি এবং জ্ঞানমিশ্রা ভক্তির ফল ব্রহ্ম সাক্ষাৎকারের পর সর্বোমুক্তি। কর্মমিশ্রা ভক্তির অন্তর্গত নিষ্কাম কর্মসকল সাক্ষাৎ ভক্তি না হইয়াও ভক্তির ফল চিত্তশুদ্ধির উৎপাদন দ্বারা ভক্তিত্বের আরোপে ভক্তিরূপে সিদ্ধ অর্থাৎ তদাকারে আকারিত হয় বলিয়াই উহাকে আরোপসিদ্ধা ভক্তি বলে। এক্ষণে যোগমিশ্রা ভক্তির অঙ্গীভূত আসনপ্রাণায়ামাদিসকল এবং জ্ঞানমিশ্রা ভক্তির অঙ্গীভূত জীৱত্রৈলোক্য জ্ঞান সাক্ষাৎ ভক্তি না হইয়াও ভক্তির সঙ্গ বশতঃ সিদ্ধ অর্থাৎ ভক্তির ফল যোগ উৎপাদন দ্বারা ভক্তির আকারে আকারিত হয় বলিয়া, উচ্যদিকে সঙ্গ-সিদ্ধা বলে। উত্তমা ভক্তি সত্ত্ব-সম্বন্ধভিত বলিয়া নিঃস্বর্ণ এবং উক্ত অপরাপর ভক্তি সকল হইতে সম্পূর্ণ পৃথক্। কর্ম, যোগ ও জ্ঞান ইহার অধীন ও সুধাপেক্ষী। উত্তমা ভক্তি কর্মজ্ঞানাদির অধীন বা সুধাপেক্ষী নহেন। পরম সম্পূর্ণ স্বাধীন। উত্তমা ভক্তি স্বাধীন ভাবেই কর্মের ফল চিত্তশুদ্ধি, যোগের ফল ক্রম-মুক্তি ও জ্ঞানের ফল সর্বোমুক্তির সহিত নিজের ফল উৎপাদন সাক্ষাৎকার প্রকৃতি সমস্তই প্রদান

করিয়া থাকেন। যদিও এই উত্তমা ভক্তির শ্রবণকীর্তনাদি অঙ্গসকলকে আপাতত কর্ম বলিয়া ও ভজনের অঙ্গসকলাদি অঙ্গসকলকে প্রথমতঃ জ্ঞান বলিয়া এবং ন্যাসমুহাদি অঙ্গ-সকলকে আপাততঃ যোগ বলিয়া বোধ হয় বটে, কিন্তু উহার কর্ম, জ্ঞান ও যোগ নহে। ঐ স্তম্ভি সচ্চিবানন্দময়ী স্বরূপশক্তির পরমা বৃত্তি। স্তম্ভি-বানের নিত্যসিদ্ধ যে স্বরূপশক্তিসকল ঐ সকল বৃত্তির মূল ও আশ্রয়। সিদ্ধ ও সাধকের একত্র সম্মিলনের জন্য সাধকের শ্রবণাদি ইঞ্জির সমূহ ক্ষেত্ররূপেই নির্মিত। সাধকের ইঞ্জিরগণ ঐরূপে নির্মিত না হইলে, সিদ্ধগণের সহিত একত্র মিলন জন্য সাধকগণের সিদ্ধত্ব লাভের সম্ভাবনাই থাকিত না। নিত্যসিদ্ধ স্বরূপশক্তির বৃত্তি সকল, অসিদ্ধ সাধকের আকর্ষণ জন্য তাহাদের ইঞ্জির বৃত্তিতে অবতীর্ণ হইয়া, ইঞ্জিরগণের সহিত একী-ভূত হয় এবং সেই সেই ইঞ্জিরাদির আকারে আকারিত হইয়া শ্রবণ-কীর্তনাদিরূপে আবির্ভূত হয়েন। আনন্দময়ী বৃত্তির অবতারণেই শ্রবণ-কীর্তনাদি সাধকের সম্বন্ধে আনন্দদায়ক হয়। ইহা না হইলে, সাধকের আনন্দ হইত না। স্বরূপশক্তির বৃত্তি সাধকের ইঞ্জিরবৃত্তিতে প্রকাশ পাইলে, উহার দর্শনেই লোকে উচ্যদিকে জ্ঞানকর্মাদিরূপে অনুভব করেন। বস্তুতঃ শ্রবণ-কীর্তনাদি কর্মজ্ঞানাদির অতীত আনন্দময় বস্তু। ভুক্তি ও মুক্তিকে পিণাচী বলিবার তাৎপর্য এই, পিণাচী যেমন উষ্ণ্যু কাদি প্রদর্শন দ্বারা অশান-মিতে লইয়া প্রাণ বিনাশ করে, ভুক্তিমুক্তি স্পৃহাও তজ্জপ স্বর্গ-মুখ ও মুক্তিসুখাদির প্রলোভন দ্বারা কীবেক সংসারে ও আকাশকুহল তুল্য কৈবল্যে আসক্ত করিয়া স্বরূপের তিরোধান করিয়া দেয় ॥ ২৫ ॥

( ১১৫ পা ) "সাধনভক্তি... .. সখ্যরতি আর ॥" এই ৫৫ চাইতে ৫৭ পর্যায় পর্যায় ভাবার্থ। স্তম্ভিবানের

গুণাধি শ্রবণমাত্র তাঁহাতে যে অবি-  
হিন্ন মনের প্রবাহরূপা গতি, তাহাই  
ভক্তি। ঐ ভক্তি ত্রিবিধ; সাধন, ভাব  
ও প্রেম। সাধনভক্তির বিষয় পূর্বে  
বলিয়া, কিরূপে ভাব ও প্রেমভক্তি লাভ  
হয়, এখানে তাহা বলিতেছেন, সাধন-  
ভক্তি।” ইত্যাদি। তথাহি রগামৃত—

“কৃতিসাধ্যা ভবেৎ সাধ্যত্বা সা সাধনাত্তিথা ॥”

যে ভক্তি শারীরিকাদি চেষ্টা দ্বারা সাধ্য  
এবং বাহ্য ভাব ভক্তিকে সাধিত করেন, তিনি  
সাধনভক্তি। গুরুপাদাশ্রয়, মন্ত্রবীকাদি ও শ্রবণ-  
কীর্তনাদি সমস্ত সাধনভক্তি। পূর্বে বলা  
হইয়াছে, শ্রীকৃষ্ণের নিমিত্ত বা শ্রীকৃষ্ণস্বকি  
আনুকূল্যময় অনুশীলনই ভক্তি। এখানে শ্রীকৃষ্ণে  
তৎস্বকি শ্রীকৃষ্ণর পদাশ্রয়াদিরূপ অনুশীলন  
আনুকূল্যময় হওয়াতে, ইহাও ভক্তি। এই সাধন-  
ভক্তি যখন হলাদিনীসমবেতসম্বিৎসার, প্রেমরূপ  
সুখের কিরণ এবং প্রেমের অকুর ও রুচি দ্বারা  
চিত্তের নিষ্কতা সম্পাদক করেন, তখন ইহাকে  
ভাবভক্তি বলে। ইহার অপরা নাম রতি।

অতএব সাধনভক্তি হইতেই রতির  
(ভাবের) উদয় হয়।

আপাততঃ বোধের জন্য ভক্তিকে ত্রিবিধা  
বলা হইয়াছে, কিন্তু বস্তৃতঃ সাধন ও সাধ্যভেদে  
ভক্তি দুই প্রকার। সাধ্যভক্তি শ্রিয়তামরী।  
সাধনভক্তি দ্বারা সাধনীরা ঐ শ্রিয়তাই শাস্ত্রে  
ভক্তিগুণে উল্লিখিত হইয়াছে। যথা—একাদশ  
স্কন্ধে, “তক্ত্যাসঙ্কতরা তক্ত্যা বিব্রত্যাংপুলকাং  
অনুস্মৃতি।” প্রবন্ধ কহিলেন, নরনাথ, সাধন  
ভক্তিজনিত প্রেমভক্তি উপভোগ করিয়া পুলকিত  
শরীর ধারণ করিবে। উক্ত সাধ্যভক্তি আট  
প্রকার,—ভাব, প্রেম, প্রণয়, মেহ, রাগ, হর্ষ,  
অহরাগ ও মহাতর্ষ। পূর্বেক অনুশীলনের

দুইটি অবস্থা। সাধন ও ভাব। বিধবভোগ  
সঙ্গেও সৌভাগ্যবশতঃ যখন জীবের বহিমুখতার  
নিবৃত্তি হয়, তখন জৈবর, আত্মা, পরলোক ও  
কর্মফল এই সকল বিষয়ে বিশ্বাস অন্বে এবং  
তত্ত্ববিষয়ক কিছু কিছু আলোচনার উদয় হইতে  
থাকে। এইরূপে অপ্রাকৃতভাবে আলোচনা  
হইতে হইতে ক্রমশঃ চরমাবহার উপনীত হয়  
এবং শ্রবণ-কীর্তন প্রভৃতি তত্ত্ববিষয়ক ইঞ্জির  
চেষ্টার উদয় হয়। ঐ চেষ্টা প্রথমে সাধনরূপে  
প্রকাশ পায়, উহার চরম ফল প্রেম। বাস্তবিক,  
প্রেমই জীবের একমাত্র নিত্যধর্ম, কিন্তু বতদিন  
তগবন্তবের অভ্যাস না হয়, সেই পর্য্যন্ত অপরিষ্কৃত  
থাকে; তাহাতে কেবল জীবের অবস্থাতেদে  
সাধন ও ভাবরূপে কিঞ্চিৎ নৈমিত্তিকতা দেখা  
যায়। অতএব শ্রীকৃষ্ণবিষয়ক ভাব বাসনারূপে  
আত্মাতে নিত্য বিদ্যমান রহিয়াছে। সাধনভক্তি  
ঐ ভাবকে হৃদয়ে প্রকটিত করিয়া দেয়। এই  
জন্যই ভাবকে, সাধনভক্তি দ্বারা সাধনীর বলিয়া  
নির্দেশ করিয়াছেন। শ্রীকৃষ্ণে বাহাদেব স্বাভা-  
বিক রাগ আছে, তাঁহাদের পক্ষে সাধনভক্তির  
কোন প্রয়োজন নাই। স্থায়ী ও সঞ্চারী নামে  
ভাব দুই প্রকার। মহাভাব পর্য্যন্ত উর্দ্ধ অব-  
স্থাকে ভাব প্রকাশ করে। নিত্যসিদ্ধ ব্রহ্মজনে  
এই ভাব লুকিত হইলেও তাঁহাদের রূপায়,  
প্রপঞ্চগত তত্ত্বগণ ঐ ভাব প্রাপ্ত হন। তাবের  
গাঢ়তা অবস্থাই প্রেম।

তাহার ভাবের। প্রেম বুদ্ধি ক্রমে,  
প্রেমের গাঢ়তা অনুসারে। প্রেম যথা—  
তথাহি রগামৃত—

“সমাখ্যন্থনিতবাত্তো মমদ্ব্যতিশয়স্বকিতঃ।

ভাবঃ স এব সাত্মান্বা বৃথৈঃ প্রেমা নিগম্যতে ॥”

যাহা হইতে চিত্ত অতিশয় বিকৃত হয় এবং  
যাহা শ্রীকৃষ্ণে অতিশয় মমতা সম্পন্ন করে, সেই  
গাঢ়তাপন্ন ভাবকে পতিভেদে প্রেম কলেন।  
অতএব রতির গাঢ়তা অবস্থাই প্রেম।

ও অতিপ্রসাদোৎসেভে প্রেম দ্বিবিধ। ভাবোৎসব আবার বৈধ ও সঙ্গীতগীত ভেদে দুই প্রকার। অতিপ্রসাদোৎসেভে প্রেমও দুই প্রকার, মহাশ্রদ্ধা-জ্ঞান-যুক্ত ও মাধুর্যমাত্র জ্ঞানযুক্ত। অন্তরঙ্গ ভক্ত্যঙ্গের নিরন্তর সেবা দ্বারা পরমোৎসর্গকে প্রাপ্ত হইলে, তাহাকে ভাবোৎসেভে বলে। হরির শীর শীর সঙ্গদানাদিকেই অতিপ্রসাদোৎসেভে প্রেম বলে।

প্রেমের গাঢ়তা অনুসারে প্রেমই স্নেহ, মান, প্রণয়, রাগ, অনুরাগ, ভান ও মহাভাব হয়। স্নেহাদির লক্ষণ পূর্বে বলা হইয়াছে। যদি বল, প্রেমের গাঢ়তানুযায়ী প্রেম কিরূপে স্নেহাদি হয়? তাহাতে সন্দেহান্তে বলিতেছেন, “যেছে বীজ” ইত্যাদি। বীজ, ঠক্কুরীজ। খণ্ডসার, খাঁড়। শর্করা দলুয়া। শিতা, চিনি।

ইক্ষুবীজ হইতে যেমন রস হয়, তদ্রূপ সাধন ভক্তি হইতে ভাব হয়। ইক্ষুরস যেমন উত্তরোত্তর গাঢ় হইয়া উত্তম মিশ্রি হয়, তদ্রূপ ভানও উত্তরোত্তর গাঢ় হইয়া মহাভাবাবস্থা প্রাপ্ত হয়। অতএব স্নেহাদি প্রেমের বিলাস বলিয়া, প্রেম নামে খ্যাত। দলুয়া চিনি ও চিনির যেরূপ ভেদ, তদ্রূপ রাগ ও অহরাগের ভেদ। মিশ্রির সেমন উত্তমাদি ভেদে দ্বিবিধ, প্রেমও ভাব ও মহাভাব ভেদে দ্বিবিধ।

“এই সব” ইতি। প্রেম, স্নেহাদি কৃষ্ণভক্তিরস ও স্থায়ীভাব। এই ভাবে যদি বিভাব ও অনুভাব, সাঙ্ঘিক ও ব্যক্তিচারী (সঞ্চারী) প্রভৃতি ভাবের মিলন হয়, তবে ঐ রস অমৃতের স্মার অপূর্ক আশ্বাদ্য হয়; উহা সন্দেহান্তে বলিতেছেন, “যেছে দধি” ইতি।

শ্রীকৃষ্ণভক্তিরসি ভক্তি বন্দন প্রবণাদি কব্ধ

উপস্থাপিত বিভাব, অনুভাব ও সঞ্চারীভাব দ্বারা আশ্বাদ্যবোগ্যতা প্রাপ্ত হয়, তখন ঐ ভাবকে (রক্তিকে) ভক্তিরস বলা যায়। ভক্তিরস সাকল্যে বারটি। তন্মধ্যে সাতটি গৌণ ও পাঁচটি মুখ্য। বীর, করুণ, অদ্বুত, হান্ত, ভয়ানক, রৌহ ও বীতংস এই সাতটি গৌণ এবং শান্ত, দান্ত, সখ্য, বাৎসল্য ও মধুর এই পাঁচটি মুখ্য ভক্তিরস। প্রত্যেক রসেরই এক একটি করিয়া স্থায়ীভাব আছে। উৎসাহ, শোক, বিষয়, হাস, ভয়, ক্রোধ ও জুগুপ্সা এই সাতটি। বীরাদি সাতটি গৌণরসের স্থায়ীভাব। শান্ত দান্ত, সখ্য, বাৎসল্য ও প্রিয়তা এই পাঁচটি শান্তাদি পাঁচটি মুখ্যরসের স্থায়ীভাব।

“অবিরুদ্ধান্ বিকৃৎসচ্চ ভাবান্ যো বশতাং নরন্।  
সুরাজেব বিরাজেত স স্থায়ী ভাব উচ্যতে ॥”

হস্ত প্রভৃতি অবিরুদ্ধ ও ক্রোধাদি বিরুদ্ধভাব সকলকে বশীভূত করিয়া যে ভাব মহারাজের ভাব বিরাজ করে, তাহাই স্থায়ীভাব।

“বিভাবান্তে হি রত্যাদির্দ্বিত্ব যেন বিভাবান্তে।

বিভাবো নাম স ষেখালখনোদীপনাশ্বকঃ ॥”

যাহা দারা ও যাহাতে স্থায়ীভাবাদির আশ্বাদন করা যায়, তাহাই বিভাব। বিভাব দ্বিবিধ,— আলখন ও উদীপন। আলখন আবার বিষয় ও আশ্রয় ভেদে দুই প্রকার। শ্রীকৃষ্ণ ভক্তিরসের বিষয়ালখন এবং তাঁহার ভক্তগণ আশ্রয়ালখন। শ্রীকৃষ্ণের উদ্দেশে রক্তি উৎসারিত হয় বলিয়া, শ্রীকৃষ্ণকে বিষয়ালখন বলে এবং ঐ রক্তি শ্রীকৃষ্ণ ভক্তগণকে আশ্রয় করিয়া থাকে বলিয়া উদীপন-দিগকে রক্তির আশ্রয়ালখন বলে। যদ্বারা তাবের উদীপন হয়, তাহার নাম উদীপনবিভাব। আলখন বিভাবের চেষ্টা, রূপ ও ভূষণাদি এবং বেশকালাদিভাবের উদীপন করে বলিয়াই ঐ সকলকে উদীপন বিভাব বলে।

“অনুভাবান্ত চিত্তস্থতাবানামবোধকাঃ।”

যাহা অন্তরস্থ ভাবকে বাহিরে প্রকাশ করে

তাহাই অহুতাব। অহুতাব, মিশ্র ও সাবিক  
ভেদে বিবিধ। কেবল মানসিক অহুতাবের নাম  
সাবিক অহুতাব এবং কার, বাক্ ও মানসিক  
মিশ্রিত অহুতাবের নাম মিশ্র অহুতাব। নৃত্য,  
গীত ও হাত্ত মিশ্র অহুতাব। স্তম্ভ, শ্বেদ, রোমাঞ্চ  
অরভেদাদি আটটি সাবিক অহুতাব।

“বিশেষণাতিমুখ্যে চরন্তি স্থারিনঃ প্রীতি ।  
অখোচ্যন্তে অমন্ত্রিংশ্চ ভাবা বে ব্যক্তিচারিণঃ ॥”

যে সকল ভাব স্থায়ীভাবে কখন উদ্ভূত, কখন  
নিমগ্ন হইয়া ঐ ভাবের অভিযুখে সঞ্চরণ করে,  
তাহাদিগকে সঞ্চারী বা ব্যক্তিচারী ভাব বলে।  
ইহা নির্দেহাদি ভেদে তেত্রিশটি। এক রতি  
ভক্ত ভেদে শাস্তাদি পঞ্চ প্রকারে প্রকাশিত হয়।  
বাহ্য হইতে বিষয়োগুণতা ত্যাগ করিয়া মনের  
নিজানন্দে অবস্থিত হয়, তাহাকে শম বলে। শম  
শ্রোধানদিগের প্রায়ই মমতাগন্ধরহিত ও পরমাত্ম-  
বুদ্ধিব্রজিত শ্রীকৃষ্ণবিষয়া রতিকে শান্তিরস বলে।  
বাহ্যের চরিত হইতে নিজেকে নূন বলিয়া অভিমান  
করেন, তাঁহারা হরির অগ্রগৃহ্য, কৃষ্ণ আমাদের  
আরাধ্য একপ জ্ঞানরূপ রতির নাম শ্রীতি বা  
দাত্তরতি। বাহ্যের কৃষ্ণকে তুল্য বলিয়া অভিমান  
করেন, তাহাদিগকে সখা বলে। শ্রীকৃষ্ণে বিশ্বাস-  
ময়ী রতিকে সখ্যরতি বলে ॥ ৫৫ ৫৭ ॥

( ১৯৬ পা ) “বাৎসল্যরতি...পঞ্চ  
প্রধান ॥” এই ৫৮ পয়ারের ভাবার্থ।

“শুরবে যে হরেরস্ত তে পূজ্যা ইতি বিশ্রুতাঃ ।  
অহুগ্রহমরী তেবাং রতি বাৎসল্যমুচ্যতে ॥”

বাহ্যের কৃষ্ণের গুণ বলিয়া আপনাদিগকে  
অভিমান করেন, তাহারা পূজ্য বলিয়া বিখ্যাত।  
শ্রীকৃষ্ণে তাহাদের অহুগ্রহমরী রতির নাম বাৎসল্য  
রতি।

“মিথো হরেশু পাক্ষ্যাস্ত সন্তোগস্তাদিকারণম্ ।  
মধুরপেরণ্যার্য্য প্রীতভাখ্যোদিতা রতিঃ ॥”

শ্রীকৃষ্ণ ও তাহার প্রেরণীর পরস্পর সন্তো-

গের প্রথম কারণ; বাহ্যের অপর নাম মধুর,  
মৃগাকীর সেই রতির নাম প্রিয়তা বা মধুররতি।

পঞ্চবিভেদ, পঞ্চপ্রকার। পঞ্চভেদ,  
পঞ্চবিধ। শাস্ত, দাস্তাদি রস, যথা.—  
শান্ততক্তিরসের গুণ, শ্রীকৃষ্ণনিষ্ঠা। এই  
রসের সক্তিমানসমুষ্টি নরাকার পরস্রম্ব, চতুর্ভূজ  
নারায়ণ, পরমাত্মা ও শাস্ত, দাস্ত, গুচি, বন্দী প্রভৃতি  
গুণসম্পন্ন শ্রীকৃষ্ণই বিষয়ালম্বন। মমতারহিত,  
শ্রীভগবনিষ্ঠ, ভক্তিমার্গপ্রদর্শক সনকাদি আধি-  
কারিক ভক্তগণ আশ্রয়ালম্বন। জ্ঞানিগণও মোক্ষ-  
বাসনা ত্যাগ পূর্বক শ্রীকৃষ্ণভক্তের রূপায় যদি  
ভক্তিবাসনায়ুক্ত হইলেন, তবে তাঁহারাও আশ্রয়-  
লম্বন হইলেন। পরিত্তকাননাদিবাঙ্গী সাধুজনের  
নঙ্গ ও সিন্ধুক্ষেত্রাদি উদীপন বিস্তাব। নাসাগ্র-  
দৃষ্টি, অবধূতের স্থায় চেষ্টা, নিঃস্বপ্নতা ভগবদ্বৈ-  
জনে বিষয়বাহিত্য, ভক্তজনেও অতিশয় ভক্তির  
অভাব, মৌন, জ্ঞানশাস্ত্রে অভিভবিশ প্রভৃতি  
অহুতাব। প্রেলয়বর্জিত অশ্রুপুলকাদি সাবিক-  
তাব। নির্দেহ মতি ও ধৃতি প্রভৃতি সঞ্চারীতাব।

দাত্ততক্তিরসের গুণ, সেবা। এই রসের  
ঈশ্বর, প্রভু, সর্ব্বজ্ঞ ও ভক্তবৎসল প্রভৃতি গুণা-  
বিত শ্রীকৃষ্ণ বিষয়ালম্বন। মমতায়ুক্ত, গৌরব-  
ভাবময়, শ্রীভগবনিষ্ঠ, নিজ আচরণে ধারা অস্তের  
উপকারক, দাস্যসেবাপরায়ণ, অধিকৃতভক্ত,  
আশ্রিতভক্ত, পারিষদ ও অহুগামী এই চারি  
প্রকার ভক্ত আশ্রয়ালম্বন। স্বকা, শঙ্করাদি আধি-  
কারিক দেবতার অধিকৃত ভক্ত। আশ্রিতভক্ত;  
পরম্য, জ্ঞানিচর ও সেবানিষ্ঠ ভেদে ত্রিবিধ।  
কালীর নাগ, জরাসন্ধ কর্তৃক বন্ধ রাজগণ প্রভৃতি  
পরম্য। প্রথমে জ্ঞানী থাকিয়া পরে নোকেচ্ছা  
ত্যাগ পূর্বক বাহ্যের দাস্যে প্রবৃত্ত হন, তাহারা  
জ্ঞানিচর। সনকাদি মুনিগণ এই বিভাগের অন্ত-  
র্গত। বাহ্যের প্রথম হইতেই সেবানিষ্ঠ হন,  
তাহাদিগকে সেবানিষ্ঠ বলে। চন্দ্রকল, হরির  
ও বহুলাক্ষ হরকল সেবানিষ্ঠ ভক্ত। উদব,

দারুক ও শ্রুত দেবাদি কত্রিরগণ ও উপনন্দ প্রভৃতি পোষণগণ পারিবৎ । পুরে হুজ্র ও মণ্ড-নাদি এবং ব্রজে রক্তক, পত্রক ও মধুকর্ভাদি অমু-গামী । ইহাদের মধ্যে বাহারী সপরিবার শ্রীকৃষ্ণে যথোচিত ভক্তি করেন, তাহারী ধূর্ঘাতক । বাহারী শ্রীকৃষ্ণের প্রেরণীবর্গে অধিক আদরযুক্ত, তাহারী ধীরভক্ত । বাহারী শ্রীকৃষ্ণের রূপালাতে গর্কিত থাকিরা কাহারও অপেক্ষা রাখেন না, তাহারী ধীরভক্ত । এই সকল সত্ত্বমপ্রীতিযুক্ত ভক্তের মধ্যে শ্রীকৃষ্ণে গুরুভবুর্দ্ধিবিশিষ্ট প্রহ্লাদ ও শাশ্বাদি পাল্য । উক্ত ভক্ত সকল আবার নিত্যাসিক সাধনসিদ্ধ ও সাধক ভেদে ত্রিবিধ । শ্রীকৃষ্ণের অমুগ্রহ, চরণধূলি ও মহাপ্রসাদ প্রভৃতি উদ্দীপন-ভাব । আজ-পাগনাদি অমুভাব । এই রসের তিনটি অবস্থা ;—প্রেম, মেহ ও রাগ । অধিকৃত ভক্তে ও আশ্রিত ভক্তে প্রেম পর্যন্ত স্থায়ী ; পার্শ্ব ভক্তে মেহ পর্যন্ত স্থায়ী ; পরীক্ষিত, দারুক ও উচ্চবে রাগ পর্যন্ত দৃষ্ট হয় । রক্তকাদি ও প্রহ্লাদাদিতে সকলগুলিই দৃষ্ট হয় । এই রসে অবোগে, যোগ ও বিরোগ এই তিনটি অবস্থা হয় । প্রথম দর্শনের পূর্বের অবস্থার নাম অবোগাবস্থা । দর্শনের পর যে বিচ্ছেদ, তাহা বিরোগাবস্থা । মধ্যাবস্থার সজের নাম যোগাবস্থা । বিরোগে—অজ্ঞে তাপ, ক্লমতা, জাগরণ, অনবস্থা, অধীরতা, অড়তা, ব্যাধি, উন্মান, মূর্ছা ও মৃত্যুভূগ্য অবস্থা । অবোগে—ঔৎসুক্যাদি । যোগে—সিক্তি ও তুষ্টি প্রভৃতি দশা ।—ইতি শ্রীতিসম্বর্ত ।

সখ্যভক্তিরসের গুণ, সত্ত্বমরাহিত্য । এই রসে বিদগ্ধ, বুদ্ধিদান, সুবেশ ও সুখী প্রভৃতি গুণযুক্ত শ্রীকৃষ্ণে বিস্ময়ালম্বন । মমতাবৃত্ত, বিশ্বাসভাবমর জীভগবর্দ্ধিত, নিজ আচরণ দ্বারা অস্তের উপকারক, সখ্যসেবাপরায়ণ, কৃকসখাগণ আশ্রয়ালম্বন । সুস্বৎ, সখা, প্রিয়সখা ও প্রিয়নর্শসখা ভেদে ঐ আশ্রয়-লম্বন চারি প্রকার । বাহারী শ্রীকৃষ্ণ হইতে বরসে কিছু অধিক ও কিকিঞ্চ বাৎসল্যযুক্ত, তাহারী

সুস্বৎ । ব্রজে বলভদ্র, সুভদ্র ও মণ্ডলীভদ্র প্রভৃতি সুস্বৎ । বাহারী শ্রীকৃষ্ণ হইতে বরসে কিকিঞ্চ নুন ও কিকিঞ্চ দাতবিশ্র, তাহারী সখা । ব্রজে বিশাল, যুযুত ও দেবপ্রহ প্রভৃতি সখা । বাহারী বরসে শ্রীকৃষ্ণের তুণ্য, তাহারী প্রিয়সখা । ব্রজে শ্রীপাম, সুপাম ও বহুদাম প্রভৃতি প্রিয়সখা । বাহারী প্রেমদী-রহস্যের সগার ও শূনারভাবশালী, তাহারী প্রিয়নর্শসখা । সুপল ও মধুমঙ্গল প্রভৃতি প্রিয়নর্শসখা । সখো বাৎসল্য ক্রীড়া ও একশয্যায় শয়ন প্রভৃতি অমুভাব । অশ্রুপুলকাদি সমস্তই সাঙ্গিকভাব । হর্ষগর্ভাদি সফারীভাব । সখ্য-রতি উত্তরোত্তর বুদ্ধি প্রাপ্ত হইরা প্রেম, মেহ, প্রণয় ও রাগ এই চারিটি নাম ধারণ করে । পুরে অঙ্কুন, ভীমসেন ও শ্রীপাম বিপ্র প্রভৃতি সখা । এই সখ্যরসেরও দাস্যের জ্ঞান বিরোগে দশ দশা । অবোগে ঔৎসুক্যাদি ও যোগে সিক্তি ও তুষ্টি প্রভৃতি । ইতি সম্বর্ত ।

বাৎসল্যভক্তিরসের গুণ, মেহ । এই রসে কোমলাঙ্গ, নিনয়ী, সর্পসঙ্কনযুক্ত প্রভৃতি গুণ-বিশিষ্ট শ্রীকৃষ্ণে বিস্ময়ালম্বন । মমতাবৃত্ত ও শ্রীকৃষ্ণে আমাদের অমুগ্রহপাত্র এইরূপ বুদ্ধিবিশিষ্ট । নিজ আচরণ দ্বারা অস্তের উপকারক, বাৎসল্যসেবা-পরায়ণ পিতাদি গুরুজনগণ আশ্রয়ালম্বন । ঐ আশ্রয়ালম্বন ব্রজে যশোদা, নন্দ, রোহিণী, উপনন্দ ও তৎপত্নী প্রভৃতি এবং পুরে দেবকী, কুন্তী ও বহুদেবাদি । হাস্য, মৃদু-মধুর বাক্য ও বাল্য-চেষ্টাদি উদ্দীপন বিভাব । মস্তকাস্রাব, আশীর্কাদি ও লালনপালনাদি অমুভাব । শুভ্র বেবাদি সমস্ত ও স্তনহৃৎকরণ এই নয়টি সাঙ্গিকভাব । হর্ষ ও শঙ্কা প্রভৃতি সফারীভাব । এই রতির প্রেম, মেহ ও রাগ এই তিনটির উত্তরোত্তর অবস্থা দৃষ্ট হয় । ইহাতেও বিরোগে পূর্ববৎ দশটি দশা হয় ।

মধুর ভক্তিরসের গুণ, অজ-সজ-সুখদান । এই রসে বেগুমাধুর্ঘ্য, রূপমাধুর্ঘ্য, লীলামাধুর্ঘ্য ও প্রেম-মাধুর্ঘ্যের আধাভূত সারকচূর্কাদি শ্রীকৃষ্ণে বিস্ময়-

লখন । সমতামুক, সন্তোষভাবময়, শ্রীতপবরিত্ত,  
নিজ আচরণ দ্বারা অস্ত্রের উপকারক কান্তসেবা-  
পরায়ণ প্রেমসীগণ আশ্রয়ালখন । মুরলীরব বসন্ত  
কোকিলধ্বনি, নবমেঘ, ময়ূরকণ্ঠ প্রভৃতি দর্শনাদি  
উদ্বীপন বিভাব । কটাক্ষ, হাস্য প্রভৃতি অমু-  
ভাব । স্তম্ভাদি সমস্ত সাংখিকভাব হৃদীগ্র পর্য্যন্ত ।  
আলস্য ও উগ্রতা বর্জিত নির্ঝেদাদি সমস্ত সকারী  
ভাব । ইহাতে প্রেম, বেদ, মান, প্রণয়, রাগ,  
অহুরাগ, ভাব ও মহাভাব এই সকল অবস্থাই দৃষ্ট  
হয় । মধুর রসের বিষয়ালখন শ্রীকৃষ্ণে ধীরোদা-  
ত্তাদি ছিয়ানব্বই প্রকার নায়কগুণই দৃষ্ট হয় ।  
আশ্রয়ালখন শ্রীরাধার তিনশত বাইট প্রকার  
নারিকাগুণই দৃষ্ট হয় । ইতি শ্রীতিসন্দর্ভ ।

কৃষ্ণভক্তিরস, দ্বাদশ প্রকার কৃষ্ণ-  
ভক্তিরস । এ পঞ্চ প্রধান, শাস্তাদি  
পাঁচটি শ্রেষ্ঠ ॥ ৫৮ ॥

( ১৯৬ পা ) “হাস্যাস্তুত...গণন ॥”

এই ১৯ ও ৬০ পরায়ের ভাবার্থ । কৃষ্ণ-  
ভক্তিরস কি কি তাহা, পূর্বে পাঁচটি  
বলিয়া অপর সাতটি বলিতেছেন,  
“হাস্যাস্তুত” ইতি । শাস্তাদি ভক্তে  
হাস্যাদি সপ্তবিধ গৌণী রতি স্বযোগ্য  
বিভাবাদি দ্বারা সপ্তবিধ গৌণরসরূপে  
প্রকাশ পায় । সঙ্কোচময়ী রতি দ্বারা  
আলখনজনিত যে কোন ভাববিশেষ  
স্বয়ং প্রকাশ পায়, তাহার নাম গৌণী-  
রতি । অতএব শাস্তাদি রতি যেমন  
নিজ আধারচ্যুত হয় না, তদ্রূপ হাস্য-  
দ্বিত্ব হয় না । হাস্যাদি কৃষ্ণলীলার  
অনুধারী কিয়ৎকাল কোন কোন ভক্তে  
স্থায়ী হয়, বলিয়া হাস্যাদি, আগন্তক  
স্বরূপ ভক্তিরস ।

“বন্ধমানৈর্বিভাবার্থোঃ পুষ্টিং হাসরতিগতা ।

হাস্যাত্তিক্রিয়সো নাম বৃথৈরেব নিপদ্যতে ॥”

বন্ধমান বিভাবাদি দ্বারা হাসরতি পুষ্ট হইয়া  
হাস্যাত্তিক্রিয়-রস হয় । ইহাতে শ্রীকৃষ্ণ বিষয়ালখন ।  
কৃষ্ণ সদৃশ চোঁটালী বৃদ্ধ ও শিশু প্রভৃতি  
আশ্রয়ালখন । শ্রীকৃষ্ণের উপযুক্ত গমন, বেশ  
এবং চরিতাদি উদ্বীপন বিভাব । নাসা, ওষ্ঠ ও  
গণ্ডস্থলের বিস্পন্দনাদি অল্পভাব । হর্ষ, আলস্য,  
অবহিখা প্রভৃতি সকারী । হাসরতি স্থায়ী ।

অথ হাসরতি,—

“চেতোবিকারোহাস্যঃস্যাৎসাধেবেহাদি বৈকৃত্যং ।

সদৃশিকাশ নাসৌঠকপোল স্পন্দনাদি কৃৎ ॥”

কৃষ্ণসখ্যিকি চেটোথঃ স্বয়ং সঙ্কুচিতাঙ্ঘনা ।

রত্যাঙ্গুগৃহমানোহয়ং হাসো হাসরতির্ভবেৎ ॥”

বাকা, বেশ, চোঁটাদির বিকৃতি বশতঃ চিত্তের  
প্রকাশকে হাস বলে । নয়নের বিকাশ, নাসা,  
ওষ্ঠ, কপোলের স্পন্দনাদি উহার চোঁটা । কৃষ্ণ-  
সখ্যিকি চেটোজনিত হাস স্বয়ং সঙ্কুচিত কৃষ্ণরতি  
কর্ষুক অহুগৃহীত হাসরতি । ইহা স্মিত, হাসিত,  
বিহাসিত, অবহাসিত, অপহাসিত ও অতিহাসিত  
ভেদে ছয় প্রকার ।

অকৃত, অকৃতভক্তিরস ।

“আম্বোচির্ভৈর্বিভাবার্থোঃ বান্যস্বং তক্তচেতসি ।

সা বিশ্বরতিনীতাস্তুতভক্তিরসো ভবেৎ ॥”

নিজোচিত বিভাবাদি দ্বারা বিশ্বরতি যদি  
ভক্তগণের চিত্তে আশ্রয়নীরূপে নীত হয়,  
তাহাকে অকৃত ভক্তিরস বলে । ইহাতে লোকা-  
তীত কিম্বা হেতু শ্রীকৃষ্ণবিষয়ালখন । সর্কবিধ  
ভক্তিই আশ্রয়ালখন । শ্রীকৃষ্ণের চোঁটাবিশেষাদি  
উদ্বীপন । নেত্রবিত্তার, স্তম্ভ, অঙ্গ, গুলকাদি  
অল্পভাব । আবেগ, হর্ষ, অত্যা প্রভৃতি সকারী ।  
বিশ্বরতি স্থায়ী ।

“লোকোত্তরার্ণবীকার্যেবিশ্বরতিভ্যং চিত্তভিঃ ।

অত্র স্মার্যেবিকারয়াদৃষ্টি পুণ্যকামিঃ ॥

পুণ্যকামীকামিঃ স্মার্যেবিকারয়াদৃষ্টি পুণ্যকামিঃ ॥

লোকোত্তরার্থ দর্শনাদি হেতু চিত্তের বিস্তৃতিকে  
বিস্ময় বলে। নেত্রবিস্তারাদি উহার চেষ্টা।  
পূর্বোক্ত রীতিতে নিম্পন্ন বিস্ময়কে বিস্ময়রতি  
বলে। সাফাৎ ও অমুমানভেদে এই রতি দ্বিবিদ।  
বীর, বীরভক্তিরস।

“সৈবোৎসাহরতিঃ স্থায়ী বিভাবাটৈর্নজ্যোতিঃ।  
আনীয়মানা স্বাদাস্তং বীরভক্তিরসো ভবেৎ ॥”

স্থায়ীভাবে উৎসাহরতি স্বযোগ্য বিভাবাদি  
ধারা ভক্ত-রূপে স্বাদ্য হইয়া বীরভক্তিরস হয়।  
ইহাতে যুদ্ধবীর, দানবীর, ময়্যবীর ও দর্শনবীর  
শ্রীকৃষ্ণ বিষয়ালম্বন। তাদৃশ স্তম্ভগুণ আশ্রয়-  
লম্বন। আত্মাশ্রাঘা, বাহ্যাস্ফোটন, স্পর্ধা প্রভৃতি  
প্রতিযোগ্য হইলে উদ্দীপন হয়। স্তম্ভাদি সাত্ত্বিক  
অমুভাব। গর্ভ, আবেগ, যুক্তি, বীড়া, মতি, চর্ষ  
ও স্মৃতি প্রভৃতি সফারী। উৎসাহরতি স্থায়ী।

“হেয়সী সাধুভিঃ স্নাঘ্যকলে যুদ্ধাদিকল্পনি।

সংহরা মনসা শক্তিরুৎসাহ ইতি কীর্তিতে ॥

কালানপেক্ষং তত্র দৈর্ঘ্যাত্মাগোদামাদয়ঃ।

সিন্ধুঃ পূর্বোক্তবিধিনা স উৎসাহরতিভবেৎ ॥”

যাহার ফল সাধুগণের প্রশংসাব যোগ্য, সেই  
যুদ্ধাদিকর্ম্মে চিত্তের মানন্যকে উৎসাহ বলে। কাল-  
বিগম্বের অসহন, বৈধ্যাগ্য ও উত্তম পত্নীতাহার  
চেষ্টা পূর্বোক্ত নিয়মামুসারে সিন্ধু, এই উৎসাহকে  
উৎসাহরতি বলে। করণ, করণভক্তিরস।

“আয়োচিৎতর্বিভাবাদৈর্ননীতা পুষ্টিং সত্যং হ্রদি।

ভগেন্ছোকরতিভক্তিরসোহয়ং করণাভিধঃ ॥”

সৎসকলের হৃদয়ে আয়োচিত বিভাবাদি  
ধারা শোকরতি পুষ্টি-প্রাপ্ত হইলে, তাকে  
করণভক্তিরস বলে। ইহাতে অনিষ্ট প্রাপ্তির  
আম্পদরূপে ভয় শ্রীকৃষ্ণ। শ্রীকৃষ্ণভক্ত ও  
অপ্রাপ্ত ভগবদ্ভক্তি, ভক্তের বন্ধুবর্গ বিষয়ালম্বন।  
ভক্তরূপে কৃষ্ণাদির অমুভাব কর্তা আশ্রয়ালম্বন।  
কর্ম্ম, গুণ, রূপাদি উদ্দীপন। মুখশোভা, বিলাপ,  
সংহরাগতা, শ্বাস, ক্রোধন, ভূগাত বাত ও উরুস্তাভ-  
নাদি অমুভাব। অষ্টসাত্ত্বিক সফারী। শোক-

তাংশে পরিণতা শোকরতিই স্থায়ী। উপযুক্ত  
বলিয়া এই রস প্রায়ই শাস্তাদিবস বর্জিত।

“শোকখিষ্টে বিয়োগাটৈর্ভাশ্চতঃশস্তর স্মৃতঃ।

বিলাপপাতনিশ্বাসমুখশোভমাদিরুৎ ॥

পূর্বোক্ত বিধিনেবাযং সিন্ধুঃ শোকরতিভবেৎ ॥”

ইষ্টবিয়োগাদি ধারা চিত্তের ক্লেশাতিশয়কে  
শোক বলে। বিলাপ, ভূমিপতন, মুখশোভাদি  
ইহান চেষ্টা। পূর্বোক্ত অমুসারে নিম্পন্ন, ইহাকে  
শোকরতি বলে। বৌদ্র, বৌদ্রভক্তিরস।

“নীতা ক্রোধরতিঃ পুষ্টিং বিভাবাটৈর্নজ্যোতিঃ।

হৃদি ভক্তজনসাম্যৌ বৌদ্রভক্তিরসঃ স্মৃতঃ ॥”

ক্রোধরতি স্বযোগ্য বিভাবাদি ধারা ভক্ত-  
রূপে পুষ্টি হইলে, বৌদ্ররস বলে। ইহাতে ক্রোধ,  
তাহার হিত ও অহিত এই রিদিন বিষয়ালম্বন।  
কৃষ্ণবিষয়ে সখী ও জরতী প্রভৃতি হিত ও অহিতে  
সকল ভক্তই আশ্রয়ালম্বন। পরিহাসহাস্য  
বক্রোক্তি, কটাক ও অন্যর প্রভৃতি উদ্দীপন।  
রক্তনেত্রতা, গুষ্ঠবংশন, সৌন্দর্য প্রভৃতি অমুভাব।  
স্তম্ভাদি সার্বিকতাব। আবেগ, জড়তা, গর্ভাধি  
সফারীতাব। ক্রোধরতি স্থায়ী।

“প্রাতিকুপ্যাদির্ভাশ্চতঃশস্তরুৎসাহঃ ক্রোধস্পর্ধাতে।

পাক্ষ্য-ক্রুটিনেত্র-লৌহ-চ্যাদি। কাকরুৎ ॥

এতৎপূর্বোক্তং বৎসিন্ধুঃ বিধঃ ক্রোধরতিং বুধাঃ ॥”

প্রতিকুলতাদি জনিত চিত্তরজনকে ক্রোধ  
বলে। নিষ্ঠুর বচন, ক্রুটি ও রক্তনেত্রাদিরূপ  
বিকার ইহার চেষ্টা। পূর্বোক্ত নিয়মামুসারে নিম্পন্ন  
ক্রোধই ক্রোধরতি। বীভৎস, বীভৎসভক্তিরস।

“পুষ্টিং নিজাবভাবাদৈর্জুগুপ্সার্তরাগতা।

অসৌ ভক্তিরসো বীরৈর্নীর্যতৎসমাখ্য ইতীযাতে ॥”

স্বযোগ্য বিভাবাদি ধারা পুষ্টিপ্রাপ্ত জুগুপ্সা-  
রতিকে পশ্চিমেরা বীভৎসভক্তিরস বলে। ইহাতে  
শাস্তাদিভক্ত বিষয় ও আশ্রয়ালম্বন বীভৎস,  
মুখ বাকা করা, বাধন, কম্প, পুলকাদি  
অমুভাব। মানি, শ্রম, উন্মাদ, মোহ, বৈজ্ঞানি  
সফারী। জুগুপ্সারতি স্থায়ী।



“জুগুপ্সা স্যাদক্ৰম্যাহুতবাচিত্তনিমীলনম্ ।  
তত্ত্ব নিগ্ধিবনং বক্তৃকুণনং কুৎসনাদয়ঃ ।  
রতেরনুগ্রহাঙ্কাতো সা জুগুপ্সারতিমম ॥”

অহ্মদ্য বস্তুর অমুত্তবজনিত চিত্ত নিমীলন জুগুপ্সারতি । নিগ্ধিবন, মুখকৌটীল্য ও কুৎসনাদি ইহার ক্রিয়া । শ্রীকৃষ্ণরতি কর্তৃক অমু-  
গৃহীত রতিকে জুগুপ্সারতি বলে । বিবেক ও  
প্রায়িক ভেদে বিবিধ । ভয়, ভয়ানক ভক্তিরস ।

“বক্ষ্যমানৈর্নিকিতাবান্যৈঃ পুষ্টিং ভয়রতিগতা ।  
ভয়ানকাত্তিমো ভক্তিরসো ঘীরকুদীর্ঘ্যতে ॥”

স্বযোগ্য বিভাবাদি দ্বারা পুষ্টি প্রাপ্ত ভয়-  
রতিকে পশুভেতা ভয়ানক ভক্তিরস বলেন ।  
ইহাতে শ্রীকৃষ্ণ ও দাক্ষণ এই দুইটি আলম্বন ।  
ভয়মধ্যে ভক্তগণ অপরাধী হইলে, কৃষ্ণ হইতে  
ভয় ; আর বাহারা যেরূপ বশতঃ সর্বদা শ্রীকৃষ্ণের  
অনিষ্ট দর্শন করেন, একরূপ কৃষ্ণ-বন্ধুগণের দর্শন  
শ্রবণ বা স্মরণ হেতু দাক্ষণ । এই বিবিধ ভক্তই  
এই রসের আশ্রয় । ক্রকুটি প্রভৃতি উদ্দীপন ।  
সুখশোষ, উচ্ছ্বাস, উদ্‌ঘর্ষণ, রক্ষাকর্তার অদেষণাদি  
অমুভাব । অশ্রু ভিন্ন সাধিকভাব । ত্রাস,  
স্মরণ, আবেগ, দৈন্যাদি সঞ্চারী । ভয়রতি স্থায়ী ।

“ভয়ং চিত্তাঘ্রিচাঞ্চল্যমস্তথোরক্ষণাদিভিঃ ।  
আত্মগোপন-হুচ্ছ্বাস-বিদ্রব-ভ্রমনাদিকুৎ ।  
নিশ্চয়ং পূর্ব্ববাদিপং বৃথা ভয়রতিং বিহুঃ ॥”

শাপ ও ভয়ানক দর্শনাদি দ্বারা চিত্তের  
সাতিশ্বর চাঞ্চল্যকে ভয় বলে । আত্মগোপন,  
ভ্রমাদি ইহার ক্রিয়া । ভয়কে ভয়রতি বলে ।

শাস্তাদি রসের আশ্রয়ালম্বন নিরূপণ  
করিতেছেন, “শান্তভক্ত” ইত্যাদি ।  
নববোধেস্ত্র ; কবি, হবি, অস্তরীক্ষ,  
প্রবুদ্ধ, পিপ্পলায়ন, আবির্ভোজ, জবিড়,  
চমশ, করভাজন । সনকাদি ; সনক,  
সনন্দ, সনাতন ও সনৎকুমার । ইহার  
শান্তভক্ত । পুনে, দ্বারকায় । মধুররসে

ভক্তমুখ্য অর্থাৎ ব্রজদেবীগণই মধুররসের  
মুখ্যভক্ত ; মহিষীগণ ও লক্ষ্মীগণ গৌণ-  
ভক্ত, ইহারা অসংখ্য ॥ ৫৯৬০ ॥

( ১৯৬ পা ) “পুনঃ কৃষ্ণরতি ………  
ভয় হৈল ॥” এই ৬১ ও ৬২ পয়ারের  
ভাবার্থ । পুনঃ কৃষ্ণরতি অর্থাৎ পঞ্চবিধ  
স্থায়ীভাবাখ্যা রতি দুই প্রকার অর্থাৎ  
আধার ভেদে দ্বিবিধ প্রকার হয় ।  
ঐশ্বর্যজ্ঞানমিশ্রা ও ঐশ্বর্যজ্ঞানশূন্যা  
কেবলা । কেবলারতির স্থান ও লক্ষণ  
বলিতেছেন, “গোকুলে” ইতি । ঐশ্বর্য-  
জ্ঞানযুক্তা মিশ্রারতির স্থান বলিতেছেন,  
“পুরীদ্বয়ে” ইতি । পুরীদ্বয়ে, মথুরা ও  
দ্বারকায় । মিশ্রা ও কেবলারতির ভেদ  
দেখাইতেছেন, “ঐশ্বর্যজ্ঞান” ইত্যাদি ।

ঐশ্বর্যজ্ঞানপ্রধানাতে, যে রতিতে ঐশ্বর্যজ্ঞান  
প্রধান হইয়াছে তাহাতে অর্থাৎ ঐশ্বর্যজ্ঞানযুক্তা  
মিশ্রারতিতে প্রেমের বৃত্তিসকল যথেরূপে  
প্রসারতা লাভ করিতে না পারায় প্রেম সঙ্কচিত  
হইয়া যায় । ঐশ্বর্যজ্ঞানশূন্যা কেবলারতিতে  
প্রেমের বৃত্তিসকল পরাকাষ্ঠা লাভ করে বলিয়া,  
ঐ প্রেমের সঙ্কোচ বা বিকাশ দৃষ্ট হয় না । উহা  
সদা একরূপেই অবস্থান করে । কেবলারতী  
এই যে, তিনি ঐশ্বর্য দেখিলেও মানেন না ।  
যথা, পূর্তনাবধাদি শ্রীকৃষ্ণের অনৌকিক ঐশ্বর্য  
অবলোকন করিয়াও স্ব-স্বভাবের সঙ্কোচ না  
হইয়া বৃদ্ধিই হইয়াছিল । ঐশ্বর্যজ্ঞানে প্রীতির  
সঙ্কোচ হয়, তাহার উদাহরণ দিতেছেন, “শাস্ত”  
ইত্যাদি । মিশ্রারতিতে শাস্ত ও দাস্যরসে ঐশ্বর্য-  
জ্ঞান কোন কোন স্থলে প্রেমের উদ্দীপন হয়,  
এবং বাৎসল্যে সখে ও মধুররসে কোন কোন  
স্থলে প্রেমের সঙ্কোচন হয় । বাৎসল্যে ঐশ্বর্য-  
জ্ঞান প্রেমকে সঙ্কচিত করে, ইহা প্রথমে দেখা-  
ইতেছেন, “বসুদেব” ইতি । শ্রীকৃষ্ণ যখন

দেবকী ও বসুদেবের চরণ বন্দন করিলেন, তখন তাঁহারা তাঁহার পূর্বদৃষ্ট ঐশ্বর্য স্মরণ করিয়া মনে ভয় পাইলেন ॥ ৩১৬২ ॥

( ১১৬ পা ) “দেবকীতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীকৃষ্ণের ঐশ্বর্য্য স্মরণ করিয়া দেবকী ও বসুদেব যে মনে ভয় পান, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক । অতএব ঐশ্বর্য্যজ্ঞানে বাৎসল্যরসে প্রেম সঙ্কুচিত হইল ॥ ২৬ ॥

( ১১৬ পা ) “কৃষ্ণের... বিনয় ॥” এই ৬৩ পয়ারের ভাবার্থ । সখে ঐশ্বর্য্য জ্ঞান প্রেমকে সঙ্কুচিত করে, তাহা দেখাইতেছেন, “কৃষ্ণের” ইতি । অর্জুন শ্রীকৃষ্ণের ঐশ্বর্য্যদর্শনে ভীত হইয়া নিজের পুষ্টতার নিমিত্ত ক্ষমা প্রার্থনা করিলেন ॥ ৩০ ॥

( ১১৬ পা ) “সখেতি ও মন্বৈতি ।” এই দুই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীকৃষ্ণের ঐশ্বর্য্য দেখিয়া অর্জুন যে ক্ষমা প্রার্থনা করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক । অতএব সখে ঐশ্বর্য্যজ্ঞানে প্রেমের সঙ্কোচন হয় ॥ ২৭২৮ ॥

( ১১৭ পা ) “কৃষ্ণ যদি... হৈল ত্রান ॥” ৬৪ পয়ারের ভাবার্থ । মধুররসে ঐশ্বর্য্যজ্ঞান প্রেমকে সঙ্কুচিত করে, তাহা দেখাইতেছেন, “কৃষ্ণ” ইতি । মধুররসাত্মিণী রুক্মিণীদেবী শ্রীকৃষ্ণের পরিহাসবাক্যে ত্যাগ ভয়ে ভীত হইলেন ॥ ৩৪ ॥

( ১১৭ পা ) “তস্যঃ ২ দুঃখেতি ।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীকৃষ্ণের ত্যাগ ভয়ে রুক্মিণী

দেবী যে, ভীত হন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক । অতএব মধুরেও ঐশ্বর্য্যজ্ঞান প্রেমকে সঙ্কোচ করে ॥ ২৯ ॥

( ১১৭ পা ) “কেবলার... সে মানে ॥” এই ৬৫ পয়ারের ভাবার্থ । কেবলারতিতে প্রেমের রুস্তিসকল পরাকাষ্ঠা লাভ করে, তাহা বলিতেছেন, “কেবলার” ইতি । পূর্বকথিত প্রকার প্রেমের সঙ্কোচবিকাশাদি গোকুলে দৃষ্ট হয় না । ব্রজবাসিনী শ্রীকৃষ্ণের ঐশ্বর্য্য দেখিয়াও তাহা মনে স্থান দেন না । ঐশ্বর্য্য না জানে, ঐশ্বর্য্য অনুভব করিতে পারে না ।

যেমন প্রকৃত ইঞ্জিরসকল নিজ নিজ বিষয় গ্রহণ করে, অর্থাৎ আকাশের সাত্বিকাংশ হইতে উৎপন্ন শব্দেঞ্জির আকাশের গুণ শব্দকে গ্রহণ করে, স্পর্শাদি গ্রহণ করে না, দর্শনেঞ্জির রূপাদি গ্রহণ করে শব্দাদি গ্রহণ করে না; তজ্জপ ভক্তের মন ও ইঞ্জিয়াদির উপাদান রতি । ষাঁহার ঐশ্বর্য্য প্রধানরতি, তিনি ঐশ্বর্য্য অমুভব করেন । ষাঁহার কেবলারতি, তিনি ঐশ্বর্য্য দেখিলেও অমুভব করিতে পারেন না । কেবলারতি ঐশ্বর্য্যকে আবৃত করিয়া রাখে, পরন্তু লবণাকরের ন্যায় ঐশ্বর্য্য-মাধুর্য্যের পোষক হয় ।

নিজ সঙ্ক, আমার সখা, আমার পুত্র, আমার পতি; এরূপ সঙ্ক । মানে, স্বীকার করে ॥ ৩৫ ॥

( ১১৭ পা ) “এয়া চোপনিষন্তি-রিত্তি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

শ্রীকৃষ্ণের ঐশ্বর্য্য দর্শন করিলেও কেবলার প্রেম সঙ্কুচিত হয় না, ইহা দেখাইতে প্রথমে কেবল বাৎসল্যরতির উদাহরণ দিতেছেন,

“ক্রমোক্তি।” ঐশ্বর্যাদর্শনেও কেবলার প্রেম পরাকাষ্ঠা লাভ করে, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক। যশোদার শুদ্ধ বাৎসল্যরতি, ঐশ্বর্যজ্ঞানবজ্জিত। অতএব শ্রীকৃষ্ণের যুগে বিশ্বরূপদর্শনরূপ ঐশ্বর্য সন্যাকরূপে ক্ষুরিত হইলেও, উৎপাতবোধে পূর্নোপেক্ষা অধিকতর পুত্রভাবে যশোদার বাৎসল্য রতি পুষ্ট হইয়াছিল ॥ ৩০ ॥

( ১৯১ পা ) “তৎমত্বেতি।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। কেবলার প্রেম ঐশ্বর্য অশুভব করিতে পারেন না এবং ঐশ্বর্য দেখিয়াও মনে স্থান দেন না ও নিজসম্বন্ধ মনে করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক।

বাহার আদি ও অন্ত নাই, পূর্ব ও অপস নাই, যিনি জগতের পূর্বে, পরে, মধ্যে ও বাহিরে বর্তমান রচিয়াছেন, সেই শ্রীকৃষ্ণকে বন্দন করিবার জন্য যশোদা ক্রমাঘরে গৃহস্থিত সমস্ত রজ্জু ঘারা শ্রীকৃষ্ণের কটি বেঁধে করিলেও প্রত্যেক রজ্জুতে ছই আসুল করিয়া কম পড়িতে লাগিল। এতদ্বারা শ্রীকৃষ্ণ বিহুহ প্রকাশ করেন। শ্রীকৃষ্ণ বিহুহাদ ঐশ্বর্য প্রকাশ করিলেও কেবলারতির স্বভাবে যশোদা উহা অশুভব করিতে পারেন নাই। তিনি অতীন্দ্রিয়, অব্যক্ত, মহামারূপধারি শ্রীকৃষ্ণকে নিজ পুত্র জানিয়া প্রাকৃত বাগকের ন্যায় উদ্বুলে বন্দন করেন। কেবলারতি ঐশ্বর্যকে আচ্ছাদন করেন। অতএব কেবলারতিতে ঐশ্বর্য অশুভব হয় না ॥ ৩১ ॥

( ১৯২ পা ) “উবাহেতি।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

ঐশ্বর্য দর্শন করিলেও কেবলা সখ্যরতির প্রেম সঙ্কচিত হয় না, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক। অধবকাপি বধ হেতু শ্রীকৃষ্ণের ঐশ্বর্য সম্পূর্ণরূপে প্রকাশ পাইলেও শ্রীদামাদির উহা অশুভব হয়

নাই। অশুভূত হইলে সখ্যবুদ্ধিতে শ্রীদাম কখনই স্বন্ধে আরোহণ করিতে পারিতেন না ॥ ৩২ ॥

( ১৯৩ পা ) “তত্র গভ্বেতি।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

ঐশ্বর্য দর্শনে কেবলা মধুরতির প্রেম সঙ্কচিত হয় না, এই শ্লোকে তাগ প্রমাণ করিতেছেন। শ্রীরাধা বলিলেন, আমি চলিতে পারিব না। শ্রীকৃষ্ণ বলিলেন, আমার স্বন্ধে উঠ। শ্রীরাধা শ্রীকৃষ্ণের বহুবিধ ঐশ্বর্য দেখিয়াছেন, কিন্তু ঐ সকল ঐশ্বর্যের একাংশ ক্ষুরিত হইলে রাধার নিজভাবের সঙ্কোচ হইত, কখনই স্বাধীনভর্তৃকাভাবে শ্রীরাধা স্বন্ধে উত্তিবার ইচ্ছিত করিতে পারিতেন না ॥ ৩৩ ॥

( ১৯৪ পা ) “পতিস্মৃত্তেতি।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

কেবলার প্রেম সঙ্কোচ হয় না, এই শ্লোকেও তাহা প্রমাণ করিতেছেন। শত শতবার শ্রীকৃষ্ণের ঐশ্বর্য প্রকাশ পাইলেও, কেবলারতির অসাধারণভাবে গোপীগণের নিজভাবের চূর্ট হয় নাই। যদি ঐশ্বর্যের জ্ঞান হইত, তবে ভরসঙ্কোচাদি বশতঃ আপনাদিগকে হীনভ্যনে; নিজভাবান্তরে প্রণয়মানের বশবর্ত্তিনী হইয়া গোপীগণ শ্রীকৃষ্ণকে কিতব ( শঠ ) বলিয়া সম্বোধন করিতে পারিতেন না। অতএব কেবলারতি ঐশ্বর্যকে আচ্ছাদন করিয়া নিজরসের পুষ্ট করেন। ইহা প্রতিপন্ন হইল ॥ ৩৪ ॥

( ১৯৫ পা ) “শান্তরসে.....গাথা।” এই ৬৬ পরায়ের ভাবার্থ। শান্তা সম্পন্ন যে স্থায়ী রতি, তাহাই শান্তরতি। বুদ্ধে অর্থাৎ বুদ্ধির কৃষ্ণকনিষ্ঠতাই শান্তরসের স্বরূপ লক্ষণ।

পূর্বে বলা হইয়াছে, মিশ্রারতিতে শান্ত ও দাস্যরসে ঐশ্বর্যজ্ঞান কোন কোন স্থলে প্রেমের অর্থাৎ কৃষ্ণকনিষ্ঠতার উদ্দীপন অর্থাৎ বুদ্ধি পায়

তাহা এখানে দেখাইতেছেন, “শাস্তরসে” ইতি। শাস্তরসে সামান্যারতির লাভ হইলেও ইহাতে শম অর্থাৎ ক্রমৈকনিষ্ঠতার প্রাচুর্য্য হেতু তৎ-প্রবৃত্তি প্রদিক্কা। শ্রীকৃষ্ণের ঐশ্বর্য্যজ্ঞান ক্রমৈক-নিষ্ঠতা বুদ্ধির বর্দ্ধক। শম শব্দের অর্থ যে ক্রমৈকনিষ্ঠতা, তাহা শ্রীভগবান উদ্ধবকে নিজ শ্রীমুখে বলিয়াছেন।

শ্রীমুখগাথা, শ্রীমুখের কথা ॥ ৬৬ ॥

( ১৯৮ পা ) “শমো গরিষ্ঠতেতি ।”

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “শাস্তরসে” এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক। শ্রীভগবৎবতিমাত্রই রম। ক্রমৈকনিষ্ঠতারূপ কার্য্য দ্বারা বতিরূপ কারণ লক্ষিত হইতেছে। অতএব শাস্তরতি ব্যতীত বুদ্ধির ক্রমৈকনিষ্ঠতা দুঃলভ ॥ ৩৫ ॥

( ১৯৮ পা ) “শমো গরিষ্ঠতাবুদ্ধে-  
রিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্ণে  
প্রকাশ আছে। শ্রীকৃষ্ণ এই শ্লোক  
উদ্ধবকে বলেন। “শমোগরিষ্ঠতা”  
পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৬ ॥

( ১৯৮ পা ) “কৃষ্ণ বিনা ... .. ছুই  
গুণে ॥” এই ৬৭ পয়ারের ভাবার্থ  
কৃষ্ণ বিনা অর্থাৎ কৃষ্ণ ভিন্ন অন্য বিষয়ে  
তৃষ্ণা ত্যাগ (স্পৃহানিবৃত্তি) শাস্তবতির  
কার্য্য। - অতএব অর্থাৎ কার্য্যদ্বারা  
শাস্তরতি অনুমিত হয় বলিয়া, উহা  
শাস্ত। স্মৃতরাং শাস্তরসের আশ্রয়কে  
একটি কৃষ্ণভক্ত বলিয়া জানি। যিনি  
কৃষ্ণভক্ত, তিনি স্বর্গ ও মোক্ষসুখকে  
নরকের যাতনা সদৃশ বলিয়া অনুভব  
করেন। শাস্তের দুইটি গুণ, একটি

শ্রীকৃষ্ণে নিষ্ঠা, অপর অন্যবিষয়াদিতে  
স্পৃহাশূন্য।

যদিও কৃষ্ণনিষ্ঠা ও তৃষ্ণাত্যাগকে শাস্তের দুই  
গুণ বলিয়া নির্দেশ করিলেন, তথাপি কৃষ্ণনিষ্ঠার  
কার্য্য তৃষ্ণাত্যাগ, ইহা স্বীকার করিতে হইবে।  
নচেৎ “শাস্তের গুণ দাম্যে আন্তে অধিক সেবন।  
অতএব দাম্যরসে হয় দুই গুণ ॥” এই পয়ারের  
অর্থের অসঙ্গতি হয়। যেহেতু শাস্তের দুই গুণে  
দাম্যের তিন গুণ হয়। অতএব কার্য্য ও  
কারণের অভেদ স্বীকার করিয়া শাস্তের এক গুণ  
বলিতে হইবে। বুঝাইবার জন্য ঐরূপ ভেদ  
করিয়াছেন ॥ ৬৭ ॥

( ১৯৯ পা ) “নারায়ণপরা ইতি ।”

শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মস্যের ৯৪  
পৃষ্ঠায় দেখুন। কৃষ্ণভক্ত যে স্বর্গ ও  
মোক্শকে নরকতুল্য অনুভব করেন,  
তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৭ ॥

( ১৯৯ পা ) “এই ছুই.....প্রনীণ ॥”

এই ৬৮ পয়ারের ভাবার্থ। আকাশের  
শব্দ গুণ যেমন তেজ, বায়ু, জল ও  
পৃথিবীতে থাকে; তদ্রূপ শাস্তের  
কৃষ্ণনিষ্ঠা ও তৎকার্য্য তৃষ্ণাত্যাগ এই  
দুই গুণ দাম্য, সখা, বাৎসল্য ও মধুরে  
আছে। শাস্তের স্বভাব বলিতেছেন,  
“শাস্তের” ইতি।

শ্রীকৃষ্ণে মমতাগদ্ধীন শাস্তের স্বভাব।  
আমার প্রভু, আমার সখা, আমার পুত্র, আমার  
পতি এরূপ কোন মমতা শাস্তে নাই। কেবল  
শ্রীকৃষ্ণের চিদানন্দময় স্বরূপ ও ঐশ্বর্য্য অল্পত্ব  
করিয়া কৃষ্ণে নিষ্ঠা ও তত্ত্বিন্ন বিষয়ে তৃষ্ণাত্যাগ  
হয়। ইহাই শাস্তের স্বভাব। ঐশ্বর্য্যজ্ঞান বে  
রদের উদ্দীপক হয়েন, তাহা মমতাবৃত্ত নহে।  
যোগিগণের প্রায় ব্রহ্মানন্দরূপ স্বধ-ক্ষীর্ষি হইয়া

থাকে, কিন্তু এই সুখ অতি অল্পতর, আর সচ্চিদানন্দবিগ্রহ স্বকৃষ্ণরূপে যে ঈশ্বরময় সুখ তাহাই সচরতর। এই সুখেতে শ্রীবিগ্রহের সাক্ষাৎকার-তাই গুরুতর হেতু। শাস্ত্রভক্তগণ ভগবৎসাক্ষাৎ-কারমাত্রই কৃতার্থ হন ॥ ৬৮ ॥

( ১৯৯ প। ) “কেবল.....নিরন্তর ॥”

এই ৬৯ পয়ারের ভাবার্থ। শাস্ত্ররসে কেবল শ্রীকৃষ্ণের চিদানন্দময়ত্ব বোধ হয়। দাস্যে কি জ্ঞান হয়, বলিতেছেন, “পূর্ণৈশ্বর্য্য” ইতি। ঐশ্বর্য্যে পূর্ণ শ্রীকৃষ্ণে প্রভু জ্ঞান, দাস্যে ( দাস্যরসে ) হয়। সুতরাং শাস্ত্ররস অপেক্ষা প্রভু বলিয়া শ্রীকৃষ্ণে মমতা দাস্যরসের কার্য্য। দাসভক্তগণ প্রভুজ্ঞানে সেবা করিয়া শ্রীকৃষ্ণকে সর্বদা সুখ দেন।

রসামৃতসিদ্ধকার এই দাস্যরসকে প্রীতভক্তিরস বলেন। আশ্চর্য্যচিত্তে বিভাব দ্বারা ভক্তগণের চিত্তে প্রীতি আশ্বাদনীয়ত্ব প্রাপ্ত হয়, এ কারণে ইহা প্রীতভক্তিরস বলিয়া সম্মত। অমুগ্রহপাতের সম্বন্ধে দাসত্ব ও লালনীয়ত্ব হেতু এই প্রীতরস ছই প্রকারে ভিন্ন হয়। সম্মতপ্রীত ও গৌরব-প্রীত। দাস্যভিমানি ব্যক্তিগণের শ্রীকৃষ্ণে সম্মত-বিশিষ্টা প্রীতি উৎপন্ন হয়। এই সম্মতোত্তরা প্রীতি পূর্ববৎ পুষ্ট হইলে সম্মতপ্রীতি বলে। দাসভক্ত চারি প্রকার; অধিকৃত, আশ্রিত, পারি-বদ ও অমুগ। ব্রহ্মা, শিবাদি অধিকৃত। শরণাগত, জ্ঞানি, সেবানিষ্ঠ, ইহঁারা আশ্রিত। কালিয়নাগ ও জরাসন্ধ কর্তৃক বদ্ধ রাজগণ পরাণাগত। শৌনকাদি জ্ঞাননিষ্ঠ। ঐশ্বর্য্যদেবাদি সেবানিষ্ঠ। উদ্ধবদাকাদি পার্শ্ব। অমুগ দাস বিবিধ; পুরহ ও ব্রজহ। সুহ্রাদি পুরহ অমুগ। রক্তকাদি ব্রজহ অমুগ। পার্শ্ব দ্বিবিধ, ধূম্র, বীর, ও বীর। আমি শ্রীকৃষ্ণের লালনীর একরূপ অতিমানকারি শ্রীকৃষ্ণ-বিষয়ে উক্তরোক্ত

গুরুত্ব জ্ঞানময়প্রীতি হয়, এই প্রীতি বিভাবাদি দ্বারা পুষ্ট হইলে গৌরবপ্রীতি বলে। কনিষ্ঠত্ব ও পুত্রহ অতিমান ভেদে লাগ্য বিবিধ। সারণাদি কনিষ্ঠভাভিমानी। প্রেছ্যাদি যত্নসুখায়গণ পুত্রভাভিমानी ॥ ৬৯ ॥

( ১৯৯ প। ) “শাস্ত্রের...বিশ্বাসময় ॥”

এই ৭০ পয়ারের ভাবার্থ। শাস্ত্রের গুণ, কৃষ্ণনিষ্ঠা। অধিক সেবন, শাস্ত্র হইতে অধিক গুণ সেবা। অতএব, শাস্ত্রের গুণ দাস্যে থাকায়। দুই গুণ, কৃষ্ণনিষ্ঠা ও কৃষ্ণসেবা। বিশ্বাসময় অর্থাৎ সম্মত ও গৌরবশূন্য ॥ ৭০ ॥

( ১৯৯ প। ) “কাজে চড়ে... ..

লালনপালন ॥” এই ৭১ ও ৭২ পয়ারের ভাবার্থ সরল। ক্রীড়ারণ, সুহৃদরণ। কৃষ্ণসেবে, কৃষ্ণকে সেবা করে। কৃষ্ণকে করায় আপন সেবন, কৃষ্ণ দ্বারা নিজের সেবা করান। ইহাই সখ্যরসের কার্য্য। বিশ্রান্তপ্রদান, শ্রেষ্ঠ বিশ্বাসময়। তিন গুণ, কৃষ্ণনিষ্ঠা, কৃষ্ণসেবা ও সম্মত-রাহিত্য। মমতা অধিক, দাস্য হইতে অধিক মমতা। লালনপালন ইহা সেবা ॥ ৭১ ৭২ ॥

( ১৯৯ প। ) “সখ্যের...জ্ঞানিগণে ॥”

এই ৭৩ পয়ারের ভাবার্থ। অগৌরবসার অগৌরবের পরাকর্ষা। তাড়নভৎসন, ইহা লালনের অন্তর্গত। ভক্তবশগুণ, নিজের ভক্তবশতাগুণ। কহে ঐশ্বর্য্য-জ্ঞানিগণে। ঐশ্বর্য্যানুভাবকারী জ্ঞানি-গণকে দেখান ॥ ৭৩ ॥

( ১৯৯ প। ) “ইতীতুকিতি ॥” এই

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ

আছে। “সে অমৃতানন্দে” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৮ ॥

(১৯৯ পা) “মধুররসে...হৈল মন। এই ৭৪ হইতে ৭৬ পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। সমস্ত ভক্তিরসের গুণ মধুরে পূর্ণভাবে বিদ্যমান আছে, তাহা দেখাইতেছেন, “মধুররসে” ইতি।

মধুররসে, রসের পরাকাষ্ঠা। এই রসে সকল রসের সমাহার হওয়ার সকল রসেরই গুণ দৃষ্ট হইয়া থাকে। এই রসে শাস্ত্রের কৃষ্ণনিষ্ঠা, দাস্যের সেবা, সখ্যের অসঙ্কোচ, বাৎসল্যের লালন ও কান্তার নিজস্ব দ্বারা সেবন এই পঞ্চ গুণই দৃষ্ট হয়। যেমন আকাশাদির গুণ পর পর ভূতে অর্থাৎ বায়ু প্রভৃতিতে থাকে। মধুর রস স্বাদাধিক্যে সকল রস হইতে চমৎকারিত্ব

ইতি মধ্যলীলামাং উনবিংশ পরিচ্ছেদে সুবোধিনী ॥ ১৯ ॥

উৎপাদন করে। ইহা স্বকীর ও পরকীর ভেদে বিবিধ সংস্থান।

কৈল দরশন, সূত্রমাত্র করিলাম। করিহ ভাবন, চিন্তা করিলে। রসসিদ্ধি পাবে, রস-মাগরের অপর সীমা ॥ ৭৪.৭৬ ॥

(২০০ পা) “প্রভাতে...চন্দ্রশেখর কৈলা ॥” এই ৭৭ হইতে ৮০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। আমার বচন, আমার বাক্য প্রতিপালন। ভট্টাচার্য্যে, বলভদ্র ভট্টাচার্য্যকে ॥ ৭৭-৮০ ॥

(২০০ পা) “ভিক্ষা করাই... .. কৃষ্ণদাগ ॥” এই ৮১ হইতে ৮৩ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। কতি, কোথাও। নিষ্ঠা হৈল, স্থির হইল ॥ ৮১-৮৩ ॥

## বিংশ পরিচ্ছেদ।



(২০১ পা) “বন্দ ইতি।” প্রথম শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। এই পরিচ্ছেদে সনাতনশিক্ষা বর্ণিত হইবে। গ্রন্থকার তদ্বিষয় শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন। শ্রীগৌরঙ্গ রূপায় নীচ (পতিত বা অজ্ঞ) ব্যক্তিও ভক্তিশাস্ত্রের প্রবর্তক হয় বলিয়া আমি (গ্রন্থকার) সনাতনশিক্ষা বর্ণনবিষয়ে শ্রীগৌরঙ্গকে প্রণাম করি।

শ্রীগৌরঙ্গ কিরূপ? বেশকালদি দ্বারা

অপরিচ্ছিন্ন ও অচিন্ত্যপ্রভাবিশিষ্ট। বেশকালদি দ্বারা অপরিচ্ছিন্ন বলাতে বুঝাইতেছে, সকল দেশে, সকল সময়েই তাঁহার প্রভাব নিত্য রহিয়াছে, যে স্থানে বা যে সময়েই হউক না কেন, জীব তাঁহার শরণাপন্ন হইলেই, সকল সময়েই তিনি রূপা করিবেন। শরণাগত সনাতনের গৃহশৃঙ্খল ছেদন করিয়া, মহাপ্রভু তাহাকে পুনরায় কারাগার হইতে মুক্ত করেন। যদি বল, নিজ বুদ্ধি কৌশলে কারাগার হইতে সনাতন মুক্ত হইলে ও সাধন-বলে মারা হইতে উত্তীর্ণ হইলে। এরূপ বাক্য নিতান্ত অসঙ্গত; বেহেতু ভগবৎকৃপা ব্যতীত

কেহ কি কখন মায়া বা বিপদ হইতে উত্তীর্ণ হইতে পারিয়াছেন? পারেন নাই। অতএব মহাপ্রভুর শরণ লওয়াই কর্তব্য ॥ ১ ॥

( ২০১ পা ) “জয় জয়... ..রহি গেল ॥” এই ১ম হইতে ৫ম পয়ারের ভাবার্থ সরল। বন্দিশালে, কারাগারে। হেনকালে, যখন সনাতন বন্দী ছিলেন। জিন্দপীর, সিদ্ধপুরুর। খলিপা প্রণীত কেতাব, মহম্মদ প্রণীত কোরাণ শাস্ত্র। গোনাঞা, পরমেধর। ডাঁড়ুকা, পায়ের বন্ধন শৃঙ্খল ॥ ১-৫ ॥

( ২০১ পা ) “কিছু ভয়... ..কর পরে ॥” এই ৬ হইতে ১০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। দরবেশ, ফকির।

“দরবেশ হঞা আমি মক্কা চলি যাব” সনাতনের এট উক্তি কেহ যেন মনে না করেন, যে সনাতন ফকির হইয়া মুসলমান ধর্ম অবলম্বন করতঃ মক্কা গমন করেন। কেন না, হোসেন সাহ যখন সনাতনকে দেখিতে আসেন, তখন সনাতনকে পণ্ডিতগণ সহ শ্রীভাগবতাদি শাস্ত্র বিচার করিতে দেখেন। যিনি মুসলমান হইবেন, তাঁহার হিন্দুশাস্ত্রের শ্রবণের প্রয়োজন কি? এবং জাংকালীন নিরপেক্ষ ধার্মিক পণ্ডিতগণ মুসলমান সত্যের শ্রীভাগবত চর্চা করিবেনই বা কেন? কেবল যখন প্রকৃত্তিকে বুঝাইবার জন্য ঐরূপ কথা বলেন। মুসলমানের সম্মানীকে দরবেশ বলে ও তাহাদের প্রধান তীর্থস্থান মক্কা। সনাতনের বাক্যের তাৎপৰ্য্য এই, আমি সম্মানী হইয়া বৃন্দাবন যাইব।

গড়িদ্ধার পথ, গৌড়নগরের গড়ের দ্বার হইতে দিল্লী পর্য্যন্ত যে প্রশস্ত পথ। ফুমিক, ক্ষমীদার। হাতগণিতা, যাঁহার হাত গণনা দ্বারা শুদ্ধ বিষয়

বলিতে পারে। ভুঞা, ভূমিক। ঙ্গশান, সনাতনের সঙ্গী ব্রাহ্মণ ॥ ৬-১০ ॥

( ২০২ পা ) “রাজবন্দী... ..প্রভুর আগমনে ॥” এই ১১ হইতে ১৬ পয়ার পর্য্যন্ত সরল। ছুটাইলে, অব্যাহতি করাইলে। হাজিপুর, বিহারপ্রদেশে মজঃফরপুর জিলার অন্তর্গত নগর। গোনাঞির, সনাতনের। “তিনলক্ষ মুদ্রা” ইতি। শ্রীকান্ত সেন গৌরেশ্বরের আদেশে বার্ষিক দেয় ঘোড়কের মূল্য-স্বরূপ তিনলক্ষ টাকা লইয়া দিল্লীর পাতসাহকে দিতে যাইতেছিলেন। টপ্পী, উচ্চমঞ্চ। ছুটিবার কথা, কারা-মুক্ত হইবার কথা। ভদ্র, পরিষ্কার। তেহো, শ্রীকান্ত সেন ॥ ১১-১৬ ॥

( ২০২ পা ) “চন্দ্রশেখর..... শোদিত ॥” এই ১৭ হইতে ২০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। মোরে না ছুঁইও, দৈন্যসূচক বাক্য। আত্মপবিত্রিতে, নিজকে পবিত্র করিতে ॥ ১৭-২০ ॥

( ২০৩ পা ) “ভবদ্বিধেতি ॥” শ্লোকের টাকা ও বাঙ্গলা আদির ১২ পৃষ্ঠায় দেখুন। “ভক্তিবলে” ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক। যিনি তীর্থকেও মহাতীর্থ করিতে পারেন, তিনি অনায়াসে ত্রয়োপবিত্র করিতে পারেন ॥ ২ ॥

( ২০৩ পা ) “ন মে প্রিয় ইতি ॥ শ্লোকের টাকা ও বাঙ্গলাসদ্যের ১৮৭ পৃষ্ঠায় দেখুন।

যদি বল, আমি অতি নীচ, আমাকে স্পর্শ করিয়া কিরূপে পবিত্র হইবেন? তদ্বত্তরে, এই শ্লোক বলিতেছেন। চণ্ডালও ভক্তিবলে

হইলে যখন শ্রীহরির ন্যায় আদরনীর ও পুণ্ড্র হয়, তখন তুমিও ভক্তিমান হওয়াতে, শ্রীহরির ন্যায় আদরনীর । অতএব তুমি নীচসদ্বী হইলেও তোমার স্পর্শন যোগ্য হইতেছে । তুমি ভক্তিমান হওয়াতে পরম পবিত্র ; তুমি ভক্তিবলে যখন ব্রহ্মাণ্ড শোধন করিতে পার, তখন নিজের পবিত্রতা হেতু তোমাকে আমি স্পর্শ করি ॥ ৩ ॥

( ২০৩ পা ) “বিপ্রাদিতি । শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে আছে । “তোমা স্পর্শি” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ।

যদি বল, ব্রাহ্মণ, পৃথিবীর দেবতা ; তিনিই ব্রহ্মাণ্ড শোধন করিতে পারেন । ব্রাহ্মণকে যে স্পর্শ করিবে সেই পবিত্র হইবে । আমাকে স্পর্শ করিলে পবিত্র কিরূপে হইবে ? তদ্বত্তরে, এই শ্লোক বলিলেন । দ্বাদশগুণযুক্ত ও গর্ভসম্বিত ব্রাহ্মণ হইতে ভক্তিমান ও গর্ভসম্বিত চণ্ডাল শ্রেষ্ঠ । প্রথমে তুমি ব্রাহ্মণ, তাহাতে আবার ভক্তিমান ; সুতরাং তোমার স্পর্শনে পবিত্র হয় ॥ ৪ ॥

( ২০৩ পা ) “তোমা দেখি..... নিরূপণ ॥” এই ২১ পয়ারের ভাবার্থ । ক্লেশভক্ত সান্তিশয় পবিত্র বলিয়াই, তোমাকে নয়নদ্বারা দেখিয়া নয়ন পবিত্র করিতেছি, স্পর্শ করিয়া দেহকে পবিত্র করিতেছি এবং তোমার গুণ গাই ( বর্ণন করিয়া ) জিহ্বাকে পবিত্র করিতেছি । অতএব ভক্তগণ সকল ইন্দ্রিয়ের ফল, ইহা শাস্ত্রে নির্ণয় করিয়াছেন ॥ ২১ ॥

( ২০৩ পা ) “অঙ্কোরিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শাস্ত্রনিরূপণ এই শ্লোক । “তোমা দেখি” ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫ ॥

( ২০৩ পা ) “এত কহি... ..ইহা লক্ষ্য ॥” এই ২২ হইতে ২৫ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । সহানুরোধ,

অতি কষ্টপ্রদ নরকরূপ বিষয় । ছুটিলা, কারামুক্ত হইলে । এই বেশ ফকিরের বেশ । টহাঁ, সনাতনকে ॥ ২২-২৫ ॥

( ২০৪ পা ) “ভদ্র করাইয়া ..... বার বার ॥” এই ২৬ হইতে ৩০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । ভদ্র, ক্ষৌরাদি । দুই বহির্ভাগ ইত্যাদি, বর্ণাশ্রমধর্ম ত্যাগ পূর্ব্বক সনাতন গোস্বামী পরমৈকান্তিকের বেশ বহির্ভাগ ও কৌপীন ধারণ করিয়া ও প্রপঞ্চ বস্তুতে আসক্তি শূন্য হইয়া রাগমাগীয় সন্ন্যাস গ্রহণ করেন । কেহ বলেন, বেশ শব্দের অপভ্রংশ ডেক ।

সনাতন গোস্বামী তখন মিশ্রের নিকট হইতে পরিধেয় বস্ত্র প্রার্থনা করিয়া, তদ্বারা সন্ন্যাস বেশ গ্রহণ করার বুঝাইতেছে । প্রপঞ্চ বস্তুগত বিষয়াদিতে আসক্তিশূন্যতাই প্রকৃত সন্ন্যাস, নচেৎ কোল বেশ গ্রহণে সন্ন্যাস হয় না । এই হেতু ইহাকে যুক্তবৈরাগ্য বলে । বৈষ্ণব সন্ন্যাসী কখন স্ত্রী স্পর্শ করিবেন না । তথাহি দাসগোস্বামির শিক্ষাপটলে,—

“প্রকৃতিস্পর্শমাত্রেণ, গৃহিণী সহমিশ্রতা ।

চিকিৎসায় ধনং লক্ষ্য বৈষ্ণবং ন তিষ্ঠতি ॥”

স্ত্রীগণকে স্পর্শমাত্র, গৃহির সহিত সঞ্চ ও চিকিৎসায় ধন গ্রহণ দ্বারা বৈষ্ণব-সন্ন্যাসির বৈষ্ণবত্ব থাকে না । তথাহি মহাপ্রভুর উক্তি,

“প্রভু কহে বৈরাগী করে প্রকৃতি সম্ভাষণ ।

দেখিতে না পারি আমি তাহার বদন ॥

হৃদয় ইন্দ্রিয় করে বিষয় গ্রহণ ।

দারু প্রকৃতি হয়ে মূনেরাণ মন ॥

কুদ্র জীব সব মর্কটবৈরাগ্য করিয়া ।

ইন্দ্রিয় চরাঞ্চা বলে প্রকৃতি সম্ভাষণা ॥ ইত্যাদি ॥”

সকলের গৌক দাড়ি ত্যাগ করা কর্তব্য ।

তথাহি শ্বকি,

“কেশশ্রমণাধিনাং কর্তব্যং সংপ্রসাধনং ।

সংপ্রসাধনং পবিত্রীকরণমিতি ॥”



শ্রুত ( গৌক বাড়ির ), নখাদির কর্তন সংপ্র-  
সাধন অর্থাৎ পবিত্রী করণ। তথাহি ব্রহ্মবৈবর্তে,—

“ব্রতানামুপবাসানাং শ্রাদ্ধানীনাঞ্চ সংযমে ।  
ন করোতি ক্ষৌরকর্ম অশুচিঃ সর্ককর্মহ ॥”

ব্রত. উপবাস, শ্রাদ্ধানি ও সংযমে ক্ষৌরকর্ম  
না করিলে সমস্ত কর্ম অশুচি হয় ।

মহানিমজ্জণ, অধিকদিনের জন্য  
নিমজ্জণ। শিব, গ্রহণ করিব। ভোট  
কম্বল, মকরস্নান করিয়া মহাপ্রভুর  
কাশীতে আগমনের পূর্বে সনাতন  
কারামুক্ত হইলেন, তৎকালে শীত নিবা-  
রণার্থ শ্রীকান্ত সেন সনাতনকে কম্বল  
দেন ॥ ২৬-৩০ ॥

( ২০৪ পা ) “সনাতন.....তত্ত্ব  
নিরূপণ ॥” এই ৩১ হইতে ৩৬ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। মধ্যাহ্ন, মধ্যাহ্ন  
স্নান। প্রামাণিক, বিজ্ঞ। “তিন মুদ্রার  
ইতি। কম্বলের মূল্য তিন মুদ্রা।  
অতএব সম্পত্তি থাকিতে ভিক্ষা করিলে  
ধর্ম নষ্ট হয় ও লোকে উপহাস করে।  
তাঁর শক্তি, সনাতনের ক্ষমতা। তাঁর  
শক্ত্যে, মহাপ্রভুর শক্তিতে। তাঁরে  
মহাপ্রভুকে। ইহা, এক্ষণে ॥ ৩১-৩৬ ॥

( ২০৪ পা ) “কৃষ্ণস্বরূপেতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। “আপনে মহাপ্রভু” পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক। মহাপ্রভু যে সনা-  
তনকে উপদেশ দেন, গ্রন্থকার এই  
শ্লোকে তাহা বলিলেন ॥ ৬ ॥

( ২০৫ পা ) “তবে সনাতন.....  
সত্যমানি ॥” এই ৩৭ পয়ারের ভাবার্থ।  
তবে, মহাপ্রভুর রূপায় তাঁহার নিকট

প্রয়োজনীয় বিবিধ বিষয়ে প্রশ্ন করণে  
সমর্থ হইলে। দস্তে তৃণ লঞা, ইহা  
অজ্ঞত্ব প্রকাশক কার্য। গ্রাম্যব্যবহারে,  
লৌকিক ও রাজকীয় বিচার কার্যে ॥ ৩৭

( ২০৫ পা ) “রূপা করি.....চিত  
হয় ॥” এই ৩৮ পয়ারের ভাবার্থ। যদি  
রূপা করিয়া উদ্ধার করিলেন, তবে  
বলুন, আমি কে? আমি সে প্রতি-  
নিমিত্ত আধ্যাত্মিকাদি তাপত্রয়ে তাপিত  
হইতেছি, ইহারই বা কারণ কি?  
আমার কর্তব্য কি? কি করিলে  
আমার হিত হয়?

এহ্নে চারিটি প্রশ্নের মধ্যে প্রথম প্রশ্ন আমি  
কে? দ্বিতীয় প্রশ্ন, সর্কদা তাপত্রয়ে আমি  
তাপিত কেন? প্রথম প্রশ্নট দুইপ্রকারে হইতে  
পারে। যথা, ১। জগৎ জীবজড়ায়ক। এই  
জীবজড়ায়ক জগতে পরস্পর-বিভিন্ন-স্বভাববিশিষ্ট  
দুইটি সামর্থ্য বা শক্তি পরিলক্ষিত হয়। একটি  
জীবসামর্থ্য, অপরটি জড়সামর্থ্য; একটি দেহী  
বা চিৎ, অন্যটি দেহ বা অচিৎ। জগতে সামর্থ্য  
দুইটি না হইয়া একটি হইলে অর্থাৎ কেবল দেহী  
বা কেবল দেহ হইলে, আমি কে, একপ প্রশ্ন  
উঠিত না। সামর্থ্য দুইটি হওয়াতেই, আমি  
দেহ না দেহী, এই প্রশ্নটি মনে উথিত হয়।  
দেহ অর্থাৎ শরীর, মন ও ইঞ্জিরের মধ্যে কোনটি  
আমি, আমি যদি শরীর হই, তবে মানসতাপ  
কেন আমাকে জারে? আমি যদি মন হই,  
তবে শারীরতাপ কেন আমাকে জারে? যদি  
শরীর ও মন হইতে অতিরিক্ত দেহী আমি হই,  
তবে তাপত্রয় কেন আমাকে জারে? আধ্যাত্মিক,  
আধিভৌতিক ও আধিদৈবিক ভেদে তাপ তিন  
প্রকার। আধ্যাত্মিক শারীর ও মানস ভেদে  
দ্বিবিধ। বাতপঙ্কজের বৈষম্য নিমিত্ত শারীর  
তাপ। কাম, ক্রোধ, লোভমোহাদি জনিত মানস

তাপ। মাহুঘ, পশু, পক্ষী, সরিসৃপাদি জন্য আধিতৌতিক তাপ। গ্রহাদি জন্য আধিদৈবিক তাপ। ২। আবার শক্তি ও শক্তিমানের অচিন্ত্য ভেদভেদ স্বীকার হইতে, আমি কে, আমি শক্তি না শক্তিমান্, এক্রপ প্রশ্ন উঠে। আমি চিৎশক্তি হইলে, আমার তাপত্রয় কেন? বা আমি শক্তিমান্ সচ্চিদানন্দময় হইলে, আমাকে ত্রিতাপ তাপ দেয় কেন? অতএব আমি কে? ॥ ৩৮ ॥

( ২০৫ পা ) “নাধ্যসাদন..... স্বভাব ॥” এই ৩৯ পয়ারের ভাবার্থ। আমি বিষয়-রূপে পতিত হইয়া জীবন অতিবাহিত করায়, সাধ্য বা সাধনতঃ জিজ্ঞাসাতেও আমার অধিকার নাই। অতএব এই সব বিষয় এবং এতদ্ভিন্ন আরও যদি কিছু জানিবার প্রয়োজন থাকে, তাহাও আমাকে উপদেশ করুন। মহা-প্রভু কহিলেন, সনাতন। শ্রীকৃষ্ণ তোমাকে পূর্ণ রূপা করিয়াছেন। তুমি সকল তত্ত্বই বিদিত আছ। তোমার ত্রিতাপও নাই। তথাপি যে ঈদৃশ প্রশ্ন করিতেছ, তাহা কেবল তোমার বিদিত বিষয়ের দৃঢ়তার জন্য। সাধুগণের স্বভাব এই যে, তাহারা জ্ঞাত বিষয়ের দৃঢ়তা করণ-জন্য পুনঃ পুনঃ প্রশ্ন করেন ॥ ৩৯ ॥

( ২০৫ পা ) “অচিরাদিত্তি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ॥ ৭ ॥

( ২০৫ পা ) “যোগ্যপাত্র...ভেদ প্রকাশ ॥” এই ৪০ ও ৪১ পয়ারের ভাবার্থ। তুমি ভক্তিমার্গ প্রবর্তনের যোগ্যপাত্র। আমি তোমাকে সকল তত্ত্বই বলিতেছি শ্রবণ কর। সনাতন-রূত প্রথম প্রস্নের উত্তর দিতেছেন, ‘কীবেব’ ইতি।

আমি দেহ না দেহী, এই প্রশ্নটির সীমাংসার জন্য, দেহ ও দেহীর স্বরূপনির্ণয়ের প্রয়োজন হয়। দেহ গুণক্রিয়াম্বক ও দেহী জ্ঞানেচ্ছা-ক্রিয়াম্বক। দেহের স্বরূপভূত বা কারণভূত গুণ ও ক্রিয়া আবার পরস্পর-সাপেক্ষ। গুণ ব্যতীত ক্রিয়া ও ক্রিয়া ব্যতীত গুণ প্রকাশ পায় না। অতএব গুণ ও ক্রিয়াসকল লইয়াই দেহ। তন্মধ্যে গুণসকল উপাদান ও ক্রিয়াসকল দেহের নিমিত্তকারণ। যেহেতু গুণসকলের সংযোগে দেহের উৎপত্তি এবং বিয়োগে দেহের বিনাশ দৃষ্ট হয়। এক মহৌষমী মায়াকেই আবার ঐ সকল গুণ-ক্রিয়ার মূল বলিয়া স্বীকার করা হয়। কেহ কেহ মায়াকে মূল না বলিয়া পরমাণু-সকলকেই উহার মূল বলেন, কিন্তু তাহা সম্ভব নহে; যেহেতু গুণক্রিয়ার মূল অণু না হইয়া বিহু হওয়াই সম্ভব। গুণের জ্ঞানে দেশ কারণ। বাহুজগতের গুণ বহুপ্রকারে পরিবর্তিত হইতে পারে, কিন্তু প্রত্যেক পরিবর্তনেই ঐ সকল গুণ দেশবৃত্তিস্বকে ( অবস্থানকে ) অপেক্ষা করে। দেশবৃত্তি ব্যতীত গুণের ধারণা হয় না। গুণের পরিবর্তনের ধারণা করা যায়, কিন্তু দেশস্বন্ধ-রহিত গুণ বুঝা যায় না। গুণের অভাব ধারণা করা যায়, কিন্তু দেশের অভাব বুদ্ধির অতীত। অতএব দেশের বিভূষ অবশ্য স্বীকার্য হইতেছে। কেননা, দেশকে বিহু না বলিয়া অণু বৃত্তিতে হইলে, পরে দেশের অভাবও বৃত্তিতে হয়। ক্রিয়ার মূলও অণু না হইয়া বিহু হওয়া উচিত। ক্রিয়ার জ্ঞানে কালই কারণ। ক্রিয়া বহুপ্রকারে পরিবর্তিত হইতে পারে, কিন্তু প্রত্যেক পরিবর্তনেই ঐ সকল ক্রিয়া কালবৃত্তিস্বকে অপেক্ষা করে অর্থাৎ কাল ব্যতীত ক্রিয়া দেখা যায় না। ক্রিয়ার পরিবর্তন ধারণ করা যায়, কিন্তু কাল-স্বন্ধরহিত ক্রিয়া বৃত্তিতে পারা যায় না। ক্রিয়ার অভাবের ধারণা হয়, কিন্তু কালের অভাব বুদ্ধির অতীত। তাহা হইলে কালের বিভূষ অবশ্য

স্বীকার্য। বিভূত্বের ন্যায় নিয়তপূর্ববর্তিত্বও দেশ ও কালের রহিয়াছে। দেশ গুণের নিয়ত-পূর্ববর্তী এবং কালও ক্রিয়ার নিয়তপূর্ববর্তী। দেশ গুণের নিয়তপূর্ববর্তি হইয়া গুণসকলের দৈশিকসম্বন্ধের ঘটক হয়; আর কাল ক্রিয়ার নিয়তপূর্ববর্তী হইয়া ক্রিয়াসকলের কালিক-সম্বন্ধের ঘটক হয়। গুণ ও ক্রিয়া যেমন পরস্পর পরস্পরকে অপেক্ষা করে, দেশ ও কাল তদ্রূপ পরস্পর পরস্পরকে অপেক্ষা করে। কাল ব্যতীত দেশের এবং দেশ ব্যতীত কালের ধারণা করা যায় না। গুণক্ষোভের নিমিত্ত কারণস্বরূপ কাল ব্যতীত গুণের অপ্ৰকাশ হয় বলিয়া, গুণের আশ্রয় দেশ, জ্ঞানের বিষয় নহে এবং গতির বা উপাদানস্বরূপ দেশ ব্যতীত ক্রিয়ার অপ্ৰকাশ হয় বলিয়া, ক্রিয়ার আশ্রয় কাল, জ্ঞানের বিষয় নহে। দেশ ও কাল পরস্পর ভিন্ন ভিন্ন গুণাংশের ও ক্রিয়াংশের সম্বন্ধঘটকরূপে পরস্পর-সম্বন্ধ-বিশিষ্ট জ্ঞেয় বস্তুর সহিত জ্ঞানের বিষয় হয়। জ্ঞান যেমন ব্যক্তির সাহায্য ব্যতীত জ্ঞানের বিষয় হয় না, দেশ ও কাল তদ্রূপ গুণক্রিয়ার সাহায্য ব্যতীত জ্ঞানের বিষয় হয় না। এরূপ হইলেও জ্ঞানজ্ঞান যেসকল ব্যক্তিজ্ঞানের নিয়ত-পরবর্তী ফল, দেশকালজ্ঞান তদ্রূপ গুণক্রিয়ার নিয়তপরবর্তী ফল নহে, পরস্তু নিয়তপূর্ববর্তী কারণ। ঐ দেশ ও কাল মায়াক্রিয়ের দুইটি প্রান্ত। গুণাত্মক দেশ মায়াক্রিয়ের অন্ত্য-প্রান্ত এবং ক্রিয়াত্মক কাল উহার আন্ত-প্রান্ত। মায়াক্রিয়ের স্বয়ং-সম্পন্নজনিত গুণক্ষোভ হইতেই কারণ-বারির উৎপত্তি। ঐ কারণবারির ক্রমশ: স্পন্দিত হইয়া স্পন্দনভারতম্যে অংশত: মহাদাদি তত্ত্ব-সমূহের আকারে পরিণত হয়। পরে উক্ত মহ-দাদি তত্ত্বসকল নিজের মধ্যস্থ স্পন্দনাশ্রয় কালের প্রেরণায় স্বর্ণনে স্বর্ণিত পরমাণু, অণু বা ষাণুক ও ত্রাসয়েণু প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন অবয়ব ধারণ করিয়া এই বিচিত্র গুণময় বিশ্বত্রকাও রচনা করে।

তাপ, আলোক, শব্দ, তড়িৎ ও তিন্ন তিন্ন গুণ-নাম-বিশিষ্ট আকর্ষণ সকল জড়া প্রকৃতির অন্ত-নিহিত একই স্পন্দনাশ্রয় ক্রিয়াসামর্থের প্রকাশ ভেদ মাত্র। বে জড়শক্তির স্পন্দন হইতে এই বিচিত্র জগতের উৎপত্তি, ঐ স্পন্দন এবং জড়শক্তি একই তত্ত্ব কি না, এক্ষণে ইহাই বিবেচনা। জড়-বিজ্ঞান তল্লিগ্নয়ে অসমর্থ। কেন না, তাপাদি বিভিন্ন প্রকাশ সকল জড়ের সহজ ধর্ম? অথবা জড়াতীত কোন বস্তুর সামার্থ্যবিশেষের প্রেরণ-জনিত আগন্তুক ধর্ম? ইহা জড়বিজ্ঞান নিরূপণ করিতে অক্ষম। অধ্যাত্মবিজ্ঞান বলিলে, তাপাদি বিভিন্ন প্রকাশ সকল জড়ের সহজ ধর্ম নহে, পরস্তু জড়াতীত কোন বস্তুর সামার্থ্যবিশেষের প্রেরণাজনিত আগন্তুক ধর্ম। তাহার কারণ, পরমাণুতে যে ক্রিয়াশক্তি অসুস্থিত হয়, তাহা পরমাণুতে থাকে না, পরমাণুদ্বয়ের সম্বন্ধবর্তী অবকাশাত্মক দেশেই থাকে। উহা জড়পরমাণুর ধর্ম নহে, কিন্তু জড়সত্তা প্রকাশিকা চিহ্নিত। জড়ে ক্রিয়া করা ভিন্ন জড়ের সহিত উহার অপার কোন সম্বন্ধ দেখা যায় না। ক্রিয়া যে জড়ের স্বাভাবিক ধর্ম নহে, ইহা অসুস্তবদিক। ক্রিয়ার কারণ ইচ্ছা। ঐ ইচ্ছাও আবার স্বয়ংসিকা নহে; কারণ ইচ্ছার মূলে জ্ঞান অপরিহার্য। অতএব জগতে জড়সামর্থের ন্যায় জড়াতীত জ্ঞানেচ্ছাক্রিয়াত্মক জীবসামার্থ্যও সিদ্ধ হইতেছেন। এই জীব (দেহী) আর্মি। জীব শ্রীকৃষ্ণের নিত্য দাস; ইহাই জীবের স্বরূপ। দেহী জীবশক্তি না শক্তিমান? ইহাই দ্বিতীয় প্রশ্ন। এই প্রশ্নটির মীমাংসার উত্তরে মহাপ্রভু বলিতেছেন, “কৃষ্ণের তটস্থাপক্তি” ইতি।

প্রথমত: জিজ্ঞাস্য হইতেছে যে, যে দেহের স্থষ্টিস্থিতি প্রলয়াদির উপাদানার্থ জ্ঞানেচ্ছাক্রিয়া-বিশিষ্ট জীব স্বীকৃত হইলেন, তিনি সেই দেহের স্থষ্টি স্থিতি কার্যে সমর্থ কি না? তিনি সমর্থ হইলে আর তাহা হইতে অতিরিক্ত জ্ঞানেচ্ছাক্রিয়া বিশিষ্ট

চিহ্নের স্বীকারের প্রয়োজন হয় না। যদি সমর্থ না হন, তবে তাঁহা হইতে অতিরিক্ত জানেচ্ছাক্রিয়া-বিশিষ্ট চিহ্ন বাধ্য হইয়া স্বীকার করিতে হয়। অণুজীবের যে সৃষ্টাদিকর্তৃত্ব অসম্ভব, তাহা সর্ব-বাদিসম্মত। এই জন্যই বেদান্তস্থলে জীবের জগৎকর্তৃত্ব অস্বীকৃত হইয়াছে। মায়াদীন জীবের সৃষ্টাদি কর্তৃত্ব অসম্ভব হেতু প্রকৃতির বিবিধ বৈচিত্র্যের অন্তরালে এক মায়াদীন বিভূতৈতন্যের সত্তা স্বীকার করিতে হয়। তিনিই শক্তিমান পুরুষ। জীবজড়াত্মক জগৎ তাঁহারই শক্তিবৈচিত্র্য। জীবাদি সর্বশক্তিসম্বিত সেই পুরুষই এই জগৎ-তের সৃষ্টি করিয়াছেন। তিনিই এই সৃষ্টজগতে অমুপ্রবিষ্ট হইয়া ইহার রক্ষণাবেক্ষণ করিতেছেন।

স্বয়ং ভগবান, শ্রীকৃষ্ণই ঐ পুরুষ। তিনিই শক্তিবর্গের মূলশ্রয়। তিনিই শক্তিমান ও পর-ব্রহ্ম, শক্তিসকল তাঁহার বিশেষণ। ব্রহ্ম বা পর-মাত্মা তাঁহারই আবির্ভাবভেদে নামভেদ মাত্র। তিনিই সূর্য্যস্থানীয়। জীবসকল তাঁহার মণ্ডল হইতে বহির্গত কিরণপরমাণুভাবিনী। কিরণ-পরমাণুসকল যেমন স্বরূপতঃ সূর্য্যংশ বলিয়া সূর্য্য বলিয়াই গণ্য হয়; তদ্রূপ অণু জীবাশ্মা বিভূ পরমাত্মার শক্ত্যাংশ বলিয়া নিজাংশী পরমাত্মাকে লক্ষ্য করিয়া বনিত্তে পারেন "সোহহম্" আমি সেই বস্তু। সূর্য্যকিরণ যেমন সূর্য্যংশ বলিয়া সূর্য্যের ন্যায় প্রকাশাদিধর্ম-বিশিষ্ট; তদ্রূপ জীবাশ্মা পরমাত্মার শক্ত্যাংশ বলিয়া পরমাত্মার ন্যায় জানেচ্ছাক্রিয়া বিশিষ্ট। জীব যখন বাহ্যবিশয়ের গ্রহণে উদ্বুগ্ন হন, তখন তাঁহার ক্রিয়া বৃত্তির প্রকাশ হয়। যখন অন্তর্মুগ্ন হন, তখন তাঁহার ইচ্ছাবৃত্তির প্রকাশ হয়। যখন শান্ত বা কৃষ্ণনিষ্ঠ হন, তখন তাঁহার জ্ঞানবৃত্তির প্রকাশ হয়। ঐ তিনটা বৃত্তি জীবের স্বাভাবিকী। জীবের সত্তার সহিত উক্ত বৃত্তিত্রয়ের সত্তাও অবশ্য স্বীকার্য্য। জীবের সত্তা কেহই অস্বীকার করেন না। উহা সকলের অমুত্ববসিদ্ধ। উহা অন্য

প্রমাণের অপেক্ষা করে না। "আমি আছি" এই এই জ্ঞান আত্মার জ্ঞানবৃত্তির প্রমাণ। ইচ্ছা ও ক্রিয়া জ্ঞানেরই প্রকাশবিশেষমাত্র। অতএব আত্মার অস্তিত্বের সহিত আত্মবৃত্তি জ্ঞানাদিরও অস্তিত্ব সিদ্ধ হইতেছে। অতএব জীব শ্রীকৃষ্ণের তটস্থশক্তি ও শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপশক্তির ন্যায় তাঁহারই প্রকাশ সামর্থ্য, অতএব তাঁহা হইতে অভিন্ন হইয়াও, নিজের মায়াদীনত্ব ও অমুদ্বাদিহেতু, মায়াদীনত্ব ও বিভূত্বাদি গুণযুক্ত শ্রীকৃষ্ণ হইতে ভিন্ন। অতএব জীব শ্রীকৃষ্ণের অচিন্ত্যভেদাত্মক প্রকাশ ॥ ৪০। ৪১ ॥

( ২০৫ পা ) 'সূর্য্য্যাংশু.....প্রকার হয় ॥' ৪২ পয়ালের ভাবার্থ। 'সূর্য্য্যাংশু' স্থলে "সূর্য্য্যাংশ" পাঠ হইবে। যেমন সূর্য্যের অংশ কিরণ, যেমন অগ্নির ছালা-চয় (ক্ষুলিঙ্গসমূহ) সূর্য্য ও অগ্নি হইতে অভিন্ন হইয়াও ভিন্ন, তদ্রূপ জীবশক্তিও অভিন্ন হইয়া ভিন্ন। তাহার কারণ, ছায়া যেমন সূর্য্যকে আবরণ করিতে পারে না, কিন্তু সূর্য্য্যাংশ কিরণকে আব-রণ করে, অন্ধকার যেমন অগ্নিরশিকি আবরণ করিতে পারে না; কিন্তু ক্ষুলি-ঙ্গকে আবরণ করে, তদ্রূপ মায়াদীন সর্ব-শক্তিমান শ্রীকৃষ্ণকে মোহিত করিতে পারে না, কিন্তু তদংশ জীবকে মোহিত করেন। অতএব চিত্রপ জীব অভিন্ন হইয়াও মায়াদীনত্বাদি হেতু শ্রীকৃষ্ণ হইতে ভিন্ন। যে মায়াদীনত্বাদি হেতু শ্রীকৃষ্ণ হইতে মোহিত করে, তাহাও শ্রীকৃষ্ণের একটি শক্তি। এতদ্ব্যতীত আরও একটি শক্তি শ্রীকৃষ্ণের আছে, তাহা স্বরূপশক্তি। এই শক্তি ত্রয় আগম্যক নহে, পরম শ্রীকৃষ্ণের স্বাভা-বিকী শক্তি। অতএব শ্রীকৃষ্ণের শক্তি তিন প্রকার। ৪২ ॥

(২০১ পা) “একদেশেতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । পূর্বে শ্রীকৃষ্ণের যে শক্তিব্রয়ের উল্লেখ করিয়াছেন, তন্মধ্যে মায়াক্রমের প্রমাণ এই শ্লোক দ্বারা করিতেছেন ।

দাহকতা ও প্রকাশকতা শক্তিবিশিষ্ট অগ্নির প্রভাবিস্তার যেমন প্রকাশকতা শক্তিরই কার্য্য, তদ্রূপ সর্গশক্তিপরিপূর্ণ শ্রীকৃষ্ণের মায়াক্রমের কার্য্য জগৎ । মায়াক্রমই বিচিত্র জগৎ উৎপাদন করেন । অতএব মায়াক্রম শ্রীকৃষ্ণের স্বাভাবিকী শক্তি ॥ ৮ ॥

(২০৫ পা) “শক্তয় ইতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । সৃষ্টাদি উৎপাদনকারিণী মায়াক্রম যে শ্রীকৃষ্ণের স্বাভাবিকী, তাহা এই শ্লোকে প্রমাণ করিতেছেন ।

অগ্নির উষ্ণতা যেমন স্বাভাবিকী, মণি ও মস্তাদির অচিন্ত্যশক্তি যেমন স্বাভাবিকী, তদ্রূপ শ্রীকৃষ্ণের মায়াক্রম স্বাভাবিকী ও অচিন্ত্যজ্ঞানগোচর । ঐ শক্তি অস্বীকার করিলে সৃষ্টাদি কার্য্য সম্পন্ন হয় না । দাহাত্মক-শক্তি যেমন অন্য দাহপ্রতিবন্ধক-শক্তি দ্বারা বাধা প্রাপ্ত হয়, তদ্রূপ শ্রীকৃষ্ণের ইচ্ছা ব্যতীত তাঁদৃশী শক্তির ব্যাঘাত করিতে অন্য কেহই সমর্থ হয় না, যে হেতু তাঁহার শক্তি অপ্রতিহতা ॥ ৯ ॥

(২০৫ পা) “কৃষ্ণেয় ... জীবশক্তি ॥” এই ৪৩ পয়ারের ভাবার্থ । শ্রীকৃষ্ণের স্বাভাবিকী শক্তি প্রদানতঃ ত্রিবিধ । চিহ্নশক্তি মায়াক্রম ও জীবশক্তি ।

চিহ্নশক্তি হইতে ধামপরিভ্রমণের, জীবশক্তি হইতে জীবসমূহের ও মায়াক্রম হইতে জগতের প্রকাশ হইয়া থাকে । ইহাই শক্তির পরিণতি অর্থাৎ অবস্থান্তর । জীবশক্তি নিজের স্বপ্রকাশ [ ভাব হইতে বিচ্যুত ও অসম্যক প্রকাশ স্বভাব

হওয়াতেই, জীবশক্তিকে স্বপ্রকাশস্বভাবা অন্তরঙ্গশক্তি ও অপ্রকাশস্বভাবা বহিরঙ্গা শক্তির মধ্যবর্তিনী তটস্থশক্তি বলা হয় । ঐ শক্তিব্রয়ই শ্রীকৃষ্ণের আশ্রিত হেতু ভক্তপরিণাম ॥ ৪৩ ॥

( ২-৬ পা ) “বিষ্ণুশক্তিরিতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ৪৯ পৃষ্ঠায় দেখুন । “কৃষ্ণেয়” ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক তিনটি ॥ ১০—১২ ॥

(২০৬ পা) “অপরেরমিতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৮৮ পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ২৬০ পৃষ্ঠায় দেখুন । জীব শ্রীকৃষ্ণের শক্তি, ইহা সিদ্ধান্তিত হইল । অতএব আমি কে, এই প্রশ্নের উত্তর হইল । আমি জীবশক্তিই, শরীরাদি আমি নহি ॥ ১৩ ॥

( ২০৬ পা ) “কৃষ্ণভুলি... চুবায় ॥” এই ৪৪ পয়ারের ভাবার্থ । আমি চিহ্নপা জীবশক্তি, আমাকে আধ্যাত্মিকাদি তাপত্রয় তাপিত করে কেন ? এই প্রশ্নের উত্তর দিতেছেন, “কৃষ্ণভুলি” ইত্যাদি ।

জীব স্বরূপতঃ জ্ঞানাদিসম্বিত হইলেও, নিজের অণুত্ব ও বহিঃশরত্ব হেতু, আশ্রয়তত্ত্ববিভূত জ্ঞানভাব-প্রযুক্ত অনাদিকাল হইতে পরতত্ত্ববিমুখ । এই পরতত্ত্ব বৈমুখ্যই জীবের ছিদ্র । এই দ্বারাই মায়াক্রম তাহাতে প্রবেশ করিয়া থাকেন । মায়ার প্রবেশে জীবের স্বরূপজ্ঞান আত্ম হইয়া যায় । ইহাতে জীবের কৃষ্ণ-বিস্মৃতি ঘটে । তাহাতেই মায়াক্রম জীবকে প্রকৃতিগুণ দ্বারা বন্ধন করিয়া বিবিধ সংসার ছুঃখ দেয় । যেমন মহারাজ কর্তৃক প্রদত্ত রাজ্যের রাজার নিয়ম সেই রাজ্যে প্রচলিত থাকে, তদ্রূপ শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক প্রদত্ত স্ববৈমুখ্যরাজ্যের রাজী মায়াক্রম ; শ্রীকৃষ্ণে বিমুখ জীবগণ ঐ রাজ্যের প্রজা । মায়াক্রম জীবগণকে নিজের অধীনস্থ জানিয়া বহু ছুঃখ দেন । কিরূপে বহু ছুঃখ দেন,

দৃষ্টান্তের সহিত তাহা বলিতেছেন, “কভু স্বর্গে” ইত্যাদি। রাজা যেমন দণ্ড্য (দণ্ডযোগ্য) ব্যক্তিকে জল মধ্যে চুবায় অর্থাৎ নিমগ্ন ও উত্তোলন করে; অধিকক্ষণ চুবাইয়া রাখিলে হয়ত প্রাণ নষ্ট হইতে পারে, তাহা হইলে যাতনা দেওয়া হয় না। অতএব বার বার যাতনা দিবার জন্য এক একবার উঠায়,—তদ্রূপ মায়ী জীবকে নরক যাতনা প্রদানে প্রবৃত্ত হইয়াও মধ্যে মধ্যে এক একবার স্বর্গাদিসুখ দিয়া আবার সংসার যাতনা প্রদান করতঃ নরকে নিপাতিত করেন। তদ্বদৃষ্টিতে স্বর্গ ও নরক এক বস্তু, যেহেতু উভয়স্থানেই জীব স্বাধীন নন ॥ ৪৪ ॥

(২০৬ প।) “ভয়মিতি।” শ্লোকের তাৎপর্য। “কৃষ্ণভুলি” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক।

সংসারচক্রে ভ্রমণকারী জীব স্বভাবতঃ ঈশ্বর হইতে বিমুখ হইয়াই মায়ার অধীন হইয়াছে। ঈশ্বরবিমুখ জীবকে মায়ী আবরণ করিয়া থাকে। মায়ার আবরণে জীবের ঈশ্বরবিস্মৃতি হয়। তাহাতে জীবের স্বরূপজ্ঞানও অন্তর্হিত হয়। আত্মস্বরূপের জ্ঞান অন্তর্হিত হইলে বিপর্যয় ঘটে। বিপর্যয় বলিতে স্থল, স্থান ও কারণ; এই ত্রিবিধ দেহে পর পর আত্মার অভিমান ও পরে তাহাতে অভিনিবেশ। সঙ্কল্পপ্রধান কারণশরীরে আত্মার জ্ঞানশক্তির প্রকাশদর্শনে উহাতে অভিনিবেশ জন্মিলেই জীবের কারণশরীর দ্বারা বন্ধন হয়। রজোগুণপ্রধান স্মৃৎশরীরে আত্মার ইচ্ছাশক্তির প্রকাশদর্শনে উহাতে অভিনিবেশ জন্মিলেই জীবের স্মৃৎশরীর দ্বারা বন্ধন হয়। তমোগুণ প্রধান স্থলশরীরে আত্মার ক্রিয়াশক্তির প্রকাশদর্শনে উহাতে অভিনিবেশ জন্মিলেই জীবের স্থলশরীর দ্বারা বন্ধন হয়। উক্ত বন্ধনই জীবের তাপজরের কারণ। অতএব জ্ঞানী ব্যক্তি দেহবন্ধনের ভয় হইতে মুক্তিলাভের জন্য গুরুতে,

দেবতা ও প্রিয়তাবুদ্ধি সংস্থাপন পূর্বক অব্যাহতচারিণী ভক্তি দ্বারা শ্রীকৃষ্ণের উপাসনা করেন ॥৪৪॥

(২০৬ প।) “শাস্ত্র.....ছাড়য় ॥” এই ৪৫ পয়ারের ভাবার্থ। “কৈছে হিত হয়” প্রশ্নের উত্তর দিতেছেন, “শাস্ত্র” ইতি।

আত্মবিষয়ক অজ্ঞানবিশিষ্ট জীব-সমাজে “আত্মা আছেন ও আত্মা নাই” এরূপ বিভিন্ন মতবাদের আবির্ভাব হইয়াছে। উক্ত বিভিন্ন মতবাদের খণ্ডনজন্য জীবগণ পরস্পর ঘোরতর বিবাদ করে। উহা নিষ্ফল হইলেও সহসা নিবৃত্ত হয় না। এই হেতু পরমকারুণিক মাধু ও শাস্ত্র সকল তাহাদিগকে বিবিধ উপদেশ প্রদান করেন।

তাহাতে জীবগণ প্রথমতঃ ইহাই জ্ঞাত হন যে, তাঁহারা চিন্ময় বস্তু এবং পরিদৃশ্যমান বাহ্যজগৎ জড়বস্তু। পরে তাঁহারা ইহাও বুঝিতে পারেন যে, যে ব্রহ্মাণ্ডে বা দেহে অবস্থিত হইয়া বা বাহ্যের সাহায্যে তাঁহারা জানিতেছেন বা ইচ্ছা করিতেছেন বা ক্রিয়া করিতেছেন, উহা তাঁহাদের আয়ত্তাধীন নহে, পরন্তু কোন এক অচিন্ত্য শক্তিশালী পুরুষের শক্তি দ্বারা নিরমিত। এইরূপে যখন শ্রীকৃষ্ণের পরমাশ্রয়ত্ব অবধারিত হয়, তখনই জীব কৃষ্ণোন্মুখ হন। যদি সৌভাগ্যক্রমে জীব একবার কৃষ্ণোন্মুখ হন, তবে তিনি নিস্তার পান ও মায়ী তাঁহাকে ত্যাগ করেন ॥ ৪৫ ॥

(২০৬ প।) “দৈবীতি।” শ্লোকের তাৎপর্য। শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “সেই জীব নিস্তরে” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৫ ॥

(২০৬ প।) “মায়ামুক্ত.....হয় জ্ঞান ॥” এই ৪৬ পয়ারের ভাবার্থ। মায়ামুক্ত জীবের আপনা হইতেই শ্রীকৃষ্ণ-বিষয়ক জ্ঞান উৎপন্ন হইতে পারে না; তজ্জন্যই শ্রীকৃষ্ণ জীবের প্রতি করুণা করিয়া বেদ ও পুরাণশাস্ত্র প্রণয়ন করিয়া-

ছেন। তিনি শাস্ত্ররূপে, গুরুরূপে ও  
অন্তর্ভাসিকরূপে নিজেকে জানান। অত-  
এব শাস্ত্র ও গুরু হইতেই জীবের শ্রীকৃষ্ণ-  
বিষয়ক জ্ঞান লাভ হয়। তাহাতেই  
জীব শ্রীকৃষ্ণকে জাগতিকতা বলিয়া বিদিত  
হন ॥ ৪৬ ॥

( ২০৬ পা ) “বেদশাস্ত্র...আত্মাদান ।”

এই ৪৭ ও ৪৮ পয়ারের ভাবার্থ। বেদে  
সম্বন্ধ, অভিধেয় ও প্রয়োজন এই তিনটি  
বিষয় উক্ত হইয়াছেন। তন্মধ্যে গ্রন্থ-  
প্রতিপাদ্য শ্রীকৃষ্ণপ্রাপ্যবস্তু ও তদ্বিষয়ক  
ভঙ্গনই তাঁহার প্রাপক। এই হেতু,  
শ্রীকৃষ্ণের সহিত ভক্তির প্রাপ্যপ্রাপকতালক্ষণ  
সম্বন্ধ। ঐ ভক্তি আবার সাধ্য ও সাধন ভেদে  
দ্বিবিধ। শ্রবণাদি সাধনভক্তি কৃষ্ণপ্রাপ্তির  
সাক্ষাৎ সাধন নহে। সাধ্যভক্তিরূপ প্রেমের  
পরম্পরায় কৃষ্ণপ্রাপ্তির সাধন হয়েন। এই-  
জনাই শ্রবণাদি সাধনভক্তিকে অভিধেয় ও প্রেম-  
রূপ সাধ্যভক্তিকে প্রয়োজন বা পুরুষার্থ বলে।  
প্রেম মহাধন, পুরুষার্থের শিরোমণি।  
প্রেমদ্বারাই শ্রীকৃষ্ণের মাধুর্য্যসেবা হইতে  
উৎপিত আনন্দের লাভ হয়। প্রেমের  
দুইটি কার্য। মধুর শ্রীকৃষ্ণের করানই  
প্রেমের প্রথম কার্য এবং সেবা করাইয়া  
শ্রীকৃষ্ণরস আত্মাদান করানই প্রেমের  
দ্বিতীয় কার্য। প্রেমের উক্ত কার্য-  
দ্বয় সম্পূর্ণ নিঃস্বার্থ; কারণ, শ্রীকৃষ্ণের  
মাধুর্য্য অনুভবের নিমিত্তই শ্রীকৃষ্ণ-রস  
আত্মাদান এবং শ্রীকৃষ্ণের সেবানন্দলাভের  
জন্যই শ্রীকৃষ্ণের সেবা ॥ ৪৭। ৪৮ ॥

( ২০৭ পা ) “ইহাতে...তারে ভজি ॥”

এই ৪৯ হইতে ৫৩ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ।  
মায়ামুক্ত জীবের বৈরাগ্যে ভাপাদি নষ্ট

হয়, তদ্বিষয়ে একটি দৃষ্টান্ত দিতেছেন,  
“ইহাতে দৃষ্টান্ত” ইত্যাদি।

একদা এক দরিদ্রের গৃহে একজন সর্কজ  
আসিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, তুমি এত দুঃখী কেন ?  
তোমার এরূপ দুঃখভোগ করা উচিত হয় না।  
তোমার পিতা তোমার জন্য প্রচুর ধন রাখিয়া  
প্রাগত্যাগ করিয়াছেন। ঐ ধন তোমার গৃহমধ্যে  
প্রাথিত আছে। সর্কজের এরূপ বাক্যে দরিদ্র  
যেমন অজ্ঞাত ধনের উদ্দেশ ( অহুসন্ধান ) করে;  
ঐছে, এইরূপ অর্থাৎ সর্কজ যখন গুপ্তধনের  
সন্ধান বলিয়া দেয়; তজ্জপ বেলপুরাণাদি জীবের  
গুপ্তধন বা আরাধ্যত্ব শ্রীকৃষ্ণের উপদেশ করেন।  
ধনে যেমন সর্কজবাক্য তাৎপর্যের অহুবন্ধ (সম্বন্ধ),  
তজ্জপ সকল শাস্ত্রই কৃষ্ণের সম্বন্ধ উপদেশ করেন।  
দরিদ্র যেমন সর্কজবাক্যে বাপের ধন আছে, এই  
মাত্র জানিল; জ্ঞানে নাহি পায় অর্থাৎ কোথা  
আছে, কিরূপে পাওয়া যায়, তাহা জানিতে  
পারে না; তৎপ্রাপ্তির উপায় সর্কজ বলেন,  
তজ্জপ শাস্ত্র ও গুরুর উপদেশে পরোক্ষ জ্ঞান হয়,  
কিন্তু উহা সাধন ব্যতীত হয় না; যখন কৃষ্ণ-  
প্রাপ্তির অভিলাষ হয়, তখন গুরু সাধনের উপ-  
দেশ দেন। সর্কজ দরিদ্রকে ধনপ্রাপ্তির উপায়  
বলিতেছেন, “এইস্থানে” ইত্যাদি। দক্ষিণদিক্  
খনন করিলে, ধন পাইবে না, অনেক ভীমকল ও  
বোলতা উঠিবে। পশ্চিমদিক্ খনন করিলে, ধন  
পাইবে না; কারণ ঐ দিকে এক ঘন্ট আছে, সে  
ধন প্রাপ্তির বিষয় উপাদান করিবে। উত্তরদিকেও  
ধন পাইবে না, কারণ ঐ দিকে এক বৃহৎ সর্প  
আছে, সে তোমাকে গ্রাস করিবে। পূর্বদিক্  
খনন করিলেই ধন পাইবে।

সর্কজের বাক্যসূত্রে দরিদ্র যেমন পিতৃধন  
পাইয়া দুঃখ হইতে মুক্ত হয়, তজ্জপ শাস্ত্রবাক্যসূ-  
ত্রে কার্য করিয়া মায়ামুক্ত জীব সংসারদুঃখ  
হইতে মুক্ত হয়। শাস্ত্রোপদেশ যথা,—“এইস্থানে  
ধন যদি” ইত্যাদি। কন্দমার্গই সংসারের বন্ধন:

নিক। কর্ণমার্গকে প্রথমতঃ সংসারদুঃখনিবারণের উপায় বলিয়াই বোধ হয় বটে, কিন্তু প্রকৃতপক্ষে কর্ণ দ্বারা সংসার দুঃখ নষ্ট হয় না। কর্ণ সফল। উহার ফল অবশ্রুতাবী। নিষিদ্ধকর্ণের ফল নরকাদি দুঃখ। বিহিতকর্ণের ফল স্বর্গাদি সুখ। ঐ সুখ চিরস্থায়ী নহে, উহারও নাশ আছে। অতএব বিহিতকর্ণ দ্বারা দুঃখের আত্মাত্মিক নিবৃত্তি অসম্ভব। নিত্যকর্ণও ফলরহিত নহে। নিত্যকর্ণও চিন্তাশক্তি ও প্রত্যাবারপরিচয়ের জন্য অসুষ্টিত হয়। অতএব নিত্যকর্ণের অস্থানকালে দুঃখ অপরিহার্য। কর্ণের ফলসকল ভীমরূপ ও বোলুতার ন্যায় উখিত হইয়া কর্ণকে দুঃখ প্রদান করে। জ্ঞানমার্গই সংসারের উত্তর দিক। ঐ জ্ঞানমার্গ ফলকামনারহিত হইলেও, ঐ মার্গে সাযুজ্য বা নির্কীর্ণরূপ অঙ্গগরের বাস। জ্ঞানী সিদ্ধ হইলেই, ঐ অঙ্গগর তাহাকে গ্রাস করে। অঙ্গগর কর্তৃক গ্রস্ত জীব নিজের সত্তা পর্যন্ত হারাইয়া ফেলেন। অতএব সাধনকালে তিনি সমাধিতে যে ব্রহ্মানন্দ অমুভব করিতেন, তাহাও তাহার সিদ্ধিকালে থাকে না। অষ্টাঙ্গযোগই পশ্চিমমার্গ। ঐ পথে সিদ্ধিরূপ এক বন্ধ বাস করে। সে ধারণার সময়েই উখিত হইয়া সাধককে অতিভূত করিয়া ফেলে, আর অগসর হইতে দেয় না। অতএব ঐ সিদ্ধিরূপ যক্ষের উপক্রমে যোগসাধক ব্রহ্মানন্দলাভে বঞ্চিত হয়। এই সকল কারণে কর্ণ, যোগ ও জ্ঞান ভাগ করিয়া পূর্বমার্গরূপ ভক্তির আশ্রয় লওয়া কর্তব্য। কর্ণের ফল ভুক্তি, জ্ঞানের ফল মুক্তি ও যোগের ফল সিদ্ধি প্রভৃতি কোন কামনাই তরু করেন না। ভক্তি দ্বারা ই শ্রীকৃষ্ণকে লাভ করা যায়। শ্রীকৃষ্ণ একমাত্র ভক্তিরই বশ। তথাহি শ্রুতি,

বিজ্ঞানধনানন্দধনা সচ্চিবানন্দৈকরসে ভক্তি-  
যোগে তিষ্ঠতি।

বিজ্ঞানরূপা ও আনন্দরূপা শ্রীকৃষ্ণমূর্ত্তি  
একমাত্র। সচ্চিবোগ দ্বারা ই মর্শনীনা ১১২-১০১

( ২০৭ পা ) “ন সাধনভীতি।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা আদির  
১৩৫পৃষ্ঠায় দেখুন। “ঐছে শাস্ত্র” পন্নায়  
প্রমাণ এই শ্লোক ১১৩৪।

( ২০৭ ) “ভক্ত্যাহমিতি।” শ্লোকের  
তাৎপর্যশ্লোকার্থপ্রকাশ আছে। “ভক্ত্যে  
কৃষ্ণ বশ” পন্নায় প্রমাণ এই শ্লোক ১১৭।

( ২০৭ পা ) “অতএব.....প্রয়োজন  
হয় ॥” এই ৫৪ ও ৫৫ পন্নায়ের ভাবার্থ।  
ভক্তিই একমাত্র শ্রীকৃষ্ণপ্রাপ্তির উপায়  
বলিয়া বেদে ভক্তিকেই অভিধেয় অর্থাৎ  
কর্তব্য বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন।  
যেমন ধনের লাভে সুখভোগরূপ ফলের  
লাভ ও তাহার সন্দেহই দুঃখের নিবৃত্তি  
হয়; তদ্রূপ ভক্তির লাভে প্রেমরূপ  
ফলের লাভ ও তন্নাশে কৃষ্ণরস আনন্দ-  
ধনের সহিত সংসারদুঃখের নিবৃত্তি হয়।  
প্রেমসুখই ভক্তির মুখ্য ফল এবং দুঃখ-  
নিবৃত্তি আনুসঙ্গিক ফল। অতএব দুঃখ-  
নিবৃত্তি জীবের প্রয়োজন নহে, প্রেমই  
প্রয়োজন ১১৪, ৫৫।

( ২০৭ পা ) “বেদশাস্ত্রে.....  
মায়াবদ্ধ।” এই ৫৬ পন্নায়ের ভাবার্থ।  
শ্রীকৃষ্ণই বেদশাস্ত্রের সম্বন্ধ (প্রতিপাদ্য-  
বিষয়) কর্তব্য অবগাদি সাধনভক্তি  
অভিধেয় (বক্তব্যবিষয়) প্রেমই প্রয়ো-  
জন (পুরুষার্থ)। শ্রীকৃষ্ণ ও ভক্তপ্রাপ্তির  
গৌণ সাধন অবগাদিভক্তি এবং মুখ্য-  
সাধন প্রেমই, বেদাদিশাস্ত্রের সম্বন্ধ।  
অভিধেয় ও প্রয়োজন। ঐ তিনের  
জ্ঞান হইলে মায়ার বন্ধন আশ্রয়  
হইতেই ছিন্ন হইয়া যায় ১১৬৪



( ২০৭ পা ) “ব্যামোহায়েতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। “বেদাদি সকল” পয়ার প্রমাণ  
এই শ্লোক ৥১৮॥

( ২০৮ পা ) “গৌণ.....কৃষ্ণকে ॥”  
এই ৫৭ পয়ারের ভাবার্থ। বেদশব্দ  
সকল গৌণরুত্তি ও মুখ্যরুত্তি দ্বারা এবং  
বেদবাক্য সকল অর্থ ও ব্যতিরেক-  
সম্বন্ধ দ্বারা একমাত্র শ্রীকৃষ্ণকেই নির্দেশ  
করেন। অর্থ সম্বন্ধে বুঝাইবার জন্য  
ব্যতিরেকসম্বন্ধের প্রয়োজন। তাঁহার  
সত্তার জগতের সত্তা, তাহা অর্থ।  
তাঁহার অসত্তার জগতের অসত্তা, তাহা  
ব্যতিরেক। বেদের সমস্ত প্রতিজ্ঞাই  
শ্রীকৃষ্ণপর। মহাপ্রভু সম্বন্ধতত্ত্ব নির্দেশ  
করিতেছেন ॥৫৭॥

( ২০৮ পা ) “কিং বিধত্ত্ব ইতি ।”  
শ্লোক কল্পটির তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। বেদের প্রতিজ্ঞা সকল যে  
শ্রীকৃষ্ণপর, তাহা ভগবদুক্ত শ্লোক দুইটি  
দ্বারা প্রতিপালন করিতেছেন। “গৌণ  
মুখ্য” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোকদ্বয় ॥১৯২০॥

( ২০৮ পা ) “কৃষ্ণের.....সর্দাপ্রায় ॥”  
এই ৫৮ পয়ারের ভাবার্থ। শ্রীকৃষ্ণের  
স্বরূপ অনন্ত ( কালিক পরিচ্ছেদশূন্য )  
বিভু ( দৈশিকপরিচ্ছেদ শূন্য ) বা নিত্য  
এবং পূর্ণ। তাঁহার বৈভবও অনন্ত।  
সৎ, চিং ও আনন্দই তাঁহার স্বরূপ।  
শক্তি ও শক্তিকার্যসকলই তাঁহার  
বৈভব। তাঁহার শক্তি প্রধামতঃ তিনটি  
চিহ্নিকি, মায়াজক্তি ও জীবশক্তি।  
শ্রীকৃষ্ণের শক্তির কার্য বলিতেছেন,

“বৈকুণ্ঠে” ইতি। বৈকুণ্ঠ ও ব্রহ্মাণ্ড  
সকল শ্রীকৃষ্ণের শক্তিকার্য। তন্মধ্যে  
বৈকুণ্ঠ তাঁহার স্বরূপশক্তির কার্য এবং  
ব্রহ্মাণ্ড সকল তাঁহার জীবশক্তি ও মায়াজ-  
শক্তির কার্য। স্বরূপ, শক্তি ও শক্তিকার্য  
এই তিনের তিনিই একমাত্র আশ্রয় ॥৫৮॥

( ২০৮ পা ) “দশমে দশমমিতি ।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা আদির ২৫  
পৃষ্ঠায় দেখুন।

দশমমুখে চিহ্নিকি, জীবশক্তি ও মায়াজক্তি-  
রূপ ভক্তগণের আশ্রয়স্বরূপ মূর্তিধারী পরমানন্দ-  
ময় বহুকুলসাগরে জীড়াপরায়ণ শ্রীকৃষ্ণ। “স্বরূপ  
শক্তি” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥২১॥

( ২০৮ পা ) “কৃষ্ণের.....সর্দেখর ॥”  
এই ৬০ পয়ারের ভাবার্থ। স্বরূপ, শক্তি  
ও শক্তিকার্যের শ্রীকৃষ্ণই একমাত্র আশ্রয়  
ইহা নির্দেশ করতঃ মহাপ্রভু শ্রীকৃষ্ণের  
স্বরূপ বিচার করিতেছেন, “কৃষ্ণের”  
ইত্যাদি। যিনি ব্রজে ব্রজেন্দ্রনন্দন  
শ্রীকৃষ্ণ, তিনিই অর্থজ্ঞান তত্ত্ব। তিনি  
সকলের আদি, সকলের অংশী। তিনি  
কিশোরশেখর। তিনি চিদানন্দ বিগ্রহ,  
সকলের আশ্রয়, ও সকলের ঈশ্বর  
( নিয়ন্তা ) ॥৬০॥

( ২০৮ পা ) “ঈশ্বরঃ পরম ইতি ॥”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা আদির ২৫  
পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য ভাবার্থ ব্যাখ্যায় ৭১  
পৃষ্ঠায় দেখুন। “অর্থজ্ঞানতত্ত্ব” পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক ॥২২॥

( ২০৮ পা ) “স্বয়ং.....নিত্যধাম ॥”  
এই ৬১ পয়ারের ভাবার্থ সরল। পরমানন্দ  
অপর নাম ॥৬১॥

( ২০৯ পা ) “এতে চাংশকলাইতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ২২ পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ৫৭ পৃষ্ঠায় দেখুন। শ্রীকৃষ্ণ যে স্বয়ং ভগবান্ তৎ-প্রমাণ এই শ্লোক ।

হৃত গোমাই, যে সকল অবতারের নাম পূর্বে বলিলেন, ও পরেও যে সকল অবতারের নাম বলিবেন, তাঁহাদের মধ্যে কেহ বা পুরুষের অংশ, কেহ বা পুরুষের কলা; কিন্তু বিশেষতম অবতारे বাহার নামোল্লেখ হইল, সেই শ্রীকৃষ্ণ ভগবান্, পুরুষের অংশ বা কলা নহেন, পরন্তু অংশী। নারায়ণও ভগবান্, অতএব পুরুষের অংশী, ইহা সত্য, কিন্তু নারায়ণ স্বয়ং ভগবান্ নহেন, শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং ভগবান্ অর্থাৎ নারায়ণের ভগবত্তা শ্রীকৃষ্ণের ভগবত্তা হইতে সিদ্ধ বলিয়া গোপ এবং শ্রীকৃষ্ণের ভগবত্তা স্বয়ং সিদ্ধ বলিমা মুখ্য জানিতে হইবে ॥ ২৩ ॥

( ২০৯ পা ) “জান.....প্রকাশে ॥” এই ৬২ পয়ারের ভাবার্থ । অদ্বয়জান-তত্ত্বই শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপ । শ্রীকৃষ্ণই জানির সম্বন্ধে জীব হইতে অতিরিক্ত-বিশেষণ-প্রকাশরহিত শুদ্ধ-বিশেষ্যরূপব্রহ্মস্বরূপে, ষোড়শীর সম্বন্ধে অন্তর্ধামিত্বাদি-মায়িক-প্রকাশযুক্ত-পরমাত্মস্বরূপে ও তক্তের সম্বন্ধে সর্গশক্তিগম্বিতশ্রীভগবজ্রুপে প্রকাশ পান ॥ ৬২ ॥

( ২০৯ পা ) “বদন্তি তদিত্তি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ১৮ পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ৩৫ পৃষ্ঠায় দেখুন । “জান যোগ” পয়ারপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২৪ ॥

( ২০৯ পা ) “ব্রহ্ম.....ভাসে ॥” এই ৬৩ পয়ারের ভাবার্থ । ব্রহ্ম কি, তাহা বলিতেছেন, “ব্রহ্ম” ইতি । নির্কি-শেষ প্রকাশরূপ ব্রহ্ম শ্রীকৃষ্ণের অদ-

কান্তি । স্বর্য যেমন লোকদৃষ্টিতে জ্যোতির্ময়রূপেই দৃষ্ট হন, মূর্তরূপে হন না, তক্রূপ শ্রীকৃষ্ণও জানির জানে জ্যোতিরূপেই দৃষ্ট হন, মূর্তরূপে দৃষ্ট হন না ॥ ৬৩ ॥

( ২০৯ পা ) “যদা প্রভেতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ১৮ পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ৩৯ পৃষ্ঠায় দেখুন । “ব্রহ্ম অজকান্তি” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২৫ ॥

( ২০৯ পা ) “পরমাত্মা...অবতংস ॥” এই ৬৪ পয়ারের ভাবার্থ । পরমাত্মা কি, তাহা বলিতেছেন, “পরমাত্মা” ইতি । যিনি পরমাত্মা, তিনি শ্রীকৃষ্ণের অংশ । শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং আত্মারও আত্মা, সর্গশ্রেষ্ঠ ॥ ৬৪ ॥

( ২০৯ পা ) “কৃষ্ণমেনমিত্তি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “আত্মার আত্মা” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২৬ ॥

( ২০৯ পা ) “অথৈবেতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ১৯ পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ৪০ পৃষ্ঠায় দেখুন । “পরমাত্মা যেহো” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২৭ ॥

( ২০৯ পা ) “ভক্ত্যে.....বিস্ময় না হয় ॥” এই ৬৫ হইতে ৬৭ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ । ভক্তির দ্বারা শ্রীকৃষ্ণের পরি-পূর্ণ সর্গশক্তিসম্বিত স্বরূপের অমুভব হয় । শ্রীকৃষ্ণের একই মূর্তি অনন্তরূপে প্রকাশ পায় । ঐ অনন্তরূপ প্রধানতঃ তিনভাগে বিভক্ত : বধা, স্বয়ং

তদেকাক্ষররূপ ও আবেশরূপ। স্বররূপ আবার স্বরং ও প্রকাশ এই দুইরূপে ক্ষুণ্ণি হয়।

যে রূপ স্বতঃসিদ্ধ, তাহাই স্বররূপ। ব্রজে ব্রজেন্দ্রনন্দন গোপমুর্তিধারী একমাত্র শ্রীকৃষ্ণরূপই স্বররূপ। ঐ স্বররূপ যদি যুগপৎ অনেকস্থানে প্রকট হইয়াও বহুবোধ উৎপাদন না করিয়া একত্ব বোধ করায়, তবে তাঁহাকে প্রকাশ বলে। প্রকাশ স্বররূপ হইতে পৃথক্ নহে, স্বররূপই। ঐ প্রকাশ কোনরূপ ভেদের মধ্যে গণ্য হয় না। ঐ প্রকাশ আবার মুখ্য ও গৌণ ভেদে বিধি। মুখ্যপ্রকাশকে মুখ্য এবং গৌণপ্রকাশকে 'খিলাস' বলে। মুখ্যপ্রকাশ আবার বৈভব ও প্রোভব ভেদে দ্বিবিধরূপে প্রকাশ পায়। যে প্রকাশে আকৃতিাদির অভেদ যেহু স্বররূপের সন্নিভ—বর্ণনাত্ম ভেদ হইলেও—ঐক্যত্ব বোধ করার, তাহাকে মুখ্যপ্রকাশের বৈভব প্রকাশ বলে। এই যেহু দেবকী-নন্দনকে বৈভব প্রকাশ বলা উচিত। যে প্রকাশে আকৃতিাদির ভেদ যেহু স্বররূপ হইতে ভিন্ন বোধ করাইয়া স্বভাবগত অভেদ ভাব উৎপন্ন করে তাহাকে প্রোভব প্রকাশ বলে। মুখ্যপ্রকাশ কি, তাহা বলিতেছেন, "এক বপু" ইত্যাদি। রাসে ও মহিষী-বিনায়ে যে বহুমূর্তির প্রকাশ হয়, তাহা মুখ্য বা বৈভবময় প্রকাশ। "প্রোভব প্রকাশ এই শাস্ত্র-পরিসিদ্ধ" এইস্থানে "বৈভবপ্রকাশ এই শাস্ত্র-পরিসিদ্ধ" এই পাঠ হইবে। লিপিকর প্রমাদে বৈভব স্থানে প্রোভব লক্ষ হইয়াছে। মুখ্যপ্রকাশকে বৈভব প্রকাশি বলিবার কারণ, মুখ্যপ্রকাশে বিশ্বমের আধান্য থাকার উহাকে বৈভবপ্রকাশ বলিয়াছেন। শ্রীভাগবতে ১০ত ৬৯ত ২য় শ্লোকে শ্রীভীষ্ম গৌণাধী বলিয়াছেন,

ভব্য বিশ্বময় প্রাণস্যোম সর্পায় ভক্তকৃষ্ণায়ু-

শ্রীকৃষ্ণ বৈভব প্রকাশি প্রকাশনম্ ১১

শ্রীকৃষ্ণের বিশ্বময়ক-প্রাণ-মুখ্য-প্রকাশের তাদৃশ বৈভবদর্শন জন্য নারদ ষাণ্ডকার আগমন করেন। অতএব বিশ্বময়কতা যেহু উহা বৈভব। শ্রীকৃষ্ণের এই প্রকাশকে কারব্যাহ বলা যায় না। শ্রীকৃষ্ণের এই প্রকাশ সৌভরি প্রভৃতি ঋষিগণের ন্যায় কারব্যাহ হইলে, তদর্শনে কারব্যাহনির্মাণ-কুশল নারদাদি ঋষিগণের বিশ্বম উৎপন্ন হইত না। শ্রীকৃষ্ণের প্রোভবপ্রকাশ ও খিলাসমূর্তিসকল দর্শন করিয়া নারদাদির বিশ্বম জন্মিতে দেখা যায় না। ৩৫—৩৭।

(২০৯ পা) "চিত্রমিতি।" শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ১৩পৃষ্ঠায় দেখুন। বৈভবময় মুখ্যপ্রকাশ পর প্রমাণ এই শ্লোক ২৮।

(২০৯পা) "সেই বহু...নামবিভেদ।" এই ৬৮ পয়ারের ভাবার্থ। সেই বপু, প্রকাশিতদেহ। পৃথক, অন্যবিধ আকারে। ভাসে, প্রকাশ পায়।

যে প্রকাশে প্রকাশিত দেহ ও আকার ভিন্নরূপে প্রকাশ পায় এবং অভিমান ও বেশের ভেদ হয়, তাহার নাম প্রোভব। "নাম বৈভব" স্থানে "নাম প্রোভব" পাঠ হইবে, লিপিকর প্রমাদে ঐরূপ ঘটিয়াছে। যদি বল, দেহ, আকার, অভিমান ও বেশ যদি স্বররূপ হইতে ভিন্ন হইল, তবে, তাহাকে প্রোভব প্রকাশ কিরূপে বলিতেছ? প্রকাশের যে লক্ষণ করিয়াছ, তাহার অব্যাপ্তি হইয়াছে এবং মূর্তিরও ভেদ হইয়াছে, তদন্তরে বলিতেছেন, "রনন্ত" ইতি। শ্রীকৃষ্ণ অনন্তরূপে প্রকাশ পাইলেও, তাঁহার মূর্তিতে বীকৃত হয় না। তাঁহার একমূর্তিতে অনন্তমূর্তির প্রকাশই বীকৃত হয়। তিনি অনন্তপ্রকাশে অনন্তমূর্তি হয় না, তাঁহার একমূর্তিই অনন্তমূর্তিতে দৃষ্ট হয়। তাঁহার একমূর্তি বিবিধ রূপে, বিবিধ বর্ণে, বিবিধ অঙ্গ বিবিধ বেশ, বিবিধ কায়-রূপে প্রকাশ পায়।

(২০৯ পা) "অন্যে চেতি" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। "অনন্ত প্রকাশে" এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ২২৯।

(২১০ পা) "বৈভব প্রকাশ... কত্রিয় জ্ঞান।" এই ৬৯ ও ৭০ পয়ারের ভাবার্থ। কোন্ কোন্ মূর্ত্তি বৈভব ও প্রাভব প্রকাশ তাহা বলিতেছেন, "বৈভব" ইত্যাদি। ব্রজ জীবলরাম কৃষ্ণের বৈভব প্রকাশ। জীবলরামের বর্ণমাত্র ভিন্ন হইলেও আকারাদি সকলই শ্রীকৃষ্ণের সমান। অতএব বর্ণভেদ হইলেও স্বয়ংরূপের সহিত আকৃত্যাদির অভেদ হেতু, উহা বৈভব প্রকাশ হইতেছে। দেবকীনন্দন কখন চতুর্ভুজ ও কখন বিভুজ হন, তন্মধ্যে বিভুজ মূর্ত্তিটিই বৈভব প্রকাশ। চতুর্ভুজ মূর্ত্তিটি প্রাভব প্রকাশ। "প্রাভববিলাস অর্থাৎ প্রাভবপ্রকাশ। বৈভবপ্রকাশে ভাবভেদ না থাকায়, উহা স্বয়ংরূপ মধ্যে পরিগণিত হয়। অতএব স্বয়ংরূপে গোপবেশ ও গোপাভিমান হইয়া থাকে। এই হেতু ব্রজস্থ বলরামের বর্ণভেদ হইলেও গোপবেশ এবং গোপাভিমান থাকায়, ইনি বৈভব প্রকাশ। প্রাভবেশ ও ভাবের ভেদ আছে, তন্মধ্যে চতুর্ভুজ শ্রীকৃষ্ণের কত্রিয়বেশে কত্রিয়াদি অভিমান হয়। অতএব উহা প্রাভব। ৬৯। ৭০।

(২১০ পা) "সৌন্দর্য... দর্শনে।" এই ৭১ ও ৭২ পয়ারের ভাবার্থ।

"প্রকাশিত ন ভেদেব পণ্যতে ন হি নো পৃথক।" অর্থাৎ প্রকাশ স্বয়ংরূপ হইতে ভিন্ন নহে বলিয়া এখানে স্বয়ংরূপ শব্দে প্রকাশ এবং উপসর্গ করা বৈভব প্রকাশ বুঝিত হইবে।

বৈভবপ্রকাশে গোপবেশে ও গোপাভিমান হয়। প্রাভবপ্রকাশে কত্রিয়বেশ ও কত্রিয়াভিমান হয়। ইহাই বৈভব ও প্রাভবপ্রকাশের পার্থক্য। স্বয়ংরূপে বাদৃশ সৌন্দর্য, ঐর্ষ্য, মাদুর্য ও বৈদম্ব প্রকাশ পায়, প্রাভবপ্রকাশে তাদৃশ সৌন্দর্যাদি প্রকাশ পায় না।

কল্পিত সাধনাদিহলে শ্রীকৃষ্ণের চতুর্ভুজপ্রকট হইলেও, সে সময়ে, "আমি কৃষ্ণ" এই অভিমান থাকে, কিন্তু পরবোমনাথ বা বাহুবোমাদি বলিয়া অভিমান হয় না, সুতরাং তাদৃশ চতুর্ভুজও সেই বিভূজের প্রকাশ, কিন্তু স্বয়ংরূপের প্রাভবপ্রকাশ। স্বয়ংরূপ ও বৈভবপ্রকাশের সৌন্দর্যাদিদর্শনে প্রাভবপ্রকাশেরও কোত জন্মে। তাহার উদাহরণ দিতেছেন, "মথুরাতে বৈছে" ইতি ৭১। ৭২।

(২১০ পা) "উদগীর্ণাকুতমিতি।" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। স্বয়ংরূপের সৌন্দর্যাদি দর্শনে প্রাভব প্রকাশের যে, কোত হয়, তাহা এই শ্লোকে প্রমাণ করিলেন। "মথুরাতে" পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ৭০।

(২১০ পা) "অপন্নিকলিতপূর্কইতি।" শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৪৮ পৃষ্ঠায় দেখুন। দ্বারকায় শ্রীকৃষ্ণ নিজচিত্র অবলোকনে অর্থাৎ প্রতিবিম্ব দর্শনে যে ক্ষুভিত হন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ৩০।

(২১০ পা) "সেই বপু... চারি জন।" এই ৭৪ হইতে ৭৬ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ। "সেই বহু" ইতি। যে রূপ স্বয়ংরূপের সহিত অত্বেদে বিরাজিত হইয়াও আকৃত্যাদি দ্বারা অন্যের ন্যায় প্রকাশ পায়, তাঁহাকে তদেকান্তরূপ বলে। প্রকৃত স্বয়ংরূপ বলিয়া তদেকান্তরূপ বর্ণিত হইবে।

ইহাকে কার্যবাহু বলাও যায়। তদে-  
কাক্ষরূপ আবার বিলাস ও স্বাংশ ভেদে  
দ্বিবিধ। যে রূপ লীলাবিশেষসম্পাদনার্থ  
ভিন্নাকারে প্রকাশিত হইয়াও শক্তিতে  
প্রায়ই মূলরূপের তুল্য হয়, তিনি বিলাস।  
বিলাস ও স্বাংশের ভেদে, বিলাস-ও  
স্বাংশের প্রকার স্বীকার করিলে। মুখ্য  
প্রকাশে যেমন বৈভব ও প্রাভবের ভেদ  
বলা হইয়াছে তদ্রূপ বিলাসেও বৈভব ও  
প্রাভব দ্বিবিধ স্বীকৃত হয়।

যে বিলাসে অপেক্ষাকৃত অধিক শক্তি প্রক-  
টিত হয়, তাহাকে বৈভব প্রকাশ বলে। যে  
বিলাসে অপেক্ষাকৃত অল্প শক্তি প্রকটিত হয়,  
তাহাকে প্রাভব প্রকাশ বলে। বিলাসের আবার  
বিলাস স্বীকার করিলে অনন্ত প্রকার ভেদ হয়।  
বিলাসের বৈভব কি, তাহা বলিতেছেন, “প্রাভব”  
ইতি। বাহুদেব, সত্বর্ষণ, শ্রদ্ধায় ও অনির্দুঃ এই  
চারিজন মুখ্য অর্থাৎ প্রথম কার্যবাহু বা বিলাসের  
বৈভবপ্রকাশ। “প্রাভাববিলাস” স্থানে “বৈভব-  
বিলাস” পাঠ হইবে ॥ ৭৪-৭৬ ॥

( ২১০ পা ) ‘ব্রজে ... .. ভেদে  
ভাসে ।’ এই ৭৭ পরায়ের ভাবার্থ।

যদি বল, ব্রজের বর্ণনাম যদি বিলাস না হইয়া  
বৈভবপ্রকাশ হয়, তবে মথুরার বলরাম কোন  
প্রকাশ? উক্তভবে, বলিতেছেন, “ব্রজে” ইতি।  
রামের ( বলরামের ) ব্রজে গোপতাব এবং পুরে  
( দ্বারকা ও মথুরার ) কজ্রিগতাবে। সেই কজ্রিগতাবে  
বলরামের বর্ণ ও বেশাদির ভেদ থাকার মথুরার  
বলরাম বিলাস, কিন্তু ব্রজে বলরামের বর্ণ-ভেদ  
ব্যতীত অন্য কোন বেশাদির ভেদ না থাকার,  
ঐ মুক্তি বৈভবপ্রকাশ। অতএব বলরাম এক  
মুক্তিতেই গোপ ও কজ্রিগতাবে প্রকাশ পান  
যদিহা, ব্রজে বলরাম বৈভবপ্রকাশ, মথুরার  
বিলাসেও মথুরার বৈভববিলাস। “প্রাভব-

বিলাস” স্থানে “বৈভববিলাস” পাঠ হইবে।  
শ্রীকৃষ্ণের বিলাস মথুরার বাহুদেব ও সত্বর্ষণ  
( বলরাম ); বৈভববিলাস দ্বারকার বাহুদেব,  
সত্বর্ষণ, শ্রদ্ধায় ও অনির্দুঃ ॥ ৭৭ ॥

( ২১১ পা ) “আদিচতুর্বুহু.....  
নারায়ণরূপে ॥ এই ৭৮ ও ৭৯ পরা-  
রের ভাবার্থ। আদিচতুর্বুহু, দ্বারকাস্থ  
প্রথম চতুর্বুহু। প্রাকট্যকারণ, প্রকা-  
শের হেতু। এই চারি, দ্বারকাস্থ  
চতুর্বুহু। “প্রাভাববিলাস” স্থানে “বৈভব  
বিলাস” পাঠ হইবে। এই চারি হেতে,  
দ্বারকাস্থ চতুর্বুহু হইতে। “বৈভব-  
বিলাস” স্থানে “প্রাভাববিলাস” পাঠ  
হইবে। পূর্নরূপে, দ্বারকায় চতুর্বুহুরূপে  
শ্রীকৃষ্ণ যেমন প্রকাশ পান, তদ্রূপে।  
শ্রীকৃষ্ণের প্রাভাববিলাস বৈকুণ্ঠে নারায়ণ  
ও চক্ৰিশ মুক্তি ॥ ৭৮-৭৯ ॥

( ২১১ পা ) “তাহা হইতে.....  
ব্রজেশ্বরনন্দ ॥” এই ৮০ ও ৮১ পরায়ের  
ভাবার্থ। তাহা হইতে, নারায়ণরূপ  
হইতে। আবাররূপে, নারায়ণের  
আবাররূপে। যার বাস, যে চতুর্বুহুরের  
স্থিতি। চারিজনের, বাহুদেবাদি চারি-  
জনের প্রত্যেকের তিন তিন মুক্তি।  
যাহা হইতে, যে বাহুদেবাদি চারি মুক্তি  
হইতে কেশবাদি বিলাসগণের প্রকাশ।  
চক্রাদি ধারণের ভারতম্য বশতঃ কেশ-  
বাদি বিলাসগণের নামও বিভিন্ন। ইহারা  
বিলাসের প্রকাশ; ইহা দেখাইতেছেন,  
“বাহুদেবের” ইত্যাদি। এ অন্য গোবিন্দ  
অর্থাৎ সত্বর্ষণের বিলাস যে গোবিন্দ  
উক্ত হইল, ইনি অন্য গোবিন্দ, ইনি  
নন্দ-নন্দন শ্রীকৃষ্ণ নহেন ॥ ৮০-৮১ ॥

( ২১১ পা ) \*প্রায়শ্চিত্তের... .. অষ্টজন ।\* এই ৮২ হইতে ৮৪ পয়স পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । মার্গশীর্ষে, অগ্রহায়ণ মাসে । রাধাদামোদর অর্থাৎ কাণ্ডিকমাসের দেবতা দামোদর হইতে নন্দনন্দন রাধাদামোদর ভিন্ন । ষাটশ তিলক যথা,—

দলাটে কেশব, উপরে নারায়ণ, বক্ষঃস্থলে মাধব, কণ্ঠকূপে গোবিন্দ, দক্ষিণ কুক্ষিতে বিষ্ণু, দক্ষিণ বাহুতে মধুসূদন, দক্ষিণ ঋজে ত্রিবিক্রম, বাম কুক্ষে বামন, বাম বাহুতে শ্রীধর, বাম ঋজে হরীকেশ। পৃষ্ঠে পদ্মনাভ ও কটিতে দামোদর এই ষাটশ স্থানে ষাটশ নাম চিত্তা করিয়া তিলক করতঃ ন্যাস করিবে । তিলকরচনাবিষয়ে অমূল্য-নিয়ম স্মৃতি,

“মনামিকা কামদোক্তা মধ্যামূলকরী ভবেৎ ।

অমূল্যঃ পৃষ্ঠিদেশঃ প্রোক্তা তর্জনী মোক্ষসাধনী ॥”

অনামা অভীষ্টপাত্রী, মধ্যমা আয়ুর্কৃৎ জিকরী, অমূল্য পৃষ্ঠিসাধক এবং তর্জনী মোক্ষসাধনী । যাহা নাসামূল হইতে আরম্ভ করিয়া কেশ পর্য্যন্ত বিস্তৃত, অর্থাৎ সূক্ষ্মর ও মধ্যে ছিদ্রবিশিষ্ট, সেই উর্দ্ধপুণ্ড্রই হরিশঙ্কর বলিয়া কথিত হয় । নাসিকার তৃতীয় ভাগই নাসামূল শব্দে অভিহিত । জয়গলের মূল হইতে আরম্ভ করিয়া ছিদ্র রচনা করিতে হয় । উর্দ্ধপুণ্ড্রের বামভাগে ব্রহ্মা, দক্ষিণপার্শ্বে সদাশিব ও মধ্যস্থলে শ্রীহরি অধিষ্ঠিত থাকেন ; স্মরণার্থে মধ্যস্থলে লেপন করিবে না । পায়ে উক্ত হইয়াছে,

“বহুরীৱং মজ্জয়ানামূল্যপুণ্ড্রং বিনা কৃতম্ ।

ঐষ্টব্যং নৈব ততাবৎ শ্ৰীশানসদৃশং ভবেৎ ॥”

তিলকরচিত্ত মানব বেহ দর্শন করিতে নাই, উহা শ্ৰীশানসদৃশ । তত্তৎস্থান, আচমনে ওষ্ঠাদি-স্থান । এই চারিজনের বাসুদেবর্ষি চারি-জনের । ৮২-৮৪-৪

( ২১১ পা ) \*বাসুদেবের... .. বিস্তৃতি ।\* এই ৮৫ হইতে ৮৮ পয়স পর্য্যন্ত ভাবার্থ । বিলাসের প্রকাশ বলিয়া বিলাসের বিলাস বলিতেছেন, “বাসুদেবের” ইত্যাদি । এই চক্ষিণ মূর্ত্তি অর্থাৎ ষাটশমাগের ষাটশ দেবতা, বাসুদেবর্ষিদির পুরুষোত্তমাদি অষ্টমূর্ত্তি এবং বাসুদেবর্ষি চারিজন ; মাকলেয় চক্ষিণ মূর্ত্তি । অঙ্গধারণ ভেদে, অঙ্গ-ধারণের প্রকার ভেদে । পৃথক্ বৈকুণ্ঠ, ভগবদ্ধাম মাত্রেয়ই নাম বৈকুণ্ঠ । অতএব বাসুদেবর্ষি চারিজন ও তাহাদের বিলাসমূর্ত্তি বাহা বলা হইল অর্থাৎ এই চক্ষিণজনের পরব্যোমে পৃথক্ পৃথক্ ধাম আছে । পূর্বাদি ইত্যাদি অর্থাৎ পূর্বাদিকে তিনজনের তিনলোক, অগ্নি-কোণে তিনজনের তিনলোক এইরূপে পরব্যোমের অষ্টদিকে চক্ষিণমূর্ত্তির পৃথক্ পৃথক্ লোক বিদ্যমান আছে । যদিও ইত্যাদি যদিও পরব্যোমে সকল মূর্ত্তিরই পৃথক্ পৃথক্ লোক আছে, তথাপি তন্মধ্যে কাঁহার কাঁহারও ব্রহ্মাণ্ড মধ্যে সন্নিধান আছে ॥ ৮৫-৮৮ ॥

( ২১১ পা ) \*এক কৃকলোক... .. গুন সনাতন ।\* এই ৮৯ হইতে ৯১ পর্য্যন্ত পয়সের ভাবার্থ ।

পূর্কোক্ত পরব্যোম মধ্যে নারায়ণ লিখা বিধা-স্মিত । কৃকলোকের বিস্তৃতি বে শ্রীগোলকধাম, তাহা পরব্যোমের উপরে আস্থিত । গোলক বে কৃকলোকের বিস্তৃতি, সেই কৃকলোক কর প্রকার, তাহা বলিতেছেন, “এক কৃকলোক” ইতি । “তথাপি ব্রহ্মাণ্ডে” পূর্ব পয়সের বে স্মিত ।

ছেন, চক্ৰিণ মূর্তির পরব্যোমে পৃথক্ পৃথক্ স্থান থাকিলেও, তদ্ব্যযো কাঁহারও ব্রহ্মাণ্ডে সন্নিধান আছে। ব্রহ্মাণ্ডে কোন স্থানে কোন মূর্তির সন্নিধান আছে, তাহা বলিতেছেন, “মধুরাতে কেশবের” ইত্যাদি।

মাদ্ধাপুরে হরিঘারে। সপ্তদ্বীপ বধা' জম্বু, প্রাক, শাম্বলী, ক্রৌঞ্চ, কুশ, শাক ও পুষ্কর। নবখণ্ড বধা, ভারত, ভদ্রাখ, কেতুমাল, উত্তর-কুশ, ইণাবৃত, রস্যক, হিরণ্ময়, হরিবর্ষ ও কিং-পুরুষবর্ষ এই নবখণ্ডে জম্বুদ্বীপ বিতক্ত। করেন বিলাস, ক্রীড়া করেন। “সর্কত্র” ইতি। ক্রীড়ার জন্য ভগবানের যে সর্কত্র প্রকাশ হয়; তাহার কারণ বলিতেছেন, “ভক্তে সুখ দিতে।” ইতি। ভক্তে সুখ দেওয়া মুখ্য কারণ, ধর্ম-স্থাপন ও অধর্ম বিনাশ গৌণ কারণ। ইহার মধ্যে, প্রকাশবিলাসাদি মুক্তির মধ্যে। কারো, কোনমূর্তি। অবতারে গণন, অবতার মধ্যে গণ্য হন। “অস্ত্র-প্রতি” ইত্যাদি; সনাতন, অস্ত্রধারণের প্রকার ভেদে যে নামের ভেদ হয়, সেই চক্রাদি অস্ত্রধারণের প্রকার বলিতেছি, প্রবণ কর। “দক্ষিণাধো” ॥ ৮৯-৯১ ॥

( ২১২ পা ) “দক্ষিণাধো...চক্রাদি-ধারণ।” এই ৯২ হইতে ৯৫ পর্যায় পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। দক্ষিণাধ ইত্যাদি; প্রত্যেক মূর্তির চারি অস্ত্র বলিব। তদ্ব্যযো প্রথম অস্ত্র নিম্নস্থ দক্ষিণ করে, দ্বিতীয় অস্ত্র উর্দ্ধস্থ দক্ষিণ করে, তৃতীয় অস্ত্র উর্দ্ধস্থ বাম করে, চতুর্থ অস্ত্র অধঃস্থ বাম করে।

যেমন বামকোষের নিম্নস্থ দক্ষিণ করে গদা, উর্দ্ধস্থ দক্ষিণ করে শঙ্খ, উর্দ্ধস্থ বামকোষে চক্র ও অধঃস্থ বামকোষে গদা। এইরূপ দক্ষিণাধিগুণিত

ভেদে যে প্রকার বলিব, তাহা এই নিয়মে বুঝিতে হইবে। শ্রীকৃষ্ণ, মন্দনকান হইতে ভিন্ন। সিদ্ধার্থ-সংহিতায় যে চক্ৰিণ মূর্তি বলেন, তাহা বলিয়া, হর-নীর্ঘ পঞ্চরাত্নোক্ত ষোল মূর্তির উল্লেখ করিতেছেন। তার মত, হরনীর্ঘ পঞ্চরাত্নের মত ॥ ৯২—৯৫ ॥

( ২১২ পা ) “কেশব-ভেদে.....পর-কাশে ॥” এই ৯৬ পর্যায়ের ভাবার্থ। কেশবভেদে ইত্যাদি; এই কেশব, মাধব ও নারায়ণাদি যে পূর্কোক্ত কেশব নারায়ণাদি হইতে ভিন্ন তাহা অস্ত্র ধারণেই বোধ হইতেছে। নবদিশে, নবদিকে। নবমূর্তি কি কি, তাহা পর শ্লোকে বলি-ছেন ॥ ৯৬ ॥

( ২১২ পা ) “চন্দ্রার” ইতি। শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। বাসু-দেবাদি নয়জনই নববুহ ॥ ৯২ ॥

( ২১২ পা ) “প্রকাশ...দিগ্দরশন ॥” এই ৯৭ হইতে ৯৯ পর্যায় পর্য্যন্ত ভাবার্থ। শ্রীকৃষ্ণের প্রকাশ ও বিলাসের বিবরণ বলিলাম; এক্ষণে স্বাংশের ভেদ প্রবণ-কর।

যিনি বিলাস সদৃশ হইয়াও বিলাসাপেক্ষা নূনশক্তি প্রকাশ করেন, তাঁহাকেই স্বাংশ বলা যায়। সত্বর্ষণাদি পুরুষাবতার সকল এবং মৎস্যাদি লীলা-বতারসকল স্বাংশের মধ্যে গণ্য হন। অতএব শ্রীকৃষ্ণের অবতার ছয় প্রকার। “পুরুষাবতার” ইত্যাদি। “বাল্য” ইত্যাদি, বাল্য ও পৌগণ্ড শরীরের ধর্ম বলিয়া সেই সেই অবস্থাতেই, তাঁহাকে পৃথক্ অবতার বলা হয় না। শ্রীকৃষ্ণের অবতার অনন্ত; হুতরাং তাহার গণনা করা যায় না। তবে যে গণনা করি, তাহা শাখাচক্রন্যায় তুল্য।

শাখাচক্রন্যায় বধি, কোন ব্যক্তি কাহার নিকট “চক্র কেবল”, “বিলাস” করিলে, সে বলে এই দেখ বৃকশাখায় নিকট “চক্র” ভবন “সেই চক্র”

র্শনকারী ব্যক্তি শাখার নিকট চন্দ্র দেখিয়া, শাখা  
যতিক্ষম করিলে দেখে চন্দ্র দূরবর্তী। আপাততঃ  
জ্ঞানের জন্ত যেমন বৃক্ষশাখা দেখান হয় ;  
চন্দ্র প্রথমতঃ অবতার জ্ঞানের জন্য কতিপয়  
ধরতার দেখাইলাম। প্রপঞ্চে শ্রীভগবানের  
ধরতার আপাততঃ অসম্ভব বোধ হইলেও উচা  
সম্ভব নহে ; কারণ, অচিন্ত্যশক্তিশালি শ্রীভগ-  
বানের পক্ষে কিছুই অসম্ভব নহে। এই জন্য  
শ্রীভগবানের অবতার সকল সর্বদেশে ও সর্বকালে  
সর্বত্র সমাজে সমাদৃত হয়। পৃথিবীর সকল ধর্ম-  
শাস্ত্রই অবতারের উল্লেখ করেন। অতএব অবতার  
ব করনার সামগ্রী নহেন, উপেক্ষার বস্তু নহেন,  
ঈপহাসের বিষয় নহেন, ইহা অবশ্য স্বীকার্য।  
র্শন ও বিজ্ঞান উহার; পোষকতা করেন।  
বিশেষতঃ বিশ্বের আধ্যাত্মিকাদি ত্রিবিধ মঙ্গলই  
শ্রীভগবানের অবতারে প্রতিষ্ঠিত আছে। বিশ্ব-  
সার্থার্থ শ্রীভগবানের প্রপঞ্চে অবতরণই অবতার।  
ঐ অবতার কখন অলৌকিকরূপে অর্থাৎ পিতৃাদিকে  
মপেক্ষা না করিয়া এবং কখন লৌকিকরূপে  
অর্থাৎ পিতৃাদি হইতেই হইয়া থাকে। অংশাবতার,  
গুণাবতার ও আবেশাবতার ভেদে; উক্ত অবতার  
ত্রিবিধ। অংশাবতার আবার পুরুষাবতার, লীলাব-  
তার, মনস্তাবতার ও যুগাবতার ভেদে চারি  
প্রকার। গুণাবতার সর্বাদিগুণ ভেদে ত্রিবিধ।  
আবেশাবতার শ্রীভগবদাবেশ ও তচ্ছক্যাবেশ ভেদে  
ত্রিবিধ। উক্ত অংশাবতারাদি অবতারের অধি-  
কাংশই স্বাংশ বা আবেশ। যিনি স্বয়ংরূপ, তিনিও  
কখন কখন ধরাধামে অবতরণ করেন। তাঁহার  
অবতার সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র। ঐ স্বতন্ত্র স্বয়ংরূপের বিষয়  
পরে বলা হইবে। আপাততঃ ষাটসত্তর ষাট  
অবতরণই উক্ত হইতেছে ॥ ১৭—২২ ॥

(২১৩ পা) “অবতারা” ইতি । এই  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। “অনন্তাবতার কৃষ্ণের” পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৩ ॥

(২১৩ পা) “প্রথমে ... প্রকার।”  
এই ১০০ পরায়ের ভাবার্থ। সৃষ্টাদি-  
কৃষ্ণ শ্রীকৃষ্ণ প্রথমে পুরুষাবতার করেন।  
ঐ পুরুষ তিন প্রকার ॥ ১০০ ॥

(২১৩ পা) “বিক্ষোভিত্তি ।” শ্লোকের  
টীকা ও ব্যাখ্যা আদির ৫৬ পৃষ্ঠায়  
দেখুন। “সেইত পুরুষ” পয়ার প্রমাণ  
এই শ্লোক ॥ ৩৪ ॥

(২১৩ পা) “অনন্তশক্তি ... তাহার  
প্রকাশ ॥” এই ১০১ হইতে ১০৩ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ। শ্রীকৃষ্ণ সৃষ্টাদিকার্য  
কিরূপে করেন, তাহা বলিতেছেন,  
“অনন্তশক্তি।” ইত্যাদি। কৃষ্ণের ইচ্ছা-  
শক্তিই প্রাধান, এই হেতু ইচ্ছামাত্রই  
শ্রীকৃষ্ণ সমস্ত কার্য সম্পাদন করেন।  
চিত্তাধিষ্ঠাতা, চিন্তের অধিষ্ঠাতা। তিনের  
তিন শক্তি, কৃষ্ণের ইচ্ছাশক্তি, বাসু-  
দেবের জ্ঞানশক্তি ও সর্গধর্মের ক্রিয়া-  
শক্তি। প্রপঞ্চরচন, সৃষ্টাদি কার্য।  
প্রাকৃতপ্রাকৃত, প্রাকৃত ব্রহ্মাণ্ড এবং  
অপ্রাকৃত বৈকুণ্ঠাদি। শ্রীকৃষ্ণের ইচ্ছায়  
সর্গধর্ম চিহ্নিত্তি দ্বারা গোকুল ও বৈকুণ্ঠ  
সৃজন করেন। যদিও গোকুল ও বৈকুণ্ঠ  
সৃষ্টির অসোগ্য, যে হেতু চিহ্নিত্তিই  
বৈকুণ্ঠাদিরূপে অনাদিকাল হইতে  
বিলাস পাইতেছেন। অতএব নিত্য,  
তথাপি সর্গধর্মের ইচ্ছায় তাহার প্রকাশ  
হয় ॥ ১০১—১০৩ ॥

(২১৩ পা) “মহত্বপত্রমিত্তি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। মূলসর্গধর্ম চিহ্নিত্তি দ্বারা যে  
বৈকুণ্ঠাদি প্রকাশ করেন, তৎপ্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ৩৫ ॥



( ২১৩ পা ) “মায়া দ্বারা ... দাহ-  
শক্তি ॥” এই ১০৪ হইতে ১০৬ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল । তিঁহো, সঙ্কর্ষণ ।  
তাহাতে, জড়রূপা প্রকৃতিতে । জড়-  
রূপা প্রকৃতি কিরূপে সৃষ্টি করেন,  
তাহা উদাহরণের সহিত দেখাইতেছেন,  
“লৌহ” ইতি । অগ্নিতে উত্তপ্ত লৌহ  
যেমন দক্ষ করে ॥ ১০৪—১০৬ ॥

( ২২০ পা ) “এতৌ হি বিশ্বস্যোতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । ঈশ্বরশক্তি দ্বারা প্রকৃতি পরি-  
চালিত হইয়া স্ব স্ব কার্য সম্পাদন করেন,  
ইহাই শ্লোকে প্রমাণ করিলেন ॥ ৩৬ ॥

( ২১৪ পা ) “সৃষ্টি হেতু ... হইলা  
প্রথম ॥” এই ১০৭ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । সেই সৃষ্টি, সঙ্কর্ষণ সৃষ্টি । সবার,  
স্বাংশাদি অবতারগণের । মায়া অব-  
লোকিতে, দূর হইতে মায়াকে অব-  
লোকন করিবার জন্য । পুরুষরূপে  
অর্থাৎ কারণাবশ্যায়ী মহাবিশ্বরূপে  
প্রথম অবতীর্ণ হন । অতএব ইহাকে  
প্রথম পুরুষ বলে ।

‘প্রথমলীন, বাসনাবদ্ধ, পরমেশ্বরবিমুখ জীব-  
গণের প্রতি করুণাবশতঃ শ্রীভগবানের সৃষ্টির  
ইচ্ছা হয় । বাসনাবদ্ধ জীব সৃষ্টসংসারে কর্ম  
করিতে করিতে গুরু হইয়া আমার সামুখ্য লাভ  
করুক, এইরূপ ইচ্ছা হইতেই শ্রীভগবানের সৃষ্টির  
ইচ্ছা প্রকাশ পায় । সৃষ্টীকারী পরমেশ্বর  
পুরুষরূপ স্বীকার করিয়া প্রকৃতির প্রতি দৃষ্টি  
করেন । ঐ দৃষ্টিতে গুণত্রয়ের সাম্যাবস্থার  
বিনাশে স্পন্দনরূপ কোত্ত উৎপন্ন হয় । গুণ-  
কোত্তে অব্যক্ত প্রকৃতি ত্রিগুণময়ী সৃষ্টিতে প্রকাশ  
পায় । স্ববাদিশুণত্রয়ের নিদান বৃত্তিসকলের

স্পন্দন বা অভ্যাদয়ই উহাদের কোত্ত । স্ববাদি-  
গুণ তিনটি পরস্পরের অস্তিত্ব, উপকার, পরি-  
ণাম ও সংসর্গ দ্বারা নিজ নিজ বৃত্তি প্রাপ্ত হয় ।  
এইরূপে গুণত্রয়ের বৃত্তির অভ্যাদয়ে ক্রমাগত  
মহাদাহিত্বসকল উৎপন্ন হয় । প্রথমপুরুষই  
তত্ত্বসকলের সৃষ্টিকর্তা ও প্রকৃতির অন্তর্ধামী ।  
ইনি মহাবিশ্ব ও সঙ্কর্ষণ প্রভৃতি নামে কথিত  
হন । ইহার রূপ বিরাট ॥ ১০৭ ॥

( ২১৪ পা ) “জগৃহে পৌরুষমিতি ।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৬৩  
পৃষ্ঠায় দেখুন । শ্রীভগবান্ মূলসঙ্কর্ষণ  
যে পুরুষরূপে অবতীর্ণ হন, তৎপ্রমাণ  
শ্লোক ॥ ৩৭ ॥

( ২১৪ পা ) “আদ্যোহনতার” ইতি ।  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৬৩  
পৃষ্ঠায় দেখুন । প্রথমপুরুষ মূলসঙ্কর্ষণের  
অবতার তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৮ ॥

( ২১৪ পা ) “সেই পুরুষ...নাহি গতি ॥”  
এই ১০৮ পয়ারের ভাবার্থ সরল । সেই  
পুরুষ, প্রথম পুরুষ । ইহার সবিশেষ  
আদির পঞ্চম পরিচ্ছেদে দেখুন ॥ ১০৮ ॥

( ২১৪ পা ) “প্রাবর্ত্ত্ত” ইতি ।  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । বিরজানদীর অপর পারে  
পরব্যোমে মায়ার গতি নাই, তাহা এই  
শ্লোকে প্রমাণ করিলেন ॥ ৩৯ ॥

( ২১৪ পা ) “মায়ার যে.....  
সমর্পণ ॥” এই ১০৯ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । বৃত্তি, বিকাশ । প্রধান, প্রকৃতি ।  
সেই পুরুষ, প্রথম পুরুষ । মায়াপানে,  
মায়ার প্রতি । অবধান, দীক্ষণ ॥ তাতে,  
প্রকৃতিতে ॥ ১০৯ ॥

( ২১৪ ) “দৈবাদিত্তি ।” ও “কাল-

রুন্ত্যেতি ।” শ্লোক দুইটির তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। প্রথমপুরুষ প্রকৃতিতে জীবনামক শক্তি আধান করেন, তাহা এই শ্লোক দুইটিতে প্রমাণ করিলেন ॥ ৪৭।৪১ ॥

( ২১১ পা ) “তবে মহত্ব ... মায়া পর ॥” এই ১১০ ১১১ পয়ারের ভাবার্থ। মহত্ব, প্রকৃতির প্রথম পরিণাম। ত্রিবিধ অহঙ্কার, মাত্মিক, রাজসিক ও তামসিক অহঙ্কার। যাহা হৈতে, যে ত্রিবিধ অহঙ্কার হইতে। দেবতা, ইন্দ্রিয় ও ভূতের প্রচার (কার্য)। মাত্মিক অহঙ্কার হইতে দেবতা, রাজসিক অহঙ্কার হইতে ইন্দ্রিয় ও তামসিক অহঙ্কার হইতে ভূতের কার্য হয়। সর্গত্ব অর্থাৎ চিত্ত, বুদ্ধি, মনঃ ও অহঙ্কার। এঁহো ইনি অর্থাৎ প্রথমপুরুষ। ধাম, বসতি। মায়াপর, মায়াভীত ॥ ১১০।১১১ ॥

( ২১৫ পা ) “ষনৈকনিষ্ঠ্যন্তেতি ।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গালা আদির ৬৪পৃষ্ঠায় দেখিবেন ॥ ৪২ ॥

( ২১৫ পা ) “সমস্ত ... মহত্ব ॥” এই ১১২ পয়ারের ভাবার্থ। ইহঁে, প্রথমপুরুষ। প্রথমপুরুষের মহত্ব বলিয়া, দ্বিতীয়পুরুষের মহত্ব ও প্রয়োজন বলি তেছেন,

মহাদি ক্ষিত্যন্ত অসংহত কারণত্বসমূহকে পরম্পর মিলিত করিবার জন্য প্রথমপুরুষ অংশতঃ বহুরূপ হইয়া উহাদের মধ্যে প্রবেশ করেন। এই প্রবিষ্ট অংশই দ্বিতীয়পুরুষ। ইহঁার প্রবেশের পূর্বে তত্ত্বসকল অন্তর্নিহিত-ক্রিয়াশক্তিপ্রভাবে পরম্পর অসংহত অবস্থায় একমাত্র স্বাভাবিক সলল গতিতে অনন্ত আধারে নীহারের ন্যায়

বিচরণ করে। সলল গতির পরিবর্তন বা বক্ত-ভাব বিরুদ্ধশক্তির বাধা ব্যতীত সিদ্ধ হয় না। আবার উক্ত বক্তভাব ব্যতীত অবয়বসম্মিশ্রণ সম্ভব হয় না। অতএব প্রথমপুরুষের দ্বিতীয়-পুরুষরূপে প্রাপক্কে মধ্যে অবতরণের প্রয়োজন হয়। দ্বিতীয়পুরুষ প্রাপকে অবতরণ করতঃ স্বীয় প্রবল আকর্ষণ দ্বারা তত্ত্বসকলকে বক্তগতি প্রাপিত করেন। এইরূপে তত্ত্বসকল বক্তগতিবিশিষ্ট, পরম্পর সম্মিলিত, পক্ষীকৃত, চক্রাবর্তে আবর্তিত ও আকৃষ্ট হইয়া কৈন্দ্রিক আকর্ষণ অস্তিত্ব করিয়া কেদ্রবিচ্ছিন্ন অনন্ত ব্রহ্মাণ্ডের আকার ধারণ করে। কেদ্রবিচ্ছিন্ন ব্রহ্মাণ্ডসকল দিগ্দিগন্তে ধাবিত হয় না; যেহেতু সমষ্টির অবয়ব ব্যাপ্তি বস্তুসকল সমষ্টিকে কেদ্র করিয়া উহার সমান্তর অঙ্করেখাতেই পরিভ্রমণ করে। দ্বিতীয় পুরুষ ব্রহ্মাণ্ডের সৃষ্টিকর্তা। ইনি প্রাচ্য প্রকৃতি নামে উক্ত হন। ইনিও বিরাটরূপী ॥ ১১২ ॥

( ২১৫ পা ) “সেই পুরুষ ... মায়া-পার ॥” এই ১১৩ হইতে ১১৭ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সলল। সেই পুরুষ, প্রথমপুরুষ। একৈক মূর্ছে, এক এক মূর্ত্তি ধারণ করিয়া এক এক ব্রহ্মাণ্ডে প্রবেশ করেন। সেই জলে, ব্রহ্মাণ্ডান্তর্গত জল স্তম্ভন করিয়া। তিহো, দ্বিতীয় পুরুষ। স্পর্শ নাহি মায়াসনে, মায়াসন গহিত মাফাৎ সম্বন্ধ নাই। বাহার, দ্বিতীয়পুরুষের। গুণ অবতাব, তিন-গুণের নিয়মনের জ্ঞান অবতারণ।

অয়স্বস্তের সন্নিধানে যেমন জড় লৌহের গতি-শক্তি হয়, তজপ জড়গুণ স্বয়ং কোন কার্য্য করিতে না পারায়; ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও ব্রহ্ম এই তিনের সন্নিধানে জড়গুণ সব, রজ ও তমোগুণের স্ব স্ব কার্য্যে সামর্থ্য হয়।

অধিকার, অধিকারী ॥ ১১০—১১৭ ॥

( ২১৫ পা ) 'তৃতীয় ... বায় গণন ॥'  
এই ১১৮ ও ১১৯ পয়ারের ভাবার্থ। গুণ  
অবতার, মঙ্গুগুণের নিয়ামকরূপে অব-  
তার। দুই অবতার, ব্যষ্টি জীবের মন্ত-  
খামী ও পালনকর্তা। তিহৌ, তৃতীয়  
পুরুষ।

দ্বিতীয় পুরুষ কর্তৃক সৃষ্টব্রহ্মাও হুন্ম। হুন্ম  
সৃষ্টির জন্য দ্বিতীয়পুরুষ হইতে বিবিধ অবতার  
সকল প্রাগ্ভূত হয়। তন্মধ্যে যিনি পালনকর্তা  
বিষ্ণু, তিনিই তৃতীয়পুরুষ। ইনি ব্যষ্টিজীবের  
অন্তর্গামী। ইনি ক্ষীরোদশায়ী ও অমিরুদ্ধ প্রভৃতি  
নামে কথিত হন। ইনি চতুর্ভুজ। ইহাকে পর-  
নাম্বা বলে।

মহাপ্রভু কহিলেন, সনাতন! সংক্ষেপে  
তোমাকে পুরুষাবতার বলিলাম। এক্ষণে লীলাব-  
তার বলিব। শ্রীকৃষ্ণের লীলাবতার অসংখ্য,  
উহার বর্ণনা করা যায় না। অতএব উহার দুই  
চারিটি প্রধান লীলাবতারের উল্লেখ করিব, ইহা-  
তেই অন্য লীলাবতার বুঝিবে। শ্রীকৃষ্ণের যে  
সকল অবতারে চেটারহিত, বিবিধবৈচিত্র্যপূর্ণ,  
নিত্য নূতন উল্লাসতরঙ্গ ঘারা তরঙ্গারিত খেচ্ছা-  
ধীন কার্য সকল দৃষ্ট হয়, তাহাদিগকেই লীলাব-  
তার বলে। লীলাবতার সকল পূর্ণ, অংশ ও  
আবেশ স্তেদে জিবিধ। উহার মধ্যে অধিকাংশই  
অংশাবতার ও আনেশাবতার। একমাত্র শ্রীকৃষ্ণই  
পূর্ণাবতার। পূর্বে যে স্বয়ংক্রমের কথা বলা হই-  
য়াছে, এই শ্রীকৃষ্ণই সেই স্বয়ংক্রম। শ্রীমদ্ভাগবতে  
অনেকগুলি লীলাবতারের বিষয় উক্ত হইয়াছে।  
তন্মধ্যে প্রধান লীলাবতারের উল্লেখ করি। যথা,  
মৎস্য, কুর্মা, রথুনাথ, নৃসিংহ, বামন ও বরাহাদি।

মৎস্য। ব্রাহ্মকল্পে মৎসাবতারের বারদশ  
আবির্ভাব শ্রবণ করা যায়। তন্মধ্যে সায়ম্ভুব মন-  
স্করের অবসানে হরপ্রীথ নামক দৈত্যকে বিনাশ  
করিয়া অপরূপতরয়েদের আধরণ অন্য একবার এবং  
চাক্ষুস মনস্করের অবসানে ভাবী বৈবস্বতময় রাজা

সত্যব্রতকে কৃপা করিবার জন্য আর একবার  
মৎস্যদেবের অবতার উক্ত হয়। বিষ্ণুদর্শোক্তরের  
মতে প্রতি মনস্করেই একবার করিয়া মৎসাব-  
তারের আবির্ভাব হয়। এই অবতারে এক কল্পের  
স্মরিত্ত বীজ অপর কল্পে নীত হইতে দেখা যায়।  
সংহিতাদিতেও এই অবতারের প্রসঙ্গ দৃষ্ট হয়।

কুর্মা। কল্পের আদিতে পৃথিবীধারণজন্য  
যে কুর্মা প্রকট হন, তিনিই পুনর্বার চাক্ষুস মন-  
স্করে আবির্ভূত হইয়া পৃষ্ঠদেশে মন্দরপর্বত ধারণ  
করিয়া সমুদ্রমস্থান কার্য সমাধা করেন। সেদে  
এই অবতারেরও বহুল প্রচার দেখা যায়।

রাঘবেন্দ্র। বৈবস্বতমনস্করীয় চতুর্বিংশ চতু-  
র্য়ুগের ত্রেতার শ্রীভগবান্ ভরত, লক্ষণ ও  
শক্রয়েগ সহিত শ্রীরামচন্দ্রকপে অবতরণ পূর্বক  
রাক্ষসকুল বিনাশ করেন।

নৃসিংহ। চাক্ষুসমনস্করে সমুদ্র মস্থনের পূর্বে  
শ্রীভগবান্ নৃসিংহকপে অবতরণ পূর্বক হিরণ্য-  
কশিপু বিনাশ ও প্রহ্লাদের ত্রাণ করেন। সেদে  
ইহার উল্লেখ দেখা যায়।

বামন। শ্রীভগবান্ ব্রাহ্মকল্পে ক্রমাগত  
তিনবার বামনরূপে অবতীর্ণ হন। প্রথমতঃ  
সায়ম্ভুবমনস্করে বাঙ্কলিনামক দৈত্যের যজ্ঞ,  
দ্বিতীয়তঃ বৈবস্বতমনস্করে ধুমু নামক অসুরের  
যজ্ঞ এবং তৃতীয়তঃ ঐ মনস্করের সপ্তম চতুর্য়ুগে  
কশ্যপ হইতে অর্দিতিতে প্রাগ্ভূত হইয়া বালি-  
রাজার যজ্ঞ গমন করিয়া জিপাদ পরিমিত ভূমি  
যাজ্ঞা করেন। সংহিতাতে ও আর্য্যাকে ইহার  
উল্লেখ আছে।

বরাহ। ব্রাহ্মকল্পে বরাহদেবের বারদশ  
আবির্ভাব শ্রুত হয়। প্রথম সায়ম্ভুবমনস্করে  
পৃথিবীর উদ্ধারজন্য ব্রহ্মার নাসারুদ্ধ হইতে  
কৃষ্ণবর্ণ চতুর্শাব বরাহ এবং দ্বিতীয় চাক্ষুসমনস্করে  
পৃথিবীর উদ্ধার ও প্রোচেতস দক্ষের দৌহিত্র  
হিরণ্যাক্ষের বিনাশের জন্য জল হইতে গুরুবর্ণ  
নৃবরাহ আবির্ভূত হন। ইহার বাসস্থান বৈকুণ্ঠ  
ও মহালোক। বরাহাদি তির্থ্যপূজ্য বা নৃবরাহাদি

মিশ্ররূপী অবতার সকল কালিনিক নহে। যেহেতু ইহাদের মন্ত্রোপাসনাদি উক্ত হয়। শতপথাদি-ব্রাহ্মণে, তৈত্তিরীয়াদি সংহিতাতে ও আরণ্যকে ইহাদের উল্লেখ দেখা যায় ॥ ১১৮১১৯ ॥

( ২১৬ পা ) “মৎস্যাস্থেতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। মৎস্যাদি যে শ্রীকৃষ্ণের লীলা-বতার তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪০ ॥

( ২১৬ পা ) “লীলাবতারের..... ব্যবহার ॥” এই ১২০ পয়ারের ভাবার্থ। মহাপ্রভু লীলাবতারের বিষয় কিঞ্চিৎ বলিয়া গুণাবতার বলিতেছেন, “ব্রহ্মা” ইত্যাদি।

স্থূল বা চর্যাসৃষ্টিরজন্য গুণাবতারের প্রয়োজন হয়। তদ্ব্যতীত সৃষ্টির জন্য সৃষ্টিকর্তা রজোগুণের অবতার, সংহারের জন্য তমোগুণের অবতার, পালনের নিমিত্ত সত্ত্বগুণের অবতার, প্রকৃতির তিনটি গুণ পুঙ্কবের নিয়মাদীন। ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও শিবরূপে আবির্ভূত পুরুষ গুণত্রয়ের পরিচালন কর্তা। তাঁহারা যে ভাবে পরিচালন করেন, গুণ সকল সেই ভাবেই পরিচালিত হয়। এইরূপ গুণের সহিত গুণাবতারের নিয়ম্য-নিয়ামকতারূপ সম্বন্ধকে যোগ বলে। অতএব গুণাবতার সকল কখনই এরূপ সম্বন্ধ ভিন্ন অপর কোন-রূপে গুণবদ্ধ হয় না। ব্যবহার, কার্য ॥ ১২০ ॥

( ২১৬ পা ) “ভক্তি মিশ্র..... ধরি ॥” এই ১২১ পয়ারের ভাবার্থ। হিরণ্যগর্ভ ও বৈরাজ ভেদে ব্রহ্মা দ্বিবিধ।

বিনি কেবল ব্রহ্মলোকের ঐর্ষ্যা উপভোগ করেন, সেই সমষ্টি জীবাশ্বক স্বরূপকে হিরণ্যগর্ভ বলে। বিনি সৃষ্টিকার্যে নিযুক্ত সেই লোকাস্বক স্থূলরূপের নাম বৈরাজ। মহাপ্রভু এখানে বৈরাজ ব্রহ্মার কথাই বলিতেছেন। কোন মহাকর্মে

জীবও ভক্তিমিশ্র-উপাসনাশ্রতাবে ব্রহ্মা হন। প্রথমপুরুষ ঐ মহোত্তম জীবের মন মজোগুণ দ্বারা বিভাবিত করিয়া দ্বিতীয়পুরুষ দ্বারা সৃষ্টি-শক্তি সঞ্চার করিয়া ব্যষ্টিসৃষ্টি করেন ॥ ১২১ ॥

( ২১৬ পা ) “ভাস্বান্ যবেতি” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। পুরুষ-বিশেষ জীবের নিজশক্তি সঞ্চার করতঃ যে, জগৎ সৃষ্টি করেন, তৎপ্রমাণ সৃষ্টোক্ত শ্লোক।

ব্রহ্মার বর্ণনায় উপলক্ষণ দ্বারা শিবেরও প্রাণি হইতেছে। কোন কমে মহোত্তম জীব শিব হইলে, পুরুষ তাহাতে সংহারশক্তি সঞ্চার করেন। অতএব ব্রহ্মা ও শিবের অগত সম্বন্ধের বিধান কর্তৃক উক্ত হইতেছে ॥ ৪৪ ॥

( ২১৬ পা ) “কোন কল্পে..... ব্রহ্মা হয় ॥” এই ১১২ পয়ারের ভাবার্থ সরল। যোগ্য জীব, মহোত্তম জীব। দ্বিতীয় পুরুষ ॥ ১২২ ॥

( ২১৬ পা ) “যস্যাজ্জি পঙ্কজেনি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গাল্য আদিত্য-৭০ পৃষ্ঠায় দেখুন। “কোন কল্পে” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪৫ ॥

( ২১৬ পা ) “নিজাংশ..... হৈতে নারে ॥” এই ১২৩ পয়ারের ভাবার্থ। শ্রীকৃষ্ণ নিজাংশ ( দ্বিতীয়পুরুষের ) কলায় ( অংশে ) তমোগুণ অঙ্গীকার করিয়া সংহার জন্য রুদ্ররূপ ধারণ করেন। শিবই একাদশ ব্যাহাজক রুদ্র নামে খ্যাত। ভিন্নাভিন্নরূপ, উপাধি সৃষ্টিতে শ্রীকৃষ্ণ হইতে ভিন্ন এবং পর-মাত্মার অংশরূপে অভিন্ন। ভিন্নাভিন্ন-রূপ কিরূপ, তাহা সৃষ্টোক্ত দ্বারা বুঝাইতে-ছেন, “দুহ বেন” ইত্যাদি। দুহাস্তর,

হইতে পৃথক । হইতে নারে, পারে না ॥ ১২৩ ॥

( ২১৭ পা ) “ক্ষীরং যথোতি ঋশ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “মায়া সঙ্গ” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ।

ইহাতে শিব ও কৃষ্ণের কার্য্য কারণভাব-মাত্রাংশে দধি ও দুগ্ধের দৃষ্টান্ত দেওয়া হইল। দার্ষ্টান্তিক কারণ নির্ঝিকার বলিয়া চিন্তামণি প্রভৃতির ন্যায় অচিন্ত্যশক্তি দ্বারাই কার্য্যরূপে প্রকাশ পান। শিব কার্য্য ও শ্রীকৃষ্ণ কারণ। তথাহি শ্রুতিঃ—

“একো হ বৈ পুরুষো নারায়ণ আসীন্ন ব্রহ্মা ন শঙ্করঃ স মুনির্ভূতা সমচিন্তয়ৎ তত এতে ব্যাজয়ন্ত বিষ্ণো হিরণ্যগর্ত্তোহধিবর্ধনরুদ্রেন্দ্র ইতি ।

একমাত্র নারায়ণ ছিলেন, ব্রহ্মা ও শঙ্কর ছিলেন না, সেই নারায়ণ চিন্তা করিয়াছিলেন। তদন্তর বিষ্ণু, হিরণ্যগর্ত্ত, আয়, বরণ, রুদ্র ও ইন্দ্রান প্রকাশ পাইয়াছিলেন। তথাহি,—

“ন ব্রহ্মণা সৃজতি রুদ্রেণ নাশয়তি। সোহিমুৎপত্তিস্তয় এব হারঃ কারণরূপঃ পরঃ পরমানন্দঃ।”

কারণরূপ পরমানন্দ হরি ব্রহ্মা দ্বারা সৃজন ও রুদ্র দ্বারা নাশ করেন। শ্রীকৃষ্ণ প্রাকৃতগুণ-রহিত মায়াতীত সাক্ষাৎপুরুষ। অতএব ইনি কারণ। গুণমিশ্রণহেতু শিবের কার্য্য স্বীকৃত হয়। এই হেতু শ্লোকে বলিতেছেন, “বিকার-বিশেষযোগাৎ।” অতএব কৃষ্ণ হইতে রুদ্রমুষ্টি ভিন্ন। ইহা প্রতাপন হইল। তবে যে, কোন কোন শাস্ত্রে উত্তরের অভেদ বাক্য দৃষ্ট হয়, তাহার সমাধান হেতু বলিতেছেন, “ন হি ততঃ পৃথগতি বেতোঃ” অর্থাৎ কারণ হইতে শব্দ ভিন্ন নহে। বস্তুতঃ শিব ও কৃষ্ণ এক নহেন। শিব ত্রিগুণ-সম্বৃত এবং কৃষ্ণ নিগুণ। দৃষ্টান্তে ইহা স্পষ্ট, ব্রহ্মা বাইতেছে যে, দুই বেদন দধি হইতে

পারে, কিন্তু দধি আর সেই ছয়রূপ কারণও প্রাপ্ত হইতে পারে না; তদ্রূপ কৃষ্ণ হইতে শিব, ইহা সত্য, পরন্তু সেই শিব কৃষ্ণ নহেন। কারণ হইতে কার্য্যের অভিন্নতার ন্যায় কৃষ্ণ ও শিব অভেদ। ঋক্বেদশিরে উক্ত হইয়াছে,

“অথ নিত্যো নারায়ণঃ। ব্রহ্মা চ নারায়ণঃ।

শিবশ্চ নারায়ণঃ। শক্রশ্চ নারায়ণঃ। কাশশ্চ নারায়ণঃ। দিশশ্চ নারায়ণঃ। অশশ্চ নারায়ণঃ। উজ্জ্বলশ্চ নারায়ণঃ। অন্তর্কর্ষহিশ্চ নারায়ণঃ। নারায়ণ এবৎ সর্বং জগতাং জগদিত্যাদি।” ইহার অর্থ সহজ আছে। ব্রহ্মাও বলিয়াছেন,—

“স্বামি তন্মিয়ুক্তোহং হরো হরতি ত্বমঃ।”

তোমা কর্তৃক নিযুক্ত হইয়া আমি সৃজন করি

ও শিব তোমার অধীন হওতঃ সংহার করেন। অতএব শ্রীকৃষ্ণ হইতে শিব ভিন্নভিন্নরূপ। কখন ব্রহ্মা, কখন স্বয়ং বিষ্ণুই শিবরূপ ধারণ করেন। আবার কখন পুণ্যকারী জীবও শিব হয়েন। যিনি বৈকুণ্ঠের অন্তর্গত শিবলোকে সদাশিবরূপে বিরাজিত, তিনি গুণাবতার নহেন; তিনি নিগুণ এবং নারায়ণের ন্যায় স্বয়ংরূপ শ্রীকৃষ্ণের অঙ্গ বিশেষ ॥ ৪৬ ॥

( ২১৭ পা ) “শিবঃ শক্তিয়ুত ইতি।”

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। শিব যে প্রাকৃতশক্তিসংযুক্ত ও তসোগুণাবিশিষ্ট, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক।

গুণসম্বৃত অর্থাৎ তমোগুণাবিশিষ্ট বা তমঃ স্বভাব। শক্তিয়ুক্ত অর্থাৎ প্রকৃতিশক্তিসম্বী। শৈবত্রে নির্দোষপূর্ণগুণবিগ্রহপ্রত্যবেণ শিবের প্রকৃতিশক্তিসম্বলের প্রয়োজন নিরূপিত হইয়াছে। শিব তমোগুণবিশিষ্ট না হইলে প্রেরণ কার্য্য সম্ভব হয় না। অহঙ্কারাক হেতু, রুদ্র নামে উক্ত হন। তিনি ত্রিবিধাহঙ্কারের অধিষ্ঠাতা। অতএব জীবের ন্যায় গুণযুক্ত নহেন। উপাসকের অমুরোধ বস্তুতঃ শিব ত্রিগুণ বিশিষ্ট হইয়াছেন ॥ ৪৭ ॥

( ২১৭ পা ) “হরিহীতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । বিষ্ণু যে, মায়ার ও গুণের অতীত তৎ-প্রমাণ এই শ্লোক ।

পূর্বে যে তৃতীয় পুরুষের কথা বলা হইয়াছে, তিনিই গুণাবতার বিষ্ণু ।- ইনি স্বাধীন-স্বাধীন-গুণবিশিষ্ট বলিয়া স্বাধীনগুণের প্রবর্তক । অতএব ইনি প্রকৃতির অতীত এবং প্রকৃতিনিশ্চিত শরীর ( উপাদি ) রহিত । বিষ্ণু সর্বস্বভাবহেতু কুটম্ব, নিত্য ও নির্দোষ জ্ঞানানন্দ মূর্ত্তি দ্বারা স্বভক্তগণকে নিজামুগুণ সঙ্কলন প্রদান করেন । বিষ্ণু প্রতিবিষের ন্যায় ব্যবধান নহেন বলিয়া সাক্ষাৎ পুরুষ বা ঈশ্বর, অতরাং প্রকৃতির উপাদি-রহিত । গুণগ্রহণে তাঁহার কোন প্রয়োজন নাই । সর্বদুক বলাতে বিষ্ণু যে, শিব ব্রহ্মাদি সকলের দ্রষ্টা, ইহা স্থির হইল । উপদেষ্টা বলায় বিষ্ণু যে, শিব ব্রহ্মাদি সকলের আদি ও সাক্ষী, তাহাও প্রতিপন্ন হইল । অতএব ইহাকে ভজন করিলে নিশ্চয়ফল লাভ হয় । রত্নস্তম্ভঃ প্রচুর স্বভাববিশিষ্ট হেতু ব্রহ্মা শিব যোক্ত্যপ্রদানে সমর্থ নহেন ; কিন্তু স্বশক্তির অমুসারে অর্থকামাদি প্রদানে সমর্থ ॥ ৪৮ ॥

( ২১৭ পা ) “পালনার্থ... ..হেন গায় ॥ এই ১২৬ পয়ারের ভাবার্থ । শ্রীকৃষ্ণ পালনজন্য বিষ্ণুরূপে অবতরণ করেন ।

স্বগুণ দৃষ্টান্ত ইত্যাদি অর্থাৎ দৃষ্টান্তহলে স্ব-গুণের উল্লেখ করা হইয়াছে । যেমন ব্রহ্মা ও কৃত্য রত্নস্তম্ভো দ্বারা সৃষ্টি নাশ করেন, তদ্রূপ বিষ্ণুও স্বগুণ দ্বারা পালন করেন ; বস্ততঃ বিষ্ণুতে মায়াতীত গুণ আছে ; তদ্বারা পালন করেন । অধিকাংশেই কৃষ্ণ সদৃশ । তবে কৃষ্ণ অংশী বিষ্ণু স্বাংশ, এইজন্য উভয়ের ন্যূনাধিক্য বীকৃত হয় । গুণদ্বারা পর মায়াতীত গুণ ॥ ১২৬ ॥

( ২১৭ পা ) “দীপার্চ্ছিরেবেতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “স্বরূপ ঐশ্বর্য্য” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ।

যদি বল, কৃষ্ণ অংশী ও বিষ্ণু অংশ, ইহা বেদে বলে, ইহা বলিয়া বেদোক্ত প্রমাণ না দিয়া, ব্রহ্মসংহিতোক্ত প্রমাণ দ্বারা উহা প্রমাণিত করেন কেন ? তদ্বত্তর, সংহিতা বেদ মধ্যে গণ্য হয়েন বলিয়া, উহাও বেদ । অথবা, অপৌকুষের বাক্য বা মহাপুরুষের নিখাসোৎপন্ন বেদ সকল ব্রহ্মার মুখ হইতে বহির্গত হয় । সংহিতা ব্রহ্মার মুখ হইতে নির্গত হওয়ার, ইহাকে ব্রহ্মসংহিতা বলে । অতএব ইহা বেদই । যদিও গোবিন্দের অংশের অংশ কারণার্ণবশায়ী, তাঁহার অংশ গর্ভোদশায়ী, তাঁহার অবতার বিষ্ণু ; তাপাশি মহাদীপ হইতে ক্রম পরম্পরায় প্রকাশিত স্মৃতি নির্মল দীপ স্রোতীরূপাংশে মহাদীপের সহিত যেমন সমান ; তদ্রূপ বিষ্ণু শ্রীকৃষ্ণের সমান ॥ ৪৯ ॥

( ২১৮ পা ) “সৃষ্টিমি তদিত্তি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । ব্রহ্মা ও শিব যে, আজ্ঞাকারী ভক্ত অবতার, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫০

( ২১৮ পা ) “মথস্তরাবতার..... চল্লিশ ॥” এই ১২৮ পয়ারের ভাবার্থ । মহাপ্রভু মথস্তরাবতারে কথা বলিতে-ছেন । এককল্পে অর্থাৎ ব্রহ্মার এক দিনে চৌদ্দটি মনু হয় । চতুর্দশ মথস্তরা-বতার যে যে মথস্তরে আবিভূত হন, সেই সেই মথস্তর কাল পর্য্যন্ত পালন করাতে ইহাদিগকে মথস্তরাবতার বলে । মথস্তরাবতার কথা :-

১। বজ্র, ইনি লীলাবতার মধ্যে গণ্য হন ; কৃষ্টি হইতে আকৃতিতে একট হইয়া নিজপুত্র

বন্দ্যাদির সহিত সারস্বতের মন্বন্তর পালন করেন ।  
 ২। বিক্র, ইনি পিতা বেদশিরা হইতে জননী  
 ভূমিতাতে আবির্ভূত ও নৈষ্টিক ব্রহ্মচারী হইয়া  
 ব্রহ্মচর্য উপদেশ দেন । ৩। সত্যসেন, ইনি  
 ধর্ম হইতে স্নানুতাতে প্রোগ্রহৃত হইয়া ইন্দ্রশক্র-  
 গণকে বিনাশ করেন । ৪। হরি, ইনি হরিমেধা  
 হইতে হরিগীতে জন্মগ্রহণ করিয়া ইন্দ্রশক্র বিনাশ  
 ও গজেন্দ্র উদ্ধার করেন । ৫। বৈকুণ্ঠ, ইনি  
 শুভ্র হইতে বিকূর্ণাতে জন্মগ্রহণ করিয়া ব্রহ্মাণ্ড-  
 র্গত নৈকূর্ণলোক রচনা করেন । ৬। অজিত, ইনি  
 বৈরাগ্য হইতে সন্তুতিতে জন্মগ্রহণ করিয়া  
 নিজ মন্বন্তরপালন ও কুর্খাদিরূপধারণ করেন ।  
 ৭। বামনদেব । ৮। সার্কভৌম, ইনি দেব-  
 শুভ্র হইতে সারস্বতীতে প্রোগ্রহৃত হইয়া পুরন্দর  
 নামক ইন্দ্র হইতে স্বর্গরাজ্য হরণ করিয়া বলি-  
 রাজকে অর্পণ করিবেন । ৯। ঋষভ, ইনি  
 আয়ুর্মান হইতে অশ্বধরাতে জন্মগ্রহণ করিয়া শত্ৰু  
 নামক ইন্দ্রকে স্বর্গরাজ্য দিবেন । ১০। বিখক-  
 সেন, ইনি বিখস্বক বিপ্র হইতে বিস্তুচিতে জন্ম  
 গ্রহণ করিয়া দেবরাজ শত্ৰুর সহিত সখ্যতা  
 করিবেন । ১১। ধর্মপেতু, ইনি আর্ষাক হইতে  
 বৈশ্বতাতে জন্মগ্রহণ করিয়া নিজমন্বন্তরপালন  
 করিবেন । ১২। সূধামা, ইনি সত্যবহা হইতে  
 স্নানুতাতে জন্মগ্রহণ করিয়া নিজমন্বন্তর পালন  
 করিবেন । ১৩। যোগেশ্বর, ইনি দেবহোত্র  
 হইতে বৃহতীতে জন্মগ্রহণ করিবেন । ১৪।  
 বৃহত্তানু, ইনি সত্রাণ হইতে বিনতাতে জন্মগ্রহণ  
 করিবেন । ১২৮ ॥

( ২১৮ পা ) "শতক বৎসর... ..  
 অবতার নাম ॥" এই ১২৯ ও ১৩০  
 পয়ারের ভাবার্থ সরল । পর্য্যন্ত, শেষ ।  
 কোন কোন মন্বন্তরে কোন কোন  
 মন্বন্তরাবতার হয়, তাহা বলিতেছেন ;  
 "সারস্বত" ইত্যাদি । অবিধান  
 নাম ॥ ১৩১ ॥

( ২১৮ পা ) "যুগ অবতার.....  
 যুগ ধর্ম ॥" এই ১৩১ পয়ারের ভাবার্থ ।  
 যিনি যুগধর্মপ্রবর্তন করেন, তিনি যুগাব-  
 তার । যুগাবতার চারিটি । সত্যযুগে  
 শুক্লনামক, ত্রেতাযুগে রক্তনামক, দ্বাপরে  
 শ্রামনামক ও সাধারণ কলিতে কৃষ্ণ-  
 নামক যুগাবতার হয় । এস্থলে মহা-  
 প্রভু বৈবস্বতমনুর অষ্টাবিংশতি চতু-  
 র্যুগের যুগাবতারের কথা বলিতেছেন,  
 "শুক্লরক্ত" ইত্যাদি ॥ ১৩১ ॥

( ২১৮ পা ) "আসন্নিতি ।" শ্লোকের  
 টীকা ও বাঙ্গালা আদির ২৯ পৃষ্ঠায় ও  
 তাৎপর্য্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ৯৮ পৃষ্ঠায়  
 দেখুন । "শুক্লরক্ত, ইত্যাদি পয়ার  
 প্রমাণ শ্লোক ॥ ৫১ ॥

( ২১৮ পা ) "সত্যযুগের.....ধর্ম ॥"  
 এই ১৩২ পয়ারের ভাবার্থ সরল । সত্য-  
 যুগের ধর্ম বলিতেছেন, "সত্যযুগের"  
 ইত্যাদি ।

কর্দমেরে বর দিলা, অর্থাৎ ব্রহ্মা নিজপুত্র  
 কর্দমকে প্রজাসৃষ্টি করিতে অহুমতি করিলে,  
 কর্দম সত্যযুগে ভগবানের সন্তোষ জন্য দশ হাজার  
 বৎসর সারস্বতীতীরে তপশ্রা করিলে, ভগবান গুরু  
 তাঁহার তপস্তার সন্তুষ্ট হইয়া তাঁহাকে দর্শন দিলে ;  
 কর্দম দৈন্ত মহাকারে স্তব করিয়া নিজের অভি-  
 প্রায় জানাইলে ; ভগবান্ গুরু বলিয়াছিলেন,  
 তোমার অভিপ্রায় আমি পূর্ক হইতেই জানি ।  
 আমার অর্চন বৃণা হয় না । অতএব ব্রহ্মাবর্ত  
 দেশস্থ সারস্বত মনু নিজকর্তা দেবহৃতিকে তোমার  
 সম্প্রদান করিবায় জন্য পরশ্বদিন আগমন করি-  
 বেন । সেই দেবহৃতিতে তোমা হইতে নয়টি  
 কন্যা উৎপন্ন হইবে, সেই কন্যাগণকে ঋষিগণ  
 বিবাহ করিয়া সৃষ্টিবৃদ্ধি করিবেন এবং আমিও  
 তোমার পুত্ররূপে অবতীর্ণ হইয়া সাংখ্য ধর্ম

প্রণয়ন করিব। ইহা বর দেন। বিশেষ বিবরণ ভাগবতে ৩ঙ্কে ২১ অধ্যায়ে আছে।

ধ্যান, যোগাঙ্গধ্যান। ত্রেতাযুগের ধর্ম বলিতেছেন, “ত্রেতাযুগে” ইতি। স্বস্ত, কর্মকাণ্ড ॥ ১৩২ ॥

( ২১৮ পা ) “কৃতে শুক্ল ইতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “নত্যাযুগের” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৫২ ॥

( ২১৮ পা ) “ত্রেতায়ামিতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “ত্রেতাযুগে” ইতি পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৫৩ ॥

( ২১৯ পা ) “কৃষ্ণপদার্চন...কর্ম।” এই ১৩৩ পয়ারের ভাবার্থ সরল। দ্বাপর-যুগের ধর্ম বলিতেছেন, “কৃষ্ণপদার্চন” ইতি। কৃষ্ণপদার্চন, কৃষ্ণের চরণ সেবা। কৃষ্ণবর্ণে, কৃষ্ণবর্ণ বর্ণাবতানে ॥ ১৩৩ ॥

( ২১৯ পা ) “দ্বাপরে ভগবানিতি।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গালা আদির ৩-পৃষ্ঠায় দেখুন। “কৃষ্ণপদার্চন” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৫৪ ॥

( ২১৯ পা ) “নমস্ত ইতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। এই শ্লোক দ্বারা দ্বাপরের উপাশ্রয় নির্ণয় করিলেন ॥ ৫৫ ॥

( ২১৯ পা ) “এই মস্ত্রে...সকীর্তন ॥” এই ১৩৪ পয়ারের ভাবার্থ সরল। এই মস্ত্রে, নমস্ত্রে বাসুদেবায় মস্ত্রে। কৃষ্ণা-র্চন, শ্রীমূর্ত্তিপূজা। কলিযুগের ধর্ম বলিতেছেন, “কৃষ্ণ নাম” ইত্যাদি। প্রবর্ত্তন, প্রচার ॥ ১৩৪ ॥

( ২১৯ পা ) “কৃষ্ণবর্ণমিতি।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গালা আদির ৩-পৃষ্ঠায় ও তাৎপর্য্য ভাবার্থব্যাখ্যায় ১০৬ পৃষ্ঠায় দেখুন। “পীতবর্ণ ধরি তবে” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৫৬ ॥

( ২১৯ পা ) “আর তিন.....ফল পায় ॥” এই ১৩৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল। আর, বিশেষ। নত্যাতি তিন-যুগের ধ্যানাদিতে যে ফল হয়, কলিতে কৃষ্ণনামে সেই ফল হয় ॥ ১৩৫ ॥

( ২১৯ পা ) “কলেয়িতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। তিনযুগের ধ্যানাদিতে যে বস্ত্র লাভ হয়, কীর্তন দ্বারা তাহাই লাভ হয়। অথবা কীর্তন দ্বারা সর্বোৎকৃষ্ট পরম পুরুষার্থ প্রেমের লাভ হয়। ইহা প্রমাণ করিলেন ॥ ৫৭ ॥

( ২১৯ পা ) “কৃতে বক্রায়ত ইতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “আর তিনযুগে” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫৮ ॥

( ২১৯ পা ) “ধ্যায়িতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “আর তিনযুগে” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৫৯ ॥

( ২২০ পা ) “কলিমিতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। কীর্তন দ্বারা সকলস্বার্থ লাভ হয়, তৎ-প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৬০ ॥

( ২২০ পা ) “পূর্ব্ববৎ...অবতার।” এই ১৩৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল। পূর্ব্ববৎ লিখি বসে, যদি পূর্ব্বের ন্যায় বিস্তার



করিয়া বলি। বুদ্ধে রহস্যপতি, বুদ্ধিতে  
রহস্যপতির ন্যায়। নীচাচার, নীচের  
ব্যবহার ॥ ১০৬ ॥

( ২২০ পা ) “প্রভু কহে...লক্ষণ  
বিচার ॥” এই ১০৭ পয়ারের ভাবার্থ।  
প্রভু কহিলেন, শাস্ত্র দ্বারায় যেমন অন্য  
অবতার জানা যায়, তদ্রূপ শাস্ত্রবাক্যে  
কলির অবতার স্বীকৃত হয়। অবতার  
নাহি কহে অর্থাৎ মহাপ্রভু স্বয়ং, কলির  
অবতার এবং কলিতে আমিই অবতার  
ইহা না বলিয়া, মুনি বাক্য দ্বারা প্রকা-  
রাশ্বে তাহা বলিতেছেন। মুনিসকল  
লক্ষণ বিচার দ্বারা কলির অবতার  
নির্দেশ করেন ॥ ১০৭ ॥

( ২২০ পা ) “বস্ত্রাবতারেতি।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। “মুনি সব জানি” পয়ার প্রমাণ  
শ্লোক ॥ ৩১ ॥

( ২২০ পা ) “স্বরূপ লক্ষণ.....  
লক্ষণে ॥” এই ১০৮ পয়ারের ভাবার্থ।  
মুনিগণ ধেরূপে তত্ত্ব বিচার করেন, তাহা  
বলিতেছেন, “স্বরূপলক্ষণ” ইত্যাদি।  
স্বরূপলক্ষণ কি, বলিতেছেন, “আকৃ-  
তিতে।” ইতি। তটস্থলক্ষণ কি, বলিতে-  
ছেন, “কার্য্যদ্বারে” ইতি। উক্ত দুই  
লক্ষণে মুনিগণ যে তত্ত্ব নিরূপণ করেন,  
কাস্যর দৃষ্টান্ত দিতেছেন, “ভাগবতা-  
রশ্বে” ইত্যাদি। এই দুই লক্ষণে, স্বরূপ  
ও তটস্থলক্ষণে ॥ ১০৮ ॥

( ২২০ পা ) “জন্মাদ্যস্যেতি।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের  
দৃষ্টান্ত দেখুন। বেদব্যাস মঙ্গলাচরণে

যে স্বরূপ ও তটস্থলক্ষণ দ্বারা পরমেশ্বর  
নিরূপণ করিয়াছেন, তাহা এই শ্লোকে ॥ ৩২ ॥

( ২২০ পা ) “এই শ্লোকে.....দূব  
কল ॥” এই ১০৯ পয়ারের ভাবার্থ।  
এই শ্লোকে, জন্মাদ্যস্যেতি শ্লোকে।  
পূর্বে পয়াবে বলা হইয়াছে, আকার ও  
স্বভাবের স্বরূপলক্ষণ জানা যায়।  
অতএব এস্থলে ‘পর’ শব্দ দ্বারা আকার  
ও ‘নত্য’ শব্দ দ্বারা পরমেশ্বরের স্বভাব  
জান হওয়াতে, ইহা স্বরূপলক্ষণ। কার্য্য  
দ্বারায় যে জ্ঞান, তাহা তটস্থলক্ষণ।  
অতএব বিশ্বসৃষ্টাদি ও ব্রহ্মাকে বেদ  
পড়ান কার্য্য দ্বারা পরমেশ্বরের জ্ঞান  
হওয়াতে ইহা তটস্থলক্ষণ। অতএব  
উভয় লক্ষণ দ্বারা পরমেশ্বর-তত্ত্ববোধ  
হইল ॥ ১০৯ ॥

( ২২১ পা ) “এই সব...সংশয় ॥”  
এই ১৪০ ও ১৪১ পয়ারের ভাবার্থ।  
উভয় লক্ষণে যেমন পরমেশ্বর-তত্ত্ববোধ  
হয়, তদ্রূপ মুনিগণ ঐ উভয় লক্ষণে  
অন্য অবতার জানেন। অবতার সময়ে  
অবতার জগতে প্রকট হওয়ায়, তাঁহার  
আকার, স্বভাব ও কার্য্য দর্শন করিয়া,  
ঐ দুই লক্ষণ দ্বারা তাঁহাকে কেহ ঐধর  
বলিয়া জানেন।

সনাতন কহিলেন, প্রভো! একপই হইলে;  
শাস্ত্রে এই কলিতে কৃষ্ণাবতারের পীতবর্ণ আকার  
ও প্রেমদান কার্য্য উক্ত হইয়াছে। অতএব এই  
কলিতে পীতবর্ণ বাহার আকার হইবে এবং  
প্রেমদান ও সঙ্গীর্জন প্রচার বাহার কার্য্য হইবে;  
তিনিই কৃষ্ণাবতার বা কৃষ্ণ, ইহা সুনিশ্চয়।  
যেহেতু পীতবর্ণ আকারের স্বরূপলক্ষণ ও প্রেম-  
দানাদি কার্য্যে তটস্থলক্ষণ দ্বারা অবতারতত্ত্ব নিরূ-

পিত হইতেছে। এরূপঅবতার পুত্রব কোথায়  
আছেন, তাহা অনুশ্চয় করিয়া বলুন, আমার  
সংশয় ঝাউক। মহাপ্রভুর কৃপাপ্রাপ্ত সনা-  
তনের বাস্তবিক সংশয় হইল নাই বা সংশয় হইতে  
পারে না। কারণ ভগবান বলিয়াছেন, আমি  
ভক্তের নিকট নিজে কখনই গোপন রাখিতে  
পারি না। তবে যে, সনাতন সংশয়ের কথা  
বলিয়াছেন, তাহা কেবল কলির দুর্ভাগ্য জীবের  
জন্য। একেতো কলির জীব দুর্ভাগ্য বশতঃ প্রভুর  
অবতার স্বীকার করে না, তাগতে আবার মহা-  
প্রভু আপনাকে আপনি গোপন করিলে, কোন-  
রূপেই চৈতন্যতত্ত্ব জানিতে পারিবে না। এই  
হেতুই সনাতন বলিলেন, এই কলির অবতার  
কে, স্পষ্ট করিয়া বলুন, তাহাতে জীবের সংশয়  
ঝাউক ও তোমার তব অমুভব করুক। অথবা,  
মহাপ্রভু নিজতত্ত্ব নিজে বলিবেন না। সনাতনও  
ছাড়িবেন না, মহাপ্রভুব মূখ হইতে তাঁচার তব  
জানিবার বা জগতে জানাইবার জন্য ঐরূপ কথা  
বলেন ॥ ১৪০।১৪১ ॥

( ২২১ পা ) “প্রভু কহে...মুখ্যজন ॥”

এই ১৪২পয়ারের ভাবার্থ মলল। চাতু-  
রাণি, চতুর্ভা ॥ ১৪২ ॥

( ২২১ পা ) “শক্ত্যাবেশ...নকারণ ॥”

১৪৩ ও ১৪৪ পয়ারের ভাবার্থ। মহা-  
প্রভু যুগাবতাবের কথা বলিয়া শক্ত্যা-  
বেশ অবতাবের বিষয় বলিতেছেন,  
“শক্ত্যাবেশ” ইত্যাদি। শক্ত্যাবেশ  
দ্বিবিধ; মুখ্য ও গৌণ। মুখ্য, সাক্ষাৎ  
শক্ত্যাবেশ। গৌণ, আভাস শক্ত্যাবেশ ;  
ইহাকে বিভূতি বলে। শক্ত্যাবেশ  
অবতার বলিতেছেন, “সনকাদি”  
ইত্যাদি। ইহারা মুখ্য শক্ত্যাবেশ অব-  
তার। কে কোন্ শক্তি দ্বারা আবিষ্ট  
তাহা বলিতেছেন, “সনকাদ্যে”  
ইত্যাদি ॥ ১৪৩।১৪৪ ॥

( ২২১ পা ) “জ্ঞানশক্ত্যাদীতি ।”

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। আবেশাবতার প্রমাণ শ্লোক ॥৩৩॥

( ২২১ পা ) “বিভূতি...ভাবাবেশ ॥”

এই ১৪৫ পয়ারের ভাবার্থ মলল।  
“শক্তি ভাবাবেশে” স্থলে কোন পুথিতে  
পাঠ আছে “শক্ত্যাভাবাবেশে” ইহা  
গৌণ শক্ত্যাবেশ ॥ ১৪৫ ॥

( ২২১ পা ) “যদুদ্বিত্তি ।”

শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
“জগৎ ব্যাপিল” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥৩৪॥

( ২২১ পা ) “অথবেত্তি ।”

শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা আদিব ১২পৃষ্ঠায় দেখুন।  
“জগৎ” ইতি পর্ষাব প্রমাণ শ্লোক ॥ ৩৫ ॥

( ২২১ পা ) “এইত কহিল...০০০

লীলাক্রমে ॥” এই ১৪৬ পয়ারের ভাবার্থ।  
মহাপ্রভু আবেশাবতার বলিয়া স্বয়ং  
রূপের অবতার বলিতেছেন, “বাল্য  
পৌগণ্ড” ইত্যাদি।

শ্রীকৃষ্ণের কৈশোর বয়স ধর্ম্মী ( বিশেষ্য বা  
নিত্য ) বাল্য ও পৌগণ্ড ধর্ম্ম ( বিশেষণ ) তাহার  
বিচার শুন অর্থাৎ উহা কিরূপে নিত্য হয়, তাহা  
শ্রবণ কর। শ্রীকৃষ্ণ যখন প্রকটলীলা করিতে  
ইচ্ছা করেন, তখন প্রথমে মাতা ও পিতাদি ভক্ত-  
গণকে প্রকট করাইয়া পরে নিজে প্রকট হন।  
নিদর্শনস্বরূপ ঋগ্বেদের তৃতীয় অষ্টকের তৃতীয়  
অধ্যায় দেখুন,

“ঐ মাতা চ যত্র হুহিতা চ খেনু সর্ব্বেষে  
ধাপয়তে সমীচী। ঋতন্ত তে সদসি ওমীলে  
হস্তমর্হদেবানামমুহুরত্বমেকম্ ॥”

যত্র মাতা ( যত্র শ্রীগোকুলে মাতা শ্রীবেশদী )  
যত্র হুহিতা ( গোকুলে যোগমায়া জাতা ) খেনু  
( গাবো জগতঃ শ্রীগগিত্বো ) সমীচী ( পরম্পরং  
সদন্তে সজ্যো ) ধাপয়তে ( অন্যান্যং পান্নয়তে

হৃৎ, রোহিণী যশোদেতি বা ) সবহৃৎ ( সননঃ  
শ্রীমত কীরপয়ন্ত রসন্ত দোক্ষৌ ) ঋতন্ত ( সত্যন্ত  
ধনন্ত বা ) সদসি ( স্থানে শ্রীনন্দাগয়ে ) তম্  
( শ্রীযশোদোৎসঙ্গলানিতঃ শ্রীকৃষ্ণম্ ) দ্বৈলে  
( স্তোমি ) অন্তঃ ( শ্রীনন্দস্যান্তঃপুরে স্থিতঃ  
শ্রীকৃষ্ণঃ ) মহৎ ( মহাত্মম্ ) একং ( মুখ্যং )  
দেবানাম্ ( ইন্দ্রাদীনাম্ প্রীত্যর্থম্ ) অম্বরত্বম্  
( অসত্যি ) ।

দেবগণ বলিতেছেন, যে গোকুলে যশোদা-  
গর্ভ হইতে যোগমায়া ভগবতী জন্মগ্রহণ করিয়া-  
ছেন, যে স্থানে গাভিগণ পরস্পর মিলিত হইয়া  
শ্রীকৃষ্ণ ও বলরামকে হৃৎ প্রদান করিয়া পরিতৃপ্ত  
করাইতেছেন, যে স্থানে যশোদা ও রোহিণী নিজ  
নিজ স্তনহৃৎ দ্বারা উভয়কে পরিতৃপ্ত করাইতে-  
ছেন। সেই মাতৃক্রোড়স্থ কৃষ্ণ বলরামকে  
আমরা স্তব করি। যে ভগবান শ্রীকৃষ্ণ আশা-  
দিগকে পরিতৃপ্ত করাইবার জন্য ও দৈত্যগণকে  
ধিনাশ করিতে নন্দালয়ে উপস্থিত হইয়া যশোদা  
ও রোহিণী কর্তৃক সর্বদা লালিত হইতেছেন ;  
সেই জননীদয়কে স্তব করি। এই মন্ত্যর্থ দ্বারা  
শ্রীকৃষ্ণের 'মাতা, পিতা ও নিত্য পারিষদগণের  
অঙ্গে প্রকট সিদ্ধ হইতেছে।

তথাহি যজুর্বেদে বিংশাধ্যায়ে দশমমন্ত্রঃ—

“ঐ প্রতিক্রে প্রেতিষ্ঠামি রাষ্ট্রে প্রত্যক্ষেষু  
প্রেতিষ্ঠামি গোষু। প্রত্যক্ষেষু প্রেতিষ্ঠাম্যাম্বন  
প্রেতিপ্রাণেষু প্রেতিষ্ঠামি পৃষ্টে প্রেতিদ্যাণা  
পৃথিব্যোঃ প্রেতিষ্ঠামি যজে ॥”

( হরিঃ প্রেতিষ্ঠাং করোতি অহঃ সর্বেষরঃ )  
প্রেতিক্রে ( কত্রিয়ক্রাতৌ ) প্রেতিষ্ঠামি ( প্রেতিষ্ঠা-  
যুক্তো ভবামি ) রাষ্ট্রে ( ভগবত্তাগবতাচাৰ্য্য  
কৈষ্কর্ধ্যরতস্য রাজঃ যুধিষ্ঠিরস্য, নন্দস্য চ শ্রীবৈষ্ণব-  
রাজ্যে ) প্রত্যক্ষেষু ( পূর্কোক্ত রাজঃ অধকার্যেষু  
সারণ্যেষু সর্বদা ) গোষু ( গবাং সযুছেষু বা  
গোকুলেষু সর্বদা ) প্রেতিষ্ঠামি ( প্রত্যক্ষেষু  
( বৈষ্ণবরাজ্যে ) চতুর্দিকীণেনানু বধা অঙ্গেষু )

পাদাদ্যবয়বেষু ) প্রেতিষ্ঠামি আম্বন ( আম্বনি  
চিত্তে ) প্রাণেষু পৃষ্টে ( ভবগবত্তক্তিযুক্তপৃষ্টমার্গে  
চ ) প্রেতিষ্ঠামি দ্যাণ্যপৃথিব্যোঃ প্রেতিষ্ঠামি  
যজে ( মদীরারণনাপ্যে মধে ) প্রেতিষ্ঠামি  
( যত্র ভগবদ্বক্তা মৎপ্রাপ্তর্থাং মদীরারণনং কীর্তনং  
কুর্কন্তি তত্রৈব বসামি )

ব্রহ্মাদি দেবগণ যশোদা ক্রোড়স্থ শ্রীকৃষ্ণকে  
স্তব করিলে, তিনি যে প্রতিক্রমা বাক্য বলিয়া-  
ছিলেন; তাহা এই মন্ত্রে উল্লিখিত হইয়াছে।  
আমি কত্রিয় মধ্যে অবতীর্ণ হইয়াছি। ভক্তরাজ  
নন্দের রাজ্যে গোগণের রক্ষার্থ বা গোকুলে সম্প্রতি  
সর্বদা উপস্থিত থাকিব। যাহারা ভগবান ও  
ভগবদ্বক্তের দাসত্ব স্বীকার করেন এক্রপ বৈষ্ণব-  
রাজ্যে যুধিষ্ঠিরের চতুর্দিকীণেনান্যমধ্যে থাকিয়া  
সারণ্যাদিকারণে নিস্ত্র যুথাকিব। অথবা ভক্ত-  
গণের প্রাণমধ্যে সর্বদা মূর্ত্তিমানরূপে বাস  
করিয়া, ঔহাদের সর্বত্র প্ৰভুত্ব প্রকাশ করাইব।  
ভক্তিপথ প্রদর্শক ভক্তগণের নিকট সর্বদা বাস  
করিব। সর্গত ও মর্ত্যস্থ ভক্তবৃন্দ আমার রূপা-  
প্রাপ্তি কামনার যে যে স্থানে আমার উপাসনা-  
লক্ষণ কীর্তন করিবেন, সেই সেই স্থানে আমি  
সর্বদা বাস করিব।

তথাহি অথর্বসংহিতার দ্বিতীয়প্রপাঠকে পঞ্চ-  
মাম্বনাক,

“নক্তং জাতাত্তোষধে নামে কৃষ্ণে অসিকি চ।”

( হে ) ঔষধে ( বৈষ্ণবদাহশমনি যোগমায়ে )  
নক্তং ( রাজৌ ) নামে ( বলরামে ) কৃষ্ণে ( চ  
প্রাচুর্ভূত সতি ) ত্বং জাতা অসি ( ভবসি )  
অসিকি ( অসিকী অবুদ্ধা তরুনীতি )

হে বৈষ্ণবদাহশমনি যোগমায়ে, শ্রীবলরাম ও  
শ্রীকৃষ্ণের প্রাচুর্ভবের পর, তুমি ঔহাদের তরুণী  
অম্বলা হইয়া প্রাচুর্ভূত হইরাছিলে। ইত্যাদি  
শ্রীমানে শ্রবণ রূপা বতারের সিদ্ধ হইল ॥ ১৪৬ ॥

( ২২১ পা ) “বল্লম ইতি।” শ্লোকের

তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
“বাল্য পৌগণ্ড” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥৩৬॥

( ২২২ পা ) “পুতনাদির ……ক্রমে  
ক্রমে ফিরে ॥” এই ১৪৭ হইতে ১৪৯ পয়ার  
পর্য্যন্ত ভাবার্থ ।

যাহা সকল কালে থাকে তাহা নিত্য, যাহা  
থাকে না তাহা অনিত্য । অতএব বাল্য ও  
পৌগণ্ড সকল কালে না থাকায় উহা অনিত্য এবং  
তাৎকালিক লীলাও স্মরণ অনিত্য হইয়া  
পড়িতেছে ; এরূপ আশঙ্কায় নিরাস করিতেছেন,  
বাল্য ও পৌগণ্ডকে ধর্ম বলিয়া স্বীকার করিলে  
লীলা নিত্য হয় । মহাপ্রভু ইহা বলিলেন ।

ঐ লীলা কিরূপে নিত্য তাহা  
দেখাইতেছেন, “পুতনাদির” ইত্যাদি  
“নিগম পুরাণ” ইত্যন্ত । এইসমত সব  
লীলা ইত্যাদি গঙ্গার স্রোত যেমন  
অবিচ্ছিন্ন, তদ্রূপ অনন্ত কোটি ব্রহ্মাণ্ডে  
শ্রীকৃষ্ণের পুতনাদি বধ লীলা ক্রমে ক্রমে  
প্রকট হওয়াতে লীলা অবিচ্ছিন্ন হইল ;  
স্মরণ অনিত্য । বিচ্ছিন্ন বস্তুসকল কালে  
থাকে না, কিন্তু অবিচ্ছিন্ন বস্তুসকল

কালে থাকে । অতএব নিত্য । তাহার  
উদাহরণ দিতেছেন, “জ্যোতিশ্চক্রে”  
ইত্যাদি । গণ্ডরীপান্দ্রুদি, গণ্ডরীপ  
সমুদ্র ॥ ১৪৭—১৪৯ ॥

( ২২২ পা ) “সত্ত্ব শত…পূর্ণতর ॥”  
এই ১৫০ ও ১৫১ পয়ারের ভাবার্থ সরল ।  
পূর্ণৈশ্বর্য্য, অখিলগুণ ॥ ১৫০-১৫১ ॥

( ২২২ পা ) “হরিঃ পূর্ণতম ইতি ॥”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “ব্রজে কৃষ্ণ” পয়ার প্রমাণ এই  
তিনটি শ্লোক ॥ ৬৭—৬৯ ॥

( ২২২ পা ) “এক কৃষ্ণ……দিগ্  
দরশন ॥” এই ১৫২ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল । স্বরূপ, মুখ্য প্রকাশ । স্বরূপ-  
বিচার স্বয়ংরূপাবতারের বিচার । ইহার,  
স্বয়ংরূপের ॥ ১৫২ ॥

( ২২৩ পা ) “ইহা বেই…কৃষ্ণদাস ॥  
এই ১৫৩ পয়ারের ভাবার্থ সরল । ইহা,  
শ্রীকৃষ্ণের স্বয়ংরূপাবতার, লীলাবতা-  
রাদি । তার, শ্রবণকারির ॥ ১৫৩ ॥

ইতি মধ্যলীলায়াং বিংশপরিচ্ছেদে সুবোধিনী ॥ ২০ ॥

## একবিংশ পরিচ্ছেদ ।

—\*—\*—\*—

( ২২৩ পা ) “অগত্যেকগতিমিতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে ।

পূর্ব পরিচ্ছেদে বর্ষ শ্লোকে গ্রহকার বলিয়া-  
ছেন, মহাপ্রভু লনাতনকে শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপ, ভক্তি,

ঐশ্বর্য্য ও মাধুর্য্যতত্ত্ব উপদেশ করেন । অতএব  
শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপ নির্ণয় করিয়া এই পরিচ্ছেদে তাহার  
ঐশ্বর্য্য ও মাধুর্য্যতত্ত্ব বলিতেছেন । ঐশ্বর্য্য ও মাধুর্য্য  
অনন্ত বলিয়া, এখানে তাহার কিঞ্চিৎ বলিবেন ।  
শ্রীকৃষ্ণের এই ঐশ্বর্য্য ও মাধুর্য্যতত্ত্ব বা লীলা

আলোচনার তাঁহার সর্কেশ্বরও সিদ্ধ হইবে।  
 স্বাদ বল, শ্রীকৃষ্ণ সর্কেশ্বর হইলে, জগতে তাঁহার  
 অবতরণের প্রয়োজন কি? তদন্তর, তাঁহার  
 অবতরণে মুক্ত, মুমুকু ও বিষরী এই ত্রিবিধ লোকই  
 তৎপরাগণ হইয়া তদীয় দাস্যলাভে সমর্থ হইলেন  
 বিষয়িগণ শ্রবণসুখদজ্ঞানে তাঁহার লীলার আলো-  
 চনার ক্রমশঃ তৎপরাগণ হইয়া তদীয় দাস্তবর্ষ লাভ  
 করেন। মুমুকুগণও ভবৌষধজ্ঞানে লীলার  
 আলোচনার দাস্য প্রাপ্ত হন। মুক্তপুরুষগণের  
 মধ্যে জ্ঞানিগণ আনন্দদায়কজ্ঞানে তদীয় লীলার  
 আলোচনার ক্রমশঃ মমতালাভে কৃতার্থ হন এবং  
 ভক্তগণ দ্রুতজ্ঞানে উহার আলোচনায় উত্তরোত্তর  
 অধিকতর আনন্দলাভে কৃতার্থ হন। তাঁহার  
 অবতার নিখিল বিশ্বের আকর্ষক। বিশেষতঃ  
 তাঁহার নরলীলা মধুর, হইতেও সুমধুর। তিনি  
 বাল্যলীলার বালকীড়া দ্বারা সর্কপ্রাণিমনোহর  
 প্রকৃত বালক। পোগণ ও কৈশোর লীলাও  
 ভক্তগণ চিন্তাকর্ষক। তাঁহার স্কললীলাই মধুর  
 এবং আনন্দময়। শ্রীকৃষ্ণের অবতার ঐতিহাসিক  
 রহস্য, গল্প নহে। তিনি মনুষ্যনাট্যে বিশ্বরঙ্গে  
 অবতীর্ণ হইয়া নিজলীলা প্রচার করেন। শ্রীকৃষ্ণ  
 যখন মনুষ্যনাট্যে জগতে অবতীর্ণ হন; তখন  
 তাঁহার পার্শ্বদর্শনও তাঁহার ন্যায় মনুষ্যনাট্য  
 স্বীকার করিয়া তাঁহার অবতরণের পূর্বে ও পরে  
 জগতে অবতরণ করেন। তাঁহার পার্শ্বদর্শনের  
 অবতারে একটি ঘোরতর সংগ্রাম হয়; কারণ,  
 তদেব অসুরগণেরও তদীয় পার্শ্বদর্শনের ন্যায় জগতে  
 আবির্ভাব প্রাপ্ত হয়। পার্শ্বদর্শন জ্ঞানভক্তির  
 প্রচার দ্বারা ধর্মস্থাপনে সাফল্য সহায় হন।  
 অতএব ইহারা মিত্রপক্ষ। অসুরগণ উক্ত কাণ্ডের  
 বাধা উপাদান করিয়া ধর্মস্থাপনের পরস্পরার  
 সহায় হন। অতএব ইহারা অরিপক্ষ। উত্তর  
 পক্ষের একসময়ে আবির্ভাবে সুরাসুর যুদ্ধ অনিবার্য  
 সূতরাং ইহাতে মানবলীলার উপসংহার দৃষ্ট হয়।  
 মানবলীলার উপসংহার হইলেও, লীলার পরি-

সমাপ্তি হয় না; অপ্রকটে অনন্ত প্রকাশে দেব-  
 লীলা হয়। কারণ, শ্রীকৃষ্ণের নাম, রূপ, গুণ ও  
 লীলা প্রভৃতি সকলই নিত্য। আখরুনোপ-  
 নিবদে উক্ত হইয়াছে,

“গোকুলাখে মাধুবমণ্ডলে বৃন্দাবনমধ্যে  
 সহস্রদলপদ্মমধ্যে কল্পতরোমূলে অষ্টদলকেশরে  
 গোবিন্দোহপি শ্রামঃ পীতাধরে ষ্টিভূজো ময়ূব-  
 পিঞ্জশিরো বেণুবৈত্রহস্তো নিগুণঃ সগুণঃ নিরাকারঃ  
 সাকারো নিরীহঃ সচেঠো বিরাজতে। ষে পার্শ্বে  
 চন্দ্রাবলী রাধিকা চেতি। যস্তা অংশে লক্ষ্মী-  
 দুর্গাদিকা শক্তিৱিতি। অগ্রে চ তস্যাদ্যাগ্রকৃতী  
 রাধিকা নিত্য নিগুণসর্কালঙ্কারশোভিতা প্রসঙ্গা-  
 শেষলাবণ্যসুন্দরীতি।”

মাধুবমণ্ডলে গোকুল নামক বৃন্দাবনে সহস্র-  
 দলপদ্মমধ্যে কল্পকুম্বলে অষ্টদলকেশরে শ্রামবর্ণ  
 পীতাধর, ষ্টিভূজ, ময়ূপিঞ্জশিরী, বেণুবৈত্রধারী,  
 প্রাকৃতগুণ ও উপাদানজ শরীর রহিত, নিখিল  
 অপ্রাকৃতগুণ ও দেহ বিশিষ্ট এবং লীলাময়  
 গোবিন্দ নিতাই বিরাজিত। বাহাদের অংশে  
 লক্ষ্মী ও দুর্গাদি শক্তিগণ প্রকাশ পান; সেই  
 রাধিকা ও চন্দ্রাবলী গোবিন্দের উভয় পার্শ্বে  
 রহিয়াছেন। নিত্য সমস্ত অপ্রাকৃত গুণরূপ  
 অলঙ্কারে শোভিতা, প্রসঙ্গা ও অশেষ লাবণ্য-  
 সুন্দরী গোবিন্দের পরা প্রকৃতী শ্রীবাধা সম্মুখে  
 বর্তমান। অতএব অপ্রকটে সর্কেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের  
 ঐশ্বর্য ও মাধুর্যময়ী লীলা নিত্য। শ্রীচৈতন্যকে  
 প্রণাম করিয়া শ্রীচৈতন্যরূপী শ্রীকৃষ্ণের সেই  
 ঐশ্বর্যমাধুর্যাত্ত্ব কিঞ্চৎ বলিবে অর্থাৎ মহাপ্রভু যে,  
 সনাতনকে ঐশ্বর্য মাধুর্যাত্ত্ব উপদেশ দেন, তাহা  
 এই পরিচ্ছেদে তাঁহার কণামাত্র বলিব ॥ ১ ॥

( ২২৩ পা ) “জয় জয়.....কোন  
 ছার ॥” এই ১ ও ২পয়ারের ভাবার্থ।

“জয় জয়” পয়ার দ্বারা গ্রন্থকার মহাপ্রভু,  
 নিত্যানন্দ ও ভক্তগণকে প্রণাম করিয়া, ঐশ্বর্য-  
 মাধুর্যাত্ত্ব কণামাত্র বলিবার জন্য মহাপ্রভুর বাক্য

দ্বারা বস্তুবিষয় আরম্ভ করিতেছেন, “সর্ক-  
শ্বরূপের” ইত্যাদি। মহাপ্রভু কহিলেন, সনাতন,  
শ্রবণ কর, পূর্বে যে সব স্বরূপের অর্থাৎ অবতারের  
কথা বলিয়াছি, পরব্যোম ধামে, তাঁহাদের বাস।  
নিত্যধাম গোলক ও পরব্যোম ভেদে দ্বিবিধ।  
গোলকের নামান্তর কৃষ্ণলোক। দ্বারকা, মথুরা  
ও গোকুল এই তিনরূপে কৃষ্ণলোকের অবস্থিতি।  
কৃষ্ণলোক পদ্মের কর্ণিকাস্থানীয় এবং পরব্যোম  
উহার দল (পত্র) স্থানীয়। সেই পরব্যোমে  
পৃথক পৃথক অবতারের পৃথক পৃথক বৈকুণ্ঠ আছে।  
অবতার অনন্ত বলিয়া, তাঁহাদের ধাম বৈকুণ্ঠও  
অনন্ত। অতএব উহা নির্ণয় করা যায় না।  
ভক্তগণ ভক্তিভাষিত অন্তরে পরব্যোমকে পদ্মের  
দলরূপে দর্শন করেন। উহা ভক্তগণ কর্তৃক দৃষ্ট  
হইলেও, পরিচ্ছিন্ন নহে। ভক্তগণ কর্তৃক দৃষ্ট  
পরব্যোমের বিস্তার বলিতে, বৈকুণ্ঠের বিস্তার  
বলিতেছেন,

“শত সহস্রায়ুত” ইতি। আনন্দ  
চিগ্রয়, ব্যাপক ও ষড়ৈশ্বর্য পূর্ণ অনন্ত  
বৈকুণ্ঠ ষাঁহার এক স্থানে থাকে, সেই  
পরব্যোমের বর্ণনা অসম্ভব। পরব্যোমের  
কিঞ্চিৎ বর্ণনা করিয়া কৃষ্ণলোকের  
কিঞ্চিৎ বর্ণনা করিতেছেন, “অনন্ত-  
বৈকুণ্ঠ” ইত্যাদি। কর্ণিকার, কর্ণিকাতে।  
এই মত, পূর্বোক্ত প্রকারে অর্থাৎ ষাঁহার  
ধাম ও পারিষদ ষড়ৈশ্বর্যপূর্ণ, তাঁহার  
অবতারও ষড়ৈশ্বর্য পূর্ণ। ব্রহ্মা, শিব,  
ও অনন্ত ষাঁহার অবতারগণের অন্ত পান  
না, ছার জীব কিরূপে তাঁহার অন্ত  
পাইবে? অর্থাৎ পায় না ॥ ১।২ ॥

( ২২৩ পা ) “কো বেদীতি”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। ব্রহ্মা ও শিবাदि যে, ত্রীকৃষ্ণা-

বতারগণের অন্ত পান না, ব্রহ্মা কর্তৃক  
উক্ত শ্লোক দ্বারা তাহা দেখাইতে-  
ছেন। “এই মত” ইত্যাদি পরাব প্রমাণ  
শ্লোক।

ত্রীকৃষ্ণকে ব্রহ্মা কহিলেন, হে ভূমন্ অর্থাৎ  
অপরিচ্ছিন্ন। আপনার তত্ত্ব ও লীলা আপনি  
ব্যতীত অন্য কে জানে? অর্থাৎ কেহ জানে  
না। অপরিচ্ছিন্ন বস্তুর ব্যাখ্যা অসম্ভব বলিয়া  
বেদও মুকের নাম আপনার কোন অর্থ বলিতে  
পারে না এবং পরিচ্ছিন্ন বেদ আপনার একদেশে  
অবস্থান করায়, আপনাকে জানেন না। হে  
ভগবন্ অর্থাৎ সর্কৈশ্বর্যমুক্ত, তোমা হইতে ন্যূন-  
শক্তিসূক্ত আমি ( ব্রহ্মা ) ও শিবাदि, সর্কৈশ্বর্যমুক্ত  
আপনাকে যখন বিশেষরূপে জানিতে পারি না,  
তখন পামরগণ আপনাকে কিরূপে জানিবে?  
হে পরায়ন্ অর্থাৎ সর্কাস্তর্ধামিন্, আপনি সকলের  
হৃদয়ে অতি গোপনভাবে বাস করেন বলিয়া,  
আপনার অংশ জীবও আপনাকে সম্পূর্ণরূপে  
জানিতে পারে না। হে যোগেশ্বর অর্থাৎ হৃষীক-  
ষটনসমর্থ, আপনি অসম্ভবকেও সম্ভব করেন  
বলিয়া, আপনার তত্ত্ব হৃগম। আরও সমুদ্রের  
তরঙ্গ যেমন বুদ্ধির অগম্য, তদ্রূপ আপনার লীলা  
কোথায়, কিরূপে, কোন সময়ে, বা কতপ্রকারে  
প্রকাশ পায় তাহাও বুদ্ধির অগোচর। কারণ;  
আপনি সচ্চিদানন্দবিলাসরূপ নিজশক্তিকে বিস্তার  
করিয়া লীলা করেন। অতএব সেই অবতার-  
গণের লীলা, কে জানিতে পারে? আপনি যদি  
নিজশক্তিকে বিস্তার না করিয়া ক্রীড়া করেন,  
তবেই আপনার তত্ত্ব ও লীলা জানা যায়; নচেৎ  
ঐ লীলা জানিতে কেহই সমর্থ নহে। অতএব  
আপনার তত্ত্ব আপনিই জানেন। সেই তত্ত্বোপ-  
দেশের জন্য আপনিই অবতীর্ণ হন ॥ ২ ॥

( ২২৪ পা ) “এই মত...বার অন্ত।”  
এই ৩ পরায়ের ভাবার্থ। এইমত অর্থাৎ

শ্রীকৃষ্ণের যেমন রূপ ও মীলা অনন্ত,  
তদ্রূপ তাঁহার সদ্গুণও অনন্ত ॥ ৩ ॥

( ২২৪ পা ) “গুণাজ্ঞান ইতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “এই গুত কৃষ্ণের” পয়ার প্রমাণ  
শ্লোক ।

ব্রহ্মা কহিলেন, হে শ্রীকৃষ্ণ ! আপনার গুণ  
সকলের মাহাত্ম্য ও সংখ্যা নিরূপন করিতে কে  
সমর্থ হয় ? অর্থাৎ কেহই সমর্থ নহেন । তাহার  
কারণ, এই জগতের জীবগণের মঙ্গলনিমিত্ত,  
আপনি অবতীর্ণ হইয়া, তাহাদের জন্য আপনার  
গুণসকলকে প্রকট করেন । যে গুণে যে জীবের  
যে রূপ হিত হয়, জীবের জন্য তদ্রূপ গুণ প্রকট  
হয় । দেবমহুয্যাদি অবহাতেদে জীব অনন্ত এবং  
তাহাদের স্বভাবও অনন্ত ; সূতরাং জীবগণের  
জন্ম বিবিধ প্রকারে প্রকটিত আপনার গুণও  
অনন্ত । অতএব দেশকালাদি দ্বারা অপরিচ্ছিন্ন  
নিজলোকে বিহরণশীল আপনার পরম অনন্ত  
গুণগণের গণনা অসম্ভব । যদিও পার্থিব পরমাণু  
অনন্ত ; তথাপি শ্রীসঙ্কর্ষণাদি পুরুষগণের জ্ঞানের  
দ্বারা পরিচ্ছিন্ন ব্রহ্মাণ্ডের পরমাণু, হিনকনা ও  
নক্ষত্র সকলের গণনা সম্ভব হয় । যাহার রোম-  
কূপে পরমাণু প্রমাণ অনন্তকোটি ব্রহ্মাণ্ড যাতারাত  
করিতেছে, সেই সর্বাংশী, মহাপুরুষ আপনার  
গুণ সমূহের গণনা কিরূপে সম্ভব হয় ? অতএব  
আপনার গুণ সকল অতি দুর্লভ । ইহা প্রকৃত  
গুণ হইলে আমাদের ( ব্রহ্মাদির ) দুর্লভ  
হইত না । আপনার গুণগণ অপ্রাকৃত বলিয়া  
শ্রীসঙ্কর্ষণাদিরও দুর্লভ হইয়াছে ॥ ৩ ॥

( ২২৪ পা ) “ব্রহ্মাদি...গণন ॥” এই  
৪পয়ারের ভাবার্থ সরল । ব্রহ্মাদি বহু,  
ব্রহ্মাদি বহু মুনিগণ ॥ ৪ ॥

( ২২৪ পা ) “নাস্তং বিদ্যাসীতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ

আছে । “ব্রহ্মাদি বহু” পয়ার প্রমাণ  
এই শ্লোক । মায়িক ও অমায়িক উভয়-  
বিধ শক্তিবিশিষ্ট শ্রীকৃষ্ণের গুণ অনন্ত  
হেতু উহার বর্ণন অসম্ভব ॥ ৪ ॥

( ২২৪ পা ) “সেহো রহ...সতৃষ্ণ ॥”  
এই ৫পয়ারের ভাবার্থ । সেহে রহ  
অর্থাৎ ব্রহ্মা, অনন্ত, শিব ও সনকাদি  
দুরৈ থাকুক সর্লজ্ঞ শ্রীকৃষ্ণ নিজগুণের  
অন্ত না পাইয়া, উহার অন্ত জানিতে  
তৃপ্ত হন ॥ ৫ ॥

( ২২৪ পা ) “দ্যুপত্য এবতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “সেহো রহ” পয়ার প্রমাণ  
শ্লোক ।

“নিজগুণের অন্ত না পায়” ইহার প্রমাণ  
“ন যসুরন্তমনস্ততয়া ত্বমপি” ইতি । যদি বল,  
শ্রীকৃষ্ণ যদি নিজ গুণের অন্ত না পান, তাহা হইলে  
শ্রীকৃষ্ণের সর্লজ্ঞতার হানি হয় ; তহুত্তরে  
বলিতেছেন, “যদন্তরাণ্ডনিচয়া ইত্যাদি ॥ ৫ ॥

( ২২৫ পা ) “সেহো রহ...তার এক  
বিন্দু ॥” এই ৬ হইতে ৮ পর্য্যন্ত পয়ারের  
ভাবার্থ সরল । সেহো রহ অর্থাৎ ঐ  
কথাও ত্যাগ কর ; শ্রীকৃষ্ণ ব্রজে অবতরণ  
করিলে, যদি তাঁহার সেই অবতারলীলা  
বিচার করিতে ইচ্ছা করা যায়, তবে  
মন ঐ লীলার বা গুণের অন্ত পায়  
না । তাহার কারণ দেখাইতেছেন,—  
‘প্রাকৃতাপ্রাকৃত’ ইত্যাদি । প্রাকৃত-  
প্রাকৃত সৃষ্টি কি, তাহা বলিতেছেন,  
“অনন্ত বৈকুণ্ঠ” ইত্যাদি । অতঃ পর  
সৃষ্টি । হয় অবদূত, ওদাগীন্য অবগমন  
করে । ‘প্রাকৃত সৃষ্টি কি, তাহা বলিতে-

ছেন, “কৃষ্ণবৎসৈরসংখ্যাতেঃ” ইত্যাদি । অর্থাৎ অসংখ্য শ্রীকৃষ্ণের গোবৎসের সহিত । শ্রীকৃষ্ণ যখন ব্রজার মোহনার্থ অসংখ্য গোধন ও গোপবালক এবং তাঁহাদের বসনভূষণাদি সমস্তই স্বয়ং রচনা করিয়া ব্রজাকে ঐ সকল আবার চতুর্ভুজ নারায়ণের আকারে দর্শন করাইয়াছিলেন, তখন ব্রজা মোহিত হইয়া বহু স্তুতির পর বলেন, “যে কহে কৃষ্ণের নৈভব” ইত্যাদি । বাস্বনোগম্য, বাক্য ও মনের বিষয় । তার, অমৃতরূপ বৈভব সমুদ্রের ॥ ৬—৮ ॥

( ২২৫ পা ) “জানন্ত এবেতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “যে কহে কৃষ্ণের” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৬ ॥

( ২২৫ পা ) “কৃষ্ণের মহিমা..... ব্যাখ্যানেন ॥” এই ৯ ও ১০ পয়ারের ভাবার্থ । “বহু” স্থানে “রহু” পাঠ হইবে । শ্রীকৃষ্ণের মহিমার কথাও পরিত্যাগ কর । কেননা, সেই মহিমা কে জানিবে ? অর্থাৎ কেহই জানিতে পারে না । বৃন্দাবনভূমির আশ্চর্য্য বিভূত্ব দেখ । “মোলক্রোশ” ইত্যাদি ।

শাস্ত্র বলেন, বৃন্দাবন বোলক্রোশ ভূমি । সেই বোলক্রোশ বৃন্দাবনের একদেশে অসংখ্য নৈকুঠ ও ব্রজাও প্রকাশ পাইয়াছিল । অতএব শ্রীকৃষ্ণের অনন্ত ঐশ্বর্য্য । সেই অনন্ত ঐশ্বর্য্য সমুদ্রের কণামাত্র বলিলাম । এইরূপে বলিতে বলিতে মহাপ্রভুর ঐশ্বর্য্য-সাগর ক্ষুণ্ণিত হওয়ার, তাহাতে তাঁহার মন ও ইন্দ্রিয়াদি ভূবিয়া গেল এবং তাগবতের শ্লোক একটি পাঠ করিয়া, সিন্ধেই সর্ব্বকালের ১১০ ॥

( ২২৬ পা ) “স্বরত্নসাম্যাতিশয় ইতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য গ্রন্থেই বলা হইতেছে । মহাপ্রভুর যে, ভাগবতের শ্লোক পাঠ করেন, তাহা এই শ্লোক । পরে ইহার তাৎপর্য্য বলিতেছেন ॥ ৭ ॥

( ২২৬ পা ) “পরম ... নাহি আন । এই ১১ পয়ারের ভাবার্থ সরল । স্বয়মিতি ।” শ্লোকোক্ত “অসাম্যাতিশয়ঃ” পদের অর্থ করিতেছেন । “পরম ঈশ্বর কৃষ্ণ” ইত্যাদি ॥ ১১ ॥

( ২২৬ পা ) “ঈশ্বর” ইতি । শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ২৫ পৃষ্ঠায় এবং তাৎপর্য্য ভাবার্থে ৭১ পৃষ্ঠায় দেখুন । পরম ঈশ্বর পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৮ ॥

( ২২৬ পা ) ব্রজা ... অধীশ্বর ১২ পয়ারের ভাবার্থ । “স্বয়মিতি” শ্লোকোক্ত “ত্র্যধীশঃ” পদের অর্থ করিতেছেন, “ব্রজা বিষ্ণু” ইতি । ব্রজা, বিষ্ণু ও শিব সৃষ্টাদি-কার্যের ঈশ্বর হইয়াও, বাঁহার আজ্ঞাকারী, সেই শ্রীকৃষ্ণই ত্র্যধীশ ॥ ১২ ॥

( ২২৬ পা ) “সৃজামিতী শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২১৮ পৃষ্ঠায় দেখুন । ব্রজা ও শিব যে আজ্ঞাকারী, তাহা এই শ্লোকে প্রতিপন্ন করিলেন ॥ ৯ ॥

( ২২৬ পা ) “এ সামান্য... অধীশ্বর । এই ১৩ পয়ারের ভাবার্থ । এ সামান্য অর্থাৎ “ব্রজা শিব” ইতি পূর্ক পয়ারে যে ত্র্যধীশের অর্থ করিয়াছি, তাহা সামান্ত অর্থ; অন্য অর্থ শ্রবণ করা “জগৎ-কারণ” ইত্যাদি । স্থল, স্থল ও সৃষ্টির অন্তর্ধর্মী তৃতীয়, দ্বিতীয় ও প্রথম



এই তিন পুরুষ জগতের ঈশ্বর হইয়াও  
বাহার অংশ, সেই শ্রীকৃষ্ণই ত্র্যধীশ্বর ॥১৩॥

( ২২৬ পা ) “যন্যোকেতি । শ্লোকের  
নীলা ও বাদলা আদির ৬৪ পৃষ্ঠার ।  
দেখুন । শ্রীকৃষ্ণের অংশ তিন পুরুষ, এই  
শ্লোকে ইহাই প্রতিপন্ন করিলেন ॥ ১০ ॥

( ২২৬ ) “এই অর্থ ... লীলাসার ॥  
“এই ১৪ পয়ারের ভাবার্থ । এই অর্থ  
বাহ্য অর্থাৎ এই যে অর্থ করিলাম,  
তাহাও বাহ্য । গূঢ় অর্থ শ্রবণ কর ।  
ত্র্যধীশের গূঢ় অর্থ বলিতেছেন “তিন  
আবাস” ইত্যাদি । গোলোক বৃন্দাবন  
শ্রীকৃষ্ণের মাদুর্য্যময় অন্তঃপুর । সেই  
অন্তঃপুরে পিতা, মাতা ও বন্ধুগণ,  
যোগমায়াক্রম দাসী এবং মধুর রাসাদি-  
লীলাসকল বিরাজ করেন । সেই অন্তঃপুর  
অনন্ত ঐশ্বর্য্য ও মাদুর্য্যের ভাণ্ডার ॥ ১৪ ॥

( ২২৬ পা ) “করুণেতি” শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
“মদুরৈশ্বর্য্যমাদুর্য্য”পয়াব প্রমাণ শ্লোক ॥১১॥

( ২২৭ পা ) “তার তলে ... আছে  
ভরি । “এই ১৫ পয়ারের ভাবার্থ’ ।  
সেই অন্তঃপুরের তলে পরব্যোম নামক  
মধ্যম আবাস অর্থাৎ বৈঠকখানা  
রাজী । সেই মধ্যম আবাস শ্রীকৃষ্ণের  
বৈষ্ণবর্ষ্যের ভাণ্ডার এবং সেখানে  
অনন্ত বৈকুণ্ঠ ও বৈকুণ্ঠপার্বদগণ বিরাজ  
করেন ॥ ১৫ ॥

( ২২৭ পা ) “শ্লোকোক্তনাম্নীতি”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । গোলোকের তলে পরব্যোম

তাহার তলে মহেশধাম, তাহার তলে  
দেবী-ধাম ; ইহাই এই শ্লোকে প্রতিপন্ন  
করিলেন ॥ ১২ ॥

( ২২৭ পা ) “প্রধানেনতি” শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
দেবী-ধাম শ্রীকৃষ্ণের বহির্বাটী । দেবী-  
ধামই ব্রহ্মাণ্ড বা প্রকৃতি বা পাদ বিভূতি ।  
শ্লোকের অর্থ পরে বলিতেছেন ॥১৩॥১৪॥

( ২২৭ পা ) “তার তলে...অভিধান ।  
“এই ১৬ ও ১৭ ভাবার্থ’ । পরব্যোমের  
তলে বিরজার পরে ব্রহ্মাণ্ডই বাহ্যাবাস  
( বহির্বাটী ) ইহার অধীশ্বরী প্রাকৃত-  
সম্পদ্রূপা জগন্ময়ী । মায়া তাঁহার  
দাসী । এই স্থানে জীবগণ বাস  
করেন । এ তিন ধাম অর্থাৎ হরিধাম  
মহেশধাম ও দেবীধাম ইহার শ্রীকৃষ্ণ  
অধীশ্বর বলিয়া ত্র্যধীশ্বর । গোলোক ও  
পরব্যোম প্রকৃতির পর বলিয়া উহা  
ত্রিপাদবিভূতি । মায়িক বিভূতির এক  
পাদ নাম ॥১৩॥১৭ ॥

( ২২৮ পা ) “ত্রিপাদিতি । শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
ত্রিপাদ বিভূতি ও পাদবিভূতি পয়ার  
প্রমাণ শ্লোক ॥১৫ ॥

( ২২৮ পা ) “ত্রিপাদ ... কৃষ্ণের ॥  
এই ১৮ পয়ারের ভাবার্থ’ । শ্রীকৃষ্ণের  
ত্রিপাদবিভূতি বাক্য ও মনের অগোচর ।  
সেই ত্রিপাদবিভূতির কথা বুঝে থাকুক,  
পাদবিভূতিরই অর্থ পাওয়া যায় না ।  
পরিদৃশ্যমান সৌরজগৎ একই ব্রহ্মাণ্ড ।  
এমন ব্রহ্মাণ্ড অগাধই অগাধ ॥ ১৬ ॥

ব্রহ্মাণ্ডেই একজন করিয়া সৃষ্টিকর্তা, পালনকর্তা ও সংহারকর্তা আছেন। উহাদের সাধারণ নাম চিরলোকপাল, একপাদবিভূতির বিস্তার বলিতেছেন, “একদিন ইতি” আদি “নাহি পরিমাণ” ইত্যন্ত ॥ ১৮ ॥

( ২২৮ পা ) “কৃষ্ণ কহেন ... শশক রহিলা” ॥ এই ১৯ হইতে ২১ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। দশবিশশত ইত্যাদি কোন ব্রহ্মার দশ মুখ, কাহার কুড়ি মুখ, কাহার একশত, কাহার এক হাজার, কাহার দশ হাজার, কাহার কোটি, কাহার অর্কুদ মুখ, কোন ব্রহ্মার মুখ গণনাভীত। ইহাদেব সহিত লক্ষ-কোটি বদনযুক্ত রুদ্রগণ ও লক্ষকোটি-নয়নসম্বিত ইন্দ্রগণ আনিলেন। ফাঁফর, অত্যাম্চর্য্য ॥১৯—২১ ॥

(২২৮ পা) “আসি সব...সে দেখিল” এই ২২ হইতে ২৪ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। দ্বারকাদি বিভূ অর্থাৎ দ্বারকাদি-ধাম যে ব্যাপক, এই তাহার প্রমাণ। উহা দেখাইতেছেন, “আমারি ব্রহ্মাণ্ডে” ইতি।

“একত্র মিলনে” এই পররে সম্বোধ হইতে পারে, আগত ব্রহ্মাগণ যদি কেহ কাহাকেও না দেখিয়া থাকেন, তবে চতুর্মুখ ব্রহ্মা উহাদিগকে কিরূপে দেখেন? তদন্তর, শ্রীকৃষ্ণের ইচ্ছার দেখেন। পূর্বে অর্থাৎ ব্রহ্মলীলার আপনা কর্তৃক বোধিত হইয়া, যে নিষ্ঠুর করিয়াছিলেন, তাহা বটকে প্রত্যক্ষ করিলাম। ব্রহ্মা পূর্বে বাহা সিন্ধব করিয়াছিলেন, তাহা পর শ্লোকে বলিতেছেন ॥২২—২৪ ॥

(২২৯ পা) “কৃষ্ণ কহে ... উমাণ”

টীকা ও বাঙ্গালা মধ্যের ২২৫ পৃষ্ঠার দেখুন। “পূর্বে আমি” পয়ার প্রকাশ শ্লোক ॥ ১৬ ॥

( ২২৯ পা ) “কৃষ্ণ কহে ... উমাণ” এই ২৫ ও ২৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল। শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক আহুত ব্রহ্মাগণের শত বা সহস্র বদন হইবার কারণ বলিতেছেন, “কৃষ্ণ কহে” ইত্যাদি। শ্রীকৃষ্ণের পাদ-বিভূতির যখন পরিমাণ হয় না, তখন ত্রিপাদবিভূতি পরব্যোমের কে উমাণ (নির্ণয়) করে ॥২৫ ॥২৬ ॥

( ২২৯ পা ) “তম্যা: পার ইতি।” পরব্যোম যে ত্রিপাদবিভূতি, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৭ ॥

( ২২৯ পা ) “তবে কৃষ্ণ...ভগবান্” এই ২৭ পয়ারের ভাবার্থ। ত্র্যধীশ্বরের অন্য গুঢ় অর্থ বলিতেছেন, “ত্রিশঙ্কতে” ইত্যাদি। গোকুল, মথুরা ও দ্বারাবতীর যিনি অধীশ্বর, তিনি ত্র্যধীশ্বর। তিন ধাম তাঁহার স্বরূপৈশ্বর্য্য দ্বারা পূর্ণ অতএব শ্রীকৃষ্ণই ত্র্যধীশ্বর ॥২৭ ॥

( ২২৯ পা ) “পূর্বে উক্ত ... শ্লোক পঢ়িল ॥” এই ২৮ হইতে ৩০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। “স্বয়মিতি।” সপ্তম শ্লোকোক্ত “লোকপালৈ: কিন্নীটে-ত্যাতির” অর্থ বলিতেছেন, “পূর্বে উক্ত।” ইত্যাদি। তার মণি, মুকুটের মণি ॥ শ্লোকোক্ত: “স্বায়ম্ভুলক্ষ্ম্যাণ্ডেতির অর্থ বলিতেছেন: “মিঞ্জ চিল্ডেয়” ইত্যাদি ॥ এক শ্লোক, বঙ্গভ্যেতি শ্লোক ॥২৮—৩০ ॥

( ২২৯ পা ) “স্বয়ম্ভেতি” শ্লোক

ভাষণার্থ্য "কৃষ্ণের যতেক খেলা।" ইত্যাদি  
পয়ারে ব্যক্ত হইবে ॥ ১৮ ॥

( ২২৯ পা ) "কৃষ্ণের যতেক...লীলা  
হেতে ॥" এই ৩১ ও ৩২ পয়ারের  
ভাবার্থ । শ্লোকোক্ত "যস্মর্ত্যালীলৌপয়িকং"  
ইহার অর্থ করিতেছেন, "কৃষ্ণের যতেক"  
ইত্যাদি ।

বৈকুণ্ঠাদিতে শ্রীকৃষ্ণের বস্তু কিছু লীলা বা স্বরূপ  
আছে, তন্মধ্যে বাণ্যকোমারাদিবিষয়মহুয্যালীলা,  
সকললীলার শ্রেষ্ঠ। শ্রীকৃষ্ণের নরলীলা বৈকুণ্ঠা-  
দিতে নাই। অতএব ইহা সর্বোত্তমা। ইহার  
কারণ, "যোগমায়া" ইতি পর পয়ারে বলিবেন।  
অথবা যে লীলা শ্রীকৃষ্ণের বৈভবস্ত ব্রহ্মাদিরও  
বিষয় উৎপাদন করেন। যিনি নরলীলা করেন,  
তাহার স্বরূপ বলিতেছেন, "নরবপু" ইতি।  
শ্রীকৃষ্ণের অন্যান্য বহু মূর্তি থাকিলেও, নরের  
ন্যায় দেহ তাঁহার নিজরূপ। অতএব ঐরূপ  
সর্বশ্রেষ্ঠ। শ্রীকৃষ্ণের ঐ নরদেহ, কিরূপ তাহা  
বলিতেছেন, "গোপবেশ" ইত্যাদি। বাহার দেহ  
মহুয্যের ন্যায়, তাঁহার লীলাও তদ্রূপই হওয়া  
উচিত, এই হেতু বলিতেছেন, "নরলীলা" ইতি।  
নরদেহের অরূপ নরলীলা। শ্রীকৃষ্ণের অনন্ত  
রূপ হইলেও, প্রধানতঃ তাঁহার দুইটি রূপ;  
একটি পরমেশ্বর রূপ, একটি মধুর রূপ। শ্রীকৃষ্ণ  
পরমেশ্বররূপে অভিক্রম হইতেও ক্রম হন এবং  
আত্ম বৃহৎ হইতেও বৃহৎ হন, ইত্যাদিরূপে  
তিনি অনন্তরূপে প্রকাশ পান। এই রূপটি  
ধারণার অতীত। অর্জুন শ্রীকৃষ্ণের পরমেশ্বর  
রূপ দর্শন করিয়া ভীত হইলেন এবং তাঁহার প্রেমের  
সাক্ষাৎ হইল। শ্রীকৃষ্ণের যে রূপটি সামা, ভক্তগণের  
আনন্দদায়ক, প্রেমবর্ধক এবং বাহাতে সৎ, চিত্ত ও  
জ্ঞানের উৎকর্ষ আছে, তাহাই মধুররূপ।  
শ্রীকৃষ্ণের এইরূপটিই মধুররূপ। হে লনাতন,  
এই মধুররূপ কখন অবর্ণ কর। যে রূপের

"ইতি। যে মধুর রূপের এক বিশুদ্ধ রূপ জিতুবনকে  
ডুবায় অর্থাৎ জিতুবনের সমস্ত রূপকে পরাজয় করে  
এবং সর্ব প্রাণির চিত্ত আকর্ষণ করে।

শ্লোকোক্ত, "যোগমায়াবলং দর্শনতা" ইহার  
অর্থ করিতেছেন, "যোগমায়া" ইত্যাদি।

শ্রীকৃষ্ণের নরবপু যে সর্বশ্রেষ্ঠ, তাহার কারণ  
বলিতেছেন, যোগমায়া ইতি। বিত্তরূপের  
পরিণাম স্বরূপভূতা চিত্তশক্তি যোগমায়ার শক্তি  
অর্থাৎ সম্পূর্ণ সামার্থ্য লোকে দেখাইবার জন্য  
ভক্তগণের গোপনীয় রত্নস্বরূপ এই ঐশ্বর্যমাধুর্যা-  
য়ক নররূপ নিত্যলীলা হইতে প্রকট করেন।  
ইহাতে নিত্যলীলার রূপটি যে বিভূজ নরবপু  
তাহা প্রতিপন্ন হইল। শ্রীকৃষ্ণ যে রূপে যোগমায়ার  
প্রভাব জগতকে দেখান, সেই রূপটি যে সামান্য  
বা লৌকিক নহে, পরম আলৌকিক, তাহাও সিদ্ধ  
হইতেছে, ইহাতে ঐ রূপের হেরবাণি দোষও  
নিরাস পাইল। নিত্যলীলা ব্যতীত যোগমায়ার  
বল শ্রীকৃষ্ণ বৈকুণ্ঠাদিতেও প্রকাশ করেন নাই।  
অতএব স্বরূপভূতা যোগমায়ার বল প্রকাশক  
শ্রীকৃষ্ণের নরবপুই সর্বশ্রেষ্ঠ। অথবা, রাস ও  
মহিবীবিবাহে নিজ যোগমায়ার প্রভাবক যে প্রকাশ-  
মূর্তি, তাহা লোকে ভক্তগণকে দেখাইতে নিত্য-  
লীলা হইতে নরবপু প্রকট করেন। অতএব  
নরবপু শ্রেষ্ঠ ॥৩১ ॥৩২ ॥

( ২৩০ পা ) রূপ দেখি...গোপীগণ  
মন ॥ এই ৩৩ ও ৩৪ পয়ারের ভাবার্থ।  
শ্লোকোক্ত "স্বগ্য চ নিস্মাপনং" ইহার অর্থ  
করিতেছেন, "রূপ দেখি" ইতি।

শ্রীকৃষ্ণ নিজের মধুর রূপ দর্শন করিয়া, নিজেই  
বিদ্রিত হন এবং ঐ মধুররূপে কত মধুরতা আছে,  
তাহা জানিতে অভিলাষী হইলেন। ইহা চিত্তপটাদি-  
দর্শনে প্রসিদ্ধি আছে। অতএব নরাকার মধুর  
রূপ ও ঐরূপের লীলা সর্বোত্তম।

শ্লোকোক্ত "লৌকিকদেহে কখন মধুর" ইহার অর্থ

করিতেছেন, “বনোভাগা” ইতি । “ভূষণভূষণানন্দ” ইহার অর্থ বলিতেছেন, ভূষণের ইতি ।

ভূষণ অর্থে পরিণে অঙ্গের শোভা হয়, কিন্তু শ্রীকৃষ্ণের রূপের এমনিই অপূর্ণ সৌন্দর্য যে, শ্রীকৃষ্ণের অঙ্গস্থিত ভূষণ শ্রীকৃষ্ণকে দ্বারা ভূষিত হয় । একেতো ভূষণের শোভাবর্দ্ধক শ্রীকৃষ্ণের অঙ্গ, তাহাতে আবার মনোহর ত্রিভঙ্গরূপ । ইহার উপর আবার ধনুকের ন্যায় জর নৃত্য হইতেছে । প্রথমে শ্রীকৃষ্ণের অঙ্গ মধুর, তাহাতে ত্রিভঙ্গরূপে আরও মধুর, পুনশ্চ জ্রধনুর নৃত্যে অতি সুমধুর রূপ হইয়াছে । শ্রীকৃষ্ণের মধুররূপের কার্য বলিতে জ্রধনুর নৃত্য কিরূপ তাহা বলিতেছেন, “তেরছ “ইতি । তেরছ, বক্র । নেত্রান্ত-বাণ, কটাক্ষবাণ । শ্রীকৃষ্ণ জ্রধনুতে দৃঢ়রূপে বক্র কটাক্ষবাণ যোজন করতঃ গোপীগণের মনকে বিদ্ধ করেন । কটাক্ষবাণ সরল হইলে, টানিয়া খোলা সহজসাধ্য, ঐ বাণ বক্র হওয়ার, বাহির করা দুঃসাধ্য ; ইহা বুঝাইতেছে । শ্রীরাধা বলিয়াছেন,—

“দ্রবিনং ভবনমপত্যং তাবন্নিভ্রং তথাভিজাত্যক্ষ ।  
উপবসুং বনমালী যাবরেন্নে ন নর্তরতি ॥”  
বসুনাকুলে শ্রীকৃষ্ণ যে পর্যন্ত নৃত্যবিনীত কটাক্ষবাণ নিক্ষেপ না করেন, সেই পর্যন্তই ধন, গৃহ, অগত্য, মিত্র, ও সংকুলত্ব থাকে । বাণবিদ্ধ হইলে ঐ সব থাকে না ॥ ৩৩ । ৩৪ ॥

( ২৩০ প। ) “ব্রহ্মাণ্ড উপরে ... গোপীগণ ।” এই ২৫ ও ৩৬ পয়সারের ভাবার্থ । শ্রীকৃষ্ণের জ্রধনুর নৃত্য বলিয়া ভূষণের শোভাবর্দ্ধক মনোহর ত্রিভঙ্গ মধুররূপের কার্য বলিতেছেন, “ব্রহ্মাণ্ড” ইতি ।

শ্রীকৃষ্ণের মধুররূপ ব্রহ্মাণ্ডোপরি পরব্যোম্ভ-বরণগণের অর্থাৎ বিশাল ও স্বাধাধির-বন-বল-পূর্ণ-বরণ-করম, অর্থাৎ ঠেকুইছ শ্রীকৃষ্ণের

বরণগণ শ্রীকৃষ্ণের মধুররূপ দর্শনকরিয়া “আহা কি সুন্দর রূপ, আহা কি সঙ্গুণ ইত্যাদি” বলিয়া বিস্মিত করেন । এই মধুররূপদর্শনজন্য মহা-কালপুরের অধিপতি মুক্ত ব্রাহ্মণ-বালকগণকে নিজ ধামে লইয়া যান, ইহা প্রসিদ্ধ আছে । অতএব মধুররূপ বরণগণের চমকারণোপাদক, ইহা সিদ্ধ হইল । এমন কি, সেদব্যাক্যসকল বাহাদিগকে পতিব্রতার শিরোমণি বলেন, তাহারও এই মধুর রূপে আকর্ষিত হন । শ্রীকৃষ্ণপ্রাপ্তিজন্য লক্ষীগণের তপস্যা দ্বারাই, তাহাদের আকর্ষণ সিদ্ধ হইতেছে ।

কটাক্ষবাণ দ্বারা গোপীবিদ্ধকারী, মাধুর্য দ্বারা স্বরূপগণের বিশ্বকারী ও লক্ষীগণের আকর্ষণকারী শ্রীকৃষ্ণের কার্য বলিতেছেন, “চড়ি” ইতি । শ্রীকৃষ্ণ গোপীর মনোরূপ রথে আরোহণ করিয়া মন্থথের ( কামের ) মনকে মথন করেন । এইহেতু তাহার নাম মথনমোহন । স্বয়ং নবকন্দর্প শ্রীকৃষ্ণ, পঞ্চশরের ( কামের ) দর্প জর করিয়া, গোপীগণ লইয়া রাস বিহার করেন । গোপীর মনোরূপ রথে চড়াতে ও প্রাকৃতপ্রাকৃত কামের দর্প চূর্ণ করার শ্রীকৃষ্ণ যে, রতিলোগ্রামের প্রধান বোদ্ধা তাহাও প্রতীপন্ন হইতেছে । কামের দর্প চূর্ণ করিতে শ্রীকৃষ্ণ ব্যতীত কেহই সমর্থ নহে । মহাদেব প্রাকৃত কামকে ভঙ্গ করিলেও অপ্রাকৃত কামের দর্প চূর্ণ করিতে পারেন নাই । অতএব শ্রীকৃষ্ণের মধুররূপই শ্রেষ্ঠ ; বাহাতে প্রাকৃত ও অপ্রাকৃত উভয় কামই বোহিত হন ॥৩৫ । ৩৬ ॥

( ১৩০ প। ) “নিজ সম...অপ্রধার ॥” এই ৩৭পয়সারের ভাবার্থ । শ্রীকৃষ্ণের অপর কার্য বলিতেছেন, “নিজসম” ইতি ।

বৃন্দাবনে শ্রীকৃষ্ণ নিজতুল্যসখার সহিত বহুদেব গোচারণ করতঃ বিহার করেন । ইহার বংশী-ধ্বনি শ্রবণ করিয়া বাবর ও জলন প্রাপীর অঙ্গ পুলকিত হয় ও প্রেমবাক্য পড়িত হয় । সন্দেশ হইতে পারে, বংশীধ্বনিশ্রবণে অধিক

পুলকিত বা ভাহার প্রোবাশ পতিত হইতে পারে,  
 শ্রাবর প্রাণীর কিল্লেশ, হয় ? তহুত্তর, উত্তর  
 প্রাণীই পুলকিত হয়; ইহা ভাগবতে দশমস্কন্ধে  
 এককিংশাধ্যায়ে বর্ণিত হইরাছে। বাহলা ভয়ে  
 আমরা উহা বলিলাম না। কোন পদকর্তা বলেন,—

প্রথম রন্ধুর গানে, ব্রহ্মার ভাবরে ঘ্যানে,  
 বিতীরতে যমুনা উলান।

তৃতীয় রন্ধুর কথা শুন যুবতাহুহতা,  
 পবনের হত হর জ্ঞান।

চতুর্থ রন্ধুর গানে, ব্রহ্মগোপীর বাজে কানে,  
 উনমত ব্রহ্মরীর প্রার।

বনন পড়িতে নারে, নীবীক ধসি পড়ে,  
 এলোকেশে সেই পথে ধার।

পঞ্চম রন্ধুর স্বরে, আপনে সে দেখে ফিরে,  
 পুনঃ খেছু বাইতে না পারে।

উর্ধ্বস্থে ধার খেছ, যেখানে বাজরে বেণু,  
 আগে আসি যোর মুখ ধেরে।

ষষ্ঠ রন্ধুতে প্রার, শুকতরু প্রাণ পার,  
 পাষণ আপনি জ্বব হয়।

গাতী তৃণ নাহি ধার, চিত্রপুতলীপ্রার,  
 কৌকিলাদি স্বরভঙ্গ হয়।

সপ্তম রন্ধুর গীতে, কদম্বাদি বিকশিতে,  
 বড় ঝড় বহে এক ডারে।

অষ্টম রন্ধুর গান, গায় সদা তব নাম,  
 অবহেলে বাণী এই করে।

নবম আচার মর্গ, অসাধ্য বাণীর কর্ম,  
 ত্রিলোক মোহিত বাণীর গানে।

বাণীর বক্তক শুণ, কি করিব নিরুপণ;  
 শিবরাম কি কহিতে জানে।

এই পদে শ্রাবর ও অক্ষয় সর্ব প্রাণির পুল-  
 কাধি বর্ণি হইরাছে। ৩৭।

( ২৩০ পা ) "মুক্ত মালা...লীলাবৃত্ত-  
 ধার" এই ৩৭ পরায়ের ভাবার্থ  
 শ্রীকৃষ্ণের বর্ণ বা রূপ বলিতেছেন, "মুক্ত  
 মালা" ইত্যাদি।

শ্রীকৃষ্ণের বর্ণ নব মেঘসদৃশ। অজএব তিনি  
 নবজলধর। ইহা উপমালাকার। মেঘ যেমন  
 জগতে জল বরিষণ দ্বারা জগতের শত বৃদ্ধি করেন,  
 শ্রীকৃষ্ণও তরুণ জগত শত অর্থাৎ জগতের ভক্ত-  
 গণের সম্বন্ধে নিজের অমৃতরূপা লীলাধারা বরিষণ  
 করিয়া, তাঁহাদের আনন্দ বৃদ্ধি করেন। জল-  
 ধরের জল দ্বারা যেমন শত পৃষ্ঠ হয়; তরুণ ভক্ত-  
 গণ লীলা দ্বারা পৃষ্ঠ হন। শ্রীকৃষ্ণের বর্ণ, মেঘের  
 বর্ণ; শ্রীকৃষ্ণের বংশীধ্বনি, মেঘের গর্জন;  
 শ্রীকৃষ্ণের লীলামৃত ধারা, মেঘের বারিধারা;  
 ইত্যাদিরূপে শ্রীকৃষ্ণের ও মেঘের গুণ সমান বটে;  
 কিন্তু মেঘের উদয় হইলে বকপক্ষিগণ উড়িয়া  
 বেড়ায়, ইন্দ্রধনু দৃষ্ট হয় এবং বিদ্যাং দৃষ্ট হয়।  
 শ্রীকৃষ্ণমেঘে ঐ সব কোথায়? তহুত্তরে শ্রীকৃষ্ণের  
 গলায় যে মুক্তার মালা তাহাই বকপক্ষি সদৃশ,  
 শ্রীকৃষ্ণের মস্তকের মন্থর-পুচ্ছই ইন্দ্র-ধনু এবং  
 শ্রীকৃষ্ণের পীতাম্বরই বিদ্যাং। মেঘের বিদ্যাং  
 চকল; শ্রীকৃষ্ণমেঘের বিদ্যাং স্থির। ইত্যাদিরূপে  
 মনীষিগণ সংলগ্ন করিয়া লইবেন ॥ ৩৮ ॥

( ২৩০ পা ) "মাধুর্য্য... মথুরা-  
 নাগরী" এই ৩৯ ও ৪০ পরায়ের  
 ভাবার্থ। শ্রীকৃষ্ণ, ভগবন্তার সার যে  
 মাধুর্য্য, তাহা ব্রজেই প্রচার করেন।  
 ইহা ব্যাসপুত্র শুকদেব লোকে জানা-  
 ইতে ভাগবতশাস্ত্রে স্থানে স্থানে বর্ণন  
 করিয়াছেন, যাহা শুনিয়া ভক্তগণ মত্ত  
 হন। মহাপ্রভু কর্তৃক বর্ণিত অল্প প্রসঙ্গ  
 বলিবার জন্য, প্রস্তুকার বলিতেছেন,  
 "কহিতে" ইতি।

মথুরানাগরীগণ তাবাবেশে শ্রীকৃষ্ণের গুণ ও  
 গোপীগণের ভাগ্যবর্নন, যে মোক পড়িয়াছিলেন,  
 বহাৎকৃত্ত কৃষ্ণের মন্থরম বলিতে বলিতে প্রেমে  
 উল্লাস হইল; সনাতনের হাতে ধরিয়া; মন্থরনাগরী  
 কর্তৃক বর্ণিত সেই মোক প্রসঙ্গের গাঢ় স্বাদে

সন্দেহ হইতে পারে, মহাপ্রভু মধুরস বর্ণন করিতে করিতে গোপীর ভাগ্য বর্ণন করেন কেন ? তদন্তর "শ্লোক পড়ে" ইতি । অর্থাৎ প্রেমের আবেশে মহাপ্রভু গোপীভাগ্য বর্ণন করেন । অথবা, গোপীগণই শ্রীকৃষ্ণের মধুরস অত্যধিকরূপে আশ্বাদন করেন, উজ্জন্য তাঁহাদের সেই ভাগ্য বর্ণন করেন, শ্রীকৃষ্ণস-আশ্বাদনে গোপী ব্যতীত অন্য কেহ তাদৃশভাগ্য লাভ করেন নাই । অতএব তাদৃশভাগ্য বর্ণনযোগ্য বলিয়া, বর্ণিত হইতেছে ॥ ৩৯।৪২ ॥

( ২৩০ পা ) "গোপ্যস্তপঃ কিমিতি ।" শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৪২ পৃষ্ঠায় দেখুন । মথুরানাগরীগণ ভাবাবেশে শ্রীকৃষ্ণের গুণ ও গোপীভাগ্য-বর্ণন, যে শ্লোক পাঠ করেন, তাহা এই শ্লোক । "তারুণ্যামৃত" ইত্যাদি পর পয়ারে ইহার তাৎপর্য্য বলিতেছেন ॥ ১১ ॥

( ২৩০ পা ) "তারুণ্যামৃত...উল্লাস ॥" এই ৪১ পয়ারের ভাবার্থ । শ্লোকোক্ত "অমুস্যরূপং" ইহার অর্থ করিতেছেন, "তারুণ্যামৃত" ইত্যাদি ।

শ্রীকৃষ্ণমাধুর্য্য বর্ণন করিতে তাঁহার যৌবনকে অবৃত্ত সমুদ্র বলিলেন । সমুদ্রের বে যে গুণ আছে, শ্রীকৃষ্ণের যৌবনসমুদ্রে সেই সেই গুণ আছে । সাধারণ সমুদ্র ভয়োৎপাদক কিন্তু শ্রীকৃষ্ণের যৌবনসমুদ্র আনন্দোৎপাদক বলিয়া, উহা অবৃত্ত বরুণ । সমুদ্র যেমন অন্তলম্পর্শী, শ্রীকৃষ্ণের যৌবনও তদ্রূপ বর্ণনাতীত । সমুদ্র যেমন জলে পরিপূর্ণ, শ্রীকৃষ্ণ তদ্রূপ নিত্য যৌবনে পরিপূর্ণ । সমুদ্র যেমন তীরকে ভঙ্গ করে, শ্রীকৃষ্ণের যৌবনও তদ্রূপ পত্রিকতার ধর্মে নষ্ট করে । সমুদ্রে যেমন জলকণ্ড আছে, শ্রীকৃষ্ণের যৌবনেও তদ্রূপ মধুরসিকরণ অবস্থার কণ্ড আছে ।

ইত্যাদিরূপে মনীষিগণ সংলগ্ন করিয়া গইবেন । অথবা, সমুদ্রে পতিত হইলে, জীবনের আশঙ্কা আছে, কিন্তু শ্রীকৃষ্ণের যৌবনসমুদ্রে পতিত হইলে, মরণের আশঙ্কা নাই, কিন্তু বিমহাদিকমিত্ত বহু কষ্টের আশঙ্কা আছে । শ্রীকৃষ্ণের যৌবন সমুদ্রের তরঙ্গ বলিতেছেন, "তরঙ্গ" ইতি । যৌবনের সর্বোৎকৃষ্ট লাভণ্যই যৌবনসমুদ্রের তরঙ্গ । সমুদ্রের তরঙ্গের ন্যায় শ্রীকৃষ্ণের লাভণ্য তরঙ্গের নিকট জগতের সকল সৌন্দর্য্যই পরাতপ হয় । সমুদ্রের তরঙ্গ যেমন নিজকুলকে নষ্ট করে, তদ্রূপ শ্রীকৃষ্ণের লাভণ্যতরঙ্গ শ্রীকৃষ্ণকে পর্যন্ত মোহিত করিয়া ধৈর্য্য নষ্ট করতঃ তাঁহাকে আকর্ষণ করে । যৌবনসমুদ্রের আবর্ত ( ঘূর্ণ ) বলিতেছেন, "ভাৰাতে" ইতি । সকারী স্থায়ী প্রভৃতি ভাবগণই যৌবনসমুদ্রে আবর্তরূপে উৎখিত হয় । ঘূর্ণ বায়ু ব্যতীত জলের ঘূর্ণ হয় না বলিয়া বলিতেছেন, "বংশী" ইতি । শ্রীকৃষ্ণের বংশীর ধ্বনিই চক্রবাক্ত ( ঘূর্ণবাহু ) । ঘূর্ণ বায়ুতে যেমন জলের ঘূর্ণন হয়, তদ্রূপ বংশীধ্বনিতে কড়তা, নৃত্য, বাধি ও উগাদ প্রভৃতি নানা ভাবের উদয় হয় । জলের আবর্তে তৃণপতন প্রয়োজন হেতু বলিতেছেন, "নারী" ইতি । বংশীধ্বনি দ্বারা সেই আবর্তে নারীর মনতৃণকে ডুবায়, আর ঐ তৃণকে উঠিতে দেয় না ॥ ৪১ ॥

( ২৩০ পা ) "সখি হে...নারায়ণে ॥" এই ৪২ পয়ারের ভাবার্থ । শ্লোকোক্ত "গোপ্যস্তপঃ কিমচরন্" ইহার অর্থ করিতেছেন, "সখি হে" ইতি ।

মথুরানাগরীগণ পরস্পর বলিতেছেন, হে সখি, ত্রয়গোপীগণ কি তপস্বী করিয়াছিলেন, যে এরূপ কল প্রাপ্ত হইয়াছেন ; সেই কল কি, তাহা বলিতেছেন, "কুকরুপ" ইতি ।

শ্লোকোক্ত "সুখতিঃ শিবতি" ইহার অর্থ করিতেছেন, "কুকরুপ" ইতি ।

গোপীগণ শ্রীকৃষ্ণের-রূপমাধুর্য্যকে নেত্রভরি পান করিয়া অর্থাৎ চক্ষের সাথ মিটাইয়া দর্শন করতঃ নেত্র, দেহ ও মনকে প্রশংসার যোগ্য করেন। যিনি শ্রীকৃষ্ণের রূপ দর্শন করিয়াছেন, তাঁহারই দেহ, মন ও নেত্র প্রশংসার যোগ্য। যিনি দর্শন করেন নাই, তাঁহার নেত্রাদি বৃথা বা নিশ্চর। অতএব গোপীগণ কোন্ তপস্যার বলে শ্রীকৃষ্ণরূপ দর্শন করিয়াছেন? আমরা যদি গোপীগণের তপঃ কি, জানিতে পারিতাম, তবে সেই তপস্যা করিতাম। যদি বল, শ্রীকৃষ্ণ-রূপে এমন কি মাধুর্য্য আছে; বাঁহার জন্য, মথুরানাগরী তোমরা, তপস্যা করিতে চাহিতেছ? তাহাতে বলিতেছেন, “যে মাধুরীর ইত্যাদি। এস্থলে মথুরানাগরীগণ মথুরাতে শ্রীকৃষ্ণের রূপ দর্শন করিয়াও গোপীগণের ভাগ্যলাভে গোপীগণের তপস্তার অমূল্যবৎ হওয়ার, প্রতিপন্ন হইতেছে, শ্রীকৃষ্ণের ব্রজরূপই সর্বশ্রেষ্ঠ। ইহা স্বীকার না করিলে, এই শ্লোক অপ্রসঙ্গ হয়।

শ্লোকোক্ত “অসমোর্দ্ধ” ইহার অর্থ করিতেছেন, “সে মাধুরীর” ইতি। উর্দ্ধ অধিক ।

শ্রীকৃষ্ণরূপেই মাধুরী আছে, তাহার অধিক বা সমান মাধুরী অন্যত্র নাই। এমন কি, পরব্যোমে শ্রীকৃষ্ণের যে স্বরূপগণ অর্থাৎ বিলাসাদি-মূর্ত্তিসকল আছেন; সেই সব মূর্ত্তিতেও শ্রীকৃষ্ণের সমান মাধুরী নাই। অধিক মাধুরী অন্যত্র অসম্ভব। যিনি পরব্যোমের অধিকারী, যিনি অবতার সকলের অবতারাী অর্থাৎ বাহা হইতে পুরুষাবতারাদিগণ করেন, সেই শ্রীনারায়ণেও এত মাধুরী নাই, বস্তু মাধুরী শ্রীকৃষ্ণরূপে আছে। অতএব অসমোর্দ্ধ ও অপূর্ব্ব শ্রীকৃষ্ণের রূপমাধুর্য্য দর্শনজন্য আমরা মথুরানাগরী, গোপীকৃত তপস্তা করিতে উদ্ভিলাষিনী হইরাছি ৪০২ ॥

( ২৩০ পৃ ) তাতে সাক্ষী...কার্য জানি ৪০৩ ও ৪৪ পরারের ভাবার্থ ।

শ্রীকৃষ্ণরূপে যে মাধুর্য্য আছে, শ্রীনারায়ণে তাহা নাই; ইহার প্রশংসা করিতেছেন, “তাতে” ইত্যাদি। সাক্ষী, প্রশংসা। পতিব্রতায় শ্রেষ্ঠা শ্রীনারায়ণের প্রিয়তমা স্ত্রী যে মাধুর্য্য আশ্বাদন জন্য কামভোগাদি ত্যাগ করতঃ তপস্তা করেন। শ্রীকৃষ্ণে যে মাধুর্য্য আছে, তাহা যদি নারায়ণে থাকিত, তবে স্ত্রী নারায়ণের সেবাদি ত্যাগ করিয়া শ্রীকৃষ্ণের ভজন করিতেন না। অতএব শ্রীকৃষ্ণের রূপ-মাধুর্য্য অসমোর্দ্ধ ।

শ্লোকোক্ত “অনন্যসিদ্ধম্” ইহার অর্থ করিতেছেন, “সেইত” ইত্যাদি ।

শ্রীকৃষ্ণের রূপমাধুর্য্য সর্বশ্রেষ্ঠ বলিয়া, অন্য-সিদ্ধিরহিত অর্থাৎ শ্রীনারায়ণাদিতে ঐ মাধুর্য্যের সিদ্ধি হয় না। এই হেতু শ্রীকৃষ্ণই মাধুর্য্যাদিগুণের আকর। শ্রীকৃষ্ণের অল্প সব প্রকাশমূর্ত্তিতে শ্রীকৃষ্ণ-দত্ত গুণ সব প্রকাশ পায়, অতএব শ্রীকৃষ্ণের মাধুর্য্য স্বাভাবিক ৪০৩ ৪৪ ॥

( ২৩১ পৃ ) “গোপীভাব...মূলভ ॥” এই ৫৫ ও ৪৬ পরারের ভাবার্থ। শ্লোকোক্ত “অনুসনাতিনবং” ইহার অর্থ করিতেছেন, “গোপীভাব” ইত্যাদি ।

যদি বল, গোপীগণ শ্রীকৃষ্ণের রূপমাধুর্য্য সর্বত্র এক ভাবেই যদি দর্শন করেন, তবে মাধুর্য্য দর্শনে গোপীগণের পুনঃ পুনঃ চমৎকার কিরূপে হয়? তাহাতে বলিতেছেন, গোপীভাব ইতি। গোপীগণের ভাবরূপ দর্শনের সম্মুখে শ্রীকৃষ্ণের মাধুর্য্য প্রতিক্ষণেই নতন নতন রূপে প্রকাশ পায়। অতএব প্রতিরূপে নবরূপে প্রকাশিত মাধুর্য্য দর্শনে গোপীগণ চমৎকৃত করেন। প্রতিরূপে নব নবরূপে প্রকাশিত মাধুর্য্যের সুবিধি প্রকার বলিতেছেন, হুঁহে ইতি। দর্শন বস্তু পরিষ্কার হয়, তত পরিষ্কার মুখ বেমন দেখা যায়, তজ্জগৎ গোপীভাবদর্শন শ্রীকৃষ্ণ মাধুর্য্যকে প্রতি-ক্ষণেই নব নবরূপে বর্ধিত করেন, এবং নব

নবরূপে বর্জিত শ্রীকৃষ্ণমাধুর্য্য দ্বারা আবার গোপীভাবদর্পণ নির্মল হয়, তাহাতে আবার কৃষ্ণমাধুর্য্য বৃদ্ধি পায়; এইরূপে গোপীভাব ও শ্রীকৃষ্ণমাধুর্য্য উভয় উভয়কে পরমহর্ষে বৃদ্ধি করাইয়া, উভয়েই চমৎকৃত করেন। অতএব গোপীর ভাব নব নব এবং শ্রীকৃষ্ণের মাধুর্য্যও নব নব। এস্থলে প্রতিপন্ন হইল, গোপীভাব-দর্পণের সম্মুখেই কেবল শ্রীকৃষ্ণমাধুর্য্য বর্জিত হয়, অন্যত্র হয় না অর্থাৎ গোপীভাবেই শ্রীকৃষ্ণমাধুর্য্য অমুভব হয়, অন্যভাবে হয় না। এইহেতু মথুরা-নাগরীগণ গোপীভাব-প্রাপ্তি-কামনার গোপীগণের তপস্তা কি, তাহা পরম্পরে জিজ্ঞাসা করেন। শ্লোকোক্ত “হর্যাপং” শব্দের অর্থ করিতেছেন, “কর্ম্ম” ইত্যাদি।

যদি বল, ব্রজে গোপীভাব দ্বারা যদি শ্রীকৃষ্ণের মাধুর্য্য প্রতিফলিত বৃদ্ধি পায়, তবে অন্তর্দেশীয় রমণীগণ, ব্রজে গমন করিয়া ঐ মাধুর্য্য দর্শন করুক? তাহাতে বলিতেছেন, “হর্যাপমিতি।” লক্ষ্মীর যখন ছলভ, তখন অন্যের কিরূপে স্থলভ হইবে? যদি বল, তপস্যা কর না কেন? তাহাতে বলিতেছেন, “কর্ম্ম” ইতি। কর্ম্মজপা-দ্বিতে কৃষ্ণমাধুর্য্য ছলভ অর্থাৎ অমুভব হয় না। কৃষ্ণমাধুর্য্য কিরূপে অমুভব হয়, তাহা বলিতেছেন, “কেবল” ইতি। যে ব্যক্তি রাগামহুগামার্গে কেবল অমুভব দ্বারা শ্রীকৃষ্ণভজন করেন, তিনিই তন্মাধুর্য্য অমুভব করেন ॥ ৪৫।৪৬ ॥

(২৩১ প্যা) “সেইরূপ ... হিত ॥” এই ৪৭ ও ৪৮ পয়ারের ভাবার্থ। শ্লোকোক্ত “একান্তপামযশঃ শ্রিয় ঐশ্বরস্য” ইহার অর্থ করিতেছেন, “সেইরূপ” ইত্যাদি।

শ্রীকৃষ্ণের ব্রজাপ্রিত সেইরূপ ঐশ্বর্য্য ও মাধুর্য্য-ময়। সর্ব্বদিব্যক্তরূপ রক্তের আলর। শ্রীকৃষ্ণের দিব্য গুণের রত্নালয়তা বলিতেছেন, “জানের” ইতি। শ্রীনারায়ণাদিতে যদিও বৈষ্ণবধর্ম্মাদি বৈষ্ণব

আছে, তাহা শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক প্রণত। অতএব শ্রীকৃষ্ণই সকলের অংশী ও আশ্রয়। শ্রী. লক্ষ্মাদি যে বোড়শ শক্তির কথা প্রণয় করা যায়, তাহারও শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত। অতএব শ্রীকৃষ্ণের সমান স্থলীলাদি দিব্যগুণ শ্রীনারায়ণাদি অল্প কাহারও নাই। শ্রীকৃষ্ণ প্রাকৃতপ্রাকৃত সকল জগতের হিত করেন ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥

(২৩১ প্যা) “কৃষ্ণ দেখি..... আশ্বাদন ॥” এই ৪৯ পয়ারের ভাবার্থ।

সর্ব্বসৌন্দর্য্য-মাধুর্য্যময় শ্রীকৃষ্ণকে দর্শনকারি-গণ পলককে নিন্দা করেন। ব্রজে গোপীগণ বিধিকে নিন্দা করেন। প্রহকার বলিতেছেন, “সেই সব” ইতি। কৃষ্ণদর্শনকারি ব্যক্তিগণ নিমেষকে এবং গোপীগণ বে বিধিকে নিন্দা করেন, তৎপ্রমাণ শ্লোক মহাপ্রভু পাঠ করিয়া এবং তাহার অর্থ করিয়া শ্রীকৃষ্ণের মূখমাধুর্য্য আশ্বাদন করেন ॥ ৪৯ ॥

(২৩১ প্যা) “যস্থাননমিতি।” এই শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “কৃষ্ণ দেখি” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২০ ॥

(২৩১ প্যা) “অটতীতি।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা আদির ৪৯ পৃষ্ঠায় দেখুন। “ব্রজে বিধি” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২১ ॥

(২৩১ প্যা) “কামগায়ত্রী..... সমাজ ॥” এই ৫০ ও ৫১ পয়ারের ভাবার্থ।

মহাপ্রভু শ্রীকৃষ্ণের মূখমাধুর্য্য বর্ণন করিতে কোন সখির উক্তি দ্বারা মূখমাধুর্য্য বলিতেছেন, “কামগায়ত্রী” ইতি। মন্ত্ররূপ কামগায়ত্রী কৃষ্ণের নিজরূপ হন। কামগায়ত্রীর সাড়ে চব্বিশ অক্ষর। এক একটি অক্ষর এক একটি চন্দ্র; সুতরাং সাড়ে চব্বিশটি চন্দ্র। শ্রীকৃষ্ণ ঐ চন্দ্রসমূহকে উদয় করিয়া ত্রিলোককে কামদয়



করিলেন। যখন প্রাকৃত এক চন্দ্র রসিকার রস বৃদ্ধি করে, তখন অপ্রাকৃত সাড়ে চক্ষিণ চন্দ্র জগতকে কামময় না করিবে কেন? সাড়ে চক্ষিণ চন্দ্র কোথায় উদয় হয়, তাহা পরে বলিতেছেন। শ্রীকৃষ্ণের মুখই বিজরাজ অর্থাৎ চন্দ্রগণের রাজা; ঐ রাজা শ্রীকৃষ্ণদেহরূপ সিংহাসনে উপবেশন করতঃ ও অস্ত্র সাড়ে তেইশ চন্দ্রগণকে মদে নইয়া কামরাজ্য শাসন করেন ॥ ৫০।৫১ ॥

( ২৩২ পা ) “তুই গণ্ড...যার গান ॥” এই ৫২ ও ৫৩ পয়ারের ভাবার্থ। অপর সাড়ে তেইশ চন্দ্রের স্ফুটি বলিতেছেন, “তুই গণ্ড” ইত্যাদি।

নির্গুণ দর্পণের চতুর্দিকে যদি মণি থাকে, তবে তাহা অত্যন্ত উজ্জ্বল হয়, বাহার গণ্ডস্থলদ্বয়; সেই মণিরসুদর্পণের উজ্জ্বলতাকে পরান্ত করে, সেই দুইটি গণ্ড দুইটি পূর্ণচন্দ্র। ললাটের অষ্টমী চন্দ্রটি অর্ধচন্দ্র। চন্দ্রনবিশুটি পূর্ণচন্দ্র। অতএব সর্ব্বমমেত সাড়ে চারিটি চন্দ্র হইল। করস্থিত দশটি নখ দশটি চন্দ্র। উহার বাবংশীর উপর নৃত্য করেন অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ যখন বাবংশীধ্বনি করেন, তখন জ্ঞান হয়, দশটি চন্দ্র তত্পরি নৃত্য করিতেছেন। বাবংশীর রবই ঐ চন্দ্রগণের গান। পদস্থিত দশটি নখ দশটি চন্দ্র। উহার তলে অর্থাৎ পৃথিবীতে নৃত্য করেন অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ যখন গমন করেন, তখন জ্ঞান হয়, দশটি চন্দ্র নৃত্য করিতেছে। নুপূরের ধ্বনিই উহাদের গান। অতএব শ্রীকৃষ্ণ এই সাড়ে চক্ষিণ চন্দ্র প্রকাশ করিয়া জগতকে কামময় করেন, ইহা সিদ্ধ হইল ॥ ৫২।৫৩ ॥

( ২৩২ পা ) “নাচে...আপ্যায়িত ॥” এই ৫৪ ও ৫৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল। জগতকে কামময় করিবার, অস্ত্র হেতু বলিতেছেন, “নাচে” ইত্যাদি। নেত্র-লীলাকমল, নেত্রলীলাপদ্ম। বিলাগী

রাজা, শ্রীকৃষ্ণ। পসারি, বিস্তার করিয়া। স্মিতজ্যোৎস্নামুতে, হাস্তরূপ জ্যোৎস্নামুতে ॥ ৫৪।৫৫ ॥

( ২৩২ পা ) “বিপুল...নিন্দন ॥” এই ৫৬ ও ৫৭ পয়ারের ভাবার্থ। বিলাগী-রাজার মন্ত্রী বলিতেছেন, “বিপুল” ইতি। মদনমদ-ঘূর্ণন, মদনমদে ঘূর্ণিত, অথবা, মদনের মদকে যিনি ঘুরাইয়া দেন। জননেত্ররসায়ন, দর্শনকারিগণের চক্ষুর উজ্জ্বলকরণ।

যদি বল, শ্রীকৃষ্ণদর্শন পাইয়া বিধাতাকে নিন্দা করে কেন? তাহাতে বলিতেছেন, “দ্বিগুণ” ইতি। শ্রীকৃষ্ণদর্শনে তুফালোত দ্বিগুণ বৃদ্ধি পায়, অথচ হুই আঁখি দ্বারা শ্রীকৃষ্ণরূপ অভিলষিতরূপে দর্শন করিতে না পারিয়া মনে কোত হয়, তজ্জন্য দুঃখে বিধাতাকে নিন্দা করেন ॥ ৫৬।৫৭ ॥

( ২৩২ পা ) “না দিলেক...চালন ॥” এই ৫৮ হইতে ৬০ পর্য্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ। বিধাতাকে কি বলিয়া নিন্দা করেন, তাহা বলিতেছেন, “না দিলেক” ইত্যাদি। বোল ধরে কথা শুনে।

সমুদ্র হইতে চন্দ্র উখিত হইয়া সমুদ্রকে বৃদ্ধি করেন বলিয়া এখানে বলিতেছেন, শ্রীকৃষ্ণাজই মাধুর্য্যসমুদ্র, শ্রীকৃষ্ণমুখই চন্দ্র এবং হাত্ত সেই মুখচন্দ্রের কিরণ। গ্রহকার বলিতেছেন, “এ তিনে” ইতি। এ তিনে, অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণামাধুর্য্য-সমুদ্রে, মুখচন্দ্রে ও হাত্তজ্যোৎস্নায় ॥ ৫৮ - ৬০ ॥

( ২৩২ পা ) “মধুরং মধুরমিতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য পর পয়ারে বলা হইবে। মহাপ্রভু শ্রীহস্ত চালন করিয়া যে শ্লোক পড়েন, তাহা এই শ্লোক ॥ ২২ ॥

( ২৩২ পা ) “সনাতন...একবিষ্ণু ॥”

এইঃ ৬১ পয়ারের ভাবার্থ । মধুরমিত্তি  
শ্রেণীর মহাপ্রভু অর্থ করিতেছেন ।

মহাপ্রভু কহিলেন, সনাতন, “মোর মন”  
ইত্যাদি । সান্নিপাত ব্যাধিগ্রস্ত ব্যক্তি যেমন জল  
পান করিতে ইচ্ছা করিলে, বৈদ্য তাহাকে জল  
পান করিতে দেয় না ; তজ্জন সান্নিপাতবিশিষ্ট  
আমার মন শ্রীকৃষ্ণমাধুর্যের অমৃতসমুদ্র সব পান  
করিতে ইচ্ছা করে, কিন্তু হৃদৈব বৈদ্য মাধুর্যা-  
মৃতের এক বিন্দু পান করিতে দেয় না ; ইহা মহা-  
প্রভুর বৈন্যোক্তি ॥ ৬১ ॥

( ২৩২ পা ) “কৃষ্ণাঙ্গ...যার পূর ॥”  
এই ৬২ ও ৬৩ পয়ারের ভাবার্থ ।

ম্লোকোক্ত “মধুরং মধুরং বপুরস্ত বিভোঃ”  
ইহার অর্থ করিতেছেন, “কৃষ্ণাঙ্গ” ইত্যাদি ।  
“মধুরং মধুরং বদনং মধুরং” ইহার অর্থ করিতে-  
ছেন, “তাতে” ইত্যাদি । “মৃদুস্মিতং মধুরং”  
ইত্যাদির অর্থ করিতেছেন, “মধুর হৈতে”  
ইত্যাদি ॥ ৬২।৬৩ ॥

( ২৩২ পা ) “স্মিতকিরণ...গণে ॥”  
এই ৬৪ ও ৬৫ পয়ারের ভাবার্থ ।

হাস্তকিরণরূপ স্নকপূর অপররূপ মধুপুরে  
প্রবেশ করে এবং সেই স্নকপূরমিশ্রিত অধর  
হইতে মধু ত্রিভুবনকে মত্ত করেন । শ্রীকৃষ্ণাধর-  
মধুপানে সকলেই মত্ত হয় । অথবা স্নকপূর-  
মিশ্রিত মধু বংশীছিন্নরূপ আকাশে, আকাশের গুণ  
শব্দে প্রবেশ করিয়া বংশীধ্বনিরূপে পরিণত হইয়া  
ত্রিভুবনকে মত্ত করে । স্নিতস্নকপূরমিশ্রিত মধু  
বংশীধ্বনিরূপে পরিণত হইয়া কিরূপে ত্রিভুবনকে  
মত্ত করে, তাহা বলিতেছেন, “সে ধ্বনি” ইত্যাদি ।  
বংশীধ্বনি সকলের কর্ণে প্রবেশ করিয়া কি করেন,  
তাহা বলিতেছেন, “সবা” ইত্যাদি ॥ ৬৪ ৬৫ ॥

( ২৩৩ পা ) “সে ধ্বনি... নারীগণে ॥”  
এই ৬৬ ও ৬৭ পয়ারের ভাবার্থ । বংশী-  
ধ্বনির গুণ ও কার্য্য বলিতেছেন, “সে  
ধ্বনি” ইত্যাদি । উদ্ভক্ত, ছুরস্ত, । যেই,  
বংশীধ্বনি ।

তার আগে কেবা গোপীগণে অর্থাৎ যে  
বংশীধ্বনি পরম্পরী লক্ষ্মীগণকে আকর্ষণ করে ; সেই  
পতিব্রতা লক্ষ্মীগণের তুলনার গোপীগণ কে ?  
অর্থাৎ স্বামী গোপীগণকেতো আকর্ষণ করিবেই ;  
অথবা যে ধ্বনি দ্বারা বৈকুণ্ঠস্থ পতিব্রতা লক্ষ্মীগণ  
আকর্ষিত হয়, তাহাদের তুলনার গ্রাম্যকুল-  
বালিকা ও পশুপালিকা গোপীগণ কে ? অর্থাৎ  
বৈকুণ্ঠস্থ লক্ষ্মীগণের আকর্ষণকারী ধ্বনি গোপী-  
গণকেতো আকর্ষণ করিবেই । ধ্বনি নারীগণকে  
আকর্ষণ করিয়া তাহাদের কি অবস্থা করে, তাহা  
বলিতেছেন, “নীবিধনার” ইত্যাদি । নীবি, বস্ত্র ।  
বলপূর্ষক ধরিত্রা আনয়ন করেন এবং লোকধর্ম,  
লজ্জাদি ত্যাগ করার । ধ্বনি এইরূপভাবে নারী-  
গণকে নাচায় ॥ ৬৬।৬৭ ॥

( ২৩৩ পা ) “কাণের...তোমারে ॥”  
এই ৬৮ ও ৬৯ পয়ারের ভাবার্থ । বংশী-  
ধ্বনির অপর কার্য্য বলিতেছেন, “কাণের  
ইত্যাদি । তা, কাণের মধ্যে । প্রসূ-  
কার বলিতেছেন, “পুনঃ কয়” ইতি ।  
“আন কহিতে” ইত্যাদি মহাপ্রভুর  
বাক্য । তোমারে সনাতনের ॥ ৬৮।৬৯ ॥

( ২৩৩ পা ) “আমিত...কৃষ্ণদাস ॥”  
এই ৭০ হইতে ৭২ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ  
সরল । যাই বহি, ভাসিয়া যাই ॥ ৭০।৭২ ॥

## দ্বাবিংশ পরিচ্ছেদ ।

( ২৩৩ পা ) “বন্দ” ইতি । শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

এই পরিচ্ছেদে মহাপ্রভু সনাতনকে অভিধেয় বা ভক্তিতত্ত্ব উপদেশ করিবেন ; ইহাই গ্রন্থকার শ্লোকার্থে প্রকাশ করিলেন । ভগবান্ সকলকে মুক্তি দেন, কিন্তু নিজবশকারিণী ভক্তি সহসা দেন না বলিয়া, উহা অতি রহস্যময়ী । শ্রীগোরাঙ্গ-বতারে ঐ ভক্তি প্রকাশ করিয়াছেন । অতএব তিনি দয়ার সাগর । কোন পদকর্ত্তী বলিয়াছেন, “( যদি ) না গোরাঙ্গ হ’ত কি মেনে হইত, কেসনে ধরিতাম দে ।

রাধার মহিমা, প্রেমরসে সীমা,  
জগতে জানাতো কে ? ইত্যাদি।”

শ্রীকৃষ্ণকে বা শ্রীগোরাঙ্গকে অধীন করিতে পারে, এরূপ সন্ধান, আজ জগতের সমক্ষে স্বয়ং প্রকাশ করিলেন ॥ ১ ॥

( ২৩৩ পা ) “জয় জয়.....নিশ্চয় ॥” এই ১ম পয়ারের ভাবার্থ । এইত কহিল, পূর্ব পরিচ্ছেদে বলিল । “এইত” ইত্যাদি, মহাপ্রভুর বাক্য । কৃষ্ণ এক সার অর্থাৎ সর্গশ্রেষ্ঠ শ্রীকৃষ্ণই একমাত্র সম্বন্ধতত্ত্ব । সর্গশাস্ত্রে কৃষ্ণভক্তিকেই অভিধেয় কহিয়াছেন । “অভিধীয়তে অনেন ইতি অভিধেয়ম্ ।” ভক্তিবাহারাই সম্পূর্ণরূপে শ্রীকৃষ্ণ জাত হন বলিয়া, ভক্তিই অভিধেয় ॥ ১ ॥

( ২৩৩ পা ) “শ্রুতির্মাত্তেতি ॥  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । সর্গশাস্ত্রে ভক্তিকেই অভিধেয়

বলেন, এই হেতু মুনিগণ তৎসম্বন্ধে যে শ্লোক নির্ণয় করেন, তাহা এই শ্লোক ॥২॥

( ২৩৪ পা ) “অদয়জ্ঞান.....গণন ॥”

এই ২ পয়ারের ভাবার্থ ।

আশঙ্কা হইতে পারে, শ্রুতি বলেন, “সর্গং ধ্বিনং ব্রহ্ম” অর্থাৎ এই সমস্তই ব্রহ্ম । অতএব ব্রহ্ম হইতে অতিরিক্ত পদার্থ নাই । শ্রীকৃষ্ণই ব্রহ্ম ; সুতরাং শ্রীকৃষ্ণ হইতে ভিন্ন বস্তু কিছুই নাই ; তাহা হইলে অভিধেয় কৃষ্ণভক্তি, কে আচরণ করিবে ? অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ হইতে ভিন্ন পদার্থ যদি থাকে, তবে তাঁহার শ্রীকৃষ্ণভক্তি আচরণ সম্ভব হয়, আর যদি না থাকে, তবে ঐ ভক্তি, কে আচরণ করিবে ? ইহার উত্তরে, সেই ভক্তি, কে আচরণ করিবে, তাহা বলিবার জন্য প্রথমে সজ্জকপে শ্রীকৃষ্ণতত্ত্ব বলিতেছেন, “অদয়” ইত্যাদি । অদয়-জ্ঞানতত্ত্বরূপ স্বয়ং ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ, স্বরূপে, স্বরূপবিলাসরূপে, স্বরূপশক্তিরূপে, স্বরূপশক্তি-বিলাসরূপে, স্বরূপশক্তিবৃত্তিরূপে ও স্বরূপশক্তি-বৃত্তিবিলাসরূপে নিত্য বিরাঞ্জিত । স্বরূপ, স্বয়ং ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ ; স্বরূপবিলাস, শ্রীবিলাস ও শ্রীনারায়ণ ; স্বরূপশক্তি, শ্রীরাধিকা ; স্বরূপশক্তি-বিলাস, শ্রীচন্দ্রাবলী ও শ্রীলক্ষ্মী ; স্বরূপশক্তিবৃত্তি, বিগুহসম্ব ; স্বরূপশক্তিবৃত্তিবিলাস, বিগুহসম্বের প্রকাশ । অবতার সকল স্বরূপবিলাসের অংশ । পরিকর সকল স্বরূপশক্তির বা স্বরূপশক্তি বিলাসের অংশ । স্বরূপবিলাসের অংশভূত অবতারগণ শ্রীকৃষ্ণের আংশ বলিয়া গণ্য হন । তটস্থশক্তিরূপ জীব সকল শ্রীকৃষ্ণের বিভিন্নাংশ । এই সকল আংশ ও বিভিন্নাংশ লইয়াই শ্রীকৃষ্ণ অনন্ত বৈকুণ্ঠে ও ব্রহ্মাণ্ডে বিহার করেন । বিভিন্নাংশজীব শ্রীকৃষ্ণের শক্তি বলিয়া গণ্য ॥ ২ ॥

( ২৩৪ পা ) “সেই বিভিন্নাংশ.....  
নিকট যায় ॥” এই ৬ ও ৪ পয়ারের  
ভাবার্থ । বিভিন্নাংশ জীব আবার নিত্য-  
মুক্ত ও নিত্যসংসার ভেদে দুই প্রকার ।  
ঐ দ্বিবিধ জীব কিরূপ, তাহা বলিতে-  
ছেন, “নিত্যমুক্ত” ইত্যাদি ।

যাঁহারা নিত্য শ্রীকৃষ্ণচরণে উন্মুখ, তাঁহারা  
নিত্যমুক্ত । তাঁহারা পার্শ্বদম্যে গণ্য হন এবং  
শ্রীকৃষ্ণের সেবারূপে মুখ নিত্য ভোগ করেন ।  
যাঁহারা শ্রীকৃষ্ণে নিত্য অর্থাৎ অনাদিকাল হইতে  
বহিমুখ, তাঁহারা নিত্যসংসার । তাঁহারা অনাদি-  
বহিমুখতা বশতঃ সংসারে বদ্ধ হইয়া সংসার-দুঃখ  
ভোগ করেন । তাঁহাদের বহিমুখতা নিবন্ধনই  
মায়া তাঁহাদিগকে বন্ধন করিয়া সংসারদুঃখ প্রদান  
করেন । ঐ সংসারদুঃখ আখ্যানিকাদি ভেদে  
ত্রিবিধ । এইজন্য সংসারদুঃখকে ত্রিতাপ বলে ।  
জীব, কাম ও ক্রোধের বশীভূত হইয়াই ত্রিতাপ  
ভোগ করে । “সংসারচক্রে ভ্রমণ করিতে করিতে  
যে জীব সাধুরূপ বৈদ্য লাভ করেন, তিনিই  
তদুপদেশে সংসার-রোগ হইতে মুক্ত হন । সাধু-  
বৈদ্যের উপদেশরূপ মন্ত্রের বলেই, মায়াশিখার  
আবেশ ভাগ হইয়া যায় এবং উহার সঙ্গে সঙ্গেই  
ত্রিতাপেরও নিবৃত্তি হয় । তখনই জীব কৃষ্ণভক্তি  
লাভ করিয়া পুনশ্চ কৃষ্ণের নিকট গমন করেন ।  
অতএব মায়াবিনাশজন্য নিত্যসংসার জীবই কৃষ্ণ-  
ভক্তি-আচরণ করিবেন ; ইহা প্রতিপন্ন হইল ॥৩৪॥

( ২৩৪ পা ) “কামাদীনামিতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য । “কামক্রোধের”  
ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ।

কোনসময়ে এক ব্রাহ্মণ দস্যুবৃত্তি দ্বারা  
জীবিকা নির্বাহ করিত । বনমধ্যে ঐ ব্রাহ্মণ  
একদা দেবর্ষি নারদকে আগমন করিতে দেখিয়া  
প্রহুন্নচিত্তে মনে করিল, আজ আমার শুভদিন,  
এই আগন্ত ব্যক্তির যথাসর্ব্ব্ব লুণ্ঠন করিয়া

কয়েকদিন গ্রী-পুত্রাদির ভরণ-পোষণ চালাইতে  
পারিব । ইহা স্থির করিয়া, নারদের আগমন  
প্রতীক্ষার বৃক্ষের অন্তরালে আশ্রয়গোপন করিল ।  
পরে ঐ স্থানে নারদ আগমন করিলে, তাঁহার পথ  
অবরোধ পূর্ব্বক ঐ দস্যু কহিল, ঠাকুর, তোমার  
যাহা কিছু আছে, তাহা আমার দাও, নচেৎ  
তোমার প্রাণ নষ্ট করিয়া যথাসর্ব্ব্ব গ্রহণ করিব ।  
দেবর্ষি নারদ তখন উহাকে কয়েকটি উপদেশ  
প্রদান করিলেন । নারদের মুখে ততোপদেশ  
শুনিয়া ঐ দস্যুর নিজকৃত দুর্কর্ম্মের পরিণাম  
হৃদয়ঙ্গম হইল । তখন নারদের শ্রীচরণ ধরিয়া  
দস্যু কহিল, প্রভো, এই সকল দুর্কর্ম্ম হইতে মুক্ত  
হইবার উপায় কি নাই ? নারদ কহিলেন, বৎস,  
এতকাল তুমি কামাদির দাস হইয়া কামাদির  
সেবা করিয়া বহুবিধ পাপে লিপ্ত হইয়াছ ; এক্ষণে  
যদি তুমি ষারকাম গমন করিয়া যজুপতির দাস  
হইয়া, তাঁহার সেবা কর, তবে সর্ব্বপাপ হইতে  
মুক্ত হইতে পারিবে । দস্যু কহিল, দেব, আমি  
মহাশাপী, কিরূপে আমি ষারকাম প্রবেশ করিব ?  
এবং কিরূপেই বা সেই যজুপতিকে চিনিতে  
পারিব ? নারদ কহিলেন, যখন তুমি যজুপতির  
শরণ লইতেছ, তখন তাঁহার কৃপার ষারকাম  
প্রবেশ করিতে পারিবে । পরে যজুপতির রূপ-  
বর্ণনা করিয়া নারদ বলিলেন, মৎকর্ত্ত্বক বর্ণিত রূপ  
যাঁহার দেখিলে, তিনিই যজুপতি । অনন্তর  
নারদের উপদেশে, ঐ দস্যু ব্রাহ্মণ কামাদির দাসত্ব  
তাগ করিয়া যজুপতি শ্রীকৃষ্ণের দাস হইবার জন্য  
ষারকাম গমন করিয়া যজুপতির উপস্থিত হইয়া  
শ্রীকৃষ্ণকে কহিলেন, হে যজুপতে ! আপনার  
শরণাপন্ন হইলাম, আপনার নিজ-সেবাকার্য্যে  
আমাকে নিরোগ করুন ; আপনি যাহা আজ্ঞা  
করিবেন, আমি তাহাই প্রতিপালন করিব ।  
বদি বলেন, “সেবা” অতি কঠিন কার্য্য ; সুতরাং  
তাহা পারিবে না । তদন্তর, আমার পক্ষে সেবা-  
কার্য্য, তত কঠিন নহে ; কারণ, আমি যখন

কামাদি ছয়জনের বহুপ্রকারে সেবা করিরাছি। তখন আর একজনের (আপনার) সেবা করিতে পারিব না? অবশ্যই পারিব। অতএব আপনার সেবা প্রদান করুন। যদি বলেন, কামাদি ছয় প্রভুগণকে ত্যাগ করিলে কেন? তদুত্তর, কামাদি ছয়জন যখন যে আজ্ঞা করিত, তখনই সেই আজ্ঞা পালন করিতাম; এমন কি, তাহারা যে ছষ্ট আজ্ঞা অর্থাৎ বাহাতে আমার অধোগতি হয়, এরূপ আজ্ঞা করিতেন; তাহাও আমি প্রাণপণে প্রতিপালন করিতাম। তাহাতে আমার পুরস্কার দেওয়া দূরে থাকুক, আমার প্রতি তাহাদের দয়াও হইত না। পুরস্কারের নিমিত্তে তাহারা সর্বদা আমার পদাঘাত করিত অর্থাৎ ত্রিতাপে দগ্ধ করিত। তথাপি আমি প্রাণপণে তাহাদের আজ্ঞা পালন করিলেও, তাহারা আমার পদাঘাত করিতে লজ্জিত হইত না বা তাহাদের পদাঘাতের নিযুক্তি হইত না। এত কষ্ট স্বীকার করিয়াও বহুকাল তাহাদের সেবা করিবার পর, আপনার কৃপায় সাধু-বৈদ্যরূপ নারদের উপদেশ-বলে, আমার ভক্তি লাভ হইয়াছে। এইহেতু কামাদি প্রভুগণকে ত্যাগ করিয়া, আপনার শরণ লইয়াছি, এক্ষণে নিজদাস্যে আমাকে নিযুক্ত করুন। আমি আপনার সেবা করিতে সক্ষম হইব। এষ্ট শ্লোকে প্রতিপন্ন হইল, কামাদির দাস ঐ দগ্ধ ব্রাহ্মণ যেমন নারদের উপদেশে, কৃষ্ণভক্তি লাভ করিয়া, শ্রীকৃষ্ণের নিকট গমন করিল; তদ্রূপ সাধুরূপ বৈদ্যের উপদেশরূপ মন্ত্রে জীবের মারামিষাচার ত্যাগ হইয়া কৃষ্ণভক্তি লাভ হয় এবং জীব শ্রীকৃষ্ণের নিকট গমন করেন ॥ ৩ ॥

( ২৩২ পা ) “কৃষ্ণভক্তি.....বল ॥”  
এই ৫ পরায়ের ভাবার্থ। ভক্তিদ্বারা ই শ্রীকৃষ্ণ লভ্য হইলেন বলিয়া, সকল সাধনের মধ্যে কৃষ্ণভক্তিই সর্বপ্রধান অভিধেয়।

যদি বল, শ্লোকে কোথাও কোথাও যে কৰ্ম,

যোগ ও জ্ঞানকে অভিধেয় বলিয়াছেন, তদুত্তর, “ভক্তিযুগ্ম” ইত্যাদি। কৰ্ম, যোগ ও জ্ঞান, এই তিনটিই ভক্তিযুগ্মপেকী। কৰ্ম, যোগ ও জ্ঞানের ফল ভক্তিফলের তুলনায় অতি তুচ্ছ। কৰ্মাদি ঐ অতিতুচ্ছ নিজফলও আবার ভক্তির সাহায্য ব্যতিরেকে প্রদান করিতে সমর্থ হয় না ॥৫॥

( ২৩৬ পা ) “নৈকক্ষ্ম্যমিতি।”

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। ভক্তির সাহায্য ব্যতীত কৰ্মাদি নিজ নিজ ফল প্রদান করিতে পারে না, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক।

নারদ বেদব্যাসকে এই শ্লোক বলেন, ভক্তিরহিত কৰ্ম ও যোগ কিছু কিছু সিদ্ধি উৎপাদন করিয়াই নিবৃত্ত হয় বটে, কিন্তু ঐ সকল সিদ্ধি চিরস্থায়িনী হয় না। ভক্তিরহিত জ্ঞানও তদ্রূপ অকিঞ্চিংকর। যখন ভক্তির ফল অপেক্ষা জ্ঞানের ফল তুচ্ছ, তখন সকাম ও নিষ্কাম কৰ্মের এবং যোগের ফল যে আরও তুচ্ছ, তাহা কৈমু্যতিক ন্যায়ে জ্ঞান যায়। অতএব কৰ্মাদি ভক্তিযুগ্মপেকী বলিয়া কৃষ্ণভক্তিই সর্বপ্রধান অভিধেয় ॥৬॥

( ২৩৭ পা ) “তপস্বিন” ইতি।

শ্লোকের তাৎপর্য্য। “কৃষ্ণভক্তি বিনা দিতে পারে ফল” এই পয়ার প্রমাণ “ক্ষেমং ন বিম্ভস্তি বিনা যদপর্গম্ ॥”

ভক্তিরহিত ব্যক্তির কৰ্মাদি সর্বসাধন বিফল হয়; এই শ্লোকে তাহাই বলিলেন। তপস্বী, জ্ঞানী। দানশীল, কৰ্মী। শ্রীভগবানে ভগতাদি অর্পণ ব্যতীত সেই সেই ভগতাদির, পরম ফল প্রাপ্ত হওয়া যায় না। অতএব ভক্তি ব্যতীত কৰ্মাদি নিজ নিজ ফল প্রদানে সমর্থ নহেন; ইহা সিদ্ধ হইল। তথাপি, “সর্বাসামপি সিদ্ধিনাং মূলং স্তত্তরপার্কনম্ ॥” অর্থাৎ হে ভগবন, তোমার পাদপদ্মসেবাই সকল সিদ্ধির মূল। সন্দেহ হইতে পারে, স্মৃতিতে উক্ত হইয়াছে;—

“জ্ঞানপ্রসাদেন বিগুহসত্ত্বতত্ত্ব তং পশুত ।”

অর্থাৎ জ্ঞানের রূপাতেই বিগুহসত্ত্ব হইয়া জীব ব্রহ্মকে দেখেন । ইত্যাদি প্রতিবাক্যে জ্ঞানের প্রসাদে যখন ব্রহ্মানন্দ লাভ হয় ; তখন ভক্তির অপেক্ষা কি ? তদন্তর, জ্ঞান দ্বিবিধ ; বিশেষ ও অবিশেষ । বিশেষ জ্ঞানটি ভক্তি এবং অবিশেষ জ্ঞানটি ব্রহ্মজ্ঞান বা কেবল জ্ঞান । “জ্ঞানং পরম-গুহ্যং মে দধিজ্ঞানামত্যা দি চতুঃশ্লোক ষায়া অস্তর্ধ্যামিরূপে শ্রীকৃষ্ণ ব্রহ্মকে বিশেষ জ্ঞান বা ভক্তি উপদেশ দেন ; ইহা প্রসিদ্ধি আছে । ভক্তি-লক্ষণোক্ত অহুশীলন শব্দের ভাবরূপ অর্থের ক্রোড়ীকরণে বিশেষজ্ঞান বলিতে ভক্তিকেই বুঝায় । যদি বল, ভক্তিকে একবার জ্ঞানাবরণ শূন্য বলিয়া আবার বিশেষজ্ঞান বল কেন ? তদন্তর, ভক্তির ভাবরূপ বৃত্তি জ্ঞানই । জ্ঞান ও ভাব উভয়েই অন্তঃকরণের বৃত্তি । ঐ জ্ঞান দ্বিবিধ ; বৃত্তিজ্ঞান ও ফলজ্ঞান । অন্তঃকরণ যখন জ্ঞেয় বস্তুর আকারে আকারিত হয়, তখন তাহাকে বৃত্তিজ্ঞান বলে । জ্ঞেয় বস্তুর প্রকাশে যে বিচারজনিত জ্ঞান উৎপন্ন হয়, তাহাকে ফলজ্ঞান বলে । স্বপ্রকাশ বিষয় আত্মার জ্ঞানই বৃত্তিজ্ঞান এবং আত্মা দ্বারা প্রকাশ্য ঘটপটা দি বিষয় সত্ত্বের বিচার জনিত অর্থাৎ এটি ঘট, এটি পট ইত্যাদিরূপ জ্ঞানই ফলজ্ঞান । বৃত্তিজ্ঞান বিচার-নিরপেক্ষ অতএব স্বপ্রকাশ বলিয়া স্বাভাবিক । ফলজ্ঞান বিচারনির্পন্ন, অতএব অন্যের দ্বারা প্রকাশ্য বলিয়া কৃত্রিম । নির্মূল, নির্নিব্বরণ অন্তঃকরণ আত্মার আকারে আকারিত হইলেই, তাহাকে আত্মজ্ঞান বা বৃত্তিজ্ঞান বলা যায় । আত্মার ফলজ্ঞান হয় না । অন্তঃকরণ ঘটপটাদি বিষয়ের আকারে আকারিত হইলে, বুদ্ধিহ চিদাভাস কর্তৃক বিচার পূর্বক ঘটাদি-বিষয়ক অজ্ঞানসেই অপসারণ দ্বারা যে জ্ঞান উৎপন্ন হয়, তাহা ফলজ্ঞান । ভাবরূপা অন্তঃকরণের স্বাভাবিকী বৃত্তি আবার পূর্বোক্ত স্বপ্রকাশ

আত্মজ্ঞান হইতেও বিশেষ । আত্মজ্ঞান অন্তঃকরণের চিৎসত্তারূপা বৃত্তি । ভাব অন্তঃকরণের চিৎসত্তার সাররূপা বৃত্তি । ভাব আত্মকুণ্ডাদি-বিশিষ্টা আনন্দরূপা বৃত্তি বলিয়া, উহাকে চিৎসত্তার সাররূপা বৃত্তি বলে । অতএব ভক্তিই বিশেষজ্ঞান । এই বিশেষজ্ঞানরহিত তপস্বাদি ফল বৃথা হয় বলিয়া, ভক্তি অপেক্ষিত হয় । কেবল জ্ঞান মুক্তি দিতে পারে না, তাহা পর পয়ারাদিতে প্রমাণ করিতেছেন । কেবল জ্ঞানে ইষ্টমিচ্ছ হইলে, চতুঃসনাদির ভক্তি আচরণ বার্থ হয় ॥ ৫ ॥

( ২৩৫ পা ) “শুদ্ধ.....বিনে ॥”

এই ৬ পয়ারের ভাবার্থ । ভক্তি ব্যতীত কেবল জ্ঞান মুক্তি দিতে পারে না ।

কেবল জ্ঞানে কিছুই লাভ হয় না, নিজের সত্ত্বাত্মাই অবশিষ্ট থাকে, আর কিছুই সত্ত্ব হয় না, কেবল স্বাভাবিক সত্ত্বজ্ঞানই থাকে । অতএব উহা অকিঞ্চিৎকর । কেবল জ্ঞানের হেয়ত্ব প্রতিপাদনে কর্ম ও যোগের হেয়ত্ব প্রতিপন্ন হইল জানিবেন ॥ ৬ ॥

( ২৫ পা ) “শ্রেয়ঃ সৃষ্টিগতি ।”

শ্লোকের তাৎপর্য । “শুদ্ধজ্ঞান” ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ।

ব্রহ্মা শ্রীকৃষ্ণকে কহিলেন, বাহার প্রসাদে অজ্ঞান ও অপবর্গ প্রভৃতি সর্ববিধ মঙ্গলই লাভ করা যায়, সেই ভক্তিকে ত্যাগ করিয়া, বাহার কেবল জ্ঞানের জন্য ক্লেশ করে, তোমার সর্বোৎকর্ষ অস্বীকার করিয়া বাহার কেবল আত্মজ্ঞানের জন্য চেষ্টা করে, তাহাদের ক্লেশাত্মই লাভ হয় অর্থাৎ মুক্তিলাভ করে না । তথাহি গীতার্থং,— “ক্লেশোহধিকতরন্তেযামব্যক্তাসক্তচেতসাম্ ।”

ব্রহ্মে আসক্তচিত্তকারিণের অধিকতর ক্লেশ হয় । অতএব ভক্তিরহিত ক্লেশযুক্ত জ্ঞান মুক্তি হয় না । যে অবস্থাকে, জ্ঞানিগণ মুক্তি বলিয়া থাকেন, তাহা প্রকৃত মুক্তি নহে ॥ ৬ ॥

( ২৩৬ পা ) “কৃষ্ণোন্মুখে .....  
জ্ঞানে ॥” এই ৭ পয়ারের ভাবার্থ ।

অবিদ্যা করিতমিথ্যা স্বভাপক জ্ঞানকে অর্থাৎ  
মায়ার নাশক ও আত্মজ্ঞানোদরকে জ্ঞানিগণ মুক্তি  
বলেন । ঐ মুক্তির জন্য জ্ঞানিগণ প্রভূত ক্লেশ  
স্বীকার করেন । কিন্তু কৃষ্ণোন্মুখ অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ  
শরণাপন্ন জীব ঐ মুক্তি অনায়াসেই লাভ করিয়া  
থাকেন । অতএব জ্ঞানির মুক্তি, প্রকৃত মুক্তি  
নহে । প্রকৃত মুক্তি ভক্তি ব্যতীত প্রাপ্ত হওয়া  
যায় না । শ্রীকৃষ্ণের শরণাগত হইলে যখন মারা  
হইতে উত্তীর্ণ হওয়া যায়, তখন তজ্জন্য প্রভূত  
ক্লেশ স্বীকার করার প্রয়োজন কি ?

( ২৩৬ পা ) “দৈবী ছেযেতি ।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২০৬  
পৃষ্ঠায় দেখুন । জ্ঞানী যে মুক্তির জন্য  
বহু ক্লেশ স্বীকার করেন, কৃষ্ণোন্মুখ  
জীব তাহা অনায়াসেই লাভ করেন,  
তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৭ ॥

( ২৩৬ পা ) “কৃষ্ণের...পড়ি মজে ॥”  
এই ৮ পয়ারের ভাবার্থ সরল । তাহা,  
আমি নিত্যদাস ইহা ।

শ্রীকৃষ্ণের ভজন না করিয়া জীবর্ষ ও আশ্রম  
আচাররূপ অধর্মের আচরণ করিলেও, ঐ অধর্ম  
গীতাকে মারাবন্ধন হইতে মোচন দূরে থাকুক,  
নরকযাতনা হইতেও মোচন করিতে পারে না ।  
অতএব জীব শ্রীকৃষ্ণ ভজন না করিয়া গীতাকে  
অবজ্ঞা করতঃ অধর্ম আচরণ দ্বারাও মৌরবে পতিত  
হয় । শ্রীকৃষ্ণ ভক্তি ব্যতীত কর্মির অধর্ম আচরণরূপ  
কর্মও কর্মিকে উদ্ধার করিতে পারে না ॥ ৮ ॥

( ২৩৬ পা ) “মুখবাহুরূপাদেভ্য  
ইতি । শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “চারিবর্ণাশ্রমী” এই  
পয়ার প্রমাণ “ব এবাৎ পুরুষমিতি ।”  
শ্লোক ॥ ৮ ॥

( ২৩৬ পা ) “জ্ঞানী.....বিনে ॥”  
এই ৯ পয়ারের ভাবার্থ ।

কর্মির ন্যায় জ্ঞানীও আত্মজ্ঞানের উদয়ে  
আপনাকে জীবমুক্ত বলিয়া অভিমান করেন ;  
কিন্তু কৃষ্ণভক্তিবির্জিত তাঁহার সেই জ্ঞান যে  
চিত্তশুদ্ধিও করিতে পারে নাই, তাহা বৃথিতে  
পারেন না । অতএব তাঁহারও অধঃপতনই  
হইয়া থাকে ॥ ৯ ॥

( ২৩৬ পা ) “যেহন্য ইতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । কৃষ্ণভক্তিবির্জিত জ্ঞানের দ্বারা  
জ্ঞানির যে অধঃপতন হয়, তৎপ্রমাণ  
এই শ্লোক ॥ ১০ ॥

( ২৩৭ পা ) “কৃষ্ণ.....অধিকার ॥”  
এই ১০ পয়ারের ভাবার্থ । শ্রীকৃষ্ণ  
সূর্য্যাতুল্য ; মায়ী অন্ধকারসদৃশী । যেখানে  
শ্রীকৃষ্ণ, সেখানে মায়ার অধিকার নাই ।

ভক্তিদ্বারা শ্রীকৃষ্ণস্বর্ষের উদয় হয়, তাহাতে  
মায়াকার থাকিতে পারে না । কেবল জ্ঞান,  
যোগ ও কর্মের দ্বারা শ্রীকৃষ্ণের উদয় না হওয়াতে  
মায়াকারও সম্পূর্ণরূপে দূরীভূত হয় না । অতএব  
ততই প্রকৃত জীবমুক্ত ।

( ২৩৭ পা ) “শশ্বৎ প্রশান্তমিতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “কৃষ্ণ সূর্য্যাসম” ইতি পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১১ ॥

( ২৩৭ পা ) “বিলজ্জমানয়েতি”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “বাহা কৃষ্ণ” ইতি পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১২ ॥

( ২৩৭ পা ) “কৃষ্ণ.....পার ॥”  
এই ১১ পয়ারের ভাবার্থ । ঐ সকল  
জীব যদি একবার বলে, “কৃষ্ণ আমি

তোমার' তাহা হইলে, কৃষ্ণ তাঁহাকে  
মায়াবন্ধন হইতে মোচন করেন ॥ ১১ ॥

( পা ২৩৭ ) "সকৃদেবেতি। শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।"  
"কৃষ্ণ তোমার" এই পয়ার প্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ১৩ ॥

( ২৩৮ পা ) "ভুক্তি.....ভজয় ॥"  
এই ১২ পয়ারের ভাবার্থ । ভুক্তিমুক্তি-  
সিদ্ধিকামী অর্থাৎ কৰ্ম্মী, যোগী ও জ্ঞানী  
যদি সুবুদ্ধি হন, তবে তাঁহার কৃতার্থতা  
লাভের জন্য ছয়ভুক্তিযোগদ্বারা কৃষ্ণকে  
ভজ্ঞন করেন ॥ ১২ ॥

( ২৩৮ পা ) "অকাম ইতি।"  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। "ভুক্তিমুক্তি" পয়ার প্রমাণ  
এই শ্লোক ॥ ১৪ ॥

( ২৩৮ পা ) "অন্যাকামী ... ভুলাইব  
এই ১৩ পয়ারের ভাবার্থ সরল । আমা-  
আমাকে । মুখ, মূৰ্খ ॥ ১৩ ॥

( ২৩৮ পা ) "সত্যদিশতীতি।"  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। "কৃষ্ণ কহে" ইত্যাদি পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৫ ॥

( ২৩৮ পা ) "কাম...অভিলাষে ॥"  
এই ১৪ পয়ারের ভাবার্থ । যিনি কামনা  
করিয়াও শ্রীকৃষ্ণের উপাসনা করেন, তিনি  
কৃষ্ণরস পাইয়া কামনা ত্যাগ পূৰ্ব্বক  
শ্রীকৃষ্ণের দাস্য অভিলাস করেন ॥ ১৪ ॥

( ২৩৮ পা ) "স্থানাভিলাষীতি।"  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। "কাম লাগি" পয়ার প্রমাণ  
এই শ্লোক ।

এব মহাশয় রাজ্যকামনার শ্রীকৃষ্ণের আরাধনা  
করেন, পরে শ্রীকৃষ্ণকে পাইয়া রাজ্যকামনা ত্যাগ  
করিয়া তাঁহার দাস্য অভিলাষ করেন। ইহাই  
প্রতিপন্ন করিলেন ॥ ১৬ ॥

( পা ২৩৯ ) "সংসারে.....তীরে ॥"  
এই ১৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল । তরে,  
সংসার হইতে উত্তীর্ণ হয় ॥ ১৫ ॥

( ২৩৯ পা ) "মৈবমিতি।" শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
"সংসারে" ইত্যাদি পরার প্রমাণ শ্লোক ।  
ভগবন্তজনে অধমেরও ভগবদর্শন হয় ।  
শ্রীকৃষ্ণভজনে শূদ্রাদি সকলের অধিকার এবং  
তদর্শনে সকলেই যোগ্য । অক্ষয় মহাশয়  
সদৈন্য বলিলেন, আমি অধম হইলেও শ্রীকৃষ্ণ-  
দর্শনে বঞ্চিত হইব না । বস্তুতঃ অক্ষয় মহাশয়  
অধম নহেন, যেহেতু পূৰ্বে তাঁহাকে ভক্তশ্রেষ্ঠ  
বলিয়াছেন । অধম ব্যক্তির শ্রীকৃষ্ণদর্শন কিরূপে  
হয়; তাহা সন্দেহান্তে বলিতেছেন, যেমন নদী-  
প্রবাহে নীরমান তৃণকাষ্ঠাদির মধ্যে কখন কোনটি  
তীর প্রাপ্ত হয়, তরুণ কৰ্ম্মভোগরোগ কালপ্রবাহে  
নীরমান জীবগণের মধ্যে অজানিলাদির তার  
নামান্তসেও কখন কোন জীব তীরবরণ  
শ্রীকৃষ্ণকে প্রাপ্ত হন । কৃপালুতাধি মাৎস্য-  
বিশিষ্ট শ্রীকৃষ্ণের দর্শন তাঁহার মাহাত্ম্য প্রত্যবেই  
লাভ হয় । অতএব শ্রীকৃষ্ণের ভজনান্তসেও  
কখন জীবের ভগবদর্শন ঘটে ॥ ১৭ ॥

( ২৩৯ পা ) "কোন ভাগ্যে...  
উপজয় ॥" এই ১৬ পয়ারের ভাবার্থ ।  
অধম জীবের ভাগ্যোদয়ে কি হয়, তাহা  
বলিতেছেন, "কোন" ইত্যাদি।

কোন অনির্দেহতীর ভাগ্যের উদয়ে বধন  
কাহারও সংসার কমোদুখ হয়, তখন লাভমতি  
সাধুর সঙ্গ লাভ হয় এবং তাঁহার কৃপার শ্রীকৃষ্ণ  
দর্শিত হয় ॥ ১৬ ॥



( ২৩৯ পা ) “ভবাপবর্গ ইতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “কোন ভাগ্যে” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৮ ॥

( ২৩৯ পা ) “কৃষ্ণ যদি...আপনে ॥” এই ১৭ পয়ারের ভাবার্থ । সাধুরূপায় লঙ্করতি কোন ভাগ্যবানের প্রতি যদি রূপা করেন, তবে শ্রীকৃষ্ণ বাহিরে আচার্য্যরূপে ও অন্তরে অন্তর্ধামিরূপে স্বখাযোগ্য উপদেশ দেন ॥ ১৭ ॥

( ২৩৯ পা ) “নৈবেতি ।” উনিশ শ্লোকের গীকা ও বাঙ্গলা আদির ৮ পুষ্ঠায় দেখুন । “গুরু অন্তর্ধামিরূপে পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৯ ॥

( ২৩৯ পা ) “সাধুসঙ্গে ... ... যায় কয় ॥” ১৮ পয়ারের ভাবার্থ । সাধুসঙ্গে কি লাভ হয়, তাহা বলিতেছেন, “সাধু-সঙ্গে” ইত্যাদি ।

সাধুসঙ্গের শুণে কৃষ্ণভক্তিতে শ্রদ্ধা হয় । সাধুর রূপা ব্যতীত কেবল সাধুসঙ্গে কৃষ্ণভক্তি হয় না বলিয়া, পরারে “যদি হয়” বলিলেন । সর্বদা সাধুসঙ্গে ও সাধুসেবার সাধুরূপা হয় । সাধুসঙ্গ সাধুরূপার ষারস্বরূপ বলিয়া বলিলেন, “সাধুসঙ্গ” ইত্যাদি । যদি কাহারও সাধুসঙ্গের শুণে কৃষ্ণভক্তিতে শ্রদ্ধা হয়, তবে তিনি ভক্তির ফল প্রেম প্রাপ্ত হন । প্রেমের সিদ্ধিতে তাঁহার সংসারও ক্ষয় হয় ॥ ১৮ ॥

( ২৩৯ পা ) “যদচ্ছয়েতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্যার্থ শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “সাধুসঙ্গে” আদি পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২০ ॥

( ২৩৯ পা ) “মহৎকৃপা...যায় কয় ॥” এই ১৯ পয়ারের ভাবার্থ ।

যদি বল, সাধুরূপা ব্যতীত কি ভক্তি লাভ

হয় না ? ভক্তি ব্যতীত কি কৃষ্ণপ্রাপ্তি হয় না ? তাহাতে বলিতেছেন, “মহৎকৃপা” ইত্যাদি । সাধু-রূপা ব্যতীত কোন কর্ম্মসুষ্ঠান দ্বারা কোনরূপেই ভক্তি লাভ হয় না । ষাঁহার ভক্তি লাভ হয় না, তাঁহার কৃষ্ণপ্রাপ্তি দূরের কথা, সংসারেরও ক্ষয় হয় না ॥ ১৯ ॥

( ২৪০ পা ) “রত্নগণেতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “মহৎকৃপা” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২১ ॥

( ২৪০ পা ) “নৈষামিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “মহৎকৃপা” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২২ ॥

( ২৪০ পা ) “সাধুসঙ্গ...হয় ॥” এই ২০ পয়ারের ভাবার্থ । সকলশাস্ত্রেই এক-বাক্যে সাধুসঙ্গের মহিমাধীর্ভন করেন । সাধুসঙ্গের অতুল প্রভাব । অত্যন্ত কাল সাধুসঙ্গেই সর্কসিদ্ধি লাভ হয় ॥ ২০ ॥

( ২৪০ পা ) “তুলয়ামেতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “সাধুসঙ্গ” ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক । স্তম্ভক পর্কভের সহিত যেমন সর্ষপের তুলনা হয় না, তজ্জপ সাধুসঙ্গের ফলের সহিত মোক্ষাদির তুলনা হয় না । যেহেতু সাধুসঙ্গ দ্বারা স্তম্ভক ভক্তির লাভ হয় । অতএব তগবৎভক্তিই সর্ক-শ্রেষ্ঠা । ইহা স্বীকার না করিলে, পূর্ণজ্ঞানী সনকাদির ভক্তি কামনা অপ্রসঙ্গ হয় ॥ ২৩ ॥

( ২৪০ পা ) “কৃষ্ণ...দিঞা ॥” এই ২১ পয়ারের ভাবার্থ সরল । ভক্তিই সর্কশ্রেষ্ঠা বলিয়া করুণাময় শ্রীকৃষ্ণ অর্কুনকে লক্ষ্য করিয়া জগৎকে উপদেশ দিয়াছেন ॥ ২১ ॥

( ২৪০ পা ) “সর্বগুহ্যতমমিত্যাদি ।”  
শ্লোকটির তাৎপর্য । শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে  
লক্ষ্য করিয়া জগৎকে যে উপদেশ দেন,  
তাহা এই দুটোটি শ্লোক ॥ ২৪০ ২৫ ॥

( ২৪১ পা ) “পূর্ব আজ্ঞা...উজয় ॥”  
এই ২২ পয়ারের ভাবার্থ ।

অর্জুনের প্রতি শ্রীকৃষ্ণের পূর্ব পূর্ব আজ্ঞা  
সকাম ও নিষ্কাম কর্ম, যোগ এবং জ্ঞান এই  
তিনটি বেদোক্ত ধর্ম । শেষোক্ত ভক্তিব্যোগরূপ  
আদেশই বলবান্ । পূর্ব ও পরবিধির মধ্যে  
যেমন পরবিধি বলবান্, তদ্রূপ শেষোক্ত ভক্তি-  
যোগ বলবান্ । এই শেষোক্ত বলবান্ আদেশের  
বলে, যদি কাহারও ভক্তিতে শ্রদ্ধা হয়, তবে তিনি  
সর্বকর্ম ত্যাগ করিয়া ভক্তিরই আশ্রয় গ্রহণ  
করেন এবং একমাত্র শ্রীকৃষ্ণভজনেই মনোনিবেশ  
করেন । যদি বল, শ্রীকৃষ্ণ কর্মাদির অমুষ্ঠানে যে  
আজ্ঞা করেন, তাহা লঙ্ঘন করিলে পাপ হইবার  
সম্ভাবনা । তদন্তর, শ্রীকৃষ্ণ “সর্বধর্মান্ পরি-  
ত্যাগ্যতি” শ্লোকেই পুনরায় অর্জুনকে বলিতেছেন,  
তুমি আমার পূর্ব পূর্ব যে আজ্ঞাকে ধর্ম বলিয়া  
স্থির করিয়াছ, সেই সকল ধর্ম ত্যাগ করিয়া  
একমাত্র আমার শরণাপন্ন হও । আমার শেষ  
আজ্ঞাকেই বলবতী বলিয়া গ্রহণ কর । আমি  
তোমাকে ঐ সকল ধর্মের ত্যাগজন্য সমুদয় পাপ  
হইতে মুক্ত করিব । অতএব ভক্তিই সর্ব-  
শ্রেষ্ঠ ॥ ২২ ॥

( ২৪১ পা ) “তাবৎ কর্মানীতি ।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা ৯০ পৃষ্ঠায়  
দেখুন ।

বিষয়ে নির্বোধবিশিষ্ট ত্যাগী পুরুষ জ্ঞান-  
যোগের অধিকারী । আর সকাম পুরুষ সকলই  
কর্মাদিকারী । কর্মাদিকারী কর্ম করিতে করিতে  
যে পর্যন্ত না বিষয়ে নির্বোধ উপস্থিত হয় বা  
আমার কথা প্রভৃতিতে শ্রদ্ধা না জন্মে, সেই

পর্যন্তই কর্ম করিবেন । বিষয়ে নির্বোধ জন্মিলে  
তিনি জ্ঞানযোগির সঙ্গে জ্ঞানী হইয়া আমার  
ভজন করিবেন, আর বিষয়ে নির্বোধ না জন্মিয়া  
যদি আমার কথাটিতে শ্রদ্ধা জন্মে, তবে ভক্তি-  
যোগির সঙ্গে ভক্ত হইয়া আমার ভজন করিবেন ।  
“পূর্ব আজ্ঞা” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ২৬ ॥

( ২৪১ পা ) “শ্রদ্ধা...হয় ॥” এই  
২৩ পয়ারের ভাবার্থ ।

শ্রদ্ধা শব্দের অর্থ বিশ্বাস বা স্নেহ নিশ্চয় ।  
বাহার বিশ্বাস হয়, তিনি আর কর্ম করেন না,  
কৃষ্ণে ভক্তিই করেন । কৃষ্ণে ভক্তি করিলে,  
কর্মত্যাগজন্য প্রত্যাবয় হয় না ; কারণ, কৃষ্ণে  
ভক্তি করিলে সকল কর্মই অমুষ্ঠিত হয় । সকাম  
কর্মসকল বন্ধজনক বলিয়া হয় । নিষ্কামকর্ম  
চিন্তণ্ডিকি দ্বারা ভক্তিমুক্তির সহায় হয় বলিয়া  
উপাদেয় । শ্রী-পুত্রাদি হইতে আরম্ভ করিয়া  
দেবগণের সেবা পর্যন্ত সর্বভূতের সেবাই নিষ্কাম  
কর্ম । সর্বভূতের সেবাও শ্রীভগবানেরই সেবা  
হইলেও সাক্ষাৎ নহে, পরম্পরায় । পরম্পরায় সেবা  
হইতে সাক্ষাৎ সেবাই শ্রেষ্ঠ । শ্রেষ্ঠ ভগবৎসেবা  
দ্বারা সকলসেবাই সকলকর্মই সিদ্ধ হয় ॥ ২৩ ॥

( ২৪১ পা ) “যথা তরোরিতি ।  
শ্লোকের তাৎপর্য । শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । শ্রীকৃষ্ণসেবা দ্বারাই সকল কর্ম  
ও সকল সেবা সিদ্ধ হয়, তৎপ্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ২৭ ॥

( ২৪১ পা ) “শ্রদ্ধাবান্...উত্তম ॥”  
এই ২৪ পয়ারের ভাবার্থ সরল । শ্রদ্ধালু  
ব্যক্তিরই ভক্তিব্যোগের অধিকারী ।  
শ্রদ্ধাভেদে ভক্তির অধিকারী তিন প্রকার  
যথা, উত্তম, মধ্যম ও কনিষ্ঠ । শ্রদ্ধার  
উত্তম অধিকারী, কে, তাহা বলিতেছেন

“শাস্ত্রযুক্ত্যে” ইত্যাদি । মধ্যম অধিকারির নির্ণয় করিতেছেন, “শাস্ত্রযুক্তি” ইত্যাদি । কনিষ্ঠ অধিকারী বলিতেছেন, “যাহার” ইত্যাদি । কনিষ্ঠ অধিকারী ক্রমে ক্রমে উত্তম হইবেন ॥ ২৪ ॥

( ২৪১ পা ) “শাস্ত্রে যুক্তৌ চেতি ।” এই শ্লোক দুইটির তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “শাস্ত্রযুক্ত্যে” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ শ্লোক দ্বয় ॥ ২৮।২৯ ॥

( ২৪২ পা ) “রতিপ্রেম ... লক্ষণ ॥” এই ২৫ পয়ারের ভাবার্থ । অঙ্গার তারতম্যে যেমন উত্তমাদির ভেদ, তদ্রূপ রতি ও প্রেমের তারতম্যে উত্তমাদির ভেদ জানিতে হইবে । ইহা শ্রীভাগবতে একাদশ স্কন্ধে উক্ত হইয়াছে ॥ ২৫ ॥

( ২৪২ পা ) “সর্কভূতেষিত্যাদি ।” শ্লোক তিনটির তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

রত্যাতির তারতম্যে উত্তমাদির ভেদ এই শ্লোক তিনটিতে উক্ত হইয়াছে । আতরতি ও অজাতরতি ভেদে রতি দ্বিবিধ । অজাতরতি ভক্তই কনিষ্ঠ ভক্ত । এই কনিষ্ঠ ভক্ত আবার শাস্ত্রীয়-প্রকাজাতভক্তিবিশিষ্ট ও লোক-পরম্পরা প্রাপ্তপ্রকাজাতভক্তিবিশিষ্ট ভেদে দ্বিবিধ । প্রথমোক্ত ভক্তই মুখ্য কনিষ্ঠ ভক্ত এবং শেষোক্ত ভক্তই গৌণ কনিষ্ঠ ভক্ত । গৌণ কনিষ্ঠ ভক্তের সর্ক-আদর-লক্ষণ ভক্তগণের অহুসয় হেতু, তিনি কেবল প্রতিমাত্তেই হরিবুদ্ধিতে পূজা করেন ; হরিত্তক্তজনের বা অন্যের পূজা করেন না । অতএব ইনি সম্প্রতি ভক্তির অহুষ্ঠানে প্রবৃত্ত, ইহাই বুঝিতে হইবে ॥ ৩০—৩২ ॥

( ২৪২ পা ) “সর্ক...সধরে ॥” এই ২৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল । শ্রীকৃষ্ণ-

ভক্তের সকল মহাগুণ দৃষ্ট হইয়া থাকে, কারণ, শ্রীকৃষ্ণের গুণ সকল শ্রীকৃষ্ণভক্তে সঞ্চারিত হয় ॥ ২৬ ॥

( ২৪২ পা ) “যস্যাস্তীতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা আদির ৯৪ পৃষ্ঠায় দেখুন । “সর্ক মহাগুণ” ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৩ ॥

( ২৪২ পা ) “সেই সব...মোনী ॥” এই ২৭ পয়ারের ভাবার্থ সরল । বৈষ্ণবের যে সকল মহাগুণ দৃষ্ট হয়, তন্মধ্যে কিঞ্চিৎ বর্ণন করিতেছেন “সেই সব” ইত্যাদি ॥ ২৭ ॥

( ২৪৩ পা ) “তিতিক্ষব” ইতি । শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । বৈষ্ণবের যে গুণ সকল দৃষ্ট হয়, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৪ ॥

( ২৪৩ পা ) “মহৎসেনাগিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীকৃষ্ণভক্ত যে রূপালু প্রভৃতি গুণ বিশিষ্ট, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৫ ॥

( ২৪৩ পা ) “কৃষ্ণভক্তি...সামুদ্র ॥” এই ২৮ পয়ারের ভাবার্থ সরল । কৃষ্ণভক্তের সঙ্গেই কৃষ্ণভক্তি লাভ হয় ॥ ২৮ ॥

( ২৪৩ পা ) “ভবাপবণ” ইতি । শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা মধ্যের ২৩৯ পৃষ্ঠায় দেখুন । “কৃষ্ণভক্তি” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৩৬ ॥

( ২৪৩ পা ) “অন্তঃ আত্যন্তিকমিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । এই শ্লোকটিই “কৃষ্ণভক্তি” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৩৭ ॥

( ২৪৩ পা ) “কৃষ্ণপ্রেম...অঙ্গ ।”

এই ২৯ পয়ারের ভাবার্থ। সাধুসঙ্গের পর সাধনাজ দ্বারা সাধ্য কৃষ্ণপ্রেম লাভ হয়। অতএব সাধুসঙ্গই মুখ্য ॥ ২৯ ॥

(২৪৩ পা) "সতামিতি" শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা আদির ১১ পৃষ্ঠায় দেখুন। "কৃষ্ণপ্রেম" পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৮ ॥

(২৪৩ পা) "অসংসঙ্গ...আর" এই ৩০ পয়ারের ভাবার্থ। সাধুসঙ্গ যেমন কৃষ্ণপ্রেমলাভে অবশ্য প্রয়োজনীয়; তেমনি অসংসঙ্গত্যাগও অবশ্য প্রয়োজনীয়। পরম্প্রীসঙ্গকারী ও কৃষ্ণভক্তিবিহীন ব্যক্তিগণই অসাধু। ঈদৃশ অসাধুকে সর্কধা পরিত্যাগ করিলে ॥ ৩০ ॥

(২৪৩ পা) "ন তথাসোতি" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। পরম্প্রীসঙ্গকারি ব্যক্তির সঙ্গ যে সর্কধা পরিত্যক্তা, এই শ্লোকে তাহার প্রমাণ করিলেন ॥ ৩৯ ॥

(২৪৪ পা) "সত্যং শৌচগিত্যাদি" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। শ্রীসঙ্গির সঙ্গ যে কি মহান্ অনিষ্ট হয়, তাহা এই শ্লোকদ্বয়ে প্রতিপন্ন করিলেন ॥ ৪০ ৪১ ॥

(২৪৪ পা) "বরংহতেতি" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। শ্রীসঙ্গির সঙ্গত্যাগের ন্যায় কৃষ্ণভক্তিরহিত ব্যক্তিরও সঙ্গত্যাগ সর্কধা কর্তব্য; এই শ্লোকে তাহা প্রতিপন্ন করিলেন ॥ ৪২ ॥

(২৪৪ পা) "মা ত্রাকীরিতি" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ

আছে। কৃষ্ণভক্তিবিহীন ব্যক্তির সঙ্গ সর্কধা ত্যাগ করা কর্তব্য; এই শ্লোক দ্বারা প্রমাণ করিলেন ॥ ৪৩ ॥

(২৪৪ পা) "এই সব...শরণ" এই ৩১ পয়ারের ভাবার্থ সরল।

এই সব ছাড়ি অর্থাৎ পরম্প্রীসঙ্গকারি ন্যায় চঞ্চলমতি ও দেহান্নবুদ্ধিব্যক্তিরও সঙ্গ ত্যাগ করিয়া এবং বর্ণ ও আশ্রম ধর্ম ত্যাগ পূর্বক অকিঞ্চন হইয়া শ্রীকৃষ্ণের শরণাপন্ন হইতে হইবে ॥ ৩১ ॥

(২৪৪ পা) "সর্কধামিতি" শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গালা মধ্যের ৬৫ পৃষ্ঠায় দেখুন। "এই সব ছাড়ি" পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪৪ ॥

(২৪৪ পা) "কঃ পণ্ডিত" ইতি। শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। "হেন কৃষ্ণ ছাড়ি" পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪৫ ॥

(২৪৫ পা) "বিজ্ঞানের...প্রমাণ" এই ৩৩ পয়ারের ভাবার্থ সরল। অস্ত ত্যজি, অস্ত দেবাদির উপাসনা ত্যাগ করিয়া। তাতে অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট জন, অন্যের শরণাপন্ন হন না; এ বিষয়ে ॥ ৩৩ ॥

(২৪৫ পা) "অহো বকীতি" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

উদ্ধব প্রমাণ এই শ্লোক অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট উদ্ধব অন্যের শরণাপন্ন না হইয়া একমাত্র শ্রীকৃষ্ণেরই শরণ লয়েন। উদ্ধব এই শ্লোক বলেন। "বিজ্ঞানের" পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪৬ ॥

(২৪৫ পা) "শরণাগত...সমর্পণ" এই ৩৪ পয়ারের ভাবার্থ।

একই লক্ষণ অর্থাৎ [বিনি সংসার ভরে ভীত  
হইয়া একমাত্র শ্রীকৃষ্ণের আশ্রয় গ্রহণ করন  
তঁাহাকে শরণাগত বলা যায়। আর বিনি  
শ্রীকৃষ্ণের নিমিত্ত সমস্ত ত্যাগ করিয়া থাকেন,  
তঁাহাকে অকিঞ্চন বলা যায়। অতএব শরণাগত  
ও অকিঞ্চন একই হইতেছেন। তার মধ্যে  
অর্থাৎ আত্মসমর্পণ উহাদেরই অঙ্গগত। কারণ,  
যে হু দৈহিক বিষয়ের ত্যাগরূপ আত্মসমর্পণ  
করিয়াই শরণাগত বা অকিঞ্চন হওয়া যায় ॥ ৩৪ ॥

(২৪২ পা) “আনুকূল্যস্যোত্যাগি।”  
শ্লোক দুইটির তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে।

“শরণাগত” পরায়ুক্ত শরণাপত্তির আকার  
ছয়টি। ইহাই এই শ্লোক দ্বারা প্রতিপন্ন করিলেন।  
ঐ ছয়টি শরণাপত্তির মধ্যে রক্ষাকর্তার স্বরূপে  
অঙ্গীকরণই মূল শরণাপত্তি; কারণ, শরণাপত্তি  
লক্ষ্য আশ্রয়রূপে বা রক্ষকরূপে বোধিত হয়।  
অপর পাঁচটি উহার অঙ্গ। শরণাগত কে, তাহা  
বলিতেছেন “ভবান্নীতি” ॥ ৪৭।৪৮ ॥

(২৪৫ পা) “শরণ.....আত্মসম।”  
এই ৩৫ পরায়ের ভাবার্থ সরল। যে  
ব্যক্তির শ্রীকৃষ্ণের শরণাগত হইবার  
উদ্দেশ্যে তঁাহাতে আত্মসমর্পণ করেন;  
শ্রীকৃষ্ণ তঁাহাদের প্রতি কিরূপ ব্যবহার  
করেন, তাহা বলিতেছেন, “কৃষ্ণ তারে”  
ইতি। তৎকালে অর্থাৎ যে সময়ে  
আত্মসমর্পণ করে, সেই সময়েই ॥ ৩২ ॥

(২৪৫ পা) “মর্ত্যোষদেতি।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। “কৃষ্ণ তারে” ইতি পরায়  
প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৪২ ॥

(২৪৬ পা) “এবে সাধন.....  
মহাধন।” এই ৩৬ পরায়ের ভাবার্থ।

মহাপ্রভু সনাতনকে কহিলেন, সর্বোৎকৃষ্ট  
ভক্তি বিবিধা; সাধন ও সাধ্য ভক্তি। এক্ষণে  
সাধনভক্তির বিধির বলিতেছি শ্রবণ কর। বাহ্য  
হইতে সাধ্যভক্তিরূপ প্রেম লাভ হয়, তাহাই  
সাধনভক্তি: ॥ ৩৬ ॥

(২৪৬ পা) “কৃত্তিসাধোতি।” শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
সাধনভক্তি প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫০ ॥

(২৪৬ পা) “শ্রবণাদি.....গায়।”  
এই ৩৭ পরায়ের ভাবার্থ।

সাধনভক্তির লক্ষণ বলিতেছেন, শ্রবণাদি  
ক্রিয়াসকলই সাধনভক্তির স্বরূপলক্ষণ; কারণ,  
উহার সাধনভক্তি হইতে অভিন্ন ও সাধনভক্তির  
পরিচায়ক। প্রেমভক্তির জনকতা উহার তটস্থ-  
লক্ষণ; প্রেমভক্তির উৎপাদন কার্য সাধনভক্তি  
না হইয়াও সাধনভক্তির বোধক হয়। যদি বল,  
নিত্যসিদ্ধ প্রেমের আবার উৎপত্তি কি? তদ্বস্তুর  
দ্বয়ের নিত্যসিদ্ধ প্রেমের প্রকাশই তাহার  
উৎপত্তি। শ্রবণাদিক্রিয়ারূপ সাধনভক্তি নিত্য-  
সিদ্ধ প্রেমকে দ্বয়ের প্রকট করিয়াই তাহার  
উৎপাদিকা করেন। “নিত্যসিদ্ধ” ইতি। অর্থাৎ  
কৃষ্ণপ্রেম নিত্যসিদ্ধ বস্তু; উৎপাদ্য নহেন।  
প্রেম উৎপাদ্য না হইলেও, শ্রবণাদি সাধনভক্তি  
দ্বারা নির্মল চিত্তেই প্রেমের উদয় হয় বলিয়াই,  
প্রেমকে সাধ্য এবং শ্রবণাদিকে সাধন বলে।  
“সেইত” ইতি ॥ ৩৭ ॥

(২৪৬ পা) “তস্মান্ভাস্তারভেতি।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। শাসনবিধিমুখ ও শাসননিষেধ-  
মুখ ভেদে দুই প্রকার শাস্ত্রশাসন বলা  
হইয়াছে, তন্মধ্যে এই শ্লোক শাসনবিধি-  
মুখ পর প্রমাণ ॥ ৫১ ॥

(২৪৬ পা) “মুখ্যাত্মরিত্তি।”

শ্লোকের টাকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৩৬ পৃষ্ঠায় দেখুন। এই শ্লোকটি শাসন-নিবেধমুখ পর প্রমাণ ॥ ৫২, ৫৩ ॥

(২৪৬ পা) "স্বর্ভব্যঃ সত্তমিত্তি।" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। শাসনবিধি ও নিবেধমুখ উভয়-বিধ শাস্ত্রশাসনপর এই শ্লোক ॥ ৫৪ ॥

(২৪৭ পা) "বিবিধাজ.....অন্ন সঙ্গ।" এই ৩৮ হইতে ৪৩ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। সাধনভক্তির অঙ্গ বহুবিধ। ঐ সাধনাজ সঙ্ক্ষেপতঃ চতুঃষষ্টি প্রকার, ইহা বলিতেছেন, "গুরু পদাশ্রয়" ইতি পয়ার হইতে "কার্তিকাদিব্রত" পয়ার পর্যন্ত।

বিভক্তি অর্থাৎ নিজের অবস্থা বিজ্ঞাপন করা। উহা প্রার্থনাময়ী, দৈন্যময়ী ও লাগনাময়ী ভেদে ত্রিবিধ। অহরজ্যা অর্থাৎ পশ্চাদ্গমন। জপ তিন প্রকার বধা, উপাস্ত, বাচিক ও মানসিক। উক্ত চতুঃষষ্টি সাধনাজের মধ্যে প্রথম দশটি অর্থাৎ "গুরুপাদাশ্রয়" পরায় হইতে "বিপ্রবৈষ্ণব-পূজন" এই পরায় পর্যন্ত সাধনভক্তির উপক্রম-স্বরূপ ও গ্রহণীয়। তৎপরবর্তী "সেবানামা-পরাদানি" পরায় হইতে "উষেগ না বিবে" পরায় পর্যন্ত দশটি ভ্যাজ্য। অবশিষ্টগুলি অর্থাৎ "শ্রবণ কীর্তন" পরায় হইতে "কার্তিকাদিব্রত" পরায় পর্যন্ত কয়েকটি অহরজের। সর্বদেব পাটটি অর্থাৎ সাধুসঙ্গ, নামকীর্তন, তাগবতশ্রবণ, মথুরাবাস ও প্রভা পূর্বক শ্রীকৃষ্ণের সেবা, এই কয়েকটি সর্বাপেক্ষা বিশেষ প্রত্যাবশ্যগী। এই পাটের অন্ন লাভ হইলেই শ্রীকৃষ্ণপ্রেম একট হয় ॥ ৩৮—৪৩ ॥

(২৪৭ পা) "প্রজ্ঞা বিশেষত" ইতি। শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ

আছে। "সাধুসঙ্গ নামকীর্তন" ইতি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫৫, ৫৬ ॥

(২৪৭ পা) "দুরহাস্তুতেতি।" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। "কৃষ্ণপ্রেম জন্মে এই পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫৭ ॥

(২৪৮ পা) "এক অঙ্গ..... ভক্তগণ।" এই ৪৪ ও ৪৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল। চতুঃষষ্টি সাধনাজের একটি বা অনেকটিতে নিষ্ঠা জন্মিলেই প্রেমলাভ হইতে পারে ॥ ৪৪।৪৫ ॥

(২৪৮ পা) "শ্রীবিষ্ণোরিত্তি।" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। চতুঃষষ্টি সাধনাজের একটিতে নিষ্ঠা জন্মিলেই যে প্রেমলাভ হয়, তাহা শ্লোকে প্রমাণ করিলেন ॥ ৫৮ ॥

(২৪৮ পা) "অশ্বরীষাদি..... সাধন।" এই ৪৬ পয়ারের ভাবার্থ। চতুঃষষ্টি সাধনাজের অনেকটিতে নিষ্ঠা জন্মিলে যে প্রেম হয়, তাহা প্রমাণ করিতেছেন, "অশ্বরীষাদি" ইতি ॥ ৪৬ ॥

(২৪৮ পা) "স বৈ মনঃ কক্ষেতি।" শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। "অশ্বরীষাদি" পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫৯।৬০ ॥

(২৪৯ পা) "কাম ত্যজি...নহে স্বামী।" এই ৪৭ পয়ারের ভাবার্থ।

শাস্ত্রশাসন হইতে প্রবৃত্ত হইয়া সর্বকামনা ত্যাগ পূর্বক যিনি শ্রীকৃষ্ণের ভজন করেন, তাঁহার আর দেবদেবির ঋণ থাকে না। দেবদেবির ঋণ বধা—

"অধ্যাপনং ব্রহ্মবজঃ পিতৃবজ্ঞত তর্পণম্।  
হোমো বৈবো বলিত্তোতো নৃবজ্ঞোহতিবিপুলনম্ ॥"

অধ্যাপনাকে, ব্রহ্মযজ্ঞ, তর্পণকে পিতৃযজ্ঞ, হোমকে দেবযজ্ঞ, বলিকে ভূতযজ্ঞ এবং অতিথি-সংস্কারকে নৃযজ্ঞ বলে। এই পঞ্চ যজ্ঞ ॥ ৪৭ ॥

( ২৪৯ পা ) “দেবনিভুতেতি।”

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “কাম ত্যজি” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৬২ ॥

( ২৪৯ পা ) “বিধিধর্ম্ম.....

প্রারশ্চিত ॥” এই ৪৮ পয়ারের ভাবার্থ।

এইরূপ যিনি বিধিধর্ম্ম অর্থাৎ কাম্যকর্ম্মসকল ভাগ পূর্বেক শ্রীকৃষ্ণের চরণ ভজন করেন, তিনি আর নিষিদ্ধ পাপাচারে রত হন না। যদি কখন অজ্ঞানতা বশতঃ কোন পাপ উপস্থিত হয়, তবে শ্রীকৃষ্ণই তাঁহাকে শোধন করিয়া লন। তজ্জন্য তাঁহাকে কোনরূপ প্রারশ্চিত করিতে হয় না ॥ ৪৮ ॥

( ২৪৯ পা ) “স্বপাদমূলমিতি।”

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “বিধিধর্ম্ম” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৬৩ ॥

( ২৪৯ পা ) “জ্ঞান.....অঙ্গ ॥”

এই ৪৯ পয়ারের ভাবার্থ।

জ্ঞান ও বৈরাগ্য ভক্তির অঙ্গ নহে। তৎ-বিচারাত্মক জ্ঞান ও হৃৎখণহনাত্মক বৈরাগ্য অতিশয় কঠোরস্বভাব। ভগবৎস্বাধুর্ঘ্যানুভবাত্মিকা ভক্তি অতিশয় কোমল স্বভাব। অতএব কঠোরস্বভাব জ্ঞান ও বৈরাগ্য কোমলস্বভাব ভক্তির অঙ্গ হইতে পারে না। তথাহি—

“কর্ম্মবিক্ষেপকং তত্তা বৈরাগ্যং রসশোভকম্।

জ্ঞানং হানিকরং তত্তচ্ছোদিতং স্বমুখ্যতি তাম্ ॥”

তদ্ব-অওদ্ধ-আদি-বিচার-সাপেক্ষ কর্ম্ম, চিত্তের বিক্ষেপক, কঠোর বৈরাগ্য রস স্বয়ংকে নীরস করে, “সোহং” জ্ঞান উপাস্য-উপাসকভাবে হানিকর, অতএব উহাদের কোনটাই ভক্তির অন্তর্গত নহে। তবে যদি উহারা শোধিত হয়, অর্থাৎ কর্ম্ম যদি তপস্বৎপরিচর্য্যাবিশিষ্ট হয়, বৈরাগ্য

শ্রীকৃষ্ণের জন্য ভোগভ্যাগসময় হয় এবং জ্ঞান যদি শ্রীকৃষ্ণের অমুসন্ধানক স্বভাৱে উপাস্যোপাসক-ভাবসময় হয়, তবে উহারা ভক্তির অঙ্গীভূত হয় ॥ ৪৯ ॥

( ২৪৯ পা ) “তস্মান্মস্তজীতি।”

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “জ্ঞান বৈরাগ্য” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৬৪ ॥

( ২৪৯ পা ) “অহিংসা.....সঙ্গ ॥”

এই ৫০ পয়ারের ভাবার্থ। যমনিয়মাদি জ্ঞান ও যোগের অঙ্গসকলও কৃষ্ণভক্তকে পৃথক সাধন করিতে হয় না। উহারা আপনাপনি কৃষ্ণভক্তের অন্তর্গত হয় ॥ ৫০ ॥

( ২৪৯ পা ) “এতে নেতি।”

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “অহিংসা” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৬৫ ॥

( ২৪৯ পা ) “বৈধিভক্তি...নামে ॥”

এই ৫১ পয়ারের ভাবার্থ। বিধিভক্তি বলিয়া রাগানুগা ভক্তির লক্ষণ বলিতে-ছেন,

রাগাত্মিকা নারী মুখ্যা ভক্তি ব্রহ্মবাসিগণের নিজ সম্পত্তি অর্থাৎ উহা শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপশক্তি-রূপ ব্রহ্মপরিচরগণের স্বাভাবিকী বৃত্তি। সাধক জীবগণ তাঁহাদের অন্তর্গত হইয়া ভজন করিলে, গদপ্রবাহের পৃথিবীতে সফারের ন্যায় ঐ বৃত্তি সাধক জীবের সফারিত হয় এবং তখন সাধকের সেই ভক্তিকে রাগানুগা ভক্তি বলে ॥ ৫১ ॥

( ২৫০ পা ) “ইষ্টে স্বারসিকীতি।”

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ॥ ৬৬ ॥

( ২৫০ পা ) “ইষ্টে গাঢ় ...

প্রকৃতি ॥” এই ৫২ পয়ারের ভাবার্থ।

ইষ্টবস্ত্রবিধিনি প্রেমময়ী কৃষ্ণাই রাগের  
স্বরূপলক্ষণ এবং তজ্জনা ইষ্টে আবিষ্টতাই রাগের  
তটস্থলক্ষণ । ঐ রাগময়ী রাগান্বিকা ভক্তির  
কথা শ্রবণ করিয়া যদি কোন ভাগ্যবান্ জীবের  
ভাষ্যে গোষ্ঠ হয়, তবেই তিনি ব্রজবাসিন্দনের  
ভাবের অমুগত হইয়া থাকেন । অতএব তাঁহার  
সেই গোভোৎপত্তির পক্ষে শাস্ত্রযুক্তাদির কোন-  
রূপ অপেক্ষা দৃষ্ট হয় না ॥ ৫২ ॥

( ২৫০ পা ) “বিরাজস্তীমিত্তি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । রাগানুগা ভক্তির প্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ৬৭ ॥

( ২৩০ পা ) “তত্তদ্ভাবাদীতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । লোভোৎপত্তি দ্বারা রাগানুগা  
ভক্তির লাভ হয়, তৎপ্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ৬৮ ॥

( ২৫০ পা ) “বাহু.....সেবন ।”  
এই ৫৩ পয়ারের ভাবার্থ । রাগানুগা  
ভক্তির সাধন কি, তাহা বলিতেছেন ।

রাগানুগার সাধন বাহু ও আস্তর ভেদে  
দ্বিবিধ । বাহুঃসাধকদেহে শ্রবণাদি সাধন এবং  
অস্তরে নিজসিদ্ধদেহ ভাবনা করিয়া দিবানিশি  
বলে শ্রীকৃষ্ণের সেবন করিতে হয় ॥ ৫৩ ॥

( ২৫০ পা ) “সেবেতি ।” শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
“বাহু আভ্যন্তর” পয়ার প্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ৬৯ ॥

( ২৫১ পা ) “নিজ্জাতীষ্ট...হঞা ॥”  
এই ৫৪ পয়ারের ভাবার্থ সরল । কৃষ্ণ-  
প্রার্থ, শ্রীকৃষ্ণের প্রিয়ভক্ত । পাছেত  
লাগিয়া, অনুসরণ পূর্বক । ॥ ৫৪ ॥

( ২৫১ পা ) “দাস সখা...গগন ॥”  
এই ৫৫ পয়ারের ভাবার্থ । রাগমার্গে  
নিজ নিজ ভাবানুযায়ী দাস, সখা, পিতা  
ও প্রেয়সী হন ॥ ৫৫ ॥

( ২৫১ পা ) “ন কহিচিদিতি ।” শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
“দাস সখা” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৭১ ॥

( ২৫১ পা ) “এইমত...কৃষ্ণদাস ॥”  
এই ৫৬ ও ৫৭ পয়ারের ভাবার্থ ।

এইমত অর্থাৎ বাহ্যে শরীরাদি চেষ্টা দ্বারা  
এবং অস্তরে নিজান্তিলম্বিত সিদ্ধদেহ ভাবনা দ্বারা  
শ্রীকৃষ্ণসেবা করিয়া যিনি রাগানুগা ভক্তি আচরণ  
করেন, তাঁহার শ্রীকৃষ্ণচরণে প্রীতি উৎপন্ন হয় ।  
প্রীতির অঙ্কুরে রক্তি ও ভাব হয়; বাহ্যে  
শ্রীকৃষ্ণ বশীভূত হন এবং প্রেমসেবা লাভ হয় ।  
অভিধেয়ত্ব সংক্ষেপে বলিলেন ॥ ৩০৭ ॥

ইতি মধ্যমীণার ষাণ্মংশপরিচ্ছেদে সুবোধিনী ॥ ২২ ॥

## ত্রয়োবিংশ পরিচ্ছেদ ।

—\*—\*—\*—

( ২৫২ পা ) “চিরানন্দমিত্তি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “প্রমোদক” এই পরিচ্ছেদে

প্রমোদনতত্ত্ব ( প্রেম ) বলিবেন বলিয়া,  
এই শ্লোক দ্বারা প্রেমামৃত প্রদানকারি  
শ্রীচৈতন্যকে প্রমাণ করিলেন ॥ ১ ॥



( ২৫২ পা ) "ঈশ্বর জয়...ভাব নাম ।"  
১ম পয়ারের ভাবার্থ ।

সাতন, একশ্রেণে ভক্তির কন ( প্রয়োজন ) প্রেমের  
প্রবণ কর ; বাহাতে ভক্তির সের জ্ঞান হয় ।  
সকলকে রতি গাঢ় হইলে তাহাকে প্রেম বলে ।  
সী রতির নাম ভাব । এই ভাব আবার  
স্বভক্ত্যুখ ও রাগভক্ত্যুখ ভেদে বিবিধ ।  
স্বভক্ত্যুখ ভাব ঐশ্বর্যজ্ঞানমিশ্র এবং রাগ-  
ভক্ত্যুখ শুদ্ধ । এই হেতু রতির মিশ্রা ও কেবলা  
সি নাম হইয়াছে । কেবলা রতি কেবল  
ঐশ্বর্যজ্ঞানময়ী । ইহার স্থান গোহুলে । ঐশ্বর্য-  
জ্ঞানমিশ্রা মিশ্রারতি পুরষের ও বৈকুণ্ঠাদিতে দৃষ্ট  
হয় । মিশ্রারতিতে ঐশ্বর্যজ্ঞান দ্বারা কোথাও  
প্রেমের উদীপন এবং কোথাও উহার সঙ্কোচন  
হয় । কেবলা রতিতে ঐশ্বর্যজ্ঞানই হয় না ।  
বধন হইলে তাদৃশ ভক্ত দেখানে ঐশ্বর্য দেখেন,  
দেখানে নিজ সখ্য স্বীকার করেন না ॥ ১ ॥

( ২৫২ পা ) "শুদ্ধসত্ত্বৈতি ।" শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । ভাব  
কি, বলিলেন ॥ ২ ॥

( ২৫৩ পা ) "এই দুই...সনাতন ।"  
এই ২ পয়ারের ভাবার্থ । এই দুই ভাবের  
অর্থাৎ মিশ্রা ও কেবলা ভাবের । কেবলা  
ভাব প্রেমের স্বরূপ লক্ষণ । মিশ্রাভাব  
উহার উচ্ছিন্ন লক্ষণ ॥ ২ ॥

( ২৫৩ পা ) "সদ্যাকিতি । শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । এই  
শ্লোকে প্রেমের লক্ষণ বলিলেন ॥ ৩ ॥

( ২৫৩ পা ) "অনন্তমমভেতি ।"  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । এই শ্লোকে প্রেমভক্তির লক্ষণ  
বলিলেন ॥ ৪ ॥

( ২৫৩ পা ) "কোন ভাগ্যে...ধাম ॥"

এই ৩য় হইতে ৫ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ  
সরল । সাধনভক্ত্যে অর্থাৎ শ্রবণকীর্তন  
সাধন ভক্তি দ্বারা । নিবর্জন, নাশ ।  
সর্বানন্দধাম, সর্বানন্দ স্বরূপ ॥ ৩ ৫ ॥

( ২৬৩ পা ) "আদৌ শ্রদ্ধেতি ।"  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । শ্লোকোক্ত ক্রমানুযায়ী সাধনে  
সাধকের প্রেম হয় ; ইহা দেখাইলেন ।  
"কোন ভাগ্যে" ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ  
শ্লোক ॥ ৫ ৬ ॥

( ২৫৩ পা ) "সতামিতি ।" শ্লোকের  
শ্রীকৃষ্ণ ও বাদলা আদির ১১ পৃষ্ঠায়  
দেখুন । সাধুসঙ্গ দ্বারা যে, শ্রীকৃষ্ণের রতি  
লাভ হয়, তৎপ্রমাণ শ্লোক ॥ ৭ ॥

( ২৫৩ পা ) "বাহার...কয় ॥"  
এই ৬ পয়ারের ভাবার্থ ।

বাহার ক্ষমরে ভাবের অক্ষর অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণের  
ও গুণীর ভক্তগণের রূপায় প্রপঞ্চগত ভক্তসকলের  
চিত্তবৃত্তিতে ফ্লাদিন্যাদি স্বরূপশক্তির বৃত্তির  
সারাংশ ভাব সঞ্চারিত হয়, তাহাতে অর্থাৎ  
উহার চিত্তে এতক অর্থাৎ ক্ষান্তি প্রভৃতি নয়টি  
শ্রীতির অক্ষর দৃষ্ট হয় । ইহা শাস্ত্রে উক্ত  
হইয়াছে ॥ ৬ ॥

( ২৫৪ পা ) "ক্ষান্তিরব্যর্থৈতি ।"  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । ক্ষান্তি প্রভৃতি নয়টি শ্রীত্যা-  
ক্ষরের কথা বলিলেন ॥ ৮ ৯ ॥

( ২৫৪ পা ) "এই নব...নাহি হয় ॥"  
এই ৭ পয়ারের ভাবার্থ ।

প্রেমের অক্ষর স্বরূপ এই নয়টি চিত্ত বাহ্য  
চিত্তে প্রকাশ পায়, তিনি প্রাকৃতকোত্তে অক্ষর  
হল না । প্রাকৃতকোত্তে অক্ষর না হওয়ার নাম  
ক্ষান্তি ॥ ৭ ॥

( ২৫৪ পা ) “তৎ সোপবাতমিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

বাঁহারা শ্রীকৃষ্ণকে চিত্ত ধারণ করিয়াছেন, তাহাদের চিত্ত প্রাকৃতকোষে স্কন্ধ হয় না; ইহাই এই শ্লোকে প্রমাণ করিলেন । রাজা পরীক্ষিতের চিত্ত ভঙ্ককদংশনরূপ প্রাকৃতকোষে অর্থাৎ মৃত্যুর কথা শুনিয়া স্কন্ধ হয় নাই । ইহাতে কাঙ্ক্ষি দেখান হইল ॥ ১০ ॥

( ২৫৪ পা ) “কৃষ্ণের... ...যায় ॥” এই ৮ পয়ারের ভাবার্থ । ভাবোৎপন্ন ব্যক্তির শ্রীকৃষ্ণসম্বন্ধ ব্যতীত সময় রূথা যায় না । ইহাতে অব্যর্থ কালত্ব দেখান হইল ॥ ৮ ॥

( ২৫৪ পা ) “বাগ্ভিরিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । দৈনন্দিক ব্যাপারে প্রবৃত্ত না হইয়া কেবল শ্রীকৃষ্ণসেবায় নিযুক্ত হওয়ায়, অব্যর্থ কালত্ব হইল । “কৃষ্ণের সম্বন্ধ” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১১ ॥

( ২৫৪ পা ) “ভুক্তি.....ভায় ॥” এই ৯ পয়ারের ভাবার্থ । স্বর্গাদি ভোগ, অর্গিমাди অষ্টসিদ্ধি ও ইন্দ্রিয়ের সুখাদিতে ভাবোৎপন্ন ব্যক্তির সর্সত্র বিরাগ হয় । ইহাতে বিরাগ দেখান হইল ॥ ৯ ॥

( ২৫৪ পা ) “যো দুস্ত্যজানিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । নিখিল ভোগ্য বস্তুতে ভরভের যে অরোচকতা তাহাই বিরক্তি । “ভুক্তি সিদ্ধি” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১২ ॥

( ২৫৪ পা ) “সর্কৌত্তম...মানে ॥” এই ১০ পয়ারের ভাবার্থ । ভাবোৎপন্ন

ব্যক্তি সর্কৌত্তম অর্থাৎ মহারাজ বা ব্রাহ্মণ হইলেও, নিজেকে হীন বোধ করেন । ইহাতে অভিমানশূন্যতা দেখাইলেন ॥ ১০ ॥

( ২৫৫ পা ) “হরৌ রতিমিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । মহারাজ ভগীরথ স্বীয় উৎকৃষ্টতা গভ্বেও যে নীচ জাতিকে বন্দনা করিতেন, তাহা মানশূন্যতা । “সর্কৌত্তম” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৩ ॥

( ২৫৫ পা ) “কৃষ্ণ.....জানে ॥” এই ১১ পয়ারের ভাবার্থ । শ্রীকৃষ্ণ কৃপা করিবেন অর্থাৎ দেখা দিবেন বলিয়া ভাবোৎপন্ন ব্যক্তি দৃঢ় করিয়া জানেন । ইহাতে আশাবন্ধ দেখাইলেন ॥ ১১ ॥

( ২৫৫ পা ) “ন প্রোমেতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীকৃষ্ণকে নিশ্চয় পাইব বলিয়া যে আশা, তাহা আশাবন্ধ । “কৃষ্ণ কৃপা” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৪ ॥

( ২৫৫ পা ) “সমুৎকঠা...প্রধান ।” এই ১২ পয়ারের ভাবার্থ । ভাবোৎপন্ন ব্যক্তির নিজাভিষ্টলাভের জন্য যে গুরুতর লোভ তাহার নাম সমুৎকঠা ॥ ১২ ॥

( ২৫৫ পা ) “দ্বৈচ্ছশবমিতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১৮ পৃষ্ঠায় দেখুন । “সমুৎকঠা” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৫ ॥

( ২৫৫ পা ) “রোদনেতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “নামগানে” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৬ ॥

( ২৫৫ পা ) “মধুবমিতি ।” শ্লোকের

তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

“কৃষ্ণলীলাস্থানে”পরায়প্রমাণ শ্লোক॥১৩॥

( ২৫৬ পা ) “কৃষ্ণে রতি ..বুঝায় ॥

এই ১৩ পরায়ের ভাবার্থ ।

প্রভু কহিলেন, সনাতন, শ্রীকৃষ্ণে রতি হইলে যে সকল লক্ষণ প্রকাশ পায়, তাহা বলিলাম । অন্তঃকরণের নিষ্কর্মেই রতির লক্ষণ । এই রতি যদি যুযুৎ প্রভৃতিতে লক্ষিত হয়, তাহা হইলে উহা রতিপদ বাচ্য নহে । মুক্ত পুরুষগণ নিখিল কাম ত্যাগ করিয়া যে রতিকে অশ্বেষণ করেন, বাহা শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক অতিশয় গোপনীয় এবং যে রতি ভক্তগণকে সহসা দেওয়া হয় না । ভুক্তি, মুক্তি ও কাম হেতু, বিস্কৃত ভক্তির অনধিকারি কৰ্ম্ম ও জ্ঞানিদের হৃদয়ে সেই ভগবৎসবধীনা রতির কিরূপে সম্ভাবনা হইতে পারে ? এই রতি-চিহ্ন মর্শন করিয়া অনভিজ্ঞ জনের চমৎকার বোধ হয় সত্য, কিন্তু অভিজ্ঞজন উহাকে রতির আভাস বলেন । অতএব কৰ্ম্ম ও জ্ঞানিগণের ঐরূপ ভাব রত্যাভাস । ছায়া ও প্রতিবিম্ব ভেদে রত্যাভাস দুই প্রকার । কুদ্রকোতুহলময়ী চঞ্চলা, হৃৎখহারিণী ও কথঞ্চিৎ রতির সদৃশা রতির নাম ছায়া । বাহা শ্রম ব্যতীত অতীষ্ট সাধন করে, বাহা দুই একটি বাস্পাদিরূপ রতিচিহ্নে লক্ষিত ও বাহা ভোগ ও মোক্ষস্থ প্রকাশ করে, সেই রতির নাম প্রতিবিম্ব । ভক্তের অহুগ্রহ হেতু রত্যাভাসও ভাবস্থ প্রাপ্ত হয় । যদি ভক্তের নিকট অপরাধ হয়, তবে রত্যাভাসও ক্ষীণ হয় । এক্ষণে প্রেমের চিহ্ন শ্রবণ কর । বাহার কৃষ্ণ-প্রেম উদিত হয়, তাহার বাস্য, কার্য ও আকার বিজ্ঞানে বুঝিতে পারে না ॥ ১৩ ॥

( ২৫৬ পা ) “ধন্যস্যায়সিতি ।”

শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “যার বচিতে” পরায় প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৯ ॥

( ২৫৬ পা ) “এবং ব্রত ইতি ॥”

শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদিব ৮৬ পৃষ্ঠায় দেখুন । এই শ্লোকে প্রেমোৎপন্ন ব্যক্তির কার্যাদি বলিলেন ॥ ২০ ॥

( ২৫৬ পা ) “প্রেমা ক্রমে.....হয় বশ ॥” এই ১৭ হইতে ১৯ পরায় পর্য্যন্ত ভাবার্থ ।

ভাবের পরিপাকবস্থাই প্রেম । প্রেমে চিত্ত মন্থণ ও অতিশয় মমতা দ্বারা আকৃত হয় । বস্তুতঃ গাঢ় ভাবই প্রেম নামে অভিহিত হয় । প্রেমের উত্তরোত্তর গাঢ়তায় কি নাম হয়, তাহা সদৃষ্টান্তে বলিতেছেন—“বৈছে বীজ” ইতি । ইহা যৈছে ইত্যাদি অর্থাৎ ইক্ষু হইতে রস, রস হইতে গুড়, গুড় হইতে খণ্ডসার ইত্যাদি ক্রমান্বয়ে নির্মল ও আশ্বাদ্য হয়, তদ্রূপ ভাব হইতে প্রেম, প্রেম হইতে স্নেহ ইত্যাদিরূপে ক্রমশঃ নির্মল ও আশ্বাদ্য হয় । প্রেম অপেক্ষাকৃত গাঢ় হইয়া চিস্তকে দ্রবীভূত করিলেই স্নেহ নাম পায় । স্নেহাবস্থায় প্রিয়বস্তুর ক্ষণিক বিরহও সহ্য হয় না । স্নেহ পরিপক হইয়া নূতন মাধুর্য আশ্বাদন করাইবার জন্য কোটিল্য ধারণ করিলে উঠাকে মান বলে । মান যখন বিস্রম্ব ধারণ করিয়া অর্থাৎ গৌরব-রহিত হইয়া নিবরাশ্রয়ের সৰ্ব্বথা একস্থ স্থাপন করে, তখন উহাকে প্রণয় বলে । প্রণয়ের উৎ-কর্ষে যখন চিত্তে অতিশয় দুঃখকেও সুখ বলিয়া বোধ হয়, তখন উঠাকে রাগ বলে । রাগের পরিপাকই অমুরাগ । ইহাতে প্রিয়বস্তুর নিত্য নূতনরূপে প্রকাশ পায় । ঐ অমুরাগ আবার যখন সীমান্তপ্রাপ্ত হইয়া নিজের বৃত্তিভূত উদীপ্ত সাত্বিকাদি ভাব সকল দ্বারা আপনাকে প্রকাশ করে, তখন উঠাকে ভাব বলে । অধিকারি ভেদে, ভাব পাঁচ প্রকার । যথা শাস্ত্রাদি ॥ ১৭-১৯ ॥

( ২৫৬ পা ) “প্রেমাদিক... ..

চমৎকারকারী ॥” এই ২০ হইতে ২২ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ ।

শাস্তাদি পঞ্চ রস স্থায়ী । ঐ পঞ্চ স্থায়ীভাবে প্রেম স্নেহাদি মিলিত হইয়া কৃষ্ণভক্তিরসরূপে পরিণত হয় । ঐ রস চারি প্রকার ; বিভাব, অনুভাব, সাত্বিক ও ব্যভিচার । যেমন দধি মরিচঞ্চ ও কর্পূর মিলনে রসলা নাম প্রাপ্ত হইয়া আনন্দনে অপূর্ক হয়, তদ্রূপ বিভাবাদি মিশ্রণে স্থায়ীভাব আনন্দনে অপূর্ক হয় । বিভাবাদি কি, তাহা বলিতেছেন, “দ্বিবিধ বিভাব” ইত্যাদি “চমৎকারকারী” ইত্যন্ত ॥ ২০-২২ ॥

( ২৫৬ পা ) “পঞ্চবিধ...নাম তার ॥” এই ২৩ হইতে ২৬ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ । সবাতে, সকল রস হইতে ।

শাস্তাদি স্থায়ীভাবে প্রেম-স্নেহাদি কিরূপভাবে প্রকাশ পায়, তাহা বলিতেছেন, “শাস্তরসে” ইত্যাদি । শাস্তরসে প্রেম পর্য্যন্ত প্রকাশ পায় । দাস্তে প্রেম, মেহ, মান, প্রণয় ও রাগ পর্য্যন্ত প্রকাশ পায় । সখা ও বাৎসল্যে অনুরাগ পর্য্যন্ত দৃষ্ট হয় । ভাব ব্রজদেবীগণে আরম্ভ হইতেই দৃষ্ট হইয়া পরিশেষে-মহাভাবরূপে পরিণত হয় । মহাভাব রূঢ় ও অধিরূঢ় ভেদে দুই প্রকার । অধিরূঢ় মহাভাব আবার মোদন ও মাদন ভেদে দ্বিবিধ । মোদনাখ্য মহাভাবই বিরহে মোহন নামে উক্ত হয় ॥ ২৩-২৬ ॥

( ২৫৭ পা ) “মাদনে... ..” মহিমীগণে ॥” এই ২৭ হইতে ৩০ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ ।

মাদনে বিরহ হয় না । চুষনাদি ভেদে ইহা অনন্ত প্রকার । মোহনে দিব্যোন্মাদ জন্মে এবং ইহাতে উদ্বর্ণা ও চিত্তব্রজ প্রভৃতি লক্ষণ সকল দৃষ্ট হয় । প্রজ্ঞাদি ভেদে চিত্তব্রজ দশ প্রকার । মোদনাখ্য মহাভাবের উদরে সমস্ত ব্রহ্মাণ্ডের এবং কাশ্মীরের সহিত শ্রীকৃষ্ণের কোমলভাব উৎপন্ন

হয় । মাদনে সর্কভাবের উদগম হয় এবং উহা কেবল শ্রীরাধাতেই দৃষ্ট হয় । শৃঙ্গার অর্থাৎ স্থায়ীভাব বিশ্লস্তু ও সজ্জোগ ভেদে দ্বিবিধ । তন্মধ্যে বিশ্লস্তু আবার পূর্করাগ, মান, প্রেম-বৈচিত্র্য ও প্রবাস ভেদে চতুর্বিধ । অঙ্গসংগের পূর্কবর্তিনী উৎকর্শাময়ী রতির নাম পূর্করাগ । প্রিয়ের সমীপে থাকিয়াও অত্যন্ত অনুরাগ বশতঃ তদ্বিরহবোধের নাম প্রেমবৈচিত্র্য । প্রেমের দূরগমনের নাম প্রবাস । মহিমীগণেরও প্রেম-বৈচিত্র্য হয় ॥ ২৭-৩০ ॥

( ২৫৭ পা ) “কুননীতি ॥” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “প্রেমবৈচিত্র্য” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২১ ॥

( ২৫৭ পা ) “ব্রজেশ্বরনন্দন... .. ঠাকুরাণি ॥” এই ৩১ পয়ারের ভাবার্থ সরল । প্রেমের অবলম্বন বলিতেছেন ৩২ ॥

( ২৫৭ পা ) “নায়কানামিতি ॥” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “ব্রজেশ্বরনন্দন” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২২ ॥

( ২৫৭ পা ) “দেবীতি ॥” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৪৩ পৃষ্ঠায় দেখুন । “নায়িকার” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২৩ ॥

( ২৫৭ পা ) “অনন্ত...ভক্তকাণ ॥” এই ৩২ পয়ারের ভাবার্থ । শ্রীকৃষ্ণের গুণ বলিতেছেন ॥ ৩২ ॥

( ২৫৭ পা ) “অয়ং নেতা সুরম্যাদ ইত্যাদি ॥” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । শ্রীকৃষ্ণের চৌষটি গুণ কি কি তাহা বলিলেন ॥ ২৪-৩৬ ॥

( ২৬০ পা ) “অথ বৃন্দাবনেশ্বর্যা” ইত্যাদি শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে

প্রকাশ আছে। শ্রীরাধার অনন্তগুণের মধ্যে পঁচিশ গুণ বর্ণন করিলেন ॥২৭-৪১॥

( ২৬১ পা ) “নায়িকা...লক্ষণ ।”

এই ৩৪ পয়ারের ভাবার্থ সরল। নায়ক শ্রীকৃষ্ণ ও নায়িকা শ্রীরাধা ভক্তিরসের বিষয় ও আশ্রয় নাগক আলম্বন। যৈছে রস হয়, যেরূপ রস উৎপন্ন হয় ॥ ৩৪ ॥

( ২৬১ পা ) “নিধুঁতেত্যাদি ।”

শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “যৈছে রস হয়” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৪২-৪২ ॥

( ২৬১ পা ) “এই...আস্বাদনে ॥”

এই ৩১ পয়ারের ভাবার্থ। বিষয় ও আশ্রয়কে অবলম্বন করিয়া যে ভক্তিরসের উদ্গম হয়, তাহা ভক্তগণই আস্বাদন করেন, অভক্তগণ পারে না ॥ ৩১ ॥

( ২৬১ পা ) “সর্কুঁথেবেতি ।” শ্লোকের

তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “এই রসাস্বাদ” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৪৩ ॥

( ২৬১ পা ) “অনাসক্তস্তোতি ।”

শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

আশঙ্কা হইতে পারে, বিষয়গণই অতরু ; কেন না, বিষয় ভোগাদি দ্বারা চিত্ত বিষয়ে আবিষ্ট হয়, তাহাতে চিত্ত শ্রীভগবানে কিরূপে আবিষ্ট হইবে? অতএব উহার অতরু। অতরুর ভক্তি লাভ হয় না। বিষয়ভোগে বৈরাগ্য হয় এবং তাহাতেই ভক্তি প্রাপ্ত হয়। তত্ত্বত্তর, বিষয় ভোগ করিলেই যে, চিত্ত বিষয়ে আবিষ্ট হয়, এরূপ কোন নিয়ম নাই। বিষয়ভোগ করিয়া শুক বৈরাগ্যে ভক্তি লাভ হয় না। অতএব ভক্তির বাধক ভাবুণ বৈরাগ্যাত্ম্যাপেকা বিষয় ভোগ করা উত্তম। কারণ, প্রাকৃত বুদ্ধিতে ভগবৎসম্বন্ধি-

বস্তুর পরিভ্যাগকে বস্ত বৈরাগ্য বলে। ভগবৎসম্বন্ধিবস্ত বলিতে ভগবৎ-প্রসাদাদি। উহার পরিভ্যাগ ছই প্রকার, ভগবৎ-প্রসাদের অপ্রার্থনা ও প্রাপ্তপ্রসাদাদির অনঙ্গীকার। বুদ্ধিমান ব্যক্তি বিষয়াদিকে ভগবৎসম্বন্ধী বস্ত বলিয়া অনাসক্ত হওতঃ বিষয়াদি ভোগ করিয়াও ভক্তি লাভ করে। বিরাগী উহা ত্যাগ করিয়া অপরাধ বশতঃ ভক্তি লাভ করিতে পারে না। অতএব উহা শুক ও কৃষ্ণ বৈরাগ্য। যদি বল, বিষয় ভোগ করিয়া কিরূপে বিষয়ে আসক্তিশূন্য হওয়া যায়? তত্ত্বত্তর, বিষয় ভোগ করতঃ ভক্তিতে রুচি উৎপন্ন হইলে, আপনা হইতেই চিত্ত বিষয়ে অনাসক্ত হয়। শ্রীভাগবতে ১ঙ্ক ২ অধ্যায়ে,—

“বাসুদেবে ভগবতি ভক্তিবোগঃ প্রযোজিতঃ ।

জননভ্যাগে বৈরাগ্যং জ্ঞানঞ্চ বদহৈতুকম্ ॥”

শ্রীকৃষ্ণে ভক্তিবোগ উৎপন্ন হইলেই বিষয়ে অনাসক্ত চিত্ত হয় এবং অহৈতুকী ভক্তির লাভ হয়। অতএব শুক বৈরাগ্য অপেক্ষা অনাসক্ত হইরা যথাযোগ্য বিষয়োপভোগরূপ বৈরাগ্যই শ্রেষ্ঠ। এরূপ বৈরাগ্যে ভক্তিতে প্রবেশ হয়। ইহাকে যুক্ত বৈরাগ্য বলে। যুক্ত অর্থাৎ বিষয়াদিতে যুক্ত হইরাও যে বৈরাগ্য অর্থাৎ অনাসক্ত তাহাই যুক্ত বৈরাগ্য ॥ ৪৭ ॥

(২৬২ পা) “সঙ্কেপে...নিষেধিল ॥”

এই ৩৬ ও ৩৭ পয়ারের ভাবার্থ সরল। “যুক্ত” ইতি। যুক্ত বৈরাগ্যের মর্ধ্যাদা উপদেশ করিলাম। তোমরা শুক বৈরাগ্যের পক্ষপাতী না হইরা, যুক্তবৈরাগ্যের পক্ষপাতী হইও। শুকজ্ঞান ও শুক বৈরাগ্য সম্বন্ধে সাবধান থাকিও ॥ ৩৬-৩৭ ॥

( ২৬২ পা ) “অবেষ্টা সর্কুঁতানামি-

ভ্যাদি ।” শ্লোক আটটির তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

ভক্তগণ সর্কুঁপিরক বে সকল ভগ ধারণ

করেন, তাহা এই শ্লোক করেকটিতে শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে বলিলেন । শুকজান ও শুকবৈরাগ্য আচরণ দ্বারা শ্লোকোক্ত শুণ সকল লাভ হয় না এবং শ্রীকৃষ্ণের অতিশ্রম হওয়া যায় না । কেবল যুক্ত বৈরাগ্যই ঐ শুণ সকলের লাভ হয় ; ইহা প্রতিপন্ন হইল । অতএব যুক্তবৈরাগ্যের মধ্যাদা স্থাপন হইল ॥ ৪৮-৫৫ ॥

( ২৬৩ পা ) “চীরাণি কিমিতি ।”

শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।

যদি বল, অনাসক্ত হইয়া যথাযোগ্য বিষয়োগতোগ করিলে যুক্তবৈরাগ্য আচরণ করা হয় । অন্ন, বস্ত্রাদির প্রার্থনা ব্যতিরেকে কিরূপে বিষয় ভোগ হয় ? উহুতরে, এই শ্লোক বলিলেন । অন্নাদির চেষ্টা করা তত্ত্বগণের অহুচিত । তথাহি, “ভোজনান্ধাদনে চিন্তাং বৃথা কুর্ত্বন্তি বৈষ্ণবাঃ ।

যোহনৌ বিষন্তরো দেবঃ কিমু ভক্তানুপেক্ষতে ॥”

ভোজন ও আচ্ছাদনের জন্য বৈষ্ণবগণ বৃথা চিন্তা করেন । কারণ, বিষয়ালক শ্রীকৃষ্ণ কি তত্ত্বগণকে উপেক্ষা করেন ? অথবা, যথাযোগ্য বিষয়ভোগ কিরূপ । তাহা এই শ্লোকে বলিলেন ৫৬ ( ২৬৩ পা ) “তবে সনাতন.....

অগোচর ॥” এই ৩৮ ও ৩৯ পরায়ের ভাবার্থ । তবে, মহাপ্রভু উপদেশ করিলে । “গোলোকেতে স্থিতি” স্থানে “গোলোকের স্থিতি” পাঠ হইবে ।

শাস্ত্রবিরোধ পরিহারের জন্য বা সন্দেহ দূর করিবার জন্য সনাতন মহাপ্রভুকে যে সব সিদ্ধান্ত লিঙ্গাণা করেন, মহাপ্রভু তাহার সুসিদ্ধান্ত করিলেন । মহাপ্রভু কর্তৃক সুসিদ্ধান্তের মধ্যে প্রতীকার করেকটি বিষয় বলিতেছেন, “হরিন্যশে” ইত্যাদি । উক্তর দ্বারা প্রত্ন সিরূপিত হয় । প্রথমে সনাতন করিলেন, প্রত্যে, শ্রীকৃষ্ণের গোলোকধাম ভোধান ? প্রভু কহিলেন, হরিন্যশে গোলোকের স্থিতি নির্ণয় করিবারে ।

“বর্গাদূর্জং ব্রহ্মলোকো ব্রহ্মবিগণসেবিতঃ ।

তত্র সোমগতিশ্চৈব জ্যোতিষাক মহান্মনাম্ ॥

ততোপরি গবাংলোকঃ সাধ্যান্তং পালয়ন্তি হি ।

স হি সর্কগতঃ কৃষ্ণ মহাকাশোগতো মহান্ ॥

উপর্ধ্যুপরি তত্রাপি গতিস্তব তপোময়ী ।

বাং ন বিদ্যো বয়ং সর্কৈ পৃচ্ছন্তোপি পিতামহম্ ॥

গতিঃ শমদম চ্যানাং বর্গঃ স্কৃতকর্ষণাম্ ।

ব্রাহ্মে তপসি যুক্তানাং ব্রহ্মলোকঃ পরাগতিঃ ॥

গবামেব তু গোণোকো হুরারোহো হি সা গতিঃ ।

স তু লোকেশ্বরী কৃষ্ণ সীদমানঃ কৃতান্মন ॥”

শ্রীকৃষ্ণ গোবর্ধন ধারণ করিলে পর, পুরুষোক্ত শ্লোক দ্বারা ইন্দ্র শ্রীকৃষ্ণকে স্তব করেন । ইন্দ্র কহিলেন, বর্গের উপরি ব্রহ্মবিগণের আশ্রিত ব্রহ্মলোক । এখানে বর্গ বলিতে অর্লোক, মহর্লোক, জনলোক, তপোলোক ও সত্যলোক । কেন না, শ্রীভাগবতে ২ ৫ অ ৪১ শ্লোকে ব্রহ্মনারদকে বলিয়াছেন,—

“ভূর্লোকঃ কল্পিতঃ পত্যাং ভুবর্লোকোহস্য নাভিতঃ ।

অর্লোকঃ কল্পিতো যুর্দ্ধ, ইতি বা লোককল্পনা ॥”

ত্রিলোক কল্পনা পক্ষে তাহার পাদ দ্বারা ভূর্লোক, নাভিধারা ভুবর্লোক এবং মস্তক দ্বারা অর্লোক কল্পিত হইরাছে । এখানে যেমন ব্রহ্মর্লোক অর্থে বর্গ হইতে সত্যলোক পর্য্যন্ত পঞ্চলোককে বলিলেন ; তদুপ পূর্ক শ্লোকোক্ত বর্গ পক্ষে ব্রহ্মাণ্ডসীমাশ্রাণ্ড সত্যলোক পর্য্যন্ত বৃষ্টিতে হইবে । ব্রহ্মলোক অর্থাৎ সচ্চিদানন্দময় হেতু ব্রহ্মময় বৈকুণ্ঠলোক । বহু রূপঃ তগবতঃ শ্রীকৃষ্ণত লোক বৈকুণ্ঠাখ্যঃ ।” ব্রহ্ম অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণের বৈকুণ্ঠ নামক বে লোক, তাহাই ব্রহ্মলোক । যদিও ব্রহ্মাণ্ডের বাহিরে আবরণ সকল, আবরণের বাহিরে সুক্তিপদ, তাহার উপরি শিবলোক, তাহার উপরি বৈকুণ্ঠ ; ইহা শাস্ত্রে উক্ত হইলেও, আবরণাদির লোকত্ব প্রসিদ্ধ না থাকায়, কেবল উর্ভতা দ্বারা অগণনা করিল ; অথবা, বর্গের লোকত্ব প্রসিদ্ধ হেতু তাহার উপর বলিযেন, বৈকুণ্ঠ

পরম সাহায্য। সিন্ধু হর; এইজন্য স্বর্ণের উর্দ্ধ  
ব্রহ্মলোক বলিয়াছেন। যদি বল, “পরংব্রহ্ম পরং-  
ধাম পবিত্রং পরমো ভবান্” এবং “পরংব্রহ্ম  
নরাকৃতিঃ” ইত্যাদি বচনে পরংব্রহ্ম শব্দে শ্রীকৃষ্ণকে  
বুঝায়; কেবল ব্রহ্ম শব্দে কৃষ্ণ বোধিত হয় না।  
তদন্তর, গীতার “মহামায়া গুড়াকেশঃ সর্বভূতাশয়  
স্থিতঃ” বৃহৎনামে “আশ্রয়ত্বাধিপঃ” ও “পরাংপরং  
ব্রহ্ম চ তে বিভূতয়ঃ” ইত্যাদি বাক্য দ্বারা ব্রহ্ম যে,  
শ্রীকৃষ্ণের বিভূতি, তাহা প্রতিপন্ন হইয়াছে।  
অতএব বিভূতি সকলের নাম শ্রীকৃষ্ণের নাম মধ্যে  
পর্যবসান হয় বলিয়া, কোথাও ব্রহ্ম শব্দে শ্রীকৃষ্ণ  
বোধিত হন। ব্রহ্মলোক ব্রহ্মবিগণের অর্থাৎ  
ব্রহ্মের ঋষিগণ বা নারদাদি ভক্তগণের সেবিত  
অর্থাৎ নিত্য আশ্রিত। ঐ লোক কাহার প্রাপ্য,  
তাহা বলিতেছেন, “তত্রৈতি।” “সোমঃ” অর্থাৎ  
“উময়্য সহ বর্ষত ইতি সোমঃ শ্রীশিবঃ। উমার  
সহিত যিনি বর্ষমান, সেই সপত্নীক শিবের ঐ ধাম  
প্রাপ্য; “জ্যোতিষাৎ” অর্থাৎ “জ্যোতিষব্রহ্মা  
তৎস্বরূপানাং মুক্তানাম্” অর্থাৎ মুক্ত-পুরুষগণের  
প্রাপ্য; “মহাশ্রয়ান্” অর্থাৎ মুক্তি-তুচ্ছতা অমু-  
ভব করতঃ তাহাতে অনাদর পূর্বক শ্রীকৃষ্ণপাদ-  
পদ্মে ভক্তিপূর সনকাদি ভূগ্য মহাশ্রয়গণের প্রাপ্য।  
যদি বল, সোম শব্দে চন্দ্র, জ্যোতি শব্দে গ্রহ-  
নক্ষত্রাদি অর্থ শাস্ত্রসম্মত। তদন্তর, ঐরূপ অর্থ  
অসম্মত, কেন না, গ্রহলোকের নিম্নে চন্দ্র ও  
জ্যোতির্গণের গতি, মহর্লোকে উহাদের গতি না  
ধাকার সভ্যলোকে উহাদের গতি নাই। অতএব  
সর্বোপরি বৈকুণ্ঠে উহাদের গতি কিরূপে সম্ভব  
হইবে? অতএব ঐরূপ অর্থ অসম্মত।

“তস্যোপনীতি।” সেই বৈকুণ্ঠের উপরি  
গোলোক। যদি বল, ব্রহ্মবনস্থ হেতু অপরিচ্ছিন্ন  
বৈকুণ্ঠের উপরি কোন গোলকের সম্ভব হয় না।  
তদন্তর, অপরিচ্ছিন্ন মুক্তিপদের উর্দ্ধে যেমন কোন  
বিশেষ দ্বারা শিবলোক নির্দিষ্ট হয়, এবং শিবলো-  
কের উপরি-পরিচালক হইতে কোন অনির্বাচনীয়

উৎকর্ষ দ্বারা বৈকুণ্ঠলোক পরিচালিত হয়; তদন্তর  
শ্রীভগবানের বিলাসরূপ শব্দ বিশেষ বিলাসিত  
কোন অনির্বাচনীয় উৎকর্ষাতিশয় দ্বারা বৈকুণ্ঠের  
উপরি গোলোক; এরূপ বাক্য সুসিদ্ধ হইল।  
“সাধ্যান্তং পালয়ন্তি হীতি।” অর্থাৎ সাধ্যগণ  
সেই গোলোক পালন করেন। সাধ্যাঃ অর্থাৎ  
মহাশ্রয়গণের ভজনীয়া; কিম্বা আমাদের ( ইন্দ্রাদি-  
লোকপালগণের ), ব্রহ্মাদি সৃষ্টিকর্তাগণের, সন-  
কাদি শাস্ত্রভক্তগণের, শিবাদি রুদ্রগণের ও নার-  
দাদি ভক্তগণের পরম অভীষ্টসিদ্ধির জন্য ( সাধ্যা  
অর্থাৎ বহুতর আরাধনার যোগ্য তোমার নিত্য  
প্রিয় নন্দাদি গোপগণ সেই গোলোককে পালন  
করেন অর্থাৎ অধিকার করিয়া উপভোগ করেন।  
অথবা, হে কৃষ্ণ, তোমার সাধ্যাঃ অর্থাৎ নানাবিধ  
ভাববিশেষ দ্বারা সাধনীয়া অর্থাৎ বন্দীকরণ-  
যোগ্য গোলোকবাসি গোপগোপী প্রভৃতি ঐ  
ধামকে পালন করেন। অথবা, হে কৃষ্ণ, সাধ্যা  
অর্থাৎ গোলোকবাসিগণের মধ্যে পরম প্রিয়তমা  
ও সর্বপ্রধানা শ্রীরাধাদি গোপীগণ বিচিত্র গীলা  
দ্বারা ঐ ধামকে পালন করেন অর্থাৎ ধামের  
মহাশ্রয় অতিশয় পোষণ করেন। প্রাকৃত  
আকাশের নাম অন্নাকাশ, তাহার বাহিরে মহা-  
কাশ; তাহাতে গোলোক বর্ষমান। কিম্বা নিত্য  
অপরিচ্ছিন্নত্ব, নীলগন্ধ ও ব্যাপকত্ব সাম্যে আকাশ  
শব্দে ব্রহ্ম, মহাকাশ শব্দে পরংব্রহ্ম। সেই পরংব্রহ্ম  
বাহাতে বিদ্যমান। অথবা, পরম নিবিড় শ্রাম  
কান্তি দ্বারা মহাকাশ সৃষ্ণ আকাশ ভগবান্ ;  
তদন্তর সচ্ছিদানন্দবনদ্বারা ভগবান্ হইতে  
অভিন্ন ও ভগবৎস্বরূপ বৈকুণ্ঠ। বৈকুণ্ঠ হইতে  
মহাশ্রয়বিশেষ দ্বারা সেই গোলোক শ্রেষ্ঠ ও  
মহাকাশগত। এইহেতু বলিয়াছেন, সর্বলোকো-  
পরি বিদ্যমান বৈকুণ্ঠের উপরি গোলোক। “উপবু-  
পনীতি।” অর্থাৎ হে কৃষ্ণ, তুমি এই বৃন্দাবনে  
ধাকিলেও তাদৃশ লোকে আপনার গতি। শাস্তি-  
পূর্বক শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং বলিয়াছেন;

“এবং বহুবদৈক্যৈশ্চরামীহ বস্তুকরাম্ ।

ব্রহ্মলোকঞ্চ কোন্তয় গোলোকঞ্চ সনাতনম্ ॥”

আমি বহুবিধরূপে পৃথিবীতে, ব্রহ্মলোকে ও গোলোকে বিচরণ করি। বৈকুণ্ঠে যাদৃশী গতি, গোলোকে তাদৃশী গতি নহে, তদপেক্ষা অতীব দুর্জেরা। যেহেতু সেই গতি তপোময়ী অর্থাৎ ছুঁতিকা বলিয়া সমাধি দ্বারা লভ্যা। এহেতু পিতামহ ব্রহ্মাকে জিজ্ঞাসা করিয়াও উহা আমরা জানিতে পারি নাই। নিজপালক নন্দাদির সহিত গোগণের নিবাস বলিয়াই, সেই লোকের নাম গোলোক হইয়াছে, তাহা সদৃষ্টান্তে বলিতেছেন, “গতিরিত্যাদি।” সুকৃতকর্ম-জনগণের মধ্যে শমদমাদিযুক্ত ব্যক্তিগণের প্রাপ্য স্থান দেবলোক হইতে সত্যলোক পর্য্যন্ত; বিষ্ণুতে অর্পিতচিত্ত-ব্যক্তিগণের প্রাপ্যস্থান পরমোৎকৃষ্ট ও পুনরাবৃত্তি-রহিত বৈকুণ্ঠ এবং গোগণের অর্থাৎ গোপগোপী-গণের প্রাপ্যস্থান গোলোক। যদি বল, কেবল গোগণের বাসস্থান গোলোক, এ কথা ব্যাখ্যা করিলেই পুরোক্ত “সাধ্যাঃ” শব্দোক্ত গোপগোপী-গণের বাস স্বতঃই প্রতিপন্ন হইত ? গোগণশব্দের উপলক্ষণ করিবার প্রয়োজন কি ? তদুত্তর, যেমন পার্থিব মথুরামণ্ডলে ব্রজ, গোকুল প্রভৃতি শব্দ দ্বারা গো, গোপগোপীগণের নিবাসস্থান বুঝায়; তদ্রূপ “গোগণের লোক,” ব্রজ-গোষ্ঠাদি শব্দের দ্বারাও গোপগোপীগণের নিবাস বুঝায় বলিয়া, এখানে গোগণের গোলোকে নিবাস বলা হইয়াছে।

হে কৃষ্ণ, সংকৃত উপদ্রব অর্থাৎ দারুণ বর্ষা, লীলা-বর্ষণ ও অশনিপাত দ্বারা যে লোক ব্যাপ্ত হইয়াছিল, তুমি সেই লোককে রক্ষা করিয়াছ। যদও নিত্য ও আনন্দধনস্ব হেতু কদাপি গোলোক কোন ব্যক্তি কর্তৃক কোন উপদ্রব দ্বারা ব্যাপ্ত হয় না; তথাপি তাৎকালিক উপদ্রব দ্বারা সেট লোক ব্যাপ্ত হইয়াছিল বলিয়া যে অমুভব হইয়াছিল, তাহা অজ্ঞানতা নিমিত্ত স্বদৃষ্ট্যাহার্যে নিজের অপরাধ বিশেষ জানাইবার জন্য ইন্দ্রে ঐ কথা বলেন; ইহা জানিতে হইবে।

সনাতন-কৃত অন্যান্য প্রশ্নের উত্তর বলিতেছেন, “মৌঘলীলা” ইত্যাদি। শ্রীভাগবতে ১১ স্কন্ধে বর্ণিত বাহবগণের প্রতি ব্রহ্মশাপে খড়্গশাস্ত্র। কৃষ্ণের অন্তর্ধান অর্থাৎ মহাভারতে বর্ণিত শ্রীকৃষ্ণের পৃথিবী পরিত্যাগ। কেণাবতার অর্থাৎ মহাভারতে ও বিষ্ণুপুরাণে বর্ণিত আছে, হার নিজের মস্তক হইতে শুক্রার্ণ ও কৃষ্ণবর্ণ দুইটি কেশ উৎকর্ষন করেন। ক্রমধ্যে শুক্রবর্ণ কেশের অবতার বলরাম এবং কৃষ্ণবর্ণ কেশের অবতার শ্রীকৃষ্ণ। এই সকল লীলা মায়ায়ম অর্থাৎ ভোজ্যাদ্যায় ন্যায় প্রত্যক্ষ দৃষ্ট হইলেও মিথ্যা। স্মৃতির নিত্যত্ব গোপন করিবার জন্য এই মায়িক শীটার প্রকটন ॥ ৩৯ ॥

( ২৬৩ পা ) “তুমি যে...কৃষ্ণদাস ॥”

এই ৪০ পয়ারের ভাবার্থ সরল। মাথো, মস্তকে। করে, হস্ত ॥ ৪৫ ॥

ইতি মধ্যলীলায়াং অরোবিশংপরিচ্ছেদে সুবোধিনী ॥ ২২ ॥

## চত্ব্বিংশ পরিচ্ছেদ ।

( ২৬৪ পা ) “আত্মারামেতীতি ।”

শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

এই পরিচ্ছেদে গ্রন্থকার বাহা বলিবেন, তাহা

শ্লোকার্থে প্রকাশ করিয়া মঙ্গলাচরণ করিলেন। এই পরিচ্ছেদে “আত্মারামাঃ” শ্লোকের একখটি প্রকার অর্থ করিবেন। এই শ্লোকের অর্থ দ্বারা অজ্ঞান নষ্ট হয় বলিয়া স্মৃতির সহিত শ্লোকের, ষ্মিরণের সাহিত শ্লোকার্থের, অর্থকারের সাহিত অজ্ঞা-



নের এবং উপরপর্কভেদ সহিত শ্রীচৈতন্যের উপমা দিয়া সর্বাঙ্গীভাষ্যে শ্রীচৈতন্যকেই প্রণাম করিলেন । “আত্মারামাঃ এই বিসর্গের ইতি শব্দ পরে বিসর্গের লোপ হইয়া আর সন্ধি হয় না ; কিন্তু ছন্দের অনুরোধে গ্রন্থকার “আত্মারামেতি” বলিলেন ॥ ১ ॥

( ২৬৪ পা ) “জয় জয়...ব্যাখ্যান ॥” এই ১ম পয়ারের ভাবার্থ সরল । তবে, মহাপ্রভু সনাতনকে বর দিলে । পূর্বে রাজকার্য ত্যাগের পূর্বে ॥ ১ ॥

( ২৬৪ পা ) “আত্মারামা” ইতি ॥ এ শ্লোকের অর্থাৎ এই “আত্মারামা” শ্লোকের ॥ ২ ॥

( ২৬৪ পা ) “আশ্চর্য্য...প্রকাশে ॥” এই ২য় পয়ারের ভাবার্থ সরল । আশ্চর্য্য শুনিয়া অর্থাৎ এই শ্লোকের আঠার প্রকার অর্থ করিয়াছেন, ইহা শুনিয়া আমি আশ্চর্য্য হইয়াছি । তোমা সবা সঙ্গে, কৃষ্ণভক্ত সঙ্গে ॥ ২ ॥

( ২৬৪ পা ) “একাদশ...প্রাপ্তি ॥” এই ৩য় পয়ারের ভাবার্থ । মহাপ্রভু “আত্মারামা” শ্লোকের একাদশ পদকে ভিন্ন ভিন্ন করিয়া আত্মা শব্দের অর্থ করিতেছেন, “আত্মা শব্দ” ইতি । আত্মা শব্দে ব্রহ্ম, দেহ, মন ও যত্নাদি সাতটি ॥ ৩ ॥

( ২৬৪ পা ) “আত্মেতি ।” আত্মা শব্দে ব্রহ্ম ও দেহাদি ষে সাতটি অর্থ, তাহা প্রমাণ করিলেন ॥ ৩ ॥

( ২৬৪ পা ) “এই সাত্তে...মিলন ॥” এই ৪ পয়ারের ভাবার্থ । “রমে যেই” স্থানে “রমে যেই” পাঠ হইবে ।

এই সাত্তে অর্থাৎ ব্রহ্ম, বেদ, মন, বস, বৈষ্ণ,

বুদ্ধি ও স্বভাব এই সাতটির মধ্যে কোনটিতে যিনি রমণ করেন, তিনি আত্মারাম । ইহারা কিরূপে আত্মারাম, তাহা পরে বলিব । মুন্যাদি অর্থাৎ চ. মুনয়ঃ নিগ্রহা, অপি, উরুক্রমে, কুর্বন্তি, অহৈতুকীং. তক্রিং. ইখন্তুতগুণঃ, হরিঃ । এই দশটি পদের প্রথমে প্রত্যেকের ভিন্ন ভিন্ন অর্থ করিয়া পাছে ( পরে ) এই সব অর্থের মিলন করিয়া ॥ ৪ ॥

( ২৬৪ পা ) “মুনি. শব্দে.....ঋষি-মুনি ।” এই ৫ পয়ারের ভাবার্থ । মুন্যাদি দশটি পদের অর্থ করিতে প্রথমে মুনয়ঃ পদের অর্থ করিতেছেন, “মুনি” ইতি । মুনি শব্দের প্রথমার বহুবচনে “মুনয়ঃ” হয় । অতএব মুনি শব্দে মননশীল, মৌনী, তপস্বী, ব্রতী, যতি, ঋষি, মুনি অর্থ বুঝায় ॥ ৫ ॥

( ২৬৪ পা ) “নিগ্রহ...নির্জন ॥” এই ৬ পয়ারের ভাবার্থ । মুন্যাদি দশটি পদের মধ্যে নিগ্রহ পদের অর্থ করিতেছেন, “নিগ্রহ” ইতি । নিগ্রহ শব্দের অর্থ অবিদ্যাগ্রহহীন অর্থাৎ মায়াতীত বা বিধিনিষেধাতীত ; জ্ঞানাদিবিহীন অর্থাৎ মুখ, স্নেহাদি নীচ, ধনসঞ্চয়ী ( বিঘনী ) ও নির্জন- ( দরিদ্র ) ॥ ৬ ॥

( ২৬৫ পা ) “নির্নিশ্চয়ে” ইতি । “নিগ্রহ শব্দে” ইত্যাদি পয়ারোক্ত নিগ্রহ পদের অর্থ বাহা করিয়াছেন, তাহা প্রমাণিত করিলেন ॥ ৪।৫ ॥

( ২৬৫ পা ) “উরুক্রম...ত্রিভুবন ॥” এই ৭ পয়ারের ভাবার্থ । মুন্যাদি দশটি পদের মধ্যে উরুক্রম পদের অর্থ করিতেছেন, “উরুক্রম” ইতি ।

উক্রমের শব্দের অর্থ বৃহৎ ( বড় ) বারক্রম ।  
ক্রম শব্দের অর্থ বলিতেছেন, “ক্রম শব্দে” ইতি ।  
পানবিক্ষেপণ, শক্তি, কম্প, পরিপাটী, শক্তি দ্বারা  
ধারণাদি ও আক্রমণ । শ্রীকৃষ্ণের পদচালনে  
ত্রিভুবন কম্পিত হয় বলিয়া, উক্রম বলিতে  
শ্রীকৃষ্ণই ॥ ৭ ॥

( ২৬৫ পা ) “বিশেষাবিত্তি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্ণে প্রকাশ  
আছে । “চরণচালনে” পয়ার প্রমাণ এই  
শ্লোক । ইহাতে শ্রীকৃষ্ণের শক্তি, পৃথিবী  
কম্প দৃষ্ট হইল ॥ ৬ ॥

( ২৬৫ পা ) “বিভূরূপে.....রচন ॥”  
এই ৮ পয়ারের ভাবার্থ ।

শ্রীকৃষ্ণ বিভূরূপে ব্রহ্মাণ্ড ব্যাপিয়া থাকেন ।  
ইহাতে আক্রমণ এবং ব্রহ্মাণ্ডকে ধারণ ও পোষণ  
করার শক্তি প্রকাশ পাইল । পরিপাটী দেখাই-  
তেছেন, “মাধুর্য্য” ইতি । প্রপঞ্চ রচনার, চালন  
ও কম্প কার্য্য দৃষ্ট হয় । অতএব ক্রম শব্দে শক্তি,  
পরিপাটী, কম্প, পানবিক্ষেপনাদি কয়েকটি অর্থের  
দ্বারা শ্রীকৃষ্ণই বোধিত হইল ॥ ৮ ॥

( ২৬৫ পা ) “ক্রমঃ শক্তাবিত্তি ।”  
“ক্রম শব্দে” ইত্যাদি পয়ারোক্ত ক্রম  
শব্দের অর্থ যাহা করিয়াছেন, তাহা  
প্রমাণ করিলেন ॥ ৭ ॥

( ২৬৫ পা ) “কুর্কৃষ্ণি.....কহয় ॥”  
এই ৯ পয়ারের ভাবার্থ সরল । মুন্যাদি  
দশটি পদের মধ্যে কুর্কৃষ্ণি পদের অর্থ  
করিতেছেন, “কুর্কৃষ্ণি” ইতি । কুর্কৃষ্ণি  
পদের অর্থ শ্রীকৃষ্ণের মুখের জন্য ভজন  
করেন ॥ ৯ ॥

( ২৬৫ পা ) “স্মরিতেতি ।” “কুর্কৃষ্ণি”  
ইতি পয়ার প্রমাণ এই সূত্র ॥ ৮ ॥

( ২৬৫ পা ) “হেতু শব্দে... ..

উপর সবার ॥” এই ১০ ও ১১ পয়ারের  
ভাবার্থ । মুন্যাদি পদের মধ্যে অহৈ-  
তুকীং পদের অর্থাৎ হেতু শূন্য ; ইহার  
অর্থ করিতে হেতু শব্দের অর্থ করিতে-  
ছেন, “হেতু শব্দে কহে” ইত্যাদি । এই  
যাঁহা অর্থাৎ অনন্ত প্রকার ভুক্তি, অষ্টাদশ  
সিদ্ধি ও মালোক্যাদি পাঁচপ্রকার মুক্তি  
যাহাতে নাহি, তাহা অহৈতুকী ভুক্তি ।

অষ্টাদশ সিদ্ধি বর্ণা,—অনিমা, লঘিমা, মহিমা,  
প্রাপ্তি, প্রেকাম্য, বশিতা, কৈশিতা, কামাবসারিতা,  
অহর্নিদ্রা, ব্রহ্মশ্রবণ, ব্রহ্মদর্শন, মনোজব, কামস্বপতা,  
পরকার প্রবেশ, ইচ্ছামৃত্যু, বেৎজীড়াপ্রাপ্তি,  
সকলানুরূপসিদ্ধি ও অপ্রতিহতাজতা । ভুক্তি  
শব্দের অর্থ নববিধা ভুক্তি । নববিধা কি, তাহা  
বলিতেছেন, প্রবণাদি সাধনভুক্তি একটি এবং  
প্রেম, মেহ, মান, প্রণয়, রাগাদি আটটি প্রেম-  
ভুক্তি । ঐ প্রেমভুক্তি আবার রতিলক্ষণাদি নামে  
প্রচারিত হয় । মহাত্মাব, সকলের উপর । “হেতু  
শব্দে” পয়ার হইতে “শ্রীকৃষ্ণকৌতুকী” পয়ার পর্য্যন্ত  
অহৈতুকী পদের অর্থ করিলেন । ভুক্তি পদের  
অর্থ করিতেছেন “ভুক্তি শব্দের অর্থ” এই পয়ার  
হইতে “অর্থের মহিমা” পয়ার পর্য্যন্ত ॥ ১০।১১ ॥

( ২৬৬ পা ) “শাস্তভক্তের.....তুল্য  
হয় ॥” এই ১২ ও ১৩ পয়ারের ভাবার্থ ।

শাস্ত দাত্তাদি পাঁচ প্রকার ভক্তগণ মধ্যে কোন  
ভক্ত, আট প্রকার প্রেমভক্তিতে কোন পর্য্যন্ত  
অধিকারী হন, অর্থাৎ কাহার রতি কোন পর্য্যন্ত  
বৃদ্ধি পায়, তাহা বলিতেছেন, “শাস্তভক্তের”  
ইত্যাদি । অতএব ভক্তি বলিতে সাধন হইতে  
মহাত্মাব পর্য্যন্ত বৃদ্ধিতে হইবে ।

মুন্যাদি দশটি পদের মধ্যে “ঐশ্বস্ত  
গুণঃ” পদের অর্থ করিতেছেন, “ঐশ্বস্ত  
গুণঃ শব্দের” ইত্যাদি । ঐশ্বস্ত পদের

প্রথমে অর্থ বলিতেছেন, ইথন্তু শব্দে পূর্ণানন্দময়; যাহার নিকট ব্রহ্মানন্দ তুণতুল্য তুচ্ছ হয় ॥ ১২।১৩ ॥

( ২৬৬ পা ) “ত্বৎসাক্ষাদিতি ।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা আদির ৮৭ পৃষ্ঠায় দেখুন। “যার আগে” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৯ ॥

( ২৬৬ পা ) “সর্সাক্ষক...সার ॥” এই ১৪ হইতে ১৬ পর্য্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ। পূর্ণানন্দময়ের লক্ষণ বলিতেছেন, “সর্সাক্ষক” ইত্যাদি ।

ইথন্তু অর্থাৎ এই প্রকার। শ্রীকৃষ্ণ সকলকে আকর্ষণ করেন, আনন্দ প্রদান এবং আশ্চর্য্যাবিত্ত করেন, তুষ্টি, সিদ্ধি ও মুক্তি কামনা ভাগ করান, শাস্ত্রযুক্তি চাড়াইয়া অলৌকিক শক্তি ও গুণ দ্বারা জীবকে নিজরূপার বন্ধন করেন। ইত্যাদি প্রকার শ্রীকৃষ্ণের স্বভাব বলিয়া, তিনি পূর্ণানন্দময়। অথবা বাহ্যতে শ্রেষ্ঠ মাধুর্য্য আছে, তিনি পূর্ণানন্দময়। যে মাধুর্য্যে সকলে আকর্ষিত, আনন্দিত ও আশ্চর্য্যাবিত্ত হন। যে মাধুর্য্যলোভে জীবগণ শাস্ত্রযুক্তি, তুষ্টি, সিদ্ধি ও মুক্তি প্রভৃতি ভাগ করেন। “আনন্দময়োহত্যাসাৎ” (১।১।১২) বেদান্তের এই সূত্রে উক্ত হইয়াছে, “এতৎ স্বরমানন্দঃ পরানপ্যানন্দময়তি যথা প্রচুরধনঃ পরভ্যো ধনং দদাতীতি প্রাচুর্য্যার্থে ময়তিতি ।” অর্থাৎ যেমন প্রচুর ধন থাকিলে অন্যকে প্রদান করে; তদ্রূপ শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং আনন্দস্বরূপ হইয়া জীবকে আনন্দিত করেন। প্রাচুর্য্যার্থে ময়তি প্রভাষ। অতএব “সর্সাক্ষক” ইত্যাদি পয়ারোক্ত স্বভাববিশিষ্ট হওয়ার শ্রীকৃষ্ণ পূর্ণানন্দময়। পূর্ণানন্দময়ই ইথন্তু পদের অর্থ ॥ ১৪-১৬ ॥

( ২৬৬ পা ) “গুণ... গুণে ॥” এই ১৭ হইতে ১৯ পর্য্যন্ত পয়ারের ভাবার্থ। “ইথন্তুগুণঃ” পদের মধ্যে

ইথন্তুতের অর্থ করিয়া গুণ শব্দের অর্থ করিতেছেন, “গুণ শব্দের অর্থ” ইত্যাদি ।

সৌরভাদি অর্থাৎ আদি পদে লীলা ও বংশী-ধ্বনি প্রভৃতি বৃত্তিতে হইবে। শ্রীকৃষ্ণের গুণে সকলে আকৃষ্ট হয়, ইহা সজ্ঞেপে দেখাটতে, প্রথমে সনকাদির কথা বলিতেছেন, “সনকাদির মন” ইত্যাদি ॥ ১৭-১৯ ॥

( ২৬৬ পা ) “তস্তারবিন্দেতি ।” শ্লোকের ঢীকা বাঙ্গলা মধ্যের ১৭১ পৃষ্ঠায় দেখুন। “সনকাদির মন” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১০ ॥

( ২৬৬ পা ) “পরিমিত্তি” ইতি । শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “শুকদেবের মন” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১১ ॥

( ২৬৬ পা ) “স্বস্থেতি ।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১৭১ পৃষ্ঠায় দেখুন। এই শ্লোকটিও “শুকদেবের” পয়ার প্রমাণ ॥ ১২ ॥

( ২৬৬ পা ) “বীক্ষ্যালকেতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “শ্রীঅঙ্গে শ্রীরূপে” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৩ ॥

( ২৬৭ পা ) “শ্রদ্ধা গুণানিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “রূপগুণ শ্রবণে” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ১৪ ॥

( ২৬৭ পা ) “কস্মানুভাবশ্চেতি ।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ৭২ পৃষ্ঠায় দেখুন। “বংশীগীতি” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৫ ॥

( ২৬৭ পা ) “কাস্ম্যজেতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।



‘ব্রহ্ম শব্দের’ পয়ার প্রমাণ শ্লোক । ব্রহ্ম শব্দের অর্থ সর্ভাপেক্ষা বৃহৎ বস্তু । ঐহ্যার সমান স্বরূপ ও ঐশ্বর্য্য অন্যের নাই, তাহাই সর্ভাপেক্ষা বৃহৎ ॥ ২১ ॥

( ২৬৮ পা ) “সেই ব্রহ্ম.....নাহি আন ॥” এই ৩৩ পয়ারের ভাবার্থ । শ্রীনারায়ণাদি শ্রীকৃষ্ণের রূপে আকৃষ্ট হইয়ন বলিয়া, ব্রহ্ম শব্দে স্বয়ং ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণই বোধিত হন । শ্রীকৃষ্ণই অদ্বিতীয় জ্ঞানতত্ত্ব । ইহা ব্যতীত অন্য তত্ত্ব নাই ; সকল তত্ত্বই ঐ অদ্বিতীয় জ্ঞান-তত্ত্বের অন্তর্ভূত ॥ ৩৩ ॥

( ২৬৮ পা ) “বদন্তীতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ১৮ পৃষ্ঠায় দেখুন । ‘অদ্বিতীয়জ্ঞান’ পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২২ ॥

( ২৬৯ পা ) “সেই...নাহি আন ॥” এই ৩৪ পয়ারের ভাবার্থ । কালত্রয়ে অর্থাৎ ভূত, ভবিষ্যৎ ও বর্তমান শ্রীকৃষ্ণ ব্যতীত অন্য কিছুই না থাকায়, শ্রীকৃষ্ণই অদ্বয় তত্ত্ব ॥ ৩৪ ॥

( ২৬৯ পা ) “অহমেবেতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৯ পৃষ্ঠায় দেখুন । শ্রীকৃষ্ণ ব্রহ্মাকে এই শ্লোক বলেন । কালত্রয়ে শ্রীকৃষ্ণ ব্যতীত অপর কিছু থাকে না ; তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২৩ ॥

( ২৬৯ পা ) “ঐহ্য শব্দে...স্বরূপ ।” এই ৩৫ পয়ারের ভাবার্থ ।

আত্মা শব্দের ব্রহ্ম অর্থ করিয়া, সেই ব্রহ্ম কি, তাহা বলিলেন । এক্ষণে অর্থাস্তর বলিতেছেন, অথবা আত্মা শব্দে বৃহৎবিশিষ্ট স্বরূপ সর্ভব্যাপক, সর্ভসাকী-পুরুষ শ্রীকৃষ্ণ বোধিত হয় । সর্ভব্যাপক ও সার্বভৌমাদি গুণ ঐহ্যার আছে, তিনি

আত্মা । অতএব বৃহৎ, সার্বভৌম সর্ভব্যাপক-বাদি গুণ শ্রীকৃষ্ণের থাকায়, শ্রীকৃষ্ণই আত্মা, ইহা প্রতিপন্ন হইতেছে ॥ ৩৫ ॥

( ২৬৯ পা ) “আততত্বাদিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । সার্বভৌম ও সর্ভব্যাপকত্বাদি গুণবিশিষ্ট পদার্থ যে আত্মা, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ২৪ ॥

( ২৬৯ পা ) “সেই কৃষ্ণ...প্রকাশে ॥” এই ৩৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল । শ্রীকৃষ্ণ প্রাপ্তির সাধন; বলিতেছেন, “সেই কৃষ্ণ প্রাপ্তি ।” ইত্যাদি । সেই কৃষ্ণ অর্থাৎ অদ্বয়তত্ত্ব বা সর্ভব্যাপকত্বাদি গুণবিশিষ্ট কৃষ্ণ ॥ ৩৬ ॥

( ২৬৯ পা ) “বদন্তীতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ১৮ পৃষ্ঠায় দেখুন । “তিন সাধনে” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২৫ ॥

( ২৬৯ পা ) “ব্রহ্ম আত্মা...ভগবান্ পায় ॥” এই ৩৭ হইতে ৩৯ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ ।

ব্রহ্ম ও আত্মা শব্দের বিশেষ অর্থে শ্রীকৃষ্ণ বোধিত হয় ; আর রূঢ়িবৃত্তিতে অর্থাৎ সঙ্কেতে নির্কিংশে ও অন্তর্গামী বোধিত হয় । জ্ঞানমার্গে নির্কিংশে ও যোগমার্গে অন্তর্গামিরূপ প্রকাশ হয় । ভক্তি দুই প্রকার বলিয়া, ভক্তিতে ভগবানের প্রকাশও দুই প্রকার ; ইহা বলিতেছেন, “রাগ-ভক্তি” ইত্যাদি । “ভাগবৎ” স্থানে “ভগবৎ” পাঠ হইবে । রাগ ও বৈদী ভেদে ভক্তি ত্রিবিধা ; রাগভক্তিতে স্বয়ং ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণরূপে এবং বৈদী-ভক্তিতে পূর্ভগবান্ নারায়ণরূপে প্রকাশ পান । ইহাই বলিতেছেন, “রাগভক্ত্যে” ইতি ॥ ৩৭-৩৯ ॥

( ২৬৯ পা ) “নারসিতি ।” শ্লোকের

টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ৭৮ পৃষ্ঠায় দেখুন। “রাগভক্ত্যে” পয়ার প্রমাণ শ্লোক।

(২৬৯ পা) “বিধি.....যায় ॥” এই ৪০ পয়ারের ভাবার্থ। বৈদীভক্তি দ্বারা পার্শ্বদেহ ও বৈকুণ্ঠ প্রাপ্তি হয়। অতএব বৈদীভক্তিতে নারায়ণরূপ প্রকাশ পায় ॥ ৪০ ॥

(২৬৯ পা) “যচ্চ ব্রহ্মস্বীতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “বিধিভক্তি” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২৭ ॥

(২৬৯ পা) “সেই.....মোক্ক কাম আর ॥” এই ৪১ পয়ারের ভাবার্থ। সেই অর্থাৎ বৈদীভক্তির উপাসক আবার তিন প্রকার যথা, কাম, অকাম, সর্ল-কাম ও মোক্ককাম ॥ ৪১ ॥

(২৬৯ পা) “অকাম ইতি।” ইহার টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৩৮ পৃষ্ঠায় দেখুন। “সেই উপাসক” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২৮ ॥

(২৭০ পা) “বুদ্ধিমানের...জন ॥” এই ৪২ পয়ারের ভাবার্থ। “অকাম” শ্লোকোক্ত উদারধী: শব্দের অর্থ বুদ্ধিমান অর্থাৎ নিচারণজ।

অঙ্গাগল স্তননার অর্থাৎ ছাগলের গলার যে স্তন থাকে, সেই স্তন দ্বারা যেমন কোন কার্য্য হয় না, তদ্রূপ স্বাভাবিক প্রবলা ভক্তি ব্যতীত অন্য সাধনে কোন ফল পাওয়া যায় না বলিয়া, বুদ্ধিমান ব্যক্তি শ্রীকৃষ্ণকে ভজন করেন ॥ ৪২ ॥

(২৭০ পা) “চতুর্নিধেতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

“অতএব হরি ভজে” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২৯ ॥

(২৭০ পা) “আর্জ অর্থাৎ..... শুদ্ধভক্তি পায় ॥” এই ৪৩ হইতে ৪৫ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। চতুর্নিধেতি শ্লোকোক্ত আর্জ অর্থাৎ দুইজন সকামী এবং জিজ্ঞাসু ও জ্ঞানী দুইজন মোক্ক-কামী। তত্তৎ, সেই সেই। কৃষ্ণ রূপায় বা সাধুসঙ্গে সকামী ও মোক্ককামী শুদ্ধ-ভক্তিমান হইয়া নিকামী হইয়েন ॥ ৪৩-৪৫ ॥

(২৭০ পা) “সৎসঙ্গাদিতি।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “সাধুসঙ্গ” ইত্যাদি পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৩০ ॥

(২৭০ পা) “দুঃসঙ্গ.....কামনা ॥” এই ৪৬ পয়ারের ভাবার্থ। দুঃসঙ্গ কি, তাহা বলিতেছেন, “দুঃসঙ্গ” ইতি। শ্রীকৃষ্ণ ও শ্রীকৃষ্ণভক্তি ব্যতীত অস্ত্র কামনা বা কৈতব অর্থাৎ আত্মাকে যাহাতে বঞ্চনা করা হয়, সেই মোক্ক প্রভৃতি সবাই দুঃসঙ্গ। লয়ে আত্মার জ্ঞান হয় না বলিয়া, উহা আত্ম-বঞ্চনা ॥ ৪৬ ॥

(২৭০ পা) “দর্শ ইতি।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ১৪ পৃষ্ঠায় দেখুন। মোক্ক যে কৈতব, তাহা এই শ্লোকে প্রতিপন্ন করিলেন ॥ ৩১ ॥

(২৭০ পা) “সত্যমিতি।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৩৮ পৃষ্ঠায় দেখুন। “সকাম ভক্ত” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৩২ ॥

(২৭০ পা) “সাধুসঙ্গ...পরকাশ ॥” এই ৪৮ ও ৪৯ পয়ারের ভাবার্থ সরল।

এই তিনে, সাধুর সঙ্গ ও কৃষ্ণের রূপা  
এবং ভক্তির স্বভাবে। “আম্মারামাঃ”  
ব্যাখ্যা করিবার জন্য অর্থের আভাস  
বলিয়া, এক্ষণে অর্থ করিতেছেন ॥৪৮।৪৯

( ২৭১ পা ) “জ্ঞানমার্গে...ভজন ॥”

এই ৫০ ও ৫১ পয়ারের ভাবার্থ।

আম্মা শব্দে যদি ব্রহ্ম হয়; জ্ঞানমার্গে ব্রহ্মের  
উপাসক দুই প্রকার; এক কেবল ব্রহ্মোপাসক,  
অর্থাৎ আম্মার ব্রহ্মসম্পত্তির জন্য ব্রহ্মের উপাসক,  
অপর মোক্ষাভ্যাসী অর্থাৎ মুক্তির নিমিত্ত ব্রহ্মের  
উপাসক। কেবল ব্রহ্মোপাসক আবার সাধক  
অর্থাৎ অপ্রাপ্ত ব্রহ্মতানাম্মা, ব্রহ্মময় অর্থাৎ প্রাপ্ত-  
ব্রহ্মতানাম্মা এবং প্রাপ্তব্রহ্মণ্য অর্থাৎ ব্রহ্মদীন ভেদে  
তিন প্রকার। ভক্তি ব্যতীত কেবল জ্ঞানে মুক্তি  
হয় না বলিয়া, জ্ঞানী ভক্তির সহিত জ্ঞান সাধন  
করিয়া ব্রহ্মে গৌন হয়; কিন্তু ভক্তির স্বভাব  
প্রাপ্তব্রহ্মণ্য ব্যক্তিকে ব্রহ্ম হইতে আকর্ষণ করিয়া  
দিব্যদেহ প্রদান করতঃ শ্রীকৃষ্ণের ভজন করায়।  
তখন প্রাপ্তব্রহ্মণ্য ব্যক্তি ভক্তদেহ পাইলে কৃষ্ণ-  
শুণের স্মরণ হয় এবং সেই গুণে আকৃষ্ট হইয়া  
শুদ্ধ ভজন করেন। “আম্মারামাঃ” শ্লোকের এই  
একটি অর্থ হইল- ৫০।৫১ ॥

( ২৭১ পা ) “মুক্তা অপীতি।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। “ভক্তদেহ” ইত্যাদি পয়ার  
প্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৩৩ ॥

( ২৭১ পা ) “জন্ম হৈতে...ভজন ॥”  
এই ৫২ পয়ারের ভাবার্থ।

কেবল ব্রহ্মোপাসকের বে, তিন প্রকার ভেদ  
বনিরাছেন, তন্মধ্যে প্রাপ্তব্রহ্মণ্য ব্যক্তি শ্রীকৃষ্ণ  
ভজন করেন; ইহা বলিয়া, ব্রহ্মময় ব্যক্তিও  
শ্রীকৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট হইয়া শ্রীকৃষ্ণ ভজন করেন;  
ইহা বলিতেছেন, “জন্ম হৈতে” ইত্যাদি জন্ম হই-  
তেই শুক ও মুনকাদি প্রাপ্তব্রহ্মতানাম্মা। ইহারাত

শ্রীকৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট হইয়া শ্রীকৃষ্ণ ভজন করেন।  
শ্রীকৃষ্ণের কোন গুণে সনকাদি আকৃষ্ট হন,  
তাহা বলিতেছেন, “সনকাদ্যো” ইতি। শ্রীকৃষ্ণের  
সৌরভে সনকাদি আকৃষ্ট হন। “আম্মারামাঃ”  
শ্লোকের আর একটি অর্থ হওয়ার সাক্ষ্যে দুইটি  
অর্থ হইল ॥ ৫২ ॥

( ২৭১ পা ) “তস্মারবিন্দেতি।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১৭১  
পৃষ্ঠায় দেখুন। “সনকাদ্যো” পয়ার  
প্রমাণ শ্লোক ॥ ৩৪ ॥

( ২৭১ পা ) “ব্যাসকৃপায় ..ভজন ॥”  
এই ৫৩ পয়ারের ভাবার্থ। যদি বল,  
শুকদেব কোন গুণে আকৃষ্ট হন?  
তাহাতে বলিতেছেন, “ব্যাসকৃপায়”  
ইতি ॥ ৫৩ ॥

( ২৭১ পা ) “হরৈরিত্তি।” শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
“ব্যাসকৃপায়” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৩৫ ॥

( ২৭১ পা ) “নবযোগেশ্বর.....  
বিবরণ ॥” এই ৫৪ পয়ারের ভাবার্থ।

প্রাপ্তব্রহ্মণ্য ও ব্রহ্মময় এই উভয় ব্যক্তিই  
কৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট হইয়া শ্রীকৃষ্ণ-ভজন করেন, ইহা  
বলিয়া সাধক জ্ঞানী যে কৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট হইয়া  
শ্রীকৃষ্ণ ভজন করেন; তাহা দেখাইতেছেন,  
“নবযোগেশ্বর” ইত্যাদি। নবযোগেশ্বরগণ জন্ম  
হইতেই জ্ঞানমার্গের সাধকজ্ঞানী। ইহারাত  
ব্রহ্মা, শিব ও নারদের মুখে শ্রীকৃষ্ণগুণ শ্রবণ  
করিয়া, তাহাতে আকৃষ্ট হওতঃ শ্রীকৃষ্ণভজন  
করেন। শ্রীভাগবতে একাদশ স্কন্ধে ইহা উক্ত  
হইয়াছে। “আম্মারামা” শ্লোকের এই অর্থে  
তিন প্রকার অর্থ হইল ॥ ৫৪ ॥

( ২৭১ পা ) “অক্লেশামিতি।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ

আছে। নবমোপদেশের গণ-স্রষ্টার মূর্খে যে কৃষ্ণগুণ শ্রীলগ্ন করিয়া শ্রীকৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট হন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ৩৬।

(২৭১ পা) “মোকাকাজী... .. ভজন ॥” এই ৫৭ পরায়ের ভাবার্থ।

কেবল ব্রহ্মোপাসকের ন্যায় মোকাকাজীও তিন প্রকার বধা, মুমুকু, জীবমুক্ত ও প্রাপ্তবরূপ অর্থাৎ বিদেহ। সাক্ষ্যে জানী বড় বিধ। জানির বাচ্‌বিধা বশতঃ শ্লোকটিতে পৃথক পৃথক ছয়টি অর্থের প্রাপ্তি হইতেছে। জিবধ মোকাকাজীর মধ্যে মুমুকুর কৃষ্ণভজন বলিতেছেন, “মুমুকু” ইতি। সাংসারিক জ্ঞানই মুমুকু; তাহার মুক্তির জন্য তক্তি দ্বারা শ্রীকৃষ্ণ ভজন করেন, শ্লোকটির পৃথক পৃথক চারিটি অর্থ হইল ॥ ৫৫ ॥

(২৭২ পা) “মুমুকু” ইতি। শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “মুক্তি লাগি” পরায় প্রমাণ শ্লোক। শ্রীকৃষ্ণ উপাসনাই যে মুক্তির উপায়, তাহাও প্রতিপন্ন হইল ॥ ৩৭ ॥

(২৭২ পা) “সেই সবেল ... .. ছাড়ায় ॥” এই ৫৬ পরায়ের ভাবার্থ। সাধুসঙ্গে সেই সবেল অর্থাৎ মুমুকুগণের কৃষ্ণগুণ ক্ষুধা পায় এবং শ্রীকৃষ্ণ ভজনের ইচ্ছা হয় ও মুক্তির ইচ্ছা ত্যাগ করায় ॥ ৫৬ ॥

(২৭২ পা) “অহো মহাম্মিতি ॥” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “সেই সবেল” পরায় প্রমাণ শ্লোক ৩৮।

(২৭২ পা) “নারদের ... .. তার পায় ॥” এই ৫৭ পরায়ের ভাবার্থ।

যদি ব্রহ্মোপাসকের ন্যায় মুমুকুর ইচ্ছা হয় যে

বলিতেছেন: “নারদের” ইতি। খৌলকাহি মুনিগণ সাধু নারদের সঙ্গে মুক্তিলাভ ত্যাগ করিয়া কৃষ্ণভজন করেন। তন্মধ্যে কেহ কৃষ্ণের দর্শনে বা তাহার রূপার তাহার গুণে আকৃষ্ট হইয়া শ্রীকৃষ্ণ ভজন করেন। শ্রীকৃষ্ণের রূপার, যে গুণে আকৃষ্ট হইয়া কৃষ্ণ ভজন করেন, তাহা পর শ্লোকে দেখাইতেছেন ॥ ৫৭ ॥

(২৭২ পা) “অস্মিন্নিতি ॥” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “নারদের সনে” ইত্যাদি পরায় প্রমাণ শ্লোক ৩৯ ॥

(২৭২ পা) “জীবমুক্ত ... .. মজে ॥” এই ৫৮ পরায়ের ভাবার্থ।

জিবধ মোকাকাজির মধ্যে জীবমুক্ত অনেকপ্রকার হইলেও প্রধানতঃ দুই প্রকার; বধা,—তক্তিদ্বারা জীবমুক্ত ও জ্ঞানে জীবমুক্ত। তন্মধ্যে তক্তিদ্বারা জীবমুক্তই কৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট হইয়া কৃষ্ণ ভজন করেন। শুদ্ধজ্ঞানে অর্থাৎ “অহং ব্রহ্ম” বৃত্তিতে জীবমুক্ত অপরাধী হয়। শ্লোকটির পাঁচপ্রকার অর্থ হইল ॥ ৫৮ ॥

(২৭২ পা) “যেহেতু” ইতি। শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৩৩ পৃষ্ঠায় দেখুন। “শুদ্ধজ্ঞানে” পরায় প্রমাণ শ্লোক ৪০ ॥

(২৭২ পা) “ব্রহ্মভূত” ইতি। শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ৬৫ পৃষ্ঠায় দেখুন। “ভক্ত্যে জীবমুক্ত” পরায় প্রমাণ শ্লোক ৪১ ॥

(২৭২ পা) “অধৈতবীণিতি ॥” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১০৪ পৃষ্ঠায় দেখুন। “ভক্ত্যে জীবমুক্ত” পরায় প্রমাণ শ্লোক ৪২ ॥

(২৭২ পা) “তত্ত্বিন্দে



পায় ॥” এই ৫৯ পয়ারের ভাবার্থ সরল ।

শ্লোকের ছয় প্রকার অর্থ করিলেন ॥১৯॥

( ২৭৩ পা ) “মুক্তিহীতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
প্রাপ্তস্বরূপ প্রমাণ শ্লোক ॥ ৪৩ ॥

( ২৭৩ পা ) “ভয়মিতি ।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২০৬ পৃষ্ঠায় দেখুন । “কৃষ্ণবহিস্মুখদোষে” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৪৪ ॥

( ২৭৩ পা ) “ভক্তি ... হয় ॥” এই ৬১ পয়ারের ভাবার্থ সরল । ভক্ত্যে, ভক্তিদ্বারা ॥ ৬১ ॥

( ২৭৩ পা ) “দৈবী হ্যেবেতি ।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২০৬ পৃষ্ঠায় দেখুন । ভক্তি দ্বারা মুক্তি হয়, তৎপ্রমাণ শ্লোক ॥ ৪৫ ॥

( ২৭৩ পা ) “শ্রেয়ঃ সৃতিমিতি ।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৩১ পৃষ্ঠায় দেখুন । ভক্তি বিনা ভক্তি হয় না, তৎপ্রমাণ শ্লোক ॥ ৪৬ ॥

( ২৭৩ পা ) “যেহন্তে ইতি ।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৩৬ পৃষ্ঠায় দেখুন । “ভক্তি বিনা” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৪৭ ॥

( ২৭৩ পা ) “মুখবাহুরিতি ।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৩৬ পৃষ্ঠায় দেখুন । “ভক্তি বিনা” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৪৮ ॥

( ২৭৩ পা ) “ভক্ত্যে ... ভক্তয় ॥” এই ৬২ পয়ারের ভাবার্থ সরল । ভক্তি দ্বারা মুক্তি পাইলে, মুক্ত অবশ্য কৃষ্ণ-ভক্তন করেন ॥ ৬২ ॥

( ২৭৩ পা ) “মুক্তা অপীতি ।” শ্লোকের ঢীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৭১ পৃষ্ঠায় দেখুন । “ভক্ত্যে মুক্তি” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৪৯ ॥

( ২৭৩ পা ) “এই ছয় ... জন কহে ॥” এই ৩৩ হইতে ৬৬ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ ।

এই ছয় আশ্বারাম অর্থাৎ সাধক, ব্রহ্মময়, প্রাপ্তব্রহ্মলয়, মুমুকু, জীবমুক্ত এবং প্রাপ্তস্বরূপ এই ছয় জনই আশ্বারাম । শ্লোকোক্ত চকার শব্দে পৃথক পৃথক অর্থের বোধ হওয়াতে ছয় প্রকার আশ্বারাম প্রত্যেকেই শ্রীকৃষ্ণভজন করেন বুঝাইল । মনয়ঃ সন্ত অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণমননে আসক্ত হওতঃ । বাহা য়েই যুক্ত অর্থাৎ যেখানে যেরূপ অর্থের সঙ্গতি হয় সেখানে নিগ্রহা শব্দে মায়াতীত এবং মুখ অর্থ যোগ করিতে হইবে । অতএব এখানে নিগ্রহা শব্দে মায়াতীত বুঝাই-  
তেছে । শ্লোকের ছয়প্রকার অর্থ করিয়া আর এক প্রকার অর্থ বলিতেছেন “চ শব্দে” ইত্যাদি । ইত্যন্তের অর্থাৎ অতোত্তার্থ ॥ ৬৩-৬৬ ॥

( ২৭৩ পা ) “শ্বরূপানামিতি ।” ইতি সূত্রের তাৎপর্য সূত্রার্থে প্রকাশ আছে । “এক আশ্বারাম শব্দ” পয়ার প্রমাণ এই সূত্র ॥ ৫০ ॥

( ২৭৩ পা ) “তবে যে ... বিভেদ ॥” এই ৬৭ পয়ার হইতে ৬৯ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ ।

আশ্বারাম আশ্বারাম ছয়বার বলিয়া একশেষ সমাসে আশ্বারামাঃ পদ হয়, সুতরাং ষড়্বিধ আশ্বারাম ও শ্রীকৃষ্ণ ভজন করেন । এখানে চ শব্দে অপর সমুচ্চর অর্থ বোধ হইতেছে । এখানে অপি শব্দের অর্থ সম্ভাবনা । ষড়্বিধ আশ্বারাম মায়াতীত হইয়াও শ্রীকৃষ্ণমননে আস-  
হওতঃ কৃষ্ণভজন করেন । এই একটি অর্থ

যারা শ্লোকের সাতপ্রকার অর্থ হইল। অপর অর্থ বলিতেছেন, “অন্তর্ধানি” ইত্যাদি। আত্মা শব্দে ব্রহ্ম অর্থ করিয়া, এখানে পরমাত্মা অর্থ গ্রহণ করিয়া আত্মারাম শব্দের অগ্রপ্রকার অর্থ বলিতেছেন। পরমাত্মার (অন্তর্ধানির) উপাসক যাহারা, তাঁহারা আত্মারাম অর্থাৎ যোগী। ঐ যোগী সগর্ভ অর্থাৎ ধ্যানাদি-আলম্বনবিশিষ্ট এবং নিগর্ভ অর্থাৎ ধ্যানাদি-আলম্বনরহিত ভেদে বিবিধ। সগর্ভ আবার তিন প্রকার। নিগর্ভ আবার তিন-প্রকার ॥ ৬৭-৬৯ ॥

( ২৭৪ পা ) “কচিদিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “অন্তর্ধানি” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৫১ ॥

( ২৭৪ পা ) “ভক্ত্যা দ্রবদিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। আত্মারাম যোগী যে, কৃষ্ণ-ভজনা করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৫২ ॥

( ২৭৪ পা ) “যোগারুরুক্ষু ... .. প্রকার ॥” এই ৭০ পয়ারের ভাবার্থ সরল। সগর্ভ যোগী যোগারুরুক্ষু, যোগারূঢ় ও প্রাণসিদ্ধি ভেদে তিন-প্রকার যেমন ভেদ ; তদ্রূপ নিগর্ভ যোগী ও যোগারুরুক্ষু প্রভৃতি ভেদে তিন প্রকার। অতএব সকল্যে যোগী ছয় প্রকার ॥ ৭০ ॥

( ২৭৪ পা ) “আরুরুক্ষোরিতি ।” শ্লোক দুইটির তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “যোগারুরুক্ষু” পয়ার প্রমাণ শ্লোক। প্রাণসিদ্ধ বলিতে সিদ্ধ-যোগী ॥ ৫৩, ৫৪ ॥

( ২৭৫ পা ) “এই ছয় ... সমর্থ ।” এই ৭১ ও ৭২ পয়ারের ভাবার্থ।

আত্মারাধাঃ ( আত্মনি পরমাত্মনি রমন্তে

ইতি বোগিনিঃ ) চ ( অপি ) নিগ্রহাঃ : ( মারাভীতাঃ ) অপি মনয়ঃ ( মননশীলাঃ সন্তঃ ) উরক্রমে অহৈতুকীং তক্তিং কুর্কতি হরিঃ ইখন্তুতগুণঃ ॥ অর্থাৎ ষড়্‌বিধ বোগীগণ ও নিগ্রহ হইয়াও শ্রীকৃষ্ণমননপরায়ণ এবং কৃষ্ণগুণাক্ট হইয়া শ্রীকৃষ্ণে তক্তি করেন। যোগীর ষড়্‌বিধ বশতঃ শ্লোকটিতে পৃথক্ পৃথক্ ছয়টি অর্থের লাভ হইল। অতএব সকল্যে ত্রেয়োদশ অর্থের লাভ হইল ॥ ৭১, ৭২ ॥

( ২৭৫ পা ) “এই সব ... চরণে ॥” এই ৭৩ পয়ারের ভাবার্থ। এই সব অর্থাৎ ঐ ছয়প্রকার যোগী যখন কৃষ্ণ-ভজনা করেন, তখন উহাদিগকে শান্ত ভক্ত বলে।

আত্মা শব্দে ব্রহ্ম, মন ও স্বভাবাদি ভেদে যে আটপ্রকার অর্থ করিয়াছেন, তন্মধ্যে এখানে আত্মা শব্দে মন অর্থ গ্রহণ করিয়া আর একটি অর্থ করিতেছেন, “আত্মা শব্দে” ইত্যাদি। আত্মারামাঃ ( আত্মনি মনসি রমন্তে ইতি মনো-রমণশীলাঃ ) অপি ( সাধুসঙ্গবলাৎ ) মনয়ঃ নিগ্রহাঃ চ ( সন্তঃ ) উরক্রমে অহৈতুকীং তক্তিং কুর্কতি হরিঃ ইখন্তুতগুণঃ। অর্থাৎ মনোরূপ স্তম্ভ শরীরে রমণশীল ব্যক্তিগণ ও সাধুসঙ্গবলে মননশীল, মারাভীত ও কৃষ্ণগুণাক্ট হইয়া শ্রীকৃষ্ণে তক্তি করেন ॥ ৭৩ ॥

( ২ ৫ পা ) “উদরমিতি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।

“সাধুসঙ্গে মেহ” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৫৫

( ২৭৫ পা ) “এহো ... হএম ॥” এই ৭৪ পয়ারের ভাবার্থ। এহো অর্থাৎ স্থলদৃষ্টি স্বষণণ অর্থাৎ মনোরূপ স্তম্ভ-শরীরে রমণশীল ব্যক্তিগণ। এই অর্থটির সহিত চতুর্দশ অর্থের লাভ হইল।

আত্মা শব্দে ব্রহ্ম অর্থ গ্রহণ করিয়া শ্লোকটির অপর একটি অর্থ করিতেছেন, “আত্মা শব্দে”

ইত্যাদি। মুনয়ঃ অপি আত্মারামাঃ ( যত্নশীলাঃ )  
নিগ্রহাঃ চ ( সন্তঃ ) উরুক্রমে অর্হেতুকাঃ ভক্তিঃ  
কুর্কন্তি হরিঃ ইথ্ভূতগুণাঃ । অর্থাৎ মূনিগণও  
যত্নশীল ও মায়াজীত হইয়া শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করেন।  
অতএব কৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট হইয়া মূনিগণ কৃষ্ণভজন  
করেন। এই অর্গটির সহিত পঞ্চদশ অর্ধের লাভ  
হইল ॥ ৭৪ ॥

( ২৭৫ পা ) “তসৌবেতি।” শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
“আত্মাশব্দে যত্ন” পয়ার প্রমাণ শ্লোক।  
শ্রীকৃষ্ণভক্তি দুষ্প্রাপ্য বলিয়া মূনিগণ  
তন্মিমিত্ত যত্নশীল হয়েন, ইহা প্রতিপন্ন  
হইল ॥ ৫৬ ॥

( ২৭৬ পা ) “অচিরাদেবেতি।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২০৫  
পৃষ্ঠায় দেখুন। যত্নদ্বারা ভক্তিলাভ হয়  
বলিয়া, মূনিগণ ভক্তির জন্য যত্ন করেন।  
এই শ্লোকটিও “আত্মাশব্দে” পয়ার  
প্রমাণ ॥ ৫৭ ॥

( ২৭৭ পা ) “চ শব্দে ... প্রোগে ॥”  
এই ৭৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল। যত্নপ্রহ  
অর্থাৎ যত্ন ও আগ্রহ ব্যতীত ভক্তি  
বা প্রেম উৎপন্ন হয় না। অতএব ভক্তি  
স্বরূপভা ॥ ৭৫ ॥

( ২৭৮ পা ) “সাধনৌঘৈরিতি।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। “যত্নপ্রহ” পয়ার প্রমাণ শ্লোক।  
আসক্ত অর্থাৎ যত্ন, আগ্রহ বা আসক্তি  
রহিত নানা সাধনে ভক্তি উৎপন্ন হয়  
না, ইহা প্রতিপন্ন হইল ॥ ৫৮ ॥

( ২৭৯ পা ) “তেষামিতি।” শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৮ পৃষ্ঠায় দেখুন।  
যত্ন অর্থাৎ আসক্তি দ্বারাই ভক্তি লাভ

হয়, তাহা এই শ্লোকে প্রতিপন্ন করি-  
লেন ॥ ৫৯ ॥

( ২৭৬ পা ) “আত্মা শব্দে ...  
ভজন ॥” এই ৭৬ পয়ারের ভাবার্থ।  
আত্মা শব্দে ধ্রুতি অর্থ এং মূনি শব্দে  
পক্ষী বা ভ্রমরঃ অর্থ ও নিগ্রহ শব্দে মূর্খ  
অর্থ গ্রহণ করতঃ শ্লোকটির অপর অর্থ  
বলিতেছেন, “আত্মা শব্দে ধ্রুতি” ইত্যাদি।

নিগ্রহাঃ ( মূর্খাঃ নীচাদয়ঃ ) মুনয়ঃ ( পক্ষিগণঃ  
ভ্রমরা বা ) অপি আত্মারামাঃ ( দৈর্ঘ্যশীলাঃ সন্ত )  
চ উরুক্রমে অর্হেতুকাঃ ভক্তিঃ কুর্কন্তি হরিঃ  
ইথ্ভূতগুণাঃ । অর্থাৎ মূর্খ পক্ষি বা ভ্রমরগণ  
দৈর্ঘ্যশীল হইয়াও শ্রীকৃষ্ণ ভজন করেন। অথবা  
নীচাদি ব্যক্তিগণ। কোথাও কৃষ্ণ রূপা, কোথাও  
সাধু রূপা বশতঃ উভয়ের ভজনে প্রবৃত্তি হয় ॥ ৭৪ ॥

( ২৭৬ পা ) “প্রায়ো বতাসেতি।”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। মূর্খ পক্ষিগণ যে দৈর্ঘ্যশীল  
হইয়া কৃষ্ণভজন করেন, তৎপ্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ৬০ ॥

( ২৭৬ পা ) “এতেহলিনস্তবেতি।”  
শ্লোক দুইটির তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। মূর্খ ভ্রমরগণ যে দৈর্ঘ্যশীল  
হইয়া কৃষ্ণভজন করেন, তৎপ্রমাণ এই  
শ্লোক ॥ ৬১.৬২ ॥

( ২৭৭ পা ) “সরগীতি।” শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
“দৈর্ঘ্যবন্তহঞা” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৬৩ ॥

( ২৭৭ পা ) “কিরাত্তেতি।” শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
নীচাদি ব্যক্তিগণ কৃষ্ণভজন করেন,  
তৎপ্রমাণ শ্লোক ইত্যাদি অর্থে ষোড়শ  
প্রকার অর্ধের লাভ হইল ॥ ৬৪ ॥

( ২৭৭ পা ) “কিস্বা ধ্বতি .. হয় ॥”  
এই ৭৭ পয়ারের ভাবার্থ । আত্মা শব্দে  
ধ্বতির অন্যার্থ করিয়া শ্লোকের অন্য  
অর্থ করিতেছেন, “কিস্বা” ইত্যাদি ।

নির্গ্রহাঃ মুনয়ঃ অপি চ আত্মারামাঃ ( আত্মনি  
ধ্বতৌ রমন্তঃ ভগবৎসম্বন্ধলাভতো দুঃখাভাবাৎ  
ভগবৎপ্রেমলাভতঃ উত্তমাংশেঃ চ পূর্ণাঃ চাক্ষণ্য-  
রহিতাঃ সন্তঃ ) উরুক্রমে ভক্তিং কুরুন্তি ইত্যাদি ।  
অর্থাৎ নির্গ্রহ মুনীগণও ভগবৎসম্বন্ধলাভপ্রযুক্ত  
দুঃখের অভাব হেতু এবং ভগবৎপ্রেমলাভপ্রযুক্ত  
উত্তমাংশি হেতু পূর্ণ অর্থাৎ চাক্ষণ্যরহিত হইয়া  
শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করেন । এই অর্থের সহিত সপ্তদশ  
অর্থের লাভ হইল ॥ ৭৭ ॥

( ২৭৭ পা ) “ধ্বতিঃ স্মাদিত্তি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । “ধ্বতি শব্দে নিজপূর্ণতা” পয়ার  
প্রমাণ শ্লোক ॥ ৬৫ ॥

( ২৭৭ পা ) “সৎসেনয়েতি ।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৫৪  
পৃষ্ঠায় দেখুন । “কৃষ্ণভক্ত দুঃখহীন”  
পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৬৬ ॥

( ২৭৮ পা ) “হ্রষীকেশয়িত্তি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । দৈর্ঘ্য কি, তাহা এই শ্লোকে  
প্রতিপন্ন করিলেন ॥ ৬৭ ॥

( ২৭৮ পা ) “চ অবধানয়ে ... কৃষ্ণ  
পায় ॥” এই ৭৯ হইতে ৮১ পয়ার  
পর্য্যন্ত ভাবার্থ । আত্মা শব্দে বুদ্ধি অর্থ  
গ্রহণ করিয়া অপর অর্থ বলিতেছেন,  
“আত্মা শব্দে” ইত্যাদি ।

বিশেষ বুদ্ধি দ্বারা যিনি রমণ করেন, তিনি  
আত্মারাম । পণ্ডিত ও মূর্খ ভেদে উহা দুই  
প্রকার । মুনয়ঃ ( পণ্ডিতাঃ ) নির্গ্রহাঃ ( মূর্খাঃ )

চ অপি আত্মারামাঃ ( বুদ্ধিবিশেষবিশিষ্টাঃ সন্তঃ )  
উরুক্রমে অষ্টেতুকাঃ ভক্তিং কুরুন্তি ইত্যাদি ।  
অর্থাৎ পণ্ডিতগণ এবং মূর্খগণ উভয়েই বুদ্ধি-  
বিশেষবিশিষ্ট হইয়া শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করেন । এই  
অর্থের সহিত অষ্টাদশ অর্থের লাভ হইল । কৃষ্ণ-  
কৃপার সাধুসঙ্গ ঘটিলে পণ্ডিত ও মূর্খের বিচার-  
বুদ্ধি অর্থাৎ বিশেষ বুদ্ধি হয় । পরে সকল ছাড়িয়া  
কৃষ্ণভক্তি করে ॥ ৭৯-৮১ ॥

( ২৭৮ পা ) “অহং সর্কস্মেতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । পণ্ডিতগণ বুদ্ধিবিশেষবিশিষ্ট  
হইয়া শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করেন, তৎপ্রমাণ  
এই শ্লোক ॥ ৬৮ ॥

( ২৭৮ পা ) “তে বৈ বিদম্ভীতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । মূর্খগণ বুদ্ধিবিশেষবিশিষ্ট হইয়া  
ভক্তি করেন, তৎপ্রমাণ এই শ্লোক ॥ ৬৯ ॥

( ২৭৮ পা ) “বিচার করিয়া ...  
তঁারে পায় ॥” এই ৮২ পয়ারের ভাবার্থ ।  
যদি বল, ঐ বুদ্ধিবিশেষ লাভের সাধন কি ?  
তাহাতে বলিতেছেন, “বিচার” ইত্যাদি । অর্থাৎ  
শ্রীকৃষ্ণই আমার ভজনীয় ; ইহা বিচার করতঃ  
শ্রীকৃষ্ণ ভজন করিলে ; শ্রীকৃষ্ণ সেই বুদ্ধিবিশেষ  
প্রদান করেন ; বাহাতে শ্রীকৃষ্ণকে পাওয়া  
যায় ॥ ৮২ ॥

( ২৭৮ পা ) “তেষামিত্তি ।” শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৮ পৃষ্ঠায় দেখুন ।  
“সেই বুদ্ধি দেন পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৭০ ॥

( ২৭৮ পা ) “সৎসঙ্গ ... প্রেমো-  
দয় ॥” এই ৮৩ পয়ারের ভাবার্থ সরল ।  
বুদ্ধি বিশেষ লাভের সাধন বলিতেছেন,  
“সৎসঙ্গ” ইত্যাদি । ভাগবত নাম  
অর্থাৎ ভাগবত পাঠ ও নামকীর্তন ।

ক অল্প করয় অর্থাৎ পাঁচটির মধ্যে  
কান একটির অল্পমাত্র অনুষ্ঠান করে ॥৮৩

( ২৭৮ পা ) “দুর্কহাস্তুতেতি ।”

শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৪৭  
পৃষ্ঠায় দেখুন । “এই পঞ্চ মध्ये” পয়ার  
প্রমাণ শ্লোক ॥ ৭১ ॥

( ২৭৮ ) “উদার ... ভক্তিসিদ্ধি ॥

‘এই ৮৪ পয়ারের ভাবার্থ । বুদ্ধি বিশেষ-  
বিশিষ্ট ব্যক্তি নানা কামনায় শ্রীকৃষ্ণকে  
ভজনা করিলেও ভক্তি লাভ করেন ॥৮৪॥

( ২৭৯ পা ) “অকাম ইতি ।”

শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৩৮  
পৃষ্ঠায় দেখুন । বুদ্ধি বিশেষবিশিষ্ট ব্যক্তি  
যে শ্রীকৃষ্ণ ভজন করেন, তৎপ্রমাণ  
শ্লোক ॥ ৭২ ॥

( ২৭৯ পা ) “ভক্তির... আকর্ষণ ॥”

এই ৮৫ পয়ারের ভাবার্থ ।  
যদি বল, নানাবিধ কামনার কৃষ্ণভজন  
করিলে শুদ্ধ ভক্তির লাভ কিরূপে হয় ? তাহাতে  
বলিতেছেন, “ভক্তির” ইত্যাদি । কামনা থাকিলেও  
ভক্তির স্বভাব ক্রমশঃ ঐ কামনা ত্যাগ করার  
এবং কৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট করাইয়া শুদ্ধ ভক্তির উদয়  
করায় ॥ ৮৫ ॥

( ২৭৯ পা ) “আত্মারামা ইতি ।”

এবং “সত্যং নিশ্চীতি ।” শ্লোক দুই-  
টির টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ৫১ পৃষ্ঠায়  
এবং ২৩৮ পৃষ্ঠায় দেখুন । “ভক্তির স্বভাব  
পয়ার প্রমাণ এই দুই শ্লোক ॥৭৩৭৪॥

( ২৭৯ পা ) “আত্মা শব্দে... ভজয় ॥”

এই ৮৬ হইতে ৮৮ পয়ার পর্যন্ত ভাবার্থ ।  
আত্মা শব্দের স্বভাব অর্থ গ্রহণ করিয়া অন্য  
অর্থ বলিতেছেন, “আত্মা শব্দে” ইত্যাদি । মুনয়ঃ  
(ব্যাসকৃষ্ণসকাদয়ঃ) নিগ্রহাঃ ( মূর্খনীচাদয়ঃ

বা পঞ্চাদয়ঃ ) চ অপি আত্মারামাঃ ( আত্মনি  
ভগবদাসোসাহং ইতি অভিমানাত্মকে স্বভাবে  
রমন্তে যে তে ভাদৃশাঃ সন্তঃ ) উরুক্রমে অর্থাৎ  
ভক্তিং কুরুন্তি ইত্যাদি । অর্থাৎ মনকাদি মুনীগণ  
এবং মূর্খনীচাদি বা পশু নিগ্রহ জনগণও ‘আমি  
শ্রীকৃষ্ণের দাস’ এই প্রকার অভিমানাত্মক স্বভাবে  
রত হইয়া শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করেন । এই অর্থের  
সহিত উনবিংশ অর্থের লাভ হইল ॥ ৮৬-৮৮ ॥

( ২৭৯ পা ) “ধন্যেয়মদ্যেতি ।” এবং

“গো গোপকৈরিতি ।” শ্লোক দুইটির  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে “প্রকাশ আছে ।  
কৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট হওতঃ স্বাবর ও অঙ্গম  
জীব যে কৃষ্ণভজন করেন, তৎপ্রমাণ  
শ্লোক ॥ ৭৫, ৭৬ ॥

( ২৮০ পা ) “বনলতা ইতি ।” এবং

“কিরাতেতি ।” শ্লোক দুইটির টীকা ও  
বাঙ্গলা মধ্যের ৮১ এবং ২৭৭ পৃষ্ঠায়  
দেখুন । মূর্খ, নীচ ও পশুগণ ‘অহং দাস’  
এই অভিমানাত্মক স্বভাবে কৃষ্ণভজন  
করেন, তৎপ্রমাণ শ্লোক ॥ ৭৭, ৭৮ ॥

( ২৮০ পা ) “আগে তের... ভজন ॥”

এই ৮৯ পয়ারের ভাবার্থ ।  
আত্মা শব্দে দেহ অর্থ গ্রহণ করতঃ শ্লোকটির  
অপর চারিটি অর্থ বলিতেছেন, “আত্মা শব্দে দেহ”  
ইত্যাদি । আত্মারামাঃ ( আত্মনি দেহে রমন্তে  
যে তে ) অপি নিগ্রহাঃ মুনয়ঃ চ ( সন্তঃ ) উরু-  
ক্রমে ভক্তিং কুরুন্তি ইত্যাদি । অর্থাৎ দেহরত  
ব্যক্তিগণও নিগ্রহ মুনি হইয়াও শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি  
করেন । ঐ দেহরত আত্মারাম কর্ণনিষ্ঠ ও  
তপস্বী ভেদে দুই প্রকার । ব্যক্তিকাদিই কর্ণনিষ্ঠ ।  
উহাদের প্রত্যেকেই আবার বেহোপাসক ও  
বেহোপাধিব্রহ্মোপাসক ভেদে বিবিধ । সাক্ষ্যে  
দেহরত আত্মারাম চতুর্বিধ । কেহ বলেন,  
দেহরত ব্যক্তিই বেহোপাধিব্রহ্মোপাসক, কর্ণনিষ্ঠ,

তপস্বী ও সর্সকাম তেবে চারিপ্রকার । এ পক্ষেও  
বেহরত আশ্বারাম চতুর্বিধ । অতএব চারিপ্রকার  
অর্থের সহিত ত্রয়োবিংশ অর্থের লাভ হইল ।  
চতুর্বিধ বেহারামী সাধুসঙ্গে কৃষ্ণভজন করেন ॥৮৯॥

( ২৮০ পা ) "উদয়মিতি ।" শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৭৫ পৃষ্ঠায়  
দেখুন । "দেহে রমে" পয়ার প্রমাণ  
শ্লোক ॥ ৭৯ ॥

( ২৮০ পা ) "কর্ন্দনীতি ।" শ্লোকের  
তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
"দেহারামী" পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৮০ ॥

( ২৮০ পা ) "বৎপাদসেবেতি ।"  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে । "তপস্বী প্রভৃতি ।" পয়ার  
প্রমাণ শ্লোক ॥ ৮১ ॥

( ২৮১ পা ) "স্থানাভিলাষীতি ।"  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৩৮  
পৃষ্ঠায় দেখুন । "দেহারামী সর্সকাম"  
পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৮২ ॥

( ২৮১ পা ) "এই চারি...অর্থ কর ॥"  
এই ৯৩ হইতে ৯৬ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ ।

পূর্বে যেমন চ শব্দের সমুচ্চর অর্থ গ্রহণ  
করিয়া আশ্বারাম্শ মুনয়শ্চ অর্থাৎ আশ্বারাম ও  
মুনিগণ কৃষ্ণ ভজন করেন এরূপ অর্থ করা  
হইয়াছে ; তদ্রূপ চ শব্দের অঘাচর অর্থাৎ প্রাধাত্ত  
ও অপ্রাধাত্ত অর্থ গ্রহণ করতঃ আর একটি অর্থ  
হয় । যথা "রামশ্চ কৃষ্ণশ্চ বনে বিহরতি" এ বসে  
বনে বিহার একের প্রাধান্য ও অস্তের অপ্রাধাত্ত  
হয় । যেমন বটো তিকামট গাকানর অর্থাৎ  
হে বটু, তিকাম বাণ্ড, গো আমরন কর ; এখানে  
চ শব্দের অঘাচর অর্থে তিকাম গমন প্রাধাত্ত ;  
গো আমরন অপ্রাধাত্ত বুঝায়, তদ্রূপ চ শব্দ বারা  
শ্লোকটিরও এরূপ অর্থ বুঝিতে হইবে । মুনয়ঃ

আশ্বারামাঃ চ নিগ্রহাঃ ( সন্তঃ ) উরুক্রমে  
ইত্যাদি অর্থাৎ মুনিগণ প্রধানতঃ এবং জ্ঞানিগণ  
অপ্রধানতঃ শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করেন । এই অর্থের  
সহিত চতুর্বিংশ অর্থের লাভ হইল ॥ ৯৩-৯৬ ॥

২৮১ পা ) "চ এবার্থে ... সঙ্গম ॥"  
এই ৯৭ পয়ারের ভাবার্থ ।

চ শব্দের এবার্থ অর্থাৎ নিশ্চরার্থ এবং অপি  
শব্দের গর্হা ( নিন্দা ) অর্থ গ্রহণ করিয়া অপর  
অর্থ বলিতেছেন, "চ এবার্থে" ইত্যাদি । মুনয়ঃ চ  
আশ্বারামাঃ অপি নিগ্রহাঃ ( সন্তঃ ) উরুক্রমে  
ইত্যাদি অর্থাৎ মুনিগণ আশ্বারাম হইয়াও নিগ্রহ  
হওতঃ শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করেন । এই অর্থের  
সহিত পঞ্চদশ অর্থের লাভ হইল । আশ্বারাম  
হইয়াও অর্থাৎ জ্ঞানির অবস্থা প্রাপ্ত হইয়া উহাকে  
নিন্দাকরতঃ ইত্যাদি বুঝাইল ॥ ৯৭ ॥

( ২৮১ পা ) "নিগ্রহ্নু শব্দ ... ধড়-  
ফড়ি ।" এই ৯৮ হইতে ১০০ পয়ার  
পর্য্যন্ত ভাবার্থ ।

নিগ্রহ্নু শব্দে ব্যাধাদি নির্জন অর্থ গ্রহণ করিয়া  
অপর অর্থ বলিতেছেন, "নিগ্রহ্নু" ইত্যাদি ।  
নিগ্রহ্নাঃ ( ব্যাধাদয়ঃ ) অপি আশ্বারামাঃ মুনয়ঃ চ  
( সন্তঃ ) উরুক্রমে ইত্যাদি । অর্থাৎ নিগ্রহ্নু  
ব্যাধ প্রভৃতিও আশ্বারাম ও মুনি হইয়া শ্রীকৃষ্ণে  
ভক্তি করেন । এই অর্থের সহিত বড়বিংশ  
অর্থের লাভ হইল । ব্যাধও সাধুসঙ্গে কৃষ্ণভজন  
করেন । ইহার প্রমাণ করিতেছেন, "এক তক্ত  
ব্যাধের কথা শুন" ইত্যাদি পরায় । যে তক্ত  
ব্যাধের কথা বলিতেছেন, উহা পদপূরণোক্ত  
ইতিহাস । তদ্রূপ, পা ভাঙ্গা ॥ ৯৮-১০০ ॥

( ২৮১ পা ) আর কথোদ্বরে ...  
না করিবে ॥" এই ১০১ হইতে ১০৪  
পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ মূল । ব্যাধের  
আকার বর্ণন করিতেছেন, "শ্যামবর্ণ"  
ইত্যাদি । প্রমাণ পদ, বাইবার পর ।

মুগবাধারের অর্থাৎ মুগ বা ব্যাজ্র চন্দ্ররূপ  
বস্ত্র ॥ ১০১-১০৪ ॥

( ২৮২ প ) “ব্যাদ কহে ... দুই  
জনে ॥” এই ১০৫ হইতে ১০৭ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ সরল। কদখি না দিয়া  
ইত্যাদি অর্থাৎ কষ্ট দিয়া প্রাণ নষ্ট করিও  
না, তাহাতে প্রচুর পাপ হয়। কদর্ঘ্যা,  
কষ্ট দিয়া। তারা, তোমা কর্তৃক হত  
জীবগণ ॥ ১০৫-১০৭ ॥

( ২৮২ পা ) “তবে সেই...সাধুবর্ষ্য ॥”  
এই ১০৮ ও ১০৯ পয়ারের ভাবার্থ সরল।  
মুগাদি তিনে অর্থাৎ মুগ, শূকর ও শশক।  
পর্ষতে অর্থাৎ হে পর্ষত মূনে। হরি-  
ভক্ত্যে, হরিভক্তি দ্বারা। সাধুবর্ষ্য,  
শ্রেষ্ঠভক্ত ॥ ১০৮.১০৯ ॥

( ২৮২ পা ) “এতেনেতি” শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৪৯ পৃষ্ঠায়  
দেখুন। “হরিভক্ত্যে” পয়ার প্রমাণ  
শ্লোক ॥ ৮৩ ॥

( ২৮২ পা ) “তবে সেই ... স্পর্শ-  
মণি ॥” এই ১১০ পয়ারের ভাবার্থ  
সরল। বস্ত্র ফিরাইঞা নৃত্যটি আনন্দ-  
জনক ॥ ১১০ ॥

( ২৮০ পা ) “অহো ধন্য ইতি ॥”  
শ্লোকের তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
করা হইবে। “নারদেয়ে কহে” পয়ার প্রমাণ  
শ্লোক। সাধুসক প্রভাব বর্ণন শ্লোক ॥ ৮৪ ॥

( ২৮০ পা ) “নারদ কহে ... বত্রিশ  
প্রকার ॥” এই ১১১ ও ১১২ পয়ারের  
ভাবার্থ সরল। সাধুসক প্রভাববর্ণন  
শ্লোকের ভাবার্থের যে কত প্রভাব, তাহার

কথিয়া অন্য অর্থ বলিতেছেন, “আমি  
অর্থ শুন” ইত্যাদি ॥ ১১১।১১২ ॥

( ২৮০ পা ) “আত্মা শব্দে ... অর্থের  
প্রকাশ ॥” এই ১১৩ হইতে ১১৭ পয়ার  
পর্যন্ত ভাবার্থ।

আত্মা শব্দে ভগবান্ অর্থ গ্রহণ করিয়া বত্রিশ  
প্রকার অর্থ করিতেছেন, “আত্মা শব্দে” ইত্যাদি।  
আত্মারামাঃ ( ভক্তাঃ ) মনয়ঃ নিগ্রহাঃ চ অপি  
উরুক্রমে ইত্যাদি। অর্থাৎ ভক্ত মূনিগণ নিগ্রহা  
হইয়াও শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করেন। ঐ ভক্ত বিধিমাৰ্গ  
ও রাগমাৰ্গ ভেদে দুই প্রকার। রাগমাৰ্গের  
ভক্ত স্বয়ং ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণকে প্রাপ্ত হন। বিধি-  
মাৰ্গের ভক্ত পূর্ণ ভগবান্ শ্রীনারায়ণকে প্রাপ্ত  
হন। অতএব ভগবানে যে রমে, সেই আত্মা-  
রাম। বৈদী ভক্ত আবার আতরতি সাধক,  
অজাতরতি সাধক, পার্শ্ব ( নিত্যসিদ্ধ ) ও সাধন-  
সিদ্ধ ভেদে চারিপ্রকার। রাগী ভক্ত ঐরূপ জাত  
ও অজাতরতিসাধক, পার্শ্ব এবং সিদ্ধ ভেদে  
চতুর্বিধ। তন্মধ্যে প্রত্যেকে অর্থাৎ জাতরতি  
সাধক দাস, সখা, পিতামাতা ও কান্তাভাবগণ  
ভেদে চতুর্বিধ; অজাতরতিসাধক দাসাদি  
ভেদে চতুর্বিধ; পার্শ্বভক্ত দাসাদি ভেদে  
চতুর্বিধ এবং সাধনসিদ্ধ ভক্তও দাসাদি ভেদে  
চতুর্বিধ। অতএব বৈদীভক্ত ষোড়শপ্রকার এবং  
রাগী ভক্ত ঐরূপ ভাবে ষোড়শপ্রকার; সুতরাং  
সাকল্যে ভক্ত বত্রিশপ্রকার। তন্মধ্যে প্রত্যেকেই  
শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করার, স্বাভিংশে অর্থের লাভ  
হইতেছে। পুরোক্ত বৃদ্ধবিশং এবং এই স্বাভিংশে  
অর্থ নিলিয়া আটশপ্রকার অর্থের লাভ  
হইল ॥ ১১০-১১৭ ॥

( ২৮০ পা ) “ইতরেতর...একবার ॥”  
এই ১১৮ পয়ারের ভাবার্থ।

পুরোক্ত বৃদ্ধবিশং এবং এই স্বাভিংশে

( পুরোক্তাঃ অষ্টাধিকপঞ্চাশৎসংখ্যাকাঃ ) আত্ম-  
 ত্বায়াঃ মূনয়ঃ চ নিগ্রহাঃ অপি উরুক্রমে ইত্যাদি  
 কর্ণাৎ পুরোক্ত আটারপ্রকার আত্মারাম ও মুনি-  
 গণ নিগ্রহা হইয়াও শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি করেন।  
 আটারবার আত্মারাম রাখিরা শেষে সব লোপ  
 করিলে, এক আত্মারাম শব্দ থাকে ॥ ১১৮ ॥

( ২৮৩ পা ) "সরুপাণামিতি ।" সূত্রটি  
 "শেষে সব" পরায় প্রমাণ ॥ ৮৫ ॥

( ২৮৩ পা ) "আটার ... অর্থ তার ।"  
 এই ১১৯ হইতে ১২১ পরায় পর্য্যন্ত  
 ভাবার্থ ।

যেমন অর্থবৃক্ষাঃ চ বটবৃক্ষাঃ চ ইত্যাদি শব্দ  
 প্রয়োগের পর সমাসে কেবলমাত্র বৃক্ষাঃ পদ নিষ্পন্ন  
 হয়, এবং এই বনে বৃক্ষ সকল ফলবান্ এই বাক্যে  
 বৃক্ষ সকল বলিতে অর্থবৃক্ষ ও বটবৃক্ষাদি বুঝায় ;  
 তজ্জপ আত্মারামাঃ বলিতে পুরোক্ত আটারপ্রকার  
 আত্মারাম বুঝাইতেছে। অতএব এই অর্থের  
 সহিত ঊনষষ্টি অর্থের লাভ হইল ॥ ১১৯-১২১ ॥

( ২৮৩ পা ) "নিগ্রহা ... উচ্চার ।"  
 এই ১২২ পরায়ের ভাবার্থ ।

চ শব্দের সমুচ্চর অর্থ এবং অপি শব্দের  
 অর্থার্থ নিশ্চয়ার্থ গ্রহণ করিয়া আর  
 একটি অর্থ বলিতেছেন, "সর্ব সমুচ্চরে "ইত্যাদি।  
 আত্মারামাঃ ( চ ) মূনয়ঃ ( চ ) নিগ্রহাঃ চ উরু-  
 ক্রমে অপি ( এব ) অর্থেভূকীন্ ( এব ) ভক্তিন্  
 ( এব ) কুরক্তি ( এব ) হরিঃ ইৎসুতগুণঃ।  
 অর্থাৎ শ্রীহরির এমনি গুণ যে, কি আত্মারাম  
 জ্ঞানিগণ, কি মুনিগণ, কি নিগ্রহ বাক্তিগণ  
 সবকোই শ্রীকৃষ্ণগুণে আকৃষ্ট হইয়া তাঁহাতে ভক্তি  
 করেন। এই অর্থের সহিত বাট্‌প্রকার অর্থের  
 লাভ হইল ॥ ১২২ ॥

( ২৮৪ পা ) "আত্মা শব্দে ... অর্থ তার ।"

আত্মা শব্দে জীব অর্থ গ্রহণ করিয়া আর  
 একটি অর্থ বলিতেছেন। জীব বলিতে ব্রহ্ম  
 হইবে। "সমাজ কীট পর্য্যন্ত সমস্তই শ্রীকৃষ্ণের  
 জীব আত্মারামাঃ ( জীবাঃ ) অপি ( এব )  
 বস্তাঃ ) উরুক্রমে ইত্যাদি অর্থাৎ ক্ষেত্রজ  
 জীব বস্তাঃ ও মুনি হইয়া শ্রীকৃষ্ণে ভক্তি  
 করেন। এই অর্থের সহিত সাকল্যে একষষ্টি  
 অর্থের লাভ হইল ॥ ১২৪ ॥

( ২৮৪ পা ) "বিষ্ণুশক্তিরিতি ।"  
 শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৮৮  
 পৃষ্ঠায় দেখুন। ক্ষেত্রজ জীবলক্ষণ পরায়  
 প্রমাণ শ্লোক। আত্মা শব্দে যে ক্ষেত্রজ  
 জীব, তাহা অমরকোষোক্ত "ক্ষেত্রজ  
 আত্মা পুরুষঃ" বচনে প্রমাণ করি-  
 লেন ॥ ৮৮।৮৯ ॥

( ২৮৪ পা ) "ভ্রমিতে ... তরঙ্গে ॥"  
 এই ১২৫ পরায়ের ভাবার্থ সরল।  
 ক্ষেত্রজ জীব সংসারের ভ্রমণ করিতে  
 করিতে বাধুর মঙ্গ পাইলে শ্রীকৃষ্ণভজনে  
 করেন। সনাতন-ভোগমাগ্নাঃ মঙ্গলগুণে  
 এবং ভক্তিবলে শ্লোকের এই একমস্তি-  
 প্রকার অর্থ স্কুরিত হইল ॥ ১২৫ ॥

( ২৮৪ পা ) "ভক্তোতি" এবং "অহং  
 নেত্তীতি ।" শ্লোক দুইটির তাৎপর্য  
 শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। ভক্তি দ্বারাই  
 যে কেবলমাত্র ভাগবতার্থ বোধ হয়,  
 তাৎপ্রমাণ শ্লোক ৯।১০।১১ ॥

( ২৮৪ পা ) "অর্থ শুনি...চমৎকার ॥"

এই ১২৬ ও ১২৭ পরায়ের ভাবার্থ সরল।  
 শ্লোকের অর্থ তিনি সনাতন বিশিষ্ট  
 মহাশয়ের চরণে ধরিয়া বলিলেন, এত  
 দারুণ অর্থ শুনিয়া  
 অর্থের সহিত সাকল্যে একষষ্টি  
 অর্থের লাভ হইল ॥ ১২৬ ॥



নির্ধাণিতমেতদুৎথেনো বজ্জ্বল ইত্যাদি।" প্রমো-  
ক্তরে, প্রস্ন ও উত্তরে ॥ ১২৩।১২৭ ॥

( ২৮৪ পা ) "ক্রহীতি।" র  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
শৌনকাদি ঋষিগণ এই শ্লো-  
কপ্রস্ন করেন ॥ ১২ ॥

( ২৮৪ পা ) "কৃষ্ণে স্বধাম হাঃ।  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। সূত্রস্থি এই শ্লোক দ্বারা প্রস্নের  
উত্তর দেন ॥ ১২ ॥

( ২৮৫ পা ) "এতৈ কহিল ...  
ধুরণ ॥" এই ১২৮ হইতে ১৩০ পয়ার  
পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। এই দৃষ্টো, ভাগ-  
বতের পৌর্নপর্য্য-পর্যালোচনা দ্বারা।  
দিশা, নির্ণয়। তার দিশা, স্মৃতির  
নির্ণয় ॥ ১২৮-১৩০ ॥

( ২৮৫ পা ) "তথাপি ... আচমন ॥"  
এই ১৩১ পয়ারের ভাবার্থ। মহাপ্রভু  
সনাতনকে বৈষ্ণবস্মৃতি প্রচার জন্য সূত্র  
বলিতেছেন, "তথাপি" ইত্যাদি। অর্থাৎ  
তুমি বাহা প্রচার করিতে ইচ্ছা করিলে,  
শ্রীকৃষ্ণ তোমার হৃদয়ে থাকিয়া তাহা  
ক্ষুণ্ণি করাইলেও, যে স্মৃতি প্রচার  
করিলে, তাহার কিছু সূত্র বলি। সর্ক-  
কারণ শ্রীগুরু চরণপ্রায়ের কারণ প্রথমে  
লিখিলে।

বদি বল, গুরুচরণপ্রায়ের প্রয়োজন কি ? তদুত্তর,  
"কৃপণা কৃষ্ণবেদস্য তদুজ্জ্বলসমভঃ।

ভক্তের কৃপায় তদীর ভক্তের সর্ব হইতে

ভক্তিগ্ন মাধ্ব্য অনিয়া, এই ভক্তিলাভে ইচ্ছা

হইলে, গুরুচরণ প্রায় করিলে। বিদ্যা-  
সকল করিয়া কৃষ্ণবেদ্যের সর্ব হইলেও

কেবল হৃৎস্পর্শরতনের ইচ্ছাতেও ভক্তিলাভের  
অভিলাষ হয়। ইহলোকে হৃৎ পদস্পর্শর নিত্য  
অমুভব হয়, পরলোকেও দুঃসহ হৃৎসকল ভেদ  
করিতে হয়। অতএব সুবুদ্ধি ব্যক্তিগণ উহা  
হইতে উত্তীর্ণ হইতে ইচ্ছা করেন। ভাগবতে  
দশমে বেদস্ততিতে,—

বিজিত্ত্বযৌকবায়ুভিরদাস্তমনস্তরণং  
ব ইহ যতস্তি যদুসতিগোপমুপায়ধিদঃ।  
বাসনশতাব্ধিতাঃ সমবহার গুরোশ্চরণং  
বর্ণিজ ইবাজ সন্ত্যকৃত কর্ণধারা জগধৌ ॥"

যাহারা ইহলোকে শ্রীগুরুর চরণ ভাগ করিয়া  
প্রাণায়ামাদি দ্বারা ইন্দ্রিয়গণকে বশীভূত করিয়া  
মনোরূপ অণকে সংযত করিতে যত্ববান হয়,  
তাহারা নাবিক রহিত নৌকাস্থিত বলিকসকলের  
সমূহে পতনের ভয় উপায়ক্লিষ্ট ও বহুদুঃখাকুল  
ভবনাগরে পতিত হয়। অতএব ভবনাগর পারের  
উপায়রূপ শ্রীগুরুচরণ। শাস্ত্রজ্ঞ ভগবন্তি গুরু  
আশ্রয় গ্রহণ করিলে। ইহা স্মৃতি পুরাণাদিতে  
কথিত আছে।

গুরু ও শিমোর লক্ষণ সংক্ষেপে বলা  
হইতেছে ;

তথাহি মন্ত্রমুক্তাবল্যাম্,—

অবদাতাধরঃ গুরুঃ স্বেচিচিত্তাচারতৎপরঃ।

আশ্রমী ক্রোধরহিতো বেদবিৎ সর্কণাত্মরিতঃ।

বিগুরুবংশজাত, নিজেও বিগুরু, নিজাশ্রমোচিত  
আচারপরায়ণ, গৃহী, ক্রোধশূন্য, শাস্ত্রজ্ঞ, সুবেশ,  
তরুণ, ভাববিচারক, কৃতজ্ঞ, শিষ্যবৎসল ইত্যাদি  
গুণসম্পন্ন ব্যক্তি গুরু হইবার যোগ্য। পঞ্চপুরাণে  
উক্ত হইয়াছে,—

"মহাকুলপ্রস্থতোহপি সর্কমজেষু দীকিতঃ।

সহস্রাশাখাধারী চন গুরুঃ স্যাদবৈষ্ণবঃ ॥"

উচ্চ বংশ জাত, সর্কমজ্ঞে দীকিত ও সহস্র-  
শাখাধারী ব্যক্তিও যদি বৈষ্ণব না হন, তবে  
তাঁহাকে গুরু করিলে না। যিনি বিকৃত  
দীকিত ও বিকৃষ্টাচারায়ণ, তিনিই বৈষ্ণব  
গুরু হইবে না।

বহুভৌজী, দীর্ঘস্থায়ী; বিষয়াদিলোলুপ, হুঠে, অকথাভাবী, গুণনিন্দক, বহুদানগ্রাহী, ইত্যাদি লক্ষণযুক্ত গুরুকে ভাগ করিবে, কেননা, পূর্বোক্ত গুণযুক্ত ব্যক্তি স্নেহর ভূত্ব হইলেও শিষ্যকে শ্রীত্রষ্ট করেন। তবে উক্ত হইয়াছে,—

পিতৃদীক্ষা যতেদীক্ষা দীক্ষা চ বনবাসিনাম্ ।

বিবিক্তাশ্রমিণাং দীক্ষা ন সা কল্যাণদায়িকা ॥

পিতা, ষষ্টি, বনবাসি এবং নিন্দিতাশ্রম-সেবি কর্তৃক দীক্ষা মঙ্গলদায়িকা হয় না। শুদ্ধ বংশজাত, শ্রীমান, বিনীত, প্রিয়দর্শন, সত্যবাদী, পবিত্রচরিত্র, বুদ্ধিমান, দস্তশূত্র, গুরুভক্ত, দেবভক্ত প্রভৃতি গুণযুক্ত ব্যক্তিই শিষ্য হইবার যোগ্য।

অলস, মদিন, দাস্তিক, রূপণ, শঠ, পণ্ডিত-মানী, পরদারসত, হুরাস্ত্রা, পরপীড়ক ইত্যাদি গুণযুক্ত ব্যক্তি শিষ্যের অন্তঃপৃষ্ঠ। বাহারা গুরুর শাসন সহ্য করিতে পারে না, ভাহারাও শিষ্যের অব্যগ্ন। যদি কেহ লোভ বশতঃ পূর্বোক্ত গুণযুক্ত ব্যক্তিকে শিষ্য করেন, তিনি দরিদ্র ও স্ত্রীপুত্রবিহীন হইয়া অন্তে নয়ক-বাতনা ভোগ করতঃ তিথ্যাক্-সোনি প্রাপ্ত হন।

তুঁহা পরীক্ষণ অর্থাৎ গুরু ও শিষ্য পরস্পরের পরীক্ষা।

শক্তি বলেন,—“নাসৎসরবাসিনে দেয়াৎ ।” এক বৎসরকাল পর্যন্ত একত্র বাস না করিয়া মন্ত্র দিবে না। তজ্জাহি সারসংগ্রহে,—

রাজি চামাতাজা দোষাঃ পরীপাণং বস্তর্ভরি ।

তথা শিষ্যাক্ষিতং পাণং গুরুঃ প্রাপ্নোতি নিশ্চিতম্ ॥

বেদন অমাত্যের পাপ রাজ্যতে, জীর পাপ নিজপতিতে উপগত হয়, তজ্জপ শিষ্যাক্ষিত পাণ গুরু প্রাপ্ত হন। অতএব সৎগুরু একমর্ষ নিজাক্ষিত শিষ্যকে পরীক্ষা করিয়া মন্ত্র দিবে। পরীক্ষার পর দীক্ষা দান ও গ্রহণ কর্তব্য।

সেব্য ভগবান্, শ্রীকৃষ্ণই সেব্য।

স্বদেশের জনতের বোধবার্হ কোস কোস পুরাণ  
কালক্রমে ক্রম পুরাণ মতান দেয়নে এই

বলিয়া কীর্তন করিলেও, সকল শাস্ত্র বিচার করিয়া সিদ্ধান্তে একমাত্র শ্রীকৃষ্ণকেই সর্বশ্রেষ্ঠ দেবতা বলিয়া নিশ্চয় করেন।

মন্ত্রবিচারণ, মন্ত্রের উদ্ধার।

মন্ত্রোদ্ধার জন্য ছয়টি চক্র তরে উক্ত হইয়াছে।

যথা, কুণাকুলচক্র, অর্থাৎ সাধক ও মন্ত্রের স্বকুল-তাদি বিচার, রাশিচক্র; নক্ষত্রচক্র; অকথহচক্র, অকন্তমচক্র ও ঋনিধনিচক্র। এই ছয় চক্র দ্বারা মন্ত্রবিচার গুরুর নিকট জানিবে। বাহুল্য ভয়ে লেখা হইল না।

মন্ত্র অধিকারী অর্থাৎ কিরূপ ব্যক্তি মন্ত্রগ্রহণে অধিকারী।

তথাহি অগস্ত্যাসংহিতায়াম্—

গুচিব্রততমঃ শূদ্রা ধার্মিকা বিজসেবকাঃ ।

শ্রিয়ঃ পতিব্রতাচ্চান্যে প্রতিলোমামুলোমজাঃ ।

লোকাশাণ্ডালপর্যন্তাঃ সর্বেহুপাত্মাধিকারিণঃ ॥

পবিত্রব্রতবান্, ধর্মনিষ্ঠ, বিপ্রসেবাপরামণ শূদ্রগণ, পতিব্রতা স্ত্রীগণ এবং অন্যান্য শ্রেষ্ঠি-লোমজ ও অমুলোমজ চাণ্ডালাদি সকলেই মন্ত্র গ্রহণে অধিকারী হইতে পারে। গুরুসিদ্ধসাধ্যাদি মন্ত্রদানে নিজকুল, পরকুল, বালক, প্রৌচয়, স্ত্রীক, নপুংসকত্ব, হুস্ত প্রবেশনকাল, ঋণিধনাদি বিচার করিয়া মন্ত্র দিবে।

মন্ত্রসিদ্ধাদি শোধন অর্থাৎ মন্ত্রের সিদ্ধসাধ্যাদি শোধন। আদি পদে স্বকুল, পরকুলাদি বিচার।

তথাহি সারবাতিলকে,—

সিদ্ধঃ সিদ্ধ্যতি কালেন সাধ্যস্ত জপহোমতঃ ।

হুসিদ্ধো গ্রহণমাজ্জেন অরিমূল কৃত্তনঃ । ইত্যাদি ॥

তজ্জোক্ত নিরূপিত সময়ে সিদ্ধমন্ত্র, জপ ও হোম দ্বারা সাধ্যমন্ত্র, হুসিদ্ধমন্ত্র গ্রহণমাত্র সিদ্ধ হয়। অরিমন্ত্র মন্ত্রবীজকে ধ্বংস করে, তজ্জনিসিদ্ধি কালে সিদ্ধসিদ্ধমন্ত্র, তদপেক্ষা হিওপকালে সিদ্ধ সাধ্যমন্ত্র, সিদ্ধি নুৎপাদ্য অহুৎপাদ্যমন্ত্র, ইতি

সিদ্ধমন্ত্র সিদ্ধ হয়। সাধাসিদ্ধ মন্ত্র বিগুণসমনে, সাধাসিদ্ধমন্ত্র ত্রিগুণিত সমনে সিদ্ধ হয়; সিদ্ধারি-  
 বক্রগণকে, সাধাসাধামন্ত্র সুখানিকে, সাধারিমন্ত্র  
 গাত্রকগণকে নাশ করে। সুসিদ্ধসিদ্ধমন্ত্র অর্ধ-  
 পে, সুসিদ্ধসাধামন্ত্র বিগুণরূপে সুসিদ্ধসিদ্ধমন্ত্র  
 হিগুণমাত্র সিদ্ধ হয়। সুসিদ্ধারি অগোত্রকে, অরি-  
 ষ্ঠ পুত্রকে, অরিসাধ্য কন্তাকে, অরিসুসিদ্ধ  
 গর্ভ্যাকে এবং অরি-অরি সাধককে বিনাশ করে।  
 নন্দাদি শোধান গুরুর নিকট জানিবেন। নৃসিংহ,  
 বৈষ্ণব, শিব, প্রাণব, বৈদিক, অন্নপ্রাপ্ত,  
 দীক্ষাতিদন্ত, একাক্ষর, ত্র্যাক্ষর ও মালামন্ত্রে  
 গছাদি শোধান করিতে হয় না। শ্রীকৃষ্ণ তুলা  
 ক্রিশালী গোপালমন্ত্রের কিছুই বিচার করিতে  
 হয় না।

দীক্ষা, মন্ত্র গ্রহণ।

বিজ্ঞাতির যেমন উপনয়ন না হইলে বেদাধ্যয়-  
 ণাদিতে অধিকার হয় না, তদ্রূপ অদীক্ষিত ব্যক্তির  
 বেদার্থনাদিতে অধিকার হয় না। অতএব সকলেই  
 দীক্ষিত হইবেন। দীক্ষাকাল,—

চৈত্রমাসে দীক্ষা বহুস্থঃখপ্রদা হয়। বৈশাখে  
 ময়লাভ, কৈষ্ঠে মরণ, আষাঢ়ে বন্ধনাশ, শ্রাবণে  
 ভয়, তাম্রে প্রাণাহানি আখিনে সর্কণ্ড, কাষ্ঠিকে  
 ধনবৃদ্ধি, অগ্রহায়ণে শুভ, পৌষে জ্ঞানহানি, মাঘে  
 মেধাবৃদ্ধি, ফাল্গুনে সর্কবশ্য হয়। রবি, বৃহস্পতি,  
 শোম, বুধ ও শুক্রবারে দীক্ষা প্রশস্ত। রোহিণী,  
 জ্ববা, ধনিষ্ঠা, উত্তরাষাঢ়া, উত্তরফল্গুনী, উত্তর-  
 তাম্রপদ, পুষ্যা ও শতভিষা মক্ষত্রে দীক্ষা প্রশস্ত।  
 আখিনী, রোহিণী, স্বাতি, বিশাখা, হস্তা ও  
 জ্যেষ্ঠাতেও দীক্ষা হতে পারে। বিক্রান্ত, পক্ষমী,  
 বক্রী, মঙ্গলী, দশমী, ত্রয়োদশী ও পূর্ণিমাতে দীক্ষা  
 প্রশস্ত।

শুক, সিক, আবুমান, কব, প্রীতি, সৌভাগ্য,  
 সুখ ও স্বর্গবেসি দীক্ষাতে প্রশস্ত। বুধ, সিংহ,  
 মিত্র ও মীনপদ দীক্ষার প্রশস্ত। শুক্র, মালব,

নং-ভীর্ষে চন্দ্রস্বয়ংগ্রহে, শ্রাবণীপূর্ণিমা  
 চৈত্রমাসে চতুর্দশীতে মাসাদিত্যকির অপেক্ষা নাই।  
 তদ্ব্যগরে উক্ত হইয়াছে,—কোন ভাগ্যে সন্ধ্যার  
 লাভ হইলে, ঊর্ধ্বার আত্মামাত্র দীক্ষিত হইবেন,  
 দেশকালাদি নিচার করিবেন না। গ্রামে, অরণ্যে  
 ক্ষেত্রে, দিবসে বা রাত্রে যে সময়েই হউক সন্ধ্যার  
 লাভ হইলেই দীক্ষা গ্রহণ করিবে। ক্রিয়াময়ী,  
 কলাহ্লা, বর্ণময়ী ও বেদাময়ী ভেদে দীক্ষা  
 চতুর্বিধ। এখানে ক্রিয়াময়ী দীক্ষার সঙ্ক্ষেপ  
 প্রয়োগ বলা হইবে। অল্প ত্রিবিধা দীক্ষা গুরুর  
 নিকট জানিবেন। দীক্ষা প্রয়োগ,—

মন্ত্রগ্রহণের পূর্কদিনে শিষ্য সংযত থাকিয়া  
 মন্ত্রগ্রহণদিনে দ্বানাদি করিয়া পূর্কভিমুখে উপ-  
 বেশন পূর্কক তিলক ও মালাধারণ করতঃ  
 বলিবেন,—এতে গন্ধপুষ্পে শ্রীগুরবে নমঃ, এতে  
 গন্ধপুষ্পে শ্রীনারায়ণায় নমঃ, এতে গন্ধপুষ্পে  
 আদিভাদিনবগ্রহেভ্যো নমঃ, এতে গন্ধপুষ্পে  
 ব্রাহ্মণেভ্যো নমঃ। পরে আতপতঙ্গুণ ও চুর্কা  
 লইয়া বলিবেন—(শুধু ও স্থানে নমঃ পাঠ  
 করিবেন।)

“কর্তব্যোহস্মিন্ দীক্ষা কশ্মণি পুণ্যাং ভবস্তো  
 ক্রবন্, ওঁ পুণ্যাং পুণ্যাং পুণ্যাং। কর্তব্যোহস্মিন্  
 দীক্ষাকশ্মণি ওঁ স্বস্তি ভবস্তো ক্রবন্, ওঁ স্বস্তি  
 তিনবার পড়িবে। কর্তব্যোহস্মিন্ দীক্ষাকশ্মণি  
 ঋক্ণি ভবস্তো ক্রবন্, ওঁ ঋক্ণি তিনবার পড়িবে।  
 ওঁ স্বস্তি ন ইন্দ্রো বৃহস্রবাঃ স্বস্তি নঃ পূষা বিশ্বদেবাঃ  
 স্বস্তি ন স্তাক্ষোহরিষ্টনেমিঃ স্বস্তি নো বৃহস্পতি-  
 দবাতু।”

এই মন্ত্র ষায়া শুভুগুণি ভূমিতে নিক্ষেপ  
 করিয়া কৃতান্তি হওতঃ বলিবেন,—

ওঁ স্বর্গাঃ সোমো বয়ঃকালঃ সন্ধো তৃতীয়াহরকপাঃ  
 পবনো বিকপতিত্বু মিমা কাশং ষচরামদরাঃ।  
 শ্রীকৃষ্ণ শীঘ্রমাহার কল্পকামিনিস্রিবিঃ।  
 পরে দীক্ষার বস্তু পরিষ্কার করিয়া

অমুককরমন্ত্রগ্রহণমহং করিব্যে। পরে গুরুকে  
বরণ করিবেন।

ও কেবো বা ত্রিবেণোষা পূর্ণাঃ বিবটাসিচন্।

উদবাসিকধর্মুপবাসিধর্মুমাঙ্গিষো দেবতুহতে ॥

পরে গুরুকে আসন দিয়া বলিবেন,—ওঁ সাধু  
তবানাস্তাম্। গুরু-উক্তি, ওঁ সাধুহমাসে। শিবা-  
উক্তি, ওঁ অর্চয়িষ্যামো ভবন্তম্। গুরু উক্তি, ওঁ  
অর্চয়। পরে শিষ্য পুষ্প, বস্ত্র ও অলঙ্কারাদি  
দ্বারা গুরুকে পূজা করিয়া তঁহার দক্ষিণজায়  
ধরিয়া বলিবেন, বিষ্ণুরোম্ তৎসদৃশ ইত্যাদি  
অমুকগোত্রঃ শ্রীঅমুকঃ অমুকমন্ত্রোপদেশকর্ম্মপি  
অমুকগোত্রং অমুকপ্রবরং শ্রীঅমুকম্ অতির্গন্ধাদি-  
ভিরভ্যর্চ্য গুরুভবেন ভবন্তমহং বৃণে। গুরু  
উক্তি, ওঁ বৃতোহস্মি। শিবোক্তি, ওঁ যথাবিহিতং  
গুরুকর্ম্মকুরু। গুরু উক্তি, ওঁ যথাচ্ছানং  
করবাণি।

পরে গুরু আচমন, মণ্ডপের দ্বারে সামাজ্যার্চ্যা-  
স্থাপন, অর্ঘ্যজল দ্বারা নিম্নশরীর ও দ্বারদেশের  
অভ্যুক্ষণ, দ্বারদেবতার পূজা, মণ্ডপ মধ্যে প্রবেশ  
করিয়া বাস্তুপুরুষাদির পূজা, দীক্ষামণ্ডলনির্মাণ,  
বিরোৎসারণ, আসনগ্রহণ, পাত্রাসাদন, দীপ-  
প্রজালন, গুরুদিবন্ধন, করশোধন, দিগ্‌বন্ধন,  
ভূতশুক্টি, প্রাণায়াম, জ্ঞান, মুক্তা মানস ও বাহ্য  
পূজা। পরে যথাবিধি সংস্থাপিত ঘটে পুষ্পাজল  
দিয়া যথোক্তবিধানে হোম করিয়া শিবাকে অগ্নির  
নিকটে অভিব্যক্তমন্ত্রোচ্চারণ পূর্বক শোধিত  
মুটু জল দ্বারা অভিব্যক্ত করিয়া শিব্যসংক্রান্ত  
আশ্বদেবতাকে পূজা করিবেন।

পরে গুরু হং কটু মন্ত্র দ্বারা শিষ্যের শিখাবন্ধন  
করিয়া তঁহার মস্তকে ১০৮ বার মূলমন্ত্র জপ  
করিয়া "অমুকমন্ত্রং ক্তে দদামি" ইহা বলিয়া শিষ্য  
হস্তে জল দিবেম। শিষ্য বলিবেন, "দদবা"  
পরে গুরু শিষ্যবিন্যাস মন্ত্র শিকরেবে স্যাস করিয়া  
শিষ্যের বস্তু দিবেম। পরে শিষ্য এই মন্ত্র জপ

গুরুচরণে পতিত থাকিবেম। গুরু নিরোক  
বাক্য পাঠ করিয়া শিবাকে উঠাইবেন।

"উত্তিষ্ঠ বৎস মুক্তাসি সমাগাচারবান্ ভব।

কীর্তিঃ শ্রীঃ কান্তিরতুলা বলাহাগ্যং সদাস্ত্রে ॥

পরে স্বশক্তিরক্ষার্থে ঐ মন্ত্র গুরু একশতবার  
জপ করিবেন। পরে শিষ্য কুশ, তিল ও জল  
লইয়া "বিষ্ণুরোম্ তৎসদৃশ ইত্যাদি কৃতৈতৎ  
অমুকমন্ত্রগ্রহণপ্রতিষ্ঠার্থং দক্ষিণামিনং অমুকগোত্রায়  
অমুকদেবশর্ম্মণে গুরুবে তুভ্যমহং সম্প্রদদে" এই  
মন্ত্র দ্বারা দক্ষিণাস্ত করিয়া গুরুর প্রসাদ ভোজন  
করিবেন।

প্রাতঃস্মৃতিরূপ অর্থাৎ শৌচ আচমন  
হইতে উপচারে অর্চন পর্য্যন্ত।

কাশীক্ষেপে বলিয়াছেন, শিষ্যে একবার, মলদ্বারে  
পাঁচবার, বামকরে দশবার, হুই হাতে সাভবার,  
হুই পায়ে এক এক বার গৃহীগণ শৌচসাধন  
মুক্তিকা লেপন করিবে। গৃহী অপেক্ষা ব্রহ্মচারী  
ত্রিগুণ, বাণপ্রস্থ ত্রিগুণ ও তিষ্ঠু চারিগুণ শৌচচরণ  
করিবে। দিবাতে বে বিধি নির্দিষ্ট আছে, রাত্রে  
তাচার অর্ধ আচরণ করিবে। কপ্তাহহার তদর্ক,  
চৌরাদি দ্বারা আক্রান্ত পথে তদর্ক, জীলতিম  
পক্ষে তদর্ক ব্যবহৃত। বস্মীকৃত, সুবিকোক্ত,  
সলিলমধ্যস্থ প্রভৃতি মুক্তিকা শৌচকর্মে গ্রহণ  
করিতে নাই।

আচমনবিধি, মধ্যের অষ্টমে ১১  
পৃষ্ঠায় বলা হইয়াছে ॥ ১০১ ॥

( ২৮৫ পা ) "দন্তদাবন...প্রবোধন ॥"  
এই ১:২ পয়ারের ভাবার্থ।

আয়ুর্কলং যশোবর্চঃ প্রজা পশুবহ্নি চ।  
ব্রহ্ম প্রজ্ঞাক মেধাক যং নো ধেধি বনস্পতে চ।  
অথবা, সোমোরাচারমাগমন্ স মে মুখ  
সম্বোধ্যতে যশসা চ ভগেন বা।"  
এই মন্ত্র পাঠ কর্তব্য।

করিলে, চতুর্দশী, অষ্টমী, অমাবস্যা, পূর্ণিমা, সংক্রান্তি, রবিবার, প্রান্তিনথ, মঘনী, বসন্ত ও পশুনাগে বসন্তকাঠ দ্বারা দত্তধাবন নিবেদ্য। এই দিনে, ছুপ, বৃকবকল বা পত্র দ্বারা দত্তধাবন করিবে।

জানবিধি মধোর অষ্টমে ভাবার্থে ৯৯ পুষ্ঠায় দেখুন।

দ্বিতীয় বৈদিকী ও তান্ত্রিকী ভেদে বিবিধ। বৈদিকী সন্ধ্যা গুরুর নিকট আনিবেন। তান্ত্রিকী সন্ধ্যা বধা, তুলসী উচ্চারণ করিয়া শ্রীকৃষ্ণচরণ চিত্তা করিতে করিতে "শ্রীকৃষ্ণ তর্পরামি" মন্ত্রে তিসবার তর্পণ করিবে। সূর্যমণ্ডলমধ্যস্থ ধ্যানো- দিষ্ট শ্রীকৃষ্ণোদেশে কামগারত্নী পাঠ করিয়া "ইদমর্থাং শ্রীকৃষ্ণায় নমঃ" মন্ত্রে শ্রীকৃষ্ণকে অর্ঘ্য দিবেন। পরে সূর্যমণ্ডলে শ্রীকৃষ্ণকে ধ্যান করিয়া দশবার কামগারত্নী জপ করিয়া "কমম্ব" মন্ত্রে জল সমাপন পূর্বক "ইদমর্থাং শ্রীসূর্যায় নমঃ" মন্ত্রে সূর্যকে অর্ঘ্য দিবেন। শ্রীকৃষ্ণের অর্চনার্থ উপস্থিত হইয়া অগ্নে গুরুকে সেবা করিবে। স্মৃতি মতানুসারে বলিয়াছেন,—

"ত্রিকলাপি ন পশ্যত রাজানং তিবজং গুরুম্ ॥" রাজা, ত্রিকালক ও গুরুর সহিত ত্রিকাল হস্তে সাক্ষ্য করিতে নাই।

উর্দ্ধপুণ্ড্র অর্থাৎ তিলক। সম্প্রদায় ভেদে উর্দ্ধপুণ্ড্র রচনা বিভিন্ন। দশাঙ্গুলপ্রমাণ উর্দ্ধপুণ্ড্র, উর্দ্ধপুণ্ড্র, মধ্যাঙ্গুল মধ্যম ও অষ্টাঙ্গুল কনিষ্ঠ।

চক্রাবধারণ, দক্ষিণবাহুতে চক্রচিহ্ন, বাম বাহুতে উর্দ্ধপুণ্ড্র বাহুতে পঞ্চ বামবাহুতে গদা, পশ্চিম দিকে পূনরার চক্রধারণ করিতে হয়। চক্রের পরিপত্র, বসন্ত কক্ষ, মস্তকে মস্তক পরাসন করিতে করিবে। কাঠাদি দ্বারা চক্রাবির বিধি (কল্পিত) করিয়া গহিতে হয়।

শ্রীকৃষ্ণের নামাঙ্কন। শ্রীকৃষ্ণের নামাঙ্কন করিয়া শ্রীকৃষ্ণের নামাঙ্কন করিবে।

করিলে, পরে তুলসী পূর্ণ করাইয়া কৃষ্ণ পূর্বক পূজা করিবে।

"তুলসী কাঠমকুণ্ডে যাজ্ঞিক কৃষ্ণজনপ্রিয়ৈ।  
বিতর্পিত্ব ত্রাসহং কঠে কুঙ্কু মাং কৃষ্ণধরতাম্ ॥  
বধা স্বং মলজা বিকোনিভাং বিজুজনপ্রিয়া।  
তথা মাং কুরুদেবেশি নিক্যাং বিজুজনপ্রিয়া ॥  
নামে না ধাতুরুদ্ধিষ্টো লাসি মাং হরিবজ্রতে।  
ভক্তোভ্যশ্চ সমন্তেভ্যশ্চেন মালা নিগভতে ॥"

এই প্রার্থনা মন্ত্র পাঠ করিয়া মালাধারণ করিবে।

তুলসী আহরণ, তুলসীচয়ন। তন্ত্রমন্ত্র যথা,—

তুলসায়ুতজগ্মাসি সখা স্বং কেশবপ্রিয়া।  
কেশবার্থে চিনামি স্বাং বরদা ভব শোভনে ॥  
স্ববজসত্ত্ববৈঃ পঠৈঃ পূজয়ামি বধা হরিম্।  
তথা কুরু পবিত্রাঙ্গি কপৌ মলবিনাশিনি ॥  
মোটককহেতোঃ ধরনী প্রশস্তে  
বিষ্ণোঃ সমস্তস্য গুরোঃ প্রিয়েতি।  
আরাধনার্থং বরমঞ্জরীকং  
সুনামি পত্রং তুলসি কমম্ব ॥

এই মন্ত্র বলিয়া প্রণাম করতঃ দক্ষিণ হস্তে এক একটি পত্র ও মঞ্জরী চরণ করিবে। দান না করিয়া কখন তুলসীচয়ন করিতে নাই। স্মৃতিশাস্ত্রে সংক্রান্তি, অমাবস্যা, পূর্ণিমা, দ্বাদশী ও রবিবারে তুলসীচয়ন করা নিবেদ্য থাকিলেও হরিভক্তেরা কেবলব্রাহ্ম দ্বাদশীতেই তুলসীচয়ন করেন না।

বসন্ত, পীঠ ও মন্দির সংস্কারবিধি হরিভক্ত- বিলাসে দেখিবেন। প্রাতঃকৃত্য সমাপনান্তে দেবগৃহে গমন করতঃ তালবতোক্ত শ্রুতিভক্তি বা কাগরণোপযুক্ত অন্যান্য পত্র দ্বারা শ্রীকৃষ্ণকে অর্পিত করিয়া আরাতি করিবেন। ইহা হই কৃষ্ণপ্রদোষ ॥ ১৩ ॥

(১৩) শ্রীকৃষ্ণের নামাঙ্কন। শ্রীকৃষ্ণের নামাঙ্কন করিয়া শ্রীকৃষ্ণের নামাঙ্কন করিবে।

সংস্কৃত ভাষার ইতিহাস । ১৩৪  
 পূর্বে :— বৈষ্ণব-সংস্কৃত-ভাষা,— আশন, অংগত,  
 পাদা, অর্থা, আচমনীয়, মধুপক, গুল্লাচমনীয়,  
 মার, বসন, আভরণ, গন্ধ, পুষ্প, ধূপ, দীপ,  
 নৈবেদ্য ও বন্ধন । পঞ্চাশৎ উপচার বধা,—  
 হরিতকিরিলাসের একাদশবিলাসোক্ত ৩৪ উপচার  
 হইতে মঙ্গলারতি, নীরাঙ্গন মহানীরাঙ্গন, নৈবেদ্যা-  
 র্পণ, পরিধেয়, উত্তরীয়, দিব্যবস্ত্র, তীর্থনির্ধালাধারণ,  
 কোমলভাষিক্রমণ ও মুক্তটানি স্বয়ংকটি বাধ নিলে  
 ৫০ হইতে পারে ।

পঞ্চকাল পূজা, অর্থাৎ অতি প্রত্যবে, প্রোক্ত-  
 কালে, মধ্যাহ্নে, সারাহ্নে ও রাত্রে শ্রীকৃষ্ণের পূজা  
 ও আরতি প্রকৃতি করিতে হয় । শ্রীমুর্তির লক্ষণ  
 বিংশ পরিচ্ছেদে দেখিবেন ॥ ১৩৩ ॥

(২৮৫ পা) “বৈষ্ণবলক্ষণ...ভোজন ॥”  
 ১৩৪ পয়ারের ভাবার্থ । বৈষ্ণব, শঙ্খ,  
 জল, গন্ধ, পুষ্প ও ধূপাদির লক্ষণ হরি-  
 ভক্তিবিলাসে দেখিবেন বা গুরুর নিকট  
 জানিবেন । জপাদির বিধিও হরিভক্তি-  
 বিলাসে দেখিবেন । গ্রন্থ বাহুল্য ভয়ে  
 উক্ত হইল না ॥ ১৩৪ ॥

(২৮৫ পা) “অনিবেদ্য ... ভক্তির  
 লভন ॥” এই ১৩৫ হইতে ১৩৭ পয়ার  
 পর্যন্ত ভাবার্থ । অনিবেদ্য ত্যাগ হইতে  
 ভাগবতভাবণ পর্যন্ত বিষয়গুলির বিধি  
 পূর্বে লক্ষণে বলা হইয়াছে ।

একাদশ্যাদিত্রয় নিত্যকর্ম । স্তব্ধাদি অশৌচে  
 ও শ্রাদ্ধবিষয়ে একাদশী নিত্য । একাদশী  
 সম্পূর্ণ ও বিজ্ঞা ভেদে বিবিধা । বিজ্ঞা একাদশী  
 অস্বাদী পূর্বে ও উত্তরবিজ্ঞা ভেদে বিবিধা । প্রক্টি-  
 পদ্ধতি তিথিমল স্বয়ং এক উপর হইতে আরম্ভ  
 করিয়া অপর উপর পর্যন্ত বাম্বিলে উহাদিগকে  
 পূর্বে স্থিতি যোগে । একাদশী স্তব্ধাদিত্রয় পূর্বে  
 স্তব্ধাদিত্রয় পূর্বে স্তব্ধাদিত্রয় পূর্বে

মুহূর্ত্ত । স্তব্ধাদিত্রয় পূর্বে স্তব্ধাদিত্রয় হইতে  
 যদি একাদশী আরম্ভ হয়, তবে তাহাকে সম্পূর্ণ  
 একাদশী বলে ; নচেৎ উহা বিজ্ঞা । পূর্বে  
 অর্থাৎ দশমীবিজ্ঞা একাদশী সকলেই পরিত্যাগ  
 পূর্বে বিজ্ঞা একাদশী আবার সন্নিধ্য, সংযুক্ত  
 সঙ্গীর্ণ ভেদে ত্রিবিধা । একাদশী যদি স্তব্ধাদিত্রয়  
 পূর্বে তিনদণ্ডব্যাপিনী হয়, তবে উহা সন্নিধ্য ।  
 দুইদণ্ড ব্যাপিনী হইলে সংযুক্ত । স্তব্ধাদিত্রয় হইতে  
 আরম্ভ করিয়া বট্টদণ্ডব্যাপিনী হইলে, সঙ্গীর্ণ  
 একাদশী বলা হয় । ধর্মকলাতিলাসী ব্যক্তি এই  
 ত্রিবিধা দশমীবিজ্ঞা একাদশীকেই ত্যাগ করেন ।  
 একাদশী বর্জিত হইয়া, দ্বাদশীর দিনে, দ্বাদশী বর্জিত  
 হইয়া ত্রয়োদশীর দিনে, অথবা অমাবস্যা ও পূর্ণিমা  
 বর্জিত হইয়া প্রতিপদের দিনে গমন করিলেই  
 দশমীবোধীনা সম্পূর্ণ একাদশীকে ত্যাগ করিলে  
 শাস্ত্র উপদেশ যেন । একাদশী বর্জিত হইয়া দ্বাদশীর  
 দিনে গমন করিলে, সম্পূর্ণ একাদশীকে ত্যাগ  
 করিয়া দ্বাদশীতে একাদশী ব্রত করা কর্তব্য ।  
 ইহা স্মার্ত্তেরও অস্বীকার করেন না । অন্যান্য  
 তিথিমলের ন্যায় একাদশীর তিথিমল যে অপ্রকৃতি  
 নহে, তাহা সর্ববাদিসম্মত । তিথি কখন কখন  
 বট্টদণ্ডের অধিক হইয়া পরদিনে গমন করে ।  
 ঐ পরদিনগামিনী তিথিকে তিথিমল বলা হয় ।  
 তিথিমল সর্বথা পরিত্যাগ হইলেও একাদশী  
 তিথির মল গ্রাহ্য ।

দ্বাদশী প্রকৃতির বৃদ্ধিতেও যে একাদশী ত্যাগের  
 ব্যৱস্থা আছে, তাহা বলা হইতেছে । তথা একাদশী  
 বৃদ্ধি পাইয়া যদি পরদিন কিম্বা ত্রয় দৃষ্ট হয়, অথবা  
 দ্বাদশীর বৃদ্ধি হয় না, উহাকে উদ্যমলী মহাদ্বাদশী  
 বলে । একাদশীর বৃদ্ধি না হইয়া কেবল দ্বাদশীর  
 বৃদ্ধি হইলে, উহাকে ব্যঙ্গলী মহাদ্বাদশী বলে ।  
 একাদশী, দ্বাদশী ও ত্রয়োদশীর যোগ হইলে, উহা  
 যোগবিরকে ত্রিশূণ্য মহাদ্বাদশী বলে । পূর্ণিমা  
 অমাবস্যা বট্টদণ্ডের অধিক হইয়া পরদিন

বাদনী বলে। পুনর্নক্ষত্রযোগে শুক্রপক্ষে  
বাদনী জয়ানামী মহাবাদনী হয়। শুক্রপক্ষে শ্রবণা  
নক্ষত্র যোগে বিজয়ানামী মহাবাদনী হয়। পুষ্যা-  
যোগে পাপনাশিনী নামী মহাবাদনী এবং রোহিণী  
যোগে জয়ন্তীনামী মহাবাদনী হয়। এই অষ্টমহা-  
বাদনী উপস্থিত হইলে শুক্র একাদশী ত্যাগ করিয়া  
বাদনীতে উপবাস কর্তব্য। তথাহি ব্রহ্মবৈবর্তে,—

“বাদশোহষ্টৌ সমাখ্যাতা যাঃ পুরাণাবচক্ষণৈঃ ।

তাসামেকাপি চ হতা হস্তি পুণ্যং পুরাকৃতম্ ॥”

সুধীগণ কর্তৃক পুরাণে যে অষ্টমহাবাদনী  
বর্ণিত আছে, তন্মধ্যে একটিনাত্র ত্যাগ করিলেও  
সেই ত্যক্তা দ্বাদশীবর্জনকারির পূর্বাঙ্কিত পুণ্য  
নষ্ট হয়। একাদশী বর্জিত হইয়া দ্বাদশীর সহিত  
মিশ্রিত হইলে ঐ দ্বাদশীমিশ্রা একাদশীতে উপবাস  
কর্তব্য। দ্বাদশী বৃদ্ধি বা অর্জনের অপেক্ষা নাই।  
দ্বাদশী বৃদ্ধি না হইলে উন্নীতনী বর্ণিয়া, দ্বাদশী  
বৃদ্ধি হইলে একাদশীমিশ্রা দ্বাদশী একাদশী বলিয়া  
উপোষ্যা হইবেন। একাদশীর বৃদ্ধি না হইয়া  
কেবল দ্বাদশীর বৃদ্ধি হইলে, একাদশীর পরবর্ত্তিনী  
ষষ্টিগুণাশ্বকা দ্বাদশী বাজুণী বলিয়া উপোষ্যা  
হইবেন। তথাহি পদ্মপুরাণে—

শুক্রপক্ষে তথা কৃষ্ণে যদা ভবতি বাজুণী ।

একাদশীদিনে ভুক্ত্বা দ্বাদশ্যাং কারয়েদ্রুতম্ ॥

শুক্র বা কৃষ্ণপক্ষে বাজুণী হইলে একাদশীতে  
আহার করিয়া দ্বাদশীতে ব্রত করিতে হয়। দ্বাদশীর  
মূল অগ্রাহ্য হইবে। এক দিনসে প্রথমে অন্নমাত্র  
একাদশী, মধ্যে ক্ষীণা দ্বাদশী ও অন্তে ত্রয়োদশী  
হইলে, ত্রিশূপা বলিয়া উপোষ্যা হইবেন। ত্রয়ো-  
দশীর ক্ষয় হইলে পক্ষবর্জিনী দ্বাদশীতে উপবাস না  
হইয়া একাদশীতে উপবাস হইবে; কারণ, ঐ  
স্থলে দ্বাদশীতে উপবাস করিলে, নৃসিংহচতুর্দশীর  
অমুরোধে পারণের লোপ অথবা পারণের অমু-  
রোধে চতুর্দশীত্রয়ের লোপ হইতে পারে। আর  
শুক বা অশুক যে কোন মাসের শুক্রাদ্বাদশীতে  
পুনর্নক্ষত্র, জয়গাধি যোগে জয়া, বিজয়া, জয়ন্তী ও

পাপনাশিনী চারিটি মহাবাদনীই উপোষ্যা।

তথাহি ব্রহ্মপুরাণে,—

“তামুপোষ্যা নরো যোরে নরকে নৈব মজ্জতীত্যাদি ॥”

জয়ানামী দ্বাদশীতে উপবাস করিলে ভীষণ  
নরকে পতিত হয় না। ব্রহ্মপুরাণোক্ত “দ্বাদশ্যাশ্চ  
নিরাহার” ও “জয়ন্ত্যাশ্চ নিরাহারঃ” এবং “ইমা-  
মেকামুপোষ্যেব” ইত্যাদি বচনে বিজয়া প্রভৃতি  
দ্বাদশীতেই উপবাস করিতে বলিলেন। পুনর্নক্ষত্র  
প্রভৃতি নক্ষত্র সূর্যোদয় বা সূর্যোদয়ের পূর্বে হইতে  
প্রবৃত্ত হওয়া চাই। উহার সূর্যোদয়ের পর প্রবৃত্ত  
হইলে মহাবাদনী হইবে না। ঐ সকল নক্ষত্র  
যদি সূর্যোদয়ের সময় হইতে প্রবৃত্ত হয়, তবে  
দিনমান অপেক্ষায় অধিক বা সমান কিম্বা নূন  
হইলেও মহাবাদনী হইবে। আর যদি সূর্যোদয়ের  
পূর্বে প্রবৃত্ত হয়, তবে দিনমানাপেক্ষা অধিক বা  
সমান হইলেই হইবে, নূন হইলে হইবে না।

জয়া, জয়ন্তী ও পাপনাশিনী স্থলে সূর্যাস্ত  
পর্যন্ত, বিজয়া স্থলে অন্ততঃ বেলা দেড়প্রহর  
পর্যন্ত দ্বাদশী থাকা চাই। দেড়প্রহর পর্যন্ত  
দ্বাদশী না থাকিলে, ত্রয়োদশীর ক্ষয়ে চতুর্দশীতে  
পারণ ঘটবে, চতুর্দশীতে পারণ, কিম্বা কেহই  
স্বীকার করেন না। উপবাস দিন তিথি ও নক্ষত্র  
বর্জিত হইয়া পরদিনে গমন করিলে, তিথির  
আধিক্যে নক্ষত্রান্তে দ্বাদশীর প্রথমপাদ ত্যাগ  
করিয়া তিথির মধ্যেই; আর নক্ষত্রাধিক্যে তিথি  
ও নক্ষত্র উভয়েরই মধ্যেই পারণ করিতে হইবে;  
কারণ দ্বাদশীতিথির লঙ্ঘন নিষিদ্ধ। পারণদিনে  
যদি দ্বাদশী না থাকে, এবং রোহিণী ও শ্রবণা-  
নক্ষত্র বৃদ্ধি পায়, তবে নক্ষত্র মধ্যেই; আর  
যদি পুনর্নক্ষত্র ও পুষ্যা বৃদ্ধি পায়, তবে নক্ষত্রান্তে  
পারণ করিতে হইবে।

পক্ষরুত্যা বলিলেন। মাসরুত্যা অর্থাৎ  
অগ্রহায়ণ হইতে আরম্ভ করিয়া প্রাতি-  
মাসের মাসরুত্যা সকল যথাবিধি পালন  
করিতে হইবে। হরিভক্তিবিলাসে সবি-  
শেষ দেখিবেন।

ফাঙ্কনকৃত্যে শিবরাত্রি ত্রত । ভগবৎস্মৃতির জ্ঞ  
বৈষ্ণবগণ শিবরাত্রি ত্রত করেন । ত্রেয়োদশী বিক্রা  
চতুর্দশী বৈষ্ণবগণ ত্যাগ করেন, কখনই বিক্রাত্রত  
করেন না । চৈত্রকৃত্যে শ্রীরামনবমী শুদ্ধা গ্রাহ্যা  
ও পূর্বাষ্টা ত্যাগ্যা ; কিন্তু একাদশীও ত্রতসের  
সম্ভাবনা ঘটিলে, পূর্বাষ্টাও গ্রাহ্য হয়েন । সু সংহ-  
চতুর্দশী শুদ্ধাহ গ্রাহ্যা । ভাদ্রকৃত্যে জন্মাষ্টমী ।  
কেবল অষ্টমীতে উপবাস অপেক্ষা রোহিণীযুক্তা  
অষ্টমীতে উপবাস করিলে ফনাাতপয় হয় । ঐ  
রোহিণী যদি শুক্ররাত্রি অষ্টমীর সহিত সংযোগ  
পায়, অথবা রোহিণীযুক্তা অষ্টমীতে সোমবাব বা  
বৃশবাবের লাভ হয়, কিম্বা তাদৃশ অষ্টমী যদি নবমী  
সংযুক্তা হয় ; তাহা হইলেও মহাকলা হয় ।

কিন্তু ঐ রোহিণীর প্রভাতের যোগ না হইলেও  
কেবল অষ্টমীতেই উপবাস করিলে ; কারণ,  
অষ্টমীতে উপবাসই বিধি ; রোহিণীদিগের যোগ  
কেবল বৈশাখ্যবোধক । অষ্টমীতে উপবাস না  
করিলে, ত্রত শোণ ঘটিয়া থাকে । ঐ অষ্টমীতে  
মৃগশীর্ষা বিক্রা হইলে, সন্ধ্যা ত্যাগ্যা । রোহিণীর,  
সোম বা বৃশবাবের যোগ হইলেও মৃগশীর্ষিকা  
অষ্টমীতে উপবাস কর্তব্য নহে । মৃগশীর্ষিকা-  
সহিতা বা শুদ্ধা অষ্টমী না পাচলে, নবমীতেও  
উপবাস হইবে । শুদ্ধা অষ্টমী পাইলে, নক্ষত্রদিগের  
যোগ হউক বা না হউক, ঐ দিবসেই উপবাস  
হইবে । যদি শুদ্ধা অষ্টমী সূর্যোদয় হইতে শ্রবৃত্ত  
হইয়া বৃদ্ধক্রমে পরদিনে গমন করে এবং পরদিনে  
যদি অষ্টমী মুহূর্তের নূন বা অনূন কাল ব্যাপিয়া  
থাকে এবং নক্ষত্র ও বারের যোগ না হয়, তবে  
পূর্নদিন উপবাস হইবে । পরদিন নক্ষত্র ও  
বারের যোগ হইলে পরদিন উপবাস হইবে ।  
শুদ্ধাষ্টমী দুই দিন হইলে, যে দিন অর্দ্ধরাত্রি  
রোহিণী পাইবে, সেই দিন উপবাস হইবে । দুই  
দিনই অর্দ্ধরাত্রি রোহিণী পাইলে পূর্নদিন, না  
পাইলে পরদিন উপবাস হইবে । যদি পূর্নদিস  
সোম বা বৃশবাব যোগ হয়, তবে পূর্নদিন উপবাস

হইবে । পারদীনে ত্রিধির বৃদ্ধিক্রমে অষ্টমী  
থাকিলে, অষ্টমী ত্রিধির অষ্টে এবং নক্ষত্রের বৃদ্ধি-  
ক্রমে নক্ষত্র থাকিলে রোহিণীর অষ্টে পারদ হইবে ।  
কেহ কেহ বলেন, ত্রতই যখন নক্ষত্রের অপেক্ষা  
নাই, তখন পারদে নক্ষত্রের অপেক্ষা কেন ?  
ত্রিধিঘটিত ত্রত ত্রিধিরই অপেক্ষা । উপবাসদিনে  
অষ্টমী বাটদণ্ড হইয়া পরদিনে গমন করিলেও  
অল্পকণই থাকে ; পরদিনের কৃত্য করিতে করিতে  
উক্ত ত্রিধিসং শেষ হয় ; অতএব উৎসবাস্তে  
পারদের বিধান হইয়াছে । এই মতে ত্রিধি ও  
নক্ষত্র উভয়ের বৃদ্ধি হইলেও উৎসবাস্তে বা ত্রিধি-  
সমূহ পারদ উক্ত হয়, উভয়ের অষ্টে পারদ উক্ত  
হয় না ।

শ্রবণবাদনী মাসকৃত্যের মতো । মাসকৃত্য  
মলমাসে হয় না । অতএব শুক্র ভাদ্রের শুক্রাধাদনী  
শ্রবণানক্ষত্রযুক্তা হইলে শ্রবণবাদনী বলে । শ্রবণ-  
বাদনী উপস্থিত হইলে এবং উহা মহাধাদনীলক্ষণ-  
যুক্তা না হইলে, কেহ কেহ সমর্থপক্ষে একাদশী  
ও দ্বাদশী এই দুইটি ও অসমর্থপক্ষে কেবল  
দ্বাদশীতে উপবাসের ব্যবস্থা করিয়া থাকেন । শুদ্ধ  
বৈষ্ণবগণাক্ষত্ব তাহা স্বীকার করেন না । তাহার  
বলে, শ্রবণাধাদনীও যখন মহাধাদনীলক্ষণযুক্তা  
না হইলে উপোষা করেন না এবং মণাধাদনী  
উপস্থিত হইলে, যখন একাদশী ত্যাগ করিয়াও  
মহাধাদনীতেই উপবাস করিতে হয়, তখন শ্রবণ-  
বাদনীতেও তাহাই না হইবে কেন ? দ্বাদশীতে  
শ্রবণার যোগ না হইয়া কেবল একাদশীতেই  
যদি উহার যোগ হয়, তবে একাদশীতে উপবাসী  
থাকিয়া দ্বাদশীতে পারদ করিতে হইবে ; ইহাকে  
শ্রবণৈকাদশী বলে । কিন্তু ঐ শ্রবণাযুক্তা একাদশীর  
রাত্রি প্রভৃতি কোন সময়েও যদি দ্বাদশীর সহিত  
শ্রবণার যোগ না হয়, তবেই উক্ত যোগ দিবসকে  
শ্রবণৈকাদশী বলে । অতথা ঐ যোগদিবসের  
উপবাসকে শ্রবণৈকাদশীর উপবাস না বলিয়া  
বিকল্পশ্রবণযোগের উপবাস বলা হইবে ।



একাদশী, দ্বাদশী ও শ্রবণা একদিনে হইলে, ঐ যোগদিবসকে বিষ্ণুশুভ্রলযোগ বলে। বিষ্ণুশুভ্রল উপস্থিত হইলে, উহার বিশেষত্ব হেতু বৈষ্ণবগণ ঐ দিনই উপবাস করেন। বিষ্ণুশুভ্রলযোগ দুই প্রকার। একাদশীর সহিত শ্রবণস্পৃষ্ট দ্বাদশীর যোগে সামাজ্য এবং শ্রবণস্পৃষ্ট একাদশী ও শ্রবণস্পৃষ্ট দ্বাদশীর পরস্পর যোগে বিশেষ। উভয়এই যোগ-দিনই উপোষা। পরদিন মহাদ্বাদশী না গটিলে, পূর্নদিন শ্রবণানক্ষত্রের যোগ হউক বা না হউক পূর্নদিনই উপোষা হইবে। কারণ, পূর্নদিন শ্রবণার যোগে বিষ্ণুশুভ্রল হইলে বিষ্ণুশুভ্রল বলিয়া এবং বিষ্ণুশুভ্রল না হইলে শ্রবণৈকাদশী বলিয়া উপোষা হইবে; আর পূর্নদিন যদি শ্রবণার যোগ ও মহাদ্বাদশী না হয়, তবে একাদশীর অত্যাচার হেতু একাদশী বলিয়াই উপোষা হন। বুধবারে বিষ্ণুশুভ্রলযোগ হইলে, উহাকে দেব-জন্মভিযোগ বলে। উক্ত যোগের অধিকতর মাহাত্ম্য। মহাদ্বাদশী হইলে উপবাসদিনে বুদ্ধি বশতঃ তিথি ও নক্ষত্রের পরদিনে গমন হইলে নক্ষত্রান্তে তিথিমধ্যেই পারণ কবিত্তে হইবে। নক্ষত্রের আধিক্যে বা সাম্যেও তিথি ত্যাগ্য হইবে না। তিথির অভাব হইলে ত্রয়োদশীতে পারণ হইবে।

সামাজ্য বিষ্ণুশুভ্রলস্থলে তিথি ও নক্ষত্র উভয়ের পরদিনগমনে তিথ্যাধিক্যে নক্ষত্রান্তে এবং নক্ষত্রাধিক্যে বা তিথি ও নক্ষত্র সমান হইলেও দ্বাদশী অতিক্রম দোষাবহ বলিয়া দ্বাদশী-তিথিমধ্যেই পারণ হইবে। তিথি ও নক্ষত্র উভয়ের রাত্রি পর্য্যন্ত ব্যাপ্তিতে, রাত্রিপারণ নিবন্ধ বলিয়া দিব্যভাগে যথাকালেই পারণ হইবে। বিশেষ বিষ্ণুশুভ্রলস্থলে দ্বাদশীতে উপবাস ও ত্রয়োদশীতে পারণ হইবে। এ স্থলে দ্বাদশীর ক্ষয় হয় বলিয়াই, ত্রয়োদশীতে পারণ বিধান আনিষেদ। শ্রবণদ্বাদশীর উপবাসদিনে এবং বিষ্ণুশুভ্রল হইলে পারণ দিনেই বামনদেবের উৎসব

হইবে। বামনব্রতে উপবাসের বিধান নাট, কেবল উৎসবই কর্তব্য। শ্রবণদ্বাদশী কিম্বা সামাজ্য বিষ্ণু-শুভ্রলে বিদ্যা ত্যাগ কর্তব্য। বিশেষ বিষ্ণুশুভ্রলে বিদ্যা ত্যাগ অসম্ভব; কারণ উহাকে বিজয়া বলে। কার্তিকমাসের দীপাবিত্তা অমাবস্তার পর শুক্রাশ্রিতগণের নাম দ্বাত্ত্যাপৎ। উহা পরবিদ্যা ত্যাগ্যা ও পূর্নবিদ্যাই গ্রাহ্যা। ঐ দিন গো ও গোবর্ধনাদি পূজা করিতে হয়।

রাসযাত্রা।—যে দিন প্রদোষে মূহূর্ত্তের অন্তান পূর্ণিমা হইবে, সেই দিনই রাস আরম্ভ হইবে। দুই দিনে প্রদোষে মূহূর্ত্তের অন্তান পূর্ণিমা হইলে পবদিন, না হইলে পূর্নদিন রাসারম্ভ হইবে।

কেহ বলেন, যে দিন রাকানান্তী পূর্ণিমা, সেই দিনই রাসারম্ভ কর্তব্য। পূর্ণিমা দ্বিবধা; অমুসতি ও বাকা। যে পূর্ণিমায় স্বর্ঘ্যাস্তের পূর্বে কলাহীন চন্দ্রের উদয় হয়, তাহাকে অমুসতি বলে। যে পূর্ণিমায় স্বর্ঘ্যাস্তের পর পূর্ণচন্দ্রের উদয় হয়, তাহাকে বাকা বলে। যে দিন অপরাহ্ন-বিমূহূর্ত্ত-ব্যাপিনী পূর্ণিমা হয়, সেই দিন বাকা পূর্ণিমা। দিনমানকে পাঁচ ভাগ করিয়া তাহার চতুর্ভাগকে অপরাহ্ন বলে। অপরাহ্নের পরিমাণ তিন মূহূর্ত্ত বা ছয় দণ্ড। অতএব দিন আঠার দণ্ডের পর যদি ছয় দণ্ড পূর্ণিমা থাকে, তবে তাহাকে বাকা বলে। কারণ ঐ দিনেই পূর্ণচন্দ্রের উদয় হয়।

কেহ বলেন, যে দিন অভিজিৎসময় অর্থাৎ দিবসের অষ্টম মূহূর্ত্ত বা মধ্যাহ্নব্যাপিনী পূর্ণিমা সেই দিনই রাসারম্ভ কর্তব্য।

কেহ বলেন, রাসযাত্রাতেও পূর্নবিদ্যা পূর্ণিমা বর্জনীয়। বসন্তঃ রাকা পূর্ণিমার শুণাদায়কত্ব হেতু এবং অমূলকত্ব হেতু অপর মত জনাদরণীয়।

এই সন্দের বিদ্যা ত্যাগ ইত্যাদি অর্থাৎ একাদশী, রামনবমী, জন্মাষ্টমী ও নৃসিংহচতুর্দশী প্রভৃতি ব্রতের শুক্রা তিথ্যই গ্রাহ্যা, পূর্নবিদ্যা ত্যাগ্যা, ভবিষ্যপুরাণে উক্ত হইয়াছে—

এং জেরানি বাক্যানি বিদ্যারতপরাপি তু।  
 অবৈষ্ণবপ্রমাণেব শুক্রমায়া কৃগনি বা ॥  
 ইথঞ্চ জমাষ্টম্যাদি ব্রতাত্মাপ ন বৈষ্ণবৈঃ।  
 বিদ্বৈবহঃস্থ কার্যাদি তাদৃগ্দোষগণাশয়াং ॥”  
 বিদ্বোপবাসের প্রতি যে সমস্ত বচন আছে,  
 ৩২সমস্তই অবৈষ্ণববিষয়ক বা শুক্রমায়াকল্পিত  
 জানিবেন। একপ জমাষ্টম্যাৎ ব্রতসমূহ বিদ্বা-  
 দিনে করা বৈষ্ণবগণের অকর্তব্য, কারণে পুঙ্কোক্ত  
 মহাদোষসকল উপস্থিত হয়। উপবাসাদি ব্রত  
 নিবৃত্তিরূপ কাম। একাদশ্যাাদি ব্রত নিত্যকাম।  
 যাহা আচরণ না করিলে প্রত্যায় হয়, তাহা  
 নিত্য ও মুখ্য; ইহা সাধারণ নিয়ম। যাহাতে  
 ভগবন্তোষকপ ফল বিশেষ লাভ হয়, তাহা নিত্য  
 ও মুখ্য; ইহা অসাধারণ নিয়ম। অথবা যাহা  
 আচরণ করিলে ভগবন্তক্তি লাভ হয় তাহাই  
 মুখ্যতর। অতএব একাদশ্যাাদি ব্রত আচরণ না  
 করিলে প্রত্যায় এবং আচরণে ভক্তিলাভ হেতু,  
 উহা সকল লোকের পক্ষে মুখ্যতর ও নিত্য বিষয়ে  
 অবশ্য আচরণীয়। ১৩৫-১৩৭।

( ২৮৫ পা ) “দর্শিত্র ... লিখিয়া ॥”  
 এই ১৩৮ ও ১৩৯ পয়ারের ভাবার্থ।  
 শ্রীমূর্তিনির্মাণ ও বিষ্ণুমন্দির নির্মাণ-  
 \*বিধি হরিভক্তিবিলাসে ১৮ ও ২০ বিলাসে  
 দেখিবেন।

মহাপ্রভু কহিলেন, সনাতন, বৈষ্ণবগণের  
 আচরণীয় কর্তব্য ও অকর্তব্য সামান্য সমাচরণ  
 সঙ্ক্ষেপে বলিলাম; তুমি ইহাকে বিস্তার করিয়া  
 লিখবে। নিজগ্রন্থ অর্থাৎ শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয়  
 নাটকে। সনাতনে প্রসাদ, সনাতনের প্রতি  
 মহাপ্রভুর উপদেশ গদানকপ কৃপা ॥ ১৩৮।১৩৯ ॥

( ২৮৫ পা ) “গৌড়েন্দ্রস্যোত্যাাদি।”  
 শ্লোকের ভাবার্থো শ্লোকার্থে প্রকাশ  
 আছে। কর্ণপূর্ব সনাতনের প্রতি মহা-  
 প্রভুর প্রসাদ নিজগ্রন্থে যাহা লিখিয়া-  
 ছেন, তাহা এই শ্লোক ॥ ১৩৮।১৩৯ ॥

ইতি চতুর্দশ পরিচ্ছেদে শ্রীমদ্বৈষ্ণবোক্তো ১২মঃ

## পঞ্চবিংশ পরিচ্ছেদ।



( ২৮৭ পা ) “বৈষ্ণবীতি।” শ্লোকের  
 ভাবার্থো শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
 গ্রন্থকার পরিচ্ছেদোক্ত বিষয় শ্লোকার্থে  
 বলিলেন ॥ ১ ॥

( ২৮৭ পা ) “জয় জয় ... নিবেদন ॥”  
 এই ১ম হইতে ৩য় পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ  
 সরল। এইমত, পূর্বপরিচ্ছেদোক্তরূপে।

তারে, সনাতনকে। পূর্ব লিখিয়াছি,  
 আদির সমুদয়ে বলিয়াছি। ইহা, এই  
 পরিচ্ছেদে। শেখর, চন্দ্রশেখর ॥ ১-৩ ॥

( ২৮৭ পা ) “ভক্ত তুংখ...মন কাণ ॥”  
 এই ৪ হইতে ৭ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ  
 সরল। তেনকালে, যে সময় মহাপ্রভু  
 সম্মানিত মন ফিরাইতে মনে করিলেন

সেই সময়ে। বিশ্র, মহারাষ্ট্রীয় ব্রাহ্মণ।  
পঞ্চতত্ত্বাখ্যানে, আদির সপ্তমে ॥ ৪-৭ ॥

( ২৮৮ পা ) “সূত্র ... মুক্তি হয় ॥”  
এই ৮ ও ৯ পয়ারের ভাবার্থ সরল।  
স্বাচার্য্য, শঙ্করাচার্য্য। সুখদার্প, সরলার্প  
বা সন্দেহ নিরসন অর্থ ॥ ৮৯ ॥

( ২৮৮ পা ) “শ্রেয়ঃ সৃতিমিতি।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২-৫  
পৃষ্ঠায় দেখুন। “ভক্তি বিনু” পয়ার  
প্রমাণ শ্লোক ॥ ২ ॥

(২৮৮ পা) “যেহেতু” ইতি। শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৩৬ পৃষ্ঠায়  
দেখুন। “ভক্তি বিনু” পয়ার  
প্রমাণ শ্লোক ॥ ৩ ॥

( ২৮৮ পা ) “ব্রহ্ম শব্দে...উপহাস ॥”  
১০ পয়াবের ভাবার্থ সরল। তাহে,  
সর্বিশেষ ভগবানে। হান, নষ্ট। তাহা,  
চিহ্নক্রি ॥ ১০ ॥

(২৮৮ পা) “হ্লাদিত্বেন্তি।” শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১৮১ পৃষ্ঠায়  
দেখুন। “শ্রুতি পুরাণ” পয়ার  
প্রমাণ শ্লোক ॥ ৪ ॥

( ২৮৮ পা ) “নাতঃ পরমিতি।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। জীকৃষ্ণ যে চিদানন্দসয়, তাহা  
এই শ্লোকে প্রমাণ করিলেন ॥ ৫ ॥

( ২৮৯ পা ) ‘দৃষ্টং শ্রুতিমিতি।’  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। ‘চিদানন্দবিগ্রহ কৃষ্ণ’ প্রমাণ  
শ্লোক ॥ ৬ ॥

( ২৮৯ পা ) “তদ্বা ইদমিতি” এবং  
“অবজানন্তীতি।” এই দুই শ্লোকের

তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
শ্রীকৃষ্ণদেহকে যে মায়িক বলা মহাপাপ  
এবং শ্রীকৃষ্ণদেহ মায়িক নহে, তৎপ্রমাণ  
এই শ্লোক ॥ ৭ ॥

( ২৮৯ পা ) “তানহমিতি।” শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে।  
শ্রীকৃষ্ণদেহকে বাহারা মায়িক বলে,  
তাহাদের কি গতি হয়, তাহা প্রমাণ  
করিলেন ॥ ৯ ॥

( ২৮৯ পা ) “সূত্রে পরিণাম ...  
অন্যরীতে ॥” এই ১২ হইতে ১৫ পয়ার  
পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল। পরমার্থ বিচার  
ইত্যাদি অর্থাৎ কোণায় শ্রীকৃষ্ণের রূপা  
পাইয়া সংসার তরিব, শ্রীকৃষ্ণের চিদানন্দ  
দেহের বিচার করিব; তা না হইয়া  
শ্রীকৃষ্ণদেহকে মায়িক বলিয়া বিবাদ  
করতঃ অপরাধে মজিব। সেট, প্রকাশা-  
নন্দেব শিষ্য। তাহে, অদ্বৈতবাদ  
স্থাপনের চেষ্টা থাকায়। অত্বনীতে,  
অন্যপ্রকারে ॥ ১২-১৫ ॥

(২৯০ পা) “ভগবতা ... সত্যমনি ॥”  
এই ১৬ হইতে ১৯ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ  
সরল। অতএব, ভগবতা স্বীকার করিলে  
অদ্বৈত স্থাপন করা যায় না বলিয়া।  
সেই গ্রন্থকর্ত্তা চাহে ইত্যাদি অর্থাৎ যে  
সে গ্রন্থকর্ত্তা যে যে গ্রন্থ করিয়াছেন,  
সেই সেই গ্রন্থের গ্রন্থকর্ত্তা নিজমত  
স্থাপন করিতে চেষ্টা করায়; শাস্ত্রের  
সহজ অর্থ বুঝা যায় না। ইহার কারণ  
বলিতেছেন, “স্বীয়াংসক” ইত্যাদি ॥ ১৬ ১৯ ॥

( ২৯০ পা ) “তর্কোপ্রতিষ্ঠ” ইতি।  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১৭৩

পৃষ্ঠায় দেখুন । “মহাজ্ঞান” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১০ ॥

( ২৯০ পা ) “শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য ... .. ক্ষমাইল ।” এই ২০ হইতে ২৫ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । এ সব বৃত্তান্ত অর্থাৎ “আচার্য্যের আগ্রহ এই পয়ার হইতে “সেই তত্ত্বনার” এই পয়ার পর্য্যন্ত প্রকাশানন্দের কথা শুনিয়া । সেই, বিপ্র, মহারাষ্ট্রী ব্রাহ্মণ । “প্রভু কহে” ইত্যাদি পয়ারোক্ত মহাপ্রভুর বাক্যগুলি দৈন্যসূচক । তিঁহো কহে, প্রকাশানন্দ বলিলেন ॥ ২০ ২৫ ॥

( ২৯০ পা ) “জীবমুক্তি ।” শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । মহাপ্রভুর নিন্দাস প্রকাশানন্দের যে অপরাধ হইয়াছে ; তাহা এই শ্লোক দ্বারা প্রমাণ করিলেন ॥ ১২ ॥

( ২৯১ পা ) “ন বৈ ভাগবত” ইতি । শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে । “তোমার চরণস্পর্শি” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৩ ॥

( ২৯১ পা ) “প্রভু কহে ... গণন ॥” এই ২৬ পয়ারের ভাবার্থ সরল । অপরাধ-চিহ্ন, অপরাধের চিহ্ন ॥ ২৬ ॥

( ২৯১ পা ) “বস্তুত্বিত্তি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১৮১ পৃষ্ঠায় দেখুন । “জীবে বিস্মৃবুদ্ধি” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৪ ॥

( ২৯১ পা ) “মুক্তানামপীতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১৯৪ পৃষ্ঠায় দেখুন । শ্রীকৃষ্ণদাস যে সকলের পূজ্য, তাহা প্রমাণ করিলেন ॥ ১৫ ॥

( ২৯১ পা ) “আহুঃ শ্রয়মিতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ১৫৪ পৃষ্ঠায় দেখুন । “সর্কনাশ হয়” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৬ ॥

( ২৯১ পা ) “নৈষামিতি ।” শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ২৪০ পৃষ্ঠায় দেখুন । “এবে তোমার” পর পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ১৭ ॥

( ২৯১ পা ) “এবে তোমার ... হয় জ্ঞান ॥” এই ২৮ হইতে ৩১ পয়ার পর্য্যন্ত ভাবার্থ সরল । তাহাই, দিম্ভুমাধব-মন্দিরে । অতি তুচ্ছজ্ঞান, অত্যল্পজ্ঞান । আমি জীব অতি তুচ্ছজ্ঞান ইত্যাদি বাক্য মহাপ্রভুর দৈন্যোক্তি । আপন সূত্রের ইত্যাদি অর্থাৎ বেদান্ত সূত্রার্থ ভাগবত পঞ্জ ॥ ২৮-৩১ ॥

( ২৯১ পা ) “প্রণবের .. কৈল ॥” এই ৩২ পয়ারের ভাবার্থ । প্রণবের যে অর্থ তাহা গায়ত্রীতে উক্ত হইয়াছে । গায়ত্রীর অর্থ চতুঃশ্লোকী ভাগবতে বিশেষরূপে উক্ত হইয়াছে ।

সাধারণের অবগতির অর্থ বেদপ্রতিপাদ্য প্রণব ও গায়ত্রীর টীকা প্রদত্ত হইল ।

প্রণবার্থ যথা, উঁমতি অকার-উকার-মকার-ম্মকোহয়ঃ শব্দঃ । অবতি ইতি ওম্, অবধাতোমন্ প্রত্যয়ে কৃতে তস্যাতোগোপঃ ঙ্গনঃ ইতি সূত্রেণ ওমতি শব্দস্য সিদ্ধিঃ । অপর্য্যুক্ত রক্ষণে ইচ্ছোৎ-পাদনে গভৌ স্পৃহায়াঃ প্রবেশে তৃপ্তৌ শোভায়াঃ শ্রবণে ব্যাপ্তৌ আনিদ্রনে প্রাণমে সন্তোয়াৎ বুদ্ধৌ গ্রহণে বধে সামর্থ্যে অবগমে কারণে চ । অত্র অকারো বৈ সর্কনাক্ ইতি শ্রুতেঃ ; অকারো ভগবৎঘাটকঃ । অক্ষরাণামকরোহস্মি ইতি গীত্যাং যাম্ । অকারো বৈ বিস্মৃতিভিঃ প্রতৌ । সর্কনাক্-

কারণাভিধানানং সর্বাচাৰণমেবেতি কারণ-  
বাচকোহমকার । তেন কাৰণযোগযুক্তাঃ,  
জ্ঞানশক্ত্যনং রক্ষকদ্বৈপয়ুক্তাঃ, দয়ানামল্যাদয়  
অপি অবোণলক্ষ্যে । উকারো লক্ষ্মীবাচকঃ ।  
উ শব্দে ইত্যাম্বাৎ কিপ্ । উ অমুৎস্পাপুকা  
বিষয়জনকশক্তিযুক্তা শ্রীভগবৎপ্রয়া শ্রী শিখিকা  
অত্র যুক্তা । রাধা-সংস্কো নিস্পাদনে পাকে  
সাদনে ব্যাপ্তৌ হোষে অমুসায়াক্ষ, রাধদাত্তোরচ্  
অজ্ঞাত্তষ্টাপ্ রাধা । বিরংময়া রমণীয়েদেহত্বেনা-  
বিতৃতা গোলোকত পুরুষোত্তমাক্ষায়কপা শক্তিঃ,  
এদান গোপিকা শ্রীধনভামুত্ৰা উকারঃ শব্দবাচ্যা  
গৃহ্যতে । “অকারেণোচ্যতে কৃষ্ণঃ সৰ্বলোকৈকক-  
নায়কঃ । উকারেণোচ্যতে রাধা মকারঃ জীব-  
বাচকঃ ॥” ইতি পাদসংহিতায়ঃ প্রণবার্থঃ প্রতি-  
পাদিতঃ । উ ইতি অবধারণবাচকো বা । তদেবায়ি-  
ত্বদ্বায়ুত্ৰচন্দ্রমা ইতি অবধারণস্থ স্থানে উকারস্য  
প্রয়োগাৎ শ্রীরাধাসংহিতঃ শ্রীকৃষ্ণএব প্রতিপাত্তঃ ।  
মকারো জীববাচকঃ । পঞ্চবিংশশব্দে মকারঃ  
চতুর্লিংশতিত্বায়ুৎ-প্রধানাদাত্তরিত্তঃ জীবায়ান-  
মাহ । মন অববোধনে, ইত্যাম্বাৎ কিপ্ প্রত্যয়ে  
রুতে মকারশব্দে নিস্পন্নঃ । মকারস্য জ্ঞানস্বরূপত্বং  
জ্ঞানগুণকত্বার্থঃ । তদেবমর্থঃ, মকারবাচ্যো জীবঃ,  
অক্স-উকারার্থায় শ্রীরাধাকৃষ্ণার আয়ানং  
সমর্পয়েৎ । অত্র অকারোকারেলুপ্তচতুর্থীকপদম্ ।  
তথা চ প্রতিঃ, ব্রহ্মণে স্বা মহসে ওমিত্ত্যায়ানং  
যুক্তীত । যে তু প্রথমান্তমকারঃ কৃত্বা মকারসামা-  
গাধিকরণেণ জীববক্ষ্যোন্নৈক্যং বর্ণয়ন্তি তে ভ্রাত্তাঃ  
শ্রুতিশক্তিবোধং জানন্তোহপি ন জানন্তোব ।  
পঞ্চরাত্রে চৈবং প্রণবার্থো বর্ণিতঃ, “অকারেণোচ্যতে  
বিষ্ণুঃ সৰ্বলোকেশ্বরেধরঃ । উকারেণোচ্যতে লক্ষ্মীঃ  
মকারো জীববাচকঃ ॥”

আস্যার্থ—অকার, উকার ও মকারাত্মক শব্দ  
প্রণব । অবধাত্তর উত্তর মন প্রত্যয় করিলে ওম  
শব্দে সিদ্ধি হয় । অবধাত্তর অর্থ যথা,—রক্ষণ,  
ইচ্ছোৎপাদন, প্রাপ্তি, জ্ঞান, স্পৃহা, প্রবেশ, তৃপ্তি,

শোভা, শ্রবণ, ব্যাপ্তি, আলিঙ্গন, প্রার্থনা, সন্তা,  
রক্তি, গ্রহণ, বধ, সমর্পণ, অবগম ও কারণ ।  
অকারো বৈ সর্বাচাৰু এই শ্রুতি-প্রমাণে, অকার  
শ্রীভগবানের বাচক । গীতায় শ্রীকৃষ্ণ বলিয়াছেন,  
অক্ষর সকলের মধ্যে আমি অকার । বিষ্ণুই  
অকার ইহা শ্রুতি বলেন । অকার সর্বাচকের  
কারণ । বেদবি শব্দ শব্দের বাচ্য এবং সর্বা-  
কারণ শ্রীকৃষ্ণের বাচক অকার ; এই হেতু জ্ঞান,  
শক্তি, দয়া, বাৎসল্যাদি গুণ উপলক্ষিত হয় ।  
উকার লক্ষ্মীবাচক । উ শব্দের উত্তর কিপ্  
প্রত্যয় । উকারের অর্থ অমুৎস্পয়ুক্তা বিষয়জনক-  
শক্তিবিশিষ্টা শ্রীকৃষ্ণপ্রয়া শ্রীরাধা । রাধা-  
অচ্+আপ্ প্রত্যয় দ্বারা রাধাপদ সিদ্ধ । রাধা-  
ধাত্তর অর্থ সিদ্ধি, নিস্পাদন, পাক, সাদন, ব্যাপ্তি,  
তৃষ্ণ, অমুমা । রনণেচ্ছা দ্বারা রমণীয়েদেহরূপে  
আবিতৃতা গোলোকেশ্ব শ্রীকৃষ্ণের অক্ষায়কপা  
শক্তিপ্রধানাগোপী যুধামনু-নন্দিনী শ্রীরাধাই  
উকার শব্দের বাচ্য ; ইহা প্রতিপন্ন হইল ।  
পদসংহিতায় প্রণবের অর্থ প্রতিপাদন করিয়াছেন,  
সৰ্বলোকের একমাত্র নায়ক শ্রীকৃষ্ণ অকার শব্দে,  
শ্রীরাধা উকার শব্দে এবং জীব মকার শব্দে কথিত  
হয় । অথবা, উকার অবধারণ বাচক । অকার  
স্থানে উকার প্রয়োগ হেতু শ্রীরাধার সহিত শ্রীকৃষ্ণ  
এরূপ অর্থ প্রতিপন্ন হইতেছে । মকার জীববাচক ।  
বাজনবর্ণের পঞ্চবিংশশব্দ মকারের অর্থ চতু-  
র্লিংশতিত্বায়ুৎক প্রধানের অতিরিক্ত জীবায়ান ।  
মন+কিপ্ প্রত্যয়ে মকার শব্দ নিস্পন্ন হয় ।  
মন ধাত্তর অর্থ অববোধন । মকারের জ্ঞানস্বরূপত্ব  
ও জ্ঞানগুণকত্ব অর্থের প্রাপ্তি হইতেছে । সুতরাং  
মকারবাচ্য জীব । মকার অর্থাৎ জীব অকার  
এবং উকার নামক শ্রীরাধাকৃষ্ণ আয়ানবেদন  
করিবেন ; ইহাই প্রণবের অর্থ । অতএব অকার  
উকার অর্থাৎ শ্রীরাধাকৃষ্ণ সম্বন্ধত্ব । আয়ান-  
নিবেদনটি অভিধেয় তত্ত্ব প্রতিপন্ন হইল । প্রতিপত্ত  
বলেন, জীব ব্রহ্মে আত্মাকে যোগনা করিবেন । ১৭৩

ধাঁহারা সামান্যাদিকরণ্য দ্বারা ব্রহ্ম ও জীবের  
অভেদত্ব বর্ণনা করেন, তাঁহারা ব্রাহ্ম ।

গায়ত্রীর টীকা—ভবতি ইতি ভূঃ । ‘হু সত্ত’য়াং  
প্রাপ্তৌ ব্যাপ্তৌ শুক্লৌ চিন্তনে মিশ্রণে চ । ভূ  
ইত্যস্মাৎ কিপ্, শ্রীহরেন্নারায়ণস্য বাচকঃ ।  
ভূরতি বাধিঃ, ভূরতি বিস্বব্যাপকঃ । ভূরৈশ্বৰ্যা-  
বাচকঃ । ভবতীতি ভুবঃ ভুবলোকঃ । ভুব ইতি  
বায়ুরিতি ঞ্চতেঃ । ভূবো বীৰ্য্যং নিক্রুপিতম্ । সূবঃ  
শ্রীঃ গৃহ্যতে । সূবরিত্যাধিতো ঞ্চতেঃ, জগদীশ্বরঃ ।  
মহঃ মহলোকে । মহঃ পূজায়াং দীপ্তৌ বুদ্ধৌ  
পূজনেন চ । মহস্ ইত্যস্মদিক্ প্রত্যয়ঃ, শ্রীকৃষ্ণচন্দঃ ।  
মহ ইতি চন্দ্রমা ইতি ঞ্চতেঃ । মহঃ পরঃ যশঃ ।  
জনঃ জনলোকে । জন জননে, ইত্যস্মাদিচ ।  
জায়তে ইতি জন জগৎকর্তা শ্রীকৃষ্ণঃ । পূর্বো হি  
জাতঃ সঃ উ গতে অন্তঃ স বিজায়মানঃ সা জনিয়া-  
মানঃ, ইতি ঞ্চতেঃ । জনঃ বৈবাগ্যস্ । তপঃ তপ-  
লোকে । তপ দাহে ঐশ্বৰ্য্যেচ, ইত্যস্মাদিত্য প্রত্যয়ে  
কৃতে নিশ্পন্নোহয়ং শব্দঃ, ভগবদ্বাচকঃ সঠৈশ্বৰ্য্যা-  
যুক্তঃ শ্রীকৃষ্ণ এব । দস্য জ্ঞানময়ং তপ ঠাতি ঞ্চতেঃ,  
তপজ্ঞানম্ । সতে সাধবে হি তম ইতি সত্যম্,  
তক্তবৎসলঃ সৰ্বাশ্বৰ্য্যমী শ্রীমন্নারায়ণঃ । সত্যমিতি  
সত্যলোকে চ । সানিত্যা নিখামত্রপাৰ্যঃ গায়ত্রী-  
ছন্দঃ সানিত্য দেবতা ভগবদ্বাক্তপ্রাপ্তার্থে ক্ৰমে  
বিনিয়োগঃ । দেবস্য চেতনাচেতনায়কজগৎ-  
জীভায়াং মোদমানস্য নিরতিশয়কান্ত্যযুক্তস্য  
নিরতিশয়স্বত্বযুক্তস্য শ্রীমূন্দানবিত্যাপসুক্রস্য  
শ্রীরামক্ৰীড়ায়াং মোদমানস্য গোপীনাং সৰ্বনিবার-  
কস্য । দিবধাতোঃ পচাদ্যচ । সানিত্যঃ সকলজগৎ-  
শষ্টৈঃ শ্রীকৃষ্ণস্য । সূধাতোরচ্ প্রত্যয়ঃ । বরেষ্যং  
সঠৈঃ ভগবদ্বক্তঃ প্রার্থনীসম্ । বৃধাতোরেষ্য  
প্রত্যয়ঃ । বৃ বরণে দেবার্যাস্ আবরণে চ । বরণীয়ঃ,  
ইয়ংদেশেন পাদপূৰ্ত্তিঃ করণীয়া ইতি পিঙ্গলা-  
কাৰ্য্যাত্মশাসনম্ । “ইরাদিঃ পূরণ” ইতি পিঙ্গল  
স্ । চতুর্কিংশত্যক্ষরা গায়ত্রীতি ঞ্চতেঃ ।  
দ্বৈবকটবৈঃ শ্রীকৃষ্ণ এব দেবনীর বরণীশ্চ ।

যমেবৈষ বৃগুত তেন লভাঃ ইত্যাদি ঞ্চত্যা  
শ্রীকৃষ্ণস্য পরমাশ্রনো বরণীয়ত্বমুক্তম্ । যথা কল্পা  
পাভিমতমেব স্বপাতিকেন বৃগুতে, বণোহপি তাদর্শীং  
কপ্তাং স্বীয়হেন, তথা ভগবান্ বদামহেনাশ্রীম-  
হেনাশ্রীকাং কবোতি ইত্যুচ্যতে । ভর্গঃ তত্ত্বৎ  
তেজঃ সপেক্ষাঃ ভগবদ্বক্তানাম্ আত্মানাক্কার-  
নিরোধহেন তেজঃ শব্দাভিধেয়ম্ । দসুঞ্জ  
পাকে ইত্যস্মাৎ যজ্ঞঃ । ভগবদেপে কৃতম্ । সৰ্ব-  
কৰ্মফলপাকতেতুহাং সপেভবদ্বায়া ভর্গঃ । “আদি-  
ত্যাশ্বর্গতাং বহুে ভর্গার্থাং গুণমুকৃতিঃ । জন্মমূত্ৰা-  
বিনাশায় ভগব্যায় ঐতিহ্যস্য চ ॥” ইতি যাজ্ঞবল্ক্যঃ ।  
“ইরাদিঃ প্রাপ্তঃ তেজো জগদভ্যাসয়তেহ’খণম্ ।  
যজ্ঞস্যাস যজ্ঞায়ৌ প্রভেজো বিক্রমাসকম্ ॥” ইতি  
দীভায়াং স্বয়মেব ভগবতা উক্তম্ । স যশ্চায়ং  
পদবে বশ্চাসাবাদিত্যে ইতি ঞ্চতেঃ । ধোয়ঃ সন্না  
সনিত্যশ্বপদমধ্যবর্তী নারায়ণঃ সরসিজ্ঞান ইত্যাদিক  
মদ্যস্তমঙ্কেষম্ । তৎ বেদান্তপ্রাসঙ্গম্ । তেজো  
ভর্গঃ, দীমহি ধ্যামেম হি ইত্যর্থঃ । দেবস্য ভর্গঃ  
ইত্যত্র ত্তেদন্ত রাহোঃ শিববৎ ঔপচারিকঃ ।  
আদিভ্যামণ্ডলাস্তবস্তিনঃ তেজোময়ং পূর্বযোক্তয়ং  
চিন্তয়ানী ত্যর্থঃ । এষোহস্তরাভিত্যে হিরণ্ময়ঃ পূর্বযো  
দৃশ্যতে হিরণ্ময়শ্চক্ৰঃ হিরণ্ময়কেশ আশ্রয়থাৎ  
সর্গ এব সূবর্গঃ তস্য যথা কপাসং পুত্ররীক-  
নেবাপ্পীনীতি চান্দোধ্য ঞ্চতেঃ । যো যৎ সবিভূ-  
তেজঃ নঃ অস্মাকং ধিয়ঃ হানোপাদানাদি-বশয়াণ  
উপাসনাভ্যপযুক্তানি সন্নান বিশেষজ্ঞানাদি  
প্রোবাদানি প্রচোবদ্যৎ প্রেবয়ং প্রেরয়ত্ব ত্তি বা ।  
যং ইত্যপে য হাঃ লিখবাত্যায়ঃ । ধিয়ঃ ইতি  
বিতীয়াবহুবচনম্ । জনয়া গায়ত্র্যা তৈলদধাবৎ  
অবিজ্ঞেয়ত্ব তসন্তানকপা গল্পপ্রবাহবৎ অবিজ্ঞিয়া  
মনোবুদ্ধিরূপা বা ভাঙঃ স্বাশ্বষ্ঠানন্থেন ঞ্চতি-  
পাদিত্য ভবতি, জগৎকারবদৈস্য উপাস্যত্বাৎ ।  
কারগন্ত ধোয়ঃ ইতি ঞ্চতেঃ । যো দেবঃ সানিত্য-  
সাকং ধিয়ো ধর্মাদিগোচরাঃ প্রেরয়ৎ তত্তস্য  
তত্ত্বর্গস্ত্বরেণ্য যুগ্মস্মহে ইতি ঞ্চতেঃ । “আদিভ্যা-

মণ্ডলে ধ্যানে পরনাম্মানমবায়ম্ । বিষ্ণুং চতুর্ভূজং  
 কৃষ্ণং কমণাসনমধ্যগম্ ॥ কীরীটহারকেশু-  
 কটকৈরুপশোভিতম্ । মুণীধারিণং দেবং পীত-  
 বাসসমচ্যুতম্ । অগরাদনং রক্তকুণ্ডলং চিত্তয়ে-  
 দ্ধারিনম্ ॥ সক্ষাধেবং অপেক্ষ্যেত্বুক্তমুক্তশদায়কম্ ।  
 অধিষ্ঠাত্রী তু গায়ত্রী সাহ্যচিন্তা প্রযত্নতঃ ।  
 সাধিকাকর্ণপীণী গম্ভী মস্ত্রাধিষ্ঠাত্রীদেবতা । রক্তশেত  
 তথানীগবস্ত্রাভরণভূষতা । গায়ত্রীকর্ণপীণং ধ্যাম্যেৎ  
 সাধিকং বৃক্ষবল্লভাম্ ॥” ইতি পঞ্চরাত্রম্ ।

অস্যার্থ—তু ধাতুর উত্তর কিপ্ প্রত্যয়ে তুঃ  
 হয়। তু শব্দে সত্তা, প্রাপ্তি, ব্যাপ্তি, শুদ্ধি, চিন্তন  
 ও মিশ্রণ বা অয়, বিষ্ণু, অর্থ। তুঃ ঐশ্বর্যবাচক।  
 কুবঃ অর্থাৎ কুবলোক। কুবঃ শব্দে বিঘ্নানক্রাপিত  
 হয়। সুবঃ শব্দে শ্রী অর্থ। মহঃ অর্থাৎ মহশোক।  
 মহঃশব্দে পূজা, দীপ্ত, বৃদ্ধি অর্থ। মহম্+অপ-  
 মহঃ অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণচন্দ্র। শ্রুতিতে মহঃ শব্দে  
 চন্দ্র বলেন। মহঃ বলিতে শ্রেষ্ঠ যশঃ। জনঃ  
 অর্থাৎ জনশোক বা জন+অচ্=জনঃ অর্থাৎ  
 জগৎকর্তা শ্রীকৃষ্ণ। জনঃ বলিতে বৈরাগ্য।  
 তপ+অন্নম্=তপঃ তপলোক অর্থাৎ সর্লৈবর্ধ্যযুক্ত  
 শ্রীকৃষ্ণ। তপ শব্দে দাহ ও ঐশ্বর্য অর্থ। জ্ঞানময়  
 তপ ধীর এই শ্রুতিবাক্যে তপঃ শব্দে জ্ঞান।  
 সাধনবৈতং এই অর্থে সত্য অর্থাৎ ভক্তবৎসল  
 সর্লৈবর্ধ্যামী নারায়ণ। সাধিত্রীব ঋষি বিশ্বামিত্র,  
 ছন্দ গায়ত্রী দেবতা সাধিতা অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ  
 ভগবত্বক্তি প্রাপ্তি জগু জপে নিযুক্ত হইল। দেবস্য  
 অর্থাৎ চেতন ও অচেতনায়ক জগৎকীড়ায়  
 মোদমান, এবং নিরন্তর কান্তি ও স্ততিযুক্ত  
 শ্রীকৃষ্ণানবহারযুক্ত রাসকীড়ায় মোদমান ও  
 গোপীগণের মদনিবারক শ্রীকৃষ্ণের। দিব্+  
 পাতাশ্চ দেবঃ ভাস্য দেবস্য। সবিভুঃ অর্থাৎ  
 সকল জগৎশ্রেষ্ঠী শ্রীকৃষ্ণের। বরেণ্যঃ অর্থাৎ  
 ভগবত্তত্তগণ কর্তৃক প্রার্থনীয়। বৃ+রেণ্য=  
 বরেণ্য। বৃ শব্দে বরণ, সেবা ও আবরণ অর্থ।  
 ইয়াহিঃ পূরণঃ এই পিঙ্গল স্বর ধারা বৃ+ইয়ঙ=

বরণীয় পদ হয়। গায়ত্রীর চক্ৰিণ অক্ষর, ইতি  
 শ্রুতি। ভক্তগণ কর্তৃক শ্রীকৃষ্ণই সর্বদা বরণীয় ও  
 সেবনীয়। যমেটব স্বর্গতে ইত্যাদি শ্রুতিবাক্য  
 ধারা শ্রীকৃষ্ণের বরণীয়ত্ব উক্ত হইয়াছে। যেমন  
 কল্পা নিজাভিমত ব্যক্তিকেই পতিত্ব বরণ করে,  
 বরও তাদৃশী কল্পাকে স্বীয়স্বরূপে গ্রহণ করে,  
 তজপ ভগবান্ ভক্তকে স্বদাসত্ব বা আশ্রীমত্বরূপে  
 অঙ্গীকার করে। ভগ্নঃ অর্থাৎ সেই সেই তেজঃ।  
 বাহা ভক্তগণের অজ্ঞানানুকাকারকে নাশ করে,  
 তাহাই তেজঃ শব্দে কথিত হয়। অথবা, ভ্রম্+  
 অর্থ পাক। ভ্রম্+অ+কুৎ=ভগ্নঃ অর্থাৎ  
 সর্লৈবর্ধ্যকলপাকহেতু সকলের পালক শ্রীকৃষ্ণ।  
 যাজ্ঞবল্ক্য বলেন, আদিত্যাস্তর্গত ভগ্ন নামক তেজঃ  
 মুমুকুগণের জন্ম মৃত্যু ও ত্রিতাপকে বিনাশ করেন।  
 গীতার শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং বলিয়াছেন, আদিত্যগত যে  
 তেজঃ সমুদায় জগতকে আলোকিত করিতেছে,  
 চন্দ্রে ও অগ্নিতে যে তেজঃ অবস্থিতি করিতেছে,  
 সে সকল তেজঃই আমার বলিয়া জানিবে।  
 সদা মম্বের অর্থ দেখুন। তৎ অর্থাৎ বেদ।  
 প্রসিদ্ধ। ধীমহি অর্থাৎ ধ্যান করিব। রাহুর শিরের  
 ন্যায় শ্রীকৃষ্ণ ও তাহার তেজের ভেদ উপচারিক  
 স্বধ্যামণ্ডলাস্তবদি তেজোময় শ্রীকৃষ্ণকে চিন্তা করিব  
 ইহাই ধীমহি শব্দের অর্থ। ছান্দোগ্য শ্রুতিবে  
 ১২ ৬ খণ্ডে বলিয়াছেন, এই আদিত্যমণ্ডলের  
 মধ্যে যে হিরণ্ময় পুরুষ দৃষ্ট হন, তাহার শর  
 হিরণ্ময়, কেশ হিরণ্ময়। এক কথায়, তাহার  
 নখাগ্র হইতে কেশ পর্যন্ত সকলই শূন্য। তাহার  
 পুণ্ডরীক মদুশ তেজস্বী চক্ষুঃ কপিপৃষ্ঠে  
 অধঃপ্রান্তের স্থায় আরক্তিম। তাহাকে যি  
 জানেন, তিনি সকল পাপ হইতে মুক্ত হন  
 যো অর্থাৎ সবিত্ততেজঃ অর্থাৎ আমাদিগের ধিয়  
 অর্থাৎ হানোপাদানাদি বিষয় বুদ্ধাদি সকল  
 প্রেমাদিতে প্রেরণ করুন। ধিয়ঃ ধিতীয়  
 বহুবচন। শ্রীকৃষ্ণ উপাস্যত্বহেতু, এই গা  
 জপ ধারা ভৈলধারার বা সঙ্গাপ্রবাহের

অবিচ্ছিন্না স্মৃতিসন্তানরূপা বা মনোবৃত্তিরূপা কৃষ্ণ-  
তক্তি প্রতিপাদিতা হয়েন । প্রতি বলেন, যে  
দাবিতা অর্থাৎ জগৎস্রষ্টা শ্রীকৃষ্ণ আমাদের  
ধর্মানিগোচরা বুঝ্যাপিকে প্রেরণ করেন, সেই  
শ্রীকৃষ্ণের সেই তেজকে এবং সেই বরণ্য শ্রীকৃষ্ণকে  
উপাসনা করি । পঞ্চরাত্রে বলেন, আদিত্যমণ্ডলে  
পয়সনস্থ কীরীটকে গুরূহার প্রভৃতি দ্বারা শোভিত,  
পীতবস্ত্র ও মুরলীধারি, শ্রীকৃষ্ণকে চিন্তা করিবে ।  
তক্তিযুক্তিপ্রদায়ক ঐ পুরুষকে ত্রিসন্ধ্যা অপ ও  
ধ্যান করিবে । তদনন্তর রক্ত, শ্বেত তথা নীলবস্ত্র  
ও ভূষণভূষিতা ময়ের অধিষ্ঠাত্রীদেবতা গায়ত্রী-  
নপিনী কৃষ্ণপ্রিয়া রাধিকাকে ধ্যান করিবে । শ্রাবণ  
ও গায়ত্রীর অর্থ আলোচনা করিলে বুঝা যায় যে,  
শ্রাবণের অর্থ গায়ত্রীতে স্পষ্টীকৃত হইয়াছে । গায়ত্রীর  
অর্থও আবার চতুঃশ্লোকী ভাগবতে অধিকতর স্পষ্ট  
হইয়াছে । আদির প্রথম পরিচ্ছেদে ৮ পৃষ্ঠায়  
চতুঃশ্লোকীর ব্যাখ্যা দেখিবেন ॥ ৩২ ॥

( ২১২ পা ) “আত্মাবাস্যমিতি ।”  
শ্লোকের তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে ।

“ভাগবতের” পয়ার প্রমাণ এই শ্লোক । এই  
শ্লোক দ্বারা দেখাইলেন, উপনিষদ্ ও ভাগবত এক  
কথাই বলেন । ঈশোপনিষদে, ঈশাবাস্যমিদং  
সর্বং যৎকিঞ্চিৎ জগত্যাং জগৎ । তেন তাজেন  
ব্রহ্মীখামাগৃধঃ কস্যাম্বদনম্ ॥” অতএব উপনিষদ্  
ও ভাগবতের একমত হইল । এরূপ ভাবে সর্বত্র  
জানিতে হইবে ॥ ১৮ ॥

( ২১২ পা ) “এক শ্লোক...সবন ॥”  
৩৫ পয়ারের ভাবার্থ সরল । যে ঋক্  
হইতে যে সূত্রের প্রকাশ হইয়াছে, সেই  
সূত্রের অনুরূপ শ্লোক আবার ভাগবতে  
নিবন্ধ হইয়াছে । অতএব বেদ, উপ-  
নিষদ্ ও সূত্রের যে অভিপ্রায়, শ্রীভাগ-  
বতেরও তাহাই অভিপ্রায় জানিতে

হইবে । ভাগবতের বাহা সঙ্ক্, অভিধেয়  
ও প্রয়োজন, বেদ ও বেদান্তেরও তাহাই  
সঙ্ক্, অভিধেয় ও প্রয়োজন । চতুঃ-  
শ্লোকীতে উহা নির্ণীত হইয়াছে ॥ ৩১ ॥

( ২১২ পা ) “জ্ঞানমিতি ।” শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৮ পৃষ্ঠায় দেখুন ।  
চতুঃশ্লোকীর প্রথম শ্লোক ॥ ১৯ ॥

( ২১২ পা ) “যাবানহমিতি ।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৯ পৃষ্ঠায়  
দেখুন । “সৃষ্টির পূর্বে” পর পয়ারে ইহার  
অর্থ প্রকাশ করিতেছেন ॥ ২০ ॥

( ২১২ পা ) “অহমেবেতি ।” শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৯ পৃষ্ঠায় দেখুন ।  
“অহমেব” পর পয়ারে ইহার অর্থ  
করিতেছেন ॥ ২১ ॥

( ২১৩ পা ) “ঋতেহর্থমিতি ।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ৯ পৃষ্ঠায়  
দেখুন । “মারীকার্য্য” পয়ার প্রমাণ  
শ্লোক ॥ ২২ ॥

( ২১৩ পা ) “এতাবদিতি ।” শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা আদির ১০ পৃষ্ঠায়  
দেখুন । “অভিধেয়” ইত্যাদি পয়ার  
প্রমাণ শ্লোক ॥ ২৩ ॥

( ২১৩ পা ) “যথা মহাস্তীতি ।”  
শ্লোকের টীকা ও বাঙ্গলা আদির ১০  
পৃষ্ঠায় দেখুন । “স্ম্যামাতে যে” ইত্যাদি  
পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২৪ ॥

( ২১৩ পা ) “বিসৃজতীতি ।” শ্লোকের  
তাৎপর্য্য শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে ।  
“ভক্ত আমা’পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ২৫ ॥

( ২১৩ পা ) “সর্বভূতেষু” এবং



“গায়ত্ৰ্য উচ্চৈরিতি” শ্লোক দুইটি “বাহা  
নেত্র পড়ে” পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥২৬২৭॥

(২৯৪ পা) “বদন্তি” “ভগবানেক” ও  
“এতে চাংশেতি ।” শ্লোক তিনটি দ্বারা  
প্রমাণ করিলেন, শ্রীকৃষ্ণই মঙ্গলকৃত ॥২৮-৩

(২৯৪ পা) “ভক্ত্যাহং” “ন সাধয়তি”  
ও “ভয়মিতি ।” শ্লোক তিনটিতে অভি-  
ধেয়ভক্তি বলিলে. ৩১-৩৩ ॥

(২৯৪ পা) “অরম্ভঃ” ও “এবং ব্রত”  
ইতি । শ্লোক দুইটি “এবে শুন প্রেম”  
পয়ার প্রমাণ ॥ ৩৪।৫৫ ॥

(২৯৫ পা) “অর্থেহয়মিতি” “নর্ক-  
বেদেতি” ও “নর্কবেদাস্তসারমিতি ।”  
শ্লোক তিনটির তাৎপর্য শ্লোকার্থে প্রকাশ  
আছে। “নিষ্কলত” পয়ার প্রমাণ  
শ্লোক ॥ ৩৬-৫৯ ॥

(২৯৫ পা) “জন্মাদ্যোতি ।” শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা মধ্যের ৭৯ পৃষ্ঠায় দেখুন ।  
এই শ্লোকোক্ত “সত্যং পরং” মঙ্গল এবং  
“দীমহি” প্রয়োজন ॥ ৪০ ॥

(২৯৬ পা) “দশ্ম ইতি ।” শ্লোকের  
টীকা ও বাঙ্গলা আদির ১৪ পৃষ্ঠায় দেখুন ।  
ইহাতে প্রয়োজন নির্দেশ করিলেন ॥৪১॥

(২৯৬ পা) “নিগমকল্পরোরিতি” ও  
“বয়স্তু নেতি ॥” শ্লোক দুইটির তাৎপর্য  
শ্লোকার্থে প্রকাশ আছে। “কৃষ্ণভক্তি”  
পয়ার প্রমাণ শ্লোক ॥ ৪২।৪৩ ॥

(২৯৭ প) “তবে বায় সুবুদ্ধি রায়  
সেই ছদ্ম পাইয়া” এই পয়ারে ছদ্ম স্থলে  
ছল পাঠ হইবে। অপর পয়ারার্থ সরল ।

(৩০০ পা) “কৃষ্ণলীলামৃত ... ..  
নিবেদন ॥” এই ৮৪ ও ৮৫ পয়ারের  
ভাবার্থ ।

গ্রন্থকার বণিতেছেন, নদী কখন পূর্বক কখন  
বৃহৎ সরোবর হইতে উৎপন্ন হইয়া শত শত ধারায়  
প্রবাহিত হওতঃ যেমন সকলের আনন্দ প্রদান  
করেন, তজ্জনা চৈতন্যানীকারূপ অক্ষয় সর্ব  
হইতে কৃষ্ণলীকারূপ নদী শত শতধারায়  
প্রবাহিত হয়। অক্ষয় সরোবর বলাতে বৃষ্টি  
চৈতন্যলীলা সরোবর গুণ হয় না। দশদিক ব্যাপ্ত  
সর্বত্র সকল স্থান বৃঝাইতেছে। সেই সরোবরে  
মনোহংস বিচরণ করাও ॥ ৮৪।৮৫ ॥

(৩০০ পা) “কৃষ্ণভক্তি...আহার ॥”  
এই ৮৬ ও ৮৭ পয়ারের ভাবার্থ। গ্রন্থ-  
কার দৈন্য পূর্বক নিবেদন করিতেছেন।

পদ্ম ব্যতীত সরোবর শোভা পায় না বলিয়া  
কৃষ্ণভক্তের সিদ্ধান্তসমূহকে পদ্ম বলিলেন এবং  
চৈতন্যলীলা হইতে কৃষ্ণভক্তি প্রচার হওরাতে  
চৈতন্যলীলাকে সরোবর বলিলেন। কৃষ্ণদখন  
বাগতে পায়ন। পদ্মের মধু বলিতেছেন, প্রেমরস।  
মধুপান প্রয়োজনহেতু মনকে মধুপ বলিলেন।  
পদ্ম রাজ্যদিন গ্রন্থটিত পাকায় অপ্রাকৃত পদ্ম  
বুঝাইতেছে। হংসগণ কি আহার করেন, তাহা  
বাগতেছেন, “কৃষ্ণকেণি” ইত্যাদি ॥ ৮৬।৮৭ ॥

(৩০০ পা) “সেই সরোবরে ... ..  
জগজন ॥” এই ৮৮ ও ৮৯ পয়ারের  
ভাবার্থ। চৈতন্যলীলা সরোবরে বিলাস  
করিলে কি হয়, তাহা বলিতেছেন,  
“অধিবৈ” ইত্যাদি। তান্তে, মাধু মহাশু-  
রণ মেঘ বধন করিলে ॥ ৮৮।৮৯ ॥

(৩০০ পা) “চৈতন্যলীলা ... ..  
কৃষ্ণদাস ॥” এই ৯০ হইতে ৯৩ পর্য্যন্ত  
ভাবার্থ সরল। মাধুর্য্যপ্রাচুর্য্য। প্রচুর  
মধুর। মৃত্যুশিত, অমৃতযুক্ত ॥ ৯০-৯৫ ॥

ইতি মধ্যলীলার পঞ্চবিংশে  
সুবোধিনী টীপনী ॥

ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে মধ্যখণ্ডে সম্পূর্ণম্ ॥





